Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

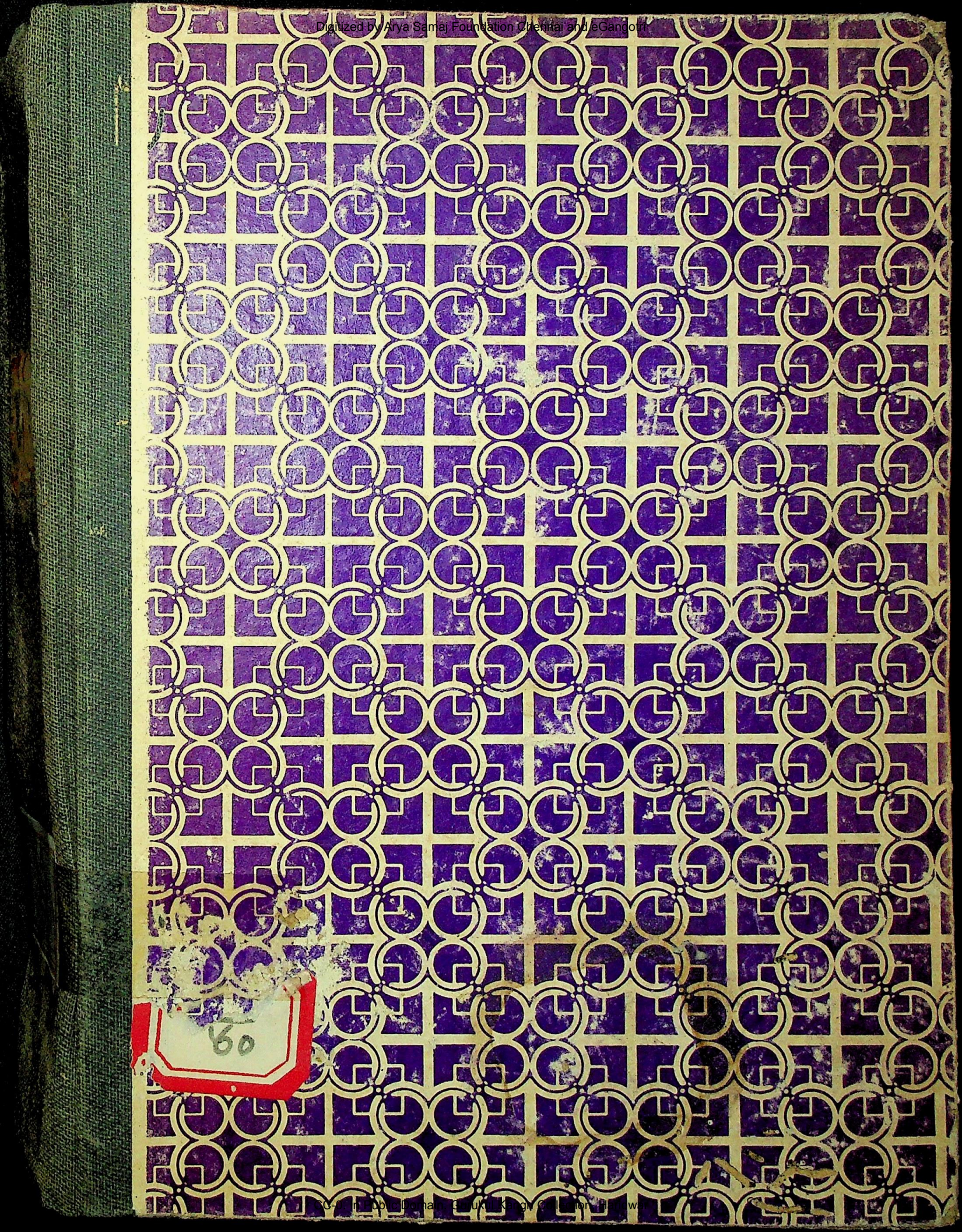

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९.५ RA
४०
९.५
४०

इन्द्रविद्यावाचस्पति

३८,०६५

38065

९.५ RA
४०

पुस्तकालय ३८०६५
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
विषय संख्या ९.५ आगत नं० 38065
लेखक ४०
शीर्षक

...क	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या
	V 1988		

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या RA ..... आगत संख्या 38068

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा 50 पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

38065

9.5.2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र विद्यावाचस्पति
च-द्रलोक, जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को
भेंट

समर्पण

श्री सुमित्रा नंदन पंत

एक कली है मेरे पास!
तुम चाहो, इसको अपनालो,
कर दो इसका पूर्ण विकास!

तुम इसमें स्वर्गिक रँग भर दो,
निज सौरभ से प्लावित कर दो,
उर को अक्षय मधु का वर दो,
भर इसमें निज शाश्वत हास!

तुम्हीं मूल इसके बन जाओ,
मधुकर बन इसके ढिंग गाओ,
प्रीति-वृंत में इसे झुलाओ,
स्वर्ग-किरण बन करो विलास!

यह हँसते-हँसते झर जावे,
जग में उर-सौरभ भर जावे,
भू-रज को उर्वर कर जावे—
नव बीजों से,—हो न विनाश!
एक कली जो मेरे पास!

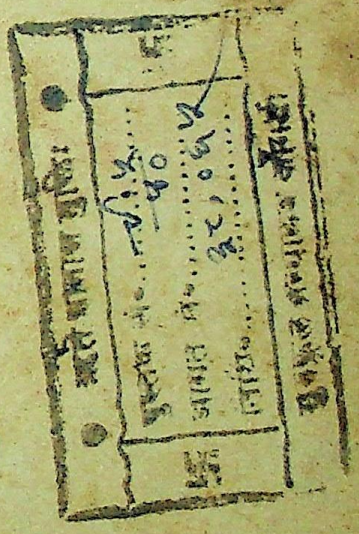

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पलकें झुकीं, फिर उठीं और फिर रस में भरी-सी एक बार प्रियतम को देख झुक गईं।

हाथ उठे। कलाई में सूत-सी पतली चूड़ियों का लच्छा, हाथीदांत का कड़ा और बाजूबंद। गुदगुदी, गोरी, गुलाबी बांह उठी और फिर लौट गई।

हिचक कर पीछे हटी दुलहन को भगवान ने देखा, पांवों में झांझन हैं। मेंहदी की लाली लिये तलवों की लाली एक झपकी-सी दे गई। भगवान कह उठा, "तुम सचमुच चित्र हो!"

कुछ देर बाद वधू ने कमरे में नज़र दौड़ाई तो देखा — फर्श पर भी मोतिया के फूलों की एक पगडंडी दरवाजे से पलंग तक बना दी गई है। पगडंडी के दोनों किनारों में लगे हैं गुलाब।

सामने ही, दरवाजे के दोनों ओर की दीवार पर दो रंगीन खड़िया से बने चित्र हैं। एक चित्र के नीचे लिखा है, "यह पग-ध्वनि मेरी पहचानी!" चित्रमें एक अशोक-वृक्ष के नीचे, भगवे वस्त्र पहने एक युवक सितार हाथ में लिये आंखें बंद किये बैठा है, जैसे सितार बजा रहा हो। कुछ दूर एक पनिहारिन, जूड़े में पीले फूलों का एक गुच्छा सजाये, हरी चुनरी, लाल अंगिया, और, आसमानी लहंगा पहने, सिर पर घड़ा लिये मदमाती-हंसती चली आ रही है। लहंगे का झोल बताता है कि वह चल ही नहीं रही, नाच भी रही है। और गायक जैसे कह उठता है, "यह पग-ध्वनि मेरी पहचानी!"

चित्रलेखा ने देखा, दूसरे चित्र के नीचे लिखा था "साथी, सो न, कर कुछ बात!" भीत से टिका

'यह पग-ध्वनि मेरी पहचानी!'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठा है एक भिखारी और उसके घुटनों पर सिर रखे सो रही है एक भिखारिन। भिखारी के गले में थेगली लगा कुरता है, फटी धोती, जो घुटनों से कुछ नीचे उतर कर रुक गई है। बाल बढ़े थे, भूरे, घुंघराले, उलझे। भिखारिन फटी, थेगली लगी धोती, धोती में से झलकती एक कुरती, आंखें बंद, ओंठ खुले, हाथ छाती पर; जैसे सो रही हो और भिखारी कह उठा है, "साथी, सो न, कर कुछ बात!"

उसने सुना था कि उसका पति चित्रकार है; अब उसने समझा, चित्रकार कैसा है! वह मुग्ध हो उठी।

कलाकार अपनी कला से प्रेयसी को मोह रहा था।

दाईं ओर की दीवार पर बादलों पर उड़ते हंसों का एक झुंड। बाईं ओर फूलों से भरी एक फुलवारी और नीचे सामने कुछ घास, जिस पर सफेद रुई-सी कलगियां जैसे फूल खिल रहे थे।

* * *

रोज रात जब चित्रलेखा कमरे में आती, तो फर्श पर एक नया चित्र बना पाती। कभी रंगीन चित्र होता तो कभी काले चाक से बना व्यंग-चित्र। कभी तो चित्रलेखा रंगों के खिलवाड़ में खो जाती और कभी हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाती। रंगीन दृश्यों में वह प्राकृतिक सौंदर्य देखती और काले व्यंग-चित्रों में बेतहाशा हँसने का सामान।

चित्रलेखा, चित्र प्रिया बनती जा रही थी। चित्रकार को अपनी कला पर विश्वास होता जा रहा था।

* * *

चित्रकार और चित्रलेखा के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम रखा गया चित्रगुप्त।

पांच वर्ष का होते होते चित्रगुप्त के पास अपने पिता के हाथों से बने रंगीन चित्रों के तीन एल्बम थे। एक में पशु-पक्षियों के, तितलियों के और भिन्न-भिन्न देशों के निवासियों के अपनी अपनी पोशाक पहने बहुत से चित्र थे। दूसरे एल्बम में भारतीय इतिहास के कुछ वीरों और वीरांगनाओं के चित्र थे, जिनकी कहानियें चित्रगुप्त ने बार-बार अपने पिता से सुनी थीं। और तीसरी पुस्तक थी वर्णमाला और गणित के अंकों से परिचित कराने के लिये।

कलाकार चित्रगुप्त को इस प्रकार शिक्षा दे रहा था।

* * *

चित्रगुप्त की पन्द्रहवीं वर्ष-गांठ के दिन भगवान ने उसे एक और चित्रावली भेंट की। इन चित्रों में उसने पुरुष और स्त्री की शरीर-रचना, उनके शारीरिक अंतर, शारीरिक-सम्बन्ध आदि का प्रदर्शन किया था। उन चित्रों के नीचे भगवान ने शरीर-विज्ञान और काम-विज्ञान के सम्बन्ध में ज्ञातव्य बातें भी लिखी थीं।

चित्रावली भेंट करते हुए भगवान ने कहा, "चित्र, यदि इन चित्रों के सम्बन्ध में तुम कुछ पूछना चाहो तो मुझसे या लेखा से निस्संकोच पूछ लेना। प्रत्येक युवक को इनका सम्यक् ज्ञान होना चाहिए।"

और जब चित्रगुप्त ने कुछ पूछा तो भगवान ने उसे साफ-साफ बता दिया।

कुछ चित्रों को देख कर चित्रगुप्त को बहुत घृणा हुई। एक पुरुष था, जिसका सारा शरीर फोड़े-फुन्सियों से फला पड़ा था, नाक गल गई थी, नग्न शरीर पर मक्खियां बैठी थीं।

भगवान ने बताया—"यह चित्र एक ऐसे पुरुष का है, जिसने न सिर्फ नारी-जाति को ही खरीदने और भोगने की वस्तु समझा, बल्कि उसने अपने को और अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी बहुत भयानक बीमारियों में फंसा दिया है।"

चित्रगुप्त ने पूछा, "इसका इलाज क्या है, पिता जी?"

"बहुत से हकीम-डाक्टर इसका इलाज करते हैं और करने का दावा भी करते हैं, परन्तु उनका इलाज अस्थायी इलाज है, स्थायी नहीं। इसका स्थायी इलाज है वर्त्तमान समाज-व्यवस्था का आमूल परिवर्तन।"

"समाज-व्यवस्था का?"

"हां, समाज की अव्यवस्था के कारण ही यह घातक बीमारियें फैलती हैं। यूरोप के कुछ देशों में तो इस प्रकार की बीमारियें साठ-सत्तर और अस्सी प्रतिशत तक लोगों को हैं।"

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब भगवान ने इन बीमारियों के एक पुश्त से दूसरी पुश्त में पहुंचने का तथा उनके कीटाणुओं की संक्रमणशीलता का उसे बोध कराया।

"परन्तु यदि स्त्रियों और पुरुषों के खून में पहले से इनके कीटाणु हों, तब तो कोई हानि नहीं होती?"

"होती है, सम्पूर्ण मानव-समाज को उससे बहुत बड़ी हानि होती है। मनुष्य यदि इस संसार को सुख-शान्ति-पूर्ण जीवन के योग्य बनाना चाहता है तो उसे अपने सामने अपना ध्येय निजी या जातीय या राष्ट्रीय समृद्धि नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव-समाज की उन्नति रखना होगा। तब उसे परिवारों, जातियों और देशों की सीमाओं को नष्ट करके पृथ्वी के सब मनुष्यों का एक संयुक्त समाज बनाना होगा। उस समाज में काले-गोरे, पीले-भूरे, हिन्दू-मुसलमान, सिक्ख-ईसाई, हिन्दुस्तानी-चीनी, अंग्रेज-जर्मन, ऐशियायी-युरोपियन आदि भेदों को मिटा देना होगा। उसके लिये अन्तर्जातीय, अंतर्राष्ट्रीय विवाह होंगे; नहीं तो इन सीमाओं को नष्ट नहीं किया जा सकेगा। उस अवस्था में इस तरह की बीमारियों को खून में लिये जातियें और व्यक्ति उस संयुक्त अन्तर्राष्ट्रीय मानव-समाज के लिये बहुत ही हानिकारक होंगे।"

* * *

एम० ए० पास करते करते चित्रगुप्त अपने कालिज का सर्वश्रेष्ठ, सर्व-प्रिय कवि बन चुका था। उसने सैकिंड इयर में अपनी पहली कविता लिखी थी, जिसका शीर्षक था 'मां'। लेखा और भगवान ने जब उसे सुना तो उनकी आंखों में आंसू आ गये और उन्होंने उसे गले से लगाया। और जब चित्रगुप्त ने उस कविता को अपने कालिज में सुनाया, तो वहां भी उसने लोगों को मुग्ध कर दिया। किसी ने समझा, वह कविता 'भारत-माता' पर लिखी गई है, किसी ने समझा वह उसने अपनी मां पर लिखी है, परन्तु दोनों ही प्रकार के लोग समझ गये कि चित्रगुप्त कवि होगा। और ऐसा ही हुआ भी।

एम० ए० के परीक्षाफल वाला अखबार लेकर जब चित्रगुप्त घर पहुंचा, तो उसके पिता ने समझ लिया कि वह सफल रहा है। उन्होंने कहा, "चित्र, इस शुभ अवसर पर भी मुझे तुमको एक भेंट देनी है। अब तक मैं तुम्हें निर्जीव चित्र भेंट करता रहा हूँ, आज तुम्हें एक सजीव भेंट देना चाहता हूँ।" और भगवान ने दाईं ओर के दरवाजे की ओर देख कर कहा, "बेटी चित्रांगदा, आओ बेटी!"

चित्रगुप्त ने देखा, दरवाजे का परदा हटा और पूर्णिमा सामने आ खड़ी हुई।

"पूर्णिमा, तुम?" चित्रगुप्त आश्चर्य-चकित रह गया।

पूर्णिमा ने सिर झुका लिया।

"परन्तु यह तो पूर्णिमा है, पिता जी," चित्रगुप्त ने भगवान से कहा।

"अब इसका नाम चित्रांगदा है, चित्र!"

पूर्णिमा चित्रगुप्त के कालिज की बी० ए० की छात्रा थी। चित्र उसे प्रेम करता था और यह रहस्य उसने अपनी मां को बता दिया था।

'बेटी चित्रांगदा, तुम्हें मैं अपना सर्वश्रेष्ठ चित्र, अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना—अपना बेटा भेंट देता हूं, इसे स्वीकार करती हो!" भगवान ने चित्रांगदा से पूछा।

लज्जारुण चित्रांगदा मूक खड़ी रही।

"संकोच न करो, बेटी!" चित्रलेखा ने कहा।

चित्रांगदा (पूर्णिमा) ने संकोच से सिर झुका कर, जरा-सा सिर हिला कर स्वीकृति दे दी।

"और तुम, चित्र?" मां ने पूछा!

चित्र की प्रसन्नता की तो सीमा ही नहीं थी। उसने पूछा, "कब, मां?"

"कब क्या बेटा? विवाह?" पिता ने पूछा।

चित्र ने जरा-सा हंसते हुए कहा, "जी!"

"आडम्बर की, प्रदर्शन की, पंडित, हवनकुण्ड और साक्षियों की इसमें क्या आवश्यकता है, चित्र? तुम दोनों को स्वीकार है, इतना ही काफी है।"

"परन्तु इसे क्या समाज और कानून स्वीकार करेगा?" चित्रलेखा ने पूछा।

"वर्त्तमान समाज तो उपेक्षा की ही वस्तु है, लेखा। और विदेशी शासकों का बनाया कानून भी कोई कानून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उन्हीं के नियमों को मानने लगें, तो क्या यह आत्मव्यंग नहीं ?"

सब चुप रहे।

"फिर भी यदि तुम दोनों चाहो कि पुराने ढर्रे से ही तुम्हारा विवाह हो, तो मैं कोई बाधा नहीं डालूंगा।" भगवान ने चित्रगुप्त और चित्रांगदा (पूर्णिमा) की ओर देख कर कहा।

लेखा ने पूछा, "बाधा तो न पहुँचावेंगे, परन्तु उससे असहयोग तो नहीं करेंगे ?"

"वह तो करूंगा ही। अपने विचारों को दूसरों पर थोपना मैं अनुचित समझता हूँ; परन्तु जिसे उचित समझता नहीं, उसे मानूंगा भी नहीं।"

"मैं आपसे सहमत हूँ, पिता जी।" चित्र ने कहा।

"और तुम, चित्रांगदा ?" भगवान ने पूछा।

"जी, मैं भी।"

"सोच लो। उससे कभी कठिनाइयां भी उत्पन्न हो सकती हैं। समाज उसे बहुत से बुरे बुरे नाम देगा, कानून तुम्हारे विवाह को, तुम्हारी संतान को रक्षा नहीं देगा।"

"उसकी चिंता मुझे तो नहीं," चित्रगुप्त ने कहा।

"मुझे भी नहीं," पूर्णिमा ने कहा।

"तुम्हारा यह निश्चय तभी दृढ़ हो सकता है जब कि तुम दोनों अपने को पति-पत्नी नहीं, बल्कि दो साथी समझो। तुम्हारे सामने एक विशाल कर्मक्षेत्र खुला है, तुम्हें उसको साथ-साथ पार करना है। वह तभी सम्भव होगा, जब तुम पति को स्वामी और पत्नी को दासी के रूप में नहीं,, बल्कि जीवन-सखा और जीवन-संगिनी के रूप में स्वीकार करोगे। अपने नहीं, दूसरे साथी के अधिकारों का ही ख्याल तुम्हें रखना होगा और दूसरे साथी के नहीं, अपने ही कर्त्तव्यों को तुम्हें ध्यान में रखना होगा। यदि तुमने यह समझ लिया और इसे अमल में लाये, तो तुम्हें पूर्ण सफलता होगी।" भगवान ने कहा।

चित्रांगदा मंत्र-मुग्ध-सी भगवान की बातें सुन रही थी।

"मैं ठीक कह रहा हूं, चित्रांगदा ?"

"जी।"

"मेरे समीप आओ।"

वह समीप आई।

"तुम भी," चित्रगुप्त को भगवान ने कहा।

वह भी आया।

"अपने सामने तुम्हारा कर-बंधन देखना चाहता हूँ।"

चित्र ने अपना हाथ चित्रांगदा (पूर्णिमा) की ओर बढ़ाया। "लाओ, पूर्णिमा !" चित्र ने कहा।

"पूर्णिमा नहीं, चित्रांगदा।" भगवान ने कहा।

"लाओ, चित्रांगदा !"

चित्रांगदा ने भी अपना हाथ बढ़ाया।

"देखती हो लेखा ?" भगवान ने कहा।

"हां, देखती हूँ।" लेखा की आंखें आनन्द से छलक आईं।

भगवान ने लेखा के पास जाकर कहा, "चलो, लेखा चलें।"

"कहां ?"

"अब यह घर इनका है।"

"आप कहां चलेंगे, पिता जी ?" चित्र ने पूछा।

"गांव की जमीन है न, चित्र, हम दोनों अब वहां रहेंगे। तुम्हारी शिक्षा पूरी होने तक ही मेरा यहां रहने का विचार था, अब वह पूरा हो गया है। मेरी इच्छा है, अब प्रकृति की गोद में रहूं।" भगवान ने कहा।

"हमें छोड़ जायेंगे, पिता जी ?"

"इसे छोड़ना नहीं कहते, चित्र ! मेरा काम था तुम्हें शिक्षित और स्वावलम्बी बना कर जीवन संघर्ष के लिए समर्थ बनाना। आज तुम इस योग्य हो और तुम्हें तुम्हारी जीवन-संगिनी भी मिल गई है। अब तुम्हें मेरी ओर देखना छोड़ देना होगा। अपना कर्त्तव्य मैंने पूरा किया है। तुम्हारा कर्त्तव्य तुम्हारे सामने है, उसे समझो और पूरा करो।"

"यही होगा, पिता जी !" चित्र ने कहा।

भगवान ने लेखा का हाथ पकड़ा और कहा, "चलो, लेखा, चलें। प्रकृति हमें बुला रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखा ने अपने पुत्र और अपनी नव-पुत्र-वधू की ओर देखा।

"मां!" कह चित्र मां के पास आ गया। मां ने उसे छाती से लगाया। दोनों की आंखों से आंसू बह रहे थे।

"इधर आओ, बेढी!" लेखा ने चित्रांगदा को बुलाया और उसे भी अपनी बाहों में ले लिया। चित्रांगदा लेखा के कंधे पर सिर रख कर रो दी। "दोनों सुखी रहो!" लेखा ने रुंधे गले से कहा।

"मां!" चित्रांगदा ने कहा।

"मां, तुम हमें भुला तो न दोगी?"

"अपने को भी कोई भुला सकता है, बेटा! तुम मेरे हृदय के ही तो दो टुकड़े हो!"

चित्रांगदा ने लेखा की छाती में अपना अश्रु सिक्त मुंह छिपा लिया और सिसकते हुए कहा, "न जाओ, मां!"

"मेरा साथी, जीवन-साथी जो कहता है, ठीक कहता है, बेटी!"

भगवान ने आगे बढ़ कर चित्रगुप्त और चित्रांगदा के सिर पर हाथ फेरा। चित्र मां की बांह में से निकल कर पिता की ओर आना चाहता था कि पिता ने हाथ बढ़ा कर उसका हाथ पकड़ दबा दिया। चित्रांगदा मुड़ी, झुक कर उसने पांव छूने चाहे, भगवान ने उसे बांह में लेकर कहा, "सुखी रहना, चित्रांगदा! तुम्हारा चित्र कवि है—तुम उसकी प्रेरणा बनना!"

* * *

उसी शाम।

एक बहली कच्ची सड़क पर गांव की ओर चली जा रही थी। उसमें भगवान के कंधे पर सिर रखे लेखा बैठी थी — आंखें बन्द किये, शान्त, सुखी, संतुष्ट। और भगवान देख रहा था सूर्यास्त को, घोंसलों को लौटते पक्षियों को और शान्त, स्तब्ध वृक्षों को!

* * *

दलीपा, गांव में जाने के कुछ ही दिन बाद, भगवान को भा गया। भगवान ने देखा कि दलीपा न केवल सवर्णों द्वारा ही समाज से निकाला गया है, क्योंकि वह चमार था, बल्कि उसकी जात वालों ने भी उसे बिरादरी से बाहर निकाल दिया है, क्योंकि उसने एक मछिहारे की लड़की को अपने घर ला रखा है। जात बिरादरी वालों ने उसको पंचायत बैठा कर जब जात-बाहर कर दिया, तो उन्हें आशा थी कि वह पश्चात्ताप करेगा, बिरादरी को न्योता देगा, जुर्माना देगा या कम से कम जूती सिर पर रख कर, मुंह में तिनका रख कर पंचों के सामने गिड़गिड़ायेगा, परन्तु दलीपा ने वह सब न किया और कह दिया, "मैंने जो कुछ किया है, उसके लिये मुझे पछतावा नहीं।" तो बिरादरी वाले झुंझला उठे। दलीपा को बिरादरी का कुछ भय होता, तो बिरादरी वालों का अनुशासन उस पर चलता, परन्तु दलीपा के विद्रोही हो जाने पर सिवा अपने पर ही गुस्सा उतारने के उनसे और कुछ न हो सका। दलीपा अपनी मछिहारिन पत्नी—लछमों के साथ रहने लगा और उसने अपना संसार उसमें ही सीमित कर लिया।

भगवान को अपनी चप्पलें ठीक करवाने के लिए एक दिन चमारों की बस्ती में जाना पड़ा। वहां वह दलीपा के मकान के सामने ही जा पहुँचा।

दलीपा ने कुछ चकित-सा होकर भगवान को देखा और कहा, "हम नहीं बनाएँगे।"

"भाई, मैं पैसे दूंगा।"

"तो भी नहीं बनायेंगे?"

"क्यों?"

दलीपा न कह सका कि जिन गांव वालों ने उसको जाति से निकाल कर उसका अपमान किया है, वह उनसे कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहता। लेकिन उसने कहा, "आगे जाओ, महाराज!"

भगवान ने जानना चाहा कि क्यों यह आदमी इस प्रकार उसे टाल रहा है। एक अन्य चमार पास ही खड़ा यह सब सुन रहा था। उसने कहा, "हम बनायेंगे। यह नहीं बनायेगा।"

"मैं इसी से बनवाऊंगा।"

"यह नहीं बनायेगा—जात-बाहर है।"

"क्यों?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका उत्तर किसी ने न दिया। दलीपा अपनी झोंपड़ी में चला गया। भगवान को दूसरे व्यक्ति से दलीपा का कुछ इतिहास मालूम हुआ।

भगवान फिर दलीपा की झोंपड़ी पर गया और उसे पुकारा। दलीपा बाहर निकला तो भगवान ने कहा, "भाई, मेरी चप्पल नहीं बनाओगे ?"

कुछ इस प्रकार उसने कहा कि दलीपा मना न कर सका। खाट की ओर इशारा करके बोला, "बैठो, बनाता हूँ।"

कुछ ही देर में उसने चप्पल सीकर भगवान के पांवों में पहना दी। भगवान ने कहा, "मेरे साथ चलोगे ? एक चमड़े का बैग है, उसमें कुछ सिलाई करनी है। मना नहीं कर सकोगे—और मैं तुम से ही बनवाऊंगा।"

दलीपा ने सोचा कि मना कर दे, परन्तु जिस आत्म-विश्वास के साथ भगवान ने आग्रह किया था, उसकी उपेक्षा करते भी उससे न बना।

तब भगवान दलीपा को घर ले गया। चमड़े का बैग सुधरवाने के बाद भगवान ने दलीपा को खाना खाने का भी निमन्त्रण दिया। दलीपा की समझ में न आया कि भगवान उसे इस प्रकार की असम्भव और जाति-विरोधी बात के लिये क्यों मजबूर कर रहा है। उसने कहा, "मुझे दे दो, घर पर जा के खा लूंगा।"

"यहां क्यों नहीं खाते ?" भगवान ने कहा।

"लछमों बना के बैठी होगी।"

"कौन लछमी ? तुम्हारी पत्नी ?" लेखा ने पूछा।

दलीपा ने सिर हिला कर स्वीकार किया।

"उसे यहां नहीं ला सकते ?" लेखा ने पूछा।

"वह क्या करेगी ?" दलीपा ने पूछा।

"कल सुबह तुम दोनों यहीं खाना खाना मैं बना के तैयार रखूंगी, अगर नहीं आये तो मुझे स्वयं तुम्हारे घर आना पड़ेगा।" लेखा ने आग्रह से कहा।

दलीपा बहुत कुछ सोचता हुआ लौट गया।

* * *

भगवान और दलीपा का परिचय कुछ ही दिनों में बहुत बढ़ गया। उधर लेखा ने लछमों से भी काफी सखी-पन कायम कर लिया था।

एक दिन लेखा ने कहा, "दलीपा और लछमों का एक चित्र क्यों नहीं बनाते, जोड़ी कितनी अच्छी है!"

बात भगवान को जँच गई। भगवान ने कई दिन प्रयत्न करके दलीपा और लछमों को इस बात पर राजी किया और तब चित्र बनाना आरम्भ किया।

जिस दिन सुबह चित्र बन कर तय्यार हुआ, भगवान और लेखा बैठे सोच रहे थे कि उसको नाम क्या दिया जाय। तभी दरवाजे के सामने एक बहली आकर ठहरी और साथ ही चित्रगुप्त और चित्रांगदा की आवाज आई।

"मां!" चित्रगुप्त चिल्लाया।

"पिता जी!" चित्रांगदा ने पुकारा।

"बेटा!" लेखा चौंक कर उठी और जल्दी जल्दी दरवाजे की ओर लपकी। पीछे पीछे मुसकराता भगवान भी लपका।

दरवाजे में ही लेखा ने बेटे और बहू को बाहों में भर लिया। भगवान ने उसी अवस्था में दोनों के सिर पर हाथ फेरा।

"अचानक आ गये, बेटा! खबर भी नहीं दी ?" लेखा ने पूछा।

"हां मां! हमने सोचा अचानक पहुँचेंगे तो कितनी खुशी होगी!" चित्रगुप्त ने कहा। इसी समय उसकी दृष्टि कमरे के दूसरी ओर ईजल पर लगे चित्र पर गई। उसने पूछा, "क्या नया बनाया है ?"

"हां आज ही पूरा हुआ है। हम अभी यही सोच रहे थे कि इसको नाम क्या दिया जाय।"

चित्रगुप्त ने चित्र के समीप जाकर कुछ मिनट लगातार देखते रहने के बाद कहा, "बताऊं ?"

"बताओ।" भगवान ने कहा।

"मधुमास।"

लेखा ने कहा, "बहुत सुन्दर!"

चित्रांगदा ने कहा, "मैं भी कहूँ ?"

"कहो," भगवान ने मुसकराते हुए कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सतयुग !"

भगवान ने कहा, "सतयुग 'मधुमास' से कहीं अधिक उपयुक्त है।"

"मैं स्वीकार करता हूँ।" चित्रगुप्त ने कहा। कुछ रुक कर वह बोला, "पिता जी, इसे मैं ले जाऊंगा। मेरा कवितासंग्रह छप रहा है, उसके मुख-पृष्ठ के लिये यह बहुत सुन्दर रहेगा।"

"परन्तु यह वापस मुझे मिल जाना चाहिये। जिनका यह चित्र है, इसे मैं उनको ही भेंट करना चाहता हूँ।"

* * *

उसी शाम दलीपा और लछमों को बुला कर जब उनका चित्र उन्हें दिखाया गया, तो उन्हें विश्वास न हुआ कि वह भी इतने सुंदर दीख सकते हैं। वही फटे-मैले कपड़े, वही रूखे बाल, वही टूटी झोंपड़ी; परन्तु वास्तविकता और चित्र में कितना अंतर था। दलीपा ने एक बार लछमों की ओर देखा। उसे अनुभव हुआ कि उसने अपनी पत्नी को आज तक इतना सुन्दर नहीं समझा था। आज उसे लगा कि लछमों बहुत ही सुन्दर है। उसने यदि उसके लिये जात-बिरादरी को छोड़ा तो कुछ बुरा नहीं किया। उसने निश्चय किया कि आज तक कभी-कभी वह अपने किये पर पछताता भी था, परन्तु अब कभी नहीं पछतावेगा।

भगवान ने कहा, "यह तुम्हारे ही लिये बनाया है, दलीपा। इसे अपने घर ले जाओगे?"

"मैं क्या करूंगा?"

"अपने घर में लगा लेना।"

"वहां क्या अच्छा लगेगा?"

"जहां तुम और लछमों अच्छे लगते हो, वहां यह क्यों नहीं अच्छा लगेगा?"

"वहां खराब हो जावेगा।"

"नहीं यह वहीं रहेगा। एक बात और भी कर सकते हो। इसे शहर में जा कर बेच आओ। लेकिन यह तुम्हारी ही चीज है, बेचना चाहो तो उसका दाम तुम्हारा ही होगा।"

"नहीं बाबू जी, हम किस लायक हैं।"

"ऐसा न कहो, दलीपा। तुम हमारे भाई हो। यह सचमुच मैंने तुम्हारे ही लिये बनाया है।" चित्रगुप्त की ओर देखते हुए भगवान ने कहा, "तुम इस चित्र को छापने के लिये क्या दोगे? यह दलीपा की सम्पत्ति है, इसलिये उसको ही इसका मूल्य मिलना चाहिये।"

"पचास दे सकूंगा।"

"कितने दिन में वापस कर दोगे?"

"एक सप्ताह में।"

"पैसे कब दोगे?"

"अभी भी दे सकता हूँ।"

"दे दो।"

चित्र ने बटुआ निकाल कर पचास रुपये दलीपा की ओर बढ़ाये। दलीपा ने हाथ जोड़ कर, हाथों को माथे तक ले जा कर कहा, "नहीं महाराज!"

"नहीं क्या? ले लो दलीपा। यह तुम्हारा हक है।"

चित्रगुप्त ने रुपये दलीपा के कंधे पर रखी चादर के छोर में बांध दिये और कहा, "एक हफ्ते में तस्वीर तुम्हें मिल जावेगी।"

"उसे आप ही रख लो, मैं क्या करूंगा।"

"नहीं वह तुम्हारी और लछमों बहन की है, दलीपा," भगवान ने कहा।

* * *

घर में आ कर दलीपा और लछमों न जाने क्यों बहुत देर तक एक दूसरे के आंसू पोंछते रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनशन का बढ़ता

इस समय देश में अनशन करने की ओर लोगों की प्रवृत्ति बहुत झुक गई है और आये दिन हम समाचारपत्रों में पढ़ते रहते हैं कि अमुक स्थान में अमुक महाशय अनशन कर रहे हैं। यों तो महात्मा गांधी ने ही अनशन का महत्व और उसकी पवित्रता समझ कर उसे अपनाया था और जिस बात के लिए वे अपना अनशन करते थे, वह पूर्ण भी हो जाती थी। अनशन का प्राचीन महत्व है। अनशन करना भी एक तपस्या है। बुद्ध, ईसा व मुहम्मद ने ईश्वर के दर्शनों के लिए अनशन किए थे। भगवान रामचंद्र जी ने इस लिए अनशन किया था कि समुद्र उनकी सेना को लंका जाने के लिए मार्ग दे दें। पार्वती जी ने भी अपने स्वामी शंकर को पाने के लिए अनशन किया था। रामायण तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों में जब हम उन अनशनों का हाल पढ़ते हैं, तो हमें आश्चर्य मालूम होता है और हम सोचने लगते हैं कि क्या सचमुच इतनी तपस्या की गई होगी। महात्मा गांधी ने भी उन्हीं लोगों का अनुसरण किया था। उन्होंने अपने जीवनकाल में सत्रह से ऊपर अनशन किए थे और उनका अंतिम अनशन हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए दिल्ली में हुआ था।

अनशन हर कोई नहीं कर सकता और इस शस्त्र का उपयोग करना साधारण बात नहीं है। मामूली मामूली बातों के लिये अनशन करना न उचित है और न लाभप्रद। अनशन तो आध्यात्मिक शस्त्र है, जिसे योग्य आदमी ही उपयोग में ला सकता है। अनशन की महत्ता गांधी जी के बाद उनके शिष्य प्रो० भंसाली ने समझी है। उन्होंने तो अपने जीवनकाल में कई अनशन किए हैं। और हिमालय की गुफाओं में बैठ कर उन्होंने एकांत में साधना भी की है। पर दुनिया को उनके दो ही अनशनों का पता है। पहला अनशन उन्होंने सन् ४२-४३ में आष्टी व चिमूर-काण्ड में स्त्रियों पर हुए अत्याचारों की निष्पक्ष जांच के लिए किया था और यह अनशन ६३ दिन तक चला था, और दूसरा अनशन हाल ही में हैदराबाद में स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों के विरोध में किया था। महात्मा गांधी के बाद आज संसार में शायद ही कोई भंसाली जी के समान अनशनकारी हो, जो इतने दिनों तक बिना भोजन-पानी के रह सके।

पर आज हम देखते हैं कि जिसके मन में आता है, वही अनशन कर बैठता है। कुछ अनशन करने वाले अक्सर यह समझते हैं कि अनशन करने से काम भी हो जायगा और साथ ही साथ नाम भी हो जायगा। कोई जान से थोड़े ही मरने देगा। लोग समझाने-बुझाने आवेंगे ही और अनशन भंग कर दिया जायगा। लेकिन जरा जरा-सी बात पर अनशन करना मेरे ख्याल में तो मूर्खता है। यहां पर हम कुछ अनशनों पर प्रकाश डालेंगे और बतावेंगे कि अनशन का सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन पर क्या असर होता है।

हर्दा के प्रो० महेशदत्त मिश्र ने अनशन कर दिया था और वह इसलिए कि कांग्रेस में अनैतिकता आ गई है—उसे दूर करना चाहिए। और भी कई बातें थीं। बाद में वह अनशन भंग हो गया। क्या कांग्रेस से अनैतिकता दूर हो गई? बिना उद्देश्य पूरा हुए अनशन त्यागना ही नहीं चाहिए और अगर त्यागना ही है तो फिर शुरू ही क्यों किया जाय?

बम्बई में मारवाड़ी विद्यालय के कुछ विद्यार्थियों ने हैडमास्टर के खिलाफ अनशन किया था, क्योंकि वहां विद्यार्थियों को हिंदी पढ़ाने की कोई सुविधा नहीं थी।

वर्धा में एक धोबी था। मकान मालिक ने उसका कुछ सामान ले लिया, क्योंकि उसने किराया नहीं दिया था। किसी ने उस धोबी से कह दिया कि सामान मिलने का एक तरीका है और वह यह कि जिला कचहरी में जाकर अनशन करो। धोबी अनशन करने लगा। सनसनी फैल गई। अधिकारियों ने सामान दिलवा दिया। पर अगर वह अनशन न भी करता तो भी उसका सामान दिलवाया जा सकता था।

पिछले दिनों पत्रों में इस आशय का एक समाचार छपा था कि काशी का 'आर्यवीर-दल' उन लोगों के घरों पर अनशन करेगा जो लोग हिन्दी भाषा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ रोग !

नागरी लिपि का प्रयोग नहीं करेंगे। पता नहीं उस दल ने अपनी वीरता हिन्दुओं के सम्मुख ही प्रदर्शित की, कि मुसलमानों के सामने भी!

अब बताइए इसे क्या कहा जाय? जो बात बिना अनशन के कराई जा सकती है, उसके लिए अनशन की क्या जरूरत है? क्या यह आध्यात्मिक शस्त्र का दुरुपयोग नहीं है?

आजाद हिन्द फौज के भूतपूर्व कर्नल गुरुबख्श सिंह ढिल्लन ने भी अनशन किया था—पूर्वी पंजाब की सरकार ने 'देश-सेवक-सेना' के अध्यक्ष जनरल मोहनसिंह के खिलाफ साम्प्रदायिकता का जो गम्भीर आरोप लगाया था, उसके प्रति विरोध-प्रदर्शन करने के लिये। कुछ दिन हुए मध्य-भारत के प्रसिद्ध कार्य-कर्त्ता श्री कन्हैयालाल वैद्य ने भी अनशन किया था। उक्त अनशन पोस्टल कर्मचारियों की कथित शिकायतों के सम्बन्ध में निष्पक्ष जांच के लिये था।

इधर जेलों में भी बन्दियों द्वारा अनशन किये जाने के समाचार आते रहते हैं। जेलों में अनशन करने की प्रथा नई नहीं है, पुरानी है। स्वाधीनता-संग्राम के दिनों में राजनैतिक बन्दी अपनी मांगों को मंजूर करवाने के लिए जेलों में प्रायः अनशन किया करते थे। सरकार जबर्दस्ती नली द्वारा पेट में दूध पहुँचाती थी। कई तो जेलों में अनशन करके मर भी गये। यतीन्द्रनाथ दास का नाम प्रसिद्ध ही है। हाल ही में टिहरी-जेल में श्री नत्थाराम रतूड़ी ने भूखहड़ताल की थी। भूखहड़ताल का कारण टिहरी मंत्रिमण्डल द्वारा किये जाने वाले दमन का विरोध करना था तथा टिहरी-राज्य को युक्तप्रांत में विलीन करवाना था।

अनशन का रोग किस तेजी से बढ़ रहा है और किस प्रकार अपनी मांगें पूरी कराने के लिये अनशन का सहारा लिया जाता है, इसका एक नया उदाहरण काशी के हिन्दू विश्वविद्यालय की एक घटना है। पत्रों में समाचार यों छपा—

'प्रो० कुमारी दमयन्ती देवी पांच दिन से अनशन कर रही हैं। कहा जाता है कि आपकी नियुक्ति स्थायी हो जानी चाहिए पर अधिकारी इसमें रुकावट डाल रहे हैं। प्रिंसिपल की गुप्त रिपोर्ट आपके विरुद्ध बताई जाती है। आप यह रिपोर्ट देखना चाहती हैं, पर नहीं दिखायी जा रही है।'

पिछले दिनों पत्रों में प्रकाशित अनशन सम्बन्धी एक और समाचार देखिये—

★ श्री उमाशंकर शुक्ल ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अगस्त-क्रान्ति में बिहारी पुलिस-सिपाहियों के नेता श्री रामानन्द तिवारी, जिन पर गत पुलिस विद्रोह के सम्बन्ध में मुकदमा चल रहा है, १६ अगस्त से बांकीपुर जेल में आमरण अनशन कर रहे हैं। उनका कहना है कि यद्यपि हम लोगों पर लगाये गये अभियोग सरासर गलत हैं, तथापि हम लोगों के पास इतने साधन नहीं है कि उन्हें हम लोग गलत साबित कर सकें। कहा जाता है कि श्री तिवारी ने इस सम्बन्ध में प्रान्तीय मन्त्रिमण्डल से लिखापढ़ी की है, परन्तु उन्हें कोई उत्तर नहीं प्राप्त हुआ है।'

कभी कभी अनशन करने से बजाय लाभ के नुकसान भी हो जाता है। वर्धा जिले के तीन हैड-कांस्टेबिल अपने ऊपर के अफसर के खिलाफ शिकायत होने के कारण जांच के लिये अनशन करने लगे। वे बताने को तो अनशन करते थे, किन्तु छिप कर दूध व मौसंबी का रस लेते थे। सरकार को यह बात मालूम हो गई। और फिर सरकारी आदमी अनशन कर भी कैसे सकते हैं—अनुशासन भंग जो होता है। वे तीनो नौकरी से हटा दिये गए।

सारांश यह है कि अनशन को लोगों ने बहुत साधारण समझ लिया है। परन्तु सचाई यह है कि अनशन शुरू करना तो आसान है, पर उसे अन्त तक निभा ले जाना बहुत कठिन है।

इस समय देश में अनशन का जो रोग जोरों से बढ़ रहा, वह देश के लिए लाभप्रद नहीं है। अगर किसी को अनशन करना ही है, तो वह चुपचाप करे। वह क्यों चाहता है कि एसोसिएटेड प्रेस या यूनायटेड प्रेस उसकी खबरें पत्रों में प्रकाशनार्थ भेजें? क्या दुनिया को बताने के लिए अनशन किया जाता है? अनशन तो आत्मा की शुद्धि व शांति के लिए किया जाता है। आशा है, अनशन-रोग का उपचार हमारी सकार कुछ अवश्य करेगी।

★

गीत

श्रीमती शांति एम० ए०

सिंधु से घन दूर कितना?

नेत्र में जल-बिंदु भर भर,
पूछती रहती निरन्तर,
जो सदा रहता हरा उस घाव से मन दूर कितना?
सिंधु से घन दूर कितना?

सीप को जो प्यास देती,
स्वाति को विश्वास देती,
उस मधुर ऋतु से, विरह से व्यग्र सावन दूर कितना?
सिंधु से घन दूर कितना?

देख जिसको ओस के कण,
हँस पड़े थे बालुका बन,
उस तृषित मरुभूमि से है शुष्क जीवन दूर कितना?
सिंधु से घन दूर कितना?

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब लेनिन फरार था···

श्री रतनलाल बंसल

वर्त्तमान रूस के निर्माता व भाग्य-विधाता लेनिन के जीवन का यह पहलू जासूसी कहानी की तरह रोचक एवं रोमांचकारी है।

आधुनिक रूस का राष्ट्रपिता और अखिल विश्व के क्रन्तिकारी समाज का मुकुटमणि लेनिन समस्त संसार में प्रसिद्ध है—मृत्यु से कई वर्ष पश्चात् आज भी उसकी ख्याति और महानता में कोई अन्तर नहीं आया है। पर एक दिन ऐसा भी था, जब लेनिन को जारशाही से अपने प्राणों की रक्षा करने के लिये विदेशों की खाक छाननी पड़ी थी और वहां भी अपनी गतिविधि को रूस के जासूसों की दृष्टि से बचाने के लिये भांति-भांति के नाम और वेश बदल कर उसे रहना पड़ा था। उसके उस अज्ञात-वास के कुछ संस्मरण और घटनाएं उसकी पत्नी क्रुपस्काया तथा दूसरे साथियों ने लेखबद्ध की हैं, जो इतनी रोमांचकारी हैं कि आज भी उनको पढ़ कर रक्त में चींटियां-सी दौड़ने लगती हैं।

* * *

अपने इस अज्ञातवास-काल में लेनिन वर्षों तक पेरिस में रहा था। और यदि आज भी आप पेरिस के मोंपारनास मुहल्ले के सस्ते कहवाखानों में जायें, तो वहीं आपको ऐसे स्थान दिखलाये जा सकते हैं, जहां बैठ कर लेनिन अपने आग-भरे लेखों को लिखता था और जमीन पर एक टाट का टुकड़ा डाल कर विश्राम कर लेता था। इसी प्रकार जूरिच, लन्दन इत्यादि यूरोप के अन्य दूसरे नगरों में अनेकों ऐसे स्थान हैं, जहां अत्यन्त ही दरिद्रावस्था में लेनिन ने अपने जीवन के दिन बिताये थे। उस समय उसके निकटतम साथी तक नहीं जानते थे कि यह लेनिन है। फरार रहते रहते उसका स्वभाव अत्यन्त वहमी और प्रपंचमय हो गया था और वह प्रत्येक व्यक्ति से सतर्क रहता था।

सन् १९०१-१९०२ में एक बार लेनिन की पत्नी श्रीमती नादेज्दा कोन स्ताण्टिनोवना क्रुपस्काया को लेनिन से मिलने की आवश्यकता अनुभव हुई। पर उसे यह तो ज्ञात ही नहीं था कि लेनिन कहां रहता है। आखिर उसने अनुमान लगाया कि सम्भवतः वह प्राग में मिलेगा। क्रुपस्काया ने अपने संस्मरणों में लिखा है—

"मैं यों ही भ्रम में प्राग पहुंची और समझी कि वह वहीं मोद्रान्सेक नाम से रहता है। मैं एक बड़े मकान की चौथी मंजिल पर चढ़ी और मेरे किवाड़ खटखटाने पर एक चेक महिला ने मेरे आने का कारण पूछा। मैंने कहा, 'मैं मोद्रन्सेक, हर मोद्रान्सेक से मिलना चाहती हूँ।' इस पर एक मजदूर मेरे पास आया और उसने भयानक आवाज में कहा, 'क्या काम है? मोद्रा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्सेक मैं हूँ।' उसे देख कर मैं भयभीत हो गई और हकलाती हुई बोली, 'नहीं नहीं! मैं आपको नहीं, बल्कि अपने पति को खोजने आई हूँ।' भाग्यवश मोद्रान्सेक अपने ही दल का था, अतः वह मेरी स्थिति समझ गया और बोला—'ओह! सम्भवतः आप हर रिटमायर की धर्मपत्नी हैं। वह तो म्यूनिच में रहते हैं, किन्तु वह आपको मेरे द्वारा पत्र तथा साहित्य भेजते हैं।'

"सारा दिन मैं मोद्रान्सेक के साथ रही और मैंने उसे रूसी क्रान्तिकारियों की स्थिति से परिचित कराया। मोद्रान्सेक ने मुझे आस्ट्रिया की स्थिति का ज्ञान कराया और फिर शाम को मैं म्यूनिच के लिये रवाना हुई। वहां अपना सामान स्टेशन मास्टर के सुपुर्द करके मैं ट्राम में हर रिटमायर की खोज में चली। मकान मिल भी गया, पर वह तो एक शराबखाना था। मैंने शराबखाने के मालिक के पास जाकर डरते डरते हर रिटमायर के सम्बन्ध में पूछा। इस पर उसने कहा, 'मैं ही तो हर रिटमायर हूँ।' मैं हक्का-बक्का रह गई और मैंने घबड़ाकर कहा, 'नहीं, मैं तो अपने पति को खोज रही हूं।' इस पर हम दोनों एक दूसरे को घूरने लगे, पर इसी समय हर रिटमायर की पत्नी आ गई और सारी स्थिति समझ कर बोली, 'ठीक है, ठीक है! यह हर मायर की स्त्री हैं। यह साइबेरिया से आने वाली थीं और हर मायर कई दिन से इनकी बाट देख रहा है। मेरे साथ चलिये, मैं आपको उसके पास पहुंचा दूंगी।'

"मैं चुपचाप हर रिटमायर की स्त्री के साथ चल दी। वह मुझे एक बड़े मकान में ले गई। यह मकान खाली पड़ा था, पर जिस दरवाजे के सामने हम खड़े हुए, उसे खोल कर लेनिन और उसकी बहिन निकल आये। मेरे क्रोध का ठिकाना न रहा। मैं हर रिटमायर की पत्नी को धन्यवाद देना भी भूल गई और लेनिन को सख्त-सुस्त कहने लगी। इस पर लेनिन ने शान्त-भाव से मुस्करा कर कहा, 'तू यह क्या कह रही है? मैंने तुझे पत्र लिखा था और मैं प्रति दिन तीन तीन बार स्टेशन पर जा कर लौटता रहा हूँ।'

"तब मुझे मालूम हुआ कि लेनिन ने एक पत्र मुझे भेजा था। पर जिस पुस्तक के भीतर वह पत्र भेजा गया था, वह एक बन्धु ने अपने पास पढ़ने के लिये रख ली थी।"

इस घटना से इस बात का भली भांति पता चलता है कि लेनिन अपने आपको अपनी पत्नी तथा अपने आश्रयदाताओं तक से गुप्त रखता था—उन्हें वह अपने सम्बन्ध में केवल वही बातें बतलाता था, जिनको बिना बताये उसका काम नहीं चल सकता था।

* * *

स्थान और नाम बदलने के साथ साथ लेनिन वेश बदलने में भी कमाल रखता था। इस सम्बन्ध में उसकी पत्नी ने लिखा है—

"१९०५ में लेनिन रूस आया और लुक छिप कर क्रांति की आयोजना करने लगा। पुलिस को भी सूचना मिल गई कि लेनिन रूस आ पहुँचा है। एक दिन अकस्मात् पुलिस ने उसका मास्को का निवास-स्थान घेर लिया; पर लेनिन एक बूढ़े यहूदी के वेश में निकला और पेट्रोगाड का रास्ता लिया। मैं जब पेट्रोगाड में उससे मिलने पहुँची, तो मैंने देखा कि पुलिस ने वहां भी उसका मकान घेर रक्खा है और लेनिन को इसका पता नहीं है। उससे मिलने पर मैंने जब उससे यह पूछा कि यह सब क्या मामला है, तो वह सहज भाव से बोला, 'मुझे गिरफ्तार करने आये होंगे। पर चिन्ता की कोई बात नहीं।' उसने तुरन्त ही एक बढ़िया पोशाक पहिनी, हरा चश्मा लगाया और हम दोनों बांह में बांह डाले घर से निकले और गाड़ी पर सवार होकर हम इस प्रकार चले जैसे कोई बड़ा व्यापारी अपनी पत्नी के साथ सैर-सपाटे के लिये जा रहा हो।"

लेनिन वेश बदलने में इतना कुशल था कि प्रायः उस के साथी भी चक्कर में आ जाते थे। सन् १९१७ में जब लेनिन रूस पहुँचा, तो एक बार स्टालिन को उससे मिलने की जरूरत पड़ी। स्टालिन को भारी प्रयत्न करने के पश्चात् यह सूचना मिली कि सेस्त्रो-रेस्क में एमोलियानोफ से मिल कर और उसे दल का बोध-चिन्ह दिखा कर लेनिन का ठिकाना मालूम हो सकता है। स्टालिन बहुत ही सतर्कता के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

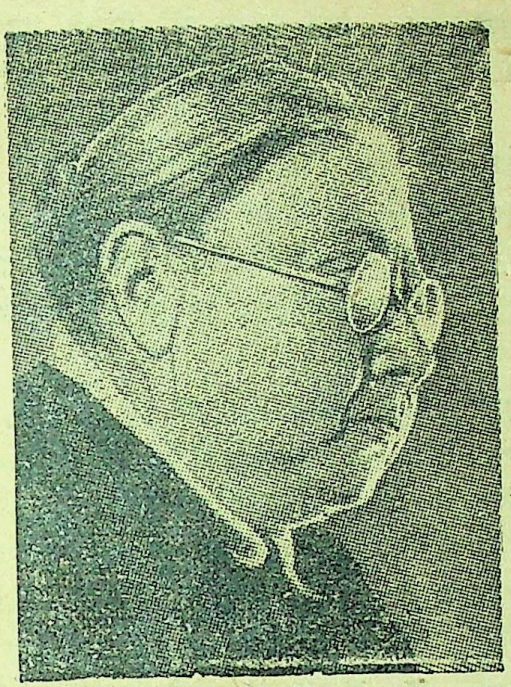

लेनिन की पत्नी श्रीमती क्रुप्सकाया

सेस्त्रोरेस्क पहुँचा और उसने लियानोफ के घर पर दस्तक दी। लियानोफ उस समय घर पर न था, इस लिये उसकी पत्नी से स्टालिन की भेंट हुई। स्टालिन उसे अपना परिचय देते समय गड़बड़ा गया। इस पर लियानोफ की पत्नी ने कहा कि मैं लेनिन का ठिकाना जानती तो हूँ, पर मुझे सन्देह होता है, इस लिये बताऊंगी नहीं। इधर स्टालिन को लेनिन से अवश्य मिलना था, क्योंकि लेनिन के नाम सेन्ट्रल कमेटी का उसके पास एक महत्वपूर्ण सन्देश था। स्टालिन ने उस स्त्री की बहुत खुशामद की, पर जब कोई परिणाम न निकला, तो वह हताश होकर वापस जाने लगा। इस पर लियानोफ की स्त्री को कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि यह व्यक्ति धोखेबाज नहीं है और उसने अपने बारह वर्ष के बच्चे को स्टालिन के साथ जाने को कहा। स्टालिन को वह लड़का एक झील पर ले गया और फिर दोनों एक नाव पर सवार हुए। कुछ ही दूर जाकर एक हवाचक्की के सामने लड़के ने नाव रोक दी और किसी को आवाज देने लगा। कुछ ही देर में एक आदमी भीतर से निकला, जो उस लड़के का बाप था। स्टालिन ने उस आदमी को अपने आने का उद्देश्य समझाया। पर तभी एक दूसरा आदमी स्टालिन के पास आया, जिस की मूंछें थीं, डाढ़ी नहीं थी। उसने स्टालिन को सलाम किया और उसकी पीठ ठोंकने लगा। उसके इस व्यवहार से स्टालिन आश्चर्यचकित सा रह गया और कुछ कुछ भयभीत भी हुआ, क्योंकि उसने इस आदमी को पहले कभी नहीं देखा था। इस पर वह आदमी बोला, "वाह भाई, जर्गो! क्या तुम अब भी मुझे नहीं पहिचान सके?"

और तब स्टालिन ने देखा कि यह आदमी लेनिन ही तो है।

इसी प्रकार १८९१-९२ के आस-पास क्रिमाजेफ नामक एक क्रान्तिकारी के निवास-स्थान पर गुप्त-सभा रक्खी गई। सभा प्रारम्भ ही हुई थी कि किसी ने द्वार खटखटाय। क्रिमाजेफ ने द्वार खोल कर देखा कि एक मजदूर खड़ा है, जिस की आयु तीस वर्ष की होगी, ठुड्डी पर फ्रेंच-कट डाढ़ी, चेहरा गोल और ढोप इतना झुका हुआ कि आंखों तक पहुँच गया है। क्रिमाजेफ इस अपरिचित को देख घबड़ा गया और कर्कश स्वर में पूछा, "क्या चाहते हो?"

"मैं निकोलास पेत्रोविच हूँ!" आगन्तुक ने मुस्करा कर कह। यह लेनिन का दूसरा नाम था।

* * *

विदेशों में वह किस प्रकार अपने को छिपाता था, इसका भी एक मजेदार उदाहरण है।

एक दिन एक विशाल मजदूर-सभा में लेनिन को जाकर भाषण देना है। लेनिन ने भाषण देना स्वीकार तो कर लिया है, पर उसे भय है कि रूसी पुलिस के एजेन्ट मुझे कहीं पहिचान न लें और मेरे ऊपर नजर न रखने लगें। पर सभा में जाना भी तो आवश्यक है और लेनिन के नाम से ही सभा में सम्मिलित होना है, क्योंकि मजदूर इसी आकर्षण से तो सभा में आयेंगे।

ठीक समय पर लेनिन पार्टी के एक दूसरे कार्यकर्त्ता इलीन के साथ सभा में सम्मिलित होता है और व्याख्यान भी देता है। लेनिन घण्टों बोलता है और इलीन को तो बोलना था ही नहीं, अतः वह चुपचाप बैठा रहता है। पर सभा समाप्त होने पर जब इलीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा-भवन से बाहर जाता है, तो मजदूरों को परस्पर यों बातें करते सुनता है, "क्या बात है भाई, यह नाटा आदमी तो फर्राटे का भाषण दे गया और लेनिन बिल्कुल खामोश बैठा रहा !"

इलीन को अब मालूम हुआ कि श्रोता और सम्भवतः वहां उपस्थित पुलिस भी लेनिन को इलीन और इलीन को लेनिन समझ रही थी। लेनिन इसी लिये इलीन को अपने साथ ले गया था।

जब लेनिन और उसकी पत्नी बर्लिन में पूरे जोरशोर से अपना काम चला रहे थे, तो रूसी खुफिया-पुलिस 'ओखराना' के बर्लिन-स्थिति अध्यक्ष क्रासिलनिकोफ ने अपनी १४ जुलाई १९१० की रिपोर्ट में लिखा था, "यहां चालीस ऐसे रूसी हैं, जिन पर राजनैतिक कार्यकर्त्ता होने का सन्देह किया जा सकता है। पर उनमें से एक का भी फोटो लेना असम्भव है, और लेनिन तथा उसकी पत्नी तो कहीं देखने में ही नहीं आते।"

लेनिन की सतर्कता का सब से बड़ा उदाहरण यह है कि लगभग बीस वर्ष तक तो उसके अन्तरंग-मित्र भी यह नहीं जान सके कि लेनिन का वास्तविक नाम व्लादिमिर उल्यानव है। जब वह सन् १९१७ के फरवरी मास में रूस पहुँचा, तो कुछ मित्रों को इस नाम का बोध हुआ और उसी साल के अक्तूबर मास में जब बोल्शेविकों की विजय हुई, तब लेनिन का यह नाम जनता जान सकी। उस समय तक कुछ लोग उसे 'स्टारीक' के नाम से जानते थे और कुछ क्षेत्रों में वह 'निकोलास पेत्रोविच' के नाम से विख्यात था। उसी समय 'नोवोइये स्लोवो' नामक पत्र में वह कभी 'टूलीन' और कभी 'व्लादीमिर ईलीन' के नाम से लेख लिखता था और कुछ अन्य पत्रों के सम्पादक उसे 'कोर्पोफ' के नाम से पहिचानते थे।

लेनिन को प्रायः एक देश से दूसरे देश को भागना पड़ता था और तब वह हमेशा नकली नामों से पासपोर्ट लेता था। क्रिमाजेफ ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि १८९३ में अपनी स्वर्गीया दादी की सम्पत्ति पर अधिकार करने जब में रूस आया, तो मित्रों के आदेशानुसार कजाक स्ट्रीट के ११ नं० के मकान में उलियानोफ नामक वकील से मिलने गया। पर उसे देखते ही मैं समझ गया कि यह तो लेनिन है। और जब मैंने लेनिन से अपने मन की बात कही, कि भाई तुम तो लेनिन हो, जबकि मैं उलियानोफ वकील से मिलने आया हूं, तो लेनिन ने मुंह पर उंगली रख कर कहा, "चुप ! मैं ही उलियानोफ हूँ।" इसके बाद दूसरे ही दिन वहां उलियानोफ वकील का भी पता नहीं था।

लेनिन अपने पत्र-व्यवहार में भी बड़ा सतर्क रहता था। प्रायः वह किसी पुस्तक के विशेष शब्दों पर चिन्ह लगा देता था, जिनको एक स्थान पर लिख लेने से पत्र बन जाता था। पर वह पत्र भी एक स्पेशल 'कोड' में होता था। पासपोर्ट के लिये उसने बहुत दिनों तक रूमाल शब्द का व्यवहार किया। इसी प्रकार उग्र साहित्य के लिये 'गरम पशम' टेवर नगर के लिये 'टेरेन्स' और पसकोफ के लिये 'पाशा' शब्द का व्यवहार होता था। यह शब्द जल्दी ही बदल भी दिये जाते थे।

* * *

किन्तु जो जासूस लेनिन के पीछे लगे रहते थे, वे भी कम चतुर और साहसी नहीं थे। एक बार लन्दन के किसी होटल में लेनिन का व्याख्यान होने वाला था। लेनिन के पीछे रहने वाले जासूस को इसकी सूचना मिल गई। पर वह उस कमरे में प्रवेश कैसे कर सकेगा ? अन्त में वह सभा से कई घण्टे पहिले ही कमरे की एक अल्मारी में छिप कर बैठ गया और लेनिन के भाषण की पूरी रिपोर्ट ले आया। पर गुप्तचर-विभाग में ऐसे साहसी व्यक्ति कम ही थे।

लेनिन को ऐसे जासूसों से बचने के लिए दसियों बार अपने जीवन को भीषण खतरों में डालना पड़ा। वह एक देश से दूसरे देश की हद प्रायः मोटर ड्राइवर के रूप में पार करता था। किन्तु एक बार जब वह फिनलैंड में रहता था और पुलिस को पता लग जाने के कारण स्टाकहोम जाना चाहता था, तो उसने जहाज से जाने में खतरा देखा। लेनिन

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसपान

श्री आरसीप्रसाद सिंह

आज आया हूँ किसी के रूप-रस का पान कर मैं!
एक नूतन इन्द्रधनुषी सृष्टि का निर्माण कर मैं!

टूटता आलस्य से प्रत्यङ्ग, रोमावलि थकी है;
है खिंचे डोरे नयन के, और नस-नस रस छकी है!
होश की बातें नहीं, कुछ गुनगुनाता जा रहा हूं;
झूम वासन्ती पवन-सा लड़खड़ाता जा रहा हूं!
भार हलका कर चुका सर्वस्व अपना दान कर मैं!
आज आया हूँ किसी के रूप-रस का पान कर मैं!

दो गुलाबी लोचनों में चिर-प्रतीक्षा-सी भरी थी;
डबडबायी थीं पुतलियां, लग रही श्रावण-झड़ी थी!
देखते ही खिल उठा तत्काल चन्द्रानन मनोरम;
ओस से ढलढल कली पर ज्यों प्रभाती-धूप चमचम!
बन गया पागल अनागत हर्ष का अनुमान कर मैं!
आज आया हूँ किसी के रूप-रस का पान कर मैं!

दो उछलते दिल जहां कहते मिलन-सुख की कहानी,
तोड़ कर भूगर्भ जल-सी टूट पड़ती जब जवानी,
जागती अंगड़ाइयां ले कामनाओं की भवानी,
एक मस्ती ही जहां केवल चहकती, स्वर न वाणी,
रह सका क्षण भर नहीं स्थिर वह घड़ी पहचान कर मैं!
आज आया हूँ किसी के रूप-रस का पान कर मैं!

फूल-रस का स्वाद लेते ही मधुप की मूक भाषा!
छोड़ता है देख सम्मुख घट अमृत का कौन प्यासा!
मन उड़ा जाता गगन-पथ से, हृदय मेरी धड़कता,
कांपते कर से सँभाला मद-भरा प्याला छलकता!
शशि-ग्रहण का पर्व, निकला मुक्त गंगा-स्नान कर मैं!
आज आया हूँ किसी के रूप-रस का पान कर मैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकांकी

दृढ़ता

★

लेखक—
श्री ब्रजेन्द्रनाथ गौड़

★

पात्र

१. सुमन—सुन्दर सुशील युवती, एक स्कूल की अध्यापिका
२. मां—सुमन की मां, प्रकृति से कठोर और हठी
३. विपिन—कवि, शान्त, गम्भीर, विचारवान
४. रमन—धनी युवक, समझदार, सहानुभूतिमय

प्रथम दृश्य

[एक अच्छे-खासे साधारण सजे हुए कमरे में सुमन और विपिन आमने-सामने, मेज पर हाथ रक्खे बैठे हैं। मेज पर दो-एक पुस्तकें भी पड़ी हैं। कमरे का वातावरण मोहक है—दीवारें हरे रंग से पुती हुई हैं और खिड़कियों पर हरे रंग के रेशमी परदे लटक रहे हैं। दोनों एक दूसरे की ओर देख रहे हैं; अचानक सुमन लजा कर पुस्तक उठा लेती है। समय—संध्या]

सुमन—यों क्या देख रहे हैं आप ?

विपिन—तुम्हारी आंखें !

सुमन—क्या है इन में ?

विपिन—शायद मन के संसार का चित्र है, मिलन के सपने हैं और विछोह की कल्पना का भय है !

सुमन—आप तो हर बात कविता में कहने लगते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं फिर कहती हूं, कान खोल के सुन ले, विपिन से तेरी शादी नहीं हो सकती !"

विपिन—यों तो तुम भी मेरी आंखों में देख रही थीं; तुमने क्या देखा ?

सुमन—मैं समझ नहीं पाती, इसी लिए देखा करती हूँ।

विपिन—अब और कब तक छिपाओगी, सुमन ? मैं खुद भी नहीं छिपा सकता, मगर जो कुछ मुझे कहना है, उसके लिये मेरे पास उचित शब्द नहीं हैं।

सुमन—मैं नहीं मानती !

विपिन—मैं जाता हूँ। (विपिन व्यस्त भाव से कुरसी छोड़ कर उठता है। सुमन हाथ पकड़ लेती है।)

सुमन—ठहरो ! मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं, मुझे पागल न बनाओ, होश में रहने दो, जिन्दा रहने दो मुझे—मुझे—

विपिन—तुम बहुत भोली हो, सुमन ! (विपिन फिर यथास्थान बैठ जाता है।)

सुमन—मेरे मन की बात मुझ से ही सुनने का हठ न करो। नारी के पास लज्जा से बड़ा दूसरा कोई आभूषण नहीं होता। उसी लज्जा के आभूषण को तुम·····।

विपिन—तब जिस तरह मैं तुम्हारे मन की भावना को समझता हूँ, उसी तरह तुम भी मेरे मन की भावना समझ लो।

सुमन—मेरा समझना गलत तो न होगा ?

विपिन—सच्चे हृदय से परखी हुई चीज के बारे में गलत निर्णय नहीं हो पाता, सुमन !

सुमन—लेकिन नहीं, नहीं, यह न होगा, मैं····· मेरे कंधों पर अपने पांच छोटे भाई-बहिनों और मां का भार है। मैं अपना उत्तरदायित्व नहीं भूल सकती ! पहले मुझे कर्त्तव्य देखना होगा—अपना सुख छोड़ कर मैं···

विपिन—तुम्हारे विचार अस्थिर हैं, सुमन !

सुमन—नहीं, मैं पत्थर हूं। हां, पत्थर हूँ···· !

(विपिन धीरे से हँसता है।)

सुमन—हंसते क्यों हो ?

विपिन—इसलिये कि तुम पत्थर नहीं हो।

सुमन—मैं पत्थर हूं, मैं अपनी कमजोरियों से हारना नहीं चाहती। (सुमन उठ कर खिड़की के पास जा खड़ी होती है।)

विपिन—पत्थर की पूजा होती है, सुमन, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या वह ठोकरों में रहता है। अगर अपने उत्तरदायित्व के कारण तुम मेरा तिरस्कार करोगी, तब तो मैं तुम्हें पत्थर मान सकता हूँ, क्योंकि तब भी मैं तुम्हारी पूजा करूंगा; लेकिन अगर तुम मेरी गरीबी के कारण मुझे ठुकराओगी तो मैं तुम्हें पत्थर न मानूंगा, क्योंकि मैं तुम से घृणा नहीं कर सकता। तब मैं तुम्हें कठोर कहूंगा···। मुंह छिपाये खिड़की के उस पार क्या देख रही हो? मेरी बात सुनी तुमने?

सुमन—(सुमन विपिन के पास आकर आर्द्र कंठ से कहती है।) हां, विपिन, मैं पत्थर नहीं हूँ, स्त्री हूँ! मुझे तुम्हारी जरूरत है, मगर मेरे हाथ-पांव बंधे हुये हैं, मैं तुम्हारे पीछे नहीं चल सकती। मुझे अकेली छोड़ दो, मैं रोना चाहती हूँ।

विपिन—मेरे कन्धे पर सर रख कर रो लो; तुम्हारे मूल्यवान आंसुओं से मैं अपने हृदय का आवरण रगूंगा, क्योंकि मेरे आंसू तो सूख चुके हैं।

सुमन—तुम्हें मुझ पर दया नहीं आती?

विपिन—जब दो प्राण एकाकार हो जाते हैं, तब दया का प्रश्न नहीं रहता।

सुमन—बताओ, बताओ मैं क्या करूं? (विपिन के दोनों हाथ पकड़ लेती है। विपिन उठ खड़ा होता है।)

विपिन—तुम खुद समझदार हो। मैं स्वार्थी बनना नहीं चाहता, विश्वास खोना नहीं चाहता। जो वचन मैंने सपनों में तुम्हें दिया है, उसे जीवन में अंतिम सांस रहने तक निभाऊंगा।

सुमन—सपनों के संसार की तुलना जीवन की आंधियों से न करो, विपिन!

विपिन—मैं तुमसे हर बार हार मानता हूँ, और अपनी इस कमजोरी को शायद कभी भी जीत न सकूं। तुम खुश रहोगी तो मैं भी ···।

सुमन—नहीं, तुम्हारे बिना खुश तो क्या, मैं जीवित भी न रह सकूंगी।

विपिन—अब मैं नहीं ठहर सकता, मुझे जाने दो। मैं जाता हूँ। (विपिन शीघ्रतापूर्वक जाता है।)

सुमन—(विपिन के पीछे २ द्वार तक आते हुए) याद करूंगी तो आओगे न? बोलो, जवाब देते जाओ! ठुकरा गये मुझे? पत्थर मैं नहीं, तुम हो! इसीलिये मैं अन्धविश्वास के साथ सदा तुम्हारी पूजा करूंगी—जाओ!

(पटाक्षेप)

दूसरा दृश्य

(कई दिन बाद सुमन अपनी मां के साथ उसी कमरे में पलंग पर बैठी है। समय—संध्या।)

सुमन—मां, क्या तुमने मुझे इसी लिये पढ़ाया-लिखाया था कि मैं अपने समस्त सुखों को जीवन भर के लिये तुम लोगों के चरणों में चढ़ा दूं और दुख···?

मां—रोज-रोज इस तरह की बहकी-बहकी बातें सुनते सुनते मेरे कान पक गये हैं। मैं नहीं चाहती कि·····।

सुमन—एक बार शांत हो कर भी तो मेरी बात सुन लो, मां। मैं तुम्हारे और भाई-बहनों के प्रति अपना कर्त्तव्य खूब समझती हूँ; मगर मेरे प्रति क्या तुम लोगों का कोई कर्त्तव्य नहीं है? सुबह से शाम तक स्कूल में जाकर बच्चों को पढ़ाना, फिर ट्यूशनें करना और जागते-जागते रात बिता देना। क्या मेरा जीवन केवल यही है? क्या तुमने मुझे मशीन समझ लिया है? आखिर मेरे भी मन है और मन में सपने हैं। तुम तो धन को ही सब कुछ समझती हो। क्या करोगी इस धन का, जो तुम्हारी बेटी के आंसुओं से भीग रहा है?

मां—और कुछ बकना है कि हो गया तेरा भाषण समाप्त?

सुमन—उफ, मां भी भला इतनी कठोर हो सकती है!

मां—और बेटी भी भला इतनी निर्लज्ज हो सकती है!

सुमन—जब तुम स्वयं नहीं सोच सकतीं, तो कहना ही पड़ता है; इसमें निर्लज्जता का प्रश्न नहीं उठता, मां!

मां—लेकिन मैं फिर कहती हूँ, कान खोल के सुन ले, विपिन से तेरी शादी नहीं हो सकती।

सुमन—क्यों?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां—मैं अपनी बेटी गरीब से नहीं ब्याहूँगी।

सुमन—धन को ही अमीरी की निशानी क्यों मानती हो। वे गुणी हैं, चार जगह आदर के साथ उनका नाम लिया जाता है, वे ··।

मां—आदर और गुणों को भूख के समय चाट के भूख नहीं मिटाई जा सकती।

सुमन—तो ऐसे वे बेकार और भिखारी भी नहीं हैं।

मां—नहीं, नहीं वह तो बड़ा धन्ना सेठ है! जाने कौन-सा जादू कर गया है कम्बख्त कि तेरा दिमाग ही ठिकाने नहीं रहता।

सुमन—तुमने भी पिता जी से ब्याह किया था, समाज को ठुकरा कर, घर को ठुकरा कर···। पिता जी धनी भी नहीं थे, तुम्हारी जाति के नहीं थे और उनके साथ तुमने कभी दुख का एक दिन भी नहीं देखा। बोलो, फिर मुझे क्यों·····?

मां—(सुमन के गाल पर थप्पड़ मारती है) नालायक, जबान चलाती है। दूर हो मेरे सामने से न जाने कौन-सी कुवेला में जन्मी थी कि एक पल को भी···

सुमन—और मारना चाहती हो, मार लो; गालियां दे लो; अभी तो जिन्दा हूँ, एक एक बोटी काट के फेंक दो। मगर मैं फिर कहती हूँ कि शादी करूंगी तो उन्हीं से करूंगी; वर्ना जीवन भर·····।

मां—मेरे जीते जी यह कभी न होगा।

सुमन—हम दोनों एक दूसरे को प्रेम करते हैं।

मां—खूब, प्रेम का अच्छा राग अलापने लगी! तू क्या सड़क पर फिरने वाली कोई मामूली लड़की है कि वह तुझे प्रेम करेगा?

सुमन—प्रेम में सड़क या महल नहीं देखे जाते, ऊंच-नीच नहीं देखा जाता! प्रेम मन के संसार का वह पवित्र मंदिर है, जहां दो प्राण-दीप एक लौ लगा कर जलते हैं!

मां—चुप रह, पागल हो गई है! बड़ी बड़ी बातें बनाने लगी है! मैं किसी दिन तेरे हाथ पैर तोड़ दूंगी, समझी?

सुमन—अच्छा है, तब मैं तुम्हारे लिये किसी योग्य न रहूँगी। लेकिन मुझे अपाहिज रूप में भी वे अपनायेंगे!

मां—बड़ा विश्वास जमा लिया है उस पर!

सुमन—विश्वास का ही नाम प्रेम है।

मां—अच्छा, देखती हूँ तेरा प्रेम और विश्वास। देखूँगी कैसे तुम दोनों छिप-छिप के पत्र-व्यवहार करते हो। अरे, तू ही नालायक है, वर्ना उसे तो जब से मना किया है, उसने इधर का रास्ता ही भुला दिया है। तू ही उसके पीछे पड़ी हुई है। वह तो तुझे बहला रहा है।

सुमन—तुम मुझे धोखा दे रही हो।

मां—कोई मां अपनी बेटी का बुरा नहीं सोच सकती।

सुमन—लेकिन तुम सोचती हो।

मां—वह कवि है; अपनी कविता में मस्त रहेगा कि तेरी फिकर करेगा?

सुमन—मैं खुद उनकी कविता बन जाऊंगी।

मां—हूँ, उस शराबी की कविता बन जायगी यह!

सुमन—खराब सोहबत में पड़ कर पीने लगे थे, लेकिन मेरे एक बार मना करने से उसी शराब से नफरत करने लगे हैं, सो जानती हो?

मां—अब तू चुप नहीं होगी, जवाब दिये जा रही है! बोल, फिर उसका नाम लेगी? (सुमन के गाल पर फिर थप्पड़ मारती है। सुमन गंभीर भाव से बैठी रहती है।)

सुमन—उनसे तुम्हें क्या दुश्मनी है, मां? क्या बिगाड़ा है उन्होंने तुम्हारा? क्यों हर वक्त उन्हें कोसा करती हो?

मां—कोसूंगी नहीं तो पूजूंगी दामाद बनाके, एं? अरे, मैं तो कहती हूँ जो तूने मेरा कहना न माना और उससे मेरे विरुद्ध होकर ब्याह कर लिया, तो तेरी मांग का सिन्दूर पुछ जायगा, तू मेरी तरह विधवा हो जायगी···।

सुमन—तुम्हारा शाप मुझे नहीं लगेगा, मैं सच्चे मन से उन्हें चाहती हूँ।

(शेष पृष्ठ ४१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी न फलने-फूलने वाले पेशे

श्री रामचरण महेन्द्र एम० ए०

आप जब अपनी जीविका का प्रश्न हल करने के लिए अपने वास्ते एक पेशे का चुनाव करने निकलें, तो आपको कई आवश्यक तत्त्व स्मरण रखने होंगे। प्रत्येक पेशे के साथ मनुष्य-समाज की सद्भावनाएं या दुर्भावनाएं जुड़ी हुई हैं। ये सद्भावनाएं या दुर्भावनाएं पेशेवर लोगों की 'मानसिक विद्युत्' के चमत्कारों के फल हैं। मन जैसी इच्छा करता है, जैसे कार्य और कल्पनाएं रखता है, वैसे ही मानसिक चित्र उसके अन्तःपटल पर अंकित होते हैं और इन्हीं से 'मानसिक विद्युत्' उत्पन्न होती है। यह बिजली अच्छी या बुरी होती है। वैयक्तिक रूप से यह आस-पास वालों, समूचे वातावरण तथा समाज पर प्रभाव डाला करती है। प्रत्येक वस्तु पर गुप्त रूप से मानव-संस्कारों का प्रभाव पड़ता है, और यह 'विद्युत्' जड़ पदार्थों में भी बल का संचार करती है। मकानों तक में वहां के रहने वालों की इच्छाएं और भावनाएं घुस जाती हैं। भले विचारों से परिपूर्ण मकान में प्रवेश करते ही एक प्रकार की शान्ति और शीतलता का अनुभव होने लगता है। जिन स्थानों पर बुरे विचारों के मनुष्य रहते हैं, वहां जाकर अपने आप उनमें रहने वाली गुप्त मानवीय तरंगों का असर होने लगता है। जिन स्थानों पर दुराचारी लोग रहते हों, या जहां कत्ल, भ्रूण हत्याएं, गन्दे, वीभत्स और जघन्य कार्य हुए हों, उन घरों की ईंट-ईंट से दुःख, भय, शंका, उद्वेग इत्यादि मनोविकारों का प्रादुर्भाव होता है। उग्र मानसिक अनुभूतियां जल्दी ही मरती नहीं, बल्कि स्थानों, व्यक्तियों तथा वातावरण में मंडराती रहती हैं।

विचारों की विद्युत्

मनुष्य के विचारों, भावनाओं तथा आन्तरिक संस्कारों की बिजली प्रतिक्षण उठती रहती हैं। विचार केवल शब्द नहीं, वरन् मूर्तिमान पदार्थ हैं, जिन्हें वैज्ञानिक यंत्रों की सहायता से प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। विचारों के चित्र भी लिए जाने लगे हैं। अमेरिका में ऐसे सूक्ष्मदर्शी कैमरे बनाये गए हैं, जो विचारों के चित्र स्पष्ट रूप से खींच लेते हैं। विचार हर घड़ी हमारे मन में से निकल कर सूक्ष्म तरंगों के रूप में बाहर उड़ते रहते हैं। यह विद्युत् पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के समान है। विचारों की मानसिक विद्युत् ब्रह्माण्ड में व्याप्त ईथर-तत्त्व में उठती है।

एक खास पेशे वाले व्यक्ति एक विशेष प्रकार के विचार और मन्तव्य रखते हैं। इन विचारों का सामूहिक प्रभाव समाज पर पड़ता है। उन्हीं के अनुसार समाज पेशेवर लोगों के विषय में अच्छी या बुरी धारणाएं बनाता है। कई महापुरुष संसार की भलाई वाले विचारों में प्रवृत्त रहते हैं और उच्चकोटि की पवित्र विचारधारा संसार में प्रवाहित करते हैं; तदनुसार जनता को इतना लाभ पहुंचता है कि संसार हजारों वर्षों तक उन्हें स्मरण रखता है। महात्मा गांधी को अपनी विचारधारा के कारण प्रेम, दया, परोपकार, सत्य, सहानुभूति के विचारों को फैलाने में पर्याप्त सफलता मिली। संसार के महापुरुष मानस-रेडियो से सदा अपनी विचारधारा वातावरण में फेंका करते हैं।

पेशे का चुनाव और मनोभाव

अपने पेशे का चुनाव करते समय यह देखिये कि समाज में उसके लिए कैसे मनोभाव हैं, उसका समाज में कैसा आदर है, दूसरे लोगों की उसके प्रति कैसी भावनाएं हैं, समाज उस पेशे को आदर की दृष्टि से देखता है या निकृष्ट समझता है, जनसाधारण ने उसके विषय में क्या धारणा बना रक्खी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul K...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा व्यक्तिगत अनुभव है कि संसार में वे पेशे अधिक फलते-फूलते हैं, जिनके साथ समाज की सहानुभूति, आदर, प्रेम, प्रतिष्ठा और सेवा का भाव मिश्रित रहता है। इसके विपरीत वे पेशे अधिक नहीं फलते-फूलते, जिनमें हमें दूसरों का हृदय दुखाना पड़ता है, समाज के साथ दमन, अनीति, निर्दयता, अमानुषिकता या सजाएं देने का अप्रिय कार्य करना पड़ता है। इनसे दूसरों की 'हाय' निकलती है। जब मुर्दा खाल की श्वास से लोहा तक भस्म हो जाता है, फिर जीवित प्राणियों के दुःखी हृदयों से निकली हुई हाय, सिसक, रोदन, शाप या हाहाकार से क्या कुछ नहीं हो सकता?

कुछ अप्रिय पेशे

हमारे एक मित्र जेलर हैं—ब्राह्मण, प्रतिष्ठित, सुयोग्य एवं अनुभवी। गत पन्द्रह-बीस वर्ष से जेल के अध्यक्ष हैं। कैदी उनके नाम मात्र से कांपते हैं, उनकी आवाज और गाली सुनते ही सहम उठते हैं, सब पर आतंक छाया रहता है। समाज में सफल गिने जाते हैं, किन्तु गृहस्थ-जीवन में शायद सबसे दुःखी हैं। यौवन ही में चार पुत्रियां छोड़ कर धर्मपत्नी विदा हो गई, अपना स्वास्थ्य खराब हो गया, बीमार रहते हैं। पुत्र हुए, किन्तु मर गये। आये दिन कुछ न कुछ विपत्ति चली आती है। बड़े भाई साहब का देहान्त हो गया और उनकी भी सम्पूर्ण गृहस्थी का भार सर पर आ पड़ा। एक विवाहित पुत्री का स्वर्गवास हो गया। अब स्वयं भी लकवे से परेशान हैं। जहां तक हम समझते हैं, इन सभी दुःखों का कारण कैदियों की मूक आहें हैं। उनका कोसना, बददुआयें, गालियां देना, अशुभ वाणी का उच्चारण—इन सभी बातों का अदृश्य प्रभाव हमारे इन मित्र के जीवन पर अलक्षित रूप से पड़ा है।

हमारे एक और मित्र थानेदार हैं। थानेदार साहब खूब मोटे-ताजे और काफी मालदार हैं, किन्तु लोगों की सद्भावनाएं उनके साथ नहीं हैं। यद्यपि वे रिश्वत नहीं लेते, किन्तु प्रत्येक व्यक्ति यही समझता है कि ये जरूर रिश्वत, झूठ, अन्याय का पैसा खाते होंगे। कुछ ही दिन हुए उनके यहां चोरी हुई। उनकी युवती पत्नी दो पुत्र और तीन पुत्रियां छोड़ कर चल बसी। घर में कोई न रहा, तो बड़े पुत्र का विवाह किया। विवाह के लिये गये, तो वापस आने पर पता चला कि पीछे माता जी का स्वर्गवास हो गया है। उन्हें अब घर सूना प्रतीत होता है।

इसी प्रकार हम अनेक उदाहरण दे सकते हैं। पुलिस की ज्यादती, समाज और जनता के साथ पुलिस वालों का दुर्व्यवहार सब कोई जानता है। इसी प्रकार डाक्टर को अशुभ समझा जाता है। डाक्टर मरे हुए रोगी की परवाह न कर अपनी फीस की परवाह करता है। उसे अपने पैसे ही से मतलब रहता है। चाहे चिकित्सा वह कर सके या न कर सके, उसे जनता को मूर्ख बना धोखे में डालना आता है। वकीलों का पेशा झूठ और तर्क पर अवलम्बित है। मवक्किल से अधिक से अधिक रुपया खींचना, मुकदमेबाजी के लिये उकसाना, व्यर्थ का झूठा वितंडावाद खड़ा करना, फैशन-परस्ती फैलाना, इन सभी का नाम वकालत है। वेश्या तथा वकील, इन दोनों का ही पेशा झूठ, स्वार्थ, छल, कपट, बेईमानी, धोखेबाजी पर अवलम्बित है। पग-पग पर इन्हें आत्म-स्वतन्त्रता, अन्तरात्मा, सत्यता का हनन करना पड़ता है। इन पेशों को करने वाले विरले ही फलते फूलते देखे जाते हैं।

इसके विपरीत, उन पेशों को लीजिए, जिनके साथ संसार की सद्भावनाएं जुड़ी हैं। अध्यापक, पुजारी, पादरी, लेखक, प्रचारक, समाज-सुधारक, क्लर्क दूकानदार, किसान, मजदूर, ग्वाला, जुलाहा इत्यादि व्यक्तियों के ऐसे पेशे हैं, जिनके साथ समाज की सद्भावनाएं जुड़ी हुई हैं। इनसे सामाजिक प्रतिष्ठा तो होती ही है, साथ ही मनुष्य को समाज का प्रेम, सहानुभूति, उदारता इत्यादि आत्मिक भावनाएं भी प्राप्त होती हैं। परोपकार और सेवा पर टिके हुए सभी व्यवसाय उपयोगी और अच्छे हैं। सेवा और परोपकार का क्षेत्र तो अपरिमित है। लोगों की स्वार्थ-भावना और नाजायज फायदा उठाने की प्रवृत्ति ने समाज के कुछ व्यवसायों को बदनाम कर दिया है। इस स्वार्थ-भावना के कारण नागरिकों में पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष, फूट और कलह-वृद्धि होती है। राष्ट्रीय नेता, वैज्ञानिक,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आविष्कारक, कवि, चित्रकार, धर्मोपदेशक, कल-कारखाने के कारीगर, सार्वजनिक कर्मचारी, इत्यादि के साथ जन-समुदाय की भलाई, समाज-हित, सेवा, परोपकार की कल्याणकारी भावनाएं मिली हुई हैं। प्रत्येक व्यक्ति इन्हें हृदय से प्यार करता है और शुभ कामनाएं देता है। सद्भावनाओं, शुभ आशीर्वादों के प्रताप से ये पेशे कम आमदनी के होते हुए भी फलते-फूलते हैं। कम पैसा मिलने पर भी इनके रुपयों में बरकत होती है।

व्यवसाय के नये आदर्श

यदि आप अफसर हैं, ऊंचे ओहदे पर बैठे हुए हैं, सरकार के अंग हैं, तो जनता पर रोब गांठना, डांटना, फटकारना, स्वार्थ-सिद्धि, भेंट, रिश्वत, नाजायज लाभ उठाना छोड़ दीजिए। जनता के मनोभावों की अवहेलना कदापि न कीजिए। दूसरों की उत्तम या निकृष्ट मनोभावनाओं का अच्छा या बुरा प्रभाव अवश्य पड़ेगा। जिन-जिन पेशों में दूसरे का मन दुखाया जायगा, निर्धनों और गरीबों की मूक आहें, बददुआयें, गालियां पड़ेंगी, उनके करने वाले रोते-चिल्लाते और अतृप्त दिखाई पड़ेंगे। ऐसे दूकानदार जो कूड़ा-करकट मिला कर चीजें बेचते हैं, या कम तोलते हैं, आखिरकार घाटे में ही रहते हैं। जो आमदनी ईर्ष्या, द्वेष, छल-कपट, संकीर्णता, बेईमानी और कलह से खींची गई है, वह व्यर्थ जायेगी। न्याय और ईमानदारी से कमाया हुआ धन ही वास्तविक समृद्धि प्रदान करेगा।

सूदखोर बनिये, काबुली कसाई इत्यादि क्या कभी आज तक आनन्दित हुए हैं? स्वार्थमय विचारधारा वाले वकील, डाक्टर, पूंजीपति, मुनाफेखोर, कंजूस बनिए, गरीबों का रक्त शोषण करने वाले बेईमान जमींदार कभी फल-फूल नहीं सकते। कपट और स्वार्थ जब पेशे में घुसता है तो अशान्ति उत्पन्न कर देता है। मैंने अनेकों बार देखा है कि हरे वृक्ष काटने वाला, कसाई को गाय बेचने वाला, बकरे, मुर्गी, अंडे, कबूतर, मांस मछली बेचने वाले व्यापारी सदा दुखी रहते हैं। जो पति पत्नी पर अत्याचार करते हैं, या जो अफसर मातहतों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं, वे कभी समृद्धिशाली नहीं होते।

★

गीत

श्री शिवकुमार 'अल्हड़'

दूरागत संगीत किसी का
आया मेरे वातायन से!

तारों की पलकें झपतीं-सी,
निशि भींजी-सी ढलने आई,
मैं सोई थी, यह स्वर-लहरी
क्या मधुता ले छलने आई?

अब भी प्राण उनींदे मेरे
बंधे हुए किस आकर्षण से?
दूरागत संगीत किसी का
आया मेरे वातायन से!

किसने वंशी के रंध्रों में
हृदय उँड़ेल दिया है अपना?
किसने दान किया है मुझको
जागृति में भी यह मधु सपना?

पलकों पर उतरा न सजनि, पर
क्रीड़ा करता मेरे मन से!
दूरागत संगीत किसी का
आया मेरे वातायन से!

मेरे शयन-कक्ष में आली,
किन प्राणों की तृष्णा फिरती?
भरती-सी मेरे प्राणों को
किन गीतों की मधुता तिरती!

प्रतिध्वनि-सी उठती है जिसकी
फिर फिर इस उर के स्पन्दन में!
दूरागत संगीत किसी का
आया मेरे वातायन से!

★

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

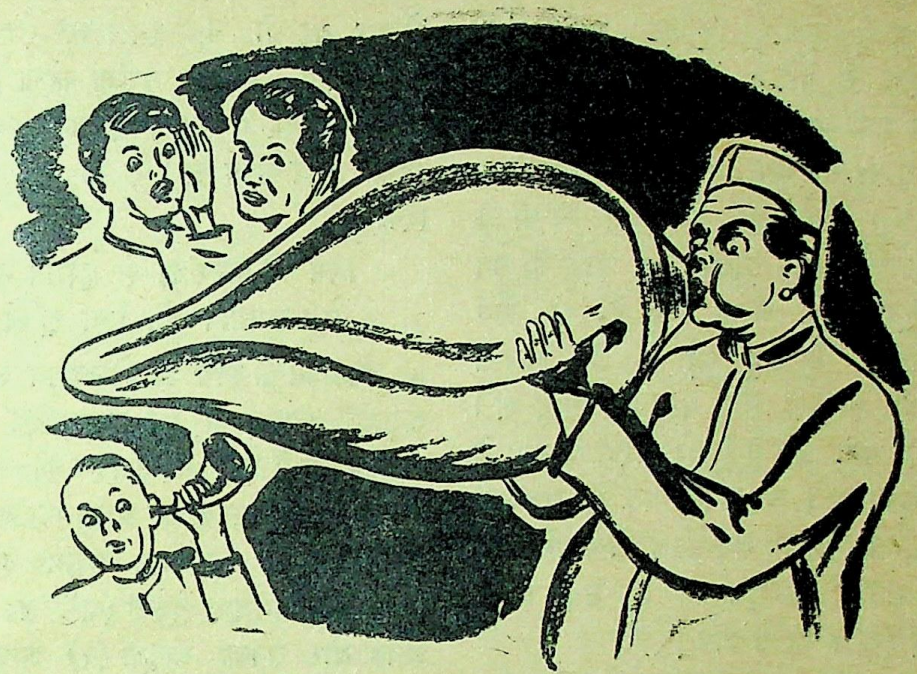

'शंख' क्यों नहीं बजा ?

श्री प्रभाकर माचवे

सेठ पोंगामल टीबडीवाल ने युद्ध-काल में जब खूब मुनाफा कमा लिया, और जब उनकी दूसरी पत्नी भी स्वर्ग की ओर प्रस्थान कर गई, तब कंचन और कामिनी के बाद आदमी की तीसरी कमजोरी कीर्ति के पीछे वे लगे। उनके दिल में यह जबर्दस्त इच्छा पैदा हुई कि नाम कमाया जाय, किसी तरह से बड़ा आदमी बना जाय।

आजकल बड़ा आदमी बनने के दो ही जरिये हैं। एक तो अगर आप जेल हो आये हों, और आपकी घर की माली हालत अच्छी हो, तो आप लीडर बन जाइये। इलेक्शन में खड़े हो कर पहिले म्युनिसिपैलिटी में, फिर प्रजामंडल में या प्रांतीय कांग्रेस कमेटी में, फिर एम० एल० ए० और एम० एल० सी०, और अगली सीढ़ी—अगर ऊपर तक पहिचान-वहिचान अच्छी है—तो मिनिस्टर बन सकने की है। दूसरा तरीका, जो इस से भी कम पूंजी का है (मेरा आशय त्याग-तपस्या की पूंजी से है), वह है अखबार निकालने का। और उसमें भी कागज की मिल के भी यदि आप हिस्सेदार हों और बहुत से कारखाने उधर आपके हों, जिनके विज्ञापन बराबर मिल सकें, तो फिर अखबार गोया बायें हाथ का खेल है। पोंगामल यह सब थे। सो पोंगामल ने निश्चय किया कि अखबार निकाला जाय। उन्होंने कहीं से एक 'प्रेस' स-मैनेजर कबाड लिया था, और उनके इस सम्बन्ध में सबसे बड़े सलाहकार कहिये, सब कुछ कहिये, यह प्रेस-मैनेजर महोदय थे। इनका नाम कालीचरण वर्मा 'सन्तोष' था। 'सन्तोष' उपनाम उन्हें खूब फबता था, क्योंकि जैसे वे बने थे, उन्हें पत्नी के बेलन की पिटाई से लगा कर अफसरों की गालियों तक सब चीजों से परम संतोष प्राप्त होता था। पान उनकी एकमात्र कमजोरी थी और सो भी सब प्रकार का 'पान' उन्हें चल सकता था। सेठ पोंगामल की बड़े आदमी बनने की हविस में यह पहिला मददगार अपराधी था 'सन्तोष'।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैसे मैं बता ही चुका हूँ कि हिसाब रखना, कंपाजीटरों को ठीक से पैसे न देना, डांटना, व्यवस्था रखना, घर पर पांचों बच्चों और उनकी माता महाकाली को खुश रखना, यह सब काम 'सन्तोष' जी परम संतोष से कर सकते थे। सिर्फ कमी इस बात की थी कि अखबार के जो कोरे कागज मशीन पर चढ़ते हैं, उन पर कुछ मजबून छपना जरूरी होता है, सो कौन लिखे? वे बचपन से उर्दू पढ़े थे, और उपनाम 'संतोष' उन्होंने शौकिया तौर पर रख लिया था। मुशायरों में भी भाग लेते थे। पर हिंदी के नाम से उन्हें बुखार चढ़ता था। वह उनके बस की बात नहीं थी। हिंदी गद्य, और सो भी राजनैतिक लेख वगैरह—बाप रे बाप! 'संतोष' जी राजनीति से उतने ही दूर थे, जितने घोड़े (?) के सर से सींग!

अब अखबार निकालने के लिए सब कुछ प्रस्तुत है—सेठ पोंगामल जी (संचालक, प्रकाशक, प्रधान-संपादक आदि) की पूंजी है, प्रेस है, मशीन है, स्याही है, कागज है—सिर्फ कमी है मजमून की। नाम भी अखबार का बहुत प्यारा-सा तय हो गया—'शंख'। और सच तो है, इस समय जब कि हिंदू-जाति रसातल की ओर तेजी से बढ़ रही है, कौन इस सोते हुए को जागता करेगा, जागते हुए को उठता, और उठे हुए को चलता-फिरता, और चलते हुए को भागता हुआ कर सकेगा? 'शंख' फूँकना ही आवश्यक है, नहीं तो, नहीं तो बस इस देश की संस्कृति गई, इस देश का प्राचीन गौरव, धर्म-कर्म सब धूल में मिल जाने वाला है। इस सब से रक्षा करने वाला कोई एक मात्र सहारा है तो सेठ पोंगामल जी का अर्द्ध-साप्ताहिक 'शंख'। इसे फूंकते ही लार्ड नार्थक्लिफ अपनी कब्र में से उछल पड़ेंगे, चीन का सबसे पहिला अखबार भी इसके आगे शर्मा जायगा और सम्पादकाचार्य-प्रवर स्वर्गीय···(कोई भी नाम रख लीजिए, सेठ जी को आपत्ति नहीं है) स्वर्ग से फूल बरसावेंगे और आशीर्वाद देंगे। ऐसी 'शंख' की योजना बनी: पत्र किसी राजनैतिक 'वाद'-विवाद-उलझन में नहीं पड़ेगा—पड़ सकता ही नहीं, नहीं तो पूंजी की सुरक्षितता का क्या होगा? वह तो 'पार्टी-इन-पावर' (सत्तारूढ़ पक्ष) के गुण गायेगा, उसी की प्रशंसा करेगा। वैसे वह शुद्ध राष्ट्रीय पत्र रहेगा, परन्तु मुस्लिम-मात्र से उसे घृणा रहेगी। ध्येय-वाक्य का दोहा भी 'संतोष' जी ने बना दिया—

मित्र बनें निश्शंक, हो दुश्मन में आतंक।
रंक-राव-संतोष हो, ऐसा फूँको 'शंख'॥

विज्ञापन के साथ यह ध्येय-वाक्य और ऊँचे-ऊँचे सनातनी आदर्श भी सब छपवा दिये गये, और (१) आवश्यकता है एक सह-संपादक की—जिसकी योग्यता संस्कृत शास्त्री, फारसी का आलिमफाजिल, हिंदी साहित्यरत्न, अंग्रेजी इंटर-फेल, अनुभव दस-पांच अखबार छोड़ने का, मिजाज दुरुस्त (यानी लड़ाकू न हो), उम्र अधेड़ और तनखा माकूल (२) आवश्यकता है एक टाइपिस्ट लड़की की—हिंदी-अंग्रेजी दोनों टाइप करना जानती हो, जवान और चुस्त ('स्मार्ट' का शब्दशः अनुवाद था), उम्र विशेष न हो, अनुभवी; और वेतन प्रत्यक्ष मिलने पर—यह दो विज्ञापन भी शाया कर दिये गये। परन्तु क्या आश्चर्य कि एक हफ्ते भर सह-संपादक के लिए तो डेढ़ सौ अर्जियां आती रहीं, परन्तु टाइपिस्ट कोई भद्र महिला नहीं आई। और जब तक टाइपिस्ट न हो, रौब से चिट्ठियां वगैरह बाकायदा न भेजी जायें, तब तक अखबार 'शंख' बजे कैसे? —चले कैसे?

अंततः सेठ जी निराशप्राय हो गये थे कि एक दिन तीन बजे जब वे अपने दफ्तर में बैठे थे, चपरासी ने आकर सूचना दी कि एक साहब और एक देवी जी साथ-साथ आये हैं, मिलना चाहते हैं। और एक रद्दी कागज पर पेंसिल से लिखा हुआ विजिटिंग-कार्ड मिला—'शास्त्री शिशिरप्रसन्न बेदी तथा श्यामा देवी। 'शंख' संपादनार्थ।'

सेठजी ने कहा—"आने दो।" और प्रतीक्षा करने लगे।

दरवाजा खुला और एक ऊंचे, हड्डियों के कंकाल जैसे, लंबे बालों, मोटे, पानरंगे ओठों वाले, पीतल की फ्रेम का चश्मा पहने, ढीले कुर्ते पर एक मद्रा-

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सियों-सा उपरना और ढीली बंगाली ढंग की धोती पहने सज्जन और उनके पीछे रंगीन, सादी साड़ी पहने और बालों में बहुत-सा तेल और आंखों में काजल डालने पर भी अपने आपको विशेष आकर्षित न बना पाई, ऐसी फैशनेबुल एक युवती ने प्रवेश किया।

सेठजी ने हाथ से इशारा करते हुए कहा—"बैठिये! कहिये!"

सज्जन ने अपने पिचके गालों पर यथासंभव दीनता लाते हुए कहा—"हम शरणार्थी हैं। आपका विज्ञापन पढ़ कर यहां उपस्थित हुआ हूँ। मेरे सार्टिफिकेट वगैरा लाहौर की बड़ी आग में जल गये। वैसे आपके अवलोकनार्थ अपने पुराने लेखों के कुछ कटिंग लाया हूँ।"

और झोले में से उन्होंने गुड़ी-मुड़ी हुए कुछ पीले छपे कागज निकाले—एक था 'अमृतधारा फार्मेसी' का विज्ञापन; दूसरा था 'दम्पति-रहस्य' पर लेख—जिसमें गलत-सलत कई कामसूत्र के उद्धरण थे; तीसरा था 'हिटलर क्यों नहीं जीता?' इत्यादि।

सेठ जी ने कहा—"ठीक है, ठीक है, वह रखिये। आपकी आवश्यकताएं क्या हैं? वेतन कितना लेंगे? वैसे तो कलकत्ते के और अखबार चालीस से सह-संपादक को शुरू कराते हैं, मगर मंहगाई है, वार टाइम है, तो हमने उदार होकर आपकी शरणार्थी दशा देख कर, केवल आपकी योग्यता पर मुग्ध हो कर, आप ही के लिए ५०) माहवार देना निश्चय किया है। और ये देवी जी·····?"

"हैं-हैं-हैं"—शास्त्री महाशय बोले—"मेरी दूर की बहन हैं। शरणार्थी कैंप में और भी आपकी कई बहनें हैं। लिखी-पढ़ी हैं। वैसी अंग्रेजी भी जानती हैं। थोड़ा टाइप भी कर लेती थीं। आप सिखा देंगे तो जल्दी से सीख जावेंगी। यह भी इस समय बड़ी संकट में हैं। वो तो आपको मालूम ही होगा कि हम जब शेखूपुरा से भागे हैं, औरतों के साथ···।"

और उसने रस ले ले कर सब प्रकार के अमानुष कांडों को सुनाना शुरू किया। सेठ जी भी गौर से सुनते रहे और महिला के श्यामल वर्ण के क्रमशः लज्जा-रक्त-बैंगनी होने की लीला को गौर से देखते रहे। कुछ नंगे वर्णनों पर युवती ने सिर झुका लिया—कुछ अप्रिय-सी मुस्कराहट देवी जी के अधरों पर खेल गई।

"तो आप भी उस समय वहां थीं क्या?" सेठ जी ने पूछा।

गर्दन को झटका देते हुए, कानों के फुंदे कुछ हिला-चमका कर श्यामला देवी बोली—"जाने भी दीजिये, वह दर्दभरी कहानी है···!"

और 'दर्द' का उच्चारण कुछ ऐसे खास लहजे में उन्होंने किया कि सेठ जी ने सोचा, बस, 'शंख' में ये सब दर्दभरे अफसाने छपवा दूंगा और अखबार ऐसे बिकेगा कि गर्मागर्म पकौड़ियां क्या बिकती हैं!

'गर्म पकौड़ी, ऐ गर्म पकौड़ी···तेरे लिए छोड़ी बामन की पकाई घी की कचौड़ी' यह महाकवि निराला की 'तेल की पकौड़ी' कविता के अंश थे—यह सेठ जी नहीं जानते थे। परन्तु मन ही मन में उनका विधुर-मन कुछ गर्म पकौड़ी जैसे खाद्य के स्वाद और इस नवागता शरणार्थी बाला के दर्शनानंद को एक ही धरातल पर लाने का प्रयत्न कर रहा था।

आखिर यह तै हुआ कि ५०)-५०) रुपया माहवार पर उन दोनों को रख लिया जाय, और उनकी १००) तनखा में से २०) मकान किराया काट कर सेठ जी 'शंख'-कार्यालय के बगल का—यानी उनके बाथरूम के पास वाला कमरा—पहिले जिसमें लकड़ी वगैरह भरी जाती थी—भी उन्हें दे दें। वैसे शुरू में ८०) कम हैं, मगर धीरे-धीरे योग्यता देख कर बढ़ा भी दिये जा सकते हैं। श्रीमती या कुमारी (परमात्मा जाने!) श्यामलता देवी को टाइप सिखाने के लिए सुविधा देने के भी तो कुछ रुपये उसमें से काट लेने चाहियें थे—मगर जाने दीजिये। रियायत के तौर पर यह था कि दोनों व्यक्तियों को दो कप कोरी चाय सबेरे सेठ जी पिला देने वाले थे—यह उनकी महान उदारता का ही एक लक्षण था, वर्ना वे खुद चाय नहीं पीते—ऐसी जहरीली चीजों से बचते हैं। (मगर चोरी चुपके दोस्तों के साथ कभी अंग्रेजी होटल में फँस गये तो और भी कुछ 'पी' लेते हैं, सो दूसरी बात है—मगर किसी की 'प्राइवेट' लाइफ से हमें क्या करना है!)

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धीरे-धीरे 'शरणार्थी-महिला' के पास और स्त्रियां भी आने जाने लगीं। सेठ जी को यह सब अच्छा ही लगता था। दो तीन महीने निकल गये।

मगर बुरा इस बात का लगता था कि 'शंख' का डिक्लेरेशन आ गया, बेदी जी ने राजनैतिक लेख, संपादकीय, सप्ताह का भविष्य, सिनेमा का पेज (जिसे लिखने के लिए सेठ जी से वे एडवान्स रुपये लेकर फिल्म देखने गये थे) सब कुछ लिख कर 'मैटर' कम्पोज होने भर की देरी है, सेठ जी का ब्लाक भी बन गया है, उनका जीवन-चरित, दान-पुन्न के काम, विशेषतः शरणार्थी स्त्रियों में उनकी लोकप्रियता आदि सब लिखा जा चुका है—सिर्फ 'शंख' के ग्राहक नहीं हैं। और जिस दिन वह प्रकाशित होने जा रहा है, उस दिन उत्सव में उसकी प्रथम प्रति मुफ्त बंटेगी, ऐसी व्यवस्था है। 'सन्तोष' जी एक गली-कूचे के साइनबोर्ड-पेंटर को भी कबाड़ लाये थे, उससे महारद्दी कार्टून और कवर का डिजाइन भी बन चुका है, अठन्नी फी डिजाइन देकर और कार्टून अगर चलेंगे तो और बनवायेंगे, यह आश्वासन देकर—यद्यपि चित्रकार अपने आपको 'लो' और शंकर और शिल्पार्थी से कम क्या समझता है! सब तैयार है, मगर 'शंख' के ग्राहक नहीं हैं। औरतों का पृष्ठ, घरेलू-दवा-दारू, बाल-वाटिका इत्यादि सब प्रकार के स्तम्भ हैं—शंख बच्चों से बूढ़ों तक सब को खुश कर सकेगा। पहिला पेज पलटते ही बाबा मलूकदास की बानी है; बूढ़े उसके उपदेशों से खुश हो जावेंगे—अध्यात्म और ऊंचे धर्म की ऐसी बढ़िया चर्चा है! अन्दर साहित्य के पृष्ठ पर सेठ जी का ब्लाक, जीवनी, उनके 'कल्पना-स्पन्दन' गद्य-काव्य-संग्रह की मुंहफट स्तुति-भरी आलोचना है, और क्या चाहिये? सब कुछ है, मगर शादी के सब सामान के साथ, बाजे और वेदी और पंडित और दूल्हे के साथ एक ही चीज की कमी है—और वह दुलहन नहीं है। वैसे ही 'शंख' के ग्राहक नहीं हैं।

* * *

अब 'शंख' का आरम्भ जिस दिन था, और उसके लिये नगर के प्रतिष्ठित सज्जनों को बुलाकर उत्सव किया जाने वाला था, उस के एक रोज पहले एक महान घटना घटित हुई। श्रीमती श्यामलांगिनी देवी जो संध्या समय 'शंख' कार्यालय से गईं, तो लौटी नहीं। दो दिन बीते, उत्सव को एक सप्ताह आगे टाल दिया गया। उनका कुछ पता नहीं। उलटे एक पत्र सेठ जी के नाम आया जिसका आशय था—'आप पराई स्त्रियों के साथ किस प्रकार व्यवहार करते हैं, इसके सबूत मेरे पास हैं। आपके कुछ पत्र और कुछ घटनाएं मैं सब पत्रों में प्रकाशित करा दूंगी, यदि आपने इस पत्र को देखते ही अमुक-अमुक पते पर एक हजार रुपये फलां तारीख तक जमा नहीं कराये।'

सेठ जी घबड़ाये हुए बेदी साहब को देखने पहुँचे, तो वह भी गायब थे। दोनों अच्छे मिले। सेठ जी की आबरू मुश्किल में पड़ गई। लेने के देने पड़ गये। १०००) देकर वे सब कागज उन्होंने किसी तरह वापिस कब्जे में कर लिये। निश्चय कर लिया कि वे अब कभी टाइपिस्ट-गर्ल नौकरी पर रखेंगे नहीं, झूठ-मूठ के शरणार्थियों से दस हाथ दूर रहेंगे और सम्पादक या अखबार निकालने वाले बन कर कभी बड़ा आदमी नही बनेंगे।

* * *

यह है संक्षेप में सेठ पोंगामल के प्रस्तावित 'शंख' की कहानी। 'शंख' इसीलिये नहीं बजा। लेकिन लोग यह सब नहीं जान पाये। यह खबर फैला दी गई कि इधर बिजिनेस 'डाउन' हो गया है, या 'शंख' जरा जोरदार हिन्दुत्वनिष्ठ पत्र था, आजकल हवा उलटी है, सो 'शंख' नहीं बजा।

'शंख' क्यों नहीं बजा—इसका असली रहस्य सिर्फ श्यामांगिनी देवी और उनका वह सेठ जी के पास वाला कमरा ही जानता है!

★

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

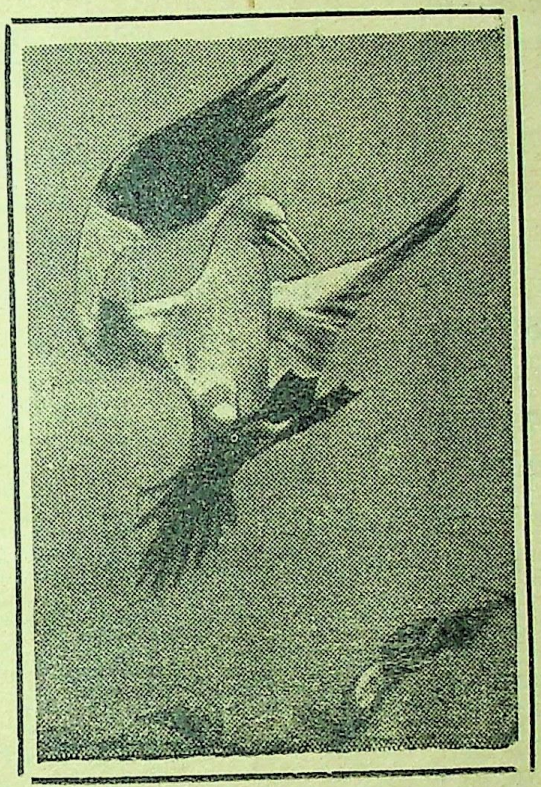

गीत

★

श्री राजेन्द्र यादव

★

हो रहे उद्‌बुद्ध प्रतिक्षण बन्धनों में पर विहग के!

हँस रहा है नील अम्बर,
मुस्कराती हैं दिशाएँ,
शिंजिनी का मधु-मदिर स्वर
भर रहीं नूतन निशाएँ!
खोल कर शत-शत किरण के
पंख नभ में इन्दु चहका,
शर्वरी के वक्ष में मृदु
भावना का बिन्दु चहका!
मलय के सुरभित पवन में
उड़ रहा उन्मुक्त मन्थर,
झांक कारा के झरोखों—
से रहे दो नयन जल भर!
शून्य नयनों से उझकते विगत क्षण सुन्दर विहग के!
हो रहे उद्‌बुद्ध प्रतिक्षण बन्धनों में पर विहग के!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झूमती घन-माल श्यामल
चल पड़ी बोझिल तरी-सी,
दामिनी उज्ज्वल थिरकती
स्वर्ग की चंचल परी-सी!

बादलों पर नाचती-सी
खगों की गूंजी पुकारें,
श्वेत बगुलों की उमँगती
उड़ चलीं मुखरित कतारें!

उल्लसित वह चहक नाचे,
है हृदय में तीव्र मचलन,
फूटती कम्पित अधर से
पर, वही उच्छ्वास उन्मन!
आज अन्तर में उठे तूफान हैं जर्जर विहग के!
हो रहे उद्बुद्ध प्रतिक्षण बन्धनों में पर विहग के!

प्राण स्पन्दित वह न अपने
अर्च्य के उर में सका कर,
ताकता अपलक निशा में,
पर न विहंसा चुप सुधाकर!

वह बिलखता ही रहा बन
कूल उबली-सी नदी का!
—वह सुमन जिसको न पाया
छू विभासित कर किसी का!
नैश-शैया पर गगन की
खिलखिलाती मुग्ध राका,
तम प्रपूरित कक्ष सूना,
सामने कारा-शलाका।
बन्द पलकें, किन्तु मुक्ता मूक पड़ते झर विहग के!
हो रहे उद्बुद्ध प्रतिक्षण बन्धनों में पर विहग के!

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

'थाप-थाप-थेई'

श्री बंसीलाल यादव

'ठक-ठक-ठक !'

'ठुक-ठुक-ठुक !'

उस अलसाई हुई दुपहरिया में मेरे कानों को वह स्वर ऐसा लग रहा था, मानों किसी कब्र में से उठ कर मीलों दूर की यात्रा करता हुआ वह चला आ रहा हो ! स्वर है कि बस चला ही आ रहा है— नजदीक—और नजदीक, जैसे एक दम मेरे घर के नीचे ही, एक दम कानों पर टूटता हुआ, 'ठक-ठक' और 'ठुक-ठुक' से 'थाप-थाप-थेई' 'थाप-थाप-थेई' में परिणत होता हुआ, समान गति से प्रतिध्वनित होता हुआ वह ढोलक का ऊंचा व तेज शब्द !

जिस अध-जगी और अध-सोई-सी अवस्था में मैं पड़ा हुआ था, अधिक पड़ा न रह सका। मैंने फिर से एक ढोलक की ढप-ढप के साथ—नहीं नहीं, 'थाप-थाप-थेई' के साथ कुछ शोर-गुल और कुछ असाधारण सी चहल-पहल सुनी और फिर पड़ा पड़ा ही सोचने लगा—मोहल्ले में किसी के बच्चा तो हुआ नहीं है··· हां, एक जगह विवाह अवश्य है। उसी को ले कर शायद यह सब कुछ हो रहा हो। ऐसी अवस्था में मेरे लिये यह सब कुछ नया नहीं है···। यही विचार कर मैं तत्काल ही उछल कर देखने को उत्सुक न हो सका। पड़ा न रह सका, फिर भी पड़ा-सा ही रहा। हां, उठ तो सका ही नहीं।

पर शोर था कि उत्तरोत्तर बढ़ता ही चला जा रहा था। बच्चों की हा-हू, जैसे कुछ किया जाने को हो—ऐसा शोर कि सालस पड़े हुए क्षणों को जैसे अपनी तह में लपेट रहा हो ! और किसी सोचने योग्य विषय के अभाव में मैं केवल यही सोचने लगा कि आखिर यह शोर कैसे यहां भरी हुई 'अलार्म' की भांति खुलता ही जा रहा है !

सहसा ढोलक पर एक जोर का हाथ पड़ा और साथ ही सब पर छा जाने वाला एक विचित्र-सा बुलन्द सम्बोधन आया—"बेदा जमूरा !"

और फिर एक दूसरा कण्ठ स्वर—उससे भी तेज—"जमूरे का नाच !" ढोलक की 'थाप-थाप-थेई' के साथ मिल कर और भी सबल-सा हो गया।

आखिर मुझे उठना ही पड़ा। उठ कर मैंने अपने उस दुमंजले मकान की एक खिड़की खोल दी और देखा। विचित्र-सा समा बंधा हुआ था। नटों का एक झुंड अपनी कला का प्रदर्शन करने को मेरे दरवाजे के सामने, नीचे प्रस्तुत था। और चारों ओर, गली में भी, आंगन और मकानों की खिड़कियों पर भी—सभी जगह दर्शक-वृन्द अधीर से बने शुरू होने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे। डाक्टर साहब की पत्नी से लेकर धूली चमारन और बरजी बलान तक सभी वहां अपनी आंखें फैलाये हुये थीं।

मेरे इस मोहल्ले में ऐसा संयोग प्रथम बार ही हुआ हो, सो बात नहीं; किन्तु वर्ष भर में अनेक बार होता रहता हो, सो बात भी नहीं···पर हां, साल में कम से कम एक बार तो हो ही जाता है।

रविवार की छुट्टी थी और खाली था मैं। बाल्यावस्था का यह कौतुक कुछ बहुत ही प्रिय लगा; सो दौड़ कर अपनी चारपाई को खिड़की के नजदीक कर लिया और मनोयोग से सब कुछ देखने लगा।

देखा कि भीड़ दो पक्षों में बंट गई है। भीड़ में से पांच सात वे हैं जो अपनी उस कला का प्रदर्शन करने की तैयारी में हैं, जो उनकी जिंदगी का व्यवसाय मात्र है—पेट का व्यवसाय, जिंदगी का पेशा जो औरों के लिये कौतुक है, घड़ी भर का मनोरंजन है। यद्यपि अपनी इस कला को प्रदर्शित करने में इन नटों को भी किसी रण-बांकुरे अथवा देशोद्धारक नेता से कम श्रम नहीं करना पड़ता, किन्तु फिर भी औरों के लिये उनका प्रदर्शन घड़ी भर के मनोरंजन के अतिरिक्त और कोई महत्व अथवा उपयोगिता नहीं रखता। घड़ी भर दिल खुश कर देने वाली एक मामूली-सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीज—एक 'तमाशा' मात्र की संज्ञा उसे मिल कर रह जाती है, उपयोगिता की कोटि में पहुँचना तो दूर रहा···। इसके अतिरिक्त भीड़ में फिर वे हैं, जो दर्शक हैं और जो अपने २ जीवन के व्यस्त क्षणों में से कुछ इधर, कुछ उधर कांट-छांट कर अपने 'बजट' को ठीक कर ये दो-चार फालतू पल निकाल कर जरा हंस लेने और हल्के हो लेने के अभिप्राय से आकर खड़े हो गये हैं;, अन्यथा तो वे अपने घर की चारदीवारी में ही इतने व्यस्त हैं कि यदि यह 'तमाशा' जबर्दस्ती उनके नेत्रों के सम्मुख आ कर न पड़ता, तो इसका वे नाम भी न लेते।

पर हां, यहां हम बच्चों को तो भूल ही गये। ये तो ऐसे मजे से निठल्ले बैठे हैं कि यह 'जमूरे का नाच' और 'थाप-थाप थेई' की यह कौतुक भर देने वाली आवाज इन्हें वरदान की भांति आई हुई जान पड़ती है। अतीत अब इनके सम्मुख कुछ अर्थ नहीं रखता, ये तो बस वर्तमान को पकड़े लोट-पोट हो कर हंस रहे हैं। तभी तो देखिये न, ये जैसे बैठे थे वैसे ही उठ भागे हैं और यहां इन नटों के चारों ओर एक दुर्भेद्य दीवार-सी बना कर इकट्ठे हो गये हैं। यदि इन्हें भी समय के व्यय-अपव्यय और कार्य-अकार्य की कुछ भी नाप-जोख होती, तो ये भी उन बारामदे में बैठे वकील साहब की तरह होते जो कोई 'केस' हाथ में लिये बैठे हैं और कभी २ कदाचित् 'ला-पाइण्ट' की पेचीदगियों और जिरह की परेशानियों को कम करने के हेतु इन गरीब बनजारे नटों पर भी एक सरसरी-सी दृष्टि डालने की अनुकम्पा कर देते हैं—इन नटों पर जो सूर्य की क्रोधाग्नि में खुले आकाश के नीचे खुले बदन और नंगे पैर खड़े पसीने में नहाये हुए पापी पेट के लिये चार पैसे जुटाने का आयोजन कर रहे हैं!

ढोल और थाली की आवाज को अपने गले को फाड़ २ कर अपनी तीव्र आवाजों से एकाकार करता हुआ, बच्चों को तालियां बजाने पर बाध्य करता हुआ और झरोखों में बैठी रमणियों की पलकों को अपनी ओर आकर्षित करत हुआ वह युवक-नट लम्बे २ बांसों की टांगों पर खड़ा हो कर साक्षात् देव की तरह बड़े बड़े डगों से जैसे सारे मोहल्ले को पल भर में नापने लगा। सारा मैदान एक उत्कट कोलाहल से परिपूर्ण हो गया।

नटों का यह तमाशा मेरे लिये कोई विशेष नवीनता नहीं रखता, क्योंकि ऐसे तमाशे मैंने बहुत देखे हैं। मां की साड़ी का छोर पकड़े हुए बचपन में, मैट्रिक की परीक्षा के बाद 'समर वकेशन्स' में और आज·····आज भी दफ्तर का एक क्लर्क हो कर रविवार की छुट्टी में वही सब कुछ तो मैं देख रहा था। जहां तक इन नटों के तमाशे का संबंध है, मेरे जीवन में कोई विशेष अन्तर नहीं हुआ। मैं जानता था कि उन्हीं इने-गिने करतबों को सामने पताका-हीन स्तम्भ-से खड़े बांस पर दिखा कर नटों का यह परिवार पेट के लिये दाताओं की खैर मनाता ईश्वर के नाम पर दो पैसों की फरियाद करेगा—वही इने-गिने पुराने करतब, और वही रटे हुए दो-चार शब्द!

किन्तु आज? आज एक नवीन अनुभूति से जैसे मेरा भावुक और युवक हृदय चंचल हो उठा। 'तमाशे' के नये अर्थ ने मेरा मन घेर लिया। जिसे सब 'तमाशा' की संज्ञा देते हैं, वही तमाशा मुझे किसी के भी दृष्टिकोण से तमाशा नहीं जान पड़ा। मैंने सोचा, अनेक मनुष्यों के विचित्र जीवन के कुछ पहलू यदि एकत्रित हो कर तमाशा बन जाते हैं, तब तो यह भीड़, यह जमघट एक 'तमाशा' ही है!

नट ने अब टांगों से बंधे हुए बांस खोल डाले थे और अब वह उस स्तम्भ पर चढ़ने की तैयारी में था। वह चढ़ना चाह ही रहा था कि मेरा ध्यान सामने के एक चबूतरे ने अपनी ओर खींच लिया। जैसे पानी के वक्ष पर एक छोटा-सा बुदबुदा उठा, फिर लहरें तट पर एक हलचल-सी मचा गईं, ठीक उसी प्रकार बालकों के उस समुदाय में दो-तीन लड़कों में झगड़ा हो उठा और वहां के बच्चे उसी को 'तमाशा' मान उस द्वन्द्व का रस लेने लगे। ढोलक पर जोर २ के हाथ पड़े—'थाप-थाप-थेई,' 'थाप-थाप-थेई।'

किन्तु वहां कौन सुनता था? झगड़ने वाले लड़कों की गरमागरमी बढ़ती ही गई, यहां तक कि कहा-सुनी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और आंखें लाल करने, घूंसा दिखाने, अनुचित सम्बन्ध स्थापित करने के उपरान्त हाथा-पाई हो गई। दो बालक एक ओर थे और एक अकेला दूसरी ओर। पर उस एक ने अपने को इस प्रकार फंसा रखा था कि वह दो भी उसका कुछ न बिगाड़ पा रहे थे—निर्बल होने के बावजूद भी वह एक उन्मत्त की भांति दोनों से अधिक प्रचण्ड हो उठा था।

थोड़ी देर तक संतोषपूर्वक सब इस काण्ड को देखते रहे, पर जब मल्ल-युद्ध की अवधि बढ़ने लगी, तो किसी ने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए उन्हें अलग २ कर दिया। अलग तो वे हो गये, पर उनकी उस समय की वह 'शोभा' देखते बनती थी। दो जो एक तरफ थे, इतने 'छटामय' नहीं थे, जितना वह अकेला। अपने नथूने फुला कर वह अब भी जोश में आ आ कर बंदर की भांति उछला पड़ रहा था कि यह पांच फीट छः इंच का आदमी किसी प्रकार सामने से हट जाय तो वह उन दोनों को तो फिर अच्छी तरह देख लेगा। बीच २ में वह अस्फुट उद्गार भी प्रगट करता जाता था—"साले, मेरी पतंग क्यों तोड़ी?···पैसे तो तेरे बाप से धरवा लूंगा···और तुझे तो निरंजन, कल स्कूल चलते वक्त रास्ते में समझ लूंगा—जो स्कूल जाना ही न भुला दिया बेटा, तो अपने बाप से पैदा नहीं हुआ किसी····! तूने समझा क्या है?···और किसी से अटका होगा···!"

इसके अतिरिक्त और भी अत्यधिक चरपरा मसाला मिल रहा था, जिसमें आपको हम हिस्सेदार नहीं बना सकते—हमें खेद है!

हां, तो फिर एक बार 'थाप-थाप-थेई' की ज़ोर से आवाज गूंजी और वह घटना नाटक के एक अंक की भांति थोड़ी-सी देर में समाप्त हो गई। लहरों को जगा देने वाला कंकड़ पानी में डूब कर अदृश्य हो गया और लहरें पानी के गर्भ में सो गईं। दृष्टियां फिर से उस बांस के स्तम्भ पर केन्द्रित हो गईं।

'थाप-थाप-थेई' की एक जोर की आवाज के साथ नीचे खड़ा, पर स्तम्भ की ओर ऊपर देखता हुआ एक नट बोला—"हां, भई जमूरे!"

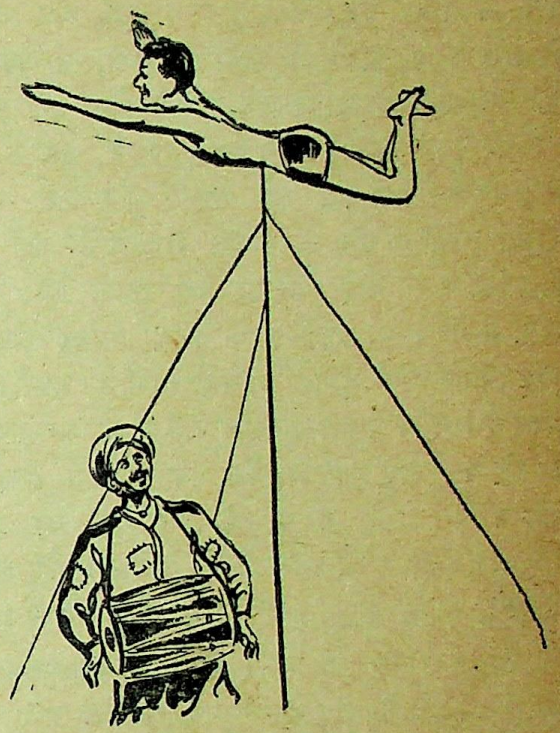

और बांस के सिरे पर लंगूर-सा बैठा वह युवक-नट बोला—"हो!"

"चढ़ गया?"

"चढ़ गया!"

"नहीं माना," ऊपर देख कर दोलकबाज ने कहा।

"तो कैसे मानोगे?"

"हाथ छोड़ दे,"

"गिर जाऊँगा,"

"तो सिर खुल जायगा।"

"इत्ते दाता-सखी बैठे हैं, कुछ डर नहीं!"

"देख, सिर खुल जायगा!"

"खेलूंगा—सलाम!"

"अच्छा तो देखें कैसा खेलता है···!"

थाप-थाप-थेई! थाप-थाप थेई! थेई-थेई! और हाथ छोड़ कर, केवल पेट के बल टंगा हुआ वह नट करतब दिखाने लगा—फिरकनी की तरह घूमने लगा। और भीड़ भी 'मोहन बगान' के टैस्ट मैच की तरह निरन्तर बढ़ने लगी।

सामने की धर्मशाला में बाहर से आये हुए बराती ताश के खेल में अब तक आनन्द ले रहे थे, किन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर जो तमाशे का केन्द्र-बिन्दु आते देखा और साथ ही ताश की वह बाजी भी खत्म हो चुकी, तो सब के सब उठ कर बाहर आकर खड़े हो गये और इन करतबों को देखने लगे। कौन कह सकता है, उस समय उन्हें यह सब कैसा क्या लग रहा होगा! एक अपरिचित शहर के एक अपरिचित मोहल्ले में जहां वे दो आंखों से भी कोई परिचय नहीं रखते, और जो बरात में महज मन-बहलाव के लिए आकर अपनी दुनिया और उस दुनिया की पेचीदगियों से इतनी दूर होकर इन गरीब बेकसों की कारगुजारियों का अवलोकन कर रहे थे—उन्हें यह सब कैसा क्या लग रहा होगा? भीड़ का रंग तो वे समझ सके होंगे, पर वह ढेर सारी अपरिचित आंखें और नये-नये चेहरे उन्हें कैसे लग रहे होंगे, इसका अनुमान जरा उतना सरल नहीं है!

तमाशा चल रहा था। हाथ छुड़वाते-छुड़वाते उस ढोलकबाज ने उस बेचारे नट के पैर और न जाने क्या क्या उस बांस के अवलम्ब से परित्यक्त करा दिये। और अब वह केवल पीठ के बल पर टिका हुआ द्रौपदी-स्वयम्वर के मत्स्य की भांति चारों ओर चक्कर खा रहा था। और दर्शक उसके पसीने की बूंदों पर हर्षित हो रहे थे कि ढोलक फिर गूंजी—'थाप - थाप - थेई' 'थाप - थाप - थेई' — 'थेई - थेई···' और कहा गया—"हां, भाई जमूरे!"

"हो!" कह कर एक बालक जो अपने फटे हुए कैनवास के मैल से भरे काले पड़े हुए जूतों के जीवन की दुर्दशा का कुछ दार्शनिक विश्लेषण कर रहा था, अपने फटे कुर्ते को झाड़ता हुआ बीच में आकर खड़ा हो गया।

"नाचेगा?"

"नाचूंगा!"

"देखें कैसा नाचता है—हां देखें—वाह भाई वाह···थेई - थेई—ता थेई!"

और वह जरा-सा लड़का अपने दयनीय चेहरे को सम्भालता हुआ, उस छत्रहीन बल्ली की छत्रच्छाया में नृत्य-कला का आचार्य बनने का सफल प्रयत्न-सा करने लगा। उधर, एक ओर उसका छोटा भाई टोकरी पर बैठा हुआ नटों के वृद्ध मुखिया से पेट के लिए कुछ पाने की विफल प्रार्थना कर चुकने के बाद अपना करुण बाजा बजा रहा था, और उसके धूल भरे काले मुंह पर आंसुओं की धारायें ऐसी प्रतीत हो रही थीं, मानों किसी टूटे-कच्चे घर की दीवार पर बरसाती परनाले! उसका 'बाबा' उसे शान्त करने की बहुत ही चेष्टा कर रहा था, किन्तु जभी ढोलक पर 'थाप - थेई—ता थेई' का एक जोर का हाथ पड़ता तो वह भी सब के साथ और सब कुछ भूल अनायास ही "हो!" कह देता।

खेल चल रहा था कि मेरे पड़ौसी मिस्टर राधे-बिहारी टुबेको-इन्सपैक्टर की ऐंट्रेंस पास लड़की उषा अपनी खुली खिड़की में दर्शक बन कर आई। सामने बरामदे में 'केस' पढ़ते हुए वह वकील साहब अब कुछ संभल कर बैठ गये। कभी कभी ऊपर की ओर भी झांक लेते थे, मानों आसमान पर सूर्य की चाल देख लेते हों। सामने अपने घर की चौखट में खड़ी हड़कचन्द सेठ की बहू भी उषा की ओर कभी कभी देख लेती थी, और जैसे ही हवा के झोंके के साथ उषा के कान के इयरिंग डोल उठते, वैसे ही हड़कचंद की बहू के मन में एक झुरझुरी-सी मच जाती—मन ही मन वह शायद निश्चित कर लेती थी कि आने दो आज उन्हें, ऐसे ही इयरिंग मंगा कर छोड़ूंगी!

इधर वकील साहब का उस खिड़की की ओर देखना पूर्ववत् जारी था और कुछ संयोग की बात थी कि जब भी वह उधर दृष्टिपात करते, उषा की साड़ी सिर से सरके बिना न रहती और अंचल भी न जाने कैसा हो जाता था कि उसका तत्काल संभालना अत्यन्त आवश्यक हो जाता था। वकील साहब देखने में ऐसे तन्मय थे कि उन्हें यह भी ज्ञान न रहा कि मैं भी उन्हें देख रहा हूँ या और भी कोई उन्हें देख रहा है!

खेल अब जल्दी जल्दी समाप्ति की ओर अग्रसर हो रहा था। एक एक कर खिड़कियों के किवाड़ बन्द होने आरम्भ हो गये थे—शायद आंधी आने की आशंका में! वृद्धा स्त्रियां भी नटों की बात छोड़, ब्याह में आये हुए गहनों और दूल्हे की सुन्दरता आदि पर टीका-टिप्पणी करने में व्यस्त हो गई थीं। बालकों में

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी खेल खत्म होने की भावना ने एक प्रकार की करुणा और जड़ता भर दी थी। बुद्धिमान लोग अपने अपने कामों में जुट गये थे—केवल वकील साहब उसी उत्साह से बैठे थे। बगल में देखा तो उषा अभी मौजूद थी! और सेठों, दाताओं, बाबुओं, सखी लोगों की कुशल-मंगल के साथ जय मनाता, उनके प्रताप और यश को आकाश में गुंजाता वह ढोलक वाला सेठों से और माइयों से कपड़े और पैसे की भीख मांगने लगा। सारे नट और यहां तक कि सब से छोटा भूखा बालक—सब के सब एक स्वर में गिड़गिड़ाने लगे थे। 'जमूरा' नीचे उतर आया था और बालकों का झुण्ड चंगा-पो, गुल्ली-डण्डा और कीटम-काटी खेलने चल दिया। कोई कोई अपने घर से उत्साहपूर्वक आटा ला ला कर ढोलक वाले की झोली में डाल जाता था। कुछ दो चार ऐसे भी बालक थे जो अब भी निश्चल भाव से बैठे २ देख रहे थे, मानों उनकी दृष्टि और उनकी सहज-बुद्धि में खेल का खत्म होकर सामान का बंधना भी जैसे एक 'तमाशा' ही हो। वास्तव में जीवन के प्रति यह दृष्टि-कोण बड़ा ही स्वस्थ है!

नटों की फरियाद निष्फल नहीं गई। कुछ दयार्द्र माइयों और बहूजियों ने उन्हें कुछ न कुछ दे दिया था। पर अधिकांश ने महंगाई के इस जमाने में विवशता प्रकट कर मानों अपनी जान आसानी से छुड़ा ली और कइयों ने तो नटों के साथ एक मिनट भी उलझ कर समय बर्बाद करना उचित नहीं समझा!

उधर, बांस जिन चार रस्सों का आधार लिये हुए थे, वे खोले गये और बल्ली को लिटा लिया गया, सामान बंधने लगा। वृद्ध नट ने, जो इन सब का मुखिया था, कला-प्रदर्शन के प्रतिदान में आई हुई वस्तुओं को यत्न पूर्वक लपेट-लपाट कर अपने पास रख लिया। बालक अब फिर रोने लगा था कि वृद्ध नट की एक जोर की घुड़की ने उसका सारा रोने का उत्साह भंग कर दिया।

ढोलकबाज ने अन्तिम बार उस कोलाहलमय संसार से दया की प्रार्थना की और कुछ प्रतिफल न आते देखकर अन्त में ढोलक की थापों के साथ यह घोषणा करके कि असली सेठ और दाता लोग तो मारवाड़ चले गये, नहीं तो यहां वे सोने से मढ़ दिये जाते, उसने मौन धारण किया और अपनी ढोलक को पदच्युत कर बंधाई में सहायता करने लगा।

बड़ी देर से 'जमूरा' कुछ सोच रहा था। अब वह उठा और उधर धर्मशाला की ओर आकर बरातियों के सामने गिड़गिड़ाने लगा। उसकी वाणी में विनय थी, यह तो मैं समझ पाया, पर उसने कहा क्या, यह मैं न सुन सका। काफी देर वह वहां रोदन-सा करता रहा और जब न माना तो एक बराती की कर्कश वाणी बिजली बन कर टूटी—"अबे, जाता है या नहीं, साले! कान खा रहा है! हमसे क्या मांगता है, मांग लड़की वाले के दरवाजे पर जाकर!"

'जमूरा' सहमा-सा वहां से लौट कर बेटी वाले के दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया। दरवाजे के पास जूठी पत्तलों का ढेर लगा हुआ था, जहां दो चार कौए और दो-चार कुत्ते अन्न-कणों का अनुसन्धान कर अपनी क्षुधा मिटा रहे थे। उस ओर बार २ अपनी आंखें उठा कर वह 'जमूरा' ग्रामाफोन के रिकार्ड की तरह अपना करुण संगीत सुना रहा था। उधर गुठरी पर बैठा उसका छोटा भाई जीवन की वेदना पर मानों कविता कर रहा था। पर उन घर वालों के हाथ विवाह के काम के कारण खाली न थे और चारों ओर से निराश होकर वह प्रतिभाशाली नाट्याचार्य मुंह लटका कर अपने झुण्ड की ओर लौटा।

सामान बँध चुका था, पर नटों में कुछ विवाद उठ खड़ा हुआ था। वृद्ध बड़बड़ा रहा था—ताव में झल्ला रहा था—"अबे, मैंने तो तुझे पहले ही कहा था, पर तूने एक न मानी और तूने यहां किया! अब फोड़ तकदीर! महाजन-ओली में करता तो पांच पैसे तो पल्ले पड़ते; पर तू करमठोंक है ना!"

जैसे-तैसे सामान पीठ पर लदा और बड़बड़ाते हुए वे नट प्रस्थान करने लगे। 'थाप-थाप-थेई' और 'थेई-थेई—ता थेई' की गूंज मर कर मिट चुकी थी, ठीक उसी तरह जिस तरह 'थाप-थाप-थेई' के साथ स्पन्दित हृदयों के भीतर का सारा उत्साह, सारी आशा अब मर मिट चुकी थी और केवल एक जनाज़ा बाकी रह गया था, सो अब निकल रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नान की गरिमा ३

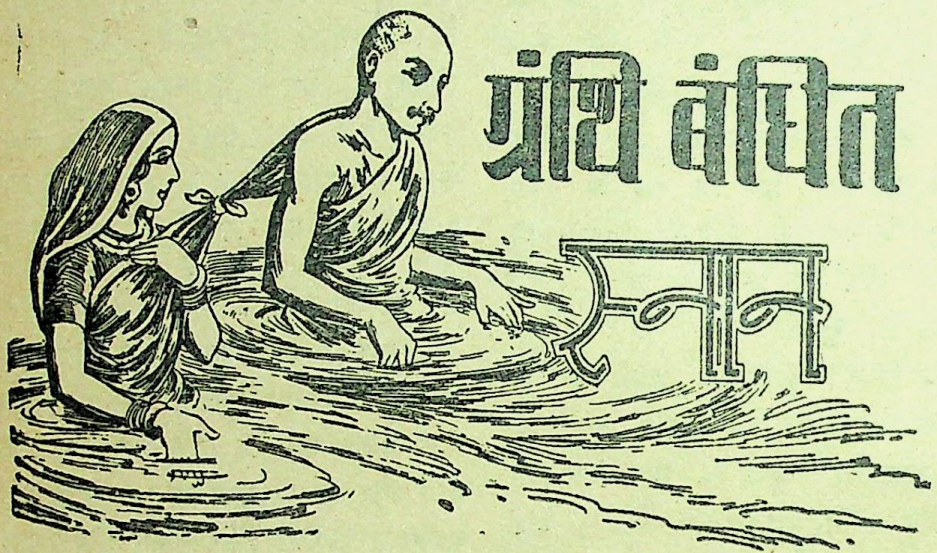

आर्य संस्कृति एवम् पातित धर्म की प्रबल प्रतीक भारतीय महिलाये जन्मान्तर में भी अपने वर्त्तमान पति प्राप्ति की कामना से सहस्रों की संख्या में विशेष कर पर्व के दिन तीर्थ स्थानों में इस बीसवीं सदी में भी ग्रन्थि बंधित स्नान करती दिखाई पड़ती हैं। इस प्रकार का स्नान उनके वांछित फल प्राप्ति में कहां तक सहायक होता है, यह तो उनके विश्वास का विषय है, पर स्नान का महत्ता सर्वथा निर्विवाद है और विशेषकर जब स्नान "प्रीफेक्ट साबुन" से किया जाता है, जो शरीर को न केवल स्वच्छ एवम् शान्त बनाता है वरन अपनी स्निग्ध सुवास में त्वचा के प्रफुल्लित तथा स्नान के बाद भी सुवासित रखता है।

प्रिफेक्ट
टॉयलेट सोप
विशुद्ध वनस्पति तेलों से निर्मित

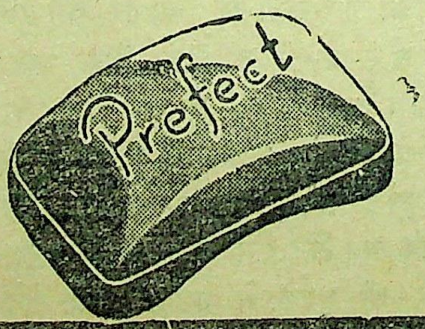

मोदी सोप वर्क्स, मोदीनगर, यू० पी०

स्थानीय डिपो—मेसर्स मोदी इण्डस्ट्रीज डिपो, दरयागंज दिल्ली।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्र भारत और नाट्य-कला

कुंवर ज्योतिशंकर सिंह

भारत के आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक पुनर्निर्माण का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक पुनर्निर्माण से जनता अवश्य ही बाह्य दृष्टि से उन्नत हो जायगी; किन्तु जनता के मानसिक तथा बौद्धिक विकास के लिए अपनी सांस्कृतिक परम्परा को सजीव और गतिशील बनाये रखने के लिए साहित्य, संगीत, नाट्य आदि कलाओं की उन्नति अनिवार्य होगी। भावी भारत केवल आर्थिक और राजनीतिक उन्नति करके विश्व के राष्ट्रों में कभी बहुत ऊंचा तथा स्थायी स्थान नहीं प्राप्त कर सकता। जब भारत की कलाएं और संस्कृति युग-जीवन के अनुकूल रूप धारण कर जन-सामान्य की मानसिक तथा बौद्धिक आवश्यकताएँ पूर्ण करने में समर्थ होगी, तभी वह प्रत्येक दृष्टि से उन्नत तथा प्रगतिशील होगा। इसलिये यह स्पष्ट है कि स्वदेश के सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का कार्य भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इसे पूरा करना बहुत जरूरी है।

इस कार्य में हमें नाट्य-कला से कल्पनातीत सहायता मिल सकती है। यह ठीक है कि पराधीनता-काल में भारत में नाट्य-कला के विकास के लिए उपयुक्त अवसर तथा सुविधाएं प्राप्त नहीं हो सकीं और इस कारण यह कला देश को आगे बढ़ाने के लिए कोई उल्लेख-योग्य कार्य नहीं कर सकी। परन्तु अब परिस्थितियों में परिवर्तन हो गया है। भारत में स्वातन्त्र्य-युग के प्रारम्भ के साथ ही कलाओं की उन्नति के मार्ग से बहुत-सी और बड़ी-बड़ी बाधाएं दूर हो गई हैं। अब तो हमें ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि कलाएं कलियों के रूप में भारत-भूमि पर खिलें और जन-गण के अन्तर को सुवास तथा आनन्द से भर दें। इस प्रयत्न की रूपरेखा निर्धारित करने की आवश्यकता है।

विदेश में नाटकों की उपयोगिता

हिन्दएशिया, चीन और सोवियत रूस—अपने इन तीनों पड़ोसी राष्ट्रों के उदाहरणों से भारत में नाटकों को उन्नत करने के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन मिल सकता है।

हिन्दएशिया नवजात स्वतन्त्र राष्ट्र है और दुर्भाग्यवश बाहर व भीतर के कई संघर्षों में फंसा हुआ है। किन्तु ऐसी अवस्था में भी अल्पकालावधि के अन्दर वहां नाट्यकला ने जिस प्रकार उन्नति की है, वह हमारे लिए आश्चर्यजनक है। वहां के साहित्यिक सरल और सुन्दर नाटकों का प्रणयन जनता के लिए करते हैं और आजकल ये नाटक वहां ग्राम-ग्राम में अभिनीत होते हैं। अभिनय के लिए हिन्दएशिया में किसी अधिक टीम-टाम या साज-समान की जरूरत नहीं होती। थोड़ी-सी साधारण नाटकीय सामग्री लेकर वहां अच्छे-अच्छे नाटक खेले जाते हैं और उन्हें जनता खूब पसन्द करती है।

यह तो हिन्दएशिया की बात हुई। चीन में भी आधुनिक काल में नाटकों ने बहुत उन्नति की है। वहां की नाट्यकला का इतिहास बहुत गौरवपूर्ण है। ईसा से कई सौ वर्ष पहले वहां नाटकों का प्रचार था। ईसा से लगभग ५८० वर्ष बाद नाटकों के शुद्ध और व्यवस्थित रूप का प्रचार हो गया था। तांग राजवंश (७२०-९६० ई०), सुंग राजवंश (९७०-११२६ ई०) और चिन एवं युआन राजवंश (११२६-१३६७ ई०) के शासन-काल में नाटकों का अभूतपूर्व विकास हुआ। नाटकों की कथावस्तु नैतिक शिक्षाओं से परिपूर्ण होती थी और रंगशालाएं भी बहुत साधारण तरीके से निर्मित होती थीं। उन दिनों चीन के अधिकांश गांवों में नाटक खेले जाते थे। लेकिन कालान्तर में नाटकों के साथ जनता का विशेष सम्पर्क नहीं रहा और केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनी-वर्ग अपने मनोविनोद के लिए उनका उपयोग करने लगे। आधुनिक काल में यह बात नहीं रह गयी है। इस समय चीन के कम्युनिस्ट क्षेत्र में और कोमिन्ताग-क्षेत्र में नाट्यकला अच्छा विकास कर रही है। वहां यह कला सच्चे अर्थों में जन-सम्पर्क में आयी है और इसलिए इसका रूप निखर कर चमक उठा है। 'चाइना डाइजेस्ट' की सूचना के आधार पर कहा जा सकता है कि इस युद्ध-काल में उत्तरी चीन के साहित्यकारों ने ६०० नाटकों का प्रणयन किया है। यह परमाश्चर्यजनक बात है। इससे पता चलता है कि वहां की जनता में नाटकों की कितनी मांग है। इस समय वहां सांस्कृतिक जत्थे गांव गांव में घूम कर, नाटकों के अभिनय द्वारा जनता के सन्मुख उसका लक्ष्य स्पष्ट करते हैं और उसे चीन को उन्नत तथा समृद्ध बनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

सोवियत रूस ने भी पिछले २७-२८ वर्षों में नाटकों के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। सन् १९१७ ई० की क्रांति के पूर्व वहां की जनता कीड़े-मकोड़ों से भी बदतर जीवन व्यतीत कर रही थी। उसकी सांस्कृतिक अवस्था भी अत्यधिक दयनीय थी। सर्वत्र जार के निरंकुश अत्याचारी शासन का बोलबाला था। किन्तु क्रान्ति के पश्चात्, जनता की दशा में अतिद्रुतगति से परिवर्तन होता गया और आज द्वितीय महायुद्ध में क्षत-विक्षत होने पर भी रूस संसार के महान समृद्धिशील राष्ट्रों में प्रमुख माना जाता है। पिछले वर्षों में नाट्यकला ने वहां अद्भुत प्रगति की है—यह बात ऊपर कही जा चुकी है। आज वहां नाटकों के विभिन्न प्रकारों—भाव-नाट्य, नृत्य-नाट्य, संगीत-नाट्य आदि का प्रचार छोटे-छोटे गांव और कस्बों तक में हो गया है। अभिनय की शिक्षा के लिए स्थान स्थान पर शिक्षण-केन्द्र खुले हुए हैं। नगरों में बड़े-बड़े और उत्तम कोटि के नाट्यगृह हैं, जिनमें श्रमजीवियों के लिए अनेक प्रकार के नाटकों का अभिनय होता है। रूस की सरकार नाट्य-कला सीखने की इच्छा रखने वालों को पूर्ण प्रोत्साहन देती है। रचनाकार श्रेष्ठ कोटि के नाटकों की रचना करते हैं। निश्चय ही सोवियत रूस में नाट्य-कला का भविष्य उज्ज्वल तथा महान् है।

भारत की स्थिति

ऊपर अपने तीन पड़ोसी देशों के उदाहरण दिये गये हैं, जिनमें नाट्य-कला की उन्नति हुई है। रूस में प्राचीनता के भूगर्भ से नवीनता का जन्म अभी कुछ ही वर्षों पहले हुआ है और हिन्द-एशिया एवं चीन में तो अभी यह बात हो ही रही है। पराधीनता के पाश से उन्मुक्त भारत को भी, इन देशों को दृष्टिपथ में रखते हुए, अपने यहां नाटकों को विकसित करना होगा। स्मरण रखना चाहिये कि हमें इस क्षेत्र में ब्रिटेन और अमेरिका से भी बहुत कुछ सीखना पड़ेगा। उन देशों में नाटकों की टेकनिक में जो विविधता तथा नूतनता पायी जाती है, उसका समावेश यदि अपने यहां के नाटकों में नहीं किया जायगा, तो हमारी नाट्य-कला का विकास अधूरा रह जायगा।

नवीन नाट्य-कला के विकास के लिए प्राचीन भारतीय नाट्य-शास्त्र तथा नाट्य-कला का भी सहारा लेना पड़ेगा। उनमें अनेक ऐसी बातें हैं जिनके बिना नई नाट्य-कला सर्वांग सुन्दर नहीं बन सकेगी। उन्हें यदि हम भुला देंगे तो हमारी गतिशील सांस्कृतिक परम्परा में व्याघात उपस्थित हो जायगा। प्राचीनता से पूर्णतः सम्बन्ध-विच्छेद करके आगे बढ़ने की चेष्टा करना मूर्खता होगी। अतः हमें प्रचीनता तथा नवीनता का उचित सामञ्जस्य कर के भारत की नाट्य-कला का रूप-निर्माण करना होगा।

हमें समय-समय पर विदेशों में ऐसे व्यक्तियों को भी भेजना होगा, जो वहां भारतीय नाट्यकला का प्रदर्शन करें और वहां की कला का ज्ञान प्राप्त कर अपनी कला को समृद्ध बनायें। इस प्रकार भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध की स्थापना होगी। भारत विदेशों की कला के सम्बन्ध में और विदेश भारत की कला के सम्बन्ध में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। संयुक्तराष्ट्रीय शैक्षणिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संघ (यूनाइटेड नेशन्स एजुकेशनल, साइन्टफिक एण्ड कल्चरल आरगनाइजेशन) के नाट्य-विभाग से इस सम्बन्ध में बहुत कुछ सहायता प्राप्त हो सकती है।

★

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दि कौमिल्ला बैंकिंग कारपोरेशन लि०

(स्थापित—१९१४)

रजिस्टर्ड आफिस—क्लाइव घाट स्ट्रीट कलकत्ता

बैंक हर प्रकार का बैंक सम्बन्धी कार्य करता है

शाखायें समस्त भारत में

विदेशी एजेण्ट—

लन्दन—वेस्टमिन्स्टिर बैंक लिमिटेड।
अमरीका—बैंकर्स ट्रस्ट कम्पनी आफ न्यूयार्क।
आस्ट्रेलिया—नेशनल बैंक आफ आस्ट्रेलिया लिमिटेड।
कनाडा—बैंक आफ मांट्रियल।

बी० के० दत्त
डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर

एन० सी० दत्त
मैनेजिंग डायरेक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गन्धक का तेज़ाब

औद्योगिक प्रयोग के लिये

डी० सी० एम० केमिकल वर्क्स गन्धक के तेजाब को (१.८४०) या ९५%, (१.७५०) या ८२% और ओलियम २०% के तरीकों से बनाते हैं। आवश्यकतानुसार यह खरीदा जा सकता है। भेजने से पूर्व इसकी अच्छी तरह जांच कर ली जाती है। ९५% तेजाब विशेष रूप से निर्मित टीयों में भेजा जाता है।

अपनी जरूरतों के लिये लिखिये :—

निम्न वस्तुओं के भी निर्माता :—

शोरे का तेज़ाब, नमक का तेज़ाब, हरित गंधिताम्ल, अलम्युनियम फेरिक, फिटकरी सफेद व लाल, साबुन व कीमानाशक, टर्की रेड आयल, हड्डी का खाद व मिश्रित खाद, सरेस,

डी.सी.एम केमिकल वर्क्स

पो. बो. नं० २११ नजफगढ़ रोड दिल्ली

अँचे पैमाने के पूर्वपरीक्षित रसायन - निर्माता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृढ़ता

(पृष्ठ २१ का शेष)

मां—अच्छा, तेरा चाहना निकालती हूं। आज से तुम्हारा स्कूल जाना बन्द, ट्यूशनों पर जाना बन्द, खाना बन्द। तू तब तक इस कमरे से बाहर नहीं निकल सकती, जब तक कि मुझ से माफी नहीं मांगती और जिस लड़के के साथ मैं कहूँ उसके साथ शादी करने को राजी नहीं होती।

सुमन—मैं बिक्री की वस्तु बनना नहीं चाहती। एक बार मन से जिन्हें अपना स्वामी मान लिया है, उनके अतिरिक्त मैं किसी और को देखूंगी भी नहीं।

मां—तेरा हठ तो मिनटों में भागेगा, जब आठ दिन दाना-पानी नहीं मिलेगा। रोती रह यहीं पड़ी पड़ी। संतोष की एक सांस लेना दूभर कर दिया है चुड़ैल ने!

(जोर से दरवाजा बन्द करके मां बाहर जाती है।)

सुमन—(स्वगत) रोऊंगी नहीं, सत्य पर अटल रहने के लिए आंसू बहाना कायरता है! मिलन की आशा लेकर हंसूंगी मैं तो, हां, हंसूंगी!

(पटाक्षेप)

तीसरा दृश्य

(उसी तरह का हरे रंग से पुता हुआ, स्वच्छ साधारण-सा कमरा। सोफे पर सुमन की मां तथा एक युवक—रमन। समय : संध्या।)

मां—उसकी तबियत कुछ ज्यादा खराब है; मगर मुझे तो अब उसके पास जाते भी घृणा मालूम होती है। ऐसी लड़की भी क्या, जो मां का कहना न माने!

रमन—इतनी नाराजी भी ठीक नहीं; इससे उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ेगा।

मां पड़े बुरा असर; उसके हठ से मुझ पर भी तो बुरा असर पड़ा है।

रमन—मेरा खयाल है, आप लोग कुछ दिन के लिये पहाड़ पर चली जाइये। सुमन जी विपिन को भी भूल जायंगी और आप लोगों का स्वास्थ्य भी सुधर जायगा।

मां—सो तो डाक्टर भी कह रहे थे, मगर मैं सोचती हूँ कि···

रमन—सोचना क्या, वहां मेरी कोठी है, वहीं रहियेगा। दो नौकर भी हैं, कोई कष्ट न होगा। चार-पांच दिन में यहां का काम निबटा कर मैं भी चल सकता हूँ।

मां—तो फिर चलो, मैं तैयारियां किये लेती हूं।

रमन—मेरा खयाल है, सोमवार को दोपहर की गाड़ी में सीटें रिजर्व करा लूं।

मां—जैसा ठीक समझो। मैं तो सोचती हूँ कि महीने-डेढ़ महीने में लड़की का मन सुधर जायगा तो वहीं तुम दोनों का ब्याह भी करा दूंगी।

रमन—अ···यह आपके सोचने की बात है, मैं तो आपकी आज्ञा का पालन करने को सदा तैयार रहता हूं। अच्छा, मैं चलूं, आठ बज रहे हैं।

(दूर घंटाघर से आठ बजने की आवाज सुनाई पड़ती है। तभी अस्वस्थ सुमन कमरे के द्वार पर लड़खड़ाती आ कर खड़ी होती है।)

मां—थोड़ी देर और बैठो न, मेरा मन नहीं लगता। शायद तब तक उसे भी होश आ जाये। (द्वार की ओर नजर पड़ती है) अरे, तू कैसे उठ आई? लड़की है कि आफत, इतनी कमजोरी में···।

सुमन—आठ बजे हैं न; वे आठ बजे ही तो आया करते थे। खिड़की में से उनकी राह देखते-देखते मेरी आंखें दुखने लगीं, मैंने सोचा शायद वे···

मां—क्या बकती है कुलच्छिनी, न समय देखे, न···।

सुमन—अब क्या देखना है? मुझे बैठने दो; वे यहीं बैठा करते थे, यहीं···।

(एक कुरसी पर बैठ जाती है।)

रमन—(उठने का उपक्रम करते हुए) आप बहुत कमजोर हैं, मैं सहारा दिये देता हूँ; वर्ना कहीं आप···

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमन—मुझे सहारा नहीं चाहिये, भाई साहेब, मुझे तो···

रमन—भाई साहेब ?

मां—भाई साहेब ? भाई साहेब कौन ? (रमन से) तुम कुछ खयाल न करना, रमन बाबू ! ये होश में नहीं है। (सुमन से) मैं तुझे···।

सुमन—मैं होश में हूँ। मेरी माता जी ने मुझे पागल बना दिया है। ये खुद होश में नहीं हैं। इनके दिमाग पर राक्षस सवार है। आपसे मेरा परिचय नहीं है, मेरे मन ने आपको भाई कह कर पुकारा है, सो मैं इसी नाते को मानूंगी।

मां—चुप रह, सुमन ! मैं कहती हूँ, मैं कहती हूँ तू···

रमन—कहने दीजिये न। आप जरा शान्त रहिये।

सुमन—तब तो मुझे आपका सहारा लेना होगा। मैं, मैं जिन्दा लाश हूँ, मेरे प्राणों की शक्ति क्षीण हो रही है। मेरी सांसों में आहों के घाव पड़ गये हैं, और अपने हर शब्द से मेरी मां उन घावों को कुरेदा करती है। सगी मां भला ऐसा कर सकती है ? यूं न देखो, माता जी, मुझे यों न देखो। उफ !

रमन—(मां से) आप थोड़ी देर के लिये उस कमरे में चली जाइये।

मां—हूँ।

(जिस द्वार से सुमन आई थी, उसी द्वार से मां बाहर जाती है।)

रमन—(सुमन से) जी, अब आप इत्मीनान से सब कुछ कहिये, डरिये नहीं।

सुमन—मैं डरती नहीं हूँ। मैं सब के लिये अपना जो कर्त्तव्य समझती हूँ, उसे पूरा करने में अपनी जान दिये डाल रही हूँ। लेकिन मुझे इसका अभिमान नहीं है। सब अपने अपने भाग्य का खाते हैं। फिर भी जिन्हें मैं अपना समझती हूं, जिनके लिये सब कुछ करती हूं, उन्हें मेरे मरने-जीने की कोई परवा नहीं। सब चाहते हैं मेरा कोई न हो। मैं मन ही मन में घुटी जा रही हूँ, मेरे साहस का हिमालय गला जा रहा है, मेरी उमंगें आंसुओं के सागर में डूब कर सो गई हैं। सारी दुनिया मुझ निर्दोष की दुश्मन बन गई है···। मेरी मां चाहती है कि मैं ब्याह न करूं। और जो करूं भी तो उनकी पसन्द के किसी धनी व्यक्ति से·····। सो, सो मैं नहीं कर सकती··· सोच भी नहीं सकती···। मैंने उन्हें अपना माना है। हम दोनों ने एक दूसरे को वचन दिया है। उस वचन को हम दोनों में से कोई भी नहीं तोड़ सकता। उन्हें मैंने मन से माना है, मैं उनके अतिरिक्त किसी की भी नहीं बन सकती। गरीब, बुरे जैसे भी हैं, वे मेरे हैं ! मुझे कोई भी·····।

रमन—मैं विपिन को जानता हूँ !

सुमन—सचमुच, आप उन्हें जानते हैं ? तो, तो फिर मुझे सहारा दीजिये। दूसरा कोई मुझ पर दया नहीं कर सकता। मैं आपसे बिनती करती हूँ, एक बार, बस एक बार उन्हें बुला दीजिये। मैं उन्हें एक बार देख लूं, फिर चाहे मर ही क्यों न जाऊं।

रमन—ऐसी बुरी बात नहीं कहा करते। और देखिये, आप शायद न जानती हों कि आपकी मां मेरे साथ आपका ब्याह·····।

सुमन—जी ! क्या कहा ? नहीं नहीं, यह कभी नहीं हो सकता। मैं जहर खा लूंगी। मैं ·····।

रमन—उत्तेजित न होइये। आपने मुझे भाई कहा है न। बस, मेरा आपका यही नाता रहेगा।

सुमन—ओह ! आप महान हैं। मैं, मैं आपके हाथ जोड़ती हूँ, अपनी बहिन के लिए इतना कीजिये, उन्हें बुला दीजिये। आपके होते हुए मैं उन्हें बिना देखे मरना नहीं चाहती।

रमन—आप चिंता करना छोड़ दें। मैं किसी भी तरह विपिन को यहां लाऊंगा। आप बहुत थक गई हैं। चलिये, आपको बिस्तर तक पहुँचा दूं। घबराइये नहीं, आप जल्दी अच्छी हो जायंगी।

सुमन—घबराती नहीं हूँ, सोचती हूँ, क्या वे···?

(रमन उसे हाथ का सहारा देकर उठाता है।)

रमन—सोचिये भी नहीं। आप बहुत कमजोर हो गई हैं। दीवार का सहारा ले लीजिये। जी, चलिये। हां। (दोनों दूसरे कमरे में जाते हैं।)

(पटाक्षेप)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ दृश्य

(वही कमरा। सुमन खाट पर लेटी हुई है। बिल्कुल कमजोर नजर आती है। पास ही मां बैठी है। समयः संध्या। दूर घण्टाघर से आठ बजने की आवाज आती है।)

सुमन—(स्वगत) छै, सात, आठ; आठ बज गये। कोई मुझे बताये, वे आये हैं या नहीं। आये हैं? कहां हैं? मेरे पास बुलाओ, देख लें कि उनकी सुमन की क्या दशा हो गई है। क्या नहीं आये? क्यों नहीं आये? हाय रे, मैं कैसी अभागिन हूँ। क्या वे मुझे भूल गये? क्या मेरी याद भी भुला दी? क्या मैं, क्या मैं·····? उफ! एक दिन कहा था कि सुमन, जब तुम बुलाओगी, मैं हाजिर हो जाऊंगा। और आज इतने दिनों से मेरी पुकारें हवा में आहें बन बन के उड़ रही हैं, फिर वे क्यों नहीं आते?

मां—बके जा, बके जा, कम्बख्त! बेशरम! बेहया! देखती हूँ, कैसे उसे नहीं भुलाती।

सुमन—हुं, मेरे रोम-रोम में उनका नाम लिखा हुआ है, मां, मेरी हर सांस में उनकी याद है, मेरे प्राणों में उनका···।

मां—चुपचाप पड़ी रह, नालायक!

सुमन—कितनी गालियां दोगी? गालियां देते जी नहीं भरा तो जहर देकर मार डालो। यों तो मैं उन्हें देखे बिना मर नहीं सकती।

(बाहर कुछ दूर मोटरकार की आवाज, ब्रेक लगने और इंजन बन्द होने की आवाज।)

सुमन—किसकी मोटर आई? क्या वे आ गये?

मां—हां, वे आ गये! अरे, उसके बाप-दादों ने भी कभी मोटरें देखी थीं कि वही राजा बन के मोटर पर आयेगा!

सुमन—हां, उनके पास तो मोटर नहीं है, वे गरीब हैं; लेकिन मुझे क्या करना है मोटर का! वे पैदल भी तो आ सकते हैं। क्या मुझे भूल गये? हे प्रभो·····!

(द्वार पर पैरों की आवाज आ कर रुक जाती है और सांकल बज उठती है।)

सुमन—कौन है? देखो मां! तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ। वे ही आये हैं। जरा ठहरिये, अभी खोलती हूँ···। (उठने का प्रयत्न करती है, पर कमजोरी के कारण नहीं उठ पाती।) नहीं मैं न उठ सकूंगी। मुझमें शक्ति नहीं है।

मां—चुपचाप पड़ी रह, और खबरदार, जो किसी आने-जाने वाले के सामने अपनी कथा शुरू की तो···। (मां उठ कर दरवाजा खोलती है। सामने रमन खड़ा है।)

रमन—नमस्ते। माता जी!

मां—जियो बेटा, आ जाओ·····।

रमन—मेरे साथ, मेरे साथ मेरे एक मित्र भी हैं···।

मां—तो क्या हुआ, उन्हें भी बुला लो न।

(रमन के पीछे से विपिन सामने आता है। दोनों कमरे में प्रवेश करते हैं।)

विपिन—(खांसते हुए) एक दिन आपने आने के लिये मना कर दिया था। आज भी मैं बिना बुलाये नहीं आया हूँ। और दरवाजे पर भी आपकी आज्ञा···।

मां—तुम, तुम फिर आ गये मेरे घर में आग लगाने के लिये। जाओ यहां से।

सुमन—(खाट पर लेटे हुए) नहीं, नहीं, मत जाना। मेरे पास आ जाओ!

विपिन—मैं आग लगाने नहीं आया हूं। अपनी नादानी के कारण आपने अपने हाथों अपने घर में जो आग लगाई है, उसे बुझाने आया हूँ। (खांसता है)

सुमन—तुम्हें क्या हो गया है, विपिन?

मां—जाओ यहां से।

सुमन—नहीं।

विपिन—मैं नहीं जाऊंगा।

मां—मैं पुलिस को बुलाती हूँ।

विपिन—आप ऐसा नहीं कर सकतीं। (खांसता है) मैंने कोई अपराध नहीं किया।

सुमन—सुनो, सुनो, मेरे पास आओ। एक बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे सहारा दो। मुझे अपने चरण छूने दो, स्वामी!

(सुमन उठने का प्रयत्न करती है, परन्तु उठ नहीं पाती। विपिन पास आता है।)

विपिन—मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूंगा, सुमन!

मां—रमन बाबू, यह सब क्या नाटक है? ये तुमने क्या किया? तुम भी मुझे धोखा देने को ही आये थे क्या?

रमन—आपने कभी शान्त होकर कुछ नहीं सोचा। एक बार विपिन के बारे में गलत खयाल बना लिया, सो उसी को पत्थर की लकीर मान कर चलती आईं। जब वे दोनों एक दूसरे को चाहते हैं, शादी करने को तैयार हैं, तो आप क्यों उनके रास्ते में बाधा बन रही हैं? वे चाहें तो आपका विरोध करके घर छोड़ कर भी शादी कर सकते हैं; उस समय न आप रोक सकती हैं और न कानून। लेकिन आपकी बदनामी न हो, इसलिये उन्होंने ऐसा नहीं किया और दोनों अपने दिलों में प्रेम की आग दबाये जलते रहे। अगर आप अब भी उनको एक न होने देंगी तो याद रखिये, आपके हठ के कारण दो मौतें हो जायंगी। विपिन गरीब सही, पर भूखा नहीं मरता। आप मोटर और बंगले वाले को ही सब कुछ क्यों मानती हैं? जब कि मैं जानता हूं कि उनके दिल नहीं होते। मुझ जैसा अमीर आदमी पत्नी के प्रति पूरी जिम्मेदारी कभी नहीं निभा सकता। मैं आप से फिर कहता हूँ कि···।

मां—बहुत हुआ, रहने दो, रमन। मैं यह सब कुछ सुनते सुनते तंग आ चुकी हूँ। मुझे कुछ नहीं सुहाता, मेरी समझ में कुछ नहीं आता।

रमन—तो फिर जो मैं चाहूँगा वही होगा। आओ विपिन, सुमन को सहारा देकर ले चलो।

मां—कहां ले चलो?

रमन—अब ये दोनों भांवरें डाल कर आपके पास आशीर्वाद लेने को आयंगे।

सुमन—(विपिन से) तुम कितने दुबले हो गये हो। (विपिन, सुमन को हाथों का सहारा देकर उठाता है।)

विपिन—फिर भी तुम्हारा बोझ उठाने के लिये इन कंधों में अभी शक्ति है। आओ।

रमन—घण्टे भर बाद हम लोग आयंगे, माता जी! (विपिन सुमन को द्वार के बाहर ले जाता है। पीछे पीछे रमन भी जाता है।)

मां—अरी कहां जा रही है, निर्लज्ज? उफ, यह सब क्या है? उस विपिन के साथ ब्याह करेगी? लेकिन वह गरीब है। रमन ने ही यह सब गड़बड़ किया है। क्यों? अरे, मेरे देखते देखते मेरे सामने से मेरी लड़की को ले गये, जैसे मैं कुछ भी नहीं हूँ। ठहरो, ये हर्गिज न होगा!

(बाहर मोटर स्टार्ट होने की आवाज।)

मां—(खिड़की में झांकते हुए) ठहरो, ठहरो! उफ!

(दूर जाती हुई मोटर की आवाज। कुछ देर बाद दूर से शहनाई बजने का स्वर सुनाई देता है।)

समाप्त

★

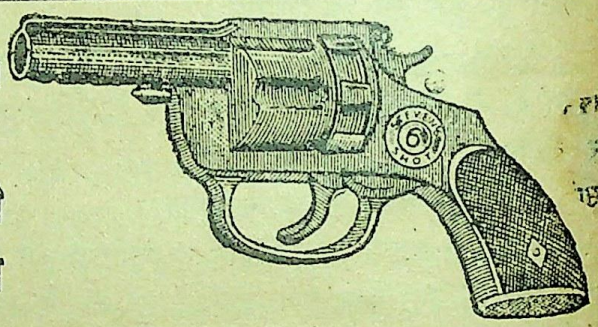

पिस्तौल

न्यू माडल ६ फायर वाला ओटोमेटिक

पिस्तोल अभी नया होशियार कारीगरों द्वारा तैयार किया गया है इस पिस्तोल की चरखी में अलहदा-अलहदा ६ खाने हैं जिन में शॉट रखे जाते हैं चोर, डाकू, गुंडाओं, जंगली जानवरों से खतरे के वक्त आत्मरक्षण के लिये इसके घोड़े दबाने से भयंकर आवाज होती है। असली के मानिन्द इसके रखने में लाइसंस की जरूरत नहीं है की० ५॥) डा. ख. १॥) प्रत्येक पिस्तोल के साथ २५ शाट मुफ्त, अलहदा ५० शॉट का ३) रु०।

मिलने का पता :—

जनरल ट्रेडर्स (J. I.) शाहपाड़ा अलीगढ़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम

इस स्तम्भ में प्रतिमास संपादक के नाम आये पाठकों के कुछ चुने हुए पत्र प्रकाशित किये जाते हैं और सर्वोत्कृष्ट पत्र पर पांच रुपये का पुरस्कार दिया जाता है। पत्र सार्वजनिक हित व रुचि के किसी भी विषय को लेकर लिखा जा सकता है।

पत्र संक्षिप्त, स्पष्ट और सुरुचिपूर्ण होना चाहिये और उसके साथ 'मनोरंजन-पत्र-प्रतियोगिता कूपन' आना चाहिये।

यह सिनेमा !

पाश्चात्य देशों की सभ्यता के जो बुरे प्रभाव हमारी सभ्यता पर पड़े हैं, उनमें से एक सिनेमा भी है।

आज हमारे भारतवर्ष के छोटे २ छः-छः सात-सात वर्ष के बालक, जो हमारी भावी आशाएं हैं, जिन पर हमारे देश, जाति व धर्म की उन्नति निर्भर है, सड़कों पर हरतरह के गंदे फिल्मी गीत गाते फिरते हैं। यह ठीक है कि इस उम्र में वे छोटे २ बालक इन गानों के अर्थ नहीं समझते; परन्तु हमारे 'शहनाई,' 'नाटक' 'खिड़की' जैसे गंदे फिल्म बनाने वाले बालकों को चित्र देखने के लिये प्रोत्साहित करने वाले सलामत रहें, वे

पुरस्कृत पत्र

दिन भी जान जायंगे कि 'रोमांस' क्या है, एक्टर क्या है, कौन-सी अभिनेत्री किस चित्र में कैसा काम करती है। यह क्या है ? यह हमारे देश की उन संतानों के मस्तकों और हृदयों को दूषित किया जा रहा है, जिनमें से कई भविष्य में हमारे नेता बन सकते हैं, संसार में नाम और देश का नाम उज्ज्वल कर सकते हैं— छोटे २ बालकों को विलासिता के सांचे में ढाला जा रहा है, हमारी भावी आशाओं को मिट्टी में मिलाया जा रहा है !

बहुत से महानुभावों ने यह प्रयत्न भी किया कि फिल्में आदर्श तथा शिक्षाप्रद फिल्में बनने लगें, परन्तु निर्माता - लोगों की कैसी मनोवृत्ति है, यह अक्तूबर के 'मनोरंजन' में प्रकाशित कहानी 'फिल्मी कहानी' से पता चलता है।

आज देश के कई प्रमुख नगरों में 'शहनाई,' 'खिड़की,' 'नाटक,' 'सफर' जैसे गंदे चित्रों की सिल्वर जुबलियें और गोल्डन जुबलियें मनाई जा रही हैं। ऐसा क्यों ? क्योंकि हमारे भारत के निवासी ऐसे चित्रों को पसंद करने लगे हैं ? नहीं। इसका केवल यही उत्तर हो सकता है कि हमारे देश के लोगों को ऐसे दूषित वातावरण में रक्खा गया है कि वे ऐसे गंदे कुरुचिपूर्ण चित्र पसंद करने लगे हैं। इस कुप्रभाव की जितनी ही जल्दी रोक-थाम हो, उतना ही श्रेयस्कर है। यह माना कि हमारी राष्ट्रीय सरकार इसका एक दम अंत नहीं कर सकती है, परंतु इतना तो कर ही सकती है कि विद्यार्थियों के ऐसे चित्र देखने पर प्रतिबंध लगा दे। जहां मदिरा आदि का सरकार ने कहीं-कहीं निषेध किया है, वहां गंदी फिल्मों का भी निषेध होना आवश्यक है।

बरेली — विजयप्रताप बक्शी

★

सहशिक्षा

लड़के-लड़कियों की शिक्षा एक साथ एक विद्यालय में हो या अलग अलग ? भारतीय जनता के विचार दोनों ओर हैं। लेकिन अब चूंकि निकट भविष्य में हमारी शिक्षा-पद्धति में भारी परिवर्तन होने वाले हैं, अतः यह उपयुक्त ही है कि हम विचार कर लें कि सामाज हित की दृष्टि से सहशिक्षा अच्छी है अथवा बुरी।

स्त्री-पुरुष के सहयोग से ही संसार की उत्पत्ति हुई है। आरम्भ से दोनों वर्ग एक साथ रहते आये हैं, दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। जब स्त्री-पुरुष के सहयोग का सामाज में इतना अधिक महत्व है, तो क्यों न आरम्भ से ही इस के लिये प्रयत्न किया जाये ? इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में सहशिक्षा की वांछनीयता प्रकट होती है। सहशिक्षा इस प्रकार होनी चाहिए कि जीवन में आगे चल कर स्त्री-पुरुष एक दूसरे के सहायक हो सकें। संसार में कोई काम न अकेले पुरुषों का है और न अकेली स्त्रियों का। प्रत्येक कार्य में दोनों का हित बराबर है।

मैं सहशिक्षा के पक्ष में हूँ। समाज-हित के सामने मैं धर्म और नीति को भी नहीं मानती। जब तक उच्चकोटि का समाज नहीं बनता औ लोग प्रत्येक कार्य को सहयोग से नहीं करते, तब तक धर्म और नीति दोनों का कोई महत्व नहीं है।

कुछ शिक्षाशास्त्रियों का विचार है कि लड़के और लड़कियों की प्राथमिक शिक्षा साथ-साथ हो और आगे चल कर जब वे आयु में कुछ बड़े हो जायें, तो उन्हें एक दूसरे से अलग कर दिया जाये। ऐसा इस लिये कि दोनों के अन्दर किसी प्रकार की गन्दी भावना का संचार न हो। मैं समझती हूँ, साथ २ पढ़ने से लड़के-लड़कियों के पतित हो जाने की आशंका निराधार है। स्त्री-पुरुष का आकर्षण एक दूसरे को हानि नहीं पहुँचाता। हां, दूर-दूर रहने से वह आकर्षण काम-वासना के रूप में जरूर प्रकट होता है।

अपने देश की वर्त्तमान आर्थिक अवस्था को देखते हुए भी सहशिक्षा आवश्यक है। सहशिक्षा में सरकार का कम खर्च होगा। वह लड़के व लड़कियों के लिये एक एक गांव में एक एक स्कूल खोल कर देश में साक्षरता का अधिक प्रसार कर सकती है।

मेरठ — राजकुमारी विज

★

हमारा रंगमंच

सितम्बर के 'मनोरंजन' में प्रकाशित श्री विष्णु प्रभाकर का रंगमंच के पुनरुत्थान के सम्बन्ध में लेख सामयिक होने के कारण अभिनंदनीय है। संसार के सभी उन्नत देशों की भांति स्वतंत्र भारत का भी अपना एक ऐसा रंगमंच होना चाहिये, जिस पर हम भारत-वासी गर्व कर सकें। इसके प्रति अब तक भारत में जो उपेक्षा हुई है, उसका सारा दोष अपनी राजनैतिक पराधीनता पर ही नहीं थोप देना चाहिये। इसमें हमारा अपना दोष कम नहीं है। खैर, गड़े मुर्दों को उखाड़ने से क्या लाभ! इस समय आवश्यकता इस बात की है कि प्रेस द्वारा रंगमंच के प्रति जन-रुचि उत्पन्न की जाये और मेरा यह सुझाव है कि 'मनोरंजन' में अन्य स्थायी स्तम्भों की भांति रंगमंच के सम्बन्ध में भी एक स्थायी स्तम्भ का समावेश किया जाये, जिसमें रंगमंच के नये स्वरूप के सम्बन्ध में अधिकारी लेखकों के लेख रहें और साथ साथ उन नाटकों की निष्पक्ष और रचनात्मक समीक्षा भी छपे, जो आये दिन विभिन्न नगरों में स्कूलों, कालिजों, विश्वविद्यालयों और सामाजिक व साहित्यिक-संस्थाओं द्वारा शौकिया खेले जाते हैं। इस कार्य में, आशा है, 'मनोरंजन' के रंगमंच-प्रेमी पाठकों व पाठिकाओं से भी आपको यथोचित सहयोग मिलेगा।

दिल्ली — शशिकांत

★

'रेडियो के लिये लिखना भी एक कला है!'

'मनोरंजन' में उपर्युक्त शीर्षक के अन्तर्गत जो लेख छप रहे हैं, वे हिन्दी के लेखकों के लिये वस्तुतः बहुत उपयोगी हैं। बुखारी-पार्टी के प्रभुत्व-काल में तो केवल उर्दू वालों का ही रेडियो पर बोल बाला रहा; अतः केवल वे ही रेडियो-लेखन-शैली में सिद्धहस्त हो सके और हिंदी वाले इस विषय में बिल्कुल कोरे रहे। बुखारी-पार्टी के जाने के बाद अब हिन्दी वालों को रेडियो के लिये लिखने का थोड़ा बहुत चांस मिलने लगा है। लेकिन हिन्दी वाले रेडियो की शैली से अभी अनभिज्ञ हैं, यह उन भाषणों, नाटकों और रूपकों से स्पष्ट ज्ञात होता है, जो आये दिन उत्तर भारत के विभिन्न रेडियो स्टेशनों से ब्राडकास्ट होते रहते हैं। आशा है, हिंदी के लेखक 'मनोरंजन' की इस लेखमाला से पर्याप्त लाभ उठायेंगे। यदि यह लेखमाला पुस्तकाकार छप जाये, तो और भी अच्छा हो।

कानपुर — सुरेशचन्द्र चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान नहीं, भाषणिस्तान !

दैनिक पत्रों को पढ़ने वाला कोई भी व्यक्ति इस निष्कर्ष पर पहुँच सकता है कि भारत के स्वतन्त्र हो जाने के बाद हमारे छोटे-बड़े सभी नेता जिस काम में सबसे अधिक समय व्यय कर रहे हैं, वह है भाषण देने का। प्रत्येक दैनिक पत्र का तीन चौथाई कलेवर इन भाषणों, वक्तव्यों, सम्मतियों और विज्ञप्तियों से भरा रहता है। घरों में पतियों तथा पत्नियों द्वारा जो भाषण दिये जाते हैं, यदि वे भी दैनिक पत्रों में छपने लगें तो पत्रों का शेष एक चौथाई भाग भी भर जाये—भर क्या जाये, साथ में परिशिष्ट भी जोड़ने पड़ें। मेरा विश्वास है कि भाषण-कर्त्ताओं की जितनी बड़ी संख्या हमारे देश में है, उतनी शायद ही किसी और देश में हो। तो फिर क्यों न हिन्दुस्तान का नाम 'भाषणिस्तान' कर दिया जाये ? यह नाम उच्चारण में 'पाकिस्तान' से भी काफी मिलता है।

शिमला

—राजेन्द्रसिंह बी० ए०

★

यशस्वी कवि और नाटककार की सम्मति

तुम्हारा 'मनोरंजन' मेरा मनोरंजन है। चुनाव, शैली और सामग्री की दृष्टि से यह सुन्दर तो है ही, संग्राह्य भी है। वस्तुतः तुमने इस पत्र द्वारा अपनी साहित्यिक प्रतिभा तथा सुरुचि संग्राहकता का परिचय दिया है।

दिल्ली

—उदयशंकर भट्ट

★

कूपन

मनोरंजन-पत्र-प्रतियोगिता

नं० ७

जब लेनिन फरार था...

(पृष्ठ १६ का शेष)

को फिनलैंड के कुछ मित्रों से सूचना मिली कि आवो द्वीप तक पैदल जाना चाहिए। इस द्वीप तक नाव नहीं जा सकती थी, क्योंकि समुद्र जमा हुआ था। पर इतना जमा हुआ भी नहीं था कि उस रास्ते को निरापद समझा जा सके।

अन्त में लेनिन ने यही निश्चय किया कि जहाज में जाकर पकड़े जाने का खतरा उठाने की अपेक्षा आवो द्वीप के लिये तीन मील पैदल जाना और डूब मरने का खतरा उठाना अधिक श्रेयस्कर है। सौभाग्यवश दो कृषकों ने उसका साथ देना स्वीकार किया और तीनों व्यक्ति 'आवो' के लिए चले। अकस्मात् एक स्थान पर बर्फ टूटने लगी और दोनों किसान डूबने लगे। लेनिन ने अपने को संकट में डाल कर भी उनको बचाया और बड़ी कठिनाई से स्टाकहोम पहुंचा। पर उसे जीवन भर अपनी इस मूर्खता पर खेद रहा और इस घटना को वह अपना 'दूसरा जीवन' कहा करता था। लेनिन के अज्ञातवास की सम्भवतः यह सबसे रोमांचकारी घटना है।

किन्तु इन कठिनाइयों के होते हुए भी लेनिन कभी निरुत्साहित नहीं हुआ। वह उसी जोशो-खरोश के साथ अपनी उद्देश्य-सिद्धि के लिये लगा रहा और उसे जो सफलता मिली, उसका साक्षी वर्त्तमान रूस है, जो इस समय समस्त संसार के मध्य एक सर्व-प्रधान शक्तिशाली देश समझा जाता है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

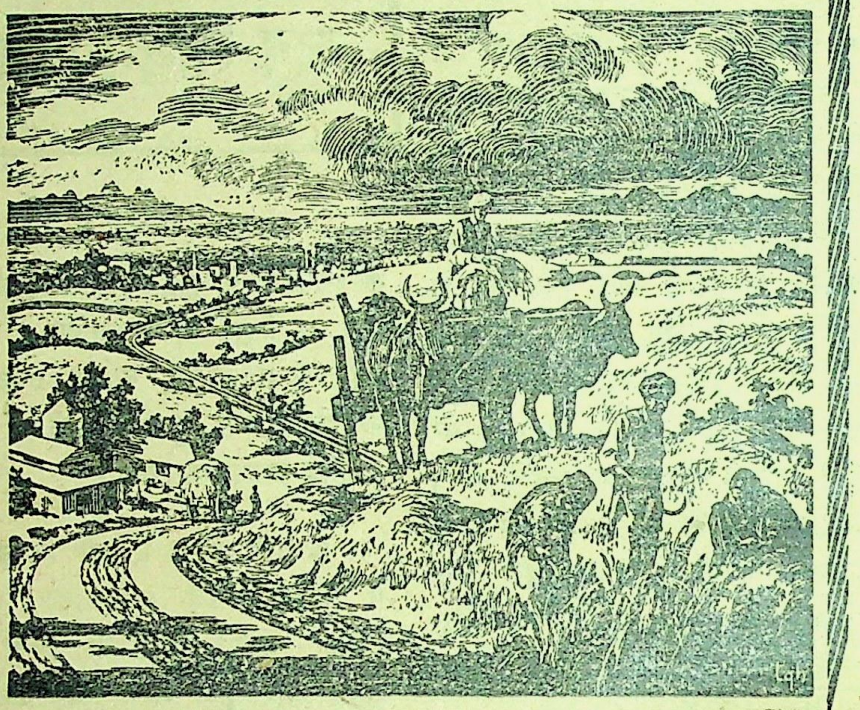

गांवकी सड़कें

ग्राम उद्धार के लिए अच्छी सड़क का होना ज़रुरी है।

कनक्रीट के रस्ते या कनक्रीट की दो समानान्तर पटड़ीयां गांव वालों को पास के शहर या मारकीट से हर मौसम में सुलभ और सस्ता साधन है और यही साधन गांवोसें बाहर माल भेजने के लिये और लाने के लिये सब से अच्छा और कमखर्च है

इस के इलावा कनक्रीट के रस्तों पर साईकल अच्छी तरह से चल सकती है जिस से डाकटरी सहायता की प्राप्ति डाकखाने और बैंक के आराम और बच्चों को स्कूल जाने में आसानी होती है

कनक्रीट की सड़कें अच्छी बनती हैं पहले सड़क के एक तरफ़ जहां कि आना जाना ज्यादा हो एक रस्ता बनाया जा सकता है और बाद में जब कि आना जाना ज्यादा हो जाये तो धनशक्ति अनुसार दूसरी तरफ़ भी रस्ता बनाया जा सकता है।

पहिली दशामें सामने से आनेवाली गाडी पटरी से उतर जाती हैं

विशेष विवर्ण के लिए कनक्रीट एसोसीएशन आफ् इंडिया, ८१-८४ क्वीन्सवे, पो. ओ. बोक्स ४५, नया दिल्ली

सी.ए. आई. की सेवा

दि सीमेन्ट मार्केटिंग कं. ऑफ इंडिया लि.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो के लिये लिखना भी एक कला है (४)

गीत

श्री कलाधर

रेडियो से दिन भर में ब्राडकास्ट होने वाले समूचे कार्यक्रम का आधे से भी अधिक भाग संगीत का होता है। यह संगीत दो प्रकार का होता है—मौखिक और वाद्य। मौखिक संगीत के भी दो प्रकार हैं—शास्त्रीय संगीत और प्रचलित संगीत। प्रचलित संगीत के अन्तर्गत भजन, गीत और गज़लें इत्यादि हैं। भजन तो प्रायः संत व भक्त-कवियों के ही गाये जाते हैं। गजल उर्दू की चीज है। यहां हमारा विचारणीय विषय गीत है।

आजकल आल-इण्डिया-रेडियो के विभिन्न स्टेशनों से नये-पुराने कवियों के काफी गीत ब्राडकास्ट होते हैं। सच तो यह है कि गीत को लोकप्रिय बनाने में रेडियो और सिनेमा का बहुत बड़ा हाथ है और यह सर्वविदित है कि गीतों की लोकप्रियता से हिंदी का यथेष्ट प्रचार भी हुआ है।

अब प्रश्न उठता है कि कैसा गीत रेडियो के लिए उपयुक्त है? यदि हम गीत की यह परिभाषा ग्रहण करें कि कोई भी रचना—गेय अथवा अगेय—जिसमें स्थायी और अन्तरा हो, वह गीत है, तो आज के हिंदी काव्य में अधिकांशतया गीत ही गीत हैं। परन्तु यह स्थायी-अन्तरा वाली परिभाषा गौण है; गीत की मुख्य परिभाषा यह है कि वह गेय हो। और गेय केवल वही रचना हो सकती है जिसमें शब्द सरल, कोमल, मधुर तथा नादपूर्ण हों, गति में प्रवाह हो, शब्दों की ध्वनियों में स्वर एवं नाद के आरोह-अवरोह के लिये पर्याप्त गुञ्जायश हो, अर्थात् द्वित्व और संयुक्ताक्षरों का यथासंभव बहिष्कार हो, अनुनासिक ध्वनियों के साथ मात्रायें दीर्घ हों, जिससे स्वरों का आरोह-अवरोह समुचित रूप से हो सके। इन सबसे भी बड़ी शर्त एक और है, और वह यह कि गीत में प्रसाद-गुण प्रचुर मात्रा में हो, अर्थात् गीत की प्रत्येक पंक्ति सरल-सुबोध हो। यदि गीत सरल व सुबोध न होगा, तो उसे गाने वाला चाहे कितना ही बड़ा गवैया हो, उससे न तो भावोद्रेक होगा और न श्रोता को आनन्द आयेगा।

उपर्युक्त कसौटी पर कसने से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि आज की खड़ी बोली के सभी गीत वस्तुतः गीत नहीं हैं और इस लिये सभी रेडियो से गाये जाने योग्य नहीं हैं। मेरी राय में तो गीतों के लिए उत्कृष्टतम भाषा ब्रजभाषा है और खड़ी बोली के जो कवि अपनी भाषा में ब्रज-भाषा जैसी लोच, माधुर्य, लालित्य और सरलता ला पाये हैं, वे धन्य हैं। परन्तु खेद है कि ऐसे कवि संख्या में बहुत कम हैं।

इधर कई एक उर्दू के कवियों ने भी गीतों की शैली में जो नये प्रयोग किये हैं, वे एकदम उपेक्षणीय नहीं हैं।

गीत-लेखक के लिये संगीत-विद्या का ज्ञान आवश्यक है। संगीत का ज्ञाता कवि ही अपनी रचना को गेय बना सकता है।

रेडियो से ब्राडकास्ट होने वाले गीतों के लिए एक और बात आवश्यक है और वह है संक्षिप्तता। गीत का कलेवर इतना हो कि वह चार-पांच मिनट में गाया जा सके।

गीत की स्थायी अर्थात् टेक का आकर्षक और भावपूर्ण होना भी आवश्यक है। सबसे अधिक यही श्रोता को प्रभावित करती है। गीत में विषय का ऐक्य भी आवश्यक है।

अन्त में मैं यही कहूँगा कि श्रेष्ठ गीत वही है, जिस में सरल भाषा में ऊंची, गहरी और हृदयग्राही बात कही गई हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ ★ ★ शहीद ★ ★ ★

श्री कलाधर

हमारे स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास में विदेशी साम्राज्य के विरुद्ध हुई सन् १९४२ की जनक्रांति का बहुत बड़ा महत्व है। इस क्रांति ने भारत में लगभग दो शताब्दियों से जमे हुए ब्रिटिश साम्राज्य की सही अर्थों में जड़ें हिला दी थीं और अंत में विदेशी शासकों को भारत छोड़ने पर मजबूर होना ही पड़ा। लेकिन इस आन्दोलन में सफलता प्राप्त करने के लिये अपने सैंकड़ों वीरों को बलिवेदी पर भी हमें चढ़ाना पड़ा था और फिल्म 'शहीद' में एक ऐसे ही हुतात्मा वीर की प्रेरणादायक गौरवगाथा चित्रित है। इस दृष्टि से यह फिल्म—कहानी और निर्माण सम्बन्धी कई छोटी-मोटी त्रुटियों के होते हुए भी—भारतीय फिल्मोद्योग में अपना एक बहुत बड़ा महत्व रखती हैं और हल्की और थोथी प्रेम-कहानियों के अंधकार में भटकते हुए अन्य निर्माताओं को एक नया रास्ता दिखाती है।

यह ठीक है कि 'शहीद' की कहानी मुख्य रूप से प्रेम-कहानी ही है और १९४२ की जनक्रांति पृष्ठभूमि के रूप में ही आंशिक तथा सांकेतिक रूप में अंकित हुई है; लेकिन यह एक तथ्य है कि इसकी प्रेम-कहानी अन्य फिल्मों में चित्रित होने वाली प्रेम-कहानियों से कहीं ऊंची और उदात्त है। इसमें वह प्रेम चित्रित हुआ है, जो प्रेमी के मन में आत्मोत्सर्ग के लिये साहस-बल का सतत संचार करता रहता है। सन् १९४२ के आंदोलन को मुख्य विषय बनाने की बजाये, पृष्ठभूमि में ही रख कर कहानीकार ने ठीक ही किया; अन्यथा यह फिल्म समाचार-चित्र सी बन कर रह जाती।

संक्षेप में इसकी कहानी यों है :

राम, अमृतसर के जिलाधीश राय बहादुर ठाकुरदास का इकलौता लड़का, बचपन में ही देश भक्ति के रंग में रंग जाता हैं। बड़ा होकर जवाहर लाल जैसा बनना ही उसके जीवन का ध्येय है। उसके बचपन ने १९३०-३२ का स्वतन्त्रता आंदोलन देखा और उसने ब्रिटिश साम्राज्य से लोहा लेने का खेल खेला। युवावस्था में पहुँच कर यही खेल उसके जीवन की एक वास्तविकता बन जाता है। टोडी बाप के आदेशों की परवाह न करते हुए राम एक क्रांतिकारी के रूप में १९४२ की जनक्रांति में कूद पड़ता है। बचपन से ही वह अमृतसर के लाला हकूमत राय की लड़की शीला से प्रेम करता था और पुलिस सुपरिंटेंडेंट के लड़के विनोद से घृणा। सन् १९४२ के आंदोलन में जब कि राम एक क्रांतिकारी-दल का नेता बन कर तोड़-फोड़ के कार्यों में व्यस्त है, तो उसका बचपन का साथी विनोद पुलिस के एक बड़े आफिसर के रूप में ब्रिटिश साम्राज्यशाही का एक पुर्जा बना हुआ है। एक रात राम गाड़ी रोक कर सरकारी खजाना लूटता है और विनोद की अध्यक्षता में आई हुई पुलिस-पार्टी की गोली से घायल होता है और उसी गाड़ी में सफर करती हुई शीला की परोक्ष सहायता से पुलिस के हाथों गिरफ्तार होने से बचता है। शीला और राम की बारह वर्ष के बाद भेंट होती है, क्योंकि राम के पिता अमृतसर से अम्बाला तबदील हो गये थे। १२ वर्ष के इस व्यवधान ने उनकी प्रीति को घटाया नहीं, बढ़ाया ही था। उधर विनोद भी शीला को चाहता है और शीला अपने भाई को फांसी से बचाने के लिये विवश हो कर विनोद से ही विवाह करती है। लेकिन इस विवाह का यह अर्थ नहीं कि वह राम को भूल गई; राम के प्रति उसका प्रेम और भी गहरा हो जाता है और विनोद को वह तन से तो वर सकी, परन्तु मन से नहीं। कुछ ही दिनों में वह टी० बी० की शिकार हो जाती है।

उधर तोड़-फोड़ के आंदोलन में लगा हुआ राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लम्बे सनसनीपूर्ण घटनाचक्र के बाद विनोद द्वारा गिरफ्तार होता है और उसे फांसी की सजा होती है। जब उसकी अर्थी का जलूस शीला के मकान के नीचे से निकलता है, तो शीला प्राण त्याग कर अनंतपथ में अपने प्रियतम राम से जा मिलती है।

वैसे तो यह कहानी, जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ, भारतीय रजतपट पर आने वाली अन्य फिल्म-कहानियों से कहीं श्रेष्ठ है; तो भी ऐसा लगता है कि यदि कहानी-लेखक कहानी में कुछ और सावधानी बरतता और त्रिकोणात्मक प्रेम-कहानियों के प्रचलित 'फार्मूले' से कुछ और अधिक बच पाता, तो कहानी और भी ऊंची उठ जाती। यह मानना पड़ेगा कि कहीं कहीं कहानी में कुछ अस्वाभाविक और असंगत बातें रह गई हैं, जो अवश्य खटकती हैं; जैसे – १२ वर्ष के बाद शीला उस राम को तो पहचान नहीं पाती जिसे वह बचपन से हृदय दे चुकी थी; परन्तु विनोद को, जिससे वह बचपन से ही घृणा करती थी, तुरन्त पहचान लेती है। माना कि राम का पिता अमृतसर से अंबाला आ गया था, परन्तु क्या अमृतसर और अंबाला की छोटी सी दूरी ने शीला और राम को एक दम अजनबी बना दिया था? पुलिस अधिकारी विनोद लूट पाट, तोड़-फोड़ हत्या, विद्रोह इत्यादि घोर अपराधों के अभियोग में पकड़े गये 'गुरु जी' और गोपाल दो क्रांतिकारी कैदियों को अपनी पत्नी के कहने से आधी रात के समय जेल से निकाल कर घर पर लाता है और बिना विशेष निगरानी के उन्हें उस कमरे में छोड़ देता है, जिसकी खिड़कियां और दरवाजे खुले हैं। क्या यह अस्वाभाविक नहीं है? कहने को तो राम गुप्त रूप से चलने वाले आंदोलन में भाग लेता है; परन्तु वह खुले आम जीपों में घूमता फिरता है और छज्जे पर बैठ कर शीला से बातें करता है।

रमेश सहगल ने इस फिल्म की कहानी लिखी है और निर्देशन भी किया है और अपने आपको एक प्रतिभाशाली निर्देशक भी सिद्ध किया है। सच तो यह है कि फिल्म की सफलता का अधिकांश श्रेय रमेश सहगल को है। 'शहीद' में प्रेमियों के मिलन के निर्देशक ने कई दृश्य ऐसे भावपूर्ण और हृदयग्राही दिये हैं कि कभी भुलाये नहीं भूल सकते। इस दृष्टि से फोटोग्राफर ने भी सुन्दर 'क्लोज-अप' दिये हैं, जिनसे चित्रालेखन में ताजगी और प्रभावोत्पादकता आ गई है।

ना के लिये प्रत्येक पुस्तक और पत्र पत्रिका आनी चाहियें। —सं०

'शहीद' में दिलीप कुमार और कामिनी कौशल

कलाकारों में से दिलीपकुमार सब पर छाया हुआ है। मेरा विचार है कि उसने अपने जीवन का सब से सुन्दर अभिनय इस फिल्म में किया है और फिल्म को सफल बनाने में निर्देशक और कहानीकार से कम उसका हाथ नहीं है। दूसरे नम्बर पर कामिनी कौशल आती है। मैं समझता हूँ कि यदि उसके सामने हीरो के रूप में दिलीपकुमार की जगह कोई और अभिनेता होता, तो शायद वह फिल्म पर छा जाती। मां की भूमिका में लीला चिटनिस और बाप की भूमिका में चन्द्रमोहन ने भी बहुत अच्छा अभिनय किया है। चन्द्रमोहन का कोर्ट वाला अभिनय तो अद्वितीय है।

गीतों में से 'वतन की राह में वतन के नौजवां शहीद हो' अत्यन्त ओजपूर्ण और प्रेरणादायक गीत है। संवाद भी काफी प्रभावशाली हैं।

सारांश यह कि 'शहीद' प्रत्येक दृष्टि से दर्शनीय तो है ही, चिरस्मरणीय भी है। आशा है, हमारे फिल्म-निर्माता ऐसे चित्र और भी हमें देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ ★ ★ फुलझड़ियां

हमारे स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास में साम्राज्य के विरुद्ध हुई सन् १९४२ की क्रं द्वितीय का बहुत बड़ा महत्व है। इस क्रांति ने भारत कहिये कि भग दो शताब्दियों से जमे हुए ब्रिटिश सा यह दूसरा सही अर्थों में जड़ें हिला दी थीं और अंत में मचिंतक शासकों को भारत छोड़ने पर मजबूर होना ही लेकिन इस आन्दोलन में सफलता प्राप्त करने अनुसार अपने सैंकड़ों वीरों को बलिवेदी पर भी हमें चढ़ाहिये था। परन्तु 'मनोरंजन के व्यवस्थापक और संपादक ने कई बातों को ध्यान में रखते हुए लकीर के फकीर बनना पसन्द नहीं किया और जरा देर से—अधिक नहीं केवल एक महीने की देर से—विशेषांक निकालने का निश्चय किया है। और हैदराबाद-काण्ड ने यह सिद्ध कर ही दिया है कि जल्दबाजी न करके, सोच समझ कर देर से किया हुआ काम ही अच्छा होता है!

* * *

विलम्ब का यह सिद्धांत व्यक्ति और स्थितिविशेष के अनुसार बदलता भी रहता है। निजाम यदि आज से पहले भारत-सरकार से समझौता कर लेता, तो शायद उसको यह दिन न देखना पड़ता। लेकिन पहले तो मियां साहब भारत-सरकार की सहिष्णुता व उदारता को उसकी कमजोरी ही समझते रहे। हमारा खयाल है कि निजाम को अपनी 'आसफजाही बुद्धि' पर अब अवश्य ही संदेह होने लगा होगा!

निजाम अपने बारे में अब चाहे कुछ ही राय कायम करे, हम तो उसे समझदार ही कहेंगे। जिस चतुराई (?) से उसने सारा दोष कासिम रजवी और मीर लायक अली के मत्थे मढ़ कर अपने आप को दूध का धुला सिद्ध किया है, उससे तो आश्चर्य हो होता है। लेकिन जो लोग इस आसफजाही वंश के पूरे इतिहास को जानते हैं, उनको तो रंचमात्र भी आश्चर्य न होगा!

* * *

इस संसार में केवल भाग्यशाली लोगों के ही सपने सत्य होते हैं और इस दृष्टि से कासिम रजवी निश्चय ही भाग्यशाली है; लाल किले में पहुँचने का उसका सपना आखिर सत्य ही निकला!

* * *

यह तो सभी जानते थे कि हैदराबाद का फोड़ा बिना शल्यक्रिया के ठीक होने का नहीं; ऊपर के उपचार सब व्यर्थ हैं। और बलिहारी शल्यक्रिया करने वालों के, चार-पांच ओर से नश्तर लगा कर किस सफाई से उन्होंने गंदा मवाद निकाल बाहर किया और रोगी का बाल तक बांका न हुआ! वैसे तो 'आपरेशन' से कई लोगों का प्रणांत हो जाया करता है! लेकिन रोगी का रोग भी दूर हो जाये और उसकी जान भी बच जाये, इसी में तो सर्जन की योग्यता और कुशलता प्रकट होती है।

हमारा सुझाव है कि कोई यूनिवर्सिटी हमारे राजा जी, नेहरू और पटेल को तुरंत ही 'डाक्टर आफ सर्जरी' की भी उपाधि दे डाले!

* * *

अब देखना यह है कि हमारे यह कुशल सर्जन काश्मीर का रोग कैसे दूर करते हैं। अधिक देर करने से रोगी की दशा कहीं और न बिगड़ जाये, यही हमें भय है। यू० एन० ओ० के डाक्टरों की परामर्श-समिति पर हमें तो कोई विश्वास नहीं!

* * *

श्री उमाशंकर शुक्ल ने अपने लेख में अनशन करने की नई प्रथा को भी रोग बताया है और भारत-सरकार से इसे शीघ्रातिशीघ्र दूर करने की अपील की है। हमारा शुक्ल जी से मतभेद है। हम तो अनशन को भारत जैसे देश के लिये आवश्यक समझते हैं। अन्न-संकट को दूर करने के लिये इस से अच्छा कोई और नुस्खा नहीं है; अतः भारत सरकार को देश में अनशनों का अधिकाधिक प्रचार करना चाहिये—लेकिन, हां, प्रचार-कार्य केवल उच्चवर्ग में ही होना चाहिये!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐतिहासिक भौतिकवाद—लेखक—श्री मन्मथनाथ गुप्त; भूमिका-लेखक—आचार्य नरेन्द्रदेव; प्रकाशक—इंडियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद; मूल्य ६); पृष्ठसंख्या ५३०, सजिल्द; छपाई तथा गेट-अप सुन्दर।

आलोचना के लिये प्रत्येक पुस्तक और पत्र पत्रिका की दो प्रतियां आनी चाहियें। —सं०

अध्यात्मवादी दर्शन ने व्यावहारिक जीवन में जिन असमानताओं के बीज बोए थे, और जिनके फल आज हमें युद्ध, बेकारी, गुलामी, चीजों के बढ़े हुए मूल्यों और व्यक्ति के गिरे हुए मूल्यों के रूप में खाने पड़ रहे हैं, उनकी भयंकरता से हम सभी अतिपरिचित हैं। अध्यात्मवाद का युग समाप्त हो चुका है, क्योंकि वह विषमताओं को प्रश्रय देता है, उनकी काल्पनिक व्याख्या करके उन्हें स्वाभाविक बताता है। हम लगभग पूर्ण रूप से पार्थिव हो गये हैं, हमने बड़ी बड़ी बातों के पीछे वर्ग-स्वार्थ देखना सीखा है। अब हम अधिकतर केवल संस्कारवश ही ईश्वर में विश्वास रखते हैं। अध्यात्मवाद का मूलाधार वैयक्तिक अध्यात्म जगत में समानता ही था। सब जीवात्माएं बराबर हैं, कोई छोटी बड़ी नहीं, यह अध्यात्मवाद मानता था। परन्तु कालांतर में जब राजा और पुरोहितों ने मिल कर अध्यात्मिकता की पूंजी पर अपना अधिकार जमा लिया, तो अध्यात्मवाद का पतन हो गया।

भौतिक जगत में जीवन को व्यवस्थित रखने के लिये भी सारे मानव समाज की समानता आवश्यक है। इसके बिना जगत में सुख और शांति नहीं रह सकती। व्यक्ति की समानता का तात्पर्य क्या है, व्यक्ति की समानता के क्या परिणाम होंगे, यह इस आलोच्य पुस्तक में दिखलाया गया है। लेखक की दृष्टि में एक ऐसा सपना बसा हुआ है जो व्यक्ति की समानता पर आधारित है। उसी बात का विश्लेषण इस पुस्तक में किया गया है। भौतिक समाजवाद की विचारधारा क्योंकि पश्चिम में पैदा हुई और वहीं पनपी, इस कारण लेखक ने बार बार पश्चिमी विद्वानों का हवाला दिया है पर इस पुस्तक की विशेषता यह है कि वैदिक ही नहीं अपितु प्राग्वैदिक युग से लेकर प्राचीन तथा अर्वाचीन भारतीय इतिहास तथा साहित्य का बराबर हवाला दिया गया है। ऐतिहासिक भौतिकवाद के निश्चित सिद्धान्तों की व्याख्या के अतिरिक्त लेखक ने अन्य सब सिद्धान्तों का खंडन किया है।

सिद्धान्तों का सुस्पष्टीकरण लेखक की बहुत बड़ी सफलता है। इतिहास किस प्रकार बनता है, वर्ग, वर्ग-संघर्ष और राष्ट्र की सच्ची व्याख्या क्या है, इतिहास के बनने में भूगोल, जनसंख्या और नसल का कितना हाथ है, सभ्यता में यंत्र का क्या स्थान है तथा विज्ञान, धर्म और सदाचार पर समाजवाद का क्या प्रभाव पड़ेगा आदि गूढ़ विषय पाठक के सामने अत्यन्त स्पष्ट हो जाते हैं। हमें आशा है, पाठकों के लिए अधिकारी लेखक द्वारा लिखी गई यह पुस्तक अति लाभदायक

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्ध होगी। प्रत्येक दर्शन तथा इतिहास प्रेमी युवक को यह पुस्तक पढ़नी चाहिये।

—डा० कमल कुलश्रेष्ठ

'आजकल' का वार्षिकांक—संपादक—देवेन्द्र सत्यार्थी; प्रकाशक—पब्लिकेशन्स डिवीजन, ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली। मूल्य १), पृष्ठ-संख्या ११२।

अपने तीन-चार वर्ष के जीवन में 'आजकल' ने उच्चकोटि की पाठ्य-सामग्री, चित्रालंकृत कलापूर्ण मुद्रण और नयनाभिराम गेट-अप के कारण हिन्दी के मासिकों में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है। इन्हीं विशेषताओं के कारण 'आजकल' के वार्षिकांकों की हिन्दी-जगत् में बड़ी प्रसिद्धि है। आलोच्य अंक संभवतः तीसरा वार्षिकांक है और इससे 'आजकल' की पुरानी ख्याति में कई दृष्टियों से अभिवृद्धि ही हुई है। यह ठीक है कि पिछले वार्षिकांकों की भांति इस अंक में रंगों और चित्रों की तड़क-भड़क नहीं है, तो भी विविध प्रकार की ऊँचे स्तर की पाठ्य-सामग्री, तथा सादा परन्तु कलात्मक गेट-अप ने रंगों की यथेष्ट क्षतिपूर्ति कर दी है और इसके लिये इसके सम्पादक श्री देवेन्द्र सत्यार्थी तथा उनके सहयोगी बधाई के पात्र हैं। सत्यार्थी जी अब तक हिंदी-जगत में केवल लोक-गीतों के संग्रह-कर्त्ता के रूप में ही प्रसिद्ध थे। अब इस अंक द्वारा उन्होंने अपने संपादन-कौशल तथा कलात्मक अभिरुचि का सुन्दर परिचय दे कर सम्पादक के रूप में भी नाम कमाया है। इस अंक में उन्हें हिंदी के लगभग सभी प्रमुख लेखकों, कवियों और कहानीकारों का सहयोग मिला है, जिसने इस अंक की उपादेयता को और भी बढ़ा दिया है। इस अंक से यह भी प्रकट होता है कि 'आजकल' उच्च-कोटि का सांस्कृतिक पत्र बनने जा रहा है।

यह अंक प्रत्येक दृष्टि से पठनीय तथा संग्रहणीय है।

निराला—(मासिक पत्र) सम्पादक—श्री हरिशंकर शर्मा; प्रकाशक—निराला-प्रेस, आगरा; वार्षिक मूल्य ६), एक प्रति ॥)।

हिन्दी के ख्यातनामा हास्य-लेखक, यशस्वी कवि तथा अनुभवी पत्रकार श्री हरिशंकर शर्मा के सम्पादकत्व में अगस्त १९४८ से निकलने वाले इस नये पत्र का हमारी दृष्टि में वही महत्व है जो आज से कई वर्ष पहले उपन्यास-सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के सम्पादकत्व में निकलने वाले मासिक 'हंस' का था। यह साम्य पाठ्य-सामग्री के कारण नहीं, बल्कि इस कारण है कि जैसे उन दिनों 'हंस' पर मुंशी प्रेमचन्द के व्यक्तित्व की पूर्ण छाप थी, उसी तरह 'निराला' पर भी श्री हरिशंकर शर्मा के अपने ढंग के निराले व्यक्तित्व की छाप दृष्टिगोचर होती है। इस दृष्टि से हम अपने इस नये सहयोगी का हृदय से स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि आज के हिन्दी-साहित्य में जितना ऊंचा स्थान शर्मा जी का है, हिन्दी के मासिकों में उतना ही ऊंचा स्थान यथाशीघ्र 'निराला' का भी होगा।

'निराला' का दूसरा अंक अर्थात् सितम्बर १९४८ का अंक हमारे सामने है। इसमें 'हमारा दृष्टिकोण' नामक स्तम्भ में संकलित शर्मा जी के गम्भीर तथा विद्वत्तापूर्ण विचारों के अतिरिक्त श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, श्री श्रीराम शर्मा, श्री आरसीप्रसाद सिंह, श्री 'कमलेश', श्री रांगेय राघव, श्री किशोरीदास वाजपेयी, श्री कन्हैयालाल गोयल जैसे हिन्दी के अग्रणी लेखकों व कवियों के सामयिक तथा खोजपूर्ण लेख और उच्चकोटि की रचनायें भी संग्रहीत हैं, जो पठनीय हैं।

पत्र के गेट-अप में कुछ सुधार की आवश्यकता है।

—चिरंजीत

कसीदाकारी की मशीन

सुन्दर फूल-पत्ते, सीन-सीनरी आदि कपड़ों पर काढ़ने वाली चार सुइयों वाली बढ़िया मशीन। मू० ३॥) । तरकीब मुफ्त । पोस्टेज ॥।) कसीदाकारी की पुस्तक मू० २॥) पोस्टेज ॥=)

देवेन्द्र ट्रेडिंग कम्पनी

शाहपाड़ी अलीगढ़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी घी की समस्या हल हो गई

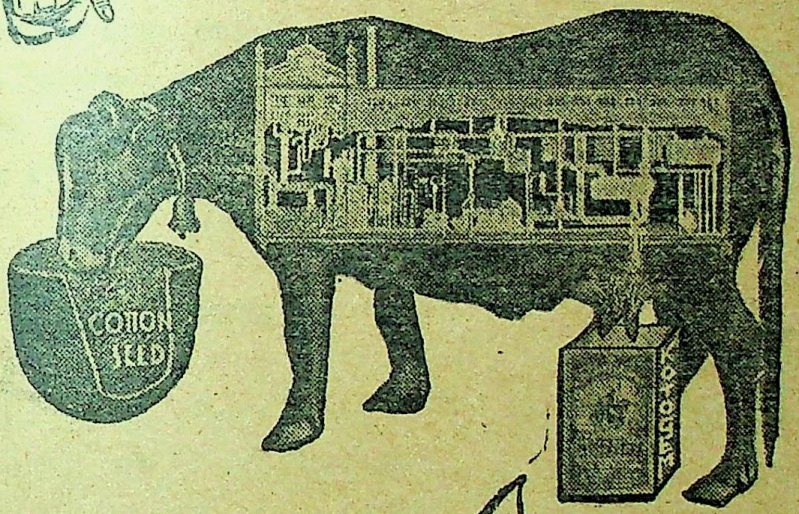

MP

नोटोजम

भोजन पकाने का उत्तम माध्यम

मोदी वनस्पति मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी, मोदीनगर, यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय-पुस्तक भण्डार की सामयिक पुस्तकें

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है। मूल्य १॥) रुपया।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय ललकार एक ही साथ हैं पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य हैं। मूल्य १) डाक व्यय ।-)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झांकियां'

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन, मूल्य ॥)

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला? मूल्य ॥)

दोनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य ॥।)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी।

मूल्य २)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है

अपितु

जनता के उद्बोधन का मांग है।

इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)।

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

पण्डित जवाहरलाल नेहरु

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा।

मूल्य १।) डाक व्यय ।=)

प्राप्ति स्थान—विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानंद बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

चौबीस घण्टे पहले

कुमारी शैलबाला

कई बातें ऐसी होती हैं, जिनका रहस्य मनुष्य की बुद्धि नहीं जान पाती इस कहानी की घटना भी ऐसी ही है। बाल-बन्धुओं में से क्या कोई इसका रहस्य बता सकता है ?

सुरेश के पिता शिमला से कोई सौ मील और आगे एक छोटी-सी पहाड़ी रियासत के निवासी हैं और फलों के बहुत बड़े व्यापारी हैं। सुरेश पास के एक कस्बे के स्कूल में पढ़ता है। एक दिन सुरेश के पिता दो नौकरों की देखरेख में उसी कस्बे के लिये खच्चरों पर लाद कर फल भेज रहे थे और सुरेश भी उन्हीं के साथ हो लिया।

ये नौकर भी सुरेश की भांति अभी बालक ही थे, परन्तु किसी वस्तु से डरना तो उन्होंने कभी सीखा ही न था।

वह कस्बा कोई दस मील की दूरी पर था और रास्ता बहुत ही ऊबड़-खाबड़! परन्तु, इस विचार से कि सूर्य निकलने से पहले ही वहां पहुँच जायें, वे ३ बजे प्रातःकाल चल पड़े जब कि अभी तड़का था। एक मील के लगभग उनकी सड़क पर पहाड़ की चढ़ाई की ओर दलवां मोड़ था, जिसमें एक ओर सड़क के नीचे कई फीट गहरा भयानक खड्ड था। वे इस मोड़ पर पहुँच ही पाए थे कि खच्चरें अचानक चुपचाप रुक गईं—ऐसी रुकीं कि काफी प्रयत्न करने पर भी वे एक पग भी आगे नहीं बढ़ीं। सुरेश और इसके साथियों ने अनुभव किया कि वे किसी वस्तु को देख कर डर रही हैं।

हैरान हो कर उन्होंने प्रातःकाल के धुंधले प्रकाश में सड़क की ओर गहरी दृष्टि से देखा। तब उन्हें एक विचित्र दृश्य दीख पड़ा।

कुहासे से निकल कर उनकी ओर सरपट दौड़ती हुई चार घोड़ों वाली एक बग्घी आ रही थी। गाड़ी के ऊपर हांकने वाले की जगह एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री थी, जो बाल बिखराए हुए सुन्दर रेशमी वस्त्र पहने थी, और घोड़ों को चाबुक मार रही थी तथा उनको मोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार कर जाने के लिए उत्साहित करने का प्रयत्न करती जान पड़ती थी। किन्तु घोड़े जिस तेजी से आ रहे थे, उससे मोड़ पार करना असम्भव था। सुरेश ने गाड़ी को अपने पास से जाते हुए देखा और घोड़ों की भीषण टाप की गड़गड़ाहट और खड़खड़ाहट सुनी। उस ने उस स्त्री का स्पष्ट चेहरा भी देखा और देख कर बिल्कुल हक्का-बक्का-सा रह गया। वह उस रियासत की राजकुमारी थी। वह बड़े साहस से घोड़ों को संभालने का प्रयत्न कर रही थी। इसके दूसरे ही क्षण घोड़े भारी बग्घी को लिए खड्ड में लुढ़क पड़े। सुरेश ने बग्घी के खड्ड में गिरने से नीचे पहुंचने की आवाज सुनने के लिए अपनी सांस रोक ली; किन्तु कोई आवाज नहीं सुनाई पड़ी।

यह सब घटना कुछ क्षणों में ही घटित हुई थी। तीनों लड़के भय से सफेद पड़ गये। जब उनके होश ठिकाने आए, वे सड़क के किनारे खड़े होकर नीचे खड्ड में झांकने लगे। वहां नीचे कोई वस्तु नहीं थी— न वह स्त्री, न बग्घी और न ही चारों घोड़े। खड्ड के निचले छोर पर मामूली झाड़ियां और जङ्गली पौधे चट्टानों से मिले-जुले थे और वे पूर्णतया अछूते थे।

तीनों लड़कों ने घूम कर एक दूसरे का मुंह देखना प्रारम्भ किया और मुंह से एक शब्द नहीं निकाला। इसके बाद उन लोगों ने खच्चरें इकट्ठी कीं और एक दूसरे से एक भी शब्द कहे बिना किसी प्रकार शेष मार्ग पैर घसीटते पार किया। हर एक को संदेह था कि शायद दूसरे ने यह भयानक दृश्य न देखा हो, इसलिए वह कहीं बात सुन कर हंसी न उड़ाये।

किन्तु जब वे उस कस्बे में अपने परिचित लोगों के बीच पहुँचे, तो उन्होंने जो घटना देखी थी उसे चिल्ला-चिल्ला कर लोगों से कहना प्रारम्भ किया। उनकी बताई छोटी से छोटी बात भी एक दूसरे से मिलती थी। उस राज्य की राजकुमारी कभी-कभी ऐसी ही बग्घी में सैर करने अथवा देवी के मन्दिर में पूजा करने जाया करती थी और प्रजा के लोग उससे अच्छी तरह परिचित थे। वह अत्यन्त साहसी और घमंडी स्वभाव की थी। यह समाचार सुनकर लोग घबड़ाये। लेकिन उसी समय राजमहल का एक कर्मचारी वहां आ गया। वह सीधा राजमहल से आ रहा था। उसने बताया कि राजकुमारी तो घर में बिल्कुल सकुशल हैं और आज सवेरे बग्घी में कहीं नहीं गईं।

राजकुमारी की मृत्यु की झूठी खबर फैलाने के अपराध में सुरेश और दोनों नौकर गिरफ्तार कर लिये गये। फिर किसी ने इस घटना की चर्चा भी नहीं की।

* * *

अब इससे भी अधिक विचित्र घटना आती है। रात को राजकुमारी मंदिर में पूजा करने के लिये गई और बहुत तड़के अपनी चार घोड़ों वाली बग्घी स्वयं हांकते हुए उसी मार्ग से राजमहल को रवाना हुई। साथ की दासियों और राज-कर्मचारियों ने उस भीषण पहाड़ी मार्ग की यात्रा से उसे रोका, किन्तु उसने किसी की बात नहीं सुनी। उसने पहाड़ी के उतार पर घोड़ों को बड़ी तेज चाल से चलाना आरम्भ किया। वह मोड़ को ठीक तरह से पार न कर सकी और वह बग्घी तथा घोड़ों के साथ ठीक उसी जगह, ठीक उसी समय खड्ड में जा गिरी, जहां सुरेश और उसके नौकरों ने एक दिन पहले ऐसी ही घटना होते देखी थी।

अब की बार २४ घण्टे बाद घटना हुई थी। राजकुमारी बग्घी के साथ खड्ड में मरी हुई मिली। इस भयंकर दुर्घटना का संवाद जब राजमहल में पहुँचा, तो सुरेश और उसके नौकरों को छोड़ दिया गया।

लोग हैरान थे कि एक भयंकर दुर्घटना के सचमुच घटित होने के ठीक चौबीस घण्टे पहले ही उसका अभिनय ठीक उसी प्रकार होते देखा गया था, जैसे कि वह हुई और उसको प्रत्यक्ष देखने वाले तीन बालक ही थे, जिनका उस स्त्री से कोई सम्बन्ध नहीं था।

उस घटना का रहस्य आज तक नहीं खुला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो सखियां

दो सखियों की सुनो कहानी,
इक कमला, इक विमला रानी।
दोनों ने फोटो खिचवाई,
आपस में हो गई लड़ाई।
कमला का तो सुन्दर मुखड़ा,
विमला की आंखों में झगड़ा।
कमला बोली, "विमला भेंगी!"
विमला चीखी, "तू है ठेंगी!"
बात बढ़ी तो रुकती कैसे,
लड़ें, बिल्लियां लड़तीं जैसे।
रम्मू को गुस्सा जो आया,
उसने फोटो छीन, छिपाया।
अब दोनों बैठी पछतातीं,
रम्मू को कर प्यार मनातीं।
रम्मू कहता, "जाओ! जाओ!
जाओ! मेरा सिर ना खाओ!
मैंने फोटो नहीं लिया है,
अगर लिया, तो फाड़ दिया है।"
पर दोनों को पता नहीं है,
फोटो मेरे पास यहीं है।

—भैया

बिना शुल्क

बाल-पहेली नं० १२

२० अक्तूबर १९४८ तक सही उत्तर

आने पर पांच रुपये नकद पुरस्कार

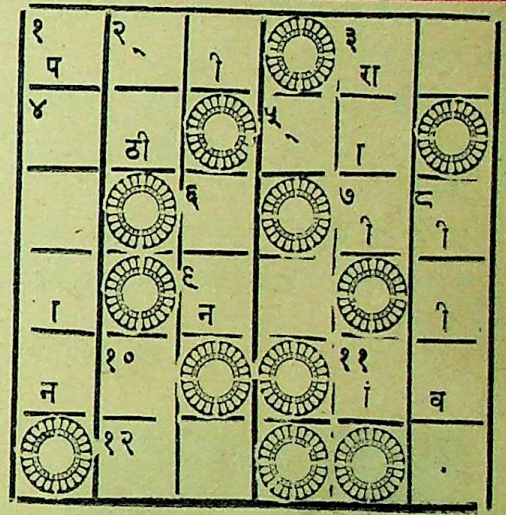

दायें से बायें

१. इसके कारण बच्चे 'मनोरंजन' को बहुत पसन्द करते हैं। ३. आग का तमाशा दिखाने वालों को इससे बड़ी सहायता मिलती है। ४. ऐसे लड़के को कोई पसन्द नहीं करता। ५. एक ऐसा शब्द जिसका सम्बन्ध सिर से भी है और किसी से काम करवाने से भी। ७. नन्हे-मुन्ने भैया के मुंह से यह सम्बोधन कितना प्यारा लगता है! ९. इसके कट जाने से कभी-कभी बड़ा कष्ट होता है। ११. दूर से इसे देख कर थके हुए मुसाफिर की जान में जान आ जाती है। १२. विद्यालय में अगर यह न हो तो विद्यार्थियों के पास सिवाय विद्या के और कुछ नहीं रह जाता।

ऊपर से नीचे

१. शरीर का बल ही इसका धन है। २. कई लोग साधारण-सी बात में अपनी यह समझ लेते हैं। ३. गवर्नर-जनरल ६. हमारे एक राष्ट्रीय गीत की पहली पंक्ति का पहला शब्द। ८. एक ऐसी ओषधि के नाम के उलट-पुलट अक्षर जिसके सेवन से, कहते हैं, मरा हुआ मनुष्य भी जी उठता है। १०. आज-कल अधिकतर धन इससे कमाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-पहेली नं० ११ का पुरस्कार

सितम्बर १९४८ के 'मनोरंजन' में प्रकाशित 'बाल-पहेली नं० ११' का शुद्ध उत्तर श्री महेशचन्द्र गुप्ता c/o श्री भगवानदास सर्राफ, सदर बाजार, मथुरा ने भेजा है। अतः उसे पांच रुपये का पुरस्कार दिया गया है। सही उत्तर निम्नलिखित है:—

दायं से बांयं—१. विशेषांक, ५. देर, ६. शिलांग, ७. राम, ९. रोजी, १०. बात, १२. विसल।

ऊपर से नीचे—१. विदेश २. शेर, ३. कशिमरोणिवि, ४. नीगरो, ८. बोतल ११. थल।

पहेली के नियम

१. केवल १४ वर्ष की आयु तक के लड़के-लड़कियां ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। आयु के सम्बन्ध में माता-पिता अथवा स्कूल के अध्यापक का प्रमाण-पत्र भी उत्तर के साथ आना चाहिये।

२. उत्तर 'मनोरंजन' में छपे खाके को काट कर और भर कर भेजना चाहिए। किसी और कागज पर अलग से भेजे गये उत्तर पर विचार नहीं किया जायेगा। एक व्यक्ति एक से अधिक पूर्तियां भी भेज सकता है।

३. खानों को स्याही से सुस्पष्ट लिखे अक्षरों से भरना चाहिये। कटे-छंटे या पैंसिल आदि से लिखे अक्षर को सही नहीं माना जायेगा।

४. उत्तर २० अक्तूबर १९४८ को शाम तक 'मनोरंजन' कार्यालय, श्री श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली में पहुंच जाना चाहिये।

५. सम्पादक का निर्णय अन्तिम होगा।

कुमारी हृदयेश्वरी त्यागी

इन्होंने पिछले महीने 'बाल पहेली नं० १०' का सही उत्तर भेजकर पुरस्कार प्राप्त किया था। इनकी आयु ११ वर्ष की है। ये रघुनाथ गर्ल्स कालिज मेरठ में सातवीं कक्षा में पढ़ती हैं और बड़ी होनहार छात्रा हैं। ये मेरठ निवासी चौ० सुखवंश नारायण की सुपुत्री हैं। पता—उत्तम वाटिका, वेस्ट्रन कचहरी रोड, मेरठ।

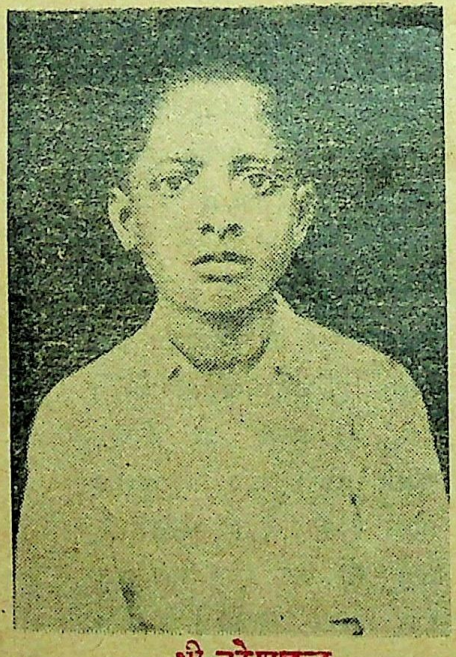

श्री नरेशचन्द्र

इन्होंने 'बाल पहेली नं० ९' का शुद्ध उत्तर भेजकर पुरस्कार प्राप्त किया था। पिछले महीने ये बीमार थे, इसलिये सितम्बर के अंक में इनका फोटो नहीं छप सका था। इनकी आयु लगभग १३ वर्ष की है और ये आठवीं श्रेणी में पढ़ते हैं। पता—१३१, डबल-स्टोरी गवर्नमेंट क्वार्टर्ज, देवनगर, करौल बाग, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एजेन्ट्स, विज्ञापनदाता तथा ग्राहकगण नोट करलें—

'मनोरंजन'

का

विशेषांक

दीपावली के अवसर पर बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित हो रहा है।

देश की विविध समस्याओं व विषयों पर भारत के धुरन्धर विद्वानों द्वारा लिखित गम्भीर एवं खोजपूर्ण विशेष लेख, सुप्रसिद्ध कवियों की रसभरी, मधुर तथा ओजमयी कवितायें, हिन्दी-जगत के सुप्रसिद्ध कहानीकारों की सुरुचिपूर्ण तथा मनोरंजक कहानियां, कार्टून, आर्टपेपर पर अनेकों सुन्दर चित्र, बढ़िया रंगीन छपाई, सुन्दर गेट-अप तथा नयनाभिराम तिरंगा आकर्षक कवर पृष्ठ—जो कि बरबस ही आपके हृदय को अपनी ओर खींच लेगा—सिनेमा, रेडियो, रंगमंच, महिलाओं तथा बच्चों के लिये अत्यन्त उपयोगी एवं बेजोड़ सामग्री आदि अनेक विशेषताओं से युक्त लगभग १०० पृष्ठों का यह विशेषांक अपने ढंग का एक निराला विशेषांक होगा।

इतनी विशेषताओं के बावजूद भी इसका मूल्य केवल १२ आने ही रखा गया है।

एजेन्ट्स, ग्राहक तथा विज्ञापनदाता अपने अपने रिजर्वेशन के लिये शीघ्रता करें; अन्यथा फिर पछताना पड़ेगा।

मैनेजर 'मनोरंजन'

श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

प्रिंटर पब्लिशर श्री [illegible] द्वारा [illegible] प्रेस देहली से छप कर प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० — डी० १७३

जनलप

जमीन कैसी भी हो,
यह टायर फिसलेंगे नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती

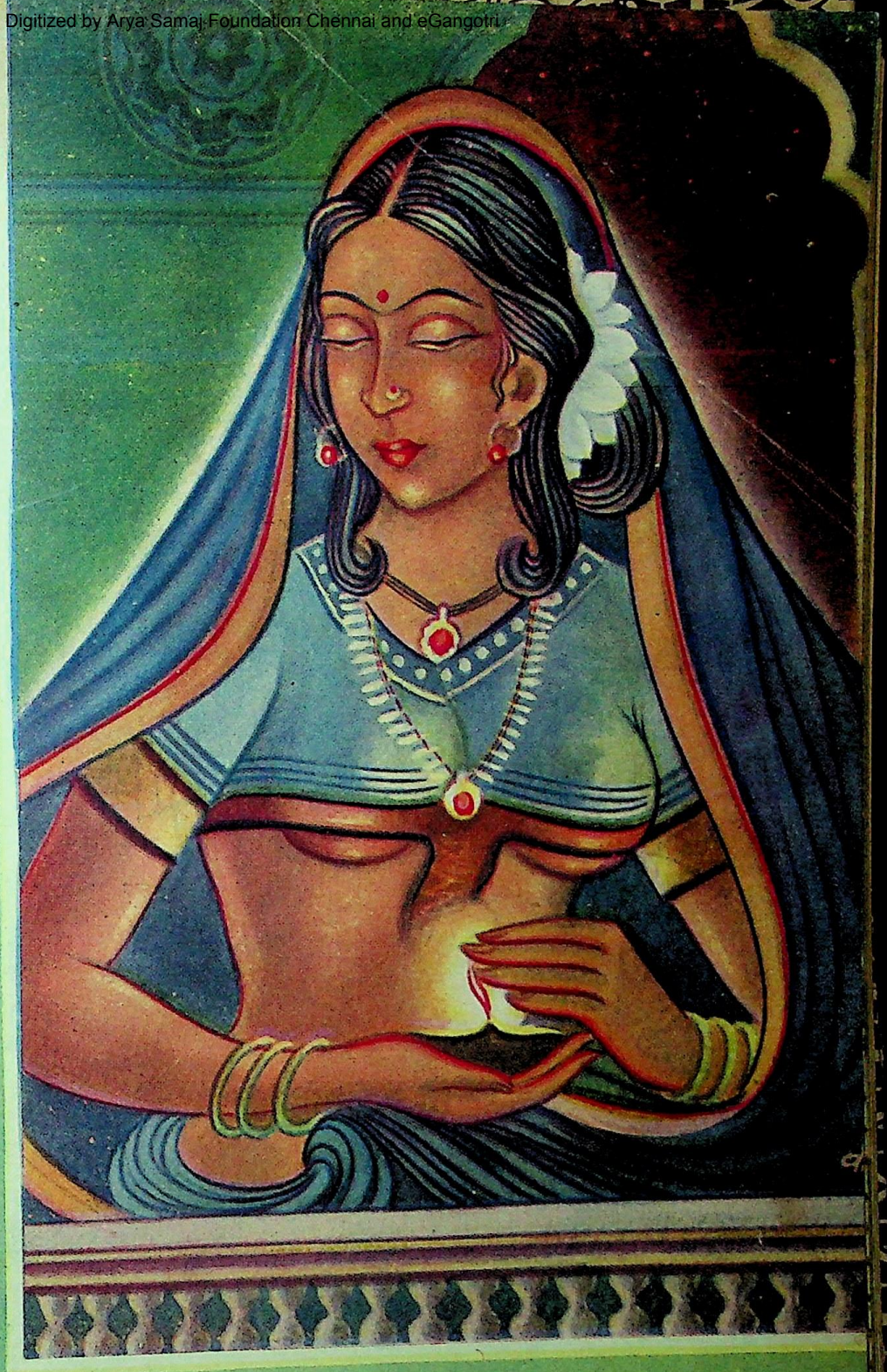

विशेषांक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार :-
'बिड़ला'
टेलिफोन :-
पोस्ट आफिस
बिड़ला लाइन्स

मारो ठेला हैयो

मैनेजिंग एजेन्टस
बिड़ला ब्रदर्स लि०
८ रौयल एक्चेंज
कलकत्ता

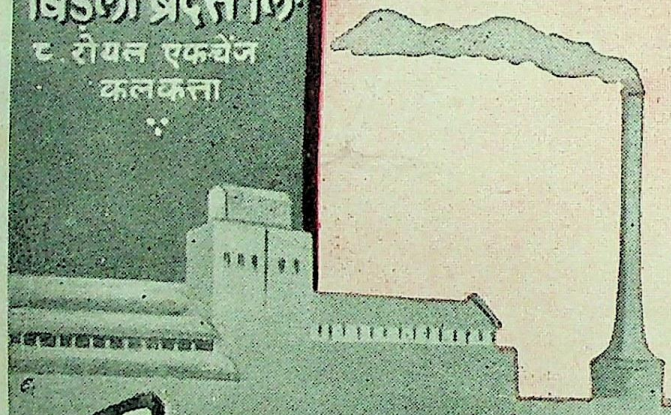

मंहगाई के समय में सस्ते सुन्दर और टिकाऊ वस्त्रों द्वारा जनता की सेवा करने वाली एक मात्र मिल के "मारो ठेला हैयो" छाप के वस्त्र गरीबों की झोंपड़ी से अमीरों के महलों तक व्यवहार में लाये जाते हैं। आप भी कपड़ा खरीदते समय इस छाप को अवश्य देख लेवें।

बिड़ला कॉटन स्पि० एण्ड वी०
मिल्स लिमिटेड
सब्जी मण्डी · देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र विद्यावाचस्पति
चन्द्रलोक, जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को
सें

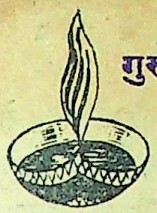

यह अब रसायनिक ढंग से शुद्ध और हवा निकाले हुए डिब्बों में बन्द किए जाते हैं। और हर शहर में श्रेष्ठ दुकानदारों से मिल सकते हैं।

दिवाली के पुभ त्योहार पर भेंट करने योग्य शेर मार्का चटनी आचार तथा मुरब्बे

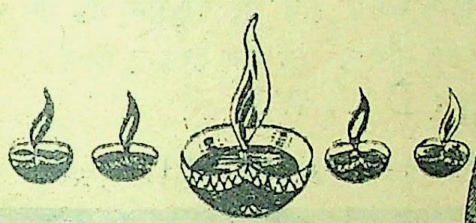

रुचिकारक तथा पौष्टिक

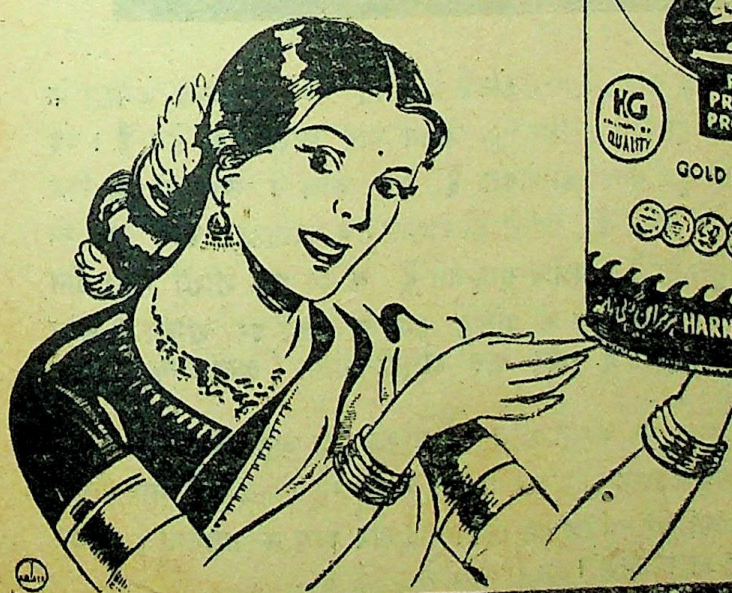

जो विशेषज्ञों की देख रेख में ८८ वर्षीय अनुभवपूर्ण कार्यालय में तैयार हुए हैं।
हमेशा "शेर मार्का" देखकर खरीदें।

हरनारायन गोपी नाथ, देहली, नई देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेशमी कपड़ा एक रुपया गज

रेशमी कपड़ा एक रुपया गज आपको किसी जगह से नहीं मिल सकता। परन्तु हम आपको बाजार से बहुत ही सस्ते भाव पर दे सकते हैं। जो कि आपको कौड़ियों के मूल्य पड़ेगा। अमरीकन सुफ़ैद सिल्की पैराशूट यानी पूरी छत्री १२ कली वाला (जिसमें पूरी १२ कली हैं) वगैर जोड़ के मये रेशमी डोरी के कीमत १२) रु० फी पैराशूट (पूरी छत्री) पैकिंग फ्री। महसूल डाक १॥≈) तीन पैराशूट यानी पूरी ३६ कलियों की रियायती कीमत ३३) रु० और महसूल डाक ३॥≈) होगा- आप बतौर नमूना मंगा कर थोक का आर्डर देकर लाभ उठायें। यह माल दूसरे रेशमी सिलकी कपड़ों की निस्वत निहायत उमदा और बा रियायत है। पहले इसकी कीमत बहुत ज्यादा थी मगर अब स्टाक को खतम करने के लिये यह रियायती थोक का भाव है। तीन पैराशूट महसूल डाक समेत आप को घर में ३६॥≈) में पड़ेंगे। जरूर मंगायें शीघ्र मंगा लें नहीं तो स्टाक खतम होने पर पछताना पड़ेगा, क्योंकि और माल अमरीका से नहीं आ रहा। आर्डर देते समय अपना नाम व पूरा पता साफ २ लिखें।

अमरीकन ट्रेडिंग एजेन्सी (D. V. W.)

रेशमी कपड़े के मशहूर व्यौपारी, पोस्ट बक्स नं० ७५ अमृतसर।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

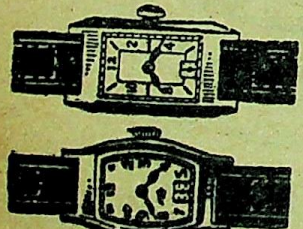

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठंडक पहुंचाता है। अजीब सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६॥) इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैन्सी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिल्कुल मुफ़्त भेजा जाता है।

जरूरी नोटः—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापिस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीददार को डाक खर्च बिल्कुल माफ, और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड और चार घड़ियां बिल्कुल मुफ़्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पूरा पता साफ लिखें।

लन्दन कमरश्यिल कम्पनी (D. V. W.) पो० ब० २, अमृतसर।

London Commercial Co. (D. V. W.) P. B. २. Amritsar.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माहवारी

शीघ्र जारी

यदि माहवारी ठीक समय पर न आवे तो मुझे मिलें फौरन ठीक कर दूंगी यदि मेरे पास न आ सकें तो हमारी दवाई मैन्सोल स्पेशल इस्तैमाल करें। मूल्य १२) इससे तेज दवाई मैन्सोल स्ट्रांग जो कि एक दम असर करके अन्दर साफ कर देती है २५)।

गर्भ रोक

सन्तान बन्द

हमेशा के लिए सन्तान उत्पत्ति बन्द करने वाली खाने की दवाई बर्थ कन्ट्रोल मूल्य २५) ५ वर्ष के लिये २०) और दो वर्ष के लिए १२) इन दवाइयों से सेहत बहुत हो जाती है। माहवारी ठीक समय पर प्रति मास आती रहती है लगाने वाली दवाई बर्थ कन्ट्रोल १५)।

लेडी डाक्टर कविराज सत्यवती

(आफ लाहौर) Phone No 8646.

कोठी : —२७ बाबरलेन न्यू देहली या चांदनीचौक देहली (दरीबा के सामने)

विवेक
प्रथम पुरस्कार
१५००)

विश्वास

दीपावली उपहार २०००)

विजय
अन्य पुरस्कार
५००)

प्रत्येक १५ से अधिक उत्तरों के प्रेषक को विशेष इनाम। अंतिम तिथि ३०-११-४८ प्रवेश शुल्क ४ (चार) आने प्रति उत्तर। निम्न लिखित ९ संकेतों के आधार पर प्रत्येक के सामने दिये हुए २ संभव हलों में से एक चुनिए— उत्तर में 'क' या 'ख' ही लिखें—

संभवहल

सं०	संकेत माला	क	ख
१	परतन्त्रता से मुक्ति पाना प्रत्येक राष्ट्र का मुख्य ·····है।	धर्म	कर्म
२	सृष्टि ज्ञान के दार्शनिकों को भी इसका मर्म वास्तविक रूप से न मिला।	काल	काम
३	उदर-पोषण के हेतु इसका व्यवहारिक महत्त्व विचारणीय है।	भिक्षा	शिक्षा
४	वाणिज्य-क्षेत्र में हो न हो इसका अनुसरण करने वाला अधिक सफल होता है।	कायदे	वायदे
५	संभवतः संकट के समय ही भिन्न २ जाति-मिश्रित राष्ट्र वासियों के···का मूल्य आंका जाता है	मन	तन
६	कल्पना के आधार को ही·····मानने वाला व्यवहारिक जीवन में कम सफल होता है।	गति	मति
७	यों देखा जाय तो·····के लिए अर्पित जीवन ही वास्तविक जीवन है।	स्वार्थ	परमार्थ
८	वस्तुतः विश्व के शक्तिशाली राष्ट्र अपनी सत्ता से·····का चित्र अंकित कर रहे हैं।	शांति	कान्ति
९	साधारणतया यह ही एक मात्र जीवन माना जाता है।	आयु	वायु

संक्षिप्त नियम— (१) उत्तर किसी कागज पर साफ व स्याही से लिखकर नीचे दिये हुए पते पर अन्तिम तिथि तक पहुँचना चाहिए (२) प्रवेश शुल्क ४ आने प्रति उत्तर की दर से मनीआर्डर द्वारा भेजें और पोस्ट आफिस की रसीद साथ भेजें। (३) शुद्ध उत्तर, फल आदि के लिए ४ आने अलग भेजें। (४) एक प्रेषक एक ही पुरस्कार का अधिकारी होगा। (५) प्रबन्धक का निर्णय सब विषयों पर अन्तिम होगा।

जिनकुशल पून्स, खेतरपाला चौंतरा, जोधपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजाद हिन्दुस्तान के साइन्स वालों का सबसे पहला आविष्कार

विदेशी साइन्स वालों को भी मात कर दिया आंखों के लिये अपूर्व चमत्कार

साइटगाइड SIGHT GUIDE तैयार करके ४० दिनमें चश्मा उतरवा दिया देशके कोने २ से असंख्य प्रशंसा पत्र आ रहे हैं। घर घर इस लाभदायक आविष्कार का डंका बज रहा है। यह औषधि बिल्कुल साइन्स के नीयमानुकूल बड़े परीश्रम के साथ तैयार की गई है। इसके प्रयोग करने से नजर की कमजोरी, सुर्खी, मैल, कम दिखाई देना थोड़े दिनों का जाला, रतौंधी, जलन, पानी बहना, आदि सब रोग हमेशा के लिये दूर हो जाते हैं। यदि इस औषधिका प्रयोग तन्दुरुस्त आंखों वाला हर रोज करें तो उसकी आंखों का तेज कभी भी कम न होगा और आखें कभी भी खराब न होंगी। यदि पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राएं इसका नित्य प्रति प्रयोग करें। तो उनकी आंखें पढ़ते पढ़ते कभी भी नहीं थक सकतीं। और न ही नजर कमजोर हो सकती है। आज ही आर्डर देकर मंगवायें। ऐसे स्वर्णावसरों को हाथ से कभी भी न जाने देना चाहिये इसकी कीमत बहुत सस्ती रक्खी गई है ताकि इससे गरीब अमीर दोनों लाभ उठा सकें ४० दिन का पूरा कोर्स ॥) तीन रुपया आठ आन पैकिंग व डाक खर्च अलग।

जरूरी नोटः—औषधि की प्रसिद्धि के लिये ५०००) रुपया मुफ्त बांटा जा रहा है। हमारे हर पैकट में एक प्रयोग विधा पत्र होगा। उस पत्र पर नम्बर दिये हुए हैं। जिस सज्जन के पैकट में से निम्नलिखित नम्बर का पत्र निकले वह हमें तत्काल सूचना दें तथा वह पत्र जिस पर निम्नलिखित नम्बर होगा हमें रजिस्ट्री द्वारा भेजने की कृपा करें जिसको देखकर हम उस सज्जन के पास १०) रुपया इनाम के रूप में भेजेंगे। यह इनाम केवल औषधि की प्रसिद्धि के लिये है। नम्बर १०,२०,३०,४०,५०,६०,७०,८०,९०,१००,

पताः—नेशनल चैम्बर आफ साइन्स (M. D.) ८ नकममण्डी अमृतसर (इण्डिया)

स्वतन्त्र भारत का नवीन आविस्कार

विद्यार्थियों—जनता तथा फोटो ग्राफर्स को स्वर्ण अवसर

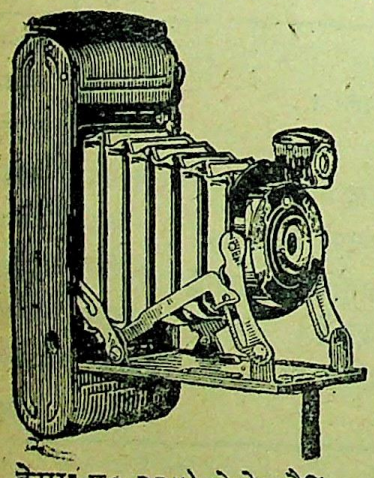

सुन्दर, मजबूत, टीन की बौडी, स्प्रेकलर बढ़िया फोकस, लेन्स, विश्वासनीय हिन्दुस्तान के होशियार कारीगरों द्वारा बनाये हुये कीमत में सस्ते, काम में विलायती कैमरों से टक्कर लेने वाले। इन कैमरों से आप चाहें जिस दिल पसन्द चीज का टिकाऊ मनोहर फोटो नं० १२० के फिल्म पर २॥+३॥ इंच साइज का खींच सकते हैं। नं० १ औरियन्ट कट् फिल्म बौक्स केमरा मूल्य ८॥) पोस्टेज पैकिंग ।॥) केमरे के साथ कट् फिल्म, कार्ड, मसाला और फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त। नं० २ औरियन्ट रौल फिल्म बौक्स केमरा मू० १८॥) पोस्टेज पैकिंग १॥) फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त नं० ३ औरियन्ट रौल फिल्म फोल्डिंग केमरा मू० २२॥) पोस्टेज पैकिंग १॥) फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त।

गारण्टीः—हमारा दावा है कि आप कभी भी असन्तुष्ट न होंगे। केमरे से बढ़िया फोटो न खिंचे तो मूल्य वापिस।

औरियन्टल केमरा ह उस (वी. जी. ओ. न. ६) अलीगढ़ सिटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी

बम्बे म्युच्वल

लाइफ़ एश्योरेंस सोसाइटी लिमिटेड

भारत का सब से प्राचीन कार्यालय

स्थापित १८७१ प्रधान कार्यालय बम्बई

एक सहयोगी उद्योग

पालिसी होल्डर ही जिसके स्वामी और नियंत्रणकर्त्ता हैं।

कोई शेयर होल्डर नहीं है

पूर्ण व्यवसाय—	
जो चालू है	रु० ३४,००,००,००० से अधिक हैं
पूंजी—	रु० ७,२५,००,००० ,,
१९४७ में सम्पादित	
नया कारोबार	रु० ६,६०,००,००० ,,

प्रासपेक्टस और एजेन्सी के लिए कृपया लिखें—

मैसर्स बी० गुहा एण्ड कं०

चीफ एजेण्ट्स

कोनोट प्लेस, नई दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय वर्ष

संख्या २

मनोरंजन

नवम्बर

१९४८

दिल्ली

व्यवस्थापक

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

सम्पादक

श्री चिरंजीत

इस अंक में

कहानियां

चोरी — श्री विष्णु प्रभाकर — ८
परित्याग — श्री मन्मथनाथ गुप्त — १४
खिलौने — श्री राजेन्द्र शर्मा — २६
रक्त की रेखा — श्री गंगाप्रसाद मिश्र — ५०
दीपक जलता रहा ! — श्री नारायण श्यामराव चितांबरे — ८७

कविताएं

गीत — सुश्री सुमित्राकुमारी सिनहा — ७
भूल मत जाना''' — श्री 'अंचल' — २९
मैं और तू — श्रीमती शान्ति सिंहल — ३४
दीपवन्ती — श्री 'परदेशी' — ३५
गजल — श्री 'शेष' — ३६
दीप-यामिनी आई ! — श्री 'नीरव' एम० ए० — ४०
दो नादान ! — श्री 'दिनेश' — ४९
दीपावली — श्रीमती शकुन्त गिरिजाकुमार — ५५

लेख

कालिदास के समय का शिष्टाचार — श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति — ११
मशीन, मानव और महात्मा — श्री रतनलाल जोशी — २०
ओ जोग के जल-प्रपात ! — श्री देवेन्द्र सत्यार्थी — ३१
प्रजातन्त्रों की प्राचीन परम्परा — श्री हरिदत्त वेदालंकार — ३७
कवि 'अंचल' — श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' — ४१
तमाशा — श्री प्रभाकर माचवे — ५६
भारतीय क्रिकेट — श्री हरिश्चन्द्र कैला — ६५

विशेष स्तम्भ

फुलझड़ियां — ८५
बाल-मनोरंजन — ८७

इस अंक में स्थानाभाव के कारण और कई प्रमुख लेखकों की अच्छी रचनायें नहीं जा सकी हैं। आगामी अंक में वे सभी रचनायें हम दे रहे हैं; इस तरह 'मनोरंजन' का आगामी अंक भी एक प्रकार से विशिष्ट अंक ही होगा।

—सं०

इस अंक का मूल्य बारह आना

वार्षिक मूल्य ५॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

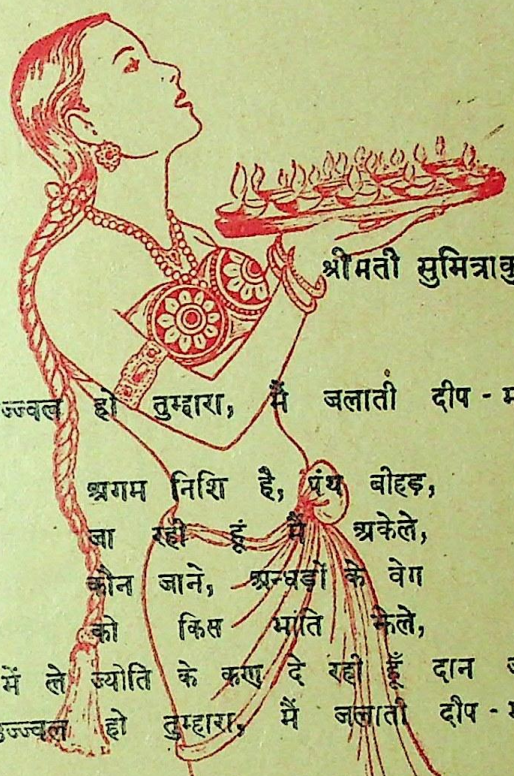

श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा

पंथ उज्ज्वल हो तुम्हारा, मैं जलाती दीप - माला !

अगम निशि है, पंथ बीहड़,
जा रही हूं मैं अकेले,
कौन जाने, आन्धड़ों के वेग
को किस भांति झेले,
शून्य में ले ज्योति के कण दे रही हूँ दान ज्वाला !
पंथ उज्ज्वल हो तुम्हारा, मैं जलाती दीप - माला !

रात काली, धूम्र काला,
अग्नि - कण झर चार होते,
स्वप्न - शलभों के अमर—
बलिदान जिनसे पार होते,
कालिमा के अंक में ही ज्योति का वरदान पाला !
पंथ उज्ज्वल हो तुम्हारा, मैं जलाती दीप - माला !

स्पर्श अन्तिम श्वास का दे
भोर का जीवन जगाने,
दीप मेरा जल रहा है
ज्योति का दिनमान लाने,
जागरण के दूत ने गति का चिरन्तन - प्रण सँभाला !
पंथ उज्ज्वल हो तुम्हारा, मैं जलाती दीप - माला !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोरी

श्री विष्णु प्रभाकर

वे क्या ठेकेदार को
देखते हैं, क्या मेज
पर पड़ी हुई चीजों
को और कभी पैर
पकड़े हुए नौकर को
—चोर नौकर को।

उस दिन शनिवार था और उसके मालिक—बड़े बाबू दफ्तर से लौट कर सिनेमा देखने चले गये थे। उनका पुराना कोट सदा की तरह अन्दर के कमरे में खूंटी पर टँगा हुआ था। वह अक्सर सोचा करता था—बड़े बाबू के पास इतने कोट हैं, पर उसके पास एक भी नहीं है। क्या उसके बदन पर कोट अच्छा नहीं लगता? लेकिन नहीं, आज प्रश्न उसका नहीं था, उसके पिता का था। उनका जर्जर शरीर आने वाली भयंकर शीत-ऋतु का आक्रमण सह सकने में बिल्कुल असमर्थ था। अगर वह कोट उन्हें मिल सके तो...वह बरतन साफ कर रहा था और उसके हाथ राख से भरे हुए थे। उसने एक झटके से बरतनों को परे सरका दिया और जल्दी-जल्दी हाथ धोने लगा। हाथ धोते-धोते उसने फिर सोचा—जब बीबी जी लौट आवेंगी, तो वे अवश्य कोट की तलाश करेंगी। पर बड़े बाबू के पास इतने कोट हैं कि तलाशी का प्रश्न नहीं उठता। और उठे भी तो बाबू उस पर शक करने वाले नहीं हैं।

वह ठिंगने कद का मजबूत आदमी था। उसकी आंखों में सरलता थी और उसका दिल नरम था। इसीलिये वह आज्ञाकारी था और बड़े बाबू उससे बहुत खुश थे। अक्सर आज्ञाकारी आदमी साहसी नहीं होते; फिर भी जब अँधेरा गहरा हो रहा था तो उसने बहुत तर्क बितर्क के बाद उस कोट को उठा लिया। क्षण भर के लिये लगा, जैसे उसके बोझ से वह दब चला है। पर अब और सोचने का अवसर नहीं था। घड़ी में सवा आठ बजे थे और बड़े बाबू साढ़े नौ बजे लौटने वाले थे। वह दौड़ा दौड़ा अपनी कोठरी में आया और उसने तह करके कोट को अपने बक्स में बन्द कर दिया।

बन्द करने के बाद जब वह फिर रसोई में लौटा, तो वह कांप रहा था और शीत के कारण उसके दांत

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बज उठते थे। उसने मालिक के साथ धोखा किया है यह सोच कर उसका नरम दिल बर्फ की तरह जम जाता था। परन्तु यह सोच कर कि उनके पास कई कोट हैं और उसके पिता को एक कोट की सख्त जरूरत है, वह चुप हो जाता था।

उस दिन वह मालिक से और भी नम्रतापूर्वक बातें करता रहा। जब वे लौटे तो गरम पानी तैयार था और खाना अभी आग पर रखा हुआ था। बड़े बाबू ने सदा की तरह हाथ-मुंह धोकर खाना खाया, फिर एक प्याला काफी ली। यह नया शौक उन्हें एक ठेकेदार की कृपा से लग गया था, जो बढ़िया काफी के दो डिब्बे उन्हें इस लिये भेंट कर गया था कि उन्होंने उसका भुगतान समय पर करवा दिया था। बड़े बाबू रिश्वत लेना पाप समझते थे, परन्तु काफी पीने की आदत कोई बुरी आदत नहीं है—विशेषकर जब उन्हें अपनी जेब से पैसा नहीं खर्च करना पड़ता और वह नियत समय पर तैयार मिल जाती है। बहरहाल, उसी रात को जब वह बत्ती बुझाने के लिये बड़े बाबू के कमरे में पहुँचा, तो उसने निहायत नम्रता से निवेदन किया—"मालिक, मुझे छुट्टी चाहिये।"

"छुट्टी? नहीं, यह नामुमकिन है। बीबी जी के आने तक तुम कहीं नहीं जा सकते।" और फिर मुड़ कर पूछा—"क्या करना है?"

"मेरे पिता बीमार हैं।"

"ओह!"

'जी!"

"लेकिन काम कौन करेगा?"

यह समस्या थी। वह एकाएक कोई जवाब नहीं दे सका। "कल बताऊंगा," यह कह कर वह चला गया। उसने अपनी कोठरी में आकर उस कोट को फिर नहीं देखा। उस ओर दृष्टि उठाते ही उसके शरीर में कँपकपी दौड़ जाती थी। इसी तरह पूरा एक हफ्ता बीत गया, न उसने बड़े बाबू से फिर छुट्टी के लिये कुछ कहा और न बड़े बाबू को कुछ पूछने की जरूरत थी। पूरे हफ्ते बाद जैसे उन्हें कुछ याद आ गया, पूछा—"तुम्हारे पिता कैसे हैं?"

चोरी की परिभाषा क्या है? जब कोई बड़ा आदमी रिश्वत के रूप में मुफ्त की चीजें पाता है, तो क्या वह इस तरह चोरी नहीं करता?

उसने सकपका कर जवाब दिया—"जी...अब कुछ बेहतर हैं...।"

बड़े बाबू बोले—"तभी तुमने छुट्टी नहीं मांगी। तुम बहुत अच्छे हो। तुम्हारी बीबी जी के आने पर मैं तुम्हारा वेतन बढ़ाने की बात कहूँगा।"

सुन कर पहिले तो वह मुस्कराया, पर जब उसके कुछ देर बाद वह अपनी कोठरी में लेटा हुआ था, तो उसकी आंखें नम हो रही थीं और उसका दिल कांप रहा था। उसने मन ही मन कहा—नहीं, मैं यह कोट नहीं रखूंगा। मैं उसे चुपचाप उसी खूंटी पर टांग दूंगा; मालिक जान भी नहीं सकेंगे। पर...उसका दिमाग फिर झन्ना उठा—पर उसके पिता का क्या होगा? भयंकर शीत-ऋतु सर पर आ गई है और प्राण बचाने के लिये उन्हें एक कोट की सख्त जरूरत है...

वह बहुत देर तक इसी तरह सोचता रहा, पर कुछ निश्चय नहीं कर सका। आखिर नींद ने उसकी रक्षा की और सबेरे मुंह-अँधेरे जब वह उठा, तो उसे कोट का कुछ विशेष ध्यान नहीं था। वह सदा की तरह अपने काम में लग गया। कभी कभी बीच में उसे ऐसा अवश्य लगता था, जैसा मधुमक्खी के काटने के बाद लगा करता है; पर देखने पर पता लगता कि या तो पानी उतारते हुये हाथ किसी अंगार से छू गया है या किसी बरतन का कोना चुभ गया है।

एक दिन फिर मालिक ने दफ्तर से लौट कर उसे पाइन-एप्पल के कई डिब्बे दिये, बताया—"ये बहुत सस्ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। और भी लाऊंगा। तुम्हारी बीबी जी इन्हें बहुत पसन्द करती हैं। ठेकेदार ने फौज का सामान सस्ते पर चुका लिया है और बहुत कहने पर भी उसने मुझसे इनका एक भी पैसा नहीं लिया।"

उसके बाद जब वह उस डिब्बे को खोल रहा था, तो एक ओर तो उसका मस्तिष्क एक सोंधी सुगन्ध से भरता जा रहा था और दूसरी ओर बिना याद किये उसे बहुत सी ऐसी बातें याद आने लगी थीं, जिनका सम्बन्ध बड़े बाबू को बहुत-सी कीमती और बेशकीमती चीजें मुफ्त मिलने से था। सहसा उसने सोचा—यह कोट मुझे मुफ्त मिला है। फिर उसने चारों ओर देखा। बड़े बाबू कुछ गुनगुना रहे थे, मानों सन्नाटा बोल रहा हो।

अन्दर से किसी ने तर्क किया—"यह तो चोरी है!"

"चोरी?" उसने तत्काल तर्क का जवाब तर्क से दिया, "मैं चोरी नहीं करता। मैं कोई ऐसी चीज नहीं चाहता, जिसकी मुझे जरूरत नहीं है। मेरे पिता को कोट की सख्त जरूरत है, उसके मिल जाने पर उनके इस मौसम में और जी जाने की पूरी आशा है। नहीं, यह चोरी नहीं है और मैं उसे नहीं लौटाऊंगा।"

बस उसने दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह उस कोट को आज ही अपने पिता के पास भेज देगा। फिर तो उसके सामने उसके बूढ़े पिता का चित्र उभर आया। आयु के बोझ से उनकी कमर झुक गई थी और दृष्टि बाहिर से अधिक अन्दर देखती थी। समय और संसार से उन्होंने जो तजुरबे प्राप्त किये थे, उनके कारण वे फूंक फूंक कर कदम रखते थे और योगी की भांति उनकी एक एक हड्डी स्पष्ट गिनी जा सकती थी। उन्होंने जब उस कोट को देखा तो आंखें चमक उठीं, बोले—"क्या, क्या यह मेरे लिये है?"

उसने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—"बड़े बाबू ने खुश होकर यह कोट इनाम दिया है।"

पिता गद्‌गद् हुए—"परमात्मा उन्हें खुश रखे! उनका रुतबा बढ़े! वे कितने अच्छे हैं। उन्होंने मुझे मरने से बचाया है!" फिर पूछा—"तू उनका काम तो मन लगा कर करता है न?"

उसने हँस कर जवाब दिया—"वे मुझसे बहुत खुश हैं"

तब पिता ने उसी प्रफुल्लता से कहा—"मैं जानता हूँ, अगले जाड़ों में वे तुझे भी एक कोट देंगे।"

...जैसे उसका रोम-रोम पुलकित हो उठा। उसने उस दिन बड़े बाबू के लिये बहुत बढ़िया खाना बनाया। खाते खाते वे बोले—"तूने इतना स्वादिष्ट भोजन बनाया है कि मैं पेट का अन्दाज नहीं कर सका। अभी तो मुझे रात को सफर करना है।"

वह शांत-मन बोला—"रास्ते के लिए मैंने खाना बना दिया है। पूरियां और खुश्क भुने हुए आलू हैं।"

"ओह!" उन्होंने कहा, "तुम काफी समझदार होते जा रहे हो। आजकल सफर में बना-बनाया खाना मिलना कितने सौभाग्य की बात है!"

बड़े बाबू चले गये, तो उसे अपना निश्चय पूरा करने का अच्छा अवसर मिल गया। उसने बक्स में से कोट निकाला और सबसे पहिले स्वयं पहिन कर देखा। मानों वह जादू की अंगूठी थी—उसे लगा वह राजकुमार बन गया है। वह फुसफुसाया—"मैं बड़े बाबू से किस बात में कम हूँ!"

उसका चेहरा तमतमाने लगा। पर तभी उसने गरदन को एक झटका दिया। यह अवसर ऐसी कल्पनायें करने का नहीं था। उसे वह कोट अपने भाई के पास पहुँचाना था, जो उसी दिन गांव जा रहा था। बस उसने कोट उतारा और एक बार उस पर हाथ फेर कर उसे कन्धे पर लटका लिया। बाहिर आकर उसे लगा, कोई देख ले तो..? उसने स्वयं उस तर्क का समाधान किया—ऊंहूं, वह अपने मालिक का कोट ले जा रहा है··· और वह मस्ती से चलने लगा। यद्यपि कल की वर्षा से अभी तक सड़क पर कीचड़ फैल रही थी, पर सुनहरी धूप के कारण काफी लोग बाहिर आ गये थे। उसने अपने परिचितों को जोर से नमस्कार किया और बातों से बचने की कोशिश नहीं

(शेष पृष्ठ ७७ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालिदास के समय का शिष्टाचार

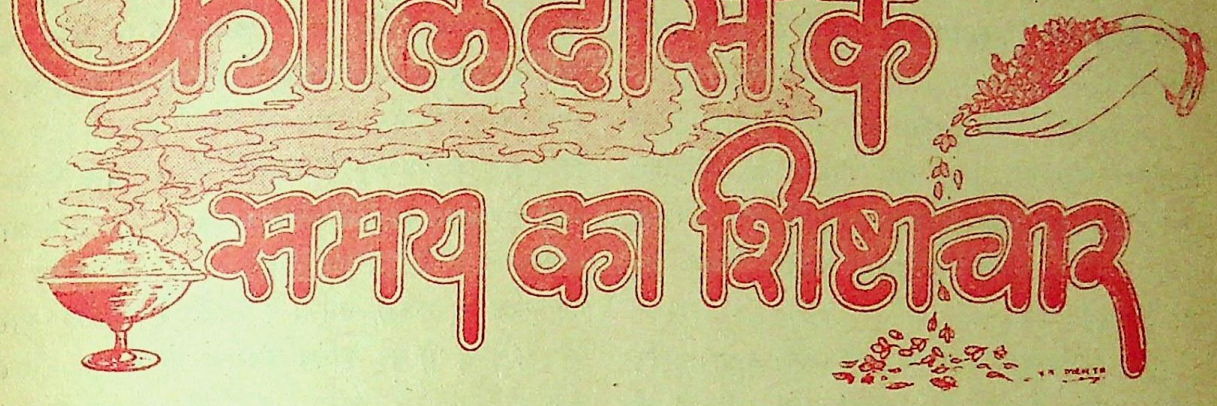

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

यदि हम किसी समय की सभ्यता के धरातल का अनुमान लगाना चाहें, तो हमें उस समय के शिष्टाचार पर दृष्टि डालनी चाहिये। शिष्टाचार सभ्यता के ऊंच-नीच का मापक-यन्त्र है इस मापक-यन्त्र से माप कर देखें, तो हम इस परिणाम पर पहुँचे बिना नहीं रह सकते कि महाकवि कालिदास ने जिस समय में अपने काव्य लिखे, वह सभ्यता और समृद्धि की दृष्टि से बहुत ऊंचा और महत्वपूर्ण था। कालिदास के ग्रन्थों में उस समय की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और नैतिक आदि सभी दशायें चित्रित हैं। इस लेख में मैं उनमें से केवल उस समय के शिष्टाचार के कुछ चित्रों की ओर निर्देश करूंगा।

शिष्टाचार की परिधि में वे सब व्यवहार आ जाते हैं, जो एक व्यक्ति दूसरे से करता है। छोटे से, बड़े से, परिचित से, अपरिचित से, मित्र और शत्रु से, सम्बन्धी और दूरस्थों से मनुष्य जो बातचीत तथा बर्ताव करता है, वह सब कुछ शिष्टाचार कहलाता है। कालिदास के ग्रन्थों में हमें शिष्टाचार के नियम बहुत पूर्णता तक पहुँचे हुए मिलते हैं। आजकल बहुत-से लोग विलायत के शिष्टाचार सम्बन्धी मुहावरों तथा तरीकों से बहुत प्रभावित होते हैं। हमारे देश में लखनऊ और दिल्ली का शिष्टाचार तो मशहूर ही है। कालिदास के काव्यों में उस समय के शिष्टाचार का जो चित्र मिलता है, वह आजकल के विलायती या देशी शिष्टाचार से सुन्दरता और पूर्णता में अणुमात्र भी कम नहीं—सम्भव है, औचित्य में कुछ ऊंचा ही हो।

मैं यहां कालिदास की कृतियों में से कुछ दृष्टान्त उद्धृत करता हूँ, जिससे विक्रम-कालीन शिष्टाचार का आभास मिल सके।

जब सम्राट् दिलीप गुरु वशिष्ठ के आश्रम में पहुँचे, तब वे आजकल के कई महानुभावों की भांति एकदम हल्ले से उनकी कुटिया में नहीं घुस गये। रथ से पत्नीसहित उतरने पर आश्रम के 'सभ्यों' ने उनका विधिपूर्वक स्वागत किया। सायंकाल तक राजा ने प्रतीक्षा की। जब मुनि सायंकाल की जप-होम आदि विधि से निवृत्त हुए, तब राजा और रानी उनकी सेवा में उपस्थित हुए। उस समय ऋषि-पत्नी अरुन्धती भी वहां विराजमान थीं। राज युगल ने गुरु-युगल के चरण छुए। गुरु-युगल ने आशीर्वाद दिया और कुशल-मंगल पूछा। राजा ने जो उत्तर दिया, वह शिष्टाचार का एक बढ़िया नमूना है। राजा ने कहा—

उपपन्नं ननु शिवं सप्तस्वङ्गेषु यस्य मे।
दैवीना मानुषीणां च प्रतिहर्ता त्वमापदाम्॥
(रघुवंश १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे गुरो ! मेरे राज्य के सातों अंगों में सर्वथा कल्याण है, क्योंकि आप जैसे गुरु मेरी दैवी और मानसी आपत्तियों का आहरण करने के लिये विद्यमान हैं।'

इस तथा इससे अगले कई श्लोकों में राजा दिलीप ने देश की सुरक्षा और विभूति का सांगोपांग वर्णन किया है। उसमें सुन्दरता यह है कि राजा ने किसी वस्तु का भी श्रेय स्वयं नहीं लिया अपितु अपने गुरु को दिया है

रघुवंश के दूसरे सर्ग में एक और बहुत सुन्दर प्रसंग आता है। गुरु की आज्ञा से राजा सुरभि-गौ की सन्तति की सेवा के लिये कटिबद्ध होकर प्रातः काल उसके पीछे पीछे वन की ओर जाता है। उस समय महारानी भी उसका अनुगमन करती हैं। जैसे श्रुति के पीछे स्मृति चलती है, वैसे राजा के पीछे रानी चली। तब राजा ने अपने शिष्टाचार का पालन किया। कवि कहता है —

निवर्त्य राजा दयिता दयालुस्तां सौरभेयीं सुरभिर्यशोभिः।
पयाधरीभूतचतुःसमुद्रा जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम् ॥
(रघुवंश २)

'दयावान् राजा ने अपनी प्रिय पत्नी को वन जाने से रोक दिया और स्वयं अकेला ही सुरभि-गौ की सन्तान के पीछे-पीछे चला। उस सौरभेयी की रक्षा में वह ऐसे सन्नद्ध हुआ, मानों चार समुद्ररूपी स्तनों से युक्त गौ-रूप-धारिणी पृथ्वी की संरक्षा कर रहा हो। जब दिन भर जंगलों में गौ की सेवा करके उसके पीछे-पीछे दिलीप आश्रम में वापस आया, तो उसने फिर गुरु और गुरु-पत्नी के चरणों का स्पर्श किया।'

यह तो हुए शिष्य और पति-पत्नी के परस्पर शिष्टाचार के दृष्टान्त। अब आप शत्रु के प्रति शिष्टाचार का दृष्टांत देखिये। राजकुमार रघु ने अपने पिता के राजसूय-यज्ञ के अश्व का अंग-रक्षक बन कर दिग्विजय के लिये प्रयाण किया। स्वर्ग के राजा इंद्र को यह अच्छा नहीं लगा कि पृथ्वी का राजा निर्विघ्न रूप से सौ यज्ञ पूरे कर ले, क्योंकि सौ यज्ञ करने का अधिकार तो केवल शतक्रतु (इन्द्र) को ही था। राजा दिलीप इन्द्र का मित्र था, परन्तु जब सौवां यज्ञ पूरा करके उसने शतक्रतु बनने की चेष्टा की, तो इन्द्र ने चुपचाप आकर यज्ञ के अश्व को उड़ा लिया और अपने रथ से बांध कर स्वर्ग की ओर ले चले। पहिले तो राजकुमार बहुत घबरा गया परन्तु फिर गुरु वशिष्ठ की धेनु की कृपा से प्राप्त हुई दिव्य दृष्टि के प्रभाव से उसने चोरी के घोड़े के साथ स्वर्ग के स्वामी को देख लिया। उस समय इन्द्र और राजकुमार में जो बातचीत हुई, वह उस समय के शिष्टाचार का अच्छा नमूना है। यदि राजकुमार कोरा सिपाही होता तो वह शायद देवराज से कहता, 'अबे, घोड़े को कहां लिये जाता है? सीधी तरह दे दे, नहीं तो ···।'

परन्तु राजकुमार ने कहा —

मखांशभाजां प्रथमो मनीषिभिस्त्वमेव देवेन्द्र सदा निगद्यसे
अजस्रदीक्षाप्रयतस्य मद्गुरोः क्रियाविघाताय कथं प्रवर्तसे ॥
(रघुवंश तृतीय)

'हे देवेन्द्र, आप यज्ञ के अंश का उपभोग करने वालों में से सब से प्रथम हैं। निरंतर यज्ञ करने वाले मेरे पिता के कार्य में आप विघ्नकारी क्यों बनते हैं?' इस प्रकार प्ररोचना द्वारा देवेन्द्र का ध्यान अपनी ओर खींच कर राजकुमार ने कहा — 'हे मघवन्! यज्ञ के मुख्य अंग अश्व को छोड़ दीजिये, क्योंकि आप जैसे प्रजा के मार्ग-दर्शक जनों को बुराई का मार्ग ग्रहण नहीं करना चाहिये।'

यह शत्रु के प्रति शिष्टाचार का एक नमूना है। इस शिष्टाचार का ही परिणाम था कि परस्पर युद्ध होने के पश्चात् भी रघु परास्त न हुआ, तो देवराज इंद्र उन पर प्रसन्न हो गये और वर दिया कि तुम्हारे पिता अश्व के बिना भी यज्ञ के पूरे फल को प्राप्त करेंगे।

एक दृष्टान्त 'कुमारसंभव' से लीजिये। पार्वती शिव की प्राप्ति के लिये घोर तपस्या कर रही थी। तब एक ब्रह्मचारी उसके समीप पहुँचे और इतनी घोर तपस्या करने का कारण पूछा। उमा की सखियों ने ब्रह्मचारी को बतलाया कि यह शिव की प्राप्ति के लिए तपस्या कर रही हैं। उस पर ब्रह्मचारी ने एक व्यंग्य-भरी दृष्टि से उमा को देख कर पूछा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अयि! क्या यह सच है अथवा परिहास-मात्र है?'

तपस्विनी उमा उस सुन्दर युवक ब्रह्मचारी को उस तीखे प्रश्न का कोई कड़ा वा उत्तर न देकर क्या कहती है, यह कालिदास के शब्दों में सुनिए—

अथाग्रहस्ते मुकुलीकृतांगुलौ
समर्पयन्ती स्फटिकाक्षमालिकाम्।
कथंचिदुद्रस्तनवा मिताक्षरं
चिरव्यवस्थापितवागभाषत॥

(कु० संभव, पंचम सर्ग)

पार्वती ने हाथ जोड़ कर और उनमें स्फटिकों की अक्षमाला सम्हाल कर प्रयत्नपूर्वक मन और वाणी को शान्त करके संक्षेप से उत्तर दिया। उत्तर यह था—'हे वेद-वेत्ताओं में श्रेष्ठ, आपने जो सुना है, वह ठीक है। यह जन—मैं ऊंचा पद प्राप्त करने की अभिलाषा रखती हूँ। इसी निमित्त यह तप कर रही हूँ। मनुष्य के मनोरथों की कोई सीमा नहीं है।'

उमा के हाथ जोड़ने और संक्षिप्त उत्तर में कितना शिष्टाचार सन्निहित है, इसे पाठक स्वयं समझ सकते हैं।

कालिदास के नाटकों में जितना वार्त्तालाप मिलता है, उसमें शिष्टाचार ओत-प्रोत है। यदि नट दर्शकों का संबोधन करना चाहता है, तो वह उन्हें 'आर्य-मिश्राः' कह कर पुकारता है। तुम या आप नहीं कहता। यदि किसी को कोई अच्छी बात कही जाय अथवा अच्छी वस्तु दी जाय तो वह उत्तर देता है—'अनुगृहीतोस्मि।' यदि स्त्री हो तो कहती है, 'अनुगृहीतास्मि।' यह वाक्य 'थैंकयू' से कुछ अधिक सुन्दर ही है।

शिष्टाचार में कुछ अत्युक्ति तो आ ही जाती है। 'रघुवंश' में इन्दुमती के स्वयंवर के अवसर पर प्रतिहारी ने राजाओं का जो वर्णन किया है, वह परिमार्जित भाषण-पद्धति का एक बढ़िया नमूना है। प्रतिहारी जिस राजा के सामने जाती है, उसके देश का, उसके वेश का और उसकी वीरता का खूब रोचक वर्णन करती है। प्रतिहारी ने जिन शब्दों का प्रयोग किया है, वे उस समय की प्रचलित भाषा के सिद्ध शब्द मालूम होते हैं, व्याकरण या कोष से खोद कर निकाले गये कृत्रिम शब्द नहीं। सभी राजकुमार बहुत सुन्दर और वीर हैं, परन्तु राजकुमारी उन्हें छोड़ कर आगे चली जाती है और तब तक नहीं रुकती जब तक वह राजकुमार अज के सामने नहीं पहुँच जाती। राजकुमारों के इस उपेक्षा-जनित अपमान का कालिदास ने जिस शिष्टता और नज़ाकत से वर्णन किया है, वह कालदिास के ही योग्य है। देखिये—

"स्वसुर्विदर्भाधिपतेस्तदीयो लेभेऽन्तरं चेतसि नोपदेशः।
दिवाकरादर्शनबद्धकोशे नक्षत्रनाथांशुरिवारविन्दे॥६६॥
संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः॥६७॥

(रघुवंश छठा सर्ग)

'राजकुमारों के सम्बन्ध में प्रतिहारी ने जो प्रशंसा के वाक्य कहे, उन्होंने राजकुमारी के हृदय में प्रवेश नहीं किया। सूर्य के वियोग से जिस कमल का कोष बन्द हो गया है उसमें चन्द्र की मधुर किरणें भी प्रवेश नहीं कर सकतीं। जैसे चलते हुए दिये की बत्ती जिस-जिस राजमहल के पास से गुजर जाती है, उस उस पर अंधकार छाता जाता है, उसी प्रकार राजकुमारी जिस जिस राजकुमार के सामने से आगे चलती गई, उस उसका चेहरा फीका पड़ता गया।'

एक दृष्टांत 'अभिज्ञान-शाकुंतल' से लीजिए। जब राजा दुष्यन्त शकुन्तला और उसकी सहेलियों के सामने अकस्मात् प्रकट हो जाता है, तब अनुसूया (शकुन्तला की सहेली) राजा का परिचय निम्नलिखित शब्दों में पूछती है—

'आर्य के मधुर शब्दों से मेरे मन में जो विश्वास उत्पन्न हुआ है, उससे प्रेरित होकर यह पूछना चाहती हूँ कि आर्य ने कौन से राजर्षि-वंश को अलंकृत किया है, अपने वियोग से किस देश के निवासियों को उत्कंठित किया है और किस निमित्त से इस अत्यन्त कोमल शरीर को तपोवन में आने के परिश्रम से खिन्न किया है?'

लखनऊ और दिल्ली का तकल्लुफ़ और भाषा-परिष्कार बहुत मशहूर है। मैं कह सकता हूँ कि कालिदास के शिष्टाचर से भरे हुए भाषा-परिष्कार के सामने वह कुछ भी नहीं।

CC-0. In Public Domain. Mukul Kanagri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परित्याग

श्री [illegible] गुप्त

इन्द्रा समझ गई कि एक अबला के लिए पाकिस्तान हिन्दुस्तान सब बराबर है। सभी पुरुष एक से हैं...

रोज के कामों से आज कोई अधिक काम पड़ा था, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता; फिर भी यशपाल और रूपचन्द थक गये थे। दोनों मित्र एक रेस्टोरैंट में घुस पड़े – शायद थकावट दूर करने के उद्देश्य से। इधर-उधर देख कर वे एक ओर एक खाली मेज पाकर वहीं बैठ गये। फिर 'ब्वाय' को आर्डर दिया।

यशपाल एक स्थानीय कालेज में अध्यापक था; रूपचन्द एक स्थानीय स्कूल में सेकेण्ड मास्टर था। दोनों एक ही मकान में रहते थे। दोनों कुंवारे थे, इस कारण जो होना था सो हुआ था, और दोनों मित्र हो गये थे। नित्य स्कूल-कालेज के घंटों के बाद दोनों का एक ही प्रोग्राम रहता था। कभी सिनेमा जाते, कभी किसी सभा में जाते, तो कभी यों ही निरुद्देश्य बस पर बैठकर किसी ओर निकल जाते, और इधर-उधर बेकार की मटरगश्ती करते। आज भी ये मित्र इसी तरह घूम रहे थे।

शिक्षाव्यवसायी होने के अतिरिक्त इन दोनों में सबसे बड़ी समानता यह थी कि ये उन लोगों में से थे जो देश के विभाजन के कारण शरणार्थी बन कर दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। यशपाल का सारा परिवार संयुक्त प्रान्त में था, पर रूपचन्द का तो कोई परिवार ही नहीं था—कम से कम वह यही कहता था।

ब्वाय चाय आदि ले आया। वे खाने लगे। दोनों भूखे थे, या पता नहीं यह उनकी शायद आदत थी कि पहले तो उन्होंने न दायें देखा, न बायें, बस खाने पर टूट पड़े। फिर गले को चाय से भिगोया। यों प्रथम आक्रमण समाप्त होने पर दोनों इधर-उधर ताकने लगे।

रेस्टोरैंट काफी बड़ा था। दिल्ली में सर्व परिचित इसका हाल हमेशा भरा ही रहता था। इस समय भी भरा हुआ था। किसी मेज पर तीन-तीन चार-चार नौजवान थे, तो किसी पर मियां-बीबी या कौन जाने कौन-कौन.....

यशपाल ने प्रत्येक मेज पर सरसरी दृष्टि डालते हुए कहा – "यहां पर आने से और इन लोगों को देखने से यह मालूम होता है, जैसे देश में गरीबी कहीं है ही नहीं, ऐश्वर्य ही ऐश्वर्य है!"

रूपचंद ने चाय की एक चुस्की लेते हुए कहा – "पर तुम जानते हो, प्रोफेसर, कि यह झूठ है, झूठ महा-झूठ.....।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने 'महाझूठ' शब्द को इतने जोर से कहा कि पास की मेज की एक तरुणी ने उसकी तरफ ऐसे देखा, मानों वह कोई विचित्र जन्तु हो। पर रूपचन्द ने उसकी परवाह न करते हुए कहा—"मेरी कभी कभी इच्छा होती है कि देश के जितने भूखे-नंगे हैं, उन सब को इन रेस्टोरैंटों में ला कर घुसा दिया जाय और फिर मजा देखा जाय!"

यशपाल ने उसकी उद्दीप्त वाक्य-धारा में बाधा डालते हुए कहा—"तुम भी तो इन्हीं लोगों में से हो, जिन्हें तुम सफेदपोश-जोंक कहते हो!"

पास की मेज की तरुणी बड़े ध्यान से इन लोगों की बातों को सुन रही थी। उसके कान स्पष्ट रूप से खड़े दिखाई दे रहे थे।

रूपचन्द ने कहा—"तो क्या? मैं इन लोगों में हूँ तो क्या? मुझ में इतनी गैरत तो है कि मैं चाहता हूँ कि मेरा वर्ग खुदकुशी कर ले। ये लोग तो यह गैरत भी खो चुके हैं। मैं तो हर वक्त यह अनुभव करता हूं कि जैसा मुझे होना चाहिये, वैसा मैं नहीं हूं। रहा यह कि फिर भी जीता क्यों हूँ—"इतना कह चुकने के बाद उसका ध्यान इस बात की ओर गया कि साथ की मेज वाली तरुणी उसकी बातें सुन रही है। वह एकाएक नरम हो कर बोला—"रहा यह कि मैं जीता क्यों हूँ, सो हा-हा-हा-हा, यह अभ्यास का दोष है—कुछ विकल्प समझ में ही नहीं आता।"

दोनों मित्र इसी प्रकार गपशप करते चाय पी चुके। अब बाहर जाने ही वाले थे। बिल दिया जा चुका था। इतने में रूपचन्द ने आधा उठ कर फिर बैठते हुए अप्रत्याशित रूप से कहा—"प्रोफैसर, फिर चाय मंगाओ, एक प्याले से तो कुछ बना नहीं।"

यह कह कर ही वह अन्यमनस्क हो गया। वह दूर की एक मेज पर दृष्टि गड़ाये हुए था। एकाएक उसका चेहरा फक पड़ गया—दो मिनट पहले का उसका सजीव चेहरा एकाएक बुझ गया—चेहरे पर रंग आ रहा था, जा रहा था।

यशपाल ने आश्चर्य के साथ कहा—"कुछ कहो भी तो, आखिर बात क्या है? खैरियत तो है?" कह कर उसने उस तरफ देखा, जिस तरफ रूपचन्द देख रहा था; पर उधर उसे कोई खास बात मालूम नहीं पड़ी। बहुत से लोग मेजों पर बैठे खाना खा रहे थे, चाय पी रहे थे। चारों तरफ के दृश्यों में और उधर के दृश्यों में कोई विशेष अंतर नहीं था। सभी ओर जैसे लोग खा-पी रहे थे, बातें कर रहे थे, बीच बीच में अपने साथियों को भुला कर इधर उधर घूर रहे थे, ऐसा ही उधर भी हो रहा था।

रूपचन्द ने अपने मित्र की बातों का संक्षेप में उत्तर देते हुए कहा—"और चाय मंगाओ, तबियत कुछ भरी नहीं!"

यशपाल ने कुछ पूछना व्यर्थ जान कर चाय का आर्डर दिया। उस मेज का 'बेयरा' अभी उससे बिल के पैसे तथा 'टिप' ले गया था, नया आर्डर सुन कर उसने उनकी ओर मानों कुछ आश्चर्य से देखा; पर फौरन ही, जैसा कि बेयरे से आशा की जाती है, चाय लाने चला गया। बेयरे के काम में कौतूहल का कोई स्थान नहीं है। जैसे रेखागणित के बिन्दु में स्थिति तो होती है, पर नाप नहीं, वैसे होटल के बेयरों में गति है और बहुत कहिये सलाम है, पर कौतूहल नहीं, जिज्ञासा नहीं।

चाय आ गई। यशपाल ने चाय बनाई, रूपचन्द यांत्रिक रूप से चुपचाप चाय पीने लगा। वह एक बार ध्यान से अपनी चाय को देखता और फिर एक बार उस मेज की ओर देखता। वह ऊपर से चुप था, पर उसकी आंखों से जाहिर था कि भीतर ही भीतर आंधी चल रही है। यशपाल इतना तो समझ गया कि उधर किसी को देख कर रूपचन्द की मानसिक अवस्था में इस प्रकार परिवर्तन हो गया है, पर बार बार उधर देख कर भी वह किसी नतीजे पर पहुँच नहीं सका। उसे सारी परिस्थिति बड़ी विचित्र-सी जान पड़ी। रूपचन्द था तो झक्की, पर उसका आज का व्यवहार तो बिल्कुल अनबूझ पहेली-सा हो रहा था।

चाय का एक एक प्याला खतम हो गया। यशपाल ने दूसरा प्याल बनाया। रूपचन्द उसी प्रकार पीने लगा। यह स्पष्ट था कि वर्षों के अभ्यास से वह चाय पीता जा रहा था, पर उसका मन और शायद उसके साथ जीभ भी चाय से हजारों कोस दूर थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकाएक क्या हुआ कि रूपचन्द के हाथ से चाय का प्याला करीब-करीब छूट गया, उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह उठ खड़ा हुआ। उसने एक बार भी यशपाल की ओर नहीं देखा। यशपाल का तो मानों उसके लिये कोई अस्तित्व ही नहीं रह गया था।

आश्चर्यचकित-सा हो यशपाल ने उस ओर देखा, जिधर रूपचंद की दृष्टि केन्द्रित थी। उधर एक युवक तथा तरुणी उठ खड़े हुए थे—३०-३५ साल का युवक और २०-२५ साल की तरुणी। युवक को देखते ही मालूम होता था कि वह किसी संभ्रान्त घराने का है, और वह तरुणी उसकी स्त्री है। दोनों सुन्दर थे—पुरुष का रंग जरा मैला था, पर स्त्री तो बिल्कुल परी मालूम होती थी।

वे दोनों बातें करते-करते उधर ही के दरवाजे से बाहर निकल गये।

रूपचन्द ने भी लपक कर उनका पीछा किया। यशपाल जल्दी से चाय के पैसे देकर रूपचन्द के पीछे हो लिया। उसे बड़ा बुरा लग रहा था कि रूपचन्द इस प्रकार एक सुन्दरी का पीछा कर रहा है। फिर भी वह अपने मित्र को छोड़ना नहीं चाहता था। कौतूहल ने सदाचारबोध पर विजय पाई।

पर रूपचन्द को पता नहीं लगा कि यशपाल उसके पीछे-पीछे आ रहा है। दुनिया भर की सुध-बुध भूल कर वह तो उस जोड़ी के पीछे चला जा रहा था। उसके लिए शायद जगत में उनके अतिरिक्त किसी का अस्तित्व ही नहीं था—किसी का नहीं, यहां तक कि अपना भी नहीं!

वह जोड़ी कनाट-सर्कस के इर्द-गिर्द दो एक दुकानें घूम कर एक जगह पहुंची, जहां एक कार खड़ी थी। ड्राइवर ने उनको देखते ही कार का दर्वाजा खोल दिया, वे दोनों पीछे की सीट पर अगल बगल बैठे गये और दूसरे ही क्षण कार चलने लगी।

उस समय रूपचन्द की घबराहट देखने लायक थी। वह विक्षिप्त की तरह 'टैक्सी-टैक्सी' कह कर इधर-उधर कई बार दौड़ा, पर वहां आस-पास कहीं कोई टैक्सी नहीं थी। वह कार तो निकल गई और रूपचन्द वहीं खड़ा का खड़ा रह गया। उसके चेहरे से ऐसा मालूम हो रहा था, जैसे उसका सर्वनाश हो चुका है और वह सब कुछ फूंक-ताप कर श्मशान में खड़ा है!

बीस-पच्चीस मिनट के अन्दर कितना भारी परिवर्तन था। अब रूपचंद को देख कर ऐसा ज्ञात होता था, मानों बहुत दिनों से उसने न तो खाया है, न वह सोया है। चेहरे पर निराशा, पश्चात्ताप, आतंक, आश्चर्य—न मालूम क्या-क्या था!

पीछे से यशपाल ने उसकी पीठ पर हाथ रखा और कहा—"क्या बात है, रूपचंद?"

रूपचंद जैसे जमीन पर उतर आया। पर फिर भी मानों शत्रु की तलवार से अपने आप को बचाते हुए बोला—"नहीं तो, कोई बात तो नहीं है...।"

यशपाल को कुछ तैश-सा आ गया, बोला—"कोई बात नहीं, और तुम इस तरह पागल से हो रहे हो?"

फिर भी रूपचंद उदासी के साथ जिद करते हुए बोला—"कोई ऐसी बात नहीं है।"

कह कर उसने सिर नीचा कर लिया।

"बताना न चाहो, यह बात दूसरी है; पर कुछ बात है जरूर"—रूखेपन के साथ यशपाल ने कहा, "खैर, अब यह बताओ कि चलना है, या यहीं सड़क की तरफ देखते हुए खड़ा रहना है?"

रूपचन्द ने जैसे कुछ सोचा, बोला—"हां, खड़े तो नहीं रहना है, जाना है—खड़े रह कर क्या होगा?"

'क्या होगा, यह तो तुम जानो"—तैश के साथ यशपाल ने कहा।

"चलो, वापस चलें"—रूपचन्द बोला, पर उसने एक बार हसरत-भरी निगाह से उस ओर देखा जिधर वह कार चली गई थी।

दोनों चलने लगे—चुपचाप, अपने अपने विचारों में डूबे हुए।

एकाएक यशपाल ने कहा—"मुझे यह बात पसन्द नहीं आई।"

"आं.....क्या बात?"

"यही शोहदों की तरह पराई स्त्री का पीछा करना। हम लोगों को भूलना नहीं चाहिए कि हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग शिक्षित ही नहीं, शिक्षक भी हैं।"

इसके उत्तर में रूपचन्द अजीब तरीके से हंसा, पर कुछ बोला नहीं। शायद वह तुरन्त फिर से यशपाल के अस्तित्व की बात भूल गया।

दोनों साथ साथ चले जा रहे थे, पर कोई किसी से कुछ बोला नहीं। इसी प्रकार वे घर पहुँच गये।

* * *

उसी रोज रात के दो बजे रूपचंद ने एकाएक यशपाल के कमरे में प्रवेश किया और उसे जल्दी जल्दी जगाया। यशपाल हक्का-बक्का सा उठ कर बैठ गया, बोला—"क्या बात है? खैरियत तो है? तबियत कैसी है?"

यशपाल एक सांस में इतने प्रश्न पूछ गया। पर रूपचन्द ने जैसे इन्हें सुना ही नहीं, बोला—"प्रोफेसर, तुमने बाई चान्स उस कार का नम्बर तो नहीं देखा?"

"कौन सी कार का?" यशपाल ने पूछा।

"वही कार, जिसमें वह जोड़ी गायब हो गई थी।"

"ओह, तुम अभी तक उसी चक्कर में पड़े हुए हो! नहीं, मैंने नम्बर नहीं देखा।" यशपाल ने कुछ रुखाई से कहा। फिर कुछ आत्मीयता भरे स्वर में बोला—"आखिर भाई, बात क्या है? कुछ कहो भी तो। इस तरह की बातों से आखिर फायदा क्या है?"

रूपचन्द कुछ नहीं बोला, उसने केवल सिर नीचा कर लिया। यशपाल परास्त सा होकर बोला—"इन बातों में न पड़ो, बुरी बात है। जाओ, सोओ···।"

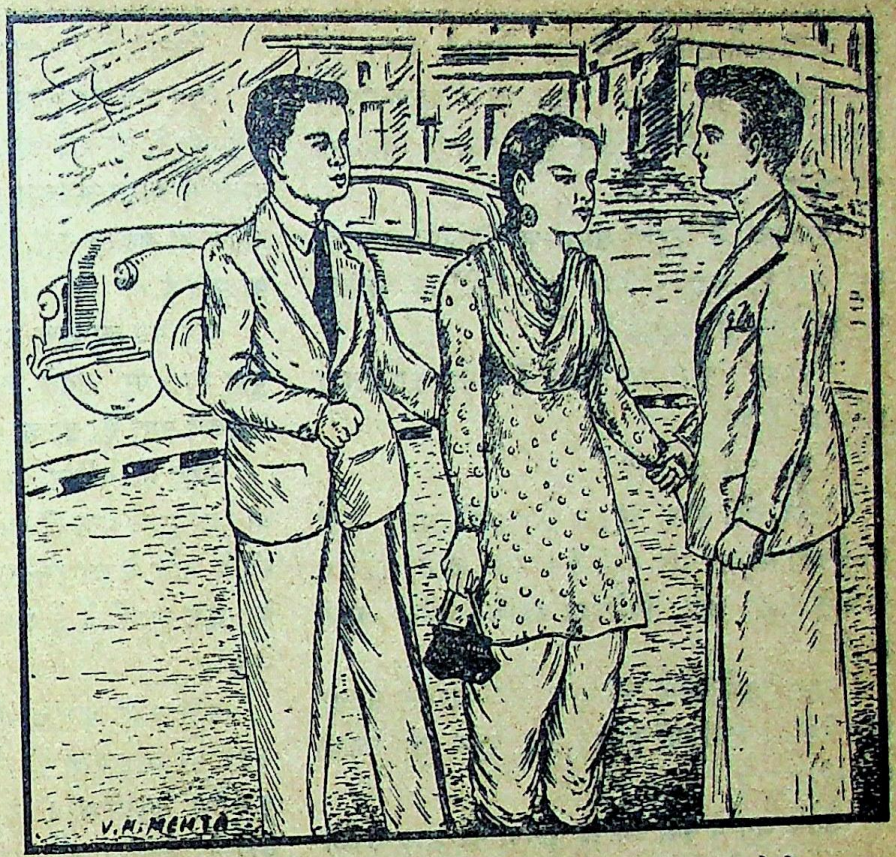

विचित्र परिस्थिति थी—दो पुरुष एक ही स्त्री के पति होने का दावा कर रहे थे।

रूपचंद चला गया।

अगले दिन दोनों कालेज-स्कूल के बाद घूमते-घामते फिर उसी रेस्टोरैंट में पहुँचे। रूपचन्द खाने-पीने के प्रति निरपेक्ष रहा। एयरोड्रोम की सर्चलाइट की तरह उसकी आंखें प्रत्येक आने जाने वाले की छान-बीन कर रही थीं, प्रत्येक चेहरे की शनाख्त-सी कर रही थीं यशपाल समझ गया कि वह उसी जोड़ी को ढूंढ रहा है। पर वह आज रेस्टोरैंट में नहीं थी।

रूपचन्द के साथ साथ यशपाल को भी वहां रात के आठ बजे तक डटा रहना पड़ा। जब 'बेयरा' उन लोगों को ज्यादा ध्यान से देखता, तो वे किसी चीज का आर्डर दे देते। इस प्रकार उनका बिल तेरह रुपये का हुआ। पर उस दिन वह जोड़ी वहां नहीं आई

अगले दिन भी रूपचन्द यशपाल को किसी तरह खींच खांच कर रेस्टोरैंट में ले आया। पर वही नतीजा हुआ।

इसी प्रकार जब दो-तीन दिन व्यतीत हो गये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब यशपाल ने उसका साथ छोड़ दिया। कहा—"मैं ऐसे बखेड़े में नहीं पड़ता। तुम तो बिल्कुल पागल हुए जा रहे हो। किसी दिन खुद फँसोगे, मुझे भी फँसाओगे।"

रूपचन्द ने बहुत समझाया कि मेरा उद्देश्य बुरा नहीं है, कहा—"मेरा उद्देश्य तो उस महिला को बुरी संगत से बचाना है।"

"जी हां, ऐसा सभी कहते हैं। क्या वह उसका पति नहीं है?"

'नहीं, तभी तो...।"

"खैर, नहीं होगा, पर तुम को इससे क्या? ऐसी तो सैकड़ों घटनायें रोज होती हैं। एक जान, कितनों के पीछे दौड़ा जाय, विशेषकर जबकि महिला राजी हो।"

तुमुल तर्क-वितर्क के बाद भी यशपाल उसका साथ देने पर राजी नहीं हुआ। तब शुरू हुई उसकी एकाकी यात्रा!

उसके मन ने कहा कि वह दुनियां को छोड़ सकता है, पर यात्रा उसे करनी है। वह बहुत पछता रहा था कि उसी दिन की भेंट से उसने फायदा क्यों नहीं उठाया? क्यों उसने उनको जाने दिया? उसी दिन निपटारा कर लेना चाहिये था—निपटारा...पर समय निकल जाने पर पछताने से क्या होता है!

खोज जारी रही—वही रोज रेस्टोरैंट जाना, फिर कनाट-सर्कस को घूम-घूमकर छान डालना।...

* * *

एक दिन वह जोड़ी मिल ही गई। अब की बार रूपचन्द मौके से चूकने वाला नहीं था। एक मिनट तक तो वह यही सोचता रहा कि वह कैसे शुरू करे। अजीब परिस्थिति थी। फिर एकाएक एक फैसले पर पहुँचते हुए उसने पुकारा—"इन्द्रा! इन्द्रा!"

उस तरुणी ने पीठ फेरकर जो सामने रूपचन्द को देखा, तो एक बार उसकी आंखें तिलमिला गईं, पैर जैसे लड़खड़ा गये। सम्हलकर बोली—"तुम?"

"हां, मैं। ये कौन हैं?" तिरस्कारभरी दृष्टि से तरुणी के साथ वाले युवक की ओर देखते हुए रूपचन्द ने पूछा।

"बताऊंगी"—इन्द्रा ने कहा।

अब तक वह युवक भी बिना झेंपे रूपचन्द को बुरी तरह से घूर रहा था। उसने आगे बढ़कर इन्द्रा के बगल में जाकर रूपचन्द से कहा—"इन्हें मेरा परिचय बताने की जरूरत नहीं, मैं खुद ही बताता हूँ; मैं इन्द्रा का पति हूँ।"

रूपचन्द का हाथ एक घूंसे के रूप में परिणत हो चुका था, पर उसने अपने को सम्हाल कर कहा—"अजीब बात है, इसका पति तो मैं हूं।"

बहुत ही विचित्र, बल्कि विस्फोटक-सी परिस्थिति थी। दो पुरुष एक ही स्त्री के पति होने का दावा कर रहे थे, और वे आमने-सामने उसी स्त्री के सन्मुख खड़े थे। एक मुहूर्त्त में वे एक दूसरे का गला पकड़ सकते थे।

और सबसे अजीब परिस्थिति तो इन्द्रा की थी। उसके पैर डांवाडोल हो रहे थे। पर वही इस परिस्थिति को बचा सकती थी। उसने अपने साथ के युवक से कहा—"जयराम, तुम जाओ।"

जयराम के तेवर चढ़ गये, बोला—"मैं जाऊं! तुम्हें इसके हाथ में छोड़कर...?" उसके शब्दों में ऐसा अर्थ भरा था, मानों रूपचन्द कोई कुत्ता हो।

इन्द्रा बोली—"हां।"

जयराम का जोश कुछ ठण्डा पड़ गया। उसने समझ लिया कि परिस्थितियां कुछ प्रतिकूल जा रही हैं। फिर भी जिद के साथ वह बोला—"नहीं, यह नहीं हो सकता। नहीं...।"

पर इन्द्रा ने फिर कहा—"जयराम, तुम शायद समझ गये होगे कि ये ही मेरे असली पति हैं।"

जयराम का तेवर बदल गया, वह संव्यंग्य बोला—"असली और नकली क्या, इन्द्रा, वह बात पुरानी हो चुकी। सब बातों को जानने के बाद शायद ये तुम्हें ग्रहण ही न करें। मेरे जैसे आधुनिक की ही हिम्मत थी कि...।"

इन्द्रा चिन्तित होकर बोली—"यही देखना है।" कुछ रुक कर फिर एकाएक बोली—"तुम जाओ, शायद मैं थोड़ी देर में आ जाऊं।"

"और न आईं, तो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"न आई तो समझ लेना फिर कभी नहीं आऊंगी," कहकर इन्द्रा ने हाथ से आज्ञा सूचक इंगित किया, फिर बोली—"मैं इतने दिनों से तुम्हारे साथ हूँ, पर विवेक ने मुझे कभी शान्ति नहीं दी। मेरी अपनी शान्ति के लिये इन से बात करना जरूरी है।"

जयराम चला गया, पर जाते-जाते कह गया—"मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा।"

उस सूनी सड़क पर दो ही प्राणी रह गये, एक इन्द्रा और दूसरा रूपचन्द।

जब तक जयराम सामने था, तब तक रूपचन्द प्रतिद्वंद्विता के कारण कुछ सोच नहीं पा रहा था, पर अब जबकि इन्द्रा सम्पूर्ण रूप से उसकी पहुँच के अंदर थी, वह अजीब पसोपेश में पड़ गया। वह कुछ सोच ही नहीं पा रहा था। इन्द्रा उसी की पत्नी थी। पर इस बीच में क्या-क्या हो चुका था; गंगा में कितने लाखों मन पानी बह गया था! पाकिस्तान बना और उसके फलस्वरूप उसके जीवन में यह तूफान आया। पत्नी को मुसलमान भगा कर ले, गये धन गया, किसी तरह जान बचाकर यहां वह आया—संक्षेप में यही उसकी कहानी है, जो कितने ही शरणार्थियों की है। अब वह दिल्ली के एक स्कूल में टीचर था। अब पत्नी मिली; पर किन परिस्थितियों में! एक अजनबी उसका पति होने का दावा कर रहा था, और स्पष्ट था कि उसका दावा सही था। इन्द्रा पत्नी के रूप में रजामन्दी से उसके साथ रहती थी, यह तो साफ था।

अब तक उसके मानस-जगत में अपनी पत्नी का यह चित्र था कि वह रो रही है, बिलख रही है, बिलखते-बिलखते बेहोश हो गई है, वह खुद लोहू-लुहान पड़ा है···। पर यह चित्र तो अब बिल्कुल जाता रहा। इसके बदले आवारा-निर्लज्ज इन्द्रा उसके सामने खड़ी थी।

इन्द्रा ने ही पहले बात की, बोली—'तुम तो सोच विचार में पड़ गये···!" इन्द्रा के स्वर में क्या कुछ तिरस्कार था?

रूपचन्द ने कहा—"नहीं, मैं सोच रहा हूँ, कहां चला जाय।"

"क्यों, इसमें क्या बात है? कहीं तो रहते ही होंगे।"

"हां, एक रद्दी-से मकान में रहता हूं, जिसमें रावलपिण्डी में शायद मेरे नौकर भी रहने से इन्कार कर देते।"

"तो क्या, उसी में चलो। जहां तुम रहते हो, वहां मैं भी रह सकती हूँ।"

"नहीं, यह बात नहीं। वहां मैं अकेला नहीं रहता।"

इन्द्रा ने कुछ सोचा, माथे पर कुछ बल आये, बोली—"कोई औरत?"

"नहीं, मेरे ही एक साथी प्रोफेसर यशपाल हैं—वे बड़े मौरैलिस्ट हैं···।"

इन्द्रा ने जैसे कुछ निगला, बोली—"तो यहां खड़े-खड़े तो बहुत देर हो गई···"

"हां···"

दोनों चलने लगे। एक पार्क में पहुँच कर एक बैंच पर बैठ गये। इन्द्रा बोली—"तो मैं ही शुरू करूं। तुम्हें मारते-मारते गिराकर वे मुझे ले गये। फिर गांव-गांव शहर-शहर घुमाई गई, न मालूम कितनों ने मुझ पर·····।" वह सिहर उठी। उसका स्वर कांप रहा था। सम्हलकर बोली—"फिर मौका लगा, भाग कर दिल्ली आई। तुमको खोजा, नहीं मिले। जान पहिचान वाले एक-दो मिले, पर उन्होंने सहानुभूति का बर्ताव नहीं किया। हां, एक साहब मिले—तुम्हारे एक दोस्त, मिस्टर सेठ—उन्होंने मुझे आश्रय दिया।"

बीच में बोलते हुए रूपचन्द ने कहा—"वही वीरेन्द्र सेठ? वह तो झगड़े के समय विलायत में था।"

"हां, वही। उनका सब बैंक एकाउण्ट इधर ही था। फिर भी वे रजिस्टर्ड शरणार्थी हैं। खैर, मैं नहीं जानती थी, वह इतने पापी हैं। उन्होंने मुझे आश्रय तो दिया, परन्तु उस आश्रय की कीमत·····।" वह फिर सिहर उठी। कुछ सम्हल कर बोली—"रोज रात को उनके कई मित्र आते···। उस घर में मेरी हालत पाकिस्तान से भी बुरी हो गई। वहां से भी भागी। मैं समझ गई कि एक अबला के लिये पाकिस्तान हिन्दुस्तान सब बराबर हैं। तब मैं जयराम के पास गई।

(शेष पृष्ठ ८४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशीन मानव और महात्मा

श्री रतनलाल जोशी

आज के युग की सब से बड़ी समस्या मशीन है। द्वितीय महायुद्ध के बाद तो मशीन का भविष्य मनुष्य-समाज के सामने सब से बड़ा प्रश्न-चिह्न हो गया है; क्योंकि आज के व्यक्ति का सारा जीवन ही मशीन की परिधि में समाता जा रहा है। बीस वर्ष पहिले यह परिस्थिति नहीं थी। लेकिन इतने थोड़े से समय में ही मशीन के तन्तु इतने लम्बे और बलिष्ठ हो गये हैं कि मनुष्य का समस्त कर्मक्षेत्र ही उनके बन्धन में आबद्ध-सा हो गया है।

मशीन और मनुष्य की भेंट का इतिहास बड़ा मनोरंजक है। मनुष्य ने प्रत्येक युग में अपनी मुक्ति के लिए आंदोलन और विद्रोह किये हैं और विनाश या विकास के अगणित स्तरों को पार करता हुआ वह अपनी मुक्ति-यात्रा में काफी दूर तक चला है। इस यात्रा का आदि-अन्त नहीं है। मनुष्य आज भी अपने मुक्ति-पथ पर बराबर चला जा रहा है और इसी प्रकार अनन्त काल तक वह इस पथ पर आगे बढ़ता जावेगा। रहस्य यह है कि व्यक्ति कभी भी अपने आपको मुक्त अनुभव नहीं करेगा; अतः उसके मुक्ति प्रयत्न कभी शिथिल नहीं होंगे। आज तक जितने प्रयत्न उसने किये हैं, उनसे भी बहुगुणित प्रयत्न वह भविष्य में करता रहेगा। मशीन का निर्माण भी इन मुक्ति-प्रयत्नों में से एक है। अभावों और श्रम-संलग्नता की श्रांति से मुक्त होने के लिये मनुष्य ने वैज्ञानिक आविष्कारों की सहायता से मशीन का निर्माण किया था और अपनी इस कृति से मनुष्य को पश्चात्ताप नहीं हुआ; क्योंकि जिस उद्देश्य से उसने मशीन का आश्रय लिया था, वह उद्देश्य आशातीत रूप में पूरा हो गया है। मशीन ने अपने कई वरदानों से मनुष्य को सुख-समृद्ध किया है।

व्यक्ति—मशीन का पुर्जा

लेकिन मशीन-प्रदत्त सुख-संग्रह की परिधि ज्यों-ज्यों विस्तृत होती गई, त्यों-त्यों व्यक्ति के सम्मुख मशीन-युग की असंगतियां भी स्पष्ट होने लगीं। एक ओर मशीन की सहायता से मनुष्य के दैनिक जीवन के मूलभूत अभावों का निराकरण हो रहा था और सामाजिक अवरोध ही खण्ड-खण्ड होकर धराशायी नहीं हो रहे थे, बल्कि भौगोलिक सीमायें भी अपनी अवस्थिति लुप्त कर रही थीं। इसके विपरीत मशीन के कर्तृत्व की दूसरी तसवीर भी थी। व्यक्ति अपने चैतन्य का दिन प्रतिदिन ह्रास करते हुए स्वयं निर्जीव मशीन का पुर्जा बनता जा रहा था और एक राष्ट्र-विशेष का विषाक्त अहंकार मशीन की सहायता से हिरोशिमा और नागासाकी के आबाल-वृद्ध निवासियों पर अणुबम गिरा रहा था। मशीन की उपयोगिता के ये दो पलड़े थे। दोनों में विकास और विनाश के उपकरण एकत्र होते जा रहे हैं। द्वितीय महायुद्ध के बाद मशीन-सभ्यता में सांस लेने वाले व्यक्ति को फिर यह अनुभूति मिली कि उसे मशीन के हानि-लाभों का फिर से मूल्यांकन कर लेना चाहिए। यही कारण है कि आज का पाश्चात्य-मानव मशीन के प्रति इतना असहिष्णु और कठोर हो गया है। क्षमा कर देने की मनोवृत्ति उसकी नहीं है। वह आज निर्णय करने बैठा है और निर्णय में वह पूर्णतया निष्पक्ष निर्णायक बनने की क्षमता प्रदर्शित करना चाहता है। बर्ट्रेण्ड रसेल इस मनोवृत्ति का विश्लेषण करते हुए लिखते हैं—"मशीन ने पश्चिम के मनुष्य के मर्म पर जो आघात किया है, उसे कोई भी दर्शन-शास्त्र या प्रतिशोध शांत नहीं कर सकता। आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें इतनी कटुता है कि वह वैज्ञानिक और राजनीतिक दोनों से मुक्ति प्राप्त करने के लिये अंतिम निर्णय करना चाहता है।"

कर्तृत्व की संकीर्ण परिधि

आधुनिक उद्योगवाद ने जहां हमारे भौतिक साधनों का अपरिमित विकास किया है, वहां उसने हमारे व्यक्तित्व की सृजन प्रेरणाओं को भी काफी हद तक कुंठित कर दिया है। आज के व्यक्ति की कर्म-स्फूर्ति और संकल्प-शक्ति उत्तरोत्तर निर्बल होती जा रही है। आत्म-प्रेरणा के साथ आत्म-विश्वास भी काफी क्षीण एवं निर्बल होता जा रहा है। इस व्याधि का नैतिक प्रभाव अत्यन्त गहरा समझना चाहिए, क्योंकि यह परोक्ष है और इसकी अनुभूति भी कम कष्टसाध्य नहीं है। मशीन ने मनुष्य के कर्मक्षेत्र की परिधि को अत्यन्त संकीर्ण कर दिया है। फलतः मनुष्य की सृजनोद्वेलित चेतनाओं को मूर्त होने का अवकाश ही नहीं मिल पाता है। मशीन की सहायता से निर्जन और अगम्य प्रदेशों में विशाल नगरों की स्थापना हो गई है, सागरों और नदियों के दानवीय स्पंदन को वशीभूत कर लिया गया है और देश-विदेश की सारी भौगोलिक सीमायें ध्वस्त हो चुकी हैं। इस प्रकार आज के व्यक्ति के सामने अपने कर्तृत्व का जो क्षेत्र रह गया है, वह उसके पूर्वजों की अपेक्षा अत्यन्त संकीर्ण है। अपनी ज्ञान-कर्मेन्द्रियों के संचालन के लिये भी काफी क्षेत्र उसके अधिकारमें नहीं बच पाया है और जो कुछ भी बचा है, उस पर भी मशीन का आधिपत्य अनिवार्य समझना चाहिये। हमारी दैनिक जीवन की आवश्यकताओं और वैभव-विलास से सम्बन्धित अभावों की पूर्ति के निमित्त आज जो सामूहिक उत्पादन हो रहा है, उसने औसत व्यक्ति को कच्चे माल के सीधे सम्पर्क से बिल्कुल दूर फेंक दिया है। प्रकृति के आत्मीय स्पर्श से हम इस प्रकार उत्तरोत्तर विच्छिन्न होते जा रहे हैं।

स्रष्टा के बजाय ग्राहक

मशीन ने आधुनिक व्यक्ति को स्रष्टा के बजाय सिर्फ एक ग्राहक मात्र बना दिया है। आज का व्यक्ति केवल खरीदना ही जानता है, सृजन की सामर्थ्य उसमें दिन-प्रतिदिन पंगु होती जा रही है। कारखाने की सभ्यता से मुक्त रह कर अपना घर आप बनाने की कर्म-स्फूर्ति आज के मानव में शेष नहीं रही है। ऐसे आत्म कर्तृत्वहीन जीवन को सुखी-जीवन की संज्ञा नहीं दी जा सकती, क्योंकि यहां सुख की अनुभूति के उद्रेक की कहीं भी सम्भावना नहीं है। सुख एवं आल्हाद का अनुभव तो तात्विक रूप से कर्ममूलक होता है। कर्म की निमग्नता के अभाव में आनन्द की अनुभूति का जागरण असम्भव है। अतः मशीन ने जहां हमारे सृजन-कार्य का अपहरण कर लिया है, वहां सृजन में प्राण रूप से सन्निहित आनन्द की अनुभूति को भी उसने हम से छीन लिया है। सृजनावेगों की इस पंगुता के नैतिक प्रभाव व्यक्ति एवं समाज दोनों के लिये काफी भयावह सिद्ध हो सकते हैं। हमारे सामान्य मनोविनोद एवं वैयक्तिक मनोरंजन से सृजनात्मक तत्व का बहिष्कार किसी भी दृष्टि से शुभ नहीं कहा जा सकता। इससे हमारे आनन्द-प्राप्ति के क्षेत्र में काफी संकीर्णता आ जाती है। इस प्रसंग के हमारे प्रयत्न भी प्राणहीन हो जाते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि परिस्थिति यह हो गई है कि आज के व्यक्ति को अपने मनोविनोद एवं आनन्द के लिये स्वयं वस्तुओं के निर्माण में निमग्न नहीं होना पड़ता है, बल्कि मनोवांछित वस्तुयें उसे बनी बनाई मिल जाती हैं। अतः उसके मनोविनोद का सम्बन्ध सृजन के बजाय वस्तुओं से हो गया है। यह सम्बन्ध अस्वाभाविक एवं अपने मूल उद्देश्य को पराजित करने वाला है।

मशीन-सभ्यता का सबसे विचारणीय प्रभाव व्यक्ति पर यह पड़ा कि वह आज जीवन के वृहत् क्षेत्र में कर्त्ता के बजाय केवल द्रष्टा रह गया है—अपनी भाग्य-लिपि आप लिखने के बजाय वह केवल एक मूर्तिवत् दर्शक है।

नवीनता का अन्ध-प्रेम

निश्चेष्ट द्रष्टा की इस मनोवैज्ञानिक स्थिति की प्रतिक्रिया भी हमारे सामने स्पष्ट होती जा रही है। प्रकृत-संस्कारों के द्वारा मशीन-युग के व्यक्ति को जो कर्म-स्फूर्ति की सुप्त सम्भावनायें विरासत में मिली हैं, वे देश-काल के वातावरण में एकदम ध्वस्त नहीं हो सकतीं। कर्ममूलक आकार ग्रहण करने के लिये वे अपना क्षेत्र खोजने में सदैव व्यस्त बनी रहेंगी। अतः व्यक्ति को जब अपने आस-पास के वातावरण में अपनी आक्रांत महत्वाकांक्षाओं को बीजारोपित करने का अवसर नहीं मिलेगा, तो वह स्वभावतः ही दूरस्थ प्रदेशों में अपना कर्मक्षेत्र बनाने की योजनायें बनावेगा। सृजन-शक्ति की पंगुता का स्पष्ट प्रतिबिम्ब इस मनोवृत्ति में मिल सकता है। यदि मशीन-युग व्यक्ति की सृजन-शक्ति को कुण्ठित नहीं करता, तो उसे बाहर के प्रदेशों में जाने की प्रेरणायें ही प्राप्त नहीं हो सकती थीं, क्योंकि सृजन का क्षेत्र व्यक्ति के आस-पास सदैव बना ही रहता है। स्रष्टा बनने के लिये व्यक्ति को बाहर नहीं जाना पड़ता; क्योंकि स्रष्टा के साथ सृजन-क्षेत्र भी वह स्वयं ही है। मशीन-सभ्यता की सब से बड़ी भ्रांति यही है कि व्यक्ति अपने आकर्षण में अत्यन्त अस्थिर एवं उद्वेलित होता जा रहा है और वह वास्तविकता को महत्व न देकर केवल नवीनता की खोज को ही अपने व्यक्तित्व की परम साधना समझ बैठा है। नवीनता अशुभ नहीं है, लेकिन नवीनता वही वांछनीय समझी जानी चाहिये जिसका अनुप्राणित आकर्षण एवं आनन्द स्वस्थ एवं स्थायी हो। नवीनता की खोज के पीछे कोई उद्देश्य तो होना ही चाहिये, जिसकी पूर्ति इस खोज के परिणाम से हो जानी चाहिये। किन्तु मशीन-युग के व्यक्ति ने जिस नवीनता के पीछे भागना शुरू किया है, वह आखिर मृगतृष्णा ही प्रमाणित होती जा रही है।

व्यावसायिक सामंतवाद

वर्ग-संघर्ष की जो भयानक घटायें हमारे सिर पर घनीभूत होती जा रही हैं, वे भी मशीन-युग की ही दुर्भाग्य-रेखायें हैं। मशीन-उत्पादित भौतिक उपकरणों की व्यवस्था ने एक नये वर्ग अथवा नई जाति-प्रथा को जन्म दिया है। श्रम-संलग्नता और सृजनात्मकता के अभाव की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया प्रतियोगिता की प्रज्वलित महत्वाकांक्षा होती है। आज के अमेरिका में व्यावसायिक प्रतियोगिता का विकास-बिन्दु अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँच गया है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वहां प्रतियोगिता का ज्वर इतना तीव्र हो गया है कि लोकतन्त्रीय शासन-प्रणाली अपने प्रकृत महत्व एवं उद्देश्य से पतित होकर कोरे नग्न छल-छद्म का रूपान्तर बन गई है। जिस सामंत-युग के एकाधिकारमूलक शोषण का अन्त करके अमेरिका की जनता ने 'साम्य, समत्व एवं भ्रातृत्व' के आधार पर आदर्श लोकतन्त्र की स्थापना की थी, वही अमेरिका आज 'मत्स्य-न्याय' की चरम परिणति का अत्यन्त गर्हित उदाहरण बना हुआ है। राजनीतिक सामंतवाद के स्थान पर आज के अमेरिका में व्यावसायिक सामंतवाद अपने प्राचीर सुदृढ़ बना रहा है। आधुनिक अमेरिका में मुक्त व्यापार एवं प्रतियोगितामूलक व्यवसायवाद ने राष्ट्रीय सम्पत्ति का एक वर्ग विशेष में ही स्तूपीकरण कर दिया है और यह स्तूपीकरण ज्यों-ज्यों अधिकाधिक केन्द्रस्थ और तीव्र होता जाता है, त्यों-त्यों अमेरिका के जन-समाज में बेकारी और आर्थिक असन्तोष भी उत्तरोत्तर कटु और तीक्ष्ण होता जाता है। आज अमेरिका में लगभग ३० प्रति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत व्यक्ति बेकार हैं। औद्योगिक वर्ग ने सारी राजनीतिक सत्ता भी अपने हाथों में समेट ली है। फलतः समाज का स्वस्थ संतुलन एकदम अस्थिर हो गया है और सामान्य जनता आत्म-विश्वास खोकर किंकर्त्तव्य-विमूढ़-सी हो गई है।

प्रतियोगिता का चक्रव्यूह

भौतिक प्रगति आवश्यक रूप से नैतिक पतन की सूचक नहीं है। मशीन ने हमारी श्रमकालीन अवधि को घटा कर हमारे विश्राम के घण्टों को काफी बढ़ा दिया है। फलतः जिस अन्तर्परीक्षण पर आधारित स्वस्थ नैतिकता को पोषण देने वाले मनन और सांस्कृतिक विकास के अवसरों की हमें आवश्यकता थी, वे मशीन के द्वारा हमें सुलभ हो गये हैं। लेकिन समस्या यह है कि हम अपने विचारों और विश्राम को मशीन से सम्बद्ध प्रश्नों से मुक्त एवं अनासक्त नहीं रख सकते। मशीन से घिरे रह कर उसके संतप्त स्पर्श से सुरक्षित रहना जीवन के मनोविज्ञान को पराजित करना है। मशीन - सभ्यता ने जिस औद्योगिक प्रतियोगिता को जन्म दिया है, उसके चक्रव्यूह में उलझने पर व्यक्ति को आजीवन अपने स्वयं की खबर भी नहीं रहती है। पाश्चात्य देशों के पारिवारिक जीवन में जो भयावह विग्रह और विशृंखलता प्रविष्ट हो गई है, उसका मूल कारण औद्योगिक प्रतियोगिता पर आधारित अविराम जीवन संघर्ष ही है। वहां के व्यक्ति को सघन कर्म-प्रवाह की बाढ़ से बाहर निकल कर ऐसे अवसर शायद ही कभी मिलते हैं, जब वह कुछ क्षणों के लिये विचारों के शांत सरोवर में अपने अन्तःकरण का प्रतिबिम्ब देख सके और इस प्रकार अपनी नैतिक अंतर्दृष्टि की जर्जर शिराओं में नये प्राणों की प्रतिष्ठा कर सके। पूर्वी देशों में भी यह रोग अपनी जड़ें उत्तरोत्तर दृढ़ बनाता जा रहा है। आज का पाश्चात्य-व्यक्ति जो भी नैतिक निर्णय कर पाता है, वे सदैव इस कर्म प्रवाह की बाढ़ में ही होते हैं। फलतः वे प्रायः भावात्मक एवं आवेगमूलक ही होते हैं। शांत, सौम्य एवं सुस्थिर अन्तःकरण से छनने वाली अनुभूति के अमृत-कण का पोषण उनमें नहीं होता। अतः उनसे विग्रह को ही बल मिलता है, विकास को कभी नहीं।

गांव से शहर की ओर

मानवीय कृति के विकास की प्रक्रियाओं का आत्मीय सम्बन्ध मशीन या मार्केट की अपेक्षा स्वाभाविक रूप से धरती माता के साथ ही अधिक रहता है; क्योंकि जीवन अपने मौलिक रूप में बीजांकुर की भांति एक प्रकृत विकास है — वह कोई कारखाने का उत्पादन या बाजारी विनिमय नहीं है। मशीन ने हमारे इस स्वाभाविक विकास में व्यतिक्रम पैदा कर दिये हैं। गांवों की जनसंख्या तेजी के साथ शहरों की ओर आगे बढ़ती जा रही है। फलतः गांव ऊजड़ होते जा रहे हैं और नगरों का आकार अत्यन्त तीव्र प्रगति के साथ बहुगुणित होता जा रहा है। मशीनरी ने जो टेकनिकल क्रांतियां पैदा की हैं, उनके अन्तिम विस्फोट आर्थिक विप्लवों और जन संख्या के उच्चाटन के ही रूप में फूटते हैं। सन् १८०० में अमेरिका की जन-संख्या लगभग ४० लाख थी; किन्तु आज वह १४ करोड़ तक पहुंच गई है। सोवियत ने जब से औद्योगीकरण की योजनाओं को कार्यान्वित करना शुरू किया है, तब से उसकी नागरिक जन-संख्या में भी इसी प्रकार आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। सन् १९१७ में रूस की जन-संख्या १३.९ करोड़ थी, जो आज २२ करोड़ से ऊपर पहुँच गई है। इन वर्षों में औद्योगिक उत्पादन में भी दानवीय विकास हुआ है। चार वर्ष में ही अमेरिका के वायुयान-उत्पादन के आंकड़े १००,००० तक पहुँच गये हैं। उधर सोवियत रूस का कोयले का उत्पादन १३.९ करोड़ से २० करोड़ तक पहुँच गया है। सन् १९१३ से ले कर आज तक विद्युत्-शक्ति की खपत में जो वृद्धि हुई है, वह भी काफी आश्चर्यजनक है—

अमेरिका में १४ अरब किलोवाट से १५० अरब किलो०
ब्रिटेन ,, २.५ ,, ,, ,, ३० ,, ,,
रूस ,, २ ,, ,, ,, ६० ,, ,,

साधन-साध्य में वैषम्य

मशीन युग ने हमारे सामाजिक तंत्र को जो इतना विशृंखल कर दिया है, उसके कारण हैं। मशीन-युग का प्रारम्भ औद्योगिक क्रांति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का परिणाम है। इस क्रांति ने उत्पादन और निर्माण के साधनों के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रांति का सृजन किया था। सारी प्राचीन साधन-व्यवस्था में आमूल परिवर्तन हो गये थे। ये परिवर्तन अत्यंत आकर्षक थे और वैज्ञानिकों ने इन आविष्कारों को आधार मान कर जिस स्वर्ण-युग की कल्पना की थी, उसने सारे मानव-समाज को अंध-सम्मोहन में जकड़ दिया था। फलतः साधनों से आगे बढ़ कर हमारी दृष्टि साध्य पर नहीं जा सकी; प्रेय-पथ पर ही हम तीव्र प्रगति से दौड़ लगाते रहे—श्रेय-पथ के अस्तित्व का भी स्मरण हमें नहीं रहा। अतः साधन क्षेत्र में कोई भी परिवर्तन नहीं किया जा सका। इस प्रकार साधन और साध्य में वैषम्य होता गया। दोनों का अन्योन्याश्रय-सम्बन्ध सदैव के लिये भंग हो गया। वैज्ञानिक आविष्कारों को औद्योगिक उत्पादन में किस प्रकार संलग्न किया जावे, जब यह समस्या हल की जा रही थी, तब यह प्रश्न पूछने की प्रेरणा जाग्रत नहीं हुई कि यह सब क्यों और किसके लिये किया जा रहा है? साधनों का उपयोग स्वीकार करने से पहिले साध्य का भी निर्णय कर लेना आवश्यक था। अश्व-शक्ति के अनुरूप मनुष्य की नैतिक शक्ति में भी वृद्धि होना आवश्यक था। लेकिन इस अनिवार्यता का अनुभव नहीं किया गया, फलतः मशीन ने मानव को अपने रथ के पहिये से बांध लिया और उसके आंधी के से वेग में मानव आज निरुपाय बना हुआ विनाश की ओर भागा जा रहा है।

चर्खा—एक प्रतिकार

समाज की अर्थ-व्यवस्था में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया गया। तात्कालिक व्यक्तिगत लाभों की सिद्धि के लिये व्यवसाय एवं उद्योगों का संचालन इने-गिने व्यक्तियों द्वारा ही होता रहा। उद्देश्य या ध्येय की दृष्टि से किसी परिवर्तन की सम्भावना को अनिवार्य नहीं समझा गया—जो कुछ परिवर्तन हुआ, वह प्रणाली के ही स्तर में हुआ। वह प्रणाली-मूलक परिवर्तन वस्तुतः बाहरी परिवर्तन है। आवश्यकता तो आंतरिक परिवर्तन की थी। मशीन के स्वामित्व में मानवीय भावना अनुप्राणित की जानी चाहिये थी। गांधी जी द्वारा चर्खे को अपनाने के भीतर मूल प्रेरणा यही थी। चर्खा मशीन के दानवीय शोषण की अचूक औषध स्वीकार की गई थी। मनुष्य के द्वारा मनुष्य के शोषण को बहिष्कृत करने के लिये गांधी जी ने जिस दर्शन-शास्त्र का निरूपण किया था, चर्खा उसकी मूल-प्रेरक-शक्ति थी। मशीन के दुष्परिणामों का स्पष्टीकरण करते हुये वे अपने एक अमरीकी मित्र को लिखते हैं—".....मशीन का अध्यात्मीकरण मेरा उद्देश्य नहीं है; क्योंकि यह तो असम्भव है। मेरा ध्येय तो सिर्फ यही है कि मैं मशीन के संचालक में मानवीय भावना की प्रतिष्ठा कर सकूं। गिनती के लोगों के हाथों में सम्पत्ति एवं शक्ति के केन्द्रीयकरण के लिये तथा इस प्रकार अगणित व्यक्तियों का शोषण करने के लिये मशीनरी का संगठन मेरी दृष्टि में अशुभ है। आज के युग में यही हो रहा है। चर्खे का जो आंदोलन मैंने शुरू किया है, वह मशीन के एकाधिकारमूलक स्वामित्व एवं शोषण के निराकरण का एक संगठित प्रयत्न है। मैं मशीन को मुक्त करना चाहता हूँ; अतः मेरी योजना में मशीन का स्वामी सिर्फ अपने वैयक्तिक या अपने राष्ट्र के लाभों पर ही दृष्टि नहीं रक्खेगा, बल्कि मानव-मात्र के हित-साधन को अपना परम कर्त्तव्य मानेगा। चर्खे का संदेश यही है—मनुष्य-मात्र का हित ही उसकी चरम प्रेरणा है।"

—यंग इंडिया, १७ सितंबर १९२५

समन्वय की प्रयोगशाला

इस प्रकार आज हम अपनी प्रगति में एक चौराहे पर खड़े हुए हैं, जहां हमें दो शिविरों में से एक शिविर को अपनाना होगा। पहिला शिविर वह है, जहां मशीन पर मानवीय बुद्धि और भावना का नियन्त्रण होगा, जहां मानवीय साधना के तार से व्यक्ति के छिन्न-विछिन्न आत्मीय सम्बन्ध फिर जुड़ जावेंगे और इस प्रकार मानवैक्य के चरम उद्देश्य की सिद्धि हो सकेगी। दूसरा शिविर वह है जहां मशीन बिना किसी बाहरी नियन्त्रण के अपना दानवीय विकास करती जावेगी और उसकी प्रत्येक पद-चाप के साथ आर्थिक एवं राजनीतिक ज्वालामुखियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विस्फोट होता रहेगा — व्यक्ति जहां अपने से निर्बल व्यक्तियों का आखेट करेगा और इस प्रकार यह सारा मानव समाज मशीन के अगणित कैंसरों से उत्पीड़ित हो जावेगा। मशीन का परिपूर्ण बहिष्कार तो वस्तुतः आत्म-भ्रान्ति ही है। यह नहीं हो सकता। अतः इस ऐतिहासिक अवसर पर भारत का सन्देश तो यही हो सकता है कि वह आज की मनुष्य-जाति के भीतर जो आक्रांत मानवता मशीन के बंधनों से जकड़ दी गई है, उसे मुक्त करे और स्वयं व्यक्ति के अन्तःकरण में ऐसी बलवती प्रेरणायें जागृत करे, जिससे वह मशीन के दासत्व का सफल प्रतिरोध कर सके। अरण्य में जाकर आरण्यक के तत्व-दर्शन की चेष्टा तो वस्तुतः कायरतापूर्ण पलायन है और इसमें सफलता मिलना भी संभव नहीं है, क्योंकि मशीन के दानवीय तन्तु थोड़े ही समय में सारे जंगलों को भी अपने पाश में जकड़ लेंगे। अतः हमें मनुष्य के ही कंटकाकीर्ण कर्मक्षेत्र में रह कर मानवीय आवश्यकताओं के आधार पर नई सामाजिक नीति का निरूपण करना होगा। भारतीय संस्कृति में तो असंगतियों के श्रेयस्कर समन्वय की अद्वितीय सामर्थ्य है। अतः यहां मशीन और मानव के बीच में समन्वय की प्रयोगशाला का आसानी से उद्घाटन हो सकता है। महात्मा जी का साध्य और मशीन के साधनों को हमारी संस्कृति एक समन्वय-सूत्र में गूंथ सकती है।

★

लक्ष्मी पूजन के सुअवसर पर प्राप्त कीजिये

★ सुन्दर पूँजी !

★ सुखद जीवन !!

★ सुलभ साधन !!!

एवम्

मुद्रास्फीति के रोकने का सरल व उच्चतम उपाय !!!

अजय म्यूच्वल बीमा कौरपौरेशन लि० का परिवार आपका सहर्ष स्वागत करता है।

गुनवन्तसिंह नाहर
प्रधान व्यवस्थापक
बनारस

भूपालसिंह कोठिया
एकाउण्टेण्ट

मदनसिंह नाहर बी० काम०
संचालन निर्देशक
अजय म्यूच्वल बीमा कौरपौरेशन लि० आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

खिलौने

तारो के बहुत मना करने पर भी जब मनोहर सफेदी ले आया, तो वह बहुत दुखी हुई; मन में आया अपना आपा धुन डाले। ढाई गज चौड़ी पटरी पर लगभग तीन गज लम्बी जगह को चटाइयों से घेर कर जो रहने का ठौर बनाया गया था, उसका पोतना ही क्या! तीन ओर तो चटाइयां खड़ी थीं; पीछे रेलवे-यार्ड की चहार-दीवारी की पत्थरों से बनी दीवार को पोतने का प्रस्ताव तारो के मर्म को चीर-सा गया।

साल का सब से बड़ा त्यौहार—दिवाली—सन्निकट था; फिर भी दीवार पर सफेदी करने के लिए तारो न तो तैयार थी और न चाहती ही थी कि मनोहर सफेदी भी लाए। घर का एक मात्र बच्चा—ढाई-तीन साल का सुन्दर बुखार से पड़ा था। हर तीसरे दिन का बुखार; तारो परिचर्या और दवाइयां करते-करते थक गई थी। बुखार की हर बारी के साथ जैसे उसकी उदासी और निराशा बढ़ती जाती थी। ज्वर के ताप और पीड़ा से जब सुन्दर छोटे से खटोले पर पड़ा अपने हाथ पैर पटकता, तो तारो का मुख ग्लान हो जाता। पति उसका विवर्ण मुख देख कर चाहता कि किसी तरह उस का दिल बहलाया जाय, पर तारो का शरीर जैसे अपने प्राण खो बैठा था। सुन्दर की मुस्कान ही उस में चेतना का स्फुरण करती और उसकी पीड़ा-छटपटाहट देख कर वह भी वेदना अनुभव करती, कुम्हला जाती। सुन्दर के तपते हुए माथे पर हाथ फेरती, तो वह अपने नन्हे हाथों से मां का हाथ दबा लेता और उस गर्म स्पर्श से तारो का अन्तर व्याकुल हो उठता। इतनी नन्ही-मुन्नी सी जान और ऐसा कष्ट!

उसने सफेदी उठा कर एक कोने में रख दी, बोली, "सुन्दर अच्छा हो जायेगा, तो आप ही हो

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही दिवाली का दिन था। तारो को लगा जैसे उसके घर का दीपक सदा के लिए उससे छीना जा रहा है। "क्या मैंने इसी दिन के लिये इसे मां बन कर पाला था!" वह अपने आंसुओं को न रोक सकी···

जायेगी!"

मनोहर ने पत्नी का विरोध नहीं किया। प्रसंग बदलते हुए उसने कहा, "लाओ, आज सुन्दर को डिस्पेन्सरी में ही दिखा लाऊं···।"

तारो जो विवेकशून्य-सी सुन्दर के सिरहाने बैठी थी, मानो सोते से जागी, "दिखा लो, मैं तो यही सुनती हूँ कि डाक्टरों की दवा से यह तिजारी बुखार हटता नहीं...।"

मनोहर इस तर्क को सुन कर उत्तेजित हो उठा, "बच्चे का दम इसी तरह निकल जायेगा, बस। तीसरी बारी में ही आधा भी नहीं रहा और तुम बराबर यही कह रही हो....."

और मनोहर जब नहीं माना तो तारो ने एक चादर में सुन्दर को अच्छी तरह लपेट कर मनोहर की गोदी में दे दिया, कहा, "ध्यान रखना, कहीं हवा न लग जाय...।"

मनोहर सरकारी डिस्पेन्सरी की ओर चल दिया। ज्वर का ताप इतना बढ़ा हुआ था कि चादर में से भी भभका निकल रहा था और इसका अनुभव मनोहर के चौड़े चेहरे पर विषाद की रेखाएं उभारता रहा। डिस्पेन्सरी दूर न थी, फिर भी मनोहर को रास्ता भारी जान पड़ रहा था—पैर क्योंकि भारी थे। आखिर डिस्पेन्सरी आ गई। मनोहर ने संतोष की एक सांस ली। परन्तु डाक्टर की मेज तक पहुँचने के लिए जब उसे एक लम्बी लाइन के अन्त में खड़ा होना पड़ा, तो वह और भी गहरी निराशा में डूब गया। हांफते हुए सुन्दर के सूखे, पपड़ी पड़े हुए ओठों और बन्द नेत्रों को देखकर उसने सोचा—डाक्टर पहिले इसे ही क्यों नहीं देख लेता? अभी इसके गले से एक खुराक नीचे उतर जाय तो इसकी आंखें खुल जायं··· और यह सोचते सोचते उसने सुन्दर को अपने सबल बाहुओं में और भी कस लिया। फिर डाक्टर की ओर उसने एकटक देखा। उदासी के बोझ से दबा वह बड़बड़ाने लगा—यह सरकारी डिस्पेन्सरी कैसी है! एक डाक्टर और मरीजों की इतनी लम्बी लाइन···! रोगियों की पंक्ति को उसने आंखें फाड़-फाड़ कर देखा और फिर दृष्टि डाक्टर पर आ ठहरी। वह फिर बड़बड़ाया—यह डाक्टर बाबू बस परची ही लिखते हैं, देखते नहीं मरीजों को··· हैं, ये लाइन तोड़ कर लोग आगे कैसे पहुंच गए? एक क्षण देखा उसने। ठीक ही तो सोच रहा है वह, यह आदमी लाइन में नहीं था··· और वह सहसा जोर से चिल्लाया—"भाई साहब! लाइन में आ जाइए, लाइन में।" तभी मनोहर ने देखा, डाक्टर की क्रोध भरी दृष्टि आवाज देने वाले को ढूंढ़ रही है। और भी बीसियों नेत्रों को जब अपने पर गड़ा देखा, तो उसकी गरदन झुक गई, मस्तिष्क विचारशून्य हो गया कुछ क्षणों के लिए। और लाइन में अपने को जहां का तहां पाकर मनोहर का मन विचलित हो उठा। डाक्टर पर उसे कोई विश्वास नहीं रह गया था। पास के दो कमरों पर, जहां क्रमशः दवाएं बंट रही थीं तथा पट्टियां बांधी जा रही थीं, उसकी दृष्टि ठहर गई। वहां भी रोगियों की भीड़ थी। वह खिन्न हो उठा। खड़े खड़े हाथ भी थक गए थे और पैर भी। जिस आशा के सहारे वह इतनी देर खड़ा रहा, वह इन आंखों ने मिट्टी में मिला दी। जो कुछ देखा, वह मनोहर के लिए बहुत कटु था। उसने सोचा—इतनी

★ ★ ★ श्री राजेन्द्र शर्मा ★ ★ ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देर खड़े खड़े हो चुकी, आगे भी क्या पता, डाक्टर साहब एक नजर बच्चे पर डालें भी या नहीं···! सुन्दर को उसने फिर देखा। मालूम होता था जैसे उसका कंठ और भी सूख सा गया है, ज्वर का वेग बढ़ा है। मनोहर को लगा जैसे उसका अपना भी कंठ सूखने लगा है, शरीर थकावट से गिरा जा रहा है। वह बेचैन हो गया। सुन्दर कराहा। उसका कराहना सुन पास खड़े एक वृद्ध ने मनोहर की ओर देखा, पूछा—"क्या बीमार है?"

उस वृद्ध के पोपले मुंह से यह वाक्य इतनी सहानुभूति ले कर निकला कि मनोहर के संतप्त हृदय को छू गया। उसने देखा, सफेद कमानी की ऐनक में से बूढ़े की आंखें दया बरसाना चाहती हैं। भर्राये हुए गले से वह बोला, "बाबा, इसे तिजारी बुखार है। आज तीसरी बारी है—आधा हो गया है, आधा...!"

"तिजारी है!" बूढ़े की वाणी में ही जैसे रोग का उपचार छिपा था, "आप तो बहुत परेशान हैं। इसका मैं आपको बड़ा माकूल इलाज बतलाता हूँ; इन डाक्टर साहब से तो कोई उम्मीद न रखिए।"

मनोहर का विश्वास धीरे धीरे लौटने लगा। जल्दी से बोला, "आइए, वहां बैंच पर बैठ कर बता दीजिए।"

"मेरा नम्बर रह जायेगा, सा'ब"—मुस्करा कर बूढ़ा बोला, "जरा आंख दिखाने आया था···हां, तो आप रहते कहां हैं?"

"हमारा भी क्या रहना है, बाबा! शरणार्थी हैं, यहां सड़क पर चटाइयां खड़ी कर ली हैं—मालगोदाम के पास!"

"भाग्य का फेर है, भैया!" बूढ़े ने भी दुःख मानते हुए कहा, "यह दिन भी नहीं रहेंगे। हां, तो मालगोदाम के पास रहते हैं आप। फिर तो आप को कोई कष्ट नहीं करना पड़ेगा। वहां सामने ही एक ट्रांसपोर्ट कम्पनी···"

(शेष पृष्ठ ६६ पर)

श्री दूभागवत के अंचल से 'सस्कार' चित्रा की महान धार्मिक कलाकृत्ति
जो युग युग स्मरण रहेगी

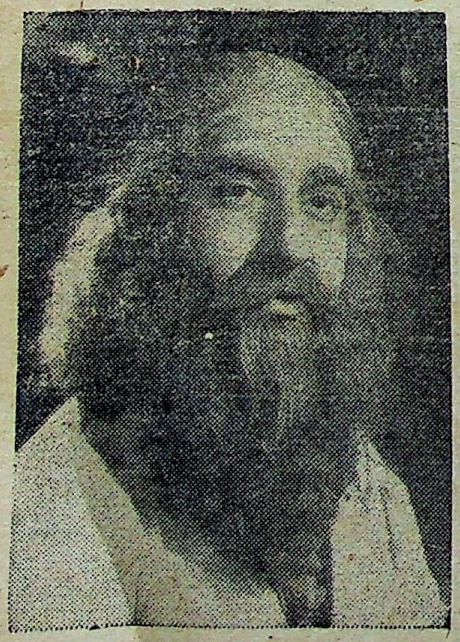

भक्त अजामिल

भूमिका में :—
★ उमाकान्त ★ मालती
साथ में : कान्ताकुमारी, नर्मदाशंकर, काशीनाथ, चन्द्रिका, मनहर देसाई आदि
निर्माता— मूलराज कापड़िया
निर्देशक— जमनादास कापड़िया
शुक्रवार ता २२ अक्तूबर से
रिट्ज देहली में प्रदर्शित

वितरक : डायमण्ड पिक्चर्स लि० देहली। सोल एजेण्ट : हिमालय पिक्चर्स, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूल मत जाना पथी तरुणी-तरुण, मैं एक तुम सा !

श्री 'अंचल'

गीत ये मेरे मिले पथ-रेणु में— मैं था भिखारी,
प्राण की वंशी भरे पथ भूल आई आयु सारी।
इस नियति-शासित, पराजित, भीरु जीवन के रुदन में,
हो न पाया मैं मुखर भी तो अचेतन इस जलन में।
कर न पाया संतरित मैं प्यास का वारिधि अपावन,
खा गये अंगार मेरी पसलियों का सुख-समर्पण।
किस सुचीता के लिए व्याकुल रहा, यह भी न जाना,
बालपन से ले प्रलय-मंथन रहा चिर मूक प्यासा।

व्यक्त भी तो कर न पाया लालसा के स्वप्न अपने,
निज अभावों से अपरिचित आ गया स्वच्छन्द तपने।
दूर, मरु-संगीत-सा व्याकुल रहा ध्वनिहीन तुम बिन,
दूर था, फिर भी तुम्हीं में रह चुका जैसे बहुत दिन!
था अधिक अन्तर न, मुझ में थी सुलगती एक ज्वाला,
एक बुझते दीप में भी जो न भर पाई उजाला।
किन्तु सुख-दुख में तुम्हीं-सा मैं बंधा रहने न पाया,
काश! पैदा ही न होता, शेष ही रहती पिपासा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्दगी बीती मरण की गैल का शृङ्गार करते,
शाँज - संध्या - सा महावन की निशा का रूप भरते।
यह अजब अभिमान! अपना भी कभी तो हो न पाया,
बासना तीखी, विफल, ज्यों व्यर्थता की एक छाया!
सुन मेरी हसरतों का विश्व ने कर तृप्ति पाई,
यदि क्षुभित पाषाण - सा निस्पन्द रहता शान्त, भाई!—
था भला, होता न मरघट - सी तृषाओं का प्रदर्शन,
और यों होता न प्राणों की प्रखरता का तमाशा!

पूर्वगामी इस पथिक को भूलना साथी न मेरे!
देख तरुणी का सुमुख जब मर्म झंझावात घेरे,
जब मधुर पगध्वनि किसी की वक्ष में तूफान लाये,
एक अमरित वेदना जब उच्छ्वसित हो हो जलाये,
भूलना मुझको न, मैंने भी प्रणय का स्वप्न देखा,
गन्ध - गीतों से भरी जीवन्त जिसकी लौह रेखा,
था मिला संसार जैसा, छोड़ वैसा ही चला जो,
पर अजीवन में लिये आकण्ठ जो जलती दुराशा!

माधवी - वन में फिरे निःशब्द जब दक्षिण - समीरण,
जब कथा के शेष रहते कण्ठ भर आये—उठे मन,
वृन्त - च्युत सूखे सुमन - सी छूटती तब सुधि किसी की।
फेंकना मेरे गृही मत काल - कोषों में अगति सी,
विध बधू के चुम्बनों में भूलना मुझको न, साथी!
गूंथती जीवन - मरण की आंच मेरी कल्पना थी।
तुम सफल, मैं किन्तु था असफल, यही सम्बन्ध क्या कम!
तृप्ति वह कैसी, न जिसमें याद भी आई निराशा!

और कोई यह निखिल लिप्सा, अगर यह दाह लाता,
प्राण-पीड़क एक तृष्णा ले अगर उठने न पाता,
सत्य कहता हूँ, न जो करता बहुत था और सब कम।
मार छाती पर चरण - आघात द्रोही क्षुब्ध भृगु सम,
मैं बंधा ज्वालामुखी अब तक कभी का डोल जाता;
बांध रक्खा है किसी ने, मैं न बन्धन खोल पाता!
इस कफस में भी यहां चिरकाल जलने की न आशा,
भूल मत जाना पथी तरुणी - तरुण, मैं था तुम्हीं सा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ जोग के जल-प्रपात !

श्री देवेन्द्र सत्यार्थी

जोग का यह जल-प्रपात संसार भर में सर्वश्रेष्ठ नहीं, तो सर्वश्रेष्ठों में से एक अवश्य है। यह कन्नड और मैसूर-राज्य की सीमा पर स्थित है और ९६० फीट की ऊंचाई से नीचे गिरता है। लोक गीतों के यशस्वी संग्रहकर्त्ता ने अपने इस लेख में इस के विराट् सौन्दर्य को चित्रकार की तरह अंकित किया है।

सर्व-प्रथम कलकत्ते में काका कालेलकर के मुख से जोग-प्रपात की चर्चा सुनी थी। वे बोले, "'जोग की झांकी' मेरा लेख जरूर पढ़ लेना। मैं यहां बैठा हूँ पर जोग का जल-प्रपात इतना ऊंचा है कि आंख बन्द करके मनमें उसका चित्र देखने लगता हूँ, तो एक दम पुलकित हो उठता हूँ!"

मैंने कहा, "मैं भी मैसूर जा कर जोग के दर्शन करूंगा। फिर मेरे मन पर भी इसका चित्र अंकित हो जायगा और मैं भी आंखें बन्द करके उस चित्र की ओर झांक लिया करूंगा।"

पता चला कि जब काका कालेलकर ने पहली बार जोग देखने की ठानी, वे बापू के साथ दक्षिण की खादी-यात्रा पर थे। चलते चलते वे शिमोगा-सागर तक जा पहुँचे, जहां से जोग केवल पंद्रह मील रह गया था। जब बापू से कहा गया कि वे भी जोग देखने चलें, तो वे बोले, "मैं ऐसी स्वच्छन्दता करने लगूं, तो स्वराज्य का काम कौन करेगा?" काका कालेलकर ने बहुत चाहा कि किसी तरह बापू का मन जोग देखने के लिये उत्सुक हो उठे, परन्तु उनका कहना-सुनना सब बेकार गया। जब उन्होंने बड़े प्रभावशाली शब्दों में बताया कि जोग का जल नौ सौ साठ फीट की ऊंचाई से गिरता है, तो बापू ने हंस कर कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आकाश का जल तो इससे भी अधिक ऊंचाई से गिरता है!" इस पर काका को हार माननी पड़ी। उन्होंने चाहा, चलो महादेव भाई को ही साथ लेते चलें। पर बापू की आज्ञा तो जरूरी ठहरी। जब बापू के सामने यह प्रस्ताव रखा गया, तो वे हंस कर बोले, "मैं ही महादेव भाई का जोग हूं।" इतनी खैर हुई कि काका को राजाजी जैसा साथी मिल गया। काका ने बड़े प्रेरणामय शब्दों में विराट के इस विभूति-दर्शन का बखान किया। उन्होंने यह भी बताया कि 'जोग' हमारा स्वदेशी नाम है, इसका विदेशी नाम है 'गेरसप्पा फाल्स'। उत्तर कन्नड और मैसूर की सीमा पर स्थित यह जल-प्रपात दुनिया भर में सर्वश्रेष्ठ नहीं, तो सर्वश्रेष्ठों में से एक अवश्य है। लार्ड कर्जन ने इस देश की धरती पर पग धरते ही इस जल-प्रपात के दर्शन करने का कार्यक्रम बना लिया था और जिस स्थान पर खड़े हो कर उसने यह अद्भुत दृश्य देखा था, मैसूर स्टेट की ओर से उसे 'कर्जन-सीट' नाम दे दिया गया।

काका कालेलकर ने अपनी प्रथम जोग-यात्र की चर्चा करते हुए यह भी बताया था कि उन्हें शीघ्र ही लौट जाना पड़ा था और वे इस बात का पूरी तरह अनुभव भी न कर पाये थे कि इतनी ऊंचाई से कूदने के पश्चात् शरावती नदी आगे कहां जाती है, किस शान से अग्रसर होती है, एक नव-विवाहिता कुलवधू की भांति उसकी वेशभूषा कितनी आकर्षक है, और सरित्पति के साथ उसका संगम प्रकृति के चित्र-पट को कितना रागात्मक व सजीव बनाता है। शरावती में नौका-विहार की इच्छा पूरी करने के लिए वे पूरे बारह वर्ष बाद वहां फिर जा पाये। उन्होंने बड़े विस्तार से बताया कि उनकी पहली और दूसरी जोग-यात्रा में सब से बड़ा अन्तर यह था कि जहां पहली बार वे शरावती के उद्गम से जोग तक पहुंचे, वहां दूसरी बार शरावती के मुख से प्रवेश करके नौका में प्रतीप-यात्रा करते हुए जोग की ओर गये, और जहां नौका का और आगे जाना असंभव हो गया, वहां से वे मोटर द्वारा पहाड़ की घाटी से होते हुए ऊपर राजा-प्रपात के सिर पर जा पहुँचे, जो एकदम नीचे ९६० फीट की गहराई में कूदता है और जिसे शतशत जल-प्रपातों का सम्राट कहा जा सकता है।

इस अर्धचन्द्राकार दर्रे में चार जल-प्रपात हैं। राजा-प्रपात की बाईं ओर अपनी गर्जन से मीलों तक उस घाटी और आस-पास की पहाड़ियों को निनादित करता हुआ रुद्र-प्रपात (Roarer Fall) राजा के चरणों में गिरता है। राजा और रुद्र की अपनी अपनी शान है। वीरभद्र-प्रपात (Rocket Fall) की भी शान कोई कम नहीं, क्योंकि काका कालेलकर के कथनानुसार—"वह हाथी के कुंभस्थल के सदृश एक चट्टान पर जैसे ही गिरता है, उस में से आतशबाजी के बाण जैसे सैंकड़ों फव्वारे छूट पड़ते हैं···क्या यह शिवजी का तांडवनृत्य है? या महाकवि व्यास की प्रतिभा का नवनवोन्मेषशाली कल्पना-विलास है? या भूमि-माता के वात्सल्य की स्तनधार के फुहारे फूट निकले हैं? सचमुच वीरभद्र देखने वाली आंखों को पागल बना देता है।" वीरभद्र के बांई ओर पर्वत-कन्या पार्वती (Lady Fall) का लावण्य दृष्टिगोचर होता है। इन चारों प्रपातों के संरक्षण का भार उन बड़े बड़े पहाड़ों ने ले रखा है, जो दाहिनी ओर खड़े हैं और प्रपातों की अठपहरिया अखण्ड गर्जना को प्रतिपल प्रतिक्षण प्रतिध्वनित किया करते हैं।

दूसरी जोग-यात्रा की चर्चा करते हुए काका कालेलकर ने बताया, "गर्मी के दिन थे। भारंगी में पानी कम हो गया था। भारंगी भी शरावती का एक नाम है। भारंगी अर्थात् बारह गंगा। शरू में शरावती का यही नाम है। बीच में उसे शरावती कहने लगे हैं। अन्त में जहां वह समुद्र में गिरती है, उसे बाल-नदी कहते हैं। हां, तो भारंगी में पानी बहुत कम हो गया था। वीरभद्र की जटाएं भी देखने में नहीं आती थीं। रुद्र की छलांगें भी छोटी हो गई थीं। पार्वती भी मानों कोई विरहिणी ही तो थी। हमने सोचा, राजा का रूप तो क्या बदला होगा! लेकिन सच पूछो तो राजा भी बहुत कुछ बदल गया था, जैसे कोई सम्राट विश्वजित्-यज्ञ करने के बाद अकिंचन हो जाता है। हम मैसूर-राज्य की अतिथिशाला में ठहरे। उत्तर की ओर से हम जोग के दर्शन के लिए गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर बड़ी धूप थी, नीचे फुहार थी। राजा का मुकुट हमारे सन्मुख था। नीचे की घाटी का वह दृश्य उस समय कितना अपूर्व हो उठा था! राजा की धारा नीचे धरती तक पहुँचने से पहले शतधा विदीर्ण होकर सहस्रधारा ही तो बन गई थी। कुछ और नीचे इस सहस्रधारा के जल-बिन्दु मौक्तिक-माला की शोभा दिखा रहे थे। फिर और नीचे ये मौक्तिक भी चूर्ण हो कर मोटे मोटे कण बन गये थे। फिर ये जलकण भी स्वच्छन्द हो उठे, जैसे फिर भिन्न हो कर सीकर-पुंज में परिणत हो गये हों और बादलों की तरह विचरने लगे हों। फिर और नीचे ये बादल भी धुएं में परिणत हो गये थे। यह सुन्दर दृश्य हम देर तक देखते रहे। हम घंटे दो घंटे के मेहमान ही तो थे। आंख, कान, नाक, त्वचा से हम इस सौंदर्य को पीते रहे और बहुमुखी कल्पना द्वारा इस आनन्द को शतगुणित करते रहे। हमारे साथ दो-तीन कन्याएं भी थीं। रात को उनके लिए हमने एक अलग नौका मंगाई थी। दोनों ओर की दो नौकाओं में हम लोग बैठ गये, बीच की नौका में कन्याएं थीं। ऊपर चन्द्रमा की मुस्कान, नीचे शरावती की जलधारा पर इन कन्याओं का श्रुति-मधुर संगीत! नारियल और सुपारी के वृक्षपुंज अपना ऊंचा सिर समीप ला ला कर मानों इन कन्याओं के गान की दाद देने लगे! चन्द्रमा अस्त हो गया, तो अंधकार के साम्राज्य में आस-पास की पहाड़ियां भी विलीन हो गईं। न जाने हम कब निद्रादेवी की गोद में सो गये। सवेरे कन्याओं ने उठते ही अपनी नौका से पुकार कर हमें जगाया। हमने देखा कि उनके मुख पर वह प्रसन्नता नहीं थी, जो जोग का दृश्य देखते समय प्रतिबिम्बित हो उठी थी—उस समय वे एक दूसरे की आंखों में देख देख कर अपना विस्मय बढ़ा रही थीं, और उनका वह विस्मय देख कर हमें ऐसा लगा, मानों हमीं इस काव्यमय सृष्टि के जनक हों!"

* * *

कलकत्ते में काका कालेलकर से भेंट होने के कोई डेढ़ वर्ष बाद मुझे जोग यात्रा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। काका का यात्रा-वर्णन मेरी आंखों के सम्मुख एकदम सजीव हो उठा।

जैसा कि स्वाभाविक ही था, मैं मैसूर-राज्य में घूम घूम कर जोग के सम्बन्ध में लोकगीत ढूंढने लगा। इतने बड़े जल-प्रपात का नाम मैसूर के किसी लोक-गीत में न आया हो, यह तो मैं मान ही नहीं सकता था। पर जब बहुत यत्न करने पर भी मैं ऐसा कोई गीत न सुन सका, तो दिल पर चोट लगी। मैं बहुत सटपटाया। इधर से हताश हो मैंने चाहा कि कोई लोकोक्ति ही मिल जाय, जिसमें जनता की सामूहिक प्रतिभा ने इस विख्यात जल प्रपात को अभिनन्दित किया हो; परन्तु ऐसी कोई लोकोक्ति भी तो मेरे हाथ न लगी। शत-शत पहेलियों पर सिर पटका, पर वहां भी इस जल-प्रपात की कोई चर्चा न मिली। चलो किसी लोक-कथा में ही जोग की सुन्दरता का थोड़ा बहुत बखान मिल जाय—यह सोच कर मैंने मैसूर की लोक-वार्त्ता के इस मोहल्ले में भी लाख पूछ ताछ की, पर सब व्यर्थ। लोक-वार्त्ता को जोग से ऐसी क्या नाराजगी थी, यह बात मैं यत्न करने पर भी न समझ सका। एक दम उपेक्षा—और वह भी इतने बड़े जल-प्रपात की! यह तो वस्तुतः एक मूक अभिशाप ही था!

मेरे साथी ने ताली बजा कर जाने किस किस अभिनय-मुद्रा से जन्म-भूमि की सुन्दरता के इस प्रतीक का अभिनन्दन किया।

मैंने कहा, "मैं दोषी हूँ।"

"दोषी?" मेरे साथी ने हैरान हो कर पूछा।

मैंने फिर कहा, "मेरा यही दोष है कि मैं यहां इतनी देर बाद क्यों आया।"

"यह तो कोई दोष नहीं," मेरे साथी ने मानों मेरी वकालत करते हुए कहा।

मैसूर-राज्य द्वारा स्थापित अतिथिशाला की 'विजिटर्स बुक' में मेरे साथी ने ये शब्द लिखे—'ओ जोग के जल-प्रपात, तू इतना सुन्दर है! तू संसार का सब से बड़ा जल-प्रपात है।'

मैंने उसके कथन की सचाई को ललकारा, तो उसने कुछ-कुछ बिगड़ कर कहा, "देखते नहीं, विदेशियों तक ने विजिटर्स-बुक में जोग की प्रशंसा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या-क्या लिख रखा है ? क्या हम विदेशियों से भी गये-गुजरे हैं कि जन्मभूमि की सुन्दरता देख कर गर्व न करें !"

एक यात्री ने लिख रखा था, 'आज मैंने यह जल-प्रपात देखा। जी मैं तो आया कि इसे उठा कर अपने देश ले जाऊं।'

एक दूसरे यात्री ने लिख रखा था—'प्रकृति-माता का सबसे बड़ा सौंदर्य-स्थल !'

मैंने जल्दी जल्दी इस विजिटर्स-बुक' के पन्ने उलटने शुरू कर दिये। मैंने जगह-जगह विभिन्न यात्रियों की ये सम्मतियां देखीं—

'यह जल प्रपात भगवान की सबसे बड़ी कविता है !'

'प्रकृति के चित्रपट पर स्वयं भगवान ने अपने हाथ से अंकित किया है यह चित्र !'

'जल-प्रपात से मैंने एक सर्वोत्कृष्ट गान की स्वर-लिपि सीखी !'

मैं क्या लिखूं ? यह प्रश्न मेरी कल्पना के तार हिलाने लगा। बहुत सोच सोच कर मैंने लिखा—

'ओ जोग के जल-प्रपात, जो कोई तुझे गेरसप्पा फाल्स के नाम से पुकारता है, भूल करता है। जोग कितना प्यारा नाम है ! काका कालेलकर तुझे दो बार देख गये। मैं केवल एक बार तुझे देख पाया। क्या तू मुझे दोबारा नहीं बुलायेगा, ओ जोग के जल-प्रपात !'

★

मैं और तू

श्रीमती शांति सिंहल

सैकड़ों पाषाण में से एक तू पाषाण ही था,
मैं न होती भावना तो तू कहां भगवान होता !

नेह के लघु दीप में मैं वर्तिका बनकर जली हूँ,
तव चरण को कोर छूने अश्रु जल बन कर ढुली हूँ,
मैं न यदि निज को मिटाती, दूर क्या व्यवधान होता !
मैं न होती भावना तो तू कहां भगवान होता !

एक युग से बन रही थी कल्पना मेरी निखरी,
रूप क्या तुझको दिया है, तनिक क्षमता देख मेरी !
मैं न तुझ में रंग भरती, तू न यों छविमान होता !
मैं न होती भावना तो तू कहां भगवान होता !

यामिनी होती न दिनकर को कहां सम्मान मिलता,
दीनता होती न, प्रभुता को कहां यह मान मिलता !
मैं न देती साधना तो तू कहां वरदान होता !
मैं न होती भावना तो तू कहां भगवान होता !

आदि युग से विवशता के गीत क्यों मानव सुनाता ?
एक इस चिर-सत्य को वह समझ क्यों अब तक न पाता—
देवता का भी मनुज के करों से निर्माण होता !
मैं न होती भावना तो तू कहां भगवान होता !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपवंती

श्री 'परदेशी'

घन केशों के बीच सजाए जगमग तारक-लड़ियां,
दीपमालिके! आओ गाती नए गीत की कड़ियां!

माथे पर बेंदी चन्दा की, रचती मेहंदी-कुंकुम,
नृत्यवती स्वर्गंगा, बजते होवें पायल रुमझुम!
उर में नई उमंग, नयन में लाज, प्यास हो मन में,
दीप संजोवे हँसी तुम्हारी सूने गृह-आंगन में!
नवल मुकुल-दल कोमल, हिलती युग उरोज पर माला,
रूप-रंग-रश्मियां तुम्हारी उर में भरतीं हाला।
ओ रूपा, रसवन्ती उतरो नीलांचल लहराती,
अमिय हलाहल भरे दृगों में, बरबस रस बरसाती!
अरुणाधर पाटल-कलिका-से, स्मिति निर्मल जल-धारा,
अपने प्रिय के मन की प्रतिमे, तुम आंखों की तारा!

अयि यौवन की नई चांदनी, चमको जीवन-भू पर!
यहां अंधेरा, वहां गगन मे शशि-तारे हैं ऊपर!

स्वप्न आज बन जाय हृदय की पीर, जगे नव आशा,
हिय की बात न समझी तो समझायेगी दृग-भाषा!
तुम यौवन के प्रथम प्रात की खिली मल्लिका-रानी,
समझोगी क्या बात हमारे प्राणों की पहिचानी!
उड़ो, हंसो खिलखिल कर प्रेयसि, खिले विश्व शेफाली,
और चहकते पंछी आएं, झुके भार से डाली!
मदिर मन्द मुस्कान तुम्हारी गहन पहेली बाला,
तुम उतरो, छू रूप-किरण से कर दो जग उजियाला!
मुखरित करो हृदय को अप्सरि, प्रिय-मन की रानी बन,
नाच उठे आनन्द-हर्ष से अखिल विश्व-जड़-चेतन!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग़ज़ल

श्री 'शेष'

जब नयन बने हों सुषमालय, घर - बार की चिन्ता कौन करे ?
अपनेपन का भी नहीं ध्यान; संसार की चिन्ता कौन करे ?

ज्योत्स्ना है उसका सौम्य हास, यमुना प्रिय वाणी का विलास;
मधुवन की जाए कौन डगर, अभिसार की चिन्ता कौन करे ?

मन में है साध समर्पण की, प्राणों में प्यास निवेदन की;
सारा जग ही भासता स्वप्न, शृङ्गार की चिन्ता कौन करे ?

तारे भी आंखों में गड़ते, धरती पर पांव नहीं पड़ते;
जब नभ - विहार करने निकले, आधार की चिन्ता कौन करे ?

लहरों के लास्य-भंवर में हम जीवन - तरनी को खे लाए,
अब पार की चिन्ता कौन करे, पतवार की चिन्ता कौन करे ?

अपनेपन को खो कर हमने शाश्वत - जीवन - वैभव पाया;
इस आत्म - विसर्जन के स्तर पर अधिकार की चिन्ता कौन करे ?

यह अस्त-व्यस्त वेश - भूषा, अटपटी अपरिचित - सी वाणी,
इस युग में 'शेष' भला ऐसे स्वरकार की चिन्ता कौन करे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय भारत का नया शासन-विधान बनाया जा रहा है। प्राचीन इतिहास से उस पर क्या प्रकाश पड़ता है, पुराने राज्यों की क्या कार्य-प्रणाली थी और उनसे वर्त्तमान राजनैतिक परिभाषाओं के लिए हमें कौन-से नये शब्द ज्ञात होते हैं, विद्वान लेखक ने इन सभी बातों पर इस लेख में संक्षेप से प्रकाश डाला है। लेख ज्ञानवर्द्धक भी है और रोचक भी।

प्रजातन्त्रों की प्राचीन परम्परा

श्री हरिदत्त वेदालंकार

निकट भविष्य में विधान-परिषद् में पेश किये जाने वाले प्रस्तावित भारतीय संविधान में भारत को प्रजातन्त्र-राज्य घोषित किया गया है। प्रजातन्त्र की पद्धति हमारे देश के लिए नवीन वस्तु नहीं है; किन्तु आज से तीस वर्ष पहिले अधिकांश विद्वानों की यह सम्मति थी कि प्रजातन्त्र योरोप की उपज है, प्राचीन यूनान में इसका बीज वपन हुआ था, मध्य-काल में इंगलैंड ने पार्लियामेंट के विकास द्वारा इसका पोषण किया, १८ वीं-१९ वीं शतियों में फ्रांस, अमरीका ने इसे उन्नत किया, भारत पर सदा निरंकुश राजाओं का शासन रहा, प्रजातन्त्र की शिक्षा उसने इंगलैंड और अमरीका से ग्रहण की है, इत्यादि। पिछली तीन दशाब्दियों की भारतीय इतिहास की खोज से ये धारणायें बिल्कुल भ्रांत सिद्ध हुई हैं। प्राचीन भारत में कम से कम डेढ़ हजार वर्ष तक गणतंत्रों की सत्ता बनी रही। वर्त्तमान समय में शासन-विधान तय्यार करते हुए हम इनके इतिहास से कई महत्वपूर्ण शिक्षायें ले सकते हैं, अपनी व्यवस्थापिका-परिषदों की कार्य-प्रणाली के सम्बन्ध में कई महत्वपूर्ण परिभाषायें और संज्ञायें जान सकते हैं, जिनके लिये आज हमें अंग्रेजी शब्दों का आश्रय लेना पड़ता है। यहां पिछली दो बातों पर ही विचार किया जायगा।

प्राचीन गणराज्य

किन्तु इससे पूर्व प्राचीन गण-राज्यों पर एक विहंगम दृष्टिपात आवश्यक है। १०००ई० पू० से ६०० ई० पू० तक के भारतीय इतिहास में इनका निरंतर वर्णन मिलता है। सर्वप्रथम उत्तरवैदिक युग में ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार आर्य-भारत के अधिकांश भाग—उत्तर, पूर्व और दक्षिण में 'वैराज्य' (राजा रहित राज्य) थे। हिमालय के पास उत्तर कुरु और उत्तर मद्र इस प्रकार के प्रमुख राज्य थे। केवल मध्य देश (दिल्ली से प्रयाग तक) और मगध में राजतन्त्र थे। पाणिनि के सूत्रों से प्रतीत होता है कि मद्र, वृजि,राजन्य, अन्धक, वृष्णि महाराज, भर्ग आदि अनेक प्रजातन्त्रात्मक संघ-राज्य थे। वाहीक देश (पंजाब की पांच नदियों तथा सिन्ध के बीच का प्रदेश) में इस प्रकार के अनेक राज्यों की सत्ता थी। बौद्ध साहित्य में शाक्य, कोलिय, लिच्छवी, विदेह, मल्ल, मोरिय और भग्ग गणतन्त्रों का उल्लेख मिलता है। कौटिलीय अर्थशास्त्र में पांचाल, कुरु, कुकुर, मद्रक, मल्लक, वृजिक तथा लिच्छविक गणों का वर्णन है। सिकन्दर को चौथी शती ई० पू० में पंजाब की विजय करते हुए पग-पग पर गणराज्यों से लोहा लेना पड़ा था। इन्होंने डट कर उसका मुका-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बला किया और उसकी सेना को करारी चोटें दीं। इनमें कठ, क्षुद्रक, मालव, शिवि, अग्रश्रेणि, अम्बष्ठ, क्षत्रिय, मुचिकर्ण उल्लेखनीय हैं। यूनानी लेखकों ने इन पर काफी प्रकाश डाला है। दिव्यावदान के शब्दों में उस समय भारत के कई देश गणाधीन और कई राजाधीन थे। प्रधानता गणराज्यों की थी। चन्द्रगुप्त मौर्य के सिंहासनारूढ़ होने पर उत्तरापथ, पश्चिम तथा दक्षिण-पश्चिम में प्रजातन्त्र-प्रणाली का अधिक प्रसार था। मौर्यों के समय में तथा उनके बाद उत्तर-पश्चिमी सीमा से यूनानियों तथा शकों के आक्रमणों के संकटपूर्ण समय में भी यौधेय, मालव, क्षुद्रक, शिवि, आर्जुनायन, औदुम्बर आदि गण अपनी सत्ता बनाये रहे, विदेशी शत्रुओं का मुकाबला करते रहे, पंजाब से कुशाय क्षत्रियों के विदेशी शासन का अन्त करने वाले यौधेय थे, विक्रमादित्य ने मालवों की सहायता से शकों को इस देश से भगाया। समुद्रगुप्त जैसे प्रतापी राजा ने भी यौधेय आदि गणराज्यों का उन्मूलन न करके, उनको करद बना कर उनके साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये; किन्तु इसके बाद ६०० ई० पू० से इन राज्यों का अन्त हो जाता है। इनके लोप के साथ ही हमारे राष्ट्रीय जीवन में क्षीणता और ह्रास के चिन्ह दृष्टिगोचर होते हैं। यह कहना कठिन है कि इनका अन्त हो जाने से ही हमारी जातीय अवनति हुई; किन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि भारतवर्ष को स्वाधीन बनाये रखने तथा उसकी संस्कृति में अनेक बहुमूल्य देनें प्रदान करने का श्रेय इन्हीं को है। शाक्य गणतन्त्र ने बौद्ध धर्म का, कठ ने कठोपनिषद् का, अन्धकवृष्णि संघ ने भगवद्गीता का अमर संदेश सुनाने वाले नरपुंगव उत्पन्न किये। गणतन्त्रों की शासन प्रणाली तथा राष्ट्रीय समृद्धि इतनी विख्यात थी कि उत्तरकुरु चिरकाल तक आदर्श राज्य माना जाता रहा। मालवों और क्षुद्रकों के गणराज्यों ने काफी समय तक भारतभूमि की विदेशी शासन से रक्षा की।

यह बड़े दुःख की बात है कि प्राचीन ग्रन्थों में इनका विस्तार से उल्लेख नहीं। यदि इस समय ऐसा ज्ञान उपलब्ध हो सकता, तो हम अपने पूर्वजों के डेढ़ हजार वर्षों के प्रजातन्त्र-राज्य चलाने के अनुभव का लाभ उठा सकते। इस समय हमारी दृष्टि पश्चिम की ओर है; इंगलैण्ड और अमरीका के शासन-विधानों के आधार पर नया भारतीय संविधान तय्यार किया गया है। यह सत्य है कि पुराने जमाने के भारतीय गणराज्यों और वर्त्तमान प्रजातन्त्रों के स्वरूप में आकाश-पाताल का अन्तर है। पुराने राज्यों की जन-संख्या सैकड़ों और हजारों में होती थी, आजकल वह लाखों और करोड़ों में है। प्राचीन गणराज्य एक नगर या उसके आसपास के थोड़े से प्रदेश तक सीमित होते थे, बड़े २ राज्य तहसीलों और जिलों के बराबर थे। किन्तु प्रजातन्त्र की कुछ मौलिक समस्यायें और कार्य-प्रणाली लगभग एक जैसी ही है, अतः इस विषय में वे हमारा कुछ मार्ग-दर्शन कर सकते हैं।

प्रजातन्त्र के नागरिकों के गुण

प्रजातन्त्र की सुरक्षा और वृद्धि के लिये नागरिकों में किन गुणों का होना आवश्यक है, इसका स्पष्टीकरण भगवान् बुद्ध ने बड़े सुन्दर ढंग से किया है। भारतीय विधान-परिषद् तथा सभी व्यवस्थापिका परिषदों के प्रवेश-द्वारों पर उनके वाक्य उत्कीर्ण किये जाने चाहियें। मगध का राजा अजातशत्रु लिच्छवियों और वज्जियों के वैभवशाली संघराज्य को अपने साम्राज्य का अंग बनाना चाहता था। उसने कई बार वज्जियों के विनाश का प्रयत्न किया, पर उसे सफलता नहीं मिली। अन्त में उसने अपने मन्त्री वर्षकार को भगवान बुद्ध के पास उनके विनाश का उपाय पूछने के लिये भेजा। उस समय तथागत ने कहा कि जब तक वज्जी सात अपरिहाणीय धर्मों का पालन करते रहेंगे, तब तक उनका उत्कर्ष होता रहेगा। यह सात धर्म हैं—एकत्रित होकर सभायें करना मिल कर सब राज्य-कार्य करना, राजनियमों का पालन, वृद्धों का सत्कार, कुल-स्त्रियों की प्रतिष्ठा, देवस्थानों का आदर, अर्हतों व धर्माचार्यों की पूजा। इनमें पहले तीन धर्म विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। वे राज्य में एकता बनाये रखने, राज्य के कार्यों के प्रति सतत् जागरूक रहने और राज्य के प्रति पूरी निष्ठा के साथ कार्य करने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल देते हैं। प्रजातन्त्र के सब से बड़े शत्रु हैं—फूट तथा राज्य के प्रति उदासीनता। मध्यकाल में ये दोनों हमारे राजनैतिक अधःपतन के कारण हुए। अंग्रेजी की एक कहावत है कि स्वतन्त्रता का मूल्य सतत् जागरूकता है। प्रजातन्त्र नागरिकों के सक्रिय सहयोग के बिना सफल नहीं हो सकता। यदि वे राज्य के लिए सर्वस्व समर्पण करने के लिए तैयार न हों, राज्य का आह्वान होने पर उसका समुचित उत्तर न दें, तो उस प्रजातन्त्र का पतन अनिवार्य है। वज्जियों के सम्बन्ध में यह कहा जाता था कि जब कभी आवश्यक बैठक के लिए बिगुल बजाया जाता था, तो वज्जि चाहे खा रहे हों, चाहे आभूषण या वस्त्र पहिन रहे हों, किन्तु भेरी का शब्द सुनते ही अध-खाये, अध-भूषित या अध-वस्त्र पहने ही सभा में एकत्र होते थे। वे संघ-हित तथा राज्य-कार्यों के प्रति सतत् चेतन और जागरूक थे। जब तक उनकी यह स्थिति रही, तब तक अजातशत्रु उनका पराभव करने में असमर्थ रहा। भारतीय प्रजातन्त्र को सफलता के लिए आज भी इन गुणों का होना उतना ही आवश्यक है, जितना आज से ढाई हजार वर्ष पहले भगवान् बुद्ध के समय में था।

सभा-संचालन-पद्धति

भगवान् बुद्ध ने अपने भिक्षु-संघ का संघटन तत्कालीन गणराज्यों के आदर्श पर किया था। स्वयं शाक्य प्रजातन्त्र का अधिवासी होने से उनके लिए यह सर्वथा स्वाभाविक था। अतः बौद्ध धर्म-ग्रन्थों में सभा संचालन की जो पद्धति दी गई है, गणराज्यों में सम्भवतः उसी का अनुसरण होता होगा। यह पद्धति बिल्कुल आधुनिक और अध्यतनीन प्रतीत होती है। सभा में विचारणीय विषय को प्रस्ताव-रूप में उपस्थित करने से पूर्व उसकी सूचना या नोटिस देना पड़ता था। नोटिस को 'ज्ञप्ति' कहा जाता था। प्रस्ताव का पारिभाषिक नाम 'प्रतिज्ञा' था। जो सदस्य प्रस्ताव के पक्ष में होते थे, वे चुप रहते थे और विरोधी अपना मतभेद प्रकट करते थे। जिस प्रकार आज पार्लियामेंट या असेम्बली में बिल को तीन वाचनों द्वारा पास किया जाता है, इसी तरह उस समय भी 'प्रतिज्ञा' का तीन बार पेश होना आवश्यक था। तीनों बार संघ के मौन रहने पर वह प्रस्ताव स्वीकृत समझा जाता था। सभाओं के लिए गणपूर्ति (कोरम) का नियम था। यदि कोई कार्य गणपूर्ति के बिना होता था, तो अवैध समझा जाता था। गणपूरक नामक कर्मचारी का यह कार्य होता था कि वह कोरम पूरा करने का यत्न करे। आजकल की व्यवस्थापिका-सभाओं के 'ह्विप' का पूर्वज गणपूरक ही प्रतीत होता है।

वोट देने की पद्धति

विवादास्पद प्रश्नों पर पक्ष-विपक्ष में भाषणों के बाद वोट लिए जाते थे। ऐसे प्रश्नों का निर्णय बहुमत द्वारा होता था। बहुमत द्वारा निर्णय की पद्धति को ये भूयस्सिकम्' या 'ये भूयसीयम्' कहते थे। वोट को 'छन्द' कहा जाता था। संस्कृत में छन्द का दूसरा अर्थ स्वतन्त्रता भी है। इससे यह ज्ञात होता है कि इसके लिए स्वतन्त्र सम्मति को बहुत महत्व दिया जाता था। मतपत्र को 'शलाका' कहते थे, वोट लेने को 'शलाका ग्रहण' और वोट लेने वाले अधिकारी (रिटर्निंग आफिसर) को 'शलाका ग्राहक'। शलाका-ग्राहक की नियुक्ति के समय कई बातों का ध्यान रखा जाता था—वह स्वच्छन्द आचरण करने वाला न हो, निष्पक्षपात हो, किसी शक्तिशाली दल के प्रभाव में न हो तथा उसमें पूर्वाग्रहों या पहले से बनायी सम्मतियों का अभाव हो।

प्राचीन संघों में वोट लेने की तीन पद्धतियां थीं—(१) विवृतक (२) सकर्णजल्पक (३) गूढ़क। पहली पद्धति में वोट खुले रूप में लिया जाता था, दूसरी में वोट देने वाला 'शलाका-ग्राहक' के कान में अपना मत प्रकट करता था और तीसरी आजकल की गुप्त-वोट-प्रणाली से कुछ साम्य रखती थी। इसमें जितने पक्ष हों, शलाका-ग्राहक उतने रंग की शलाकायें बनाता था। बारी बारी से भिक्षु उसके पास वोट देने के लिए आते थे, शलाका-ग्राहक उन्हें यह कहता था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि अमुक रंग की शलाका अमुक पक्ष की है, तुम्हें जो पक्ष अभीष्ट हो, उसकी शलाका उठा लो। उस के शलाका उठा लेने पर उसे कहा जाता था कि तुम किसी दूसरे को यह न बताना कि तुमने कौन-सी शलाका उठाई है।

विचारार्थ प्रस्तुत कई प्रश्नों पर उग्र मतभेद होता था; निर्णय पर पहुँचना कठिन हो जाता था। इस अवस्था में निर्वाचित समिति की व्यवस्था की जाती थी। एक उपसमिति बना दी जाती, जिसे 'उद्वाहिका' कहा जाता था। यह प्रश्न पर विचार कर अपनी सम्मति द्वारा विवाद का शमन करती। द्वितीय बौद्ध महासभा में इसी पद्धति का प्रयोग किया गया था। सभा में अनर्गल विवाद और बकवाद की स्थिति उत्पन्न होने पर आयुष्मान् रेवत ने ८ भिक्षुओं की एक उद्वाहिका का प्रस्ताव किया था। यदि झगड़ा समिति द्वारा भी शान्त न हो, तो उसके हल का उपाय बहुमत ही था।

शाक्यों में सभा-भवन को 'सन्थागार' कहते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि इन सभाओं की कार्यवाही को लिखने के लिये वर्त्तमान काल के स्टैनोग्राफरों की भांति कुछ लेखक होते थे। गणराज्य के मुखिया को प्रायः राजा या महाराजा कहा जाता था, किन्तु यौधेय-गण के सिक्कों में 'पुरस्कृत' शब्द का प्रयोग है। इस समय यह प्रश्न विवादास्पद है कि भारत में राजसत्ता के सर्वोच्च अधिकारी को क्या कहा जाय? 'राष्ट्रपति' शब्द राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस के सभापति के लिये रूढ़ हो चुका है, प्रेजीडेण्ट के लिये उसका प्रयोग समीचीन नहीं जान पड़ता। 'पुरस्कृत' प्राचीन शब्द है। इसका तथा शक्ति, छन्द, गूढक आदि पुराने शब्दों का प्रयोग वांछनीय है। आशा है, भारत में नवीन गणतन्त्र का निर्माण करते हुए उपयोगी प्राचीन परम्पराओं तथा परिभाषाओं को विस्मृत नहीं किया जायगा। •

☆

दीप-यामिनी आई!

श्री 'नीरव' एम० ए०

एक वर्ष के बाद आज फिर
दीप-यामिनी आई!

सजे दिशा-वधुओं के बाने,
जगे ज्योति के गीत सुहाने,
तिमिर-परी ने आज मदभरी
साधी स्वर-शहनाई!

दीप और तारों की रातें,
सुख से सनी स्नेह-बरसातें,
लख असंख्य नयनों से नभ को
रसा और सरसाई!

हुए कलुष के प्राण उजाले,
यह कण-कण में स्वर्ग सम्हाले,
भर आलोक अंक में फूली
छाया की तरुणाई!

जग-जन लाज बिखेर रहे हैं,
ये सब प्रिय-पथ हेर रहे हैं,
प्राण, करोगे इस आंगन में
तुम किसकी पहुनाई?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

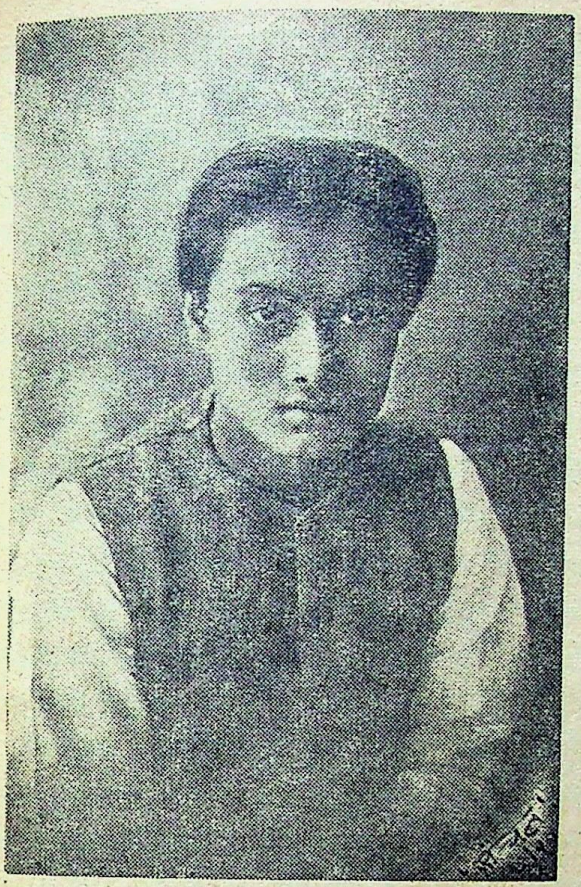

एक भेंट

कवि 'अंचल'

श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ३५ वें अधिवेशन में मैं जब बम्बई गया था, तब यह न सोचा था कि वहां उन व्यक्तियों से भी भेंट हो जायगी, जो शुद्ध साहित्य-सेवा में रत रहते हैं। कारण—सम्मेलन कुछ गुटबन्दों और अखाड़ियों की सम्पत्ति है। उसमें साहित्यसेवी के लिए स्थान नहीं है। महादेवी जी के शब्दों में 'साहित्यसेवी होना सम्मेलन के लिए एक प्रकार से अयोग्य सिद्ध होना है।' इतने पर भी बम्बई में जितने साहित्यिक आए थे, उतने किसी और सम्मेलन के अधिवेशन में शायद ही आये हों। पीछे इसका पता चला कि सम्मेलन से तो अधिक सरोकार साहित्यिकों को न था, वे तो बम्बई देखने आये थे।···खैर, यहीं 'अंचल' जी से भेंट हुई। अबोहर-सम्मेलन के बाद से 'अंचल' जी से यह मेरा पहिला साक्षात् परिचय था। पहिला इसलिये कि अबोहर में 'अंचल' जी से अधिक निकटता नहीं हो पाई थी, जबकि इस बीच में पत्र-व्यवहार द्वारा हम लोग काफी निकट आ चुके थे। अबोहर में मैंने उन्हें दम्भी समझा था, जब कि अब पांच-छः साल के बाद—मैं उनके कवि-हृदय की परख कर चुका था। उन्होंने भेंट होते ही आत्मीयता के साथ एकदम घर-बाहर की बातें पूछ डालीं; मानों वे मेरे समस्त सुख-दुःख का लेखा ले रहे हों। इस मस्त और सशक्त कवि के व्यवहार को देख कर मुझे उसकी 'मधूलिका' की यह पंक्ति याद आ गई—

"हमें सदा विश्वास सखी री, इस मदभरी जवानी का!"

'मदभरी जवानी' के विश्वासी इस कवि की 'लाल-चूनर' की आलोचना में मैंने इसकी गणना 'लघुत्रयी' में की थी। आप शायद इस 'लघुत्रयी' का अर्थ जानना चाहेंगे। आपकी जानकारी के लिए मैं इसका स्पष्टीकरण कर दूं। छायावादी युग में प्रसाद, निराला और पंत को 'वृहत्रयी' कहा गया था। मैंने प्रगतिवादी युग में नरेन्द्र, 'अंचल' और 'सुमन' को लघुत्रयी नाम दिया है। यह लघुत्रयी, संभव है, आपको न रुचे; परन्तु इसकी सार्थकता आप तब समझेंगे, जब इस पर गंभीरता से विचार करेंगे। नई कविता में इन तीनों कवियों ने पर्याप्त योग दिया है, यही सोच कर मैंने यह नामकरण किया है।

'अंचल' जी से भेंट होते ही मेरे मन में आया कि क्यों न उनसे इण्टरव्यू लिया जाय। बम्बई आने का कुछ तो लाभ उठाया जाय। यह विचार मन में आना था कि उसी दिन शाम को मैंने अपना विचार 'अंचल' जी के सामने रख दिया। मेरे इण्टरव्यू लेने का अर्थ हिन्दी के कलाकारों के आन्तरिक जीवन का रहस्योद्घाटन है, इसे कलाकार और मेरे पाठक दोनों जानते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। इसीलिए मैं जब-जब इण्टरव्यू के लिए किसी भी व्यक्ति के पास गया हूँ, उसने मेरे ऊपर और मेरे द्वारा हिन्दी जनता पर कृपा की है; अपने जीवन के अन्तरङ्ग का वास्तविक लेखा देकर। 'अंचल' जी भी तैयार हो गये और दूसरे दिन मेरे ही तम्बू में वे उपस्थित हो गये, इसलिये कि वहां एकान्त था।

मैं अपनी लेखनी संभाले बैठ गया हूँ और अंचल' जी जमीन पर एक साथी के बिस्तर के पुलन्दे का सहारा लिये लेट गये हैं। तम्बू में उस समय और कोई नहीं है। केवल मैं और प्रतिभाशाली कवि कुछ देर तक इधर उधर की बातचीत में डूबे रहते हैं। फिर भेंट लेने वाला कर्त्तव्य की पुकार पर तटस्थ होकर प्रश्न करने को बाध्य होता है और पूछता है—"आपका बाल्यकाल किन परिस्थितियों में बीता और उन्होंने आपके निर्माण में कहां तक सहायता पहुँचाई?"

'अंचल' जी यह देख कर कि अब उत्तर दिए बिना छुटकारा नहीं है, चौंकते हुए भी प्रश्नकर्त्ता की भांति गम्भीर होकर कहने लगते हैं—"जिस समय मैंने होश सँभाला, उस समय अपने को विचित्र स्थिति में पाया। मेरे पूज्य पिता पं० मातादीन शुक्ल उस समय तीन-तीन पत्रों का सम्पादन कर रहे थे। जब्बलपुर से वे 'छात्र-सहोदर' नामक मासिक, 'हितकारिणी' नाम की दूसरी मासिक पत्रिका और 'तिलक' नाम के अर्द्ध-साप्ताहिक का सम्पादन कर रहे थे। मैं केवल ७-८ वर्ष का था। हमारा घर उस समय जब्बलपुर के साहित्यिक केन्द्रों में एक था। हिन्दी के कितने ही तत्कालीन उदीयमान लेखक नित्य सुबह-शाम उठते-बैठते थे। घर में कोई नौकर न होने के कारण हर दसवें-पन्द्रहवें मिनट बाद मुझे भीतर जाकर पान लाने पड़ते थे और बराबर पास बैठना पड़ता था। साहित्यिक दृष्टि से ऐसा अनुकूल वातावरण मुझे मिला, जो विरलों को मिलता है। यहीं से मेरे भीतर साहित्य के प्रति अनुराग का अंकुर उगता है।

पिता जी एक स्कूल में अध्यापक भी थे। गर्मी की छुट्टी में हम लोग दो मास के लिये सपरिवार गांव चले जाते थे। हमारा गांव फतेहपुर जिले में जमना के किनारे पर है और चारों ओर जैसे प्राकृतिक सौंदर्य श्री से लदा पड़ता है। जब्बलपुर के शहरी वातावरण से निकल कर और पारिवारिक अनुशासनों से मुक्त होकर गांव में पहुँचते ही मैं बिल्कुल आवारा हो जाता था। नानी के यहां, जहां हम लोग ठहरते थे, मैं दिन में केवल दो बार घर जाता था। दिन भर न जाने कहां-कहां, किन-किन जंगलों में धूप और लू की परवाह न कर घूमा करता था। अधिकतर अकेला रहता था, पर कभी-कभी साथ में एक साथी भी होता था। दो महीने कितनी जल्दी बीत जाते थे! गांव से वापस चलने की तारीखें जुलाई शुरू होते ही दिल के चारों ओर चक्कर काटने लगती थीं। मेरा साथी तो और भी व्याकुल हो जाता था। मेरे चार सौ मील दूर चले जाने की और फिर अगली गर्मियों तक न मिल सकने की विषादानत परिस्थिति हम लोगों को कई दिन तक ओस से भीगा मन लिए एक दूसरे से बात भी न करने देती थी। शिशिर की संध्या की तरह हम लोग मन की ओस से बराबर भीगते रहते थे। न मेरा साथी मुझसे रुकने का आग्रह कर सकता था और न मैं असहाय किशोर उसे अपने साथ ले जाने की बात मन में ला सकता था। हम दोनों दिल के करुण घूंट पीकर रह जाते थे। वर्षों यही क्रम चलता रहा। मिलन और विरह के ऐसे अनेक झटके खाते-खाते मैं आगे बढ़ता गया।"

इतना कहते-कहते 'अंचल' जी, मैंने देखा, कुछ रुकने से लगे। शायद इसलिए कि जो वे कह रहे थे, उसे अधिक वे नहीं कहना चाहते थे। खैर, जो कुछ वे कह चुके थे, मेरे लिए वही पर्याप्त था; इस करण मैंने उनसे आगे पूछा—"आप को साहित्य-सृजन की प्रेरणा कहां से और किस प्रकार मिली?"

अपने को व्यवस्थित करते हुए और पान की गिलोरियां मुंह में दबाते हुए वे बोले—"आठ-नौ वर्ष की उम्र से ही कविता की ओर मेरी अभिरुचि जागृत होगई थी। पिता जी के मुख से उनकी और दूसरे कवियों की सरस रचनाएं सुनते-सुनते और उन्हें जोर-जोर से स्वयं पढ़ते-पढ़ते मैं उसी समय से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमीन-आसमान के स्वप्न देखने लगा था। एक ओर मेरी बाह्य परिस्थितियां मुझे कवित्व के प्रति—रस के माधुर्य के प्रति अधिकाधिक ग्रहणशील बनाती थीं, दूसरी ओर जैसे-जैसे मन कविता के उल्लास और उत्साह को आत्मसात् करता जाता था, वैसे-वैसे जीवन की स्थितियां, मन की गति और प्रतिवर्ष मिलने वाले और बिछुड़ने वाले साथी के प्रति एक बड़ी ही उत्कट, मादक और एकनिष्ठ परिपूर्णता तन-मन पर छाई रहती थी। मैं तुकबन्दियां तो कभी से करने लगा था, जिनमें अर्थ तो कम होता था, संगति नहीं के बराबर होती थी, पर मन की असहनीय अभिलाषा व्यक्त हो ही जाती थी। लेकिन उस सब को लिखना नहीं कहा जा सकता। हां, एक बात अवश्य है कि अभिव्यक्ति की शक्ति तो उस समय नहीं थी; फिर भी एक तृष्णा मन से उठते बैठते नहीं जाती थी। अपने साथी के तन और तन से भी अधिक उसके चम-चम मन की सुन्दरता को कैसे शब्दों में बांधूं, इसी के लिए मैं पंखहीन पक्षी की तरह अपने भीतर-भीतर तड़प कर रह जाता था। मन में पूरा विश्वास था कि उसके कपूर जैसे तन और चांदनी के समुद्र जैसे मन के गीत जल्दी से जल्दी गा लूंगा। लेकिन आज पन्द्रह सोलह वर्ष लिख लेने के बाद और भाषा पर किसी सीमा तक अधिकार उपलब्ध कर लेने के बाद मुझसे ईमानदारी से यदि पूछा जाय, तो मैं कहूँगा कि मेरे मन पर पड़ी उस जीवित मूर्ति की छाया की अवदातता की एक झलक भी मैं नहीं दिखा सका। आगे दिखा पाऊंगा, यह भी संदिग्ध है, क्योंकि मेरे पिता जी अक्सर कहा करते हैं कि संसार के अच्छे कवियों की कवितायें बीस और पैंतीस वर्ष की उम्र के बीच में लिखी गई हैं। साहित्य के इतिहास की दृष्टि से ऐसा सत्य होगा, तभी तो मेरे पिता जी कहते हैं। और मैं इस अवधि के द्वार बन्द करने जा रहा हूँ। बीच में ऐसी मानसिक क्लान्ति और जड़ता का समय आया, जब मैं कविता की ओर से बिल्कुल विमुख हो गया और जीवन में ऐसा भयानक गद्य छा गया कि इन्टरमीडियेट में आते-आते मैं कविता लिखने

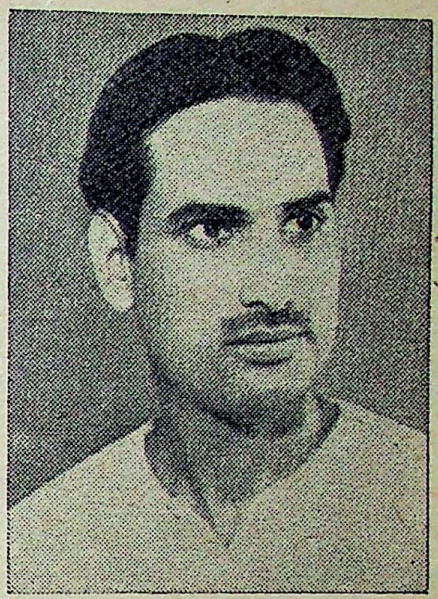

इस लेख के लेखक श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'

की ओर से बिल्कुल और पढ़ने की ओर से भी अपेक्षाकृत बहुत अधिक अलग हो गया। उस समय यदि कोई मुझसे कविता लिखने के लिये कहता था, तो मैं अपने अध्यापक के शब्दों को दुहरा कर कहता था कि यह गद्य-काल है। कविता लिखने वाले तो बहुत हैं, पर सशक्त गद्य लिखने वाले कम। मैं उसी दिशा तक सीमित रहूँगा जिस समय मैं सातवें दर्जे में था, उस समय मेरी पहिली कहानी, जो इतिहास के आधार पर थी, कान्यकुब्ज कालेज, लखनऊ की पत्रिका में निकली थी। कालेज की पत्रिका के प्रत्येक अंक में कहानी या गम्भीर लेख लिखने की चेष्टा करता था। मेरे अध्यापक मेरी योग्यता और साहित्य के सम्बन्ध में मेरी जानकारी पर मुग्ध थे। न जाने हिंदी की कितनी पुस्तकें मैंने उसी समय पढ़ डालीं थीं—विशेष कर कहानी, उपन्यास-यात्रा, वृत्तान्त और समझ में आने वाले गम्भीर लेख-संग्रह भी। हिंदी की सारी पत्रिकाएं नियमित रूप से प्रतिमास पढ़ता और प्रत्येक उल्लेखनीय लेखक की नई से नई कविता, कहानी या लेख कहां प्रकाशित हुआ है, यह मुझे ज्ञात रहता था। मेरे अध्यापकगण मुझसे कविता लिखने का आग्रह भी करते थे, पर मेरा मन तो मरुधरा बन चुका था। कविता लिखने की मेरी प्रवृत्ति ही नहीं होती थी। यूनीवर्सिटी में आकर फिर कविता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर मेरा खोया और सोया प्रेम जागा और लौटा। मेरी सबसे पहिली कविता सन् १९३२ में 'माधुरी' के मई या जून के अंक में निकली थी। तब से जीवन में कविता की ऐसी लहर आई कि आज तक कविता अविराम गति से लिखे जा रहा हूं। सैकड़ों कविताएं लिख डालीं। मेरे साथ एक मुश्किल और है। मेरा बचपन का साथी अनुभव तो करता है, मन उसका भी बिद्ध होता है, आंखें उसकी भी रोती हैं, उसकी आत्मा से भी बराबर उष्ण रक्त की बूंदें टपकती हैं; लेकिन वह गरीब उनको व्यक्त नहीं कर पाता। एक 'सविवेक पशु' होने के नाते मैं इतना स्वार्थी नहीं हो पाता कि केवल अपनी ही बेचैनियों को व्यक्त करके चुप हो जाऊँ। यदि ऐसा करता हूँ, तो मुझे लगता है कि मेरा ईमान और उसकी निर्विड़ता मुझे क्षमा नहीं कर सकती। आखिर मुझे अपनी ही भोगी हुई यातना और मानसिक पीड़ा व्यक्त करने का क्या अधिकार है, यदि मैं अपने जीवन की खंडित किन्तु साकार अपूर्ति की मनोवेदना व्यक्त नहीं करता?"

"तो क्या मैं यह समझूं कि आपकी प्रेरणा का मूल-स्रोत यही मूक, अपनी पीड़ा को व्यक्त करने में असमर्थ साथी है?" मैंने पूछा।

"हां अवश्य," उन्होंने कहा, "कविता की प्रेरणा का स्रोत तो वह है ही, और भी न जाने क्या क्या है? मेरे अशान्त, उद्भ्रांत, अधीर, चंचल, दुर्बल और न जाने कहां-कहां की बेचैनियों से घिरे मन को उसमें वही मिलता है, जो तुलसी को राम में या सूर को कृष्ण में मिलता था। इन महा-कवियों की स्वप्न में भी समता कर सकता हूँ, यह इसका आशय नहीं है; मेरा मतलब सिर्फ मन की निर्भ्रान्त एकाग्रता और एकनिष्ठता से है। उपर्युक्त कथन से केवल मेरे मन के भीतर उठ-उठ कर मिटने वाली और मिट-मिट कर उठने वाली सर्वस्व-समर्पण की बुझती जलती कामना की 'लौ' का ही भाव समझा जाय। यों भी मैं समझता हूँ कि पूजा का मूर्त्याधार कोई महत्व नहीं रखता। जिस निष्कपट तन्मयता के साथ तुलसी राम को प्यार कर सकते थे या उनकी भक्ति कर सकते थे, जीवन की जड़ों में उमड़ने वाली वैसी ही दुखड़े-भरी लगन से यदि एक साथी दूसरे साथी पर मरता-मिटता और बनता-बिगड़ता है, तो तुलसी से वह छोटा भक्त या आराधक कैसे हो सकता है? आपके इस प्रश्न के उत्तर में यदि मेरा सारा जीवन बोल उठे, तो भी वह प्रेरणा के इस महान् स्रोत की विशालता का आभास न करा सकेगा। चारों ओर से पराजित हो कर और टूट कर जब दृगों के आगे अँधेरा छाने लगता है या कोई बहुत बड़ा प्रलोभन आकर आदर्शों के स्वप्नों को मृत सिद्ध करने लगता है, उस समय जीवन की वही ज्योतिर्मयी दिशा आकर मन को बल प्रदान करती है। जीवन की वही कसक जैसे उठते-बैठते कहती चलती है—'संतोष, विश्राम और पराजयशीलता मृत्यु है।' संतोष परिस्थितियों के प्रति पराजयशीलता का ही दूसरा नाम है। उसके विपरीत असन्तोष और तृष्णा जीवन है। यदि मृत्यु के ऊपर विजय प्राप्त करनी है, तो जीवन में डूबे रहना ही होगा। मैं नहीं समझता कि जिस व्यक्ति के मन पर जीवन की विषमता का कुटिल प्रहार हुआ हो, वह इसके अतिरिक्त किसी अन्य मनोदशा में कैसे रह सकता है? आज की गलत सामाजिक व्यवस्था और उसके शोषण के दुष्परिणामों ने भी मुझे कम प्रेरणा नहीं दी है।"

"तब तो इसके आधार पर आपके आलोचकों का यह कथन सत्य प्रतीत होता है कि 'अंचल' की कविता में असंतोष, तृष्णा और नग्नता का प्रदर्शन है और उसमें कलाकार के योग्य संयम की कमी है।"

"नग्नता का आरोप स्वीकार करने के लिए मैं तैयार नहीं हूँ। मैं मानता हूँ कि अपने आवेगात्मक पुनर्जन्म के आरम्भिक दिनों में मैंने दो-चार कविताओं में वासना की तीव्र अभिव्यक्ति की है और मेरा भाव-प्रकाशन शारीरिकता की तरंगों से परिपूर्ण है, लेकिन मेरे पूरे काव्य में पांच प्रतिशत लाइनें भी तो ऐसी नहीं हैं। यदि आलोचक मेरे काव्य सृजन के इस सबसे छोटे अंश को ध्यान में रख कर ही मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोनसोन मार्का पुलियां

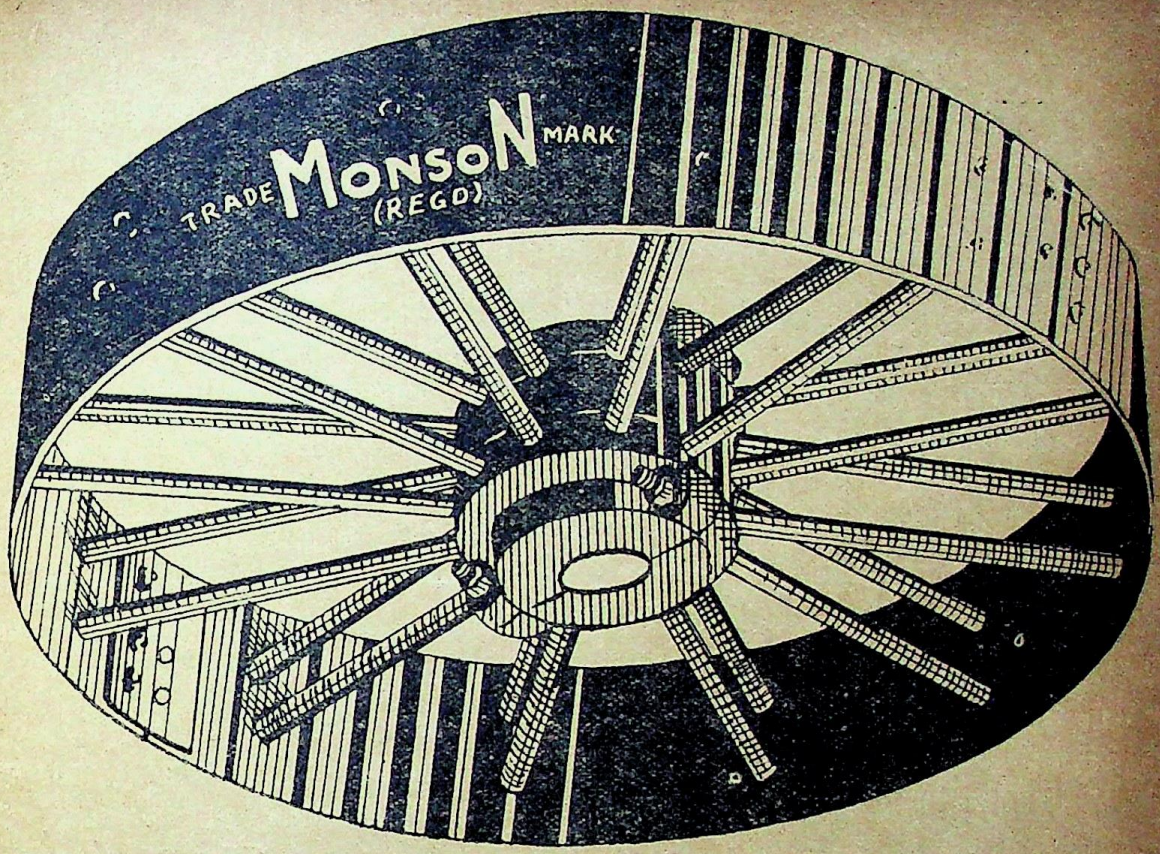

देखने में—सुन्दर चलने में—मजबूत कीमतों में—सस्ती

हमारे यहाँ— हर साइज व हर किस्म की डबल, सिंगल आर्म तथा ढली हुई (Casting) पुलियां बनती हैं आर्डर की सप्लाई ठीक समय पर की जाती है। नीज़ स्पैशल आर्डर ४८ घण्टे में पूरा किया जाता है।

खरीदते समय मोनसोन मार्का अवश्य देखिये

MONSON

शोरूम व हैड आफिस
१४२ तेलीवाड़ा रोड, देहली
फोन आफिस—८०४७
,, घर —५६८५

फैक्टरी जायसवाल नगर लूनी रोड
शाहदरा
तार का पता—
"MONSON" देहली

दी जनरल इण्डस्ट्रीयल मशीनरी एण्ड टूल्ज मैन्यूफैक्चरिंग कं०
प्रोप्राइटर्ज—
दी वैस्ट्रन होज़री एण्ड जनरल मिल्ज लि०, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुर स्मृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीप-सुन्दरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रधान-मंत्री

किस वेश में अधिक
जंचते हैं ?

★

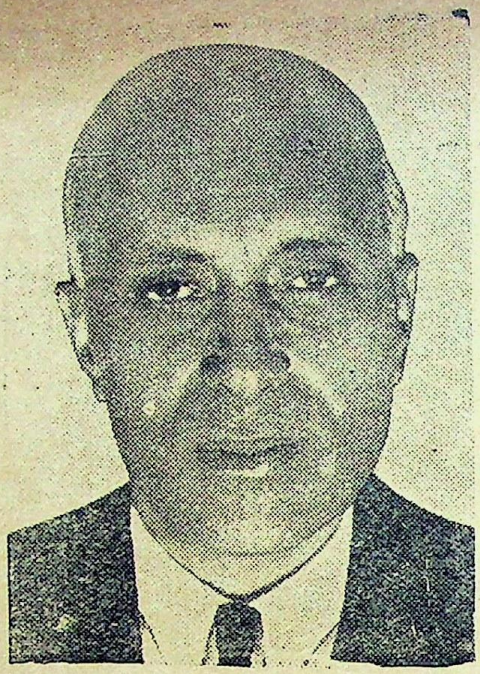

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारी कविताओं पर इस प्रकार फतवा दे देते हैं, तो इसमें मेरा दुर्भाग्य तो है ही, साथ ही मेरे आलोचकों की सदाशयता पर भी सन्देह होने लगता है। प्रगति की चेतना के इस नवयुग में शायद कुछ शक्ति रखने वाले कवियों को समाप्त करने का उनके पास यही अस्त्र है। लेकिन मैं तो इस प्रकार की चेष्टा को बड़े निम्न धरातल की बात समझता हूं, जहां मुझे घुटन मालूम होने लगती है। नग्नता से मैं उतनी ही घृणा करता हूँ, जितनी कोई भी परिष्कृत रुचि रखने वाला व्यक्ति कर सकता है। एक बात जरूर है, एक विदेशी उपन्यासकार के शब्दों में, मैंने कभी नारी को उस दृष्टि से नहीं देखा, जिस दृष्टि से वह स्वयं अपने को आदमकद आइने के सामने प्रसाधन करते समय खड़ी होकर देखती है। हमारे हिन्दी के आधुनिक सौंदर्यवादी कवियों ने नारी को इसी रूप में देखा है, जैसे पंत, प्रसाद, निराला आदि। मेरी दृष्टि सदैव एक सामाजिक प्राणी की रही है। समाज में नारी के बहुत से रूप होते हैं। मां, बहिन, भाभी, प्रेमिका, साथिन, सहपाठिन, सहकर्मिणी आदि न जाने कितने रूप उसके हैं। नारी को मैं इसीलिए उस मुग्ध और शैशवभरी तटस्थ संभ्रमशील तथा निस्संग दृष्टि से नहीं देख सका, जिस दृष्टि से छायावादी कवियों ने देखा। साथ ही यह भी तय है कि भावधारा और विचारशीलता में भले ही हम यथार्थवादी और प्रगतिशील हों, पर हमारी सामाजिक चेतना और नारी-सम्बन्धी मान्यताएं अभी छायावादी युग जैसी ही हैं। मेरी कविता में प्रकट होने वाली तृष्णा और लालसा शायद इसलिए भी उन्हें नग्न मालूम देती है। यदि हमारा समाज भी उसी गति से आगे बढ़ा होता, जिस गति से हमारा साहित्य बढ़ा है, तो आज मेरे और मेरे जैसे अन्य कवियों पर वह आक्षेप न लगाया जाता, जो लगाया जाता है।

यह तो हुई नग्नता की बात। प्रदर्शन के सम्बन्ध में मुझे कहना है कि प्रदर्शन वह करता है, जिसके पास कुछ होता है। मैं तो इतना शून्य हूँ, इतनी रिक्तता अपने में पाता हूँ, जिसे दूसरा मनुष्य बरदाश्त नहीं कर सकता। ऐसा अकिंचन और अपदार्थ व्यक्ति तो अपने भीतर अधिकाधिक डूबेगा, न कि प्रदर्शन करने के लिए बाहर उभरेगा। प्रदर्शन में तो कृत्रिमता का बोध होता है मैं और किसी भी दोष का दोषी होऊं, पर साहित्य में—और जीवन में भी—कभी प्रदर्शन का हिमायती नहीं रहा। अतः मैं यह आरोप भी मानने को तैयार नहीं हूं। आपके सामने आज पहले-पहल ही मैं यह बात कह रहा हूं। आलोचकों की न जाने कितनी रायें मुझ पर बनीं, न जाने कितने फतवे मुझ पर दिए गए; लेकिन मैंने पहली पुस्तक प्रकाशित कराते ही यह निश्चय कर लिया था कि किसी भी आलोचक की राय न काटूँगा। कोई आवश्यक नहीं कि जो मैं लिखूं वह सब को पसंद ही आये। और यदि मैं सामाजिक मर्यादा को ठेस नहीं पहुँचाता, तो मुझे पूरी स्वतंत्रता है कि मैं जो चाहूँ सो लिखूं। मैं स्वतन्त्रता की परिभाषा में गलतियां कर सकने का अधिकार मानता हूँ और साहित्यिक के नाते मैं स्वतन्त्रता का दावा कर सकता हूँ। हां, मर्यादा की बात भी साफ कर देना चाहता हूँ। मैं तो यह मानता हूं कि जीवन का सजीव चित्रण ही एक जीती-जागती, हंसती-बोलती मर्यादा है। अपने आदर्श के प्रति वफादारी से बढ़ कर न तो कोई परम्परा है और न कोई सामाजिक विश्वास। यह आदर्श और उसके प्रति एकप्राणता यदि मैं अपने में ला सकूं, तो बाह्य दृष्टि से मैं आचारिक मर्यादा का अतिक्रमण कर सकता हूँ; पर जहां तक तत्वों की निष्ठा का सम्बन्ध है, वहां तक मेरा साहित्य समाज को और समाज की इकाई पाठक को चैतन्य की ओर ही ले जायगा। मर्यादा या उसके पालन का प्रश्न साहित्यकार को उसी दशा में परेशान कर सकता है, जब उसके पास कोई दीपक की तरह जलता आदर्श न हो। फिर मैं यह नहीं समझता कि जो व्यक्ति अपने को आज के आगे बढ़े बौद्धिक युग में आदर्शवादी घोषित करता या मानता है, इसमें कोई हीनता नहीं समझता, उस पर मर्यादा के भंग करने का दोष कैसे लगाया जाता है? क्या कविता में चुम्बन का एक उल्लेख करते ही या आलिंगन की एक व्याकुलता का चित्रण होते ही सामाजिक मर्यादा डगमगाने लगती है? यदि एक नारी पुरुष के प्रति अपना सम्पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पण करती है या पुरुष नारी-सौंदर्य के प्रति, उसके अंगों के दरस-परस के प्रति कौतूहल भरी अनुरक्ति दिखाता है—जैसा मेरे एक उपन्यास में चित्रित किया गया है—तो इससे क्या सदाचार की परम्परा नष्ट हो जाती है ? क्या हमारे सामाजिक सौख्य और आचारिक आधार की जड़ें इतनी कमजोर हैं ?"

इस अंतिम वाक्य की समाप्ति के साथ हमारे एक साथी ने सूचना दी, "आज कवि-सम्मेलन है, उसमें सबको चलना है।"

यह सूचना मानों हमारे लिये विराम का संकेत बन कर आई। हम लोगों ने अपनी बातचीत स्थगित कर दी और कवि-सम्मेलन के लिए तैयार होने का उपक्रम करने चल दिए।

इण्टरव्यू को पूरा करने के लिए हम लोग फिर मिले—बम्बई प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कार्यालय में। एक बगल वाले कमरे में हम इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए बैठे। साथ में जब्बलपुर के प्रसिद्ध साहित्यसेवी श्री वसन्त पुराणिक भी थे। आज हमने अधिक समय बात-चीत में नहीं लगाया। समय नष्ट न हो, यह सोच कर मैंने 'अंचल' जी से पूछा—"वे देशी-विदेशी कलाकार कौन-से हैं, जिनका आपके ऊपर विशेष प्रभाव पड़ा है ?"

'अंचल' जी ने कहा—"मेरे जीवन पर सब से अधिक प्रभाव रवीन्द्र और शरत् का है। रवि बाबू की सौंदर्य-निष्ठा, रस-सृष्टि, जीवन की तरंगित सुषमा-सज्जा और अमूर्त की विराटता, भव्यता और प्रसारता को दैनिक जीवन के छोटे-छोटे मूर्त आधारों में भरने की अद्भुत क्षमता मुझे बहुत भाती रही है। दूसरी ओर शरत् का सामाजिक दृष्टिकोण और उसके भीतर से जगमगाता हुआ व्यक्तित्ववाद मुझे जीवन के सम्बन्ध में और उससे सम्बन्धित सांसारिक व्यापारों के सम्बन्ध में एक निश्चित दृष्टि प्रदान करते हैं। यही कारण है कि अभिव्यक्ति के निखार और भाव-प्रकाशन की चित्रात्मकता के लिए मैं रवि बाबू का ऋणी हूँ, तो अपने उपन्यासों में सुरक्षित आदर्शवाद के लिए शरत् ने मुझे बल दिया है। कथा का रस तो शरत् बाबू में है ही, सब से बड़ी बात उनमें मुझे यह मिलती है उनका सम्पूर्ण साहित्य उन अहंवादी बौद्धिकों चुनौती है, जो अपनी दृष्टि में डूबे रह कर और अ माजिक होकर समाज का संचालन करना चाहते लोग कहते हैं कि शरत् में व्यंग की आधुनिकता है। उन्हें मालूम होना चाहिए कि आधुनिक सा की विशेषता जो व्यंग माना जाता है, उसके सामाजिक प्रेरणा उतनी नहीं होती, जितनी अप महत्वाकांक्षाओं से पराजित हो जाने के कारण उ होने वाली अतृप्ति और अवसाद-वृत्ति। शरत् साहित्य में यही नहीं है। ऐसी अनासक्त, निरप तटस्थता और जीवन की उलझनभरी समस्याओं प्रति ऐसा आदर्शप्राण मनोभाव भारतीय कलाक में कम दिखाई देता है।

देशी कलाकारों में इन्हीं दो ने मेरी चिन्ता-धा और प्रेरणा-प्रवाहों को गति प्रदान की है। विदेश कलाकारों में टामस हार्डी, डोस्टोवस्की, रोम्या रोल गोर्की, सोलोखोव, वर्जीनियावुल्फ, एथिल मैन डी० एच० लारेंस आदि ने मेरे ऊपर अमित प्रभा डाले हैं। मेरी प्रवृत्ति यह है कि मैं किसी एक कवि लेखक का इतना बड़ा भक्त नहीं हो पाता हूँ कि दू के प्रभाव से परे हो जाऊं। प्रत्येक तत्वनिष्ठ कलाक जो जीवन की विषमताओं का हल सुझाता है, मु प्रभावित करता है। इसका परिणाम कभी-कभी भी होता है कि विचित्र विरोधाभासों का झुण्ड मन के भीतर लग जाता है और अपने कला-विन्या की एक सुनिश्चित रेखा मैं नहीं बना पाता। मेरे आलोचकों ने मुझे 'कनफ्यूज्ड' (उलझा हुआ भ्रान्त) कहा है। लेकिन यह मेरी सच्ची लाचारी और कहीं-कहीं यदि यह कमजोरी साबित होती तो शक्ति भी बन जाती है, क्योंकि इससे मेरी ग्रह शीलता बढ़ती है। साहित्यिक जीवन के उषाकाल ऑस्कर वाइल्ड की ओर मैं विशेष रूप से आकर्षि हुआ और उसकी किताबें जेब में डाले घूमा कर था। उस समय के जीवन में इस प्रकार की एक मुग्धता थी, पर अब ऐसी बात नहीं है। शरत् का भक्त होते हुए भी और जीवन के प्रति उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावनाशील दृष्टिकोण का अनुगामी होते हुए भी, मुझे प्रेमचन्द का जनतावाद बहुत भाता है और इस दृष्टि से संसार के कलाकारों में टाल्स्टाय के बाद मैं उन्हीं का नम्बर मानता हूँ। दूसरे शब्दों में इसी को पथभूमि की प्रसारता या 'केनवास' की विराटता कहा जा सकता है।

विदेशी कवियों में मुझे शैली, कीट्स और बायरन के अतिरिक्त ओडेन, स्पेण्डर और डेलुई की कविताएं प्रभावित करती हैं। हिन्दी-कवियों में 'निराला' और 'नवीन' ने मुझे सब से अधिक प्रेरणा दी है। जोश और जिगर की शायरी, इकबाल की खुदी की फिलासफी, जो सामाजिक स्रोतों को पाकर न जाने कितना बड़ा परिवर्तन कर सकती है, मुझे सशक्त जान पड़ती है। सत्य तो यह है कि आपका यह प्रश्न मुझे बड़ा उलझाने वाला जान पड़ता है। जिन लेखकों या कवियों के नाम मैंने लिए हैं, उनके अलावा औरों का प्रभाव मेरे ऊपर नहीं पड़ा, ऐसा मैं नहीं कह सकता। मेरा मानसिक गठन कुछ इस प्रकार का है कि जहां कहीं मुझे जीवनोन्मुख गति और संस्कारशीलता दिखाई पड़ती है, वहां अप्रभावित रहना मेरे लिए कठिन हो जाता है।"

"लेकिन आप अपने को आदर्शवादी कैसे कहते हैं, जबकि आप हैं यथार्थवादी ?" मैंने उनसे प्रश्न किया।

इस प्रश्न पर उन्होंने अपने पास पड़े बैग में से 'समता' मासिक पत्रिका का एक अंक निकाला और एक लेख में अपने आदर्श और यथार्थ के सम्बन्ध में व्यक्त विचारों को बताते हुए उन्होंने उत्तर दिया—"यथार्थवाद मेरे लिए एक चित्रणशैली है, जीवन-दर्शन नहीं और आदर्शवाद मेरे निकट जीवन-हीन परम्पराओं का दास बनाने वाला मतवाद नहीं, वरन् एक क्रान्तिमुखी मर्यादा है। अपनी कविताओं और उपन्यासों में मैंने कहीं भी भावना की एकनिष्ठता और युग-युग से उपलब्ध अपने देश के सांस्कृतिक और राष्ट्रीय सत्यों के आधार की अवहेलना नहीं की। इसी अर्थ में मैं अपने को आदर्शवादी मानता हूँ। जिस प्रकार से हो, मनुष्य की असामाजिक, अमानवीय और असमानता की मनोवृत्ति को दबा कर उसे अधिक से अधिक परहितजीवी, परप्राण बनाया जाय, यही मेरा आदर्शवाद है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्वभावतः मुझे ऐसी शैली अपनानी पड़ती है, जो मेरे विषय के साथ न्याय कर सके। आज किसी भी उन्नत साहित्य में आदर्शवादी शैली के लिए स्थान नहीं है। यथार्थवाद हमारा सब से पैना कलात्मक अस्त्र है, जिसे जीवन की जटिलता ने और भी पैना बना दिया है। मुश्किल यह है कि मेरे पाठकों और आलोचकों ने, जो ऐसा कहते हैं, बाह्य स्वरूप को तो देखा है, अन्तस्थ पर इतना ध्यान नहीं दिया। उन्होंने यह नहीं देखा कि कर्म और बलिदान की जिस पुनीत और शोधक भावना से स्वस्थ जीवन-सौंदर्य को जन-जन के लिए सुलभ बनाना है, वह आज यथार्थवाद के माध्यम से ही हो सकता है। लेकिन यह यथार्थवाद मानव के स्तर को ऊंचा उठाने वाला हो, गिराने वाला नहीं। मनुष्य के मन को शोषण और स्वार्थ-साधन की कुत्साओं से मुक्त भी तो करना है। आर्थिक विषमता और श्रेणीजन्य शोषण और परमुखापेक्षिता तो नष्ट करनी ही है, साथ ही साथ मनुष्य के मन को अज्ञान, अवसाद, मोह, मत्सर, कुसंस्कार और जड़ रूढ़ियों के दायरे से भी निकालना है। इसलिये मैंने समाजवादी आदर्श को अपनाया है। समाजवादी आदर्श का प्रयोग यहां मैं राजनीतिक अर्थ में नहीं कर रहा हूँ, वरन् आगे आने वाली व्यापक लोकसंस्कृति के अर्थ में कर रहा हूँ। जहां तक प्रेम का सम्बन्ध है या नर-नारी के पारस्परिक सम्बन्ध की बात है, वहां तक मैं प्रेम को अपरिवर्तनशील मानता हूँ। मेरी समझ में नहीं आता कि जो लोग एक पत्नी के मरने पर विरह-काव्यों का सृजन करते हैं, वे कैसे साल दो साल बाद ही नए सिरे से प्रेम करना आरम्भ कर देते हैं। मैंने अपने साहित्य में जीवन के उस सर्वस्व-समर्पणशील मूल स्वर को उतारने की चेष्टा की है, जो भक्ति और प्रेम का सौदा नहीं करता, जिसके भीतर अर्चना के मूर्त आधार बदलते नहीं और जिसका सूत्र जीवन के उस पार तक चलता है।"

वाक्य समाप्त होते होते पास बैठे पुराणिक जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से उन्होंने पानों की मांग की, जैसे आगे बढ़ने के लिए विश्राम का एक माध्यम ढूंढा हो। पान आए। एक साथ दो बीड़े लेकर उन्होंने कहा, "अब आप आगे के प्रश्न कीजिए।"

मैंने अनुभव से यह जाना कि इस समय निस्संकोच भाव से वे अपना विचार व्यक्त करने की तरंग में हैं और अकृत्रिम भाव से—आत्मीयता के साथ—सब कुछ बताने को तैयार हैं। इसलिए मैंने उनसे पूछा—"एक ओर तो आप प्रेम की निष्ठा की बात करते हैं और दूसरी ओर सौंदर्य की तृष्णा ज्वाला की तरह जल रही है। यह परस्पर-विरोध आपके जीवन और काव्य में क्यों है?"

मैं समझता था कि कदाचित् वे इस प्रश्न पर कुछ सोचेंगे और उत्तर देंगे, लेकिन बिना कुछ सोचे सहसा मुझे आश्चर्य में डालते हुए वे कहने लगे, "मैं इन दोनों को परस्पर-विरोधी नहीं मानता, वरन् एक दूसरे का पूरक मानता हूँ। प्रेम की एकनिष्ठता और परिपूर्णता तो रूप की तृष्णा की वृद्धि करती ही है, लेकिन रूप की तृष्णा का उद्भव कहां होता है, यह भी देखना होगा। जीवन के बुनियादी सपने की राख पर आत्मा की घनीभूत वेदना से निःसृत निष्कपटता की ज्योति जगाए रखने वाली रूप की तृष्णा यदि प्रेम की एकनिष्ठता से आती है तो वह जीवन का मंगल गीत है। क्या प्रेम की चेतना दुःख की समवेदना के लिए ही है और दुःख की समवेदना क्या रूप की रंगीनियों से चमकाई नहीं जा सकती? मैं तो यह मानता हूँ कि यदि प्रेम में एकनिष्ठ समर्पण है और सर्वस्व दान की पुनीत व्यापकता है, तो संसार की कोई सुन्दर वस्तु और उसकी सुषमा का काव्य-गायन व्यक्ति के लिए स्वाभाविक ही नहीं, अनिवार्य भी है। वह प्रेम ही क्या जो प्रसरणशीलता को लेकर नहीं चलता! प्रेम की परिपूर्णता का अर्थ सौंदर्य की यथार्थ अनुभूति और बोध से है। एक बार जिसे ईश्वर की अनुभूति हो जाती है, वह फिर कण-कण में ईश्वर का आभास पाता है। उसी प्रकार जिसने एक बार सौंदर्य की शारीरिक या अशारीरिक अनुभूति कर ली, वह संसार की किसी भी सु वस्तु को प्यार किए बिना रह नहीं सकता। एक पारदर्शी तादात्म्य उसके भीतर जाग उठता है, प्रतिक्षण उसके भीतर रूप का प्रबोध जगाए र है। उसे तब सब भाने लगते हैं। वह शरीर नहीं, व्यक्ति का नहीं; भाव का, सौंदर्य के संसार पुजारी बन जाता है। उसे ऐसा लगने ल है कि प्रत्येक सौंदर्य-कृति में उसी पुनीत कि की झलक है, जिसके चारों ओर शलभ की भ जल कर आज उसने यह प्राप्त किया है—यह भाव की अखण्डता पाई है। प्रेम की एकनिष्ठता मेरा तात्पर्य सदैव वासना से ऊपर उठने की ओर प्रवृत्तियों के मांगलीकरण की ओर रहा है। सुन्दर वस्तु को प्यार करने का अर्थ यह नहीं दूसरी सुन्दर वस्तुओं के गीत न गाए जायं। प्रेम एक चेतना है, एक दृष्टि है, एक जी व्यापिनी तन्मयता है और इस में यदि रूप साधना और सौंदर्य की पूजा के लिए स्थान न हो तो उसकी महत्ता ही क्या रही?"

'अंचल' जी के काव्य के भीतर सौंदर्य और रू तृष्णा के समावेश के सम्बन्ध में इतना अधिक स्प करण हो चुका था कि मैंने अधिक बातें इस सम्बन्ध नहीं करना चाहा, क्योंकि वैसा करने से कोई लाभ था। यह निश्चय करके मैंने उन्हें इस प्रसंग दूर ले जाने के लिए उनसे पूछा—"आप छायाव रहस्यवाद और प्रगतिवाद से क्या समझते हैं?"

उन्होंने कहा—"छायावाद मेरी दृष्टि में द्विवे कालीन नैतिकता और इतिवृत्तात्मकता के प्रति तीय जीवन के भीतर चारों ओर से उमड़ कर वाले रोमांसवाद की नैसर्गिक और अनिवार्य क्रिया है। अंग्रेजी कविता में जिस प्रकार से 'रो ढिक रिवाइवल' होता है और काल विशेष विद्रोह को आत्मसात् करके साहित्य की धारा को बदल देता है, उसी प्रकार छायावाद दशाब्दियों रुंधी हुई, घुटन-भरी भावधारा और अभिव्यक्ति

(शेष पृष्ठ ६१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो नादान

श्री देवराज 'दिनेश'

प्राण, तुम भी निकलीं नादान, और मैं भी निकला नादान!

सत्य है नहीं मिलेंगे देवि, एक सरिता के हम दो कूल,
किन्तु फिर भी हम दोनों एक, भुलाने की मत करना भूल,
एक ही लक्ष्य, एक ही ओर हमें करना होगा प्रस्थान!
प्राण, तुम भी निकलीं नादान और मैं भी निकला नादान!

देवि, मैं तो जंगल का कीर, अटपटे मादक जिसके गीत,
और तुम मैना चतुर सुजान लिए हो भाव-भरा संगीत,
निशा में एक डाल पर बैठ खोल देते उर के अरमान!
प्राण, तुम भी निकलीं नादान और मैं भी निकला नादान!

न जाने किस कारणवश देवि, किए तुमने मुझ पर आक्षेप,
वही यदि कर दे उर पर घाव, घाव पर करना जिसे प्रलेप,
न क्यों तब सिहर उठे तन और न क्यों आकुल हों रोयें प्राण!
प्राण, तुम भी निकलीं नादान और मैं भी निकला नादान!

आह! कर बैठा कैसी भूल, एक क्षण हुई सांस तक बन्द,
काश, हो पाता तुमको ज्ञात, हृदय का मेरे अन्तर्द्वन्द्व!
शान्त जीवन-सागर में सखे, एक दम उमड़ पड़ा तूफान!
प्राण, तुम भी निकलीं नादान, और मैं भी निकला नादान!

प्रलय की उस हलचल में सजनि, खो गया जीवन का संगीत,
मौन हैं अब वीणा के तार, सुप्त अब कवि के मीठे गीत,
प्रथम दर्शन में ही तो मीत हुआ था हृदय हृदय को दान!
प्राण, तुम भी निकलीं नादान, और मैं भी निकला नादान!

कभी यदि अनजाने में तुम्हें याद आता होगा बेपीर,
क्षणिक आह्लाद, बाद में सुमुखि, नयन भर लाते होंगे नीर,
हृदय करता होगा बेचैन किसी निष्ठुर का अनुसन्धान!
प्राण, तुम भी निकलीं नादान, और मैं भी निकला नादान!

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीरा अपनी मित्र मण्डली में बैठा हुआ था। अपने विवाह के निश्चित होने का समाचार उसे मिल चुका था और युवावस्था की स्वाभाविक गुदगुदी उसके मन को घेरे हुए थी। मित्रों के लिए हीरा के विवाह से अधिक रोचक विषय बातचीत करने के लिए क्या हो सकता था, जबकि यह बात सर्वविदित थी कि हीरा की भावी पत्नी अनुपम सुन्दरी है। वही बातचीत प्रारम्भ हुई :

माधो बोला, "मुझसे पूछो कि कैसी है हीरा की बहू। वैसी सुन्दरी है जैसी ऊषा, वैसी मादक है जैसी निशा और वैसी चपल है जैसी काले बादलों के बीच में चमकती हुई चपला...!"

सुमेरा ने उसे बीच में टोका—"अरे-अरे, तू तो शहर जाकर चार किताबें क्या पढ़ आया, शायर हो गया!"

"अभी शायरी पूरी कहां हुई है"—माधो बोला, "यद्यपि यह शायरी नहीं है, है असलियत। तारा सचमुच ऐसी सुन्दरी है जैसी ठाकुर के बड़े तालाब के बीचों बीच खिलने वाली सुनहरी कमलिनी!"

"अच्छा, कमलिनी है?" गांव के लड़कों का विदूषक पन्ना बोला। "अगर कमलिनी है तो उसका भौंरा भी कोई न कोई होगा।"

सब लोग हंस पड़े, पर माधो चुप हो गया। उसे गम्भीर होता देख कर लोगों को और चुहल सूझी। "क्यों चुप हो गया माधो?"—प्रीतम ने उसे छेड़ा, "पन्ना कहता है कि जब वह कमलिनी है, तो उसका कोई न कोई भौंरा भी होगा!"

माधो ने अपने साथियों की आंखों में व्यंगात्मक मुस्कान देखी, तो वह कुछ खीझ-सा गया। उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे वह सब मिलकर उसे बेवकूफ बना रहे हो। "हां, है तो उसका भी एक भौंरा", जोर से माधो ने कहा।

सब लोग उसकी खीझ पर ठट्ठा मार कर हंस पड़े। बात हंसी में उड़ गई। कुछ देर तक इधर-उधर की और बातें होती रहीं। रात ज्यादा होने पर ठाकुर की चौपाल से सब लोग धीरे-धीरे उठ कर चलने

लगे। हीरा ने आंख के इशारे से माधो को जाने से रोका। जब सब लोग चले गये, तो माधो को अपने निकट बुला कर हीरा बोला, "आज जो कुछ तूने कहा है, उसका सबूत है तेरे पास?"

माधो सकपका गया। वह हीरा और उसके परिवार के लोगों को बहुत अच्छी तरह जानता था। अटक अटक कर बोला, "मैं तो हंसी कर रहा था, ठाकुर!"

"हंसी!" हीरा ने आंख तरेरी, "तेरी यह मजाल कि तू मेरी मंगेतर की हंसी उड़ावे, एक क्षत्राणी पर कलंक का कीचड़ उछाले! अच्छा, जरा ठहर जा।"

माधो जैसा का तैसा खड़ा रह गया, ऊपर की सांस ऊपर, नीचे की सांस नीचे। इतने में हीरा अन्दर से होकर चौपाल में लौट आया। उसके हाथ में नंगी तलवार थी। बोला—"देख, तू मेरा बचपन का साथी है। हम लोग साथ साथ खेले और साथ-साथ पढ़े हैं। स्नेह की कमी हम लोगों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

रक्त की रेखा

श्री गंगाप्रसाद मिश्र

तारा अपने जीवन-धन के घातक को न जान पाई और उसने हार मान कर जीवन से समझौता कर लिया; परन्तु प्रतिशोध की ज्वाला बुझी नहीं—दस-बारह वर्ष तक दबी रह कर भी वह एक दिन एकाएक धधक उठी, और.....

नहीं रही है; पर सच कहता हूँ, अगर आज तू मेरे सामने झूठ बोला तो अपनी और तेरी जान एक करके रहूँगा।"

माधो जानता था कि हीरा जो कुछ कह रहा है, वह एक क्षण में सच करके दिखा देगा। उसकी बोटी-बोटी कांप गई। उसने कहा—"नहीं, मैं तुम से झूठ न बोलूँगा, हीरा।"

उसके बाद हीरा और माधो बड़ी देर तक बातें करते रहे।

* * *

पांच वर्ष की तारा मां के साथ अपनी ननसाल कुंवरपुर आई, तो नानी से इतनी हिल गई कि मां जब अपनी ससुराल जाने लगी तो वह नानी के पास ही रह गई। अकेली नानी ने अपनी एकलौती नातिन को सिर आंखों पर रक्खा। अब तक इतने बड़े मकान में वह अकेली बैठी-बैठी ऊब जाया करती थी; अब बोलने-बतलाने को तारा हो गई, तो घर का सूनापन दूर हो गया।

तारा धीरे-धीरे बड़ी होने लगी। गांव की पाठशाला में वह पढ़ती है, अपने नाना के लिए भोजन लेकर खेत पर जाती है और गांव की लड़कियों से ही नहीं, लड़कों तक से खेल-कूद में बराबरी का दावा रखती है। तैर कर नदी पार करने में, चौड़े से चौड़े नाले फांद जाने में, फरी, गदका, लाठी और तलवार चलाने में सब लड़के-लड़कियां उसका लोहा मानते हैं। पर यदि तारा किसी की कुशलता, चतुरता और फुर्ती के आगे अवनत होती है, तो वह है विक्रम। ऐसा बेधड़क और निडर लड़का तारा ने नहीं देखा। लाठी और तलवार वह ऐसे चलाता है, जैसे कोई उस्ताद हो। लड़कपन में विक्रम के इन गुणों ने तारा को केवल आकर्षित किया था; पर किशोरावस्था की समाप्ति होते-होते वह उसके प्राणों का सर्वस्व और उसके जीवन-पथ का ध्रुवतारा बन गया।

ठाकुरों के उस गांव में जहां स्वतन्त्रता का पूर्ण वातावरण था, जहां लोगों की मूंछ अब तक नीची नहीं हुई थी, व्यर्थ के नियंत्रण लोगों की जीवन-धारा में बांध न बांधते थे। जीवन-सरिता पूर्ण वेग से उमड़ती हुई बहती थी, इस कारण उसके विकास में कहीं कोई कमी न दिखलाई पड़ती थी। वहां के वातावरण में वह पानी था जो काटना जानता था, कटना नहीं। फिर भी जब तारा युवावस्था में पदार्पण करने लगी, तो वृद्धा नानी को पास-पड़ोस की अनुभवी स्त्रियों ने सावधान किया—"अब तारा को घर में दाब कर रक्खो, वह बची नहीं है। कुछ इधर का उधर हो जायगा, तो हाथ मलती रह जाओगी।"

नानी जैसे सोते से जाग पड़ी। उसने अपनी स्नेह की झिड़कियों के साथ तारा का घर से निकलना बन्द करना चाहा, पर वह इसमें सफल न हो सकी। तारा की बड़ी बड़ी आंखों का गीलापन देख कर वह विचलित हो जाती और उल्टा उसे मनाने लगती। अपनी विवशता का अनुभव करके उसने अपनी बेटी को ससुराल से बुला भेजा। कुंवरपुर और गोपालपुर के बीच केवल गंगा का अन्तर था। मां का निमंत्रण पा बेटी शीघ्र ही आई। मां बेटी में बातें हुईं। वे इस निश्चय पर पहुँचीं कि तारा को गोपालपुर चली जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये और यथासम्भव शीघ्र तारा का विवाह हो जाना चाहिये।

सदा की भांति इस बार भी तारा ने अपनी मां के साथ जाने की अनिच्छा प्रकट की; पर उसने देखा कि इस बार उसे ले जाने का मां का आग्रह दुराग्रह की सीमा तक पहुँचा हुआ है और पहले की भांति नानी उसे रख लेने के लिये कोई उत्साह नहीं प्रकट कर रही है। फलस्वरूप नानी से रूठ कर वह मां के साथ गोपालपुर चली गई; पर यह बराबर सोचती रही कि जब दो-चार ही दिन में पहिले की तरह नानी उसके बिना ऊब जायगी, तो उसे बुलवा लेगी। तारा की यह आशा पूर्ण न हुई। नानी ने जब इस बार दिन ही नहीं, महीने बीत जाने पर भी उसे बुलाने का नाम न लिया, तो गोपालपुर का घर तारा को काटने-सा लगा। उसकी मां कड़े स्वभाव की थी और तारा पर वह आवश्यकता से अधिक नियन्त्रण रख रही थी।

कुंवरपुर का वह मुक्त वातावरण तारा के मस्तिष्क में चल-चित्र की भांति घूमता रहता। एक दृश्य जाता तो दूसरा आ जाता। वह नदी का तैरना, बाग के कच्चे-पक्के आम और खेतों की सीनाजोरी से भरी चोरी उसे न भूलती थी। फिर इन सब कामों में अपने सदैव के साथी और रक्षक विक्रम को, जो जान पर खेल न जाने कितनी बार उसे बाग में घिर जाने पर लाठी के जोर से निकाल लाया था, वह कैसे भूल सकती थी?

शरद् ऋतु के दिन थे। रात चांदनी के दूध से नहा कर पुष्ट और विकसित हो गई थी। घर के सब लोग सो रहे थे, पर तारा की आंखों में नींद न थी। चांदनी की छटा को देखने को वह कुतूहलवश घर से निकली, पर उसके पैर न जाने कैसे उसे गंगा के किनारे ले आये। चांदनी में चांदी-सी चमकती बालू पर बैठी हुई, गंगा के शीतल जल में पैर डाले वह सोचने लगी—गंगा के उस पार सुनहरी मक्का के खेत में रखवाली के लिये मचान पर बैठा विक्रम मेरी याद करता होगा...।

अपनी अन्तर्-प्रेरणा से प्रेरित वह गंगा में कूद पड़ी और गंगा पार करके अपने विक्रम के पास पहुँच गई। एक दूसरे को पा कर दोनों आत्म-विभोर हो गये। विक्रम के मुंह से शब्द न निकले, वह केवल तारा का हाथ पकड़ कर उसके सलोने मुख को देखता रह गया। थोड़ी देर तक दोनों चांदनी में घूमते रहे, फिर सवेरा होने के पहले ही तारा लौट कर अपने बिछौने पर यथापूर्व सो गई।

उस रात से तारा का यह रोज का कार्यक्रम हो गया। तारा के इस प्रकार रात में गोपालपुर जाने की बात भाग्यवश उसके घर वालों से तो छिपी रही, पर उन लोगों से, जिन्हें महाकवि ने 'जे बिनु काज दाहिने बाएं' का विशेषण दिया है, कैसे छिपी रह सकती थी। फलस्वरूप वासना-रहित स्वाभाविक प्रेम की वह कथा कलंक-कथा होकर फैलने लगी और इसी रूप में माधो के द्वारा हीरा के कानों तक पहुंची।

* * *

हीरा अपने गांव अम्बरपुर का तो सोलहों आने मालिक था ही, और कई गांवों में भी उसका हिस्सा था। कुंवरपुर में भी वह दस आने का हकदार था।

हीरा आजकल अपनी जमींदारी की देख रेख के लिये कुंवरपुर में आया हुआ है, ऐसा लोगों का खयाल है; पर वह आया है माधो की बतलाई बात की जांच करने।

विक्रम ने एक रात तारा से कहा—"आजकल तेरा मालिक यहां आया हुआ है।"

"मेरा मालिक तो तू है"—तारा ने उसके पास सटते हुए कहा।

"और हीरासिंह?"

जवाब में तारा ने अँगूठा दिखा दिया।

उसी के दूसरे दिन रात में जब तारा विक्रम के मचान पर पहुँची, तो उसने देखा कि उसका सर और धड़ अलग अलग पड़ा है और उसका जीवन-धन लुट चुका है। बिजली की तरह यह विचार तारा के मस्तिष्क में कौंध गया कि यह काम हीरा को छोड़ कर और किसी का नहीं है। कुंवरपुर की एक एक पग पृथ्वी उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नापी हुई पड़ी थी। उसे अपनी भुजाओं पर विश्वास था। वह बेधड़क हीरासिंह के निवास-स्थान पर पहुँची। उसने देखा, हीरा गहरी नींद में सो रहा है। बगल में उसकी तलवार रक्खी हुई थी। तलवार देख कर तारा का सन्देह और भी दृढ़ हुआ। उसने यह निश्चय करके तलवार उठाई कि हीरा की भी वह वही दशा कर दे, जो विक्रम की हुई है; पर ऐसा करने के पहले उसने हीरा के दोष का निश्चय करने के लिये तलवार की परीक्षा कर लेना उचित समझा। म्यान में से तलवार निकाल कर तारा ने देखा कि वह चांदनी में बेदाग चमक रही है। मनुष्य के ताजे खून से उसका संसर्ग हुआ है या नहीं, यह देखने के लिये उसने अपनी जीभ से उसे स्पर्श किया, पर खून के खारीपन का वहां नाम भी नहीं था। तलवार हीरा को निर्दोष सिद्ध कर रही थी। तारा को भला क्या पता था कि हीरा तलवार पर से अपने पाप के चिन्हों को गंगा की बालू और जल से साफ कर चुका है। खैर, हीरा को निर्दोष समझ कर तारा वहां से फिर लौटी। विक्रम की लाश के पास आकर इस बार वह उसकी दुर्दशा पर, अपनी बेबसी पर, अपने अंधियारे भविष्य पर आठ-आठ आंसू रोई। पछतावा उसे इस बात का था कि वह अपने जीवन धन के घातक को न जान पाई, अन्यथा वह उसके खून से अपनी प्रतिहिंसा की आग को शांत करके ही दम लेती। अपने प्रिय के उस शव से, उस खेत से, उस बाग के पेड़-पेड़ से, जिसके बीच से होकर वह अपने प्रिय से मिलने जाती थी, गंगा की उन पवित्र लहरों से, जिन्होंने क्रीड़ा करते हुए उन दोनों के प्रेम को पाल-पोस कर बड़ा किया था—उसने सदा के लिये बिदा ली। उसका मन हुआ कि वह गंगा की गोद में सदैव के लिये सो जाए, पर न जाने किस प्रेरणा ने उसे आत्म-हत्या से रोका। अपने प्रिय विक्रम की याद को लेकर अपने निरर्थक जीवन का भार सहन करने को वह तैयार हो गई।

* * *

पुलिस गरीब विक्रम के घातक का पता न लगा सकी। दो-चार पास-पड़ोस के बदमाशों की पकड़-धकड़ हुई, पर कुछ हाथ न लगा। हीरासिंह ऐसे बड़े और पढ़े-लिखे जमींदार पर—जिसका जिले भर के हाकिम हुक्कामों से मेल था, शक करना थानेदार की ताकत के बाहर था। कुछ ही दिनों में उस मामले पर मट्टी पड़ गई।

हीरासिंह की वृद्धा माता की ओर से अब विवाह जल्दी करने का आग्रह होने लगा। तारा को जीवन में अब कोई रस मालूम नहीं होता था। जिसके लिये यह जीवन था, जब वह ही नहीं रहा, तब जीवन का चाहे जो कुछ हो उसे क्या करना। उसकी दशा उस बेल की तरह दयनीय थी, जो अपने पास खड़े हुए विशालकाय वृक्ष के सहारे प्राकृतिक रूप से चढ़ती हुई आकाश को अपने उत्साह से स्पर्श किये ले रही थी और जिसे एक आंधी के झोंके ने वृक्ष को धराशायी करके निराश्रित कर दिया था। अब बाग का माली उसे घास के सहारे ऊपर बढ़ाने का प्रयत्न करे तो उस लतिका को क्या उत्साह!

तारा का हीरासिंह से विवाह हो गया। हीरा की बरात के ठाट-बाट, उसका भेजा हुआ जेवर हाथी घोड़े, नाच, कपड़े गांव वालों की आंखों में चकाचौंध उत्पन्न करने के लिये आवश्यकता से अधिक थे। वे तारा के भाग्य की सराहना करते न अघाते थे, पर तारा जैसे जीवन का दण्ड भुगत रही थी। न वह सहेलियों के चुटकियां लेने पर हँसी, न बाबुल का घर छोड़ते समय रोई। गांव की स्त्रियों ने मुंह बिचकाते हुए उसकी लीला पर आश्चर्य प्रकट किया।

* * *

दस बारह-वर्ष तारा और हीरासिंह के विवाह को हो चुके हैं। इस बीच तारा के व्यवहार से किसी प्रकार का असन्तोष हीरासिंह को हो, ऐसा वह नहीं कह सकता। तारा पूर्णतया एक कर्त्तव्यपरायण पत्नी रही है। दो लड़कियों और एक लड़के की वह मां है। हीरा ने भी कभी मन का रहस्य उस पर प्रकट न होने दिया और न कभी अपने व्यवहार में कटुता की गन्ध ही आने दी। उनका जीवन सुचारु रूप से चलता रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भी अपने इस पिछले जीवन में तारा एक भी क्षण के लिये विक्रम को नहीं भुला सकी है। उसकी स्मृति के सहारे ही अपने जीवन का प्रत्येक कार्य वह करती रही है। अपने पति के प्रति कर्त्तव्य पालन करते, बच्चों का पालन-पोषण करते, खाते, पीते, पहिनते, ओढ़ते, और अपने जीवन के व्यंग पर हंसते समय विक्रम एक क्षण के लिये भी उसकी आंखों के सामने से ओझल नहीं हुआ है। वह जीवित थी तो विक्रम की स्मृति के सहारे और मरना चाहती थी तो विक्रम से मिलने के लिये। अपने कर्त्तव्यों का पालन करते समय, मुन्नी की चोटी गूंथते हुए या राजा को कपड़े पहनाते हुए वह विक्रम से तलवार के हाथ सीखा करती, उसके साथ की लहरों को चीर कर उससे आगे निकल जाने का प्रयत्न किया करती और स्वप्नों में उसके अंक में सोती रहती। जब भी उसे एकान्त मिलता, अपने स्नेहाश्रुओं से उस प्रेमतरु को सींच कर वह अधिकाधिक हरा-भरा कर लेती। उस स्वर्गीय प्राणी के हत्यारे को उस जघन्य कार्य के लिये वह दण्ड न दे सकी, इसकी याद करके तो जब-तब उसका मन कचोटता रहता। प्रेम के मार्ग में क्रीड़ा करता हुआ अनजाने सर्प से डसा हुआ वह विक्रम नित्य प्रति उसके मन में ऊंचा से ऊंचा चढ़ता जाता था। अब वह जीवन-धन, प्राणाधार और प्रियतम की स्थिति से ऊपर उठ कर उसका इष्टदेव बन गया था।

* * *

वर्षा के दिन थे। घोर अंधेरी काल-रात्रि थी। पानी बड़ी बड़ी बूंदों में बरस कर, हवा हहर करती हुई चल कर रात्रि की भयानकता को बढ़ा रही थी। चारों तरफ सन्नाटा था। बच्चे सो चुके थे। तारा अपने स्वप्नों में बैठी डूब उतरा रही थी कि ठाकुर ने अन्दर आ कर भोजन मांगा। तारा उसकी प्रतीक्षा करते करते थक चुकी थी, अंगड़ाई लेते हुए बोली—"आज बड़ी देर कर दी।"

"देर कर दी तो क्या हुआ? ज्यादा बातें मत बना, रोटी ला।"

हीरा ठाकुर की बात के लहजे और उसके मुँह की दुर्गन्ध से तारा को मालूम हो गया कि आज वह कहीं से दारू पी आया है। वह मर्द के मुंह लगना ठीक न समझ कर थाली परसने चली गई। अपना अपमान वह खून के घूंट की भांति पी गई। इस अपमानजनक ढंग से कभी उसने किसी की बात न सुनी थी, और हीरा भी आज पहली ही बार उससे इस प्रकार बोला था। यह सोचती हुई वह थाली परसने लगी कि जब हीरा संयत होगा तो वह उसे इस बुरी चीज को अपने से दूर रखने की प्रार्थना करेगी।

थाली उसने ठाकुर के सामने रक्खी। थोड़ा बहुत इधर उधर चीख-चाख कर ठाकुर बोला—"क्या घास-पात उबाल कर रख दिया है, न मांस न मछली...।"

तारा फिर भी चुप ही रही।

ठाकुर बोला—"जा कुछ अचार ही निकाल ला।"

"अचार इस वक्त मुझ से लाए न बनेगा"—तारा ने कहा।

"आखिर क्यों?" ठाकुर ने आंखें तरेरीं।

"मुझे डर लगता है इस आंधी-पानी में हवेली का आंगन पार करके भण्डार-घर में जाते।"

ठाकुर इतनी जोर से हंसा कि उसकी आवाज चारों ओर गूंज गई। एक बिजली-सी तारा के मस्तिष्क में फिर कौंधी। तीखे स्वर से वह बोली—"आखिर हंसते क्यों हो?"

"आज तुझे डर लग रहा है यह आंगन पार करने में!" ठाकुर फिर हंसा—"उस दिन डर नहीं लगा था, जब गंगा पार करके तू मेरी तलवार का स्वाद चखने आई थी?"

तारा उसी वक्त हवेली के आंगन से भागी। कमरे से तलवार निकाल कर ले आई और मदोन्मत्त ठाकुर को उसने चीर कर चार कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली

श्रीमती शकुन्त गिरिजाकुमार

धरती ने भुज खोल भरी है
आज दिवाली !
बहुत दिनों के बाद मिली है
आज दिवाली !

नीले नभ ने फूल बिखेरे
आज चमत्कृत
उपवन में,
जिन फूलों पर आकर बैठ गई है
श्याम अमावस —
खुले केश
हैं खुले ओंठ
आंखों में बिजली के दीपक
काले बादल-दल
भर आए
घिर आए
हैं लाए पानी।
याद करे क्या कहे आज
वह कथा पुरानी
बीते दिन की।
बहुत दिनों के बाद मिली है
आज दिवाली।
धरती ने भुज खोल भरी है आज दिवाली !

नया उजाला
धरती का
नई चमक ले
बिखर पड़ा है
रुन-झुन के ले सगुन सुनहरे
नभ पर
भू पर
सौष्ठव भी तो निखर उठा है
दीप उगे हैं
पंखुरियों पर
काजल के भँवरे ठहरे हैं
आंखों में है चाह अटकती
रस लेने को
इन्द्र-धनुष उभरे हैं !
बहुत दिनों के बाद मिली है आज दिवाली !
धरती ने भुज खोल भरी है आज दिवाली !

रंग रंग के फूल
झांकते
बड़े नयन खोलतीं कलियां,
नव-दल भरे कटोरे रस के
फल उंडेलते।
और तितलियों-सा
उछाह—
भरा समीर सरकता
हौले नशा लुटाता,
जग का शिशु भी किलक उठा है
दुःखों में भी बिहँस उठा है।
दीप बुझे थे स्वप्नों से
अंधकार का उदधि लोटता
तिस पर और अमावस छाती।
आज खुले हैं सूरज के मुख,
आज हटे हैं काले परदे,
आज खुले हैं बंद द्वार
लेकर प्रकाश
हैं पक्षी फिर से उड़े रंगीले।

—ऐसी है यह नई दिवाली !
धरती ने भुज खोल भरी है
आज दिवाली !
बहुत दिनों के बाद मिली है
आज दिवाली !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'—देख लो इसका तमाशा चंद रोज' (नजीर)

तमाशा

लेखक—
श्री प्रभाकर माचवे

दुनिया-रूपी बाग की बहार का तमाशा देखने के लिए कवि कहता है, मगर यहां तो 'दर्शक ही बन गया बिचारा एक तमाशा!' वैसे तो 'तमाशा' महाराष्ट्र में एक ग्रामीण नाट्य-प्रकार को कहते हैं, जिसका कुछ-कुछ रूप नौटंकी की भांति हो गया है। और वैसे बोलचाल की खड़ी बोली में, या कहिये 'हिन्दुस्तानी' में जब कोई सिनेमा-फिल्म देख कर लौट कर आता है, तो पूछते हैं—"तमाशा कैसा था?" आज कल जो भारतीय फिल्में बन कर आ रही हैं, उन्हें तो देखकर सचमुच यही कहना पड़ता है कि निरा तमाशा लगा रखा जी; पैसा एंठने के तरीके हैं, वर्ना उन फिल्मों में रखा क्या है! गाने दो कौड़ी के, फोटोग्राफी धुंधली-धुंधली, अभिनय के नाम पर शून्य और कहानी, वल्लाह, क्या कहने हैं! कहीं की ईंट और कहीं का रोड़ा! गर्ज यह कि बजाय मनोरंजन के ऐसी रद्दी फिल्मों को देख कर उलटे मनोभंजन हो जाता है!

* * *

ऐसी ही एक रद्दी-सी फिल्म से ऊब कर बीच में से उठ कर परसों लौट रहा था कि रास्ते में देखता यह हूँ कि एक लकदक तस्वीर वाले की दुकान है। उसमें भड़कीले रंगों में और आइनों में जड़ी देवी-देवताओं की, लीडरों की और सिनेमा-स्टारों की लम्बी-चौड़ी तस्वीरें एक दूसरे से सटी यों पड़ी हैं कि क्या कहने। कहीं हनुमान जी की बगल में सुरैया मुस्करा रही है, तो कहीं राजाजी की ऐनक के बहुत करीब बेगम पारा हंस रही है या रो रही है, पता नहीं लगता। इस देश का भला हो, जहां तीनों बातें एक ही सतह पर मान ली जाती हैं—धर्म, लीडरी या फिल्म स्टारी। तीनों को लोगबागों ने तमाशा बना डाला है।

धर्म की पोल क्यों खुलवाते हैं? बहुत बड़े-बड़े लेखकों ने इसके स्वांग और बहुरूपियेपन को खासा कोसा है। 'तीरथ' तो तमाशबीनों की आंखें सेंकने की खास जगह बने हुए हैं। हरकी पैड़ी, या बम्बई में बाबुलनाथ का मन्दिर या दक्षिण के देवदासियों से दहकते या दमकते या दनदनाते हुए मंदिर। यहां धार्मिक लोग जितनी मात्रा में, जितनी संख्या में पहुँचते हैं, उससे कम से कम आधे गुण्डे-शोहदे-मवाली, हर तरह के आवारा लोग भी पहुँचते ही हैं। वैसे भी अगर शुद्ध दार्शनिक दृष्टि से भी देखा जाये, तो क्या है? यह सृष्टि, यह लोक सब शंकराचार्य के ब्रह्मसूत्रों के शब्दों में निरी 'लीला' या तमाशा ही तो है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकवत्तु लीला कैवल्यम्! यदि पूछो कि भगवान के मन में यह लीला दिखाने की इच्छा क्यों उत्पन्न हुई, तो इसका कोई जवाब नहीं। भगवान ने इस दुनिया के तमाशे पर टिकट थोड़े ही लगाया है! और लगाया भी हो तो आपको मैं भगवान की ओर से आश्वासन देता हूँ कि उस पर मनोरंजन का कर (एण्टरटेनमेंट-टैक्स) नहीं लगाया गया है!

लीडरी भी आजकल खासी सस्ती और कठपुतली के तमाशे जैसी चीज बन गई है। कल तक जो टाइ-हैट-सूट-पैण्ट के बिना एक कदम आगे नहीं चलते थे, उनके वपु शुद्ध हाथ-कती हाथ बुनी खादी से अन्वित देखकर—राष्ट्र-प्रेम की इतनी बड़ी गुप्त गंगा एक दफा इस देश में सहसा फूट पड़ी है, यह देख कर मन प्रसन्नता के मारे फूला नहीं समाता। जैसे कठपुतली के तमाशे में सूत्रधार की अंगुलियों के इशारे पर वीर मरता है या विदूषक रानी के पास चक्कर काट-काट कर जाता है या रंडी नाचने लगती है, उसी प्रकार अकबर इलाहाबादी का भला हो, वह कह गये हैं—'दिन वकीलों का, रात (और किसी) की!' ये प्लीडर लोग सहसा लीडर बनते चले और पपीहा बिचारा 'पी-पी' पुकारा ही किया!

फिल्म-स्टारी भी कम तमाशा नहीं है। यहां एक ऐसा दौर चला कि हर कोई इसी उद्योग को सब से अधिक कमाऊ समझ कर इसमें कूद पड़ा। 'रपट पड़े

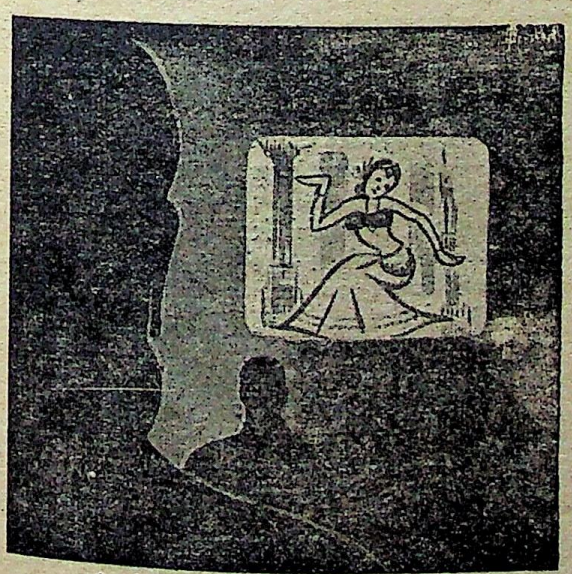

इससे तो मनोरंजन की बजाय मनोभंजन ही होता है!

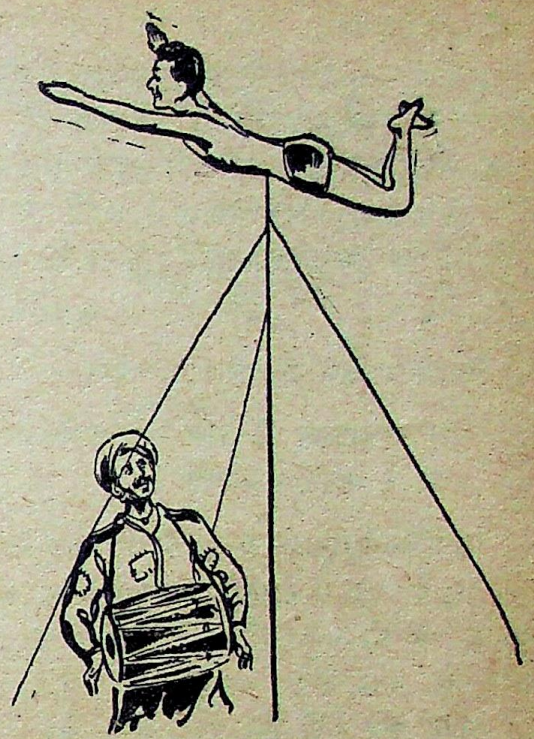

सो हर गंगा!' मुझे बम्बई में मराठी के प्रसिद्ध हास्य-लेखक और एक नामी सिने-दिग्दर्शक बतला रहे थे कि लेखक-गीतकार-कवियों की उन्हें कभी कमी नहीं होती, खासतौर से हिंदुस्तानी लिखने वाले पंडित और मुंशी लोग—पांच रुपये फी गीत लिख कर बाद में 'मुझे कम्पनी ने एक फिल्म के पांच गानों के पांच हजार रुपये दिये' ऐसा आत्म-विज्ञापन करने वाले कम नहीं मिलते। परन्तु भाषा का जो तमाशा ये बे-पढ़े-लिखे साहित्य का शऊर न रखने वाले सिनेमा के नाम पर खड़ा करते हैं, वह तो और भी विषाद पैदा करता है। अभी कलकत्ते में गया था। मन पर पुराने 'देवदास' 'सपेरा' 'लगन' वगैरह के संस्कार होने से देवकीबोस-बरुआ-कानन के बंगाल की फिल्म-कला के विषय में कुछ सहज आकर्षण-युक्त आदर था, परन्तु 'मने छिलो आशा', 'सहारा' आदि दो चार बंगला-चित्र देख कर वह आदर का जो कुछ कुहरा मन में था, वह भी हट गया। वहां भी वही बाम्बे-टाकीज-रणजोत वाली टेकनीक पहुंच गई है—वही दो ठो 'ड्यूएट'+एक आहोजारी की गजल+ एक देशभक्ति का कोरस + कई सौ फीट हास्य के नाम पर भोंडा चवन्निया मजाक और बीच-बीच में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी बहुत समाजवादी किस्म की पुट यानी अमीरों को गाली-गलौज—और चित्र का नुस्खा पूरा हो गया ! आजकल दर्शक-वर्ग बदल जाने से यह नया रंग जो महबूब वगैरह ने 'रोटी', 'गरीब' में चढ़ाया और बाद में 'धरती के लाल', 'भूख' वगैरह में चढ़ने लगा है, उसका भी लोगबाग तमाशा बनाये डाल रहे हैं।

* * *

उस्ताद 'गालिब' ठीक ही फरमा गये हैं—

बाजीचा-एतफाल है दुनिया मेरे आगे,
होता है शबोरोज तमाशा मेरे आगे !

'शबोरोज के तमाशों' में रेडियो एक खास उल्लेनीय वस्तु है। हाल में मैं अपने प्रवास में कटक और नागपुर के दो नये रेडियो-स्टेशन देख आया। कटक में उरिया-भाषा जानने वाले बहुत कम (हिन्दुस्तानी और हिन्दी तक जानने वाले कोई नहीं) और नागपुर में उस प्रांत के (मध्यप्रांत में इतना बड़ा साहित्यिक जागरण होने पर भी) इक्के-दुक्के प्राणी। नतीजा यह कि वहां सब नये-नये ! आप सुन कर शायद आश्चर्य करेंगे कि रेडियो वाले मित्रों ने (वहीं के क्यों, यू० पी० के भी दो तीन स्टेशनों पर भी) मुझ से उस प्रांत, भाषा, साहित्यकारों और नयें फीचरों वगैरह के बारे में जानकारी पूंछी और मैंने अपने मुक्त स्वभावानुसार वह दी। तो प्रश्नोत्तर के सिलसिले में पता चला कि शायद मुझे इन सब दफ्तरी-हलचलों से दूर, कालिदास की इस प्राचीन 'अपापा' नगरी में बैठे कहीं अधिक जानकारी थी, बनिस्बत कि मद्रास और बम्बई और कलकत्ता और कहां-कहां से उन नये रेडियो-स्टेशनों पर जमा किये हुए विचित्र नये संग्रहालय के प्राणियों के। शायद सरकारी महकमे अभी उसी पुरानी धीमी रीति-नीति पर उसी 'लालफीते' वाले ढर्रे पर चल रहे हैं; नहीं तो कम से कम इस बात का ख्याल तो मामूली तौर पर हम रखते कि किस स्थान के लिये कौन व्यक्ति अधिक योग्य होगा। मगर हमारी सरकार है कि वह सही स्पिरिट में, सच्चे सुधार के विचार से भी जरा सी आलोचना करने जाओ, तो वह भी सहन नहीं करती। यही तो तमाशा है !

हमें तो सब तमाशों में कठपुतली का तमाशा सबसे अधिक प्यारा लगता है। या फिर बचपन में देखा हुआ वह छोटी-सी लेंस में से झांक कर बहुत बड़े-बड़े दिखाई देने वाले चलते-फिरते चित्रों वाला बाई-स्कोप—"बम्बई का बजार देखो ! दिल्ली का दरबार देखो !" कहती हुई घंटी बजाते जाने वाली वह औरत ! या फिर रामलीला का तमाशा, या सी० पी० के गांवों में होने वाले 'डिंडार !' मैं उत्कल देश के रंगमंच के अध्ययन की दृष्टि से कटक में एक थियेटर में गया था। थियेटर खुद एक तमाशा था। उसमें हाथ से खींचने के पंखे थे, कच्ची मिट्टी की दीवारें थीं। नीचे भी मिट्टी ही थी। कुर्सियां एकदम सत्रहवीं सदी की थीं। परन्तु ऐसी खराब और अन-सँवरी स्टेज पर जो नाटक 'भाथ' उन्होंने दिखाया, वह बड़ा सशक्त और सजीव था। हम तो इस उम्मीद में थे कि राष्ट्रीय सरकार एक राष्ट्रीय रंगमंच की स्थापना करेगी, जिसकी प्रांतों-प्रांतों में शाखाएं होंगी, गांवों-गांवों में जन-नाट्य-संघ की भांति नाटक के प्रभावशाली माध्यम से प्रचार किया जायगा। परन्तु बजाय नाटकों के बन रहे हैं इन्फार्मेशन-फिल्म-जबकि गांवों में बिजली पहुँची नहीं है और हमारे देश में कच्ची फिल्म अमरीका से आयात की जाती है। यही तो तमाशा है !

गहरी निद्रा का आनन्द

विज्ञान का आश्चर्यजनक अविष्कार वेस्टेन किसी सोते या जागते हुए को सुधां दीजिये। वह एक घंटे के लिये गहरी नींद में सो जायगा। और हिलाने से भी न जागेगा। मूल्य केवल २) डाकखर्च ।।।-) अगर आप घण्टे से पूर्व जगाना चाहते हैं तो रैकशन सुधांइये। मूल्य केवल २) रु०। कम मिकदार या नमूना मुफ्त नहीं मिलसकता। गारण्टी की जाती है कि वेस्टेन या रैकशन किसी किसमें की हानि नहीं पहुंचाती आज ही आर्ड दें और अपना पता पूरा और साफ लिखें।

मैक्सो लिमिटेड [M.H.] नं० ४५, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दि कौमिल्ला बैंकिंग कारपोरेशन लि०

दिल्ली शाखा— ४८-४९ चांदनी चौक

(स्थापित—१९१४)

रजिस्टर्ड आफिस--क्लाइव घाट स्ट्रीट कलकत्ता

बैंक हर प्रकार का बैंक सम्बन्धी कार्य करता है

शाखायें समस्त भारत में

विदेशी एजेण्ट—

लन्दन—वेस्टमिनिस्टर बैंक लिमिटेड।
अमरीका—बैंकर्स ट्रस्ट कम्पनी आफ न्यूयार्क।
आस्ट्रेलिया—नेशनल बैंक आफ आस्ट्रेलिया लिमिटेड।
कनाडा—बैंक आफ मांट्रियल।

बी० के० दत्त
डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर

एन० सी० दत्त
मैनेजिंग डायरेक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ८००० रु० नक़द इनाम *

पहिला इनाम—ठीक हल के लिए ६००० रु० (जो एक अधिक हल ठीक होने पर बराबर बांट दिया जावेगा)। **दूसरा इनाम**—सब से अधिक हलों के लिए १००० रु०। **तीसरा इनाम**—सब से पहिले ठीक हल भेजने वाले के लिए १००० रु०।

हल क्या करना है ? सामने दिये हुए नौ खानों में १०० तक के कोई से अङ्क इस भान्ति से भरिये कि जिस ओर से भी जोड़ें उत्तर ५७ हो। एक अङ्क एक ही बार लिखा जा सकता है।

	१९	

दाखला फीस—एक रु० प्रति हल।

नियम—हर एक आदमी एक या एक से अधिक जितने हल चाहे सफेद कागज पर एक रुपया प्रति हल के हिसाब से फीस के साथ भेज सकता है। फीस दाखला मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजनी चाहिए। मनीआर्डर की रसीद हलों के साथ आनी चाहिये अथवा ऐसा हो सकता है कि आपके हल मुकाबले में सम्मिलित न हो सकें। सही हल वही समझा जावेगा जो हमारे मुहरबन्द हल के साथ जो सम्पादक महोदय दैनिक 'अमर भारत' के पास रखा गया है खाना दर खाना मिलेगा। इनामी नतीजे की कापी के लिये दो आने के टिकट और अपने पते का लिफाफा भेजें। इनाम की रकम दाखला फीस की आई हुई रकम के अनुसार कमी बेसी हो सकती है पर सही हल के इनाम की कम से कम ५० रु० की गारण्टी है। हलों के रास्ते में खो जाने या डाकखाने के कारण देर पहुँचने के हम जिम्मेवार न होंगे। प्रवेश फीस किसी अवस्था में वापिस न होगी मैनेजर साहिब पहेली का फैसला कानूनी व हर प्रकार से मानने योग्य होगा। हर मामले का फैसला देहली ही होगा। अपना पता हलों पर व मनीआर्डर कोपन पर साफ लिखें हल ३० नवम्बर तक डाक में डाल देने चाहियें। इसके पश्चात् भेजा हुआ कोई हल स्वीकार न किया जावेगा सही हल १५ दिसम्बर को प्रकाशित कर दिया जावेगा।

ई० टी० एण्ड कम्पनी, पोस्ट बैग नं० ५२ ए० दिल्ली।

E. T. & Company Post Bag NO 52 A. Delhi.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि 'अंचल'

(पृष्ठ ४८ का शेष)

प्रणाली के विरुद्ध विद्रोह कर अधिक हार्दिक और सजीवतापूर्ण काव्य-दर्शन को जन्म देता है। साथ ही साथ देश की बुद्धिगत राष्ट्रीयता और स्वतन्त्रता के लिए सर्वस्व त्याग करने की देशव्यापी भावना छायावाद को एक प्राणवानता और मस्ती देती है। विद्वान् आलोचकों ने इसके सम्बन्धों में चाहे कुछ भी कहा हो, लेकिन यह मेरी धारणा है कि छायावाद ने हमारे जीवन के विद्रोहात्मक पैनेपन को बढ़ाया और उस सामाजिक धर्म को जन्म दिया, जिसे शैली, बायरन, कीट्स की कविता ने अंग्रेजी साहित्य और समाज में।

रहस्यवाद मेरी समझ में एक विशिष्ट प्रकार की आध्यात्मिक ऊंचाई पर पहुँचने वाले और रमण करने वाले मन की स्थिति का नाम है, जहां पहुँच कर मनुष्य की आत्मा अशरीरी दैवत्व की ओर बढ़ती है। मेरे कई मार्क्सवादी मित्र मेरी इस प्रकार की बातों का मजाक उड़ाते हैं, लेकिन उनसे तर्क करने की शक्ति न होने पर भी और मैं उनकी विद्वत्ता के सामने छोटा होने पर भी, आत्मा और उसके दैवत्व को मानता हूँ और कदाचित् इसीलिए मुझे रहस्यवादी कविता प्रिय भी है।

प्रगतिवाद मैं उस प्रवृत्ति को मानता हूँ, जो साहित्य और समाज को पलायनशीलता के नष्ट करने का सन्देश सुनाती है। पलायनशीलता से मेरा तात्पर्य उस अहंवादिनी शुतुर्मुर्गी चेष्टा से है, जिसके वशीभूत होकर मानव मनुष्य को वास्तविक मनुष्य बनाने वाली महान रासायनिक क्रिया से उदासीन होकर अपनी अतिमानवीय या अमानवीय प्रवृत्तियों को सन्तुष्ट करता रह जाता है। एक बात यहां स्पष्ट कर दूं। आत्मा की सत्ता स्वीकार करते हुए मैं आत्मा के नाम पर संसार की समस्याओं और विषमताओं से घबरा कर पलायनशील और निश्चेष्ट होने का विरोधी हूँ। आत्मा को भी मैं एक सामाजिक शक्ति मानता हूँ— व्यक्ति तक सीमित रहने वाली और व्यक्ति के मन की सनक के अनुसार खुलने-मुँदने वाली एकांतिक परिपूर्ति नहीं। प्रगतिवाद मेरे लिए कोई वाद नहीं, क्योंकि वाद में विवाद होता है और मैं साहित्यकार के लिये विवाद उतना आवश्यक नहीं समझता, जितना विश्वास। हां, इस विश्वास की जड़ें उस भूखी-नंगी जनता के हाड़ों पर होनी चाहियें, जो केवल आज हमारे देश में ही नहीं, सारे संसार में लूटी जा रही है। इस विश्वास की जड़ें उस शोषण के संसार में होनी चाहियें, जो व्यक्ति को व्यक्ति से, श्रेणी को श्रेणी से, समाज को समाज से, राष्ट्र को राष्ट्र से लड़ना सिखाता है। वाद स्वप्नों को लेकर चलते हैं और सुख के वातावरण में पलते हैं; लेकिन विश्वास सपनों से बड़ा होता है और संघर्ष सुखों के समाजीकरण का नाम है। सुख एक व्यक्ति तक सीमित न रह कर पूरे समाज का हो जाय, इसीलिये संघर्ष किया जाता है। सारे संसार में आज मानवता का क्रमिक, मंद-मंद और वैज्ञानिक शोषण चल रहा है। इस शोषण के समर्थन के लिए बड़े-बड़े अर्थशास्त्री, बड़े-बड़े वैज्ञानिक, बड़े-बड़े साहित्यकार, कलाकार, पत्रकार और साधक बिना ढूँढे मिल जाते हैं; क्योंकि वे शक्ति और सुविधा के पुजारी होते हैं। प्रगतिवादी लेखक इन बातों को महत्व नहीं देता। अपने जीवनकाल में उसने जैसा संसार पाया, उससे अच्छा छोड़ कर वह मरना चाहता है। वह सब के सुख को अपना नारा मानता है। सब समान नहीं बनाये जा सकते; परन्तु सब सुखी बनाये जा सकते हैं। और सब सुखी तभी हो सकते हैं, जब मानव के द्वारा मानव का नारकीय शोषण बन्द किया जाय। प्रगतिवाद को जो लोग राष्ट्रीयता का विरोधी मानते हैं, वे भूल करते हैं। प्रगतिवाद केवल पूंजीवाद का विरोधी होता है, सामन्तवाद का विरोधी होता है और जनता की उन्नति के मार्ग में रोड़ा बनने वाले जो इतरवाद हैं, उनका विरोधी होता है; राष्ट्रीयता का नहीं। राष्ट्रीयता तो स्वतः एक हंसती-बोलती, जीती-जागती प्रगति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, बशर्ते कि वह फासिस्ट-नायकों की राष्ट्रीयता न हो। राष्ट्र का उत्थान तो तभी है, जब राष्ट्र अपनी स्वाधीनता का उपासक होते हुए भी विश्व के हित में समर्पित हो। प्रगतिवाद जिस राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाता है, वह भौतिक स्वार्थों का प्रसार कराने वाली नहीं, वरन् अशिव पर शिव की विजय, पाप पर पुण्य की विजय और विद्रोह की श्रद्धा को लेकर चलती है। उसे सामाजिक स्वतंत्रता और समानता का पर्याय माना जाय। जैसे स्वराज्य हमारे लिये वाद न होकर राष्ट्र का जीवन-दर्शन बन गया और एक नैतिक आवश्यकता समझा गया, उसी प्रकार प्रगतिवाद भी सामाजिक और आर्थिक स्वराज्य का नाम है।"

इस गंभीरता से पूर्ण विवेचन के भारीपन को दूर करने के लिये मैंने एक हलका-सा प्रश्न बीच में किया, "अब तक की अपनी किस कृति से आपको पूर्ण संतोष हुआ है?"

'अब तक की लिखी कृतियों में से मुझे किसी से भी पूर्ण संतोष नहीं है। यों अपनी कुछ स्फुट कविताएं मुझे बड़ी प्यारी हैं। जैसे 'जलती निशानी,' 'ओ नैया के खेने वाले', 'आज मांझी, मैं न बांधूंगा तरी इस तट विजन में' (अपराजिता), 'सखी', 'टूटते हुए तारे के प्रति' (मधूलिका), 'क्या तुम मुझको याद करोगी', 'सर्वहारा', 'दीप जल में बह चला,' (किरण-वेला), 'चलचित्र', 'पावस-संध्या में', सहसा किसने यों ललकारा' (करील), 'वनफूल', 'नहीं जाती किसी की याद प्राणों से नहीं जाती', 'बोल अरे कुछ बोल' (लाल चूनर), तथा और भी अन्य कविताएं मुझे बहुत संतोष देती हैं। उपन्यासों में मुझे 'चढ़ती धूप' लिख कर जो संतोष मिला है, वह अवर्णनीय है। सच तो यह है कि मुझे अपनी प्रत्येक कृति के बाद संतोष मिलता है। यह सफलता की उपलब्धि से सम्बन्ध नहीं रखता, यह सृजन के सुख की परितृप्ति है।"

"क्या आप यहां अपनी सृजन के समय की मनःस्थिति पर प्रकाश डाल सकेंगे?"

"जिस समय मैं लिखने बैठता हूँ, उस समय आठ-दस घण्टे लिख कर उठता हूँ। अपना 'पारकर-पेन' और फुलस्कैप कागज के पन्ने लेकर जब मैं लिखने बैठता हूँ, तब मेरे सामने 'बादल-से चले आते हैं मजमूं मेरे आगे' वाली स्थिति रहती है। मुझे ऐसा मालूम पड़ता है कि मैं कितना लिखूं और क्या-क्या न लिखूं? मैं बराबर लिखता चला जाता हूँ। कविता तो मैं एक बैठक में एक लिख डालता हूँ और इसमें दो तीन घण्टे से अधिक का समय नहीं लगता; लेकिन उपन्यास लिखते समय जब तक पूरा दिन और रात मेरे सामने नहीं रहता, तब तक लिखना आरम्भ नहीं करता। बीच में यदि कोई बहुत ही आवश्यक कार्य आ जाय, तो मैं ५-१० मिनट के लिये उठता हूं, नहीं तो मैं पड़े-पड़े पेट के बल, छाती के नीचे एक तकिया रख कर लिखता ही रहता हूँ। भावों के समुद्र में मैं इतना डूब जाता हूँ कि मुझे तन-मन का होश नहीं रहता। कोई मित्र यदि आता है या परिवार का कोई व्यक्ति उस समय बात करता है, तो मुझे बहुत खटकता है और कभी कभी गलतफहमियां भी हो जाती हैं; लेकिन अब लोग मेरी आदत से इतने वाकिफ हो गये हैं कि यदि उस समय मैं उनसे बेरुखी से बात करता हूँ तो वे बुरा नहीं मानते और मुझ पर क्रोध करने की बजाय तरस खाते हैं। कभी-कभी ऐसा जरूर होता है कि लिखते-लिखते मैं बेचैन हो जाता हूँ और कमरे में जोर-जोर से टहलने लगता हूं—अपने मन की उत्तेजना को दबाने के लिए। लेकिन ऐसा कम होता है।

लिखता मैं तभी हूँ, जब मेरे भीतर कला की वेदना फूटती है। आग्रह की पूर्ति के लिये मैं नहीं लिख पाता। अधिकतर मैं रात को ही लिखता हूं, क्योंकि रात में जब घर का कोलाहल शान्त हो जाता है और आकाश से निस्तब्धता पूरे वेग से बरसने लगती है, उस समय मन को एक विचित्र-सा ठहराव मिलता है। लिखने के बाद मुझे ऐसा लगता है, जैसे मन का कोई बोझ उतर गया हो और बड़ी समत्वपूर्ण परितृप्ति मुझ पर छा जाती है। ऐसे विचित्र उल्लास का अनुभव अपने भीतर करता हूँ, जो कभी-कभी मुझे ही हास्यास्पद-सा जान पड़ता है। शारीरिक थकावट तो आ जाती है, पर मन निर्भ्रान्त और मुक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाता है। न जाने कितनी रातें मैंने इस प्रकार बिना सोए, रात-रात भर लिख कर काटी हैं!

उपन्यास लिखने से पहले जिस स्थिति या वातावरण का चित्रण करना होता है, उसे मैं दस-पन्द्रह घण्टे पहले से अपने दिमाग में पकाता रहता हूँ और आंखों के सामने आने वाले प्रत्येक दृश्य, बात और पाठ्य-सामग्री से रूप-रंग का संचार करता हूँ। शिल्प-विधान की चिन्ता मैं नहीं करता, क्योंकि तंत्र या टैकनीक मेरे लिये गौण है। रचना की शक्ति ही उसके लिये टैकनीक बन जाया करती है। रस का सृजन और विचारोत्तेजकता को ही मैं प्रमुखता देता हूँ। मैं मानता हूँ कि जिस कलाकार में इनका संतुलित सौंदर्य नहीं है, वह न तो लोकप्रिय हो सकता है और न साहित्य के ऊंचे आदर्श की पूर्ति ही कर सकता है।"

"आपकी साहित्य-सृजन से कभी विरक्ति भी हुई है? यदि हां, तो उसके कारण क्या-क्या रहे हैं? और विरक्ति होने पर भी आपने क्यों लिखना जारी रखा है?"

यह प्रश्न जब मैंने किया तब पुराणिक, जो बीच में यह सोच कर उठ गये थे कि न जाने कब तक इनकी बातचीत चले, अचानक पान लिए और मुंह में सिगार दबाए आ गए। 'अंचल' जी को उन्होंने पान तो दिए ही, एक सिगार भी दिया और 'अंचल' जी पान चबाते हुए सिगार का कश खींचने लगे। सुना है कि हिन्दी-लेखकों में पं० पद्मकान्त मालवीय सबसे अधिक पान खाते हैं, पर यदि कोई देता रहे तो 'अंचल' जी भी बिना मना किए पान खाते चले जायंगे। पान खाने से उन्हें विशेष स्फूर्ति मिलती है। संभव है, वे लिखते समय भी पान खाते रहते हों। मैंने तो यह अनुभव किया है कि पान उनके विचारों के स्पष्टीकरण का साधन-सा है। अस्तु।

उन्होंने मेरे प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा—"कभी-कभी मन और शरीर इतने चिन्ताकुल हो जाते हैं कि जैसे प्राण थक गए हों और अवसाद की ऐसी कुहेलिका तथा कुंठा घेर लेती है कि लिखना-पढ़ना तो फिर भी कुछ हो जाता है, पर मन की उस क्लान्ति और जड़ता-भरी स्थिति में लिखा नहीं जाता। हफ्तों यह मनःस्थिति रहती है और एक विचित्र घायल पन-सा आ जाता है। अतीत की स्मृतियों का भी उसमें बड़ा हाथ रहता है। जब पारिवारिक चिन्ताएं अधिक रहती हैं, तब लिखना रुक जाता है; लेकिन जब मन को आघात मिलते हैं और पीड़ा बढ़ती है, तब लिखने की उत्कट इच्छा होती है। जिस सामाजिक विषमता का बोध मेरे जैसे श्रमजीवी को उठते-बैठते हुआ करता है, वह लिखने की उत्तेजना में सहायक होता है। हां, जब घर में कोई बीमार पड़ जाता है, उस समय लिखने की अपेक्षा उस कुटुम्बी की सेवा करना या रोगी की तीमारदारी करना अधिक सुखकर जान पड़ता है। आर्थिक अभाव भी लिखने में बाधक हुआ है और प्रकाशकों की हृदय-हीनता ने भी कम अनुत्साहित नहीं किया, पर इस स्थिति से उभरना मेरे लिये अधिक कष्टसाध्य नहीं रहा। सच तो यह है कि बिना लिखे मैं रह नहीं सकता।"

"क्या आपकी सम्मति में साहित्योपजीवी होकर जिया जा सकता है?"

"जिया तो जा सकता है, पर सृजन के सौंदर्य की रक्षा नहीं की जा सकती। कारण यह है कि मनुष्य की शक्तियां सीमित होती हैं, इसलिए कलाकार को जीविका के लिए दूसरा माध्यम चुनना चाहिए। कलाकार के लिए सबसे हानिकर बात है पत्रकारिता। एक बार पत्रकार का जीवन अपनाते ही कला के मूल्यों की रक्षा करना और साहित्य के ऊंचे स्वरूप को बनाए रखना बड़ा ही कठिन हो जाता है। आज तो हिन्दी-लेखक को इतना पैसा मिल रहा है कि वह साहित्योपजीवी होकर साधारण रूप से सुखी जीवन बिता सकता है; लेकिन उस समय उसे जो लिखना होगा, वह सामयिकता और बाजार की मांग को ध्यान में रख कर लिखना होगा। न तो वह साहित्य के आदर्श की रक्षा कर सकेगा, न कला की परिष्कृति को संभाल सकेगा। इसलिए मेरा मत है कि कोई दूसरा पेशा अपनाकर उसे साहित्य का निर्माण करना चाहिए। यह अवश्य है कि जो वह लिखे, उसे वह अधिक से अधिक मूल्य पर बेचे और उस पर ज्यादा से ज्यादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाभ पाने की चेष्टा करे; लेकिन लिखे वह स्वतन्त्र प्रेरणा से ही, पैसे के लिए नहीं। एक बार कोई चीज लिख लेने पर उसका बाजार-भाव किया जाय; बाजार-भाव से प्रेरित होकर न लिखा जाय।"

"लेकिन कठिनाई तो यह है कि दूसरा पेशा अखत्यार करने वाले आलसी हो जाते हैं और लिखते नहीं। तब फिर अच्छे साहित्य की दृष्टि से हिन्दी का भविष्य क्या होगा?"

"जिस गति से हिन्दी में लिखने वालों की संख्या बढ़ रही है, उससे साहित्य का भविष्य असंदिग्ध है। शीघ्र ही वह समय आने वाला है या आ रहा है, जब लोग हिन्दी में लिखना उतनी ही शान की बात समझेंगे, जितनी आज से दस साल पहिले अंग्रेजी में लिखना। इतने बड़े राष्ट्र की भाषा में लिख कर यश प्राप्त करने का लोभ संवरण करना उनके लिए कठिन हो जायगा। इस प्रकार हिन्दी-साहित्य में परिमाण की तो वृद्धि होगी ही, साथ ही साथ जनता की सांस्कृतिक रुचि को अकुंठित रूप से विकसित होने का अवकाश भी मिलेगा। इस प्रकार के सांस्कृतिक विकास का आधार होगा मानवीय मूल्यों की पूर्ण प्रतिष्ठा। कविता, कथा और नाट्य-साहित्य में नए-नए प्रयोग होंगे और वे जीवन के अधिकाधिक निकट आएंगे। जिस समय जनता की रुचि पूर्ण परिष्कृत हो जायगी, उस समय जनता का विवेक पुष्ट होगा और वह सबल साहित्य की मांग करेगी और एक बार साधक-साहित्यकारों को पनपने का अवसर मिलेगा।

शीघ्र ही वह समय आने वाला है, जब शोषक और शोषितों के बीच की खाई और बढ़ेगी और दोनों अधिकाधिक संगठित होंगे। यहां मेरा मतलब गृह-युद्ध की भावना से नहीं है, वरन् संस्कृति की रक्षा के लिए आज हिन्दी का साहित्यकार यह अनुभव कर रहा है कि उसके सामने केवल दो मार्ग हैं—या तो वह प्रगति की शक्तियों का साथ दे या दिन पर दिन बुझती हुई प्रतिक्रियावादी शक्तियों का। इस सम्बन्ध में हिन्दी का साहित्यकार किसी भी भाषा या देश के साहित्यकारों से कम जागरूक नहीं है। यदि उसे प्रतिक्रियावादी शक्तियों के साथ रहना है, तो भी वह इस सम्बन्ध में द्विधाहीन है; लेकिन इस प्रकार के प्रस्तरीभूत साहित्यिकों की संख्या बहुत थोड़ी है। अधिकांश साहित्यकार तो समन्वित मानवीय मूल्यों का आविष्कार करने, उनका स्वरूप स्पष्ट करने और हमारे राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन में उनकी प्रयोग-दिशा इंगित करने में लगे हैं। हमारी जिम्मेदारी भारी है। हिन्दी-साहित्य मूलतः ऐसा माध्यम है, जिससे समस्त भारतीय जीवन की अभिव्यक्ति की जा सकती है और जिसे संसार के साहित्य के सामने पेश किया जा सकता है। शीघ्र ही नवीन और प्राचीन का समन्वय होने वाला है। वर्त्तमान सामाजिक व्यवस्था तो बदलेगी ही, आज के असामाजिक और व्यक्तिप्रधान मानव-मन को नए सिरे से गढ़ने की चेष्टा भी की जायगी। आने वाली तरुण पीढ़ी से मुझे इस सम्बन्ध में बड़ी आशा है। उनमें अधिकांश लेखक और कवि न जाने कितनी विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करके साहित्य-सृजन कर रहे हैं। सामाजिक विद्रोह के मोर्चे पर वे शुरू से ही आ डटे हैं। प्रगतिशील तो वे हैं ही, क्योंकि एक विराट ध्येय को लेकर वे चलते हैं और उनकी गति का अनुगमन करती हुई भविष्य की उज्ज्वलता भी चल रही है।"

'अंचल' जी के हिंदी के भविष्य और तरुण पीढ़ी-द्वारा नवयुग-निर्माणकारी साहित्य की आशा और विश्वास भरे इन शब्दों के साथ हमारी बातचीत समाप्त हो गई।

★

मुफ्त! मुफ्त!

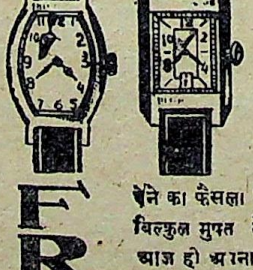

FREE

लन्दन न्यूगोल के जेवरात का मशहूर करने के लिये हमने डायरी कलेण्डर १९४८ और असली रिस्टवाच गारण्टी १५ साल मुफ्त देने का फैसला किया है यदि आप बिल्कुल मुफ्त लेना चाहते हैं तो आज ही अपना नाम व पूरा पता साफ २ लिख कर भेज दें मगर जल्दी करें वर्ना यह समय बार २ हाथ न आयेगा।

फ्रेंचे गोल्ड सप्लाई कं० [M. H.] देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

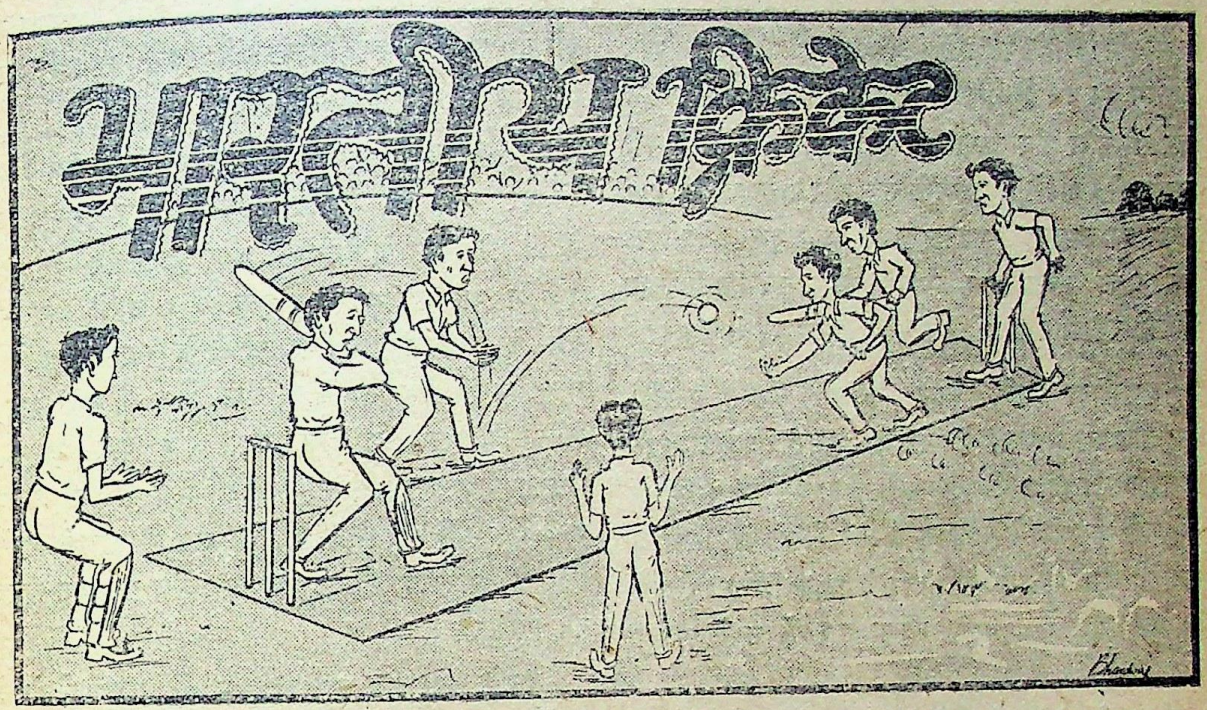

श्री हरिश्चन्द्र कैला

अन्य खेलों की भांति इस देश में क्रिकेट का विकास भी धीरे धीरे हुआ है। इस बीसवीं शताब्दी के शुरू-शुरू में तो सरकारी अफसर या अमीर लोग ही इसे खेलते थे, लेकिन बाद में यह स्कूलों और कालिजों में भी खेली जाने लगी, विशेषकर उन स्कूलों व कालिजों में जिनके हेडमास्टर या प्रिंसिपल अंग्रेज थे। श्री रांजी, जिन के जोड़ का खिलाड़ी अभी तक पैदा नहीं हुआ, विलायत में बीस वर्ष क्रिकेट खेलते रहे और ७२ सैंकड़े बनाये। वे पहले हिन्दुस्तानी थे, जिन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि यदि हिन्दुस्तानी इस खेल को अपनालें, तो वे भी उतने ही अच्छे खिलाड़ी हो सकते हैं, जितने अंग्रेज। उन के पश्चात् उनका भतीजा दलीपसिंहजी और नवाब पटौदी भी विलायत में काफी वर्ष खेले।

उधर जब वे दोनों खिलाड़ी विलायती क्रिकेट के मैचों में अपने जौहर दिखा रहे थे, इधर हिन्दुस्तान में एक नया सितारा चमकना शुरू हो गया था। उस सितारे का नाम है सी० के० नायडू, जिसने सबसे अधिक छक्के मारे हैं। इन्हें 'पूर्व के जेसर' के नाम से भी पुकारा जाता है। क्रिकेट-प्रेमियों को याद होगा कि सन् १९२५-२६ के दिसम्बर में नायडू ने एम० सी० सी० के टाटे, और गेरी जैसे प्रसिद्ध 'बाऊलरों' के किस बेरहमी से छक्के छुड़ाये थे—सौ मिनट में इन्होंने ११ छः और १३ चार मारे। छः साल बाद इन्होंने लार्डज़ के मैदान में विलायती दौरे का पहला सैकड़ा किया और उसके बाद दौरा समाप्त होते तक पांच सैकड़े और किये। इन्हीं के आधार पर इनकी उस वर्ष के दुनिया भर के पांच सर्वोत्तम खिलाड़ियों में गणना हुई। उस युग के अन्य मशहूर खिलाड़ियों में एल० पी० जय, डी० बी० दियोधर, वजीर और नजीर और रामजी के नाम भी उल्लेखनीय हैं। बाद में नये खिलाड़ी आये। अमरनाथ, मर्चेण्ट, वीणू मन्कड, अमरसिंह, निसार, मुश्ताक अली और मोदी के नाम से भला कौन परिचित नहीं?

अतीत पर हम फिर एक बार दृष्टि डालें। सन्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९३३ में श्री रांजी की मृत्यु के बाद 'रांजी ट्राफी चेम्पियनशिप आफ इण्डिया' का श्रीगणेश हुआ। शुरू शुरू में तो यह प्रतियोगिता जरा फीकी ही रही, लेकिन १९४० में एकदम हमने आश्चर्यजनक उन्नति कर ली और फिर उन्नति की गति में कभी भी कमी नहीं आने दी। अपने सौभाग्य के एक और पहलू को भी नहीं भूला जा सकता। युद्ध-काल में जब दूसरे देशों को क्रिकेट का खेल बन्द करना पड़ा, तब हम निरन्तर खेलते रहे और अपनी एक टीम लंका भी भेजी।

रांजी ट्राफी-प्रतियोगिता, राष्ट्रीय और प्रान्तीय साम्प्रदायिक भिड़न्तों के कारण हमारी क्रिकेट खूब पनपी। तरुणों और नवयुवकों को प्रोत्साहन भारत के विश्वविद्यालयों के आपस में मैच खेलने से मिला। फलतः आज हम समस्त संसार के प्रमुख क्रिकेट खेलने वाले देशों में ही नहीं, बल्कि पूर्व में सबसे अच्छा खेलते हैं।

हमारे देश में विलायत और आस्ट्रेलिया दोनों देशों की टीमें आती रही हैं। सन् १९३६ के हमारे विलायती दौरे से पूर्व पटियाला-नरेश ने आस्ट्रेलिया से एक टीम बुलाई थी, ताकि हमारे खिलाड़ियो का अभ्यास हो सके। इस आस्ट्रेलियन टीम का नेतृत्व जेक राइडर के हाथों में था और हम में सी० जी० मेकार्टने जैसे खिलाड़ी थे। मेकार्टने क्रिकेट का गवर्नर-जनरल माना जाता है। आस्ट्रेलिया वालों ने यहां २३ मैचे खेले, जिन में से वे ११ जीते, तीन हार गये और नौ का फैसला नहीं हो सका। तीन हारे हुए मैचों में लाहोर और मद्रास के 'टेस्ट-मैचों' की भी गिनती होती है। इन 'टेस्ट-मैचों' में भारतीय टीम के कप्तान श्री वजीर अली थे।

सन् १९४५ में फिर खिलाड़ियों के अभ्यास के लिए आस्ट्रेलिया की क्रिकेट-टीम को भारत में आमन्त्रित किया गया, क्योंकि १९४६ में हमारी टीम ने विलायत जाना था। इस बार आस्ट्रेलिया की टीम के कप्तान लिण्डसे हैसट थे। साधारण मैचों के अतिरिक्त जो तीन 'टेस्ट मैच' खेले गये, उनमें से दो का निर्णय नहीं हो सका और तीसरा मैच वे हम से हार गये, अर्थात् अन्तिम जीत हमारी ही हुई। आस्ट्रेलिया की टीम के साथ हुए इन मैचों के फलस्व हमें दो अच्छे खिलाड़ी मिल गये, जिनके नाम हैं मो मोदी और अब्दुल हफीज कारदार।

विश्वविख्यात एम० सी० सी० (की टीम) दो बार भारत आ चुकी है—पहली बार १९२५-२ में श्री गिलीगन के नेतृत्व में और दूसरी बार १९३ ३४ में श्री जार्डीन के नेतृत्व में। दोनों बार इस के साथ विलायत के चोटी के खिलाड़ी आये गिलीगन की टीम तो यहां एक मैच भी नहीं हार लेकिन श्री जार्डीन की टीम एक मैच हार गई बनारस में खेला गया था। इन्हीं मैचों में श्री अम नाथ एक अद्वितीय खिलाड़ी के रूप में सामने आ और वे भारतीय क्रिकेट के रंग-मंच पर दस-बार वर्ष छाये रहे।

इसके पश्चात् १९३७-३८ में लार्ड टेनीसन की टीम आई। यह टीम भी उतनी ही अच्छी थी जितनी श्री गिलीगान या जार्डीन की टीम, अंत केवल कप्तान का था। इस ने आठ मैच जीते, पां हारे और ११ में बराबर रही। स्मरण रहे कि इन मैचे में वीणू मन्कड सब भारतीय खिलाड़ियों से बाजी ले गया और लार्ड टेनीसन ने तो एक बार यहां तक क दिया—"वीणू मन्कड का शुमार संसार के पहले ग्यारह खिलाड़ियों में हो सकता है।" यद्यपि विजय मर्चेण्ट बहुत-असफल रहा, लेकिन उसने भी कप्तानी के काम को बड़ी चतुराई से निभाया।

युद्ध की समाप्ति पर हमने पटौदी के नवाब के नेतृत्व में एक टीम विलायत भेजी। यद्यपि इसका प्रमाण तो मिल गया कि हमारी क्रिकेट विलायती क्रिकेट से अभी पीछे है, तथापि इस बार हम सन् १९३६ की अपेक्षा बहुत अच्छे रहे। मर्चेण्ट ने २३८५ 'रन' बनाये और मन्कड ने १०० 'विकट' लिए और एक हजार से ऊपर 'रन' बनाये।

अब हम आते हैं भारतीय टीम के आस्ट्रेलिया के सन् १९४७-४८ वाले दौरे पर। हमारी इस टीम के कप्तान थे श्री अमरनाथ। मर्चेण्ट और मोदी जैसे दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार बड़े खिलाड़ी नहीं जा सके। आस्ट्रेलिया में, सच्ची बात तो यह है कि हमारी टीम उतनी नहीं चमकी जितने की हम को आशा थी। इसके कई कारण हैं। पहला तो यह कि कुछ अच्छे हिन्दुस्तानी खिलाड़ी वहां नहीं जा सके और दूसरा यह कि उन दिनों आस्ट्रेलिया में वर्षा असाधारण रूप से अधिक हुई। हमारे और आस्ट्रेलिय-टीम के बल में इतना अन्तर नहीं था जितना कि भिड़न्तों के नतीजों से जाहिर हुआ। सौभाग्य ने उनका साथ दिया और दुर्भाग्य हमारे हिस्से आया। इसी कारण हमारा उनका अन्तर इतना अधिक दिखाई देता है। तिस पर भी हम जहां-तहां खूब खेले। वीणू मन्कड ने 'आस्ट्रेलियन इलैविन' के विरुद्ध आठ 'विकट' लिए और हमें मैच जितवा दिया। एडीलेड में खेले गये चौथे 'टेस्ट' में हजारे ने दोनों दफा पृथक पृथक सैंकड़े किये और फड़कर, जो बाऊलिंग में योग्यता के कारण ही टीम में लिया गया था, अच्छा बैट्समैन भी साबित हुआ। आस्ट्रेलिया का सामान्य दर्शक खेल में गति का ही ढूंढता है और हमारे खिलाड़ियों ने उसे निराश नहीं होने दिया।

यों अतीत पर दृष्टिपात करने से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भारतीय क्रिकेट का इतिहास काफी उत्साहवर्द्धक है। प्रत्येक खेल के विकास की तीन सीढ़ियां निर्धारित की जा सकती हैं। पहली सीढ़ी चढ़ते समय प्रारम्भिक अड़चनों और अभावों का सामना करना पड़ता है। दूसरी सीढ़ी चढ़ कर हम अच्छे स्तर को तो प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन 'टीम' की एक 'पोजीशन' के लिये केवल एक ही खिलाड़ी प्राप्य होता है और तीसरी सीढ़ी चढ़ने पर खेल इतना ऊंचा उठ जाता है कि एक एक स्थान के लिए कई कई खिलाड़ियों की योग्यता का निरीक्षण करना पड़ता है। हम अभी दूसरी सीढ़ी पर हैं या जरा इस से आगे। आशा की जा सकती है कि अगले दस-बारह वर्षों में हम अनिवार्यतः तीसरी सीढ़ी भी चढ़ जायेंगे।

★

५००) इनाम (गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड)

सिद्ध वशीकरण यन्त्र। इसके धारण करने से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। आप जिसे चाहते हैं, चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो, आपके साथ चली आवेगी। इससे भाग्योदय, नौकरी, धन की प्राप्ति, मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होना है। मूल्य २), चाँदी का ३); सोने का १२)।
हमारे यन्त्र से अच्छा दूसरा कोई यन्त्र साबित करने पर ५००) इनाम।
मोहनी भण्डार रजिस्टर्ड ( ) देहली।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

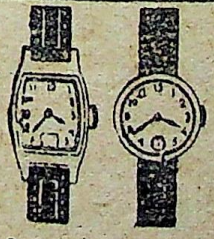

हमारे प्रसिद्ध 'काला तेज रजिस्टर्ड' के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले होजाते हैं और फिर जीवनभर काले पैदा होते हैं। यह तेज गिरते हुये बालों को रोकता है और उनको लम्बे, घूंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहाँ बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आँखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठण्डक पहुँचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैन्सी म्यूट रिस्टवाच जो कि अतिसुन्दर है और एक अंगूठी सोना (जन्दन न्यूगोल्ड) बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापिस करदी जाती है। तीन शीशी रुपाई के खरीदार को डाकखर्च बिल्कुल माफ और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड और चार घड़ियां बिल्कुल मुफ्त दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

जनरल नोवल्टी स्टोर्स, (M. H.), दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७५०० रु० नकद इनाम

आप २४ घण्टों में फिर युवक बन सकते हैं

औटोजम (विटामन द्यानक) के खाने से प्रत्येक पुरुष व स्त्री अपनी आयु से १५-२० वर्ष कम आयु के दिखाई देते हैं। यह निर्बल स्वास्थ्य, खून की खराबी, दिमागी तथा शारीरिकश्रम में लाभदायक है। इसके खाने से भूख खूब लगती है। एक सप्ताह में पांच से दस पौंड तक तोल बढ़ जाता है। मुंह पर लाली आ जाती है। चेहरे का रंग गोरा हो जाता है। तथा चेहरे पर यौवनावस्था की भांति की चमक आ जाती है। जैसे कि आपका चेहरा यौवन अवस्था में था। इसके प्रयोग से नजर तेज होती है। यह गालों को आकर्षित बना देता है, होठों पर लाली आ जाती है, सफेद पके हुए बालों को सदा के लिए काला कर देता है, दांतों को अक्लो को भांति दृढ़ कर देता है। स्विट-जरलैण्ड के एक शत वर्षीय वृद्ध पुरुष ने इसका प्रयोग किया। जिससे वह तीस वर्ष के युवक की भांति हो गया। यही नहीं, पर उसने एक युवती से व्याह भी कर लिया।

औटोजम के वरतने से ८० तथा ९० की आयु में भी हालीवड के एक्टर तथा एक्ट्रसें हृष्ट, युवक तथा सुन्दर प्रतीत होने लगती हैं। और परदा पर अति फुर्ती से काम करने लगती है। स्त्रियां यदि इनका प्रयोग करें तो अपनी आयु के पिछले समय तक मुख की सुन्दरता तथा चमक को बनाये रख सकती हैं। पुरुष इसके प्रयोग से समय के पूर्व वृद्ध नहीं हो पाते। बाल काले तथा आकर्षित रहते हैं। मुख की आकर्षिकता सदा बनी रहती है। स्वास्थ्य आयु भर खराब नहीं होता।

Autogem औटोजम Autogem

को एक शीशे के वर्तन में बहुत काल तक रखा गया। तब वह शीशे का बर्तन इतना पक्का हो गया कि कई चोटें मारने पर भी न टूट सका। इसको इंग्लैण्ड में सहस्त्रों पुरुषों ने देखकर प्रमाणित किया। औटोजम का तुरन्त प्रयोग आरम्भ कर दें। इसका फल अपना उत्तर आप होगा। प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व अपना तोल करलें तथा अपना मुख शीशा में देखलें। एक सप्ताह पश्चात् फिर शीशा देख फिर नोट करें कि आप क्या अनुभव करते हैं। आप इसके जादू की भांति प्रभाव की प्रशंसा करेंगे। औटोजम को प्रत्येक व्यक्ति तक ले जाने के लिये इसका मूल्य केवल अल्प समय के लिए ५) रुपया रखा गया है। कुछ समय के उपरांत इसका असली मूल्य ३०) रुपया कर दिया जायगा। आज ही इसे मंगवाने के लिये आर्डर भेज दें। क्योंकि इसकी सम्भावना है कि आपके देर करने से माल समाप्त हो जाए और आपको पछताना पड़े।

मिलने का पता—

दी मैक्सो लैबोरेटरीज लिमिटेड,

पोस्ट बक्स नं० ४५ (M.M.D.) देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलौने

(पृष्ठ २८ का शेष)

मनोहर बीच में ही बोल उठा—"गुरुदास ट्रांसपोर्ट कम्पनी ?"

"हां, हां वही," बूढ़े ने स्मृति बटोरते हुए कहा, "वहां पर एक सरदार ड्राइवर है—सोभसिंह सोडी। नाम याद रहेगा ना ?"

मनोहर ने नाम दोहराया।

बूढ़ा बोला—"बस, सोडी सा'ब से मिल लीजिए। एक बारी भी और बुखार आ जाय तो मुझ से कहिए। वह ऐसा कमाल का गंडा देते हैं कि बस आप हैरान ही रह जायेंगे। जनाब मेरा अजमाया हुआ है। वह भी एक तरह से शरणार्थी ही हैं, सरगोधा से आए हैं·····।"

अब मनोहर को वहां ठहरना व्यर्थ जान पड़ा। यद्यपि अब वह डाक्टर की मेज से लगभग पांच फुट ही दूर रह गया था, फिर भी वहां ठहरा नहीं। दवा लिए बिना ही लौट चला—चेहरे पर ऐसा संतोष था, मानों अचूक ओषधि मिल गई हो।

* * *

घर लौट कर मनोहर ने सुन्दर को खटोले पर लेटा दिया। तारो ने उत्सुकता से पति की ओर देखा; पर मनोहर कुछ बोला नहीं, जल्दी से बाहर निकल गया। तारो को बस इतना ही सुन पड़ा—"अभी आया।" और वह सुन्दर की चादर हटा कर उसे आराम से लेटाने लगी। तारो ने देखा, सुन्दर अपने ओठों को परस्पर भींच रहा था। उसी क्षण वह कटोरी में पानी ले आई। दो-तीन चम्मच पानी हलक में उतरा, तो सुन्दर ने आंखें खोलीं कुछ देर, फिर बंद कर लीं। तारो खटोले के आस-पास दवा ढूंढने लगी। कुछ नहीं मिला। उसका मन अनेक अनिष्टकारी कल्पनाओं से भर उठा।

थोड़ी देर बाद मनोहर उसी प्रकार उदास लौटा। तारो ने पूछा, "इतने गुमसुम क्यों हो ? क्या दवा नहीं मिली ?"

"मैं लाया नहीं।"

"नहीं लाए !" तारो सहम-सी गई, "क्यों नहीं लाए ?"

तब मनोहर ने समझाया, "सामने यह गुरुदास ट्रान्सपोर्ट कम्पनी है ना, यहां एक ड्राइवर है सरगोधा का। सोभासिंह सोडी नाम है। वह तिजारी बुखार का गंडा देता है। आज रात को अमृतसर से लौटेगा, तो कल सुबह को ही मैं उससे गंडा ले आऊंगा। बस, इससे बढ़ कर और कोई इलाज नहीं है, समझी।"

सुन कर तारो न तो प्रसन्न हुई और न ही उसका मन अधिक दुखी हुआ। हृदय पर जैसे कुछ बोझ रख दिया गया हो। तारो भारी मन से घर के काम में लगी। मनोहर जब काम पर चला गया, तब उसका मन और भी टूटने लगा। सड़क के दूसरी ओर लगे कमेटी के नल पर जब वह पानी लेने गई, तो बेसुध-सी उस ट्रांसपोर्ट कम्पनी के आगे रुक गई। पर वहां तब कोई भी ट्रक नहीं था। मेज डाले एक बाबू-सा बैठा था। चढ़ती धूप की तेजी में वह बरामदे के नीचे बिछी हुई मेज पर ऊंघने लगा था। तारो ने उस ओर देखा। खड़ी-खड़ी वह सोचती रही—इस बाबू से पूछ लूं, सोडी सा'ब कब आयेंगे, वह गंडा देंगे, सुन्दर का बुखार टूट जायेगा···। पर पति का कथन याद आते ही वह आगे बढ़ने से रुकी और नल की तरफ चल दी। लेकिन पानी भर कर जब लौटी, तब वह अपने को न रोक सकी। भरी हुई बालटी उसने 'धम्' से मेज के पास रख दी, आंचल से पसीना पोंछा। तब तक बालटी की आवाज सुन कर वह बाबू चेतन हो चुका था। उपेक्षा की दृष्टि से उसने तारो को देखा। तारो सहम गई। तनिक डर से वह बोली, "बाबू जी, मुझे गंडा चाहिए था, मेरा पुत्तर बीमार है···"

उस क्लर्क की निद्रा में जो विघ्न पड़ा, उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्र भारत की दीपावली

की

शुभ मंगल कामनायें

६५ वर्षीय प्राचीन

और प्रतिष्ठित

आयुर्वेद तथा पेटेन्ट

औषधियों

के

सुखसंचारक

द्राक्षासव

बालसुधा सुधासिंधु

निर्माता

सुखसंचारक कं॰ लि॰

मथुरा

स्थापित १९८६ ई॰

INDIA ADVERTISERS LTD AGRA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह क्षुब्ध हो उठा। झल्लाहट से बोला—"यहां कोई अस्पताल खुला है। कल आना सांझ को, कल। हमारा एक ड्राइवर है, वह गंडा देगा।"

तारो ने दीन स्वर से फिर भी प्रश्न किया—"कल तो जरूर मिल जायेगा ना?"

इस बार क्लर्क ने कुछ विनम्र बनते हुए कहा, "माई, कहा न, कल आना। कल तक सोभासिंह नहीं आ सका, तो परसों तो आ ही जायेगा।"

तारो ने बालटी उठाई, क्लर्क कह रहा था, "बात असल में यह है, माई जी, कि उसका एक बच्चा उधर ही रह गया है। उसकी तलाश में दस महीने से कैम्पों में मारा-मारा फिर रहा है। कल नहीं, तो, परसों जरूर लौट आयेगा।"

तारो के चेहरे का रंग सहसा उड़ गया। दो ही कदम चली थी कि मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई। लौट कर क्लर्क से फिर पूछा, "कितना बड़ा था बच्चा?"

"होगा कोई ढाई पौने तीन साल का···। कुछ पता है आपको?"

तारो सटपटा गई—"नहीं-नहीं।" फिर घबराहट से उसने पूछा, "लेकिन रह कहां गया?"

"ओहो," क्लर्क फिर चिड़चिड़ा बन गया, "आपको इन बातों से क्या, माई जी? खो गया रेल में आते हुए उधर से—पाकिस्तान से—"

अब तारो वहां एक निमिष भर को भी नहीं ठहर सकी। उसका हृदय आप ही जोर-जोर से धड़कने लगा। पैरों में गति आ गई। और उस चटाइयों से घिरे अपने बसेरे में आकर उसने सोते हुए सुन्दर को झटपट छाती से लगा लिया। मन न जाने क्यों सशंक हो उठा।

* * *

संध्या आई और फिर रात्रि की कालिमा भी धीरे-धीरे गाढ़ी होने लगी। तारो के हृदय का बोझ भी मानों बढ़ता गया, उदासी गहरी होती गई और सुन्दर के कुम्हलाए हुए चेहरे पर बार-बार ठहर जाने वाले उसके नेत्र भी सजल होते गए। मनोहर ने उसकी डबडबाई हुई आंखों का रहस्य जान लेना चाहा, पर वह नारी रहस्यमयी बनी रही।

लेटते हुए जब मनोहर ने लालटेन की बत्ती तनिक नीची की तो दीवार पर पड़ने वाली तारो की छाया बड़ी हो गई। मनोहर ने कहा—"लेट जाओ तुम भी; अब तो बुखार भी हल्का ही होता जायगा मुन्ने का·····"

पर तारो सुन्दर के खटोले के निकट ही बैठी रही, बैठी रही। सहसा गहरे अँधेरे में प्रकाश के धब्बे नजर आने लगे—वह बनते और बिगड़ते। तारो के मन पर भी अतीत के चित्र बनते-बिगड़ते। प्रकाश का एक धब्बा धीरे-धीरे फैलता गया—जगमगाने लगा, जैसे सूर्य ऊषा से विदा लेकर ऊँचे गगन पथ की ओर अग्रसर हो चुका हो। उस फैलती रोशनी में इंजन ने सीटी दी—सीटी भयानक थी। गाड़ी धीरे-धीरे रेंगने लगी—ऊपर आदमी बैठे थे, नीचे भी एक पर एक लदा था। दोनों ओर भी प्राणों का मोह छोड़ कर असंख्य लटके थे—स्त्री-पुरुष और बच्चे भी। शोर था डरावना। कान पड़ी भी आवाज नहीं सुन पड़ती थी। तारो के कान जैसे बहरे हो गए थे। नेत्र मनोहर पर ठहर गए थे। वह बायीं ओर लटक रहा था—एक छड़ के सहारे। सहसा तारो के हाथ अपनी गोद में पड़े बालक पर आकर ठहर गए। वह भीड़ से दबी भिंची बैठी थी, तब भी अनजाने वह बालक को थपथपाती रही। धीरे-धीरे तारोके घुटने सो गए। तब गोद में पड़े बालक के प्रति वह सावधान हुई। दोनों हाथों से उसे उठाया, पर नींद में था वह, 'ऊं···मां···' कह कर वह फिर तारो की ही गोदी में लुढ़क गया और वह उसे प्यार से सहलाए बिना न रह सकी। तभी झटके के साथ गाड़ी रुक गई···तारो के मुंह से भय की एक चीख निकली—"सुंदर!" वह चिल्लाई और खटोले पर पड़े सुन्दर को बाहुओं में कस लिया। मनोहर भी जाग गया।

"क्या हुआ?" उसने पूछा।

"कुछ नहीं, मैं डर गई थी," दबी-सी आवाज में तारो बोली।

अब तो इसका बुखार हल्का हो गया होगा, ठीक से सो जाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा।" तारो सुन्दर के माथे पर हाथ फेर कर लेट गई लालटेन की बत्ती तब आप ही काफी नीचे गिर गई थी। सड़क की बत्ती का धुंधला प्रकाश आता रहा।

* * *

सुबह होते-होते सुन्दर का ज्वर हल्का पड़ चुका था। मनोहर ने सफेदी घोलने के लिए एक कनस्तर खाली किया। तारो ने जब समझ लिया कि वह आज सफेदी करके ही रहेंगे, तो थके पैरों वह भी पानी लेने चली। घर में जो थोड़ा-सा पानी था, उसे कनस्तर में डाल कर उसने बालटी उठायी। मनोहर बोला, "मैं ले आता हूं, तुम ठहरो सुन्दर के पास…।"

पर तारो नहीं मानी। सड़क पर आई तो ट्रांसपोर्ट कम्पनी के सामने एक ट्रक खड़ा देख उसका हृदय धड़का। शरीर में जो थोड़ी-सी स्फूर्ति थी, वह भी मानों निःशेष हो गई। बालटी खाली थी, पर उसका हाथ जैसे भारी बोझ से थकने लगा। मन में आया कि पानी लाने से पहले ही पूछती चलूं – सोडी आया कि नहीं, पर पैर उस ओर उठने के लिए तैयार नहीं हुए। नल पर आकर उसने पानी भरा। वहीं एक स्त्री ने पूछा, "अब तो आप के सुन्दर का जी ठीक है?"

तारो जैसे 'सुन्दर' नाम सुन कर ही डर गई। पर मौन भी वह रह नहीं सकती थी। बोलने के लिए वह उद्यत ही हुई थी, तभी उस स्त्री ने फिर कहा, "आज गंडा मंगा लेना; वह देखो हरी गाड़ी सोभासिंह की ही है, रात आ गया जान पड़े है।"

"अच्छा! मंगा लूंगी जी।" बस तारो और अधिक कुछ नहीं बोली। बालटी भर कर लौटी तो उसने ट्रांसपोर्ट कम्पनी की ओर जाने का निश्चय किया। शक्ति बटोरी, पर जैसे जैसे वह उस ओर बढ़ती थी, वैसे ही उसकी संचित शक्ति क्षीण होती जाती थी। किसी अज्ञात भय से उसका रोम-रोम कंटकित हो उठा। कुछ पग आगे और बढ़ी तो उसकी दृष्टि उसी कल वाली मेज पर गई। पास ही एक सरदार को खड़े देख कर उसका सारा साहस-बल खत्म हो गया। पटरी के इस ओर आ गई वह। अपनी झोंपड़ी में आकर मनोहर से बोली "सुना है, आज वह ड्राइवर सा'ब लौट आये हैं।"

"तो मैं अभी यहीं बुला लाता हूं, यहीं देख लेंगे सुन्दर को।" मनोहर ने सफेदी के हाथ धोने के लिए पानी मांगा। तब तारो कांप-सी उठी। घबराहट से बोली—"पहले वहीं जा कर मिल लो, फिर सुन्दर को भी वहीं दिखा देना!"

मनोहर चला गया। तारो की निगाह सुन्दर पर ठहर गई। एक ही क्षण में उसकी मातृ-भावना में प्यार का चढ़ाव आया और वह बार-बार सुंदर को छाती से लगा कर पुचकारने लगी। पर शिथिलकाय और दुर्बल सुन्दर को प्यार की यह बौछार तनिक भी न सुहाई। रोग के कारण वह चिड़चिड़ा हो गया था। तारो उसकी शुष्क मुद्रा देख कर खीझ उठी। छाती जैसे फटने लगी उसकी। मुखाकृति विकृत हो गई।

तभी आ गया मनोहर। साथ में दूसरे व्यक्ति को देख कर वह समझ गई, यही सोभासिंह है। और उसे देख कर तारो चौंक-सी गई। मनोहर ने यह न देखा। पर हां, सुन्दर को देख कर जब सोभासिंह कुछ क्षण मौन उसी की ओर देखता रहा, तो मनोहर को आश्चर्य हुआ। जब उससे न रहा गया, तो बोला—"आज तो नहीं है बुखार, पर कल चढ़ेगा जरूर सुबह ही सात बजे…।"

सुन कर सोभासिंह की निमग्नावस्था टूटी अपने आप को संभाल कर वह शब्द ढूंढता-सा बोला, "हां बस ठीक है। चलिए, आप को गंडा दे देता हूँ।" वह उठा लेकिन द्वार तक पहुँचते ही कुछ रुका और भीतर की ओर लौटते हुए बोला, "कोई धागा दीजिए जरा इसके गले का नाप लेना है, उतना ही बड़ा गंडा भी बनेगा।"

मनोहर सुन कर चौंका, पर रोकने की इसमें क्या बात थी। तारो अवश्य ही सोभासिंह की दृष्टि से बच कर मुरझा गई। जब सोभासिंह ने शीघ्रता से सुन्दर का गला टटोला, तो तारो को समझते देर न लगी कि उसकी अंगुलियां गले का नाप नहीं ले रहीं बल्कि कुछ खोज रही हैं। मनोहर की समझ में कुछ न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे वालो सावधान

वर्तमान समय में बच्चों की दवा के विभिन्न प्रकार के विज्ञापन प्रकाशित हो रहे हैं; किन्तु समझदार और अनुभवी पुरुष सर्वदा अनुभूत प्रमाणिक सर्वश्रेष्ठ और निर्दोष औषध ही अपने बच्चों को सेवन कराते हैं।

बाल सुधा

बच्चों को मोटा, स्वस्थ और बलवान बनाने वाला

अर्द्ध शताब्दि से भी अधिक समय की विश्वस्नीय निर्दोष और अनुभूत स्वादिष्ट दवा है।

सावधान—

ऐसी वैसी दवाइयां बच्चों को सेवन न करा कर निरन्तर शिशुओं को बाल सुधा ही पिलाइये।

सुख संचारक कं. लि.

— मथुरा —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ रहा था। पर तारो का हृदय प्रतिक्षण जैसे किसी अनहोनी भावी की दुःखद कल्पना से संतप्त होता जा रहा था। सोभासिंह जब चटाइयों की उस झोंपड़ी से बाहर निकला, तो उसके नेत्र सजल थे। मनोहर की आंखें, जो सोभासिंह के चेहरे पर सुन्दर के कल्याण का भाव पढ़ लेना चाहती थीं, उसके सजल दृग देख कर विस्मय से फैल गईं। उसने पूछा — "सरदार जी, आपकी तो आंखें एकदम डबडबा आईं हैं?"

इतना सुनते ही सोभासिंह की आंखों में आंसुओं की बाढ़ सी आ गई। स्वर कातर हो गया। मनोहर का दिल कांप गया—"आखिर हुआ क्या आपको, सरदार जी? मुझ से कोई भूल हुई?"

"नहीं-नहीं···" सोभासिंह अपनी कातर वाणी को सम्भालते हुए बोला—"आपका बच्चा देख कर मुझे अपने लाल की याद आ गई···सब कुछ खोकर मैं उसे ही बचा पाया था। सरगोधे से आते वक्त गाड़ी के भीड़-भड़क्के में वह भी खो गया···"

"गाड़ी के भीड़-भड़क्के में?" चौंक कर मनोहर ने पूछा।

"हां, अनाथ शरणार्थी बच्चों के कैम्पों में भी सब जगह ढूंढा, कुछ पता नहीं चला—" सोभासिंह का कंठ भर्राया हुआ था।

"बड़े दुख की बात है···।"

"दुख क्या भाई, जी," सोभासिंह भावना-जगत से धीरे धीरे कर्त्तव्य की दुनिया में आ रहा था—"गलती मेरी ही थी। उसने पानी मांगा, मैं लेने गया। नल पर भीड़ थी; लौटते-लौटते गाड़ी छूट गई। और भाई जी, उसके गले में थी सोने की माला; बस, किसी बदमाश के हत्थे पड़ गया···।"

"ऐसा न कहो सरदार जी!" मनोहर के दिल पर चोट लगी, "भगवान उसे सलामत रखे! ईश्वर चाहेगा, तो जरूर मिलेगा!"

विवशता ने सोभासिंह को भी मौन कर दिया। अब वह अपने स्थान पर पहुँच गया था। मनोहर को गंडा देकर बोला, "सोते वक्त बायें पैर में बांध देना और रात को पाव भर बाजरा रख देना सिरहाने, सुबह ही चिड़ियों को डलवा देना। सतगुरू ने चाहा तो कल बारी नहीं आयेगी – दिवाली से पहले पहले चंगा हो जायेगा!"

* * *

मनोहर घर लौटा तो देखा, तारो रो रही है—रोते-रोते उसकी घिग्घी बंध गई है। मनोहर ने उसे धैर्य बंधाते हुए पूछा—"अरे, तुम्हें हुआ क्या? लो, गंडा लो। आज रात को बांध देना। कल बुखार नहीं आयेगा।"

"वह तो ठीक है," उसी तरह रुआंसे गले से तारो बोली, "पहले वह फोटो देखो, जो सुन्दर के तकिए के नीचे रखा है···"

"क्या है उसमें?" आश्चर्य से मनोहर ने पूछा, और विद्युद्-गति से आगे बढ़ उसने तकिए के नीचे से वह तस्वीर निकाली। देखते ही मुंह से चीख निकली—'सोभासिंह!' और वह पसीने से नहा गया। कुछ ठहर कर बोला—"यह तो वही लाकेट में जड़ी हुई तस्वीर है ना···?"

"हां," सुबकी भरते हुए तारो बोली।

मनोहर का भी गला भर आया। फिर भी हिम्मत से वह बोला—"इस में रोने की क्या बात है! चलो, आज सुन्दर के पिता का भी पता चल गया। सोभासिंह को कल सुबह ही दे देंगे। लॉकेट हमने बेच दिया है, उसके रुपये लौटा देंगे।"

और तारो सुन्दर के खटोले की पट्टी पर सिर धर कर और भी जोर से रो पड़ी। अबोध सुन्दर की सुकुमार कल्पना को ठेस लगी। वह रोने लगा। तब तारो स्वयं चुप होने का प्रयत्न करती हुई सुन्दर का मन भी बहलाने लगी।

* * *

अगले दिन मनोहर ने ट्रान्सपोर्ट कम्पनी में जाकर पूछा तो पता लगा कि सोभासिंह ट्रक लेकर लुधियाना गया है, परसों लौटेगा। सुन्दर का बुखार इस बीच टूट गया। खेलने खाने में उसकी रुचि हुई और वह चटाइयों से घिरी चहार-दीवारी उसकी किलकारियों से मुखरित हो उठी। पर तारो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब पहले से कहीं अधिक बेचैन थी। जब तक सुन्दर रोगी रहा, वह अपनी आंखों में आए हुए पानी को भी अशुभ मान कर रोकती रही, लेकिन अब उसके नीरोग होने पर वह उससे छुप कर इतनी रोई कि आंखें सूज गईं। उस दिन जब बड़े प्यार से मनोहर ने कहा "आज तो न रोओ, छोटी दिवाली का दिन है। सुन्दर के कपड़े बदलो। रात को रोशनी देखने जायेगा···"

तो तारो की घनी मनोवेदना सावन-भादों बन कर बरसने लगी--"क्या मैंने इसी दिन के लिए इसे मां बनकर पाला था!" वह रोक कर भी अपने अश्रु न रोक सकी। तभी मनोहर को ध्यान आया कि आज तो सोभासिंह भी लौट आया होगा--मैं उसे देखता हूँ। आज इस भेद को खोल ही देना ठीक है। यह सोच कर मनोहर घर से बाहर निकला और कुछ देर के बाद ही सोभासिंह ने वहां आकर अनजाने पुकारा--"काका!"

सुन कर सुन्दर पागल-सा चारों ओर देखने लगा। दूसरी आवाज फिर आई--"काका!" और सुन्दर बावला सा बाहर दौड़ा और सोभासिंह की ओर लपका। एक ही क्षण में वह सोभासिंह की गोदी में था। तारो ने चटाइयों के पीछे से यह सब देखा और स्नेह-अश्रुओं से उसकी आंखें पूर्ण हो गईं। तभी सोभासिंह ने देखा तारो को। उसकी मुद्रा का बदलता भाव देख कर सोभासिंह पछताया, सोचने लगा—ओह! मैंने अनजाने क्या किया! इनके दिल को जरूर ठेस पहुँची है। कुछ संकोच अनुभव करते हुए वह सुन्दर को गोद से उतारने लगा और बोला—"अब तो इसकी तबीयत ठीक है ना?"

तभी आ गया मनोहर। सोभासिंह को उत्फुल्ल देख कर उसके मुख पर भी प्रसन्नता की रेखाएँ दौड़ गईं। बोला—"आपका इलाज तो सचमुच कमाल का है!"

"सब गुरू की मेहरबानी है, भाई जी! हां,"—कुछ रुक कर सोभासिंह बोला—"अगर आप इजाजत दें, तो काके को बाजार घुमा लाऊं। आज छोटी दिवाली है···।"

"हां, हां जरूर!" निःसंकोच मनोहर ने स्वीकृति दे दी, बोला—"तनिक ठहरिए इसे नयी कमीज पहना दूं"

सोभासिंह मुस्कराया। पर तारो ने पति की यह बात पसन्द नहीं की। भीतर जाकर अपने संदेह को प्रकट करते हुए वह धीरे से बोली—"ऐसे ही क्यों दे रहे हो, लेकर चल दिया तो···। कुछ ठीक जांच कर लेते"

"मैंने सब जांच कर ली है यह यहीं लायेंगे लौटा कर। तुम तो अभी नादान हो।"

तारो अपना मत्था ठोंक कर रह गई।

* * *

सोभासिंह सुन्दर को ले चला। जो कुछ उसने मांगा, वही दिलाया। झल्ली खिलौनों से भर चली। दोनों हाथ गुब्बारों से भर गए, फिर भी सुन्दर ने जिद्द की सीटी के लिए। और सीटी खरीद कर सोभासिंह बोला—"बेटा लो, इसे जेब में रख लो, नहीं तो गिर जावेगी—"

यह कहते २ जैसे ही सोभासिंह ने सुन्दर की जेब में हाथ डाला, उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसके हाथ में नोटों की एक गड्डी आ गई। साथ में एक कागज था। उत्सुकता से उसने वह कागज निकाला और सुन्दर को गोद से उतार एक किनारे खड़ा होकर जल्दी-जल्दी पढ़ने लगा। मनोहर ने लिखा था—

"माफ कीजिए, आपको हमारी वजह से इतने दिन कष्ट उठाना पड़ा। सुन्दर आपका ही खोया हुआ काका है। अपनी मुसीबत के दिनों में हमने ही इसकी सोने की माला बेच दी थी। उसमें जो आपका फोटो था, वह इन्हीं नोटों में रखा है। उम्मीद है, आप हमें माफ करेंगे·····"

पढ़ कर सोभासिंह के सामने जैसे धरती-आसमान घूमने लगे। "नहीं नहीं, यह नहीं हो सकता।" वह भावावेश में बड़बड़ाया—"चलो, चलो, जल्दी चलो," उसने झल्ली वाले से कहा और फिर सोचने लगा—"ओह! मैंने कह दिया था कि किसी बदमाश के हत्थे पड़ गया होगा, कैसी गलती की मैंने!" उसके नेत्र सजल हो गए—"किस प्यार से पाल रहे हैं! मामूली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुखार में भी कितने परेशान थे....नहीं-नहीं मैं अब इसके लिए दूसरी शादी नहीं कर सकता, जहां है वहीं सुखी रहे।"

तारो की करुण मुद्रा सोभासिंह के सामने थी — "उस औरत के दिल को मैं ठेस नहीं पहुँचा सकता। पता लग गया मुझे, बस। काका खुशहाल है — गुरू उसे खुश ही रखेगा!" और सोभासिंह ने सुन्दर का मुंह प्यार से चूम लिया। अब वे मालगोदाम के पास पहुँच गये थे। झल्ली वाले को रुपया देकर वह बोला — "देखो, वहां चल कर कुछ नहीं मांगना।"

सुन्दर को धीरे से गोद से उतार कर वह बोला — "लो बेटा, आ गया घर!" झल्ली वाले ने भी पटरी पर झल्ली उतारी। जब सुन्दर उसमें भरे हुए खिलौनों को देख रहा था, सोभासिंह चला गया। झल्ली वाले ने उसका विचित्र व्यवहार देख कर आश्चर्य से पुकारा — "यह खाली कराओ, बीबी जी!"

तारो और मनोहर अन्दर बैठे अपना सारा सामान प्रायः बांध चुके थे। धर्मशाला में जाने का फैसला वे कर चुके थे। पर आवाज सुन कर बाहर आए, तो देखा सुन्दर को, झल्ली भरे खिलौनों को। इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई तो सोभासिंह नजर नहीं पड़ा।

"मां···खिलौने!" कह कर सुन्दर तारो की गोद में चढ़ गया। कौतूहल-वश मनोहर ने सुन्दर की जेब देखी; उसमें नोटों की गड्डी ज्यों की त्यों पड़ी थी। दूसरे ही क्षण वह ट्रांसपोर्ट कम्पनी की ओर दौड़ा। घबराहट से उसका सांस फूल रहा था। मालूम हुआ सोभासिंह वहां नहीं लौटा। आश्चर्य-चकित वह घर वापस आ गया।

तारो के सामने खिलौनों का ढेर लगा कर झल्ली वाला जा चुका था। मनोहर ने एक-एक करके सारे खिलौने सम्हाल कर घर की एक मात्र टांड पर धर दिए। सुन्दर को गोद में लेकर वह सजल नेत्रों से बोला — "बेटा, इन्हें रहने दो, शाम को और ढेर सारे खिलौने लायेंगे।"

"मां के लिए भी?" सुन्दर ने तुतलाकर पूछा।

और 'आ मेरे लाल' कह कर तारो ने सुन्दर को अपने आंचल में छिपा लिया। उसके स्नेह के आंसू सुन्दर के कपोलों पर गिर कर ढुलक गए।

★

१९०७ के स्वदेशी आंदोलन

जागरण काल में संस्थापित तथा
इस देश के अनेकों महा पुरुषों द्वारा, जो कि जीवन बीमा को साधारण लोगों की दरिद्रता और दुख के निवारण का एक अच्छा उपाय समझते थे, पालित और पोषित।

हिन्दुस्थान

कोओपरेटिव

सदैव ही अपने देशवासियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त करने में सफल रही है।

इन ४१ वर्षों में यह नन्हीं-सी संस्था निरन्तर बढ़ती रही है और अब इसने अपने लिये एक उत्कृष्ट और अनुपम स्थान बना लिया है।

पिछले वर्षों के समान ही यह उन्नति का क्रम १९४७ की सफलताओं से भी स्पष्ट प्रकट होता है।

नया काम	१२	करोड़ ३०	लाख से अधिक
चालू बीमे	५५	,, ६३	,, ,, ,,
जीवन-फन्ड	१०	,, ६३	,, ,, ,,
भुगतान (१९४७)		५३	,, ,, ,,
कुल सम्पत्ति	११	,, ६४	,, ,, ,,

किन्तु हिन्दुस्थान-कोओपरेटिव अपनी करोड़ों की सम्पत्ति से चालू बीमे की करोड़ों की रकम में इतना गर्व अनुभव नहीं करती, जितना कि वह उन हजारों सुखी घरों में अनुभव करती है जो कि इसकी स्थापना के दिन से आज तक इसकी सेवाओं से लाभ उठाते रहे हैं।

हिन्दुस्थान

कोओपरेटिव इन्श्योरेन्स सोसाइटी, लिमिटेड

४, चितरंजन एवेन्यू, हिन्दुस्थान बिल्डिंग्स, कलकत्ता

दिल्ली शाखा — हिन्दुस्थान बिल्डिंग्स, क्वीन्सवे, नई दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोरी

(पृष्ठ १० का शेष)

की। पर जरा आगे बढ़ने पर उसे ऐसा लगने लगा जैसे उसका पैर किसी खड्ड में जा गिरा है, जैसे हजारों दृष्टियां एक साथ उसे देख रही हैं। वह उनसे बचने के लिए दौड़ा, पर दूसरे ही क्षण भांग का नशा करने वाले की तरह वह जाग पड़ा। मुस्कराया—"वाह वाह, मैं क्या चोर हूँ ?"

वह इसी तरह बहुत दूर तक चलता रहा और आखिर उस स्थान पर आ गया, जहां भीड़ बहुत कम थी। यहां आकर उसे लगा, जैसे वह अकेला पड़ गया है। पर एकान्त तो एक लाख जिह्वाओं से बोलता है। उसने सुना, उसके चारों ओर एक शोर मच रहा है और वह शोर उसे प्रिय नहीं। वह जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने लगा।

अब उसकी मंजिल खात्मे पर थी। उसने कोट को दाहिने कन्धे से उतार बायें पर डाल लिया और आगे देखने की चेष्टा करने लगा। तभी उसने सुना कि पीछे से कोई उसे पुकार रहा है—"ओ जाने वाले ठहर !"

वह मुड़ा। उसने फटी कमीज पहने हुए एक बदसूरत बच्चे को देखा। वह कह रहा था—"तुम्हारा यह गिर गया है।"

"मेरा ?"

"हां, तुम्हारे कोट की जेब से गिरा है।"

उसने विस्फारित नेत्रों से देखा, कि वह घड़ी की चैन है और उसका रंग पीला है। उसने एक दम उसे हाथ में ले लिया और लड़का भांप न ले, शीघ्रता से मुस्करा कर उसका धन्यवाद किया और आगे बढ़ गया। पर...पर उसे लगा, उसके पैर आगे बढ़ने से इन्कार कर रहे हैं, वह पीछे लौट रहा है और उसके चारों ओर तूफान गरजने लगा है। तूफान के साथ साथ विचारों का एक तुमुल प्रवाह उसके मस्तिष्क में घुस आया—यह चैन बड़े बाबू की है। वे शायद इसे जेब में डाल कर भूल गये हैं। कीमती मालूम होती है। सोने की हुई तो सौ दो सौ रुपये से कम की नहीं होगी। सौ दो सौ रुपये...! वह थरथराया.....उस बच्चे ने कितनी सरलता से उठा कर उसे लौटा दी। क्या वह नहीं जानता यह सोने की है ? क्या...? जैसे भूकम्प आ गया। उसने सारे शहर को एक भयंकर शब्द के साथ गिरते देखा—देखा, वह मलबे के नीचे दब कर चूरा चूरा हो गया है। पर यह कोट, घड़ी की चैन, बड़े बाबू, उसके पिता और वह लड़का.....?

वह वहीं से लौट पड़ा। वह तेजी से भागा और भागता हुआ अपनी कोठरी तक आया। उसने कोट को जोरे से दूर फेंक दिया। वह पसीना पसीना हो रहा था। वह दोनों हाथों से मुंह छिपा पर वहीं फर्श पर लेट गया और कुछ क्षण बाद जोर जोर से कहने लगा—"मैं कोट को लौटा दूंगा। मैं कोट को लौटा दूंगा।"

शारदा मन्दिर नई सड़क देहली

१४ वर्ष से साहित्य की सेवा कर रहा है

सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक, धार्मिक, बालोपयोगी तथा हर प्रकार का साहित्य मंगवाइये।

साहित्य रत्न, प्रभाकर, भूषण, रतन आदि परीक्षाओं की पुस्तकें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्त में बड़े बाबू के लौटने का दिना आ पहुंचा।

अब उसके दिल में कोई संघर्ष नहीं था। उसके पिता अगर कोट के अभाव में मरते हैं, तो वह क्या कर सकता है? कुछ लोगों के भाग्य में कोट पहिनना ही नहीं लिखा होता। इस लिये उसने सब काम प्रसन्न-मन किये। वह एक बार भी नहीं कांपा। एक बार भी उसने अंगार को नहीं छुआ और न किसी बरतन का कोना ही उसे चुभा। उसने निश्चय कर लिया था कि संध्या को बड़े बाबू जब दफ्तर से लौटेंगे, तब चाय के बाद वह उन्हें सब कहानी सुना देगा। सुन कर शायद वे अचरज से उसे देखेंगे, कहेंगे—अरे, तुमने मेरा कोट चुराया था! मुझे तो पता भी नहीं। और तुमने मुझे बताया क्यों? वहीं क्यों नहीं रख दिया.....!

हां ठीक है, उन्हें बताने की जरूरत क्या है! जहां से लिया था, चुपचाप वहीं रख देने से काम चल सकता है। जैसे उसके मनका सब बोझ उतर गया। वह खिलखिला पड़ा—भला यह सीधी-सी बात उसके ध्यान में पहिले से क्यों नहीं आई? आखिर वह छोटी बुद्धि वाला नौकर है न!

और संध्या को जब वह बड़े बाबू के घर की ओर चला, तो कोट को उसने संभाल कर एक कपड़े में लपेट लिया था कि कोई उसे देख न ले और चोर न समझ बैठे। न जाने किस बुरी घड़ी में उसके मन में चोरी का विचार उठा था! उसे अब अपने ऊपर ग्लानि हो आई और वह अपने को सब की दृष्टि से बचाने लगा। वह अब चोर था और चोर पापी होते हैं। रास्ते में कई बार उसके मन में लौट जाने का विचार उठा। उसने सोचा—कहीं आग लगती हो और वह इस कोट को उस आग में झोंक दे, या कोई बड़ा डाकू उससे यह कोट छीन कर ले जाय। वह कांपा। यह डर क्यों? वह तो चुपचाप कोट को खूंटी पर टांग देगा। कोई जान भी नहीं सकेगा कि उसने चोरी की है। पर जैसे किसी ने धीरे से कहा—वह चोर तो है!

बिजली जैसा चमत्कार

(खुजली का दुश्मन)

"गोल्डिन"

सोन—तेल (Reg.)

हर प्रकार की खुजली का आराम कर त्वचा को निर्मल और निरोग बनाता है। एक बार अवश्य परीक्षा कीजिये।

विक्रेता—एजेन्सी के लिये लिखें, कमीशन भरपूर दिया जाता है।

गोल्डिन फार्मेसी, सुभाष रोड, अलीगढ़ यू० पी०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली के पावन अवसर पर

मैसर्स फिल्म रेन्टर्स, चांदनी चौक दिल्ली

निम्नलिखित चित्रों के उत्तर भारत में वितरण के अधिकार की सगर्व घोषणा करते हैं।

★ हिन्दुस्तान कला मंदिर कृत ★

१. आजादी की राह पर

कलाकार—पृथ्वीराज, जैराज, जगदीश सेठी, वनमाला, और मिश्रा।
निर्देशक—ललित मेहता, संगीत—जी० डी० कपूर।

★ ईस्टर्न पिक्चर्स ★

२. रङ्ग महल

कलाकार—सुरय्या, सुरेश, शाहनवाज, राममराठे।
निर्देशक—पं० आनन्दकुमार, कहानी—शिवकुमार, संगीत—के० दत्त।

★ भूमरेडी प्रोडक्शंस ★

३. मन्दिर

कलाकार—शान्ता आप्टे, मास्टर विनायक, साल्वी।
निर्देशक—स्व० श्री विनायक, संगीत—वी० देसाई।

★ नवयुग चित्रपट कृत ★

४. साजन का घर

कलाकर—जैराज, रंजना, कुसुम, देश पाण्डे।
निर्देशक—शौरे दौलताना, संगीत—सिंह।

★ चन्द्रा आर्ट प्रोडक्शंस कृत ★

५. सुधार या परदेशी सैंया

कलाकार—अरुण, निर्मला, गोप, याकूब।
निर्देशक—बलवन्त भट्ट, संगीत—गोविन्दास।

★ नलिनी जयन्त प्रोडक्शंस ★

६. गुन्जान

कलाकार—नलिनी जयन्त, त्रिलोक कपूर।
निर्देशक—वीरेन्द्र देसाई, संगीत—ए० घोष।

★ नवयुग चित्रपट कृत ★

७. फूल और कांटा

कलाकार—ललिता पंवार, साल्वी।
निर्देशक—अच्युत रानाडे।

★ चन्द्रा प्रोडक्शंस ★

८. आपकी सेवा में

कलाकार—घोरी, दीक्षित, केसरी, शान्तारनी।
निर्देशक—गोखले, संगीत—चन्देकर।

★ नवयुग चित्रपट कृत ★

९. मोती

कलाकार—गीता निजामी, बिमन बनर्जी, रन्धीर।
निर्देशक—चन्द्रशेखर बोस, संगीत—रशीद।

★ प्रेम अदीब पिक्चर्स ★

१०. देहाती

कलाकार—प्रेम अदीब, रंजीत कुमारी, जीवन।
निर्देशक—पटेल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह फिर कांपा। उस समय सर्दी बढ़ गयी थी। जाड़े की संध्या अक्सर योगी की भांति किसी गहरी ज्ञान-साधना में लीन रहती है, इस लिये सड़क प्रायः सूनी थी। कभी कभी कोई व्यक्ति शीघ्रता से आता और चला जाता। कभी कोई तांगा हिलता-डुलता हुआ गुजर जाता या कोई कार अपनी गति से सर्दी को गरमाती हुई सरर से निकल जाती। वह अब ऐसी जगह आ गया था, जहां भिखारी बैठे रहते हैं। उसने देखा, एक स्त्री दो बच्चों को लिये चिल्ला-चिल्ला कर भीख मांग रही है। वैसे वह चुप रहती है, पर जैसे ही कोई आता जान पड़ता है, वह घिघिया-घिघिया कर पुकार उठती है—"अय बाबू जी, आपका राम भला करेंगे, बच्चे भूखे हैं!"

वह नहीं जानता, बच्चे भूखे हैं या नहीं, पर नंगे जरूर हैं और सरदी की ठंडी हवा से बचने का उनके पास कोई साधन नहीं है।

उसने एक बार गौर से उन बच्चों को देखा। करुणा से उस कंगाल का दिल द्रवित हो उठा। उसने हाथ उठाया कि वह उस कोट को उन्हें दे दे कि जैसे बिजली का झटका लगा, उसका शरीर झन्ना उठा। किसी ने अट्टहास करते हुए कहा—"चोरी करके दान करने का पुण्य प्राप्त करना चाहते हो...?"

उसने दृष्टि उठाई—दून ऐक्सप्रेस बड़ी तेजी से पुल पार कर रही थी। वह तेजी से आगे बढ़ गया। रेल के डिब्बों से झांक कर असंख्य नेत्रों ने उसे घृणा से देखा और असंख्य कंठों ने कहा—"चोर.....!"

नहीं, नहीं, वह चोर नहीं है—वह चोर नहीं है, वह चोरी का माल लौटाने जा रहा है।

किसी ने तत्काल उत्तर दिया—"पर चोरी से!"

चोरी से...? वह कांपा...नहीं नहीं.....

मानों किसी ने बहुत पास से पूछा—"नहीं क्या.....?"

नहीं नहीं, वह सीधा बड़े बाबू के पास जायेगा और उनसे कहेगा, उसने चोरी की है, उसने उनका कोट उठाया है और वह दंड चाहता है। तब बड़े बाबू चीखेंगे, जैसे कि दफ्तर में चीखा करते हैं। वे गाली देंगे, तरह तरह से उस पर क्रोध प्रकट करेंगे। वह तो केवल उनके पैर पकड़ लेगा और अपना अपराध मान लेगा। तब शायद वे उसे क्षमा कर देंगे। शायद वह फूट फूट कर रोयेगा, उनके पैरों पर गिर पड़ेगा और बड़े बाबू बिना कुछ कहे अपने दयालु स्वभाव के कारण उसे क्षमा कर देंगे। कहेंगे, "तुमने सच बोला है, मैं तुम्हें नौकरी से नहीं निकालूंगा....."

शायद वे उसे पीट कर घर से निकाल देंगे, पर वह तब भी नहीं बोलेगा, क्योंकि वह चोर है। चोरी का माल सके पास मौजूद है.....

वह तब दौड़ रहा था। बूंदें पड़ने लगी थीं और सन्नाटा डरावना होता जा रहा था। घर उसके सामने था। वह उसे पहिचानता था। वह तीर की तरह सीधा अंदर घुसा चला गया। बड़े बाबू के कमरे में रोशनी हो रही थी। ठेकेदार साहब आये हुए थे। वे काफी और पाइन-एप्पल के कुछ डिब्बे तथा घड़ी की एक चैन लाये थे। उन्हीं को लेकर बड़े बाबू उन से कह रहे थे—"नहीं, नहीं, आप इन्हें ले जाइये। मैं इन्हें नहीं रख सकता। यह ठीक नहीं है। कोई क्या कहेगा।"

ठेकेदार नम्रता से हंसे—"कोई क्या कहेगा, यह तो मामूली-सी बात है। खाने पीने की चीजों में

जवाहरलाल
की
कहानी

भारतवर्ष के सबसे पहले प्रधान मन्त्री की जीवन कहानी "जवाहरलाल" की कहानी में पढ़िए।
मूल्य उर्दू ५॥) रुपए हिन्दी ५) रुपए
डाक व्यय आठ आने।

नया किताब घर
(वी० डी०) दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई दोष नहीं होता। और रही चैन की बात, वह तो मैं आपको नई नहीं दे रहा हूँ। पहिली चैन जो आपके पास थी, वह खो गई है न। रखिये, यह रिश्वत नहीं है। और कोई होता तो हजारों पर बात जाती। आप तो इतने शुद्ध व्यक्ति हैं, किसी भी तरह सेवा करने का अवसर ही नहीं देते।"

कहते कहते वे बाहिर की ओर मुड़े। बड़े बाबू ने खड़े हो कर शीघ्रता से कहा—"सुनिये तो...।"

"बहुत सुन लिया" — ठेकेदार ने कहा और वे जैसे भागना चाहते हों। उन्होंने किवाड़ खोलने को हाथ बढ़ाया। ठीक इसी समय बड़े बाबू का नौकर अन्दर आने का साहस बटोर रहा था। किवाड़ एक साथ तेजी से खुले। वह बदहवास-सा एक झटके के साथ आगे बढ़ा और अपने को संभालने में असमर्थ बड़े बाबू के पैरों के पास जा गिरा। बड़े बाबू सहसा सकपका गये और शीघ्रता से बोले—"क्या है रे...?"

उसने भर्राये स्वर में हांफते हांफते कहा—"यह आपका कोट है और यह चैन। एक महीना हुआ, मैं इन्हें चुरा कर ले गया था। मैं अपनी चोरी कबूल करता हूँ। आप मुझे जो चाहें दंड दे सकते हैं।"

कह चुका तो उसने बड़े बाबू के पैरों को और भी कसकर पकड़ लिया। पर बड़े बाबू हों तो बोलें। उनका सिर बड़ी तेजी से घूम रहा है। वे कभी ठेकेदार को देखते हैं, कभी मेज पर पड़ी हुई चीजों को और कभी पैर पकड़े हुए नौकर को.....

★

५००) महीना पैदा कीजिये

आप अवकाश के समय में किस प्रकार ५००) मासिक पैदा कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में हम से पत्र व्यवहार करिये।

पता—वसन्ती एन्ड कम्पनी

ब्रह्मनपुरी, अलीगढ़।

२२॥) की रीस्टवाच मुफ्त

पूजा के उपलक्ष में—सिर्फ १५ दिनों के लिये स्वीटज लैंड की बनी गारण्टी ३ साल

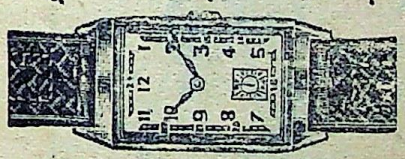

नं० १२२ रेक्टेंगुलर शेप

५ जुएल क्रोम केस ३४) रोल्डगोल्ड ४०)
७ ,, क्रोम केस ४४) रोल्डगोल्ड ५५)
१५ ,, क्रोम केस ५८) रोल्डगोल्ड ७२)

नं० १२१ टोनो व वर्ग शेप

५ जुएल क्रोम केस ३७) रोल्डगोल्ड ४४)
७ ,, क्रोम केस ४६) रोल्डगोल्ड ५८)
१५ ,, क्रोम केस ६०) रोल्डगोल्ड ७५)

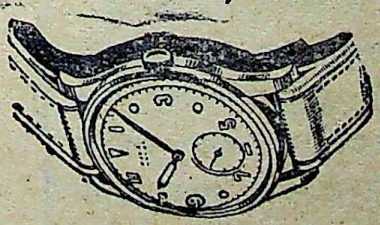

नं० १२३ फ्लाट शेप

४ जुएल क्रोम केस १८)
७ ,, क्रोम केस ३५) रोल्डगोल्ड ४८)
१५ ,, क्रोम केस ३७) रोल्डगोल्ड ६०)

नं० १२४ (१३) साइज

क्रोम केस १८॥) रेडीयम २०)
सेन्टर सेकण्ड वाली २२॥) रेडीयम २४)

एलार्म टाइम पीस १६) सुपीरीयर २०) बेस्ट २५) पोस्टेज अतिरिक्त। कोई भी तीन घड़ी एक साथ लेने वाले को एक घड़ी २२॥) रु० वाली मुफ्त मिलेगी। एच० डेविड कम्पनी पो० ब० नं० ११४ V. D. कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा औद्योगिक क्षेत्र

औद्योगिक साहित्य	औद्योगिक शिक्षा	औद्योगिक मशीनें
१. 'विज्ञान कला' मासिक पत्र जो गत २ वर्षों से औद्योगिक जगह में अपना उचित स्थान रखता है। २. साबुन विज्ञान। ३. तेल विज्ञान। ४. स्याही विज्ञान अपने विषय की अनूठी पुस्तकें।	घर बैठे डाक से या देहली आकर क्रियात्मक शिक्षा के लिये अपने निजी भवन में औद्योगिक प्रयोगशाला आपके लिये सदैव खुली है।	मिठाई बनाने की मशीन तथा मोमबत्ती की मशीनें हमारे विशेष उत्पादन हैं।

विज्ञान कला मन्दिर, देहली शाहदरा।

रेशमी कपड़ा १) गज़

रेशमी कपड़ा एक रुपया गज आपको किसी जगह नहीं मिल सकता। परन्तु हम आपको बाज़ार से बहुत ही सस्ते भाव पर दे सकते हैं। जो कि आह का कोड़ियों के मूल पड़ेगा। अमरीकन सुफै सिलकी यानी पूरी छतरी १२ कली वाला (जिसमें पूरी १२ कली हैं) बगैर जोड़ के मये रेशमी डोरा के साथ कीमत १२) रु० फी पैराशूट (पूरा छतरी) पैकिङ्ग फ्री महसूल डाक १॥।=)। इकट्ठे तीन मंगवाने पर महसूल डाक ३॥।=) रु० आवेगा। आप बतौर नमूना मंगाकर थोक का आर्डर देकर लाभ उठावें। यह माल दूसरे रेशमी सिलकी कपड़ों की निस्बत निहायत उमदा और रियायती है। पहले इसकी कीमत बहुत ज्यादा थी मगर अब स्टाक को खतम करने के लिये यह रियायती थोक का भाव है। तीन पैराशूट महसूलडाक समेत आपको घर में ३६॥।=) रु० में पड़ेंगे। जरूर मंगवायें। शीघ्र मंगवा लें। नहीं तो स्टाक खत्म होने पर पछताना पड़ेगा। क्योंकि औह माल अमरीका से नहीं आ रहा। आर्डर देते समय अपना नाम पूरा पता साफ साफ लिखें।

इस्ट्रन इम्पोर्ट्रस नं० ४५ (E. I. H.) देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांझ स्त्रियों के लिये

मेरी शादी हुए पन्द्रह वर्ष बीत चुके थे। इस समय के बीच मैंने सैकड़ों इलाज कराये लेकिन कोई सन्तान पैदा न हुई। सौभाग्य वश मुझे एक वृद्ध महा पुरुष से निम्न लिखित नुस्खा प्राप्त हुआ। मैंने उसे बनाकर सेवन किया। ईश्वर की कृपा से नौ मास बाद मेरी गोद में बालक खेलने लगा। इसके पश्चत् मैंने जिस सन्तान हीन बहन को इसका सेवन कराया उसी की आशा पूरी हुई। अब मैं इस नुस्खे को सूची-पत्र द्वारा प्रकाशित कर रही हूं ताकि मेरी निराश बहनों की आशा पूर्ण हो।

औषधि तन्त्र ये है—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नेपाल गवर्नमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारी दक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम से कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कटियारी सफेद की जड़ (यानी सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घण्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बना लें। इसके सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति—गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातःकाल और सायंकाल एक एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट—औषधि तन्त्र के अन्दर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अन्दर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

मेरी सन्तान हीन बहिनो,

आप इसे बेगुण औषधि न समझें। यदि आप बच्चे की माता बनना चाहती हैं, तो इसे बना कर जरूर सेवन करें। मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि इसके सेवन से आपकी अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। यदि कोई बहिन इस औषधी को मेरे हाथ से ही बनवाना चाहे तो मुझे पत्र द्वारा सूचित करें। मैं उन्हें औषधि तैयार करके भेजदूंगी। एक बहिन की औषधी पर पांच रुपये बारह आने। दो बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने और तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रु० चार आने खर्च आते हैं। महसूल डाक वगैरह बारह आने इससे अलग है।

नोट—जिस बहिन को मेरे पर विश्वास न हो वो मुझे दवा के लिये हरगिज न लिखें।

रतनबाई जैन, (३०) सदर बाजार थाना रोड, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परित्याग

(पृष्ठ १६ का शेष)

अखबारों में देखा था कि उनकी फर्म यहां आ गई है। हां, तुम्हें यह बात मैंने पहले कभी नहीं बताई कि यह जयराम भी मुझ से शादी करना चाहता था, पर मैंने तुम्हीं को तरजीह दी थी ···।"

इन्द्रा की बातें समाप्त हो गईं, पर रूपचन्द कुछ बोला नहीं। चारों तरफ सन्नाटा था। कभी-कभी दूर किसी मोटर का हार्न सुनाई दे जाता था। रूपचन्द का मन कह रहा था— नहीं, नहीं, यह इन्द्रा नहीं, उसका प्रेत है; इसे लेकर मैं क्या करूंगा? मुझे यह नहीं चाहिए। जहां तक इसके साथ जबर्दस्ती हुई, वहां तक इसे क्षमा भी किया जा सकता है; पर इसने जो कुछ अपनी रजामन्दी से किया – जैसे इसका जयराम के साथ रहना—उसके लिए क्षमा क्यों? उसकी समझ में यह नहीं आया कि परिस्थितियों के कारण ही इन्द्रा ने ऐसा किया।

न जाने कितनी देर तक वे दोनों चुप बैठे रहे। एकाएक पास ही कहीं एक खूसट बोला। रूपचन्द चौंका। देखा इन्द्रा नहीं है। जमा हुआ रोना एक क्षण के लिए उसके कंठ से फूट निकला। उसके पांव लड़खड़ाये। उसे ऐसा ज्ञात हुआ कि किसी तेज चाकू से उसके कलेजे से उसके भूतकाल को काट कर अलग कर दिया गया है। वह उठकर चलने लगा।

* * *

रात दो बजे इन्द्रा जयराम के घर पहुँची, बोली—"मैं आ गई···।"

जयराम जाग रहा था। सामने ह्विस्की की बोतल रखी हुई थी। कमरा शराब की तेज दुर्गन्ध से भरा हुआ था। मेज पर खाना भी रखा हुआ था। इन्द्रा को वापस आई देख जयराम का चेहरा विजयगर्व से दमक उठा। शराब से भरे गिलास की ओर इशारा करते हुए बोला—"पीओ···"

पर इन्द्रा ने पीया नहीं। उसने एकाएक कहा—'जयराम, एक बात पूछूं?"

"पूछो, पूछो, एक नहीं हजार बातें···"

इन्द्रा ने एक बार मेज पर रखे हुए खाने को देखा, फिर जयराम को, इसके बाद बोली—"तुम मुझ से शादी करोगे?"

जयराम एक बार जैसे कुछ घबड़ा सा गया। फिर कुछ सम्हला, बोला—"शादी में क्या धरा है? देख तो लिया, जिन्होंने शादी की थी, उनको!"

इन्द्रा की भौंहें कुछ तन गईं, बोली—"खिलौने से सभी खेलना चाहते हैं, पर पत्नी के रूप में लोग ओस से धुला फूल चाहते हैं।" फिर कुछ स्वर चढ़ाती हुई बोली—"तुम मुझ से कल शादी करोगे या नहीं! हां या ना?"

जयराम ऐसे प्रश्न के लिये कतई तैयार नहीं था। वह घबड़ा गया। उस ने इन्द्रा से शादी करने की बात कभी सोची नहीं थी। किसी तरह बोला—'फिर सोचेंगे, जल्दी क्या है!"

इन्द्रा उठ खड़ी हुई, बोली—"तुम सभी पुरुषों की एक-सी हालत है। जब शादी करते हो, तो अछूती चाहते हो; पर खुद किसी भी औरत के साथ गुलछर्रे उड़ाने के लिए सदा तैयार रहते हो। आधुनिक हो या प्राचीनपंथी, सब की यही हालत है। रूपचन्द की बात और है। तुम्हारे पास रहने के कारण ही उन्होंने मुझे फिर से ग्रहण करने से इन्कार किया।" वह इस प्रकार बोल रही थी, मानों बोलती जायगी, बोलती ही जायगी" पर एकाएक जैसे उसने अपने आपको बलात् रोका, बदले हुए स्वर में बोली—"मैं गलती पर थी। मैं शरणार्थिनी होकर आई थी, पर मुझे शरण कहीं नहीं मिली। सब ने मुझे धोखा दिया। अब मैं जाती हूँ·····"

कह कर वह निकल पड़ी। और चलती गई, चलती गई··

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ ★ ★ फुलझड़ियाँ ★ ★ ★

दीवाली के अवसर पर दिये जलते हैं, आतशबाजी छूटती है और लक्ष्मी का पूजन होता है (इस पूजन में जुआ भी शामिल है !); अतः मुख्यतः यह आतशबाजी और रुपये-पैसे का त्योहार है। चूंकि आतशबाजी भी रुपये-पैसे से ही खरीदी जाती है, इस लिये यही कहना उपयुक्त होगा कि दीवाली रुपये-पैसे का—अर्थात् रुपये-पैसे वालों का—अर्थात् पूंजीपतियों का त्योहार है। पता नहीं, भारत के साम्यवादियों और समाजवादियों ने अभी तक इस त्योहार का 'बहिष्कार' क्यों नहीं किया !

* * *

दीवाली पर एक दूसरे दृष्टिकोण से भी विचार किया जा सकता है। वर्त्तमान् भौतिकता एवं हिंसात्मकता-प्रधान संसार में धन और आतशबाजी में ही समूची शक्ति केन्द्रित है। (बारूदी बम-गोले, एटम बम, राजनीतिक गाली-गलौज, विषवमन, प्रॉपेगण्डा इत्यादि आतशबाजी के ही सुधरे हुए रूप हैं)। और जिन राष्ट्रों के पास यह दोनों प्रकार के साधन हैं, उन्हीं का आजकल बोलबाला है। अतः यू० एन० ओ० को चाहिये कि वह दीवाली को—हमारी दीवाली को—अंतर्राष्ट्रीय त्योहार घोषित कर दे !

दीवाली को अंतर्राष्ट्रीय त्योहार बनाने के पक्ष में हमारी जो सबसे बड़ी अकाट्य दलील है, वह यह है कि इस से विश्वयुद्धों को रोका जा सकता है और संसार में स्थायी रूप से शांति स्थापित की जा सकती है। वह कैसे ? युद्ध मानव-प्रकृति का एक अनिवार्य अंग है। हर साल दीवाली की रात को आतशबाजी छोड़ कर, दिये जला कर, जुआ खेल कर सांकेतिक रूप से उपर्युक्त चिरंतन मानव-प्रवृत्ति की तुष्टि की जा सकती है। अपने इस तर्क की पुष्टि हम भारत का उदाहरण देकर करते हैं, जहां हर साल दीवाली का त्योहार मनाया जाता है और जो आज के युद्धभावना-ग्रस्त संसार में अहिंसावादिता व शांतिप्रियता का सबसे बड़ा प्रतीक है !

* * *

लेकिन हम इस अन्तर्राष्ट्रीयता के मोहजाल में न फंस कर अपने घर की ही बात करते हैं।

कहते हैं कि दीवाली की रात को भगवती लक्ष्मी गश्त पर निकलती हैं। वे अमावस के गहन अंधकार में कहीं रास्ता न भूल जायें, ठोकर खा कर कहीं गिर न पड़ें (आखिर हैं तो वे स्त्री ही !), इस लिये घरों और गली-बाजारों में दीपक जला कर भरपूर रोशनी की जाती है। और फिर पता नहीं गश्त करते हुए भगवती लक्ष्मी कब किस घर में पहुँच जायें, इस लिये जुआ खेल कर रतजगा किया जाता है। परन्तु हम समझते हैं कि उनके पथ-प्रदर्शन के लिये मानव-कृत प्रकाश की कोई आवश्यकता नहीं। उन्होंने अपना वाहन ऐसा चुना है, जो रात के गहरे से गहरे अंधकार में भी भली-भांति देख सकता है !

* * *

लक्ष्मी के वाहन को लोग चाहे कैसे भी घृणा-सूचक बुरे-बुरे नामों से पुकारें, हम तो सा'ब उसे पूजनीय ही समझते हैं। और जो लोग नर-रूप धारण करके भी भगवती लक्ष्मी का वाहन बनने की योग्यता रखते हैं, उनके सन्मुख हम नतमस्तक हुए बिना नहीं रह सकते ! सच तो यह है कि जो लक्ष्मी का वाहन बनने की योग्यता रखता है, वही अपना उल्लू सीधा कर सकता है !

* * *

दीवाली के त्योहार के आरंभ के बारे में कई बातें प्रसिद्ध हैं और उनमें से एक यह भी है कि जब उत्तर भारत के राम दक्षिण के रावण पर विजयी हो कर अयोध्या वापस लौटे थे और उनका राजतिलक हुआ था, तब अयोध्यावासियों ने दीपमाला करके अपना हर्ष प्रकट किया था। इस बार कांग्रेस के सभापति-पद के लिये हुए सान्मुख्य में यदि राजर्षि माननीय पुरुषोत्तमदास टंडन विजयी हो जाते, तो उनके समर्थक इस बार की दीवाली को—इसके 'रामायणी महत्व' को ध्यान में रखते हुए—जरा और भी समारोहपूर्वक मनाते !

लेकिन अबके तो मामला ही उलट गया ! कलजुग है, साहब, कलजुग !

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वदेशी बीमा कम्पनी लि० आगरा

(स्थापित १९३१)

प्रधान कार्यालय— स्वदेशी बीमा नगर, आगरा

१. सन् १९४७ में पूरा किया हुआ नया कार्य	३६ लाख रुपये से ऊपर
२. चालू बीमे	१ करोड़ से ऊपर
३. जीवन बीमा फंड	लगभग १९, ००,००० रु०
४. पूंजी (एसेट्स)	लगभग ३०, ००,००० रु०

हमें अपना काम बढ़ाने के लिए कमीशन अथवा वेतन पर कुछ योग्य तथा उत्साही कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है, बीमे की दरें व नियम अति उदार हैं।

स्मरण रहे कि 'स्वदेशी' संयुक्त प्रान्त की सर्व प्रथम एवं प्रमुख बीमा कम्पनी है। हिन्दी में पत्र व्यवहार एवं पालिसी जारी करने वाली यह अकेली बीमा कम्पनी है।

कृपया लिखें या मिलें—

पं० गोविंदप्रसाद चतुर्वेदी, जनरल मैनेजर।

३० वर्ष की प्रचलित

असली मुग़ली जन्म घुट्टी नं० ५५५

जन्म के समय अमृततुल्य लाभदायक है, जन्म से ५ साल तक कुल बीमारियों की एक दवा। सब जगह बिकती है। लेकिन नकली से बचें!

निर्माता—
घाव नाशक कार्यालय
पहाड़गंज, दिल्ली।

एजेण्ट—
हरनारायण गोपीनाथ
खारीबावली दिल्ली।

घावनाशक

फोड़े, फुन्सी, ज़ख़म, खाज का अनुपम मरहम

GHAV NASHAK KARYALA
PAHAR GANJ
DELHI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

दीपक जलता रहा !

श्री यशपाल स्वतन्त्र विशारद

बलधारी काका जब भी घर में आते, तारा, रवि और चन्द्र—घर के सभी बच्चे कहानी सुनने के लिये उन्हें घेर कर बैठ जाते। दिवाली की रात को भी यही हुआ। बलधारी काका ने पहले तो कुछ आनाकानी की, परन्तु अन्त में उन्हें बाल-हठ के आगे हार माननी ही पड़ी। वे बोले—"बच्चो, तुम्हारे बाल-हठ ने मुझे एक और बालक के हठ का स्मरण करा दिया है, जिसने अपने लिये नहीं, भारत की स्वतन्त्रता के लिये इसी दिवाली के दिन हठ किया था। सन् १९३१ की बात है—आज से सत्रह वर्ष पहले की। गांधी जी के नेतृत्व में सारे भारत में स्वतन्त्रता-संग्राम चल रहा था। सत्याग्रह, असहयोग आदि अहिंसा के शस्त्रों द्वारा अंग्रेजों के साम्राज्य पर धावा बोल दिया गया था। विदेशी माल का बायकाट चल रहा था। यही दिवाली का दिन था। दोपहर को ही मैंने सुन लिया था कि विदेशों से आई हुई आतिशबाज की वस्तुओं की बिक्री न होने देने के लिये दूकानों पर पिकेटिंग होने वाला है और पिकेटिंग करने वाले बालक ही हैं और उनकी आयु आठ वर्ष से लगा कर बारह वर्ष तक है। मुझे बड़ा कौतूहल हुआ। मैं भी वहां पिकेटिंग देखने निकल पड़ा।

जब मैं अपने विचारों में डूबा बाजार में चला जा रहा था, तो बड़े जोर का हार्न बजा मेरे पीछे और मैं एक दम सुध में आ गया और भाग कर सड़क की पटरी पर चला गया। मोटर के नीचे दब कर मरने में जरा भी कसर नहीं रही थी। मोटर बहुत दूर आगे नहीं गई, आतिशबाजी की दूकानों के समीप एक ओर खड़ी हो गई।

मोटर का द्वार खुला और उसमें से एक साठ वर्ष के बूढ़े सज्जन और एक आठ वर्ष का बालक नीचे उतरे।"

चन्द्र ने कहा—"कौन थे वे, काका? मोटर वहां क्यों रुकी?"

बलधारी ने कहा—"वे दोनों आतिशबाजी खरीदने आये थे। उस लाइन की जितनी भी दूकानें थीं, उनके सामने एक एक बालक खड़ा था। जो कोई आतिशबाजी खरीदने आता, वे उसे नम्रतापूर्वक मना करते। कभी-कभी तो उन्हें हाथ जोड़ने पड़ते तथा पैरों पर भी गिरना पड़ता। जहां तक हो सकता, वे बालक आतिशबाजी किसी को भी खरीदने नहीं देते थे। दूकानदार हाथ पर हाथ धरे बैठे थे। लड़के नाबालिग होने से न तो सरकार ही उन्हें पकड़ सकती थी, न दूकानदार ही उन्हें मना कर सकते थे।

एक दूकान बहुत बड़ी थी। बिजली की रोशनी से वह खूब जगमगा रही थी। अनेकों प्रकार की आतिशबाजी से वह दूकान सजी थी। वे बूढ़े महाशय और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका नाती उसी दूकान की ओर बढ़े। मैं भी उनके पीछे-पीछे चलने लगा।

मैंने देखा सड़क पर खड़ा एक आठ - नौ वर्ष का बालक उन दोनों की ओर बढ़ा चला आ रहा है। उसकी चाल में असीम बल का आभास मैंने पाया। मुख पर दृढ़ निश्चय की आभा थी और आंखों में मर मिटने की भावनाओं की पवित्र ज्योति थी।

इसी समय दूकानदार चिल्लाया—'देख बे छोकड़े, अबकी तू मेरी दूकान के सामने आया और किसी को मना किया, तो खोपड़ी फोड़ दूंगा।'

उस बालक पर इन शब्दों का कोई असर नहीं हुआ। जैसे रण के मैदान में गरजने वाली तोपों का भयानक गर्जन मातृ-भूमि पर मर मिटने वाले वीर सैनिक को नहीं डरा सकता, उसी प्रकार वह बालक उस दूकानदार की ललकार से जरा भी नहीं डरा। वह तो धैर्य और निश्चय के साथ आगे बढ़ा चला जा रहा था।

दूकानदार ने जब यह देखा कि बालक पर उसकी डांट का जरा भी असर नहीं हुआ है और गाहक बहुत बड़ा व्यक्ति है और उसकी पहचान का है, तो वह दूकान से नीचे उतरा और उस धनी गाहक के सामने जाकर हाथ जोड़ कर बोला—'आइये, आइये अन्नदाता। मैं तो कल से हुजूर की राह देख रहा हूँ। मुझे तो पूरा यकीन था कि आप जरूर मेरी ही दूकान पर आवेंगे।'

इसी समय वह बालक भी हाथ जोड़ कर बूढ़े के सामने खड़ा हो गया। वे समझे किसी गरीब का बालक आतिशबाजी के लिए पैसों की भीख मांग रहा है। बूढ़े ने इस बालक की ओर एक बार अभिमान से देखा और घमण्ड के साथ कहा, 'क्यों बच्चा, आतिशबाजी खरीदोगे? आओ, मेरे पास आओ। मैं तुम्हें जितनी चाहोगे, खरीद दूंगा।'

दूकानदार ने अत्यन्त घृणा से कहा, 'ये गरीबों के लड़के बड़े शैतान होते हैं अन्नदाता! ये तो न कुछ आप खरीदते हैं और न दूसरों को खरीदने देते हैं। घर में जहर खाने को पैसा नहीं होता इनके पास, दूसरों से जलते हैं, तो पिकेटिंग का भूत लेकर यहां आकर खड़े हो जाते हैं।'

बूढ़े की मुखाकृति कठोर हो गई। घृणा से भरे कठोर स्वर में उन्होंने कहा, 'अच्छा, तो ये महाशय यहां पिकेटिंग करने खड़े हैं। गांधी ने तो राजनीति को एक खिलवाड़ समझ रखा है। चलो, सेठ, हम आतिशबाजी अवश्य खरीदेंगे।'

'जुग जुग जियें अन्नदाता! आप जैसे उदार लोगों से ही हम पल रहे हैं।'

बालक अपने मोर्चे पर अविचल खड़ा था। उसने दृढ़ स्वर में कहा—'विदेशी आतिशबाजी न खरीदिये, महाशय। अपने देश का पैसा विदेश में जाने से बचाइये।'

वृद्ध महाशय ने एक बार घूर कर उसकी ओर देखा और चिल्ला कर कहा, 'रास्ते से हट जाओ, वरना पीटूंगा। हटो। हट जाओ रास्ते से।'

उस बालक ने खुली आंखों से बूढ़े की ओर देखते हुए ऊंचे स्वर में कहा, 'यह किसान और मजदूरों की गाढ़ी कमाई का पैसा है। यह गरीब भारत का धन है। इसे विदेश में भेज कर भारत को और गरीब न बनाइये।'

बूढ़ा कुछ नहीं बोला, किन्तु एक जोर का धक्का उसने बालक को दिया। बालक औंधा सड़क पर गिर गया। बूढ़ा दूकान की ओर बढ़ा। बालक एक क्षण में ही उठ कर खड़ा हो गया। मातृभूमि पर न्यौछावर होने वाले वीर क्या कभी गोलियों की बौछारों की परवाह करते हैं? वे तो अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना जानते हैं।

बालक दोनों हाथ फैला कर दौड़ा और फिर धनी बूढ़े के सन्मुख जाकर खड़ा हो गया। बोला—'भारतमाता की ओर देखिये महाशय! वह हमारी मां है। उसे हमें स्वतन्त्र करना है। अंग्रेजों को यहां से भगाना है। आप हमसे सहयोग कीजिये, सरकार से असहयोग कीजिये।'

इतना कहना था कि तड़ से एक चांटा बूढ़े ने बालक के मुख पर जड़ दिया। बालक तिलमिला उठा, फिर भी वह कहता ही रहा—'न खरीदिये, विदेशी वस्तु न खरीदिये। मैं आपके पैरों पड़ता हूँ। अपने देश का धन अपने देश में ही रखिये।'

तड़ से दूसरा चांटा उसी गाल पर पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक लड़खड़ा कर गिर पड़ा। बूढ़े महाशय आगे बढ़े और दूकान के सामने जाकर खड़े हो गये। कोई पच्चीस रुपये की आतिशबाजी उन्होंने खरीदी। बालक की मूर्च्छा भंग हो गई थी। वह जोश से फिर उठा। कराह, सिसकन और रोना उसके जीवन से मानों कूच कर गये थे। एक सच्चे सत्याग्रही की तरह वह केवल अपने देश की स्वतन्त्रता के लिये मरना जानता था। भाग कर उसने बूढ़े का हाथ पकड़ लिया और गिड़गिड़ा कर कहा, 'नहीं नहीं, मैं यह गरीब भारत का धन विदेश में नहीं जाने दूंगा।'

बूढ़े ने फिर जोर का धक्का दिया। बालक औंधे मुंह गिरा। सामने के दो दांत टूट गये। नाक रगड़ खा गई। मुंह और नाक से खून बहने लगा। अब बालक में उठने की शक्ति नहीं रही। वह पेट के बल रेंग कर बूढ़े के पास गया और दोनों हाथों से जोर से पैर पकड़ लिये। अत्यन्त करुणा भरी दृष्टि से वह सिर ऊंचा किये उस बूढ़े की ओर देखता रहा। अब उसमें बोलने की शक्ति नहीं रह गई थी। फिर बूट की जोर की ठोकर बालक की छाती में लगी। एक चीख के साथ बालक बेहोश हो गया। उसके मुंह से खून बह उठा।

मुझे उस बूढ़े पर बहुत क्रोध आ रहा था। मैं उसकी ओर क्रोध से बढ़ा, बदला लेने की भावना से। किन्तु इसी समय एक अजीब घटना घटी।"

तारा ने कहा, "वह क्या काका?"

बलधारी ने कहा "बूढ़े के साथ वह जो बालक था न, उसका नाती वह एकदम रोने लगा और करुणाभरे स्वर में बोला, 'नहीं, नहीं, नाना जी, मुझे आतिशबाजी नहीं चाहिये, नहीं चाहिये। वह देखो उसके मुख से खून बह रहा है। वह बेहोश हो गया है नाना, जी। उसे उठाओ, उसे अस्पताल ले चलो। मुझे वह आतिशबाजी नहीं चाहिये, जिसका पैसा विदेश को जाता हो। ओह, वह इतना पिटा, फिर भी अपना हठ...।

मैंने देखा कि वह दौड़ कर उस धूल में गिरे हठी, सत्याग्रही बालक के पास जाकर बैठ गया और उसके मस्तक पर हाथ फेरता बोला — 'उठो भइया, मैं आतिशबाजी नहीं खरीदूंगा। मैं तुम्हारा कहना मानूंगा। मेरे घर चलो भइया। उठो। मेरे ही

कारण तुम्हें यह दुख उठाना पड़ रहा है नाना जी, मैं आपके पैरों पड़ता हूँ, इसे अस्पताल में ले चलिये।'

मैंने देखा कि वह बालक अपने नाना जी के पैरों पर गिर पड़ा है। मुझसे नहीं रहा गया। मैंने कहा — 'इसे भी ठोकर लगाइये महाशय, धक्का दीजिये, चांटे मारिये। क्यों आप अब चुप क्यों हैं?'

अचानक मैंने सुना, बूढ़ा भर्राये गले से कह रहा था, 'मैं बड़ा पापी हूँ, भाई, मैं सरकार का गुलाम हूँ और गुलामी में मानवता मर जाती है। अधिक समय नहीं है भाई, चलो इसे अस्पताल ले चलें'

हम उसे अस्पताल में ले गये और ..." कहते-कहते बलधारी रुके।

चन्द्र ने आतुर होकर कहा—"और-और, शीघ्र कहो काका बालक बच गया न?"

"हां चन्द्र, बालक मरा नहीं, बच गया। धनी बूढ़े ने उसके इलाज पर बहुत रुपया खर्च कर उसे बचा लिया और अपने पाप को धोया।"

एक साथ सभी बच्चों ने तालियां पीट कर कहा— "बालक बच गया! यह बहुत ही अच्छा हुआ, काका!"

बलधारी ने कहा "हां, दीपावली के पवित्र त्यौहार के दिन स्वतन्त्रता के पुजारी की प्राण-ज्योति बुझी नहीं, जलती रही। अब रवि, तुम यह बताओ कि इस युद्ध में विजय किसकी हुई?"

"यह हिंसा पर अहिंसा की विजय है, काका।" रवि झट बोल उठा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीवाली में होली

श्रीमती सुरेन्द्रकुमारी सिन्हा

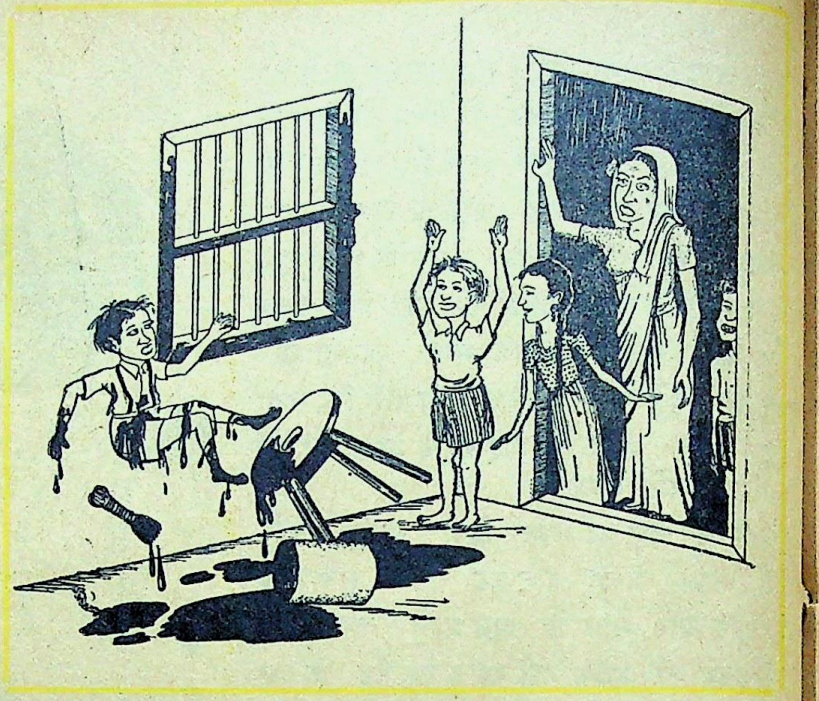

दीवाली आ गई, चली मां सारा घर आ द्वार पुताने,
उजले चूने से दीवारें, कोलतार से द्वार रँगाने।
सभी रँग चुके थे दरवाजे, बाकी थीं दो-चार खिड़कियां,
"काम नहीं करता है जल्दी" खाकर यह मजदूर झिड़कियां—
चला गया ज्योंही छुट्टी कर, मां निकली कमरे के बाहर।
खड़ा खड़ा सुनता था लल्लू, लाया झट स्टूल उठा कर,
लगा दिया मजबूती से फिर खिड़की के ही पास जमाकर,
एक हाथ में पकड़ी कूची, कोलतार का पीपा ला कर।
खड़े हो गये खिड़की रँगने लल्लू बन भारी कारीगर,
क्या मजाल जो रह भी जाये चित्त-चित्ता यहां वहां पर!
कूची चलने लगी सरासर, हिलता था स्टूल चर-मर,
पर लल्लू जी सुध-बुध खोकर अब तो लगे काम में डट कर।

इतने में आंगन से मां ने ले लल्लू का नाम पुकारा,
चौंक पड़े लल्लू घबरा कर, अब बचने का रहा न चारा।
झट कूदे, स्टूल गिरा फिर, औंधा कोलतार का पीपा,
छूट हाथ से कूची ने भी लल्लूमल का मुखड़ा छीपा!
सुन कर गिरने की यह खटपट, दौड़ पड़ी घर भर की टोली,
हंस कर कहा, "अहा! लल्लू ने दीवाली में खेली होली!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-पहेली नं० १३

२० नवम्बर १९५८ तक सही उत्तर

आने पर पांच रुपये नकद पुरस्कार

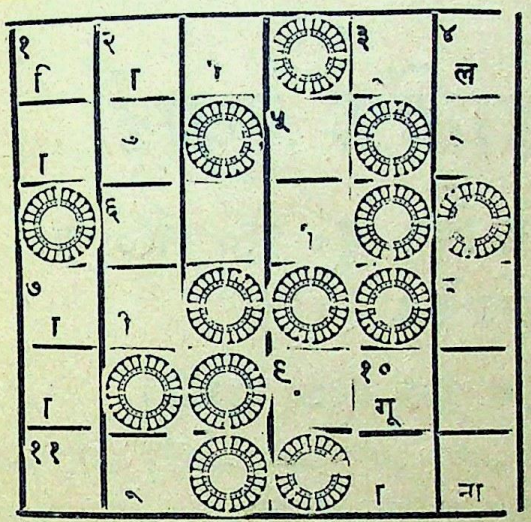

दायें से बायें

१. इस त्योहार पर ही यह विशेषांक निकला है। ३. इस पर पांव नहीं पटकना चाहिये ६. 'ऊपर से नीचे' के नं० २ शब्द का एक अक्षर इसके आरम्भ में लगा देने से एक ऐसी वस्तु का नाम बन जाता है, जो दिवाली की रात को चांदी के तारे बिखेरती है। ९. यदि लकड़ी में प्राण हों, तो वह इससे डर कर भाग जाये। ९. कई बच्चे ऐसे भी हैं, जिन्होंने इसका नाम तो सुना होगा, परन्तु देखा नहीं होगा। ११. किसी फटे हुए कपड़े को इस तरह सीना कि वह सिया हुआ मालूम न हो।

ऊपर से नीचे

१. 'दीपावली' में यह शब्द है, पर किसी और रूप में। २. फूलों वाले स्थान के नाम के उलट पुलट अक्षर। ४. इसे उलटने से एक ऐसे काम का नाम बन जाता है जो इकट्ठे होने से होता है ५. जब आकाश से पानी बरसता है, तो नन्ही नन्ही बूंदों की यह बन जाती है। ७. शकल-सूरत। ८. पानी हो, तो यह काम हो। १०. यह भी खाया जाता है।

बाल पहेली नं० १२ का पुरस्कार

अक्टूबर १९५८ के 'मनोरंजन में' प्रकाशित बाल-पहेली नं० १२' का शुद्ध उत्तर विद्यार्थी रमेशकुमार गुप्त विजयवर्गीय, कक्षा ७, मिडिल स्कूल, बारां (कोटा) ने भेजा है, अतः उन्हें पांच रुपये का पुरस्कार दिया गया है। सही उत्तर निम्नलिखित है—

दायें से बायें—१. पहेली। ३. राल। ४. हठी। ५. भेजा। ७. जीजी। ९. नख। ११. गांव। १२. लय

ऊपर से नीचे—१. पहलवान। २. हेठी। ३. राजाजी। ६. जन। ८. जीन वस। १०. कल।

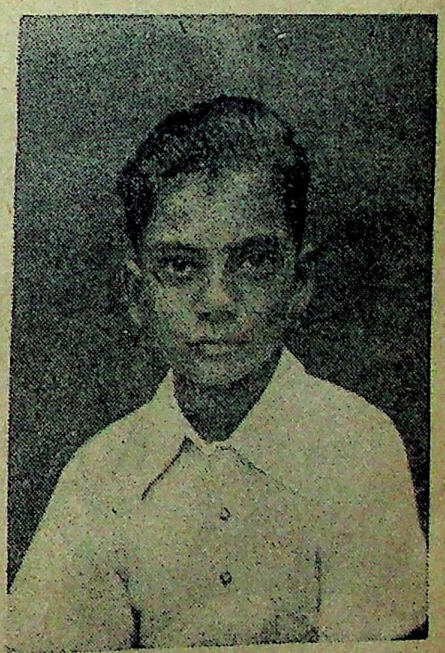

महेशचन्द्र गुप्ता

इन्होंने पिछले महीने बालपहेली नं० ११ का सही उत्तर भेज कर पुरस्कार प्राप्त किया था। इनकी आयु लगभग ११ वर्ष है। ये क्लैमी हाई स्कूल, मथुरा में कक्षा ६ में पढ़ते हैं। अपनी कक्षा के ये होनहार विद्यार्थी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली के शुभ अवसर पर

इंडियन टी कंपनी

के ग्राहकों तथा एजेण्टों

को

हार्दिक बधाई

इंण्डियन टी कं० की शुद्ध चाय के लिए यू० पी० सी० पी० में आवश्यकता है।

मैनेजर—**इण्डियन टी कं०** कूचा पण्डित दिल्ली।

रेशमी कपड़ा एक रुपया गज

आप को किसी भी स्थान पर नहीं मिल सकता। फिर भी हम आप को बाजार से बहुत ही सस्ते मूल्य पर दे सकते हैं, जो आप को कौड़ियों के भाव पड़ेगा! अमेरिकन सफेद सिल्की पैराशूट बारह कली वाला बिना जोड़ के रेशमी डोरी सहित बारह रुपये (१२)) प्रति पैराशूट (पूरी छतरी)। पैकिंग इत्यादि मुफ्त किया जाता है! अतिरिक्त डाक व्यय एक रुपया ग्यारह आने (१॥≡))। तीन इकट्ठी कलियां मंगवाने वाले को विशेष रियायत पर छत्तीस रुपये पन्द्रह आने (३६॥≡) डाक व्यय समेत।

यह माल दूसरे रेशमी शिल्की कपड़े की अपेक्षा बहुत उत्तम और सस्ता है! पहिले इसका मूल्य अधिक था, परन्तु अब स्टाक समाप्त करने के लिए ही यह रिआयती थोक का भाव है। तीन पैराशूट डाकव्यय समेत ३६॥≡) में आपको घर में पड़ेंगे। आर्डर दे कर शीघ्र मंगवायें, वरना स्टाक समाप्त होने पर पछताना पड़ेगा, क्योंकि अमरीका से अब और अधिक माल नहीं आ रहा है।

—मिलने का पता

सोल एजेंट—**अमेरिकन कारपोरेशन (ऐम० डी०) पुतलीघर-अमृतसर।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोत्तम लिवर, कभी न बन्द होने वाली ऊंचे दर्जे की घड़ियां
सस्ती कीमतों पर ताजा माल आ गया है

ऊंचे दर्जे की ज्यूल्ड, सर्वोत्तम लिवर चाल, बहुत आकर्षक और अटन्टू डेट नमूनों की रिस्ट वाच (घड़ियां)। प्रत्येक घड़ी की ५ वर्ष की गारंटी है और इसके साथ बहुत अच्छा प्लास्टिक स्ट्रैप। पैकिंग और डाक खर्च मुफ्त।

५। इंच स्त्रियों की विशेष घड़ियें

माडल नं २१०८, १०॥ इंच		माडल नं० २१०६, ६॥ इंच		माडल नं० १५०५	
क्रोमियम केस ...	१५) रु०				
क्रोमियम केस ७ ज्वेल	३२) रु०	चमकदार क्रोमियम केस	३६) रु०	चमकदार क्रोमियम केस	४८) रु०
सैन्डर सैकिंड ...	२५) रु०	चमकदार क्रोमियम १५ ज्वेल	५८) रु०	चमकदार क्रोमियम १५ ज्वेल	६५) रु०
रोल्डगोल्ड (३० वर्ष गारंटी)	४६) रु०	रोल्डगोल्ड (१० वर्ष गारंटी)	५२) रु०	रोल्डगोल्ड (१० वर्ष गारंटी)	५२) रु०
रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल	५८) रु०	रोल्डगोल्ड १५ ज्वेल	७८) रु०	रोल्डगोल्ड १५ ज्वेल	८५) रु०
शौक और वाटर परूफ	८७) रु०				

हमारी घड़ियों के बारे में ताजा राय—श्री मि० सी० एल० गुप्ता आर० आई०ए०एफ० कैन्टीन अम्बाला कैंट लिखते हैं—जो घड़ी आपने मुझे १६४१ में भेजी थी भली प्रकार काम कर रही थी, पिछले साल यात्रा में गुम हो गई, तब से मैं बिना घड़ी के हूँ क्योंकि मैं किसी और जगह से खरीदना नहीं चाहता। आपके नये माल के आने पर मेरे पहले आर्डर के अनुसार कृपया कम से कम दो घड़ियां मुझे भेज दें। तिथि २४-६-४८

स्टाक कम है। शीघ्र आर्डर भेजें ताकि निराश न होना पड़े।

एफ० जी० सप्लाई कम्पनी, ६, डिपटी गंज, सदर बाजार, दिल्ली।

१०,०००) की घड़ियां मुफ्त इनाम

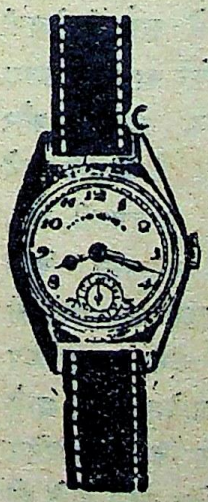

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामी जी की ओर से लाजवाब तोहफा है यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता, उनको लम्बे घुंघरवाले और चमकदार बनाता। जहां बाल न उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता और ठण्डक पहुँचाता है, अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती की० ६॥) इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैन्सी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना लंदन न्यू गोल्ड बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती है। तीन शीशी के खरीदार को डाक खर्च माफ और चार म्यूट घड़ियां व चार अंगूठियां स्वनउन न्यू गोल्ड बिलकुल मुफ्त दी जाती है।

सन्यासी आयुर्वेदिक फार्मेसी (M. D.) Haeka No 22 अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३००) रु० मुफ्त इनाम

प्रेम के शौकीन जो सब ओर से निराश हो चुके हैं वे अन्तिम वार हमारा असली महा काली यन्त्र मँगवा कर अपने दिल की मुराद पूरी करें। इसको अपने पास रखने से आप अपने दिल में जिस किसी का नाम लेंगे चाहे वह कैसा पत्थर दिल, अभिमानी और सख्त क्यों न हो जहां कहीं होगा आपसे मिलने के लिये तड़पने लगेगा और जब भी आप उसके सामने जायेंगे वह प्रेम करने लगेगा। इसके अलावा गुमसुदा की तलाश करना, किसी के दिल का भेद मालूम करना, मृतात्मा से बात करना, गर्ज कि आपके हर प्रश्न का जवाब आपको मिल जायगा और आपके दिल में कोई इच्छा है जो कि हजारों प्रयत्न के बाद भी पूरी नहीं हुई वह भी हमारे असली महाकाली यन्त्र के पास रखने से गिनती के दिनों में पूरी हो जायेगी। मूल्य प्रति यन्त्र केवल १।) रु० तीन यन्त्र का रियायती मूल्य ३=) स्पेशल महाकाली यन्त्र जो कि बहुत जल्दी असर करता है रियायती कीमत ३॥=) १ से ३ यन्त्रों के लिये महसूल डाक ।≡) लाभ न होने पर कीमत वापिस। गलत साबित करने वाले को ३००) नकद इनाम। मंगाने का पता—

प्रोफेसर बङ्गाल मेस्मेरेजम हाउस (V. A. D.) होशियारपर

फूल आपकी किस्मत बतायेगा

भारतवर्ष की जगत प्रसिद्ध सच्ची साइन्स ज्योतिष विद्या गहरे अन्धकार में सूर्य की रोशनी है, यदि आप शीघ्र ही इस संसार में बदलने वाली अपनी किस्मत के उलट फेर का ठीक उतरा हुआ फोटो समय से पहले देखना चाहते हैं तो आज ही पोस्ट कोर्ड पर अपना पूरा पता और किसी दिल पसन्द फूल का नाम लिख कर भेज दें तो हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आने वाले १२ मास का लाभ, हानि, नौकरी, उन्नति व पतन, स्त्री सन्तान का सुख, तन्दुरुस्ती, रोग, किसी से नया मेल जोल, दिल पसन्द सगाई, मुकदमा परीक्षा में सफलता लाटरी, सफलता, किसी गुप्त ढंग से धन की प्राप्ति अर्थात् तिथि कार्ड से लेकर कुल एक वर्ष में होने वाली सब बातों का विवरण अर्थात् मासिक वर्ष फल बना कर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक व्यय इसके अतिरिक्त होगा साथ ही बुरे ग्रहों की की शांति का उपाय भी बता दिया जावेगा ताकि आने वाले कष्टों को दूर किया जा सके। एक बार का अनुभव आपको बता देगा कि हम ज्योतिष विद्या में कितना ज्ञान रखते हैं। ठीक न हो तो दुगनी कीमत वापिस झूठा साबित करने वाले को १००) रु० देने की गारण्टी है।

सत्यनारायण ज्योतिष आश्रम (वी० ए० डी०) होशियारपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनों

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं, और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिकधर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी। मुझे मासिक धर्म खुल कर न आता था। अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन कमजोर होती जा रही थी, चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की मशहूर औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से भी रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महात्मा हमारे दरवाजे पर भिक्षा के लिए आये। मैं दरवाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी, तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरेका रंग कई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पतिदेव को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुःखी बहिनों की भलाई के लिए असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखें। मैं उनको अपने हाथ से औषधि बना कर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवाई तैयार करने पर २॥।=) दो रु० चौदह आने असल लागत खर्च होता है और महसूल डाक अलग है।

*** जरूरी सूचना ***

मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है। इस लिये कोई बहन मुझे और किसी रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, (३०) बुडलाडा, जिला हिसार पंजाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

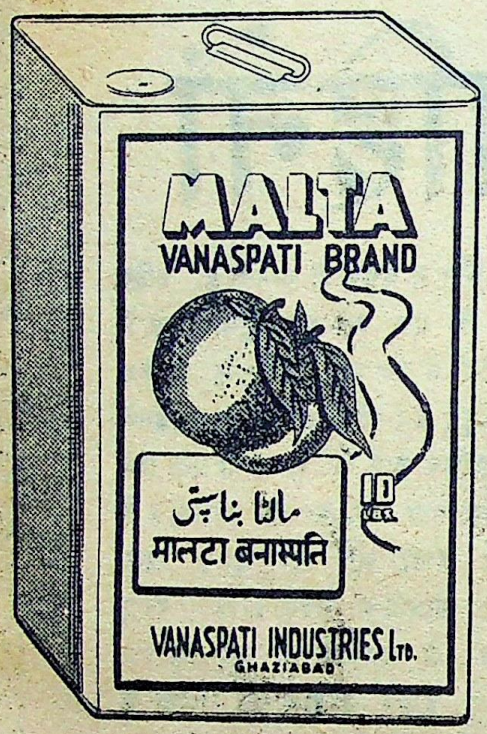

फोटो कैमरा मुफ्त

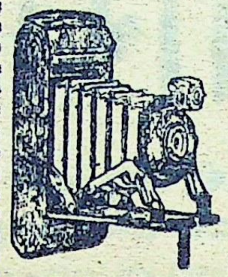

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी डण्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है। शौकिया काम लेने वाले तथा व्यवसायी दोनों ही काम इससे ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरा में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमायें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा तमाम फिल्म-फार्मूला, केमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ४॥=), बैस्ट क्वालिटी नं० ५४५ कीमत ६॥) डी लक्स एक्स्ट्रा, स्पैशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ६॥), पैकिंग व डाक खर्च १०)

नोट—एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५४५ मुफ्त। स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसंद न होने पर कीमत वापिस।

वैस्ट एण्ड ट्रेडर्ज, पोस्ट बक्स नं० १९९ ( ) दिल्ली।
West End Traders P. B. 199, (M.H) Delhi.

इसको रखने के लिए लाइसेंस की कोई जरूरत नहीं, हर घर में होना चाहिये

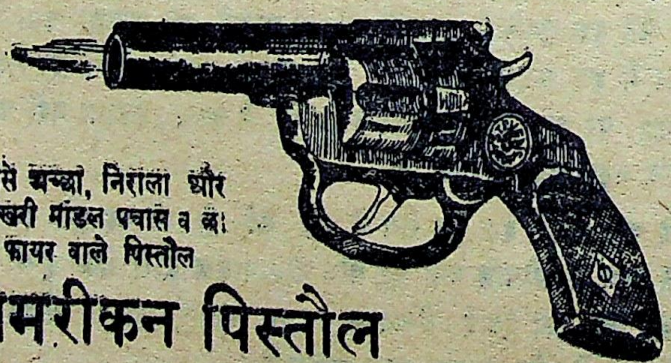

सबसे अच्छा, निराला और आखरी मॉडल पचास व ८ फायर वाले पिस्तौल

अमरीकन पिस्तौल

जान व माल की रक्षा के लिये इससे अच्छी कोई चीज नहीं। यह माल असली का आनिंद अब पहली बार आया है। मूल्य ६ फायर वाले शाट के साथ मॉडल डी. नं० २, ४॥=) स्पैशल मॉडल ए. नं० २, ७॥=), मूल्य ५० फायर वाले शाट के साथ नया मॉडल डी नं० १, ३॥=), स्पैशल मॉडल डी. नं० २, १०॥=) फालत् शाट १) दर्जन पिस्तौल का तेल ॥), चमड़े की पेटी-पांच रुपये डाक खर्च अलग। तीन एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ।

अलाईड ट्रेडर्स लिमिटेड ( ) दिल्ली।
ALLIED TRADERS Ltd., (M.H.) DELHI

प्रिंटर पब्लिशर श्री दुर्गाप्रसाद शर्मा द्वारा [illegible] से छप कर प्रकाशित।
CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

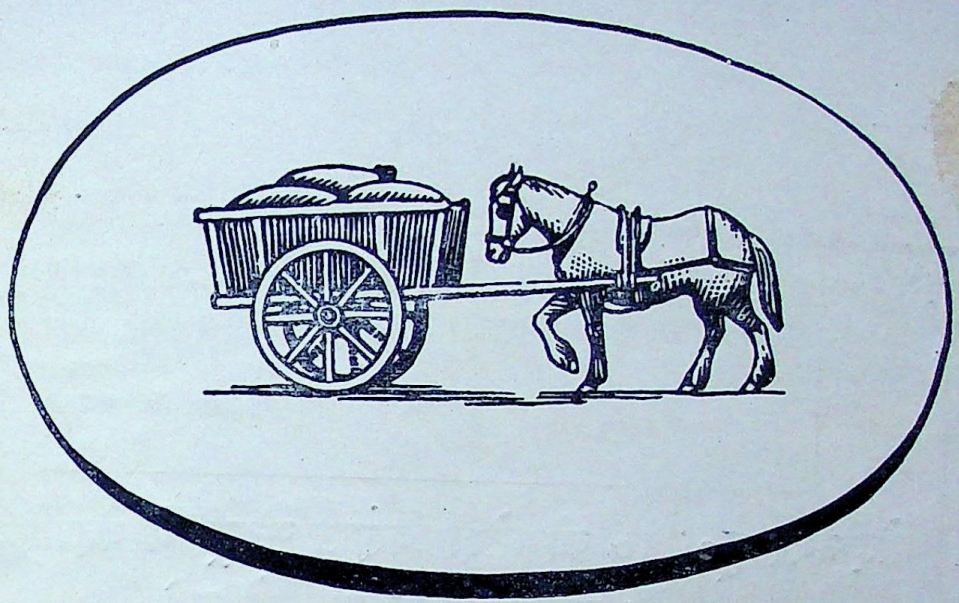

घोड़ के आगे गाड़ी विचित्र मूर्खता है

और सम्भवतः आपकी नजरों से ऐसी अनोखी चीज कभी न गुजरी हो, परन्तु शीत ऋतु आरम्भ होने से पूर्व अपने ऊनी वस्त्रों को ड्राइ क्लीन करवा लेना अत्यन्त समझदारी है। हमें आपकी याद दहानी के लिये यह निवेदन कर देना आवश्यक है कि ऊनी कपड़ों की

-धुलाई [ड्राइ क्लीन]-रंगाई व रफू

का श्रेष्ठतम समय यही है

-स्नो व्हाइट-

कोनोट प्लेस नई दिल्ली-व-चाँदनी चौक दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० — डी० १७३

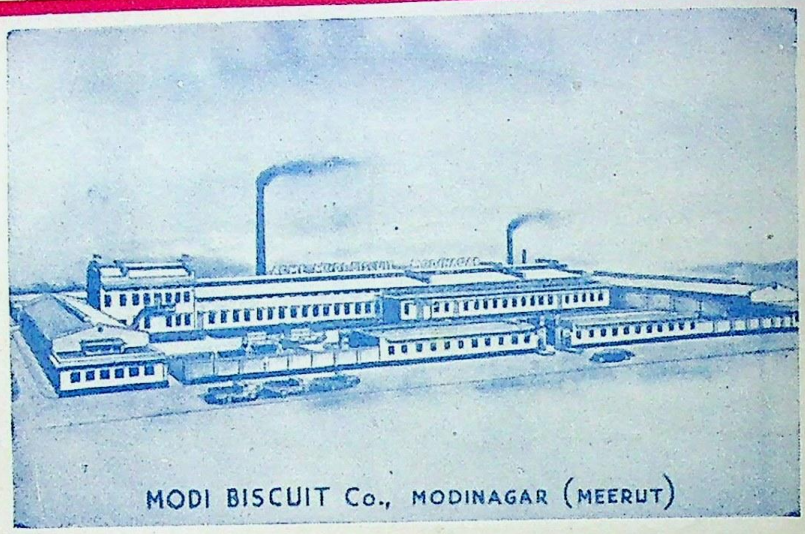

MODI BISCUIT Co., MODINAGAR (MEERUT)

मोदीनगर यू० पी० की मोदी बिस्कुट फैक्ट्री में वैज्ञानिक ढंग
और शुद्धता से तैयार किये गये

स्वादिष्ट, पौष्टिक, बलवर्द्धक और ताजे बिस्कुट

धर्म बचै अरु धन बचै, तन में नित बल आय।
चित्त प्रसन्न बनाइये, मोदी बिस्कुट खाय॥

मोदी बिस्कुट फैक्ट्री में निर्मित कुछ बिस्कुटों के नाम

एक्मे बिस्कुट
एक्मे स्पेशल
नाइस
कस्टार्ड क्रीम

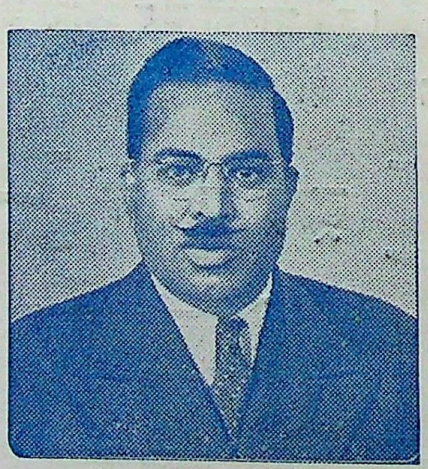

फ़िगर क्रीम
थिन अरारूट
अरारूट वैफर
पेटिट
मेरी पेटिट

मोदी नगर के संस्थापक तथा मोदी इण्डस्ट्रीज के मुख्य संचालक

रायबहादुर गुज्जरमल मोदी

इनके अतिरिक्त मोदी कन्फेकशनरी बबर्स मोदी नगर में बच्चों के लिये मिठाइयां भी तैयार की जाती हैं जिनके स्वाद और गुणों से बालक तथा उनके संरक्षक अच्छी तरह परिचित हो चुके हैं।

मोदी सप्लाइज कारपोरेशन लि०, मोदीनगर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय-पुस्तक भण्डार की सामयिक पुस्तकें

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है। मूल्य १॥) रुपया।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय ललकार एक ही साथ हैं पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य हैं। मूल्य १) डाकव्यय ।-)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झाँकियाँ'

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन, मूल्य ॥)

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला? मूल्य ॥)

दोनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य ॥।)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी।

मूल्य २)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है

अपितु

जनता के उद्‌बोधन का मार्ग है।

इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)।

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा।

मूल्य १) डाक व्यय =)

प्राप्ति स्थान—विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनों

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं, और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिकधर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी। मुझे मासिक धर्म खुल कर न आता था। अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन कमजोर होती जा रही थी, चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की मशहूर औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से भी रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महात्मा हमारे दरवाजे पर भिक्षा के लिये आये। मैं दरवाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रंग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पतिदेव को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुःखी बहिनों की भलाई के लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखें। मैं उनको अपने हाथ से औषधि बना कर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवाई तैयार करने पर २॥।=) दो रु० चौदह आने असल लागत खर्च होता है और महसूल डाक अलग है।

* जरूरी सूचना *

मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है। इस लिये कोई बहन मुझे किसी रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, (३०) बुडलाडा, जिला हिसार पंजाब।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

T. B. टी० बी० 'तपेदिक' तथा पुराने ज्वर के रोगियो-ध्यान पूर्वक पढ़ो!

भारतीय ऋषियों की खोज का अद्भुत चमत्कार (JABRI) एक आश्चर्य जनक घटना

मेरी स्त्री अनेक दिनों से बीमार थी, आखिर डाक्टरों ने 'तपेदिक' (टी० बी०) रोग बतलाया। 'तपेदिक' का नाम सुनते ही होश हवाश उड़ गये। अन्त में डाक्टरों ने एक्सरे करके दोनों फेफड़े खराब (गल) जाने की बात कह कर मुझे आदेश दिया कि रोगी १०-१५ दिन का मेहमान है। इसको अस्पताल से ले जाओ और किसी अलग कमरे में रख दो। कोई इसके पास न जावे। इसके थूक आदि से बचाव रखो लाचार हो कर उसको घर ले आया।

फिर क्या हुआ—अखबार 'मिलाप' में आपकी दवा 'जबरी' का विज्ञापन देखा। दिल ने कहा, जहां सैकड़ों रुपया हकीम, डाक्टरों की भेंट चढ़ा चुका हूं, यह भी खच करके देख लूं। रोगी ने कहा कि जब डाक्टरों ने यह कह दिया है कि दोनों फेफड़े खराब हो चुके हैं और मैं १०-१५ दिन की मेहमान हूं तो व्यर्थ क्यों खर्च करते हो, मुझे अब परमात्मा पर छोड़ दो। परन्तु दिल ने न माना और तुरन्त 'जबरी' नं० १ का आर्डर दे डाला। पांचवे दिन पार्सल पहुंच गया और विधि के अनुसार औषधि शुरू करा दी गई।

फिर क्या हुआ—वही आश्चर्यजनक चमत्कार। जिस रोगी के बारे में डाक्टरों ने मौत का फतवा दे दिया था और ६ मास बराबर इलाज करने पर भी बुखार न गया था, शक्तिशाली औषधि 'जबरी' ने दस दिन में ही अपना चमत्कार दिखा दिया, बुखार बिल्कुल जाता रहा। शरीर में रक्त का संचार होने लगा और दिल में पहले की सी उमंग पैदा हो गई। दिल में पूर्ण रूप से विश्वास हो गया कि जिस दवा ने इतनी जल्दी ऐसा चमत्कार दिखाया है क्यों न स्त्री को एक बार वहीं लेजा कर पूर्णरूप से परीक्षा करा कर आगे को इलाज का प्रबन्ध किया जावे। मेरी स्त्री की भी वही राय हुई।

फिर क्या हुआ—जिस रोगी में चारपाई से उठने की शक्ति न थी हजारों मील रेल की यात्रा करके 'जगाधरी' आ गई जहां पूर्ण परीक्षा के बाद उत्तम रूप से औषधियों का प्रबन्ध हुआ, रोगी की तन्दुरुस्ती दिन पर दिन बदलती गई और अब परमात्मा की कृपा से बिल्कुल ठीक हो गई है। यह ऋषियों के रक्त से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र की पूर्ण सफलता का चमत्कार है। उपरोक्त घटना सरदार कर्त्तारसिंह इण्डियन मिलिटरी जनरल हस्पताल, कराची से घटी।

पाठक वृन्द—यह एक नहीं और भी देखिये ! (१) लाला काशीप्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहबाद) (२) बा० मुन्नालाल स्टोरकीपर सिम्बाली शूगर मिल पो० बक्सर (मेरठ) (३) बा० रामसिंह घर नं० ६१ रीठा मण्डी (देहरादून) (४) श्री तोसलहूसेन रईल मो० मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जिला फैजाबाद आदि सैकड़ों सज्जनों का यही कहना है कि शक्तिशाली औषधि जबरी' दवा नहीं बल्कि यथार्थ में रोगी को काल के गाल से बचाने वाली ईश्वरीय शक्ति' है। सैंकड़ों हकीम, वैद्य, डाक्टर अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं। अनेक आदमी तार से आर्डर देते हैं। तार के लिये थोड़ा सा पता 'जबरी' (जगाधरी) (Jabri Jagadhri) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार है—'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ाने के लिए, सोना, मोती अभरक आदि मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु० नमूना १० दिन के लिये २०) 'जबरी' नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल अदि अलग है। आडर में अखबार का हवाला तथा नं० १ या दो साफ लिखें। तुरन्त आर्डर दे कर रोगी की जान बचावें। १० दिन ही में अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिये मूल्य मनआर्डर से भेजें, जिससे तुरन्त भेज दें।

पता रायसाहब के० एल० शर्मा एंड सन्स, रईस एंड बैंकर्स [M] "जगाधरी" [पूर्वी पंजाब]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांझ स्त्रियों के लिये

मेरी शादी हुए पन्द्रह वर्ष बीत चुके थे। इस समय के बीच मैंने सैकड़ों इलाज कराये लेकिन कोई सन्तान पैदा न हुई। सौभाग्य वश मुझे एक वृद्ध महा पुरुष से निम्न लिखित नुस्खा प्राप्त हुआ। मैंने उसे बना कर सेवन किया। ईश्वर की कृपा से नौ मास बाद मेरी गोद में बालक खेलने लगा। इसके पश्चात् मैंने जिस सन्तान हीन बहन को इसका सेवन कराया उसी की आशा पूरी हुई। अब मैं इस नुस्खे को सूची-पत्र द्वारा प्रकाशित कर रही हूं ताकि मेरी निराश बहनों की आशा पूर्ण हो।

औषधि तन्त्र ये हैं—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नैपाल गवर्नमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारी दक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम से कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कढ़ियारी सफेद की जड़ (यानी सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घण्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें। इसके सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति — गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातःकाल और सायंकाल एक एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट — औषधि तन्त्र के अंदर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अंदर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

मेरी सन्तान हीन बहिनों,

आप इसे बे गुण औषधि न समझें। यदि आप बच्चे की माता बनना चाहती हैं, तो इसे बनाकर जरूर सेवन करें। मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि इसके सेवन से आपकी अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। यदि कोई बहन इस औषधि को मेरे हाथ से ही बनवाना चाहें तो पत्र द्वारा सूचित करें। मैं उन्हें औषधि तैयार करके भेज दूंगी। एक बहिन की औषधि पर पांच रुपये बारह आने। दो बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने और तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आना खर्च आते हैं। महसूल डाक वगैरह बारह आने इससे अलग है।

नोट — जिस बहिन को मेरे पर विश्वास न हो वो मुझे दवा के लिए हरगिज न लिखें।

रतनबाई जैन (४४) सदर बाजार थाना रोड, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय वर्ष
संख्या ३

मनोरंजन

दिल्ली

दिसम्बर
१९४८

व्यवस्थापक
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

सम्पादक
श्री चिरंजीत

इस अंक में

कहानी

तवेले का धुंधलका	श्री रांगेय राघव	६
शुभ्रवसना	श्रीमती पुष्पा विद्यालंकृता	२०
हरी मक्खी	श्री काल्मन मिक्जैथ हंगरी, अनुवादक—श्री विराज	२६
लाल हवेली	श्रीमती कमला त्रिवेणीशंकर	३२

कविता

सांध्य - स्वप्न	श्री आरसीप्रसाद सिंह	५
चांदनी	श्री जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'	१७
गीत	श्री 'नलिन'	२५
लखनऊ की सांझ	श्री सलाम मछलीशहरी	३१

लेख

यह धूमकेतु क्या है ?	कुमारी लाज वरमानी एम० ए०	१०
मेरे नापिताचार्य !	श्री गुलाबराय एम० ए०	१२
चीनी काव्य का सौन्दर्य	ब्रह्मचारी नारायणदत्त	१५
भगवान् 'तिकड़मदेव'	श्री हरिशंकर शर्मा	१८
फनियर	श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार	३६

विशेष-स्तम्भ

संपादक के नाम	४३	हास-परिहास	४५
सलोनी-दुनिया	४६	रेडियो	४६
चित्रलोक	५१	बाल मनोरंजन	५७
नव-प्रकाशन	६१	——	

मूल्य आठ आना

वार्षिक मूल्य ५॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांध्य-स्वप्न

श्री आरसीप्रसाद सिंह

बज रहा अज्ञात कोई सुर हृदय में।
हो रहा संगीत कोई भग्न लय में।

दूर से आवाज कोई आ रही है,
आह, कैसी ग्राम-तरुणी गा रही है!
बाँसुरी की तान विष बरसा रही है,
एक मस्ती-सी हवा में छा रही है!
और खोया जा रहा हूं मैं प्रणय में।
बज रहा अज्ञात कोई सुर हृदय में।

शेष दिन अब हो रहे हैं भाद्रपद के,
प्राण खुलते जा रहे हैं कोकनद के।
पात्र अंगूरी छलकते रूप-मद के,
डालियों पर झूमते फल-फूल लद के!
मौन मैं कैसे रहूँ ऐसे समय में!
बज रहा अज्ञात कोई सुर हृदय में।

हो रहा सूर्यास्त पीले बादलों में,
फैल जायेगा तिमिर कुछ ही पलों में—
आम्रवन, उपवन, सघन ग्रामाञ्चलों में,
आग-सी लग जायगी हम बेकलों में!
स्वप्न उड़ते आयेंगे तारक-निचय में।
बज रहा अज्ञात कोई सुर हृदय में।

गूंजता है झिल्लियों का स्वर सुरीला,
कर रहा चीत्कार चातक अश्रु-गीला!
भूमि पर उतरी सजल संध्या सुशीला,
रंग है आकाश का भी घोर नीला!
और है तल्लीन मन रसमय विषय में।
बज रहा अज्ञात कोई सुर हृदय में।

फूल काशों के धवल खिलने लगे हैं,
शरत् के इंगित मधुर मिलने लगे हैं।
गन्ध भीनी आ रही शेफालिका की,
हो निगोपन प्रीति जैसे बालिका की!
हो गया मणि-सा खचित शशि दिग्वलय में।
बज रहा अज्ञात कोई सुर हृदय में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

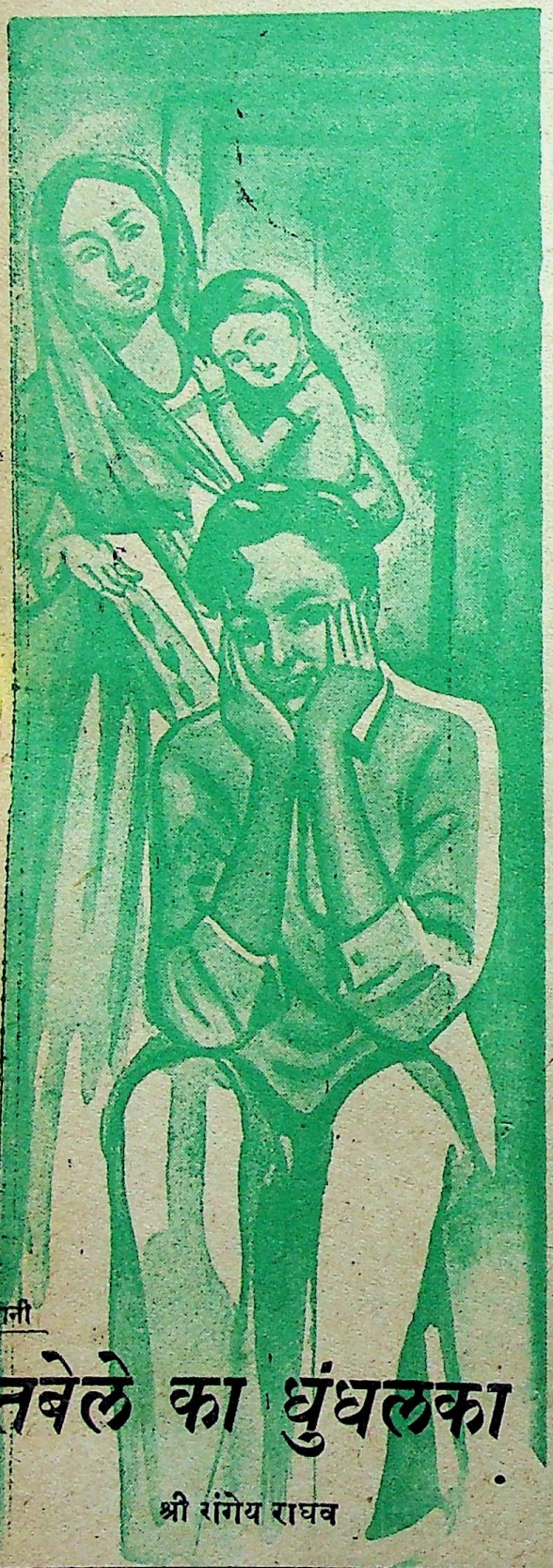

कहानी

तबेले का धुंधलका

श्री रांगेय राघव

जब हमको कहीं भी मकान नहीं मिला, तब सब लाचार हो कर एक दूसरे का मुंह देखने लगे।

"गये थे ?" मेरी स्त्री पूछती।

"गया था। सब तरह की कोशिश की; लेकिन कोई सुनता ही नहीं। यह लोग अपने को हिन्दू कहते हैं ?" मैंने गुस्से से अपने होंठ काट लिये।

"क्या किया जाये ?" बहिन पूछती।

"जहर खा लें," मैंने तड़प कर उत्तर दिया।

उसके बाद स्टेशन के बाहर जो पेड़ों के नीचे का साया था, हम उसी में अपने चिथड़ों में जा कर सो रहते। सोते तो क्या, हां, पड़े रहते।

कितने दिन हुए। मैं उस सब को भूल जाना चाहता हूँ। जिसके पास जाता हूँ, वही टाल बताता है। जिनके पास ताकत और पैसा है, उनके पास दिल नहीं है; जिनके पास दिल है, वे हमारी तरह शरणार्थी नहीं होते हुए भी कुछ ताकत नहीं रखते।

घर की परेशानी बढ़ती चली गई। आखिर कब तक इस तरह पेड़ों के नीचे काट सकते हैं ? हमसे तो ये कंजर अच्छे हैं, जिनके पास तंबू तो हैं। हमारे पास तो वे भी नहीं। बच्चा सूख कर कांटा हो गया है। उसकी शायद तिल्ली बढ़ गई है। मां देखती है तो रोती है। कुछ ईंटें बटोर कर एक चूल्हा बना लिया है। उसी पर बच्चे की मां खाना बना लेती है। मैं मेहनत-मजदूरी करता हूँ। जो मिलता है उसी से काम चल जाता है।

जहां मैं थक कर बैठता हूं, वहां बहुत से मुझ जैसे ही गंदे मजूर बैठते हैं। शहर में सनसनी है। हिन्दू-मुस्लिम दंगे का खतरा है। मुझसे रोज हमीद पूछता है—"कहां जायें ?"

"पाकिस्तान जाओ, पाकिस्तान !"

"वहीं क्या मिलेगा ?" उसकी आवाज कांपती है।

"जो हमें यहां मिल रहा है।"

हमीद चुप हो कर चला गया। मैं सोचता हूँ, क्या यह मैंने ठीक जवाब दिया है। पर मैं ज्यादा नहीं सोच पाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर.....।

सिर पर छत.....।

एक आसरा.....।

बच्चा रो रहा है। कम्बख्त को कुछ समझ नहीं। मां उसे चुपचुपाती है, चुमकारती है। आखिर वह सोने लगता है।

मैंने कहा, "पगड़ी मांगते हैं। जैसे सब के सिर नंगे हो गये हैं।"

"कितनी ?"

"पांच सौ, तीन सौ...।"

बहिन चुप। अब के स्त्री, "वैसे कोई ज्यादा किराये पर दे दे तो.....।"

"ऐसा रहमदिल कोई नहीं।"

"पेड़ के नीचे ही रहेंगे," बहिन कह उठी।

स्त्री ने विरोध किया, "जाड़ों में ?"

बच्चा फिर रो उठता है। मैं खीझ उठता हूं। क्यों ? यह मेरा मौत देख कर मानेगा।

बहिन उसे चुप करा लेती है। फिर बातें होती हैं।

"अगर मालूम होता तो क्यों आते ?"

"अब तो लौट नहीं सकते।" मेरे स्वर की ऊब से वे कांप उठती हैं।

बहिन कहती है "आदमी आदमी नहीं रहे। किसी शरणार्थी से ही क्यों नहीं कहते ?"

"वे अपने बोझ से मर रहे हैं।"

"नई इमारतें बन रही हैं।"

"हूँ।"

फिर रात की सनसनाहट। स्त्री फैल कर लेट कर बच्चे को दूध पिलाती है। सोचते-सोचते मेरा सिर अब दुखने लगा है।

स्त्री, बहिन, बच्चा सब सो गये हैं। आसमान में तारे बिखर गये हैं—असंख्य। शहर की बत्तियां बुझ गईं। केवल कहीं कहीं कुत्ते भोंक उठते हैं। मैं झपकने लगा हूँ।

*

जब मैं करवट बदल कर उठा, तब चूल्हे में से धुंआ उठ रहा था। मैंने देखा भोर हो गई। रेल की पटरियों के पास पड़ा पिसा-सा कोयला और उसमें

है तो यह केवल एक कहानी—एक गल्प, परन्तु हमारे सामने एक दर्पण की तरह रख दी गई है। इसमें यदि हमारा प्रतिबिम्ब अच्छा नहीं आया, तो दोष दर्पण का नहीं, हमारी शक्ल का है। आदमी-आदमी जो नहीं रहा!

खड़े काले-काले मजदूर दिखाई देने लगे। वे कुदालें लिये कुछ खोद रहे थे।

मैं उठ कर पुल के नीचे जा बैठा। यहां सदैव इक्के-तांगों का आना-जाना लगा रहता। पुल के ऊपर से भयानक चिंघाड़ करती हुई रेल गुजरती थी पुल पक्की ईंटों का बना था। दोनों दीवारों से सट कर बहुत से फल वाले, और छोटे-मोटे खोमचों वाले बैठते थे। उनकी 'हाय-हाय' से ऐसा लगता, जैसे वह कोई रेल का स्टेशन हो। उन्हीं दीवारों के पास बाहर जरा-सी जमीन खुली हुई थी। फकीरों से वह जगह घिरी रहती। फटे, गंदे भिखारियों की भीड़ को देख कर मेरा भी मन दहल जाता था। कितने गरीब, कितने नंगे और हारे हुए लोग थे! सच, इनके मुकाबिले में हम कितने अच्छे हैं! वे हाथ उठा कर पड़े रहते। या फिर इधर-उधर चलते राहगीरों के पीछे-पीछे भागा करते। उन्हीं में एक कंजरिया थी. जो रात को वहीं सो रहती एक बाबा उसे अपने पास से खिलाया करता था। सब उसे छेड़ते थे। पर कोई बात नहीं थी। मैं भी उस लड़की से नफरत करता था, क्योंकि इधर कुछ दिन से वह बाबा किसी भयानक बीमारी के कारण चिल्लाया करता था। पर उस पर अब सबने ध्यान देना छोड़ दिया था।

बातों ही बातों में जब मैं अपना दुखड़ा ले बैठा, तो एक मक्खन-टिकिया के पेड़े बेचने वाले ने कहा, "क्यों, तुम्हारे पास पैसा नहीं ? तुम कांग्रेस में भरती क्यों नहीं हो जाते ?"

'हो जाऊंगा। फिर मकान मिल जायेगा ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे उत्तर नहीं मिलता। और फिर मुझे याद आया। शरणार्थियों की कमेटी के मंत्री हैं। कौन हैं? खैर, मैं उन जूते की बड़ी दुकान वाले कांग्रेसी नेता से मिला था। उन्होंने कहा था, "तुम शरणार्थी नहीं हो, पुरुषार्थी हो।"

मैं पुरुषार्थी हूं! जिसके सिर पर छत नहीं, पेट में दाना नहीं!

"अमां, तुम!" एक आवाज सुनाई दी—"समझते हो यहां कुछ तसल्ली मिलेगी? नहीं भाई नहीं। काम करो, खाओ। मुसीबत किस पर नहीं पड़ी।"

"तुम्हारे भी बीस मकान थे?" किसी ने व्यंग किया, "सभी पंजाबी शरणार्थी वहां लखपती थे। गरीब तो मिलता ही नहीं।"

"ठीक कहा, पाई, ठीक कहा। हम तो वहां भी गरीब थे। यहां बैठे जो चाहे कह लो। क्या है! तुम पर भी जब मुसीबत आती न, तब मालूम पड़ती।" ठेले वाला पंजाबी हंसा। उसके स्वर में तिक्त क्रोध था।

"तो फिर भाई," नारंगी वाला बोला—"वहां जैसे थे, यहां भी रहो। हमें कौन आराम है? महंगाई ने पीस रखा है। हमारा ही दिल जानता है। बच्चे मांगते हैं, हम कुछ नहीं दे पाते।"

उसने निराशा से सिर हिलाया। फिर कहा, "गरीब तो भाई, गरीब ही रहेगा।"

पंजाबी ठेला एक ओर ठेल कर फिर हंसा। उसने साबुन एक हाथ से जमा करते हुए कहा, "तो फिर मरेंगे।"

मैं सुनता रहा।

"अब मेहनत-मजूरी के दिन नहीं रहे," किसी ने हंस कर कहा—"ब्लैक का जमाना है।"

"सेठों की चढ़ बनी है। आजाद हो गये हैं।"

मैं सुन रहा हूँ। स्वरों में आक्रोश है।

"सालों की चरबी कैसी बढ़ गई है। पुलिस भी उनके ही....."

"रिस्वत का जोर है भाई।"

"आजादी है, पाई आजादी!" पंजाबी ने अंतिम चोट की और अब ठेला आगे बढ़ गया था। पंजाबी का लंबा शरीर भीड़ में मिल गया। अब खोमचे वालों की आवाजें गूंज रही हैं सब तरफ। रोटी बन गई होगी, मुझे भूख लग रही है।

मैं चुपचाप लौट कर आ गया।

खाना खाने लगा। बहिन ने कहा, "भइया, अब यों कितने दिन चलेगा?"

"मैं ही तो मकान नहीं ढूंढता।"

"तुम तो बस चिढ़ जाते हो।"

"ढोल बजा कर मकान मिल जायेगा?"

मैंने निश्चय कर लिया, कल से मैं भी एक ठेला लगाऊंगा।

खाना खा कर मैं फिर चल पड़ा। स्त्री ने टोका, "अब तुम फिर जा रहे हो?"

"कुछ काम देखूंगा।"

"आज दिन ठीक नहीं है, दंगा हो सकता है।" उसने डरते हुए कहा।

मैं क्षण भर चुप रहा। फिर कहा, "अब और होना रह गया है?"

वह चुप हो गई। मैं चल दिया।

*

शहर तिरंगों से लद गया है। चारों ओर सुन्दर-सुन्दर झण्डे लटक रहे हैं। बिना भेदभाव के सब जगह छा गये हैं। पन्द्रह अगस्त का दिन आ गया है। सब लोग भाग रहे हैं। एक हिन्दुओं की भीड़ टूट कर मुसलमानों पर हमला कर रही है। पुलिस के सिपाही खड़े हैं। मैं चाहता हूँ कि इन लुटेरों में मैं भी मिल जाऊँ। पर अगर मारा गया तो? तो बीवी, बच्चा··· बहिन? ठीक है, पहले लड़ाई हो लेने दो। फिर लूट में जो मिलेगा, उसीको लेकर भाग जाऊंगा।

जुलूस निकल रहा है। कितने सफेद टोपी वाले जा रहे हैं। अधिकतर मोटे-मोटे लाला हैं, दूकानदार। इनकी गर्दनें गर्व से कैसी टेढ़ी हो गई हैं। मुझे देख कर घिन हो रही है। मुझे अपने गंदे कपड़ों पर शर्म आ रही है। शहर में लूट हो रही है। मैं भी भाग चला। लेकिन हठात् ठिठक गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोली चलने की आवाज आ रही थी। भयानक। ठांय। ठांय! फिर एक गूंज!

मैं डर कर लौट चला। कहीं मुझे भी गोली न मार दी जाये। गोली चल रही है। क्यों? आज आजादी का दिन है न?

मुसलमान परेशान हैं। कहां जायें? क्या करें?

मैं जब मुसलमानों के मुहल्ले के चौराहे पर पहुँचा, सारी सड़क सुनसान पड़ी थी। सड़क पर फौजी ही खड़े थे। उनके भारी बूटों की आवाज आ रही थी, और कुछ नहीं। बन्दूकों की नलियां चमक रही थीं।

किले के बाहर जो बहुत से तम्बू पड़े थे, उनमें एक सरकस था। उस सरकस की एक मुसलमान औरत को वह भीड़ पकड़ ले गई है क्योंकि, वह मुसलमान थी। वह गजब की औरत थी। शेर की पीठ पर पांव रख कर खड़ी हो जाती थी और हाथियों पर नाचती थी। लोग कहते हैं, उन्होंने उसे बेइज्जत करके मार-डाला। मुझे अच्छा लगता है, पर मैं इस खयाल से कांपता क्यों हूं? मुझे किस बात का डर लग रहा है?

जब मैं हांफता हुआ पेड़ के नीचे पहुँचा, पत्नी सन्नाटे में डरी हुई बैठी थी। बहिन बच्चे को लिये लेटी थी। दूर से देखा। सरकस को हिन्दू मैनेजर बड़ी कोशिश से भी नहीं बचा सका। वहां एक लुटी हुई दुनिया थी। चारों तरफ हवा सनसना रही थी।

बहिन कह उठी, "कहां गये थे?"

"लूट में गया था।"

"क्या लाये?"

"क्यों?"

"गोली चल रही थी।"

स्त्री के कान खड़े हो गये।

लेकिन मैं कांप रहा हूँ। वह तीखी आवाज में कह रही है, "तुम गुण्डे हो।"

"मैं?" मैंने अचकचा कर पूछा।

"हां। लूट कौन करता है?" वह मेरे निकट आ गई। उसने मेरे कंधे को पकड़ कर कहा, "जानते हो, तुम्हारी बहिन को आज हिन्दू उठा ले जाते।"

"क्यों?" मेरी आंखें फटी रह गईं

"वे इसे मुसलमान समझे। पाजामा पहने थी। फिर मैं चिल्लाने लगी। तब एक ने कहा, छोड़ो, यह तो सिंधी शरणार्थी हैं।"

तभी एक पुलिस का सिपाही आ खड़ा हुआ। वह बड़ा मजबूत था। मैं उसे देख कर छोटा हो गया। उसको देख कर एक और आदमी समीप आ गया। उसने कहा, "क्या बात है, जमादार?"

"देखो सालों को," सिपाही ने कहा, "सब जगह कर्फ्यू लगा है और जनाब को देखो, मजे से औरतें लिये बैठे हैं।" वह हंसा।

मैंने चिल्ला कर कहा, "घर नहीं मिलता।"

"बेचारे शरणार्थी!" दूसरे उस चर्बी बढ़े आदमी ने कहा, "गरीब मालूम देते हैं।"

"अजी, सो न कहो। सब के पास माल है। ले के आये हैं।"

"यों न कहो, जमादार। जो मिला सो ही ले भागे हैं।" फिर वह आदमी मेरे परिवार पर निगाह डाल कर कह उठा, "बस, ये ही लोग हैं तुम्हारे साथ, और कोई नहीं?"

"नहीं," मेरी स्त्री ने कहा—"बाबू और कोई नहीं। भगवान् तुम्हें सब कुछ देगा, हमारी नाव किनारे लगा दो।"

"अरे तो रोती क्यों हो। सब होगा, सब होगा। यहां तो अपना राज है, फिर डर किस का?"

उस आदमी की बात में हमदर्दी थी। वह कह रहा था, "अब इतने शरणार्थी आये हैं। उनका कुछ न कुछ इन्तजाम हो गया कि नहीं? कोई सदा आफत में थोड़े ही रहता है। सब का एक वखत होता है।" वह बहिन को घूरने लगा। वह सहम गई। वह घूरता रहा। उसकी आंख में जहर था। मुझे ताज्जुब हुआ। कैसा आदमी है जो जरा भी नहीं सकुचाता मैंने देखा, बहिन सहम गई थी। वह आदमी कहने लगा, "तो जमादार बात क्या है?"

'बात यही है कि यहां तो कर्फ्यू लग गया है। कोई रात को दो टुकड़े कर गया तो? फिर बेटा को सुपने दीखने लगेंगे। यहां जम गया है, जैसे यह

(शेष पृष्ठ ५३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह धूमकेतु क्या है?

कुमारी लाज वरमानी एम० ए०

धूमकेतु (पुच्छल तारे) का उदय प्रायः किसी अनिष्ट का सूचक समझा जाता है। हाल ही में जो धूमकेतु दिखाई दिया है, उसके सम्बन्ध में कई भारतीय ज्योतिषाचार्यों ने कई शुभाशुभ भविष्य-वाणियां की हैं। प्रस्तुत लेख की विदुषी लेखिका ने इस विषय पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रकाश डाला है।

भारत में हाल ही में श्रीनगर से ले कर कुमारी अन्तरीपतक कई स्थानों पर एक नया धूमकेतु (पुच्छल तारा) देखा गया। भारत के अतिरिक्त न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया आदि कई अन्य देशों में भी यह प्रकट हुआ। इसकी पूंछ ऊपर की ओर थी और यह बहुत ही चमकदार था। कोलाबा-वेधशाला बम्बई में और कई अन्य स्थानों पर इसका निरीक्षण किया जा रहा है। वेधशास्त्रियों के कथनानुसार यह धूमकेतु अभी कुछ और काल तक अन्तरिक्ष में रहेगा और थोड़े समय पश्चात् फिर दिखाई देगा। मद्रास में इसका कोण २२ डिग्री था और कलकत्ता में यह शुक्र के दाहिनी ओर नीचे को था। अभी तक यह निश्चय नहीं हो पाया है कि यह कोई नया धूमकेतु उदय हुआ है अथवा कोई पुराना है।

पिछले वर्ष दिसम्बर मास में एक अत्यंत प्रकाशमान धूमकेतु दिखाई दिया था। उसकी पूंछ कई करोड़ मील लम्बी थी और वह शुक्र से १४ डिग्री दक्षिण की ओर था। ज्योतिर्विदों ने उसे बहुत महत्व दिया, क्योंकि वह पहली बार उदित हुआ था। उसका नाम उन्होंने '१९४७ एन' रखा।

इससे पूर्व सन् १९१०-११ में एक धूमकेतु देखा गया। उस धूमकेतु को 'हैले का धूमकेतु' कहते हैं। हैले नामक एक ज्योतिर्विद ने उसे सन् १६८२ में देखा था और उसके बारे में गणितविधि से भविष्यवाणी की थी कि वह १७५९ में फिर दिखाई देगा। वह धूमकेतु १७५९ में प्रकट हुआ। इससे पहले वह १६०७, १५३१ और १४५६ में भी देखा गया था।

युरोप के लोग किसी जमाने में धूमकेतु को वायुमण्डल से उठा हुआ वाष्प समझते थे। इस कारण उन्होंने इसकी ओर विशेष ध्यान न दिया। युरोप के प्रसिद्ध दार्शनिक सेनेका (Seneca) ने पहली बार इस मान्यता का खण्डन किया। किन्तु सेनेका के पास अपने मत की पुष्टि के लिए कोई वैज्ञानिक युक्ति न थी। टाइकोब्रह (Tycho-brahe) ने पहली बार सिद्ध किया कि धूमकेतु अन्य नक्षत्रों की तरह अपना अस्तित्व रखते हैं और ये पृथ्वी से बहुत दूर हैं। इनमें कोई भी चन्द्रमा से इधर नहीं है।

१७ वीं शताब्दी में न्यूटन ने सिद्ध किया कि पृथ्वी में आकर्षण-शक्ति है। इस सिद्धान्त को १७०४ में हैले ने धूमकेतुओं पर लागू किया। उसने २४ धूमकेतुओं के विषय में आवश्यक जानकारी इकट्ठी की और उनके ग्रह-पथ मालूम किए। उनके अन्वेषण से ज्ञात हुआ कि धूमकेतु के ग्रहपथ प्रायः अनुवृत्त होते हैं या दीर्घ अंडवृत्त। कई धूमकेतु सहस्रों वर्ष पश्चात् प्रकट होते हैं, तो कई थोड़े २ वर्षों बाद दिखलाई देते हैं। श्री हैले का यह भी मत था कि इनके प्रकट होने का कम से कम काल ७५ वर्ष है। किन्तु जर्मनी के ज्योतिर्विद एनके (Encke) ने यह देखा कि कुछ धूमकेतु ३-३ साल बाद अन्तरिक्ष में उदित होते हैं।

आधुनिक वैज्ञानिकों ने धूमकेतुओं के विषय में बहुत जानकारी प्राप्त कर ली है। उन्होंने अनुमान लगाया है कि धूमकेतुओं की कुल संख्या १ लाख २० हजार के लगभग है। इनमें से साठ ऐसे हैं जिनके दिखलाई देने की अवधि सौ साल से कम है। शेष कोई भी १३० साल से पहले नहीं दिखलाई देते। ये ६० धूमकेतु चार बड़े ग्रहों—बृहस्पति, शनि,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

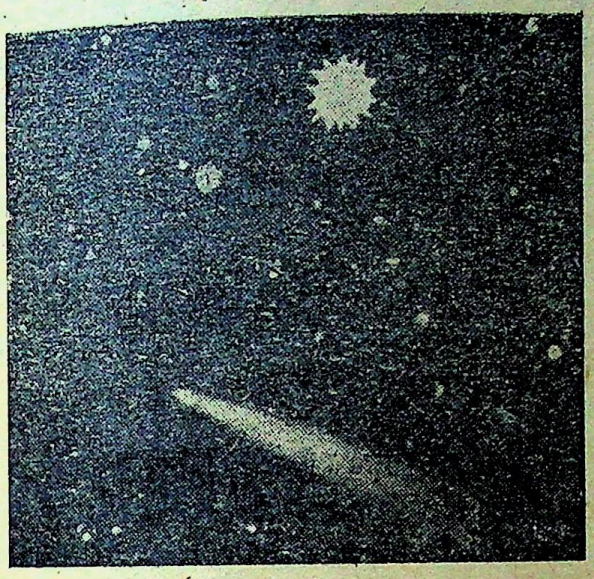

नेपच्यून और वरुण से सम्बन्धित हैं। इन ६० धूमकेतुओं का सम्बन्ध इन चार ग्रहों से इसलिए जोड़ा गया है कि ज्योतिर्विदों का यह विश्वास है कि ये धूमकेतु किसी समय में इन ग्रहों के भाग थे। जिस प्रकार पृथ्वी सूर्य का खण्ड है, उसी प्रकार ये धूमकेतु भी ग्रहों से टूट कर बने हैं। बाकी धूमकेतुओं का सम्बन्ध सूर्य से माना जाता है। किन्तु अभी निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

धूमकेतु के दो भाग होते हैं—एक सिर और एक पूंछ। इसके सिर में से कुछ विचित्र प्रकार के कण बड़े वेग से धुएं की भांति निकलते रहते हैं। सम्भवतः इसीलिए इसे संस्कृत में धूमकेतु कहते हैं। यूनानी भाषा में इस को कॉमट (Comet) कहा जाता है। कॉमट का अर्थ है लम्बे बाल वाला। चीनी और जापानी भाषा में इसके लिये जो शब्द प्रयुक्त होता है, उसका अर्थ झाड़ू है। वैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत का शब्द 'धूमकेतु' सब से अधिक ठीक जंचता है। कई धूमकेतुओं की एक पूंछ होती है और कइयों की बहुत सी। इन पूंछों के फोटो लिए गये हैं। उन से प्रतीत होता है कि ये पूंछें टूटती हैं और नई पूंछें निकलती रहती हैं। हैले के धूमकेतु की पूंछ १८३६ में गायब हो गई थी। यह पूंछ क्योंकि धूमकेतु के शरीर से निकलती है, इस लिए इसके गिरते रहने से धूमकेतु का शरीर घटता रहता है और बाद में इसका अस्तित्व ही मिट जाता है।

सब धूमकेतु प्रकाशमान नहीं होते और जो प्रकाशमान होता है उनका प्रकाश अपना नहीं होता। वे सूर्य से प्रकाश लेते हैं—जैसे चन्द्रमा। और यही कारण है कि कई बार अन्तरिक्ष में विद्यमान होने पर भी वे दिखाई नहीं देते। वर्णपट (Spectrum) द्वारा ज्ञात हुआ है कि धूमकेतुओं में कारबन मोनोआक्साइड गैस, साईनोजन गैस और कुछ अन्य कार्बन-समास होते हैं। कभी-कभी इनमें सोडियम धातु भी होती है।

हैले के धूमकेतु के अतिरिक्त निम्न लिखित धूमकेतुओं के बारे में हमें जानकारी मिलती है— लाहीर (Lahire) १६६८, ग्रीशा (Gricha) १७४३, मैसीयर (Messier) १७७०, मानटेन (Mantaign) १७७४, और पिगट (Pigott) १८०४।

धूमकेतुओं के बारे में लोगों ने अपने मन में कुछेक बहुत ही विचित्र धारणायें बना रखी हैं। धूमकेतु को देखते ही लोग भयभीत हो जाते हैं। वे समझते हैं, यह भूकम्प, प्लेग आदि रोग, बाढ़, अकाल, युद्ध और ऐसे अन्य उपद्रवों का द्योतक है। १९१४-१८ के महायुद्ध का उदाहरण इस अंधविश्वास को पुष्टि के लिए दिया जाता है। किन्तु वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि धूमकेतुओं का मानव-जीवन और सांसारिक घटनाओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। दूसरे महायुद्ध से पहले कोई धूमकेतु दिखाई नहीं दिया था और यह युद्ध पहले युद्ध से कहीं अधिक भयंकर था।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक शब्द चित्र

मेरे नापिताचार्य !

श्री गुलाबराय एम० ए०

★

मैं जन्म से वैष्णव हूँ। सभामध्ये ही नहीं, वरन् अन्तःकरण से भी वैष्णवता का पालन करता हूँ। जैनी मेरे पड़ोसी और मित्र हैं। खद्दर और चर्खा को छोड़ कर, जिनको मैं पहले भयवश और अब आलस्यवश नहीं अपना सका, महात्मा गांधी का अनन्य भक्त हूं। इस प्रकार मैं करेला और नीम चढ़ा ही नहीं, वरन् त्रिधापुष्ट 'अहिंसा परमोधर्मः' का अनुयायी हूँ। इस लिए रक्तपात से, चाहे अपना हो या पराया, मैं सदा बचता रहा हूं। मधुमेही होने के कारण अपने को रक्तपात से बचाये रखने की ओर मैंने विशेष ध्यान रक्खा है। इसी भय से साम्प्रदायिक झगड़ों के पास नहीं फटकता। फिर भी जब मैं आधुनिकतम सुशिक्षित लोगों के अनुकरण में स्वयंशेवक वृत्ति को धारण किए हुए था और 'स्वयं दासाःतपस्विनः' की श्रेणी में आने के लिए प्रयत्नशील रहता था, तब मैं अपने को स्व-रक्तपात से नहीं बचा सका। अभी तक अखबारी विज्ञापनों का नित्य स्वाध्याय और पारायण करने पर भी मेरी जानकारी में ऐसा कोई सुरक्षापूर्ण क्षौरयन्त्र नहीं आया है, जो मुझ जैसे मूर्ख और अकार्यकुशल व्यक्ति को चुनौती दे सके। रक्तपात के भय से ही वैदिक लोग मुण्डन संस्कार से पूर्व छुरे की प्रार्थना किया करते थे। जिलेट से लगा कर ढ़ाई आने तक के उस्तरों को मैंने आजमाया, किन्तु वे मुझे अपने रक्तपात से बचाने में उतने ही असमर्थ रहे, जितनी कि यू० एन० ओ० की सुरक्षा-परिषद् राष्ट्रों को रक्तपात से बचाने में। बाल वीरवधू-टी-सी एक आध रक्तबिन्दु मेरे मुख-मण्डल पर झलक ही आती थी और मेरे शरीर में रक्त-कोश मेरे बैंक के धनशेष से अधिक सम्पन्न नहीं है। इसी लिए अपने जीवन-काल में ही अपने सेफ्टीरेजर का उत्तराधिकार अपने द्वितीय पुत्र को, जो डाक्टर है, प्रसन्नतापूर्वक सौंप दिया है। 'अन्तहु तोहि तजैंगे पामर तू काहे न तज अब ही ते' के गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा प्रतिपादित वैराग्यपूर्ण उपदेश को मैंने कम से कम एक वस्तु के सम्बन्ध में सवा सोलह आने रूप से अपना लिया है।

मैं उन स्वच्छतावादियों में से नहीं हूँ, जो अपने मुख-मण्डल पर एक रात की उपज को सहन नहीं कर सकते और चाणक्य की तत्परता से नित्य-प्रति उसका मूलोच्छेदन करते हैं। मैं चेहरे की वास्तविक स्याही की अपेक्षा आलङ्कारिक स्याही से बचने की अधिक चेष्टा करता हूं। अब तो भगवान ने बालों की कालिमा को भी दूर कर दिया है। भगवान की बिना परिश्रम की देन को यदि मैं अपने खालसा भाइयों की भांति सर-माथे रख कर अपनाता नहीं हूँ, तो उसका अत्यन्त तिरस्कार भी नहीं करता। मौत की भांति मैं नाई की बला को टालता रहता हूँ और यदि स्वीकार भी करता हूं तो आपत्ति-धर्म के रूप में।

मेरे नापित महोदय श्री बेनीराम जी से मेरा बहुत पुराना परिचय है—कम से कम तब का जब कि मैं सेकण्ड ईयर में पढ़ता था। वे भी मेरी तरह से अर्द्ध-प्राचीनतावादी जिजमानी-वृत्ति करने वाले नाइयों मे से हैं। नाई शब्द अरबी में भी है। वहां वह मौत की खबर लाने वाले का बोधक है। शायद अरब के लोगों को यहां के लोगों की अपेक्षा क्षौरकार का कम काम पड़ता है, इसी लिए उसके नाम से ऐसे अशुभ संस्कार लगे हुए हैं। हमारे यहां तो वह जन्म की मङ्गल दूब भी लेकर जाता है। मालूम नहीं, हमारा नाई शब्द अरबी के नाई की सन्तान है अथवा उसका संस्कृत 'नापित' से 'प' और 'त' के लोप से हुआ है। हमारे बेनीराम जी जब दूसरे, चौथे, आठवें दिन अतिथि की भांति दर्शन देते हैं, तब मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातःकाल ही अपने मस्तक पर स्नानोपरान्त कर लेने का चन्दन-कुंकुम का मङ्गलमय प्रमाण-पत्र लेकर आते हैं और अपने शुद्ध संस्कृत 'नापित' नाम के व्युत्पत्त्यर्थ को (स्नापितः अर्थात् स्नान कराया हुआ, क्योंकि पूर्वकाल में क्षौरकर्म कराने से पूर्व नाई को नहला लिया जाता था।) शब्दशः सार्थक करते हैं। मालूम नहीं पुराने जमाने के लोगों को नाइयों से क्या वैर था, जो यह लोकोक्ति प्रसिद्ध हो गई—'नराणां नापितो धूर्तः पक्षिणां च वायसः।' हमारे नापित देव तो अपनी सज्जनता में इस कथन को शशशृङ्गवत् मिथ्या और अप्रामाणिक साबित कर देते हैं।

भूतभावन भगवान शङ्कर जिस प्रकार स्वयं दिगम्बर, विरूप और कपाली रह कर भी दूसरों को श्री और सम्पदा प्रदान करते हैं, ठीक उसी प्रकार बेनीराम जी अपने बाल बढ़ाये रख कर भी दूसरों के मुख-मण्डलों पर पालिश द्वारा उन की श्रीवृद्धि किया करते हैं। कभी-कभी जब किसी पार्टी आदि में जाना होता है, तो वे भगवान के वरदान स्वरूप करुणा में 'वीर रस' की भांति उपस्थित हो जाते हैं और कभी वे मास-पखवारे की गणना को अपने मन से बिलकुल भुला देते हैं।

मेरे नापितदेव न तो वामन ही हैं और न विशालकार्य। मेरी बुद्धि की भांति वे भी मध्य श्रेणी के हैं और कुछ लघुता की ओर झुके हुए हैं। जैसा उनका मुख, वैसी उनकी छोटी मूंछें और आंखें हैं। उनका छोटे अण्डाकार शीशों वाला, डेढ़ कमानी का चश्मा उनके गाम्भीर्य और वार्द्धक्य को बढ़ाता रहता है। जैसे मैं अपनी पोशाक की व्यवस्था सम्हालने में असफल रहता हूँ, वैसे ही वे अपनी पेटी की व्यवस्था सुधारने में असमर्थ रहते हैं, क्योंकि वह पेटी उनके स्वरूपानुरूप है। पेटी का आवरण-पट, जो बाल कटाने वाले यजमानों का भी बालवर्षा से सुरक्षित रखने में रक्षा-कवच बनता है, साबुन के प्रयोग से उतना ही अछूता रहता है, जितना कि आजकल का विद्यार्थी भगवन्नाम से। उसको स्वच्छ रखने के उपदेश उनके ऊपर उतना ही प्रभाव रखते हैं जितना कि

एक साहित्याचार्य ने एक नापिताचार्य का परिचय दिया है, ईश्वर भली करे! एक कलम का धनी और दूसरा उस्तरे (तलवार) का धनी!

★

कामी वचन सती मन जैसे; फिर भी मैं उनका स्वागत करता हूं, क्योंकि वे मुझे स्व-रक्तपात से बचाये रखते हैं। बाल तो (कान नहीं) वे बड़े-बड़े आदमियों के भी काटने का गौरव रखते हैं। बड़े-बड़े आदमी भी रुपया बचाना चाहते हैं। नाई की दुकान पर जाने में उनकी शान घटती है और अच्छे नाई को घर पर बुलाने में जेब कटती है। हां, तो बेनी राम जी बाल काटने में अपने को किसी से कम नहीं समझते। किन्तु उस कला में उनकी गति उतनी ही है जितनी कि मेरी बङ्गला बोलने में (बङ्गाल में पहुँच जाऊँ तो भूखा-प्यासा नहीं मरूंगा)। उनकी बाल काटने की कला में मुझे इस से अधिक योग्यता की आवश्यकता भी नहीं, क्योंकि भगवान ने मुझे निर्धनी रख कर भी खल्वाट बना रक्खा है। किन्तु जब कभी किसी प्रकार वे मुझको बाल कटाने को राजी कर लेते हैं, तो आध घंटे तक पीछा नहीं छोड़ते। मेरे अवकाशाभाव की बात को इतना ही सत्य समझते हैं जितना कि लेखक लोग लौटाये हुए लेख पर 'स्थानाभाव के कारण सधन्यवाद वापिसी' के हृदयद्रावक सम्पादकीय नोट को।

साधारण शेव में भी बेनीराम जी कलाकार का कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व निभाना चाहते हैं। एक बार के शेव में उनका सन्तोष नहीं होता है। वे सच्चे कर्मयोगी हैं, जब तक मन भर कर अपनी कला का प्रदर्शन न कर लें, तब तक वे अपने को कृत्कार्य नहीं समझते। पैसे से उनको मतलब अवश्य रहता है, किन्तु यजमान की इच्छा के विरुद्ध भी जब तक काम पूरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न कर लें, तब तक वे अपने को कर्त्तव्यच्युत समझते हैं। भले आदमी की जबान की भांति मैं शेव भी दो बार नहीं चाहता, किन्तु मेरे नापित-महोदय इसको मेरी सबसे बुरी आदत समझते हैं। कभी-कभी मुझे उनकी इस बात से सन्तोष होने लगता है कि यदि मुझ में सबसे बुरी आदत यही है, तो वास्तव में मैं भला आदमी हूँ। जब कभी उनका उस्तरा भौंहों की साज-सम्हाल की ओर अपने आक्रमणकारी पग बढ़ाता है, तब समय के उस दुरुपयोग पर मुझे सात्विक क्रोध आ जाता है और भगवान से 'त्राहिमाम्! त्राहिमाम्!' की पुकार कर मैं प्रार्थना करने लगता हूँ कि 'हे ईश्वर, मुझे ऐसे कर्त्तव्यपरायण कलाकारों से परित्राण दे!' वे इस क्रोध को सच्चे तपस्वी की भांति क्षमा कर देते हैं। 'क्षमारूपं तपस्विनाम्!'

अपनी जाति के अन्य व्यक्तियों की भांति वे भी चलते-फिरते समाचार-पत्र हैं और चूंकि मैं [illegible] स्थानीय पत्र नहीं खरीदता, मैं उनकी इस वृत्ति [illegible] स्वागत करता हूँ। विशेषकर साम्प्रदायिक झगड़ों [illegible] दिनों में उनकी यह सेवाएँ बहुमूल्य थीं।

मैं चाहता हूँ कि उन में कुछ सुधार हो, किन्तु [illegible] चर्चिल की भांति अपरिवर्तनवादी हैं। 'क[illegible] कामर चढ़े न दूजो रंग'। मैं भी उनको अप[illegible] दोषों की भांति 'अंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति' [illegible] न्याय से अपनाये हुए हूँ। मुझ से जिजमान [illegible] उनके लिए बहुत से हैं, किन्तु मुझे इतना सुलभ नहीं [illegible] कठिनता से मिलेगा। मुझे राजामंडी तक के यात्[illegible] यात के कष्ट और नाई के सेलून की प्रतीक्षा की झंझट [illegible] से बचाये रखते हैं। इसी लिए उन में सफाई [illegible] अव्यवस्था होते हुए भी मैं उनसे कह देता हूँ कि 'हम [illegible] तुम को बहुत हैं, तुम से हम को नाह!'

★

शुद्ध, खुशबूदार और
विशेषता यह कि—
भारतीय
इंडियन टी कंपनी
की शुद्ध इण्डियन टी

यू० पी० व सी० पी० में स्टोकिस्ट एजेन्टों की जरूरत है।

मैनेजर इण्डियन टी कं० कूचा पंडित, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीनी काव्य का सौन्दर्य

ब्रह्मचारी नारायणदत्त

यद्यपि चीन और भारत सृष्टि के प्रारम्भ से ही पड़ौसी हैं, तथापि चीन के सम्बन्ध में अधिकतर भारतीयों को बस इतना ही ज्ञात है कि वह पहले जापान द्वारा आक्रान्त था और आज गृह-युद्ध की ज्वाला में झुलस रहा है। चीन की युगयुगान्तरों से पनपती और फूलती हुई समृद्ध संस्कृति के बारे में हम भारतीयों की जानकारी नहीं के बराबर है।

भावी वर्षों में चीन और भारत को मिल कर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक और सांस्कृतिक मंच पर महत्वपूर्ण भूमिका में आना है। इसके लिए आवश्यक है कि एक दूसरे के बारे में हमारी जानकारी बढ़े। राजनीतिक गठबन्धन की अपेक्षा सांस्कृतिक सम्बन्ध अधिक दृढ़ होते हैं साथी बनने के लिये दोनों राष्ट्रों को एक दूसरे के सम्बन्ध में सांस्कृतिक जानकारी बढ़ानी होगी, एक दूसरे के सांस्कृतिक और सामाजिक मामलों में दिलचस्पी लेनी होगी। इस दृष्टि से चीन की प्राचीन काव्य-कला की एक झलक पाना उपादेय होगा।

प्रत्येक देश के साहित्य की अपनी कुछ मौलिक विशेषतायें होती हैं। चीनी साहित्य की भी अपनी कुछ विशेषतायें हैं, जो चीनियों के कतिपय जातीय गुणों को प्रतिबिंबित करती हैं। चीनी साहित्य में रामायण, रघुवंश और रासो जैसे महाकाव्य नहीं मिलते। कवियों की कविताओं के छोटे-बड़े संग्रह मिलते हैं। इस प्रकार का सबसे बड़ा ग्रन्थ मंजू राजवंश के शासन-काल में संकलित किया गया था। इसमें टाङ्-राजवंश के शासन-काल के २३०० कवियों की ४३,८०० छोटी-बड़ी कवितायें और गीतिकायें संगृहीत हैं। महाकाव्यों के इस एकान्त अभाव का कारण है महाकाव्यों के प्रति चीनी कवियों की अनास्था। चीन का कवि छोटी मुक्तक कवितायें और गीतिकायें रचना अधिक पसन्द करता है।

चीनी समालोचना-शास्त्र की कविता के सम्बन्ध में यह मान्यता है कि वह कवि द्वारा भावोद्रेक की अवस्था में अंकित चित्र है। भावोद्रेक चिरस्थायी नहीं होता। भावोद्रेक के चन्द क्षणों में कवितायें और गीतिकायें ही आबद्ध की जा सकती हैं। इसके विपरीत महाकाव्यों के लिये दीर्घ अवकाश की अपेक्षा रहती है। अतः महाकाव्यों के कई भाग भावोद्रेक की अवस्था के बाहर भी लिखे जाते हैं। इस प्रकार उनमें कहीं कहीं कला का अभाव और नीरसता उत्पन्न हो जाती है।

यथासम्भव संक्षेप से चार पदों में उदात्त भावों का महाचित्र अंकित करना चीनी कवि की प्रथम विशेषता है। चीनी कविता का यह गुण महाकवि ली-पो की 'चू-आङ्-त्सी का सपना' नाम की इस कविता में स्पष्ट झलकता है—

"जो तोड़ श्रम के बाद चूआङ्त्सी ने गहरी नींद ली। नींद में उसे ज्ञान हुआ कि वह रंगीन तितली बन कर नाच रहा है। चूआङ्त्सी के सपने में रंगीन तितली जाग उठी। इन दोनों में कौन सत्य है, चूआङ्त्सी कि रंगीन तितली?

"आदि और अन्त से विहीन इस परिवर्त्तन का परिणाम क्या है, कौन कह सकता है!

"सागर के अन्तःगर्भ में प्रसुप्त सलिल-सुन्दरियां मञ्जुल और चञ्चल निर्झर-बालाओं के रूप में जाग उठेंगी।

"मेजबान ने आगन्तुक से कहा—'देखो, नगर के प्राचीर के उस प्रांगण में माली ने खरबूजे की यह सुन्दर बगिया किस जतन से लगाई है। क्या तुम जानते हो किसी अज्ञात जन्म में इस बगिया का माली सुदूर पर्वत-देश का राजकुमार रहा था!'

"अधिकार शिथिल हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुन्ने के मुखड़े की अनिन्द्य स्मित-रेखा शरत् कालीन सरिता की तरह क्षीण हो जाती है। श्री म्लान हो जाती है। निशीथ के उत्संग में स्मित और आमोद से उल्लसित होता हुआ पारिजात-प्रसून उषा की ऊष्मा पा कर वृन्त से निशीर्ण हो जाता है!

"यह सब तुम भी जानते हो,
फिर भी दिनरात जी तोड़ श्रम।
यह सब किस लिए?"

चीनी काव्य-कला की दूसरी विशेषता है कविता में चित्र-कला का अवतरण—जिन भावों को अभिव्यक्त करना हो, उन्हें चित्र की तरह पाठक के अन्तःचक्षुओं के सम्मुख उपस्थित कर देना। उस चित्र में निहित भावों को खोज लेना पाठक का काम है। चीनी कवि को शब्दाडम्बर का मोह नहीं है। कवि अपनी कविता को यथासम्भव सरल और सारगर्भित शब्दावलि में ग्रथित करने का प्रयास करता है। महाकवि वाङ-चू की चीन की प्राचीन राजधानी नानकिंग के अतीत वैभव को चित्रित करने वाली इस कविता में यह गुण स्पष्ट लक्षित होता है—

"सरिता के सलिल-पट पर पड़ती
बारिश की बुंदियां रुपहले हिम—
पटल-सी भासित हो रही हैं।
नदी के कगार पर घास खूब ऊंची उगी है।
पंछी का गीत अति दीन है।
सब से बढ़ कर राज-प्रसाद के प्राचीर
पर फैला यह लता-प्रतान बड़ा निर्मम है।
लताओं के इस तीन मील लम्बे फैलाव में से
नानकिंग का अतीत वैभव झांक रहा है!"

लम्बे और उलझन भरे शब्द-जाल की आवश्यकता नहीं है। नानकिंग के अतीत वैभव को चित्रित करने के लिए प्राचीन राजमहल के लताओं से आवृत तीन मील लम्बे प्राचीर का उल्लेख ही पर्याप्त है।

यूनानी कलाकार शरीर-सौंदर्य के उपासक थे। भारतीय कलाकार पत्ते-पत्ते में परमतत्व की झलक पाता है। चीनी कलाकार प्रकृति की आराधना करते कभी नहीं थकता। उसे प्रकृति से मोह है और स्वयं प्रकृति भी अपने इस अनन्य आराधक पर मुग्ध है—

"पंछी-वृन्द अज्ञात दिशा में उड़ गया।
वह एकाकी मेघ, जो धीरे धीरे तैरता
आया था, सैर करता हुआ नभ के दूसरे छोर पर
निकल गया है।
चिङ्-टिङ् के अभ्रंकष शिखर के साथ मैं एकाकी
की बैठा हूं।
न पर्वत और न ही मैं परस्पर के इस चिरन्तन
सहवास से कभी ऊबते हैं।"

चीनी कवि का हृदय प्रकृति और मानव के द्वैत को स्वीकार नहीं करता। दोनों—प्रकृति और मानव—आपसी सुख-दुःख के समभागी हैं। मनुष्यों में आपस के सम्बन्धों की अपेक्षा प्रकृति और मानव का यह स्नेह-बन्धन अधिक दृढ़ है। एक कविता लीजिए—

"कहो, तुम हमारे गांव से आते हो न!
मेरे चले आने के पीछे वहां क्या क्या हुआ!
कहो, शीघ्र कहो!
"तुम्हारा आम्रकुंज मञ्जरियों से लद गया है।
गांव की तलैया के तट पर तुम जो नन्हा-सा
बांस का पौधा रोप आए थे, उसे बकरी
चर गई।"

कण्वमुनि के आश्रम से शकुंतला की बिदाई के अवसर पर प्रकृति और मानव के जिस स्पृहणीय स्नेह को महाकवि कालिदास ने चित्रित किया है, वही स्नेह यहां भी अपना आलोक बिखेर रहा है। चीनी कवि का हृदय पत्नी-पुत्रों और इष्टमित्रों के योग-क्षेम के समाचार के लिए उत्कण्ठित नहीं है। वह अपने आम्रकुञ्ज और बांस के नन्हें अंकुर के लिए उतावला है।

चीनी कवि जनसाधारण का सुख-दुःख का साथी है। जनसाधारण के सुख-सपनों और दुख दारिद्र का चित्रण करने में वह गौरव अनुभव करता है। वह अमीर-उमरा लोगों (Aristocracy) के वैभव की चकाचौंध से चकित नहीं है। वह जानता है कि मुट्ठीभर

(शेष पृष्ठ ६३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चांदनी

श्री जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'

अमित विप्लव विश्व में अब तक हुए उद्भ्रान्त,
चांदनी, तू आज भी है शुभ्र, शीतल, शान्त!
जब धरा को अग्नि-गिरि करता अचानक ध्वस्त,
फेरती तू अमृत-सा उस पर वरद निज हस्त!
युद्ध-शर का मनुजता के वक्ष में व्रण देख,
बरसती तेरे दृगों की विमल करुणा-रेख!
ताजमहलों से कुटीरों तक समस्त समान
पा रहे कण-कण सुशीतल-शुभ्र तेरा दान!
स्नेह की प्रतिमा, अनिन्दित रूप की तू खान,
ज्ञात तुझको दान है, अज्ञात तुझको मान!
स्वेद के कण पोंछ कर जब कृषक गाते गान,
श्रमिक जब निश्चिन्त निशि में छेड़ते मधु तान,
उन स्वरों की माधुरी से स्नात तेरे प्राण,
फैल जाते विश्व पर बन प्रकृति की मुसकान!
सरलता मानव-हृदय की ग्रहण कर निष्पाप
छोड़ती है तू जगत् पर शुभ्र अपनी छाप!
सुमन, शव, मरु, सुन्दरी सब पर बिना सन्देह
बरसता है विमल तेरा एक ही सा स्नेह!
मर्त्य-जग की शुभ्रवसना अप्सरा अनुरक्त,
विश्व पर तू मुग्ध है, यह विश्व तेरा भक्त!
श्रान्त होता जब परिश्रम कर मनुज अविराम,
प्राण तुझ में डूब पाते निष्कपट विश्राम!
तिमिर में भी दीखता भावी प्रभामय वेश,
अमिट आशावाद तू उत्साह का सन्देश!
नाव-नद के वक्ष पर तेरी विभा में शान्त
बह चले, देकर चुनौती स्वर्ग को, एकान्त!
विश्व-चिन्तन मुड़ चले उस शुभ्र छवि की ओर,
प्राण उस आनन्द से हो जायं मुक्ति-विभोर!
मानवों में छिड़ रहे हैं आपसी संघर्ष,
उठ गए जग से मधुरता, स्नेह, ममता, हर्ष!
जब इससे चाहते हैं जो मनुष्य विराम,
अंक में भर तू उन्हें देती, शुभे, विश्राम!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् 'तिकड़म' देव

श्री हरिशंकर शर्मा

तिकड़मदेव को लोग पहले बहुत कम जानते थे, परन्तु अब आप विश्वविख्यात या 'शोहर-ए आफ़ाक' हो गये हैं। आप बड़े परोपकारी और सार्वजनिक जीव हैं, दूसरों की सेवा-सहायता करने में आप अपार आनन्द अनुभव करते हैं। जब भक्तों के हाथ-पांव हथकड़ियों और बेड़ियों में बंध जाते हैं, जब उनका भौतिक शरीर जेल के दरो-दीवारों में बन्द हो कर परवशता-पाश में पड़ा-पड़ा जलहीन मीन की तरह तड़पड़ाया करता है, जब कायदे-कानूनों के जकड़बन्दों का जोर-जबर बेकसी और बेबसी का आलम बरपा कर देता है, तब भगवान् तिकड़मदेव अपने अपार अनुग्रह द्वारा उनका उद्धार करने को अग्रसर होते हैं। आप विश्व के समस्त बन्धनों से दूर और पक्ष-पात-न्दियों से परे हैं। आप त्रैकालाबाध्य, अशरण-शरण, भक्त-वत्सल, दीनबन्धु और दयानिधान हैं। आप 'सच्चिदानन्द'-स्वरूप हैं—यानी सब दिशाओं में समान रूप से सतर्क या सचेत रहने के कारण 'सत्-चित्' और परिणाम में सुखदायक होने से 'आनन्द'-स्वरूप हैं।

कहते हैं, तिकड़मदेव का अवतार इस युग के अन्तिम चरण में कारागार की कठोर दीवारों से घिरी काली कोठरियों में हुआ है। इसीलिये प्राचीन वेद-शास्त्र, पुराण-इतिहास, कोष, व्याकरण आदि किसी में भी आपका उल्लेख नहीं मिलता। तिकड़मदेव की उत्पत्ति जेल-जीवन की ज्वाला में जलने वाले भीरु भक्तों के उद्धार-हेतु हुई बताई जाती है। जो वीर बन्दी हृदय से आपकी पूजा-अर्चना करता है, वही मनोवांच्छित फल प्राप्त करने में सफल होता है। आप की मनो-मोहक मूर्ति के आगे विकराल वार्डरों के डण्डे, सावधान सन्तरियों की संगीनें, प्रवीण पहरेदारों की तुपकें और अक्खड़ अफसरों के शासन-अनुशासन सब निष्प्रभ एवम् निस्तेज होकर निकम्मे और निरर्थक-से बन जाते हैं।

"एक, दो, दस, बीस, तीस" की पुकार और "ताला-कुञ्जी ठीके है—साहेब!" की चीत्कार 'तिक-ड़मदेव' की परोपकार-वृत्ति में कुछ भी बाधा नहीं डाल सकती। इच्छानुसार वे बड़ी बेतकल्लुफी से 'कृष्ण-मन्दिर' में घुसते और बड़ी बेखौफी के साथ बाहर आते हैं। न जेलर की दृष्टि उनका कुछ बिगाड़ सकती है और न सुपरिंडेण्ट की 'वक्र बुद्धि' उनका बाल बांका कर सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी तिकड़मदेव को चिट्ठियों की गड्डियां पाकेट-प्रदेश में प्रवेश करनी पड़ती हैं और कभी पुस्तकों के पुलन्दे लुक-छिप कर ले जाने होते हैं। कभी समाचारों के पैकट पहुँचाने पड़ते हैं और कभी आपकी अलबेली अंटी में रजत-रूपधारी नकद-नारायण अस्थिर आसन लगाते दिखाई देते हैं। यही क्यों? कभी-कभी तो अफीम, चरस, भंग, पान, तमाखू आदि भी आपकी कोख-कुंज में क्रीड़ा करते हुए, भावुक भक्तों के पास आ धमकते हैं। फल-फलारी, मीठा-मिठाई, चना-चबैना आदि तो आपके अनुग्रह-अश्व पर सवार होकर नित्य-प्रति ही प्रेमियों के कर-कमलों में भ्रमरायमान होते रहते हैं।

आवश्यकता होने पर कभी तिकड़मदेव को धागे की धज धारण करनी पड़ती है, और कभी सुई के नकुए में होकर निकलना पड़ता है। कभी आप 'वन्दी' बन्दों के किलकारी भरते हुए बाल-गोपालों की मधुर हंसी और प्रेम-स्मृति के सन्देश-वाहक बनते हैं, और कभी प्रेयसी-प्रेमिकाओं की मधुर मुस-कान या विरह-वेदनाएं उन तक ले जाते हैं। कभी गुरुजनों के वात्सल्य को ढोते हैं और कभी वयो-वृद्धों के आशीर्वाद का बोझा उठाते हैं। अभिप्राय यह कि जेल-जीवन के आधार, आश्वासन, सन्तोष, धैर्य, प्रेम, बल, भक्ति, सरसता, सान्त्वना सब कुछ आपकी मंजु मूर्ति में ही समाविष्ट हैं।

तिकड़मदेव की तपश्चर्या कारागार की चहार-दीवारी में ही दिखाई देती हो, सो बात नहीं है। अब तो आपकी लोकप्रियता बढ़ती ही चली जा रही है। यहां तक कि घर-गृहस्थ, स्कूल-कालिज, सभा-सोसाइटी, बीमा-वाणिज्य, कार-व्यवहार, पूजा-पाठ, धर्म राज-नीति, समाज-साहित्य, मजदूर-मालिक, कल-कार-खाने इत्यादि सब ही क्षेत्रों में आपके निराकार आकार की मोहिनी माया नयनाभिराम नृत्य करती दृष्टिगत होती है।

हे तिकड़मदेव! कुछ भूले भाई अपने अज्ञान-वश आपको पौलिसी का पोता, चतुराई का चाचा, छल-छद्म का छोटा भाई मक्कारी का मामा और धूर्त्तता का धेवता बताते हैं। परन्तु आपके सम्बन्ध में ऐसी कपोल-कल्पना या निराधार-धारणा कुछ भी महत्व नहीं रखती। कुछ विज्ञान-वेत्ताओं का कहना है कि आप 'वोट-वेजीटेबिल' के 'विटेमन' या राय-रमणी के रूप-लावण्य हैं। किसी-किसी ने आप को मत-मदिरा की मादकता अथवा पक्ष-पादप का बीज भी बताया है।

वर्त्तमान युग में जो भोंदू भाई तिकड़मदेव की त्रिविधि भक्ति नहीं करता, उसका जीवन-जहाज असफलताओं की सुदृढ़ चट्टानों से टकरा कर, भ्रम-भंवरों में भग्न होता हुआ, भव-सागर में जल-मग्न हो जाता है। फिर उसका न सुख-सखा से साक्षात्कार होता है और न सुविधा सुन्दरी के साथ प्रेमाभिसार। न चैन की वंशी बजती है और न आनन्द का अल-गोजा सुनाई देता है। सर्वत्र दुःख और निराशा; संकट और संताप!

हे देव! आप पशुओं में नाहर, पक्षियों में गरुड़ और मछलियों में मगर हैं; कपड़ों में कमख्वाब, सवारियों में मोटर, तरकारियों में आलू, वृक्षों में बरगद और बाजों में रेडियो हैं; लोगों में लीडर, रोगों में हैजा और मिठाइयों में रस-गुल्ला हैं। आप की माया अपरम्पार है। आपके असीम उपकार-भार से सारा संसार दबा पड़ा है। आप महामहिम हैं। अर्थात् आपकी महिमा महान् है। अतएव हे देव, आप धन्य हैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभ्रवसना

श्रीमती पुष्पा विद्यालंकृता

कई दिन बाद योगेन्द्र जब दयाल बाबू के घर पहुँचा, तो वहां की बदली हुई अवस्था देख कर पहिले तो वह स्तब्ध ही रह गया कुछ देर बाद वह सम्भला और चारों ओर किसी विशेष प्रयोजन से जो धूमधाम हो रही थी, उसे देखता हुआ बीच आंगन में आ खड़ा हुआ। आंगन में भट्टी जमा कर हलवाई पकवान उतारने में व्यस्त था; चारों ओर कोरे सकोरों, पत्तलों व अन्य चीजों के ढेर लगे थे। योगेन्द्र ने देखा, घर के सब लोग कार्य व्यस्त हुए इधर-उधर आ जा रहे हैं। किसी का ध्यान योगेन्द्र की ओर नहीं गया। पर उसे अधिक समय तक यों न ठहरना पड़ा। सामने से गुजरती हुई श्वेतवसना माधुरी योगेन्द्र को असमञ्जस में पड़ा हुआ देख कर रुकी और अभिवादन करके बोली—"आहो, आप आगए! मां आपकी ही प्रतीक्षा कर रही थी।"

योगेन्द्र के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। ऐसी कौन-सी बात है, जिसके कारण गृहस्वामिनी उसकी उत्कण्ठा से प्रतीक्षा कर रही है? योगेन्द्र की आश्चर्य-चकित मुद्रा को देख कर माधुरी के सुन्दर और गंभीर मुख पर मन्द मुस्कान फैल गयी, बोली, "आप इतने आश्चर्यित क्यों हो रहे हैं, योगेन्द्र बाबू! मां सच-मुच ही बड़ी उत्सुकता से आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं। बात क्या है, यह वह स्वयं आपको अच्छी तरह समझा देंगी। चलिए, उन्हें ढूंढने में आपकी सहायता कर दूं।"

माधुरी एक मन्द हास्य बिखेर कर आगे बढ़ गई, तो योगेन्द्र को उसके पीछे चलना ही पड़ा पर दूर नहीं जाना पड़ा। पास के ही कमरे में गृहस्वामिनी छोटे लड़के मुनि को वस्त्रादि से सुसज्जित करती हुई मिल गई। योगेन्द्र को देखते ही वह आनन्दित हो कर बोली—"आ गए बेटा! बहुत देर से राह देख रही थी। तुम्हारे निवास का ठीक पता न होने से खबर भी न भिजवाई जा सकी। मुनि के चाचा परसों ही अकस्मात् आ गए। उनके सामने ही मुनि का मुण्डन कर डालें, यही विचार कर इतनी जल्दी मचानी पड़ी। उनका तो, तुम जानते ही हो बेटा, रोगी शरीर ठहरा। तुम्हारे ऊपर ही संस्कार व भोज का सारा प्रबन्ध डाल कर निश्चिन्त हो जायंगे। जाओ तो बेटा, जरा उनसे भी मिल लो!"

इस प्रकार मुनि के मुण्डन के सारे प्रबन्ध का भार योगेन्द्र पर अनायास ही डाल दिया गया। यों तो वह न कोई नजदीकी रिश्तेदार था, न बहुत पुराना परिचित। पांच छः मास हुए, गंगा में डूबती हुई माधुरी को बचाने के बाद से ही वह इस घर में अत्यन्त प्रिय हो गया। उसके नम्र और गम्भीर स्वभाव के कारण माधुरी के पिता दयालबाबू और मां दोनों ही उसे पुत्रवत् स्नेह करने लगे। और कुछ दिनों बाद परिजन व पास-पड़ौस के लोग अज्ञात-रूप से ही यह निश्चित-सा मानने लगे कि दयाल बाबू माधुरी की कनिष्ठा बहिन मंगला का हाथ योगेन्द्र के हाथ में देने में अब अधिक विलम्ब नहीं करेंगे। माधुरी के माता-पिता की भी कभी-कभी इस विषय में चर्चा हो जाती, पर योगेन्द्र इससे बिल्कुल अनभिज्ञ था।

* * *

आगत-जनों को भोजनादि करा के योगेन्द्र निश्चिन्त होकर थकावट मिटाने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यागतों के लिए तैयार किए गए कमरे में चांदनी पर जा लेटा। कमरे में इस समय और कोई नहीं था। बाहर की बैठक में विशेष रूप से आमन्त्रित सज्जन दयाल बाबू से गप-शप लड़ा रहे थे।

आंखें बन्द किए किए ही योगेन्द्र ने जाना कि कोई कमरे में आया है और अब लौटा जा रहा है। उसका हृदय धक-धक करने लगा, परन्तु साहस बटोर कर उसने पुकारा, "माधुरी!"

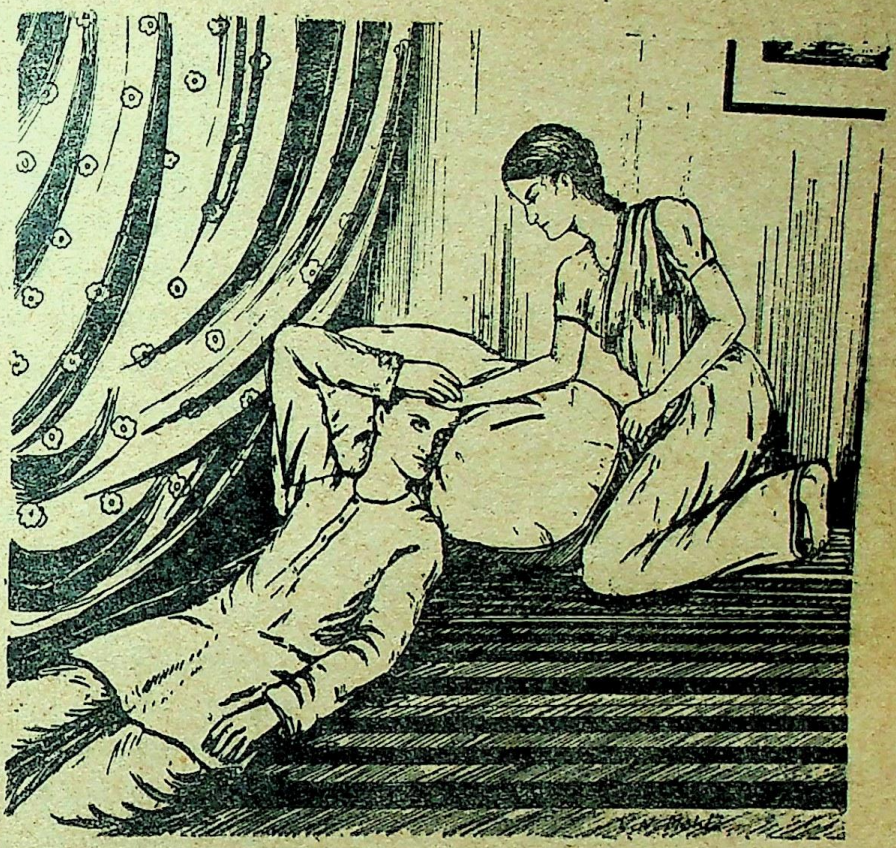

'बैठो न माधुरी, थोड़ी देर!'

हां, वह माधुरी ही थी लौट कर वह पास आ गई और स्निग्ध-मधुर कण्ठ से बोली, "आपने अभी तक भोजन नहीं किया, योगेन्द्र बाबू! क्या कुछ तबियत खराब है?" कुछ उत्तर न पाकर वह योगेन्द्र के ऊपर झुक गई और उसके माथे पर हाथ रखते हुए बोली, "अरे, आपका तो माथा गरम हो रहा है!"

योगेन्द्र ने क्षण भर को आंखें बन्द कर लीं; फिर माधुरी के उठते हुए हाथ को पकड़ कर विह्वलता से बोला, "बैठो न माधुरी, थोड़ी देर···।"

माधुरी का अंग-प्रत्यंग कांप उठा। हाथ छुड़ाने का प्रयत्न करके वह वहीं निर्जीव सी बैठ गई। उसके चेहरे के भयंकर पीलेपन को लक्ष्य करके योगेन्द्र ने घबड़ा कर स्वयं ही उसका हाथ छोड़ दिया और फिर व्यग्रता से पूछा, "क्या हुआ, मधुरा?"

माधुरी अपने को सम्भाल कर हंस पड़ी। उस हंसी की ओट में अपनी विवशता को छिपा कर बोली, "कुछ नहीं, यों ही सिर जरा चकरा गया था। हां, आप क्या कह रहे थे। सिर में दर्द है, तो बाम ले आऊं क्या?"

"सिर में दर्द नहीं है, मधुरा, कहीं और दर्द है। तुम सब जानती हो; फिर अनजान क्यों बननी हो भला?"

"क्या कह रहे हैं, योगेन्द्र बाबू? मैं किसी दर्द-वर्द को नहीं जानती, और न जानने से मेरा कुछ लाभ ही है," माधुरी ने दृढ़ पर मधुर कण्ठ से कहा।

योगेन्द्र क्षणभर रुका। फिर माधुरी की ओर आग्रहपूर्वक देख कर बोला—"तुम नहीं जानती! जान कर भी अनजान बनती हो। पर मैं तो जानता हूँ तुम्हारे अन्तस्तल में छिपी वेदना को, जो तुम्हारी आंखों से हर समय झांकती रहती है।" योगेन्द्र ने एक लम्बी सांस ली। निमिष भर मौन रह कर फिर बोला, "तुम मुझसे दूर दूर क्यों रहती हो? मेरी बातों का उत्तर देने में क्यों घबरा उठती हो? तुम्हारे हृदय में घुमड़ती हुई हलचल को मैं साफ-साफ देख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा हूँ, मधु ! एक बार मुंह खोल कर कह क्यों नहीं देती हो ? कहो, मैं जी उठूंगा !"

आवेश में योगेन्द्र का मुख लाल हो उठा। माधुरी का हाथ थाम कर उत्तर की प्रतीक्षा में उसकी ओर देखता रहा।

माधुरी ने अपनी अश्रु सिक्त घनी-लम्बी पलकें एक-बार ऊपर उठाईं, परन्तु तुरन्त झुका लीं। फिर धीरे से योगेन्द्र के हाथों से अपना हाथ छुड़ा कर उठती हुई वह भर्राये हुए कण्ठ से बोली—"क्या आप जानते नहीं कि एक विधवा से किस तरह व्यवहार किया जाता है, योगेन्द्र बाबू ? फिर आपको तो पिता जी मंगला का हाथ देने का संकल्प-सा कर चुके हैं···!"

वह उठ कर खड़ी हो गई और दरवाजे की ओर बढ़ते हुए रुक कर फिर भर्राये हुए कण्ठ से बोली—"और जिस दिन आप मेरे बीते दिनों की कथा जानेंगे, उस दिन से मेरा मुंह देखना भी पसन्द न करेंगे।"

आंसुओं का आवेग रुक न सका। दो मोटे मोटे आंसू गालों पर लुढ़क आए।

"मैं वह कथा जानना ही नहीं चाहता, मधुरा !" व्यथित कण्ठ से योगेन्द्र ने कहा !

अपनी रुलाई को छिपाने के लिए माधुरी कमरे से बाहर निकल चुकी थी।

* * *

उस दिन योगेन्द्र बिना खाये-पिए ही दयाल-बाबू के घर से क्यों एकाएक चला आया, यह माधुरी के सिवा और कोई न जान सका।

एक दिन कई दिनों की अनुपस्थिति के बाद जब उसने घर में प्रवेश किया तो दयाल बाबू ने बड़ी ही ममता से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए स्निग्ध स्वर में कहा—"क्यों बेटा, उस दिन बिना खाए-पिए जाकर, हम लोगों को कष्ट दे कर क्या तुमने अच्छा किया ? मुनि की मां ने तो लापरवाही का दोष मेरे ऊपर डाल कर मेरी सात पीढ़ियों तक का तर्पण कर डाला !"

स्वयं ही दयाल बाबू अपने मजाक पर आनन्दित होकर खिलखिला कर हंस पड़े। पर बीच में ही योगेन्द्र के उतरे हुए चेहरे को लक्ष्य करके एक-एक गंभीर हो गये, "क्यों बेटा, तुम्हारी तबियत तो ठीक है ?"

"करीब ५ दिन से बुखार आ रहा था। अब कुछ कम हुआ तो आ पाया हूं।"

'ओह ! हमें तुमने सूचना तक भी नहीं दी," व्यग्रता से दयालबाबू ने कहा, "यहां तो तुम अकेले ही हो न ? अगर हमने तुम्हारी देख-भाल न की, तो और कौन करेगा ? अच्छा अब भीतर जाओ मुनि की मां पता नहीं कितनी बार तुम्हारे बारे में पूछ चुकी है···।"

बैठक से उठ कर योगेन्द्र अन्दर गृहस्वामिनी से मिलने चला, तो न जाने क्यों उसका दिल बैठा जाता था।

गृहस्वामिनी ने बड़े स्नेह से स्वागत किया, हाल-चाल पूछा और शिकायत की कि बीमार होने पर क्यों सूचित नहीं किया। इस बात-चीत के दौरान में पास ही चटाई पर बैठी सिलाई करती हुई माधुरी से योगेन्द्र की एक भी बात नहीं हुई एक बार भी देखा-देखी नहीं हुई। वह चुपचाप व्यस्तता से उसी तरह अपनी सुई चलाती रही।

गृहस्वामिनी के नाश्ता लेने के लिए चले जाने पर वे दोनों कमरे में अकेले रह गए। तब योगेन्द्र ने एक दीर्घ निःश्वास ले कर धीमे से कहा—'मधु, क्या आज तुम मुझसे बोलोगी भी नहीं ? मैं उस दिन के अपने व्यवहार के लिये बहुत लज्जित हूं। मुझे क्षमा कर दो मधु ! भूल जाओ उस दिन की बात। मैं तुम्हारे व्यवहार में जो कुछ देखता रहा, वह दर-असल मेरा अपना ही मनोभाव था; इसी से इतना साहस हुआ। खैर, अब यथार्थता जान गया हूँ···।"

माधुरी ने एक बार मुख उठा कर योगेन्द्र की ओर देखा और फिर नीचा कर लिया।

"जो हुआ सो ठीक है, योगेन्द्र बाबू ! मुझे कोई नाराजगी तो कभी नहीं रही है। अब तो आप यथार्थता भी जान गए।" कह कर माधुरी ने अपने आंसुओं को छिपाने के लिए मुख फेर लिया। इस बात के कहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में माधुरी को कितना जोर लगाना पड़ा, इसका योगेन्द्र अनुमान भी नहीं कर सकता था। थोड़ा स्वस्थ हो कर फिर माधुरी ने कहा—"मंगला के बारे में पिता जी आप से कहेंगे। आप उसे स्वीकार करेंगे न?"

उत्तर की प्रतीक्षा में माधुरी आशंकित हो कर योगेन्द्र की ओर देखने लगी।

योगेन्द्र अप्रत्याशित भाव से मुस्करा पड़ा। उस मुस्कराहट से भी माधुरी कांप उठी। वह बोला, "क्या तुम मुझ से मजाक करती हो, माधुरी? मंगला का विवाह न तुम्हारे पिता मुझ जैसे गरीब से कर सकते हैं, न मैं ही इसके लिए तैयार हूँ"

"पिता जी की बात तो मैं समझती हूँ, पर आप क्यों नहीं तैयार हैं, यह जान सकती हूँ?" हँसने का असफल प्रयास करती हुई माधुरी बोली!

"इतना ही जानना पर्याप्त है कि मैं नहीं कर सकता। तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ, मधु, इस बात पर जोर देकर मुझे और अधिक कष्ट मत दो। मैं इससे अधिक नहीं सह सकता...!"

माधुरी क्षण भर स्तब्ध सी देखती रही। फिर शीघ्रता से बोली—"मेरा तुम्हारे पर अधिकार तो कुछ है नहीं, योगेन्द्र बाबू। हां, इतना जानती हूँ कि मंगला का विवाह हो जाने पर हम लोगों का उद्धार हो जायगा।" उसका गला रुंध गया। "मेरे कारण ही इन लोगों की आज यह दशा हो गई है कि मंगला का विवाह कहीं पक्का नहीं हो रहा। अपने इस पापी शरीर का अन्त करने को ही उस दिन गंगा में डूबना चाहा था। वह भी आपने न होने दिया...खैर, अब आप पर ही पिता जी की नजर है। अगर आप न माने तो हमारा उद्धार न हो सकेगा; हमारे दुःखों का अन्त न रहेगा ...।"

योगेन्द्र मुँह फाड़े आश्चर्यचकित भाव से उसकी ओर ताकता रह गया। ऐसा वह कौन सा रहस्य है कि जिसे वह इतना परिचय होने पर भी आज तक नहीं जान सका? इतना भी आज ही जान पाया कि माधुरी के जीवन से सम्बद्ध ऐसी कोई विशेष दुर्घटना है जो हरदम उस के चारों ओर उदासी और विराग का जाल बुनती रहती है। घर में जो उसके प्रति अव्यक्त-सा तिरस्कार व घृणा का भाव भरा रहता है, उसका कारण केवल उसका विधवा होना ही नहीं है, कुछ और भी है ऐसा कुछ जो हर दम उसे सबसे अलग २ रखता है। उसने एक बार फिर माधुरी की ओर देखा बिना किनारी की सफेद धोती में भी वह रूप की रानी मालूम होती थी। अनलंकृत रूप-लावण्य फूटा पड़ रहा था। उलझी बिखरी घुंघराली लटें उसके सुन्दर मुखड़े पर चंचलता से इठला रही थीं। वह सिर नीचा किए उस तरह सिलाई में व्यस्त थी—हालांकि आंसुओं की धुंध में उसके सामने सब कुछ जैसे लिपा-पुता पड़ा था। योगेन्द्र ने एकटक उसके अलभ्य सौन्दर्य को निहारते हुए मन ही मन कहा—"मंगला के जीवन को सहारा देने वाले हजारों मिल जायंगे; पर इस असीम रूप को ले कर तुम किसके सहारे अपनी जीवन-नैय्या पार लगाओगी!"

दोनों मौन थे। आगे बात न हो सकी। मां के आते ही माधुरी चुपचाप उठ कर बाहर चली गई।

* * *

इस घटना के तीन-चार दिन बाद जब योगेन्द्र फिर दयाल बाबू से मिला तो उन्होंने उसे बिठा कर बहुत ही अभ्यर्थनापूर्वक कहा—"बेटा, तुम कई कई दिन इधर नहीं आते, यह ठीक नहीं है। इसे अब अपना ही घर समझो। आज रविवार है, भोजन यहीं करना होगा। समझे!"

उसके बाद योगेन्द्र को अपने पास बिठा कर उन्होंने अपने वंश की श्रेष्ठता और ऐश्वर्य की प्रशंसा आरम्भ की। यों तो दयाल बाबू अब भी काफी अच्छी स्थिति में थे—घर का मकान, बगीचा और वकालत की भारी कमाई, सब कुछ था; पर उनके पिता व दादा अत्यन्त ऐश्वर्यशाली थे। अपने वंश का गौरव-गान करने के बाद दयाल बाबू ने योगेन्द्र की पीठ पर हाथ रख कर स्नेहप्लावित वाणी से कहा "बेटा जब से तुम्हें देखा है, हमारा ध्यान किसी और तरफ नहीं जाता। और असल बात तो मुनि की मां की है। वह तो अब तुम्हारे सिवाय किसी पर अंगुली टिकने ही नहीं देती। वह तुम्हें बहुत प्यार करने लगी है। बेटा, मैं बूढ़ा हुआ। लड़की जवान हो गई है। तुमने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मंगला को देखा ही है, बिल्कुल अपनी मां जैसी चरित्रवती और सुशीला है। तुम्हारे अयोग्य न होगी। हम लोगों का निश्चय तो है ही बेटा, तुम्हारी भी अश्रद्धा नहीं है, यह मैं जानता हूँ।" कह कर दयाल बाबू स्वयं हंस पड़े। "बूढ़ा हूँ, तो क्या जानता नहीं कि तुम्हारे युवक हृदय को कौन बार बार यहां खींच लाता है? यह तो मैं मानता नहीं कि इस बूढ़े का प्रेम ही तुम्हें यहां खींचे लाता है।" यह कह दयालबाबू स्वयं ही जोर से हंस पड़े।

योगेन्द्र उनकी ओर आश्चर्य और विनोद से देखता हुआ बैठा था। बात पूरी होने पर उसने सिर झुका लिया। उसने कभी स्वप्न में भी न सोचा था कि उसके यहां आने का अर्थ घर वालों की ओर से यह लगाया जा रहा है कि वह बार बार मंगला को देखने, उससे मिलने आता है। खैर, घर वाले कुछ भी समझें, जिसके लिए वह आ रहा है, वह व्यक्ति समझता है कि वह उसी के लिए आता है।

"शरमाने की बात क्या है, बेटा, जवानी में ऐसा ही होता है," हंसते हुए वृद्ध दयाल बाबू ने फिर कहा—"अब तो इतना ही रह गया कि तुम अपने पिता जी से आज्ञा ले लो, या मुझे आज्ञा दो कि मैं जाकर सब तय कर आऊं।"

योगेन्द्र के हृदय में तूफान उठ रहा था। वह समझ नहीं पा रहा था कि वह करे तो क्या करे। साहस करके वह केवल इतना ही कह पाया—"आप गलत समझ रहे हैं। मैं आपके व चाची जी के माता-पिता तुल्य प्यार से ही आकर्षित होकर आता रहा हूं।"

इसे भी दयाल बाबू ने हंस कर उड़ा दिया, "हां, हां, बेटा, आते क्यों नहीं रहे हो। ठीक है, ठीक है।"

एक बार योगेन्द्र के मन में आया कि साहस-पूर्वक इन्कार कर दे, कह दे कि वह मंगला को नहीं, माधुरी को चाहता है। पर उसके सामने माधुरी की वह कातर तस्वीर आ गई, जब उसने कहा था—मंगला के लिये इन्कार करने पर सारा दोष मेरा ही समझा जायगा! तब मेरे लिए गंगा में मुंह छिपाने के सिवाय कोई और चारा नहीं रहेगा!

योगेन्द्र के लिए एक ओर कुंआ और दूसरी ओर खाई थी। जिस दिन उसने डूबती हुई माधुरी को बचाया था, उसी दिन से उसका सोया हुआ अनुराग जाग उठा था। वह उसे अपनी समझने लगा था। उसने सोचा था—माधुरी को मांग कर दयाल बाबू को खुश कर दूंगा। वे अपनी दुःखिनी विधवा बेटी को सौंप कर प्रसन्न होंगे। मंगला के लिए हजारों वर मिल सकते हैं। पर वह अब जान पाया कि माधुरी को पाने का रास्ता एकदम बन्द है।

उसने फिर कहा, "शायद मेरे पिता जी आज्ञा न दें...।"

तभी कुर्सी आगे सरका कर दयाल बाबू ने धीमे से कहा—"मैं जानता हूँ बेटा, बड़े-बूढ़े इन उड़ती हुई बदनामी की बातों से बिदक जाते हैं। सो मैंने माधुरी को महिला-आश्रम में भेजने का लगभग पूरा प्रबन्ध कर लिया है। उसकी मासिक वृत्ति बांध दूंगा। वह आजीवन सेवा का व्रत लेना भी चाहती है। जब वह घर में नहीं रहेगी, तो कोई अपवाद फैलेगा भी नहीं।"

योगेन्द्र का भावुक हृदय आवेग से भर गया। आंखों में आंसू उमड़ आये। बीच में ही रोक कर बोला—"नहीं, नहीं, मेरा मतलब यह नहीं है!"

"ओहो, ठीक है, तुम्हारा मतलब तो यह नहीं, पर दुनिया की उंगली से कैसे बचा जा सकता है। जब उसने ही अपने बूढ़े मां-बाप की लाज का खयाल न किया, तो हम कहां तक उसका साथ दें। ससुराल वाले अब उसे बुलाने को तैयार नहीं। आखिर हमारी और भी तो सन्तानें हैं। उनका भविष्य भी तो देखना है। और फिर उसे हम घर से तो नहीं निकाले दे रहे।"

योगेन्द्र कोई जवाब न दे सका। केवल कातर नेत्रों से उनकी ओर देखता रहा। वह कुछ कहना चाहता था, परन्तु माधुरी की अश्रु सिक्त मूर्ति उसकी आंखों के सामने आ कर मानों उसे रोक देती। दयाल बाबू ने उसके मौन को स्वीकृति का सूचक समझा और

(शेष पृष्ठ ४१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

श्री 'नलिन'

शिथिल पलकें झुक रहीं बीते दिवस का भार ले।

भीग भारी लाश होती जा रही है रात,
बर्फ बन कर जम गया मृदु यामिनी का गात।
मन बना बेताब सपनों का बसेरा,
पर समेटे विहग, सन्नाटा - अंधेरा।
मैं पड़ा पल गिन रहा हूं हार का अधिकार ले।

शूल-संकुल नीड़, लें विश्राम कैसे प्राण?
सेज पर अवकाश के क्षण बन बिछे पाषाण।
सांस ले कर शिथिल धड़कन का सहारा
खोजते निस्सीम रजनी का किनारा।
पर विकल मन कण्टकों का कब तलक आधार लें?

जा रहा आहतचरण असफल वयस-इतिहास,
फटे पृष्ठों में लिये अनुनय, विफलता, प्यास।
लुटे पंथी-सा चला अनजान जीवन,
सामने निस्सीम मरु-पथ, निबल तन मन।
किस तरह घायल पगों से नाप पथ के पार ले?

रोकने पर भी उमड़ती बह चलीं दो धार—
छटपटाती सिसकती-सी पलक-तट के पार।
एक हाहाकार की ले कर कहानी,
श्याम, धुंधली, क्षीण-सी, जानी-अजानी,
भग्न मन कैसे कहो तो बांध पारावार ले?

पुतलियों में भीड़, लाखों दर्द की तस्वीर—
नयन-तारों में कसकती बन विषैले तीर।
एक पर तस्वीर उनमें घुल न पाती,
मन-तिमिर में चंचला-सी कौंध जाती,
झांकती है अश्रु, आतुरता, उदासी, प्यार ले!
शिथिल पलकें झुक रहीं बीते दिवस का भार ले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

हरी मक्खी

श्री कालमन मिक्जैथ हंगरी

★

गांव का सबसे धनी किसान जॉन गाल अपनी मृत्युशय्या पर लेटा था। परमात्मा उसकी ओर संकेत करके जैसे सम्पूर्ण मनुष्य-जाति से कह रहा था—'जॉन गाल को देखो! तुम मर्त्यलोग अपने-आप को समझते क्या हो! कुछ भी तो नहीं हो। जॉन गाल हैसियत वाला व्यक्ति है। इलाके का जज आकर उससे हाथ मिलाता है; गांव की चौधरानी आकर उससे हाल पूछती है; गांव में वह सबसे धनी व्यक्ति है; फिर भी मैं उसे समाप्त कर सकता हूँ। मैंने उसे मारने के लिये कोई भूखा भेड़िया नहीं भेजा और न कोई विशालकाय ओक का वृक्ष ही उखाड़ कर उस पर गिराया; एक जरा-सी मक्खी से ही काम हो गया।'

वस्तुतः यही हुआ। एक मक्खी ने उसके हाथ में काट लिया, जिससे वह लाल और काला पड़ कर सूजने लगा।

गांव के पादरी और चौधरानी ने उसे डाक्टर को बुलवाने की सलाह दी।

वह पास के शहर से सर्जन को बुलवाना चाहता था, पर उन्होंने आग्रह किया कि बुडापेस्ट से किसी विशेषज्ञ को तार देकर बुलाया जाय। प्रो० बिरली को बुलाना तय हुआ। एक बार आने के वह तीन सौ रुपये लेगा; पर फिर भी यह रुपये का सदुपयोग ही है।

'वाहियात!' जॉन बोला, 'वह जरा-सी मक्खी मेरे शरीर में तीन सौ रुपये का नुक्सान कभी नहीं कर सकती।'

पर चौधरानी ने आग्रह किया और कहा, 'चलो जॉन गाल, डाक्टर का बिल तुम मत चुकाना, मैं चुका दूंगी; पर तुम उसे बुलाओ तो।'

चालाकी काम कर गई। जॉन गाल अभिमानी किसान था। तार भेजा गया और एक पतला चश्माधारी रोबदाब से शून्य युवक उस गाड़ी में आया, जो उसे लाने के लिये स्टेशन भेजी गई थी।

बुढ़े जॉन गाल की युवा पत्नी श्रीमती गाल ने द्वार पर उसका स्वागत किया और बोली, 'क्या आप ही बुडापेस्ट के प्रसिद्ध डाक्टर हैं? अच्छा हुआ जो आप आ गये। जरा मेरे पति को देख लीजिये; एक मक्खी के काट लेने पर उन्होंने ऐसा कुहराम मचाया हुआ है, जैसे उन्हें हाथी ने काट लिया हो···।'

यह बात बिल्कुल झूठ थी। जान गाल एक शब्द भी नहीं बोला था और जब तक कोई पूछे नहीं, तब तक वह किसी को मक्खी काटने की बात कहता तक नहीं था। वह भेड़ की खाल के तकिये पर सिर रखे मुंह में हुक्के की नली दबाये निरपेक्ष शान्तभाव से बिस्तर पर लेटा हुआ था।

'क्या तकलीफ है तुम्हें, बाबा जी?' डाक्टर ने उसका हाल देखते हुए पूछा, 'शायद तुम्हें मक्खी ने काट लिया है?'

'जी हां!' जान मुंह ही मुंह में बुदबुदाया।

'कैसी मक्खी थी वह?'

'हरी मक्खी,' उसने धीमे से उत्तर दिया।

'आप इनकी परीक्षा करें, डाक्टर!' पत्नी बीच में ही बोली, 'मुझे जरा अपना काम करना है; मैं नौ रोटियां चूल्हे में लगा आई हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अच्छा, मां जी !' डाक्टर ने उसकी बात पर बिना ध्यान दिये अनमने मन से उत्तर दिया।

जैसे बिच्छू ने डंक मार दिया हो, इस प्रकार वह एक दम डाक्टर की ओर मुड़ कर खड़ी हो गई और नितम्बों पर हाथ रख कर आधे क्रुद्ध और आधे रिझाने वाले स्वर में बोली, 'क्यों, तुम तो मेरे बाप जितने बूढ़े हो! लगता है, तुम्हें अपनी आंखों पर लगाई हुई इन दो खिड़कियों में से कुछ ठीक नहीं दीखता।'

वह तेजी से मुड़ी; यौवन और चंचलता के आवेश से अपने रेशमी लहंगे को हवा में फरफराती हुई एक खास अदा से बाहर चली गई।

डाक्टर की आंखों ने उसका अनुसरण किया। उसमें अनुपम दानवीय सौन्दर्य था। आयु में वह डाक्टर से भी बहुत छोटी थी और अपने पति से तो बहुत ही छोटी थी। डाक्टर उससे क्षमा मांगना चाहता था, परन्तु वह एक भी शब्द बोल सके, इससे पहले ही वह वहां से चली गई।

खैर, वह रोगी की परीक्षा में लग गया। बूढ़े जान गाल से बोला, 'जरा वह हाथ तो देखूँ। इसमें दर्द होता है ?'

'बहुत अधिक !' उत्तर मिला।

डाक्टर ने हाथ की परीक्षा की और उसकी आकृति गंभीर हो गई, 'बुरा हुआ! मक्खी कोई जहरीली मक्खी थी।'

'हो सकता है !' जान ने बिना किसी भावावेश के कहा 'यह मैं कह सकता हूं कि वह मामूली मक्खी न थी।'

'वह मक्खी किसी सड़ी हुई लाश पर से आई थी।'

इस जानकारी के लिये जान ने डाक्टर को मन ही मन दो चार गालियां दे डालीं।

'तुम्हारा भाग्य अच्छा है कि मैं समय रहते आ पहुंचा। अब भी काफी कुछ किया जा सकता है। यदि मैं आज न आ पाता और कल आता तो तुम मुझे मरे हुए मिलते।'

'अजीब बात है !' जान ने हुक्के में नया तम्बाकू भरते हुए कहा।

वह एक दम डाक्टर की ओर मुड़ कर खड़ी हो गई।

'विषैले रक्त का प्रभाव बड़ी तेजी से होता है। अब एक भी क्षण खोना ठीक नहीं है। अपने मन को पक्का करो, बाबा जी, तुम्हारा हाथ काटना पड़ेगा।'

'मेरा हाथ ?' उसने आश्चर्य और व्यंग से पूछा। उसके स्वर में निराशा का भाव स्पष्ट था।

'हां, यह काटना ही पड़ेगा।'

जान गाल एक शब्द भी नहीं बोला, सिर्फ सिर हिलाया और फिर हुक्का पीने लगा।

'देखो, इसमें तुम्हें दर्द बिल्कुल नहीं होगी।' डाक्टर ने उसे मनाने के उद्देश्य से कहा, 'मैं तुम्हें सुला दूंगा और जब तुम जागोगे तो तुम्हारा जीवन संकट से बाहर होगा। और नहीं तो कल इस समय तक तुम चूहे की तरह मर चुके होगे; परमात्मा भी तुम्हें नहीं बचा सकता।'

'ओह, मुझे अकेला रहने दो !' उसने इस प्रकार कहा जैसे वार्तालाप से ऊब गया हो और दीवार की ओर मुंह करके लेट रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर ने ऐसे कड़े हठ की आशा नहीं की थी। वह कमरे से निकल कर उसकी पत्नी को समझाने के लिये रसोई में गया।

'मेरे पति का कैसा हाल है?' श्रीमती गाल ने अधिकतम उपेक्षा के स्वर में पूछा और डाक्टर के प्रति अपनी घृणा जताने के लिये वह अपने काम में लगी रही; मुंह फेर कर भी न देखा।

'बहुत बुरा। मैं तुम्हारे पास इस लिये आया हूँ कि तुम यत्न करके उसे मनाओ कि वह अपना हाथ कटवाने को तैयार हो जाय।'

'हे भगवान्!' वह घबरा कर बोली। उसका रंग उसके ब्लाउज़ के समान सफेद पड़ गया। 'क्या काटना ही पड़ेगा?'

'नहीं तो वह चौबीस घंटे में मर जायगा।'

उसका चेहरा लाल हो उठा। वह डाक्टर को बांह से पकड़ कर लगभग खींचती हुई बीमार के कमरे में ले आई और अपने हाथ नितम्बों पर रख कर बोली, 'क्यों, क्या सूरत शक्ल से मैं ऐसी दिखती हूँ कि एक अपंग की स्त्री बन कर संतुष्ट रह सकूं? मैं लज्जा के मारे मर जाऊंगी। उस ओर देखो तो।' वह अपने पति की ओर मुड़ी और लगभग चिल्ला कर बोली, 'जान, तुम इसे अपना हाथ मत काटने देना। तुम इसकी बात भी मत सुनना।'

बूढ़े जान ने उसकी ओर स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखा और आश्वासन के स्वर में बोला, 'घबराओ मत क्रिस्का, मैं यहां यह कसाईपन नहीं होने दूंगा। मैं टुकड़े-टुकड़े हो कर नहीं मरना चाहता।'

डाक्टर ने उसे मृत्यु के कष्ट और जीवन के सुख की बातें कहीं; गांव की चौधरानी, पादरी और दूसरे कई बड़े-बूढ़ों को जान गाल को समझाने के लिये बुलाया; पर सब व्यर्थ। जान गाल अपने हठ पर अडिग रहा। उसने हाथ कटवाने से इन्कार कर दिया। बिना किसी प्रकार की कटुता या आक्रोश के, बिना निष्फल आंसुओं के जिस आत्मसमर्पण के भाव से एक सामान्य किसान अपनी मृत्यु के पास पहुँचता है, वही भाव उसके मुख की शांति और उसकी वाणी की ध्वनि में स्पष्ट हो रहा था। मृत्यु उसे कोई भय नहीं दिखा पा रही थी। यदि उसका समय आ ही गया है, तो वह उसी भांति चलने को तैयार था, जैसे उससे पहले उसके बाप और दादा गये थे।

यह स्पष्ट हो गया कि अपने प्राण बचाने के लिये बूढ़े से किये गये सब अनुरोध व्यर्थ होंगे। परन्तु उसके प्राण बचाने के लिये डाक्टर जो हार्दिक व्यग्रता प्रकट कर रहा था, उसने बूढ़े को विचलित कर दिया। उसे डाक्टर पर दया आने लगी। उसे दुःख हो रहा था कि डाक्टर उसके लिये इतना कष्ट पा रहा है और वह करुणाजनक हास्यास्पद रूप से डाक्टर को सान्त्वना देने लगा।

अचानक डाक्टर को ध्यान आया कि किसानों के ऊपर रुपये-पैसे का प्रश्न चामत्कारिक प्रभाव डालता है। वह बोला, 'देखो, तुम्हें तीन सौ रुपये तो देने ही होंगे, चाहे तुम हाथ कटवाओ या न कटवाओ। फिर इतना रुपया क्यों बरबाद करते हो? केवल पांच मिनट लगेंगे।'

'अपनी फ़ीस लेने के लिये तुम किसी मलहम का नुस्खा भी तो लिख सकते हो,' बूढ़े जान ने ऐसी शांति से कहा, जैसे वह जूतों की जोड़ी का सौदा कर रहा हो।

सब व्यर्थ! खिन्न और निराश हो कर डाक्टर कमरे से बाहर निकल गया और टहलता हुआ समस्या का समाधान सोचने लगा। गांव के कुछ लालबुझक्कड़ों से भी उसने सलाह ली। कोई लाभ न हुआ। पंचायत के अध्यक्ष और सरकारी खजांची भी आकर बीमार को मना न सके। तिस पर डाक्टर की योजनाओं को उलटने के लिए बूढ़े की युवा पत्नी सदा वहां रहती थी और बीच बीच में पति के हठ को पक्का करने के लिए दो चार बातें कहती जाती थी। डाक्टर ने उसकी ओर क्रोध और झल्लाहट से देखा और बोला—'जब आदमी बातें कातें कर रहे हैं, तो तुम जरा चुप होकर बैठो।'

अपनी देह को लचकाते हुए वह बोली—'मुर्गे के घूरे पर मुर्गी का भी कुछ जोर होता है।'

विवाद को रोकने के लिये जान गाल जल्दी से बोला, 'बहुत शोर न करो, क्रिस्का। इससे तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा यह है कि मेहमानों के लिये थोड़ी-सी शराब ही निकाल लाओ।'

'कौन से घड़े में से ?' उसने पूछा।

'दोमने घड़े में से। पर मेरे अन्त्येष्टि-भोज के लिये तीनमने घड़े में से निकालना। वह खट्टी हुई जा रही है।'

वह मृत्यु के विचार के सम्मुख पूर्ण आत्मसमर्पण कर चुका था। अतिथियों ने शराब पी और उसे परमात्मा के साथ समझौता करने को छोड़ गये।

तभी दालान में डाक्टर बिरली ने एक नौकर को देखा जो युवक और शक्तिशाली पुरुष था। यह घर के सब काम करने के लिए रखा गया था।

'गाड़ी तैयार करो; मैं आध घण्टे में चला जाऊंगा,' डाक्टर ने नौकर से कहा, 'और अपनी मालकिन से कह दो कि मैं शाम के भोजन के लिए नहीं ठहरूंगा।'

* * *

दरवाजे के बाहर जाकर डाक्टर रुक गया। वह सोच न सका कि अब आगे क्या करे। दरवाजे की दरार में से उसने नौकर को श्रीमती गाल के पास ऊपर जाते देखा और यह देखे बिना न रह सका कि किस प्रकार नाजभरी चितवन के साथ युवती ने उसका स्वागत किया और नौकर में उसके पास पहुँचते ही किस प्रकार एक गौरव का भाव आ गया। यह स्पष्ट था कि वे दोनों आग से खेल रहे थे और उनमें आपस में कुछ समझौता हो चुका था। अब उसे इस विषय में कुछ और जानकारी प्राप्त करना भर शेष था। गांव में अवश्य ही कोई बुढ़िया कुटनी होगी, जो गांव के सब लोगों के प्रेम वृत्तान्त जानती होगी और जो प्रेम करने की जड़ी-बूटियां बेचती होगी। खजांची को उसका पता भी मालूम होगा।

खजाञ्ची को पता मालूम था, वह बोला, 'वह बूढ़ी कुटनी है बेक; गाल के घर से दो घर छोड़ कर ही उसका मकान है।'

डाक्टर ने जाकर बुढ़िया को दो चांदी के रुपये दिये और कहा, 'मैं एक लड़की से प्रेम करता हूँ। कोई ऐसी बूटी दो कि वह भी मुझे प्रेम करने लगे।'

'यह नहीं हो सकता, मेरे बच्चे! तुम बीमार कौवे जैसे दीख पड़ते हो। वे तुम जैसे लोगों के प्रेम में नहीं फंसतीं।'

'ठीक है, अम्मा; पर वह जो रेशम पसन्द करे, मैं उसके लिये खरीद सकता हूँ और जितना रुपया वह खर्च करना चाहे, उसे दे सकता हूँ।'

'और वह स्त्री है कौन ?'

'श्रीमती जॉन गाल।'

'तुम केवल उन्हीं फूलों को चुन सकते हो जो अभी तक चुन नहीं लिये गये हैं।'

यही तो डाक्टर जानना चाहता था; बोला—'वह दूसरा आदमी कौन है ?'

'पाल नेगी – घर का नौकर! वह अवश्य उसके प्रेम में है; क्योंकि वह यहां प्रायः प्रेम की दवाई लेने आती है। मैंने उसे तीन साल पुरानी बेज़ों की पिछले साल की रखी हुई राख दी थी कि नेगी को शराब में मिला कर पिला दे।'

'और जॉन गाल कुछ संदेह नहीं करता ?'

'वह लाख चतुर हुआ करे, पर त्रिया-चरित्र के आगे उसे सदा मुंह की खानी पड़ी है।'

* * *

डाक्टर गाल के मकान पर लौट आया। उसने देखा, दोनों प्रेमी तब भी परस्पर बातें कर रहे थे। नौकर बातें करते करते घोड़ों की पीठ साफ कर रहा था, जो कि डाक्टर को स्टेशन ले जाने के लिए तैयार थे। युवती ने डाक्टर को बुलाया और जेब में से तीन सौ रुपये के नोट निकाल कर उस को देते हुए कहा—'आपने जो इतना कष्ट उठाया है उसके लिये।'

'अच्छा!' डाक्टर बोला, 'पर सुन्दरी, तुम्हें इस बात का मलाल रहेगा कि मैं इस फीस का अधिकारी नहीं था।'

'मेरी आत्मा इसे सरलता से सह लेगी; आप इसकी चिन्ता न करें।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बहुत अच्छा, मेरा सन्दूक जरा गाड़ी में रखवा दीजिए। इतने में आपके पति महोदय से विदा ले आऊं।'

जॉन गाल ठीक वैसे ही पड़ा था, जैसा वह उसे जाते समय छोड़ गया था। उसका हुक्का बुझ चुका था और वह आंखें मूंदे हुए था, जैसे झपकी ले रहा हो।

दरवाजा खुलने की आवाज सुन कर उसने आंखें खोलीं और एक आंख मूंद कर डाक्टर की ओर देखा।

'अच्छा, फिर मैं चलता हूँ, मि० गाल!' डाक्टर बोला।

'जा रहे हो?' उसने निरपेक्ष भाव से पूछा।

'अब और यहां मुझे करना क्या है?'

'क्रिस्का ने तुम्हें रुपये दिये?'

'हां। तुम्हें पत्नी बहुत सुन्दर मिली है, मि० गाल, सचमुच बहुत सुन्दर!'

बीमार ने अपनी दूसरी आंख भी खोल ली और विदाई के लिए डाक्टर की ओर हाथ बढ़ाते हुए केवल इतना कहा—'क्यों, क्या सुन्दर नहीं है?'

'उसके सुन्दर होंठ बिम्बाफल के समान हैं।'

'ठीक है!' उसके मुख पर एक हल्की-सी प्रसन्न-मुस्कान खेल गई।

'यह बदमाश पाल उसके साथ मौज करेगा, यह पक्की बात है।'

बूढ़ा किसान कांपने लगा और ऊपर देखने लगा। 'तुमने क्या कहा, डाक्टर?'

डाक्टर ने अपने होंठ बन्द कर लिए, जैसे वह कोई ऐसी बात कह गया हो, जो वह कहना नहीं चाहता था।

'वाहियात! यह मेरा काम नहीं है। आदमी को भगवान ने आंखें दी हैं और बुद्धि दी है। आदमी देखता है और चीजों को समझता है। मुझे तभी से संदेह था, जब उसने मुझे तुम्हारा हाथ काट देने से मना किया। तुम्हें कुछ सन्देह नहीं था? पर अब समझता हूँ। ठीक है ठीक है।'

यह भूल कर कि उसका एक हाथ सूजा हुआ है, क्रुद्ध जॉन गाल अपनी मुट्ठियां कस कर हिलाने लगा, पर पीड़ा से कराह उठा—'आह मेरा हाथ! ओफ मेरा हाथ! डाक्टर, अब एक शब्द भी मत कहो।'

'एक भी शब्द नहीं!' डाक्टर बोला। रोगी की छाती से एक गहरी कराह उठी और उसने दायें हाथ से डाक्टर का हाथ पकड़ कर पूछा, 'कौन पाल? तुम किस पाल की बात कह रहे हो? वह कौन है?

'क्या सचमुच ही तुम्हें मालूम नहीं है? पाल नेगी, तुम्हारा नौकर।'

बूढ़े का चेहरा फक पड़ गया। उसके होंठ कांप रहे थे और उसका सारा रक्त हृदय में दौड़ गया। उसके हाथ में अब जरा भी दर्द नहीं हो रहा था। उसने अपना माथा ठोंका और ऊपर देख कर बोला—'मैं कितना उल्लू हूँ। मुझे बहुत पहले ही समझ जाना चाहिए था..... ओह, वह नागिन!'

'स्त्री को गाली देना व्यर्थ है, मि० गाल। वह युवती है, स्वास्थ्य और जीवन से लबालब भरी है। यही सब कुछ है। हो सकता है, अभी तक वह बिल्कुल पवित्र हो। परन्तु अन्त में उसे तुम्हारे मरने के बाद विवाह करना ही होगा.....और मर तुम अवश्य जाओगे.....।'

बूढ़ा प्रयत्न करके डाक्टर की ओर मुड़ा, जो अभी बोले जा रहा था।

'यदि तुम्हारे मरने के बाद वह किसी युवक से विवाह कर ले, तो इसमें तुम्हारा क्या नुकसान है! भूमि में गड़ जाने के बाद तुम्हें इस सम्बन्ध में कुछ मालूम नहीं होगा। बल्कि तुम्हें तो प्रसन्न होना चाहिये कि उसे एक जवान पति मिल जायगा—सुन्दर छोकरा पाल!'

बूढ़ा अपने दांत पीस रहा था; ऐसी आवाज हो रही थी, जैसे दो हाथीदांत आपस में रगड़े जा रहे हों। डाक्टर बोले जा रहा था।

'मि० गाल, तुम्हें इतना लोभी नहीं होना चाहिये। यह सचमुच दुर्भाग्य की बात होगी यदि उस बेचारी की इतनी सुन्दर देह बिना आलिंगनों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुम्बनों के यों ही नष्ट हो जाय। पाल मूर्ख नहीं है। वह ऐसी सुन्दर युवती को बिना एक चिकोटी काटे पास से कभी न गुजरने देगा। इसके अतिरिक्त उसके पास तुम्हारा सारा रुपया और तुम्हारे सब खेत होंगे। वह युवती भी आनन्द से जीना चाहेगी। तुम तीनों में, मि० गाल, मूर्ख केवल तुम हो।'

किसान फिर कराहा। उसके मस्तक पर पसीने की बूंदें चमकने लगीं। उसका हृदय कड़वाहट से ऊपर तक लबालब भर चुका था। डाक्टर ने अंतिम तीर छोड़ा—

'मि० गाल, क्या बिल्कुल ही छोड़ जाने की अपेक्षा उसे एक हाथ से आलिंगन करना अधिक अच्छा न होगा?'

बूढ़े का धैर्य छूट चुका था। वह कूद कर खड़ा हुआ और हाथ आगे करके बोला—'डाक्टर, चाकू लाओ और इसे काट दो।'

★

लखनऊ की सांझ

श्री सलाम मछलीशहरी

लखनऊ की वह सांझ रूप भरी।

गोरे हाथों में चमेली की बहारें ले कर
आसमानों से अप्सरी वह उतर आई थी।
छेड़ करती ज्यों तरंगों में कँवल की रानी,
समय से पहले ही कुछ और निखर आई थी।
वह मयूरों के नृत्य-सी पदगति,
आह, वह रूप मुग्ध मनहारी!
लखनऊ की वह सांझ रूप भरी!

थरथरा उठे मेरे बीन के तार।
मैंने यह सोच लिया था कि फिर एक बार सही
बीन को छेड़ के देखूं तो गूँज कैसी है।
गीत गाऊं, तुम्हें चाहूँ तुम्हें बतलाए बिना,
मन के उपवन की निहारूं मैं छटा कैसी है।
जल्दी-जल्दी मेरा मन सजने लगा,
होले-होले से चली आई बहार!
लखनऊ की वह सांझ रूप भरी!

अन्त में फिर तुम्हें बतला ही दिया।
सोचता था कि यह जो भेद है मेरे मन का,
मैं सदा तुम से वह भेद छिपा रखूंगा।
और वैसे भी यह धड़कन जो किसी ने सुन ली,
लालसाओं में छिपा गीत-सा क्या रखूंगा?
तुम कुछ इस तरह संवर कर आईं
आइना मैंने भी दिखला ही दिया।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह हवेली भूतों की लाल कोठी के नाम से प्रसिद्ध थी। हां, उसमें भूत रहते थे, परन्तु कैसे····?

★

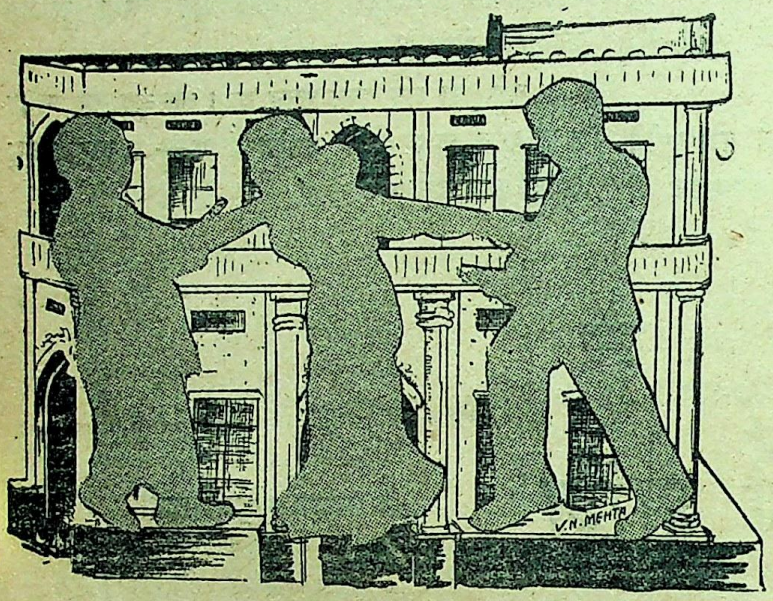

लाल हवेली

उन दिनों मैं ठाकुर अजयसिंह का मेहमान था।

बचपन की मित्रता, कालेज-जीवन के रंगीन दिनों की याद १५ वर्ष बाद फिर तरो-ताजा होकर हमारे सामने प्रतिबिम्बित हो उठी थी; यद्यपि अब हम दोनों के जीविका के दायरे में काफी अन्तर था—वे पुलिस-विभाग के एक उच्च कर्मचारी थे और मैं एक हिन्दी पत्रिका का सम्पादक। अपने सम्पन्न और सुखी जीवन से अजयसिंह जितने ही असन्तुष्ट थे, अपनी विपन्नता में मैं उतना ही सन्तुष्ट!

हम दोनों की भेंट एक छोटे से स्टेशन पर हुई। उन्होंने मुझे पहचानते ही गले से लगा लिया और साथ ही कई प्रश्न पूछ डाले—मैं कहां रहता हूँ? क्या करता हूँ? घर में कौन कौन है? इत्यादि।

मैंने कहा—"तुम कहां जा रहे हो? मैं तो यों ही एक माह की छुट्टी लेकर घूम रहा हूँ।"

अजय ने उछल कर कहा—"तो फिर चलो मेरे साथ। वहीं इत्मीनान से बातें होंगी···"

और मेरे उत्तर की बिना प्रतीक्षा किये उन्होंने अपने नौकरों से कह कर मेरा सामान उठवा लिया। सरकारी ट्रक और एक कार पहले से ही उनके लिये खड़ी थी। बैठते बैठते मैंने पूछा—"यहां जंगल में तुम्हारा क्या काम निकल आया?"

"आ गया, भाई! यहां से लगभग ३० मील आगे एक जंगल में कुछ पेड़ हैं; उन्हीं का कुछ झगड़ा चल रहा है। अभी तक इस महकमे में एक और साहब काम कर रहे थे; अचानक उनकी मृत्यु हो गई। अभी जब तक इसके लिये कोई होशियार आदमी ठीक नहीं होता, मैं ही भेजा गया हूँ। फिलहाल काम तो होगा ही, साथ ही एक और किस्से से मेरी दिलचस्पी इस काम के लिए बढ़ गई है।"

"वह क्या?" मैंने पूछा।

"भूतों की लाल कोठी।"

"भूतों की लाल कोठी?" मैंने चौंक कर पूछा।

"जी हां, उसके बारे में सुना तो बहुत कुछ है, लेकिन अब सही बातों का पता तो वहां चल कर ही लग सकेगा"—उन्होंने लापरवाही से कहा, और फिर सिगार पीते हुए कुछ इधर उधर की बातें छेड़ दीं।

* * *

लेखिका—
कमला त्रिवेणीशंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग ५ बजे शाम को हम लोग निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गये। लाल कोठी के सामने ज्यों ही हमारी मोटर ठहरी, एक बूढ़ा चौकीदार सलाम कर के बोला--"हुजूर, अभी दिन है, आप कैम्प डलवा लें, लाल कोठी···" बूढ़ा एकाएक चुप हो गया।

अजयसिंह ने उतर कर कहा—"क्या बात है? कोठी की कुञ्जी किसके पास है? अभी तक खोली क्यों नहीं गई?"

दो कांस्टेबिल, जो पहले से ही पहुँच गये थे, सामने आये, बोले—"हुजूर, इस कोठी के बारे में अजीब २ किस्से सुनने में आये हैं, इसलिये हम लोगों ने अभी तक खोला नहीं। ताली तो इसी बुड्ढे के पास है, लेकिन आप भी सोच लें तब···"

अजयसिंह ने मुस्कराते हुए कहा, "भूत-प्रेत भी पुलिस से डरते हैं! बूढ़े, हम खतरा उठाने को तैयार हैं; ताली ला कर फौरन कोठी खोल दो।"

बुड्ढा विनीत स्वर में बोला--"हुजूर, एक बार और सोच लें। आप से पहले काम करने वाले तीन आफिसर इसी कोठी में मरे पाये गये थे। उन्हों ने भी यही कहा था, हम भूत-प्रेत को कुछ नहीं मानते, सब गप्प है। आप इधर रावटी लगवा लीजिये। आसमान साफ है और अगर वर्षा हुई तो गरीब की झोंपड़ी पास ही है, उसमें आराम कर लीजियेगा।"

अजयसिंह ने मेरी ओर देखते हुए कहा--"क्यों भाई शरद्, क्या कहते हो?"

मैंने कहा—"रात के वक्त खतरा उठाने से यह अच्छा है कि हम आज की रात बाहर बितायें और कल दिन में अच्छी तरह देख सुन कर अंतिम निश्चय करें। क्या कैम्प से काम नहीं चल सकता?"

"अरे भाई, १५ दिन रहना पड़ेगा; भूत-प्रेत से भी अधिक खतरनाक जंगली जानवर होते हैं। रही रात की बात, सो अभी दिन कराये देता हूँ। पेट्रोमैक्स साथ में है।"

और उनकी आज्ञानुसार कोठी खोल कर उसमें सफाई आरम्भ कर दी गई।

भीतर करीब १५-२० कमरे थे। कोठी दो-मञ्जिली थी। कुंआ, बाथरूम, रसोई-घर सब उसमें थे। दो-तीन कमरे काफी सजे सजाये थे—पुराने ढंग के झाड़-फानूस, और बड़ी बड़ी तस्वीरें, मेज कुर्सियां, मशहरी। गर्द से चीजें मैली हो रही थीं, फिर भी बड़ी तत्परता से कई आदमियों ने मिल कर अच्छी तरह सफाई कर दी। अजयसिंह ने बड़े हाल में अपना बूट खोलते हुए कहा—"क्यों भाई, यहां के भूत-प्रेत क्या टेबिल-कुर्सियां भी इस्तेमाल करते हैं? फिर तो उन्हें आज बड़ी असुविधा होगी!"

बूढ़े ने जवाब दिया—"नहीं हजूर, ये सामान तो सरकारी है। जो लोग यहां आ कर ठहरते हैं, उन्हीं लोगों के लिये लगा दिया गया है। इसमें की कुछ चीजें पहले की भी हैं—अर्थात् उनकी, जिन्होंने इस कोठी को बनवाया था।"

मैंने पूछा—"वे लोग अब कहां हैं?"

बूढ़े ने खांस कर कहा—"लगभग १० साल हुए, पूर्वी जिले के एक धनी रईस ने इस कोठी को बनवाया था। उनकी उम्र, जब वे यहां आये थे, साठ के लगभग थी। उनके साथ उनकी एक नवोढ़ा पत्नी भी थी, जिन्हें लोग 'बहूरानी' कहा करते थे। रानियों-सा रूप पाया था बहूरानी ने। उम्र भी १६-१७ से अधिक की न थी। सुख के सारे साधन उनके चरणों पर निछावर थे। फिर भी कभी किसी ने उन्हें प्रसन्न-चित्त हंसते-खेलते नहीं देखा। उदास उदास वे कोठी में चारों ओर कभी कभी टहला करतीं। उनके यहां आने के लगभग डेढ़ साल बाद एक दिन इसी कोठी में खूब धूम-धाम होने लगी। मालूम हुआ, बहूरानी की गोद भरी है। आरम्भ से ही यह कोठी रहस्यमयी रही थी। नौकर-चाकर, चौकीदार सब वे अपने साथ ही लाये थे, इस लिये इधर के किसी भी व्यक्ति का कोठी में प्रवेश न था। तब मेरी स्त्री जीवित थी। वह अपना कौतूहल न त्याग सकी, किसी प्रकार प्रयत्न कर वह बहूरानी के निकट जा पहुंची। बहूरानी ने उसे अपने बच्चे की सेवा में नियुक्त कर लिया। बारह दिन निरंतर बाजे बजते रहे, हर रात कोठी जगमगाती रही। आखिर बरही का दिन आ पहुँचा। दिन-भर से आधी रात तक दान-पुण्य, नाच-रंग, खान-पान होता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Ha

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोठी के मालिक के वृद्ध शरीर में मानों जवानों-सा उत्साह उमड़ आया हो। दिन भर बड़ी व्यस्तता से वे अपने मेहमानों की खातिर करते रहे। रात ११ बजे के लगभग जब सब लोग विदा हो गये और वे लोग सोने की तैयारी करने लगे, तभी एक बड़ी-सी मोटर आ कर फाटक पर खड़ी हुई, और उसमें से कोई उतर कर जोर-जोर से फाटक पीटने लगा। थोड़ी देर में फाटक खुल गया। वे आने वाले लोग मकान-मालिक के भतीजे थे। वे लोग ३ या ४ की संख्या में आये थे। सब के हाथों में भरी हुई पिस्तौलें थीं। फाटक का चौकीदार वहीं धराशायी हो गया। दो को छोड़ बाकी लोग घड़घड़ाते हुए ऊपर चले गये..."

बूढ़ा कुछ रुक कर सांस लेने लगा। अजयसिंह ने मुझ से कहा—"उठो, नहा-धो कर निपट लो, तब सुनना।"

किन्तु मेरी उत्सुकता बढ़ गई थी, मैंने अजयसिंह की बात की ओर ध्यान न देते हुए बूढ़े से कहा—"उसके बाद?"

"उसके बाद," बूढ़े ने कहा, "मेरी स्त्री तब तक वहीं थी। उसने बतलाया कि एक व्यक्ति मालिक के सामने रिवाल्वर तान कर खड़ा हुआ, बोला—'चाचा जी, ठीक ठीक बतलाइये, नन्दरानी कहां है? और यह आज का उत्सव.....?'

मालिक ने कांपती हुई आवाज में कहा—'तुम? तुम...रणवीर...?'

'हां चाचा जी, मैं रणवीर ही हूं' आप धोखा नहीं खा रहे हैं। लेकिन ठीक २ बतलाइये, नन्दा कहां है?'

'नन्दा? नहीं नहीं, नन्दा न कहो, मैंने उससे विवाह कर लिया है। तुम बैठो, इत्मीनान से बात करूँगा।'

'माफ कीजिये, मैं इत्मीनान से बातें करने के लिये नहीं आया हूँ। मैं आया हूँ नन्दा को लेने। उस १६ वर्ष की असहाय बालिका से आपने ६० वर्ष की उम्र में विवाह रचाया, शर्म नहीं आई आपको? 'जो आपकी पुत्रवधू होने वाली थी, जो आपकी बेटी होने लायक थी, उसे आपने स्त्री बनाया...' युवक की भृकुटि तन गई थी, अत्यन्त क्रोध के कारण उसका शरीर कांप रहा था।

'लेकिन रणवीर, जब मैंने विवाह का प्रस्ताव रक्खा था, तब नन्दा ने विरोध नहीं किया था!'

'आप फिर झूठ बोलते हैं। यह जानते हुए भी कि नन्दा मेरी कौन थी, एक दो दिन नहीं, तीन वर्ष से वह मेरी वाग्दत्ता थी, मेरा उसका सम्पर्क कितने दिनों से था, यह भी आप जानते थे; फिर भी मेरी अनुपस्थिति का आपने लाभ उठाया, उसकी गरीब और विधवा मां को बहका कर, तीर्थ के बहाने ला कर आपने...' युवक हांफ रहा था, उसने इधर उधर कमरे में देख कर कहा—'आप इतने झूठे और मक्कार साबित होंगे, यह मैं नहीं समझता था। ठीक ठीक बतलाइये, नन्दा कहां है?'

'नन्दा सौर में है'—मालिक का भयभीत स्वर भर्रा उठा।

'सौर में?' युवक चौंक उठा। उसने रिवाल्वर ऊपर उठा कर कहा—'ओह, तो.....।'

इसी समय बहूरानी बच्चे को लिये दौड़ती हुई आईं। वे रणवीर के पैरों के पास गिर कर बोलीं—'रणवीर...रणवीर क्या करते हो! मुझे नहीं, पर इस निरीह बच्चे को देखो।'

रणवीर का ध्यान बटा हुआ देख मालिक ने सतर्कता से अपने सिरहाने की मेज पर से रिवाल्वर उठा लिया और ऊपर करके कहा—'अब तुम सावधान हो जाओ! खबरदार, नन्दा मेरी विवाहिता है, तुम उसको हाथ भी नहीं लगा सकते।'

किन्तु युवक असावधान नहीं था, वह निडर स्वर में बोला—'आप अपनी रक्षा कीजिये!'

मालिक की गोली पहले छूटी या रणवीर की, ठीक नहीं कहा जा सकता। तीन चार गोलियां साथ २ दोनों ओर से छूटीं। क्षण भर में देखा गया, मालिक के सामने बहूरानी का रक्त से लथपथ शरीर निर्जीव पड़ा है। मालिक के प्राण शेष थे, किन्तु वे भी रक्त से नहा उठे थे, और रणवीर पड़ा छटपटा रहा था। इसके बाद उस के दो साथियों ने आ कर बाकी काम समाप्त कर दिया। वे लोग उसी वक्त वहां से चले गये। दूसरे दिन पुलिस ने कोठी घेर ली। चारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणियों का साथ साथ संस्कार कर बहुत दिनों तक पुलिस उन आदमियों का पता लगाती रही। पता नहीं कहां तक उसे सफलता मिली, किन्तु यह मनहूस लाल कोठी तब से सरकार के कब्जे में है। और जंगल विभाग में काम करने वाले कर्मचारी प्रायः इसमें ठहरा करते हैं। दिन में ठहरने वालों के साथ तो कोई उपद्रव नहीं होता, किन्तु रात में ठहरने वाले व्यक्तियों का कहना है कि इसमें रात भर तीन बड़ी और एक नन्हीं-सी छाया टहलती है। उनमें से एक छाय स्त्री की होती है। वह उस नन्हीं छाया को लिये हर कमरे में घूमती रहती है। कभी उसे एक छाया खींचती है और कभी दूसरी। वह प्रायः रोया करती है। रोने की यह आवाज बाहर से भी सुनाई पड़ती है। कभी कभी उत्सव की रात की तरह इसमें मशाल की रोशनी भी होने लगती है और चलने फिरने की आवाज स्पष्ट सुनाई देती है। कभी-कभी स्पष्ट बातचीत की आवाज भी सुन पड़ती है किन्तु भाषा समझ में नहीं आती। कभी कभी ठहाके की आवाज के साथ लगता है सब दरवाजे और खिड़कियां कोई खोल रहा है और बूटों के प्रहार से लगता है कोठा हिल रही है।"

मैंने देखा अजयसिंह के चेहरे पर भी भय की रेखा-सी अंकित हो उठी है। किन्तु मेरी दृष्टि मिलते ही उन्होंने दृढ़ता से हंस कर कहा—"अच्छा है, आज नये नये आदमियों से परिचय होगा। जो कुछ भी हो, बूढ़े तुम कहानी कहने में पूरे सिद्ध हो; हम लोग खाना पीना भी भूल गये।"

बूढ़ ने गम्भीर स्वर में कहा—"हुजूर, भगवान रक्षा करें, आपकी उम्र में मैं भी बहुत निडर था, लगातार १२ वर्ष मैंने फौज में नौकरी की थी।"

"अच्छी बात है। तो अब तुम जा कर आराम करो। कल तुम्हारे फौजी जीवन की कहानी सुनेंगे"—अजयसिंह ने हंसते हुए कहा।

बूढ़ा सलाम करके कमरे के बाहर हो गया।

* * *

हम लोग भोजन कर के उठे, तब साढ़े दस बजे थे। अजयसिंह ने मेरा और अपना बिस्तर एक ही कमरे में लगवाया था। उसमें एक लैम्प जल रहा था और बड़े आंगन में पेट्रोमैक्स। उसकी रोशनी चारों ओर फैली हुई थी और दो कमरों में जिन्हें हम लोगों ने सुविधानुसार बैठने-उठने या कपड़े आदि बदलने के लिये इस्तेमाल किया था मोटी मोटी मोम बत्तियां जला दी गई थीं। भरी हुई पिस्तौल और बन्दूक अपने सिरहाने रख कर अजयसिंह ने कहा—"मैं आध घंटा बाहर टहल कर अभी आता हूं। आज रात भर हम लोग भूतों का तमाशा देखेंगे। जागते रहना, लौट आऊं तो शतरंज खेलेंगे।"

"अच्छी बात है," कह कर मैं लेट गया।

एक हल्की हल्की खुमारी-सी महसूस हुई, लगा जैसे नींद से आंखें कड़ुआ-सी रही हैं। यद्यपि कल्पना का चित्रपट चलता रहा, मकान मालिक, बहूरानी, रणवीर सभी के प्रतिबिम्ब पलंग के आस-पास दिखाई दिये, किन्तु अधिक कुछ सोच न सका और जल्दी ही सो गया।

किसी भयानक आवाज से नींद टूटी। टार्च जला कर देखा, अजयसिंह अपने बिस्तर पर बेखबर सो रहे हैं और कमरे से आंगन तक घुप अंधेरा छाया हुआ है। हाथ बढ़ा कर अजयसिंह को जगाना चाहा, किन्तु उसी समय मालूम हुआ कोई भारी डीलडौल का व्यक्ति कमरे में आकर खिड़की के पास खड़ा हो गया है। उसकी सांस स्पष्ट सुनाई देने लगी। भय से मेरा शरीर अकड़ उठा। इसी समय अचानक कमरों के दरवाजे अपने आप खुलने और बन्द होने लगे, और कई आदमियों के बातें करने की धीमी-धीमी आवाजें विचित्र ढंग की आने लगीं। खिड़की के पास की छाया धीरे-धीरे बढ़ी। वह अजयसिंह के सिरहाने जाकर रुकी। इसी समय अचानक पिस्तौल छूटने की आवाज सुन पड़ी। ओफ अजयसिंह···! हृदय कांप उठा। अपने पास की रक्खी रिवाल्वर तक उठाने का साहस न हुआ। किन्तु इसी समय अजय ने कहा—"शरद्, शरद्, गोली चलाओ।"

कुछ साहस हुआ, रिवाल्वर उठाया, किन्तु घुप अंधेरे में कुछ समझ न आया कि इसका उपयोग क्या करूं। सहसा, किसी के रोने की आवाज सुन पड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और साथ ही लगा, कोई भयानक अट्टहास कर बरामदे में जोरों के साथ चल रहा है। यकायक मेरी टार्च जल उठी और सामने एक भयानक काली-कलूटी स्त्री की छाया दीख पड़ी। अजय ने और मैंने साथ ही गोली छोड़ी। फिर अजय ने लगातार चार-पांच बार सीटियां बजा कर कहा—"शरद् भाई, अब उठो, कोई डर नहीं।"

अचानक "बचाओ बचाओ," की आवाज गूंज उठी और कमरे के सब दरवाजे अपने आप बन्द हो गये।

"ओह भगवान, यह कैसी प्रेत लीला है!" सिहर कर मैंने कहा और देखा सामने अजय से कोई लम्बा चौड़ा व्यक्ति भिड़ा शायद मल्लयुद्ध कर रहा है। कमरे के बाहर भी अजीब-अजीब शब्द सुनाई पड़ने लगे। उन शब्दों में मनुष्य के भी परिचित शब्द सुन पड़े। ये भैरोंसिंह और एक पठान कांस्टेबिल के थे जो आंगन के उस पार सामने वाले बरामदे में सो रहे थे। और इसी समय एक लम्बी छाया मेरे पास धीरे से आई। उसने अपना हड्डियों का पंजा मेरे गले पर रख कर बलपूर्वक दबा दिया·····मेरी आंखों में मौत नाच उठी और मैं बेसुध हो गया·····!

* * *

आंखें खुलीं, तब देखा अजयसिंह मेरे सिरहाने बैठे उपचार में व्यस्त हैं और सूर्योदय हो चुका है। होश आने पर भी बगैर आंखें खोले मैंने कहा—'ओफ, भगवान, यह प्रेत लीला!"

"अरे भाई, वह प्रेत-लीला नहीं, मनुष्य-लीला थी। उठ बैठो अब, घंटों से तुम्हारी सेवा कर रहा हूँ।"

अजय की स्पष्ट आवाज सुन कर साहस हुआ। आंखें खोलीं, धीरे-धीरे उठ कर बैठ गया। अजय के पैरों में पट्टी बंधी हुई थी और कपड़ों में काफी खून के धब्बे लगे हुए थे।

इस समय लगभग ३०-३५ कांस्टेबिल मुस्तैदी से कमरों में घूम-घूम कर जांच कर रहे थे। मुझे स्वस्थ देख अजयसिंह ने उठते हुए कहा—"चलो, अब तुम्हें प्रेत-लोक की सैर करा दूं।"

"प्रेत-लोक की? बख्शो, मुझे तो अब भी सन्देह है कि मैं मनुष्य हूँ या प्रेत!"

अजयसिंह ने हंसते हुए कहा—'तो फिर चलो, तुम्हें प्रेत-लोक तक पहुंचा कर मैं लौट आऊंगा। कुछ दूर तुम्हारा साथ देना मित्रता के नाते मेरा फर्ज है।"

इसी समय गरम चाय, ताजे टोस्ट और आमलेट ट्रे में लिये अजयसिंह का रसोइया कमरे में प्रविष्ट हुआ और सामने रखते हुए बोला, "दो लारियां बाहर खड़ी आपका इन्तजार कर रही हैं।"

अजयसिंह ने कहा—"मैं अभी आया। तुम फारिग हो लो, चाय पी कर पाताल-लोक में चलेंगे!"

और वह उठ कर चले गये।

१५ मिनट बाद कुछ स्वस्थ हो कर जब हम लोग चाय पीने बैठे, तब उसमें तीन व्यक्ति और शामिल थे—इन्सपेक्टर, दारोगा और पुलिस-सुपरिंटेण्डेण्ट।

चाय बनाते हुए अजयसिंह ने कहना शुरू किया—"मल्लयुद्ध करते करते अचानक मेरा हाथ उस प्रेत के गले पर जा लगा, जहां उसने हड्डी जैसी कोई चीज पहन रक्खी थी। वह झटके से गिर पड़ी। फिर तो मैंने देखा कि प्रेत-शरीर मनुष्य-सा ही गुदगुदा और मुलायम हो गया है। वह मुझ से भी अधिक सावधान था। उसने अपने हाथों में तेल और कालिख जैसी कोई चीज पोत रक्खी थी, जिससे वह मेरी पकड़ से निकला जाता था। किन्तु मनुष्य-शरीर का आभास पाते ही मेरा भय दूर हो गया था। मैंने उसे एक बार नीचे दबा कर रिवाल्वर चलाई। लगातार दो-तीन फायर करने के बाद एक चीख-सी निकली और प्रेत ने दम तोड़ दिया। इस बीच मेरी सीटी की आवाज से जो कांस्टेबिल पहले से ही आकर बंगले के आस-पास छिपे हुए थे, भीतर आ गये। भैरोंसिंह और अब्दुल रहमान दोनों कांस्टेबिल बरामदे में सो रहे थे। दोनों ही इस भयानक प्रेत-लीला से भयभीत हो रहे थे। लेकिन काफी आदमी रातोंरात आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियों के लिये अतिरिक्त शक्ति

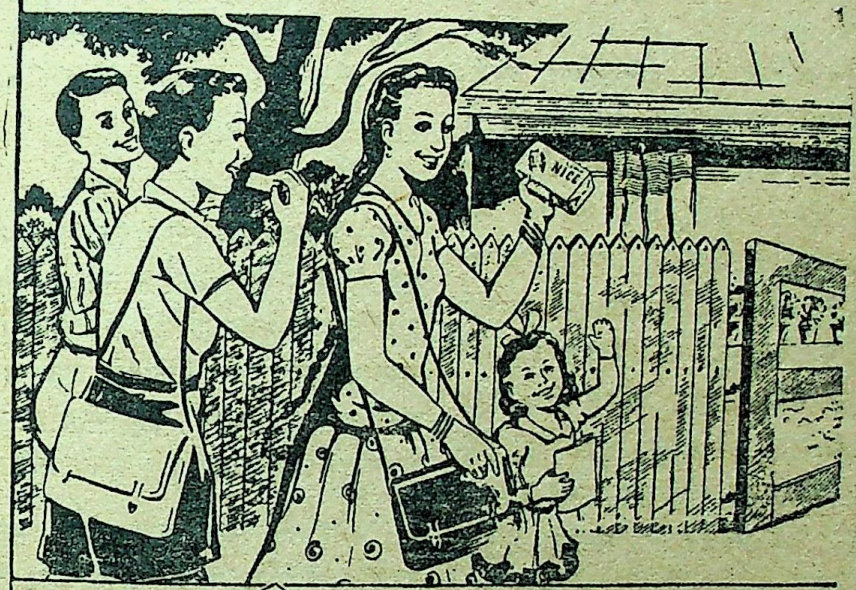

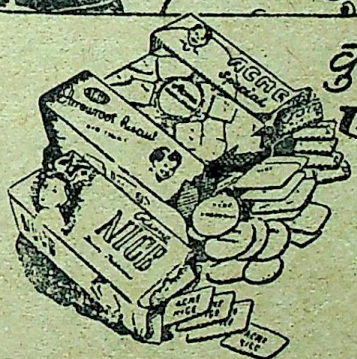

कुरकुरे तथा स्वादिष्ट

एक्मे बिस्कुट

Acme
BISCUITS

एक्मे स्पेशल, नाइस, मरी, कुस्टर्ड क्रीम, क्रीमक्रैकर,
मालटिस, पिटेबरी क्रिनारक्रीम, जिंजरनट,
अरारोटवफर, ग्लूकोज बिस्कुट, किन्डरगार्टन

मोदी बिस्कुट कम्पनी मोदीनगर, यू. पी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायेंगे, इसका आश्वासन इन लोगों को मेरी ओर से मिल चुका था, इस लिए ये दोनों ही भयभीत होते हुए भी मुस्तैदी से डटे हुए थे।"

"लेकिन तुम्हारे साथ तो कुल १२ आदमी थे"—मैंने बात काट कर कहा।

अजयसिंह ने हंसते हुए कहा—"जनाब जब भांग के नशे में झूम रहे थे, तब मैं टहलने नहीं गया था, बल्कि एक आदमी को मैंने रातोंरात शहर दौड़ाया था, और थाने से तीस हथियारबन्द कांस्टेबिल तुरन्त मांगे थे। यह खुशी की बात थी कि वे लोग समय पर पहुँच गये और एक बहुत ही दिलचस्प भंडाफोड़ हो गया। गोकि मुझे भी नशा सा हो रहा था—शायद हमारे भोजन में जिस पानी का प्रयोग हुआ, उसमें इन सब ने छिप कर कोई नशीली चीज मिला दी थी—बहरहाल, यह विश्वास होते ही कि प्रेत समाप्त हो गया, मैं बाहर निकलने की कोशिश करने लगा। इसी समय मुझे मालूम हुआ कि कोई व्यक्ति अलमारी का दरवाजा खोल कर उसमें लुप्त हो गया। दरवाजे के पास पतले-पतले तारों से उलझ कर मुझे कुछ शङ्का सी हुई। मैंने टार्च उठा कर देखा। दरवाजे प्रायः सभी के सभी बुरी तरह जकड़े हुए थे। मैंने एक का पेंच खोल डाला। बाहर भी बुरी तरह भाग दौड़ मची थी। घड़ी में उस समय ४॥ बजा था। किसी प्रकार पेट्रोमैक्स जलाया गया, किन्तु उस वक्त कुछ खतरा देख कर, मैंने चारों ओर पुलिस का पहरा करा दिया। १२ आदमियों को मैंने जंगल के आस पास घेरा रखने के लिये भेजा। उस समय भी मुझे आशंका थी कि इस मकान में कहीं न कहीं से सुरंग अवश्य होगी। सुबह होने पर जब हम लोगों ने उस अलमारी को तोड़ा, तो देखा उसमें नीचे उतरने की छोटी २ सीढ़ियां बनी हुई हैं।"

दारोगा ने विस्मय से आंखें फाड़ कर कहा—"अच्छा! तो आप लोग नीचे गये.....।"

"जी हां, और नीचे जाने पर देखा, जाली नोट बनाने का बहुत-सा सामान फैला हुआ है। ११ आदमी भी पकड़े गये जो अभी तक बन्द हैं। सम्भवतः कुछ भाग भी गये हों या कहीं छिपे हों। अब चाय पी कर उनकी खोज की जायगी।"

कोतवाल साहब ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा—"अब खुला इस लाल कोठी का राज। पिछले कुछ दिनों से यही होता आ रहा है कि यदि किसी ने रात बिताना चाहा इसमें, तो सुबह उसका शव बुरी तरह कुचला हुआ मिलता। इस प्रकार का साहस करने वाले तो इसमें कई लोग आये और ठहरे भी, किन्तु दूसरे दिन जीवित कोई भी नहीं निकला!"

और उस दिन लाल हवेली का चप्पा २ छान डाला गया। बहुत से जाली नोट और सिक्के मिले, जो सरकार ने जब्त कर लिये। आदमियों को गिरफ्तार करके पुलिस ले गई। उसी शाम को अजयसिंह को भी लौट आना पड़ा—उन्हें पूरा किस्सा थाने में लिखाना था और घाव भी काफी थे।

और मैं अब भी सोचता हूँ कि लाल कोठी का प्राचीन इतिहास, बहूरानी, रणवीर और नवोढ़ा नंदरानी के वृद्ध पति क्या वे सब बूढ़े के कल्पना-प्रसूत थे या सत्य? कौन जाने!

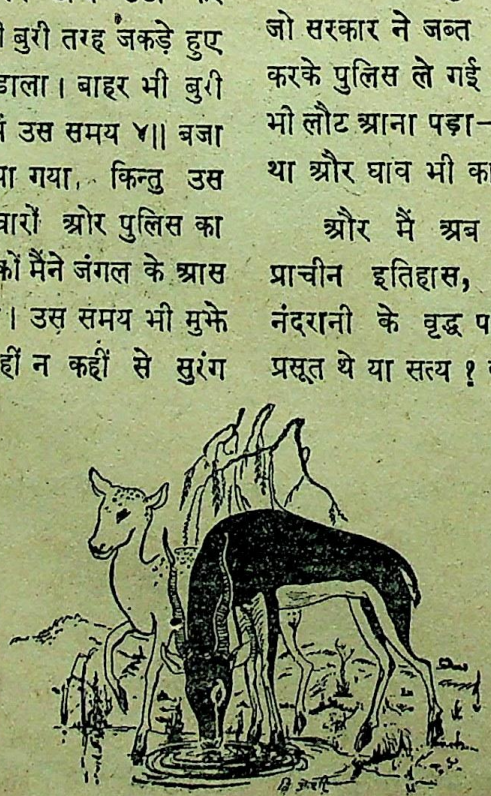

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

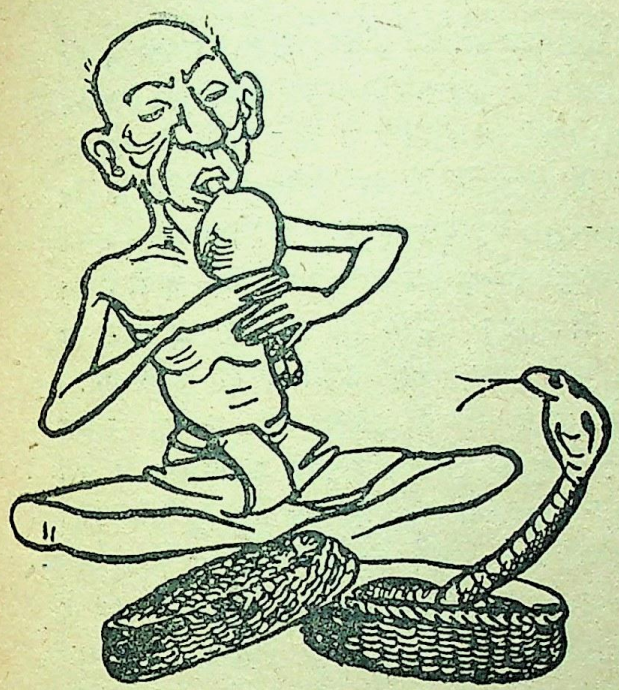

फनियर

श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालङ्कार

★

भगवान् बुद्ध अपने एक पूर्व-जन्म में हजार फनों वाले फनियर सांप के रूप में पैदा हुए थे। देवदत्त ने इस रेंगने वाले जीव को पकड़ लिया। इस पर देवता बहुत क्रुद्ध हुए और उन्होंने देवदत्त को शाप दिया कि तुम्हारी सन्तान सदा के लिये सांप पकड़ने वाली सपेरा बन जायगी। लङ्का के बूढ़े सपेरे अपनी जाति का ऐतिहासिक मूलस्रोत इस कहानी से सुनाया करते हैं।

सांप को पकड़ने में ये लोग बहुत कुशल होते हैं। लङ्का के रहने वाले बौद्ध लोग जीवहिंसा हो जाने के भय से सांपों को मारना तो पसन्द नहीं करते, परन्तु उनके घर के पास या गांव के बाहर समीप ही कहीं फनियर सांप का रहना किसी भी समय खतरे का कारण बन सकता है, इस भय की आशङ्का के कारण उस डरावने फनियर से छुटकारा पाने का सबसे अच्छा उपाय यही समझा जाता है कि सपेरे को बुला कर उसे पकड़वा दिया जाय।

कैसे पकड़ते हैं?

किसी सपेरे को सांप पकड़ते देखना मनोरंजक होता है। सांप मिलने की आशा से दीमकों की बांबी के सामने जमीन पर घुटने उठा कर सपेरा बैठ जाता है और दायें घुटने को इधर-उधर हिलाता हुआ अपनी विचित्र बीन से कुछ मोहक स्वर निकालना आरम्भ करता है। मनोरञ्जन के लिये इकट्ठा हुए दर्शकों के आश्चर्य का उस समय ठिकाना नहीं रहता, जब कुछ ही देर बाद वे सामने बांबी में से निकलते हुए फनियर को देखते हैं। सांप फन उठा लेता है और क्रोध में भरा हुआ मालूम पड़ता है। सपेरा इस की परवाह नहीं करता और उसे पकड़ लेता है।

इस कार्य के लिए सपेरे को अच्छा इनाम दिया जाता है। कभी कभी पुरस्कार पाने के लोभ से वे पकड़े हुए सांपों को अपने थैले में से भी किसी स्थान पर चुपके से छोड़ दिया करते हैं। इनकी यह चाल गांव वाले भोले लोगों पर ही नहीं चलती, बल्कि पढ़े-लिखे शहरी भी इस तरह से ठगे जाते हैं।

फनियर की खोज

जंगल में से सपेरा फनियर को अपने निजू स्वार्थ के लिये पकड़ता है। वह इस से अपनी आजीविका बनाता है। जंगल में सांपों के किसी अच्छे प्रदेश का पता लगा कर वह लाठी और छड़ी ले कर चल पड़ता है। लाठी के अगले सिरे पर लोहे का दोतरफा मुड़ा हुआ अंकुश लगा रहता है। भूमि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर रेंगने के कारण सांप के शरीर से रेत पर बनी लम्बी जाती हुई रेखा से वह उसके जाने का मार्ग निश्चित करता है और उसका अनुगमन करता हुआ वह सांप के निवास पर पहुँच जाता है। इस विश्रामगृह में वह सांप को कुण्डली मारे हुए बैठा पाता है। यह स्थान छोटी छोटी घनी झाड़ियों से बना हुआ कुञ्ज हो सकता है।

सपेरे का कौशल

अब सपेरे को अपनी चतुराई दिखाने का ठीक समय है। एक हाथ से फनियर को लाठी से खींचता हुआ वह दूसरे हाथ की छड़ी से उसे छेड़ता है। सांप खड़ा हो जाता है, गुस्से में भर कर फुङ्कार मारता है और हमला करने के लिए फन ऊपर उठा लेता है। वार करने पर फन नीचे जाते ही लाठी के शिकञ्जे से उस की गरदन दबा ली जाती है और इससे पहले कि वह काटने का कोई प्रयत्न करे, अंगुली और अंगूठे के बीच में उसकी गरदन दबा ली जाती है। उसके विषैले दांत निकाल डाले जाते हैं और सपेरे की पिटारी में रखा जा कर वह घर ले जाया जाता है।

जादू नहीं

सपेरे फनियर सांपों का खेल दिखा कर अपनी रोजी कमाया करते हैं। लोगों में आम विश्वास है कि सपेरे जादू के बल से इन्हें जकड़ लेते हैं। वास्तव में सांपों पर किसी जादू या मन्त्र का प्रभाव नहीं होता। सांप को पकड़ने का मुख्य रहस्य सपेरे का हस्तकौशल ही कहा जा सकता है।

निडर और बुद्धिमान्

फनियर को डरपोक कहना ठीक नहीं। बिल्कुल काले रंग का चार फीट लम्बा एक फनियर मैंने उन्नीस सितम्बर १९४८ को पकड़ा। जब कोई पकड़ने लगे तो दूसरे सांप अपने सिर को छिपा लेते हैं, परन्तु यह फन उठा कर विपत्ति का मुकाबला करने के लिये खड़ा हो जाता है। मैंने इसे सदा बुद्धिमान् और धैर्यवान् जीव पाया है। खैर, उसे पकड़ने के लिए जब मैं पहुँचा तो अनेकों भयभीत दर्शकों के सामने वह फन उठाये शानदार तरीके से फुंकार रहा था। अवसर पा कर वह कमरे के पिछवाड़े से नाली में से बाहर निकलने लगा। नाली का मुंह ईंट से बन्द करने के बाद भी ऊपर के छिद्र में से वह विवेकपूर्ण बुद्धि से मुझे देखता रहा। वह छिद्र भी बन्द कर दिया गया। उसके मुख से लगभग छः इंच की दूरी पर मेरी लाठी ने जब उस की गरदन दबोची तो गुस्से में वह लाठी पर चोट करने लगा और अपने को ही काटने लगा। दूसरी लाठी से मैं उसका फन दबाना चाहता था। परन्तु वह इस रौद्र से और जागरूकता से फन फैलाये खड़ा था कि मुझे इस बात के लिये विशेष सावधानी से काम लेना पड़ा कि लाठी पर चोट करने से कहीं उस के विषैले दांत न टूट जायं। एक बार के दंश से लाठी का सिरा विष से लथपथ हो गया था। लड़ाकू मुर्गों की तरह उसका मुख खुला था और अपनी पैनी क्रुद्ध दृष्टि से वह मुझे लगातार घूर रहा था।

अत्यन्त घातक

हाथ में कहीं जरा-सा घाव हो और लाठी में लगा विष अनवधानता में उससे भी छू जाय तो वह जान लेने के लिए पर्याप्त होता है। अपने शिकार को यह इसी आशुघाती विष से आनन-फानन मार डालता है। गौ, बैल जैसे भारी भरकम जानवरों को भी यह काली रस्सी कुछ घण्टों में शान्त कर देती है।

अहिंसक बन जाता है!

वह काला नाग अब मेरी मेज के सामने ही एक जालीदार पिंजरे में बन्दी है। इस के साथ फुदकते हुए छोटे मेंढक उसे ललचाते नहीं। २३ सितम्बर को मैंने एक चूहा उसे खाने को दिया। वह भी पिंजरे में कूदता रहा। खाना तो दूर रहा, फनियर उसे डस कर मार भी नहीं पाया। चूहे के नये आंखमुंदे चार बच्चे २४ सितम्बर की दोपहर को छोड़े। चौबीस घण्टे का भूखा चूहा तो उन कोमल बच्चों को उतावलेपन से खाने लगा, परन्तु नाग ने नहीं खाये। यम का यह दूत भी बन्दीगृह में इतना अहिंसक हो जाया करता है!

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभ्रवसना

(पृष्ठ २४ का शेष)

सात दिन बाद मंगला से उसकी सगाई का दिन निश्चित कर दिया गया।

पर एकाएक अपने पिता की बीमारी का तार पा कर योगेन्द्र को गांव जाना पड़ा और उस दिन सगाई न हो सकी। तो भी दयाल बाबू बड़ी ही उत्सुकता से प्रतीक्षा करते रहे।

१५-२० दिन बाद योगेन्द्र ने सूखा हुआ चेहरा व क्लान्त शरीर लिए दयाल बाबू की बैठक में प्रवेश किया। उल्लसित हो कर उन्होंने योगेन्द्र का सत्कार करना चाहा, पर उसका उतरा हुआ चेहरा देख कर घबड़ा उठे। योगेन्द्र के पिता की अकस्मात् मृत्यु की बात सुन कर द्रवित हो उठे। आखिर में योगेन्द्र ने बताया कि वह असल में यहां से सदा के लिये अपने जाने की सूचना ही देने आया है। गांव में अकेली मां और छोटी बहिन को निराश्रित छोड़ कर वह अब यहां अधिक देर नहीं ठहर सकता। फिर गांव में उसके पिता की थोड़ी जमीन और एक छोटा-सा मकान है, जिसको लेकर मुकदमा चल रहा है, क्योंकि योगेन्द्र के पिता अपने पुत्र के लिए वसीयत में दस हजार का कर्ज ही छोड़ गए हैं।

दयाल बाबू अकस्मात् अचम्भित से हो गये। और फिर जरा उत्तेजित हो कर बोले—"तुमने तो इस कर्ज का कभी पहले जिक्र तक नहीं किया, योगेन्द्र। आखिर इस हालत में हमें बताना भी तो चाहिए था। यह भी भगवान् की कृपा है कि हमें सगाई से पहिले ही पता चल गया।"

योगेन्द्र कुछ हतप्रभ हो गया। फिर बोला—"आपने कभी मेरे पिता जी को आर्थिक अवस्था के विषय में पूछा भी तो नहीं। फिर अभी तक उस ऋण का बोझ मुझ पर था भी नहीं।"

"खैर, जो भी हुआ, भला हुआ! भगवान् बड़े दयालु हैं, योगेन्द्र। तुम सुखी रहो। अच्छा, तो तुम कब गांव जा रहे हो?"

योगेन्द्र एक प्रकार की हार्दिक शांति पा कर भी इस वृद्ध की बातों में विरक्ति और स्वार्थ का आभास पा जला जा रहा था। पिता की मृत्यु के बाद से जो ढेर की ढेर मुसीबतें उस पर आ गईं, उनके लिए सांत्वना और सहायता की आशा लिए वह यहां आया था। पर मिला क्या—निरादर। वह जल कर बोला—"कल रात की गाड़ी से जाने का इरादा है।"

"प्रभु की इच्छा!" आंखें बंद करके कुर्सी का सहारा ले कर लेटते हुए दयाल बाबू ने कहा—"तो मुनि की मां से मिलोगे न?"

"आप ही उनसे मेरी नमस्ते कह दीजिएगा।" योगेन्द्र एक बार—अन्तिम बार माधुरी को देखने की हठीली साध हृदय में दबाये तेजी से घर से बाहर हो गया।

अगले दिन सायङ्काल सामान आदि बांध कर योगेन्द्र अपने कमरे में एक जीर्ण सी आराम कुर्सी पर पड़ा हुआ गाड़ी के समय की प्रतीक्षा में अपने जीवन की गुत्थियों में उलझा, अलसाया-सा थका पड़ा था। यहां से सदा के लिये जाते समय न जाने क्यों एक शुभ्रवसना नारी-मूर्ति उसके हृदय को बांधने का अनवरत प्रयत्न कर रही थी। पर वह बन्धन मुक्त पंछी की तरह उड़ना चाहता था।

"एक घण्टा," आस पास के सूनेपन से ऊब कर घड़ी पर दृष्टि गड़ाये वह बुदबुदाया, "केवल एक घण्टा है और मैं सदा के लिये यहां से दूर चला जाऊंगा। फिर कभी उसे देख पाऊंगा, इसमें भी शक है। काश, एक बार उसे फिर देख पाता—फिर प्यार की भीख मांग पाता। अब तो वह इन्कार भी न कर पाती, क्योंकि आज मैं भी उस जैसा ही दुखी हूँ। हम दोनों साथ २ जीवन व्यतीत करते हुए अपने कष्टों को भुला सकते। नहीं, यह सब कुछ नहीं हो सकता। वह अब मेरे लिए आकाश-कुसुम है...।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काफी देर तक यों ही बुदबुदाने— अपनी साधों की समाधि पर आंसू बहाने के बाद योगेन्द्र ने फिर घड़ी को देखा। स्टेशन पर जाने का समय हो गया था। वह तांगा लाने के लिये सीढ़ियों से उतर रहा था कि नीचे सायंकाल के झुटपुटे में एक शुभ्रवसना नारी को देख कर स्तब्ध-सा रह गया। तभी एक मधुर और कांपती हुई आवाज ने कहा— "मैं हूँ, माधुरी!"

"मधु!" योगेन्द्र ने दो बार आंखें मल कर देखा और फिर साक्षात् माधुरी को सामने पा कर विस्मित हो कर बोला—"तुम यहां?"

माधुरी चुप रही।

"जीने में क्यों खड़ी हो? आओ, मेरे साथ ऊपर चलो!"

"नहीं, आपको देर हो रही है, जाइए, तांगा ले आइए!"

"कुछ देर नहीं हुई, मधु। पांच-दस मिनट बैठो। अभी तांगा आ जाएगा। फिर तो तुम्हें कभी देख भी न पाऊंगा। तुम तो जान गई होगी कि पिता जी को खो कर मैं किस मुसीबत में पड़ गया हूँ यहां यह सोच कर आया था कि शायद तुम्हारे पिता जी से कुछ सहायता पा सकूं - रुपये की नहीं तो डिग्री की तारीख पीछे हटवाने में ही, पर..."

माधुरी मुख फेर कर अपने उमड़ते हुए आंसुओं को रोकने का प्रयास कर रही थी। उत्तर न पा कर योगेन्द्र उसके चेहरे को ध्यानपूर्वक देख कर शान्त स्वर में बोला—"तुम रोती हो, मधु? कुछ नहीं, सब ठीक हो जाएगा।"

माधुरी ने आंसू पोंछ डाले और संयत हो कर कहा—"देर हो रही है, जाइए, तांगा ले आइये। मैं तब तक बैठी हूं।"

पता नहीं क्यों योगेन्द्र इस आज्ञा को टाल न सका। बिना इधर-उधर कुछ देखे तेजी से तांगा लेने चला गया। मनमें प्रसन्न था कि ईश्वर ने अभिलाषा पूरी कर दी— जाते समय माधुरी से भेंट हो गई, उसे एक बार देख लिया...यदि जीवन भर के लिये मिलना संभव नहीं तो इतना ही सही...!

तांगा ले कर लौटते समय योगेन्द्र ने नीचे दरवाजे पर एक बक्स और छोटा-सा बिस्तरा देखा। क्षण भर के लिए उसके दिमाग में बिजली सी कौंध गई। ऊपर पहुँचा तो देखा कि माधुरी सामान उठा उठा कर आंगन में जमा करने का प्रयास कर रही थी। योगेन्द्र को देखते ही हंस कर बोली—'ओफ, इतना भारी सामान है आप का! मैं तो थक गई।"

योगेन्द्र ने उसकी बात पर बिना ध्यान दिए पूछा—"यह नीचे क्या तुम्हारा सामान पड़ा है, मधु?"

"हां!" कुछ अकचका कर माधुरी ने कहा— "मेरा ही सामान है वह। आश्चर्य हुआ क्या आपको? आप ही ने तो एक दिन मुझे कहा था कि आवश्यकता पड़ने पर मैं निःसंकोच आपके पास आ सकती हूँ। सो आज मुझे आपके सहारे की आवश्यकता है! और...और मैं समझती हूँ, अब यह अनुचित भी नहीं है।"

योगेन्द्र की आंखें भर आईं। मधु को अपनी छाती से लगाते हुए आर्द्र कण्ठ से बोला—"मधु मेरी रानी, तुम जानती हो कि आज मुझे भी तुम्हारे सहारे की आवश्यकता है। तुम मेरा सम्बल बन कर आई हो।"

माधुरी आंसुओं के बीच लजा कर मुस्करा दी।

★

मनोरंजन
का
वार्षिक मूल्य
५॥) रु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम

इस स्तम्भ में प्रतिमास संपादक के नाम आये पाठकों के कुछ चुने हुए पत्र प्रकाशित किये जाते हैं और सर्वोत्कृष्ट पत्र पर पांच रुपये का पुरस्कार दिया जाता है। पत्र सार्वजनिक हित व रुचि के किसी भी विषय को लेकर लिखा जा सकता है।

पत्र संक्षिप्त, स्पष्ट और सुरुचिपूर्ण होना चाहिये और उसके साथ 'मनोरंजन-पत्र-प्रतियोगिता कूपन' आना चाहिये।

'सेवा-समय-कोष'

समय ऐसा धन है, जिसकी उपयोगिता तथा मूल्य में कोई भी सांसारिक वस्तु नहीं ठहर सकती। यह ईश्वर-प्रदत्त है। यह सभी के पास किसी न किसी मात्रा में विद्यमान है। परन्तु जिस प्रकार धन के सदुपयोग को न जान कर हम उसे व्यर्थ के कामों में खर्च कर देते हैं, उसी प्रकार इसे भी। कौन नहीं जानता कि हमारे समय का कितना भाग व्यर्थ के प्रमाद और गप-शप में चला जाता है।

पुरस्कृत पत्र

राष्ट्र तथा समाज सेवा का प्रत्येक महान कार्य एक व्यक्ति द्वारा सम्पन्न नहीं हो सकता। बड़े-बड़े विशाल भवन, जिन्हें बड़े बड़े धनिक और राजे तथा नवाब भी नहीं बनवा सके, अनेकों लोगों की आर्थिक और शारीरिक सहायता से सरलता से निर्मित हो गए हैं।

लोग पैसा फंड स्थापित करते हैं। यही एक-एक पैसा इकट्ठा हो कर बड़े-बड़े महान कार्यों का होना संभव कर देता है। इसी प्रकार हम क्यों न एक ऐसा फंड स्थापित करें, जिसमें समय की एक-एक इकाई को इकट्ठा करके राष्ट्र-निर्माण के कार्य में लगावें, जिसकी आज अत्यन्त आवश्यकता है? जिन सज्जनों का मन यह कहता हो कि हमें बिल्कुल समय नहीं, वह हृदय को टटोल कर देखें। क्या उन्हें सप्ताह में १ घंटा भी ऐसा नहीं मिलता, जिसे वह समाज-सेवा-कार्य में लगा सकें महीने में एक दिन अथवा वर्ष में ही एक दिन सही, दे देना किसके लिए असम्भव है। संगठित और आयोजित रूप में यह १ घंटा या १ दिन कितने मूल्य का होगा, इसे विचारवान् समझ सकते हैं अतः आवश्यकता इस बात की है, कि प्रत्येक नगर जिला तथा प्रान्त में ऐसा संगठन किया जावे, जिसके अंतर्गत "सेवा-समय कोष" की स्थापना की जावे और उसके ऐसे लोग मेम्बर बनाए जावें जो—

(अ) प्रति सप्ताह १ दिन दें,
(ब) ,, ,, १ घंटा दें,
(स) ,, मास १ दिन दें,
(द) ,, वर्ष १ सप्ताह दें,
(भ) प्रति दिन १ घंटा दें।

इनका क्रम ठीक ठीक बना लिया जावे। जो लोग फुटकर समय देना चाहें उनका भी कोष में ले लिया जावे। तत्पश्चात् कार्यों की सूची बनाई जावे और यथायोग्यता और यथाशक्ति उन्हें कार्य दिया जावे।

हमारा १ घंटा अलग से कोई विशेष मूल्य नहीं रखता, किन्तु एक सामूहिक और पूर्वायोजित कार्य में वह उसी प्रकार बहुमूल्य हो जावेगा, जिस प्रकार एक पैसा एकत्रित रूप में महान कार्यों के सम्पादन का सौभाग्य प्राप्त करता है।

इस आयोजन से सहानुभूति रखने वाले सज्जन पत्र व्यवहार करें।

मुमुक्षु आश्रम शाहजहांपुर — रामाधार पाण्डे

★

कवि की बात का विश्वास नहीं!

'मनोरंजन' के विशेषांक में प्रकाशित श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' की कवि' अंचल' से हुई भेंट का विवरण मैंने बड़ी दिलचस्पी से पढ़ा। उसमें अंचल जी ने आलोचकों के इस कथन से असहमति प्रकट की है कि उनकी कविता में असंतोष, तृष्णा और नग्नता का प्रदर्शन है और उनमें कलाकार के योग्य संयम की कमी है। अंचल जी मानें चाहे न मानें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन मैं समझती हूँ कि उनके सम्बन्ध में आलोचकों द्वारा प्रकट की गई उपर्युक्त सम्मति सोलह आने सही है। दूर न जाकर मैं केवल उन्हीं कविताओं को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करती हूँ, जो समय समय पर आपके 'मनोरंजन' में ही प्रकाशित होती रही हैं।

जबलपुर —तृप्ति देवी

★

राष्ट्रभाषा का प्रश्न

यदि हम विकासवाद के—जिसका खण्डन अब पाश्चात्य विद्वानों ने ही कर दिया है—भ्रम में न पड़ें, तो यह बात निर्विवाद है कि सृष्टि के आरम्भकाल में संसार भर के मानव की भाषा संस्कृत—वेदभाषा थी, जिसे ऋषियों ने अपनी पवित्र-समाधि में वेदरूप में पाया। जब आकाश-तत्व प्रकट हुआ तो आकाश-गुण शब्द भी वर्णात्मक रूप में क्रिया-कारकमय प्रकट हुआ। इस प्रकार संस्कृत भाषा ईश्वरकृत है, मनुष्यकृत नहीं। संस्कृतभाषा के अनादित्व या चिरन्तनत्व साधन के लिए केवल परिशेषानुमान ही नहीं, वाल्मीकि रामायण में प्रचुर-प्रमाण भी प्राप्त होते हैं। तो पहले संस्कृत ही हमारी व्यवहार भाषा थी। धीरे २ देश-काल-पात्र के अनुसार उच्चारण-वैकल्प से उसी संस्कृत के अनेक अशुद्ध-रूप भी हो गये। आज भारत को अपने जिस अतीत का महा-गौरव है, वह संस्कृत भाषा मूलक ही है। अब स्वतन्त्र भारत में देवनागरी लिपि यदि राष्ट्रलिपि के योग्य है, तो संस्कृत के राष्ट्रभाषा होने में क्यों आपत्ति होती है? राष्ट्रभाषा का अर्थ है राष्ट्र की प्रधान भाषा। जबकि सर्वसाधारण को अंग्रेजी का ज्ञान नहीं रहने पर भी अंग्रेजी राष्ट्रभाषा थी, तो संस्कृत भी इस समय क्यों राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती? संस्कृत का तो विश्व भर के साथ एक रूप में सम्बन्ध भी है, यह लाभ हिन्दी में कहां? यदि आज हम थोड़ा कष्ट सह कर भी संस्कृत को राष्ट्रभाषा मान लें, तो कुछ वर्षों के बाद की अवस्था कितनी महान हो जायगी, यह सोचिये तो!

झांसी —शिवशरण झा

★

'श्री' पुरुषों के लिए या स्त्रियों के लिए?

इधर कुछ महीनों से हिन्दी-अंग्रेजी तथा मराठी के कई एक समाचार-पत्रों में यह चर्चा चल रही है कि 'श्री' शब्द का प्रयोग पुरुष के नाम के साथ होना चाहिए या नहीं। प्रायः 'श्रीयुत' 'श्रीमान्' आदि शब्द पुरुष के लिए ही व्यवहृत होते हैं। स्त्रियों के नामों के साथ 'कुमारी', 'सुश्री', 'श्रीमती' आदि शब्दों का अवस्थानुसार व्यवहार होता है—कुमारियों के लिए 'कुमारी' व विवाहित स्त्रियों के लिए 'श्रीमती'। 'सुश्री' शब्द विवाहित व अविवाहित दोनों प्रकार की स्त्रियों के लिए प्रयुक्त होता है। इन शब्दों का प्रयोग उचित भी है और सुन्दर भी है। किन्तु पुरुषों के साथ 'श्री' शब्द का प्रयोग व प्रचलन तो बहुत ही आपत्तिजनक है। यदि व्याकरण-सम्मत दृष्टिकोण से देखा जाय तो यह स्पष्ट ही है कि 'श्री' शब्द स्वयं ही स्त्रीलिंग की श्रेणी में व्यवस्थित एवं सुरक्षित है। 'श्री' शब्द के अर्थ हैं—लक्ष्मी, सुषमा, सौन्दर्य, छवि, लावण्य कान्ति, रूपाभ, आदि। तो इस स्त्रीलिंग शब्द को पुल्लिंग शब्द के साथ जोड़ने की परिपाटी तो एक तरह से व्याकरण के नियमों के विरुद्ध ठहरती है। हिन्दी विशुद्ध वैज्ञानिक भाषा है और अब तो वह राष्ट्रभाषा का मुकुट पहनने जा रही है। अतएव हमें इस बात का पूरा पूरा ध्यान रखना जरूरी है कि हमारे हिन्दी-शब्दों का अशुद्ध प्रयोग न हो और हिन्दी कभी अवैज्ञानिक व संकुचित न होने पावे। हम देख रहे हैं कि आये दिन हमारी हिन्दी के कई लब्ध प्रतिष्ठ कलाकार शब्दों का गलत चयन व प्रयोग करते हैं। ऐसे अशुद्ध प्रयोगों के परिणाम स्वरूप व्याकरण के महत्व का घटना स्वाभाविक है। अतएव मैं जोर देकर कहना चाहूँगा कि 'श्री' शब्द केवल स्त्रियों के नामों के साथ ही प्रयुक्त हो। 'सुश्री' की भांति 'श्री' भी विवाहित एवं अविवाहित दोनों प्रकार की स्त्रियों के लिए ही व्यवहृत हो सकता है। 'श्री' और 'सुश्री' में कोई अन्तर नहीं है।

धरमपेठ, नागपुर, —कुमार साहू 'सिद्धांत-भास्कर'

कूपन

मनोरंजन-पत्र-प्रतियोगिता नं० ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताऊ जी अपनी ७७ वीं वर्षगांठ मना रहे थे। इस वृद्धावस्था में उनका स्वास्थ्य देख कर नवयुवकों को भी ईर्ष्या होती थी। बधाई देने के लिये एकत्रित हुए मित्रों और सम्बन्धियों से ताऊ जी बोले—'लीजिये अपनी दीर्घायु और स्वास्थ्य का रहस्य मैं आप को बताता हूँ। मेरे विवाह को आज साठ वर्ष हो गये हैं। विवाह की पहली ही रात मैंने और मेरी पत्नी ने यह प्रतिज्ञा की थी कि जब कभी हम आपस में लड़ें तो जो दोषी सिद्ध हो, वह घर से बाहर जा कर कुछ देर घूमे। तो बंधुओ पिछले साठ साल से मैं लगातार खुली हवा में घूमता रहा हूं!"

* * *

नाटक के उस दृश्य की 'रिहर्सल' हो रही थी, जिसमें नायक बड़े गौरव के साथ मरता है। अभिनेता बार बार मरने का अभिनय करता, परन्तु निर्देशक को पसंद न आता। अंत में निर्देशक झुंझला कर बोला—"अरे भई, मरने में कुछ सजीवता पैदा करो, सजीवता!"

* * *

वैसे तो गाड़ी रास्ते में जगह-जगह रुकती आ रही थी, परन्तु एक स्टेशन पर आ कर तो ऐसी रुकी कि जैसे यात्रा के अंत पर पहुँच गई हो। जबकि सभी मुसाफिर झुंझला रहे थे, गार्ड महोदय बड़े आराम से प्लेटफार्म पर टहल रहे थे। एक मुसाफिर ने आगे बढ़ कर पूछा—"क्यों जी, इंजन में कुछ गड़बड़ी हो गई है?"

"नहीं तो," गार्ड ने उत्तर दिया, "बस, पानी ले रहे हैं।"

"ओह" वह मुसाफिर बोला, "लगता है कि उनके पास सिर्फ एक ही चम्मच है!"

* * *

"कहो भई तुम्हारा जुकाम ठीक हुआ कि नहीं?"

"नहीं, मित्र। लगता है, इससे अब जीवन भर पिण्ड नहीं छूटेगा।"

"यह तो बुरी बात है। किसी अच्छे डाक्टर से इलाज करवाओ...। अरे हां, तुम्हारी श्रीमती जी का क्या हाल है?"

"जो जुकाम का!"

* * *

दो आदमी, जो विवाहित थे, एक चित्र-प्रदर्शनी में घूम रहे थे। दोनों ही स्त्री के एक अत्यंत सुंदर तथा भावपूर्ण चित्र के सामने खड़े हो गये। उस चित्र का नाम था 'प्रतिध्वनि'। उसे देखते हुए एक ने विचार प्रकट किया—"कलाकार ने प्रतिध्वनि को शायद इस लिये स्त्री के रूप में चित्रित किया है कि अंत में स्त्री की ही बात मानी जाती है!"

दूसरे ने सहमति प्रकट करते हुए कहा, "हां! और शायद इस लिये भी कि किसी के बोलने पर ही प्रतिध्वनि बोलती है!"

* * *

पति बहुत बड़े अफसर थे। एक दिन श्रीमती जी बिना पूर्वसूचना के एकाएक दफ्तर में जा पहुंचीं और १६-१७ वर्ष की अत्यंत सुन्दर स्टैनोग्राफर लड़की को घूरती हुई पति महोदय से बोलीं, "तुम तो कहते थे कि मेरी स्टैनोग्राफर एक अधेड़ उम्र की स्त्री है!"

पति महोदय हतप्रभ से हो कर हकलाने लगे और फिर बोले, "हां हां, मैंने ठीक ही तो कहा था। वह बीमार है और आज अपनी जगह पर उसने अपनी छोटी लड़की को भेज दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुरूप स्त्री भी सुन्दर हो सकती है, यदि....

सुश्री कीर्त्ति चौधरी

अछूता सौंदर्य वह साधन है, जो छोटे से लेकर बड़े तक को आकर्षित करने की शक्ति रखता है। सौंदर्य से परिपूर्ण शरीर की ओर भला किस की आंखें न उठ जायेंगी? फिर स्त्री का तो गुण ही सौंदर्य है। सौंदर्य-विहीन स्त्री का जीवन, जीवन नहीं। एक सुन्दर स्त्री के जीवन के क्षण उतनी ही सुन्दरता से व्यतीत होते हैं, जितनी वह सुन्दर होती है। उसको जीवन के किसी भी क्षेत्र में असफलता नहीं मिलती।

सौंदर्य दो प्रकार का होता है—एक तो ईश्वर-प्रदत्त और दूसरा मानव-प्रदत्त। ईश्वरीय देन तो मनुष्य को मिलती ही है, पर वह अपने आप को अपनी देन से भी बहुत कुछ संवार सकता है। हमारी बहुत-सी बहनें अपनी कुरूपता पर दुखी हो कर कहती हैं—"हमें ईश्वर ने सुन्दर बनाया ही नहीं, हम क्या करें।" पर यदि वे यह कहने की अपेक्षा अपनी कुरूपता को दूर करने की किंचित् भी चेष्टा करें, तो वे सुंदर बन सकती हैं। कौन कह सकता है कि एक सौंदर्यहीन अंकुर से एक सौंदर्ययुक्त पुष्प नहीं प्रस्फुटित हो सकता? वैसे ही यदि हम चाहें तो अपनी कुरूपता को सौंदर्य में बहुत अंशों में बदल सकते हैं।

हमारे मन के भावों का प्रभाव हमारे शरीर पर बहुत अधिक पड़ता है। एक विद्वान का कथन है कि "सुन्दरता का उद्गम-स्थान हृदय है और प्रत्येक अच्छा विचार शरीर को सजाता है।" यदि हम इस कथन पर विचार करें तो इसकी यथार्थता भलीभांति प्रकट हो जायेगी। सचमुच जिसके विचार पवित्र और उच्च होते हैं, वह गन्दे विचार वालों से अधिक सुन्दर प्रतीत होता है। सच्चे हृदय से मनुष्य जो बनने की चेष्टा करता है, वह एक दिन वैसा ही बन जाता है। मनुष्य की मनःशक्ति ही सबसे बड़ी शक्ति है। अतः हमें अपने शरीर को सुन्दर बनाने के पूर्व मन को स्वच्छ और सुन्दर बनाना चाहिये।

इसके अतिरिक्त हमें अपनी आकृति की ओर भी विशेष ध्यान देना चाहिये। यदि हम एक झुंझलाहट से भरे मुख और एक मुस्कराते हुए मुख की ओर देखें, तो हमें मुस्कराता हुआ मुख ही भला प्रतीत होगा; क्योंकि मनुष्य का स्वभाव सौंदर्यप्रिय है। इस लिये हमें अपनी बाह्य सुन्दरता के लिये अपनी चाल-ढाल व आकृति को सुधारना चाहिये। हर समय चिड़चिड़ाने और नाराज रहने से मुख का भोलापन नष्ट हो जाता है और चेहरे पर कटुता के चिह्न अंकित हो जाते हैं, जो बड़े ही अनाकर्षक लगते हैं। इस लिये हमें प्रसन्न रहने की भरसक चेष्टा करनी चाहिये। गुलाब के फूल की तरह खिला हुआ चेहरा सभी को अच्छा लगता है। एक मधुर मुस्कराहट चेहरे को न्यारा बनाने में सहायक होती है। एक मुस्कराते हुए मुख में स्वयं सुन्दरता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसती हुई प्रतीत होती है।

पर मुस्कराना भी एक कला है। भिन्न-भिन्न मुखों पर भिन्न-भिन्न तरह की मुस्कराहट भली लगती है। किसी का मुख मन्द-मन्द हंसने में अच्छा लगता है और किसी का खिलखिला कर। जिन स्त्रियों के दांत बड़े हों, उन्हें चाहिये कि इस भांति मुस्कराएं कि दांत बाहर न निकलें। जिनके दांत बड़े न हों, उनका उन्मुक्त हास भी भला लगता है। जिन स्त्रियों के ओंठ मोटे या अधिक फैले हों, उन्हें थोड़ा-सा ओंठ दबा कर हंसना चाहिये, नहीं तो ओंठ और भी अधिक फैल जाते हैं, जो बड़े बुरे लगते हैं। मोटे ओंठों वाली स्त्री को भी यही ध्यान में रख कर हँसना चाहिये जिसके पतले ओंठ हों, उसे खिलखिला कर हंसना चाहिये।

सच्चे सिले हुए और सलीके से पहने हुए कपड़े भी कुरूप को सुन्दर बना देते हैं।

इन सब छोटी-छोटी और साधारण बातों पर यदि हम सब किंचित् भी ध्यान दें, तो हमारी मुस्कराहट में सजीवता आ जाएगी।

ओंठों के साथ ही साथ मुस्कराहट को सजीव बनाने में दांतों पर भी कुछ उत्तरदायित्व रहता है। सच तो यह है कि मुस्कराहट की आधी सजीवता दांतों पर ही निर्भर करती है। इसी लिये दांतों की स्वच्छता पर भी हमें विशेष ध्यान देना चाहिये। दांतों की स्वच्छता का हमारे यहां आदिकाल से महत्व है; यहां तक कि उन्हें बिजली की चमक और अनार के दानों की उपाधि मिली है। स्वच्छ, चमकते हुए दांतों में स्वतः ही ऐसा आकर्षण होता है जो दर्शक को अपनी ओर खींच लेता है। दन्तावली को सुदृढ़ और सुन्दर बनाने के लिये हमें अपने खाद्य-पदार्थों पर भी ध्यान देना चाहिये।

फल-फूल, सादा भोजन तथा ताजा पानी दांतों को स्वच्छ, चमकीला तथा मजबूत रखता है। दांतों की सफाई छोटी से लेकर बड़ी आयु तक अत्यंत सावधानी से करनी चाहिये। मन्दाग्नि और पेट की खराबी से दांत रोगी हो जाते हैं, अतः इस विषय में विशेष ध्यान रखना चाहिये।

मधुर कंठ-स्वर भी सौन्दर्य का एक अंग है। मधुर भाषा, मधुर वाणी मधुर कंठ स्वर, मधुर विषय—सबके मेल से ही वाणी का सौंदर्य होता है। हर समय चिल्ला कर बोलने से, चीखने से स्वर कर्कश हो जाता है, जो कानों को बड़ा अप्रिय लगता है।

मुख और कंठ-स्वर के अतिरिक्त अन्य अंगों को भी सुंदर बनाने का प्रयास करना चाहिये।

केशों से भी मुख की सुंदरता बहुत कुछ बढ़ जाती है। इस विषय में भी सतर्क रहना चाहिये। केश-विन्यास सदैव मुख की आकृति को देख कर ही करना चाहिये।

इसके अतिरिक्त सौंदर्य के लिये शारीरिक स्वास्थ्य भी आवश्यक है। रोगी शरीर कभी भी सुन्दर नहीं हो

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रफू करने की कला

कुमारी शैलबाला

फटने या कीड़ा लगने से खराब हुए कपड़े के छेद को धागों से भरने के काम को रफू करना कहते हैं। यह बड़ी उपयोगी कला है। इससे बहुमूल्य ऊनी तथा रेशमी कपड़े बचाये जा सकते हैं। सर्दियों के आरम्भ होते ही जब ट्रंकों और सन्दूकों से ऊनी कपड़े पहनने के लिये निकाले जाते हैं, तो कभी कभी उनमें कीड़ा लगने से छेद हो गये होते हैं। रफू करके इन छेदों को इस तरह भरा जा सकता है कि छेद या फटी हुई जगह दिखाई तक न दे।

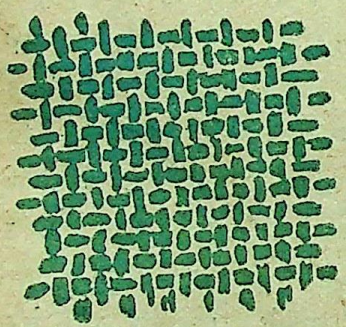

नं० १

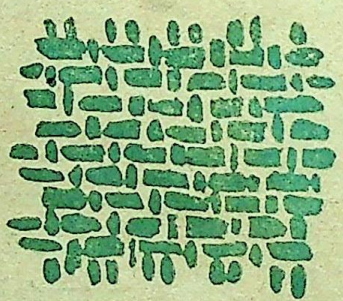

नं० २

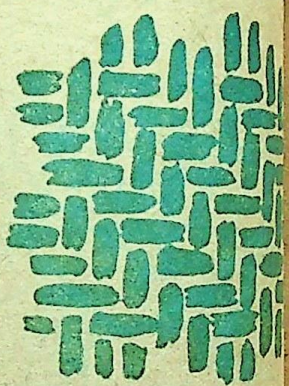

नं० ३

रफू करने की यह कला न तो कठिन है और न ही पेचीदा है। इसके लिये थोड़ी-सी सूझ-बूझ और धैर्य की ही आवश्यकता है। जिस कपड़े को रफू करना हो, सब से पहले उसकी बुनावट भली-भांति समझ लेनी चाहिये। मूल रूप से वस्त्रों की बुनावट तीन प्रकार की होती है—जैसा कि तीनों चित्रों से स्पष्ट है। पहली बुनावट (चित्र १) तो बिल्कुल सादी है—सीधा ताना और फिर उसके ऊपर सीधा-सादा बाना। दूसरे प्रकार की बुनावट 'टविल्ल बुनावट' कहलाती है (चित्र २)। इसमें ताना तो सीधा होता है, परन्तु बाने के धागे पहले एक और फिर दो को छोड़ कर ऊपर नीचे होते जाते हैं। तीसरे प्रकार की बुनावट 'हैरिंगबोन बुनावट' कहलाती है (चित्र ३)। इस का प्रयोग ट्वीड तथा अन्य भारी ऊनी वस्त्रों में होता है। इसमें बाने के धागे दो दो को छोड़ कर इस तरह ऊपर नीचे आते हैं कि तिरछे से लगने लगते हैं।

वस्त्र की बुनावट समझने के लिये तनिक धैर्य से काम लेना चाहिए। सब से अच्छा तरीका यह है कि भरे जाने वाले छेद के आस-पास के धागों को जरा छील कर लिया जाये, बुनावट का डिजाइन तुरन्त समझ में आ जायेगा। इसी बुनावट के अनुसार बारीक सुई से धागों को—रंगों को ध्यान में रखते हुए—पहले ताने के रूप में डालिये और फिर बाने के रूप में।

रफू के लिए धागे कोई दूसरे नहीं, बल्कि उसी कपड़े की सीवनों या फालतू पट्टी से निकालिये। धागे बहुत लम्बे नहीं होने चाहियें—छेद से एक-दो इंच बड़े हों तो ठीक है। यदि कपड़े की बुनावट में दो-तीन रंग हों, तो वैसे ही रंगों के धागे निकाल लीजिए। धागों से छेद को आर-पार भरते हुए उन के जो सिरे बचें, वे कपड़े की उल्टी तरफ रहने चाहियें। बाद में कैंची से फालतू सिरे काट दिये जा सकते हैं।

यही है रफू करने की कला!

(पृष्ठ ४७ का शेष)

सकता। शारीरिक स्वास्थ्य के लिये व्यायाम बहुत आवश्यक है। व्यायाम से प्रत्येक अंग की गठन आकर्षक हो जाती है।

इस प्रकार केश, मुख, सुडौल अंग, हाव-भाव, स्वर, वाणी, चाल-ढाल तथा पोशाक सभी के उचित होने से सौंदर्य-रूपी सोने में मानों सुगन्ध उत्पन्न हो जाती है।

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

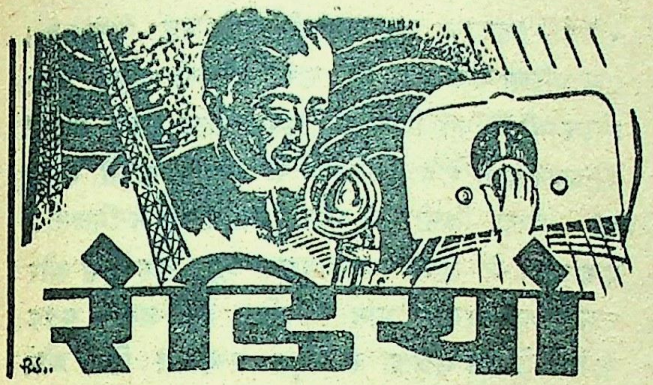

यदि टेलीविजन भी हो....

श्री कलाधर

रेडियो की भांति टैलीविजन भी आधुनिक युग का एक चमत्कारपूर्ण वैज्ञानिक आविष्कार है। जैसे रेडियो द्वारा सैकड़ों मील दूर की ध्वनि को रेडियो-सेट पर सुना जा सकता है, उसी तरह टैलीविजन नामक विद्युद्यंत्र की सहायता से सैकड़ों मील दूर के दृश्य को पर्दे पर देखा जा सकता है। रेडियो के साथ इस यन्त्र के प्रयोग से रेडियो का कार्यक्रम श्रव्य के अतिरिक्त दृश्य भी हो जाता है। अमरीका और ब्रिटेन के रेडियो में अब इसका प्रयोग होने लगा है। रेडियो-सेट पर एक शीशा-सा लगा रहता है, जिस पर वक्ता अथवा गायक का चित्र उसी तरह आ जाता है, जिस तरह सिनेमा के पर्दे पर आ जाता है।

खेद है कि अभी यह टैलीविजन भारतीय रेडियो द्वारा प्रयुक्त नहीं होने लगी। इस के अभाव में भारतीय रेडियो से प्रसारित होने वाला कार्यक्रम केवल सुना ही जा सकता है। रेडियो-सेट के पास बैठा हुआ व्यक्ति यह नहीं देख सकता कि भाषण-कर्त्ता, गायक अथवा अभिनेता की शक्ल सूरत कैसी है, बोलते या गाते समय उसकी मुख-मुद्रा कैसी होती है, वह क्या क्या आंगिक चेष्टायें करता है (या करती है)। किसी मधुर-मोहक वाणी को सुनकर रेडियो-श्रोता के मन में उसके स्वामी अथवा स्वामिनी को देखने की उत्कट अभिलाषा का उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि रस-परिपाक के लिए श्रवणेन्द्रिय के साथ-साथ चक्षुरिन्द्रिय की तृप्ति भी आवश्यक है। लेकिन टैलीविजन के अभाव में श्रोता को ध्वन्यात्मक संकेतों के सहारे प्रत्येक बात के कल्पना-चित्र से ही संतुष्ट होना पड़ता है। केवल यही नहीं, रेडियो-श्रोता उन मनोरंजक घटनाओं को देखने से भी वंचित रह जाता है, जो कार्यक्रम प्रसारित होते समय रेडियो-स्टेशन के लाल बत्ती वाले बन्द कमरे में कभी कभी घटित हो जाती हैं और जिनका कोई ध्वन्यात्मक अस्तित्व नहीं होता।

रेडियो-स्टेशन के उस कमरे में, जहां से कार्यक्रम प्रसारित होता है, वक्ता या गायक के सामने एक लाल बत्ती लगी होती है। उसके जलते ही कार्यक्रम प्रारम्भ हो जाता है और जब तक वह बत्ती जल रही हो तब तक वक्ता या गायक या वाद्ययंत्रों के स्वर के अतिरिक्त किसी अन्य आवाज का निषेध होता है। उस कमरे में जो भी कोई ध्वनि होगी, वह 'माइक' की सहायता से तुरन्त ब्राडकास्ट हो जायेगी। अतः उस समय कोई भी न तो निजी बातचीत करता है, न खांसता है और न हँसता है। एक दूसरे पर अपना मनोभाव अथवा आशय संकेतों द्वारा ही प्रकट किया जाता है। मान लीजिये कि कोई वक्ता फ्रण्टियर मेल की गति से भाषण दे रहा है। अब रेडियो का कर्मचारी उसे मुंह से यह नहीं कह सकता—"महाराज, जरा ब्रेक लगा कर चलिये!" अधिक से अधिक वह हाथ के संकेत से ही समझा सकता है या चिट लिख कर अपना आशय प्रकट कर सकता है। इसी ध्वनि-निषेध के कारण कभी कभी स्टुडियो के अन्दर कई तरह के प्रिय-अप्रिय काण्ड हो जाते हैं।

एक बार एक सज्जन घोर नशे की अवस्था में स्टुडियो के भीतर पहुँच गये और लगे अनाप-शनाप बकने। उनके मुंह को हाथ से बंद करके जबरदस्ती उठा कर उन्हें किस प्रकार स्टुडियो से बाहर लाया गया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो-श्रोता टैलीविजन के न होने से उस मनोरंजक दृश्य से वंचित रह गये। किसी रेडियो-स्टेशन के एक नाबद्ध निर्देशक किसी महिला-कलाकार के रूप लावण्य पर मुग्ध थे; परन्तु उन्हें अपने इस मुग्धता के भाव को कार्यरूप में परिणत करने का कभी अवसर नहीं मिलता था। जब एक दिन लाल बत्ती के निषेधात्मक प्रकाश में एक प्रेम-नाटक प्रसारित हो रहा था, तो उस निर्देशक ने भावावेश में अपना ही मूक प्रेम-नाटक शुरू कर दिया। महिला ने आपत्ति की, हाय-तोबा मची और असल नाटक पूरा ब्राडकास्ट न हो सका। नाटक के बीच में ही कट जाने से श्रोता-गण बहुत आश्चर्यित व क्षुब्ध हुए, परन्तु कारण न जान सके। यदि रेडियो-सेटों पर टैलीविजन का शीशा भी होता, तो वे अपनी आंखों से उस विघ्नकारी प्रणय-काण्ड को देख लेते।

एक दिन कोई महाशय रेडियो पर गा रहे थे और श्रोतागण घरों में अपने २ सेट के पास बैठे झूम रहे थे। तभी सेटों में से ऐसा स्वर निकला, मानों रेडियो स्टेशन पर एटम-बम गिरा हो। आज तक किसी श्रोता को उस भयानक ध्वनि का कारण नहीं मालूम हो सका। वह गायक की उस छींक की ध्वनि थी, जिसके विस्फोट को वह भरसक प्रयत्न करने पर भी अधिक देर तक न रोक सका था।

ऐसी और भी कई लाल बत्ती वाले कमरे की मनोरंजक तथा सनसनीपूर्ण नई-पुरानी घटनायें हैं, जिनके आधार पर एक अच्छा-खासा रोचक उपन्यास तैयार किया जा सकता है।

खैर, रेडियो-श्रोता तो प्रार्थना करेंगे ही कि शीघ्र ही भारत में भी टैलीविजन आ जाये, परन्तु रेडियो के सभी कलाकार तथा वक्ता, मैं समझता हूँ, टैलीविजन के पक्ष में नहीं होंगे। रेडियो के कई ऐसे कलाकार हैं जिनकी मुखाकृति उतनी आकर्षक नहीं है, जितनी कि उनकी वाणी आकर्षक है। इस समय के केवल अपनी मीठी वाणी के माध्यम से ही कई हृदयों के स्वामी बने हुए हैं, प्रशंसकों की डाक का तांता बंधा रहता है। परन्तु टैलीविजन के आते ही वाणी का यह जादू छिन्न भिन्न हो जायेगा। विभाजन से पहले के लाहौर रेडियो स्टेशन का एक बड़ा ही मनोरंजक किस्सा है। एक महिला-कलाकार की वाणी इतनी मधुर और मोहक थी कि कई दिलफैंक युवक-श्रोता उसके दर्शनों की लालसा से रेडियो स्टेशन के चक्कर काटते, परन्तु वह महिला किसी भी दर्शनाभिलाषी से न मिलती। एक युवक ने उससे पत्रव्यवहार शुरू कर दिया और एक अच्छा-खासा रोमांस विकसित होने लगा। युवक के पत्रों ने उस महिला को बहुत प्रभावित किया और एक दिन वह उससे साक्षात्कार करने को बाध्य हो गई। उसकी काली और भोंड़ी सूरत देख कर उसका युवक प्रेमी स्तब्ध रह गया और क्षण भर में ही कई महीनों के रोमांस का महल ढह गया। अस्तु।

आजकल रेडियो में किसी कलाकार की नियुक्ति के समय उसकी वाणी के सौंदर्य का ही ध्यान रखा जाता है। टैलीविजन आने पर शायद शारीरिक सौंदर्य का भी ध्यान रखा जायगा।

★

वीरांगना

प्यारी बहिनों की भलाई के लिये

जो बहिनें सन्तान की अधिकता अथवा पति की स्वार्थपरता अथवा किसी अन्य कारण वश युवावस्था में ही बुढ़ापा तथा सौंदर्य-विहीनता का अनुभव करने लगी हों। जो प्रदर (लिकोरिया) के रोग में ग्रस्त हों और जीवन भार रूप अनुभव कर रही हों अथवा जिनका मासिक-धर्म समय पर न आता हो या कष्ट से आता हो। कमर में दर्द, आंखों के आगे अंधेरा व संतान न होती हो, गर्भपात हो जाता हो तो ऐसी दशा में 'वीरांगना' सेवन करें। वीरांगना आपके स्वास्थ्य और सौन्दर्य की रक्षा करेगी व आपको सचमुच वीरांगना बना देगी। हजारों बहिनें इसका सेवन कर अपनी बीती यौवनावस्था को पुनः प्राप्त कर चुकी हैं। दाम ११) मात्र।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी, हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बम्बई की डायरी

श्री नटराज

बम्बई भारत का हालिवुड है। दादर मेन रोड पर सन् ४५-४६ में जिधर देखिए उधर ही एक-एक बंगलेपर दर्जनों फिल्म कंपनियों के साइनबोर्ड लटकते नजर आते थे। इनके आफिसों में केवल एक मेज और तीन-चार कुर्सियां पड़ी रहती थीं। किराये के स्टूडियो में ये निर्माता फिल्में बनाया करते थे। आज देखिए तो उन साइनबोर्डों में से ७५ फीसदी का नामोनिशान भी न मिलेगा। यह फिल्म कम्पनियां बंद क्यों हो गईं? महायुद्ध के कारण हर वस्तु का दाम बढ़ा-चढ़ा हुआ था। छोटे-छोटे व्यापारी भी चोर-बाजार की आराधना कर मनमाना धन कमा रहे थे। सिनेमा-व्यवसाय भी इससे अछूता नहीं बचा। ऐसे ऐसे-व्यक्ति सिनेमा की ओर आकर्षित हुए, जिन्होंने कभी कल्पना भी न की होगी कि वे कभी चित्र-निर्माता भी बन सकते हैं। ऐसे व्यापारी २० से २५ हजार रुपये तक तगड़े सूद पर किसी भी निर्देशक, अभिनेता या प्रोड्यूसर को दे दिया करते थे। इन रुपयों में से एक अच्छी खासी रकम तो लाइसेंस प्राप्त करने में ही लग जाती थी। बाकी पूंजी में से कुछ 'एडवांस' दे दिला कर किसी स्टूडियो में भाड़े पर फिल्म बनाना शुरू किया जाता था। मुहूर्त के दिन से ही चित्र को बेचने की चेष्टायें की जातीं। चौथाई चित्र बनते न बनते बड़े जोरों से प्रचार कराया जाता कि उक्त चित्र के सम्पूर्ण अधिकारों के लिए अमुक वितरक ने २॥ लाख का 'आफर' दिया है। इसके गीत मधोक ने लिखे हैं और संगीत दिया है गुलामहैदर या नौशाद ने, जिनका अमुक चित्र सर्वत्र रेकार्ड तोड़ रहा है, इत्यादि। यह सब फर्जी कार्यवाही होती थी। इसका फल यह होता था कि वितरकों में चित्र खरीदने के लिए होड़-सी लग जाती थी। किसी तरह बन कर चित्र बाजार में आया, तो चार ही सप्ताह में फेल हो गया। चित्र चले किस प्रकार? एक ही गीत लेखक, संगीत-निर्देशक और कलाकार चार-चार चित्रों में एक साथ काम करें तो किस प्रकार ईमानदारी से काम कर सकते हैं? अब निर्माता महोदय किसी दूसरे 'आंख के अंधे' को फंसाने की फिक्र में लग जाते हैं। अधिकांश निर्माताओं का यही हाल था। बम्बई में रुपया लगाने वाले अधिकतर मारवाड़ी या गुजराती सेठ हैं। युद्ध-काल तक तो यही क्रम चलता रहा; किन्तु युद्ध बंद होने पर चीजों के दाम गिरने शुरू हुए। चोर-बाजार कुछ कम हुआ। लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्प्रदायिक दंगों के कारण देश का व्यवसाय भी ठप्प हो गया। रुपया लगाने वाले इन सेठों ने अपना हाथ खींचना शुरू किया। अधिकांश निर्माताओं के साइनबोर्ड न जाने कहां चले गए। इतना ही नहीं। देश स्वतन्त्र हुआ; उसका विभाजन हुआ। मुस्लिम-निर्माता पाकिस्तान भागे। वहां दाल न गलती देख फिर हिन्दुस्तान की ओर आए। पर अब पूंजी लगाने वाला कोई नहीं मिलता। साम्प्रदायिकता और प्रान्तीयता ने कला-मंदिर को चारों ओर से घेर लिया है। यही हालत रही तो भारतीय फिल्म-व्यवसाय अवश्य ही अपनी नींव कमजोर कर लेगा।

हमारी राष्ट्रीय सरकार को इस महत्वपूर्ण व्यवसाय को अपने हाथ में लेना चाहिये और इसके दूषित वातावरण पर अनुशासन का प्रतिबन्ध लगा कर उसे अकाल मृत्यु के भय से बचाना चाहिए। यही एक मात्र उपाय है जिससे राष्ट्र, समाज, संस्कृति और आने वाली सन्तति का कुछ उपकार हो सकता है।

* * *

आज जब कि जमाना करवट ले रहा है और हर तरफ इन्कलाब का स्वर गूंज रहा है, हमारे फिल्म निर्माता अभी भी उन्हीं रास-रंग की रातों में सोते हैं और वैसी ही सुहानी घड़ियों में अंगड़ाई लेते उठते हैं। देश किन नाजुक घड़ियों में से गुजर रहा है और ऐसे समय उनका क्या कर्त्तव्य है, इसकी ओर उनका ध्यान कम, और 'लड़का-लड़की ब्राड' सड़ियल प्रेम-चित्र बना कर बैंक-बैलेंस' बढ़ाने की तरफ ध्यान अधिक है।

भारतीय फिल्मोद्योग के लिये एक और मुसीबत भी है और वह यह कि अभी हमारे औसत दर्शक की सांस्कृतिक-चेतना और बौद्धिक-विकास उस स्तर पर नहीं पहुँचा, जहां खड़े हो कर कतिपय साहसी निर्माताओं ने अपनी आवाज बुलन्द की है।

यह भी सच है कि देश की गरीबी, बेकारी, भूख, उत्पीड़न, शोषण तथा सदियों से साम्राज्यवाद और पूंजीवाद की दोहरी चक्की में पिसती हुई जनता को जो चीज दी जाय, उसका वास्तविक ज्ञान अभी भी हमारे निर्माताओं को नहीं है।

अभी हाल ही में बम्बई फिल्म सेंसर बोर्ड का नया चुनाव हुआ है। इसमें एक प्रमुख फिल्म निर्माता, एक निर्देशक और एक पत्रकार के अतिरिक्त कई और प्रतिष्ठित नागरिक भी चुने गए हैं। कई घोषणायें बड़े महत्व की इस बोर्ड ने की हैं, जिनके लिये इस बोर्ड को साधुवाद देना चाहिए। इसके फलस्वरूप 'शहनाई' चित्र का वह बेहूदा गाना—"आना मेरी जान संडे के संडे" सर्वत्र निषिद्ध करार दे दिया गया है।

* * *

हमारे कई कलाकारों ने भी साहसपूर्ण कदम उठाया है, परन्तु ठीक ढंग से नहीं और इसी लिये उन्हें असफल होना पड़ा। विश्वविख्यात नर्त्तक उदयशंकर द्वारा निर्मित कल्पना' चित्र में अनुमानतः १५ लाख रुपया व्यय हुआ था। इसके बनाने में अढ़ाई-तीन वर्ष लग गए थे। भारत के आधुनिकतम जैमिनी स्टूडियो मद्रास में यह तैयार किया गया था। किन्तु 'कल्पना' देख कर हमें सुख नहीं पहुँचा। टेकनीक की दृष्टि से यह चित्र बेहद कमजोर था। कारण यह था कि इसमें एक ही मनुष्य ने सारा कार्य किया था। विदेशों में यह खिलवाड़ नहीं होता। वहां 'टीम-वर्क' होता है। एक ही आदमी निर्माता, लेखक, दिग्दर्शक और अभिनेता नहीं बन बैठता। अलग अलग कार्य के लिए अलग अलग विशेषज्ञ होते हैं, इसी लिए उनके चित्र कलापूर्ण होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तबेले का धुंधलका

(पृष्ठ ६ का शेष)

कोई मकान हो।" आदमी हँस पड़ा और वह सिपाही कह रहा था, "उठो, उठो यहां से। चलो उठो। भागो।"

"तो कहां जायें ?' स्त्री ने चिल्ला कर कहा।

सिपाही ने फोश गाली दी। मुझे लगा मेरी नसें फट जायेंगी।

"ऐ ऐ," मैंने हाथ उठा कर कहा, 'कैसे बोलते हो ?'

सिपाही ने कहा, 'साले, चमड़ी उधेड़ दूंगा अभी। ले जा इन कुतियों को। आजकल कुत्ते बहुत हो गये हैं···।"

वह हंसा। उस आदमी ने कहा, "चलो मेरे साथ।"

हम उठ कर उस आदमी के पीछे-पीछे चलने लगे। मेरा मन कर रहा था कि उस सिपाही के सिर पर कसके एक पत्थर मार दूं और भाग जाऊं। पर फिर स्त्री, बहिन, बच्चा···?

और वह आदमी कह रहा था, "सिपाही सब ऐसे ही होते हैं। बात यह है कि सरकार ने इन्हें छूट दे दी है। देनी पड़ती है, भाई, वर्ना लोग क्या मानेंगे? तुम बुरा न मानना···।"

मैं चुपचाप चलता रहा। किसी ने भी कुछ नहीं कहा। फिर हम सड़क से गलियों में चलने लगे।

किसी ने कहा, "रागो भैये, रंग हैं।"

हमारे साथ का आदमी दया से कहने लगा, "बेचारे सताये हुए हैं···।"

जिस जगह उसने हमें खड़ा किया, वह एक तंग-सी जगह थी। एक तरफ मकानों की ऊंची-ऊंची दीवारें थीं। सब पर तिरंगे झंडे लटके हुए थे। फिर भी मुझे और कोई चमक दिखाई नहीं दी, जो चेहरे पर होनी चाहिये थी।

"यह तबेला है ?" मैंने पूछा, "यह ?"

"हां, हां, यही मेरे भाई," उस आदमी ने कहा, "वह देखो, सड़क के पार नल है। वहां से पानी मिल जायेगा।' फिर उसने मेरी बहिन की ओर देख कर कहा, "तुम चाहो तो हम अपने भीतर जो नल है न दालान में, वहां से इन्तजाम करवा देंगे। उधर मैं ही रहता हूँ। गोदाम है न ? हां। वहां से पानी भर लेना, वहां भीड़ नहीं होगी। धक्कम-धुक्की भी नहीं होगी।"

स्त्री हर्ष से चीख उठी। उसकी आंखें चमक रही थीं। स्त्री घर मिलने से कितनी खुश होती है! यह न होती तो काहे को मुझे इतनी परेशानी होती। मेरा क्या, चाहे जहां रह लेता। इस औरत ने मुझे कितना कमजोर कर दिया है। कोई सहारा नहीं। कोई मददगार नहीं।

स्त्री ने उल्लास से कहा, "भइया, भगवान तुम्हें देगा! तुमने जो इतनी हमें मदद दी है, इसे क्या भुलाया जा सकता है ?"

"सेठ के यहां नौकरी करोगे ?" उसने मुझसे पूछा।

मैंने आश्चर्य से आंखें फाड़ कर देखा। फिर कहा, "मैं ठेला लगाऊंगा।"

तब उस आदमी का स्वर बदल गया। उसने तबेले की ओर देख कर कहा, "कितना रुपया दोगे ?"

"रुपया ? जो किराया हो!"

वह मुस्कराया। "सेठ को पगड़ी और हम को मेहनताना।"

"तुम हिन्दू हो ?" मैंने चौंक कर पूछा।

"तो क्या तुम समझते हो पाकिस्तान में यह नहीं होता। वहां से भी तो मुसलमान भाग भाग कर आ रहे हैं," उसने हँस कर कहा। और वह बात भले ही मुझसे करता हो, पर घूर रहा था मेरी बहिन को—बुरी तरह, जैसे खा जायेगा। उसकी आंखें लाल हो चली थीं। बहिन मुंह फेर कर खड़ी थी। मैंने कहा, "इधर देखो।"

पर उसने वैसे ही कहा, "इतना भी एहसान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं मानते ? सेठ को पगड़ी दोगे ? पांच सौ रुपया लगेगा। समझे ?" वह कठोर हो गया था, "पांच सौ। कल ही एक मुझ से साढ़े चार सौ कह गया था। पर उसके बहिन नहीं थी।" फिर जैसे कुछ नहीं हुआ, वह मुड़ कर बोला, "इसमें हर्ज ही क्या है ? किसी को मालूम भी नहीं होगा।"

मैं सिर पकड़ कर बैठ गया। मेरी स्त्री और बच्चा सब आंखों में डोल गये। ऐसा तो सुना था कि जगह दे दी, फिर जोर-जबरन किसी तरह बाद में छिपा-चोरी काम निकाल लिया। पर यह जानवर मुझसे साफ-साफ कह रहा था। यह मेरी बहिन। जिसे मैं इतना साफ और पाक समझता था ! आज यह मुझसे कह रहा है ! इतनी हिम्मत क्यों की इसने ? क्योंकि यह मेरी मजबूरी जानता है।

और जैसे-जैसे मेरा गुस्सा बढ़ रहा है, मुझे लगता है, मेरे हाथों की ताकत खोती जा रही है। सारी देह में झनझनाहट हो रही है, और लगता है कि हथेलियों में खून बिल्कुल नहीं रहा है। मैं पथराई आंखों से देख रहा हूँ।

हृदय फट रहा था। मेरी बहिन ! वह चुपचाप खड़ी उसे देख रही थी। उसकी आंखें फटी सी थीं—सूखी, चमकदार। और वह आदमी निडर-सा उसे देख रहा था, जैसे उसे आंखों से निगल जायेगा।

स्त्री कभी उस आदमी को देखती, कभी अपनी ननद को, कभी मुझे और फिर उसकी दृष्टि तवेले पर जाकर अटक जाती। घृणा, आशंका, भय उसकी आंखों में कांप कर भाग जाते और घर पर दृष्टि पड़ते ही उसकी आंखों में एक चमक आ जाती। फिर वह बहिन को विवश दृष्टि से देखने लगी, जैसे कुछ भीख मांग रही हो। बहिन ने देखा। उसका सिर झुक गया। वह मेरी स्त्री से आंखें नहीं मिला सकी। पर रोया कोई नहीं। यह मौत नहीं थी। यहां कुछ और ही था। पर क्या वह सचमुच कुछ था ?

और मैंने कहा, "वह नहीं।" अनजाने ही मेरी दृष्टि बहिन से हट कर अपनी स्त्री पर अटक गई। जैसे मैंने एक बदलाव पेश किया था। मैं समझता था कि स्त्री मेरी स्त्री है। उस पर मेरा अधिकार है। सच यही हुआ। स्त्री ने कोई विरोध नहीं किया। केवल मेरी ओर देखा, फिर बच्चे की ओर।

दुनिया खामोश हो गई थी। मन मिचलाने लगा। जैसे अब मैं सचमुच जमीन तोड़ दूंगा। क्या मैं पागल हो गया हूँ ?

मुझे खयाल आ रहे हैं।

स्त्री ने हठात् उससे पूछा, "तुम अकेले आदमी हो ?"

"हां, बिल्कुल।"

"तो यहां रहेंगे। किराया बताओ।"

"पन्द्रह रुपया तो तुम क्या दोगे। जाओ साढ़े सात ही दे देना। इससे कम नहीं होगा। पैसा तो तुम्हारे पास भी होगा ?"

और शरणार्थी पैसा ले कर भागे थे लेकिन मैं तो वहां भी गरीब था, यहां भी गरीब हूँ। मैं क्यों भाग आया ?

यह मैं क्या देख रहा हूँ ? अब मेरी स्त्री के चेहरे पर वह भय नहीं है। वह सुस्थिर हो गई है। मेरी बहिन उसे देख कर अब ठीक-सी लगती है। उसने उसे आंखों से कुछ कह कर समझा देना चाहा है।

वह भी अपनी बात, असलियत और जिम्मेदारी समझती है। वह क्या तकलीफें पसंद करती है ? कब तक चट्टान बनी रहे ? या फिर मर जाये। मरना बहुत कठिन है। क्यों मरे ?

मरना ही होता तो घर छोड़ कर भागते ? जहां बचपन से पले थे, जहां का एक एक रास्ता याद था। यहां हम आदमी की शकल वाले जानवरों में घूमते हैं, जिनमें किसी को भी हम अपना नहीं कह सकते।

पर वह आदमी हंस रहा था। मैं चाहता हूँ मैं उसका खून कर दूं। उसका गला घोट दूं। उन आंखों को उंगली डाल कर बाहर खींच लूं, जिनमें इतना बड़ा पाप जीवित जल रहा था, और फिर उस जगह मिट्टी भर दूं। या सदा के लिए इस आदमी का सीना फाड़ कर हृदय का रक्त पी जाऊं। नहीं मुझे मंजूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। मैं कभी भी नहीं सह सकूंगा। जैसे इतने दिन भटके हैं और दो दिन सही।

कल ही से मैं भी ठेला लगाऊंगा। उसी पर सोऊंगा। उसके नीचे मेरी गिरस्ती रहेगी। पर वह ठेला खड़ा कहां होगा? और कर्फ्यू के जमाने में···?

कांग्रेस के नेता से मिला था। वे बड़े-बड़े सवालों में अटके हैं। काश्मीर की लड़ाई है। मैं पूछने लगा था, "बाबू जी, यहां की महंगाई तो मारे डालती है।"

उन्होंने कहा था, "फिर आना।"

मैं चला आया था।

और वह आदमी खड़ा है। बहिन उससे कुछ कह रही है, धीरे धीरे ही। मैं नहीं जानता, बहिन ने क्या कहा है। वह आदमी चला गया है। चलते वक्त वह खुश था। उसकी आंखें चमक रही थीं। फिर मैंने सुना, "इस तबेले के पीछे उसके सेठ उससे नाराज होंगे। यहां कभी कभी गेहूँ के बोरे छिपाये जाते थे—पहले जब पुलिस का डर था, कण्ट्रोल था। अब तो डर नहीं। फिर भी उनके काम की जगह है। इसके वह चाहे हजार रुपये खड़े कर लें।"

फिर जैसे एक बात बिना कहे ही समझ ली गई। घर में बहिन का भी तो फर्ज था। बहिन कह उठी, "पगड़ी नहीं देनी होगी।"

"कौन जाने?" स्त्री ने भय से कहा कि कहीं मैं बुरा न मान जाऊँ। फिर उसने धीरे से कहा, "आखिर को जगह मिली। तुम इस जगह को सरकार से लिखवा लो।"

स्त्री नादान है। वह क्या आसान काम है? इस सेठ के सामने?

*

मैं उठ कर गली में आ गया। तीन आदमी बातें कर रहे हैं। मैं सुन रहा हूं। शायद पास-पड़ोस के नौकर-चाकर हैं।

"कई आदमी मारे गये।"

"कोई गिनती नहीं," स्वर भारी था।

"हिन्दू एक नहीं मरा।"

"लेकिन दंगा तो मुसलमानों ने शुरू किया था!"

"यह क्या कोई रोक सकता है?"

फिर एक खामोशी। सबकी बात चुक गई।

"शरणार्थी हो?"

"हां।" मैंने उत्तर दिया।

"गेहूँ का कण्ट्रोल होगा, भाई।"

"सच?" कोई स्त्री पूछती है।

"भीतर सरक आओ, भाई। वक्त नाजुक है। जाने किस वक्त क्या हो जाये।"

"हूँ! क्या हुआ?"

"घर जाओ, अपने अपने घर। सिपाही आ जायगा।"

तभी कोई वेग से भागा और चिल्लाता हुआ गायब हो गया, "भीतर भाग चलो। पुलिस आ रही है, साथ में फौज है। गोली चला देने का हुक्म हो गया है। बाप रे!"

मैं सुन्न पड़ गया। आज आजादी का दिन था। कसूर किसी का था, आफत तो हमारी है। चारों ओर देखा, दरवाजे फटाफट बंद हो रहे थे। लोग भाग रहे थे। अंधेरा झुक गया था।

मैं कुछ भी नहीं सोच सका। घर की याद आ गई। आखिर मेरे भी घर था।

भारी भारी गाड़ियां शहर में अमन फैलाने के लिये चल पड़ी हैं। उनके पहियों की हल्की घरघराहट कांप रही है। ऊपर बहुत से जवान खाकी वर्दी में चुस्त और तैयार खड़े हैं, चौकन्ने से। यह गुरखे हैं। एकदम कठोर। हाथों में बंदूकें हैं। मैं जानता हूँ, यह न हमारी बोली समझते हैं, न दिल। बड़ी निर्दयता से गोरों की तरह गोली चला देते हैं। बिल्कुल दिमाग नहीं होता इनके।

घरों के भीतर से आवाजें गूंज उठीं—"आजाद हिन्दुस्तान जिंदाबाद!"

मैं भाग चला। अंधेरा छा चला है। धुंधली छायाएं अब कांप उठी हैं। सड़कें सुनसान हैं। कुछ भी आवाज नहीं सुनाई देती। गर्व से तिरंगे सिर उठाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़े हैं। मुझे फिर एक विश्वास-सा होता है। उधर किसी मुहल्ले में बंदूकें चलने की आवाज सुनाई दे रही है।

सामने ही मेरा तबेला दीख रहा है।

लेकिन ज्यों ही भीतर घुसने लगा, मेरा शरीर किसी से टकराया। मैं लड़खड़ा कर गिर गया। सामने वाला व्यक्ति भी गिर गया। उसके मुंह से एक हल्की कराह निकली। मैंने धीरे से उठ कर देखा, हाथों का सहारा दिया। गिरने वाला व्यक्ति भी उठा। उसने कहा, "चोट तो नहीं लगी? अभी से कैसे आ गये?"

"नहीं। भागा चला आ रहा था।"

यह मेरी स्त्री थी। पूछा, 'क्यों क्या हुआ?"

'कर्फ्यू लग गया है। दरवाजा बंद कर ले।"

"अभी नहीं ठहर जाओ। यहां पुलिस कुछ नहीं कहेगी इस वक्त। थोड़ी देर बाद बंद कर लेंगे।"

"क्यों?" मैं कुछ नहीं समझा, "भीतर अंधेरा क्यों है?"

वह कुछ सकते की सी हालत में रही। फिर उसने धीरे से कहा, "चुप, सेठ का आदमी आ गया है। उसके पास कर्फ्यू पास है।"

मैं समझ गया। मैं लेटा हूँ, या गिर गया हूं। मेरी स्त्री कह रही है, "जानती हूँ। तुम इसे नहीं रख सकते। पर..... पर वह मुझे पसंद जो नहीं कर ता था...।"

मैं सुन रहा हूँ। मेरा खून पानी हो गया है।

स्त्री कह रही है, 'किसी को क्या मालूम? रहने को तो जगह मिल ही जायेगी।" फिर जैसे उसने मुझे सांत्वना दी, 'अब पगड़ी नहीं देनी होगी। परदेस में अपनी क्या इज्जत?"

★

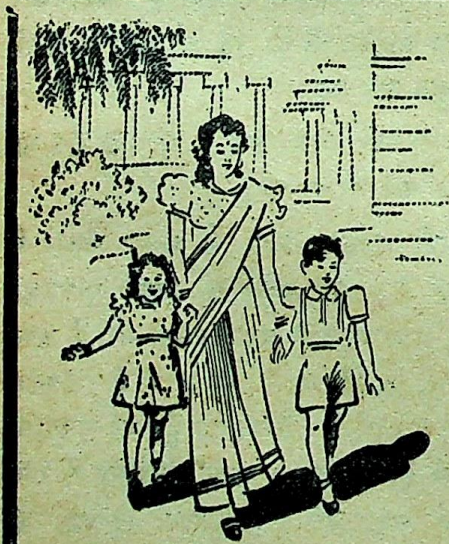

इनका
भविष्य
सर्वप्रथम

ये अपनी जीवन-यात्रा सन्तुष्टि, सुरक्षा और निश्चिन्तता के साथ हाथ में हाथ डालकर तभी सम्पन्न कर सकेंगे, यदि आप इनके हितों को जीवन बीमा पालिसी द्वारा सुरक्षित कर लें।

लक्ष्मी इन्श्योरेन्स पालिसियां जीवन बीमे की सर्वोत्तम सुविधायें जुटा देती हैं।

लक्ष्मी इन्श्योरेन्स कं० लि० दिल्ली।

शाखायें और एजेन्सियां—समस्त भारत व ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल मंडली

हम धरती के लाल !

'शशिकांत'

इसकी स्नेहमयी गोदी में
खेल खेल कर बड़े हुए हम,
इसकी मंगलमय आशिष पा
निज पांवों पर खड़े हुए हम,
यह है मात जसोदा प्यारी, हम हैं बाल-गुपाल !
हम धरती के लाल !

हरे-सुनहरे अंचल वाली
यह धरती है भारतमाता,
इसके सिर पर सब से ऊंचे
पर्वत का है मुकुट सुहाता,
और गले में गंगा-यमुना की जगमग जयमाल !
हम धरती के लाल !

इस धरती पर कृष्ण-राम बन—
आप स्वयं ईश्वर था आया,
स्वर्गलोक से गांधी ने आ
इसको था स्वाधीन बनाया,
हम भी इसकी शान बढ़ायें सेवा का व्रत पाल !
हम धरती के लाल !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

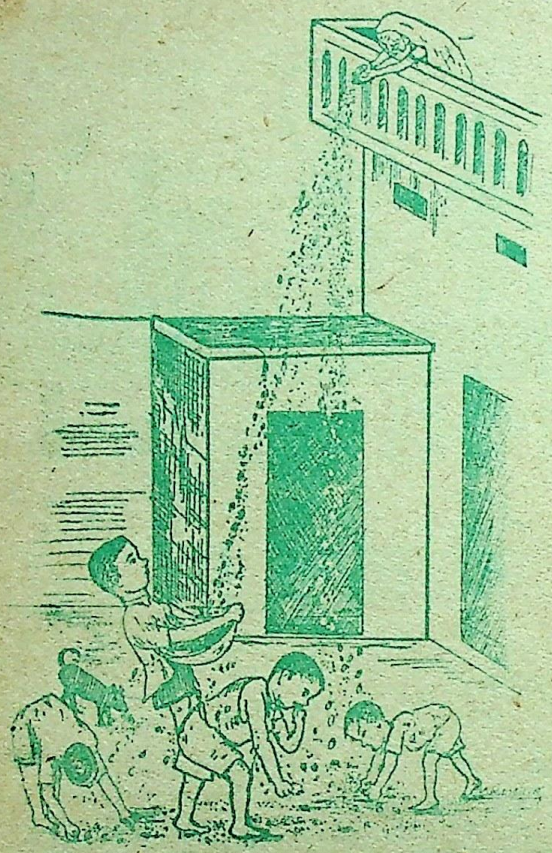

खील-बताशों का मेंह

कुमारी प्रभा भटनागर

एक मूर्ख लड़का था वह अपनी बूढ़ी मां के साथ रहा करता था। दिन भर घर के सामने खेलने के सिवाय वह और कुछ काम नहीं करता था। उसका दिमाग इतना खराब था कि वह कहने और न कहने की सभी बातों को किसी के पूछने पर सच सच बता दिया करता था। उसकी मां बहुत गरीब थी। वह दिन भर मेहनत कर कुछ कमा लिया करती थी उसी से उनका गुजारा चलता था। उनके घर में पला हुआ एक कुत्ता भी था, जो बड़ा होशियार और समझदार था वह इस घर में बचपन से ही रह रहा था और अपने मालिक की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझता था। लड़का उसको (कुत्ते को) बहुत प्यार करता था। अपनी हर खाने की चीज में से वह उसको भी देता था।

जाड़े के दिन थे। सभी अपने अपने घरों में बैठे आग ताप रहे थे। सुबह का समय था। एक बहु धनी सेठजी अपनी दूकान पर कम्बल ओढ़े अप सामने बहुत-सी रुपयों की थैलियां रखे हिसाब कर थे उन्होंने कल ही एक बहुत बड़े सट्टे में विज पाई थी। हिसाब उलझ जाने के कारण वह उसमें बहु व्यस्त थे यहां तक कि वह जाड़े तक को भूल गए थे

उसी समय कहीं से बुढ़िया का कुत्ता कुछ खा पीने की तलाश में घूमता-घामता उन सेठजी दूकान में घुस गया। सेठजी ने उसे दूकान में घु देख लिया था, परन्तु हिसाब में व्यस्त रहने के का व जाड़े के मारे कुत्ते को भगाना भूल गए। कुत्ते राम ने जब देखा कि उसे कोई भी नहीं देख रहा और सब अपने-अपने कामों में लगे हैं, तो उसने भ से रुपयों से भरी एक थैली अपने मुंह में दबा ली थैली को मुंह में दबा कर वह चोरों की भांत दूक से उतर कर पास की गली से अपने मालिक घर की ओर भागा। सौभाग्य से उसे किसी थैली ले जाते नहीं देखा और वह थैली समेत पहुंच गया। दरवाजे पर वही बेवकूफ लड़का से कांप रहा था। उसे कुछ काम तो था नहीं उससे कोई दोस्त भी जाड़े के मारे नहीं खेल था। अतएव वह अपने प्यारे कुत्ते की राह रहा था, जो कि उसके सो कर उठने से पहले ही चला गया था।

जब कुत्ते को लड़के ने दूर से आते देखा, तो मुंह में कुछ सफेद सफेद चीज भी देखी। वह दौड़ उसके पास गया कुत्ते ने झट से अपने मुंह की उस लड़के को दे दी। लड़का रुपयों की थैली कर बहुत खुश हुआ और थैली को अपनी मां के ले गया। मां ने उससे झट से थैली ले कर पूछा "यह कौन लाया है?"

लड़के ने कहा—'अपना कुत्ता मुंह में कर लाया था, सो मैं उससे ले आया।"

मां ने थैली को छिपाना चाहा किन्तु लड़का पूछने लगा कि इसमें कितने रुपये हैं आदि।

बुढ़िया ने सोचा कि इस लड़के ने कुत्ते को की थली लाते देख लिया है, अतएव वह कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचने लगी कि उसका बेटा किसी से रुपयों की थैली की बात न कह दे। वह उसको समझा तो सकती नहीं थी, क्योंकि उसका दिमाग खराब था। एकाएक उसे एक युक्ति सूझी और वह उसी समय जल्दी से कुछ पैसे ले कर बाजार गई। बाजार से वह कुछ खील और थोड़े से बताशे लाई।

घर आ कर उसने अपने बेटे से कहा—"बेटा, आज शाम को खील-बताशों का मेंह बरसेगा। तुम अपने दोस्तों से भी कह दो।"

लड़का बेवकूफ तो था ही, दौड़ कर अपने मित्रों से कह आया कि आज शाम को खील-बताशों का मेंह बरसेगा वह शाम की बड़ी उत्सुकता से बाट देखने लगा, परन्तु उसके साथियों ने झूठ समझा।

जब शाम हो गई, तब बुढ़िया अपने मकान की छत पर चढ़ गई। उसने वहां से चिल्लाना शुरू किया, "लूटो, लूटो, खील-बताशों का मेंह बरस रहा है।"

उसका बेटा अपने साथियों के साथ नीचे खेल रहा था। खील बताशे गिरते देख वे सब लूटने और खूब खाने लगे। रात को सब अपने अपने घर चले गये। बुढ़िया का बेटा उस दिन बड़ा प्रसन्न था। उसने उसे सचमुच खील-बताशों का मेंह ही समझा।

इधर सेठजी ने जब अपनी थैलियों को गिना, तो उनमें एक थैली गायब थी। वह बड़े असमंजस में पड़े। रुपयों से भरी थैली को बहुत ढूंढा पर वह कहां से मिलती। उन्होंने सोचा, दूकान पर अभी तो कोई नहीं आया और वह थैली भी मैंने अभी अभी रखीथी। भूल भी नहीं सकती। एकाएक उन्हें ख्याल आया कि थोड़ी देर हुई एक कुत्ता उनकी दूकान में घुसा था। हो न हो वही थैली को ले गया होगा। जब थैली न मिली तो सेठजी के होशहवास उड़ गये। बेचारे का जरा-सी देर में कितना नुकसान हो गया। आखिरकार उन्होंने पुलिस को खबर दी। पुलिस ने उनकी दूकान देख कर सेठजी से पूछा—'आपकी दूकान पर केवल कुत्ता ही आया था।"

सेठजी ने कहा—"हां, और मैंने उसे जाते नहीं देखा। तुम यदि थैली ढुंढवा दोगे तो मैं तुम को अलग से इनाम दूंगा।"

सिपाही बेचारे हर घर में जाते और पूछते कि कोई कुत्ता सेठजी की रुपयों की थैली तो नहीं ले आया है? वह लोग एक एक मकान के दरवाजे पर पूछते थे और कहीं कुछ जवाब न मिलता था।

होते-होते करीब एक सप्ताह बाद वे सिपाही उस बुढ़िया के घर पहुँचे। दरवाजे पर वही लड़का खेल रहा था। उन्होंने उस लड़के से पूछा—"कोई कुत्ता तुम्हारे घर रुपयों की थैली लाया है?"

लड़का एक दम बोला—"हां, हां, हमारा कुत्ता लाया है।"

घर के भीतर उसकी मां ने जब यह सुना, कि उसके बेटे ने सिपाहियों से थैली की बात कह दी है, तो वह जल्दी से बाहर आई।

सिपाही ने बुढ़िया से कहा—"मां यह लड़का कह रहा है कि तुम्हारा कुत्ता सेठ जी की रुपयों की थैली लाया है। थैली को चुपचाप दे दो, नहीं तो पकड़ी जाओगी।"

बुढ़िया डरने वाली कहां थी खुशामद से बोली—"भैया तुम नहीं जानते, यह लड़का पागल है।"

सिपाही गुस्से से बोला—"नहीं, तू झूठ बोलती है।"

बुढ़िया ने कहा—"नहीं नहीं, महाराज मैं सच कहती हूँ। नहीं मानो तो इससे पूछो कि कुत्ता थैली कब लाया था?"

सिपाही ने लड़के से प्यार से पूछा—'मुन्ना बताओ तो कुत्ता थैली कौन से दिन लाया था?"

लड़का बड़ी शान से बोला—"जिस दिन खील-बताशों का मेंह बरसा था।"

सिपाहियों को लड़के की बात पर हंसी आ गई। बुढ़िया भी हंसने लगी। फिर उसने कहा—"देखा, मैं तो पहिले ही कहती थी कि यह पागल है।"

सिपाही बुढ़िया की बात मान कर और उस लड़के को पागल समझ कर आगे चल दिये और मां अपनी चतुराई पर बहुत खुश हुई। मां-बेटा दोनों धनी हो गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना शुल्क

बाल-पहेली नं० १४

२० दिसम्बर १९४८ तक सही उत्तर

आने पर पांच रुपये नकद पुरस्कार

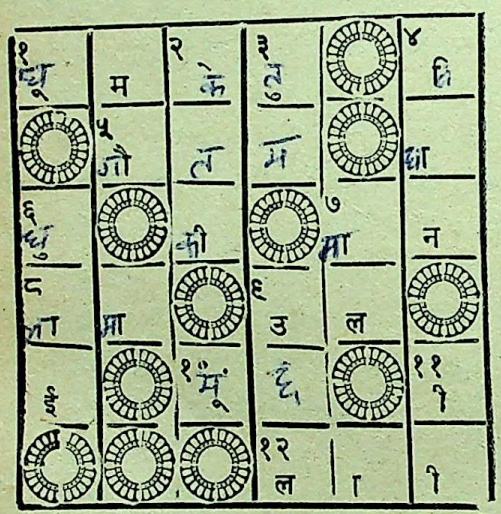

दायें से बायें

१. एक ऐसा तारा जिसका उदय होना अशुभ समझा जाता है। ५. भगवान् बुद्ध का नाम। ७. विद्यार्थियों को इसकी चिंता नहीं करनी चाहिये। ८. तिब्बत देश की कहानी में इसका नाम भी आता है। १०. यह बालों की ही होती है। १२. 'न' के बिना एक ऐसी चीज के नाम के उलट-पुलट अक्षर जो कागजों को अलग नहीं होने देती।

ऊपर से नीचे

२. एक तरह का फूल वाला पौधा। ३. बड़ों को यह कह कर नहीं पुकारना चाहिये। ४. आजकल देश के नेता और प्रतिनिधि इस पर विचार कर रहे हैं। ६. गांव के लोग इस पर कोई खर्च नहीं करते। ७. कई लोगों को इसकी भी गर्मी होती है। ९. "नदी का पानी ··· रहा है।" ११. इसमें 'सागर' है।

बाल-पहेली नं० १३ का पुरस्कार

नवम्बर १९४८ के 'मनोरंजन' में प्रकाशित 'बाल-पहेली नं० १३' का शुद्ध उत्तर अमृतसर से ८ वीं कक्षा के विद्यार्थी प्रबोध चन्द्र शर्मा ने भेजा है; अतः उन्हें पांच रुपये का पुरस्कार दिया गया है। सही उत्तर निम्न-लिखित है—

दायें से बायें—१. दिवाली, ३. धूल, ६. लम्हा, ७. आरी, ९. लंगूर, ११. रफू।

ऊपर से नीचे—१. दिया, २. बाफुलरी, ४. लखे, ५. लड़ी, ७. आकार, ८. भरना, १०. गूदा।

श्री रमेशकुमार गुप्त विजयवर्गीय

इन्होंने पिछले महीने 'बाल-पहेली नं० १२' का सही उत्तर भेज कर पुरस्कार प्राप्त किया था। ये मिडिल स्कूल, बांरा (कोटा) कक्षा ७ के योग्य विद्यार्थी हैं। इस से पहले ये 'बाल-पहेली नं० ८' का भी पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

पहेली के नियम

१. १४ वर्ष तक की आयु, २. आयु के सम्बन्ध में माता-पिता अथवा अध्यापक का प्रमाण पत्र ३. उत्तर 'मनोरंजन' के छपे खाके पर सुस्पष्ट अक्षरों में लिख कर भेजा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नव प्रकाशन

आलोचना के लिये प्रत्येक पुस्तक और पत्र-पत्रिका की दो प्रतियां आनी चाहियें। —सं०

जो दास थे—(उपन्यास) श्री सदरुद्दीन ऐनी; अनुवादक—महापण्डित राहुल सांकृत्यायन; प्रकाशक—अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन-मण्डल, महेंद्र, पटना; मूल्य—७॥); पृष्ठ संख्या—५०६।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन जी हिन्दी के उन कर्णधारों में से हैं, जिन्होंने हिन्दी की सेवा 'नारे' लगा कर नहीं, बल्कि उसके साहित्य के विविध अंगों को उच्चकोटि की बहुमूल्य कृतियों से निरन्तर समृद्ध करके रचनात्मक ढंग से की है। इस दृष्टि से उनके मौलिक ग्रन्थों के साथ-साथ उनके द्वारा संपादित तथा अनूदित ग्रन्थों का एक-सा ऐतिहासिक महत्व है। उदाहरण के लिये हम आलोच्य पुस्तक को प्रस्तुत करते हैं। यह मध्य-एशिया के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक सदरुद्दीन ऐनी के सर्वोत्तम उपन्यास 'गुलामान' का हिन्दी अनुवाद है। सदरुद्दीन ऐनी को हम सोवियत मध्य-एशिया का प्रेमचंद कह सकते हैं। उनका यह उपन्यास उपन्यास ही नहीं, बल्कि इतिहास भी है। इसमें उन्होंने १८३४ से १९३४ तक के मध्य-एशिया की सामाजिक क्रांति के इतिहास का बड़ा ही प्रेरणादायक, रोचक और प्रामाणिक चित्र उपस्थित किया है—प्रामाणिक इस लिये कि लेखक ने उस सामाजिक क्रांति में स्वयं भी भाग लिया था और उसे नजदीक से देखा था। इस ऐतिहासिक कहानी का मुख्य नायक है युगों युगों से धनिकों, धर्माधिकारियों और शासकों द्वारा पशुओं की भांति शोषित-उत्पीड़ित दास (गुलाम) मानव। सौ वर्षों में फैली हुई उसकी इस कहानी के दो छोर हैं—एक छोर उसकी पुरातन दशा का है, जबकि वह क्रीत पशुओं से भी बदतर जीवन बिताता था और दूसरा छोर उसकी वर्त्तमान अवस्था का है, जबकि वह एक वर्गहीन समाज की, प्रजातंत्रिक कलखोज (पंचायती खेती) की स्थापना करके मानवता की बिरादरी में अपने खोये हुए गौरवपूर्ण स्थान और प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करता है। यों समूचे मध्य-एशिया की सामाजिक क्रांति के इतिहास को समझने के लिये यह उपन्यास बहुत ही सहायक हो सकता है। आज के भारत की अपनी बहुत-सी समस्याओं के हल के लिये भी यह सहायक सिद्ध हो सकता है।

इस उपन्यास को पढ़ने के बाद पहली बार यह अनुभव होता है कि हमारा अपना उपन्यास-साहित्य अभी कितना पिछड़ा हुआ है। हमारे पास प्रेमचन्द के 'गोदान' को छोड़ कर शायद ही कोई और उपन्यास होगा, जो इसकी समता कर सके। हिंदी संसार को महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का वस्तुतः आभार मानना चाहिये जिनके कारण हिंदी को कलापूर्ण साहित्य की एक उच्च श्रेणी की बहुमूल्य कृति मिली है। रूसी प्रचार कह कर इसकी उपेक्षा करना हमारी मूर्खता होगी।

★

झुरमुट—(कहानी-संग्रह) लेखक—श्री 'नलिन,' प्रकाशक—नालंदा-प्रकाशन, बम्बई १; मूल्य ४।)

प्रस्तुत कहानी-संग्रह के लेखक ('मनोरंजन' के सितम्बर १९४८ के अंक में प्रकाशित 'फिल्मी कहानी' के रचयिता) श्री 'नलिन' जी हिंदी के उन प्रतिभाशाली साहित्यकारों में से हैं, जो विज्ञापनबाजी से दूर रह कर निरंतर साहित्य-साधना में लीन रहते हैं। ये सर्वतोमुखी कलाकार हैं—एक सफल पत्रकार, सशक्त शैलीकार, सुकुमार कवि और प्रसन्न व्यंगकार। अब तक इनकी १०-११ पुस्तकें छप चुकी हैं। इनका 'शतरंज के मोहरे' नामक व्यंग-शब्द-चित्रों का संग्रह हिंदी में अपने ढंग की एक अद्वितीय कृति है। इनकी भाषा-शैली इनकी अपनी निजी विशेषता है—कम से कम शब्दों में प्रभावोत्पादक ढंग से बात कहना। एक कुशल चित्रकार की तरह ये एक-दो शब्दों की सांकेतिक रेखाओं से एक महान् चित्र रचने की सामर्थ्य रखते हैं। अस्तु।

'झुरमुट' में 'नलिन' जी की भिन्न-भिन्न समयों पर लिखी गई, तीन-चार हजार वर्ष व्यापी मानव-जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भिन्नताओं के झुरमुट सी ग्यारह कहानियां संग्रहीत हैं। इनमें लेखक के शैलीगत उपर्युक्त सभी गुण पूर्ण विकसित रूप में विद्यमान हैं। सभी कहानियों का केन्द्र-देवता मानव है—हाड मांस का पुतला मानव, जिसमें युग-युग से एक प्यासी आग हाहाकार कर रही है। इस आग का विश्लेषण करते हुए लेखक ने नारी के स्वतन्त्र व्यक्तित्व को सहानुभूतिपूर्ण तथा प्रगतिशील दृष्टिकोण से चित्रित किया है। कहीं कहीं लेखक ने अपने व्यंग्य के नश्तर से समाज के फोड़ों की निर्दयता से चीर-फाड़ भी की है। 'झुरमुट' की कहानियों की एक विशेषता यह भी है कि कथावस्तु का एक तरह से अभाव होते हुए भी इन में प्रचुर मात्रा में रोचकता है। इस नये प्रयोग की सफलता के लिये लेखक बधाई का पात्र है।

आशा है, 'शतरंज के मोहरे' की भांति 'नलिन' जी के 'झुरमुट' का भी हिंदी-संसार द्वारा समुचित आदर होगा।

★

बापू-स्मृति ग्रन्थ—सम्पादक—श्री कृष्ण 'सरल;' प्रबन्ध-सम्पादक—श्री नारायण श्यामराव चिताम्बरे; प्रकाशक—समाज-प्रकाशन, गुना; संग्राहक—बापू साहित्य-परिषद्, गुना।

यह २२४ पृष्ठों का अपूर्व ग्रन्थ राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी की पुण्य स्मृति में रचित हिन्दी जगत् के लगभग सभी लब्धप्रतिष्ठ कवियों—जैसे सर्वश्री मैथिलीशरण गुप्त, स्व० सुभद्राकुमारी चौहान, डा० रामकुमार वर्मा, महादेवी वर्मा, सियारामशरण गुप्त, 'नवीन,' सुमित्राकुमारी सिनहा, सुमित्रानन्दन पन्त, बच्चन, 'दिनकर,' मिलिन्द, सोहनलाल द्विवेदी, चिरंजीत, 'शेष' आदि—की सुन्दर तथा भावपूर्ण कविताओं का संकलन है। इस ग्रंथ के दो भाग हैं, पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। इसके पूर्वार्द्ध में वे कवितायें संकलित हैं, जो बापू के जीवन-काल में उनके प्रति श्रद्धांजलि के रूप में लिखी गई थीं और इसके उत्तरार्द्ध में वे कवितायें हैं, जो उनके निधन पर कवियों के आकुल-अन्तर से स्वतः फूट पड़ी थीं।

इसके सम्पादकों का परिश्रम और भावना वस्तुतः सराहनीय है। हम समझते हैं, इस ग्रन्थ का भी हिंदी साहित्य में वही विशिष्ट स्थान होना चाहिये, जो 'गांधी अभिनन्दन ग्रन्थ' को प्राप्त है। बापू के निधन पर लिखी गई कविताओं के समावेश के कारण इस ग्रन्थ की महत्ता 'गांधी अभिनन्दन ग्रन्थ' से भी अधिक है। यह ग्रन्थ निःसंदेह बापू की स्मृति को चिरस्मरणीय रखेगा। हमें आशा है कि हिन्दी-संसार इसका श्रद्धा एवं आदर से स्वागत करेगा। यदि इसकी छपाई कुछ और सुन्दर होती, तो इसकी उपादेयता और भी बढ़ जाती।

★

मलिक मुहम्मद जायसी—(काव्य-समीक्षा) लेखक—डा० कमल कुलश्रेष्ठ एम० ए०, डी० फिल्; प्रकाशक—साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग; मूल्य—सजिल्द ४॥), अजिल्द ४)।

हिंदी-काव्य के इतिहास में 'पद्मावती' के रचयिता मलिक मुहम्मद जायसी का बहुत ऊंचा स्थान है। प्रस्तुत पुस्तक उसी महाकवि के जीवन और काव्य का गवेषणात्मक अध्ययन है। विद्वान लेखक ने पुस्तक को विषय-प्रवेश, विचार-पक्ष और काव्य-पक्ष इन तीन भागों में विभक्त करके जायसी के जीवन-वृत्त, रचनाओं, आध्यात्मिक विचारों और काव्य गत गुणों पर अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण और प्रामाणिक ढंग से प्रकाश डाला है। 'अध्ययन' शीर्षक परिच्छेद में मिश्रबंधु, रामचन्द्र शुक्ल, डा० श्यामसुन्दर दास, डा० रामकुमार वर्मा इत्यादि गण्य-मान्य साहित्यालोचकों के जायसी-सम्बन्धी विचारों को संकलित करके पुस्तक की उपयोगिता को और भी बढ़ा दिया गया है। पुस्तक आद्योपांत लेखक के परिश्रम, अध्ययन, मनन और विद्वत्ता की परिचायक है। इन सभी गुणों के कारण यह हिंदी-साहित्य के विद्यार्थियों के लिये तो उपयोगी है ही, काव्य-रसिकों के लिये भी काम की चीज है। आशा है, हिन्दी के आलोचना-साहित्य में डा० कमल कुलश्रेष्ठ की यह गवेषणात्मक कृति एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेगी।

—चिरंजीत

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीनी काव्य का सौन्दर्य

(पृष्ठ १६ का शेष)

लोगों के श्रीमन्त होने का तात्पर्य है अनगिनत लोगों का कंगाल हो जाना। सुप्रसिद्ध कवि टू-फू कहता है—

"राज-प्रासादों के प्राचीर के भीतर मधुर मद्य और मांस सड़ रहा है
और प्राचीर के फाटक पर नर-कंकालों का पहाड़ दिनों दिन बढ़ रहा है।"

संस्कृति के विनाश और खून की होली के द्वारा विजय पाने वाले वीर सेनानी में चीनी कवि किसी ऐसी अलौकिक महिमा का दर्शन नहीं करता, जिसके प्रति नतमस्तक हो कर प्रशस्ति-गीतों की श्रद्धाञ्जलि समर्पित की जाय। संग्राम से होने वाले महाविनाश का मुआवजा विजय नहीं है। विजय और अपजय दोनों के लिए समान कीमत चुकानी पड़ती है। यही कारण है कि चीन के पुराने साहित्य में युद्धों के वीर नेताओं के प्रशस्ति-गीत बहुत कम मिलते हैं। वहां हमें मिलता है युद्ध के प्रति जुगुप्सा, युद्ध से उत्पन्न निर्वेद और युद्ध से होने वाले महाविनाश का मार्मिक चित्रण। पुरुषों की युद्धप्रियता पर खिन्न हो कर कवि टू फू कहता है—

"यदि मालूम होता कि पुरुषों की कारगुजारियां यही होंगी, तो भगवान् से मनौती मनाता कि मेरी पत्नी लड़कियां ही जने!"

★

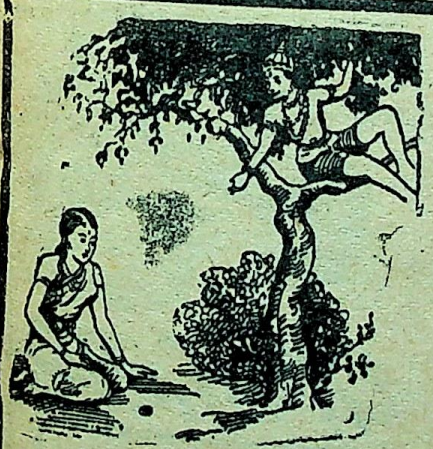

रामायण के अपूर्व दृश्य

सीता हरण, हनुमान द्वारा लंका का जलाना, समुद्र बन्धन, लंका पर हमला, राम रावण युद्ध, लक्ष्मण की मूर्छा, हनुमान का द्रोणाचल पर्वत लाना, मेघनाद वध, मेघनाद का सिर लेकर सुलोचना का सती होना

वर्ष के सब से अच्छे धार्मिक चित्र में देखिये—

सती सुलोचना

जिसमें दस हजार आदमियों ने काम किया है।

दिल्ली के निम्न सिनेमाओं में शुक्रवार १६ नवम्बर से अपार भीड़ खेंच रहा है—

रिट्ज - ऐक्सलसियर - वेस्टएण्ड - प्लाजा

समय-३ ३०, ६-३०, ६-३० ३, ६-३०, ६-३० १२ व ३-३० बजे

एडवांस बुकिंग १० से १२ व ४ से ५ बजे तक

वितरक— डायमण्ड पिक्चर्स लि० दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंधी आंखों में नई रोशनी १० मिन्ट में पैदा

कमल क्लोरीयम (रजिस्टर्ड)

जब सब ओर से उदास हो जावें—तो यहां चले आयें १० मिनट के अन्दर ही आपको ऐसी तसल्ली कर दी जायगी कि आप यकीन कर लेंगे कि आप की दृष्टि दोबारा फिर नार्मल हो सकती है। अगर आप यहां न आ सकें तो "कमल किलोरियम" जो कि कमल के ताजे रस से तैयार होता है, प्रयोग करना आरम्भ कर दें। आप हैरान हो जायंगे कि जिस इलाज के लिये आप जागह-जगह की ठोकरें खाने के बाद बिलकुल उदास व निराश हो चुके थे, आंखों मेंनई रोशनी, दृष्टि में उन्नति, माई ओपिया, कुकरे, फूला, धुन्ध, पर्वाल ढलका, खारिश के अलावा मोतियाबिन्द भी दूर हो कर बीनाई कतई नार्मलहालत पर आ जावेगी, दृष्टि उतनी ही तीव्र हो जाती है। माई ओपिया जैसे रोगी की जिनकी आंखें देखने में बिलकुल ठीक, स्वस्थ लेकिन दृष्टि इतनी मंद होती है कि बगैर ऐनक के आदमी पहचानना भी मुस्किल हो, तो भी पूरी रोशनी भर आती है। मूल्य ५) रुपया। **कमल क्लोरियम स्पेशल**—जो कि सिवा पैदाइशी अन्धापन या गयी हुई आंखों, हाई माई ओपिया मोतियाबिन्द, व काला मोतियाबिन्द चेचक से पैदा हुए रोग को भी बहुत जल्द दूर कर फिरसे पूरी रोशनी पैदा करता है। कीमत १२) बारह रुपया। डाक्टर और हर मेडिकलमेन नमूना पौनी कीमत पर मंगवा कर अपनी तसल्ली कर सकते हैं। अच्छे अंग्रेजी दवा पेचने वालों से खरीदें या हमको लिखे।

डाक्टर एस० के० बरमन (एम० डी०) ६८२, सराएफूस, देहली

३० वर्ष की प्रचलित

असली मुग़ली जन्म घुट्टी नं. ५५५

जन्म के समय अमृततुल्य लाभदायक है, जन्म से ५ साल तक कुल बीमारियों की एक दवा। सब जगह बिकती है। लेकिन नकली से बचें।

निर्माता—
घाव नाशक कार्यालय
पहाड़गंज दिल्ली।
एजेण्ट—
हरनारायण गोपीनाथ
खारीबावली दिल्ली।

घावनाशक

फोड़े, फुन्सी, ज़ख़म, खाज का अनुपम मरहम

GHAV NASHAK KARYALAYA
PAHAR GANJ
DELHI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड

आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वाधान में

दैनिक वीर अर्जुन — साप्ताहिक सचित्र वीर अर्जुन

मनोरंजन मासिक — विजय पुस्तक भण्डार

अर्जुन प्रेस

सचालित हो रहे हैं। यह प्रकाशन संस्था सुदृढ आर्थिक स्थिति की है।

अधिकृत पूंजी ५,००,००० **प्रस्तुत पूंजी २,००,०००**

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४	१० प्रतिशत
सन् १९४५	१० प्रतिशत
सन् १९४६	१५ प्रतिशत

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को १० प्रतिशत लाभ दिया है!

आप जानते हैं?

* इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्ही लोगों द्वार होता है।
* 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सफल बनाने में लगी रही हैं।

आपभी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

* इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
* राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
* अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
* आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदनपत्र की मांग कीजिये।

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,

श्रद्धानन्द बाजाछ, दिल्ली।

प्रिंटर पब्लिशर श्री दुर्गाप्रसाद शर्मा द्वारा, अर्जुन प्रेस देहली से छप कर प्रकाशित।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० — डी० १७३

लम्बी यात्रायों में

डनलप
जायण्ट

TRADE MARK

DE 303

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजन

जनवरी '४६

आठ आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय-पुस्तक भण्डार की सामयिक पुस्तकें

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है। मूल्य १॥) रुपया।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय ललकार एक ही साथ हैं पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य हैं। मूल्य १) डाकव्यय ।-)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झाँकियाँ'

प्रथम खण्ड – दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन, मूल्य ॥)

द्वितीय खण्ड – मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला? मूल्य ॥)

दोनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य ॥।)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले० – श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी।

मूल्य २)

हिन्दू संगठन होआ नहीं है

अपितु

जनता के उद्‌बोधन का मार्ग है।

इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक – स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)।

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा।

मूल्य १।) डाक व्यय =)

प्राप्ति स्थान—विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियों
के लिये अतिरिक्त
शक्ति

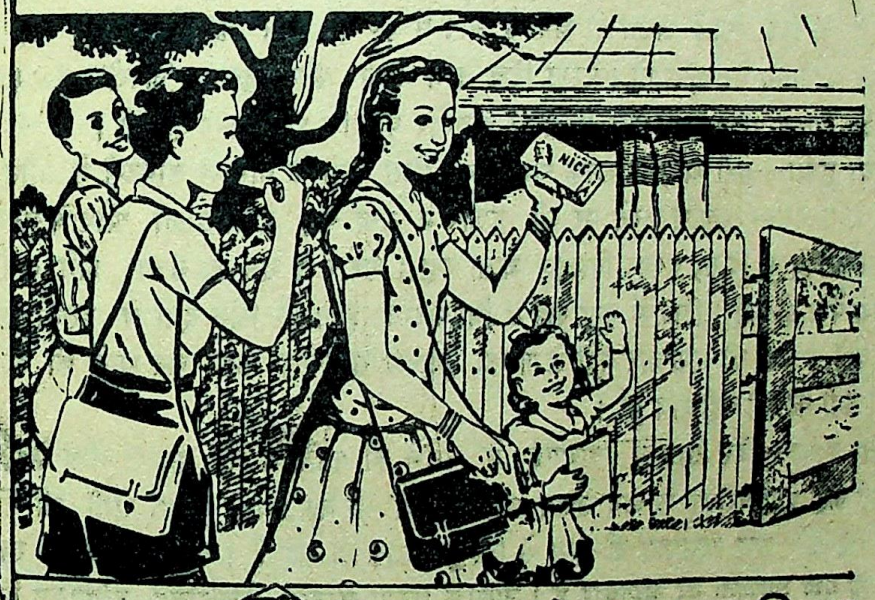

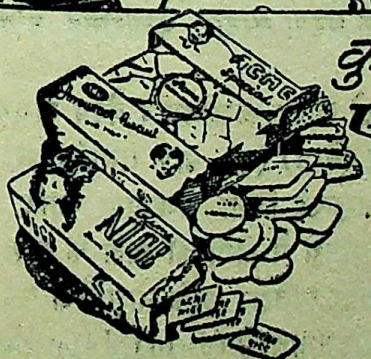

कुरकुरे तथा स्वादिष्ट
एक्मे बिस्कुट

Acme
BISCUITS

एक्मे स्पेशल, नाइस, मरी, कस्टर्ड क्रीम, क्रीमक्रैकर,
मालटिस, पिटेबरी क्रिमक्रीम, जिंजरनट,
अरारोटवफर, थिनअरारोट, किन्डरगार्टन

मोदी बिस्कुट कम्पनी मोदीनगर, यू. पी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

T. B. टी० बी० 'तपेदिक' तथा पुराने ज्वर के रोगियो-ध्यान पूर्वक पढ़ो!

भारतीय ऋषियों की खोज का अद्भुत चमत्कार (JABRI) एक आश्चर्य जनक घटना

मेरी स्त्री अनेक दिनों से बीमार थी, आखिर डाक्टरों ने 'तपेदिक' (टीं० बी०) रोग बतलाया। 'तपेदिक' का नाम सुनते ही होश हवाश उड़ गये। अन्त में डाक्टरों ने एक्सरे करके दोनों फेफड़े खराब (गल) जाने की बात कह कर मुझे आदेश दिया कि रोगी १०-१५ दिन का मेहमान है। इसको अस्पताल से ले जाओ और किसी अलग कमरे में रख दो। कोई इसके पास न जावे। इसके थूक आदि से बचाव रखो लाचार हो कर उसको घर ले आया।

फिर क्या हुआ—अखबार 'मिलाप' में आपकी दवा 'जबरी' का विज्ञापन देखा। दिल ने कहा, जहां सैकड़ों रुपया हकीम, डाक्टरों की भेंट चढ़ा चुका हूं, यह भी खर्च करके देख लूं। रोगी ने कहा कि जब डाक्टरों ने यह कह दिया है कि दोनों फेफड़े खराब हो चुके हैं और मैं १०-१५ दिन की मेहमान हूं तो व्यर्थ क्यों खर्च करते हो, मुझे अब परमात्मा पर छोड़ दो। परन्तु दिल ने न माना और तुरन्त 'जबरी' नं० १ का आर्डर दे डाला। पांचवें दिन पार्सल पहुंच गया और विधि के अनुसार औषधि शुरू करा दी गई।

फिर क्या हुआ—वही आश्चर्यजनक चमत्कार। जिस रोगी के बारे में डाक्टरों ने मौत का फतवा दे दिया था और ६ मास बराबर इलाज करने पर भी बुखार न गया था, शक्तिशाली औषधि 'जबरी' ने दस दिन में ही अपना चमत्कार दिखा दिया, बुखार बिल्कुल जाता रहा। शरीर में रक्त का संचार होने लगा और दिल में पहले की सी उमंग पैदा हो गई। दिल में पूर्ण रूप से विश्वास हो गया कि जिस दवा ने इतनी जल्दी ऐसा चमत्कार दिखाया है क्यों न स्त्री को एक बार वहीं लेजा कर पूर्णरूप से परीक्षा करा कर आगे को इलाज का प्रबन्ध किया जावे। मेरी स्त्री की भी वही राय हुई।

फिर क्या हुआ—जिस रोगी में चारपाई से उठने की शक्ति न थी हजारों मील रेल की यात्रा करके 'जगाधरी' आ गई जहां पूर्ण परीक्षा के बाद उत्तम रूप से औषधियों का प्रबन्ध हुआ, रोगी की तन्दुरुस्ती दिन पर दिन बदलती गई और अब परमात्मा की कृपा से बिल्कुल ठीक हो गई है। यह ऋषियों के रक्त से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र की पूर्ण सफलता का चमत्कार है। उपरोक्त घटना सरदार कर्त्तारसिंह इण्डियन मिलिटरी जनरल हस्पताल, कराची से घटी।

पाठक वृन्द—यह एक नहीं और भी देखिये ! (१) लाला काशीप्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहबाद) (२) बा० मुन्नालाल स्टोरकीपर सिम्बाली शूगर मिल पो० बक्सर (मेरठ) (३) बा० रामसिंह घर नं० ६१ रीठा मण्डी (देहरादून) (४) श्री तोसलहूसेन रईल मो० मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जिला फैजाबाद आदि सैकड़ों सज्जनों का यही कहना है कि शक्तिशाली औषधि जबरी' दवा नहीं बल्कि यथार्थ में रोगी को काल के गाल से बचाने वाली ईश्वरीय शक्ति' है। सैंकड़ों हकीम, वैद्य, डाक्टर अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं। अनेक आदमी तार से आडर देते हैं। तार के लिये थोड़ा सा पता 'जबरी' (जगाधरी) (Jabri Jagadhri) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार हैं—'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ाने के लिए, सोना, मोती अभरक आदि मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिन का कोस ७५) रु० नमूना १० दिन के लिये २०) 'जबरी' नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल अदि अलग है। आर्डर में अखबार का हवाला तथा नं० १ या दो साफ लिखें। तुरन्त आर्डर दे कर रोगी की जान बचावें। १० दिन ही में अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिये मूल्य मन्आर्डर से भेजें, जिससे तुरन्त भेज दें।

पता रायसाहब के० एल० शर्मा एंड सन्स, रईस एंड बैंकर्स [M] "जगाधरी" [पूर्वी पंजाब]

(मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७५००) रु० नकद इनाम

आप २४ घण्टों में फिर युवक बन सकते हैं

औटोजम (विटामिन टानक) के खाने से प्रत्येक पुरुष व स्त्री अपनी आयु से १५-२० वर्ष कम आयु के दिखाई देते हैं। यह निर्बल स्वास्थ्य खून की खराबी, दिमागी तथा शारीरिकश्रम में लाभदायक है। इसके खाने से भूख खूब लगती है। एक सप्ताह में पांच से दस पौंड तक तोल बढ़ जाता है। मुंह पर लाली आ जाती है। चेहरे का रंग गोरा हो जाता है। तथा चेहरे पर यौवनावस्था की भांति की चमक आ जाती है। जैसे कि आपका चेहरा यौवन अवस्था में था। इसके प्रयोग से नजर तेज होती है। यह गालों को आकर्षित बना देता है, होठों पर लाली आ जाती है, सफेद पके हुए बालों को सदा के लिए काला कर देता है, दांतों को असली की भांति दृढ़ कर देता है। स्विट्जरलैण्ड के एक शत वर्षीय वृद्ध पुरुष ने इसका प्रयोग किया। जिससे वह तीस वर्ष के युवक की भांति हो गया। यही नहीं, पर उसने एक युवती से व्याह भी कर लिया।

औटोजम के बरतने से ८० तथा ९० की आयु में भी हालीवुड के एक्टर तथा एक्टरसें हृष्ट, युवक तथा सुन्दर प्रतीत होने लगते हैं। और परदा पर अति फुर्ती से काम करने लगती हैं। स्त्रियां यदि इनका प्रयोग करें तो अपनी आयु के पिछले समय तक मुख की सुन्दरता तथा चमक को बनाये रख सकती हैं। पुरुष इसके प्रयोग से समय के पूर्व वृद्ध नहीं हो पाते। बाल काले तथा आकर्षित रहते हैं। मुख की आकर्षिकता सदा बनी रहती है। स्वास्थ्य आयु भर खराब नहीं होता।

Autogem औटोजम Autogem

को एक शीशे के बर्तन में बहुत काल तक रखा गया। तब वह शीशे का बर्तन इतना पक्का हो गया कि कई चोटें मारने पर भी न टूट सका। इसको इंग्लैण्ड में सहस्त्रों पुरुषों ने देखकर प्रमाणित किया। औटोजम का तुरन्त प्रयोग आरम्भ कर दें। इसका फल अपना उत्तर आप होगा। प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व अपना तोल करलें तथा अपना मुख शीशे में देखलें। एक सप्ताह पश्चात् फिर शीशा देख फिर नोट करें कि आप क्या अनुभव करते है। आप इसके जादू की भांति प्रभाव की प्रशंसा करेंगे। औटोजम को प्रत्येक व्यक्ति तक ले जाने के लिये इसका मूल्य केवल अल्प समय के लिए ५) रुपया रखा गया है। कुछ समय के उपरान्त इसका असली मूल्य ३०) रुपया कर दिया जायगा। आज ही इसे मंगवाने के लिये आर्डर भेज दें। क्योंकि इसकी सम्भावना है कि आपके देर करने से माल समाप्त हो जाए और आपको पछताना पड़े।

मिलने का पता—

दी मैकसो लैबोरेटरीज लिमिटेड,

पोस्ट बक्स नं० ४५ (M. M. D.) देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय वर्ष
संख्या ४

मनोरंजन

दिल्ली

जनवरी
१९४९

व्यवस्थापक
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

सम्पादक
श्री चिरंजीत

इस अंक में

कहानी

माया	श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी	६
ड्रामा	श्रीमती होमवती देवी	१८
आदर्श और यथार्थ	श्रीमती सावित्रीदेवी 'बृजांगना'	२२
त्यागमयी	श्री राजेन्द्र यादव	२८

लेख

क्या जयपुर अधिवेशन में गांधी जी थे ?	श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार	१०
कांग्रेस में वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति	१४
प्राचीन भारतीय नाट्यगृह और नाट्य-तंत्र	श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार	२५
वन्यपशु कैसे पकड़े जाते हैं ?	श्री विराज	३५

कविता

नवागत	श्री हंसकुमार तिवारी	५
जीवन-दर्शन	श्री शम्भुनाथ 'शेष'	१३
प्यार मेरा कौन-सा आवास खोजे ?	श्री घनश्याम अस्थाना	१७
गीत	श्री सुरेशकुमार 'सुमन'	१४
मेदक की महत्ता	श्री 'बेढब' बनारसी	४५

विशेष-स्तम्भ

हास-परिहास	४५	सलोनी-दुनिया	४९
चित्रलोक	५०	नव-प्रकाशन	५५
फुलझड़ियां	५७	बाल-मनोरंजन	५८

मूल्य आठ आना

वार्षिक मूल्य ५॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवागत

श्री हंसकुमार तिवारी

तुम्हारी जीर्ण वीणा पर नया मैं राग हूं!

बहा कर मेघ का काजल नयन धुलते रहे तुम,
बिछा कर चांदनी मुख-चांद की खुलते रहे तुम,
मगर घुलते रहे जिस ज्वाल में निर्धूम-से नित
तुम्हारे उर अतल की वह प्रकट मैं आग हूं!

पिकी के कण्ठ में रस बन गई बोली तुम्हारी,
क्षितिज पर राग-रोली की मची होली तुम्हारी,
मगर पकती रही जो पीर बेमुँह की हिये में,
उसी का डोलता मैं बोलता-सा दाग हूँ!

सृजन में प्राण का प्राचुर्य बिखरा है तुम्हारा,
प्रलय में त्राण का माधुर्य निखरा है तुम्हारा,
मगर गोपन विजन में फूल-से प्रिय तुम खिले जो
उसी अज्ञेयता का मैं प्रकाश-पराग हूँ!

विरह की रात में जीवन-दिया झलमल जलाया,
मिलन का श्वेत शतदल मृत्यु-अमृत से खिलाया,
मगर इस नियम-बन्धनवश विवश बेकल बने तुम,
उसी का श्वास-तारों पर नवीन विहाग हूँ!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

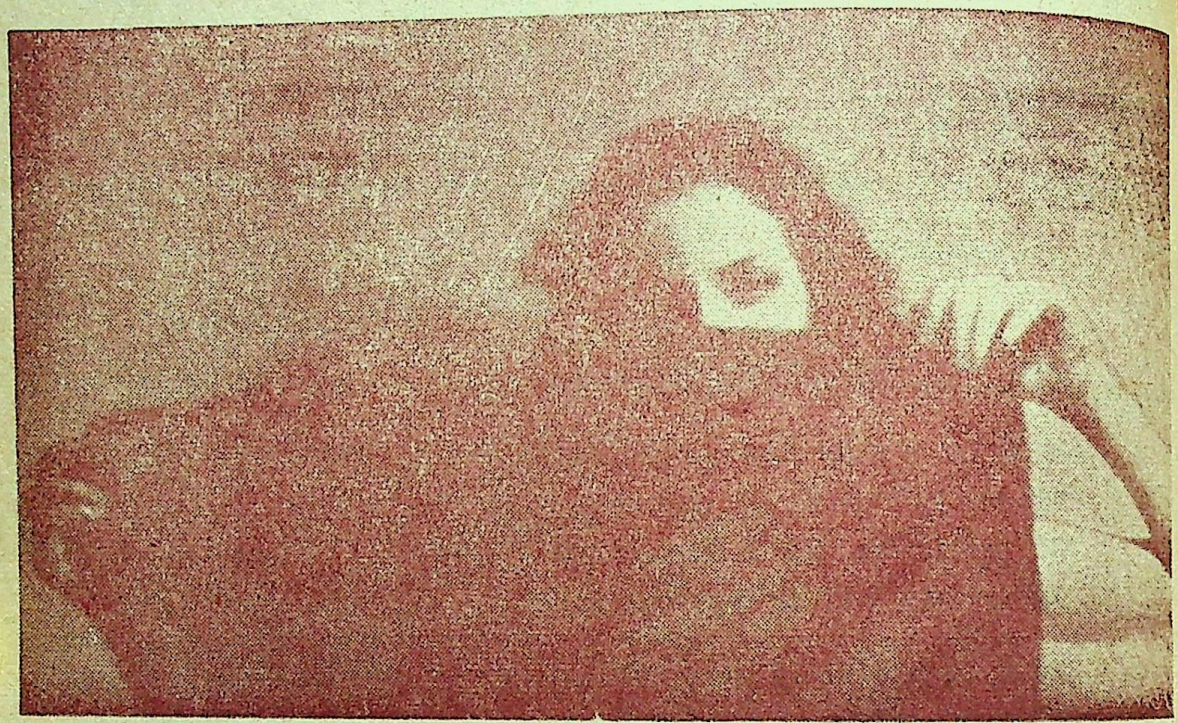

माया

श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी

आज दिलीप एक पार्लमेंटरी सेक्रेटरी है। उसकी मनःस्थिति बदल गई है। वह अपने ऊपर एक जिम्मेदारी का अनुभव कर रहा है। वह नव-नव योजनाओं और कल्पनाओं से ओत-प्रोत हो उठता है। उसे जान पड़ता है, मैं उस नदी में तैर रहा हूँ, जिसकी धारा पानी की नहीं, दूध की है। चारों ओर हरियाली ही हरियाली, पुष्पों और फलों से लदी वाटिकाएं और उद्यान हैं। मैं उनके बीच, इस प्रत्यूष बेला में, चहलकदमी कर रहा हूँ। स्वास्थ्य और सौन्दर्य, सौरभ और मलय-समीर, नव-स्फूर्ति नव प्रेरणाएं, नव जागरण और नव निर्माण मेरे चारों ओर विचर रहे हैं, खेल रहे हैं, फुदक रहे हैं। हरिणियां मेरे निकट आकर मुझे सूंघ रही हैं, देख रही हैं, दृष्टि में भर रही हैं, प्राणों में अमृत घोल रही हैं। हंसों की जोड़िया मेरे पार्श्व में खड़ी मोती चुनती-चुनती तृप्ति में विभोर और प्रमत्त हो कर उड़ रही हैं और उनके मोहक आलाप मैं सुन रहा हूँ। मयूर नाच रहे हैं और मयूरी खड़ी ताक रही है। वह ऐसा कुछ देख रही है, ऐसा कुछ अपने अन्तस्तलमें अनुभव कर रही है, जो नवीन, चिर नवीन, मधुर, मधुरतम, आनंदमय, स्निग्ध और पवित्र है। कुछ उसके ऐसे साथी थे, जिनसे वह मार-पीट कर चुका था। उनसे वर्षों से बोल-चाल बन्द थी। अब स्वयं वह उनसे लपक कर, आगे बढ़कर मिलता। उनका कुशल-क्षेम पूछता, पुरानी सच्ची-झूठी किंवदन्तियां और स्मृतियां जगाता और दूध का दूध और पानी का पानी पृथक् पृथक् कर देता। अपना दोष स्वीकार करते अब उसे लज्जा नहीं थी, ग्लानि नहीं थी; हीनता और लघुता की प्राण-पीड़ा आन्तरिक वेदना नहीं थी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह कुछ खो नहीं रहा, पा रहा है; दे नहीं रहा, ग्रहण कर रहा है। अपनापन आज उसके लिए गौण था; समूह, समुदाय और समाज प्रमुख। हीन से हीन, अयोग्य, असमर्थ, व्यर्थ और तुच्छ भी आज उसकी सीमा में कुछ-न कुछ से साधारण, पर्याप्त, यथेष्ट और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माया किसी की पत्नी है, लेकिन इससे पहिले वह नारी है। नारी होने के नाते उसका अपना एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व भी है, जो समाज के प्रतिबंध को नहीं मानता। समाज के अधिकारी-वर्ग की दृष्टि में उसका यह विद्रोह स्वच्छन्दता हो सकता है; परन्तु उसकी इस स्वच्छन्दता के लिये दोषी कौन है ?

बहुमूल्य बन गया था। परित्यक्त, तिरस्कृत और घृणित भी आज उसके जगत् में उपयोगी, आवश्यक और अनिवार्य हो रहा था। उन्हें भी मिलाते, अपनाते और अपने कार्यक्रम में सहायक बनाते उसे देर न लगती। लोग उलहना देते, लोग व्यङ्ग और विनोद में मिश्री की डली के साथ कंकड़ी तक मिला देते। इन बोली-ठोली और ठठोलियों को वह एक मन्द मुसकान में उड़ा देता। पहले खादी उसके लिए एक बन्धन थी, अब श्रद्धा; क्योंकि वह सचमुच अनुभव करता, यह हमारी स्वाधीनता की लड़ाई की ऐतिहासिक निशानी है। पहले खान पान और व्यक्तिगत आचार-विचार में असंयम उसके विद्रोही स्वभाव और जीवन का अंग था, अब अपवाद···।

दिलीप को यकायक याद आ गया, उसे माया के यहां चलना है। तब स्मरण हो आया, रात को उसी के यहां रह जाना जब मैंने स्वीकार नहीं किया, तो वह बोल उठी थी—"डरते हो !" बात उसने ठीक ही कही थी। किन्तु दिलीप क्या वास्तव में कायर है, भीरु है ? कोई उसके पौरुष और पुरुषार्थ को चुनौती दे, तो···। और तब अपनी सुगठित देह, चौड़े वक्ष, वज्र-कठोर भुजाओं और उनकी मांस-पेशियों की ओर उसका ध्यान चला गया और उसे हंसी आ गयी—अच्छा ! माया ऐसा कहती है—माया ! वह ऐसा कह कैसे सकी ? ये शब्द उसके मुंह से निकले कैसे ? तब वह सोचने लगा—जो बातें कल कहने से बाकी रह गयी थीं, आज उन्हें भी कह डालूंगा।

और गाड़ी निकाल वह तुरन्त उसके यहां जा पहुँचा।

अन्दर गया, तो पता चला माया स्नान कर रही है। वह स्नानागार में है। झरना का स्कूल अभी बन्द नहीं हुआ। वह पढ़ने गयी है। रामाधीन नौकर छुट्टी से लौट आया है और बाजार गया है। रमिया रसोई-घर में है और सरकार की प्रतीक्षा में बैठी है। वस्तु-स्थिति समझ कर वह पुनः ड्राइंगरूम में आ बैठा। उसकी दृष्टि यकायक कोच के ऊपर गई और वह गम्भीर हो गया। उसने पंखा खोल दिया। फिर वह सोफा पर आसीन हो गया। उसे सिगरेट की याद हो आयी। किन्तु फिर स्वतः मन ही मन—"उहँ! क्या सिगरेट मेरा जीवन है ?" कहता हुआ भीतर जाने को उद्यत हो गया। फिर दो पग चल कर लौट आया। यहीं रहना उचित है, यहीं। यही स्थान उपयुक्त है, यही। यहीं बैठकर बातें करूंगा, यहीं।

माया आती है। यह उसी की पग-ध्वनि है। यह सर-सर और मर्मर स्वर भी उसी के नवल-धवल आच्छादन और उत्तरीय का है। यह सुमन सौरभ-समालम्भन भी उसी की देहलता से प्रवहमान हो रहा है।

लो, आ गयी वह। आज इस आलुलायित कुन्तल - राशि की मांग में सिंदूर है, लकीर गाढ़ी और ज्वलन्त। आज उसने चिरदिन यक्त, अव्यवहृत, नवल दीपोपम आभूषण भी धारण किये हैं। आज साड़ी भी जरी के अलंकरण से आवृत और अनुवृत है। और कानों में ये कुण्डल आज उर्वशी स्वयं अपने हाथ-से तो नहीं डाल गयी ? यही माया है। कह रही है—

"तुम आ गये ! मैं तो बहुत देर से उठी। लेकिन तुम तो जान पड़ता है, सो नहीं पाये। कैसे सोते ? मैंने तुम को तंग भी तो बहुत किया। पर वह सब उचित ही था। संसार में कुछ भी अनुचित नहीं है। सब सकारण और प्रकृत है। तुमको दुखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या अनुतप्त नहीं होना चाहिये। जितने दिन जीवन है, दुःख की छाया को निकट नहीं आने देना है। दुःख भय है, रोग है, प्रमाद है। वीरभोग्या वसुंधरा। अच्छा, भलो, पहले खाना खा लो।"

जैसे डोर से, चाहे वह रेशम की ही क्यों न हो, बुलबुल को बांध कर रखते हैं, वैसे ही यह दिलीप आज बंधा है। उत्तर में कुछ बोला नहीं, साथ चल दिया।

खाना चल रहा है; दिलीप लेकिन चुप है। वह बिना खाना खाये क्यों चला आया? अगर वह यहां खाना न खाता, तो उसमें कौन-सी कमी आ जाती? अपना अलोपी किस दिन के लिए है? पतंग की डोर को जितना ही ढील दो, पतंग उतनी ही और आगे सर-सर सरकती है। किन्तु तब क्या पतंग ऊपर ही ऊपर जाती है? क्या तब वह ऊंची ही ऊंची उठती है? ऊंचा उठाने के लिए उसे ढील मात्र न देकर पहले खींचते हैं, तब ढीलते हैं। तो जीवन को जब खींचते जाते हैं और बीच-बीच में ढील दे देते हैं, तब कर्षण उस शैथिल्य को भी आत्मसात् कर लेता है। इसमें अभिमान नहीं, अहंकार भी नहीं, यह केवल गति का आसंजन है।

दिलीप आंखों से न देखकर इस समय वाणी से देख रहा है, श्रवण से देख रहा है, आत्म-मंथन से देख रहा है।

"आप मसूरी जा रही थीं, उसका क्या हुआ?"

"हां, जा रही थी। सोचती थी, दिल बहल जायगा। उनको भी झरना की बहुत चिन्ता रहती है। पर अब नहीं। झरना अच्छी है, अच्छी रहेगी।"

"हूँ·····।"

"पर तुम यहां क्यों नहीं आ जाते? कितने कमरे खाली पड़े हैं! रामाधीन को साथ ले जाओ और सब सामान यहां ले आओ।"

"लेकिन··[रमिया साग देना चाहती है।] मुझे नहीं चाहिये।"

"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, मैं जो कह रही हूँ। तुम जिस लिए हिचकते हो, उसको मैं समझ रही हूँ। पर अगस्त से पहले तो वे आयेंगे नहीं।"

"ऐसा नहीं हो सकता। मुझे अपने प्रति सच रहना है।"

'हूं, तो यह बात है। कुछ बात करने लगे हो आजकल!"

उत्तर में दिलीप कुछ नहीं बोला। मन में आया कि कह दे— तुम से सीख जो रहा हूँ। पर कहा कुछ नहीं। केवल अर्धनिमीलित दृष्टि से माया की ओर एक बार देख लिया।

कमरे में खस की भीनी-भीनी सुगन्ध फैल रही थी। बाहर धूप काफी तेज थी। लू भी चल रही थी। पर यहां शीतलता यथेष्ट थी। खस की टट्टियां आज ही लगवाई गई थीं और पंखा चल रहा था। दिलीप सोच रहा था—हूँ, तो जान पड़ता है, मसूरी जाना स्थगित ही कर दिया है।

"तुमने कुछ खाया नहीं!"

"वाह! खा तो लिया, जितनी भूख थी। आशंकाओं और आरोपों से ही आपको छुट्टी नहीं है। आप कुछ देखती भी हैं!"

गुरु-गम्भीर वाणी में माया कह बैठी—"देख भी कैसे सकती हूँ? देखने के लिए अधिकार भी तो चाहिये। वह अधिकार जो आभिजात्य, सभ्यता, नीति और सामाजिक परम्परा, शृंखला और संस्कार की खाल पहनकर आयेगा, मनुष्य के स्वतन्त्र आत्म-दान का उसके आगे मूल्य क्या है!"

दिलीप बोला—"आप मेरे साथ अन्याय कर रही हैं। कैसा भी समाज हो, कुछ-न-कुछ प्रतिबन्ध व्यक्ति के लिए रहेंगे ही।"

माया ने भोजन का ग्रास उठाया और रख दिया, बोली—"और व्यक्ति सदा उनको मानने के लिए, इसी तरह, अधिकारी वर्ग के चरण कमलों के आगे वाली भूमि पर नाक रगड़ता रहेगा!"

दिलीप सन्न रह गया।

माया फिर भी कहती गई—"तुम समझते हो, न्याय उनके यहां गिरवी रखने की चीज है, जो शासनाधिकारी हैं! तुम सोचते हो, न्याय खोखली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंखों पर मंडित कृत्रिम नेत्रों के खोल और डार्क चश्मे की शोभन दृष्टि है! न्याय एक व्यक्तिगत आकांक्षा की मनमानी व्याख्या है—निरंकुश, अनियंत्रित और संवर्द्धनशील!"

दिलीप ने माया को इतना उत्तेजित कभी नहीं देखा था। आज वह विचार कर रहा था—यदि इस कथन में इतनी तीव्रता, जलन और व्याकुलता है, तो भी क्या इसके मूल में केवल वासना है?

* * *

आज माया को बैंक से रुपया निकालना था। गाड़ी पोर्टिको में खड़ी थी। लेकिन दिलीप को तो बहुत काम है। वह बार-बार सोचता है—हां, काम तो है मुझे। पर सोचने मात्र से क्या होता है!

दोनों साथ ही बैठे। तै हुआ, वह बीच में उतर जायगी। गाड़ी चली। धूप बहुत तेज थी और लू भी चल रही थी। बंगले का फाटक पार करते-करते दिलीप अस्तव्यस्त हो गया। बोला—'लाओ, चेक मुझे दे दो। मैं रुपया ला दूंगा।"

"लेकिन तुमको तो शरणार्थियों के कैम्पों में जाना है।"

"हां, जाना तो है। चला जाऊंगा मैं। पर धूप बहुत तेज है। और यह लू। नहीं-नहीं। तुम लौट जाओ, मैं रुपया ला दूंगा। उसके बाद जाऊंगा कहीं।"

"अच्छा, तो मैं रामाधीन को साथ कर देती हूँ। अपना सारा असबाब इसके साथ भिजवा देना; फिर शाम को, या रात को जब छुट्टी मिले, चले आना।"

दिलीप चुप रह गया। माया गाड़ी से उतर पड़ी। वहीं से उसने रामाधीन को पुकारा। रामाधीन आ गया, तो माया ने कह दिया—"जा, साहब का सामान ले आ।"

दिलीप माया के मुंह की ओर ताकता रह गया!

* * *

साल भर हो गया।

इस अरसे में दुनिया कुछ बदल-सी गई है। सदा माया के साथ रहना सम्भव न होने पर भी नैश-विश्राम तो वहीं होता है। यों दिलीप एक सरकारी व्यक्ति है। उसका अपनी कोठी है, ऑफिस भी है। पर व्यक्तिगत जीवन की बात और है; क्योंकि आज राजधानी में कौन नहीं जानता कि दिलीप के बिना माया खाना नहीं खाती।

कहने को तो बहुतेरी बातें हैं। यानी माया के पति देवता भी आखिर हैं ही। लेकिन इससे क्या? आत्मदान के अनन्त प्रकार हैं। और प्रतिभा का विकास सदा स्वतन्त्र वातावरण में ही होता है। दिलीप की सेक्रेटरियट में आज जो इतनी प्रतिष्ठा है, उसकी कार्यशीलता और प्रत्युत्पन्न चेतना जो इतनी प्रखर है, इसके मूल में एक माया है—केवल माया है।

लेकिन परसों माया के प्रति श्री विश्वनाथ दर ज्यों ही सो कर उठे, त्यों ही रामाधीन ने आकर सलाम बजाते और खुशी जाहिर करते हुए कहा—'सरकार, झरना के भाई हुआ है। सो मुझे अब की बार कोई अच्छा-सा इनाम मिलना चाहिये।"

और दर साहब ने झट से अंगूठी उतार कर उसे दे दी। पर उनको आश्चर्य बड़ा हुआ। झरना तेरह साल की हो गई है। उसके बाद तो फिर ऐसा अवसर आया नहीं। फिर कलैंडर पर दृष्टि गई। सोचा, कब-कब वे दिल्ली आये हैं। फिर कुछ अन्य बातें भी याद हो आयीं।

फिर शाम हुई। रात हुई। नौ बजे। साढ़े नौ पर दिलीप आया। दोनों ने साथ-साथ भोजन किया। अनेक बातों के सिलसिले में दर साहब ने कह दिया—"अरे हां, मैं तुम को बधाई देना तो भूल ही गया, दिलीप!"

दिलीप सुनकर स्तब्ध रह गया। फिर सम्हल कर बोला—"कैसी बधाई?"

दर साहब हंस दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या जयपुर अधिवेशन में गांधीजी थे ?

भारतवर्ष के स्वतन्त्र होने के बाद कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन जयपुर में हुआ। पिछले ५५ वर्षों में देश की सब से महान् सार्वजनिक संस्था के अधिवेशन का गौरव प्राप्त करने का भी सर्वप्रथम अवसर रियासतों में जयपुर को प्राप्त हुआ, इसलिए यह स्वाभाविक था कि स्वागत-समिति विराट् समारोह करती। आयोजन की विशालता, कलापूर्ण रचना, उपस्थिति और सर्वोदय प्रदर्शनी आदि अनेक दृष्टियों से यह अधिवेशन सफल भी रहा। किन्तु क्या यह विराट् आयोजन ही, जिस पर करीब ६० लाख रु० व्यय हो गया, कांग्रेस का उद्देश्य था ? यह एक प्रश्न था, जिसने अधिकांश कांग्रेसी विचारकों को चिन्तन-सागर में डुबो दिया था। लोग वहां जाकर और मेला देखकर जहां कुछ प्रसन्न होते थे, मन बहलाते थे, वहां सब कुछ देखने और सुनने के बाद यह विचार उनके हृदय और वाणी द्वारा प्रकाशन में आये बिना न रहता — आखिर इस सब समारोह का सार क्या ? इससे देश को लाभ क्या ? इससे राष्ट्र की उन्नति में कितनी सहायता प्राप्त होगी ?

उस महान् शिविर का नाम 'गांधी नगर' था। म० गांधी की विशाल भव्य प्रतिमा राष्ट्रीय महोत्सव पर आने वाले हजारों लाखों भारतीय नागरिकों के हृदय में अमर राष्ट्रपिता के प्रति श्रद्धा का उद्रेक उत्पन्न कर रही थी। स्थान स्थान पर गांधी जी के छोटे बड़े नयनाभिराम चित्र, उनके जीवन-चरित, उन पर लिखे गये खण्डकाव्य या महाकाव्य, उनकी शिक्षाओं के प्रतिपादक हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित आकर्षण युक्त ग्रन्थ इत्यादि अनायास ही प्रत्येक दर्शक का चित्त उस महान् नेता के प्रति खींच देते थे, जिसने इस निष्प्राण भारत में अमर ज्योति जगाकर प्राण संचार किया था। समय-समय पर आकाश को गुंजा देने वाले 'गांधीजी की जय' के नारे भी नवयुग के प्रवर्त्तक महान् आत्मा का स्मरण कराते थे। विषय समिति का अधिवेशन हो या कांग्रेस का खुला अधिवेशन, अधिकांश वक्ता म० गांधी का पुण्य स्मरण कर उनकी उच्च आकांक्षाओं और महान् आदर्शों का चित्रण करते हुए श्रोताओं की हृत्तंत्री को झंकृत करने की चेष्टा में प्रयत्नशील रहते थे। १५-१६ प्रस्तावों में, जो वहां स्वीकृत हुए, करीब दस ऐसे थे, जिनमें म० गांधी के नाम से राष्ट्र से कोई न कोई अनुरोध किया गया था।

म० गांधी का भौतिक शरीर जयपुर में राष्ट्र को कोई परामर्श देने के लिए विद्यमान नहीं था, और शायद पिछली एक तिहाई शती में यह पहला कांग्रेस अधिवेशन था, जब राष्ट्रपिता वहां प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष परामर्श देने के लिए विद्यमान न थे। वे अब यरवदा मंदिर में भी विद्यमान न थे, जहां से लाने की कुंजी हम तलाश करते। लेकिन शायद इसी लिए समस्त वातावरण को गांधीमय कर देने की चेष्टा में जयपुर कांग्रेस का प्रत्येक व्यक्ति अधिक से अधिक सतर्क और तत्पर था। ऊपर के परिच्छेद में हम जो कुछ लिख आये हैं, वह सब शायद म० गांधी के अभाव को भूलने के लिए अथवा उन्हें अपने और अधिक निकट अनुभव करने का महान् प्रयत्न था।

किन्तु.....

समस्त वातावरण को गांधीमय बनाने के लिए आयोजित सब प्रयत्न देख कर भी, गांधी जी की जय के नारे सुन कर भी 'किन्तु' का एक रहस्योद्भेदी प्रश्न सामने आकर खड़ा हो जाता था। वहां के कोलाहलपूर्ण वातावरण में भूलने का प्रयत्न करने पर भी यह 'किन्तु' का प्रश्न सामने आये बिना नहीं रहता था।

गांधी जी वहां नहीं थे। उनकी स्मृति का स्थूलरूप वहां होते हुए भी उनकी आत्मा वहां नहीं थी। आज हम राष्ट्रवादी अपनी स्वतन्त्रता पा कर उस राष्ट्रपिता मह की शिक्षाओं को भूल बैठे हैं और सच तो यह है कि गोडसे की गोली से बहुत पहले गांधी जी का जय-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक—
श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

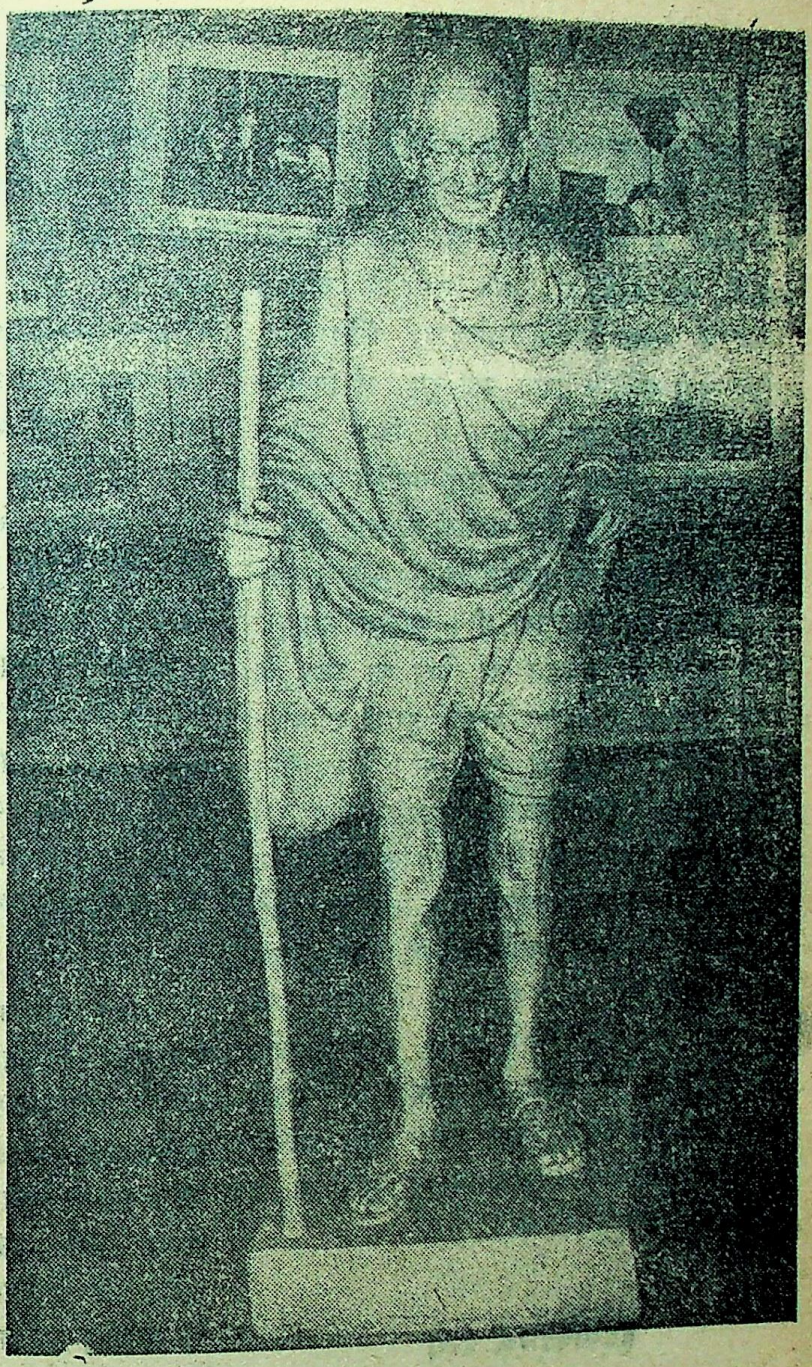

कार करने वाले हम लोग अपने भ्रष्टाचरण, लोभ व नैतिक दुर्बलता से उनका मर्मान्तक पीड़ा पहुँचा चुके थे। १२५ वर्ष जीवन व्यतीत करने की उनकी अभिलाषा को चूर्ण कर चुके थे। कांग्रेस में हम ने अपने चरित्र का अपनी आत्मा का निरीक्षण करना चाहा, किन्तु इसी पुण्यकार्य —चारित्रिक आदर्श उपस्थित करने के प्रस्ताव पर, जो हमारी सम्मति में जयपुर का सबसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव था, हम आपस में उलझने लगे। असेम्बली सदस्य और देश के मंत्री कौन ऊंचा आदर्श पेश करे? अप्रिय वातावरण के अप्रिय प्रसंग के बाद यह निश्चय हुआ कि न असेम्बली सदस्यों से आदर्श उपस्थित करने के लिए विशेष आग्रह किया जाय और न मंत्रियों से।

म० ईसा और स्वामी श्रद्धानन्द के पुण्य अमर बलिदानों की भांति बापू का बलिदान भी अत्यन्त ऊँचा और और पवित्र था। उनके प्रति राष्ट्र की श्रद्धा जो पहले ही अगाध थी, इस बलिदान के कारण और भी बढ़ गई। किन्तु हमारी श्रद्धा तर्क और बुद्धिवादी न हो कर अन्ध-श्रद्धा के रूप में परिणत हो गई। वे महान् आत्मा न हो कर हमारे निकट भगवान् बन गये और भगवान् तो जीवन में आचरण की नहीं, श्रद्धा व अर्घ्य की वस्तु होती है। म० गांधी भी हमारे लिए पुरुषोत्तर हो गये, उनकी कोई वस्तु ग्रहण किये जाने योग्य नहीं रही। पिछले दिनों भारत के गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचार्य और पं० नेहरू म० गांधी के प्रति श्रद्धा के उमड़ते हुए सागर को देख कर इसी आशंका से विचलित हो गये थे। उनकी वह आशंका आज सत्य सिद्ध हो रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म० गांधी ने कांग्रेस को राजनीति से पृथक् होने और सर्वात्मना रचनात्मक कार्यक्रम अपनाने का परामर्श अपने महाप्रस्थान से एक दिन पूर्व दिया था। वे राजनीति को रचनात्मक कार्य से पृथक रखना चाहते थे। जयपुर में भी रचनात्मक कार्य और राजनीति पृथक थे, यह स्पष्ट था। म० गांधी के आत्मीय परिवार के सदस्य सर्वश्री प्यारेलाल, मीरा बहन, सुशीला नायर आदि के दर्शन नहीं हुए। श्री विनोबा-भावे जयपुर में विद्यमान अवश्य थे, किन्तु कांग्रेस मंच पर नहीं, सर्वोदय समाज द्वारा संगठित प्रदर्शनी में उनके दर्शन होते थे। गांधीजी की सभी रचनात्मक प्रवृत्तियों का सुन्दर प्रदर्शन जयपुर कांग्रेस समारोह की सब से बड़ी विशेषता थी। अत्यन्त कलापूर्ण विविध प्रवृत्तियों के प्रदर्शन को देख कर आज के शिक्षित पुरुष का भी ध्यान अपनी पुरानी गृहोद्योग-परम्परा की ओर आकृष्ट हो जाता था। दीर्घकालीन ब्रिटिश शासन में घरेलू उद्योगों की ओर उपेक्षा ही नहीं, अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग से निर्मम हत्या का प्रयत्न किया गया था। उन सब उद्योगों को पुनरुज्जीवित करने की गांधीजी की उत्कट अभिलाषा थी। यह केवल अभिलाषा ही नहीं थी. इन पंक्तियों के लेखक की नम्र सम्मति में पूंजीवाद, साम्राज्यवाद, वर्गसंघर्ष और प्रलयंकर युद्धों की पाश्चात्य संस्कृति से संतप्त विश्व को यह उनका अमर संदेश था। सर्वोदय समाज द्वारा संगठित प्रदर्शनी वस्तुतः गांधी जी के आत्मा का एक प्रतिबिम्ब था।

हृदयविदारक दृश्य

कांग्रेस का समस्त संघर्ष भारत की स्वतन्त्रता के लिए था और वह इसे पा कर जयपुर में प्रथम समारोह भी मना रही थी, किन्तु वहां एक दो ऐसे दृश्य थे, जो हृदय में हूक सी पैदा कर देते थे। कांग्रेस पण्डाल के निकटवर्ती एक प्रमुख द्वार पर भारतवर्ष का एक बड़ा मानचित्र था, जिस पर बिजली के रंग-बिरंगे लट्टू क्षण-क्षण में जलते और बुझते हुए दर्शक का ध्यान हठात् अपनी ओर खींच लेते थे। इस मानचित्र के ऊपर बड़े बड़े बिजली के अक्षरों में 'अखण्ड हिन्द' लिखा हुआ था यों अपनी मातृभूमि का मानचित्र हृदय में सदा हर्षोद्रेक का कारण बनता है, किन्तु उस मानचित्र को देख कर एक वेदना-सी हृदय में भर जाती थी कि हमारा देश खण्डित हो गया है। ला० लाजपतराय का पंजाब, सीमान्त गांधी खां अब्दुलगफ्फार खां और बहादुर लालकुर्ती दल का सीमाप्रांत और आचार्य कृपलानी का सिंध अब भारत में नहीं रहा। भारतवर्ष का बायां उत्तर स्कन्ध कट गया था जितनी बार उस मानचित्र को देखा, विषाद की काली रेखा हृदय पर वृहदाकार धारण करके छा गई। ऐसे ही दो एक मानचित्र अन्य स्थानों पर भी लगे हुए थे और यही विचार हृदय में पैदा करते थे। स्व० कविवर रवीन्द्र का 'जनगणमन' गीत सुनता, तो ये पंक्तियां बार बार स्मरण आतीं—

'पंजाब सिंध गुजरात मराठा, द्रविड़ उत्कल बंग।
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा, उच्छल जलधि तरंग।'

अब पंजाब और सिंध कहां हैं? क्या भारतवर्ष कभी फिर अखण्ड रूप धारण करेगा?

मुख्य संदेश

जयपुर कांग्रेस के मुख्य प्रस्ताव कौन से थे, किन समस्याओं पर विचार किया गया, उसके प्रमुख वक्ता कौन-कौन थे, उनके भाषण कैसे थे, यह सब लिखने की यहां आवश्यकता नहीं है। अखबारों में इन प्रश्नों की चर्चा बहुत कुछ हो चुकी है। उसे लिखकर मैं पुनरावृत्ति नहीं करना चाहता। कांग्रेस ने देश को एक महत्वपूर्ण संदेश देने की चेष्टा की और वह था आत्म-निरीक्षण का संदेश। हम अपने चरित्र और हृदय को ऊँचा करें, जिस कांग्रेस-संस्था को म० गांधी के पुण्य नेतृत्व में हजारों ज्ञात या अज्ञात स्वयंसेवकों के अपूर्व त्याग और बलिदान ने गौरवमयी बनाया, उसे हम अपनी कुत्सित स्वार्थ-प्रधान दुष्प्रवृत्तियों से कलंकित न करें, यही जयपुर कांग्रेस का संदेश था। यह दुर्भाग्य की बात है कि हम वहां आत्मनिरीक्षण की बजाय परच्छिद्रान्वेषण में लग गये। तथापि मैं तो जयपुर कांग्रेस का राष्ट्र को एक ही संदेश समझता हूँ और वह है आत्म-निरीक्षण का संदेश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-दर्शन

श्री शम्भुनाथ 'शेष'

सतलुज की भीगी रेती में उगता जीवन देख रहा हूँ!
घोर तमिस्रा के आंचल में ऊषा-आनन देख रहा हूं!

कहीं स्वतन्त्र विचारों को भी बन्दी कर पाईं प्राचीरें?
गिरिवर की गह्वर कारा में निर्झर-नर्त्तन देख रहा हूँ!

वंशी की ध्वनियां आती हैं स्वरपायी कानों में मेरे;
सूनी-सी आंखों से पुनरपि मानस-दर्पण देख रहा हूँ!

लहरों की व्याकुलता क्या है अभिलाषी अन्तर का गायन?
मैं उनके उत्थान-पतन में जीवन-दर्शन देख रहा हूँ!

किस का अभिनन्दन करने को छिटके हैं अम्बर में तारे?
नन्दन-वन का चल-जल-तल पर अद्भुत चित्रण देख रहा हूँ!

मानव का स्वागत करने को कितने उत्सुक हैं नभ-वासी;
दूर क्षितिज पर किन्नरियों का आत्म-निवेदन देख रहा हूँ!

अपनी धुन में गाये जा कवि, गीत-प्रदीप जगाये जा कवि;
तेरी वाणी में इस युग का पट-परिवर्तन देख रहा हूँ!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

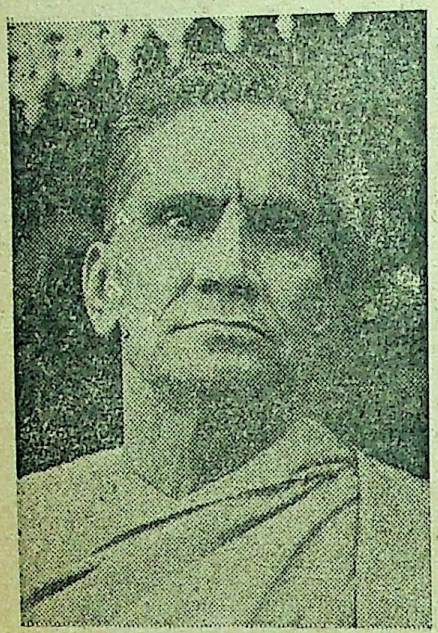

१९११ के पश्चात् दो-तीन अवसरों को छोड़ कर कांग्रेस के शेष सभी अधिवेशनों में मैं सम्मिलित होता रहा हूँ। अत्यन्त प्रबल इच्छा रहते भी इस वर्ष कुछ अनिवार्य कारणों से मैं जयपुर नहीं जा सका। मैंने जैसे कांग्रेस के मंच पर भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन की माडरेट से लेकर क्रांति तक की जीवन-यात्रा देखी है, वैसे ही वहां भाषण-कला की प्रगति के इतिहास को भी बड़े ध्यान से देखा है। मैं इस लेखमाला में उस इतिहास की उन घटनाओं का ही उल्लेख करूंगा, जिन्हें इतिहास के परिच्छेदों के शीर्षक कहा जा सकता है।

कांग्रेस में वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास (१)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

★

सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

मैंने कांग्रेस का पहला अधिवेशन कलकत्ते में देखा था। मैं उसी वर्ष गुरुकुल विश्वविद्यालय का स्नातक बना था। मन में कांग्रेस का अधिवेशन देखने का उत्सुकतापूर्ण उत्साह वर्षों से इकट्ठा हो रहा था। विद्यार्थी रहते हुए जिन महापुरुषों के नाम और काम सुने और पढ़े थे, उनको देखने के लिए मन में अपूर्व उत्साह था और जिज्ञासा भी थी कि जिनके विषय में इतना कुछ सुना है, वे कैसे हैं? उनके बोलने की शैली कैसी है? और क्या उनके भाषणों को पढ़ने से हृदय में जैसी उत्तेजना उत्पन्न होती है, वैसी सुनने से भी उत्पन्न होगी?

कलकत्ते में कांग्रेस के उस अधिवेशन के सभापति पं० बिशन नारायण दर थे। दर महोदय कानून के बहुत उद्भट विद्वान और अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध लेखक थे, परन्तु उनका डीलडोल बाबुआना था और आवाज अदालत के योग्य थी। साथ ही उन्हें उस मुसीबत का भी सामना करना पड़ा, जिससे कई युग-परिवर्तन हो जाने पर भी कांग्रेस के अध्यक्षों को अब तक छुटकारा नहीं मिला। वह मुसीबत है, शैतान की आंत की तरह या कुम्भकर्ण के नाक की तरह लम्बा भाषण। जिस बोझ ने पट्टाभि जैसे विनोद-पूर्ण वक्ता को १९४८ में दबा दिया, यदि १९११ में पं० बिशन नारायण दर दब गए थे, तो आश्चर्य ही क्या था? किंबहुना, अपने जीवन में देखी हुई पहली कांग्रेस के पहले अध्यक्ष-भाषण से मुझे बहुत निराशा हुई।

उस घटना को ३७ वर्ष व्यतीत हो गये हैं। उस अधिवेशन के विस्तृत नोट भी मेरे पास नहीं हैं; इस कारण अन्य वक्ताओं ने मुझ पर कैसा प्रभाव डाला, यह विस्तार से स्मरण नहीं। परन्तु एक वक्ता के भाषण का जादू का-सा असर अब तक स्मृति पट पर अंकित है। वह थे बंगाल के केसरी सुरेन्द्रनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनर्जी। वे अपने समय के और अपनी शैली के सर्वोत्कृष्ट वक्ता माने जाते थे। उस समय की भारत की राजनीति इंग्लैंड के लिबरल दल का रूपांतर सी थी। कांग्रेस में जो भाषा प्रयुक्त होती थी, वह ग्लैडस्टन और जान ब्राईट की प्रतिच्छवि होती थी। सुरेन्द्र बाबू को अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों में 'भारतीय ग्लैडस्टन' का नाम दिया जाता था। वस्तुतः उनका अंग्रेजी भाषा पर अद्भुत प्रभुत्व था, और भाषण की कला के तो वे आचार्य थे। जिस समय वे कांग्रेस के मंच पर बोलने के लिए खड़े होते थे और सिंह की तरह गर्जते हुए स्वर से 'Mr. President, ladis & gentlemen' का संबोधन करते थे, उस समय कांग्रेस के घेरे की तो बात ही क्या, आसपास के बाजारों में गये हुए प्रतिनिधि भी खिंच कर पण्डाल में चले आते थे। यह ध्यान में रहे कि उस समय माइक्रोफोन का आविष्कार नहीं हुआ था। वक्ता का सम्पूर्ण धन उसका कण्ठ-स्वर था। सुरेन्द्र बाबू को भगवान ने अद्भुत कण्ठ-स्वर दिया था, जिसे उन्होंने अभ्यास द्वारा खूब परिष्कृत किया था। उनका सिंह-गर्जन तूफानी समुद्र की लहरों की तरह उठता और गिरता था। परिष्कृत और जोरदार शब्दों का अनवरत प्रवाह विच्छिन्न ही नहीं होता था, श्रोता का हृदय भी उनके शब्दों के उत्थान और पतन का साथ देता था, जिससे एक ऐसा

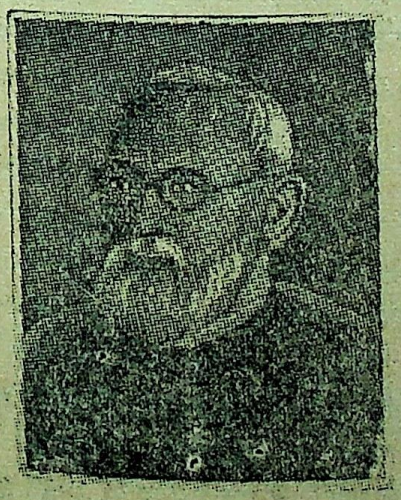

श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

श्री गोपालकृष्ण गोखले

नशा सा उत्पन्न होता था, जो तब उतरता था, जब वक्ता अपने स्वर को ऊंचे से ऊंचे लय पर ले जाकर अंग्रेजी कवि की निम्नलिखित पंक्ति देशवासियों को सुनाता था—

"Nations by themselves are made!"

कलकत्ते की वह कांग्रेस मेरे लिये सुरेन्द्र बाबू की कांग्रेस थी। मैं और सब कुछ भूल गया, केवल बंगाल के उस सिंह की गर्ज कानों में गूंजती रही। वह मेरा कांग्रेस की व्यावहारिक राजनीति में पहला पाठ था।

गोपालकृष्ण गोखले

१९११ के बाद मेरी स्मृति में कांग्रेस की वक्तृत्व कला के इतिहास का दूसरा परिच्छेद लखनऊ की कांग्रेस में लिखा गया, जहां मुझे श्री गोपालकृष्ण गोखले के दक्षिण अफ्रीका सम्बन्धी भाषण ने असाधारण रूप से प्रभावित किया। उस समय के अन्य नौजवान भारतवासियों की तरह मेरे विचार भी गर्म थे। माडरेट पार्टी ने सूरत में लोकमान्य तिलक के साथ जो व्यवहार किया था, उसे मैं भी बहुत घृणा योग्य समझता था। और इसके साथ यह भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक था कि लोकमान्य का मुख्य प्रतिद्वन्द्वी गोखले जी को ही माना जाता था। फिर भी न जाने क्यों, गोखले जी के व्यक्तित्व के प्रति मेरे मन में एक गुप्त श्रद्धा की भावना थी। इस कारण जब लखनऊ कांग्रेस के उस अधिवेशन में, जिसमें वर्षों की फूट के पश्चात् श्रीमती एनी वेसेण्ट के प्रयत्न से दोनों दलों के कांग्रेसी नेता एक मंच पर इकट्ठे हुए थे, अधिवेशन के वयोवृद्ध सभापति श्री अम्बिकाचरण मजूमदार ने यह घोषणा की कि अब मि० गोपालकृष्ण गोखले दक्षिण अफ्रीका सम्बन्धी प्रस्ताव को उपस्थित करेंगे, तब मैं बड़ी सावधानता से सुनने के लिए तन कर बैठ गया, और देखने तथा सुनने लगा।

मैंने देखा कि एक भव्य मूर्ति मंच की ओर बढ़ी। मध्यम दर्जे का ऊंचा कद, गोरा भरा हुआ रोबीला चेहरा, गम्भीर और प्रतिभापूर्ण सुन्दर आंखें और विशाल माथा उस मूर्ति की भव्यता को बढ़ा रहे थे। सिर पर दक्षिणी ब्राह्मणों जैसी लाल पगड़ी उस चेहरे की शोभा को द्विगुणित कर रही थी। बन्द गले का कोट और गले में किनारीदार दुपट्टा गोखले महोदय का सदा का साथी था। जब इस वेष में वे व्याख्यान-वेदी की ओर बढ़े तो सारा उत्सव-मण्डप तालियों की कर्णभेदी ध्वनि से गूंज उठा। वक्ता के दायें हाथ में कुछ कागज थे, जिनमें सम्भवतः व्याख्यान के लिए नोट थे। दूसरा हाथ खाली था। खड़े होते ही आपने सभापति को सम्बोधन करके शान्त भाव से बोलना आरंभ कर दिया। गोखले जी की आवाज मध्यम, मधुर और अत्यन्त परिमार्जित थी। वह दूर तक सुनाई देती थी, परन्तु उसमें चिल्लाहट या बहुत अधिक उतराव-चढ़ाव का अभाव था। यदि सुरेन्द्र बाबू के सिंहनाद को तूफानी समुद्र की लहरों से उपमा दी जाय, तो गोखले महोदय के कण्ठस्वर को हृषीकेश में लगभग समतल बहती हुई गंगा की वसन्त-कालीन धारा से उपमा दी जा सकती है। अनादि वैदिक काल से वह धारा उसी तीव्र गति से, परन्तु उसी शान्त भाव से बह रही है। गोखले जी की वक्तृता की धारा भी अविच्छिन्न गति से बहती थी। न वे हाथ-पांव पटकते थे, न गले की नसों पर जोर डालते थे। वे अत्यन्त परिष्कृत और परिमित वाक्यों में अपनी बात कहे जाते थे। लखनऊ की कांग्रेस में वे लगभग ५० मिनट बोले। उन पचास मिनटों में न तो सारे पण्डाल में कोई शब्द हुआ और न किसी की आंखें कहीं अन्यत्र गईं। कान वक्तृता पर थे और आंखें वक्ता के चेहरे पर। औरों की वे जानें, अपनी बात तो मैं कह सकता हूँ कि वे पचास मिनट मुझे ५० सैकेण्ड से भी कम मालूम हुए। समय कोई वस्तु है, यह मुझे तब याद आया, जब व्याख्यान के अन्त में अपने कंठस्वर को थोड़ा सा बढ़ा कर और ५० मिनटों के व्याख्यान में पहली बार दायां हाथ छाती तक उठा कर वक्ता ने कहा—

"Let us knock at the door till it is opened."

यह वाक्य कह कर जब आप अपनी कुर्सी पर जा बैठे, तब श्रोताओं को अनुभव हुआ कि मानो वे आकाश से पृथ्वी पर आ पड़े। ५० मिनट से रुका हुआ-सा धुंआ एक दम फूट पड़ा। सारा पण्डाल लगभग ५ मिनट तक तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजता रहा।

एक बार अत्यन्त दुःखी होकर गोखले जी ने वायसराय की कौंसिल में कहा था, "राजनीतिक दासता कितनी बुरी वस्तु है, यह हम तब अनुभव कर सकते हैं, जब हम सोचें कि योग्य से योग्य भारतवासी भी एक परिमित ऊंचाई से ऊपर सिर नहीं उठा सकता।" इस का दृष्टान्त स्वयं गोखले जी थे। भारतमाता का वह सपूत इस योग्य था कि किसी स्वतन्त्र देश का राष्ट्रपति या प्रधान सचिव बनता। उसे देख कर, उसकी बात सुन कर श्रद्धा से मस्तक झुक जाता था। तभी तो महात्मा गांधी उसे अपना गुरु मानते थे। यह दासता का अभिशाप था कि ऐसा योग्य भारतवासी जीवन भर एक आन्दोलनकारी की हैसियत से ऊपर न उठ सका।

मेरी सम्मति में नये युग के सर्वांगीण भारतीय वक्ताओं में श्रीयुत गोपालकृष्ण गोखले का स्थान सर्वोत्कृष्ट था। हां, अँग्रेजी में भावुकतापूर्ण जोशीली वक्तृता देने वालों में प्रथम नंबर पर श्रीयुत सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को ही मानना पड़ेगा।

—क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यार मेरा कौन-सा आवास खोजे ?

श्री घनश्याम अस्थाना

थम गया है गीत नभ में रवि-किरण का,
नैश कुंतल-सी घिरी मेरी उदासी;
सामने का नीड़ है खामोश बिल्कुल,
लौट कर आया नहीं अब तक प्रवासी !

चूमता है दूर पूरब के क्षितिज पर
चांद लुकछिप कर गगन की नीलिमा को;
झांक बादल के रजत वातायनों से
प्यार देती ज्योत्स्निका पागल शमा को !
लौट, परदेसी मुसाफिर, याद तेरी—
इस विजन में कौन-सा उल्लास खोजे ?

नींद का पंथी सितारों की डगर से
आ रुका मेरी पलक की छांह पा कर;
छोड़ कर केवल तुम्हारी याद, रानी,
ले गया मेरे मधुर सपने चुरा कर !

झिलमिलाती रश्मियों की लहरियों पर
बह रहे मेरे रुपहले गान, रानी,
मैं खड़ा हूँ दीप ले तट पर अकेला
उठ रहा उस पार से तूफान, रानी !
प्रबल झंझा के झकोरों में उलझ कर—
दीप मेरा कौन-सा विश्वास खोजे ?

वह उनींदा चांद ढलता जा रहा है
सिन्धु-से गंभीर नीलाकाश में, री !
जाग मेरी प्रेरणाओं की प्रभाती,
बांध लूं तुझको स्वरों के पाश में, री !

व्योम की पलकें झुकीं, लौ कांपती है,
दीप, अंतिम बार ले लूँ प्यार तेरा !
तुम सिमट जाओ भुजाओं में प्रवासिनि,
झुरमुटों के पार्श्व में हँसता सबेरा !
भीगता निशि भर रहा जो चुम्बनों में—
चांद मेरा कौन-सी मधु-प्यास खोजे !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

ड्रामा

श्रीमती होमवती देवी

कई दिन से तमाम मुहल्ले में यह चर्चा जोरों पर थी कि आस-पास के मुहल्लों को मिला कर सभी लोग मिल-जुल कर इस वर्ष जन्माष्टमी के अवसर पर श्रीरामचन्द्र जी के मन्दिर का जो चौक है, उसमें कोई बढ़िया सा ड्रामा खेलें एक कमेटी बनाली गई और उसमें यह तय हुआ कि भगवान रामचन्द्र जी का ही ड्रामा होना चाहिए। जन्म से लेकर धनुष यज्ञ तक का दृश्य काफी रहेगा और अच्छा भी लगेगा तथा चार घंटे का समय भी आसानी से कट जायेगा। कृष्ण भगवान की तो झाँकी ही सजा लेंगे और हिंडोला डाल देंगे झुलाने के लिए।

उक्त कमेटी का प्रधान था नन्दकिशोर और मन्त्री बन गये राधेलाल। वैसे सारे आस-पास के मुहल्ले भर के लड़के जी तोड़ कर इस काम में जुट गये थे। न नहाने की सुध थी और न खाने की, क्योंकि समय था कम और काम का कोई अन्त नहीं। सब से बड़ी परेशानी थी जरूरी और बढ़िया सामान जुटाने की। घर-घर से आवश्यक वस्तुएं मांग-मांग कर लाना और भांति-भांति की गालियां और झिड़कियें खाना कोई मामूली बात थोड़े ही है? विशेष रूप से गहने-कपड़े मांगने की समस्या बड़ी जटिल थी, क्योंकि स्त्रियों को अपनी इन दोनों चीजों से जैसा मोह होता है, यह सभी जानते हैं। इन चीजों को प्राप्त करने में कितनी भर्त्सना सहनी पड़ती है और कितनी चापलूसी करनी होती है, यह किसी से छिपा नहीं है। वैसे दरी, कालीन, चौकी कुर्सी-मूढ़े तो किसी प्रकार मिल ही सकते हैं। एक बात और थी। हर साल राधेलाल दो चार पांसे सोना खरीद कर नए-नए डिजाइन का गहना बनवाते थे—अपनी बहू और लड़की के लिए। यही कारण था कि उनके यहां का गहना सभी की आंखों पर चढ़ा हुआ था। उससे बढ़िया और कीमती गहना दूसरी जगह मिलना असम्भव था। उनको मन्त्री बनाने में भी यही तुक थी; अन्यथा वह तो हमेशा प्रधान ही बनते थे। पर वयोवृद्ध नन्दकिशोर के प्रधान-पद के विरोध में वह एक शब्द भी न कह सके और हार कर मन्त्री बनना ही किसी प्रकार खुशामद-मिन्नत से उन्होंने स्वीकार कर लिया था।

पहले वह स्वदेशी के घोर विरोधी थे और अपने बाप के साथ हर रोज कैसी लगा कर उन्होंने सदा विदेशी कपड़ा ही बेचा था। पर इधर लड़ाई के जमाने में उन पर लक्ष्मी टूट पड़ी थी और अब वह लाखों का व्यापार करते थे। और जब से नगर कांग्रेस-कमेटी के सदस्य हुए थे, तब से तो पूछना ही क्या था? अब तो अपनी ही सरकार थी, दोनों हाथों में लड्डू थे। लोग उन पर तरह तरह की फब्तियां कसते रहते, पर उनका कोई क्या बिगाड़ सकता था? बल्कि अब की चुनाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

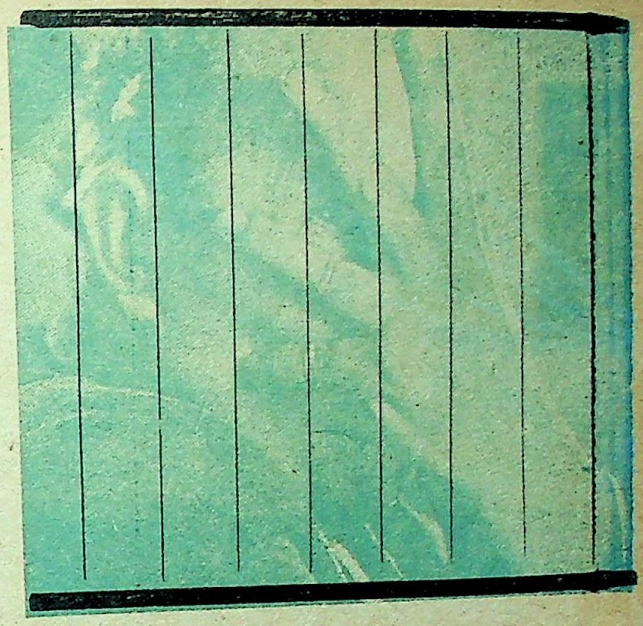

रंगमंच पर खेला जाने वाला नाटक तो मनोरंजक होता ही है; परन्तु उससे भी कहीं अधिक मनोरंजक वह नाटक होता है, जो कभी-कभी गली-मुहल्लों में अपने आप घटित हो जाता है—लक्ष्मी के अनन्य पुजारियों के घर में।

में तो एम० एल० ए० तक बन जाने की सम्भावना थी उनकी। और चुंगी के चेयरमैन तो लोगों की निगाह में वह बने बनाए थे ही।

सब से बड़ा इलजाम लगाते थे लोग उन पर चोर-बाजारी का। और कई एक ने तो परस्पर शर्तें तक बदली थीं उनके ऊपर, और इसी होड़ में बिना जरूरत के ढाई रुपये में मिलने वाला धोती जोड़ा पूरे बीस रुपये में उनके घर से खरीद कर दिखलाया गया था।

उस दिन रात को सब लड़कों ने मिल कर इस बात पर विचार किया कि कौन लड़का लाला जी के यहां गहना-कपड़ा मांगने जाएगा। पर कोई भी तैयार न हुआ। आखिर नन्दकिशोर जी के भतीजे श्यामू ने ही साहस करके कदम आगे बढ़ाया। प्रण किया कि सर से कफन बांध कर भी वह अपने सिर यह आफत मोल लेगा और लाला जी के यहां से गहना-कपड़ा अवश्य ही मांग कर लाने का यत्न करेगा। अगले दिन नहा-धोकर चन्दन का तिलक चढ़ाए वह उनके जनानखाने के दरवाजे के दालान में जाकर खड़ा हो गया। गृहिणी पीठ फेरे अपने घर की पुश्तैनी नाइन से सिर में तेल की मालिश करा रही थीं, और राधेलाल की बूढ़ी मां बगल वाली कोठरी में एक खटोले पर पड़ी खांस रही थी। पास ही राख से भरा कुल्हड़ उनके थूकने के लिए रक्खा था।

श्यामू ने आंगन में पैर रखते हुए कहा, ताई, राम राम!"

गृहिणी ने नाइन का हाथ परे को करते हुए सिर पर धोती का आंचल डालते हुए कहा, "अरे, कौन है रे? श्यामू? आओ भइया बैठो; जीते रहो, बड़ी उमर हो!"

श्यामू को कुछ अच्छे आसार दीख पड़े और वह पीढ़ी उठा कर वहीं बिछाते हुए बैठ गया।

ललाइन ने भरसक स्नेह का पुट देते हुए कहा, "कैसे आए? कुछ पानी-वानी पियो। सुना था कि आगरे पढ़ने गए हो; कब आए?"

"अभी आया था दो-चार दिन हुए; कुछ जरूरी काम था···। आप तो अच्छी रहीं? मां जी का क्या हाल है? बिन्नो की शादी कब करोगी··?" श्यामसुन्दर ने सिर की टोपी संभालते हुए पूछा।

"मां जी का क्या हाल? जैसे कर्म करे होंगे, भोग रही हैं। न जाने कहां सांस अटक रहा है। रात-दिन खांसती रहती हैं। बिन्नो के लिए तो भइया, तुम्हारे ताऊ जी की समझ में कोई लड़का आता ही नहीं। कहते हैं, जब हम मोटर-सुदा दहेज देंगे, तो उसका भी तो कुछ करतब देखेंगे या लौंडिया को कुएं में ही धक्का दे दें। हां, तो तुम कैसे आए? सुना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी कि चाचा से कुछ बटवारे की बात चल रही है। तुम्हारी मां ने इसी लिए तुम्हें बुलाया होगा···। हां भइया, सदा साझे में किस की बनी और किस की चलेगी ? अपना अलग भला···!"

"ना ना, सो कुछ नहीं, ताई। चाचा जी जैसा देवता आदमी किसी के साथ बुरा करने वाला थोड़े ही है। उन्हीं की कृपा से इतना बड़ा हुआ हूँ। वह मुझे दूर रखना ही नहीं चाहते। बहुत घबरा रहे थे, इधर कई छुट्टियां आ पड़ीं, बस चला आया। उन्हीं के कौन बैठा है ?" कहते कहते श्यामू का दम घुटने-सा लगा। मतलब की बात से वह बहुत पीछे हटा जा रहा था। घर-द्वार की यह व्यर्थ की बातें उसे परेशान कर रही थीं, बोला, "चाची, कुछ बीमार थीं, अब ठीक हैं। आप भी बड़ी दुबली दीख रही हैं···?"

गृहिणी की तनी हुई-सी भवें कुछ ढीली पड़ गईं, बोली—"हां बेटा, पेट में दर्द रहता है, खाया-पिया पचता नहीं··· लो कुछ खालो।"

कहती हुई वह उठने लगीं, पर श्यामू ने विशेष आग्रह करके उन्हें बैठाते हुए कहा, "अब की तो तुम्हारे मुहल्ले में बड़ी धूम धाम रहेगी, ताई! श्री रामचन्द्र जी का ड्रामा खेल रहे हैं हम सब। तुमने सुना ही होगा। तुम तो बड़ी धर्मात्मा हो, ताई।"

आज इस लड़के के मुंह से अपनी बड़ाई में सहानुभूति के दो शब्द सुनकर गृहिणी फूली न समा रही थीं और इसी लिए बहुत मना करने पर भी वह दो गूंझे अपने सिंदारे के बचे हुए श्यामू के लिए ले ही आईं। गृहस्वामिनी का हृदय पानी-पानी-सा हो उठा।

पानी के सहारे गूंझे को गले के नीचे उतारता हुआ श्यामू बोला, "ताई, फिर कुल तीन दिन रह गये हैं। यह ड्रामा दो रोज होगा। औरतों के बैठने का बहुत अच्छा प्रबन्ध होगा। फिर आपके लिए तो हम सब अपनी आंखें बिछा देंगे। मां जी और बिन्नो को भी लाना। कहां है वह ?"

"गुड़िया की ब्याह है उसकी, कहीं गई होगी। हां, दम्मा, मा जी का तो ऐसा ही है, वह तो जरूर जायेंगे ही। मैं भी आ सकी तो आऊंगी जरूर।" और फिर वह रामायण की कथा की एक एक घटना दोहराने का यत्न करने लगीं, "हां, जब धनुस टूटा, बन को गए—और रावण मारा।" इत्यादि

श्यामू ने बड़ी श्रद्धा प्रगट करते हुए कहा, "अरे, आप तो सब जानती हैं, ताई! हमसे भी ज्यादा। पर यह ड्रामा तो जन्म से लेकर धनुष टूटने तक ही होगा, आगे फिर देखा जायगा कभी। अच्छा ताई, दो-चार गहने और कुछ कपड़े तो दे सकोगी न? तुम्हारा स्वभाव तो मैं खूब अच्छी तरह से जानता हूँ। आप ही लोगों के बल पर तो हमने यह आयोजन किया है।"

कह कर लड़के ने अपनी दृष्टि आकाश पर गड़ा दी। गृहिणी का भारीभ-रकम सा चेहरा और भी स्थूल-सा दीखने लगा। बोली, 'हम बिना पढ़ी-लिखी क्या समझेंगी उसे। फिर घर के धंधों से फुरसत कहां? सास बीमार पड़ी हैं, उन्हें छोड़ कर भी तो नहीं जाया जा सकता, जी! और गहने-कपड़े की बात तो वही जानें, उन्हीं के कब्जे में है। फिर बिना सास से पूछे एक कत्तर भी मैं किसी को नहीं दे सकती। और गहने का तो सवाल ही क्या, सब बंक में रखा है। आजकल के जमाने में घर में कौन चौकसी करता रहे। रात-दिन बहुओं को चढ़ाने के लिए मांगते रहते हैं सब। वह एक छल्ला भी घर में नहीं रखते। हमारा तो सब बंक में धरा है, भइया।"

"अच्छा तो फिर मां जी से कहूँ? दो चार अच्छी साड़ियां और ब्लाउज ही मिल सकें, तो···।"

"ना ना, उन्हें मत छेड़ना। देखो, देखती हूँ, एक आध धोती बाहर हुई तो," कह कर गृहिणी ने दो मैली-कुचैली-सी साड़ियां और एक फटा-सा सलूका ला कर श्यामू के ऊपर फेंक दिया, "लो, ले जाओ बस और तो है नहीं।"

वह ऐसे चौंक पड़ा मानो पैरों से सांप लिपट गया हो। यह क्या? ऐसे गंदे कपड़े डाल दिए उसके सिर पर? ऐसे कपड़े तो राजा दशरथ के यहां की दासियां भी नहीं पहनती होंगी। मंथरा को ही ले लो, कैसा रहती होगी! तसवीरों तक में उसकी वेशभूषा···? और फिर वह इस प्रकार उठ कर चल दिया, मानो आज डूब मरने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए भी कहीं स्थान नहीं है उसे। चार मित्रों में कैसे मुंह दिखाएगा ?

* * *

नौ बजे रात से ड्रामा शुरू हुआ। गली-मुहल्ले के सभी स्त्री-पुरुषों ने बड़े उत्साह से भाग लिया था और आवश्यकता से अधिक समान इकट्ठा किया था सबने। ठीक समय पर सभी यथास्थान जा बैठे, परन्तु लाला जी के यहां से साढ़े नौ बजे तक भी कोई नहीं आया। यद्यपि बहुत हठ करने पर पांच रुपये चंदे के उनसे जैसे-तैसे प्राप्त हो सके थे, पर उनके घर से किसी का न आना लोगों के मन पर भार बना हुआ था। कुछ की राय थी कि इसी समय जाकर यह रुपये उनके वापस कर आओ; आपसदारी में कौन छोटा और कौन बड़ा ? आखिर यह वही तो है, जो कंधे पर गठरी बांधे गली-गली आवाजें लगाता फिरता था! आज लोगों का गला घोंट-घोंट कर अमीर बन बैठा है। पर बहुत से लोगों ने समझा-बुझा कर लड़कों को ऐसा करने से मना किया और समझाया कि वह आए तो थे, पर उनकी तबियत खराब थी जल्दी ही चले गए। घर अकेला छोड़ कर स्त्रियों का आना कठिन है, वह इसकी भी माफी मांग गए हैं।

रात के ठीक बारह बजे ड्रामा समाप्त हुआ और सभी लोग तरह-तरह की प्रशंसा करते हुए अपने अपने घरों को लौट गए। कोई भक्तिभाव में लीन था, तो कोई अभिनय की सराहना करते हुए लड़कों की तारीफ कर रहा था। घर जा कर भी लोग बहुत देर तक जागते रहे। करीब एक बजे सहसा शोर गुल सुन पड़ा—"चोर है...चोर है..., भागो, दौड़ो! अरे मार डाला! लुट गए...।"

लड़के, बूढ़े और जवान सभी लाठी-डंडे ले ले कर सड़क पर आ गए। स्त्रियां और बच्चे भय से थर-थर कांप रहे थे। दस-पांच जवान मन्दिर की ओर भागे। बहुत-सा सामान संगवाने पर भी अभी वहां काफी चीजें पड़ी थीं। तभी किसी ने घबरा कर कहा, "लाला जी के घर में चोर घुस गए...।"

फिर क्या था, बात की बात में सब लोग उधर ही दौड़ पड़े। पर लाला जी के मकान के वज्र-से फाटक टस से मस न हुए। सीढ़ी लगा कर ऊपर के रास्ते चढ़ कर फाटक खोला गया। अन्दर जा कर देखा, लाला जी और उनके परिवार की स्त्रियां मुंह लपेटे थर-थर कांप रही हैं और मुंह से साफ आवाज तक नहीं निकल रही। कभी कभी लाला जी की चीख अवश्य सुनाई दे जाती है, "चोर है, चोर है...!" और रसोई घर की बगल से खट-खट-की आवाज बराबर आकर लोगों के छक्के छुड़ा रही है। बहुत से लोगों को पास खड़ा जान कर लाला जी ने चादर से मुंह निकाल कर इस प्रकार घबराई हुई आंखों से देखा, मानो कोई बड़ा भारी दुःस्वप्न देख रहे हों। उनका दिल धड़क रहा था और बदन से पसीना छूट रहा था। उधर उनकी गृहिणी अस्त-व्यस्त दशा में घिघिया कर कह रही थी, "लोहे की आलमारी की सबसे अधिक चिंता है, भइया, हमारा तो सास-बहुओं का छल्ला-छल्ला उसी में पड़ा है...।"

श्यामू ने सचेत होकर कहा, "वह तो सब बैंक में हैं न, ताई!"

पर गृहिणी को इस समय होश कहां था! बोलीं, "बैंक का क्या भरोसा, भइया, रात दिन फेल होते रहते हैं। हमारा तो सब घर ही में पड़ा है। अब की बच जाए तो लछमन जी का हंडा और हनूमान का रोट करूंगी...!"

सभी लोगों ने एक-एक कोठा, दालान, गुसलखाना और पाखाना तक देख डाला; पर कहीं कोई आदमी नजर नहीं पड़ा। लोहे की आलमारी भी ज्यों की त्यों रक्खी थी। इसी समय फिर जोर से खटका हुआ और अचानक सब का ध्यान रसोईघर के खुले किवाड़ों की ओर गया। अपनी अपनी लाठी लेकर सब उसी ओर भागे। अन्दर जाकर देखा कि छोटे मुंह के एक लोटे में, जिस में कि शायद दूध या लस्सी जैसी अभीष्ट वस्तु रही होगी, बिल्ली का सिर फंसा पड़ा है और वह इधर से उधर मय लोटे के अपना सिर पटक रही है।

यह देख कर सभी लोग कहकहा लगा कर जोर से हँस पड़े, और गृहस्वामी आखें फाड़े तब भी मौन और स्तब्ध-से खड़े थे। श्यामू ने बाहर निकलते हुए कहा, "वाह भई वा, यह ड्रामा तो उससे भी मजेदार रहा। क्या कहने हैं...!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक समस्या-मूलक कहानी

आदर्श और यथार्थ

श्रीमती सावित्री देवी 'बृजांगना'

"वे जायेंगी, तो मैं न जाऊंगी। मैं कई बार देख चुकी हूँ कि जब-जब मैं उनके साथ गई, कभी हंसी-खुशी नहीं लौटी," क्रोध की मुद्रा में गृहिणी बोलीं।

और लू से मुरझाई हुई कली की भांति उतरा हुआ मुंह देख कर गृहस्वामी, जो पलायनवादिता में अधिक विश्वास रखते थे, चुपचाप खिसक गये। पर कला, जो बूढ़ी मां की तीर्थ-यात्रा की उत्कट इच्छा तथा मां के पूर्ण विरोध में किसी प्रकार सामंजस्य लाना चाहती थी, डरते डरते बोली, "मां, सुनो, बूढ़ी मां तो जाने कब से तैयारी में रामनाम की गोलियां और बत्तियां बना रही हैं। उन्हें भी चलने दो। मैं उन्हें बिल्कुल बड़बड़ाने न दूंगी।"

गृहिणी ने उसी प्रकार क्रुद्ध स्वर में कहा, "तैयार वे कब और कहाँ के लिये नहीं होतीं—एक राम जी का घर छोड़ कर? पर मैं तीर्थ-यात्रा में आत्मिक शांति के लिये जा रही हूं, न कि कलह और झंझटों के लिये। पिछली बार वे हरिद्वार हो आईं, तब, मैंने जाने का नाम भी नहीं लिया। और अब मेरी बारी है, मैं अकेली जाऊँगी। तुझे बड़ी ममता लगती है, तो तू भी न जा।"

कला का समस्त तर्क कुंठित हो उठा। वह एफ० ए० की द्वितीय वर्ष की छात्रा थी। मनोविज्ञान उसका सबसे रुचिकर विषय था। वह सोचने लगी—मां इतनी सहृदय है, फिर-भी बूढ़ी मां के प्रति इसके हृदय में ऐसी अनुदार भावनायें कहां से आ जाती हैं? और बूढ़ी मां भी इतनी धर्मपरायण होते हुए भी पूजा पाठ से ज्योंही अवकाश पाती हैं, तुरन्त ही आलोचना, छिन्द्रान्वेषण और निन्दा-प्रकरण क्यों आरम्भ कर देती हैं?

कला सोचती रही, पर प्रश्न को सुलझाने की उलझन से पुनः प्रयत्न करना उसे कहीं अधिक रुचिकर प्रतीत हुआ। मां अखबार पढ़ने में तल्लीन थी। वह चुपके से जाकर उसके साथ लेट गई और धीरे से कहना शुरू किया, "मां, तुम कितनी अच्छी, कितनी विचारशील हो! अभी उस दिन जब मेरी और बसंत की लड़ाई हुई थी, तुमने मुझसे कहा था—माना बसंत बहुत बुरा है, पर जो अंग रुग्ण होता है, उसे काट कर नहीं फेंकते; उसका उपचार करते हैं और ठीक कर लेते हैं। और मैंने तुरन्त तुम्हारी बात मान ली थी। अगर वही बात मैं तुमसे बूढ़ी मां के लिए कहूँ, तो तुम न मानोगी, मेरी अच्छी माँ?"

और कला ने छोटी-सी बालिका की भाँति मां के गले में बांहें डाल दीं। कला के नम्र निवेदन और दुलार ने गृहिणी का क्रोध कुछ शान्त कर दिया और वे स्वर को बरबस संयत करके बोलीं, "अरी कला, तू क्या जाने कि कितने उपायों, उपचारों और प्रयत्नों के पश्चात् भी जब कोई फल नहीं निकला, तभी मैं साथ जाने से इनकार कर रही हूं। मेरे कोई भी देवर-जेठ होता, तो जाने कब की इनसे अलग हो चुकी होती; पर अकेली बूढ़ी को कैसे अलग करती। इसी लिये झक मारकर अब तक सहती हूँ। पर भई, मैं इनके साथ तीर्थ-यात्रा पर न जाऊंगी। बेकार में तू बीच में न पड़ा कर।"

कला ने जब देखा कि उसकी बातचीत की सारी कला व्यर्थ एवं निरर्थक प्रमाणित हुई तो उसे भी कुछ क्रोध आ गया और उसने झींकते हुए कहा, "क्या बताऊँ, मैं तो आज कल जो पुस्तक लिख रही हूं, उसका प्रथम वाक्य है—सम्मिलित कुटुम्ब मानवता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला आदर्शों की जिस शिला पर शैशवकाल से खड़ी थी वह उसे अब टूटती हुई जान पड़ी। सम्मिलित कुटुम्ब से उसे घृणा होने लगी।

का पाठ पढ़ने की सबसे उत्तम पाठशाला है— विश्व-बन्धुत्व का एक मात्र प्रतीक है। और तुम बूढ़ी मां से इतना चिढ़ाती हो। जरा सोचो तो, तीर्थ-यात्रा से रोकने में एक तो पाप होता है, दूसरे वे इतनी बूढी हैं। चार दिन बाद मर जायेंगी। अगर वे तुम्हें कुछ कह भी दें, तो तुम परवाह न किया करो। आखिर वे सास हैं, तुम बहू हो। जो तुम मुझे कह लेती हो, उसे मैं भी तो सह लेती हूँ!"

"पगली, तू ने अभी देखा क्या है? किताब लिखना सहल है, पर करके दिखाना कठिन है। जिसकी जवानी का सारा इतिहास आंसुओं से लिखा गया हो, वह पुण्य-पाप सब भूल जाता है। और मां की डांट और सास की डांट में इतना ही अन्तर है, जितना अमृत और विष में। जहां मां की डांट के पीछे सुधार की भावना, शुभेच्छा और प्यार रहता है, वहां सास की डांट के पीछे व्यंग, दम्भ, घृणा और प्रतिहिंसा के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता।" यह कह गृहिणी ने अखबार पटक कर ठंढी सांस ली।

"तो क्या गांधी जी के ये शब्द झूठे हैं कि सत्य और अहिंसा के बल से किसी को सहज में ही जीता जा सकता है?" कला ने दार्शनिक की भांति गर्व से कहा।

"नहीं, झूठे क्यों हैं। सत्य-अहिंसा से मनुष्य को जीता जा सकता है, पशु को नहीं। फिर दुनिया में और भी तो काम हैं। सास को रिझाना तो इतना महान् उद्देश्य नहीं जिसके लिए जीवन की सारी शक्ति लगा दी जाय?"

कला मां के इस उत्तर से हताश-सी होकर उठ बैठी। उसने स्वाभिमानी निर्णायक की भांति कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मां, तुम मानो या न मानो, गलती सदा दोनों ओर से होती है। भला एक हाथ से कहीं ताली बजती है?"

"बड़ी पुरखिनों-सी बातें करती हो। ज्यादा न चहको। तुम्हें भी समय सब बता देगा। कोरे आदर्श अधिक समय तक नहीं टिकते। विवाह के पश्चात् जब तुम पराये घर पहुँचोगी, सास से वास्ता पड़ेगा, तो सभी तर्क धरा रह जायेगा। ऊँट को अपनी ऊंचाई का ठीक अनुमान उसी समय होता है, जब वह पहाड़ के नीचे आता है।"

मां की बात सुन कर कला चुपचाप चली गई।

कला रोटियां सेंक रही थी। सारा कौशल और चातुर्य व्यय करने के पश्चात् जब गोल-फूली हुई रोटी बना कर वह कटोरदान में रखती, तो देख कर उसके सौन्दर्य पर ऐसे मुग्ध हो जाती मानो वह किसी प्रसिद्ध कलाकार की कलाकृति हो। इतनी लगन, उत्साह और रुचि से उसने अपनी याद में कभी खाना नहीं बनाया था। वह सोच रही थी— आज माता जी कितनी प्रसन्न होंगी और परिवार के सभी लोग कितनी प्रशंसा करेंगे जब देखेंगे कि ग्रेजुएट होकर भी मैंने कितना अच्छा खाना बनाया है! वह हमेशा कहा करती हैं— पढ़ी-लिखी लड़कियां घर का काम-काज क्या जानें। मेरे हाथ का बना खाना खाकर आज उन्हें अपनी यह धारणा बदलनी होगी।

कला आज अपनी ससुराल के सभी लोगों को प्रसन्न और सन्तुष्ट करना चाहती थी। उसने नौकर झिनकू की रोटियां भी पतली ही पतली सेंकीं और चुपड़ दीं। तरकारी छौंकते समय प्रशंसा के प्रलोभन से उसने थोड़ा घी, गरम मसाला और एक चुटकी मिर्च और डाल दी। वैसे तो ढाई सेर आटा सेंकते सेंकते कला का कोमल कलेवर कुम्हला-सा गया था, फिर भी आज वह अत्यधिक प्रसन्न थी। तरकारी पक ही रही थी कि छोटी ननद क्रांति स्कूल से आ गई और बोली, "अच्छा, आज महाराजिन नहीं आई, श्रीमती भाभी जी पधारी हैं। भई, मुझे तो बड़ी भूख लगी है।"

मुस्कराते हुए कला ने कहा, "आइये बीबी जी, खाना तो सब तैयार है। हां, मटर देर से आये थे, सो सब्जी अभी ठीक से पकी नहीं। यदि आपको बहुत भूख लगी हो, तो थोड़ा-सा परोस दूं। धीरे-धीरे खायें तो तरकारी भी पक जायेगी।"

क्रान्ति ने कहा, "हां, परोस दीजिये।"

कला ने बड़े प्रेम और आदर से पूछ-पूछ कर परोसा और खिलाया।

बरसाती लकड़ी और बरसाती गर्मी दोनों ही बड़ी कष्टकारी होती हैं। क्षणिक आवेश या उत्तेजना में मनुष्य जब शक्ति से अधिक काम कर जाता है, तो कुछ पता नहीं चलता; पर बाद में बड़ी थकान लगती है। जब कला रसोई से पसीने से तरबतर, सूजे हुए नेत्र और राख तथा आटे से सने हाथ-पैर ले कर निकली तो सोचा, लाओ नहा डालूं। गंदगी के साथ थकान भी दूर हो जायेगी। खाना भी खूब खाया जायेगा। कला के मन का उल्लास थकान को टिकाने के लिए प्रस्तुत न था। वह नहा रही थी और सोचती जाती थी कि जल्दी से सब लोग खाना खाने आयें। वह चाहती थी अपने बनाये भोजन की आलोचना सुनना। उसे विश्वास था कि आलोचना उसके अनुकूल ही होगी। नहा कर ज्यों ही देह पोंछने के लिये तौलिया उठाया, उसने ससुर के जूतों की आहट के साथ ही उनका स्वर सुना, "कौन नहा रहा है?"

"और कौन नहायेगा, पढ़े-लिखे लोग ही बात-बात में नहाते हैं। हम गंवारिनें तो बस काम में जुटी रहती हैं," सास ने उत्तर दिया।

कला को सास की बात बड़ी बेस्वाद तथा अर्थ-हीन लगी। परन्तु वह उन्हें अपढ़-मूर्ख समझ कर टाल गई। चौके में खटपट हुई और कला के कान फिर उधर ही दौड़े। ससुर जी कह रहे थे, "सब्जी तो बहुत अच्छी बनी है!"

सुन कर कला का हृदय प्रसन्नता से बांसों उछल पड़ा। पर एक ही दो मिनट बाद उसने

(शेष पृष्ठ ४२ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन भारतीय नाट्यगृह और नाट्य-तन्त्र

श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

★

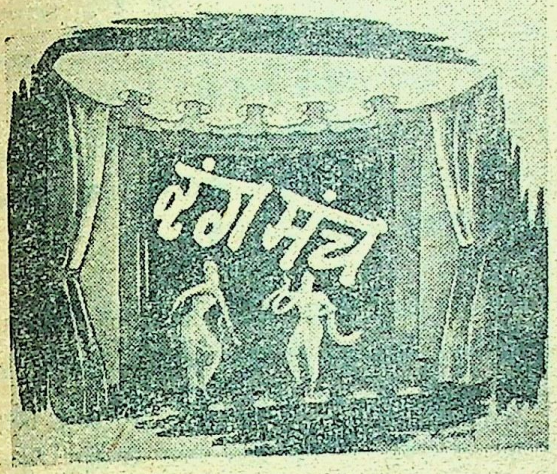

भारत में अत्यन्त प्राचीन काल से नाटक खेलने की प्रथा है। पाणिनी ने अपने व्याकरण-शास्त्र अष्टाध्यायी में नट-नटियों के लिए अलग सूत्र दिए हैं। पर प्रश्न यह है कि ये नाटक कहां खेले जाते थे? क्या नाटकों के खेलने के लिए स्थायी पक्के नाट्यगृह थे, या तात्कालिक विवाह-मण्डप के समान नाट्यगृह तैयार कर लिए जाते थे? नाट्यगृह नाट्यकला का एक मुख्य भाग है। अतः यह प्रश्न महत्वपूर्ण है।

यूरोपियन विद्वान् इस विषय में एकमत हैं कि स्थायी नाट्यगृह प्राचीन भारत में नहीं होते थे। विल्सन और कीथ इन दोनों का मत यही है। इनका कहना है कि नाटक खेलने के लिए तात्कालिक नाट्यगृह बना लिए जाते थे। पर नागपुर के प्रसिद्ध एडवोकेट और नागपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व चांसलर श्री केदार का मत है कि प्राचीन आर्यों के ईंटों और पत्थरों के स्थायी नाट्यगृह बने होते थे। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र-संहिता और उसकी टीकाओं से भी यही बात पुष्ट होती है।

प्राचीन नाट्यगृह

यदि यह सत्य है कि प्राचीन आर्य नाटक प्रिय थे और वे बराबर नाटक खेलते थे और नाट्यगृह (मंडवा) भी पक्के बने हुए थे, तो अगला प्रश्न यह पैदा होता है कि क्या उस समय का कोई नाट्यगृह या उसका भग्नावशेष इस समय उपलब्ध है? पहली बात तो यह है कि भरतमुनि ने (जिन के नाम पर प्रत्येक प्राचीन संस्कृत नाटक के अन्त में 'भरत-वाक्य' होता है) 'नाट्य-वेश्म' की जैसी रचना लिखी है, उसको देखते हुए यह माना ही नहीं जा सकता कि स्थायी नाट्यगृह नहीं होते थे। दूसरे यह भी नहीं कि प्राचीन नाट्यगृह का कोई अवशेष ही न मिलता हो। मध्य-प्रान्त के बिलासपुर के समीप शिरगुजा एक छोटी-सी रियासत है। वहां दो गुफायें मिली हैं। इन में से एक का नाम है 'सितावैगा' और दूसरी का नाम है 'जोगीमारा'। इन में से 'सितावैगा' गुफा में एक नाट्यगृह मिला है। यह कम से कम २३०० वर्ष पुराना बना हुआ है। इस नाटक-घर की रचना अर्द्ध-वर्तुलाकार है। दर्शकों के बैठने के लिए सोपानवत् व्यवस्था की गई है। इस गुफा में एक शिला-लेख भी मिला है। इसके पढ़ने से मालूम होता है कि सुतनुका नाम की एक नटी का देवदिन नामक एक नट से प्रेम था। शिला-लेख में एक शब्द है—'लूप दक्खे देवदिने'। यह संस्कृत में 'रूपदक्षे देवदिने' बनेगा। 'रूप' का अनेक विद्वानों ने शिल्प अर्थ किया है। पर रूपक नाटक को भी कहते हैं और यहां यही अर्थ संगत भी है। नाटक-घर में दर्शकों के लिए स्थान है और नेपथ्य की भी रचना की गई है। पत्थरों में छेद करके परदों के लिए व्यवस्था की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई है।

रावण के वंशज

इस स्थान के रहने वाले मूल-निवासी ओरांव हैं। ये गोंड लोगों की एक शाखा है। ये अपने को रावण के वंशज बताते हैं। इन लोगों में अनेक प्रकार के नाच होते हैं। इनका परिधान एक लंगोटी और सामने 'सोगा' नामक एक कपड़ा होता है। इन में धुमकुरिया नामक एक संस्था है। उन में यह नियम है कि सब तरुणों को इस में रहना चाहिए। यह एक चौकोन दीवानखाना होता है। वहां सब लोग सोते हैं। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के उपन्यास 'यौधेय' में भी इसका उल्लेख है और यौधेयकुमार ने अपने मित्र के साथ आदिनिवासियों के साथ लंका जाते हुए राह में अनेक रात बिताये थे। ये लोग नाना प्रकार के नृत्य करते हैं। इन नाचों में कर्मा' नामक नृत्य प्रसिद्ध है। इस बात को देखते हुए यह कहना कि भारत में नाट्य-गृहों का निर्माण ग्रीक संस्कृति का निर्देशक है, ठीक नहीं है। ग्रीक लोग सतलज के पार नहीं गए थे। सिकन्दर के साथ जो ग्रीक आए थे, उनका सम्बन्ध आर्यों के साथ अल्पकाल ही रहा। इस अल्पकाल के सम्बन्ध का प्रभाव यह नहीं हो सकता कि पंजाब से सहस्रों मील दूर २३०० वर्ष पहले नाटक-घर बना हो। अतः यह मानना चाहिए कि इसी देश के लोगों ने अपनी कल्पना से नाट्यगृहों का निर्माण किया था। भरत मुनि द्वारा विस्तार से नाट्य-गृहों की रचना का वर्णन करना भी यही सूचित करता है।

तीन प्रकार

नाट्यशास्त्र में तीन प्रकार के नाट्य-गृहों का वर्णन है – १. विकृष्ट २. चतुरस्र और ३. त्र्यस्र। विकृष्ट नाट्यगृह प्रत्यंचा चढ़ाये धनुष से जो लम्बगोलाकार आकृति बनती है, वैसा होता था। इस लम्बगोल के पिछले भाग के अर्धगोल में नेपथ्य होता था। इसके आगे 'रंगशीर्ष' और इसके आगे 'रंगपीठ' (स्टेज) और उसके आगे अर्धकोणाकृतिगोल में दोनों ओर वर्तुलाकार बैठने के लिए सोपानवत् व्यवस्था होती थी। 'रंगशीर्ष' में वृन्दवादन (आर्चेस्ट्रा) होता था। प्रेक्षक-गृह में चार खम्भों का होना लिखा है और हरेक स्तम्भ विभिन्न वर्णों का होना चाहिये, यह भी कहा गया है। सम्भव है चतुर्वर्ण एक साथ न बैठ कर अलग अलग बैठते हों। पर यह अनुमान सत्य है, यह नहीं कहा जा सकता। यह भी कहा जा सकता है कि नाटक खेलने में चारों वर्णों का सहयोग है, इसके सूचक ये चार स्तम्भ हैं।

बैठने के लिए राजा लोगों के वास्ते सिंहासन, सेनापति और इस दर्जे के अन्य लोगों के लिए बेंत के आसन, इससे नीचे के अधिकारीवर्ग के लिए बिना हाथ की कुर्सियां, सैनिकों और अन्यों के लिए 'सुख-वाशा' की व्यवस्था थी।

अन्तरीय भाग

नाट्यगृह के अन्तरीय भाग का विस्तृत वर्णन मिलता है। कहा गया है कि रंगपीठ के दोनों ओर 'यत्रवारुणी' होनी चाहिए। यह 'यत्रवारुणी' आज की परिभाषा में 'विंग्स' हैं। 'रंगशीर्ष' के पीछे की दीवार ईंट या पत्थर की होनी चाहिए। इस बात का अनेक बार उल्लेख है। प्रेक्षक-गृह की जमीन कैसी होनी चाहिए, इसका भी उल्लेख है। लिखा है कि जमीन काली और कठिन व कठोर होनी चाहिए। भित्ति पर चित्र बने होते थे। प्राचीन आर्यों की सौन्दर्याभिरुचि का इस से पता लगता है। रंगपीठ पर आजकल के समान परदे होते थे और वे उलझते नहीं थे। इनके लिए लिखा है कि वे दोनों बाजुओं से हटाए जाने चाहिए।

तीन श्रेणी

जैसे नाट्यगृह विकृष्ट, चतुरस्र और त्र्यस्र तीन प्रकार के होते थे, उसी प्रकार प्रत्येक नाट्यगृह पुनः तीन प्रकार का होता था। यथा— दैवी, पार्थिवी और मानुसी। इसका अर्थ यही मालूम होता है कि तीन श्रेणियों या दर्जों के नाट्यगृह होते थे। पर भरत मुनि का यह आग्रह है कि नट-नटी जो बोलें, वह सब जगह सुनाई पड़ना चाहिये। अतः नाटकघर गवाक्षयुक्त होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्यावलि

एक प्रश्न और उठाया गया है। क्या प्राचीन भारतीय नाट्यगृहों में आज के समान दृश्यावलि (सीन-सीनरी) होती थी? प्रो० कीथ का मत स्पष्ट है। आपका कहना है कि सीन-सीनरी की कल्पना हाव-भाव से ही जाती थी। पर प्राचीन नाटकों को देखने से यह बात सत्य नहीं मालूम होती। 'राजा रथ में बैठ कर आया' यह हाव-भाव से कैसे व्यक्त किया जा सकता है? कालिदास के 'शाकुन्तल' नाटक में रथ रंगभूमि में आता है, भवभूति के 'उत्तर रामचरित' नाटक में विमान आते हैं। संभव है, रथ रंगभूमि पर प्रत्यक्ष रूप से न आता हो। घोड़ा रोकने की क्रिया केवल हाव-भाव से दिखाई जा सकती है। पर रथ और विमान दिखाने के लिए सीन-सीनरी चाहिए। इसके लिए नाट्यशास्त्र में डा० केदार के मत से 'पुस्त' शब्द आया है। 'पुस्त' तीन प्रकार का होता था— संघिय, व्याजिय और चेष्ठिय। पहले संघिय में वृक्षों की शाखाओं से, तथा कपड़े से वस्तुओं को बनाया जाता था। दूसरे में यन्त्रों की सहायता से वस्तुओं को बनाने के लिये कहा गया है। गति की सहायता से जो व्यक्त किया जाय, वह चेष्ठिय पुस्त होता है। पुस्त-सीन-सीनरी के अभाव में रूपयति' 'नाट्यति' आदि का वर्णन निरर्थक हो जायगा। 'मृच्छकटिक' में दीवार में सुरंग फोड़ने, सर्वदमन का प्रवेश, सिंह का दांत तोड़ने आदि की क्रियायें प्रत्यक्ष सीनरी के बिना सम्भव नहीं हैं।

वेशभूषा

नाट्यशास्त्र में रंगों का विस्तृत और बारीक विवेचन किया गया है। कहा गया है कि देवों के लिए पीला रंग, यक्षों के लिए सुनहरी रंग, उत्तर का यदि मनुष्य हो तो गोरा रंग, दक्षिण का हो तो काला रंग होना चाहिये। स्त्रियों के ओंठ रंगने के लिए भी कहा गया है। विभिन्न प्रान्तों की स्त्रियों के लिए विभिन्न प्रकार के केशविन्यास का वर्णन मिलता है। यथा—बंगाली स्त्री हो तो घुंघराले बाल हों, अवन्ती की ओर की हो तो पीछे की वेणी गोलाकार बांधी जाये और महाराष्ट्रीय स्त्री हो तो चक्राकार खोपा रखा जाये। मूंछों के सम्बन्ध में भी नियम बनाये गए हैं।

स्त्रियों का काम स्त्रियां और पुरुषों का काम पुरुष नाटक में करते थे। भगवान बुद्ध के समय खेले गए एक नाटक में एक स्त्री द्वारा काम करने का उल्लेख मिलता है।

इस विवरण से स्पष्ट है कि भारतीय नाटक और नाट्यतन्त्र पर ग्रीक छाप नहीं है। तीनों नाट्यगृहों की रचना ग्रीक नाट्यगृहों से सर्वथा भिन्न है ग्रीक और भारतीय नाट्यतन्त्र में एक भारतीय अन्तर है। ग्रीक नाटक दुःखान्त होते हैं, और भारतीय नाटक सुखान्त होते हैं। भारतीय नाटकों की वेशभूषा भारतीय संस्कृति के अनुकूल है। ग्रीक नाटकों से इसका कोई सादृश्य नहीं है।

नाटकों का आरम्भ

नाटक का आरम्भ कैसे करना चाहिए, इस विषय में भी अनेक नियम बताये गए हैं, यथा—नाटक प्रारम्भ करने से पहले 'पूर्व रंग' करना होता है। इसमें वाद्ययंत्र लाना, उनका स्वर मिलाना, फिर परदा हटने पर गीत, नांदी। इसके पश्चात् सूत्रधार प्रवेश करता है।

इस प्रकार प्राचीन भारतीय नाट्यतन्त्र को सर्वाङ्ग-पूर्ण बनाया गया है और छोटी से छोटी बात का भी उल्लेख किया गया है। स्वाधीन भारत जब अपने अतीत की ओर फिर देखेगा, तो वह इससे अवश्य प्रेरणा पावेगा और आधुनिक नाटकों पर इसका प्रभाव पड़े बगैर न रहेगा।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्यागमयी

श्री राजेन्द्र यादव

बहुत दिनों के पश्चात् आज एक प्रेम-कहानी लिखने की इच्छा होती है। मैं जानता हूं, यह प्रेम-कहानियां मात्र भावना की वस्तुएँ हैं, और कल्पना के सौंदर्य के अतिरिक्त इनमें कुछ भी नहीं है, हमारे दैनिक जीवन में इनका लेशमात्र भी स्थान नहीं है; फिर भी एक प्रकार का सुख-सन्तोष जैसे प्राप्त होता हो! क्यों?—तो कहानी सुनिये। मौलिकता का दावा इसमें मेरा तनिक भी नहीं है।

कलक्टर साहब की लड़की कल्पना और चपरासी का लड़का जीवन दोनों साथ ही साथ बचपन से खेलते आए थे। दोनों की पारस्परिक घनिष्ठता को कहना व्यर्थ है। किन्तु अब बचपन तो रहा नहीं। जैसा और कहानियों में होता है, उनकी आयु के साथ-साथ ही उनके मध्य की यह घनिष्ठता भी बढ़ कर कुछ और हो गई। जीवन कालेज में पढ़ने लगा था और सुरुचि सम्पन्न था। कल्पना कालेज में भी अपने इस सहपाठ से मिलने, बातचीत करने में न हिचकती; न झिझकती, न जीवन ने कभी इस ओर ध्यान दिया। कल्पना ने पिता से कह सुन-कर उसे अपनी कार का शोफर बनवा लिया था।

किन्तु इधर जब कई दिनों से जीवन उदास और चिन्तित-सा दिखाई देने लगा, तो एक दिन बड़े अनुरोध से कल्पना ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर पूछा—"जीवन, तुम उदास हो कई दिनों से!"

"नहीं कल्पना। आओ चलें, देर हो रही है कालेज को!" और धीरे से—बहुत धीरे से—उसने अपना हाथ छुड़ा कर कार का दरवाजा खोला।

कल्पना ने देखा, उस समय जीवन के मुख पर न जाने कैसी दारुण करुणा की कातर छाया मँडरा गई। दूसरी ओर से कार का दरवाजा खोलते हुए उसने कहा, "जीवन, आज मैं तुम्हारे पास बैठूंगी।"

जीवन का एक पैर कार के अन्दर था। वह थोड़ी देर खड़ा रहा, सोचता-सा, फिर धीरे से बैठ गया। दरवाजा बन्द किया कार चल दी। दोनों चुप रहे। फिर कल्पना ने धीरे से जीवन के कन्धे पर हाथ रख दिया — "जीवन, मुझे नहीं मालूम हम और तुम कबसे साथ हैं। जब से मैंने होश सम्भाला है, अपने को तुम से भिन्न नहीं पाया और शायद तुमने भी ऐसा नहीं समझा। अब इन पिछले तीन दिनों से क्या हो गया, क्या तुम मुझे नहीं बताओगे?"

जीवन चुप रहा। कार चुपचाप चलती रही, वह दूसरी ओर मुंह घुमा कर शायद पीछे से आने वाली किसी मोटर-गाड़ी, या साइकिल को देखने लगा।

"जीवन तुम मुझे नहीं बताओगे? मुझे कितना दुख होता है तुम्हारा यह निष्ठुर व्यवहार देख कर! अच्छा!" और बड़ी गहरी सांस कल्पना ने ली। वेदना की रेखाएँ उसके मुख पर उभर आईं।

जीवन, के गले में कफ अटक गया था, उसने नाक साफ करके कफ थूका।

"जीवन, मुझ से कोई अपराध हुआ है!" लगा जैसे कल्पना रो पड़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन को बड़े जोर से खांसी आ रही थी। एक हाथ से रूमाल निकाल कर उसने मुंह पर रख लिया। खांसा, आंखों में पानी आ गया था, सो पोंछा।

"कल्पना!" बड़े घुटे से स्वर में उसने कहा, शायद उसे जुकाम हो रहा था—"मैं चपरासी का लड़का हूँ और तुम्हारा— तुम्हारा शोफर···।"

"सो?" कल्पना चौंकी, थोड़ी देर सोचती रही, फिर अनुरोध से बोली, "सच बताओ जीवन, मेरे किसी व्यवहार से तुम्हें ऐसा आभास हुआ? जीवन, हमारे तुम्हारे बीच में यह बात नहीं है।"

जीवन ने कल्पना की ओर देखा. अन्दर जैसे कोई चीज कट-कट कर फूट पड़ने को आतुर हो रही हो। उसकी आंखें छलक आईं—"कल्पना, तुम्हारे और अपने बीच में मैंने कभी ऐसा अनुभव किया है?"

"तो फिर पिता जी ने?"

"नहीं कल्पना, तुम्हारे पिता जी बहुत 'फॉरवर्ड' हैं, शायद उन्होंने यह बात सोची भी न हो; पर मेरे पिता जी इसे नहीं देख सकते। बचपन में यह चीज़ उनके लिए भले ही गर्व की हो, पर अब वे इसमें विकट लज्जा का अनुभव करते हैं। बिरादरी वाले शायद उन्हें जाति से बाहर निकाल देंगे। हमारी दिन-दिन बढ़ती घनिष्ठता को वे सहन नहीं कर सकते। और कल्पना, यह अच्छा भी तो नहीं लगता कि मैं तुम्हारे साथ बड़ी शान से घूमूं, और तुम्हारे साथ वे मेरी भी चपरासगीरी करें।" जीवन चुप हो गया, कल्पना सोचने लगी।

दोनों थोड़ी देर चुप रहे। जीवन ने फिर कहा—"कालेज में तो हम दोनों साथ रहते ही हैं, वैसे पढ़ने, बात करने, खेलने में भी एक साथ ही रहते हैं। उन्हें यह ठीक नहीं लगा!" जीवन चुप हो गया।

कार चुपचाप सरकती जा रही थी। कालेज दिखाई देने लगा था। अपनी मुद्रा को बलात् कठिन बना कर उसने कहा—"कल्पना, मेरा विवाह निश्चित होने जा रहा है। सत्या, जो तुम्हारे साथ हाई स्कूल तक पढ़ी थी न, उसी के साथ।"

कल्पना ने कुछ नहीं कहा। खिड़की से बाहर मुंह निकाल कर वह कालेज में जाने वाले लड़के-लड़कियों को देखने लगी।

* * *

दर्द उसके सिर में सुबह से ही हो रहा था, कालेज से लौट कर आई तो भूख नहीं लगी। शरीर गर्म था। हल्की हरारत-सी उसे अनुभव हुई। जब जीवन को मालूम हुआ, तो वह उसे देखने गया, पर उस समय वह मुंह ढंके सो रही थी।

दिन छिपे के समय कलक्टर साहब ने जीवन को बुलवाया। जीवन का हृदय धक्-सा रह गया। बरामदे में खड़े होकर उन्होंने कहा—'जीवन, कल्पना का बुखार तेज हो गया है। फोन पर मैंने डाक्टर साहनी से बात कर ली है, तुम फौरन उन्हें ले आओ। तुम ने खुद उसे आकर नहीं देखा। भले आदमी, कम से कम देखना तो चाहिए था।" और वे अन्दर चले गये।

जीवन की आंखों में आंसू आ गए। कार लेकर वह तत्क्षण डॉक्टर को ले आया। साधारण बुखार था, दवा बता कर डाक्टर चला गया। जीवन कल्पना के पास ही रहा। डाक्टर के जाने के पश्चात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना किसी ओर ध्यान दिए कल्पना फिर सो गई थी। जीवन के हृदय में जाने कैसा कैसा होने लगा। अन्त में कुर्सी के हत्थे पर सिर रख कर वह सिसक पड़ा।

कल्पना ने मुख से चादर हटाई। देखा, फिर बड़े मधुर स्वर में बोली—"जीवन, जाओ सो जाओ।"

जीवन और भी जोर से सुबक उठा— 'कल्पना, यह मोह का बन्धन मुझ से नहीं टूट सकेगा। मेरे वश की बात नहीं है, मैं दुर्बल हूँ।"

कल्पना के नेत्र छलछला आए— "यही तो मुझे अनुभव हो रहा है, जीवन!" कल्पना की छाती को फाड़ कर जैसे एक दीर्घ सांस बाहर निकल आई। दूसरी ओर करवट लेकर, मुंह ढँक कर वह सो गई।

* * *

और तीसरे दिन कल्पना ठीक हो गई। फिर वही क्रम चलने लगा। पर दोनों के मध्य में एक गांठ, एक दीवार जैसे आ गई थी। वह परस्पर बहुत कम बोलते। जीवन जब कल्पना को देखता, तो देखता रह जाता। पर अन्तस्तल के अज्ञात् भाग से जैसे एक प्रकार की रुलाई उमड़-घुमड़ कर बाहर निकलने लगती।

कल्पना पीछे बैठी थी, जीवन कार चला रहा था। कल्पना का सिर पीछे ढिका हुआ था— पीला मुख, उदास और दुखी मुद्रा। उसी प्रकार तनिक भी हिलने की चेष्टा किये बिना कहा— 'जीवन!"

जीवन ने मुड़ कर देखा, चौंका, ऐसा स्निग्ध-स्वर उसे न जाने कितने दिनों पश्चात् सुनाई दिया था। स्वर में मार्दव ला कर कहा—"कहिये।"

"कहिये?" कल्पना ने दुहराया, फिर अनमनी सी हँसी—"अच्छा, कहिये ही सही। मेरा एक कहना मानोगे? क्या तुम मुझे प्यार करते हो?"

इस विचित्र प्रश्न पर जीवन सकुचा गया—"क्या मालूम?"

"यह भी नहीं मालूम।" कल्पना ने बड़े विश्वास से दुहराया—"अच्छा, कहना तो मानोगे न?"

जीवन को दुख हुआ, "कभी ऐसा हुआ है, कल्पना, जब मैंने तुम्हारा कहना न माना हो!'

"हां, ऐसा नहीं हुआ। जीवन, तुम सत्या से विवाह कर लो। मैं उसे खूब जानती हूँ, वह अच्छी लड़की है!"

जीवन ने सिर घुमा कर देखा। कार की पिछली सीट पर कल्पना शान्त निश्चल लेटी थी। उसका मुख भावना-विहीन जड़ पत्थर की भांति था।

सीधी सादी कहानी मैं कह रहा हूँ। पाठकों को इसमें किसी भी प्रकार के चमत्कार की आशा नहीं करनी चाहिये। तो जीवन और कल्पना की घनिष्टता का उस समय अन्त आ गया था, अतः उनके जीवन में परस्पर विवाह की बात उठी ही नहीं। कलक्टर और चपरासी के लड़के लड़कियों का मेल सम्भव भी हो सकता है, पर विवाह नितान्त असम्भव था, नहीं हुआ। जीवन का विवाह हुआ सत्या से। और विवाह के पश्चात् जीवन उस स्थान पर नहीं रह सका, वह दूसरे शहर में चला गया, न जाने फिर कल्पना का क्या हुआ।

आज उन बातों को दस बारह वर्ष बीत गए। जीवन आज छः सात बच्चों का पिता है। डाकखाने में साधारण क्लर्क के रूप में उसने नौकरी कर ली है। पिंचहत्तर रुपये उसे मिलते हैं। किन्तु आज के इस विकट संघर्षमय समय में ७५) रुपयों से होता ही क्या है? डाकखाने मे बड़ा काम है, सांस लेने तक को फुर्सत नहीं मिलती। वर्षों से दिन भर आंखें गड़ा कर लिखते-लिखते दृष्टि कमजोर हो गई और शरीर दुर्बल। कल्पना ने सत्या को जैसा बताया था, वह वैसी नहीं निकली। कल्पना से सुन्दर तो वह खैर, किसी हालत में हो ही नहीं सकती थी, उसका स्वभाव दिनरात जीवन को घुलाए देता है। नौकर की बात सोचना भी पाप है। सब काम सत्या को ही करना पड़ता है। इस लिये दिन भर बड़बड़ाना और झल्लाना उसके स्वभाव का एक अनिवार्य अंग बन गया है। बच्चे गन्दे, मरियल और बदतमीज हैं। न इतना समय है कि उनकी ओर ध्यान दिया जाय, न इतना पैसा कि भली प्रकार उन्हें कपड़े-लत्ते पहिनाए जा सकें।

सुबह उठना, एक बच्चा जो उसके साथ सोता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और नित्य ही उसके बिस्तर को खराब कर देता है, उस बिस्तरे को स्वयं ही धो कर सुखाना। बच्चे को नहलाना, फिर स्वयं कपड़े पहिना कर उसकी उंगली पकड़ कर बाजार से साग-सब्जी लाना, फिर एक ट्यूशन पर पढ़ा कर, जल्दी से नहा धो उल्टा-सीधा पेट में डाल डाकखाने भागना, सांझ को पांच बजे वहा से हारे-थके लौट कर दिन भर के मुकदमे झगड़े सुनना, फिर बच्चों को स्वयं पढ़ाने का प्रयत्न करना, फिर स्वयं सब बिस्तर इत्यादि लगा कर बच्चों को सुलाना, खुद खाना खाना, और तब जा कर पड़ रहना—यह उसकी दिनचर्या है। जिन्दगी यों ही औंधी-सीधी, लस्टम-पस्टम चलती है। न जाने सिर पर कितना उधार है, कितनी आवश्यकताएँ हैं। बच्चों के पास कपड़े नहीं हैं, खुद उसके पास जूते नहीं हैं। इसी लिये कहीं आना-जाना छोड़ दिया मित्रों में बैठना छोड़ दिया। इस सबने असमय में ही उसे वृद्ध कर दिया है।

और आज जब वह घर आया तो उसने देखा कान पकड़े छोटे मुन्नू के गालों पर चटाचट चांटे पड़ रहे थे और सत्या की चण्डी-मूर्ति बड़े आक्रोश के साथ विष-वमन कर रही थी। जीवन सत्या के इस प्रचण्ड स्वभाव के कारण उससे कुछ डरने भी लगा था। यद्यपि दृश्य नया नहीं था, तो भी जीवन सहम गया। हारा-थका आया था, क्लान्त से स्वर में बोला, "क्या बात है? उस बेचारे को क्यों मारे डालती हो?"

"तुम्हीं ने तो इसे शह दे दे कर बिगाड़ दिया है, और अब आए हो पूछने को, क्या बात है? अगर यही लच्छन रहे तो मैं तो इसे खोद कर गाड़ दूंगी।"

"आखिर बात क्या है?" अपना कोट उसने खूंटी पर टांगते हुए कहा।

"कुछ नहीं जी, तुम हमारे बीच में मत बोलो," सत्या के स्वर में तनिक भी स्निग्धता नहीं थी।

"तो भी।" जीवन ने पूछा।

"बड़े तो भी—तो भी करने वाले आए! खिला-पिला नहीं सकते तो भीख मंगवाओ इनसे, भीख! सूरत भी तो ऐसी ही है न। कोई पहिचान भी नहीं सकता कि जीवन क्लर्क के लड़के हैं लाला का लड़का अजय मिठाई खा रहा था, तो वहां जा कर ऐसे घूरने लगा जैसे न जाने कब का नदीदा है। आखिर उसने भी कह ही दिया—'कुत्ते की तरह क्या देखते हो, अपने घर जाओ' बोलो, इसे वहां जाने की जरूरत ही क्या थी? क्यों रे मुन्नू?" और शान्तप्राय, क्रोध फिर एक तमाचे के रूप में उबल पड़ा।

"अच्छा छोड़ो भी, खाना दो।" उपेक्षा से जीवन ने कहा।

"बड़े तुम कोयले रख गए थे न, और इसी लिये रात को ही रो दिया था, अब क्या हाथ-पैर दे देती चूल्हे में," तिनक कर सत्या ने कहा, "यह भी तो नहीं कि आते समय ही ले आते।"

जीवन कुछ क्षण सत्या की ओर देखता रहा। क्या इस नारी में कहीं भी करुणा नहीं है? फिर धीरे से कहा, "अच्छा।" और काठ की चट्टी पहिन कर कोयले लेने बाहर चला गया। सारा शरीर निढाल हो रहा था और सिर भन्ना रहा था। शरीर का पसीना अभी सूख नहीं पाया था। कोयले वाले को समझाया कि भाई, पहिली तारीख को हिसाब कर देंगे।

कोयले का थैला आंगन में एक ओर रखते हुए उसने पत्नी से कहा—"जरा जल्दी कर दो, सुबह भी ठीक से खा के नहीं गया था, कुछ बासी नहीं है?"

"अब करते ही करते तो करूँगी, कोई गाड़ी तो छूटी नहीं जा रही।" मिट्टी की अँगीठी में वह कोयले भरने लगी।

जीवन चुप रह गया। एक पँखा लेकर वह हवा करने लगा, फिर धीरे-धीरे बोला, "वहां साला पोस्टमास्टर लड़ पड़ा, यहां तुम।" वह करुण हो उठा, "सत्या, इन बच्चों पर तो दया किया करो। इन बेचारों का कसूर ही क्या है? खून-पसीना एक करके जितना मैं कर सकता हूं, करता हूं, तब भी इस लाला की बराबरी नहीं हो पाती तो क्या करूँ? अब तुम्हीं देखती हो, रूखा-सूखा बासी-तिवासी मैं खाता हूं, इस लिये कि बच्चों को खाना ठीक मिले, उनका स्वास्थ्य ठीक रहे। बड़े लड़के लड़की पढ़ते हैं, उनकी पढ़ाई में व्यवधान न पड़े भीख हम लोग मांग नहीं सकते, सफेदपोश हैं न। तुम्हीं बताओ मैं क्या करूं, मुझे इसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितना दुख है, सत्या !" जीवन की आँखों में आंसू आ गए।

"अब ये रोना लेकर तो मेरे सामने बैठो मत, बाहर टहलो। थोड़ी देर में तैयार हुआ जाता है। तुम करते-करते मरे जाते हो, तो यहां मैं ही कौन बैठी-बैठी तोड़ती हूं। दिन भर इनका काम करो, इनके बच्चों को, घर को संभालो, कपड़े, लत्ते, चौका बर्तन सभी कुछ करो, उस पर यह लैक्चरबाजी। भगवान, मैंने ही कौन से ऐसे पाप किये थे पिछले जनम में। एक नौकर भी तो भगवान ने फूटे भाग में नहीं लिखा।"

गरजने के पश्चात् बरसने की बारी है, यह जीवन जान गया। धीरे से वह उठा, कमीज शरीर पर डाली और उदास मन बाहर निकल आया। आज वास्तव में उसके हृदय में बड़ी कातरता उमड़ रही है। जब से सत्या का और उसका साथ हुआ है, एक दिन भी वह हँस नहीं सका। और आज वह चुप-चाप भूखा चला आया है। ऐसा शायद उसकी जिन्दगी में पहले कभी नहीं हुआ। और यह सत्या ? क्या यह वास्तव में स्त्री नहीं है ? तनिक भी स्निग्धता, सहानुभूति क्या उसे ईश्वर ने नहीं दी ?

धूमिल संध्या आकाश से उतरने लगी थी। जीवन शहर के बाहर आ गया था। सब खुला वातावरण था। चौड़ी सड़क के दोनों ओर बगीचे इत्यादि लगा कर कोठियां बनी थीं— भव्य शानदार ! आज वास्तव में जीवन बड़ा निराश है। ऐसी निराशा शायद उसके अन्दर कभी नहीं हुई। उसने सोचा, यह भी कोई जिन्दगी है ? प्रबल इच्छा हुई, यदि आज वह घर जाए ही नहीं, तो कैसा रहे ? किन्तु सत्या ? शायद उसे तनिक भी चिन्ता न होगी। और वह सुबह जाएगा तो रात भर गायब रहने पर एक महाभारत और मच जाएगा। तो कभी भी न जाए। कुछ खाले, या कुएँ में डूब जाए। और उसका सिर चकराने लगा। इच्छा हुई आज फूट-फूट कर रो ले।

वह एक बहुत बड़ी कोठी के सामने से जा रहा था। कोठी तो यद्यपि छोटी थी, पर उसके चारों ओर अत्यन्त सुन्दर बगीचा लगा हुआ था। हरियाले कुंजों के बीच में कई फव्वारे और बेंचें उसे दिखाई दीं। बड़ी सुन्दर रविशें और मेहँदी की कतारें। उसे अनुभव हो रहा था जैसे एक प्रकार की भीषण अग्नि उसकी रीढ़ की हड्डी के सहारे आती हुई सारे मस्तिष्क को भूने दे रही हो, और वह प्रति-क्षण अपने पर से अधिकार खो रहा हो। उसे लगा जैसे पृथ्वी धीरे-धीरे डगमगाती हुई घूम रही है। यदि वह किसी का सहारा न लेगा तो गिर पड़ेगा—अब गिरा···अब गिरा। वह लड़खड़ाता हुआ फाटक के अन्दर घुस गया और मेंहदी की लाइन पार कर के धड़ाम् से घास पर गिर पड़ा। क्या कभी उसने स्वप्न में भी सोचा था कि ऐसी क्रूर मशीनों, कोल्हुओं में दबा कर उसकी हड्डियों का रस निकाला जाएगा ? कितना सुखी था पिछला जीवन ! कल्पना ? ओफ कल्पना न जाने कहां होगी— रानी बनी, और जीवन ? नहीं वह एक चपरासी का लड़का है, अधिक कुछ भी नहीं। उस समय जीवन को ऐसा लगा जैसे बाईं पसली के नीचे कोई नुकीली चीज सांस लेने में चुभती है। एक विचित्र प्रकार की तन्द्रा उसके ऊपर छा रही थी। न जाने कैसी होगी कल्पना ? उफ ! कितना व्यस्त वह इन दिनों रहा है। कल्पना के विषय में एक क्षण भी तो नहीं सोच पाया। उसका विचार ही कितना मधुर है। काश, कल्पना उसके साथ बंध पाती ! तो क्या आज यों तिरस्कृत हो कर भूखा प्यासा वह बाहर बेहोश पड़ा रहता।

"कौन हो जी ? यहां क्यों पड़े हो ? किससे पूछ कर यहां आए ?" तभी एक तेज स्वर सुनाई दिया।

एक दम चौंक कर जीवन उठ बैठा। उल्टे पल्ले की आसमानी साड़ी पहिन एक सुन्दर स्त्री खड़ी थी। सूनी आंखों से वह उसकी ओर देखने लगा। उसके हृदय में भाव उठा—कल्पना !

"अरे, जीवन !" कल्पना जोर से चीख पड़ी और एकदम उसके पास बैठ कर बोली—"जीवन, तुम यहां कैसे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां से मेरी कहानी अब और कहानियों से भिन्न हो रही ! पाठकों को शायद कुछ नया भी लगे, पर मैं विवश हूँ, आशा है वे मुझे क्षमा करेंगे।

सूरज डूब चुका था, और तारे आसमान में झिल-मिलाने लगे थे। एक ओर से पूर्णमासी का चांद ऊपर उठ रहा था।

कल्पना की गोदी में सिर रखे हुए जीवन लेटा था। कल्पना, न जाने कितने वर्षों पश्चात् आज मैं सुख की सांस ले रहा हूं ! मैं वास्तव में दुखी हूँ, कल्पना !"

कल्पना उसके बालों पर हाथ फेरती हुई बोली, "जीवन तुम्हारे दुख को मैं अनुभव करती हूँ, अपनी दुर्बलता पर पछताती भी हूँ। न जाने कब से मैं यहां तुम्हारी राह देख रही हूं, हृदय में दृढ़ विश्वास था, तुम यहां आओगे !"

"तुम्हारा क्या हाल है, कल्पना ? मैंने तुम्हारे विषय में तो पूछा भी नहीं।" जीवन ने कहा।

"मेरा हाल ? मेरा हाल जान कर क्या करोगे, जीवन !" एक विषाद की हंसी उसके मुख पर आ गई। "विवाह मैंने नहीं किया। पिताजी की एक 'एक्सी-डेंट से मृत्यु हो गई। तभी से मैं यहां आ कर रहने लगी हूँ। एक साध थी, एक विश्वास था कि तुम मिलोगे। सेवा मेरा धर्म है। न जाने क्यों, जीवन, किसी भी दुखी निराश को देख कर मुझ से रहा नहीं जाता। एक प्रकार का दुर्निवार मातृत्व-सा मेरे अन्दर उमड़ता है, और उस समय मैं ऊंच नींच अच्छे-बुरे के सभी भेद भूल जाती हूँ। गोद में ले कर उसके हृदय को मैं सान्त्वना और शान्ति दे सकूं। न जाने कितने मनुष्य आए और चले गये। मेरे लिये लोगों ने न जाने क्या-क्या कहा...वह छलना है, वह मृगमरीचिका है, वह वेश्या है, क्यों कि किसी एक के साथ बंधने को मैं तैयार नहीं थी। अब तुम्हीं बताओ जीवन—मैं स्वयं अनुभव करती हूँ—सागर की भांति मेरा यह जो हृदय विस्तृत हो गया है, उसे कैसे एक चुल्लू में बांध दूं। उसके लिये तो संसार में एक गागर था।" कल्पना का मुख स्वयं जैसे नीचे झुक गया।

"कल्पना, परिस्थितियों का उचित सहयोग पा कर भी हम और तुम एक न हो सके। काश, उस समय दोनों कहीं चले चलते !" जीवन का स्वर उच्छ्वसित हो आया।

"जो नहीं है उसके लिये दुख करना व्यर्थ है। जीवन, मैं तुम्हारी ही हूँ—तुम विश्वास रखो !"

"ओफ ! यहां कितनी शान्ति है, सुख है।" जीवन के मुख से अनायास ही निकला। सुदूर क्षितिज में उसने देखा, चांद का बड़ा सा बिम्ब, आकाश-पाताल को आलोकित करता हुआ ऊपर उठ आया था। वह देखता रहा। उसे लगा चाँद उसके निकट है, बहुत निकट। उसने धीरे से अपनी भुजाएँ चाँद के गले में डाल दीं।

चाँद कह रहा था, "जीवन, सत्या को मैं जानती थी। हम दोनों बचपन की सहेलियाँ हैं। कभी-कभी सोचती हूँ तो बड़ा दुख होता है। उसके स्वभाव की कर्कशता और तुम्हारी कोमलता का कोई मेल सम्भव था ? किन्तु भाग्य की कौन कहे। लेकिन जीवन, विवाह जन्म-मरण का बन्धन है उसे तोड़ो मत। तुम सत्या के हो, सत्या के साथ ही रहोगे। मैं उससे तुम्हें छीनूंगी नहीं, तो भी जीवन, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, सदा करती रहूँगी। विश्वास रखो। सत्या की गृह-कलह, और स्वभाव की कटुता से जब तुम्हारा मन बुरी तरह ऊब जाए, तुम श्रान्त क्लान्त हो जाओ, तो यहां चले आया करो। मैं अपनी गोद में तुम्हें लिटा कर अपने हाथों को तुम्हारी पलकों पर फेर कर नव स्वप्नों का सृजन तुम्हारी पुतलियों में करूंगी, तुम्हें, नई शक्ति दूंगी तुम मेरे हो जीवन !" और झुक कर उसने जीवन के रूखे अधर चूम लिये।

* * *

यह स्वप्न है या जागरण पाठकों को यह मैं नहीं बताऊंगा, पर इतना विश्वास दिलाता हूं कि जीवन जब-जब सत्या के कटु स्वभाव से ऊब जाएगा, तो वह अवश्य ही कल्पना के इस उद्यान में आएगा यहां उसकी प्रतीक्षा में बैठी कल्पना उसकी आंखों में पुराने सुखद स्वप्नों को जगा कर साकार कर देगी, और नये स्वप्नों को प्रेरणा देगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

श्री सुरेशकुमार 'सुमन'

अलि, दीपक बुझ-बुझ जलता है !

आलोकित कुंदन-सी रेखा
अंबर-तट से छूने जाती;
प्रतिपल प्रियतम से मिलने को अंतर का प्रणय मचलता है !

कम्पित-सिहरित श्वासें भरतीं
मदिरालस-सी विद्युन्माला;
उसके आने के आमुख में कब से अभिनय यह चलता है !

मिल चक्रवाल में खो जाते
उद्दाम शलभ विस्मृत हो कर;
मिटने में शत निर्माण निहित, अनुपम अमरत्व बिछलता है !

अगणित संख्या में दीवाली
रचती ऊपर तारक माला;
सस्नेह तमिस्र विजन-वन में सीमित संसार पिघलता है !

शैशव से झुके बहे जाते
क्रीड़ा में निरत पवन-झोंके;
कुछ बुझती-सी, कुछ जलती सी किरणों का वेश बदलता है !

अँजता पृथकत्व-रहित घुल मिल
अंजन रे काले नयनों में;
शाश्वत संगम में स्पंदन का उज्ज्वलतम नाद निकलता है !

विस्तृत प्रांगण, कण-कण जगमग,
नीचे गहरी काली छाया;
प्रियतम से आंखमिचौनी में जीवन का सायम ढलता है !

मेरी श्लथ मर्यादा ढल कर
आतुर अनन्त में मिल जाने;
मेरा ज्योतिर्मय अपनापन प्रसृत करता विह्वलता है !
अलि, दीपक बुझ-बुझ जलता है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

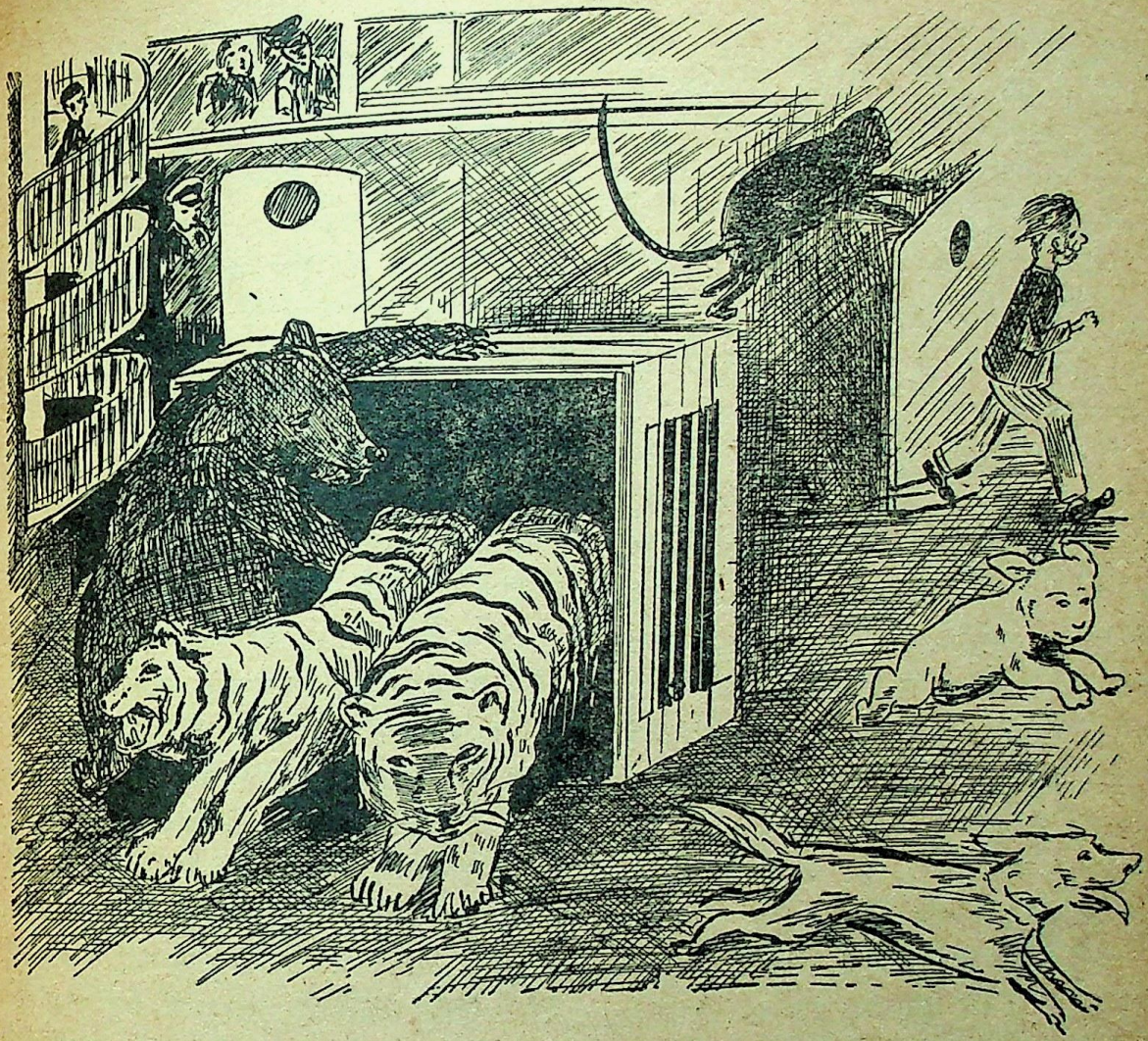

वन्यपशु कैसे पकड़े जाते हैं ?

श्री विराज

आप किसी चिड़ियाघर में गये हैं ? वहां पर विचित्र-विचित्र जन्तुओं को देखा है ? हिमालय के बाघ, मध्यभारत के केसरी, आसाम के हाथी, चीते, भेड़िये, पहाड़ी भालू, बर्मा के गैंडे, मगरमच्छ, और अजगर देखे हैं ! मैं मानता हूँ कि इन भयंकर जन्तुओं को देख कर आपको रोमांच नहीं हुआ; आपको किसी प्रकार का भय नहीं लगा । यह भी मैं मानता हूँ कि आपने धारीदार बाघ को कंकड़ फेंक कर मारे हैं और उनसे क्रुद्ध हो कर उसने जब अपना बड़े बड़े दांतों वाला विशाल मुख खोला है और गर्जना की है, तब यह सब आपको तमाशे से अधिक नहीं लगा । परन्तु.....

लाहौर का चिड़ियाघर एक सुन्दर और शानदार बाग में बना हुआ है । यह बाग बहुत बड़ा है । पंजाब के विभाजन से पहले तो इस बाग की रौनक दर्शनीय थी । इसके चिड़ियाघर से बाहर वाले भाग में प्रातः और सायं शहर के सभी वर्गों के लोग भ्रमण के लिये आया करते थे । शहर की सर्वोत्तम सुन्दरियां शहर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोत्तम पोशाकों में सुबह-शाम वहां देखी जा सकती थीं; शहर के फक्कड़ और आवारागर्द नवयुवक, छंटे हुए गुण्डे, दफ्तरों के नियमपालक क्लर्क, स्वच्छ वायु का सेवन करने के अभिलाषी वृद्ध रोगी—इन सभी के कारण उस बाग में सदा मेला-सा लगा रहता था।

उस दिन मैं स्वयं उस बाग में था। शाम के पांच बजे थे। बाग में जैसे वसन्त छाया हुआ था—और वह भी अपने पूरे यौवन पर। एकाएक शोर मचा— 'शेर! शेर!'

वैसा दृश्य मैंने फिर कभी नहीं देखा। मुझे संदेह है कि यदि आकाश से बम बरसने लगते, तब भी लोग इतने भयभीत न होते। जिसका मुंह जिस ओर था, वह उधर ही भाग खड़ा हुआ—बिना यह जाने कि शेर है किधर। सुन्दरियां घबरा गईं, अनेकों भागने का प्रयास करते हुए गिर गईं। बच्चे जोर-जोर से रोने लगे। किसी को यह पूछने तक का अवसर न मिला कि हुआ क्या? देखते देखते सारा बाग सुनसान हो गया; कहीं कोई आवाज न सुन पड़ती थी। और मजे की बात यह कि उस समय बाग में कम से कम दस हजार आदमी जगह जगह छिपे हुए थे।

बाद में पता चला कि किसी रखवाले की भूल से एक पिंजड़े का द्वार खुला रह गया था। उसी द्वार में से एक कमजोर बाघ निकल कर बाहर आ गया था। बाहर आते ही उसने दो आदमियों को जान से मार दिया और तीन चार को बुरी तरह घायल कर दिया। जिस समय बाग में आतंक फैला, उस समय शेर एक झुरमुट में छिप गया था, और जहां तक के लोग उससे डर रहे थे, वहां से वह आधा मील दूर था। समय दिन का था। चिड़ियाघर में बन्दूकें भी थीं; चिड़ियाघर के रक्षक बिगड़े शेरों को मारना और काबू करना भी जानते थे। किन्तु मैं सच कहता हूँ कि उस एक सामान्य बाघ के भय से उस समय बाग में दस हजार से अधिक व्यक्ति सांस रोके खड़े थे।

इस से कुछ अनुमान हो सकता है कि जंगल में स्वच्छन्द रूप से फिरने वाला जंगल का राजा कितना भयंकर हो सकता है! यदि मैं आप को उन शिकारियों की कहानियां सुनाने लगूं, जो शेर के शिकार को जा कर, शेर के सामने आने पर डर गये थे, या बेहोश हो गये थे, या उन्होंने नित्यकर्म आदि का कुछ ऐसा अनियम कर दिया था, जो उनकी वीरता को लांछित करने वाला था, तो अपने आप में एक लेख नहीं, एक छोटी-मोटी पुस्तक तैयार हो जाय। ऐसी कहानियां ढेरों हैं, छपी हुई भी और बेछपी भी। इस बात में तनिक भी अत्युक्ति नहीं है कि इन हिंस्र जन्तुओं को शक्तिशाली बन्दूक से भी शिकार करते हुए प्राण हथेली पर रख लेने पड़ते हैं और बहुत बार उन्हें फिर हथेली पर से उठाने का अवसर नहीं मिलता। शेर की एक थाप, चीते की एक झपट, हाथी की सूंड की एक लपेट, या अजगर की एक गुंजलक मनुष्य की आयु को निःशेष करने के लिये पर्याप्त होती है।

परन्तु हिंस्र जन्तुओं को गोली मार देने भर की वीरता के आधार पर चिड़ियाघर नहीं बने हैं। इन दैत्यों को जीते जी काबू करने के लिये जिस साहस, वीरता और कौशल की आवश्यकता है, वह जिनमें था और है, उन्होंने ही दुनिया भर के चिड़ियाघरों का निर्माण किया है। इसमें संदेह नहीं कि मनुष्य की बुद्धि ने भी इस संघर्ष में अपना महत्वपूर्ण भाग चुकाया है।

बच्चे पकड़े जाते हैं

देखा यह गया है कि बड़ी आयु के पशु पकड़ लिये जाने पर स्वतन्त्रता के लिये भीषण संघर्ष करते हैं और बहुत बार अनशन द्वारा प्राण त्याग देते हैं। हमने जितने सांप और अजगर पकड़े, उनमें से कई ने इस प्रकार आत्मघात कर लिया। चूहा सांप का भोजन है। एक कोबरा सांप के पिंजड़े में जब एक चूहा छोड़ा गया, तो लगभग दो सप्ताह तक दोनों ने एक दूसरे को कुछ नहीं कहा। उसके बाद चूहे ने भूख से व्याकुल हो कर कोबरा को काटना प्रारम्भ कर दिया, किन्तु कोबरा अपने व्रत पर अटल रहा।

इसी प्रकार गुरिल्ला (बनमानुष) को जीते जी पकड़ना बहुत कठिन होता है। आज तक किसी भी चिड़ियाघर में बड़ा गुरिल्ला साल भर से अधिक जीवित नहीं रखा जा सका।

मुझे ध्यान है कि एक बार कुछ लोगों ने एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े हिरन को किसी प्रकार घायल करके पकड़ लिया और सुविधा देने के खयाल से उसे एक लम्बी रस्सी से बांध दिया। रस्सी का एक छोर हिरन के गले में बंधा था और दूसरा एक पेड़ की जड़ में। रस्सी बांधते समय हिरन को कई लोगों ने पकड़ा हुआ था। (प्रसंगवश बात याद आ गई कि यदि हिरन की लात लगने से किसी आदमी का हाथ टूट जाय, तो उसे दुःख भले ही हो आश्चर्य बिल्कुल न होना चाहिये।) रस्सी बंध चुकने पर ज्यों ही हिरन को छोड़ा गया, त्यों ही उसने रस्सी में ऐसे जोरदार झटके मारने शुरू किये, जिनका प्रभाव हम जानते थे कि उसकी गर्दन के लिये शुभ नहीं होगा। उसे अपने प्राण देते देर नहीं लगी। मुश्किल से दस मिनट वह बंधा रहा होगा; पर उसके बाद खोल देने पर भी वह जीवित नहीं रह सका—मर ही गया। अपनी स्वाधीनता के लिये इतना मोह होता है इन जंगल के जानवरों में!

परन्तु इनके बच्चों में यह चीज कम होती है और वे प्रायः सरलतापूर्वक पल जाते हैं। इस लिये बच्चों को पकड़ने पर ही अधिक जोर दिया जाता है।

बड़े पशुओं को पकड़ने का उपाय

यह उपाय बहुत प्रसिद्ध और साधारण है। गैंडों, हाथियों और जलहस्तियों (हिप्पोपोटेमस) के पानी पीने के लिये आने जाने के मार्ग का भली प्रकार निश्चय करके उस रास्ते पर काफी बड़ा और गहरा गड्ढा खोद दिया जाता है। यह गड्ढा रास्ते को आर-पार पूरा घेरे रहता है, जिससे अभीष्ट पशु रास्ते के चाहे जिस भाग पर से गुजरे, किन्तु उसमें गिर ही पड़े। इस गड्ढे के ऊपर आर-पार पतली रस्सियां बांध कर उन पर सूखी बेलें, पत्ते, और घास-फूस इस तरह बिछा दिया जाता है, जिससे गड्ढा दीखना बिल्कुल बंद हो जाय और ऐसा जान पड़े, जैसे रास्ते पर घास-फूस पड़ा हुआ है। कभी कभी इस घासफूस पर पतली मिट्टी की तह भी जमा दी जाती है। जब वह अभागा प्राणी इस गड्ढे पर से गुजरना चाहता है, तो एकाएक गड्ढे में धंस जाता है। फिर उसे बांध कर बाहर निकाल लिया जाता है। गैंडे पर यह उपाय विशेष रूप से सफल होता है, क्योंकि मादा-गैंडा सदा अपने शिशु को अपने आगे करके चलती है, जिससे वह सदा उसकी दृष्टि में रह सके और एकाएक किसी संकट में न फंस जाय। साधारणतया यदि शिशु पर कोई प्राणी आक्रमण करे, तो वह अत्यन्त भीषणता से उसका प्रतिकार करती है। परन्तु गड्ढे में उसका एकाएक लुप्त हो जाना गैंडिन के लिये एक ऐसी अकल्पनीय दुर्घटना है, जिसका न वह कारण जानती है और न उपाय। इस लिये वह स्वयं भयभीत हो कर भाग खड़ी होती है। शिकारी लोग आ कर बच्चे को पकड़ लेते हैं।

कई जगह हाथी को पकड़ने के लिए भी यह उपाय काम में लाया जाता है। किन्तु इस उपाय में एक बड़ा दोष यह है कि गड्ढे में गिर कर प्राणी अपना कोई न कोई अंग खो बैठता है और निकम्मा हो जाता है या मर जाता है।

शेर को पकड़ना

ऊपर लिखे उपाय से शेर को पकड़ने में दो संकट हैं। यद्यपि कहीं कहीं अब भी इस उपाय का प्रयोग होता है, परन्तु इस प्रकार शेर सकुशल हाथ नहीं आता। उसकी कोई न कोई हड्डी टूट जाती है। आश्चर्य ही है कि १८ फीट तक कूदने वाला शेर किस प्रकार ८ या १० फीट गहरे गड्ढे में गिर कर घायल हो जाता है। इस प्रकार पकड़े गये शेर की चिकित्सा भी नहीं की जा सकती, अतः वह निश्चित रूप से—जल्दी या देर में—मर ही जाता है।

यह संकट तो शेर की जान के लिए हुआ। गड्ढे में गिर पड़ने के बाद उसमें से शेर को निकालते हुए निकालने वालों में से कम से कम दो-तीन के लिये पूरा प्राण-संकट उपस्थित हो जाता है। घायल और बन्दी बनाये जाते हुए शेर की क्रुद्ध शक्ति का अनुमान कठिन भी नहीं है और सरल भी नहीं।

इस लिए शेर, बाघ और बघेरों को पकड़ने के लिए कठघरे का उपाय बरता जाता है। लकड़ी का एक मजबूत कठघरा बनाया जाता है। इस बात का भली प्रकार निश्चय कर लिया जाता है कि कोई भी जंगली प्राणी उसे तोड़ न सके। इसका दरवाजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिल्कुल अलग होता है। यह ऊपर से नीचे की ओर गिरने से बन्द होता है और फिर ऊपर की ओर खींचने से ही खुलता है – लगभग उसी तरह जिस तरह रेलगाड़ी की खिड़कियां ऊपर - नीचे उठा - गिरा कर खोली और बन्द की जा सकती हैं। यह ऊपर की ओर से नीचे गिर कर बन्द होने वाला दरवाजा इस तरह साध कर खुला रखा जाता है कि थोड़ा सा झटका लगते ही गिर पड़े। इस तख्ते का—जो दरवाजा ही होता है—सम्बन्ध अन्दर लटके मांस के टुकड़े से ठीक ऐसा ही होता है, जैसा पुराने ढंग के चूहेदानों में रोटी के टुकड़े का दरवाजे से होता था। मांस के टुकड़े को तनिक-सा खींचने भर से दरवाजा स्वयं बन्द हो जाता है।

प्रायः जंगली हिंस्र प्राणी कठघरे में घुस कर मांस के टुकड़े को खींचने का प्रयत्न करते हैं और कठघरे में बन्दी हो जाते हैं। बहुत बार ऐसा होता है कि जिस पशु को पकड़ने के लिए कठघरा लगाया जाता है, उसके आने से पहले ही कोई अनभीष्ट छोटा - मोटा पशु—गीदड़ या भेड़िया कठघरे में आ घुसता है। तब अगले दिन उसकी यथोचित पूजा करने के बाद नये सिरे से फिर कठघरा सजाना पड़ता है।

इस तरह बहुत से शेर और बाघ पकड़े जाते हैं। पर सब बाघ मूर्ख नहीं होते। ऐसे बाघों के भी कई उदाहरण मिले हैं कि वे पिंजड़े में नहीं घुसे, बल्कि निकट ही कहीं घात लगा कर बैठ गये और अगले दिन सवेरे जब शिकारी पिंजड़े को देखने आये तो उन पर टूट पड़े। एक बार ऐसा हुआ कि एक बाघ ने जब मांस का टुकड़ा खींचना चाहा तो दरवाजा बन्द हो गया। परन्तु बाघ ने निकलने के लिए बहुत फुर्ती की। वह निकल तो न सका, पर उसका एक अगला पंजा दरवाजे के नीचे दब गया। जब सवेरे शिकारी आये, तो उसने असाधारण शक्ति लगा कर दरवाजे को ऊपर उठा कर खोल दिया और दो आदमियों को वहीं समाप्त कर दिया और स्वयं जंगल में भाग गया।

पकड़ने की गुफा

अरावली की पहाड़ियों में सोना नाम का एक स्थान है। वहां गरम पानी के स्रोत भी हैं। वहां के लोगों ने बघेरों को पकड़ने के लिए कठघरों का काम कृत्रिम गुफाओं से लेने का आविष्कार किया हुआ है। कृत्रिम गुफा से मेरा मतलब भारी पत्थरों से बनी हुई उन नीची और तंग खोलियों से है, जो देखने में गुफा-सी जान पड़ती हैं। ये इतनी नीची होती हैं कि इन में बघेरा कूद नहीं सकता, और इतनी पतली कि वह इनमें मुड़ नहीं सकता। दरवाजा स्वयं बन्द करने के लिये इन में भी वही उपाय बरता जाता है, जो हमने ऊपर लिखा है। गुफा में बघेरे के फंस जाने के बाद दरवाजे पर एक बोरी लगा कर उस में बघेरे को बन्द कर लिया जाता है।

चीता पकड़ने की विचित्र पद्धति

चीते पकड़ने के लिए भी कठघरे से अच्छा उपाय दूसरा नहीं है। किन्तु अमेरिका में छपी एक पुस्तक में बताया गया है कि चीते एक और मनोरंजक तरीके से पकड़े जाते हैं। चीते अमेरिका में नहीं पाये जाते; इस लिए पुस्तक में चीते पकड़ने की इस विधि को भारतीय बताया गया है। पुस्तक में लिखा है कि चीता जब भूखा होता है, तब एक ऐसी जगह जाता है, जहां बहुत से चीते परस्पर मिलते हैं। यह जगह प्रायः किसी पेड़ के निकट होती है। इस पेड़ को खोज कर इसके आस-पास मजबूत रस्सियों के फन्दे बांध दिये जाते हैं। चीते आकर इन फंदों में फंस जाते हैं।

अमेरिका अद्भुत देश है। वहां की जनता अत्यन्त कल्पना-प्रिय है, इसी लिए वहां ऐसी कल्पित बातों से भरी हुई पुस्तकें बड़ी सरलता से बिक सकती हैं। वहां के लेखकों ने भी बड़ी से बड़ी अविश्वसनीय गप्पों के लिए भारत को आधार माना हुआ है। मुर्दे को जिला देने वाले साधु या आकाश में उड़ने वाले जादूगर ऐसी जितनी भी अजीबो गरीब बातें हैं, वे सब भारत का आधार पाकर अमेरिका - वासियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए कुछ विश्वसनीय बन जाती हैं। इसी बात का लाभ उठा कर धन कमाने के इच्छुक किसी यशस्वी लेखक ने चीते पकड़ने की यह नई विधि आविष्कृत की है। पर पुस्तक में यह नहीं लिखा कि भूखा चीता आखिर उस 'चीता - कान्फ्रेंस' में क्या करने जाता है? चीते समूह बना कर शिकार नहीं करते।

छोटे शिशुओं का पालन पोषण

जैसा मैंने कहा कि पशुओं को जीवित पकड़ने वालों का अधिक लक्ष्य पशुओं के छोटे बच्चों को पकड़ना होता है। इसके लिए पहले यह मालूम किया जाता है कि बच्चों वाले पशु किस जगह रहते हैं। उसके बाद खुले साम्मुख्य में बड़े पशुओं को गोली मार दी जाती है और छोटे बच्चे बन्दी बना लिए जाते हैं। ये बच्चे यदि केवल दो तीन सप्ताह के हों, तब तो सरलता से बन्दी बन जाते हैं; परन्तु तीन या दो मास की आयु के शेर, बाघ और चीते के बच्चे स्वतन्त्र रहने के लिए बुरी तरह लड़ते हैं---यहां तक कि इन के ऊपर जाल या बड़ा कपड़ा फेंक कर पकड़ना पड़ता है।

जब ये शिशु बहुत छोटे होते हैं, तो इन्हें दूध पिला कर बड़ा करने के लिए किसी दूसरी मां के पास रखना आवश्यक हो जाता है। मातृत्व का यह कार्य किसी बकरी या गाय को करना पड़ता है। पहले-पहल तो यह मां अपने नये 'धर्म-पुत्रों' के दूध पीने के ढंग और व्यवहार पर कुछ चौंकती है, पर बाद में धीरे-धीरे उन्हें भी दूध पिलाने लगती है। आश्चर्य है कि जो सिंह-शिशु बड़ा हो जाने पर पूरी बकरी का प्रातराश (नाश्ता) कर जा सकता है, वह बकरी का दूध कैसे पीता है और बकरी ही उसे दूध कैसे पिलाती है! यह भी ठीक नहीं कहा जा सकता कि इनसे विलोम परिस्थितियों में सिंहनी बकरी के बच्चे के साथ कैसा व्यवहार करेगी? हमें नहीं मालूम कि वह भी उसे बकरी की ही भांति दूध पिलायेगी, या पान की तरह चबाना या लाइमजूस की तरह चूसते रहना पसन्द करेगी?

फिर भी कई सिंह-शिशु और कई शिशु-गैंडे बकरी का दूध पी-पी कर बड़े हुए हैं। यह भी सत्य है कि जिन स्थानों पर उनकी नई मां निरन्तर उनके साथ रही है, वहां उन्होंने युवा होने पर भी शक्ति के मद में आकर उसे क्षति नहीं पहुँचाई है। परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि यदि उस बकरी को आठ-दस महीने उनसे अलग रख कर फिर उनके पास रखा जाय, तो वे धर्मपुत्र उससे कैसा व्यवहार करेंगे?

हाथी पकड़ने की विधि

हाथी पकड़ने की विधि, मेरा ख्याल है, सर्व विदित है। इस लिए नहीं कि भारत में हाथी घर घर पकड़े जाते हैं, बल्कि इस लिये कि इस विषय पर एक पाठ कुछ पाठ्य - पुस्तकों में छपा हुआ है।

हाथी पकड़ने की पहली विधि गड्ढे वाली है, जिसका हम उल्लेख कर चुके हैं और यह भी देख चुके हैं कि वह क्यों हानिकर है।

हाथी पकड़ने की दूसरी विधि यह है कि पालतू हाथियों पर सवार होकर पकड़ने वाले लोग हाथियों के झुण्ड का पीछा करते हैं और जो हाथी पीछे रह जाता है, उसे हाथियों से घेर कर उसके पैरों में रस्सियां बांध देते हैं। ये रस्सियां दूसरी ओर पालतू हाथियों से बंधी होती हैं। फिर पालतू हाथी उसे खींच कर अभीष्ट स्थान पर ले जाते हैं।

इस उपाय में दो बड़े दोष हैं। एक तो यह कि हाथी के पैर में फंदा डालने वाले व्यक्ति की जान निरन्तर संकट में रहती है। किसी भी समय जंगली हाथी उस पर अपना क्रोध उतार सकता है। दूसरे इस पद्धति में झुण्ड का सब से निकम्मा और असमर्थ हाथी ही हाथ आता है।

हाथी पकड़ने की सर्वोत्तम विधि तीसरी है। इसमें तीन या चार सौ आदमियों का दल काम करता है। घने जंगलों के बीच में एक बहुत बड़ा बाड़ा बनाया जाता है। यह बाड़ा बहुत मजबूत होता है। बल्लियों के स्थान पर इस में विशालकाय वृक्षों के मोटे-मोटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तने लगाये जाते हैं, जिन्हें हाथी तोड़ न सकें।

जिन दिनों एक दल इस बाड़े को बनाने के कार्य में व्यस्त होता है, उन दिनों दूसरा दल सारे जंगल के चारों ओर घेरा डाले होता है और सब ओर से धीरे-धीरे इस केन्द्र—बाड़े—की ओर बढ़ रहा होता है। ये प्रायः गर्मियों के दिन होते हैं और भोज्य की कमी के कारण हाथियों का विशाल झुण्ड छोटी-छोटी टुकड़ियों में बंटा होता है और ये टुकड़ियां एक दूसरे से एक-एक दो-दो मील दूर होती हैं। घेरे वाले लोगों का काम यह होता है कि वे सब टुकड़ियों को इकट्ठा कर के उस बाड़े की ओर लायें। जंगली हाथी साधारणतया आदमियों पर आक्रमण करने के बजाय भागने में अपनी अधिक सुरक्षा अनुभव करता है। धीरे-धीरे सारा झुण्ड घेर कर बाड़े के पास ले जाया जाता है और एक दिन निश्चित करके उस दिन बाड़े के एक मात्र द्वार में प्रविष्ट करा दिया जाता है। हाथी भी हल्ले से घबरा कर, यह न जानते हुए कि वे कारागार में घुस रहे हैं, उसी को सुरक्षा का एक मात्र मार्ग समझ कर उसमें घुस जाते हैं। पीछे से द्वार मजबूती से बन्द कर दिया जाता है।

एक दो दिन तक हाथियों की उपवास चिकित्सा कराई जाती है और फिर कुशल महावत और सधे हुए पालतू हाथी बाड़े में प्रविष्ट होते हैं। हाथी हाथियों से प्रेम से मिलते हैं। मौका देख कर महावत किसी एक हाथी के पैर में फंदा डाल देता है और पालतू हाथी उसे खींच कर बाहर ले आते हैं। सधाये हुए हाथी अपने आप बाहर आकर उस फंदे वाले रस्से को एक पेड़ के चारों ओर लपेटने लगते हैं। रस्सा इस ढंग से लपेटा जाता है कि बन्दी हाथी एक दम पेड़ के तने से सट जाय और अधिक हिल-जुल न सके। बन्दी हाथी को पेड़ के तने तक पहुँचाने में दूसरे पालतू हाथी भी सहायता करते हैं और आवश्यकता होती है तो उसे धकेल कर भी तने के पास कर देते हैं। अच्छी प्रकार कसे जाने के बाद हाथियों के संरक्षण में ही महावत एक-एक करके उसके चारों पैरों को जकड़ देते हैं और फिर उसे धीरे-धीरे आज्ञा-पालन के गुण और उद्दण्डता के दोष समझा दिये जाते हैं।

इस प्रकार एक एक करके दूसरे सब हाथी भी बस में कर लिये जाते हैं।

बंदर का फंदा

बन्दर बहुत चालाक और फुर्तीला होता है, किन्तु उसका सिर मनुष्य के सिर से जितना छोटा होता है, बुद्धि उसकी तुलना में और भी छोटी होती है। इस लिये आखिर वह भी फंदे में आ ही जाता है।

एक छोटा-सा दस इंच गहरा गड्ढा खोदा जाता है। यह गड्ढा इतना चौड़ा होता है कि आदमी की बंद मुट्ठी उसमें जा सके। एक लम्बी रस्सी के किनारे पर खींचने से कसता जाने वाला फंदा बना कर फंदे को गड्ढे के मुख पर रख कर सब ओर से मिट्टी में दबा दिया जाता है। फिर लोहे का एक पांच छः फुट लम्बा या इससे अधिक लम्बा जैसा भी मिल सके—नल इस तरह रखा जाता है कि उसका एक सिरा गड्ढे के पास रहे। फिर फन्दे वाली रस्सी को इस नल में से गुजार कर दूसरी ओर निकाल लिया जाता है। अब नल के उस सिरे को, जो गड्ढे के पास होता है, मिट्टी से ढांप दिया जाता है। पर यह इस तरह ढांपा जाना चाहिये जिससे रस्सी के खींचने में किसी प्रकार की बाधा न पड़े। यह रस्सी कम से कम पन्द्रह या बीस फुट लम्बी होनी चाहिये। इसके बाद गड्ढे के आस पास और गड्ढे के अन्दर चने डाल दिये जाते हैं। चनों का बड़ा भाग गड्ढे के अन्दर ही डाला जाता है।

यह संभवतः कहने की आवश्यकता नहीं कि यह सब तैयारी वहीं की जाती है, जहां आस पास बंदरों का झुण्ड दीख रहा हो। इतनी तैयारी करने के बाद पकड़ने वाले लोग गड्ढे से दूर जा कर—इतनी दूर, जितनी लम्बी कि रस्सी हो—इस प्रकार बैठ जाते हैं, जैसे कि उन्हें बन्दरों से कुछ लेना-देना नहीं है। पर जिसके हाथ में फंदे वाली रस्सी का छोर होता है, उसकी निगाह गड्ढे पर ही रहती है।

जब बंदरों का ध्यान उन चनों पर जाता है, तो वे आकर उन्हें खाने लगते हैं। फिर कोई साहसी बंदर गड्ढे के अन्दर हाथ डाल कर चने निकालने का प्रयास करता है। जब उसका हाथ गड्ढे के अन्दर होता है, तभी तेजी से रस्सी खिंचती है और बंदर फंदे में आ

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। रस्सी इतनी खिंचती है कि उसका बंधा हुआ हाथ लोहे के नल के साथ सट जाता है और फिर वह कूद फांद भी अधिक नहीं कर सकता। इस प्रकार प्रायः झुण्ड का सबसे बड़ा और मोटा बंदर पकड़ में आता है, क्योंकि वह अपने रोब के कारण और किसी बंदर को चनों के पास फटकने तक नहीं देता।

लंगूरों का कारावास

लंगूर को भी ऊपर लिखे बंदर पकड़ने के ढंग से पकड़ा जा सकता है; किंतु लंगूर न केवल बंदर से कई गुना अधिक शक्तिशाली होता है, बल्कि फुर्तीला भी अधिक होता है। इस लिये ऊपर लिखे ढंग से फंसा लेने के बाद भी उसका काबू करना कठिन होता है।

लंगूरों को पकड़ने के लिये जंगल में मकान की आकृति का एक बड़ा कठघरा बनाया जाता है। इसके ऊपर छत इत्यादि सब मकान के ढंग की ही होती है। इस मकान के दरवाजे की विशेषता केवल इतनी होती है कि उसे दूर बैठा हुआ व्यक्ति भी रस्सी के सहारे भली प्रकार बंद कर सकता है।

इस मकान में बीच बीच में कभी कभी चने बखेर दिये जाते हैं, जिन्हें लंगूर आकर बड़े शौक से खाते हैं। धीरे धीरे वे उसे उजड़ा हुआ मकान समझ कर उसे अपना आश्रय बना लेते हैं और समय असमय में आ कर वहीं विश्राम करते हैं।

आखिर, मकान जिस लिये बनाया गया है, वह मुहूर्त एक दिन आता है। मकान में खूब चने बखेर दिये जाते हैं और जब लंगूर पूर्णतया निश्चिन्त हो कर चने खा रहे होते हैं, उस समय एकाएक रस्सी खिंचती है और पूरा झुण्ड का झुण्ड बंदी बन जाता है।

उसके बाद कठघरे में आर पार बांस अड़ाये जाते हैं। उत्तर दक्षिण, पूर्व पश्चिम, दोनों ओर से इतने बांस आर पार फंसाये जाते हैं कि लगभग सभी लंगूर उनके शिकंजों में कस जाते हैं और कूद फांद नहीं सकते। फिर एक एक लंगूर को सावधानी से किरमिच के थैलों में बंद कर लिया जाता है और वहां ले जाया जाता है, जहां बढ़िया और सुविधानुसार बनाये गये पिंजड़े उनकी प्रतीक्षा कर रहे होते हैं।

हिरन, जिराफ, और जेब्रा

ये हानिशून्य घासभोजी जन्तु हैं। पर इनकी गति बड़ी तीव्र होती है। वस्तुतः इनके बच्चों को ही पकड़ना अभिप्रेत होता है।

जहां कहीं इनके झुण्ड विश्राम कर रहे होते हैं, बहुत से घुड़सवार शिकारी वहां तक चुपके चुपके जा पहुँचते हैं और फिर एकाएक तुमुल कोलाहल के साथ झुण्ड पर टूट पड़ते हैं। पशु बेचारे डर कर भागते हैं और छोटे छोटे बच्चे, जो तेज नहीं भाग पाते, इन शिकारियों के हाथ पड़ जाते हैं। पकड़ लिये जाने के बाद इन सभी पशुओं की इतनी सेवा और इतनी देखरेख की जाती है कि किसी राजा की भी क्या होती होगी।

डुगडुगी पर नाचने वाला रीछ

रीछ अधिकतर सर्द देशों और पर्वतों की तराइयों में ही मिलते हैं और यह किसी भी अन्य हिंस्र-पशु से कम भयानक नहीं होते। इसी लिये इनके बच्चों को ही पकड़ा जाता है, बड़ों को नहीं। ये प्रायः उन दिनों पकड़े जाते हैं, जब ये अपनी दीर्घ-निद्रा को समाप्त करके उठ रहे होते हैं। रीछनियां इन्हीं दिनों अपने शावकों को जन्म देती हैं। यह कार्य कई कारणों से बड़ा संकटपूर्ण होता है। एक तो दीर्घनिद्रा के बाद भूखे भालू स्वभावतः ही बहुत भयंकर हो जाते हैं, दूसरे रीछनी को अपने शावकों से विशेष स्नेह होता है। अतः लगभग सभी जगह एक ही उपाय बरता जाता है और वह यह कि दीर्घ-निद्रा के बाद के इन दिनों में शिकारी भालुओं की खोज में निकलते हैं। खोज मिलने पर जनक-प्राणियों को गोली मार कर छोटे छोटे बच्चे पकड़ लिये जाते हैं और उन्हें बकरी के दूध पर पाला जाता है। इसके बाद ये या तो किसी चिड़ियाघर की शोभा बढ़ाते हैं और या गलियों में नाच २ कर मदारियों की जीविका के उपार्जन का साधन बनते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श और यथार्थ

(पृष्ठ २४ का शेष)

सुना, क्रांति कह रही थी, "मुझे तो मटरों का कोई स्वाद ही न मिला। भाभी ने अधपकी तरकारी परोस दी थी।"

गृहस्वामी को क्रांति की बात कुछ अच्छी न लगी। उन्होंने कहा, "तो अब खा लो।"

"भूख कहां है? भाभी रोटियां डालती गईं और मैं भी बातों में खाती चली गई। बहुत खा गई।"

"तुम्हें भी अपनी तरह खुराकिन समझती है," सास ने कहा।

जीवन में प्रथम बार यह नया विशेषण सुन कला दुःख एवं क्षोभ से तिलमिला उठी नहा कर वह चुपचाप कोठे पर चली गई। वह सोचने लगी, यह घृणा, उपेक्षा और प्रतिहिंसा की प्रवृत्ति क्यों, कैसे और कहां से उत्पन्न हुई है? किन्तु किसी अन्तिम निष्कर्ष तक वह न पहुँच सकी। तभी अविनाश ने आकर कहा, "खाना तो तुमने अच्छा बनाया; पर मिर्चें जरा ज्यादा हो गईं। और रोटियां अम्मा के लिए कड़ी हैं।"

कला को अविनाश से—अपने पति से सहानुभूति, न्याय और साथ ही प्रशंसा की पूरी आशा थी। पर उसने देखा, उसकी आलोचना में अन्यायी शासक की अनुशासन-प्रवृत्ति थी। सास की कटु आलोचना तथा ननद की विषाक्त असत्यता से वह इतनी हतप्रभ नहीं हुई थी, जितनी कि अपने पति की आलोचना से। उसका अन्तिम विश्वास टूट चुका था और निराशा के साथ ही साथ पति के ऊपर उसे क्रोध भी आ गया। उसने आवेश में आकर कहा, 'मैं खाऊ हूं, फूहड़ हूँ, मुझे कुछ नहीं आता। अच्छा होता आपने किसी महाराजिन से ही शादी की होती···।"

और अविनाश ने भी क्रुद्ध होकर कहा, "तुम्हारा स्वभाव इतना खराब है? तिल का ताड़ बनाने की क्या बात? क्या तुम्हारी दिन रात प्रशंसा ही की जाय?"

कला पति से भर्त्सना पाकर फफक-फफक कर रो उठी। उसे ऐसा प्रतीत होने लगा, मानो इतने विरोधियों के बीच वह अकेली है, असहाय है, अकिंचन है। अविनाश— उसका सर्वस्व भी आज औरों के कारण उसके साथ अन्याय करने पर तुला है। वह घंटों चुपचाप रोती रही।

कला विचारशील थी और बुद्धिमान भी। उस दिन के संघर्ष पर वह विचार करती रही और उसे याद आ गईं 'मानव-प्रकृति' पुस्तक की ये पंक्तियां—'मनुष्य अपनी प्रशंसा करवाने की इच्छा से दूसरों की निन्दा करता है और अपने दोष छिपाने के लिए दूसरों पर दोषारोपण करता है।' और दूसरे ही दिन से कला ने सास-ननद की प्रशंसा करना प्रारम्भ कर दिया। पर आलोचना के भय से वह स्वयं काम से सदैव बचने का प्रयत्न करती थी। व्यंगों से बचने के लिये शक्ति और इच्छा होते हुए भी वह काम से मुंह छिपा जाती थी। इसी लिए अब कामचोर तथा चापलूस की उपाधि पाकर वह अधिक विचलित न होती थी। पर धीरे-धीरे अवस्था के साथ ही स्वाभिमान तथा शासन-प्रवृत्ति उसमें जागरूक होती गई और उसे छोटी-छोटी ननदों के व्यंग और कोसने असह्य प्रतीत होने लगे।

कला सबको चाय दे आई और बाद में अविनाश को दी। उसने सबको संतुष्ट एवं प्रसन्न करने की इच्छा से ही ऐसा किया था। पर सास ने कहा, "अबू गर्म चाय पीता है, उसे पहिले दिया करो।"

बीच ही में क्रान्ति बोल उठी, "सबको खिलाकर लोग खाते हैं। दादा अपने हैं। हम लोग सब गैर हैं, इस लिए उनको बाद में दी गई है।"

धुले प्याले सब समाप्त हो गये थे। कला ने अपने लिये गिलास में चाय डाल ली। क्रान्ति फिर बोल उठी, "पीछे पीने वालों को भी मज़ा रहता है, खूब दूध बच जाता है।"

और हंस कर छोटा देवर बोल उठा, "एक बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और है। गिलास में चाय पीना भी बुद्धिमानी है। बस ज्यादा नहीं, ऐसे ही तीन-चार कप आते होंगे इस गिलास में!"

और सब खिलखिला कर हंस पड़े। कला ने भी मुस्करा दिया, ठीक उस शराबी की भांति जो मनोव्यथा को भुलाने के लिये शराब के महंगे और कड़ुवे घूंट पीकर कह उठता है—"वाह खूब!" कला झेंप मिटाने, मनोव्यथा छिपाने और व्यंगों से बचने के लिये मुस्करा कर ऊपर चली गई।

अविनाश ने कला को निरंतर व्यथित, उदास और खिन्न रहते देख उसे शहर के एक स्कूल में कार्य करने की अनुमति दे दी। पर इसकी जो प्रतिक्रिया हुई, उसने भी कला को कम व्यथित न किया। ससुर ने ठंडी सांस भर कर कहा, "मेरे जमाने में आदमी कमाते थे और औरतें रानी बन कर खाती थीं। अब चाहे जो हो!"

और ननद-देवरों ने कहा, "मास्टरनी शब्द ही कितनी क्षुद्रता से भरा है और अक्सर छोटे घरों की असहाय औरतें ही मास्टरी करती हैं।"

स्कूल का समय हो गया था। कला खाना खाने बैठी और उधर सास ने कहना शुरू किया "सब तो साहब-मेम हैं, मैं ही नौकरानी हूँ। खा पीकर सब चल्ले होंगे।"

कला उस समय तो चुप रही, पर शाम को सास ने जब उसी प्रकार बड़बड़ाना शुरू किया, तो उसने कहा "अम्मां जी, जो काम हो बताइये, मैं कर दूं।"

"काम क्या आधी रात में होता है? सारी दोपहर गाजर छीली, मटर छीले...। खाने वाले सब हैं!"

"आप मेरे लिये रख दिया करें, शाम को मैं छील दिया करूंगी।"

"बहस में तो तुमसे भगवान भी न जीतेंगे।। पर भाई, मैं तुम्हारी झूठी थाली न मांजूंगी। तुम आगे से सरका कर चल देती हो, मैं झूठी थाली मांजती रहती हूँ।"

"थोड़े से बर्तन और निकाल लिये जायं, तो बड़ा अच्छा हो।"

"बस शिक्षा न दिया करो। और बर्तन क्या खोने को निकाल दूं? यों ही महरी बड़बड़ाती है, जब और बर्तन निकालूंगी और वह छोड़ कर बैठ जायगी, तो मांजोगी बर्तन? अभी तो एक थाली भी नहीं मंजती!"

कला चुपचाप ऊपर चली आई और लेट कर घंटों एकान्त में रोती रही। पर उसे अपने चिरपोषित आदर्श की रक्षा करनी थी। अब भी 'शायद' की क्षीण आलोक-रेखा उसे बल देती थी। दूसरे दिन से जब वह खाना खाकर उठती, एक थाली मांज देती और अक्सर जब उसके रेशमी लकदक, साफ कपड़े सिकुड़ जाते या मिट्टी से खराब हो जाते, तो उन्हें पोंछ-पांछ कर स्कूल चली जाती। किन्तु अचानक एक दिन उसने खाना परोसते वक्त फुसफुसाहट के स्वर में सुना, सास कह रही थी, "क्रान्ति, तुमसे कहा था, आलू उठाकर रख लेती, अब आधे वह परोस लेगी और शाम को बच्चों के लिये न बचेंगे।"

"जाती हूँ," क्रांति ने कहा।

"अब क्या, अब वह आ गई वहां, सब परोस भी लिये होंगे।"

कला को बड़ी आत्मग्लानि हुई। उसने देखा, उसकी स्थिति घर में एक अनाथालय के लड़के या निकम्मे नौकर से भी गई बीती है। उसने परोसा हुआ खाना थाली से निकाल दिया और एक रोटी दाल के साथ निगल कर ऊपर चली गई। मामला और अधिक बिगड़ने के भय से और अविनाश के उग्र और क्रोधी स्वभाव के कारण कला मनोव्यथा छिपाने के लिये मुंह फेर कर बैठ गई, पर अविनाश के लगातार प्रश्न करने और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से कला की मनोव्यथा उसी प्रकार उबल पड़ी, जिस प्रकार धीरे-धीरे सहलाने से भी पका हुआ फोड़ा फूट जाता है। अविनाश सदा की तरह उबल पड़ा, "तुम्हें लाख बार समझाया कि तुम प्राण देकर भी इन्हें खुश नहीं कर सकती और इनकी बातों की भी परवाह न किया करो, पर, तुम इतनी मूर्ख हो कि समझती ही नहीं।"

कला को डांटकर फिर वह मां के पास गया और बोला, "ऐसी नीच और क्षुद्र बातें अब घर में न हों, नहीं तो अच्छा नहीं होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रानीजी ने भर दिया और तुम उबल पड़े। अच्छा न होगा, तो क्या मारोगे हमें ?" गृहस्वामिनी बोली।

"हां, मैं मारूंगा", क्रोध से कांपते हुए अविनाश ने कहा।

"तो तुम अपनी मेमसाहब को लेकर फौरन घर से निकल जाओ। हमें उनके पीछे तुम्हारी गालियां नहीं सुननी।"

नीचे मां-बेटों का संघर्ष चल रहा था और ऊपर हाथ पर मुंह रक्खे कला सोच रही थी—ओफ! मैं तो अपनी मां से कहीं अधिक कलहकारिणी बन गई हूँ!

अविनाश उन लोगों से लड़ झगड़ कर लौटा तो बोला, "अब तुम्हें चैन पड़ गई। तुम्हीं लड़ाई की जड़ हो।"

"मैंने क्या कहा था कि आप लड़ें ? आपने बार-बार कुरेद कुरेद कर बातें पूछीं, फिर दौड़ पड़े लड़ने के लिये। अब सारा दोष मेरे मत्थे मढ़ा जा रहा है", क्रुद्ध स्वर में कला बोली।

कला ने देखा, वह पूर्णतया निर्दोष है, फिर भी चारों ओर से लांछन, उपेक्षा और व्यंग उसी पर लादे जा रहे हैं। आदर्शों की वह शिला, जिस पर वह शैशवकाल से खड़ी थी, आठ वर्षों के नित्यप्रति के संघर्षों और अपवादों से धीरे-धीरे टूटते टूटते क्षीण हो गई थी और उस दिन के आघात से वह चूर्ण चूर्ण हो गई। अब उसमें प्रयोग करने का दम न था। वह निराशा से भर उठी। उसने सोचा, इतना प्रयत्न, कष्ट, त्याग और परिश्रम करने पर भी जब मुझे यही श्रेय मिलना है कि मैं घर फोड़ने वाली, कलहकारिणी, कामचोर और लड़ाका हूँ, तो मैं क्यों कष्ट सहूं ?

आदर्श का नशा उतर चुका था। कला के मन में कुटुम्ब के प्रति घृणा, विद्रोह तथा क्रांति उत्पन्न हो गई थी। उसने सोचा, मां को पत्र लिखूं कि मुझे बुला लो। किन्तु फिर उसने सोचा, इस प्रकार तो केवल मैं ही इस अत्याचार की चक्की में पिसने से बचूंगी। और उसने पैड उठा कर एक लेख लिखना शुरू किया—

सम्मिलित कुटुम्ब भारतीयसमाज का कलंक है, नारी जीवन का अभिशाप है। मानो भारतीय नारियां कुटुम्ब की असह्य यातनाओं के कारण फांसी लगा कर विषपान कर लेती हैं, भी जल कर प्राण दे देती हैं। सम्मिलित कुटुम्ब पर में अन्याय, पीड़ा और कष्ट पग-पग पर समाज खोखला बना रहे हैं। बिचारी भोली-भाली ल कियां झूठे आदर्शों की रक्षा के लिए युवाकाल के स्वर्णिम दिनों में भी नरक भोगती रहती हैं और पीड़ा और व्यथा इच्छा से लिये बस उन्हें आंसू ही उपलब्ध छिपाने के

कला लिखते-लिखते रो पड़ी।

★

वीरांगना

प्यारी बहिनों की भलाई के लिये

जो बहिनें सन्तान की अधिकता अथवा पति स्वार्थपरता अथवा किसी अन्य कारण वश युवा ही बुढ़ापा तथा सौंदर्य-विहीनता का अनुभव अविनाश हों। जो प्रदर (लिकोरिया) के रोग में ग्रस्त की इच्छा जीवन भार रूप अनुभव कर रही हों अथवा अबू गर्भ मासिक-धर्म समय पर न आता हो या कष्ट से आता कमर में दर्द, आंखों के आगे अंधेरा व संतान न होती हो, गर्भपात हो जाता हो तो ऐसी दशा में 'वीरांगना' सेवन करें। वीरांगना आपके स्वास्थ्य और सौन्दर्य की रक्षा करेगी व आपको सचमुच वीरांगना बना देगी। हजारों बहिनें इसका सेवन कर अपनी बीती यौवनावस्था को पुनः प्राप्त कर चुकी हैं। दाम ११) मात्र।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी, हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ह के सौन्दर्य के लिए डबल रोटी

कुमारी इन्दुलेखा

...जकल स्त्रियां चेहरे को सुन्दर बनाने के लिये क्रीमों और पाउडरों पर रुपये व्यर्थ ही खर्च करती हैं। ...हीं जानतीं कि उनके घर में ही सौन्दर्य-प्रसाधन के ऐसी वस्तुएं हैं, जिन पर खर्च तो नाम मात्र होता है, ... लाभ कीमती से कीमती क्रीमों होता है। यहां मैं मुख की ...तिक्रिया हुई, लिये एक अत्यन्त सस्ता तथा अत्यंत लाभदायक नुस्खा बताती हूँ। यह नुस्खा है डबल रोटी को मुंह पर मलना। इसमें हैरान होने ...वा नाक-भौं चढ़ाने की कोई बात नहीं। मुंह की चिपचिपी, खुरदरी तथा पसीने से भरी रहने वाली त्वचा को ठीक करने के लिये डबल रोटी बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई है। इस प्रयोग के लिये एक दिन की बासी दूधिया डबल रोटी बहुत अच्छी रहती है।

चिपचिपी त्वचा के लिये

रात को सोने से पहिले एक प्याले में उबलता हुआ पानी डाल कर पांच मिनट तक मुंह को भाप दीजिये। इसके बाद ...ने जब ठ... रोटी का टुकड़ा लेकर मुंह पर तब तक ...रा "अ... तक कि मुंह की त्वचा बिल्कुल सूख न ...न तक ऐसा करने से चेहरे पर स्वच्छता ...हर ... आ जायेगी।

यह डबल रोटी न केवल त्वचा के ऊपरी दोषों को ही दूर करती है, बल्कि इसके अत्यन्त सूक्ष्म कण रोमकूपों में घुस कर चिपचिपे मल को सुखा देते हैं और चेहरा मखमल जैसा स्वच्छ और मुलायम हो जाता है।

खुरदरेपन के लिये

रात को सोने से पहले अच्छी तरह गर्म किये हुए पानी से लगभग दस मिनट तक मुंह को धोइये। गर्म पानी में चुटकी भर सुहागा मिला लेना चाहिये। मुंह को धोने और मुलायम तौलिये से पोंछने के बाद इस पर एक चम्मच भर दूध की मलाई लगाइये और इस मलाई को डबल रोटी के एक टुकड़े से अच्छी तरह मुंह पर मलिये। एक टुकड़ा टूट जाने पर दूसरा टुकड़ा ले लीजिये। पाच मिनट तक यों मलने के बाद रुई से मुंह को साफ कर लीजिये और सो जाइये। दूसरे दिन प्रातः उठ कर गर्म पानी से मुंह को धोकर तौलिये से पोंछ डालिये।

अधिक पसीने के लिये

रोमकूप अधिक खुले होने से मुंह पर पसीना बहुत आता है, जो सौंदर्य के लिए अच्छा नहीं। और फिर त्वचा भी छिद्रों से भरी हुई जान पड़ती है। दस मिनट तक साबुन की झाग वाला गर्म पानी मुंह पर मलिये। फिर सादा गर्म पानी लेकर दो तीन बार मुंह को धोइये - हर बार पानी का तापमान कम करते हुए। अंतिम बार पानी में EAU-DE-COLOGNE की चन्द बूंदें भी मिला लें। अब बजाये तौलिये के डबल रोटी के टुकड़ों से मुंह को धीरे-धीरे मल कर सुखाइये। इस तरह खुले रोमकूपों का चेहरे पर निशान तक न रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

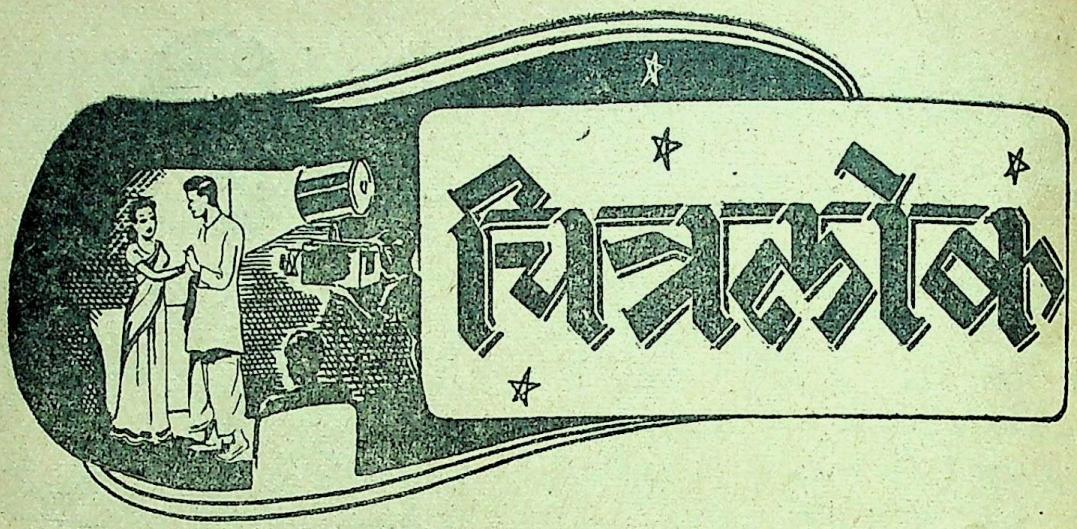

यह भेड़ चाल !

श्री नटराज

हमारे भारतीय फिल्म-निर्माता कोरे लकीर के फकीर हैं। किसी एक निर्माता का कोई चित्र आय की दृष्टि से सफल हो जाता है, तो सब उसी की नकल करने लगते हैं। युद्ध-काल में ऐतिहासिक और पौराणिक चित्र बनाने की परिपाटी चल पड़ी थी। सूत्रपात किया था सोहराब मोदी ने 'पुकार' चित्रसे। बस फिर क्या था ? 'शाहजहां', 'अकबर', 'मुमताज महल', 'बाबर', 'हुमायूं', 'ताजमहल', 'बैरमखां' और 'महाराणा प्रताप' इत्यादि कितने ही चित्र बन गए। किन्तु जो सफलता 'पुकार' को मिली, वह किसी भी चित्र के हिस्से में न आई। उसके बाद पौराणिक चित्रों का नम्बर आया। प्रकाश ने 'भरत मिलाप' बनाया। खूब चला यह चित्र। इसके बाद फिर 'राम राज्य' बनाया। अब तो हमारे निर्माता बेकरार हो उठे। चटपट उन्होंने 'भक्त प्रहलाद', 'भक्त ध्रुव', 'रुक्मिणी स्वयंवर' आदि कितने ही चित्र बना डाले। अन्त में संगीत-प्रधान सामाजिक फिल्मों का नम्बर आया। श्रीगणेश 'रतन' चित्र से हुआ। अब जिस निर्माता को देखिए, 'रतन' की सी कहानी और गीतों की मांग लेखकों से करने लगा। कलाकारों पर भी मुसीबत आई। शोभना समर्थ से कहा गया—सुरैया की तरह अभिनय करो। अमीर कर्नाटकी से कहा गया—शमशाद बेगम की तरह गाओ। मिर्जा मुशर्रफ से चार्ली की नकल करने को कहा गया। ईश्वर लाल से याकूब की तरह खल नायक का अभिनय करने को कहा गया। संगीत दिग्दर्शक खेमचन्द प्रकाश और ज्ञानदत्त परेशान थे कि कैसे नौशाद और गुलामहैदर की तरह इटालियन और अरबी धुनें दें ? हर बात में अनुकरण ही अनुकरण।

तो यह निर्विवाद सत्य है कि कला वही चिरजीवी रहेगी, जिसमें कुछ मौलिकता हो। प्रभात का 'अमृत-मन्थन', 'अमर ज्योति, और 'राम शास्त्री,' न्यू थियेटर्स कृत 'चंडीदास', 'देवदास' और 'विद्यापति', मिनर्वा कृत 'पुकार' और 'सिकन्दर' आदि चित्र आज भी आपको सर्वथा नवीन और कलापूर्ण लगेंगे। नकल कभी असलियत को नहीं पा सकती। भारत में दो तीन ही ऐसे निर्देशक हैं, जो जनता को सर्वथा नई और मौलिक फिल्में देते हैं। इनमें हम श्री शान्ताराम, देवकी बोस और सोहराब मोदी आदि का नाम ले सकते हैं। देवकी बोस के पट्ट-शिष्य श्री विमल राय का 'हमराही' चित्र नूतन पीढ़ी के निर्देशकों को एक चैलेंज था। शान्ताराम का 'कोटनिस एक नई वस्तु

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। देश-भक्ति, सेवा-भाव के प्रतीक एवं दूसरे के दुःख को अपना दुःख समझने वाले एक हुतात्मा भारतीय डाक्टर का जीवन-चरित्र किस खूबी से शान्ताराम ने 'कोटनिस' में पेश किया था!

कितना अच्छा हो यदि हमारे निर्माता इस कठ-मुल्लेपन को छोड़ दें। युद्ध समाप्त होते ही फिल्म-व्यवसाय में जबर्दस्त झटका आया। देश में चारों ओर अशांति फैलने लगी। आजादी का जोश सब की नसों में उबाल खा रहा था। फिर आजादी आई भी। कितने ही निर्माताओं ने देशभक्ति से ओत-प्रोत चित्र बनाने की घोषणायें कीं। कुछ चित्र बने भी। इस श्रेणी के चित्रों में हम 'शहीद' को प्रमुखता देंगे। यह एक देशभक्त युवक की ऐसी प्रेरणादायक जीवन-गाथा है, जिसे मनोरंजन और ऊंची कला से सर्वथा दूर न रख कर एक नये ढंग से प्रस्तुत किया गया है। जनता ने इस चित्र को काफी पसन्द किया है। अब दूसरा चित्र हमारे सामने है—'आजादी की राह पर'। इस चित्र के सभी अभिनेता प्रथम श्रेणी के कलाकार हैं, किन्तु यह इतना लोकप्रिय नहीं हो सका है। इसका कारण यही है कि यह चित्र 'शहीद' की भांति भावनात्मक न होकर केवल एक डाकुमेंट्री सा बन कर रह गया है। इस प्रकार के चित्रों में गजानन जागीरदार द्वारा निर्देशित 'जेल-यात्रा' एक श्रेष्ठ चित्र है।

प्रत्येक कलाकृति तभी अच्छी लगती है, जब वह समय और काल को देख कर बनाई गई हो। अभी भी हमारे निर्माता 'सती सुलोचना', 'राम-बाण' और 'हनुमान' आदि पौराणिक चित्र बना रहे हैं। महा-भारत के बाद रामायण पर कृपा-दृष्टि हुई है। ऐतिहासिक चित्र बनाने का अब कोई नाम भी नहीं लेता। सभी विषयों का श्राद्ध लगभग वे कर चुके हैं। अब फिर रोमांसपूर्ण तथा भोंडे कामोत्तेजक चित्र बनाने पर ये लोग आमादा हो गये हैं। स्वतन्त्र भारत में जनता की रुचि को परिष्कृत करने की अपेक्षा और भी विकृत किया जा रहा है। कभी कभी एक-आध चित्र 'आग' या 'सुहाग रात' की तरह का मौलिक और दर्शनीय निकल आता है, जिसे देख कर कुछ राहत होती है।

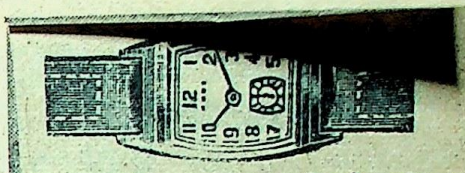

चलन की कुछ खास चुनी हुई घड़ियां सुन्दर
स्वीस की बनी ३ साल की गारन्टी गोल क्रोम
।।) सेन्टर सैकेन्ड २२।।) फलाटशेप ४ ज्वेल
टी साइज २५) फलाटशेप ७ ज्वेल क्रोम
ल्ड गोल्ड ३८) ,, १५ , ,,
ल्ड गोल्ड ५८)

गुलर कर्भ व टोनो (चित्र जैसी)
क्रोम केस ३०) रोल्ड गोल्ड ३५)
क्रोम केस ३७) रोल्ड गोल्ड ४८)
क्रोम केस ५२) रोल्ड गोल्ड ६०)
टाइमपीस १८) सुपीरियर २२) बीग २५)
अतिरिक्त कोई भी तीन घड़ी एक साथ लेने
वाली रिष्टवाच मुफ्त मिलेगी।
ड ऐन्ड को० पो० बो० ११४२४ कलकत्ता।

खबरी

लकुल नई डिजाइन के कलैण्डर जो कि
ख बार महीने सब कुछ बतलाते हैं बहुत
कहीं पर तैयार नहीं हुई खूबसूरती में
देखते ही तड़फ उठेंगे और फौरन ही
म में आने वाली चीज है कि जिसकी आप
ग और पोस्टेज माफ आज ही लिखें साथ
वालों को एक ऐम्बोसिंग मशीन उनके

प्रसिद्ध अभिनेत्री नसीम

परन्तु ऐसे चित्र अपवाद मात्र हैं। विषयों की कमी नहीं, लेखकों की कमी नहीं और न कलाकारों की कमी है। कमी है केवल सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित, मौलिकता के प्रेमी निर्माताओं की। क्या ही अच्छा हो, यदि फिल्मोद्योग का राष्ट्रीयकरण हो जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ड़ी फार्मेसी (हरद्वार) का,

यह शर्बत

बढ़िया पानक है

हमारे भारतीय फिल्म-निर्माता कोरे फकीर हैं। किसी एक निर्माता का आय की दृष्टि से सफल हो जाता है, तो स नकल करने लगते हैं। युद्ध-काल में और पौराणिक चित्र बनाने की परिपाटी थी। सूत्रपात किया था सोहराब मोदी ने 'पुक बस फिर क्या था ? 'शाहजहां', 'अकबर', महल', 'बाबर', 'हुमायूं', 'ताजमहल', 'बैरा 'महाराणा प्रताप' इत्यादि कितने ही चित्र किन्तु जो सफलता 'पुकार' को मिली, वह चित्र के हिस्से में न आई। उसके बाद पौरा का नम्बर आया। प्रकाश ने 'भरत मिलाप

५००) इनाम (गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड)

के धारण करने से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। आप जिसे चाहते आपके साथ चली आवेगी। इससे भाग्योदय, नौकरी, धन की प्राप्ति, रोज़ा में पास होना है। मूल्य २), चाँदी का ३), सोने का १२)। दूसरा कोई यन्त्र साबित करने पर ५००) इनाम।

रजिस्टर्ड ( ) देहली।

दो घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध 'काक्षा तेल रजिस्टर्ड' के सेवन करने से बाल हमेशा के ले होजाते हैं और फिर जीवनभर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुये बालों को रोकता है और उनको लम्बे, घूंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहाँ बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आँखों की रोशनी तेज़ करता है और सिर को ठण्डक पहुँचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैन्सी म्यूट रिस्टवाच जो कि अतिसुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यूगोल्ड) बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती है।

ज़रूरी नोट—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापिस करदी जाती है। तीन शीशी हफ्ते के खरीदार को डाक-खर्च बिल्कुल माफ़ और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड और चार घड़ियां बिल्कुल मुफ्त दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ़ लिखें।

जनरल नॉवल्टी स्टोर्स, (M. H.), दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तान निरोधक औषधि

यदि औरतों की बीमारी या कमजोरी या किसी ऐसी ही वजह से बच्चे पैदा करना नहीं चाहते हों, तो यह 'वन्ध्याकारक दवा' मगाकर केवल ५ दिन सेवन करावें। इससे सन्तान निरोध हो जायगा। दाम ४) डाक खर्च ॥) इस दवा से हजारों औरतें फायदा उठा चुकी हैं। यह दवा औरतों को कोई नुकसान नहीं करती।

रुका हुआ मासिक धर्म

हर प्रकार के बन्द मासिक को फौरन खोलकर साफ करने की दवा ७॥) डा० ॥)

खबरदार! गर्भवती स्त्री इसको इस्तेमाल न करें

पता—

चपलादेवी दवाखाना, चपला भवन,

नं० २५ मथुरा।

२२॥) की सेंटर सेकिण्ड रिष्टवाच मुफ्त

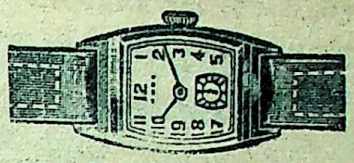

नये चलन की कुछ खास चुनी हुई घड़ियां सुन्दर मजबूत स्वीस की बनी ३ साल की गारन्टी गोल क्रोम केस १८॥) सेन्टर सैकेन्ड २२॥) फलाटशेप ४ ज्वेल २३) छोटी साइज २५) फलाटशेप ७ ज्वेल क्रोम २७) रोल्ड गोल्ड ३८) ,, १५ ,, ,, ३२) रोल्ड गोल्ड ५८)

रेकटेंगुलर कर्व व टोनो (चित्र जैसी)

५ ज्वेल क्रोम केस ३०) रोल्ड गोल्ड ३५)
७ ज्वेल क्रोम केस ३७) रोल्ड गोल्ड ४८)
१५ ज्वेल क्रोम केस ५२) रोल्ड गाल्ड ६०)

एलार्म टाइमपीस १८) सुपीरियर २२) बीग २५) डाक खर्च अतिरिक्त कोई भी तीन घड़ी एक साथ लेने से २२॥) वाली रिष्टवाच मुफ्त मिलेगी।

एच. डेविड ऐन्ड को० पो० बो० ११४२४ कलकत्ता।

एक नई खुशखबरी

हमारे यहां पर पीतल के बढ़िया निकिलदार खूबसूरत बिलकुल नई डिजाइन के कलैण्डर जो कि सैंकड़ों वर्षों तक काम देते हैं कभी खतम ही नहीं होते और तारीख बार महीने सब कुछ बतलाते हैं बहुत ही सुन्दर मजबूत टिकाऊ चीज तैयार की गई है जो कि अभी तक कहीं पर तैयार नहीं हुई खूबसूरती में तो एक अजीब किस्म का तोफा मालूम होता है कि जिसको आप देखते ही तड़फ उठेंगे और फौरन ही दुबारा आर्डर देंगे बड़े-बड़े दफ्तरों में व हर जगह पर हर वक्त काम में आने वाली चीज है कि जिसकी आप को हर वक्त जरूरत रहती है कीमत जिसकी कुल १०) रु० है पैकिंग और पोस्टेज माफ आज ही लिखें साथ में १) रु० ऐडवांस आना जरूरी है ६ कलेण्डर एक साथ मंगाने वालों को एक ऐम्बोशिंग मशीन उनके नाम की साथ में मुफ्त भेजी जायगी और इसके अलावा हमारे यहां पर हर किस्म व हर डिजाइन के बढ़िया मजबूत ताले, ऐम्बोशिंग मशीन, नेमप्लेट, बिल्ले, बिल्ल्च, चपरास, सील, स्टाम्प मुहर, इमारती सामान, वगैरा बहुत सस्ते और अच्छे तैयार होते हैं एक बार जरूर परीक्षा करें इन चीजों के लिए हम को एजेण्टों की जरूरत है लिखें या मिलें।

पता:—ऋषी एण्ड कम्पनी, घनश्याम पुरी, अलीगढ़ यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसको रखने के लिए लाइसेंस की कोई जरूरत नहीं, हर घर में होना चाहिये

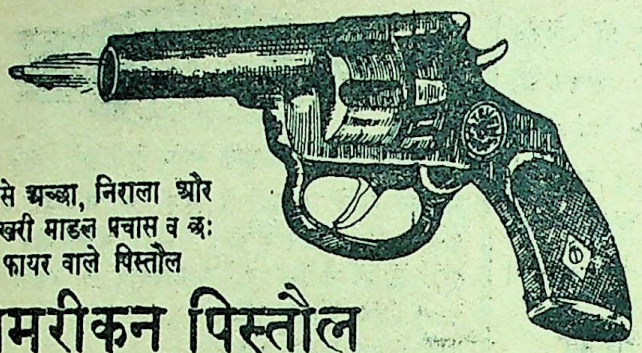

सबसे अच्छा, निराला और आखरी माडल पचास व ८: फायर वाले पिस्तौल

अमरीकन पिस्तौल

जान व माल की रक्षा के लिये इससे अच्छी कोई चीज नहीं। यह माडल असली का मानिंद अब पहली बार आया है। मूल्य ६ फायर वाले शाट के साथ माडल बी नं० १, ४॥≥), माडल बी. नं० २, ५॥≥) स्पैशल माडल ए. नं० २, ७॥≥), मूल्य ५० फायर वाले शाट के साथ नया माडल डी. नं० १, ३॥≥), स्पैशल माडल डी. नं० २, १०॥≥) फालत् शाट १) दर्जन पिस्तौल का तेल ॥), चमड़े की पेटी पांच रुपये डाक खर्च अलग। तीन एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ।

अलाईड ट्रेडर्स लिमिटेड, (m.h) दिल्ली।
ALLIED TRADERS Ltd., (m.h) DELHI

गहरी निद्रा का आनन्द

विज्ञान का आश्चर्यजनक आविष्कार बेल्टेन किसी सोते या जागते हुए को सुधा दीजिये। वह एक घंटे के लिये गहरी नींद में सो जायगा। और हिलाने से भी न जागेगा। मूल्य केवल २) डाकखर्च ॥-) अगर आप घण्टे से पूर्व जगाना चाहते हैं तो रैकशन सुधा दीजिये। मूल्य केवल २) रु०। कम मिकदार या नमूना मुफ्त नहीं मिलसकता। गारण्टी की जाती है कि बेल्टेन या रैकशन किसी किसम की हानि नहीं पहुंचावे आज ही आर्डर दें और अपना पता पूरा और साफ लिखें।

मैक्सो लिबार्टीज़ लिमिटेड[mh] नं० ४५, देहली

मुफ्त! मुफ्त!

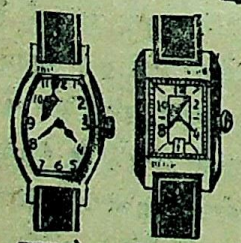

FREE

लन्दन न्यूगोल के जेवरात का मुकाबला करने के लिये हमने डायरी कलेण्डर १९४८ और असली रिस्टवाच गारण्टी १५ साल मुफ्त देने का फैसला किया है यदि आप बिल्कुल मुफ्त लेना चाहते हैं तो आज ही अपना नाम व पूरा पता साफ २ लिख कर भेज दें मगर जल्दी करें वर्ना यह समय बार २ हाथ न आवेगा।

फ्रेंचे गोल्ड सप्लाई कं० [MH] देहली।

फोटो कैमरा मुफ्त

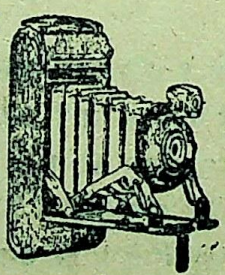

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है शौकिया काम लेने वाले तथा व्यवसायी दोनों ही काम इससे ले सकते हैं, वह कीमती मनोहर कैमरा में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया हमायें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा तमाम फिल्म-कार्ड, कैमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ४॥≥), फैस्ट क्वालिटी नं० ५४५ कीमत ६॥), डी लक्स एक्स्ट्रा, स्पैशल क्वालिटी नं० ५५२ कीमत ६॥), पैकिंग व डाक व्यय १०)

नोट—एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५५० मुफ्त। स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसंद न होने पर कीमत वापिस।

वैस्ट एण्ड ट्रेडर्ज, पोस्ट बक्स नं० १९९ (m.h) दिल्ली।
West End Traders P. B. 199, (m.h) Delhi.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नव प्रकाशन —

कचनार : लेखक— श्री वृन्दावनलाल वर्मा; प्रकाशक—मयूर प्रकाशन, स्वाधीन प्रेस, झांसी; मूल्य ४॥)

उपन्यासकार के रूप में श्री वृन्दावनलाल वर्मा, मुंशी प्रेमचन्द की तरह ही, अपने क्षेत्र में अद्वितीय हैं; बल्कि यों कहना चाहिये कि ऐतिहासिक उपन्यासों के लेखक के रूप में वे सर्वश्रेष्ठ हैं। उनके 'झांसी की रानी', 'गढ़-कुण्डार', 'विराटा की पद्मिनी' नामक ऐतिहासिक उपन्यास उनकी इस अद्वितीयता और सर्वश्रेष्ठता के अमर गौरव चिन्ह हैं। 'कचनार' उसी शृंखला की नई सबल कड़ी है।

मेरी दृष्टि में वर्मा जी साहित्य-जगत् के एक ऐसे सिद्ध योगी हैं, जो अपनी मंत्रपूत लेखनी से इतिहास के विस्मृत कंकाल को छूकर, उसे वास्तविक रंग-रूप और आकृति प्रदान करके पुनरुज्जीवित तो करते ही हैं, साथ ही अमर भी बना देते हैं। वर्मा जी के इस कौशल का जीता-जागता उदाहरण 'कचनार' में मिलता है। भारतीय इतिहास के उस अशांत काल में, जब मुगल साम्राज्य नष्ट हो चुका था और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के रूप में ब्रिटिश दानव को आगे बढ़ता देख टीपू सुलतान, हुल्कर, सिंधिया, भोंसले, पेशवा इत्यादि अपनी-अपनी स्वतन्त्रता बचाने, शक्ति हथियाने और जोड़-तोड़ करने में और पिण्डारे लूटमार करने में लगे थे, रानी के दहेज में दी गई कचनार नाम की दासी धामोनी नामक विंध्यखण्ड के एक छोटे से राज-गोण्डों के गढ़ में प्रवेश करती है और तत्कालीन प्रथा के अनुसार राजा की वासनापूर्ति का अवश साधन न बनकर, साहसबल, प्रतिभा, त्याग और तपस्या से उज्ज्वल नारी-रत्न का पद प्राप्त करती है। कथावस्तु के सौर-मण्डल में वह सूर्य की तरह प्रकाशमान है और राव दलीपसिंह, रानी कलावती, महन्त अचलपुरी, मानसिंह इत्यादि अन्य पात्र ग्रहों की भांति उसके चारों ओर घूमते हैं। कथावस्तु को गढ़ने में लेखक ने इतिहास और परम्परा दोनों का उपयोग किया है। कथावस्तु भवाल

गिल्टियों का आपरेशन भी बेकार

डाक्टर वॉरोनॉफ के गिल्टियों के आपरेशन की प्रसिद्धता की चर्चा भी अब समाप्त हो चुकी है। संसार को अब नहीं तो कल यह मानना पड़ेगा कि जवानी को कायम रखने और उसको लौटा लाने में हिन्दुस्तानी चिकित्सा विधि और उसकी औषधियां न केवल साइन्टिफिक बल्कि प्राकृतिक भी हैं। इन्हीं विधियों और औषधियों से मनुष्य सैकड़ों वर्ष से लाभ उठा रहा है, और अब भी उठा सकता है।

हमदर्द की माजून शबाब आवर हिन्दुस्तानी चिकित्सा विधि की वह गर्व करने योग्य अनुसन्धान है जिससे अब तक लाखों बूढ़े जवानी का, और जवान नौजवानी का आनन्द उठा चुके हैं। यह माजून सारे मर्दाना रोगों और निर्बलता की सफल चिकित्सा है। शरीर के रग-पट्ठों और रोम-रोम में स्वास्थ्य और जवानी की लहर दौड़ा देती है।

मूल्य फी शीशी (२० खुराक) रु० ५)

हमदर्द का प्रसिद्ध माडल लहम हो अ तिशा मूल्य फी बोतल रु० ५)

नोटः—रिसाला "हमदर्द नौजवान" और "हमदर्द शबाब" और हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी के सूचीपत्र मुफ्त मंगाये।

हमदर्द दवाखाना
लेबोरेट्रीज दिल्ली।

हमदर्द

[illegible] रोगों के [illegible] विशेषज्ञों की सिफारिश व उनके और रोगी विशेष के लिये उपयोगी है।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्यासी के प्रसिद्ध काण्ड से भी प्रभावित है। लेखक के कथनानुसार उपन्यास में वर्णित सभी घटनायें सच्ची हैं—केवल कहीं-कहीं समय और स्थान का फेर है। इतिहास, तथ्य और कल्पना का इतना सुन्दर समन्वय अन्यत्र दुर्लभ है। 'कचनार' की कई और भी विशेषतायें हैं। कचनार के चरित्र का निर्माण इतना स्वाभाविक हुआ है कि उपन्यास घटना-प्रधान होते हुए भी चरित्र-प्रधान हो गया है। एक और विशेषता यह है कि उपन्यास का कलेवर विंध्यखण्ड के तत्कालीन जन जीवन और जन-संस्कृति से स्पंदित और अनुप्राणित है। इन सभी विशेषताओं के कारण 'कचनार' हमारे उपन्यास-साहित्य में एक गौरवपूर्ण स्थान पाने के योग्य है।

★

भारत में सशस्त्र क्रांति-चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास (२ खण्ड): लेखक—श्री मन्मथनाथ गुप्त; मुद्रक व प्रकाशक श्री सरयूप्रसाद पाण्डेय 'विशारद', नागरी प्रेस, दारागंज, प्रयाग; मूल्य प्रथम खण्ड ४॥), द्वितीय खण्ड ३॥)

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद आज हम अपने उन ज्ञाताज्ञात देशभक्तों को नहीं भूल सकते, जिन्होंने देश को गुलामी से मुक्त कराने के लिए अहिंसा के व्यावहारिक मार्ग को न अपनाकर, रक्तरंजित क्रांति के नैसर्गिक मार्ग का अपनाया और फांसी के तख्तों पर झूलकर, गोलियों और संगीनों का निशाना बनकर, अपनी अमूल्य जवानियों को जेल की कालकोठरियों में नष्ट करके स्वाधीनता के महायज्ञ में अपने प्राणों की आहुतियां दी थीं। उनकी स्मृति को राष्ट्र के हृदय में अक्षुण्ण बनाये रखने की दृष्टि से आलोच्य पुस्तक एक महत्वपूर्ण प्रकाशन है। इतिहास के रूप में भी यह पुस्तक महत्वपूर्ण है। १८५७ के गदर से लेकर १९४२ की जन-क्रांति और १९४६ के नौसैनिक-विद्रोह तक के सशस्त्र क्रांति के वैयक्तिक तथा सामूहिक प्रयासों की गौरव गाथा इसके दोनों खण्डों में अंकित है। इस गौरव-गाथा की प्रामाणिकता असंदिग्ध है—इसलिए कि इसके लेखक श्री मन्मथनाथ गुप्त भारत के चिर-प्रसिद्ध क्रांतिकारी रह चुके हैं और वे आन्दोलन की बाह्य व आंतरिक प्रवृत्तियों और विचारधाराओं का सच्चा तथा अधिकारपूर्ण ब्योरा देने में पूर्ण रूप से समर्थ हैं। और चूंकि गुप्त जी क्रांतिकारी तथा इतिहासकार होने के साथ-साथ सफल उपन्यासकार भी हैं, इसलिये यह ब्योरा निर्जीव घटनाओं व तथ्यों का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि क्रांतिकारी आन्दोलनों की ही तरह रोमांचकारी व प्रेरणादायक और उपन्यास की तरह रोचक व सजीव है। इस पुस्तक की यही विशेषता इसे पठनीय भी और संग्रहणीय भी बना देती है।

—चिरंजीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and

बिना शुल्क

बाल-पहेली नं० १५

२५ जनवरी १९४९ तक सही उत्तर

आने पर पांच रुपये नकद पुरस्कार

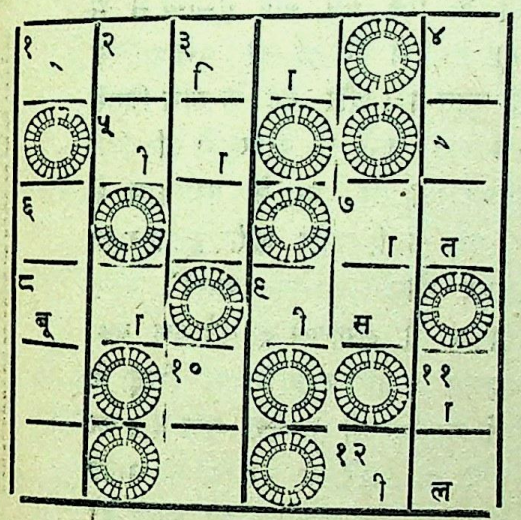

दायें से बायें

१. राजपूतों का यह बाना इतिहास में प्रसिद्ध है। ५. उलटने से वह व्यक्ति बन जाता है, जो अदालत का दरवाजा खटखटाता है। ७. भयंकर शत्रु पर आक्रमण करने के लिए आवश्यक। ८. बच्चों को यह प्यारा लगता है। ९. चार वर्ष के बच्चे को कम से कम यहां तक गिनती आनी चाहिए। १२. राह चलते इस से बचना चाहिये।

ऊपर से नीचे

२. सौ साला ३. इसके आगे 'वर' लगाने से एक महाभयानक वस्तु का नाम बन जाता है। ४. गांव के शांतिप्रिय लोग इससे बहुत परेशान रहते हैं। ६. पुराने जमाने में यह भी डाकिये का काम करता था। ७. घोड़े के लिए आवश्यक। १०. वर्णमाला के दो ऐसे अक्षर जो हिन्दी में बिल्कुल काम नहीं आते। ११. शेर और चूहे की कहानी में इसका जिक्र आता है।

★

बाल-पहेली नं० १४ का पुरस्कार

दिसम्बर १९४८ के 'मनोरंजन' में प्रकाशित 'बाल-पहेली' नं० १४ का सही उत्तर डी० ए० वी० कालिज, अजमेर के ८वीं कक्षा के विद्यार्थी जितेन्द्र-प्रसाद शर्मा ने भेजा है; अतः उन्हें पांच रुपये का पुरस्कार दिया गया है। सही उत्तर निम्नलिखित है—

दायें से बायें—१. धूमकेतु, ५. गौतम, ७. मन, ८. लामा, १०. मूंछ, १२. लआपी।

ऊपर से नीचे— २. कैतकी, ३. तुम, ४. विधान ६. धुनाई, ७. माल, ९. उछल, ११. सी पी।

बाल-पहेली के नियम

१. केवल १४ वर्ष की आयु तक के लड़के-लड़कियां ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। आयु के सम्बन्ध में माता-पिता अथवा स्कूल के अध्यापक का प्रमाण-पत्र भी उत्तर के साथ आना चाहिये।

२. उत्तर 'मनोरंजन' में छपे खाके को काट कर और भर कर भेजना चाहिए। किसी और कागज पर अलग से भेजे गये उत्तर पर विचार नहीं किया जायेगा। एक व्यक्ति एक से अधिक पूर्तियां भी भेज सकता है।

३. खानों को स्याही से सुस्पष्ट लिखे अक्षरों से भरना चाहिये। कटे-छंटे या पैंसिल आदि से लिखे अक्षर को सही नहीं माना जायेगा।

४. उत्तर २५ जनवरी १९४९ को शाम तक 'मनोरंजन' कार्यालय, श्री श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली में पहुंच जाना चाहिये।

५. सम्पादक का निर्णय अन्तिम होगा।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनों

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं, और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिकधर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी। मुझे मासिक धर्म खुल कर न आता था। अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन कमजोर होती जा रही थी, चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की मशहूर औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से भी रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महात्मा हमारे दरवाजे पर भिक्षा के लिये आये। मैं दरवाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रंग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पतिदेव को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुःखी बहिनों की भलाई के लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखें। मैं उनको अपने हाथ से औषधि बना कर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवाई तैयार करने पर २॥।=) दो रु० चौदह आने असल लागत खर्च होता है और महसूल डाक अलग है।

* जरूरी सूचना *

मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है। इस लिये कोई बहन मुझे किसी रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, (३०) बुडलाडा, जिला हिसार पंजाब।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोत्तम लिवर, कभी न बन्द होने वाली ऊंचे दर्जे की घड़ियां
सस्ती कीमतों पर ताजा माल आ गया है

ऊंचे दर्जे की ज्यूल्ड, सर्वोत्तम लिवर चाल, बहुत आकर्षक और अप-टू डेट नमूनों की रिस्ट वाच (घड़ियां) प्रत्येक घड़ी की ५ वर्ष की गारंटी है और इसके साथ बहुत अच्छा प्लास्टिक स्ट्रैप। पैकिंग और डाक खर्च मुफ्त।

५। इंच स्त्रियों की विशेष घड़ियें

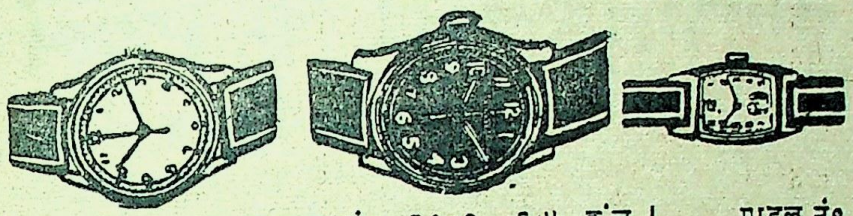

माडल नं० २१०८, १०॥ इंच
क्रोमियम केस ... १५) रु०
क्रोमियम केस ७ ज्वेल ३२) रु०
सैन्टर सैकिंड ... २५) रु०
रोल्ड गोल्ड (३० वर्ष गारंटी, ४६ रु०
रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल ५८) रु०
शौक और वाटर प्रूफ ८७) रु०

माडल नं० २१०६, ६॥ इंच
चमकदार क्रोमियम केस ३६) रु०
चमकदार क्रोमियम १५ ज्वेल ५८) रु०
रोल्ड गोल्ड (१० वर्ष गारंटी) ५२) रु०
रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल ७८) रु०

माडल नं० १५०५
चमकदार क्रोमियम केस ४८) रु०
चमकदार क्रोमियम १५ ज्वेल ६५) रु०
रोल्डगोल्ड (१० वर्ष गारंटी) ५२) रु०
रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल ८५) रु०

हमारी घड़ियों के बारे में ताजा राय—श्री मि० सी० एल० गुप्ता आर० आई० ए० एफ० कैन्टीन अम्बाला कैंट लिखते हैं—जो घड़ी आपने मुझे १६४१ में भेजी थी भली प्रकार काम कर रही थी, पिछले साल यात्रा में गुम हो गई अब से मैं बिना घड़ी के हूँ क्योंकि मैं किसी और जगह से खरीदना नहीं चाहता। आपके नये माल के आने पर मेरे पहले आर्डर के अनुसार कृपया कम से कम दो घड़ियां मुझे भेज दें। तिथि २४-६-४८

स्टाक कम है। शीघ्र आर्डर भेजें ताकि निराश न होना पड़े।

एफ० जी० सप्लाई कम्पनी, ६, डिपटी गंज सदर, बाजार दिल्ली।

रेशमी कपड़ा १) गज

रेशमी कपड़ा एक रुपया गज आपको किसी जगह नहीं मिल सकता। परन्तु हम आपको बाजार से बहुत ही सस्ते भाव पर दे सकते हैं। जो कि आप को कोड़ियों के मूल्य पड़ेगा। अमरीकन सुफै सिलकी यानी पूरी छतरी १२ कली वाला (जिसमें पूरी १२ कली हैं) बगैर जोड़ के नये रेशमी डोरी के साथ कीमत १२) रु० फी पराशूट (पूरी छतरी) पैकिंग फ्री महसूल डाक १॥) । इकट्ठे तीन मंगवाने पर महसूल डाक ३॥) रु० आवेगा। आप बतौर नमूना मंगाकर थोक का आर्डर देकर लाभ उठावें। यह माल दूसरे रेशमी सिलकी कपड़ों की निस्बत निहायत उम्दा और रियायती है। पहले इसकी कीमत बहुत ज्यादा थी मगर अब स्टाक को खतम करने के लिये यह रियायती थोक का भाव है। तीन पैराशूट महसूल डाक समेत आपको घर में ३६॥) रु० में पड़ेंगे। जरूर मंगवायें। शीघ्र मंगवा लें। नहीं तो स्टाक खत्म होने पर पछताना पड़ेगा। क्योंकि और माल अमरीका से नहीं आ रहा। आर्डर देते समय अपना नाम पूरा पता साफ-साफ लिखें।

इस्टर्न इम्पोर्ट्स नं० ४५ देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांझ स्त्रियों के लिये

मेरी शादी हुए पन्द्रह वर्ष बीत चुके थे। इस समय के बीच मैंने सैकड़ों इलाज कराये लेकिन कोई सन्तान पैदा न हुई। सौभाग्य वश मुझे एक वृद्ध महा पुरुष से निम्न लिखित नुस्खा प्राप्त हुआ। मैंने उसे बना कर सेवन किया। ईश्वर की कृपा से नौ मास बाद मेरी गोद में बालक खेलने लगा। इसके पश्चात् मैंने जिस सन्तान हीन बहन को इसका सेवन कराया उसी की आशा पूरी हुई। अब मैं इस नुस्खे को सूची-पत्र द्वारा प्रकाशित कर रही हूं ताकि मेरी निराश बहनों की आशा पूर्ण हो।

औषधि तन्त्र ये हैं—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नैपाल गवर्नमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारी दक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम से कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कटियारी सफेद की जड़ (यानी सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घण्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें। इसके सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति —गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातःकाल और सायंकाल एक एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट — औषधि तन्त्र के अंदर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अंदर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

मेरी सन्तान हीन बहिनों,

आप इसे बे गुण औषधि न समझें। यदि आप बच्चे की माता बनना चाहती हैं, तो इसे बनाकर जरूर सेवन करें। मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि इसके सेवन से आपकी अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। यदि कोई बहन इस औषधि को मेरे हाथ से ही बनवाना चाहें तो पत्र द्वारा सूचित करें। मैं उन्हें औषधि तैयार करके भेज दूंगी। एक बहिन की औषधि पर पांच रुपये बारह आने। दो बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने और तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आना खर्च आते हैं। महसूल डाक वगैरह बारह आने इससे अलग है।

नोट — जिस बहिन को मेरे पर विश्वास न हो वो मुझे दवा के लिए हरगिज न लिखें।

रतनबाई जैन (४४) सदर बाजार थाना रोड, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड

आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वाधान में

दैनिक वीर अर्जुन
मनोरंजन मासिक

सचित्र वीर अर्जुन साप्ताहिक
विजय पुस्तक भण्डार

अर्जुन प्रेस

सचालित हो रहे हैं। यह प्रकाशन सस्था सुदृढ आर्थिक स्थिति की है।

अधिकृत पूंजी ५,००,००० **प्रस्तुत पूंजी २,००,०००**

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४	१० प्रतिशत
सन् १९४५	१० प्रतिशत
सन् १९४६	१५ प्रतिशत

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को १० प्रतिशत लाभ दिया है!

आप जानते हैं ?

* इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्ही लोगों द्वार होता है।
* 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सफल बनाने में लगी रही हैं।

आपभी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

* इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
* राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
* अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
* आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदनपत्र की मांग कीजिये।

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

प्रिंटर पब्लिशर श्री दुर्गाप्रसाद शर्मा द्वारा, अर्जुन प्रेस देहली से छप कर प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज० नं० — डी० १७३

लम्बी यात्राओं में

डनलप
जायण्ट

DUNLOP
TRADE MARK

DE 303

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

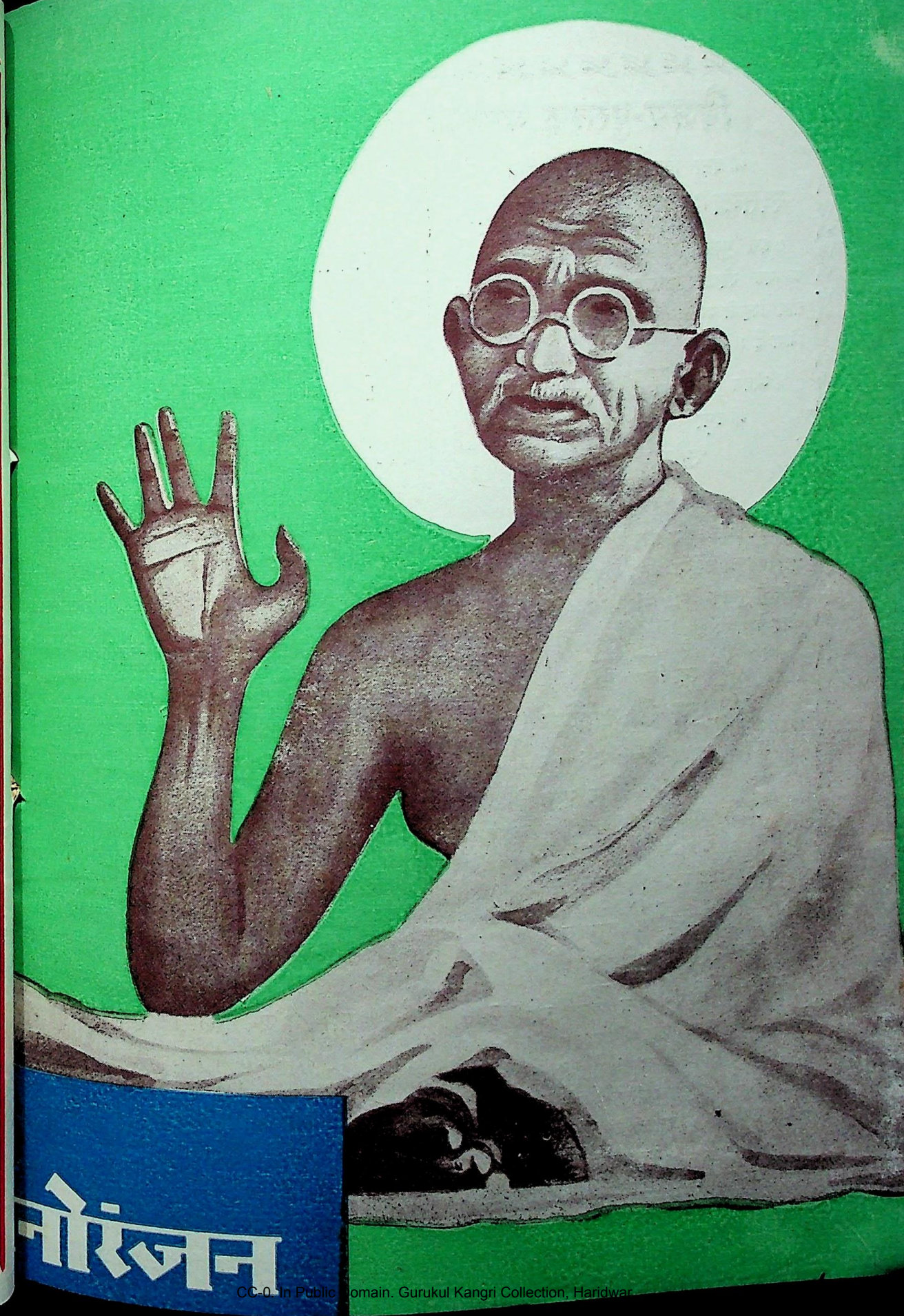

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय-पुस्तक भण्डार की सामयिक पुस्तकें

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है। मूल्य १॥) रुपया।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय ललकार एक ही साथ हैं पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य हैं। मूल्य १) डाकव्यय ।-)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झाँकियाँ'

प्रथम खण्ड—दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन, मूल्य ॥)

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला? मूल्य ॥)

दोनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य ॥।)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी।

मूल्य २)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है

अपितु

जनता के उद्‌बोधन का मार्ग है।

इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)।

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा।

मूल्य १।) डाक व्यय ।=)

प्राप्ति स्थान—विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियों
के लिये अतिरिक्त
शक्ति

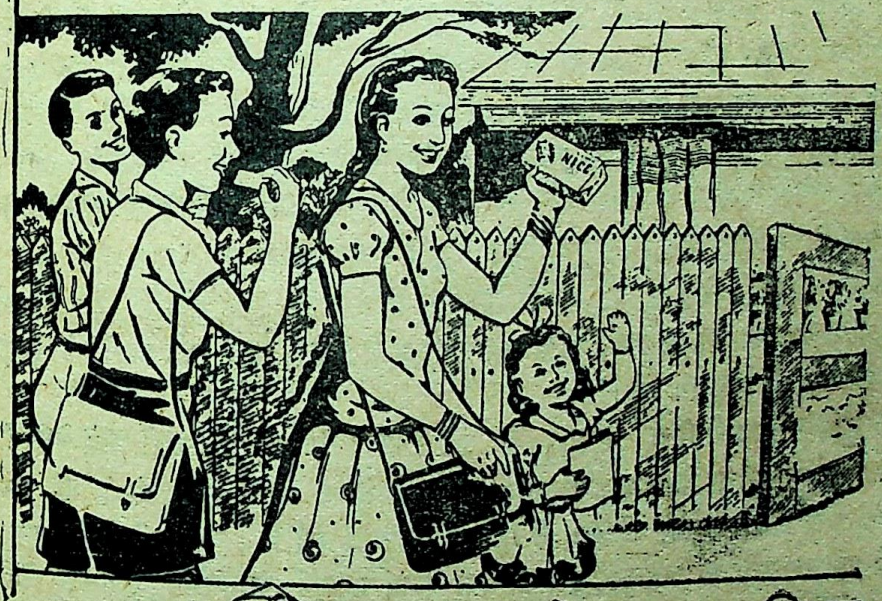

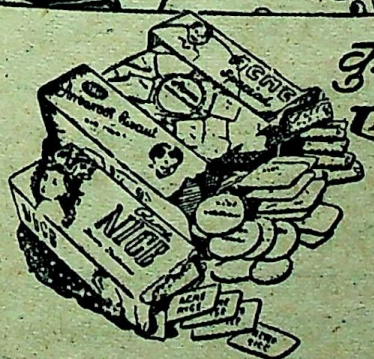

कुरकुरे तथा स्वादिष्ट
एकमे बिस्कुट

Acme
BISCUITS

एकमे स्पेशल, नाइस, मरी, कस्टर्ड क्रीम, क्रीमक्रैकर,
मालटिस, पिटबरी फिंगरक्रीम, जिंजरनट,
अरारोटवफर, थिनअरारोट, किन्डरगार्टन

मोदी बिस्कुट कम्पनी मोदीनगर, यू. पी.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

T. B. टी० बी० 'तपेदिक' तथा पुराने ज्वर के रोगियो-ध्यान पूर्वक पढ़ो!

भारतीय ऋषियों की खोज का अद्भुत चमत्कार (JABRI) एक आश्चर्य जनक घटना

मेरी स्त्री अनेक दिनों से बीमार थी, आखिर डाक्टरों ने 'तपेदिक' (टी० बी०) रोग बतलाया। 'तपेदिक' का नाम सुनते ही होश हवाश उड़ गये। अन्त में डाक्टरों ने एक्सरे करके दोनों फेफड़े खराब (गल) की बात कह कर मुझे आदेश दिया कि रोगी १०-१५ दिन का मेहमान है। इसको अस्पताल से ले जाओ किसी अलग कमरे में रख दो। कोई इसके पास न जावे। इसके थूक आदि से बचाव रखो लाचार हो कर उसे घर ले आया।

फिर क्या हुआ—अखबार 'मिलाप' में आपकी दवा 'जबरी' का विज्ञापन देखा। दिल ने कहा, जब सैकड़ों रुपया हकीम, डाक्टरों की भेंट चढ़ा चुका हूं, यह भी खर्च करके देख लूं। रोगी ने कहा कि जब डाक्टरों ने यह कह दिया है कि दोनों फेफड़े खराब हो चुके हैं और मैं १०-१५ दिन की मेहमान हूं तो व्यर्थ क्यों खर्च करते हो, मुझे अब परमात्मा पर छोड़ दो। परन्तु दिल ने न माना और तुरन्त 'जबरी' नं० १ का आर्डर डाला। पांचवें दिन पार्सल पहुंच गया और विधि के अनुसार औषधि शुरू करा दी गई।

फिर क्या हुआ—वही आश्चर्यजनक चमत्कार। जिस रोगी के बारे में डाक्टरों ने मौत का फतवा दिया था और ६ मास बराबर इलाज करने पर भी बुखार न गया था, शक्तिशाली औषधि 'जबरी' ने दस दिन में ही अपना चमत्कार दिखा दिया, बुखार बिल्कुल जाता रहा। शरीर में रक्त का संचार होने लगा और दिल पहले की सी उमंग पैदा हो गई। दिल में पूर्ण रूप से विश्वास हो गया कि जिस दवा ने इतनी जल्दी ऐसा चमत्कार दिखाया है क्यों न स्त्री को एक बार वहीं लेजा कर पूर्णरूप से परीक्षा करा कर आगे को इलाज का प्रबन्ध किया जावे। मेरी स्त्री की भी वही राय हुई।

फिर क्या हुआ—जिस रोगी में चारपाई से उठने की शक्ति न थी हजारों मील रेल की यात्रा कर 'जगाधरी' आ गई जहां पूर्ण परीक्षा के बाद उत्तम रूप से औषधियों का प्रबन्ध हुआ, रोगी की तन्दुरुस्ती दिन पर दिन बदलती गई और अब परमात्मा की कृपा से बिल्कुल ठीक हो गई है। यह ऋषियों के रक्त से सींचे आयुर्वेद शास्त्र की पूर्ण सफलता का चमत्कार है। उपरोक्त घटना सरदार कर्त्तारसिंह इण्डियन मिलिटरी अस्पताल, कराची से घटी।

पाठक वृन्द—यह एक नहीं और भी देखिये! (१) लाला काशीप्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहबाद) (२) बा० मुन्नालाल स्टोरकीपर सिम्बाली शूगर मिल पो० बक्सर (मेरठ) (३) बा० रामसिंह घर नं० ६१ रीठा मन्दिर (देहरादून) (४) श्री तोसलहूसेन रईस मो० मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जिला फैजाबाद आदि सैकड़ों सज्जनों का कहना है कि शक्तिशाली औषधि 'जबरी' दवा नहीं बल्कि यथार्थ में रोगी को काल के गाल से बचाने वाली दिव्य शक्ति' है। सैंकड़ों हकीम, वैद्य, डाक्टर अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं। अनेक आर्डर तार से आर्डर देते हैं। तार के लिये थोड़ा सा पता 'जबरी' (जगाधरी) (Jabri Jagadhri) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार है—'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ाने के लिए, हीरे मोती अभरक आदि मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु० नमूना १० दिन के लिये २०) 'जबरी' नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० सूल अदि अलग है। आर्डर में अखबार का हवाला तथा नं० १ या दो साफ लिखें। तुरन्त आर्डर दे कर की जान बचावें। १० दिन ही में अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिये मनिआर्डर से भेजें, जिससे तुरन्त भेज दें।

पता रायसाहब के० एल० शर्मा एंड सन्स, रईस एंड बैंकर्स [M] "जगाधरी" [पूर्वी पंजाब]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

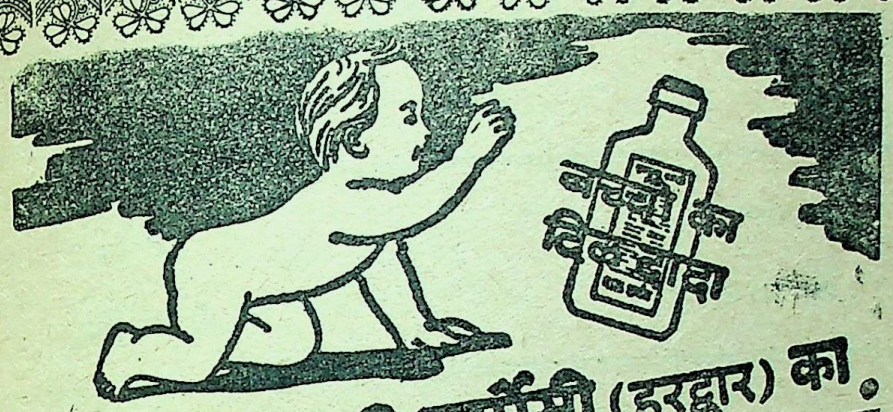

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी (हरद्वार) का

बाल शर्बत

बढ़िया पानक है

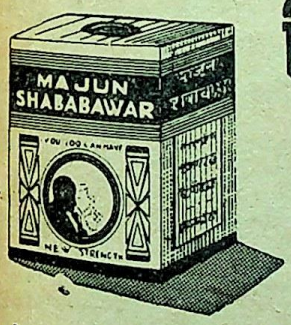

गिल्टियों का आपरेशन भी बेकार

डाक्टर वॉरोनॉफ के गिल्टियों के आपरेशन की प्रसिद्धता की चर्चा भी अब समाप्त हो चुकी है। संसार को अब नहीं तो कल यह मानना पड़ेगा कि जवानी को कायम रखने और उसको लौटा लाने में हिन्दुस्तानी चिकित्सा विधि और उसकी औषधियां न केवल साइन्टिफिक बल्कि प्राकृतिक भी हैं। इन्हीं विधियों और औषधियों से मनुष्य सैकड़ों वर्ष से लाभ उठा रहा है, और अब भी उठा सकता है।

हमदर्द की माजून शबाब आबर हिन्दुस्तानी चिकित्सा विधि की वह गर्व करने योग्य अनुसन्धान है जिससे अब तक लाखों बूढ़े जवानी का, और जवान नौजवानी का आनन्द उठा चुके हैं। यह माजून सारे मर्दाना रोगों और निर्बलता की सफल चिकित्सा है। शरीर के रग-पट्ठों और रोम-रोम में स्वास्थ्य और जवानी की लहर दौड़ा देती है।

मूल्य फी शीशी (२० खुराक) रु० ५)

हमदर्द का प्रसिद्ध माडल लहम दो आतिशा मूल्य फी बोतल रु० ५)

नोटः—रिसाला "हमदर्द नौजवान" और "हमदर्द शबाब" और हिन्दी उर्दू और अंग्रेजी के सूचीपत्र मुफ्त मंगाये।

हमदर्द दवाखाना

लेबोरेट्रीज दिल्ली।

हमदर्द

जिसका लगभग सारी आब देसी चिकित्साओं की रिसर्च व उन्नति और कौमी शिक्षा के लिये समर्पित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय वर्ष
संख्या ५

मनोरंजन

दिल्ली

फरवरी
१९४९

व्यवस्थापक
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

सम्पादक
श्री चिरंजीत

इस अंक में

नाटक

अमर है आलोक ! — श्री गिरिजाकुमार माथुर
समय का खून — श्री नरेन्द्रनाथ सेठ

कहानी

दहकते कोयले — श्री चन्द्रकिरण सौनरेक्सा
तृप्ति — श्रीराम शर्मा 'राम'
दीपक का देवता — श्री ऐल्बर्ट डारिंगटन

लेख

कांग्रेस में वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास (२) — श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति
क्या आप महत्त्वाकांक्षी हैं ? — श्री निजेश
संसार के कुछ विचित्र अखबार — श्री हरिदत्त शर्मा

कविता

गीत — श्री सत्यभूषण योगी

विशेष-स्तम्भ

रेडियो ४३
सलोनी-दुनिया ४६
फुलझड़ियां ५७
हास-परिहास
चित्रलोक
बाल-मनोरंजन

मूल्य आठ आना

वार्षिक मूल्य ५॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

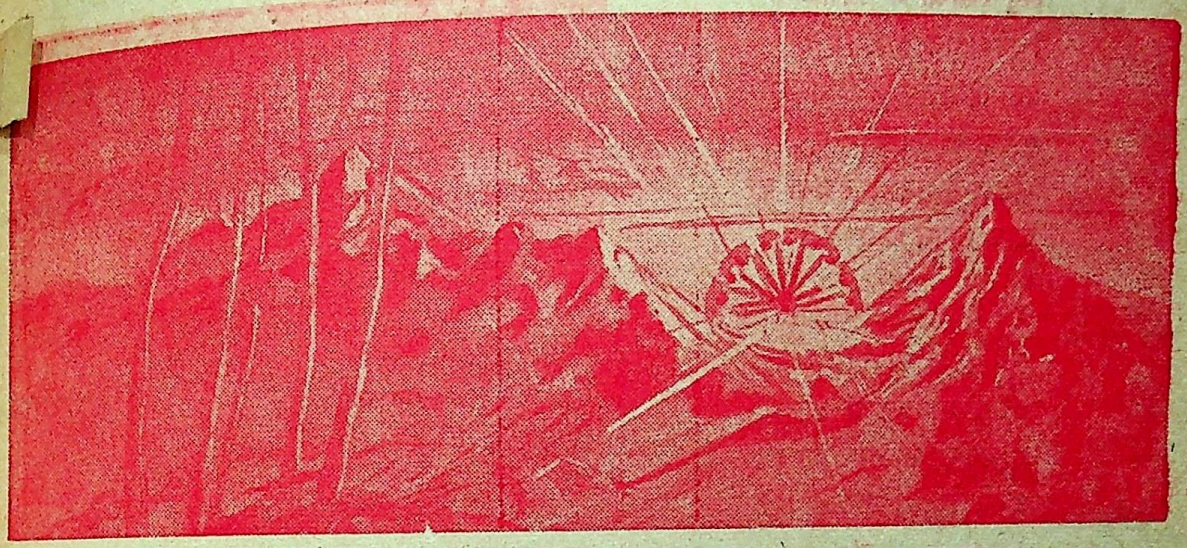

स्वतंत्रता-दिवस पर लिखित
एक कल्पना-चित्र।

अमर हे आलोक!

लेखक—
श्री गिरिजाकुमार माथुर

गायक — आज उगा रंगों का सूरज
धरा बनी आलोक-कली,
सांझ चम्पई खिली
नए आकाश-दीप-सी रात बली।
नगर-ग्राम रंगीन हो गए,
हुईं दिशाएं चित्रमयी,
युगदिन की यह गूंज
युगों के कोलाहल से पार चली।

गायिका— इस नवीन निर्माण-पंथ का
एक चरण है बीत गया,
एक बरस पहिले था तम पर
नया उजेला जीत गया,
अमर आग ले दीप जला जो
पड़ा न मन्द हवाओं से,
इसकी लौ में भस्मसात् हो
हम से दूर अतीत गया।

गायक — इस महान् युग की गाथा
हम आज सुनाने आए हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लघु रेखाओं में विराट के
चित्र बांधने आए हैं।
पड़ीं हिमालय के आंगन में
सदियों की जो आभाएं,
खँडहर-से उन इतिहासों को
आज जगाने आए हैं।

गायिका— इस धरती पर अमरलोक का
युग पहिले अवतार हुआ,
इसकी मानवता में आकर
ईश्वर भी साकार हुआ।
इसने देखे सोने के दिन
हीरे-सी उजली रातें,
इसके पद-चिन्हों पर चलकर
विकसित था संसार हुआ।

गायक — इस मिट्टी का अमर रूप
था खिचा किरन-सा सदियों में,
वही ज्योति जो भरी हुई
पर्वत, मैदानों, नदियों में।
बार बार अँधयारे आए,
बार बार यह ज्योति उठी,
इस अपार को बांध न पाया
कोई भी हथकड़ियों में।

गायिका— लो देखो, वह समय-यवनिका
ऊपर उठती जाती है,
बीते वर्षों के कुहरे से
कथा निकल कर आती है।
राम, कृष्ण, गौतम, गांधी
सम्राट्-सन्त उठते आते,
जिनके तप में रची धरा
जीवन के पर्व मनाती है।
(ध्वनि-लोप)

★

(एक अनन्त पथ के ऊपर चलते हुए
युगपुरुष और मुक्तिप्रिया आते हैं।)

युगपुरुष—मुक्तिप्रिया, चरण से चरण मिलाकर

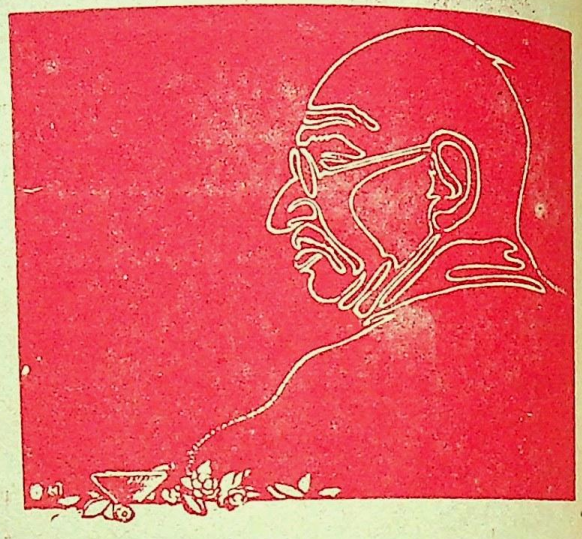

हम कितनी ही मंजिलें पार कर आए हैं। तुम और मैं, तथा इस विस्तृत गगन में प्रतिध्वनित होने वाली हमारी ही कोटि-कोटि पग-ध्वनियां। झंझा डूबी रातें और बादल भरे दिन, और फिर क्रांति के तूफानी मंथन से तुम्हारा आविर्भाव—जैसे सीता ने जन्म लिया था, या सिंधु-मंथन से महालक्ष्मी ने। क्यों बताओ, सीता या महालक्ष्मी. दोनों में से कौन ?

मुक्तिप्रिया—(मौन रहती है)

युग०—बोलो न ! बताओ, कौन ?

मुक्ति—मैं क्या जानूं।

युग०—मुक्तिप्रिया, आज तुम कुछ उन्मन हो। क्या कारण है ? दोनों तो तुम हो ही—यों कहो, दोनों होकर भी पृथक्। सीता की पवित्रता तथा जन-जन का कल्याण, और महालक्ष्मी का सुख, समृद्धि, वैभव सभी कुछ तुम में है। तुम्हारे बिना यह विश्व-जीवन अनन्त लौह शृंखलाओं में जकड़ा हुआ पशुवत् मृतप्राय था। स्मरण है वह कालरात्रि ?

मुक्ति०—सुधि मत दिलाओ, युगदेव ! उसका स्मरण मात्र मुझे कम्पित कर देता है। वह तिमिर-छन्न घड़ी और तूफानी धुन्ध में आततायी के बढ़ते हुए काले हाथ ! (निश्वास लेती है) किन्तु वह सफल न हो सका। संघर्ष हुआ, धरा रक्तमय हो गई, आकाश के पर्दे फट गए, हरे-भरे खेत ऊसर बन गए और''' और''''''!

युग०—मत सोचो, मुक्तिप्रिया ! आज तो हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठण्डी पुरवाई की भांति ही उन्मुक्त हैं। उज्ज्वल नीला-काश के अनन्त छोर हमारे हैं, यह सोने की फसलों से भरी धरती हमारी है। आज इस पर दूर तक मंगल पुष्पराशि खिलखिला रही है। इन्द्र और वरुण की असीम कृपा है। ऋतुएं यहां अपनी सम्पत्ति निर्बाध बिखेर जाती हैं। मिट्टी में स्वर्ण और सागर में मुक्ता-फल भरे हुए हैं। यह सब कुछ हमारा है, मुक्तिप्रिया! जानती हो किसके कारण?

मुक्ति०—नहीं जानती, मेरे सम्राट्!

युग०—तुम्हारे कारण, मुक्ति, केवल तुम्हारे कारण। तुम उस दीपक की लौ हो, जिसके बुझ जाने से धरती श्मशान हो जाती है। तुम्हें जिसने पहिचाना है, वह धन्य है!

मुक्ति०—मेरे कारण? नहीं मेरे कारण नहीं, अमरपुरुष!

युग०—(हंसकर) फिर किसके कारण?

मुक्ति०—पहेली है, बूझो।

युग०—मेरे निकट तो केवल तुम्हीं उसका कारण हो।

मुक्ति०—नहीं, मेरे आने से पहिले···तुम्हारी···।

युग०—मेरी? मेरी कौन?

मुक्ति० तुम्हारी प्रिया, और कौन।

युग०—(साश्चर्य) प्रिया? कौन प्रिया?

मुक्ति०—क्रांति!

युग०—(मुक्त हास्य से) क्रांति! वह तो कर्म-क्षेत्र की निरन्तर जलती भावना थी।

(इसी समय दूर से संगीत-ध्वनि आती है)

मुक्ति०—किन्तु वह साकार भी थी।

युग०—कैसे?

मुक्ति०—वह सुनो, सुनहली-पकी फसलों से रंगे ग्राम गीत की वह गूंज। इस धरती के हरे-भरे गांवों और उनके जन-जीवन में ऋतु-रंग की भांति क्रांति बसी है। चलो युगदेव, उन ऋतु पर्वों के दर्शन करें और सुनें जीवन की ऊष्मा से भरे वे गीत·····

(कृषकों का समवेत गान निकट होता है।)

गीत

पीले हरे खेतों में
सोने-सी धूल,
धूप रचे नए मौर,
चांद रचे फूल,
हल्का-सा जीवन हवा-सा उड़ा जाय रे!
हवा-सा उड़ा जाए!

ठण्डी हवा में घिरे
रस की बदरिया,
धरती लहराए
जैसे धानी चुनरिया,
फूलों के रंग तन-मन में समाए रे!
तन-मन में समाए!
हल्का-सा जीवन हवा-सा उड़ा जाय रे!
हवा-सा उड़ा जाए!

(धीरे-धीरे ध्वनि लोप होता है। केवल पृष्ठ-भूमि में हल्का उदास संगीत चलता रहता है।)

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाचक— किन्तु यह सुख और शांति यहां अधिक दिन न रह सकी। सहसा इस लहराती हुई फूलों-छाई धरती पर दुःख का अन्धकार छा गया। कष्टों का भयानक तूफानी सागर सीमाएं तोड़कर गरजने लगा। भाग्य-सूर्य अस्त हो गया। अत्याचार की रात में वनस्पतियां तक नीली पड़कर निर्जीव हो गईं। दासता की शृंखलाओं में यहां की मानवता बंदिनी हो गई। हमारा ग्राम-जीवन नष्ट हो गया। रोग, शोक, दारिद्र्य उन खेतों में उगने लगे, जिनसे आनन्द और सुख-वैभव का स्वर्ण-शस्य उत्पन्न होता है। झंझा की इस काली घड़ी में युगदेवता और मुक्तिप्रिया विदेशियों के बन्दी बने और इस ज्योति के देश में तिमिर का साम्राज्य स्थापित हुआ—उजले मैदानों, ग्राम-नगर-घरों पर मंडराने वाला भयानक तिमिर!

(करुण संगीत ऊंचा उठता है।)

गायक — अब आंसू डूबे दिन आए
रातें घिर आईं बादल-सी,
जलकर सूखी राख हो गई
धरती सोने के पाटल-सी।
अन्धकार के नाग समाए
उजले उजले मैदानों में,
धरा-चांदनी के दीपक पर
पीड़ा घिर आई काजल-सी।

गायिका— पश्चिम का तूफान विदेशी
छाया उजले अम्बर में,
सात सागरों को बन्दी कर
उतरा नगर, ग्राम, घर में।
आंखों तक की ज्योति बुझ गई
मन्द हुई जीवन की लौ,
मानवता दब गई विवश
इस महादेश के खँडहर में।

गायक — तन मन बन्दी हुए
पड़ गए घोर दासता के बन्धन,
इधर भयानक अट्टहास
था इधर करोड़ों का क्रन्दन।
भरने लगा घड़ा पापों का
चला दमन का चक्र कठिन,
सांसें पथरा गईं
ओठ पर आ न सका मन का कम्पन।

गायिका — इन्द्रधनुष-सी धरती रोई
बिना आंसुओं के चुपचाप,
अग्निपूत सीता-सी मिट्टी
पाने लगी महा संताप।
गहरी हुई तिमिर की छाया
गहरा हुआ अंध तूफान,
हिली हिमालय की भी आत्मा
देख दासता का अभिशाप।

गायक — इन दो सदियों की गाथा
है अनगिन अत्याचारों की,
बहे हुए निर्दोष रक्त की
खिंची हुई तलवारों की।
तब फिर धीरे-धीरे युग के
अमर अग्नि-प्राण जागे,
पीली पड़ने लगी चमक
उन शोषण के हथियारों की।

गायिका— रक्त-मथन सीमा पर पहुँचा
क्रांति-ज्वार तब उतराया,
तम के पर्दे चीर
चिरंतन मानव बन गांधी आया।
टूटीं हथकड़ियां, पशुता का
सिंहासन भी थर्राया,
जन-जन की जय-ध्वनि गूँजी,
आलोक अमर फिर से छाया!

(स्वतन्त्र भारत के जयनाद के साथ आनन्द-संगीत ऊँचा होकर धीरे-धीरे लुप्त होता है।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

दहकते शोले

श्रीमती चन्द्रकिरण सौनरेक्सा

★

दतौन करते हुए रामचरन ने माधो को देखते ही आवाज लगाई, "माधो हो! छूट आये भइया?"

"हां दादा, पालागन!" माधो ने तेजी से गली में घुसते हुए कहा, "मौहल्ले में सब राजी-खुशी हैं न?"

और उसका स्वर सुनते न सुनते गली के दो चार घरों की किवाड़ें फटाफट खुल गईं—रग्घू मिस्तरी, बसन्ता झीमर, सुखदेई मालिन सभी अपना-अपना काम छोड़ कर गली में आ गये। बात यह थी कि माधो पूरे एक महीने की जेल काट कर आज सवेरे ही छूटा था।

माधो ने न चोरी की थी, न डाका डाला था, तो भी उसे जेल जाना पड़ा।

मिस्तरी ने नल पर पानी का लोटा लगाते हुए कहा, "कैसे रहे माधो सुसराल में? यार दुबले हो गये! क्या साली-सलहजों ने खातिर नहीं करी?"

माधो के सूखे मुख पर भी मुस्कराहट दौड़ गई, बोला—"बड़े साले रग्घू के न होने से मजा नहीं आया। साले, इस बार तुम्हें साथ लेकर जायंगे, तब मोटे होकर आयंगे।"

"राम का नाम ले, भइया!" सुखदेई ने दरद भरे लहजे में कहा, "सूख कर कांटा हो गया। अब कभी किसी से फौजदारी न करना। ये सब बड़े आदमी जल के मगर के समान होते हैं इनसे बैर करके गरीब की गुजर कहां।"

माधो का दरवाजा भी खुल गया था। उसकी पत्नी भी घूंघट निकाले नंगे-धड़ंगे साल भर के बालक को कूल्हे पर टिकाये बाहर आ गई थी। माधो ने लपक कर बच्चे को गोद में उठा लिया, उसे उमग कर छाती से चिपटाते हुए बोला, "अरे! मर्द बच्चा तकलीफों से डरते हैं। फिर घर पर ही कौन मोहनभोग मिल रहे हैं, जो जेल से डरें? इस बार वह साला लाला हत्थे चढ़ गया, तो सच कहता हूं, हाथ-पांव तोड़ कर ही दम लूंगा।"

"अरे भइया की बातें!" सुखदेई ने उत्तर दिया, "एक लाला हो तो उसके हाथ-पांव तोड़ दें। यहां तो जितने हैं, सभी गरीबों को चूसने को हैं। अकेले कोयले का रोना तो नहीं है; गेहूँ, चावल, चीनी, कपड़ा ...क्या चीज सस्ती है? काहे पर ब्लैक नहीं देना पड़ता! लड़ाई खतम हुए तीन बरस होने आ गये, और महंगाई सुरसा की तरह मुंह फैलाए जा रही है। कहते हैं, आजादी मिल गई। क्या जाने बाबा, मैं तो जानूं गरीबों को भूखों मरने की आजादी मिल गई और अमीरों को दिनों-दिन मोटे होने की।"

'मौसी, बात तो तैने पते की कही," बसन्ता ने बीड़ी सुलगाते हुए कहा, "काहे का सुराज और काहे की आजादी! जब सुराज में भी पेट से भूखे और तन से नंगे रहे, तो उसे लेकर ओढ़ें कि बिछावें।"

बातें अभी चलती रहतीं पर माधो की पत्नी महीने भर से बिछुड़े पति के दुख-सुख की पूछ कर, अपनी सुना कर मन का भार हल्का करने को छटपटा रही थी। घूंघट काढ़े हुए ही उसने कहा, "अरे बाबा, कल के मरे को कोई कहां तक रोये? चलो, जरा पानी-वानी पीकर सुस्ता लो। चेहरा कैसा काला पड़ गया है!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस्तरी लोटा लेकर दिशा को चला गया था। सुखदेई भी मण्डी से तरकारी चुका लाने के लिए झल्ली लेने अपनी कोठरी में चली गई।

"सांझ को मिलेंगे, दादा!" रामचरन को कहता हुआ माधो लड़के को उठाये हुए पत्नी के पीछे पीछे कोठरी में घुस गया। कोठरी में एक ओर मैले कपड़ों के कितने ही गट्ठर रक्खे थे। दूसरी ओर कुछ धुले हुए कपड़े, जो बिना इस्तरी किये थे, लकड़ी के पुराने तख्त पर बिखरे पड़े थे। पास ही इस्तरी पड़ी थी। आंगन में भट्टी पर नांद औंधी पड़ी थी, लगता था बहुत दिन से भट्टी में आग नहीं पड़ी है। बच्चे को तख्त पर बैठाते हुए माधो ने पूछा, "कन्हैया ने एक-आध धुलाई किसी के घर पहुंचाई या ये सारे कपड़े जभी के पड़े हैं?"

पत्नी ने खिजे स्वर में कहा, "काहे से पहुँचाती धुलाई? तुम तो लाला को मार-पीट कर जेल चले गये। अब कहां से कोयला आवे जो कपड़े इस्तरी करके किसी को दें। बड़ी मुश्किल से दस रुपये मन के भाव से दस सेर सुखदेई लाई थी, तब कहीं दो-चार घर धुलाई भेजी। बाकी सब ये पड़े हैं।"

माधो के मन में एक आग-सी जल उठी। साढ़े चार रुपये मन का कोयला पहले छः के भाव मिल जाता था, अब वही दस के भाव हो गया। आखिर दुनिया कैसे जियेगी? यह बड़े लोग क्या गरीबों को एकदम पीस देना चाहते हैं? इतनी महंगाई तो लड़ाई के समय में भी नहीं थी। कण्ट्रोल था, तो कम ज्यादा सबको एक भाव से कुछ थोड़ा-बहुत मिल भी जाता था। अब तो उससे भी गये। उसके मन में एक प्रबल हिलोर उठी—वाह रे सौराज! तुझे दूर से प्रणाम! अंगरेजी राज में बेकार रह कर भूखों मरते थे, तो देसी राज में काम करते हैं, कमाते हैं और भूखे रहते हैं। भूखे रहना ही है, जब रुपये में डेढ़ सेर आटा मिलता है। कितनी ही धुलाई बढ़ा दी है, फिर भी भर पेट रोटी जुड़ानी दूभर है। आखिर सरकार इन सेठों को जेल क्यों नहीं भेजती? माल के कोठे भरे पड़े हैं, कपड़ों से दुकानें पटी पड़ी हैं, पर महंगाई इतनी कर दी है कि गरीब आदमी की बिसात क्या कि खा-पहन सके? अच्छे-अच्छे बाबू लोग किसी चीज को हाथ नहीं लगा सकते?

और फिर हठात् ही उसका ध्यान अपनी जेल-यात्रा की ओर मुड़ गया। उसके मन में एक तिक्तता भर उठी। आखिर उसने कोई चोरी की थी? डाका डाला था? क्या किया था? महीने भर को पकड़ कर जेल में ठूंस दिया। जो लाला गरीबों को लूट कर घर भर रहा है, वह तो मजे में अब भी खुले आम मनमाने दामों पर कोयला बेच रहा है और मुझे जेल हो गई। यह है आज का न्याय!

वह तख्त से उठ कर चक्कर काटने लगा। पत्नी तब तक चा बना लाई थी। बिना दूध की नाम-मात्र को मीठी चाय का गिलास तख्त पर रखते हुए उसने कहा, "क्या सोचने लगे? लो चा पियो।"

घूंट भर कर माधो ने कहा, "यह तो एक दम फीकी है। तनिक-सा मीठा तो डाल दो।"

पत्नी ने हंडिया की तली झाड़ते हुए उत्तर दिया, "तुम्हारी यही नवाबी तो मुझे अच्छी नहीं लगती। महीने भर से किसी के कपड़े नहीं दिये, तो धुलाई किस मुंह से मांगने जाती? रुपये सवा रुपये सेर चीनी मिलती है, कहां से मंगाऊं?" और चुटकी भर चीनी चाय में डाल कर वह बच्चे को उठा कर कोठरी में चली गई, फिर भीतर से ही बोली—"कहीं से थोड़े कोयले लाओ, तो नम्बर चार बंगले के कपड़े तैयार करके पहुँचा दूं। कई बार उनका नौकर आ चुका है।"

और माधो के मस्तिष्क में कोयले की बात सुनते ही एक लकीर-सी खिंच गई। लाला जीवनराम की कोयले की दुकान है। कहने को राशन की दुकान है, पर नपे-तुले हिसाब में से भी लाला मनों कोयला ड्योढ़े-दूने मूल्य पर बेचता है। उस जैसे अनपढ़ गरीब, जिन्हें कोयले के परमिट नहीं मिल पाते थे, अपनी जरूरत पर उससे ही कोयला लेते थे। मन भर पर दो-तीन रुपये ज्यादा देना तो बंधा रेट हो गया था। पर इधर जब जाने कैसी गड़बड़ मचा कर कोयला कण्ट्रोल से भी नौ रुपये मन हो गया, तब तो उन लोगों के हाथ-पांव फूल गये। लाला उन्हें नौ रुपये मन का कोयला बारह तेरह के भाव लगाता था। इधर राशन टूट जाने से

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीनी, आटा, कपड़ा सभी कुछ पहले से ड्योढ़े दूने मूल्य पर जा पहुँचा था। आखिर गरीब बेचारे क्या करें? जौ, चना, मक्का सभी महंगा है। महंगाई के साथ-साथ उसी दिन उनकी मजदूरी तो उसी मात्रा से बढ़ नहीं जाती। माधो बाबू लोगों से धुलाई बढ़वाते बढ़वाते भी तंग आ गया था। मिजाज का वह तीखा जरूर है, पर मन में दया-माया भी बहुत है। बारह रुपये सैकड़े के भाव उसने धुलाई कर दी। दो-एक घरों में तो, जो कोठी-बंगले वाले थे, इस पर आपत्ति न की गई; पर उसके पुराने ग्राहक, जो मामूली रोजगार करते हैं, उसकी इस बारह की मांग से परेशान हो गये। लल्लू बर्फ वाले की बहू ने तो बड़ा ही दुखी होकर कहा, "माधो भइया, तेरा भी सितारा बुलन्द है, चाहे बारह का भाव लगाले, चाहे पन्द्रह का। मरन तो हमारी है। महंगी होने से अब तो कुलफी तक खानी लोगों ने छोड़ दी है, पर कपड़े धुलाना तो हम बन्द नहीं कर सकते — कम ज्यादा धुलविंगे ही…।"

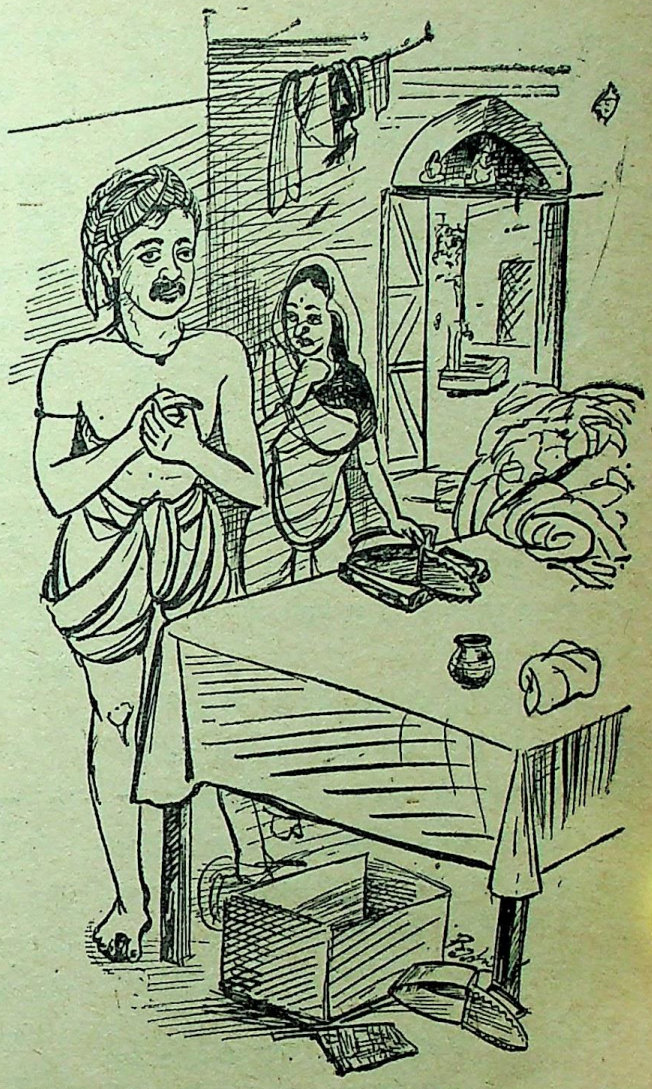

माधो के मन में आग-सी जल उठी।

माधो मन ही मन संकुचित हो उठा। वह स्वयं मजदूर है और इस महंगाई से परेशान है। इसी से अपने जैसी हैसियत वाले ग्राहकों के संकट को वह उतनी ही तीव्रता से समझता है, जैसे अपना दुःख-सुख। चुप-चाप उसके कपड़े लेकर वह चला आया। सोचा, अगर लाला इस बार नौ रुपये के भाव कोयला दे दे, तो न होगा, अपने पुराने दो-चार ग्राहकों के कपड़े वह आठ के भाव ही धो दिया करेगा।

टैंट में पौने पांच रुपये खोंस कर वह जीवनराम की दुकान पर पहुँचा। दुकान बन्द होने में अधिक देर नहीं थी। लाला के गिर्द अनेक थके-मांदे दफ्तर से हाल ही में लौटे बाबू लोग, जिनके पीठ से लगे पेटों पर से पतलूनें खिसक कर कूल्हों पर अटकी हुई थीं, अपने-अपने परमिट या कूपन लिये जल्दी कोयला देने की पुकार मचा रहे थे। तभी माधो ने लाला के कान के पास बड़ी खुशामद से कहा—"लाला जी, बीस सेर कोयला दे दो। बड़ी कृपा होगी। आज हाथ बड़ा तंग है और ढेरों कपड़े इस्तरी को पड़े हैं …।"

लाला माधो जैसों का आदर इन बाबुओं से अधिक ही करता था। उसकी विशेष आमदनी का माध्यम बिना कण्ट्रोल भाव के कोयला लेने वाले यही लोग तो थे। कण्ट्रोल से बेचने पर वही नपी-तुली आमदनी (चाहे वह काफी से ज्यादा ही थी) होती थी; पर ये लोग तो सोने का अंडा देने वाली मुर्गी थे। जल्दी से लाला ने कहा, "तू परमिट दे जा, मैं कोयला तेरे घर भिजवा दूंगा, मजदूर घर जानता है।"

परमिट का अर्थ था पैसे। इसे माधो, लाला और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाला के इर्द-गिर्द इकट्ठे वे सफेदपोश भद्र लोग सभी समझते थे। माधो के पास आज हिसाब से दो रुपये कम थे। उसने और भी धीमे से कहा—"लाला, इस बार जरा रहम की निगाह हो जाय, हाथ बड़ा तंग है!" और उसने चुपके से पौने पांच रुपये लाला की मुट्ठी में थमा दिये। लाला ने उड़ती निगाह से भांपे और रुखाई से कहा—"जाके घर बैठ; बिना परमिट मैं कोयला नहीं देता। जमाना जानता है, मैं ब्लैक नहीं करता।"

उपस्थित लोग लाला की इस सफाई पर मुंह फेर कर हंस रहे थे। किन्तु उसे कायल तो नहीं कर सकते। आखिर ईंधन कम पड़ने पर वे लोग भी समय-असमय दूने-ड्योढ़े रेट पर उससे कोयला-लकड़ी खरीदते ही थे।

माधो ने चिरौरी की, कुछ देर अपनी तंगी का रोना रोया; पर लाला अगर ऐसी बातों से पसीजने लगे, तो रोजगार कर चुके। उसने पैसे जमीन पर फेंक कर कहा, "कमीन आखिर कमीन रहेगा। देखा सा'ब आपने, बिना परमिट कोयला चाहता है, उस पर बीस सेर कोयले पर चार आने ब्लेक के दे रहा है! अरे, हम चवन्नी पर ईमान बेचते हैं? भाग यहां से।"

और माधो जो खुशामद से धनुष की भांति नव रहा था, तीर-सा सीधा तन कर खड़ा हो गया। वह कमीन है और यह साला बनिया धर्ममूर्ति है! उसने अपनी गरदन तान कर गुस्से से उत्तर दिया, "कमीन तू, तेरा बाप! बड़ा धर्मात्मा बना है! आगे रोज हमें परमिट से ही तो कोयला देता था! अभी दो रुपये नाक पर मारता, तो तू अपने सिर पै रख के कोयले घर पहुँचा देता।"

इतने आदमियों के सामने एक धोबी उसे गाली दे रहा है, लाला ने कोयले भराना छोड़ कर तोंद पर सरकती धोती सम्हाली और कहा—"साले, धोबी के बच्चे, खैर चाहता है तो चला जा। फिर कभी दुकान पर पांव रक्खा तो टांग तोड़ दूंगा। ओ झगड़ू, इसे पकड़ कर बाहर कर दे।"

झगड़ू लाला का मजदूर था। जैसे ही वह आगे बढ़ा कि माधो ने उछल कर लाला के एक लात जमा दी। बहुत दिनों का जमा, अन्तर को झुलसाने वाला विक्षोभ बांध तोड़ कर ऊपर आ गया था। माधो ने लाला को पांच सौ एक गालियां सुनाते हुए कहा—"तुझे नरक में भी ठौर न मिलेगी। आगे-पीछे कोई खाने वाला भी तो नहीं है, जिसके लिये गरीबों का गला काट कर घर भर रहा है। तेरे जैसों को सरकार जेल क्यों नहीं भेजती?" इत्यादि।

उपस्थित भद्र सज्जनों ने माधो को ही दो चार सुनाईं; उसे ही पकड़ कर दुकान से बाहर कर दिया।

और लाला को तो सरकार ने जेल नहीं भेजा, पर लाला ने कोयला चुराने के अपराध में अनेकों गवाहियों से प्रमाणित करके माधो को एक मास के लिये सरकारी महमान बनवा ही दिया।

* * *

शहर की किसी दूर-पार की दुकान से तेरह के भाव माधो दस सेर कोयला लाया था। भूखा और थका हुआ; तांगे वाले ने इतने पैसे मांगे थे कि फिर उसने दूसरे से पूछने की हिम्मत ही न की। चार मील कोयला पीठ पर लादे पैदल घर लौटा।

पत्नी रोटी बना चुकी थी। मसूर की दाल और रोटियां उसने पीतल की थाली में लाकर रख दीं।

"यह रोटियां तो बड़ी काली हैं, क्या चना मिलाया है?"

"धरे हैं चने जो मिला देती! राशन की दुकान पर अब ऐसा ही आटा आता है।"

माधो कुढ़ कर चुप हो गया। शहर में अब केवल आटे पर कण्ट्रोल था। यद्यपि बाजार में खुले आम डेढ़ सेर के भाव आटा मिलता था, पर कण्ट्रोल के सवा तीन सेर का मोह गरीब आदमी कैसे छोड़ दे! माधो ने राशन वाले बनिये को मन ही मन एक वजनी गाली देकर ग्रास मुंह में रखा। जैसे दांतों से बालू चबाली हो। ग्रास उगल कर उसने क्रोध से कहा, "अरी, आज रोटियों में नौ मन रेत मिला दी है?"

पत्नी ने भी उसी ताव से उत्तर दिया—"मिला

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्यों नहीं दी, अन्धी जो ठहरी! राशन की दुकान पर ऐसा ही आटा मिलता है, मेरा क्या दोष?"

"तो गेहूँ क्यों नहीं लाई?"

"गेहूँ थे ही नहीं। अब वहां मिलता ही क्या है? कभी किनकी जैसे रेत मिले चावल मिलते हैं तो आटा नदारद, आटा मिले तो गेहूं नहीं!"

माधो ने फिर उत्तर नहीं दिया। उफनते हुए क्रोध को पीकर जैसे तैसे दो रोटियां निगलीं, फिर लोटा भर पानी पीकर उठ गया। इस्तरी में कोयले सुलगा कर वह कपड़ों पर फेरने लगा। उसका हृदय भी इस समय उन्हीं सुलगते कोयलों-सा दहक रहा था। मस्तिष्क क्रोध से तप रहा था। किन्तु क्रोध वह किस पर करे? पत्नी पर; बनिये पर; दुनिया की बेइमानी पर या सरकार पर···? सरकार तो अब पण्डित जी की है, और पण्डित जी तो हमारे हैं। पर वे इस महंगी को रोकते क्यों नहीं? और इस्तरी करते-करते उसने सोचा—अकेले वो बेचारे किस-किस की बेइमानी रोकें! अहलकार तो ज्यादातर वही पुराने हैं—क्या पुलीस, क्या और जगह···? और माधो अधिक सोच नहीं पाया। वह पढ़ा लिखा नहीं है, उसे समस्याओं का हल ज्ञात नहीं है, पर वह इस स्थिति का अन्त चाहता है। और अपनी समझ से उसे इसका अन्त इसी में दिखता है कि सभी मुनाफाखोरों को जेल में बन्द कर दिया जाय, सब सेठों के माल भरे कोठे सरकार अपने कब्जे में करले और-और···कुछ भी करे, इस महंगाई, इस धांधली को रोक दे।

"राशन ले आओ!" पत्नी ने भीतर से कहा, "कल इतवार को तो भीड़ हो जायगी।"

"अच्छा।"

"पर देखो, लड़-झगड़ कर मत आना। तुम्हारा सुभाव बड़ा ही खराब है; आव देखो न ताव, झट गाली दे बैठते हो।"

"अच्छा-अच्छा, तू चुप रह, ला पैसे दे।" उधार लाये तीन रुपये पत्नी ने उसे थमा दिये। पैसे और चादर लेकर माधो 'राशन-शाप' पहुंचा।

"लाला जी, आटे में इतनी रेत क्यों मिला देते हो?" उसने कार्ड देते हुए कहा, "घी, दूध तो दुनिया से उड़ ही गया, अब क्या आटे की जगह बालू फांक कर रहें?"

लाला बहीं में हिसाब जोड़ रहे थे। छोटी जात के आदमी का इतना बड़ा बोल उन्हें अच्छा नहीं लगा। चिढ़ कर उत्तर दिया, "हम क्या अपने घर में मिलाते हैं। सरकार जैसा देती है, वैसा बेचते हैं। तुझसे न खाया जाता हो, तो बाजार से खरीद कर खा ले; यहां क्यों झक मारने आया है!"

माधो चुप होगया। धीरे से बोला, "मैं आटा नहीं लूंगा, गेहूँ लूंगा।"

"गेहूं नहीं हैं।"

"क्यों नहीं है?" माधो का पारा भी ऊपर चढ़ा, "फिर राशन देने का ढोंग रच के क्यों बैठे हो? अच्छा चावल दो।"

"चावल भी नहीं है। बदबू वाला भोजपुरिया लेना हो तो ले ले।"

"मैं नहीं लूंगा। मुझे बेगमी दो। अच्छा मजाक है, जब कुछ है ही नहीं तो दुकान खोल के क्यों बैठे हो?"

"तू चुप नहीं रहेगा, साले?" लाला गरजा, "टर्र-टर्र करे जाता है। कह दिया, अब सब कुछ खुले बाजार मिलता है, गांठ से टके खर्च और खा। खबरदार जो अब राशन लेने आया। कार्ड फाड़ कर फेंक दूंगा।"

और मुंदे ज्वालामुखी के विस्फोट-सा माधो चादर और कार्ड थामे स्तब्ध खड़ा था। वह सोच रहा था, चुपचाप बाजार से तीन रुपये का तीन सेर आटा घर ले जाय या इस राशन वाले लाला का सिर फोड़ कर यहीं से सीधा जेल पहुँच जाय···?

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

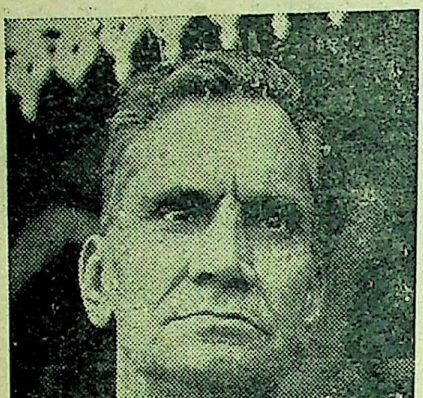

लेखक

कांग्रेस में वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास (२)

★ श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति ★

विद्वान् लेखक के ये संस्मरण भारतीय कांग्रेस के संघर्ष-कालीन इतिहास के उस महत्वपूर्ण पहलू पर बड़े प्रामाणिक ढंग से प्रकाश डालते हैं, जिस की ओर अभी तक बहुत कम लोगों का ध्यान गया है।

श्रीमती ऐनी बेसेंट

१९१६ का लखनऊ का अधिवेशन कांग्रेस के इतिहास में विशेष महत्त्व रखता है। उसमें गर्म और नर्म —एक्स्ट्रीमिस्ट और मॉडरेट—दोनों एक मंच पर विराजमान थे। सूरत के गृह-युद्ध के पश्चात् यह पहिला अधिवेशन था, जिसे उस समय राष्ट्रीय नाम दिया गया। यह सर्वसम्मत बात मानी जाती थी कि उस मेल का श्रेय श्रीमती ऐनी बेसेंट को था। श्रीमती ऐनी बेसेंट एक प्रतिभासम्पन्न आयरिश महिला थीं। वह थ्योसाफिकल सुसाइटी की अध्यक्षा थीं। जिस समय गर्मों और नर्मों की परस्पर फूट के कारण देश का राजनीतिक जीवन छिन्न-भिन्न-सा हो गया था, उस समय श्रीमती ऐनी बेसेंट स्वराज्य के रणक्षेत्र में उतरीं और 'होमरूल लीग' की ओर से राष्ट्रीय आन्दोलन पुनरुज्जीवित कर दिया। साथ ही उन्होंने दोनों दलों को फिर से कांग्रेस के मंच पर एकत्र करने का शुभ उद्योग भी प्रारम्भ कर दिया, जिसकी सफलता कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में हुई। उस अधिवेशन की सब से बड़ी महत्ता यही थी कि अनेक वर्षों के पश्चात् लोकमान्य तिलक और प्रातःस्मरणीय गोखले एक ही व्याख्यान-वेदी पर विराजमान थे।

श्रीमती ऐनी बेसेंट उस समय के संसार के सर्वश्रेष्ठ वक्ताओं में से एक मानी जाती थीं। भाषा, भाव और भाषणशैली में वे अनुपम थीं। उनकी भाषणशैली में 'बंगाल-केसरी' जैसी शब्दों की मूसलधार वृष्टि तो नहीं होती थी और न गोखले महोदय के समान घटनाओं और अंकों का अद्भुत आयोजन ही होता था, तो भी अंग्रेजी जानने वालों के मन में उनके व्याख्यान अद्भुत प्रभाव उत्पन्न करते थे। भाषा पर उनका प्रभुत्व था ही, भावों और भावनाओं का जितना सुन्दर मिश्रण उनके व्याख्यान में होता था, उतना बहुत कम उपलब्ध होता है। मैंने उनके भाषणों की प्रशंसा तो बहुत सुनी थी, प्रत्यक्ष सुनने का अवसर पहिली बार लखनऊ में मिला। मैं उससे प्रभावित हुआ, परन्तु इतना नहीं जितना गोखले जी के भाषण से। उसका कारण सम्भवतः यह था कि श्रीमती ऐनी बेसेंट की बातें भारत-भक्ति से पूर्ण और ऊँचे दर्जे की होने पर भी एक भारतवासी के हृदय के तार को नहीं हिलाती थीं। यह मेरा अनुभव है, सम्भव है अन्य भारतवासियों का अनुभव इससे कुछ भिन्न हो। इतना भेद होने पर भी यह तो मैं असंदिग्ध रूप से कह सकता हूँ कि श्रीमती ऐनी बेसेंट सच्चे हृदय से भारत-भक्त और बहुत ऊंचे दर्जे की व्याख्यात्री थीं।

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकमान्य तिलक

धर्म और राजनीति के क्षेत्र में सभी महापुरुषों के सामने भक्तिभाव से सिर झुका कर यदि मैं इस प्रश्न का उत्तर देना चाहूँ कि 'तुम किसके अनुयायी हो ?' तो मेरा यह उत्तर होगा कि धर्म के क्षेत्र में मैं महर्षि दयानन्द का अनुयायी हूँ और राजनीति में लोकमान्य तिलक का। इससे यह तो समझा ही जा सकता है कि जब मैंने अपने जीवन में पहिली बार कांग्रेस की व्याख्यान-वेदी पर जय-जयकारों के मध्य में आते और बैठते तिलक महाराज को देखा, तब मेरी कैसी भावनायें रही होंगी। मैं अधिक भावुक प्राणी नहीं हूँ, तो भी उस समय मैं भावुकता की पराकाष्ठा तक पहुंच गया था। यदि सभापति का अथवा लोकमत का भय न होता, तो अपने स्थान से उठ कर अवश्य ही तिलक महाराज के चरण पकड़ लेता। जब वे आसन पर आसीन हो गये, तब भी मैं बहुत देर तक उनकी ओर टकटकी लगा कर देखता रहा। उनके मुखमण्डल पर असाधारण बुद्धि, गम्भीरता और तपश्चर्या के चिह्न स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। थोड़ी देर तक उनके शान्त चेहरे को देखने पर यह अनुभव होने लगता था कि हम सचमुच एक क्रान्तिकारी को देख रहे हैं। माथे

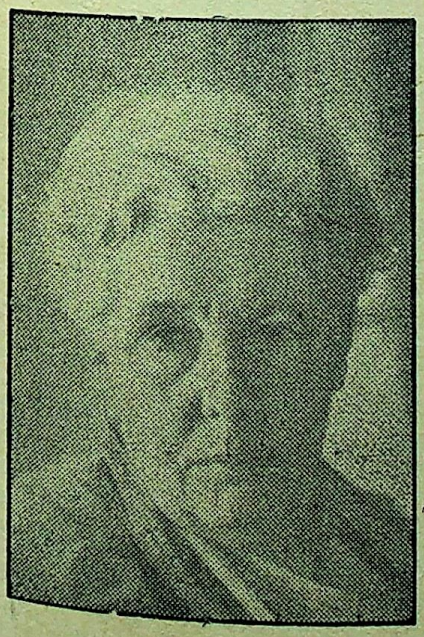

श्रीमती ऐनी बेसेंट

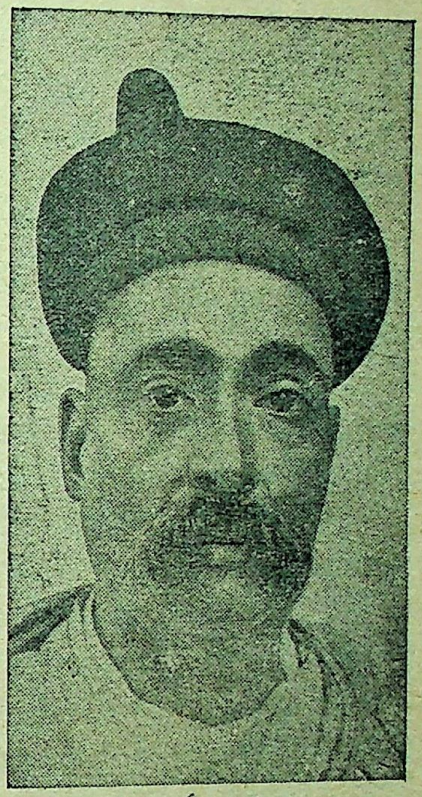

लोकमान्य तिलक

पर विचार की रेखायें थीं, आँखें चेतन और स्थिर थीं, ओंठ दृढ़ता से मिले हुए थे और मुद्रा स्तब्ध थी, मानों क्रान्ति का शरीरधारी पुतला हो। यह मेरी उस समय की भावना थी। उसके पश्चात् तो मैंने लोकमान्य को कई दशाओं में देखा—हँसते हुए भी देखा, मराठी शैली में व्यंग्यपूर्ण उपहास करते हुए देखा और महाराष्ट्र ब्राह्मणों की तरह केवल धोती पहिन कर भोजन करते भी देखा। वे उनके मानवीय रूप थे। कांग्रेस के उस अधिवेशन में जब तक वे बोलने के लिये नहीं खड़े हुए, तब तक मैं उन्हें केवल क्रान्तिकारी नेता के रूप में देखता रहा।

उत्सव-मण्डप में उपस्थित जनता लोकमान्य का व्याख्यान सुनने के लिये उतावली हो रही थी। सूरत के गृह-युद्ध के पश्चात् नौकरशाही सरकार ने उन्हें जिस जेल में डाल दिया था, उससे वे अभी हाल में छूट कर आये थे। देश भर में उनके प्रति अद्भुत प्रेम और श्रद्धा का भाव उमड़ रहा था, जिसका प्रभाव कांग्रेस के पण्डाल में भी दिखाई दे रहा था। बहुत प्रतीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Hari

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाद अन्त में जब आप व्याख्यान देने के लिये खड़े हुए, तब लगभग ५ मिनट तक करतल-ध्वनि होती रही। इन ५ मिनटों का मूल्य आंकने के लिये यह स्मरण कर लेना आवश्यक है कि उस समय कांग्रेस अंग्रेजी पढ़े-लिखे वकीलों, डाक्टरों और रईसों की सभा थी; अभी उसमें जनता-जनार्दन का प्रवेश नहीं हुआ था। उस समय के ५ मिनटों को ५० मिनटों के बराबर समझना चाहिये।

केवल भाषण-कला की दृष्टि से मैं यदि लोकमान्य के व्याख्यान की आलोचना करूं, तो शायद वह न्याय-संगत नहीं होगा। कारण यह है कि व्याख्याता की हैसियत से उनकी विशेष ख्याति मराठी भाषा के भाषणों के कारण हुई थी। वे जो कुछ बोलते थे, हृदय से बोलते थे। उनके हृदय में जो तेज और अविचल भाव था, वह उनके शब्दों से प्रकट होता था। इस कारण भाषण का श्रोताओं पर गहरा प्रभाव पड़ता था। परन्तु साथ ही केवल कला की दृष्टि से इतना कहना आवश्यक प्रतीत होता है कि उनके अंग्रेजी भाषण में शब्दों का वह प्रवाह नहीं था, जो सुरेन्द्रबाबू अथवा श्रीमती बेसेंट में था और न घटनाओं तथा अंकों का वैसा चतुरतापूर्ण आयोजन था, जैसा कि गोखले जी में था। सीधापन ही उनके भाषण का अलंकार था। उनके लखनऊ वाले भाषण की एक बात मुझे भली प्रकार याद है। उन्होंने दोनों दलों के मेल का निर्देश करते हुए कहा था, "यह सन्तोष की बात है कि यह Luck (सौभाग्य) now (अब) Lucknow (लखनऊ) को प्राप्त हुआ है कि दोनों दल यहां मिल जांय!" इस शब्द-विश्लेषण पर श्रोताओं ने चिरकाल तक हर्षध्वनि की।

श्रीयुत विपिनचन्द्र पाल

दलबन्दी के उन दिनों में गर्म-दल की 'बाल-पाल-लाल' की त्रिमूर्ति मशहूर थी। 'बाल' से बालगंगाधर तिलक, 'पाल' से विपिनचन्द्र पाल और 'लाल' से लाला लाजपतराय का बोध होता था। श्रीयुत विपिनचन्द्र पाल का नाम हम लोगों ने वर्षों तक समाचार-पत्रों में पढ़ा था। वे बंगाल में गर्म दल के प्रमुख नेता थे। नेता के रूप में उनकी ख्याति का मुख्य आधार उनकी भाषण-शक्ति थी। वे अंग्रेजी के जोरदार वक्ता थे। यदि सुरेन्द्रबाबू के स्वर की हम सिंह के गर्जन से उपमा दें, तो पाल महोदय के स्वर की उपमा सितार के तार सप्तक से दी जा सकती है। उनका तीखा स्वर जब पूरी ऊंचाई पर पहुँचता था, तब कानों को चीरता हुआ हृदय के अन्तःस्तल तक पहुँच जाता था। उनका प्रत्येक वाक्य अलग-अलग काफी जोरदार होता था। कभी-कभी एक वाक्य और दूसरे वाक्य के बीच में ऐसा अनुभव होने लगता था कि वे पीछे कुछ भूल गये हैं, जिसे उठाने के लिये कुछ रुक जाना पड़ा है। कुछ विराम के पश्चात् दूसरा वाक्य शुरू होता था जो धीरे धीरे ऊंचाई की चरमसीमा तक पहुँच कर समाप्त हो जाता था और फिर विराम-चिह्न लग जाता था। यह विराम विचार-शक्ति से सम्बन्ध रखता था या भाषा से, इस प्रश्न का उत्तर मैं निश्चित रूप से नहीं दे सकता। पाल महोदय के भाषण की एक विशेषता यह भी थी कि वह प्रायः खण्डन में ही अधिक चमकते थे। किसी-किसी विषय के प्रतिपादन में उनकी शब्द-रचना ढीली हो जाती थी। सुरेन्द्रबाबू को कोसने या 'मॉडरेट पार्टी' का मजाक उड़ाने में उन्हें जितनी सफलता मिलती थी, बहिष्कार अथवा राष्ट्रीय शिक्षा की व्याख्या करने में उतनी नहीं मिलती थी। यही कारण है कि जब वे असेम्बली में पहुँच गये, तब उनकी भाषण-शक्ति और लोकप्रियता का निरंतर ह्रास होता गया। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि राष्ट्रीय जीवन के उस संघर्ष-काल में पाल महोदय क्रान्ति-दल के एक शक्तिशाली वक्ता और योद्धा थे। उन्हें गर्म-दल के अन्यतम महारथी कहा जा सकता है।

— क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो एकांकी

समय का खून

श्री नरेन्द्रनाथ सेठ

पात्र

विलियम—जैकब का छोटा भाई।

मिसिज स्मिथ—विलियम और जैकब की मां।

लिली—मिसिज स्मिथ की भानजी।

[एक पुराने ढंग की कोठी का एक कमरा। एक दीवार पर बड़ा क्लॉक लगा हुआ है। एक मेज पर कुछ कागज और पुस्तकें पड़ी हैं। विलियम एक कुर्सी पर बैठा कुछ लिखने में व्यस्त है। जैकब विलियम को दूर से पुकारता हुआ तेजी से कमरे में प्रविष्ट होता है। उसके हाथ में दो भारी-भरकम पुस्तकें हैं।]

जैकब—विलियम! विलियम! यह देखो मेरा शब्दकोष छप कर तैयार हो गया!

विलियम—(चौंक कर) कौन, जैकब भाई!

जैकब—(शब्दकोष की दोनों प्रतियां आगे बढ़ाते हुए) यह रहा मेरा शब्दकोष।

विलियम—क्या छप गया? बधाई हो, भाई साहब!

जैकब—भई, तुम्हें भी बधाई! मैं यह तुच्छ उपहार तुम्हें भेंट करता हूँ। भगवान् की सौगन्ध, इससे श्रेष्ठ और प्रामाणिक कोष कहीं भी नहीं मिलेगा।

विलियम—इसमें क्या संदेह है।

जैकब—(पंडिताऊ ढंग से उपदेश देते हुए) विलियम, यदि बुरा न मानो, तो मेरी राय में तुम भी कुछ काम करो। परियों की कहानियों का संकलन; भला यह भी कोई काम है! इस काम से तो बेकार रहना अच्छा!

विलियम—क्या? भाई साहब, मैं तो इस काम में आपकी सहायता प्राप्त करने की सोच रहा था।

जैकब—ऊंह! मुझ से यह आशा न रखो। मैं खा-म-खा अपना समय नष्ट नहीं करना चाहता। मेरा कहा मानो तो तुम भी इस व्यर्थ के काम में अपना समय नष्ट न करो। इसका भला क्या महत्व है!

विलियम—आप सरासर भ्रम में हैं, भाई साहब! इन्हीं परियों की कहानियों से बाज ऐसी बातें पैदा होती हैं, जिनके हल से दुनिया की बहुत-सी समस्याओं का समाधान हो सकता है।

(जैकब कहकहा लगाता है)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलियम—हंसना तो कोई युक्ति नहीं, भाई साहब। भला आपने कभी इस बात पर भी विचार किया है कि प्रत्येक देश में बच्चों को एक ही-सी परियों की कहानियां क्यों सुनाई जाती हैं? और फिर उन कहानियों में हमेशा गड़रिये का विवाह राजकुमारी से क्यों होता है? और जब दो सगे भाई एक ही राजकुमारी से विवाह करना चाहते हैं, तो हमेशा छोटा भाई क्यों सफल होता है और·····?

जैकब—छोड़ो भई, इन नीरस बातों से मेरा दिमाग मत चाटो। तुम्हें तुम्हारा काम मुबारक; मुझे अपने नये शब्दकोष में संलग्न रहने दो।

(एक पुस्तक खोल कर पन्ने उलटता-पलटता है)

विलियम—(दूर से देखकर) भाई साहब, देखो मां जी आ रही हैं।

जैकब—(घबरा कर) मां जी! अब फिर समय का खून होगा। (धीरे से) चलो विलियम, लायब्रेरी में भाग चलें।

विलियम—अब तो वे आ ही गईं। यह लो, वे तुम्हें पुकार रही हैं।

(दूर से ही 'बेटा जैकब!' 'बेटा विलियम!' पुकारती हुई मिसिज स्मिथ कमरे में प्रवेश करती है।)

जैकब—(जैसे चौंक कर) क्या है, मां?

मिसिज स्मिथ—(पास आकर) मैं कहती हूँ, जैकब, किसी समय तो मुई इन मोटी पुस्तकों को छोड़ा करो।

जैकब—लेकिन मां, विलियम भी तो·····?

मिसिज स्मिथ—विलियम क्या? विलियम धूल है और तुम मिट्टी हो।

विलियम—मां···!

मिसिज स्मिथ—मां-मां लगा रखी है, कुछ घर-बार की भी खबर है?

जैकब—इस काम के लिए तुम जो हो, मां!

मिसिज स्मिथ—हे भगवान्, मैं क्या करूं? ईश्वर मुझे इस घर से अब उठा ही ले तो अच्छा है। इस अवस्था में भी काम करूं तो मैं ही और ये मुए मुशटंडे केवल पुस्तकें देखते रहें। शर्म नहीं आती! (रोनी आवाज में) न इनके पिता मरते और न मुझ पर मुसीबत आती·····!

विलियम—मां!

मिसिज स्मिथ—(न सुनते हुए) मैं सारा दिन घर में अकेली पड़ी रहती हूँ। कोई बात करने वाला भी तो नहीं। घर में यदि कोई स्त्री हो तो मन बहल जाये। परन्तु यहां की तो यह हालत है कि बीमार हो जाऊं, तो कोई पानी पूछने वाला भी नहीं।

विलियम—(जोश से) भला यह कैसे हो सकता है, मां?

जैकब—हां मां, यह कैसे हो सकता है?

मिसिज स्मिथ—(नकल उतारते हुए) 'यह कैसे हो सकता है?' दस दिन से ज्वर आ रहा है मुझे और मेरे लाडले बच्चे कहते हैं—'भला यह कैसे हो सकता है?'

विलियम—ज्वर?

जैकब—तुमने हमें बताया भी तो नहीं, मां!

मिसिज स्मिथ—बताऊं किसे? तुम्हें पुस्तकों से अवकाश भी हो। तंग आकर मैंने लिली को बुला भेजा था। लेकिन अब अकेलेपन से वह बेचारी भी उकता गई है। उससे कोई बात भी तो करे। इस घर में तो उल्लू बसते हैं!

विलियम—यह लिली कौन है, मां?

जैकब—(उकता कर धीमे से) उफ, समय का खून!

मिसिज स्मिथ—हाय दैया! इन लड़कों को अपनी मौसेरी बहिन का भी पता नहीं। घर में कोई आये, कोई जाये, इनकी बला से। चोर घुस आयें, लूट कर ले जायें और ये पूछेंगे, 'क्या हुआ, मां?'

जैकब—और किस से पूछें, मां!

विलियम—(धीमे से) क्या लिली कोई चोर है?

मिसिज स्मिथ—(क्रोध से) चुप रहो। अब बहुत हो चुका। आज तक तुम्हारा मैंने बहुत लिहाज किया, लेकिन आज अच्छी तरह सुन लो, अब मैं इस घर में न रहूँगी। मैं आज ही लिली के साथ अपनी बहिन के घर जा रही हूँ।

जैकब—लेकिन घर का काम·····?

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी जीवन को रंगीन बना देती है, इस बात का अनुभव दोनों भाइयों को तभी हुआ जब उनकी भेंट लिली से हुई। परन्तु अन्त में किसका जीवन रंगीन बना और किसके समय का खून हुआ ?

मिसिज स्मिथ—भाड़ में जाये घर का काम। मैं तो अब इस घर में कभी न रहूँगी। (बाहर जाने लगती है।)

विलियम—लेकिन, मां, सुनो तो।

मिसिज स्मिथ—मैं अब कुछ नहीं सुनूंगी। तुम मेरी नहीं सुनते, तो मैं तुम्हारी क्यों सुनूं ?

जैकब—हम तो बहुत अर्से से सुन रहे हैं, मां, परन्तु तुम कुछ काम की बात कहो भी।

मिसिज स्मिथ—(गुस्से से) तो मैं अब तक बक ही रही थी क्या ? कहते-कहते दस वर्ष बीत गये। तुम्हारे पिता भी यही साध लिये कब्र में जा लेटे और मैंने अभी तक काम की बात ही नहीं की। हे भगवान्, मेरी सन्तान !

विलियम—मां, भाई जैकब का अभिप्राय यह है कि घर से बाहर जाना अच्छा नहीं होता।

मिसिज स्मिथ—लेकिन यह मेरा अन्तिम निर्णय है। मैं अभी जा रही हूँ। (फिर जाने लगती है।)

विलियम—(रोकते हुए) मां, न जाओ।

मिसिज स्मिथ—केवल एक शर्त पर मैं यहां रह सकती हूँ।

विलियम-जैकब—(एक साथ) वह क्या ?

मिसिज स्मिथ—तुम में से एक को लिली से विवाह करना होगा।

जैकब—(चौंक कर) विवाह !

विलियम—विवाह !!

मिसिज स्मिथ—हां, विवाह ! और अब मैं तुम्हारी एक न सुनूंगी। तुम हर वक्त मुझे टाल देते हो। इसी टालमटोल में तुम दोनों की आयु तीस वर्ष से भी अधिक हो चुकी है।

विलियम—लेकिन, मां.....?

मिसिज स्मिथ—चुप रहो, विलियम। मैं तेरी सब चालें समझती हूँ। मुझ से कहता है—'मां, पहिले जैकब भाई का विवाह कर लो, फिर मैं भी कर लूंगा।' और जब मैं दोनों से बात करती हूँ, तो दोनों अकड़ जाते हैं। अब मैं तुम्हारे हथकण्डे खूब समझ गई हूँ। अब मेरे लिये बड़े-छोटे का कोई प्रश्न नहीं। लड़की मेरे हाथ में है और तुम दोनों में से किसी एक को उसके साथ विवाह करना होगा।

विलियम-जैकब—(एक साथ) मां !

मिसिज स्मिथ—मैं कुछ सुनना नहीं चाहती। तुम लोगों ने मुझे हर जगह बदनाम कर रखा है। तुम्हारे कारण मैंने बीसियों रिश्ते वापस किये, तुम्हारा घर बसाने के लिए लोगों के व्यंग्य सहे; (रुंधे हुए कण्ठ से) लेकिन तुम हो कि बूढ़ी मां को इस उम्र में भी चैन नहीं लेने देते। मेरी ही कोख से पैदा होकर मुझे ही जवाब देते हो। मुझे ही कहते हो कि मैं बक रही हूँ। इससे तो तुम पैदा ही न होते तो अच्छा था।

विलियम—लेकिन घर से चले जाने से क्या होगा, मां ?

जैकब—हां, मां, इसका उस बात से क्या सम्बन्ध ?

मिसिज स्मिथ—सम्बन्ध यह है कि लिली तुम्हारी सब आदतें ठीक कर देगी और तुम्हें जब जीवित पुस्तक मिल जायेगी, तो तुम कागजी पुस्तकें भूल जाओगे। नारी जीवन को रंगीन बना देती है और मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहती हूँ कि मेरे बच्चों का जीवन भी रंगीन हो, पत-झड़ के सूखे पत्तों की भांति शुष्क न रहे। और फिर बहू आने से घर में चहल-पहल होगी और मुझे भी कब्र के-से अकेलेपन से मुक्ति मिलेगी·····।

जैकब—मैं किसी सूरत में भी विवाह नहीं कर सकता।

विलियम—और मेरा भी यही फैसला है।

मिसिज स्मिथ—तो फिर मैं भी अपनी बहिन के घर जा रही हूँ। यह लो सेफ की चाबियां।

(चाबियां फैंकती है और चल देती है।)

जैकब—(ऊंचे स्वर से) लेकिन मां, हम क्या करेंगे ?

मिसिज स्मिथ—जो तुम्हारे मन में आये।

विलियम—(मां के पीछे भागते हुए) मां, ठहरो, हमें सोचने के लिए समय दो।

(मिसिज स्मिथ रुक जाती है।)

विलियम—मां, हम इस बात पर विचार करना चाहते हैं।

मिसिज स्मिथ—मैं तुम्हें आध घण्टे का समय दे सकती हूँ। मेरे लौटने तक तुम्हें यह फैसला करना होगा कि लिली के साथ विवाह करने के लिये कौन तैयार है।

जैकब—(समीप होकर) केवल आध घण्टे में भला क्या सोचा जा सकता है ?

मिसिज स्मिथ—केवल आध घण्टा। (घड़ी की ओर देखते हुए) घड़ी में इस समय साढ़े दस बजे हैं और तुम्हें ग्यारह बजे तक फैसला करना होगा। यह मेरा अन्तिम निर्णय है।

(जाती है। विलियम और जैकब कमरे में वापस आते हैं।)

जैकब—(पांव पटकता हुआ इधर-उधर उद्विग्न-सा घूमता है) कितना समय का खून! अब तक एक नया शब्द-कोष···उफ! (दोनों हाथों से सिर पकड़ कर) ओ मेरे भगवान···!

विलियम—भाई जैकब! अब तो तुम्हें विवाह करना ही होगा।

जैकब—लेकिन मुझे क्यों ? तुम्हें क्यों नहीं ?

विलियम—तुम उम्र में मुझसे बड़े हो न।

जैकब—यह कोई दलील नहीं।

विलियम—भाई साहब, भला सोचो तो, मैं पहले किस तरह विवाह कर सकता हूँ ?

जैकब—कुछ भी हो, मेरी ओर से साफ इन्कार है।

विलियम—और इधर मेरा भी यही जवाब है।

(दोनों टहलते हैं)

जैकब—सुनो विलियम, मुझे एक युक्ति सूझी है।

विलियम—क्या ?

जैकब—चलो, हम तुम भाग चलें।

विलियम—लेकिन जानते हो, इसका परिणाम क्या होगा ?

जैकब—जो भी हो।

विलियम—मां के प्राण निकल जायेंगे, यह सोच लो।

जैकब—अजब मुश्किल है, न छोड़ते बने, न निगलते बने।

विलियम—इससे तो यही अच्छा है कि मां को लिली के साथ जाने दें।

जैकब—तब भी समय का खून होगा। घर का काम-काज क्या हम करेंगे ?

विलियम—तो फिर क्या किया जाये ?

जैकब—मुझे तो कुछ नहीं सूझता। मेरी सुनो तो तुम ही मान लो। देखो विलियम, मैं हाथ जोड़ता हूं। (हाथ जोड़ता है।)

विलियम—हाथ जोड़ने से कुछ न होगा। विवाह का पहला अधिकार तुम्हारा है।

जैकब—मैं अपना अधिकार छोड़ता हूँ।

विलियम—हूँ! भाई साहब, काम इस तरह नहीं चलेगा।

जैकब—बहरहाल, मेरी ओर से तो इन्कार है।

विलियम—(चुटकी बजाकर) सुनो, एक काम करें। इस बात का निर्णय भाग्य पर छोड़ दें।

जैकब—वह कैसे ?

विलियम—पर्ची डाल कर। जिसके नाम की पर्ची निकले, वही विवाह करे।

जैकब—मैं इस प्रकार के अंधविश्वासों को नहीं मानता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलियम—लेकिन, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, यह विधि प्राचीन रोम और यूनान की परम्परा के अनुरूप है।

जैकब—मैं अन्धाधुन्ध अपने आपको किसी खतरे में डालने के लिये तैयार नहीं।

विलियम—सुनो भाई जैकब, हम दोनों ही विवाह करना नहीं चाहते। हम में से कोई भी झुकने को तैयार नहीं। लेकिन एक को ऐसा करना ही होगा। इसके लिये केवल एक ही तरीका है, जिससे कि यह मुश्किल सुलझ सकती है और वह यह कि हम भाग्य को अपना निर्णायक बनावें।

जैकब—(हार मानते हुए एक गहरा सांस लेकर) अच्छा भाई···परन्तु पर्ची कैसे डाली जायेगी?

विलियम—यह तो आसान है। यह देखो। (हाथ में एक खाली कागज लेते हुए) एक कागज का टुकड़ा लिया और इसे बराबर दो भागों में बांट लिया—यों। अब इनमें से एक पर 'विवाह' का शब्द लिख देते हैं' वि···वा···ह'—यों। अब हम इन दोनों पर्चियों को तह कर लेते हैं—इस तरह से। (हाथ से पर्चियों को तह करता है।)

जैकब—विलियम, तुम सचमुच ही बहुत ईमानदार हो। अब इसके बाद?

विलियम—अब इनको···(इधर-उधर देखता है कि उसकी दृष्टि खूंटी पर लटकी हुई फैल्ट हैट पर पड़ती है) हां, वह रही तुम्हारी फैल्ट। अब इन पर्चियों को तुम्हारी फैल्ट में डाल कर खूब हिलाया जायेगा।

जैकब—न भई, यह गलत बात है। तुम अपनी फैल्ट ही इस्तेमाल करो।

विलियम—अच्छा, यों ही सही। (खूँटी पर से अपनी फैल्ट उतारते हुए) यह रही मेरी फैल्ट। इसमें इन दोनों पर्चियों को डाल कर खूब हिलाया···यों···।

जैकब—भई, जरा अच्छी तरह से हिलाना।

विलियम—तुम तनिक भी चिंता न करो। लो, अब तुम एक पर्ची उठा लो। यदि तुमने वह पर्ची उठाई जिस पर 'विवाह' लिखा हुआ है, तो विवाह तुम्हें करना होगा।

जैकब—(कुछ भयभीत होकर) न भई न! मुझ में इतना साहस नहीं, पहले तुम ही उठाओ।

विलियम—(अधीर होकर) अच्छा, ऐसे ही सही। (पर्ची उठाने लगता है।)

जैकब—(रोक कर) ठहरो, पहले अपनी आंखें बन्द कर लो। इधर आओ, मैं तुम्हारी आंखें मूंद दूं।

(जैकब विलियम की आंखें हाथों से बन्द करता है और विलियम फैल्ट में से एक पर्ची उठा लेता है।)

विलियम—यह रहा मेरे भाग्य का निर्णय। अब छोड़ दो मेरी आंखें।

जैकब—(आंखों पर से हाथ हटा कर पर्ची की ओर संकेत करते हुए) अब खोलो इसको।

विलियम—ऊंहूँ! पहले तुम दूसरी पर्ची उठा लो। फिर एक साथ दोनों खोलेंगे।

जैकब—(कांपते हुए हाथों से पर्ची उठाते हुए कांपते हुए स्वर में कहता है) लो भई, यह रहा मेरे भाग्य का निर्णय।

(दोनों अपनी-अपनी पर्चियां खोलते हैं)

जैकब - (खोलने से पहले प्रार्थना करता है) हे ईश्वर···!

विलियम—(खुशी से उछलते हुए) खाली, मेरी पर्ची खाली!

जैकब—(जल्दी से अपनी पर्ची खोल कर धीरे-धीरे पढ़ता है) 'वि···वा···ह'। (फिर धम से कुर्सी पर गिरता है) हाय, मैं लुट गया!

विलियम—भाई साहब, यह भाग्य का निर्णय है। अब आपको विवाह करना ही होगा। मैं अभी मां को बुलाता हूँ (भागता हुआ बाहर जाता है।)

जैकब—हे भगवान! ···मेरा नया शब्दकोष ···! समय का खून···अमूल्य समय का खून·····!

(घड़ी में ग्यारह बजते हैं। विलियम और मिसिज स्मिथ कमरे में प्रवेश करते हैं)

विलियम - मां, जैकब भाई विवाह के लिये राजी हैं।

जैकब—विलियम···! दया करो···!

मिसिज स्मिथ—(न सुनते हुए) मेरा अच्छा बेटा जैकब! मैं न कहती थी कि मेरा जैकब भाग्यशाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। आज मेरे हर्ष की सीमा नहीं। वह कितना हर्ष का समय होगा जब बाजे बजेंगे, इस सूनी कोठी में मेहमानों की चहलपहल होगी, बहू के आभूषणों से घर में चकाचौंध होगी·····!

जैकब—(दुर्बल स्वर में) आभूषण···बहू···!

मिसिज स्मिथ—इस काम से तो मेरा रोम-रोम पुलकित होता है। मैं आज ही विवाह की तैयारी करूंगी।

जैकब—लेकिन, इतनी जल्दबाजी अच्छी नहीं होती, मां!

मिसिज स्मिथ—जल्दबाजी! (हंसती है) मेरे अच्छे जैकब, तुम्हें क्या मालूम कि विवाह में कितना काम होता है। कपड़े, गहने, फर्नीचर, मिठाई सब का तो प्रबन्ध करना है।

जैकब—अच्छा मां, जो जी में आये करो, लेकिन अब मेरा पीछा छोड़ो।

मिसिज स्मिथ—बेटा, तुम्हें क्या हो रहा है?

जैकब—मां, मेरे शरीर से अंगारे छूट रहे हैं।

विलियम—मां, शकुन तो सब अच्छे हैं। वह देखो सामने सहन में लिली आ रही है।

मिसिज स्मिथ—देखो बेटा जैकब, जरा कपड़े बदल लो। लिली तुम्हें इन कपड़ों में देख कर क्या कहेगी?

जैकब—(उकता कर) जो भी कहे, मुझे कुछ परवाह नहीं।

विलियम—मां, अब तुम जाओ, भाई साहब से निबट लूंगा।

मिसिज स्मिथ—(सहन के दूसरी ओर के घरे में जाती है। मार्ग में लिली के हाथ में पुस्तक देख कर बुड़बुड़ाती है) हे भगवान, यह पुस्तकों का रोग तो लिली को भी लग गया! अब इस घर को ईश्वर ही बचाये! (लिली के पास पहुंच कर) लिली, तुम्हारे हाथ में क्या है?

लिली—(चौंक कर) पुस्तक है, मौसी।

मिसिज स्मिथ—मेरा विचार था कि इस घर में किताबी कीड़े पहले ही से बहुत हैं!

लिली—मौसी, यह तो विलियम भाई की नई पुस्तक है—'हिम-यात्रा'। अत्यन्त रोचक पुस्तक है। बिना समाप्त किये छोड़ने को जी नहीं चाहता।

मिसिज स्मिथ—यदि तुम्हें पुस्तकें ही पसन्द हैं, तो जैकब इनसे कहीं मोटी-मोटी पुस्तकें लिखता है।

लिली—यह तो मैं खूब जानती हूँ कि जैकब भाई बड़ी-बड़ी विद्वत्तापूर्ण पुस्तकें लिखते हैं, परन्तु वे पुस्तकें रोचक नहीं। सच कहूं, मुझे तो उनमें से कुछ समझ में भी नहीं आता।

मिसिज स्मिथ—अच्छा, तुम जानो, तुम्हारा काम। (जाती है।)

(लिली सहन में एक बैंच पर बैठ कर पुस्तक पढ़ने में निमग्न हो जाती है, लेकिन कभी-कभी सामने बरामदे में विलियम और जैकब को भी देख लेती है, जो आपस में बातें कर रहे हैं।)

विलियम—मां ठीक कहती है, भाई जैकब। अब विवाह करना ही है, तो कपड़े भी बदल डालो। जब तक लिली यहां है, उस पर अच्छा ही प्रभाव पड़ना चाहिये।

जैकब—अच्छा भई, यों ही सही। बलि से पहले बकरे को खूब सजा लो। (कमरे में चला जाता है।)

विलियम—(अपने आप लिली को देखते हुए) जेकब है तो भाग्यशाली! और फिर लिली का रंग-रूप भी तो उस परी की न्याईं सुन्दर है, जिसने एक राजकुमार के साथ विवाह करने के लिये सहस्रों मनुष्यों को पत्थर बना दिया था। परन्तु जैकब भाई तो उस राजकुमार जैसे नहीं हैं। कपड़े बदलने से क्या होता है! (पांव की चाप) वह कपड़े बदल कर शायद आ ही रहा है।

(जैकब कपड़े बदलकर आता है। उसने नीला कुर्त्ता, काली नेकटाई, लाल स्वेटर और उस पर घुटा हुआ हरा कोट पहन रखा है।)

विलियम—वाह भाई जैकब, खूब है! अब कहीं लिली इधर देख ले तो···।

जैकब—तो क्या हो?

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

तृप्ति

★

"मैं सोचती थी कि पुरुष कायर है, हीन है; परन्तु नहीं, नारी भी हीन है, पतिता है!"

★

लेखक—

श्रीराम शर्मा 'राम'

माला के लिए यह प्रश्न चिन्ता का विषय इसलिए बना कि राधाकान्त ने एक दिन शराब के नशे में स्पष्ट कह दिया कि वह उसे प्यार न कर सकेगा, लेखा के होते उसे ग्रहण न कर सकेगा, और माला ने बहुत पहले एक दिन अपने माता-पिता से यह कहा था कि वह राधाकान्त से ही विवाह करेगी सचमुच इतना कहने के लिए उसे बहुत बड़ा साह बटोरना पड़ा था। पहिले मां से कहा था; फिर ए दिन पिता से। उसने मां को तो अपने पक्ष में सुगमत से कर लिया, परन्तु जब पिता उसकी इच्छा से सहम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए, तो उसने विद्रोही-रूप धारण किया था। और ता उसके लिए क्या करेंगे, यह वह अन्त तक भी न मझ पाई थी। जीवन में एक इच्छा पैदा हुई थी, जो काएक ही प्रश्न बनी, फिर चिन्ता और फिर दुराशा। ह एक ऐसी विषम स्थिति थी जो उससे न सटकी ाती थी, न थूकी जाती थी।

और राधाकान्त अघ सचमुच ही लेखा के पक्ष में ा गया था।

इतना देखकर माला सोचती, पुरुष निकम्मा है, ायर है। निःसन्देह लेखा और माला का कहीं समन्वय हीं था। लेखा धनिक की पुत्री थी, रूपवती भी थी। ावन के जिस झंझावात में वह डोल गयी थी, सका अन्त उसे न दीखता था। तूफान ठ रहा था, उसे बहाये लिए जा रहा था और वह ांख मूंद कर मानो उसके प्रति आत्म-समर्पित हो की थी। वह जीवन के किसी एक और परम क्षण में ह मान गयी थी कि जीवन यह है, सुवास यह है, माधुर्य्य ह है···! और इसी अवस्था में वह राधाकान्त को पा, र्लक्ष्य और चेतनाहीन बनी हुई-सी एकाएक ही समें खो गयी।

किन्तु माला की अवस्था और थी। उसके पास धन था, न रूप। यौवन का कोई बाह्य र भी उसने राधाकान्त पर प्रगट नहीं किया था। त पुरानी हो गयी, परन्तु उसे याद थी कि एक दिन धाकान्त उसके घर आया था। वह उसके पिता से कर मिला था। उसी अवसर पर माला ने उसे ा। बातें चलीं और जीवन में पहिली बार उसने भा कि इस सुन्दर राधाकान्त में भावना है, प्रेम और समर्पण है। निदान, उनका मिलना आरम्भ गया। कभी घर पर, कभी बाहर। इसी अवस्था में क दिन राधाकान्त ने माला को सुना कर कहा था— ं तुम्हें प्यार करता हूँ, जीवन का समूचा समर्पण हें भेंट करता हूं, माला देवी!"

माला क्या कहती, उसका सिर झुक गया। लों पर लाली दौड़ गई। उसने सांस भरी र अपना सिर राधाकान्त के कन्धे पर रखकर कहा—"जानते हो, तुमने क्या कह दिया। इसे भूल न जाना। माला तुम्हारी है, इसे चाहे गले में डालना, चाहे·····!"

आतुर भाव में राधाकान्त बोला—"यह माला मेरे हृदय-मन्दिर में संजोयी जायेगी, मेरे जीवन का पवित्रतम स्थान पायेगी!"

परन्तु एक दिन आया जबकि राधाकांत अपनी इस प्रतिज्ञा को सचमुच ही भूल गया। माला को हृदय-मंदिर में संजोना तो दूर रहा, चरणों में स्थान देना भी उसे स्वीकार नहीं था। पहले तो कई दिन तक माला ने इस पर विश्वास नहीं किया कि राधाकान्त ने शराब के नशे में जो कुछ कहा, वह ठीक था। परन्तु अविश्वास योग्य उसमें कुछ नहीं रह गया था। इतना स्वयं उसके कानों ने सुन लिया था कि राधाकान्त शराब पीता है, लेखा के साथ घूमता है। वह राधाकान्त लेखा के साथ मोटर में आता-जाता है, इतना उसने भी कई बार देख लिया था। उसे इस बात का भी पता था कि शराब के नशे में यद्यपि आदमी ज्ञान-शून्य और संज्ञा-शून्य हो जाता है, परन्तु उस अवस्था में वह जो कुछ कहता है, वह हृदय की बात होती है, उसके मन का ही प्रतिरूप। अतएव जब कई दिन बाद राधाकान्त माला से मिला और माला ने उससे शराब पीने के विषय में प्रसंग छेड़ा, तो तभी उसने जैसे चिढ़ कर कह दिया, "हां, माला, मैं शराब पीता हूँ, लेखा के घर भी आता जाता हूँ।"

माला ने कहा—"मैंने केवल शराब के बारे में पूछा था, लेखा के यहां आने जाने के बारे में नहीं।"

किन्तु राधाकान्त के मन में तो जैसे कोई बोल रहा था, उसे बाध्य भी कर रहा था। अतएव उसने फिर कहा—"न, माला, तुम भ्रम में न रहो। मेरा तुम से सम्बन्ध भी न हो सकेगा।"

माला ने कहा—"तुम शराब पिये हो, नशे में हो। अपना विवेक खो बैठे हो।"

राधाकान्त बोला—"लेकिन मैं ज्ञान नहीं खो बैठा। लेखा को पाया, तो मैं रुपया भी पाऊंगा। वह

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पिता की इकलौती सन्तान है। लाखों का धन है; उसके पिता मरे तो वह धन मैं सुगमता से ले सकूंगा।"

कहते हुए उसने हाथ की सिगरेट फेंक दी। वह जलती हुई सिगरेट जहां गिरी, वहां कुछ देर में धुएं की एक पतली रेखा ही शेष रह गई। धुएं की उसी रेखा को घूरती हुई वह माला जैसे सचमुच ही अधीर हो उठी। उसी ओर देखते हुए वह बोली—"राधे बाबू, लेखा की तरह नारी तो मैं भी हूँ। आत्मसम्मान भी रखती हूँ। सचमुच, इस क्षण तुम नहीं सोच पाये कि इतना सुनकर मैं क्या कर सकती हूं। तुम भूल गये हो कि नारी-जीवन के साथ इस तरह की खिलवाड़ करना संगत तो है ही नहीं, पाप भी है। यही दुराचार है।"

कहते हुए उसका स्वर रुंध गया। गला भर आया। उसकी आंखों के द्वार पर जो आंसू छलछला आये, वे राधाकान्त के सामने ही न कहीं बह जायें, इसलिए वह जल्दी से अपना मुंह एक ओर करके कमरे की ओर जाती हुई बोली—"तुम जाओ, जाओ तुम!"

क्षण भर राधाकान्त वहां खड़ा रहा। उसने दूसरी सिगरेट सुलगाई और होंठों पर हल्की-सी मुसकराहट लाकर, धीरे-धीरे मन्थर गति से वहां से चल दिया।

देर हुई कि राधाकान्त चला गया। वह उस मोहल्ले से भी बाहर हो गया। परन्तु अपने कमरे में गयी माला के अन्तर में जैसे भूचाल उठ आया था। उसे लगा कि उसके वक्ष में जो छोटा-सा हृदय है—रक्त-मांस का—उसके पास ही आग की भट्टी भी सुलग रही है। वही आग अब उसके अन्तर-प्रदेश में चारों ओर छितरा गयी है। राधाकान्त ने ही छितराई है वह आग! जैसे चिढ़ कर, क्रोधवश, अथवा नशे में। परन्तु जो हो, माला तो जल रही है। अब उसकी आंखों में आंसू नहीं हैं। प्रतिशोध की आग है, हिंसा और क्षोभ की आग है। उसने बार-बार सोचा — सचमुच कमीना होता है यह आदमी! धूर्त है राधाकान्त! वह सोच रही थी—यह देश के लिए जेल गया, सुधारवादी बना। मैंने समझा, मुझे अच्छा पति मिला है। जीवन मिल जायगा, तो पैसे की ओर नहीं दौड़ेंगे, मानवीयता और जन-कल्याण की ओर देखेंगे। हम जीवन ही पायेंगे, सच्चा और शुभ! परन्तु वह आशा दुराशा सिद्ध हुई। क्या पता था मुझे कि मेरे मानस में ही प्रेम है, त्याग है, कोई अभिलाषा है, उसी को इस राधाकान्त के सामने रखा और पाना चाहा। राधाकान्त ने स्वयं ही मेरे मानस को अस्तव्यस्त बना दिया—जहां थी, वहां से दूर ही हटा दिया·····

उसी समय मां ने आकर कहा—"अरी, माला, कब तक पड़ी रहेगी? उठ, शाम होने को आई। चूल्हे में आग जला।"

लेकिन माला ने नहीं सुना, जैसे सुनकर टाल दिया।

तदनन्तर ही मां ने फिर आंगन में खड़े होकर आवाज दी—"माला!"

माला उठी, बाहर गयी।

चढ़ी हुई आंखें देखकर मां बोली—'क्या है?' फिर पास आकर कहा, "हां, राधाकान्त आया था क्या? कुछ कहा उसने?"

माला ने उत्तर नहीं दिया। उसने रसोई में जाकर चूल्हा जलाना आरम्भ कर दिया।

उसी समय रसोई की दहलीज पर खड़ी होकर मां ने कहा, "आज कहते थे तेरे पिता जी, माला से पूछो उसकी क्या इच्छा है। इन गर्मियों में ही विवाह कर देंगे।" माला के और समीप जाकर बोली, "बेटी, तू जहां रहे, सुख से रहे, अच्छी रहे, यही तो तेरे माता-पिता की चाहना है। तेरे पिता ने कहा तो नहीं, परन्तु वह राधाकान्त के साथ भी···"

तभी चूल्हे के धुएं और अपने अन्तर में मण्डराते हुए धुएं से भरी हुई आंखों को ले माला ने एकाएक क्रुद्ध बनकर कहा—"मां, तुम्हें क्या हो गया है? तुम्हें विवाह ही सूझता है।"

मां ने माला की वे लाल सूजी आंखें देखीं—दुःखी और खिन्न। देखकर वह कुछ हतप्रभ-सी रह गयी। परन्तु उसके मन में जो बात थी, वह उसी को लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोली—"न, बेटी, अब सयानी हुई तू! हमारा क्या भरोसा, आज हैं, कल नहीं। आखिर विवाह तो करना ही है न!"

तीखे स्वर में माला ने कहा—"मैं विवाह नहीं करूंगी। भारी हूँ तो मार दो, मेरा गला घोट दो।"

मुस्कराती हुई मां ने कहा—"पगली है!"

माला चुप रही। उसने चूल्हा जलाकर पतीली उस पर रख दी। छिला और कतरा हुआ साग पास कर लिया। मसालेदानी भी ऊपर से उतार ली। घी का डिब्बा भी रख लिया। जब पतीली में घी और मसाला डालकर वह साग छौंकने लगी, तो उसके छु-न-न के साथ जैसे चौंक कर ही मां ने कहा—"तो बता न, राधाकान्त आया था?"

माला चुप। वह साग छौंक कर आटा गूंधने लगी।

मां ने फिर पूछा—"क्या कहता था? तूने भी उससे विवाह के लिए कहा था?"

माला ने चूल्हे की जलती हुई लकड़ी ठीक की और कहा—"वह विवाह नहीं करेगा।"

"कौन, राधाकान्त?" जैसे आसमान से गिर कर मां ने एकाएक कहा।

किन्तु उसी समय माला ने कहा—"देखो मां, मैं तुमसे कहती हूं, मैं विवाह नहीं करूंगी, नहीं करूँगी।"

मां ने उसकी बात पकड़ कर कहा—"हूँ, नहीं करेगी। बाप की नाक न कटेगी? समाज मुंह पर कहेगा और थूकेगा—पंडित जी, जवान लड़की घर में है और तुम चुप बैठे हो!"

माला ने कहा—"मैं समाज से कह लूंगी।"

"और जब हम कल को मर जायेंगे, तब?"

"तो मुझे हजारों वर्ष जीना पड़ेगा क्या?"

मां सदय भाव लेकर बोली—"न, बेटी, ऐसा नहीं सोचा करते, कहा भी नहीं करते। तू लड़की की जात, अच्छी भी रहे, तो समाज मनमानी बात कहेगा; वह तुझे ऐसे नहीं जीने देगा।"

माला आटा गूंध रही थी, मां की बात सुनकर बोली—"तो मैं मर जाऊंगी, मैं चली जाऊंगी।"

सुनकर मां ने हंस दिया। वह वहां से चली गयी और माला के मन में जो कुछ आ-जा रहा था, उसका ताण्डव-नृत्य फिर आरम्भ हो गया।

किन्तु रात में जब माला के पिता भोजन करके हुक्का पी रहे थे, तभी माला की मां वहां पहुँची और बोली—"सुनते हो, अब क्या सोचा है तुमने?"

हुक्के से मुंह उठाकर माला के पिता ने प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा।

माला की मां बोली—"माला का विवाह····?"

वह बोले—"हां, लड़का देखा है एक। वह पढ़ रहा है बी० ए० में। रामधनजी ने बताया।" और तभी वह अपनी बात रोक कर बोले—"और राधाकान्त! क्या···?"

बीच ही में माला की मां ने कहा—"राधाकान्त से सम्बन्ध नहीं बनेगा।"

उन्होंने माथे में बल डालकर कहा—"न बने। मैं बनाना भी नहीं चाहता। उसके पिता वकील हैं। जाने क्या आशा लगाये बैठे हैं। मेरा उनका सौदा नहीं पटेगा। अच्छा किया, तुमने माला को समझा दिया।"

उसने कहा—"माला बच्ची नहीं है, अपना भला-बुरा···"

"हां, हां, मैं जानता नहीं क्या?" पिता ने कहा, "माला की मां, हमारे पास धन नहीं है, नहीं तो यह माला किसी राजा के घर जाती। जो रूप-गुण हमारी बेटी में हैं, वह क्या आम लड़कियों में दिखाई देते हैं—बड़ी साध्वी, बड़ी सुशील! अब तो मेरे सामने खड़ी होती भी लजाती है।"

मां ने कहा—"लड़का देख लो।"

"हां, अब जल्दी देखूंगा। भगवान ने चाहा तो इन्हीं गर्मियों में विवाह कर दूंगा।"

उस समय मां के मन में था कि कहे, शायद राधाकान्त ने स्वयं ही यह सम्बन्ध स्वीकार नहीं किया। आज माला दुःखी है, उसने यह भी बताना चाहा। परन्तु इतना उसने नहीं कहा। बात मुंह पर आ रही

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी, पर उसे रोक लिया। उसकी लड़की के भाग्य में क्या है, बस, इतनी सी बात उसके मस्तिष्क में आई। उसने सांस भरा और छोड़ा। बाद में वह कमरा भी उसने छोड़ दिया। डबडबाई आंखों के साथ लगता था कि मां की ममता रो रही है।

* * *

समय चल रहा था, दिन भाग रहे थे। उन्हीं दिनों माला के पिता को एकाएक ही ठण्ड लगी, ज्वर आया और बाद में उन्होंने अपने जीवन से नाता तोड़ दिया। पीछे माला रह गयी, और उसकी मां।

एक दिन माला ने कहा—"मां, मैं आगे पढ़ूंगी।"

मां ने कह दिया—"तेरी इच्छा।"

माला ने डाक्टरी पढ़ना फिर आरम्भ किया। बीच में कई बार मां ने विवाह का प्रसंग छेड़ा, तो माला ने कभी दुलार से, कभी क्रोध से उसे रोक दिया। वैसे समाज कहां जा रहा है, व्यक्ति किस ओर मुड़ रहा है, यदा-कदा हवा के झोंके की तरह माला के मन में विचार उठता, परन्तु वह रुकता नहीं था, बहते हुए पानी की तरह बह जाता। वह अपनी धुन की पक्की है, सब कुछ भूल कर वह अपने काम में व्यस्त है। वह डाक्टरी की किताबें और आपरेशन के धन्धों में लगी है। परिश्रम कर रही है। किताबें छोड़ती है, तो रोगियों की सेवा में, चीर-फाड़ में, प्रयोगों में लग जाती है। अजीब ही जीवन है उसका!

और एक दिन माला अपनी परीक्षा में पास होकर डाक्टरनी बन गई। उसकी एक दूसरे शहर के सरकारी अस्पताल में नियुक्ति हुई। मां भी साथ गयी। थोड़े ही दिनों में माला एक प्रसिद्ध डाक्टरनी बन गई। सब जगह उसकी प्रतिष्ठा थी, मान था।

* * *

बड़ा देश, बड़ी बातें। देश के एक खण्ड में भयंकर लड़ाई छिड़ी और घायल सैनिकों की भीड़ माला के अस्पताल में भी लग गई। माला का काम बढ़ गया। वह रात दिन अस्पताल के अन्दर ही रहती, एक-एक रोगी और घायल को देखती, मरहम पट्टी करती, दवा देती, नया जीवन प्रदान करती।

उसी अवसर पर एक रोगी अतिशय घायल अवस्था में वहां लाया गया। उसके शरीर में कई स्थानों पर गोली लगी थी और दोनों आंखें खराब हो चुकी थीं। उसके बचने की आशा भी नहीं थी, परन्तु माला उसे बचाने के लिये भरपूर प्रयत्न कर रही थी।

रात का तीसरा पहर था। माला अपनी कमर सीधी करने के लिये जरा लेटी ही थी कि नर्स ने आकर सूचना दी कि रोगी की अवस्था खराब है। माला तुरंत उसके पास आई। रोगी कराह रहा था। बीच बीच में वह चीख भी उठता था। पुरुषों के प्रति माला के मन में घृणा का भाव अभी तक बना हुआ था। परन्तु आज इस सैनिक को वेदना से तड़पता, छटपटाता और चीखता देखकर घृणा का स्थान दया ने ले लिया। रोगी अभी युवा ही था। माला ने सोचा; इसने भला जीवन में क्या देखा होगा? पता नहीं किन साधों और अभिलाषाओं का पुंज है यह वीर सैनिक! एकाएक माला ने कहा—"सैनिक!"

सैनिक की आंखों पर पट्टी बंधी थी, वह माला को देख नहीं सका। अपनी दीन अवस्था में ही कठिनाई से उसने कहा—"तुम कौन हो? डाक्टरनी? नर्स?"

नर्स ने कहा—"आप हैं डाक्टरनी।"

"तो डाक्टरनी जी, मेरा एक काम कीजिये! बड़ी कृपा होगी! मुझे आप शांति दीजिये। आप नहीं जानतीं, मुझे इतना शरीर का कष्ट नहीं जितना मन का। एक पत्र मेरी जेब में पड़ा है, उसे निकाल कर पढ़ दीजिये।"

माला ने उसके कपड़े मंगाये। कोट की जेब से पत्र निकाला। लिफाफा खोला और पढ़ना आरम्भ किया। वह किसी लड़की का पत्र था—किसी युवती का। जब माला ने उसे पढ़ लिया, तो चाहा कि उसका सारांश सैनिक को सुना दे। उससे कह दे, यह पत्र तुम्हारी प्रेमिका का है। किन्तु माला ने वह पत्र पढ़ कर भी उस सैनिक को सुनाना पसन्द नहीं किया। अपितु उसे धैर्य दिया और कहा, "अच्छे हो जाओ, तो पत्र पढ़ना। "फिर कुछ रुक कर पूछा—"कोई तुम्हारी प्रेमिका है?"

सैनिक ने जैसे आतुर स्वर में कहा—"रेणुका?"

माला ने उदास भाव लेकर कहा—हां, रेणुका।"

"क्या लिखा है उसने? लिखा है कि वह मुझे प्यार करती है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल्दी से, कठिनाई के साथ, माला ने कहा—"हां, लिखा है।"

"तो वह मुझ से विवाह करेगी?"

"हां, करेगी!"

"ओह, मेरे भगवान!" सैनिक कुछ देर के लिये अपनी पीड़ा भूल गया। उसके मुख पर हर्ष था, उल्लास था और था सन्तोष।

उसी समय माला ने देखा कि रात भर की जागी हुई नर्स थक गई है, जम्हाई भी ले रही है। बाहर प्रातः की अरुणिमा फूटने लगी। माला ने नर्स को जाने का संकेत किया और मन में कहा—मैं सोचती थी कि पुरुष कायर है, हीन है; पर नहीं, नारी भी हीन है, पतिता है।

सैनिक की प्रेमिका का पत्र अभी तक उसके हाथ में था। वह अब उसने मुट्ठी में भींच लिया था। उसका हाथ कांप रहा था। सैनिक की आंखों पर पट्टी बंधी थी, वह न देख सकता था, न अधिक कह सकता था। अब ज्यों-ज्यों सवेरा होता जा रहा था, त्यों त्यों उसका प्राण भी जैसे किसी भंवर में फंसता जा रहा था। माला ने उसे चार इन्जेक्शन दिये। उनके बल पर ही वह अभी बोल रहा था। पर उसके हृदय में रक्त तो रह नहीं गया था। अतएव इन्जेक्शन देकर भी उसे अधिक जीवित नहीं रखा जा सकता था और माला के हाथ में जो उसकी प्रेमिका का पत्र था, यदि कहीं उसके एक-दो वाक्य वह उसे सुना दे, तो निश्चय ही वह एक क्षण न रहेगा, तुरन्त चल बसेगा। पत्र के मध्य में उसकी प्रेमिका ने लिखा था—'मैं तुम्हारे प्रतिस्पर्धी मोहन को प्यार करती हूं, तुमको नहीं। उसके पास रूप है, धन है, भावना है और प्यार है ···और तुम्हारे पास केवल प्यार है, बेजान, व्यर्थ का प्यार·····

उसी समय बाहर से हवा का एक झोंका आया। रोगी घबड़ाया। माला ने समझा, इन्जेक्शन का असर चला गया। परन्तु अब और लगाया जायगा, तो बेकार रहेगा। एकाएक वह सैनिक की ओर झुकी। उसके सीने पर हाथ रखकर बोली—"घबड़ाओ मत!"

सैनिक ने कातर-भाव में माला का हाथ पकड़ा, दबाया। फिर धीमे से बोला—"तुम,···तुम···"

तभी अतिशय भावुकता में माला ने कहा—"कोई बात हो, तो बताओ, मैं करूंगी।"

सुनकर सैनिक मुस्कराया। बोला—"तुम न करोगी।" फिर उसने अपनी उद्विग्न अवस्था के साथ ही कहा—"वह होती, वह रेणु···"

माला ने जैसे निरी बच्ची बनकर पूछा—"तुम क्या करते?"

वह आवेग के साथ बोला—"मैं उसे प्यार करता। मैं उससे कहता, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, रेणु! अब जाता हूं। खूब लड़ा, खूब मैदान में आगे बढ़ा। अब लौट जाता हूँ, अब·····" और तभी उसने अपना स्वर गिरा कर कहा, "पर वह मुझे प्यार न करेगी। वह मेरे पास न आयेगी। वह मुझे·····"

रोगी की अवस्था खराब हो रही थी। सांस बढ़ रही थी। माला कांप रही थी। वह रोगी पर झुकी हुई थी। रोगी की गरम सांसें उसके मुंह पर आ रही थीं। उसी अवस्था में बोली—"सैनिक!"

उसने कहा—"हूँ!"

"तुम देश के लिए लड़े, जाति के लिए लड़े! तुम वीर हो! तुम मनुष्य के गौरव के लिए लड़े!"

सैनिक ने कहा—'हूँ।"

"तो तुम मेरा प्यार लो···लो!" और कहते हुए उन्मादिनी-सी माला ने अपने होठों को सैनिक के होठों पर रख दिया।

किन्तु माला नहीं देख पाई कि उसी क्षण सैनिक का अन्तिम सांस आया और चला गया। फिर एक बार भी न उसका होठ हिला, न वह कुछ कह पाया।

* * *

दूसरे दिन माला को अपनी एक पुरानी सहेली का पत्र मिला कि राधाकान्त को किसी ने जहर दे दिया और उसका प्राणान्त हो गया। पत्र के अन्त में लिखा था कि शायद लेखा ने ही ऐसा किया, क्योंकि अभी तक उसने उससे विवाह नहीं किया था।

परन्तु माला को इससे क्या···राधाकान्त से···! जीवन का जितना सन्तोष उसने पा लिया, वह उसके लिए यथेष्ट था—शायद पूर्ण!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप महत्वाकांक्षी हैं ?

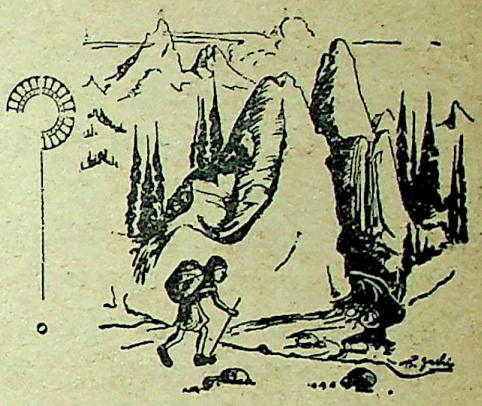

श्री निजेश

★

मेरे इस प्रश्न का उत्तर एकदम नकारात्मक नहीं हो सकता। यदि आप किशोर अथवा युवक हैं, तो इसी समय और यदि आप प्रौढ़ अथवा वृद्ध हैं, तो अपने प्रारम्भिक जीवन में आप अवश्य ही महत्वाकांक्षी रहे होंगे। अपने भी कभी एक चमकता हुआ खिलाड़ी, एक प्रभावशाली वक्ता, एक हृदयग्राही कवि या एक सर्वप्रसिद्ध अभिनेता बनने के मनसूबे बांधे होंगे। जब किसी राष्ट्रीय नेता के स्वागत के लिये जमा हुए अपार जन-समूह पर आपकी दृष्टि जाती होगी, तो उन दिनों की कल्पना आपके मन में खिंच जाती होगी, जब आप भी देश के एक महान् नेता होंगे और जनता इसी प्रकार अपार उत्साह के साथ आप का स्वागत करेगी और आपके भाषण सुनेगी। क्या सचमुच आपने इस तरह की इच्छायें कभी नहीं कीं? जरूर की हैं। आपके, मेरे, और संसार के हरेक मनुष्य के अन्दर इस तरह की महत्वाकांक्षायें निश्चित रूप से उठती हैं और आगे भी उठती रहेंगी।

इन महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिये प्रयत्न भी काफी किये जाते हैं। आप भूले न होंगे उन दिनों को जब एक स्वस्थ और सुन्दर शरीर पाने की अभिलाषा से आपने हर रोज की अपेक्षा कुछ जल्दी उठ कर व्यायाम करना शुरू किया था, या फिर अपनी श्रेणी में सर्वप्रथम आने के लिये आपने रात के बारह-बारह बजे तक जाग कर अपनी पुस्तकों को कण्ठस्थ किया था। यह सत्य है कि अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिये प्रत्येक मनुष्य प्रयत्न करता है, लेकिन उनमें से सफलता किसी बिरले को ही मिलती है। कारण? आइये हम पता करें।

संकल्प-शक्ति

दिन बीता, रात हुई। आप अपने पिछले जीवन पर दृष्टि डालते हैं। एक घोर पश्चात्ताप का भाव मन में उठता है। कितना समय आपने व्यर्थ में खो दिया! इसी समय का सदुपयोग करके आप अपने जीवन को कहाँ से कहाँ ले जा सकते थे! खैर, कोई बात नहीं। आपकी उत्साहभरी आशा जाग उठती है। कल से शुरू होने वाले नए समय के एक एक मिनट का सदुपयोग करने का आप निश्चय करते हैं। आपकी डायरी में अगले दिन का कार्यक्रम लिखा जाता है — साढ़े चार बजे जागरण; पांच तक नित्यकर्म; साढ़े पांच तक व्यायाम; साढ़े छः तक उपनिषद्, बाइबिल, कुरान या गीता; सात तक घर का काम-काज और उसके बाद स्कूल या दफ्तर। आपका दृढ़ निश्चय है कि कल के दिन का एक भी मिनट आप व्यर्थ नहीं जाने देंगे और विश्वास है कि कुछ दिनों तक निरन्तर इसी प्रकार आगे बढ़ने से आप अपनी महत्वाकांक्षाओं के ध्येय तक पहुँच जायंगे। आपकी मानसिक योजना पूरी हो चुकी है। सिर्फ उसके अनुसार शरीर को काम करना बाकी है। एक नवीन उत्साह को मन में लेकर आप रात को सोने जाते हैं।

सुबह के साढ़े चार बजते हैं। घड़ी अलार्म बजा कर चुप हो चुकी है। पिछले दिन के निश्चय के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार आप उठने की कोशिश करते हैं। लेकिन वर्षों से सुबह की मीठी नींद सोने की आदत जो पड़ी हुई है। आपके निश्चयों की नींव कुछ हिलने-सी लगती है। सोचते हैं — एकाएक जल्दी उठने से जुकाम हो जाने की सम्भावना है। कल से उठना ठीक रहेगा। आपकी रजाई फिर से आपके मुंह को ढक लेती है। यहां पर आपकी सङ्कल्प-शक्ति आपकी मानसिक योजनाओं की ऊंचाई तक पहुँची हुई नहीं है। आप एक चीज़ की इच्छा कर सकते हैं, उसे पाने का मार्ग भी सोच सकते हैं, लेकिन उस मार्ग पर चलने की दृढ़ता आपके अन्दर नहीं है।

शारीरिक सामर्थ्य

दूसरी ओर यह भी सम्भव है कि आपकी सङ्कल्प-शक्ति काफी दृढ़ हो और आप जी कड़ा करके ठीक समय पर उठ जायें। नित्यकर्मों के बाद व्यायाम का नम्बर आता है।

अपने नंगे शरीर की ओर आप दृष्टि डालते हैं। कितना कमजोर है यह! या तो जगह-जगह हड्डियां दिखाई दे रही हैं या फिर सब जगह चर्बी ही चर्बी भरी हुई है। खैर, शरीर को स्वस्थ और सुन्दर बनाने की प्रबल भावना से आप व्यायाम शुरू करते हैं। एक मिनट, दो मिनट, तीन मिनट। पांचवें मिनट तक पहुँचते-पहुँचते आपकी सांस फूल जाती है। शरीर इतने में ही बुरी तरह थक जाता है। पर यह भी कोई व्यायाम हुआ? बड़े-बड़े पहलवान तो बिना थके घण्टों कसरत करते रहते हैं। तो आप भी क्यों नहीं कर सकते? एक बार फिर आपकी इच्छा जोर पकड़ती है। आंखें बन्द करके और एक गहरी सांस भरके आप फिर अपना व्यायाम शुरू करते हैं। लेकिन ज्यादा नहीं। आपके हाथ-पैर जवाब देने लगते हैं। हिम्मत हार कर आप बैठ जाते हैं। अगले दिन फिर किसी तरह जी कड़ा करके आप पहले दिन से कुछ अधिक ही व्यायाम कर डालते हैं। दो दिन बाद आप फीते और तराजू से अपने शरीर का माप-तौल करते हैं। कहीं भी तो वृद्धि नहीं हुई उसमें! तो क्या आपकी गामा बनने की मानसिक योजनायें केवल भ्रममात्र थीं? आप शायद ऐसा ही सोचेंगे और सम्भवतः कुछ देर के लिये शरीर की ओर से निराश भी हो जायं, क्योंकि आपके शरीर ने आपके अनुमान के अनुसार वृद्धि नहीं की है। यहां पर आपकी शारीरिक प्रकृति की सामर्थ्य आपकी मानसिक योजनाओं की ऊंचाई तक पहुँचने में असमर्थ है।

परिस्थिति

सङ्कल्प-शक्ति और प्रकृति-सामर्थ्य के अलावा एक चीज और भी है, जोकि आपकी सफलता के मार्ग में कभी-कभी बाधक बन सकती है और वह है परिस्थिति। आप एक शारीरिक प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये पूरे उत्साह और आत्मविश्वास के साथ तैयारी कर रहे हैं। साल भर एक ही स्थान पर रहकर हर रोज व्यायाम आदि से आप अपने शरीर की उन्नति करते हैं। लेकिन प्रतियोगिता में आप पाते हैं कि आपके शरीर ने आपकी आशाओं का साथ नहीं दिया। कारण यह कि जिस स्थान पर रहकर आपने शारीरिक उन्नति करने का प्रयत्न किया, वहां का जलवायु आपके लिये थोड़ा-सा प्रतिकूल पड़ा और उसने धीरे-धीरे अदृश्य रूप से आपके शरीर के पाचन-संस्थान को स्वाभाविक तौर पर काम करने से रोक दिया। अपनी ओर से जी तोड़ प्रयत्न करने के बाद भी यदि आप उस प्रतियोगिता में सफल नहीं होते, तो आपके लिये निराश हो जाना स्वाभाविक है और यह भी सम्भव है कि आप निराश होकर प्रयत्न करना छोड़ दें। यहां पर भी आप चीज की वास्तविकता को न समझते हुए एक गलती कर रहे हैं।

निराशा क्यों?

तथ्य यह है कि आपका मन बिना किसी चीज पर ध्यान दिये बड़े वेग से योजनायें बनाता रहता है। आप उससे अपने ही क्यों, सारे संसार के कल्याण की योजनायें मिनटों में बनवा सकते हैं। लेकिन उन योजनाओं को क्रियात्मक रूप देते समय आपको कल्पना का नहीं, अपितु जीवन के नग्न सत्यों का सामना करना पड़ता है। कितनी बार आपने कोई गलती करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद कहा होगा, "हे परमेश्वर, मैं सच्चे दिल से प्रतिज्ञा करता हूं कि आगे से मैं यह गलती कभी न करूंगा।" लेकिन क्या आप उन प्रतिज्ञाओं को पूरा कर सके? शायद कभी नहीं। कारण यह कि आपकी सङ्कल्प-शक्ति अभी इतनी दृढ़ नहीं है कि आप उन प्रलोभनों का सामना कर सकें, जिनसे बचने की आपने प्रतिज्ञा की है। कई बार आप एक पुस्तक लेकर पढ़ने बैठे होंगे इस निश्चय के साथ कि पुस्तक पूरी पढ़के ही उठना है। लेकिन बीस-पच्चीस पृष्ठ पढ़ने के बाद आपका ध्यान उस पुस्तक से हटकर इधर-उधर जाने लगा होगा और कुछ ही देर बाद आपको वह पुस्तक बन्द कर देनी पड़ी होगी।

क्या विचार है आपका? क्या आप अपने जीवन में कभी कोई पुस्तक पूरी नहीं पढ़ पायेंगे? क्या इस तरह आपकी एक प्रोफेसर, अर्थशास्त्री या राजनीतिज्ञ बनने की महत्वाकांक्षायें कभी पूरी नहीं हो पायेंगी? अगर आप वास्तव में ऐसा समझ बैठते हैं, तो यहीं से आपके जीवन में निराशावाद प्रारम्भ होता है। संसार के निराशावादियों का समुदाय अधिकतर ऐसे ही व्यक्तियों से मिलकर बना है जिन्होंने प्रयत्न करके अपनी महत्वाकांक्षाओं के ध्येय तक पहुँचने की कोशिश की, लेकिन किसी कारणवश उसमें सफल न हो सके।

सही योजना : सही प्रयत्न

वे कारण क्या-क्या हैं, यह आप पीछे देख चुके हैं। आपकी मानसिक योजनायें इतनी ऊंचाई तक बन जाती हैं कि आपकी सङ्कल्प-शक्ति, आपकी प्रकृति की सामर्थ्य और आपकी परिस्थितियां उन योजनाओं का साथ देने में असमर्थ रहती हैं। जब आप अपने प्रयत्नों के फल को अपने अनुमान के बराबर नहीं पाते, तो आपको निराशा होनी स्वाभाविक है। इसी निराशा ने आपको अकर्मण्य और भाग्यवादी बना दिया है। आज आप एक हसरतभरी निगाह से अपनी उन महत्वाकांक्षाओं की समाधि की ओर ताकते हैं और एक ठण्डी आह लेकर सोचते हैं—काश, मैं उन तक कभी पहुँच पाता!

क्या आप वास्तव में उन तक नहीं पहुँच सकते? अवश्य पहुँच सकते हैं — बशर्ते कि आप सही-सही मार्ग अपनायें। महत्वाकांक्षाओं के ध्येय तक पहुँचने के लिए आपका मन जब योजनायें बना रहा हो, उस समय अपनी सङ्कल्प-शक्ति, अपनी प्रकृति और अपनी परिस्थितियों से सलाह लेना न भूलिये। मानसिक योजनायें उतनी ही गति की बनाइये, जिस पर कि आपका भौतिक शरीर भी चल सके। एक ऊंचा महल खड़ा करने के लिए यह मत सोचिये कि चौबीस घण्टे के अन्दर-अन्दर ही आप उस महल को अपनी आंखों के सामने बना देख लेंगे। पहले अपनी सामर्थ्य और अपने साधनों का सही-सही अन्दाज कीजिये और उसके बाद योजना बनाइये कि किस गति से आपने उस महल की इमारत को धीरे-धीरे उठाना है। एक ही दिन में चोटी तक पहुँच जाने का प्रयत्न करने से निराशा के सिवाय कुछ हाथ न लगेगा। आपके जीवन की इमारत के साथ भी यही बात है। आप उसकी चोटी तक, अपनी महत्वाकांक्षाओं के ध्येय तक पहुँचेंगे अवश्य, बशर्ते कि आप उसकी नींव से चलना प्रारम्भ करें। अपने साधनों की सामर्थ्य बढ़ाइये। अपनी सङ्कल्प-शक्ति को दृढ़ कीजिये। रात को सोते समय निश्चय कीजिये कि आप अमुक समय पर जग जायेंगे। एक दो दिन न सही, पर कुछ ही दिन में आप अपने प्रयत्न में अवश्य सफल होंगे। अपने शरीर की शक्ति को भी व्यायाम और सात्विक भोजन आदि के द्वारा बढ़ाइये। अपनी परिस्थितियों को भी, जहां तक सम्भव हो, अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न कीजिये। और इस तरह जैसे-जैसे आपके भौतिक शरीर की सामर्थ्य बढ़ती जाय, वैसे-वैसे अपनी मानसिक योजनाओं को भी अधिक वेगशील बनाते जाइये।

इस तरह व्यवस्था के अनुसार कार्य करने से आप पायेंगे कि आप सदा ही उतना कार्य कर लेते हैं जितने की आपको आशा होती है। उस समय किसी भी हालत में आपके मन की शांति भंग न हो सकेगी। आप देखेंगे कि एक धीमे, लेकिन निरन्तर वेग के साथ आप अपनी महत्वाकांक्षाओं के ध्येय तक पहुँचते जा रहे हैं। तब आपका वह जीवन पूर्ण शांति, सन्तोष और उन्नति का जीवन होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीनी जीवन की एक कहानी

दीपक का देवता

श्री ऐल्बर्ट डारिंगटन

जिम्मी आमून का बंगला दूर तक फैली हुई हरी-हरी घास के बीच में एक छोटा-सा मन्दिर लगता था। दूर तक एक भी वृक्ष या झाड़ी नहीं थी। प्रातःकालीन सूर्य की किरणें जब उस सफेद पुते हुए बंगले पर पड़तीं, तो बड़ी भली लगतीं। पूर्व की ओर को चार चौकोर खिड़कियां खुलती थीं और उन पर गुलाबी सिल्क के सुन्दर पर्दे पड़े हुए थे। अविवाहित चीनी युवक गुलाबी पर्दा नहीं लटकाते। अब से दो वर्ष पहिले जिन्होंने इस बंगले को देखा होगा, वे जानते होंगे कि बंगला पहले भी सफेद पुता रहने पर भी उसकी खिड़कियों पर गुलाबी पर्दे नहीं थे। श्रीमती विंग मून ने आकर अपने कोमल हाथों से स्वयं उन पर्दों को टांगा था।

जिम्मी कोई बीस वर्ष का रहा होगा और उसने इस विस्तृत हरी-हरी घास वाले मैदान में यह बंगला इस कारण खरीदा था कि वह उन दो प्रमुख सड़कों के चौराहे पर पड़ता था, जहां से पशुओं का व्यापार करने वाले बनजारे बहुधा अपने पशुओं को ले जाया करते थे। रात हो जाने पर वह जिम्मी के बंगले के पास के विस्तृत मैदान में अपने पशुओं को आराम करने के लिये छोड़ देते और स्वयं जिम्मी के यहां से जरूरत की चीजें लेकर ताजा दम होते। जिम्मी के बंगले में तम्बाकू रहता और बढ़िया तैयार की हुई पेस्ट्री रहती। दूर के थके-मांदे बनजारों को उसके यहां का जलपान तथा भोजन ऐसा लगता मानों स्वर्ग का सुख मिल गया हो।

जिम्मी के इन पिछले दो वर्षों में एक सुन्दर-सा बच्चा हो चुका था, और उसकी पत्नी विंग मून उस बच्चे को संसार की दृष्टि से छिपा कर रखती, ठीक वैसे ही जैसे देवता को रखा जाता है। कोई भी आगन्तुक आज तक उसे देख नहीं पाया था और इसी लिये जब कभी जिम्मी के बच्चे की चर्चा चलती, तो आगन्तुक मजाक की दृष्टि से ही वह चर्चा करते थे।

जनवरी का महीना था और साधारण की अपेक्षा उस दिन गरमी अधिक थी। वायु बिल्कुल बन्द थी। जिम्मी और विंग मून अपने बंगले के बरामदे में बैठे हुए थे। उनके चारों ओर का विस्तृत घास का मैदान सूना पड़ा हुआ था। कभी कभी कोई कुत्ता उनके बंगले के दरवाजे पर आकर भोंकने लगता। पिछला सारा सप्ताह खाली चला गया। एक भी बनजारा अपने पशु लेकर उस ओर नहीं आया। पर जिम्मी जानता था कि अब यह नहीं हो सकता कि अगले एक दो दिन में भी कोई बनजारा न आये।

जिम्मी समय बिताने के लिये अपने वायलिन से उलझ रहा था। सांझ आने में अभी कुछ देर थी। इसी समय उत्तर की ओर क्षितिज में ७०० ढोरों के पैरों से उठी हुई धूलि ढलते सूर्य के प्रकाश से रंजित हो उठी। कुछ ही देर में बनजारों के हंटरों की ध्वनि भी सुनाई देने लगी। धीरे-धीरे पशु निकट आते गये और बंगले के चारों ओर की हरी घास में फैल गये। कुछ कुत्ते पशुओं के दोनों पार्श्वों की रक्षा कर रहे थे। श्रीमती विंग मून पशुओं को आया देखकर उठी और अन्दर चली गई।

जिम्मी ने अपना वायलिन एक ओर रख दिया। दूब जैसे रंग के सिल्क के कोट को कन्धे पर डालते हुए जिम्मी अपने बंगले के दरवाजे की ओर बढ़ा। पशुओं के बढ़ते हुए उस समुद्र को देखकर वह आश्चर्य में आ रहा था। इसी अवस्था में जिम्मी ने उन पशुओं के मालिक को देखा—कुछ लम्बा-सा, मूंछ और दाढ़ी बढ़ाये हुए अधेड़ उम्र का वह व्यक्ति था। फौजी बूटों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिम्मी समय बिताने के लिये अपने वायलिन से उलझ रहा था।

पर पट्टियां बांधे हुए और अपने मेंहदी के रंग में रंगे लाल बालों को मैले-से टोप के नीचे छिपाये हुए था।

जिम्मी को जैसे इनका आना कुछ अच्छा नहीं लगा। गुलाबी पर्दों के पीछे खड़ी अपनी रानी से उसने घबराये-से स्वर में कहा—"इससे पहले कभी इन लोगों को नहीं देखा।"

और जैसे उसकी अन्तरात्मा ने उससे कहा कि यह अच्छा नहीं हुआ। उसने विंग मून को आदेश दिया कि पर्दे के पीछे खिड़की के दरवाजों को वह बन्द कर दे।

इतने ही में वह अधेड़ पसीने से लथपथ घोड़े की पीठ पर चढ़ा हुआ बंगले के द्वार तक आ गया। जिम्मी ने देखा, उसका शरीर तपे हुए लोहे जैसा था। उसकी एक बांह में पशुओं को हांकने का २० फिट का हंटर लिपटा हुआ था। गर्मी और तमाम दिन की यात्रा की थकान उसकी आंखों में स्पष्ट झलकती थी। चिड़चिड़े स्वर में उसने पूछा—"अरे, तुम्हारा है यह सब गोरखधन्धा?"

जिम्मी हिला नहीं। आदर-सूचक मुस्कराहट के साथ उसने कहा—"जी, मैं आपके लिये अभी चाय लाता हूँ। बिस्कुट, पेस्ट्री, लेमनेड और सिगार। आप ठहरिये। दो ही मिनट में सब कुछ ले आता हूँ।"

जिम्मी के कहने के ढंग से साफ मालूम होता था कि वह आगन्तुक को बंगले के अन्दर नहीं आने देना चाहता।

आगन्तुक कुछ बुदबुदाया और धीरे-धीरे घोड़े से उतर पड़ा। पहले से भी अधिक चिड़चिड़ाहट के साथ उसने कहा—"चाय मेरे पास है, सिगार के लिये पैसे फजूल फेंकना मैं नहीं जानता। मुझे तो व्हिस्की चाहिये।"

"व्हिस्की हम नहीं रखते। कभी कभी पुलिस आ जाती है।"

आगन्तुक ने बंगले के दरवाजे से पीठ टिका दी। उसकी तेज आंखें बरामदे और खिड़कियों के पर्दों के पीछे कुछ देखना चाहती थीं। एकाएक वह बोला, "बड़े मजे में रहते हो यहां, सिवाय वायलिन बजाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई काम नहीं, जबकि मेरे जैसा गोरी चमड़ी वाला तमाम दिन ढोरों को हांकता फिरता है!"

जिम्मी कुछ सहम गया। पशुओं के रखवारे दो काले स्याह लड़के थे, जिन्होंने बंगले से कुछ दूर पशुओं को घेर कर छोड़ दिया। कुत्ते पास के एक छोटे से तालाब में पानी पीने के लिये चले गये। बनजारा लकड़ी के तिनके से अपने दांत कुरेद रहा था। उसकी अशान्त आंखें अब भी बंगले की दीवारों को भेद कर उनके पीछे कुछ देखना चाहती थीं। जिम्मी को यह सब कुछ अच्छा न लगा।

बनजारे ने अपना नाम बताया, "समझ रखो, मेरा नाम रैड गावान है। शायद सुन रखा हो तुमने पहले से। और न सुना हो तो अब सुन लो और फिर भूल न जाना।"

जिम्मी के माथे पर पसीने की बूंदें स्पष्ट लक्षित हो रही थीं। गावान का नाम उसने सुन रखा था। पशुओं को चुरा ले जाने और उनकी सूरत-शक्ल बदल देने में उसकी समता न थी। एक बार पशु उठा ले जाने के अपराध में दण्ड भोगकर जब वह जेल से छूटा तो तब से बराबर वह यही काम कर रहा है और बराबर पुलिस को चकमा देता रहा है।

गावान कहने लगा, "मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि कोई तो मजे में गावे-बजावे और किसी को धरती के एक छोर से दूसरे छोर तक ढोर हांकते फिरना पड़े। मैं कहना.....।"

एकाएक हवा के झोंके से एक गुलाबी पर्दा हिल गया। गावान की भूखी आंखें एक खिड़की के शीशे पर जा टिकीं, जिसके दूसरी ओर एक छोटा-सा संगमर्मर जैसा श्वेत, पर कोमल हाथ टिका हुआ था। धूप से गावान का जो चेहरा लाल हो रहा था, यह देखकर और भी तमतमा उठा। धीरे-धीरे वह जिम्मी की ओर बढ़ा। जैसे तपते हुए लोहे ने उसे छू दिया हो, इस तरह तड़पकर गावान ने पूछा—"कौन है वह छोकरी? वहां क्यों छिप रही है? आज साल भर हो गया किसी छोकरी की शक्ल तक देखे हुए..।"

बंगले के दरवाजे के साथ की झाड़ी पर वह झुका। उसका नीचे का होंठ और नीचे लटक गया और तम्बाकू के रंग में रंगे उसके भयंकर दांत साफ दिखाई देने लगे। अब की बार उसने जरा क्रोध के साथ पूछा—"आखिर वह छिप क्यों रही है?"

जिम्मी का जैसे दम घुट रहा हो। सांस लेने का प्रयत्न करते हुए उसने कहा, "वह मेरी स्त्री है। इस अकेले स्थान में मेरी बड़ी सहायता करती है।"

गावान पीछे की ओर मुड़ा और पशुओं के रखवारे उन दोनों काले लड़कों में से एक की ओर देखकर कहा, "तुमने देखा। बीवी को बंगले में छिपा रखा है और मेरे जैसे आदमी के भय से उसे बाहर नहीं आने देना चाहता।"

उस काले लड़के ने उकसाया, "मालिक, इससे व्हिस्की लाने को कहिये।"

"कहता है, मेरे यहां व्हिस्की है ही नहीं! खैर, मैं तो इस समय इसकी बीवी के बारे में बात कर रहा था। अच्छा, देखो, मैं रात को यहीं पर विश्राम करना चाहता हूँ।"

गावान का कहने का ढंग कुछ ऐसा था कि दोनों काले लड़के बिना मुस्कराये न रहे।

गावान ने फिर कहा, "देखो छोकरे, मैं इस समय तो तुम्हारे तालाब पर अपने घोड़ों को पानी पिलाने ले जा रहा हूँ। पर समझ रखो, आज इन ढोरों को लेकर मैं और आगे नहीं बढ़ना चाहता।"

एक क्षण को वह रुका और उसकी आंखों ने एक बार फिर विंग मून की झलक पाने का प्रयत्न किया। फिर बनावटी जमुहाई लेते हुए जिम्मी से कहा, "शाम होने पर मैं अपने ढोरों को सोने के लिये छोड़ दूंगा और दिया जलने पर तुम्हारे बंगले में आऊंगा। कुछ देर लुत्फ रहेगा।" और उन काले लड़कों की ओर देखते हुए भर्राए स्वर में कहा, "वह भी क्या इन्सान जिसके जीवन में कभी रस न हो!"

जिम्मी को भयभीत छोड़कर गावान अपने दोनों साथियों सहित चल दिया। अनिष्ट की एक आशंका जिम्मी के मन में घूम गई। बड़ी देर तक वह वैसे ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुमसुम बैठा रहा। धीरे-धीरे सूर्य दूर ताम्रवर्ण के क्षितिज में छिप गया। इसी समय तालाब से पानी ले जाते हुए उन काले लड़कों की आवाज ने उसे परिस्थिति के निकट ला दिया। अपने पीछे उसे किसी की पदचाप सुनाई पड़ी और उसने घूमकर अपनी पत्नी को उस अंधेरे बरामदे में खड़ा पाया। आशंकित मून दम्पतिने आज रोशनी नहीं जलाई थी।

विंग ने कहा, "कैसे वहशी हैं ये लोग! इनकी आवाज से तो मेरा बच्चा भी उठ गया होता।" और उसने अपनी सुकोमल उंगलियां एक नन्हें से पालने की ओर उठा दीं, जिसमें उनके कुल का दीपक सो रहा था। जिम्मी अभी तक आने वाली रात और उसके गर्भ में छिपे संकटों की बात सोच रहा था। नजदीक से नजदीक का पुलिस-थाना २० मील से कम न था। अकेले वह गावान को विवश न कर सकते थे कि उन भयानक पशुओं को लेकर वह वहां से आगे बढ़े। क्रोध जिम्मी के मन में अवश्य था, पर विवशता भी थी, और वह दांत पीस रहा था।

विंग ने सुझाया कि दोनों कहीं पर छिप जायं। जिम्मी ने सिर हिलाकर आपत्ति की, "उसके कुत्ते हमें पाताल में से भी खोज निकालेंगे।"

और इतने में ही बाहर से गावान की भारी-भरकम आवाज उनके कानों में पड़ी — "खबरदार, अपने उस बंगले से आज रात को बाहर निकलने की कोशिश न करना। अगर भागे तो कहीं न कहीं पकड़ ही लूंगा और फिर लाल कमीज में सी कर जंगली सांड तुम्हारे पीछे छोड़ दूंगा। समझे!"

जैसे उन दोनों को सांप सूंघ गया हो। वह जानते थे कि लाल कमीज में सी दिये जाने पर वे जंगली पशु उनको किस प्रकार से कुचल डालेंगे। इसी अवस्था में उन्होंने सुना कि दोनों काले लड़के पशुओं को उनके द्वार के बिल्कुल निकट जमा कर रहे हैं।

अभी तक विंग मून बाहर निकल जाने की योजना मन ही मन बना रही थी। उसने एक बड़ी सी टोकरी की ओर संकेत करते हुए अपने पति से कहा, "हम अपनी आवश्यक सामग्री इस टोकरी में रख कर और अपने प्यारे बच्चे को इसमें छिपा कर भाग निकलेंगे। हम इस दुष्ट के हाथों पड़ना नहीं चाहते।"

भागने की युक्ति पर विचार करते-करते विंग मून बाहर दरवाजे तक निकल आई। उसकी आहट पाकर कुछ पशुओं ने अपने तेज सींगों को दरवाजे के सींकचों में ठूंस दिया। पशुओं के रखवारे कुत्तों ने उसकी गन्ध पाकर भोंकना शुरू कर दिया। विंग मून को पता चल गया कि इतने जंगली पशुओं से घिरे बंगले में से निकल भागना आसान नहीं है।

वह लौट आई। लौटकर बरामदे में से एक कन्दील (कागज का लैम्प) उसने उतारा। जिम्मी ने आशंकित स्वर मे उसे जलाने से रोक दिया। विंग ने सुना नहीं। कन्दील लेकर वह बाहर आ गई। कन्दील के लाल कागजों पर भगवान बुद्ध का चित्र बना हुआ था। इसे वह अपने बरामदे में जलाया करते थे, जिससे भूत-प्रेत बंगले से दूर रहें। विंग मून एक बार फिर दरवाजे तक पहुँची। पशुओं का क्रोध इस बार बहुत बढ़ गया, कुत्ते और जोर से भोंकने लगे। विंग मून को स्पष्ट सुन पड़ा कि गावान और उसके दोनों काले छोकरे दरवाजे की ओर बढ़े चले आ रहे हैं।

विंग दरवाजे के निकट आकर एक क्षण को बैठी। अन्दर की बत्ती से उसने दियासलाई की जलती हुई तीली को छुआ दिया। दूसरे ही क्षण में कन्दील प्रकाशमान हो उठा। भगवान बुद्ध की मूर्त्ति विंग मून की शान्ति को भंग करने वाले तथा उसके बच्चे को भयभीत करने वाले उन आगन्तुकों के प्रति अपना पूरा क्रोध प्रगट करती-सी दिखाई देती थी। जिम्मी ने दरवाजे पर प्रकाश देखा और उसके प्रकाश में खड़ी अपनी पत्नी विंग मून को देखा। उसे विंग मून का एक हाथ हिलता-सा दीख पड़ा। दूसरे हाथ का कन्दील अगले ही क्षण दरवाजे के बाहर पड़े एक सांड के सींग पर जा पड़ा।

हड़बड़ाकर वह सांड उठा और अपने सींग पर के कन्दील को उसने उछाल दिया। दो ही मिनट में वह एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे पशु के सींगों पर उछल रहा था। सारे पशुओं में एक हलचल मच गई और वे इधर-उधर भागने लगे। विंग को लगा, जैसे वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पशु उसके कमजोर दरवाजे को थोड़ी ही देर में तोड़ डालेंगे।

वह कमरे में लौट आई। गावान अपने भागते हुए पशुओं को रोकने का प्रयत्न कर रहा था। जिम्मी के पास आकर विंग ने कहा, "प्यारे, मुझे यह सहन न हो सका कि वे पशु हमारे बंगले के इतने निकट आ जांय। कानून इन बनजारों को इस बात की इजाजत नहीं देता कि यह किसी के भी मकान के इतने निकट आ सकें।"

जिम्मी ने उत्तर नहीं दिया। वह जानता था कि गावान शीघ्र ही लौटकर आ जायगा। सहसा उसके मुँह से निकल पड़ा, "अब हम अपने बच्चे की रक्षा कैसे करेंगे? गावान जानता है कि उसके पशु तुम्हारे कन्दील से भागे हैं।"

विंग मून जब अपने सोने के कमरे में घुसी तो वह सोच रही थी कि उसके आवेशपूर्ण कार्य का क्या परिणाम हो सकता है। एक-एक करके विचार उसके मस्तिष्क में चलचित्रों की भांति घूम गये। उसने देखा कि उसके मुन्ने को एक टोकरी में सुरक्षित ढंग से लिटा दिया गया है और २० मील की दूरी के पुलिस-थाने में वे तीनों पहुँच गये हैं, जहां बन्दूकधारी पुलिस-अधिकारी उनकी रक्षा करने के लिए हैं। इस विचार ने उसके मस्तिष्क को इतना आवृत कर लिया कि छुटकारे का वह अमोघ उपाय दिखाई देने लगा। जिम्मी से उसने कहा, "वह वहशी अगर लौटा भी तो कल सुबह से पहले तो आ न सकेगा। मैं इतनी देर में अपनी आवश्यकता की चीजें सामने की टोकरी में रखती हूँ। आप देखते रहिये। वह कम्बख्त आ जाय तो मुझे संकेत कर दीजिये।"

जिम्मी कुछ हिला, पर उसके हिलने से ही जैसे निराशा प्रगट होती हो। मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति भारी से भारी संकट आने पर भी अपने घर के साथ ही बंधे रहने की होती है। किन्तु उधर उसे गावान, उसके दोनों काले लड़ेकों और कुत्तों का भय भी खाये जा रहा था। उस संकट से उत्पन्न मुद्रा उसके मुख पर स्पष्ट लक्षित होती थी। उसके पास एक भी हथियार न था जिससे वह उनका मुकाबला कर सकता।

आखिर विंग की ही बात चली। उसने अपनी आवश्यकता की वस्तुओं को टोकरी में डालना प्रारम्भ किया। जिम्मी इस बीच में अपने बंगले के सामने के छोटे से मार्ग पर अशान्त भाव से टहल रहा था। वायु की गति से उड़ते हुए एक-एक पल को जैसे वह गिनने का प्रयत्न कर रहा हो और सोच रहा हो कि उसे २० मील का मार्ग पार करके पास के थाने तक पहुँचने में कितना समय लगेगा। एकाएक द्वार पर एक आवाज सी सुनाई दी जिससे उसकी हड्डियां तक जमती सी मालूम पड़ीं। आवाज अब निकट आने लगी थी। ऐसा लगता था, जैसे भेड़ियों की गुर्राहट हो। इसी समय विंग मून अपने सोते हुए बच्चे को लेकर बरामदे में आई और भयभीत जिम्मी से बोली, "यह उस वहशी के कुत्तों की आवाज है। हमें बहुत देर हो गई। अब अगर हमने भागने का प्रयत्न किया, तो वह अवश्य ही हम को पकड़ लेंगे। हमें हो ही बहुत देर गई और अब सिवाय भाग्य के कौन हमारी सहायता करने वाला है।"

इतने में उन्हें मुख्य सड़क पर घोड़े की टापों की आवाज सुनाई दी। इसके कुछ ही क्षण बाद एक अश्वारोही की काली छाया उनकी आंखों के सामने थी और उसके पीछे कोई आधी दर्जन शिकारी कुत्ते होंगे। इधर जिम्मी बरामदे में पहुँचा, और उधर रैड गावान बंगले के टूटे दरवाजे के निकट तक आ गया। जिम्मी ने देखा कि गावान अपने घोड़े की पीठ पर से उतरा और उतर कर पास के एक खूंटे से उसे बांध दिया और तब उसने सुना कि दरवाजा चर्र-मर्र करके खुल गया है और गावान अपने भारी बूटों की आवाज करता हुआ उसके बरामदे की ओर बढ़ता हुआ प्रतीत हुआ। शराबी जब किसी चीज को देखकर उसे मसल डालने के लिये आगे बढ़ता है, वैसे ही गावान जिम्मी की ओर बढ़ा। गावान के कपड़े इस समय फटे हुए थे और उसके हाथों में रक्त लगा हुआ था। बेतरतीब भागते हुए पशुओं को रोकने के प्रयत्न में यह सब कुछ हुआ था। उसका क्रोध उसकी अंगारे जैसी आंखों से ही प्रगट हो रहा था।

"तुमने सोचा होगा कि मैं वापस ही न आऊंगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचा होगा कि कन्दील फैंक देने से ढोरों के साथ-साथ मैं भी जहन्नुम चला जाऊंगा।"

"आपको भ्रम हुआ है। हवा जरा तेज थी और उसी से उड़कर वह कन्दील आपके पशुओं के बीच जा गिरा था। आप मुझे उसके लिये दोष न दें।" जिम्मी ने विनम्र भाव से कहा।

गावान को सोचने और समझने को काफी अवसर मिल चुका था। उसके साथ के काले लड़कों ने कन्दील को दरवाजा पार करते हुए देखा था और उन्हें यह पूर्ण विश्वास था कि उसे मनुष्य के ही हाथ ने पशुओं की ओर फेंका था।

गावान ने कहा, "तुम्हारा तो मजाक रहा और मेरे सात सौ पशु नष्ट हो गये। छः महीने का मेरा कठिन परिश्रम तुमने इस प्रकार मिट्टी में मिला दिया। एक भी तो पशु नहीं बचा।"

जिम्मी ने कुछ साहस बटोरते हुए कहा, "आपके सारे पशु मिल जायंगे। मैं आपकी सहायता करूंगा। हम दोनों मिलकर सबको पकड़ लायेंगे। आप मुझे एक घोड़ा दें। मैं अच्छी सवारी कर लेता हूँ। आपके पशु मैं पकड़ लाऊंगा।"

"क्या खाक पकड़ लाओगे। तुमने मुझे बुद्धू बनाया है। अब देखना, मैं भी तुम्हें कैसा मजा चखाता हूँ।"

गावान बरामदे में इधर से उधर घूम रहा था। बीच-बीच में वह कहीं-कहीं रुक जाता था, मानो सोच रहा हो कि मुझे किस कमरे में प्रवेश करना चाहिये। विंग मून ने भीतर से उस को देखा और पलक मारते ही उसने अपनी कार्यप्रणाली निश्चित कर ली। पास के कार्निश पर रखी हुई अफीम की शीशी में उसकी अँगुली पहुँची और वह घोल कर उसने अपने प्यारे मुन्ने के होठों से छुआ दी। फिर छाती से उसे लगाते हुए बोली, "सो जाओ मुन्ना, जब तक यह वहशी यहां से निकल न जाय।"

तेजी के साथ उसने छत से लटकते हुए एक कन्दील को उतारा और मुन्ने को उसमें सुलाकर फिर उसे ऊंचा कर दिया। किन्तु इसी क्षण गावान कमरे में था और उसके पीछे-पीछे था जिम्मी।

कमरे में अंधेरा था। केवल चन्द्रमा के प्रकाश की एक क्षीण रेखा-सी कमरे में आ रही थी। गावान ने अपनी जेब से एक मोमबत्ती का टुकड़ा निकाला और उसे अपनी दियासलाई से जलाते हुए उसने इधर-उधर देखा। सामने श्रीमतीं विंग मून खड़ी थीं —किसी कवि की कल्पना-सी सुन्दर, किन्तु भयभीत कपोती-सी सिमटी हुई। उसने यह भी देखा कि पास का खटोला खाली पड़ा है। क्रोध से उसने पूछा, "क्यों, कहां गया तुम्हारा बच्चा? उड़ गया क्या जरा-सी देर में?"

गावान ने अपने हाथ की मोमबत्ती को कार्निश पर टेककर प्रकाश कर दिया।

निर्भयता के साथ विंग मून ने कहा, "तुम बड़े क्रूर व्यक्ति हो। क्यों तुम उन जंगली पशुओं को बंगले के इतने निकट ले आये? मुझे तुम से कोई भय नहीं है।"

बेंत की बनी एक कुर्सी में गावान ने अपने आपको ठेल दिया। उसकी दृष्टि विंग मून के चांद से मुखड़े पर टिकी हुई थी। जैसे प्रसन्न मुद्रा बनाते हुए उसने कहा, "ढोर तो मेरे सारे चले ही गये। जो हुआ सो हुआ, अब तो कुछ देर मैं यहां अपना मन बहलाना चाहता हूं।" एक क्षण रुक कर उसने फिर कहा, "तुम्हारे कमरे में तो इतने कन्दील हैं। अन्धेरे में क्यों बैठें। कुछ कन्दील जला ही लो।"

विंग मून समझ न सकी कि इस आकस्मिक परिवर्तन का क्या अर्थ हो सकता है। किन्तु उसकी सहज बुद्धि ने उसे बताया कि इस समय भी अपने पशुओं के विनाश का बदला लेने की भावना ही गावान के हृदय में काम कर रही होगी।

विंग ने आपत्ति की, "लकड़ी की इस छत के नीचे तेज हवा में कन्दील जलाने में खतरा है। बराबर के कमरे में जगह अधिक है और उसमें ग्लोब वाला बड़ा लैम्प भी है। वहीं चलिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, मुझे तो यहीं ठहरना है। विविध रंगों के कन्दीलों को जला देखने का मुझे शौक है। जीवन में कभी भी ऐसा मौका नहीं मिला। तुम्हारे यहां तो अनेकों रंगों के कन्दील हैं। जलाओ इन सब को, देर न करो।"

विंग मून ने दियासलाई लेकर दो-तीन कन्दील जला दिये। उन पर कुछ देवताओं के चित्र बने हुए थे। जिम्मी कमरे के बाहर बड़े अशान्त भाव से खड़ा था। एक पग इधर या उधर—इससे अधिक हलचल उसमें न थी। हां, उसकी आंखें एक बार बेंत की कुर्सी में जमे बैठे उस भेड़िये की ओर देख लेतीं और दूसरी बार विंग मून की ओर। पर विंग मून का चेहरा बड़ा स्थिर दिखाई दे रहा था। कोई भय या विषाद की रेखा उसके मुख पर न थी। बंगले के बाहर कुत्ते भौंक रहे थे, जैसे कि वे मालिक के इतनी देर तक अन्दर ठहरने का विरोध कर रहे हों।

गावान की आवाज तड़प उठी, "मैंने कहा था यह सब जलाने हैं। तुम दो चार जला कर ही कैसे रुक गईं। अगर कहीं मुझे उठकर स्वयं जलाने पड़े तो मुझे भय है कि कहीं तुम्हारा यह झोंपड़ा ही न राख हो जाये। अच्छा यही है कि तुम अपने आप इनको जला दो, मुझे उठना न पड़े।"

जरा देर प्रतीक्षा करके उसने कहा, "कमरे के बीचों-बीच वाला वह बड़ा कन्दील विशेष रूप से सुन्दर है।"

कहते-कहते उसने अपनी पीठ कुर्सी से लगा दी और देखने लगा कि विंग मून क्या करती है।

विंग मून इस समय उसी कन्दील के नीचे खड़ी थी, जिसमें उसका हृदय-दीप रखा हुआ था और जिसे जलाने का आदेश गावान ने दिया था। विंग मून को आशंका हुई कि कहीं गावान ने बच्चे को उसमें लिटाये जाते देख तो नहीं लिया था। साथ ही उसने देखा कि कन्दील के मोटे कागजों में भी उसके बच्चे की छाया-सी दिखाई दे रही है। पर वह छाया तो अन्य कन्दीलों के ऊपर बने देवताओं के समान ही किसी देवता का चित्र भी हो सकती है। इस समय विंग मून बड़े कष्ट में थी, किन्तु उसके मुख पर वह मानसिक कष्ट लक्षित नहीं होने पा रहा था।

अपनी मोमबत्ती को कार्निश पर से उठाकर विंग-मून के हाथ में देते हुए गावान ने कहा, "मैं एक से दस तक गिनता हूँ। इतनी देर में तुम्हें वह कन्दील जला देना होगा।"

और यह कह कर उसने अपनी जेब से रिवाल्वर निकाल कर हाथ में ले लिया।

"जब तुम उस कन्दील को जला लोगी, तो मैं उसमें रिवाल्वर से सूराख बींधूंगा। बड़ा मजा आयेगा इस खेल में। तुम्हें भी सबक मिल जायगा कि किसी के ढोरों में किस तरह से आग फैंकी जाती है। लो, मैं गिनना शुरू करता हूँ।"

जिम्मी अभी तक कमरे के दरवाजे में ही खड़ा था। उसने समझ लिया कि अब उसे कुछ करना ही होगा। जब तक उसकी पत्नी की बुद्धि ने काम दिया, उसने इस वहशी से बचने का प्रयत्न किया। पर अब वह तो पुरुष है। स्त्री की रक्षा का भार उस पर है। उसके आत्मसम्मान की रक्षा का भार उस पर है। उसका मस्तिष्क तेजी से आत्मरक्षा के किसी उपाय को सोच रहा था। विद्युद् गति से वह बगल के कमरे में घुस गया और शराब का एक-दो गैलन वाला पीपा उठा ले आया। दो-तीन कदम धीरे-धीरे रख कर वह उस कुर्सी के पीछे आ रहा, जिस पर गावान नंगे सिर बैठा हुआ था। गावान के हाथ का रिवाल्वर उस कन्दील की ओर संकेत कर रहा था जिसमें उनके कुल का दीपक सो रहा था।

"पांच·····छः·····सात।"

जिम्मी सैकिंड के सौवें अंश के लिए रुका और उसने अपने कुल-देवताओं का स्मरण किया।

"आठ·····नौ·····"

गावान की कर्कश आवाज ने भी उसको विचलित नहीं किया। धूप से काले पड़े गावान के कठोर हाथ में रिवाल्वर सख्ती से पकड़ा हुआ था। अपनी कर्कश आवाज को और भी कर्कश बनाते हुए उसने कहा, "दस।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिम्मी ने विद्युद् गति से उस पीपे को गावान के सिर पर कनटोप की तरह पहना दिया। दूसरे हाथ से उसने एक मुक्का उस पीपे पर मारा और उससे गावान का सारा मुंह ढंक गया। इस आकस्मिक आघात से गावान के हाथ से रिवाल्वर छूट गया। उसे ऐसा लगा जैसे उसका दम घुट रहा हो। वह उठ खड़ा हुआ, उसने कनटोप को उतारने का प्रयत्न किया, पर वह फंसता ही जा रहा था।

जिम्मी ने गावान के हाथ से छूटा हुआ रिवाल्वर जल्दी से उठा लिया। विंगमून ने बीच का कन्दील उतारा और दोनों बाहर के दरवाजे की ओर बढ़े। इसी समय एक कर्कश ध्वनि ने जो जहां था उसे वहीं खड़े रहने का आदेश दिया। कवीन्सलैण्ड की घुड़सवार पुलिस की एक टुकड़ी उस कमरे में घुस आई थी, जिसमें अब भी गावान अपने पीपे के कनटोप के साथ उलझ रहा था। जरा सी देर में हथकड़ियों ने उसके दोनों हाथों को जकड़ लिया। [अनुवादक—श्री धर्मवीर प्रेमी]

★

गीत

श्री सत्यभूषण 'योगी'

तू क्षण - क्षण का रस निचोड़ ले!

तेरा क्षण - क्षण हँस कर बीते,
मुसकानों में बस कर बीते,
तू ऊषा से स्मितियां लेकर
संध्या के सब रंग बटोर ले!
तू क्षण-क्षण का रस निचोड़ ले!

जाता क्षण मुसकाता जाए,
आता क्षण मुसकाता आए,
मस्ती की नचती लहरों पर
जाग्रत स्वप्नों की झकोर ले!
तू क्षण क्षण का रस निचोड़ ले!

न्याय - तुला ले ईश्वर आए,
यदि तू उसको लख मुसकाए,
निश्चय वह भी मुसका देगा,
तू स्मिति का मधुकोष जोड़ ले!
तू क्षण-क्षण का रस निचोड़ ले!

★

कलाकी पुरानी चीजोंकी हिफाजत के लिये तो आप तत्पर हैं, मगर घर की सजीव कला नारी आप की लापरवाही के चलते अनेक रोगोंसे भुगतती रहती है। आप अभी भी चेत जायें। स्त्रियोंके प्रदर, मासिक की गड़बड़ी, बन्ध्यापन आदि कठिनसे कठिन रोगों के इलाज में भारत-विख्यात श्रीमती चमेली देवीको एक पत्र लिख कर रोगका मुफ्त निदान करायें। आपको अवश्य संतोष होगा।

पत्र व्यवहार यहां सभी
गुप्त रहता है दवायें मिलेंगी

श्रीमती चमेली देवी
सञ्चालिका
हरिदास एण्ड कम्पनी लि. मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार के कुछ विचित्र अखबार

श्री हरिदत्त शर्मा

समाचारपत्र दुनिया को बड़ी-बड़ी विचित्र घटनाओं की सूचना देते हैं, परन्तु इन की अपनी दुनिया में भी बड़ी विचित्रता देखने में आती है। कम से कम भारतीय जनता इस विषय में बहुत कम जानती है कि आज कैसे अजीब-अजीब अखबार निकलते हैं।

यूरोप के फ्रांस देश की रंगीली राजधानी पेरिस अपनी अन्यान्य विचित्रताओं के साथ-साथ (जिनसे संसार का कोई भी पढ़ा-लिखा व्यक्ति आज अनभिज्ञ नहीं है) अद्भुत पत्रकारिता का भी बहुत बड़ा केन्द्र है। वहां से सदा ही अजीबोगरीब पत्र निकलते रहे हैं। बहुत पहले वहां से एक बड़ा ही अजीबोगरीब पत्र निकला करता था। नाम था 'ला क्लो-कार्ड'। यह पत्र एक विशेष प्रकार की सांकेतिक भाषा ('कोड') में होता था, जिसे एक विशेष वर्ग ही समझ सकता था। यों कहिये कि इसकी सारी खबरें इशारों में होती थीं। यह पत्र इंग्लैण्ड के वेयरी विलीज के मुख्य पत्र 'होबो' की भांति था। 'होबो वीकली' में ऐसे स्थानों के नाम होते हैं, जहां की पुलिस बड़ी सख्त होती है, तथा विश्वस्त अड्डों और ऐसे विश्वसनीय ऋणदाताओं के नाम होते हैं, जो भंडा-फोड़ नहीं करते। यह साप्ताहिक भी 'कोड-भाषा' में छपता है और इसका मूल्य १।२ पेंस है। हाल ही में पुलिस ने इसकी कुछ कापियां पकड़ी हैं और उनसे उसने थोड़ा बहुत उक्त आशय निकाला है। बाकी राम जाने, उस पत्र में क्या छपता है और क्या नहीं छपता है!

पेरिस में आज भी ऐसे विचित्र पत्र देखने में आ ही जाते हैं। अभी कुछ दिन हुए वहां से एक अखबार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकला था जो रबड़ पर छपा करता था। रबड़ पर निकालने का प्रयोजन यह था कि स्नानागार में भी वह पढ़ा जा सके। निकट भूत में ही फ्रांस के समुद्र-तटस्थ एक नगर से वाटरप्रूफ कागज (ऐसा कागज जो पानी से भीग नहीं सकता) पर एक पत्र निकला था। समुद्र में नहाने के शौकीन उसे बहुत खरीदा करते थे, क्योंकि उन्हें नहाते-तैरते अखबार पढ़ने की सुविधा रहती थी।

पेरिस से एक और विचित्र पत्र निकला था। उसके समाचार गद्य में न होकर पद्य में हुआ करते थे। उसका नाम 'म्यूज हिस्टोरिक' था और उसने अपने १५ वर्ष के जीवन में पेरिस समाचारों को लेकर तीन लाख पचीस हजार पद्य लिखे थे।

वहां से एक 'ला मोशोयर' नामक भी पत्र निकला करता था। इस नाम का अर्थ है रूमाल और 'यथा नाम तथा गुणः' के अनुसार अखबार को पढ़ चुकने के उपरान्त लोग इसे रूमाल की तरह प्रयोग में लाते थे।

इङ्गलैण्ड में एक बार बड़ा भारी इन्फ्लुएंजा फैला। जहां लोगों को तनिक जुकाम हो और थोड़ी-सी छींक लगे कि इन्फ्लुएंजा सवार हो जाय। इस काल में 'पियरसन्स वीकली' नामक साप्ताहिक पत्र के प्रकाशक ने अपने अखबार को युकेलिपटस के तेल में भीगे हुए कागज पर छापा। युकेलिपटस के तेल में जुकाम को दूर करने का गुण है। इस प्रकार इन्फ्लुएंजा-ग्रस्त पाठक को पाठ्य-सामग्री के साथ ही साथ औषधि भी मिलती थी।

इङ्गलैण्ड में ही १६ वीं सदी के मध्य में 'मोनोकन्यूजक्लाडट' नामक पत्र कपड़े पर छपा करता था। यद्यपि पाठकों को समाचारों के साथ कपड़ा मिलता था, परन्तु प्रकाशक का मंशा अखबारों पर लगने वाली चुंगी से बचने का था। प्रकाशक का कथन था कि वह अखबार नहीं निकालता, क्योंकि अखबार तो कागज पर छपता है।

किसी जमाने में संसार का सबसे छोटे आकार का समाचार-पत्र 'डेली पाइलट' था। यह थर्सडे द्वीप से निकला करता था। यह एक कागज पर एक ओर छपता था। कागज की लम्बाई-चौड़ाई एक फुट छै इंच होती थी और इस अखबार में केवल जहाजरानी सम्बन्धी समाचार ही होते थे। आजकल सबसे छोटे आकार का पत्र बिमिनी द्वीप का 'बिमिनी बुगल' है। इसकी चौड़ाई ३½ इंच और लम्बाई साढ़े चार इंच है।

यह तो हुई छोटे आकार की पराकाष्ठा। अब बड़े आकार की पराकाष्ठा देखिये। १८५६ में न्यूयार्क से एक अखबार निकला था, जिसके मेक अप में ४० व्यक्तियों ने दो महीने लगाये थे। इस दैत्याकार पत्र का नाम था 'इलुमिनेटेड क्वाड्रुपिल कान्स्टिलेशन'। यह साढ़े आठ फीट लम्बा और छः फीट चौड़ा था। इस में आठ पृष्ठ थे और हर पृष्ठ में १२ कालम थे। मालिकों का १९५६ में इसकी दूसरी संख्या निकालने का विचार है, क्योंकि वे इसे 'शताब्दिक' बनाना चाहते हैं।

'न्यूयार्क टाइम्ज' की एक प्रति दो किस्म के कागज पर छपती है। एक तो साधारण जिसकी लागत १॥ पेंस प्रति कापी बैठती है और दूसरी एक विशिष्ट प्रकार के कागज पर छपती है, जिसका मूल्य प्रति कापी ३ शिलिंग ३ पेंस बैठता है। दूसरे प्रकार की प्रति केवल वाचनालयों और पुस्तकालयों को बेची जाती है।

भारत में भी लम्बे-लम्बे सचित्र शास्त्रार्थ-पत्र प्राप्त हुए हैं। यहां पर पहले अखबार नहीं निकलते थे। यदि यहां समाचार पत्र निकलते होते तो उनमें भी विचित्रता और विभिन्नता होती। आखिर भारत भी तो विचित्रता और विभिन्नता का केन्द्र है और रहा है!

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोत्तम लिवर, कभी न बन्द होने वाली ऊंचे दर्जे की घड़ियां
सस्ती कीमतों पर ताजा माल आ गया है

ऊंचे दर्जे की ज्यूल्ड, सर्वोत्तम लिवर चाल, बहुत आकर्षक और अप-टू डेट नमूनों की रिस्ट वाच (घड़ी)
प्रत्येक घड़ी की ५ वर्ष की गारंटी है और इसके साथ बहुत अच्छा प्लास्टिक स्ट्रैप। पैकिंग और डाक खर्च मु
५। इंच स्त्रियों की विशेष घड़ियें

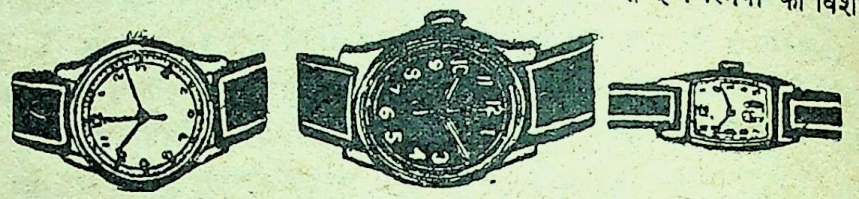

माडल नं० २१०८, १०॥ इंच	माडल नं० २१०६, ६॥ इंच	माडल नं० १५०५
क्रोमियम केस ... १५) रु०		
क्रोमियम केस ७ ज्वेल ३२) रु०	चमकदार क्रोमियम केस ३६) रु०	चमकदार क्रोमियम केस ४८)
सैन्टर सैकिंड ... २५) रु०	चमकदार क्रोमियम १५ ज्वेल ५८) रु०	चमकदार क्रोमियम १५ ज्वेल ६५)
रोल्ड गोल्ड (३० वर्ष गारंटी, ४६ रु०)	रोल्ड गोल्ड (१० वर्ष गारंटी) ५२) रु०	रोल्डगोल्ड (१० वर्ष गारंटी) ५२)
रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल ५८) रु०	रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल ७८) रु०	रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल ८५)
शौक और वाटर प्रूफ ८७) रु०		

हमारी घड़ियों के बारे में ताजा राय—श्री मि० सी० एल० गुप्ता आर० आई० ए० एफ० कैन्टीन आफ
कैंट लिखते हैं—जो घड़ी आपने मुझे १६४१ में भेजी थी भली प्रकार काम कर रही थी, पिछले साल यात्रा
गुम हो गई तब से मैं बिना घड़ी के हूँ क्योंकि मैं किसी और जगह से खरीदना नहीं चाहता। आपके नये
के आने पर मेरे पहले आर्डर के अनुसार कृपया कम से कम दो घड़ियां मुझे भेज दें। तिथि २४-६

स्टाक कम है। शीघ्र आर्डर भेजें ताकि निराश न होना पड़े।

एफ० जी० सप्लाई कम्पनी, ६, डिपटी गंज, सदर बाजार दिल्ली।

रशमी कपड़ा १) गज

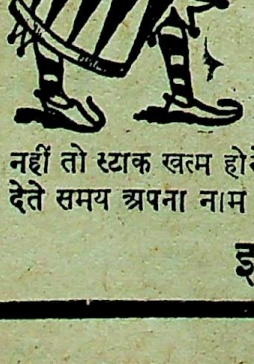

रेशमी कपड़ा एक रुपया गज आपको किसी जगह नहीं मिल सकता। परन्तु हम आपको बाजार से बहुत ही सस्ते भाव पर दे सकते हैं। जो कि आप को कोड़ियों के मूल्य पड़ेगा। अमरीकन सुफै सिलकी यानी पूरी छतरी १२ कली वाला (जिसमें पूरी १२ कली हैं) वगैर जोड़ के मये रेशमी डोरी के साथ कीमत १२) रु० फी पैराशूट (पूरी छतरी) पैकिंग फ्री महसूल डाक १॥≡) । इकट्ठे तीन मंगवाने पर महसूल डाक ३॥≡) रु० आवेगा। आप बतौर नमूना मंगाकर थोक का आर्डर देकर लाभ उठावें। यह माल दूसरे रेशमी सिलकी कपड़ों की निस्बत निहायत उम्दा और रियायती है। पहले इसकी कीमत बहुत ज्यादा थी मगर अब स्टाक को खतम करने के लिये यह रियायती थोक का भाव है। तीन पैराशूट महसूल डाक समेत आपको घर में ३६॥≡) रु० में पड़ेंगे। जरूर मंगवायें। शीघ्र मंगवा लें। नहीं तो स्टाक खत्म होने पर पछताना पड़ेगा। क्योंकि और माल अमरीका से नहीं आ रहा। आर्डर देते समय अपना नाम पूरा पता साफ-साफ लिखें।

इस्ट्रन इम्पोर्ट्स नं० ४५ देहली ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो रिले

श्री 'कलाधर'

रेडियो के उस कार्यक्रम को 'रिले' कहते हैं, जो किसी रेडियो स्टेशन के लाल बत्ती वाले बन्द कमरे से प्रसारित न होकर, बाहर से—किसी सभा-सोसाइटी के उत्सव, किसी सार्वजनिक समारोह अथवा खुले में किसी गली-बाजार से प्रसारित होता है। जहां रेडियो स्टेशन के कमरे से प्रसारित होने वाला कार्यक्रम रेडियो अधिकारियों द्वारा आयोजित होता है, वहां बाहर से 'रिले' होने वाला कार्यक्रम दूसरों द्वारा आयोजित होता है। जिस स्थान से कार्यक्रम 'रिले' करना होता है, वहां के माइक्रोफोन को टेलीफोन की तारों अथवा वायरलैस से रेडियो स्टेशन के प्रसार विभाग के यंत्रों से सम्बद्ध कर दिया जाता है। इस तरह वह रेडियो-सेट पर उसी भांति सुनाई देता है, जिस भांति रेडियो स्टेशन का अपना कार्यक्रम सुनाई देता है।

उपयोगिता की दृष्टि से 'रिले' का काम बहुत ही महत्वपूर्ण है। १५ अगस्त १९४७ को दिल्ली में हुए सरकारी तथा गैरसरकारी स्वाधीनता-समारोह के कार्यक्रम को 'रेडियो-रिले' द्वारा भारतवर्ष का प्रत्येक निवासी दिल्ली से सैकड़ों-हजारों मील दूर अपने घर-नगर में बैठकर ऐसे सुन सका था, मानों वह स्वयं दिल्ली में उपस्थित हो। हमारे भारतवर्ष का रेडियो कभी-कभार ही बाहर के कार्यक्रम को 'रिले' करता है; परन्तु अमरीका और इंगलैंड जैसे समुन्नत देशों के रेडियो प्रायः रोज ही किसी न किसी समारोह, उत्सव, खेल अथवा घटना इत्यादि को श्रोताओं के लाभ तथा मनोरंजन के लिये 'रिले' करते हैं। अमरीका में टेलीविजन का प्रचलन हो जाने से 'रिले' हो रहे कार्यक्रम का दृश्य भी रेडियो सेट पर दिखाई देता है और घर में बैठकर श्रोता प्रत्यक्षदर्शी का-सा आनन्द प्राप्त करता है। हाल ही में अमरीका के रेडियो ने पूरे के पूरे रंगमंचीय नाटक और ओपेरा दृश्य और श्रव्य रूप में 'रिले' किये हैं। श्रोताओं को न टिकिट खरीदना पड़ा, न थियेटर-हाल में बैठना पड़ा और न आने-जाने की असुविधा सहनी पड़ी।

बड़े बड़े समारोहों और उत्सवों के अतिरिक्त इंगलैंड और अमरीका में गली-बाजारों में आते-जाते लोगों के इण्टरव्यू भी 'रिले' किये जाते हैं, जो बहुत रोचक और मनोरंजक होते हैं। रेडियो का प्रतिनिधि बाजार में खड़ा किसी मजदूर से बातचीत कर रहा है और रेडियो-श्रोता घर में बैठा उस बातचीत का आनन्द ले रहा है।

जैसा कि स्पष्ट है, रिले' के कार्यक्रम की सफलता अधिकतर उद्घोषक पर निर्भर है। यदि उद्घोषक का स्वर आकर्षक और प्रभावशाली है, उसमें शब्दों द्वारा दृश्य और वातावरण का पूरा चित्र खींचने की योग्यता है और फोटोग्राफर के कैमरे की-सी निष्पक्षता है, तो समझिये कि 'रिले' सफल; नहीं तो एकदम असफल। उदाहरणार्थ मेरठ में हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के अवसर पर हुए कवि-सम्मेलन के 'रिले' को ही लीजिये। रेडियो-उद्घोषक का न स्वर अच्छा था, न उसमें वर्णन-शक्ति थी और न निष्पक्षता। और फिर दलबन्दी में पड़कर एक ओर तो उसने कई प्रसिद्ध कवियों को 'रिले' में सम्मिलित न होने दिया और दूसरी ओर मंच पर उपस्थित कई नेताओं के नाम तक न लिये। परिणामतः रेडियो श्रोताओं को ऐसा लगा जैसे मंच पर केवल दो तीन साहित्यिक नेता बैठे हैं और कवि अधिकांशतः नौसिखिये लड़के-लड़कियाँ ही हैं।

सफल 'रिले' का उदाहरण दिल्ली रेडियो के वे कार्यक्रम हैं, जिनका प्रवक्ता प्रायः अंग्रेजी का उद्घोषक डिमैलो हुआ करता है।

आजकल भारत में रेडियो का काफी विस्तार हो रहा है और आशा है, भारतीय रेडियो श्रोताओं के लाभ और मनोरंजन के लिये 'रिले' के प्रोग्रामों की ओर अधिक ध्यान देगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७५००) रु० नकद इनाम

आप २४ घण्टों में फिर युवक बन सकते हैं

औटोजम (विटामिन टानक) के खाने से प्रत्येक पुरुष व स्त्री अपनी आयु से १५-२० वर्ष कम आयु के दिखाई देते हैं। यह निर्बल स्वास्थ्य, खून की खराबी, दिमागी तथा शारीरिकश्रम में लाभदायक है। इसके खाने से भूख खूब लगती है। एक सप्ताह में पांच से दस पौंड तक तोल बढ़ जाता है। मुंह पर लाली आ जाती है। चेहरे का रंग गोरा हो जाता है। तथा चेहरे पर यौवनावस्था की भांति की चमक आ जाती है। जैसे कि आपका चेहरा यौवन अवस्था में था। इसके प्रयोग से नजर तेज होती है। यह गालों को आकर्षित बना-देता है, होठों पर लाली आ जाती है, सफेद पके हुए बालों को सदा के लिए काला कर देता है, दांतों को असली की भांति दृढ़ कर देता है। स्विट्जरलैण्ड के एक शत वर्षीय वृद्ध पुरुष ने इसका प्रयोग किया। जिससे वह तीस वर्ष के युवक की भांति हो गया। यही नहीं, पर उसने एक युवती से व्याह भी कर लिया।

औटोजम के बरतने से ८० तथा ९० की आयु में भी हार्लवुड के एक्टर तथा एक्टरसें हृष्ट, युवक तथा सुन्दर प्रतीत होने लगते हैं। और परदा पर अति फुर्ती से काम करने लगती हैं। स्त्रियां यदि इनका प्रयोग करें तो अपनी आयु के पिछले समय तक मुख की सुन्दरता तथा चमक को बनाये रख सकती हैं। पुरुष इसके प्रयोग से समय के पूर्व वृद्ध नहीं हो पाते। बाल काले तथा आकर्षित रहते हैं। मुख की आकर्षिकता सदा बनी रहती है। स्वास्थ्य आयु भर खराब नहीं होता।

Autogem औटोजम Autogem

को एक शीशे के बर्तन में बहुत काल तक रखा गया। तब वह शीशे का बर्तन इतना पक्का हो गया कि कई चोटें मारने पर भी न टूट सका। इसको इंग्लैण्ड में सहस्त्रों पुरुषों ने देखकर प्रमाणित किया। औटोजम का तुरन्त प्रयोग आरम्भ कर दें। इसका फल अपना उत्तर आप होगा। प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व अपना तोल करलें तथा अपना मुख शीशे में देखलें। एक सप्ताह पश्चात् फिर शीशा देख फिर नोट करें कि आप क्या अनुभव करते है। आप इसके जादू की भांति प्रभाव की प्रशंसा करेंगे। औटोजम को प्रत्येक व्यक्ति तक ले जाने के लिये इसका मूल्य केवल अल्प समय के लिए ५) रुपया रखा गया है। कुछ समय के उपरान्त इसका असली मूल्य ३०) रुपया कर दिया जायगा। आज ही इसे मंगवाने के लिये आर्डर भेज दें। क्योंकि इसकी सम्भावना है कि आपके देर करने से माल समाप्त हो जाए और आपको पछताना पड़े।

मिलने का पता—

दी मैकसो लैबोरेटरीज लिमिटेड,

पोस्ट नं० ४५ (M. M. D.) देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

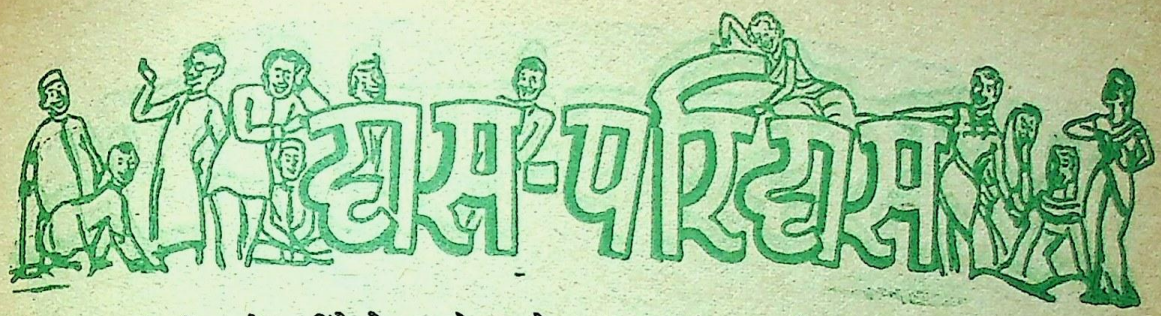

पागलखाने के नये सुपरिंटेण्डेण्ट को आये अभी एक सप्ताह ही हुआ था। एक दिन वह बरामदे में योंही टहल रहा था कि इतने में एक पागल अपने कमरे से निकल कर उसके पास आ खड़ा हुआ और बड़े राजदाराना लहजे में बोला, "पहले सुपरिंटेण्डेण्ट की अपेक्षा आप हमें ज्यादा पसन्द हैं।"

नया सुपरिंटेण्डेण्ट बड़ा प्रसन्न हुआ, बोला, "क्यों?"

उत्तर मिला—"इसलिये कि आप हम जैसे ही लगते हैं!"

* * *

अध्यापक—मोहन, सितम्बर १९१८ में पैदा हुए व्यक्ति की अब कितनी आयु होगी?

मोहन—कृपया पहले यह बताइये कि वह व्यक्ति स्त्री है या पुरुष!

* * *

"मनोहर, तुम आगे भी कई बार छुट्टी ले चुके हो—पहले अपनी पत्नी को पीहर पहुँचाने के लिये, फिर अपनी सास की अंत्येष्टि के लिये फिर अपनी लड़की की बीमारी के लिये, फिर अपने लड़के के नामकरण-संस्कार के लिये। अब किसके लिये छुट्टी चाहिये?"

"मेरा विवाह है, श्रीमान् जी!"

* * *

प्रोफेसर—आज रास्ते में मेरी जेब से किसी ने बटुआ निकाल लिया।

पत्नी—जब चोर ने तुम्हारी जेब में हाथ डाला था, तो तुम्हें पता न लगा?

प्रोफेसर—लगा तो था, परन्तु मैं समझा कि यह मेरा अपना हाथ है।

* * *

भयंकर युद्ध हो रहा था। उसी समय कमाण्डर ने अचानक देखा कि उसकी सेना का एक सैनिक युद्ध-स्थल से चोरी भागने का प्रत्यन कर रहा है। कमाण्डर गर्जा—"कहां भाग रहा है? चल अपनी जगह पर। मरने से क्यों डरता है? तेरा घर तो स्वर्गलोक में है न!"

"होगा, परन्तु इस समय मुझे घर की याद नहीं सता रही!" बेमन से वापस आते हुए सैनिक ने कहा।

* * *

एक वृद्ध महिला ऐनक लगवाने के लिये डाक्टर के पास गई। डाक्टर उसे कमरे में ले गया और दृष्टि-परीक्षा का कार्ड उसके हाथ में देते हुए बोला, "कृपया इसे पढ़िये।"

वृद्ध महिला बोली, "कृपया आप ही इसे पढ़ दीजिये, मेरी नजर ठीक नहीं है।"

* * *

मां—अरी शीला, इस चूल्हे को क्या हो रहा है?

शीला—मां, मोमबत्तियों का बण्डल पानी में गिर गया था, उसे चूल्हे में डालकर सुखा रही हूँ।

* * *

सिनेमा अभिनेत्री के मित्र ने पूछा—"तुम्हारा नया पब्लिसिटी एजेण्ट कैसा काम कर रहा है?"

"वह तो कमाल की पब्लिसिटी कर रहा है!" हर्षातिरेक से अभिनेत्री ने कहा—"मेरे पास नौकर हुए उसे अभी आधा महीना भी नहीं हुआ कि एक बार तो मेरे घर को आग लग चुकी है, दो बार मेरी चोरी हो चुकी है, मेरे प्रशंसकों द्वारा आत्म-हत्या की दो सूचनायें आ चुकी हैं और अब मुझे अपहरण की धमकी दी गई है!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

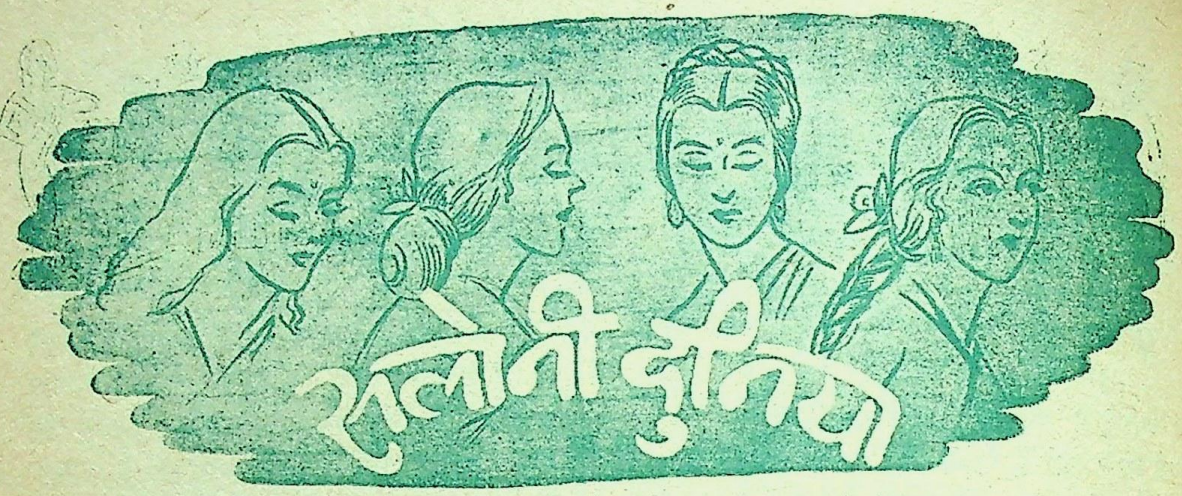

फैशन से चिढ़ क्यों ?

फैशन क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए मुहर्रमी शक्ल-सूरत वाले एक सज्जन बोले—"फैशन वस्त्र-व्यापारियों और दर्जियों के उस षड्यन्त्र का परिणाम है, जिसे वे स्त्रियों को बुद्धू बनाने और पतियों की जेब पर डाका डालने के उद्देश्य से रचते हैं।" कितनी भ्रांत और शरारत-भरी है यह व्याख्या ! सचाई यह है कि फैशन आज के युग की एक मनोवैज्ञानिक आवश्यकता है। यह एक ऐसी कला है जिसके द्वारा आधुनिक स्त्री अपने व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति करती है, विकर्षण में भी आकर्षण

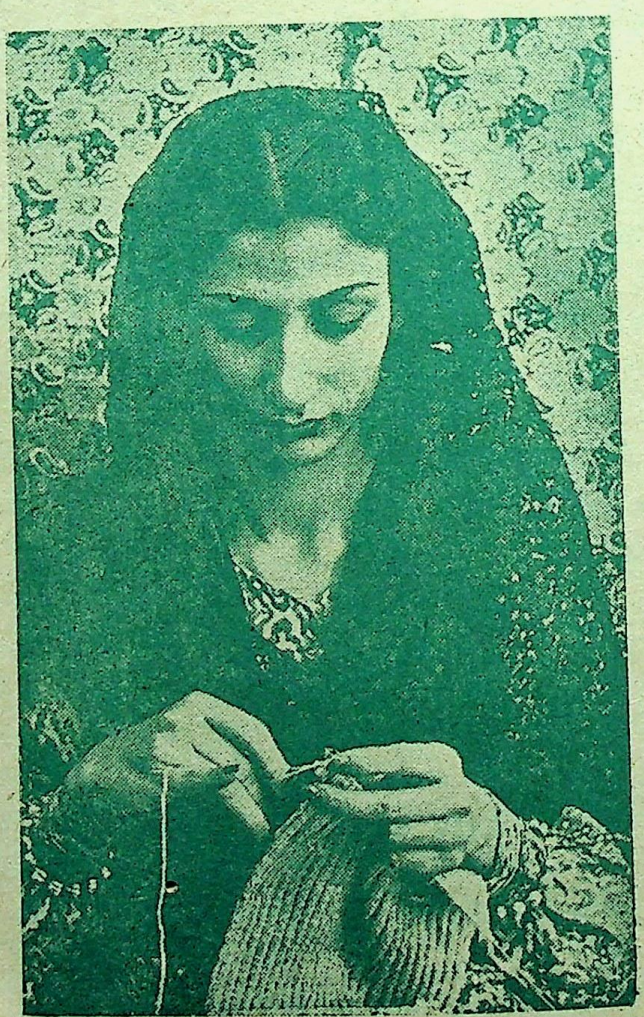

का प्रादुर्भाव करती है। यह एक ऐसा साधन है जिसकी सहायता से वह अपने भीतर आत्म-विश्वास की भावना पैदा करती है और मुस्कराती हुई जीवन-संघर्ष का सामना करती है। फैशन का मूलमंत्र सुरुचि और कलात्मक बुद्धि है।

पहनावे में पुरुष भी किसी न किसी फैशन का अनुसरण करता है। परन्तु पुरुषों के फैशन में एक प्रकार की समानता—एकरसता-सी होती है; जबकि स्त्रियों के फैशन में हरेक के स्वतन्त्र व्यक्तित्व की अलग-अलग झलक दृष्टिगोचर होती है। व्यक्तिवादिता स्त्री का सहज स्वभाव है।

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री को खुले मुंह या खुले सिर या मात्र आवश्यकता के वस्त्र पहने स्वतन्त्रता से घूमते हुए देखकर पुरुष जब चिढ़ता है, तो समझ लीजिये कि उसकी आदिम-युगीन शासन-प्रवृत्ति बोल रही है। वह भूल जाता है कि मानव-समाज आदिम युग से बहुत आगे बढ़ आया है। स्त्री पराधीन न रह कर समाज की एक स्वतन्त्र इकाई बन चुकी है। अपने व्यक्तित्व के विकास और निर्माण की आज उसे भी उतनी ही स्वतन्त्रता है, जितनी पुरुष को। घूंघटों, बुर्कों, पर्दों और पालकियों का युग बीत चुका है। और फिर स्त्री के बनाव-सिंगार तथा परिधान में पाप नहीं, पाप तो पुरुष की आंखों में है, जो हर कलाकृति में वासना और कामुकता की कल्पना करता है।

मतलब यह कि फैशन अपने आप में कोई बुरी प्रवृत्ति नहीं। सुन्दर परिधान और सुन्दर बनाव-सिंगार द्वारा स्त्री न केवल अपनी सुरुचि और महत्ता को प्रदर्शित करती है, बल्कि इस दुःख-शोकपूर्ण संसार में हर्षोल्लास और रंगीनी का संचार भी करती है।

अब रही बात प्रसाधन आदि के साधनों की। देश, काल और आवश्यकता के अनुसार ये साधन बदलते रहते हैं। यों भी तो 'फैशन' का अर्थ वेशभूषा का प्रचलित ढंग ही है। स्त्रियां इस प्रचलित ढंग में सुरुचि और कल्पना से सौन्दर्य की सृष्टि करती हैं। होठों को स्त्रियां प्राचीनकाल में रंगती ही थीं। यदि वे आज भी रंगती हैं, तो इसमें कौन-सा अनर्थ है। यही बात वस्त्रों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। विज्ञान और मशीन के युग में रहते हुए हम बनवासी अथवा आश्रमवासी तो नहीं बन सकते!

सुशीलादेवी बी० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Ha

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप बोलना जानती हैं ?

कुमारी नीलिमा एम० ए०

मधुर वाणी तथा मधुर संभाषण की योग्यता प्रत्येक स्त्री के लिये एक स्पृहणीय गुण है। मधुरभाषिणी स्त्री अपने घर को स्वर्ग बनाती है, जबकि कर्कशा स्वर्ग को भी नरक में परिवर्तित कर देती है। यह भी निर्विवाद है कि यदि कोई स्त्री शारीरिक सौन्दर्य से वंचित है, तो वह इस अभाव की पूर्ति मधुर और प्रिय वाणी से कर सकती है। कोयल यद्यपि काली है, परन्तु मधुर और संगीतमय स्वर के कारण सब को प्रिय लगती है और उसके स्वर की उपमा तक दी जाती है। इस लिये प्रत्येक स्त्री को चाहिये कि वह अपने स्वर को मधुर और प्रिय बनाने का प्रयत्न करे। जिन स्त्रियों का दाम्पत्य तथा पारिवारिक जीवन सुखी नहीं है, उन्हें इधर विशेष ध्यान देना चाहिये। जीवन की सफलता के लिये मधुरभाषी होना सर्वाधिक आवश्यक है।

देखने में आया है कि सौ में से एक व्यक्ति ही मधुर और आकर्षक ढंग से बोलने की योग्यता रखता है। और यह भी देखने में आया है कि वह व्यक्ति भी, जिसे ईश्वर ने मधुर-कोमल स्वर प्रदान नहीं किया है, अभ्यास और थोड़ी-सी सावधानी से मधुरभाषी बन सकता है। आसपास के वातावरण, व्यक्तिगत स्वभाव और बोलने के ढंग में सुधार करने से स्वर में अपने आप माधुर्य और आकर्षण आ जाता है। स्वर-परिष्कार के लिये नीचे मैं कुछ तरीके सुझाती हूँ—

१. सर्वप्रथम आप यह पता लगायें कि आपकी वाणी कैसी है। अपनी वाणी का निर्णायक स्वयं आप नहीं बना जा सकता। अपनी चीज भला किसे बुरी लगती है। इसके लिये दूसरों की निष्पक्ष सम्मति लेना आवश्यक है। वैज्ञानिकों ने स्वर-परीक्षण के लिये एक यंत्र का आविष्कार किया है जिसका नाम है—'डिक्टाफोन'। इस मशीन के सामने खड़े होकर आप जो शब्द बोलें, वे इसमें रिकार्ड हो जाते हैं और बाद में यह मशीन उन शब्दों को आपके ही स्वर और लहजे में ज्यों का त्यों सुना देती है। अतः अपने स्वर के सम्बन्ध में ठीक जानकारी प्राप्त करने के लिये सबसे अच्छा साधन तो यह मशीन है। इससे पुनरुद्घोषित हुए अपने स्वर को सुनकर आप अपने बोलने के दोषों से भली भांति अवगत हो सकती हैं और बाद में सतत अभ्यास और सावधानता से आप उन दोषों को दूर कर सकती हैं। परन्तु, यह मशीन सब जगह सभी को सुलभ नहीं है। इस लिये बेहतर यह है कि आप अपनी किसी अंतरंग सखी-सहेली के सामने बोलिये और उसे कहिये कि वह निष्पक्ष होकर आपकी वाणी के दोषों को सच-सच बताये।

२. कई स्त्रियां बोलते समय या तो मुंह बहुत अधिक खोलती हैं या बहुत कम—जैसे उन्हें आलस्य ने दबा रखा हो। कई स्त्रियां ऐसे बोलती हैं मानों घास काट रही हों। उन्हें चाहिये कि अपना कमरा बन्द करके दर्पण के सामने खड़े होकर ऊंचे और स्पष्ट स्वर से बोलकर अपना दोष मालूम करें और फिर दर्पण की सहायता से ही उन दोषों को दूर करें।

३. कई स्त्रियां बड़े कर्कश तथा ऊंचे स्वर में बोलती हैं। यह उनके स्वभाव का दोष होता है। घर में आतंक अथवा शासन का भाव उत्पन्न करने के लिये ही वे ऐसा करती हैं। उन्हें अपने स्वभाव, व्यक्तिगत आचरण और जीवन के प्रति दृष्टिकोण को बदलना चाहिये।

४. यदि किसी स्त्री की वाणी में अत्यधिक गंभीरता, एकरसता अथवा नीरसता हो, तो उसे चाहिये कि वह प्रसन्नचित्त रहे और अपने भीतर विनोद-बुद्धि उत्पन्न करे। उसकी वाणी भी खिल उठेगी

५. कई स्त्रियां दम्भी तथा आडम्बरप्रिय स्वभाव की होती हैं, जिससे उनके स्वर में दूसरों को अखरने वाली कृत्रिमता आ जाती है। आत्म-निरीक्षण तथा आत्म-परिष्कार से यह दोष दूर हो सकता है।

सारांश यह कि आप अपने स्वर को स्वाभाविक, स्पष्ट और आकर्षक बनाइये, क्योंकि इसी से लोगों को आपके व्यक्तित्व का परिचय मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय का खून

(पृष्ठ २२ का शेष)

(उधर दूर सहन में बैठी हुई लिली जैकब की ओर कौतूहल से देखती है।)

लिली—(आप ही आप) आज जैकब भाई ने क्या शक्ल बनाई है! नीला कुर्ता, काली नेकटाई, लाल स्वैटर और उस पर घुटा हुआ हरा कोट! (मुंह पर रूमाल रख कर हंसती है।)

विलियम—वह देख लो न, सामने सहन में बैठी है।

जैकब—कोई पुस्तक पढ़ रही है और पढ़-पढ़ कर हंस रही है। कितनी मूर्खतापूर्ण हरकत है!

विलियम—भाई साहब, आपको उसके साथ बातें करनी चाहियें।

जैकब—क्यों?

विलियम—क्योंकि आपको उसके साथ विवाह करना होगा।

जैकब—तो क्या विवाह करने से पहले बातें करनी आवश्यक हैं?

विलियम—हम ईसाइयों में तो यही रिवाज है।

जैकब—(बेचैनी से कोट के बटन खोलते हुए) उफ़, भाग्य ने कहां तक पहुँचा दिया···!

(लिली पुस्तक पढ़ना छोड़कर जैकब की ओर कौतूहलवश देखती है।)

विलियम—देखिये न भाई साहब, लिली आप ही की ओर देख रही है—मानो आपकी प्रतीक्षा कर रही हो।

(जैकब लिली की ओर घूर कर देखता है और वह सकपका कर फिर पुस्तक पढ़ने लगती है।)

विलियम—जैकब भाई, अब यहां खड़े क्या देख रहे हो? जाओ न लिली के पास।

जैकब—देखो विलियम, तुम खुद ही सोचो, वह तो इस समय पुस्तक पढ़ रही है, मैं भला खा-म-खा क्यों उसके समय का खून करूं।

विलियम—तो क्या तुम उस समय तक प्रतीक्षा करोगे, जब तक कि वह पुस्तक समाप्त न करले।

जैकब—तुम ही बताओ, क्या करूं?

विलियम—बस यही कि तुम लिली के पास जाकर खड़े हो जाओ और इधर-उधर की बातें शुरू कर दो। और जब वह भी बातें करने लगे, तो तुम मीठी-मीठी प्रेमभरी बातों से उसका जी बहलाओ। आखिर वह तुम्हारी मौसेरी बहिन ही तो है।

जैकब—यह काम तो मुझ से न हो सकेगा।

विलियम—लेकिन तुम्हें करना होगा।

जैकब—लेकिन यह कैसे हो सकता है? न जान न पहिचान, मैं उससे बातें शुरू किस तरह करूं?

विलियम—उदाहरण के लिये तुम कह सकते हो—'गुड मॉर्निंग, लिली! आज मौसम कितना सुहावना है!' या कोई और ऐसी ही बात।

जैकब—यह बहुत मुश्किल है, मैं ऐसा नहीं कर सकता।

विलियम—(तंग आकर) तुम बिल्कुल मूर्ख हो। (उसे बरामदे और सहन के बीच की दीवार के पीछे धकेलते हुए) इधर आओ, इस दीवार के पीछे। अब तुम अपने आपको लिली समझो और मुझे जैकब। (कुछ पग आगे जाकर फिर वापस मुड़ आता है और अभिनय करता है।) गुड मॉर्निंग, लिली!

जैकब—हां! हां!

विलियम—आ···आ—ज मौसम कितना सुहावना है!

जैकब—हां!

विलियम—मुझे···म···(चुप हो जाता है।)

जैकब—देख लिया, तुम भी इस पार्ट को न निभा सके।

विलियम—(झुंझलाकर) तुम किस तरह आशा कर सकते हो मैं एक ऐसे व्यक्ति से प्रेमभरी बातें करूं, जो रंग-बिरंगे और बेहूदा कपड़े पहने हो। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Hari

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह तो वह वातावरण ही न पैदा होगा। लिली के साथ बातें करना तो बहुत ही आसान काम है।

जैकब—तो फिर जाओ तुम ही उससे बातें क्यों नहीं कर लेते।

विलियम—मुझे स्वीकार है···परन्तु मैं तुम्हें सिखाने के लिये ही ऐसा करूंगा; विवाह तुम्हीं को करना होगा।

जैकब—हां, हां, वह तो मेरा ही भाग्य फूटेगा।

विलियम—अच्छा, तो तुम सहन में उस वृक्ष के पीछे खड़े होकर ध्यानपूर्वक देखना और हमारी बातें सुनना। मैं तुम्हें प्रारम्भ करना सिखा दूंगा और यही काम कठिन है।

जैकब—हां, यह ठीक तरीका है!

विलियम—लो, मैं जा रहा हूँ लिली के पास।

(धीरे-धीरे कदम उठाता है। जैकब वृक्ष के पीछे छिप जाता है।)

लिली—(पुस्तक की ओट से झांकते हुए, आप ही आप) ओहो, यह इधर कौन आ रहा है? यह तो विलियम है··! (फिर सिमट कर पुस्तक पढ़ने में सलंग्न हो जाती है।)

जैकब—(धीमे से) मैं देख रहा हूँ, विलियम!

विलियम—हां, हां, देखते जाओ। और सुनो जैकब, मां सच कहती थी, लिली वाकई बहुत सुन्दर है। (स्वगत) ऊंहूँ, यह तो कुछ टेढ़ी खीर मालूम होती है। काम आसान नहीं। बहरहाल, अब तो आगे ही बढ़ना चाहिये।

जैकब—(धीमे स्वर से) भाई विलियम!

विलियम—(चिढ़कर पीछे मुड़ता है) क्या है! तुम कुछ भी न होने दोगे। मैं वातावरण पैदा करने का प्रयत्न कर रहा था कि तुमने·····

जैकब—देखो भाई, इस तरह मुझे कुछ भी स्मरण न रहेगा। मुझे कमरे से कापी और पैंसिल ला दो।

विलियम—बहुत अच्छा··परन्तु, यदि तुम चुप न रहे, तो कुछ भी न होगा। (कमरे में जाकर और फिर वापस आकर) यह लो कापी और पैंसिल। अब चुपचाप इस वृक्ष की ओट में बैठकर सब कुछ देखते रहना।

(लिली की ओर जाता है।)

जैकब—(कापी खोलकर पैंसिल संभालते हुए) लो भई, मैं तैयार हूँ।

विलियम—लेकिन, अब चुप रहो। (लिली के पास जाकर) गुड मॉर्निंग, लिली बहिन!

लिली—(लजाती-सिमटती हुई उठकर अत्यन्त आदरभाव से) गुड मॉर्निंग, भाई साहब!

विलियम—आज मां जी से आपके आगमन का समाचार मिला। आशा है, आपका जी लग गया होगा?

लिली—हां,····परन्तु कुछ-कुछ अकेलापन है।

विलियम—(हाथ मलते हुए) मुझे यह सुनकर बहुत खुशी··न···न···(खींसें निपोरते हुए) क्षमा कीजियेगा, मैं···मैं···

लिली—आप बैठिये तो।

विलियम—(लिली के पास बैंच पर बैठते हुए) दर-असल आप अध्ययन में सलंग्न हैं और मैं आपके अध्ययन में बाधा नहीं डालना चाहता।

डोंगरे का बालामृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिली—(पुस्तक बन्द करते हुए) अजी नहीं, मुझे तो आपसे मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई है।

विलियम—क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप क्या पढ़ रही थीं ?

लिलि—एक पुस्तक है डाक्टर विलियम स्मिथ साहब की लिखी हुई।

विलियम—मेरी लिखी हुई ?

लिली—जी हां, आपकी लिखी हुई—'हिम-यात्रा'। मुझे यह बहुत पसन्द है। (पुस्तक दिखाती है)

जैकब—(वृक्ष के पीछे से धीमे स्वर में, स्वगत) क्या मेरा शब्दकोष इसने अभी तक नहीं देखा ?

विलियम—धन्यवाद ! मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपकी अध्ययन में रुचि है।

जैकब—(स्वगत) मेरा शब्दकोष इसने देखा ही नहीं। भला यह भी कोई बात है ? मैं भी ले आऊं अपना शब्दकोष। (पंजों के बल सहन से बरामदे में और फिर कमरे में जाकर अपने शब्दकोष के दोनों खण्ड ले आता है और फिर पूर्ववत् वृक्ष के पीछे छिप जाता है।)

लिली—जी हां, मेरी अध्ययन में बहुत रुचि है। लेकिन मौसी तो कहती थीं कि इस आदत से केवल समय नष्ट होता है।

विलियम—बिल्कुल गलत, मेरी सम्मति में तो स्वाध्याय मनबहलाव का सर्वश्रेष्ठ साधन है।

लिली—अच्छा, तो अगली बार जब मौसी ने मुझे पढ़ने से रोका तो मैं आपका हवाला दे दूंगी।

विलियम—न न, ईश्वर के लिये ऐसा न करना। यदि मां का बस चले तो मैं सारी उम्र या तो किसी दफ्तर की क्लर्की करूं और या एजण्टों के पीछे भागा-भागा फिरूं।

लिली—और मुझे सिवाय खाना बनाने और गिरजाघर जाने के और कोई काम ही न हो।

विलियम—और मां के विचार से यह एक आदर्श दम्पति की मिसाल है।

(दोनों हंसते हैं)

जैकब—(वृक्ष के पीछे से ऊंचे स्वर में) विलियम !

विलियम—(उछलते हुए) अब क्या है ? (लिली से) मैं अभी आया। (वृक्ष के पीछे जाकर जैकब को और भी परे धकेलते हुए गुस्से और रोब से) देखो जैकब, तुमने फिर बना-बनाया खेल चौपट कर दिया।

जैकब—(न सुनते हुए) देखो विलियम, मेरे शब्द-कोष में प्रूफ की बहुत-सी अशुद्धियां रह गई हैं। कितनी लज्जाजनक बात है—कितनी लज्जाजनक ! मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि मैंने सब प्रूफ देख लिये थे। मैं आज ही प्रकाशक को लिखता हूँ कि वह शब्दकोष का नया संस्करण छपवाये।

विलियम—जैकब, तुम यह क्या अंडबंड बक रहे हो ? अब इस शब्दकोष का खयाल छोड़ो और इस बात की ओर ध्यान दो कि तुम्हें लिली से बातें करना है।

जैकब—उफ ! मैं यह बात तो भूल ही गया था। मुसीबत अकेली नहीं आती। लेकिन अब मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं बहुत परेशान हूँ।

विलियम—(जैकब को बरामदे की ओर धकेलते हुए) इधर आओ बरामदे में। अब पोगल मत बनो। यही एक सुअवसर है। थोड़ी देर में मां आती होंगी। तुम अभी आराम करो। जब तुम्हारा दिमाग दुरुस्त हो जाये, तो तुम लिली को अकेली पाओगे और फिर··· (सहन की ओर देखते हुए) अरे, लिली तो जा रही है। अच्छा, मैं उसे रोकता हूँ और अब तुम तैयार हो··· (भाग कर लिली के पास सहन में जाता है) क्या आप जा रही हैं ?

लिली—नहीं तो। मैंने समझा कि आप और जैकब भाई कुछ बातें करना चाहते हैं।

विलियम—भाई साहब की तो आदत है कि हर वक्त परेशान करते हैं। (दोनों बैठ जाते हैं।)

लिली—हां, तो···?

विलियम—हम क्या बातें कर रहे थे ?

लिली—आपकी पुस्तक ही की चर्चा थी।

विलियम—तो क्या सचमुच आपके खयाल में मैं एक शुष्क किताबी कीड़ा नहीं ? मां तो यही कहती हैं।

लिली—यदि आप की पुस्तकें इसी तरह रोचक हैं, तो भला आप कैसे शुष्क हो सकते हैं ? लोग यात्रा करते हैं तो भ्रमण के अनुभव, भ्रमण का उल्लास अपने तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही सीमित रखते हैं, और आप पुस्तकें लिखकर अपना सारा उल्लास मानो बांट देते हैं। एक शुष्क मनुष्य तो ऐसा नहीं कर सकता।

विलियम—कितना सुन्दर विचार है! मैं सच कहता हूं, मैंने इस कृति को कभी इस भावना से नहीं देखा। लिली, मैं पूछता हूं, हमारी भेंट इससे पहले क्यों नहीं हुई?

लिली—मैं क्या जानूं।

(जैकब फिर वृक्ष के पीछे आ बैठता है।)

जैकब—(आप ही आप बड़बड़ाते हुए) प्रारम्भ करने में भी कितना समय लगता है। उफ! मेरे अमूल्य समय का खून!

विलियम—हां, गलती तो मेरी ही थी। आज तक तो मैं अन्धा था। लेकिन अब आपके कारण दृष्टि प्राप्त हुई है। मैं आपका आभार मानता हूँ।

लिली—मैंने आपको अन्धा नहीं कहा।

विलियम—यह तो आपकी कृपा है।

लिली—एक बात कहूँ?

विलियम—सौ बार।

लिली—क्या आप अपने अमूल्य समय के कुछ क्षणों से मेरा जीवन भी आलोकित कर सकते हैं? मौसी कहती थीं कि आप हर समय परियों की कहानियां पढ़ते रहते हैं। क्या आप वे कहानियां मुझे भी सुनायेंगे?

विलियम—अवश्य! गर्मियों में उस फूलों वाले चबूतरे पर बैठ कर।

लिली—और सर्दियों में तपती हुई अंगीठी के पास।

विलियम—मैं तुम्हें वर्ष के प्रत्येक दिन में एक नई कहानी सुनाया करूंगा।

लिली—कितना अच्छा होगा वह समय—पुराने समय ही की तरह।

विलियम—पुराना समय?

लिली—हां, जब मैं नन्ही-मुन्नी सी बच्ची थी, तो बूढ़ी दादी अम्मा मुझे अत्यन्त रोचक कहानियां सुनाया करती थी—परियों, देवों, और राजाओं के सम्बन्ध में। आप उन कहानियों की कल्पना भी नहीं कर सकते जो बूढ़ी दादी अम्मा मुझे सुनाया करती थीं।

विलियम—पुरानी कहानियां, जो कई पीढ़ियों से जिह्वांतरित होती हुई हम तक पहुँचीं?

लिली—हां, वही पुरानी कहानियां। मैंने कई बार सोचा कि उन सुन्दर गाथाओं को लिख डालूं, क्योंकि अब दादी अम्मां का देहान्त हो गया है, तो सम्भव है कि मैं उनको भूल जाऊं।

विलियम—सुनो लिली, क्या तुम किसी ऐसे व्यक्ति के लिये उन पुरानी कहानियों को याद कर सकोगी जो उन्हें लिपिबद्ध करने की लालसा रखता है।

लिली—परन्तु ऐसा व्यक्ति कौन है?

विलियम—मैं!

लिली—आप क्यों मेरा मजाक उड़ा रहे हैं। आप जैसा विद्वान् क्या बच्चों की कहानियां लिखेगा?

विलियम—नहीं लिली सच कहता हूँ, मैं उन कहानियों ही की खोज में था—वे कहानियां जो अनगिनत

वीरांगना

प्यारी बहिनों की भलाई के लिये

जो बहिनें सन्तान की अधिकता अथवा पति की स्वार्थपरता अथवा किसी अन्य कारण वश युवावस्था में ही बुढ़ापा तथा सौंदर्य-विहीनता का अनुभव करने लगी हों। जो प्रदर (लिकोरिया) के रोग में ग्रस्त हों और जीवन भार रूप अनुभव कर रही हों अथवा जिनका मासिक-धर्म समय पर न आता हो या कष्ट से आता हो। कमर में दर्द, आंखों के आगे अंधेरा व संतान न होती हो, गर्भपात हो जाता हो तो ऐसी दशा में 'वीरांगना' सेवन करें। वीरांगना आपके स्वास्थ्य और सौन्दर्य की रक्षा करेगी व आपको सचमुच वीरांगना बना देगी। हजारों बहिनें इसका सेवन कर अपनी बीती यौवनावस्था को पुनः प्राप्त कर चुकी हैं। दाम ११) मात्र।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी, हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीढ़ियों से होती हुई हम तक पहुँची हैं और अब उन्हें कोई महत्व नहीं देता। और देखो लिली, यह पुस्तक हम दोनों इकट्ठे लिखेंगे। (लिली का हाथ पकड़ते हुए) क्या आप मुझ पर यह उपकार करेंगी ?

(इतने में जैकब वृक्ष के पीछे से निकल कर लिली और विलियम के बिल्कुल समीप आ जाता है और विलियम के कन्धे पर हाथ रख देता है। इस पर सकपका कर विलियम लिली का हाथ तुरन्त छोड़ देता है।)

जैकब—देखो विलियम, अब मैं बिल्कुल समझ गया। मेरा खयाल है कि अब मैं पूरी तरह निभा सकूंगा। (लिली से) गुड मॉर्निंग, लिली बहिन !

विलियम—(गुस्से से) भगवान की सौगन्ध, जैकब, यह सब असह्य है। आखिर दुनिया में शिष्टाचार भी कोई चीज है। जरा किसी से बात करो कि तुम आ धमकते हो। क्या है अब ? (लिली से) क्षमा कीजियेगा, मैं अभी आया। (जैकब को एक ओर ले जाता है।)

जैकब—(घबराकर और कुछ खिसियाना-सा होकर) भई विलियम, तुम तो व्यर्थ ही रुष्ट हो रहे हो। मैं···तो···मैं तो केवल यह कह रहा था कि मैं समझ गया हूं और तुम जा सकते हो, अब मैं स्वयं ही निबट लूंगा।

विलियम—क्या निबट लोगे ? किस तरह से निबट लोगे ?

जैकब—(साश्चर्य) यही न, लिली से प्रेम भरी बातें करने में·····

विलियम—(लज्जित सा होकर, स्वगत) लिली से बातें···ओह ! मैंने क्या कर दिया ! कितनी भयानक स्थिति पैदा हो गई है ! अब क्या होगा ? (जैकब से) देखो, भाई साहब, अभी मैं कुछ नहीं बता सकता। भगवान के लिए तुम जरा चले जाओ, मैं अभी तुम्हें सारी स्थिति से सूचित कर दूंगा। (धकेलते हुए उसे वृक्ष के पीछे ले जाता है।)

जैकब—(नम्रता से) मुझे क्षमा करो, विलियम, मैं समझा था कि मेरी शिक्षा समाप्त हो ली। क्या अभी कुछ बाकी है ?

विलियम—हां, हां, अभी बहुत कुछ बाकी है। (लिली की ओर जाते हुए, आप ही आप) उफ, मेरी बुद्धि पर भी क्या पर्दा पड़ गया ! मैं यह तो भूल ही गया था कि मैं जैकब के स्थान पर यह खेल खेल रहा हूं। (उसे देखकर लिली उठ खड़ी होती है।) लिली, ठहरो !

लिली—मेरे खयाल में जैकब भाई आपसे कुछ कहना चाहते हैं।

विलियम—कुछ नहीं। भाई साहब तो सदा ही शब्दकोष के चक्कर में रहते हैं।

लिली—बेचारा जैकब ! और आपको क्या हुआ ? आप भी तो परेशान दीख रहे हैं।

विलियम—नहीं तो।

लिली—आप उन पुरानी कहानियों के बारे में कुछ कह रहे थे, जो दादी अम्मा मुझे सुनाया करती थीं।

विलियम—तो क्या आप वादा करती हैं कि आप

सन्तान निरोधक औषधि

यदि औरतों की बीमारी या कमजोरी या किसी ऐसी ही वजह से बच्चे पैदा करना नहीं चाहते हों, तो यह 'वन्ध्याकारक दवा' मंगाकर केवल ५ दिन सेवन करावें। इससे सन्तान निरोध हो जायगा। दाम ४) डाक खर्च ।।) इस दवा से हजारों औरतें फायदा उठा चुकी हैं। यह दवा औरतों को कोई नुकसान नहीं करती।

रुका हुआ मासिक धर्म

हर प्रकार के बन्द मासिक को फौरन खोलकर साफ करने की दवा ७।।) डा० ।।)

खबरदार ! गर्भवती स्त्री इसको इस्तेमाल न करें

पता—

चपलादेवी दवाखाना, चपला भवन,

नं० २५ मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे वे सब कहानियां सुनायेंगी ?

लिली—परन्तु मैं तो कुछ दिन बाद अपने घर वापस चली जाऊँगी।

विलियम—(मुस्कराते हुए) अब मैं तुम्हें वापस नहीं जाने दूंगा।

लिली—हूँ।

विलियम—(प्यार से) मेरी अच्छी लिली, तुम सच-मुच 'लिली' हो!

(जैकब जोर से आह भरता है।)

विलियम—तुम्हारे बर्फ के से सफेद कोमल हाथ, (लिली का हाथ अपने हाथ में लेते हुए) तुम्हारी ये सुकुमार पतली उंगलियां, तुम्हारी ये नरगिसी आंखें, तुम्हारा संगीतमय स्वर! मैं इनके बिना जीवित न रह सकूंगा, लिली!

लिली—(सलज मुस्कराते हुए) मुझे विश्वास है कि आज से पहले ये बातें आपको ज्ञात नहीं थीं।

विलियम—लेकिन आज मेरे नयन प्रकाशमान हो गये हैं और जिन्दगी मुझे भविष्यत् के मंच पर नृत्य करती दिखाई दे रही है—दो तारिकाओं की नाईं सुदूर नीले आकाश की गहराइयों में!

लिली—(चुप)

विलियम—(मनुहार करते हुए) लिली!

लिली—मौसी और मां.....?

विलियम—वे तो यह चाहती ही हैं।

लिली—परन्तु अभी तो हम परियों की कहानियों की चर्चा कर रहे थे और अब...!

विलियम—और अब हम परियों की भांति प्यार के आकाश में उड़ रहे हैं। परियों की कहानियों का केवल एक ही अन्त होता है—प्रेम की परिणति! मैं भी प्रेम की परिणति चाहता हूँ, लिली?

लिली—(चुप)

विलियम—लिली!

५००) इनाम (अबनेमेंट में रजिस्टर्ड)

सिद्ध वशीकरण यन्त्र। इसके धारण करने से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। आप जिसे चाहते हैं, चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो, आपके साथ चली आवेगी। इससे भाग्योदय, नौकरी, धन की प्राप्ति, मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होना है। मूल्य २), चाँदी का ३), सोने का १२)। हमारे यन्त्र से अच्छा दूसरा कोई यन्त्र साबित करने पर ५००) इनाम।

मोहनी भण्डार रजिस्टर्ड ( ) देहली।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

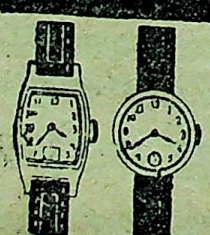

हमारे प्रसिद्ध 'काला तेल रजिस्टर्ड' के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले होजाते हैं और फिर जीवनभर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुये बालों को रोकता है और उनको लम्बे, घूंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आँखों की रोशनी तेज करता है और सिर की ठण्डक पहुँचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैन्सी म्यूट रिस्टवाच जो कि अतिसुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यूगोल्ड) बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापिस करदी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाकखर्च बिल्कुल माफ और चार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड और चार घड़ियां बिल्कुल मुफ्त दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

जनरल नोवल्टी स्टोर्स,(एम. एच.), दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिली—विलियम !

विलियम—(लिली का हाथ अपने हाथ में लेकर दबाते हुए, स्नेहार्द्र कण्ठ से) मेरी लिली !

लिली - (विभोर-सी होकर) फिर कहो !

विलियम—मेरी लिली !

लिली—(एकाएक सँभल कर हाथ छुड़ाते हुए) छोड़ दो, मौसी आ रही है ।

(विलियम लिली का हाथ छोड़ देता है । सामने से मिसिज स्मिथ आती है और विलियम और लिली को एक साथ और जैकब को अलग बैठे देखकर आश्चर्यचकित-सी रह जाती है ।)

मिसिज स्मिथ—यह क्या हो रहा है, विलियम ? और जैकब, तू वृक्ष के पीछे क्या कर रहा है ?

जैकब—(कुछ लज्जित-सा, कुछ गम्भीर-सा सामने आकर) कुछ नहीं मां, मैं यों ही अपना शब्दकोष देख रहा था ।

विलियम—(आगे बढ़कर) भाई जैकब, मुझे क्षमा कर दो···।

जैकब—मैं सब कुछ जान गया, विलियम ! तुम्हें आगे और कहने की जरूरत नहीं ।

(लिली लजाकर कमरे की ओर चल देती है ।)

मिसिज स्मिथ—तू कहां जा रही है, लिली !

लिली—अभी आई, मौसी । (चली जाती है)

मिसिज स्मिथ—अरे, यह क्या गोरखधन्धा है ? अजीब लोगों से वास्ता पड़ा है । विलियम ! जैकब ! कुछ कहो भी, मैं भी तो सुनूं ?

विलियम—मां, लिली के साथ मैं विवाह करूंगा और···(कमरे की ओर देखता है) और लिली को भी स्वीकार है ।

मिसिज स्मिथ—क्या कहा ? तू विवाह करेगा ?

विलियम—हां मां, मैं । भाई जैकब, मैं फिर क्षमा-याचना करता हूँ ।

मिसिज स्मिथ—(सब कुछ समझकर, हंसते हुए) यह भी खूब हुआ । मैं तो समझे बैठी थी कि जैकब···

जैकब—हां मां, अब मुझे भी विवाह के मामले में कुछ दिलचस्पी-सी हो गई है ।

मिसिज स्मिथ—विलियम, यह तुमने बहुत बुरा किया । तुम तो विवाह का नाम सुनकर कानों पर हाथ धरते थे ।

विलियम—जब मैंने लिली को नहीं देखा था, मां । अब यदि जैकब भाई और तुम अनुमति दो, तो···

मिसिज स्मिथ—मेरी अनुमति ! विलियम, मैं न कहती थी कि जब एक ने हां कर दी, तो बहू को देखकर दूसरा भी मान जायेगा । तुम हो या जैकब, मेरे लिये दोनों बराबर हो ।

जैकब—तुमने मेरे साथ छल किया, विलियम ! मैंने सारा दिन व्यर्थ ही अपने समय का खून किया और इस तंग कोट में घुटता रहा । लेकिन अब मैं निश्चित रूप से विवाह के विचार को पसन्द करता हूं ।

मिसिज स्मिथ—देखा, सच हुई न मेरी बात ! घबराओ नहीं, बेटा जैकब, हमारे अपने ही घराने में बहुत-सी लड़कियां मौजूद हैं । तुम्हारे चाचा की लड़की तो लिली से भी सुन्दर है और वे कई बार तुम्हारे बारे में पूछ भी चुके हैं ।

जैकब—अब यह बाद में देखा जायेगा, मां ! इस समय तो विलियम को आशीर्वाद दो । और सुनो विलियम, तुम अब बहुत व्यस्त रहोगे, इसलिये मुझे आज्ञा दो कि मैं इस बात का अनुसन्धान करूं कि परियों की पौराणिक कथाओं में सदैव छोटा भाई ही क्यों राजकुमारी से विवाह करने में सफल होता है ?

(दोनों भाई कहकहा लगाते हैं ।)

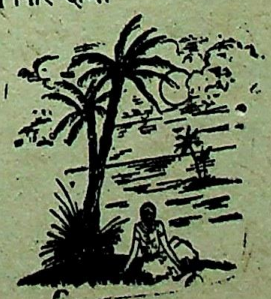

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'चन्द्रलेखा'

श्री हरिश्चन्द्र

★

कुछ वर्ष पूर्व श्री वी० शान्ताराम ने कहा था कि "हालीवुड के फ़िल्म-निर्माताओं को जितने साधन प्राप्त हैं यदि भारतीय फिल्म-निर्माताओं को उनसे आधे भी उपलब्ध हो जायें, तो वे अमेरिकन फिल्मों से अधिक अच्छी नहीं, तो कम से कम उनकी टक्कर की फिल्में अवश्य बना सकते हैं।" सम्भव है, उस समय किसी को 'अमर ज्योति' के निर्माता-निर्देशक का यह दावा निरी दर्पोक्ति ही लगा हो, किन्तु आज यह विश्वास किया जा सकता है कि यदि भारतीय निर्माता इस ओर समुचित ध्यान दें तो वे वस्तुतः निकट भविष्य में ही ऐसी फिल्मों का सृजन कर सकते हैं, जो टैक्नीकल विशेषताओं में भी अमेरिकन फिल्मों से सहज ही प्रतियोगिता कर सकें।

इस दिशा में सर्वप्रथम प्रयत्न मद्रास के 'जेमिनी पिक्चर्स' ने किया है, जिसने अभी हाल में लाखों रुपयों के व्यय से हिन्दी में 'चन्द्रलेखा' का निर्माण किया है।

जहां भारतीय फिल्मों के निर्माण में साधारणतया एक-डेढ़ लाख और अधिक से अधिक दो-सवा दो लाख रु० व्यय होते हैं, वहां 'चन्द्रलेखा' पर लगभग ३५ लाख रु० व्यय किये जाने की बात कही जाती है। इस तथ्य में जाये बिना कि उस पर वस्तुतः कितनी राशि व्यय की गयी है, यह मानना पड़ेगा कि वह भारत की सर्वप्रथम फिल्म है, जिसमें सैटिंग्स को भव्य बनाने तथा कहानी के अनुकूल वातावरण स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है।

सम्भव है जो लोग चित्रों में कथानक और गंभीर अभिनय पर विशेष बल देते हैं, उन्हें यह चित्र उतना पसन्द न आये, जितना कि प्रायः 'न्यू थियेटर्स' आदि का कोई चित्र पसन्द आता है। किन्तु ऐसे लोगों को फिल्म-निर्माताओं की कठिनाइयों को भी अवश्य ध्यान में रखना चाहिये। यदि 'जेमिनी' अपने इस प्रथम प्रयास में शुद्ध मनोरंजन की दृष्टि से फिल्म न बना कर किसी समस्या-प्रधान कथानक को अपनी फिल्म का आधार चुनता, तो उसे जोखिम तो उठानी ही पड़ती, साथ ही अपनी आय का क्षेत्र भी बहुत अधिक सीमित कर लेना पड़ता। 'चन्द्रलेखा' को जिस ढंग से निर्मित किया गया है, उससे उक्त फिल्म हिन्दी भाषा में ही अन्य देशों में भी दिखलायी जा सकती है और विदेशी दर्शक भी इस फिल्म से वैसा ही आनन्द प्राप्त कर सकते हैं, जैसा कि हम भारतीय लोग प्रायः अलेग्जेण्डर कोरडा द्वारा निर्मित मनोरंजक चित्रों से प्राप्त करते हैं।

'चन्द्रलेखा' के सैटिंग्स की भव्यता और कहानी की मनोरंजकता में कोई सन्देह नहीं। हां, निदेशन तथा सम्वाद-लेखन की कुछेक भूलों के कारण चित्र में कुछ स्थलों पर अभिनय में कृत्रिमता आ गयी है और सम्वाद कहीं २ अरुचिकर तथा अस्वाभाविक हो गये हैं। प्रथम मिलन पर नायक का नायिका से, उसके कपड़ों पर भूल से कीचड़ के छींटे डल जाने पर, क्षमा याचना करने के साथ ही उसके सौन्दर्य का बखान करने लग जाना और नायिका का खानाबदोश लड़कियों से, अपने को भिन्न भाषा-भाषी प्रकट कर आरम्भ में संकेतों से बात-चीत करते हुए भी, बाद में हिन्दी में बातचीत करना बहुत अधिक अखरता है। यदि निर्देशक श्री वासन चित्र को भव्य और मनोरंजक बनाने के प्रयत्नों के साथ-साथ इन साधारण भूलों को ओर भी ध्यान देते और अभिनय-कला के प्रति अधिक उपेक्षा न दिखलाते, तो शायद चित्र दर्शकों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उन पर थोड़ा स्थायी प्रभाव डालने में भी सफल हो जाता।

फिर भी 'चन्द्रलेखा' जैसे बहुव्यय-साध्य चित्र का निर्माण वस्तुतः सराहनीय है और आशा की जानी चाहिये कि भविष्य में न केवल 'जेमिनी' ही, अन्य निर्माता-गण भी कथानकयुक्त भव्य चित्रों का निर्माण करेंगे।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुलझड़ियां

गत ३० जनवरी को देश भर में—बल्कि संसार भर में विश्ववंद्य महात्मा गांधी के निर्वाण की पहली पुण्यतिथि मनाई गई। इस अवसर पर प्रार्थना-सभायें आयोजित की गईं उपवास रखे गये, गांधी जी के प्रति श्रद्धांजलियां अर्पित की गईं, उनके नाम के नारे लगाये गये, उनके सत्य व अहिंसा के सिद्धांतों पर चलने और उनके रचनात्मक कार्यक्रम को अमली रूप देने की प्रतिज्ञाएं की गईं। पता नहीं, बात बात में गांधी जी का नाम लेने वाले कितने लोगों ने इस अवसर पर सच्चे हृदय से ये प्रतिज्ञायें कीं!

* * *

स्वर्गलोक से प्राप्त एक अपुष्ट समाचार के ज्ञाता कुछ लोगों का यह कहना है कि उस दिन गांधीजी की आत्मा हमारी इस 'पुण्यभूमि' पर कुछ समय के लिए अवतारित हो कर उन स्थानों को ढूंढती रही, जहां कई कांग्रेसजन अपने साल भर के भ्रष्टाचार का प्रायश्चित्त करने के लिए एकत्रित होने वाले थे। उन्हीं जानकार सूत्रों का यह कहना है कि गांधीजी की आत्मा कई जगह भटक कर अन्त में निराश वापस लौट गई।

* * *

यदि यह अपुष्ट समाचार सही है, तो हमारा यह सुझाव है कि स्वर्गलोक में गांधीजी के पास कांग्रेस के नये सभापति डा० पट्टाभि सीतारमैया के हाल ही में प्रकाशित उस निर्देश-पत्र की एक प्रामाणिक प्रतिलिपि भेज दी जाये, जिसमें प्रत्येक कांग्रेसजन से कहा गया है कि वह किसी पद के लिए अपने किसी उम्मीदवार की सिफारिश न करे, आयात अथवा निर्यात के लिऐ 'परमिट' प्राप्त करने का प्रयत्न न करे, अपने अथवा अपने मित्रों के लिए दुकानों का 'लायसेंस' प्राप्त करने में कोई दिलचस्पी न ले और अधिकारियों के पास किसी मामले पर प्रभाव डालने के उद्देश्य से न जाये। इस निर्देश-पत्र को पढ़ कर गांधी जी की निराश आत्मा को अवश्य ही शांति मिलेगी!

* * *

यदि उपर्युक्त अपुष्ट समाचार सही हो, तो गांधी जी की आत्मा उस बिरला-भवन को देखने भी गई होगी, जहां एक वर्ष पहले ३० जनवरी के दिन उन्होंने अन्तिम बार 'हे राम!' कह कर हत्यारी मानवता को अन्तिम नमस्कार करके विदा ली थी और जो भवन आज राष्ट्र के लिये तीर्थस्थान का महत्त्व रखता है। और यदि हमारे प्रसिद्ध गांधीभक्त तथा राष्ट्रीय कवि सियारामशरण गुप्त का वह व्यक्तिगत अनुभव, जो उन्होंने 'दिल्ली का बिरला-भवन क्या ऐसा ही रहेगा?' नामक हाल ही में प्रकाशित अपनी एक १६ पृष्ठ की पुस्तिका में व्यक्त किया है सही है तो हमें भय है कि कहीं दरबान ने गांधीजी को भी बिना कार के देखकर रोका न हो।

उपर्युक्त पुस्तिका में गुप्तजी के वे दो पत्र संग्रहीत हैं, जो उन्होंने बिरला-भवन को—विशेषकर गांधी जी के कमरे को निजू और व्यक्तिगत रूप में प्रयुक्त होता हुआ देखने के बाद ७ और २८ दिसंबर १९४८ को बिरला-भवन के स्वामी श्री घनश्याम दास बिरला को लिखे थे और जिनका, उनके कथनानुसार उन्हें अभी तक कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। लेकिन गुप्तजी ठहरे कवि। जब उन्हें अपने पहले पत्र का उत्तर न मिला तो उन्होंने अपनी कल्पना की सहायता से बिरलाजी का यह उत्तर प्राप्त किया —"जोर-जबरदस्ती चल नहीं सकती। भवन मेरा है। मैं जानता हूँ कि अपनी वस्तु का मुझे क्या करना है!"

ठीक ही तो है। अपनी वस्तु को कोई खा-म-खा राष्ट्र के हवाले क्यों करदे? जब अभी मिलों, खानों और बड़े-बड़े उद्योगों का राष्ट्रीयकरण नहीं हुआ, तो किसी के मकान का राष्ट्रीयकरण कैसे हो सकता है?

* * *

खैर, बिरला-भवन के राष्ट्रीयकरण की यह जो चर्चा होने लगी है, इससे हम समझते हैं कि देश के अन्य बड़े-बड़े भवनों के पूंजीपति स्वामी एक संकल्प जरूर करेंगे और वह यह कि भविष्य में वे अपने यहां म० गांधी जैसे किसी भी लोकप्रिय नेता को महमान बना कर नहीं ठहरायेंगे! यदि ठहरायेंगे तो उस नेता के जीवन और अपने मकान का पहले से बीमा करवा लेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटिका

फूलों का त्योहार

श्री चिरंजीत

(एक छोटे से मकान का बरामदा। एक ओर आम का हरा-भरा वृक्ष। जब पर्दा उठता है तो मोहन और मुन्नी हँसते और किलकारी मारते हुए दिखाई देते हैं। उनका शोर सुन कर भीतर के कमरे से उनकी मां आती है।)

मां— मोहन !... मुन्नी ! अरे, तुम दोनों को क्या मिल गया है, हंसते ही जा रहे हो ?

(दोनों हंसते हैं)

अरे, कुछ मुझे भी तो बताओ ... लो, फिर हंसने लगे ! आखिर, बात क्या है ?

मोहन—मां, हमें पिता जी, आज...

मां—मोहन, पहले बात तो पूरी कर लो, बाद में हंस लेना। मुन्नी, तुम बताओ।

मुन्नी—हमें पिता जी आज...

मोहन—मेला दिखाने ले जायेंगे।

मां—अच्छा, इसी खुशी में हंसी के फव्वारे छूट रहे हैं।

मोहन—मां, पिता जी अभी आते होंगे। उन्होंने हमें तुरंत तैयार होने को कहा है।

मां—तो कोई बात नहीं, मैं तुम्हें अभी तैयार किये देती हूँ। (भीतर जाकर कुछ कपड़े उठा कर लाती है।) यह रही तुम्हारी बसन्ती टोपी, बसन्ती अचकन, बसंती रूमाल और यह रही मुन्नी की बसन्ती चुनरी।

मोहन – सब बसन्ती ?

मां—बेटा, वसन्त-पंचमी के दिन छोटे-बड़े सभी बसन्ती कपड़े पहनते हैं। खिड़की से जरा बाहर झांक कर तो देखो ? सभी ने बसन्ती कपड़े पहन रखे हैं न; मनुष्यों की तो बात अलग रही, आज तो धरती भी बसन्ती रंग की साड़ी पहने है।

मुन्नी— कहां है साड़ी, मां ?

मां—मुन्नी, यह जो दूर दूर तक सरसों के खेत दिखाई दे रहे हैं, धरती रानी की यही तो बसन्ती साड़ी है।

(मोहन और मुन्नी ठहाका मार कर हँसते हैं।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन—वाहवा ! बहुत अच्छी साड़ी है !

मुन्नी—(हँसते हुए) भैया, यह जो पीले पीले फूल हैं न, ये धरती रानी के गहने हैं।

(दोनों फिर हंसते हैं।)

मां—तुम दोनों बड़े नटखट हो गये हो। अच्छा, तुम जल्दी से कपड़े पहनो, मैं तुम्हारे लिए खाना लाती हूँ।

मोहन—मां, मैं तो आज खाना नहीं खाऊंगा; मेले में जाकर मिठाई खाऊंगा।

मुन्नी—मां, मैं भी खाना नहीं खाऊंगी।

मां—मैंने तुम्हारे लिए आज बड़े चाव से बसन्ती हलुआ बनाया है।

मोहन—बसन्ती हलुआ ? खूब। पहनने को कपड़े बसन्ती, खाने को हलुआ बसन्ती...

मुन्नी—और पीने को पानी भी बसन्ती।

(दोनों हंसते हैं)

मां—लो, फिर हंसने लगे। वसन्त-पंचमी क्या आई, तुम दोनों हंसी के गोलगप्पे बन गये हो। बच्चो, मेरी बात मानो, थोड़ा-सा हलुआ और दो-दो पूरियां ही खालो। वसन्त-पंचमी के दिन बसन्ती हलुआ जरूर खाना चाहिये।

मोहन—अच्छा, मां, मैं थोड़ा-सा खाऊंगा। (एकाएक रुक कर) मुन्नी, मुन्नी, देखो सामने पतंग उड़ रही है—एक नहीं, दो-तीन-चार...

मुन्नी—भैया, यह तो कई पतंगें हैं।

मोहन—मुन्नी, वह देखो, पेंच पड़ा हुआ है। लो, वह हरे रंग की पतंग कट गई। मां, आज मैं भी पतंग उड़ाऊंगा।

मां—नहीं, बेटा, पतंग उड़ाना बुरी आदत है। पतंग उड़ाते-उड़ाते छत से गिरने का, चोट लग जाने का डर रहता है।

मोहन—नहीं, मां, मैंने सुना है कि जैसे वसन्त पंचमी के दिन बसन्ती हलुआ जरूर खाना चाहिये, वैसे ही बसन्ती पतंग भी जरूर उड़ानी चाहिये।

(सब हंसते हैं।)

मां—मोहन, अब तुम बातें बहुत बनाने लगे हो। तुम्हारे पिता जी आते ही होंगे, जल्दी से खाना खाकर तैयार हो जाओ।

मोहन—आज, मां, मैं मेले से बहुत से खिलौने लाऊंगा।

मुन्नी—खिलौने तो मैं भी लाऊंगी और फिर मुझे तो अपनी गुड़िया के घर का सामान भी लाना है...

मोहन—मुन्नी, तूने अपनी गुड़िया को बसन्ती कपड़े नहीं पहनाये ?

मुन्नी—अरे, मैं तो भूल ही गई।

मोहन—कोई बात नहीं, लाओ उसे मैं बसन्ती रंग में दो डुबकियां दे दूं...

मुन्नी—न भैया, अभी तो सर्दी है, बेचारी बीमार...

मां—अरे, तुम लोग फिर बातें बनाने लगे। जल्दी खाना खाओ। लो, तुम्हारे पिता जी भी आ गये—

(पिता का प्रवेश)

पिता—आओ बच्चो, चलें।

मोहन—पिता जी आ गये ! तो मां, अब हम मेले ही में जाकर मिठाई खायेंगे। आओ, मुन्नी चलें।

(मोहन और मुन्नी अपने पिता की उंगली पकड़ कर चल देते हैं। मां देखती ही रह जाती है।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ तितली !

ओ तितली !
ओ तितली प्यारी प्यारी !

सुन्दर मनहर सूरत तेरी,
परियों जैसी मूरत तेरी,
तेरे कारण सुन्दर लगती यह सारी फुलवारी !
ओ तितली प्यारी प्यारी !

मधुरस फूल पिलाते तुझको,
भौंरे गीत सुनाते तुझको,
बड़े प्यार से तुझे झुलाती झूला डारी डारी !
ओ तितली प्यारी प्यारी !

रँगे हुए हैं पंख तिहारे,
लाल बसन्ती नीले कारे,
होली के दिन किसने तुझ पर छोड़ी थी पिचकारी ?
ओ तितली प्यारी प्यारी !

तू नित फूलों के सँग रहती,
उनसे ही निज मन की कहती,
मुझसे क्यों नाराज हुई ओ नन्ही राजकुमारी ?
ओ तितली प्यारी प्यारी !

— शशिकांत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना शुल्क

बाल-पहेली नं० १६

२५ फरवरी १९४९ तक सही उत्तर

आने पर पांच रुपये नकद पुरस्कार

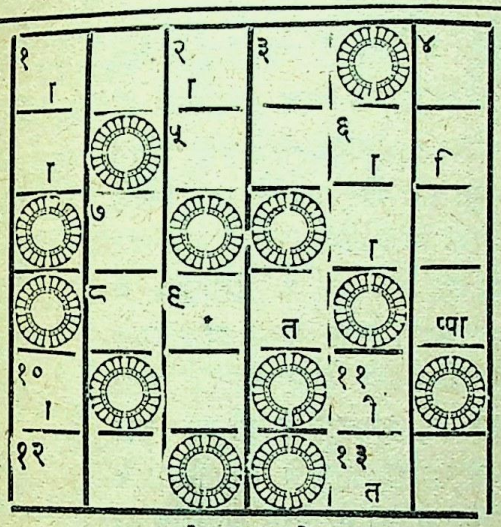

दायें से बायें

१. दिल्ली में यह अब तीर्थस्थान बन गया है।
५. 'रियासत' के उलट-पुलट अक्षर।
८. यह न आये तो कोयल भी न आये।
१२. ऐसे दो अक्षर, जो वर्णमाला में पांच अक्षरों की दूरी पर होते हुए भी 'कमलनयन' में पास-पास हैं।
१३. समुद्र कितना भी बड़ा हो, परन्तु उसका यह तो होता ही है।

ऊपर से नीचे

१. वसन्त को ऋतुओं का यह कहते हैं।
२. घोड़ा इससे मित्रता करके जी नहीं सकता।
३. उलटने से एक नहाने-धोने का स्थान बन जाता है।
४. भारत के नये प्रधान सेनापति।
६. हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा की एक पुस्तक का नाम।
७. नया-नौ।
९. इसका अर्थ जो पहले था, वह अब नहीं रहा।
१०. आजकल के उत्सवों में यह आवश्यक है।
११. बिना बात के इसका क्या महत्त्व!

बाल-पहेली नं० १५ का पुरस्कार

जनवरी १९४९ के 'मनोरंजन' में प्रकाशित 'बाल पहेली' नं० १५ का सही उत्तर श्री प्रकाशचन्द कण्डया, कच्चा ८ C/o श्री नन्दूलाल बाबूलाल, बड़ा बाजार, सागर ने भेजा है; अतः उन्हें ५) का पुरस्कार दिया गया है। सही उत्तर निम्नलिखित है।

दायें से बायें

(१) केसरिया, (५) दीवा, (७) घात, (८) बूरा, (९) बीस, (१२) चील।

ऊपर से नीचे

(२) सदी, (३) रिवाल, (४) लठैत, (६) कबूतर, (७) घास, (१०) ऋतु, (११) जाल।

बाल-पहेली के नियम

१. केवल १४ वर्ष की आयु तक के लड़के-लड़कियां ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। आयु के सम्बन्ध में माता-पिता अथवा स्कूल के अध्यापक का प्रमाण-पत्र भी उत्तर के साथ आना चाहिये।

२. उत्तर 'मनोरंजन' में छपे खाके को काट कर और भर कर भेजना चाहिए। किसी और कागज पर अलग से भेजे गये उत्तर पर विचार नहीं किया जायेगा। एक व्यक्ति एक से अधिक पूर्तियां भी भेज सकता है।

३. खानों को स्याही से सुस्पष्ट लिखे अक्षरों से भरना चाहिये। कटे-छंटे या पैंसिल आदि से लिखे अक्षर को सही नहीं माना जायेगा।

४. उत्तर २५ फरवरी १९४९ को शाम तक 'मनोरंजन' कार्यालय, श्री श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली में पहुंच जाना चाहिये।

५. सम्पादक का निर्णय अन्तिम होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनों

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं, और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिकधर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी। मुझे मासिक धर्म खुल कर न आता था। अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन कमजोर होती जा रही थी, चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की मशहूर औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से भी रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महात्मा हमारे दरवाजे पर भिक्षा के लिये आये। मैं दरवाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रंग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पतिदेव को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुःखी बहिनों की भलाई के लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखें। मैं उनको अपने हाथ से औषधि बना कर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवाई तैयार करने पर २।।।=) दो रु० चौदह आने असल लागत खर्च होता है और महसूल डाक अलग है।

* जरूरी सूचना *

मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है। इस लिये कोई बहन मुझे किसी रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, (३०) बुडलाडा, जिला हिसार पंजाब।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसको रखने के लिए लाइसेंस की कोई जरूरत नहीं, हर घर में होना चाहिये

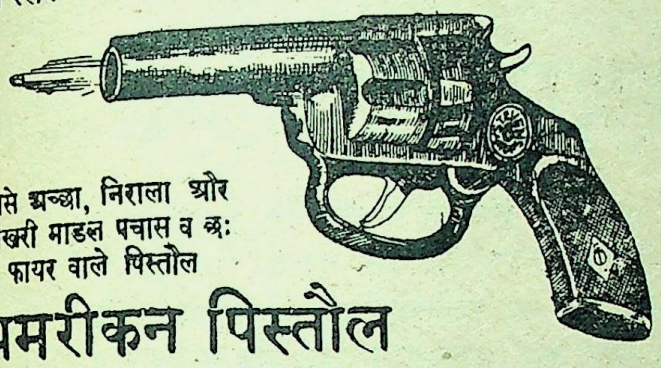

सबसे अच्छा, निराला और आखरी माडल पचास व ७: फायर वाले पिस्तौल

अमरीकन पिस्तौल

जान व माल की रक्षा के लिये इससे अच्छी कोई चीज नहीं। यह माडल असली का मानिंद अब पहली बार आया है। मूल्य ६ फायर वाले शाट के साथ माडल बी. नं० १, ४॥=), माडल बी. नं० २, ४॥=) स्पैशल माडल ए. नं० २, ७॥=), मूल्य ४० फायर वाले शाट के साथ नया माडल डी. नं० १, ३॥=), स्पैशल माडल डी. नं० २, १०॥=) फालतू शाट १) दर्जन पिस्तौल का तेल ।॥), चमड़े की पेटी पांच रुपये डाक खर्च अलग। तीन एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ।

अलाईड ट्रेडर्स लिमिटेड, (m.h) दिल्ली।

ALLIED TRADERS Ltd., (m.h) DELHI

गहरी निद्रा का आनन्द

विज्ञान का आश्चर्यजनक अविष्कार बेल्टेन किसी सोते या जागते हुए को सुधा दीजिये। वह एक घंटे के लिये गहरी नींद में सो जायगा। और हिलाने से भी न जागेगा। मूल्य केवल २) डाकखर्च ।॥-) अगर आप घण्टे से पूर्व जगाना चाहते हैं तो रैकशन सुधांइये। मूल्य केवल २) रु०। कम मिकदार या नमूना मुफ्त नहीं मिलसकता। गारण्टी की जाती है कि बेल्टेन या रैकशन किसी किसम की हानि नहीं पहुंचावे आज ही आर्डर दें और अपना पता पूरा और साफ लिखें।

मैक्सो लिवाटीव लिमिटेड, [m.h] नं० ४५, देहली।

मुफ्त! मुफ्त!

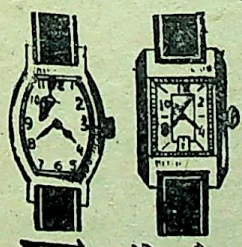

FREE

लन्दन न्यूगोल के जेवरात का मशहूर करने के लिये हमने डायरी कलेण्डर १९४८ और असली रिस्टवाच गारण्टी १५ साल मुफ्त देने का फैसला किया है यदि आप बिलकुल मुफ्त लेना चाहते हैं तो आज ही अपना नाम व पूरा पता साफ २ लिख कर भेज दें मगर जल्दी करें वर्ना यह समय बार २ हाथ न आयेगा।

फ्रेंचे गोल्ड सप्लाई कं० [m.h] देहली।

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है शौकिया काम लेने वाले तथा व्यवसायी दोनों ही काम इससे ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरा में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया रमायें। मूल्य फुल्स कैमरा पूरा तमाम फिल्म-कार्ड, कैमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ४॥=), बैस्ट क्वालिटी नं० ५४५ कीमत ६॥) डी लक्स एक्स्ट्रा, स्पैशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ६॥), पैकिंग व डाक व्यय १०)

नोट—एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५५० मुफ्त। स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसंद न होने पर कीमत वापिस।

वैस्ट एण्ड ट्रेडर्ज, पोस्ट बक्स नं० १९९ (m.h) दिल्ली।

West End Traders P. B. 199, (m.h) Delhi.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांझ स्त्रियों के लिये

मेरी शादी हुए, पन्द्रह वर्ष बीत चुके थे। इस समय के बीच मैंने सैकड़ों इलाज कराये लेकिन कोई सन्तान पैदा न हुई। सौभाग्य वश मुझे एक वृद्ध महा पुरुष से निम्न लिखित नुस्खा प्राप्त हुआ। मैंने उसे बना कर सेवन किया। ईश्वर की कृपा से नौ मास बाद मेरी गोद में बालक खेलने लगा। इसके पश्चात् मैंने जिस सन्तान हीन बहन को इसका सेवन कराया उसी की आशा पूरी हुई। अब मैं इस नुस्खे को सूची-पत्र द्वारा प्रकाशित कर रही हूं ताकि मेरी निराश बहनों की आशा पूर्ण हो।

औषधि तन्त्र ये हैं—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नैपाल गवर्नमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारी दक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम से कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कड़ियारी सफेद की जड़ (यानी सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घण्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें। इसके सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति —गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातःकाल और सायंकाल एक एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट — औषधि तन्त्र के अंदर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अंदर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

मेरी सन्तान हीन बहिनों,

आप इसे बे गुण औषधि न समझें। यदि आप बच्चे की माता बनना चाहती हैं, तो इसे बनाकर जरूर सेवन करें। मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि इसके सेवन से आपकी अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। यदि कोई बहन इस औषधि को मेरे हाथ से ही बनवाना चाहें तो पत्र द्वारा सूचित करें। मैं उन्हें औषधि तैयार करके भेज दूंगी। एक बहिन की औषधि पर पांच रुपये बारह आने। दो बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने और तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आना खर्च आते हैं। महसूल डाक वगैरह बारह आनें इससे अलग है।

नोट — जिस बहिन को मेरे पर विश्वास न हो वो मुझे दवा के लिए हरगिज न लिखें।

रतनबाई जैन (४४) सदर बाजार थाना रोड, देहली।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड

आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वाधान में

दैनिक वीर अर्जुन — साप्ताहिक वीर अर्जुन सचित्र

मनोरंजन मासिक — विजय पुस्तक भण्डार

अर्जुन प्रेस

सचालित हो रहे हैं। यह प्रकाशन सस्था सुदृढ आर्थिक स्थिति की है।

अधिकृत पूंजी ५,००,००० — **प्रस्तुत पूंजी २,००,०००**

गत वर्षों में इस सस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४	१० प्रतिशत
सन् १९४५	१० प्रतिशत
सन् १९४६	१५ प्रतिशत

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को १० प्रतिशत लाभ दिया है!

आप जानते हैं ?

* इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्ही लोगों द्वार होता है।
* 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सफल बनाने में लगी रही हैं।

आपभी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

* इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं!
* राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
* अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
* आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदनपत्र की मांग कीजिये।

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,

श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

प्रिन्टर पब्लिशर श्री दुर्गाप्रसाद शर्मा द्वारा, अर्जुन प्रेस देहली में छप कर प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kan

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० — डी० १७३

लम्बी यात्राओं में

डनलप
जायण्ट

DUNLOP
TRADE MARK

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. G

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय-पुस्तक भण्डार की सामयिक पुस्तकें

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है। मूल्य १॥) रुपया।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय ललकार एक ही साथ हैं पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य हैं। मूल्य १) डाकव्यय ।-)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झाँकियाँ'

प्रथम खण्ड-दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन, मू०॥)

द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला? मूल्य ॥)

तीसरा खंड-मेरे नौकरशाही जेल के अनुभव, मू० १)

तीनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य १॥)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी।

मूल्य २)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है

अपितु

जनता के उद्‌बोधन का मार्ग है।

इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)।

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा।

मूल्य १।) डाक व्यय .=)

प्राप्ति स्थान—विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियों के लिये अतिरिक्त शक्ति

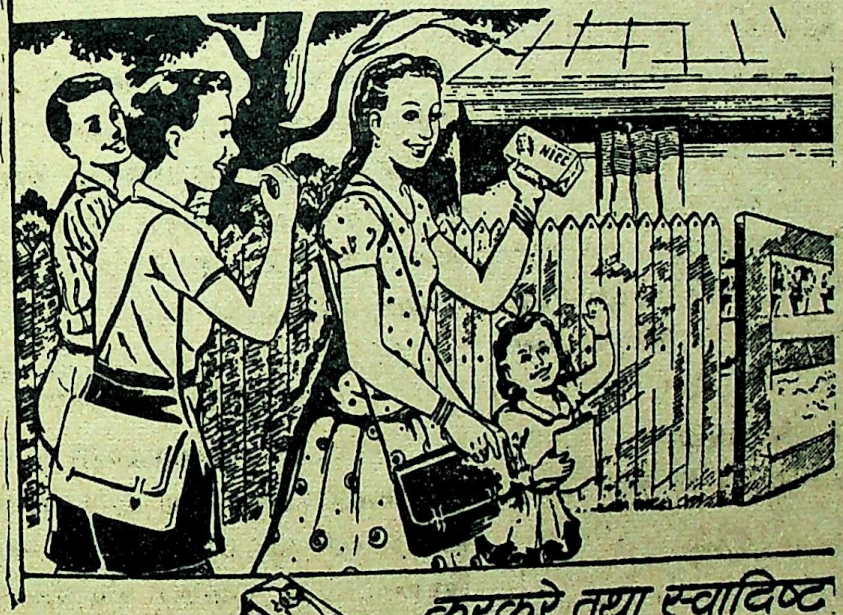

कुरकुरे तथा स्वादिष्ट

एक्मे बिस्कुट

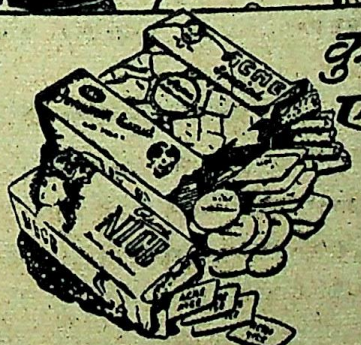

Acme BISCUITS

एक्सपेशल, नाइस, मरी, कस्टर्ड क्रीम, क्रीमक्रैकर,
सालटिस, पिटेबरी क्रिमारक्रीम, जिंजरनट
अरारोटबफर, थिनअरारोट, किन्डरगार्टन

मोदी बिस्कुट कम्पनी मोदीनगर, यू. पी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

T. B. टी० बी० 'तपेदिक' तथा पुराने ज्वर के रोगियो-ध्यान पूर्वक पढ़ो!

भारतीय ऋषियों की खोज का अद्भुत चमत्कार (JABRI) एक आश्चर्यजनक घटना

मेरी स्त्री अनेक दिनों से बीमार थी, आखिर डाक्टरों ने 'तपेदिक' (टी० बी०) रोग बतलाया। 'तपेदिक' का नाम सुनते ही होश हवाश उड़ गये। अन्त में डाक्टरों ने एक्सरे करके दोनों फेफड़े खराब (गल) जाने की बात कह कर मुझे आदेश दिया कि रोगी १०-१५ दिन का मेहमान है। इसको अस्पताल से ले जाओ और किसी अलग कमरे में रख दो। कोई इसके पास न जावे। इसके थूक आदि से बचाव रखो लाचार हो कर उसको घर ले आया।

फिर क्या हुआ—अखबार 'मिलाप' में आपकी दवा 'जबरी' का विज्ञापन देखा। दिल ने कहा, जहां सैकड़ों रुपया हकीम, डाक्टरों की भेंट चढ़ा चुका हूं, यह भी खर्च करके देख लूं। रोगी ने कहा कि जब डाक्टरों ने यह कह दिया है कि दोनों फेफड़े खराब हो चुके हैं और मैं १०-१५ दिन की मेहमान हूं तो व्यर्थ क्यों खर्च करते हो, मुझे अब परमात्मा पर छोड़ दो। परन्तु दिल ने न माना और तुरन्त 'जबरी' नं० १ का आर्डर दे डाला। पांचवें दिन पार्सल पहुंच गया और विधि के अनुसार औषधि शुरू करा दी गई।

फिर क्या हुआ—वही आश्चर्यजनक चमत्कार। जिस रोगी के बारे में डाक्टरों ने मौत का फतवा दे दिया था और ६ मास बराबर इलाज करने पर भी बुखार न गया था, शक्तिशाली औषधि 'जबरी' ने दस दिन में ही अपना चमत्कार दिखा दिया, बुखार बिल्कुल जाता रहा। शरीर में रक्त का संचार होने लगा और दिल में पहले की सी उमंग पैदा हो गई। दिल में पूर्ण रूप से विश्वास हो गया कि जिस दवा ने इतनी जल्दी ऐसा चमत्कार दिखाया है क्यों न स्त्री को एक बार वहीं लेजा कर पूर्णरूप से परीक्षा करा कर आगे को इलाज का प्रबन्ध किया जावे। मेरी स्त्री की भी वही राय हुई।

फिर क्या हुआ—जिस रोगी में चारपाई से उठने की शक्ति न थी हजारों मील रेल की यात्रा करके 'जगाधरी' आ गई जहां पूर्ण परीक्षा के बाद उत्तम रूप से औषधियों का प्रबन्ध हुआ, रोगी की तन्दुरुस्ती दिन पर दिन बदलती गई और अब परमात्मा की कृपा से बिल्कुल ठीक हो गई है। यह ऋषियों के रक्त से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र की पूर्ण सफलता का चमत्कार है। उपरोक्त घटना सरदार कर्त्तारसिंह इण्डियन मिलिटरी जनरल हस्पताल, कराची से घटी।

पाठक वृन्द—यह एक नहीं और भी देखिये ! (१) लाला काशीप्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहबाद) (२) बा० मुन्नालाल स्टोरकीपर सिम्बाली शूगर मिल पो० बक्सर (मेरठ) (३) बा० रामसिंह घर नं० ६१ रीठा मण्डी (देहरादून) (४) श्री तोसलहूसेन रईस मो० मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जिला फैजाबाद आदि सैकड़ों सज्जनों का यही कहना है कि शक्तिशाली औषधि 'जबरी' दवा नहीं बल्कि यथार्थ में रोगी को काल के गाल से बचाने वाली ईश्वरीय शक्ति' है। सैंकड़ों हकीम, वैद्य, डाक्टर अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं। अनेक आदमी तार से आर्डर देते हैं। तार के लिये थोड़ा सा पता 'जबरी' (जगाधरी) (Jabri Jagadhri) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार है—'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ाने के लिए, सोना, मोती अभरक आदि मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु० नमूना १० दिन के लिये २०) 'जबरी' नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल अदि अलग है। आर्डर में अखबार का हवाला तथा नं० १ या दो साफ लिखें। तुरन्त आर्डर दे कर रोगी की जान बचावें। १० दिन ही में अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिये मूल्य मनिआर्डर से भेजें, जिससे तुरन्त भेज दें।

पता-रायसाहब के० एल० शर्मा एंड सन्स, रईस एंड बैंकर्स [M] "जगाधरी" [पूर्वी पंजाब]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

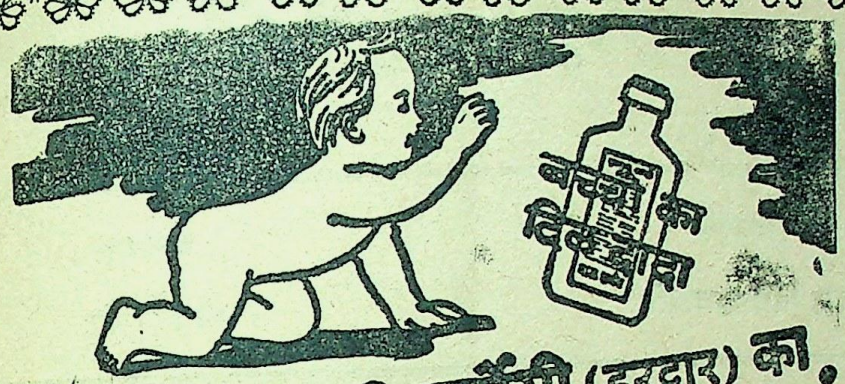

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी (हरद्वार) का.

बाल शर्बत

बढ़िया पानक है

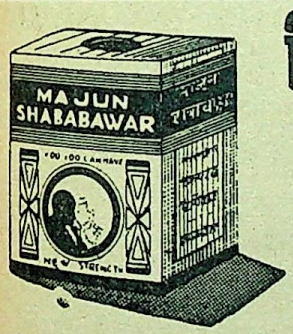

गिल्टियों का आपरेशन भी बेकार

डाक्टर वॉरोनॉफ के गिल्टियों के आपरेशन की प्रसिद्धता की चर्चा भी अब समाप्त हो चुकी है। संसार को अब नहीं तो कल यह मानना पड़ेगा कि जवानी को कायम रखने और उसको लौटा लाने में हिन्दुस्तानी चिकित्सा विधि और उसकी औषधियां न केवल साइन्टिफिक बल्कि प्राकृतिक भी हैं। इन्हीं विधियों और औषधियों से मनुष्य सैकड़ों वर्ष से लाभ उठा रहा है, और अब भी उठा सकता है।

हमदर्द की माजून शबाब आबर हिन्दुस्तानी चिकित्सा विधि की वह गर्व करने योग्य अनुसन्धान है जिससे अब तक लाखों बूढ़े जवानी का, और जवान नौजवानी का आनन्द उठा चुके हैं। यह माजून सारे मर्दाना रोगों और निर्बलता की सफल चिकित्सा है। शरीर के रग-पट्ठों और रोम-रोम में स्वास्थ्य और जवानी की लहर दौड़ा देती है।

मूल्य फी शीशी (२० खुराक) रु० ५)

हमदर्द का प्रसिद्ध माडल लहम दो आतिशा मूल्य फी बोतल रु० ५)

नोटः—रिसाला "हमदर्द नौजवान" और "हमदर्द शबाब" और हिन्दी उर्दू और अंग्रेजी के सूचीपत्र मुफ्त मंगाये।

हमदर्द दवाखाना

लेबोरेट्रीज दिल्ली।

हमदर्द

जिसकी लगभग सारी आय देसी चिकित्साओं की रिसर्च व उन्नति और कौमी शिक्षा के लिये समर्पित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय वर्ष
संख्या ६

मनोरंजन

दिल्ली

मार्च
१९४९

व्यवस्थापक
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

सम्पादक
श्री चिरंजीत

इस अंक में

कविता

तुम मुझको रोने भी मत दो !	श्री अंचल	५
रेखा-चित्र	डा० नगेन्द्र	७
प्याला और प्यास	श्री चिरंजीत	२१
मैं दो पाता यह प्यार नहीं !	श्री नीरव एम० ए०	२६
मेरा गीत तुझे कब भाया !	श्रीमती शान्ति सिंहल	२६

कहानी

काफिर जुलू	श्री आलिवर वाकर	१४
रोगी का इलाज	श्री 'नलिन'	२३
छाया की ज्योति	श्री 'रावी'	३७

लेख

होली के छींटे	श्री कलाधर	८
कांग्रेस में वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास (३)	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति	१३
सन्त और सत्कवि	श्री गुरुदयाल मल्लिक	३०
अंधकार में ज्योति-स्तम्भ	श्री बाबूराव जोशी 'साहित्यरत्न'	४६
रेडियो-भाषण	श्री एस० एच० वात्स्यायन 'अज्ञेय'	

विशेष-स्तम्भ

हास-परिहास	४१	सलोनी-दुनिया	४२
रेडियो	४६	चित्रलोक	५०
नव प्रकाशन	५१	बाल-मनोरंजन	५७

मूल्य आठ आना

वार्षिक मूल्य ५॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम मुझको रोने भी मत दो !

श्री अंचल

तुम मुझको रोने भी मत दो जब मैं देखूं जग का रौरव,
तुम मुझको सोने भी मत दो, हर लो पलकों का मधु आसव !
अपनी दो जल-धाराओं-सी उज्ज्वल बाँहें मत फैलाओ,
लाल सुरा-से अधरों का, नारी-अंगों को पास न लाओ !
तुम अँधिया की छतनारों से मत बोलो पिक-सी रुक-रुक कर,
असन्तोष की सांसों में तुम मुझे सुलगने दो तिल-तिल कर !
प्रेम-अगिन अनमोल, सत्य कह दूं, उस क्षण मैं समझ न पाता,
उससे भी दुःसह तृष्णा में जब जलता मानव दिख जाता !

तुम मुझको रोने भी मत दो कहीं नमी के धुँधलेपन में,
दूर लक्ष्य का दीप न दीखे जो जलता युग के आंगन में !
जब मुझे करने दो वे फांसें जो दिल में दर्द बनातीं,
आशा का प्रकाश बन अब वे भावी के चित्रों में आतीं !
आज हृदय की नस में दे दो तीखे तीखे नश्तर ऐसे,
कुछ कुछ ज्वालागिरि देते हैं धरती की छाती पर जैसे !
पग-पग पर संघर्ष, यही सुख है, ओ गफलत भरी जवानी !
भूलूं मैं भी लुटा कभी यौवन के प्रथम प्रहर में, रानी !
टूट गया अब तो जैसे अस्वस्थ रुग्ण मानस का सपना,
तुम भी मेरी और जगत का यह कुरूप मातम भी अपना !
गतानुगति के प्रति पशुओं-सी अन्धी श्रद्धा ले जो जर्जर,
समझें आगत कल की अपनी क्षमताओं का स्रोत अनश्वर !
कहने भर को झूठा जीवन-दान मिला, जीवित शव मानव !
तुम मुझको रोने भी मत दो जब मैं देखूँ जग का रौरव !

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली के छींटे

श्री कलाधर

अंजलि भर नये वासंती फूल अपने उन बापू की पुण्य समाधि पर, जो हमें आजादी की मंजिल पर पहुँचा कर अंतर्धान हो गये !

* * *

केशर-कुंकुम मिश्रित गुलाल की एक-एक मुट्ठी और केशर-जल की एक एक पिचकारी अपने उन कुशल कर्णधारों पर, जो राष्ट्र की नौका को भंवरों व तूफानों से बचा कर पार ले जा रहे हैं !

* * *

लाल, पीले, हरे, नीले विविध रंगों की दनादन कई पिचकारियां विधान-परिषद् तथा धारासभा के उन सदस्यों पर, जिन्हें इस आर्थिक संकट के समय में भी जीविका के लिये कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता !

* * *

छिप कर गुलाबी रंग की एक-एक पिचकारी उन आधुनिकाओं पर, जो घर-बाहर के सभी बंधन तोड़ कर मुक्त हो चुकी हैं !

* * *

एक एक बड़ा बिच्छूबूटी-मिला गहरा लाल रंग उन पूंजीपतियों और उद्योगपतियों पर, जो अपनी काली करतूतों से भारत में कम्युनिज्म के लिये [illegible] तैयार कर रहे हैं !

* * *

कोलतार का एक-एक भरपूर हाथ उन [illegible] पिशाचों के थूथनों पर, जो अपने स्वार्थों के लिये हिं[illegible] स्तान को भी चीन और बर्मा बनाना चाहते हैं !

* * *

हंडिया-भर अलकतरा उन बहुरूपियों के मुंह [illegible] जो खादी और गांधी टोपी की आड़ में चोरबाज़ा[illegible] कर रहे हैं !

* * *

प्रेस की काली स्याही उन संपादकों, लेखकों [illegible] कवियों के मुंह पर, जो अपनी लेखनी से वेश्[illegible] वृत्ति करवा रहे हैं !

* * *

खड़िया मिट्टी का पलस्तर उन काले साहबों [illegible] मुंह पर, जो दिमागी तौर पर अब भी अंग्रेज़ों [illegible] गुलाम हैं !

* * *

सहानुभूति के साथ एक-एक बालटी पीला [illegible] उन राजाओं-महाराजाओं पर, जिन्हें अब भारत [illegible] सरकार के 'सेफ डिपाजिट वाल्ट' में रहना पड़ेगा !

* * *

गहरी छनी भंग का एक-एक लोटा उन मस्त [illegible] वीरों को, जो सदैव हड़ताल के लिये तैयार रहते हैं !

* * *

बासी ठंडे पानी का एक-एक लोटा उन पेट [illegible] नेताओं पर, जो धर्म के नाम पर प्रत्येक सामाजिक सु[illegible] का विरोध करते हैं !

* * *

एक एक कटोरी मुटमैला रंग उन निरक्षरभट्टा[illegible] पर, जो थैली अथवा 'पालागन' के बल पर हिं[illegible] नेता बनते हैं !

* * *

दवात की बची-खुची स्याही अपने उन मित्रों [illegible] जो सारा साल होली के 'मूड' में रहते हैं !

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र

श्री नगेन्द्र

यह अति-विस्तृत प्लैटफॉर्म जिसकी चौड़ी छाती पर,
भीमकाय एंजिन, झकझक करतीं गाड़ियां भयंकर,
अगणित संकल्पों से जिनके आलोड़ित उर-अन्तर,
दिशि-दिशि गामी यात्रीजन का उमड़ रहा है सागर।
यह व्यवसायी हानि-लाभ-गणना में रत अन्तर्मुख,
किसी नवीन सफलपण की ले रहा कल्पना का सुख।
वह अधिकारी उच्च, सम्हाले गरिमा अपने तन की,
'शंकर' के कार्टूनों से भर रहा रिक्तता मन की।
उधर दूर कोने में बैठे नव-दम्पति पंजाबी,
लिपटी जिनके अंगों से वासना अधीर गुलाबी।

सीटी बजी और रेंगी धीमी गाड़ी पटरी पर,
जगे विदा के दृश्य व्यथित खिड़की के बाहर-भीतर।
स्वाभाविक-कृत्रिम कर-पीड़न शत शत दिए दिखाई,
हिले रुमाल, अधर फड़के, आंखें गीली हो आईं।
मुझ को यह सब लगा अनीप्सित शिष्टाचार-प्रदर्शन,
मेरी बुद्धि विजय पर अपनी हँसी सहज मन ही मन।
इतने ही में भीड़ चीर कर वह तेरी परछाईं,
मुझे विदा देने को रीती दृष्टि समेटे आई।

मधु फूलों का हास सिमट बन गया करुण स्मित-रेखा,
मीलों का व्यवधान पार कर तुमको सम्मुख देखा।
सहम गया मेरा विवेक उस द्रवित मूर्ति के आगे,
मैंने आंखें मूंद तुम्हारे चरण छुए अनुरागे।
तार्किक बुद्धि, विवेक, आत्मसंयम जीवन का बल है,
पर इन से भी अधिक प्राण की ममता कहीं प्रबल है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्मरण—३

कांग्रेस में वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

विद्वान् लेखक के ये संस्मरण भारतीय कांग्रेस के संघर्ष-कालीन इतिहास के उस महत्त्वपूर्ण पहलू पर बड़े प्रामाणिक ढङ्ग से प्रकाश डालते हैं, जिसकी ओर बहुत कम लोगों का ध्यान गया है। प्रस्तुत लेख में पं० मदनमोहन मालवीय और लाला लाजपतराय की वक्तृत्व-शक्ति का विवेचन किया गया है।

पं० मदनमोहन मालवीय

मैंने श्रद्धेय मालवीय जी के दर्शन तो पहिले भी किये थे, पर व्याख्यान लखनऊ में ही सुने। स्नातक बनने के अगले ही वर्ष मैं और मेरे बड़े भाई हरिश्चन्द्र जी, पिता जी के साथ शिमले गये थे। वहां मालवीय जी भी गये हुए थे। वे सनातनधर्म सभा के मन्दिर में

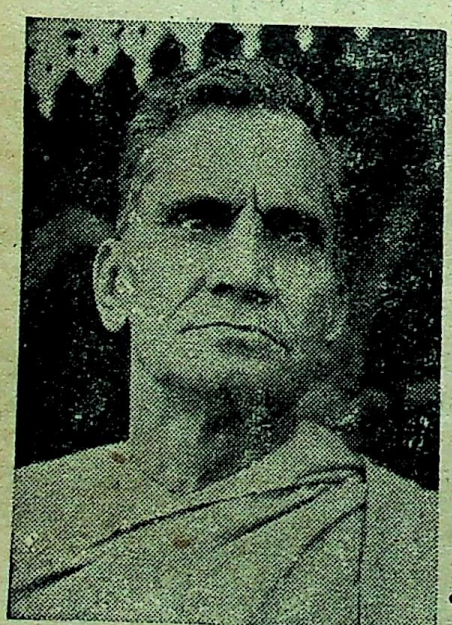

लेखक

ठहरे हुए थे। हम लोग प्रातःकाल आठ-नौ बजे उनके स्थान पर मिलने के लिये पहुँचे, तो वे क्षौर बनवा रहे थे। एक नाई आहिस्ता-आहिस्ता उस्तरा चलाता जाता था और हिन्दू विश्वविद्यालय की विशाल योजना का वह आकर्षक वृत्तान्त भी सुनता जाता था, जो मालवीय जी महाराज उसे सुना रहे थे। वे नाई के सामने अत्यन्त सुबोध ढंग से विश्वविद्यालय की विशेषतायें ऐसे समझा रहे थे, मानों उस नाई की संतुष्टता पर ही विश्वविद्यालय का भविष्य अवलम्बित हो। हम लोग भी जाकर उसी कमरे में बैठ गये। पिता जी से मालवीय जी का बहुत प्रेम था। उचित शिष्टाचार की बातचीत के पश्चात् मालवीय जी ने फिर नाई को विश्वविद्यालय की योजना का सुनाना जारी कर दिया। इसमें लगभग आध घंटा व्यतीत हो गया। हम लोग भी उस बातचीत का आनन्द लेते रहे। इतने में मालवीय जी के सेक्रेटरी ने आकर सूचना दी कि महाराज बीकानेर का आदमी एक पत्र लेकर आया है, जिसमें ६ बजे आपकी उनसे मिलने की बात याद दिलाई गई है। ६ बजने वाले हैं, आप शीघ्र स्नान कर लीजिये। मालवीय जी ने इसका जो उत्तर दिया, वह मुझे भली प्रकार याद है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपने कहा, "उस आदमी द्वारा कहला दो कि आज मैं नहीं मिल सकूंगा। किसी दूसरे दिन मिलूंगा।"

सैक्रेटरी ने पूछा, "महाराज, आज क्या काम है?"

मालवीय जी ने उत्तर दिया, "देखते नहीं हो, इस भाई को विश्वविद्यालय की योजना समझा रहा हूं। क्या यह कम महत्वपूर्ण बात है?"

इस प्रश्नोत्तर का हम दोनों भाइयों के युवक-हृदयों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। हम दोनों को उन्होंने एक २ उपदेश भी दिया। मुझसे कहा, "पूरा वेश पहिना करो। धोती-कुरते के साथ गले में दुपट्टा अवश्य डाला करो।" भाई जी से कहा, "अपने भाषण में हिन्दी के बीच बीच में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग न किया करो।"

पण्डित मदनमोहन मालवीय जी

लखनऊ-कांग्रेस से पूर्व श्रद्धेय मालवीय जी से हमारा इतना ही परिचय था। समाचार-पत्रों में हमने उनके व्याख्यानों के सम्बन्ध में बहुत कुछ पढ़ रक्खा था। अंग्रेजी में उन्हें 'सिलवर टङ्ग' ('रजत-जिह्व') व्याख्याता का विशेषण दिया जाता था। सचमुच वे रजतमय थे। वे गौर-वर्ण तो थे ही, सिर से पैर तक सफेद कपड़े पहनते थे। वे कपड़े भी अपनी विशेषता रखते थे। उस वेश का क्या वर्णन किया जाय। शायद ही कोई ऐसा भारतवासी हो, जो उस वेश को न पहिचानता हो। उसे हम लोक-भाषा में 'मालवीय-मारका वेश' कह सकते हैं। आज भी यदि कोई उस तरह के वेश में दिखाई दे जाय, तो मालवीय जी महाराज या उनके परिवार के किसी व्यक्ति का भ्रम हो जाता है। उस वेश में ब्राह्मणता कूट-कूट कर भरी हुई थी। मालवीय जी की भाषा में मिठास थी और कहने की शैली भी कटुता से हीन थी। लखनऊ कांग्रेस में आपने जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषण दिया, वह तो मेरे हृदय-पट पर विशेषरूप से अङ्कित नहीं हुआ, परन्तु उसके पश्चात् लगभग ३० वर्ष तक मैं निरन्तर बड़ी श्रद्धा से उनके व्याख्यानों को सुनता रहा। मालवीय जी बहुत ऊँचे दर्जे के वक्ता थे। उनके भाषण की एक बड़ी विशेषता यह थी कि वे श्रोताओं के हृदयों के अन्तस्तल में प्रवेश करने के लिये अपनी सारी शक्ति लगा देते थे। सब बातें ऐसे ढंग से कहते थे कि वे श्रोताओं के कानों में बिना किसी प्रतिरोध के घुस जायें। अप्रिय या खटकने वाली बात वे नहीं कहते थे। कहना ही पड़े तो उसे इतने परदों में लपेट कर कहते थे कि उसका कोई कोना बाहर न रहे और चुभे बिना बात हृदय तक चली जाय। अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं पर उनका पूरा प्रभुत्व था। उनके भाषण में भाषा का प्रभाव सुरेन्द्रनाथ या विपिनचन्द्र की तरह बरसाती बाढ़ बन कर नहीं बहता था, अपितु वह शीत-ऋतु की भरी हुई गंगा के प्रवाह की तरह हल्की-सी गूंज करता हुआ अनवरत बहता था। इसीलिये आप 'रजत-जिह्व वक्ता' कहलाते थे।

मालवीय जी बड़े कुशल वक्ता थे। उनकी कुशलता उस समय बड़ी सुन्दरता से प्रकट होती थी, जब कभी उन्हें आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में महात्मा गांधी के किसी कानून-भंग सम्बन्धी प्रस्ताव का विरोध करना होता था। मालवीय जी और महात्मा जी का परस्पर भाइयों का-सा व्यवहार था। दोनों ही एक दूसरे का आदर करते थे, प्रेम भी करते थे और कई मुख्य सिद्धान्तों पर एक दूसरे से असहमत भी रहते थे। उस असहमति का मुख्य कारण यह था कि जहां महात्मा जी का मस्तिष्क और हृदय दोनों समानान्तर चलते थे, वहां मालवीय जी के मस्तिष्क और हृदय में कई बार असहमति पैदा हो जाती थी। मोटे शब्दों में हम कह सकते हैं कि उनका मस्तिष्क शीतल होने के कारण नर्म-दल के साथ था और हृदय अत्यन्त भावुक होने के कारण राजनीति और समाज के क्षेत्र में काम करने वाले उग्र से उग्र दल के साथ रहता था। यही कारण था कि प्रत्येक परिवर्त्तन के आरम्भ में वे उससे असहमत होते थे, परन्तु जब देखते थे कि परिवर्त्तन से प्रजा का हित होगा और परिवर्त्तनकारी अपने रास्ते से डिगने वाले नहीं हैं, तब वे न केवल उस परिवर्त्तन को आशीर्वाद दे देते थे, स्वयं उसके पथ-दर्शक भी बन जाते थे। उस समय उनका मस्तिष्क हृदय का सहायक बन जाता था।

हां, तो मैं यह लिख रहा था कि जब उन्हें गांधी जी के किसी उग्र प्रस्ताव का विरोध करना होता था, तब उनकी वक्तृत्व-कला चरमसीमा तक पहुँच जाती थी। वे अपना भाषण महात्मा जी, उनके सिद्धान्त और उनके नेतृत्व की प्रशंसा से आरंभ करते थे। इस कार्य में प्रायः आधा घंटा व्यतीत हो जाता था। उसके पश्चात् प्रत्येक श्रोता एक 'किन्तु' की प्रतीक्षा करने लगता था। वह उनकी वक्तृता के मार्ग का मोड़ था। उस 'किन्तु' के पश्चात् वे अपने भाषण के पूर्वार्द्ध का उत्तर देना आरम्भ करते थे और अन्त में प्रस्ताव का विरोध कर देते थे। ऐसे कुशल वक्ता को अपना पूरा अभिप्राय प्रकट करने के लिये अधिक समय लग जाय, यह तो स्वाभाविक ही था। मालवीय जी प्रायः बहुत लंबा बोलते थे, परन्तु आपका व्यक्तित्व इतना आकर्षक था और भाषा और भाषण-प्रणाली इतनी सुन्दर थी कि श्रोता के थकने का तो प्रश्न ही नहीं पैदा होता था। प्रत्येक भाषण आरम्भ से अन्त तक ध्यान से सुना जाता था।

पाठक जानना चाहेंगे कि ऐसे अवसर पर बहस का परिणाम क्या होता था? परिणाम प्रायः यह होता था कि महात्मा जी का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जाता था और मालवीय जी पूरे हृदय से उसके साथ सहमत होकर सत्याग्रहियों की अगली पंक्ति में खड़े हो जाते थे। उस समय उनके मस्तिष्क और हृदय समानान्तर हो चुके होते थे।

मालवीय जी का व्यक्तित्व अपने समय में अद्भुत था। प्रायः नेता लोग पार्टियों या संस्थाओं से सम्बद्ध होने के कारण नेता कहलाते और सम्मान पाते हैं। मालवीय जी उनसे सर्वथा अलग थे। वे स्वयं अपने आप में एक संस्था थे। सब पार्टियों में थे और किसी में भी नहीं थे। उनका व्यक्तित्व अपनी अलग ही शान रखता था। उनके सम्पर्क से पार्टियों और संस्थाओं को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योति प्राप्त होती थी। उनके इस विशाल व्यक्तित्व को बनाने वाली जो वस्तुएं थीं, उनमें से एक उनकी मधुर और योग्यतापूर्ण वक्तृत्व-शक्ति भी थी।

लाला लाजपतराय

कांग्रेस के आदिकाल के वक्ताओं में लाला लाजपतराय की चर्चा मैंने अन्त में इसलिये नहीं की कि वक्ताओं की श्रेणी में उनका नाम किसी अन्य वक्ता से नीचे है। उनका उल्लेख अन्त में करने का कारण यह है कि मैंने उनका व्याख्यान बहुत समय पीछे सुना। मैंने लालाजी का पहिला व्याख्यान तब सुना, जब वे अमरीका के लम्बे प्रवास से लौट कर भारत आये थे और पिताजी के निमन्त्रण पर गुरुकुल कांगड़ी में पधारे थे। उससे पूर्व लालाजी का व्याख्यान सुनने का अवसर मुझे नहीं मिला। जहां तक केवल वक्तृत्व-कला का प्रश्न है, मेरी सम्मति में लालाजी का स्थान बहुत ऊँचा था। यदि मैं यह कहूँ कि गत शताब्दी में हिन्दुस्तानी के जितने वक्ता हुए हैं, लालाजी का स्थान उन सब में प्रथम था, तो असत्य न होगा।

जब मैंने लालाजी का प्रथम व्याख्यान सुना, उनके सम्बन्ध में मेरी तब तक की भावनाओं का भी एक इतिहास है। हम लोग आर्यसमाज के वातावरण में पले थे। पंजाब के आर्यसमाजों में १९वीं शताब्दी के अन्त में जो गृह-कलह हुआ, वह प्रसिद्ध है। उसमें आर्यसमाज दो दलों में बंट गया। एक दल महात्मा-पार्टी के नाम से प्रख्यात हुआ और दूसरा कल्चर्ड-पार्टी के नाम से। पिताजी, जो तब महात्मा मुन्शीराम जी कहलाते थे, महात्मा-पार्टी के प्रमुख नेता समझे जाते थे और लालाजी कल्चर्ड-पार्टी के स्तम्भ माने जाते थे। उस पार्टी के प्रमुख नेता यद्यपि महात्मा हंसराज जी थे, तो भी वाग्-युद्ध का सेनापतित्व लालाजी के ही सुपुर्द था। कल्चर्ड-पार्टी की प्रमुख संस्था डी० ए० वी० कॉलिज थी और महात्मा-पार्टी की प्रमुख संस्था गुरुकुल कांगड़ी। इस तरह मौलिक रूप से डी० ए० वी० कॉलिज और गुरुकुल एक दूसरे की प्रतिद्वंद्विता में आ गये थे। स्वभावतः गुरुकुल से सम्बद्ध होने के कारण प्रारम्भ में मेरे मन में लालाजी के प्रति कोई बड़ी भक्ति भावना नहीं थी। जब वे राजनीति के क्षेत्र में आगे आये और सारा पंजाब उनकी वीर गर्जना से गूंज उठा, तब अन्य सब गुरुकुलवासियों की भांति मेरे मन में भी उनके प्रति श्रद्धा का भाव उत्पन्न हो गया। उसके पश्चात् नौकरशाही सरकार की ओर से उन पर एक के पीछे दूसरा आक्रमण होने लगा। पहिले वे माण्डले के किले में बन्द किये गये और फिर अमरीका में ही रोक दिये गये। इन सब अत्याचारों ने देशवासियों के हृदयों में लालाजी के प्रति उत्कट प्रेम और श्रद्धा की भावना उत्पन्न कर दी थी। लालाजी भी राजनैतिक संघर्ष के इन वर्षों में बहुत बदल गये थे। जिन्हें आर्यसमाज के गृह-युद्ध के दिनों में पिताजी का मुख्य प्रतिद्वन्द्वी समझा जाता था, उन्होंने अमरीका से पिताजी को एक पत्र लिखा था, जिसमें पिताजी के राजनैतिक और सांस्कृतिक कार्य से सहमति प्रकट करते हुए अन्त में लिखा था—"मैं अमरीका में बैठे हुए आपके कार्यों पर अभिमान का अनुभव करता हूं!" इस प्रकार देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन ने उन दो वीरात्माओं को एक दूसरे के समीप लाकर खड़ा कर दिया था, जो स्वभाव में, विचारों में, और कार्य-प्रणाली में एक दूसरे के इतने निकट थे, जितने निकट शायद ही कोई अन्य दो व्यक्ति हों।

कई बार ऐसा होता है कि हमने जिस वस्तु या व्यक्ति की बहुत प्रशंसा चिरकाल तक सुनी हो, जब उसे पहिली बार देखते हैं, तब 'नाम बड़े और दर्शन छोटे' की कहावत चरितार्थ हो जाती है। वक्ताओं के प्रभाव के सम्बन्ध में भी प्रायः ऐसा होता है। मुझे स्वयं कई वक्ताओं के संबंध में बहुत निराशा हुई। बाबू विपिनचन्द्र पाल को समाचार-पत्रों से मैं जैसा वक्ता समझा था, व्याख्यान सुन कर उससे बहुत छोटा पाया। बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को अपनी पहिले से बनी हुई भावना के अनुसार ठीक पाया। जिन दो वक्ताओं को मैंने अपनी पूर्व भावनाओं से भी अधिक पाया, वे देश-रत्न गोखले और पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय थे।

डी० ए० वी० कालिज के अन्यतम संस्थापक को गुरुकुल-कांगड़ी के उत्सव पर आया देख कर बहुत से आर्यसमाजियों को आश्चर्य हुआ। उनमें से कुछेक ने लाला जी से यह पूछा होगा कि आप डी० ए० वी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालिज और गुरुकुल में से किसे अधिक प्यार करते हैं ? गुरुकुल में लाला जी ने अपना व्याख्यान इस प्रश्न के उत्तर से ही आरंभ किया। जब आपके व्याख्यान-वेदी पर आने पर करतल-ध्वनि और जयकारों का जो तूफान उठा था, वह शान्त हो गया, तब लाला जी ने अपना व्याख्यान निम्नलिखित वाक्यों से आरम्भ किया—

"मुझ से लोग पूछते हैं कि तुम किसे ज्यादा प्यार करते हो—डी० ए० वी० कालिज को या गुरुकुल को ? मेरा जवाब यह है कि मुझे डी० ए० वी० कालिज से वैसा प्यार है, जैसा एक पिता को अपने पुत्र से होता है। परन्तु गुरुकुल को मैं उस तरह का प्यार करता हूं, जो एक प्रेमी को अपनी प्रेमिका से होता है।" लाला जी के ऊंचे तारस्वर में कहे गये इन भावुकता-पूर्ण वाक्यों का जनता पर क्या असर हुआ होगा, पाठक इसकी कल्पना स्वयं कर सकते हैं। पहिले से भी अधिक जोरदार और लम्बा करतल-ध्वनि का तूफान उठा जो बहुत देर में शान्त हुआ ! यह पहिले वाक्य थे जो मैंने लाला जी के मुंह से सुने। सारा व्याख्यान कविता और कला के उसी ऊंचे स्तर पर होता रहा। वह व्याख्यान, लाला जी के अन्य अनेक व्याख्यानों की भांति, भावुकतापूर्ण वक्तृत्व-कला का एक बढ़िया नमूना था।

उसके पश्चात् तो मैंने लाला जी के कई व्याख्यान सुने। वह अपने समय के माने हुए हिन्दुस्तानी के सर्वोत्कृष्ट 'ऑरेटर' (भावुकतापूर्ण वक्ता) थे। जिन लोगों को लाला जी के भाषण सुनने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, वे यह जानने के लिये उत्सुक होंगे कि आखिर उनमें ऐसी क्या विशेषता थी, जिससे उनके भाषणों की इतनी प्रशंसा की जाती है। मनुष्य-प्रकृति का विश्लेषण बहुत कठिन काम है। फिर किसी महान व्यक्ति की विशेषताओं का विश्लेषण तो और भी अधिक कठिन काम है। तो भी मैं यत्न करूंगा कि लाला जी की अद्भुत वक्तृत्व-कला का थोड़ा सा विश्लेषण करूं।

लाला जी की भाषण-शक्ति का सबसे पहिला अंग ईश्वर-प्रदत्त था। उन्हें ऐसा कंठ-स्वर मिला था, जो विरले व्यक्तियों को ही मिलता है। उसे गर्जन नहीं कह सकते और न चीख ही कह सकते हैं। वह एक मरदाना कण्ठ-स्वर था, जो अपनी साधारण ऊंचाई की दशा में भी हजारों पर पहुँच जाता था। यह तो उसकी सामान्य दशा थी। परन्तु जब लाला जी स्वयं किसी भाव से उत्तेजित होते थे या कोई श्रोता प्रश्न करके उन्हें उत्तेजित कर देता था, तब तो वह स्वर ऊँचा और तीव्र होकर ऐसा पैना रूप धारण करता था कि कानों के रास्ते से जाकर श्रोताओं के हृदयों के अन्तस्तल तक पहुँच जाता था। उस समय प्रायः लाला जी स्वयं भी इतने भावाभिभूत हो जाते थे कि उनके चेहरे पर और आंखों में हृदय के सम्पूर्ण भाव चमकने लगते थे। कभी आंसू, कभी क्रोध और कभी हँसी—व्याख्यान देने के समय लाला जी के चेहरे पर यह सब भाव प्रकट होते रहते थे। सम्भव है मेरे इस कथन में कुछ पक्षपात का अंश हो, परन्तु मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि मैंने किसी अन्य व्याख्याता के पास ऐसा परिमार्जित और भावनाओं को प्रकट करने में कुशल कण्ठ-स्वर नहीं पाया।

लाला जी की अद्भुत भाषण-शक्ति का दूसरा अंग यह था कि उनका हिन्दुस्तानी भाषा पर पूरा प्रभुत्व था। उन्हें अपने मनोभावों को प्रदर्शित करने के लिये कभी शब्दों की तलाश नहीं करनी पड़ती थी। न वे कहीं तुतलाते थे और न शब्दों को दोहराते थे। वायु के प्रवाह की तरह उनका शब्द-प्रवाह निर्विघ्न बहता जाता था।

एक बड़ी बात यह थी कि वे व्याख्यान-कला के अभ्यस्त कलाकार थे। जो शक्ति उन्हें प्रकृति से प्राप्त हुई थी, उसे उन्होंने अभ्यास द्वारा खूब परिष्कृत किया था। उनके परिचित लोग कहा करते थे कि वे पूर्वकाल में बड़े शीशे के सामने खड़े होकर अपने व्याख्यानों की तैयारी किया करते थे। वे उस समय में केवल अपने व्याख्यान को तैयार करते थे। बोलने के समय खड़े होने, हाथ उठाने तथा मेज पर हाथ पटकने तक का अभ्यास करते थे। वे नहीं चाहते थे कि व्याख्यान देते समय उनकी कोई भी चेष्टा अवसर के विरुद्ध

(शेष पृष्ठ ५६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

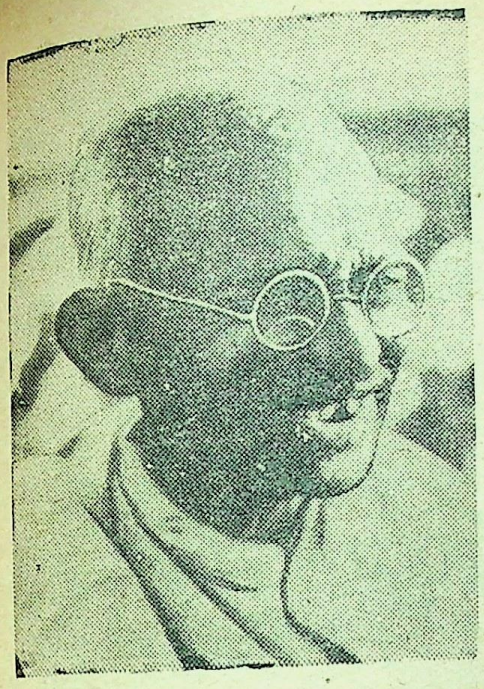

सन्त और सत्कवि

★

श्री गुरुदयाल मल्लिक

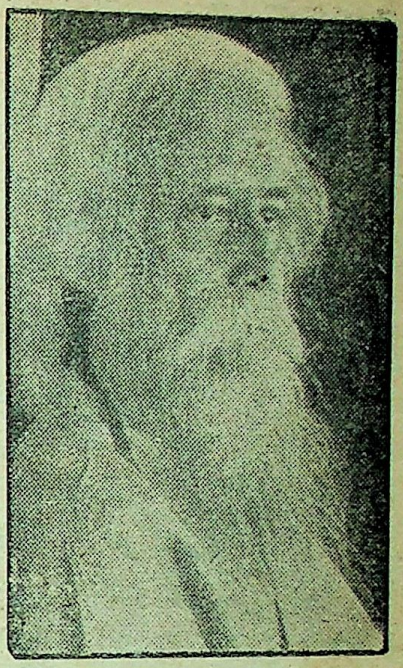

महात्मा गांधी स्वर्णीय जीवन से बंधी हुई भगवद्गीता थे और कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ थे उपनिषदों का एक चित्रमय संस्करण !

इनमें एक कर्त्तव्य का भक्त था, तो दूसरा था सौन्दर्य का पुजारी। दोनों ने ही सत्य के पावन-तीर्थ की दो विभिन्न प्रकारों से अर्चना की थी !

गांधी जी ने चर्खा लेकर सेवा का सुमधुर गीत गाया और गुरुदेव ने संगीत की सेवा में अपना जीवन व्यतीत किया !

गांधी जी ने मानवता के घायल हृदय की सेवा-शुश्रूषा और परिपालना की, और कवीन्द्र ने मनुष्य की आत्मा को प्रसन्न और प्रफुल्लित किया। दोनों ही प्रेम की सुन्दर परिधि की साथ मिल कर परिक्रमा करते रहे !

गांधी जी नैतिक नियमों के अनन्त पथ पर चलते हुए प्रभु की खोज में घूमते रहे। गुरुदेव सौन्दर्य के आनन्द के साथ नृत्य करते रहे और प्रभु के हृदय में प्रविष्ट होने का एक गुप्तपथ प्राप्त कर गए !

एक ने कमल में स्थित वज्र पर आसीन हो कर ध्यान लगाया, तो दूसरे ने वज्र पर स्थित कमल-पुष्प पर साधना की। दोनों ने ही सत्य के दो स्वरूपों—कठोर और कोमल तथा महान् और सौम्य—का साक्षात्कार किया !

गांधी जी की दृष्टि में यह विश्व सर्वशक्तिमान् प्रभु का कार्यालय था और गुरुदेव के लिए यह विश्व परमप्रभु का उद्यान ! दोनों ने ही परम पुरुषार्थ के पथ की खोज में जीवन बिताया। एक ने कार्य को आनन्दमय बनाया और दूसरे ने रचना के आनन्द को अपने कार्यों में भर दिया !

गांधी जी का विश्वास था कि व्यक्ति की समस्या ही जगत् की समस्या है। गुरुदेव समझते थे कि विश्व की समस्या वस्तुतः वैयक्तिक समस्या है। परन्तु दोनों ने यह रहस्य पा लिया था कि जीवन एक सरल रेखा न होकर एक वर्त्तुल है।

एक की जीवन की उपलब्धि इस प्रकार की थी, जैसे एक शिल्पकार के लिए संगमरमर का विशाल पिंड ! दूसरा मानों प्रेमी के संकेतित स्थान को जा रहा था।

गांधी जी ने सौन्दर्य की एक प्रतिमा को भद्दे और अपरिष्कृत उपादानों में से ढाल-निखार कर संजोया। कवि-वरेण्य ने पुष्प-मंजरियां चुन-चुन कर अपनी प्रेमिका की वेणी में गूँथ दीं ! दोनों ने ही जीवन का आलिंगन किया—एक ने एक सेवक की रीति से, तो दूसरे ने एक गायक की भांति ! एक ने परिचारिका की रीति से, तो दूसरे ने एक रसिका की तरह !

इस प्रकार गांधी जी और गुरुदेव का जीवन प्रभु की हृदय-वाटिका में पनपता रहा—जो कि मानवता का हृदय है। अतः उनके जीवन का परिमल अमर है, अंजर है, कभी अवसन्न नहीं होगा—जिस प्रकार प्रभु अमर है, शाश्वत है !

अनुवादक—श्री शङ्करदेव विद्यालङ्कार

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

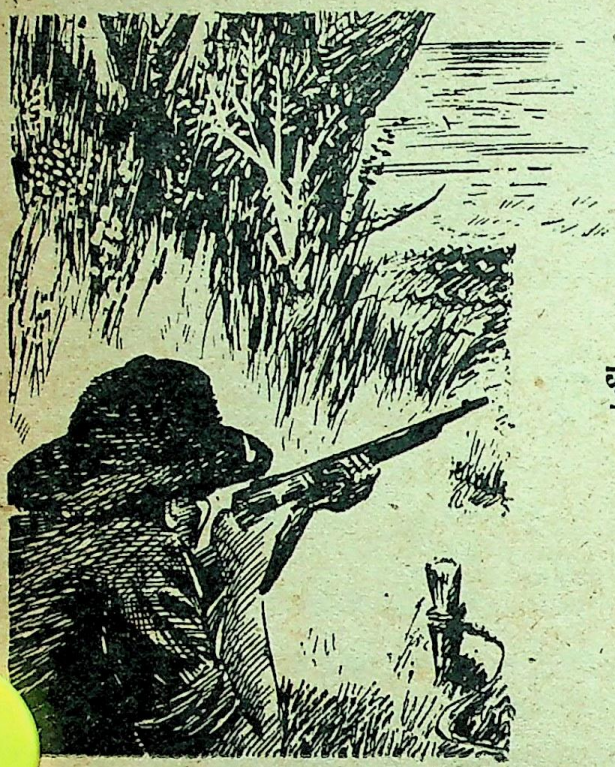

कहानी

काफिर जुलू

श्री आलिवर वाकर

ग्रीष्म-ऋतु के एक शान्त प्रातःकाल में लाल बनिआइनें पहिने हुए कैदी जेल के बगीचे में मशक्कत कर रहे थे। आकाश प्रायः स्वच्छ था। केवल बादल का एक टुकड़ा हल्की हल्की वायु के साथ आकाश में तैर रहा था। कैदियों की कुदालों के पत्थरों से टकराने की आवाज और कभी कभी उनके आपस में दबी जबान से बात कर लेने की आवाज के अतिरिक्त कोई अन्य आवाज नहीं आ रही थी।

कैदियों से दस गज की दूरी पर एक पेड़ का सहारा लिये हुए जेल का गोरा वार्डर हान्सी खड़ा था। उसका एक हाथ अपनी राइफिल के मुंह पर था। दूसरे हाथ से वह अपनी बढ़ी हुई दाढ़ी को खुजला रहा था और पिछली रात अपनी बहिन के यहां हुई दावत की कुछ स्मृतियों को फिर से ताजा करने का प्रयत्न कर रहा था। कभी कभी कैदियों पर भी उड़ती-सी दृष्टि डाल लेता था। उन में से अधिकतर को वह पहिले से जानता था। आज ही आये हुए एक छोटी अवस्था के कैदी की ओर उसका ध्यान विशेष आकृष्ट हो रहा था।

नवागन्तुक कैदी, राबर्ट निगोबो, अपनी कुदाल को चलाते समय अधिक बातें नहीं कर रहा था। गत रात उसे जो अनुभव हुआ था, उससे वह अब तक सहमा-सहमा था। किन्तु अब उसे अपने चारों ओर के वातावरण में एक विचित्र दिलचस्पी-सी हो चली थी। उसकी सांवली, चमकदार, सशक्त गर्दन पर सूर्य की किरणें जब पड़ने लगीं, तो उस से उसे कुछ राहत-सी अनुभव हुई। वार्डर की तरह ही राबर्ट भी अपनी पिछली तीन रातों के अनुभवों के विषय में सोच रहा था। अपने गांव से ड्राकेन्सबर्ग के ढालू मार्ग पर रेल की लम्बी यात्रा के विषय में भी सोचने का उसे अवसर मिल गया।

इस यात्रा से पहिले कभी वह गोरों के शहरों के पास गया था, तो केवल ऐस्टकोर्ट तक ही। छोटा-सा शहर था जिसमें एक छोटी सी फैक्टरी थी और कई बड़ी-बड़ी दुकानें। अनेकों सुहावने दिन राबर्ट ने इन दुकानों के शो-केसों में सजी हुई वस्तुओं, शरबत की बोतलों, डिब्बों में बन्द फलों, सुन्दर छपी हुई छींटों, बूट-जूतों, बच्चों के खेल-खिलौनों को दूर से देखने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४६ की गर्मियों में एक अंग्रेज द्वारा लिखी गई यह कहानी उन पैशाचिक अत्याचारों की एक झलक मात्र है, जो दक्षिण अफ्रीका के आदिवासियों (हब्शियों) पर वहां की गोरी सरकार द्वारा किये जा रहे हैं। लेकिन, अब हब्शियों की प्रतिहिंसा जाग रही है और मलान की सरकार कूटनीति से उस प्रतिहिंसा को भारतीयों की ओर उन्मुख करके स्वयं बचना चाहती है; परन्तु कब तक ?

बिता दिये थे। राबर्ट के पास से जो गोरे गिटपिट करते निकलते, उनकी बोली को समझने का न जाने कितना असफल प्रयास उसने किया था। राबर्ट जब ६-७ वर्ष का था, तब उसने अपने गांव से ६ मील दूर जा कर एक स्कूल में अंग्रेजी के कुछ शब्द सीख लिये थे। पर पहिले दर्जे में से ही उसके पिता ने उसे स्कूल से उठा लिया था, क्योंकि उसे अपने पशुओं के लिये एक चरवाहे की आवश्यकता थी। कितना खुश हुआ था राबर्ट उस समय। अपनी ही अवस्था की एक छोटी सी लड़की के साथ एक तंग-सी सीट पर बैठ कर मास्टर की बेंत के नीचे पुस्तक में मुंह गड़ाये बैठे रहने की अपेक्षा चरवाहे के जीवन में कितना रस मिलता था उसको!

कई बार राबर्ट का ध्यान अनगढ़ पत्थर की बनी स्कूल की दीवारों के पार अपने उन भाग्यवान साथियों की ओर चला जाता था, जो अब भी पशु चराते हुए स्वच्छन्द फिर रहे होंगे, जो चिड़ियों और चुहियों का शिकार कर रहे होंगे और अपनी पालतू चिड़ियों के लिये कीड़े खोज रहे होंगे। न जाने वह कौन-सी अशुभ घड़ी थी, जब उसकी मां ने उसे एक कमीज और फटा-सा पाजामा पहना कर स्कूल भेज दिया था। राबर्ट अपने अन्य साथियों के समान नंगा रहना चाहता था। केवल एक कपड़ा अपनी कमर के नीचे लपेटे हुए, बाज पक्षी को चक्करदार उड़ान से उड़ते हुए देखना और कांटेदार वृक्षों के नीचे छाया ढूंढने का प्रयत्न करती हुई गायों के रम्भाने की आवाज को सुनना उसे कितना प्रिय था!

अब राबर्ट का ध्यान फिर स्कूल के कमरे में लौट आया। अध्यापक ने कोई प्रश्न किया था और उसके उत्तर में सारी कक्षा के साथ सुर में सुर मिला कर उसने भी कहा था—"दी नेम आफ दी मैन इज डॉन।" पर ऐसा कहते समय भी उसका ध्यान कार्निश के पास कीड़ों को खाती हुई छिपकली की ओर था। राबर्ट को झुंझलाहट हो रही थी कि क्यों उसकी कक्षा के पचास विद्यार्थियों को मिल कर एक साथ उत्तर देना पड़ता है। इतनी जोर की आवाज से उसकी विचारधारा भंग हो जाती थी। राबर्ट एमोस कुमालो के साथ बचपन में खेले गये बाज के एक मनोरंजक शिकार का स्मरण करना चाहता था। कुमालो को इस बात पर गर्व था कि आज तक उसे अपने नंगे शरीर को ढक कर स्कूल नहीं जाना पड़ा है, यद्यपि वह ११ वर्ष का हो चुका है। स्कूल में आने से दो दिन पहिले ही की तो बात है। कुमालो ने उसे कितना समझाया था कि वह स्कूल न जा कर उसके साथ चिड़ियों का शिकार खेलने चले। उस दिन वे अपने पशुओं को चरता छोड़ अपनी अपनी गुलेलें ले चल भी पड़े थे। यद्यपि कुमालो बड़ा था, मजबूत था और अच्छा निशाना लगाना जनता था; पर राबर्ट ही पहले भूरे रंग के पंखों वाले बाज को जंगली अंजीरों के पेड़ पर बैठा हुआ देख पाया था और उसने ही पहले अपनी भरपूर शक्ति से गुलेल खींच कर एक पत्थर उस बाज को मारा था। पत्थर बाज की छाती के बिल्कुल निकट उसके बायें पंख में जा कर लगा था। बाज वहां से उड़ा और उड़ने से ऐसा लगा जैसे वह बुरी तरह आहत हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई पचास गज की दूरी पर जा कर ही वह बाज फिर बैठ गया। कुमालो ने कहा था, "शाबाश राबर्ट, तुमने अच्छा निशाना मारा है। वह ज्यादा दूर उड़ कर नहीं जा सकता।"

आशा और उल्लास से भर, हंसते हुए वे दोनों उसका पीछा करते करते चट्टानों के ऊपर चढ़ गये थे। बाज भी जैसे उनकी प्रतीक्षा कर रहा हो। उनके पास आते ही वह हवा में तैरता हुआ वहां से उड़ गया था। कुमालो ने उसे एक और गुल्ला मारा। गुस्से से भरी बाज की आवाज उन्हें सुनाई दी और फिर उन्होंने देखा कि बाज उसी स्थान पर पहुंच गया है, जहां राबर्ट ने उसे सब से पहले देखा था। सारे दिन इधर से उधर वह बाज उन्हें परेशान करता रहा था और तब संध्या पास आ गई। अब तो दोनों को अपने अपने पशुओं को लेकर अपने अपने गांवों को वापस लौटना ही था।

अगले दिन राबर्ट बाज के विषय में बिल्कुल भूल गया था; पर कुमालो उसे न भूल सका था। पहिले उसी ने उस बाज के भूरे मजबूत शरीर को पेड़ की टहनियों में छिपा हुआ देखा था। बड़े शान्त स्वर में कुमालो ने कहा था—"देखो जी, आज पहला निशाना मैं लगाऊंगा।" और फिर घास में वह एक छोटा-सा पत्थर अपनी गुलेल में रखने के लिये खोजने लगा था। अपनी सांस रोक कर अपने शिकार से कोई तीस गज की दूरी पर राबर्ट और कुमालो खड़े थे। कुमालो ने कान तक अपनी गुलेल को खींच कर, एक आंख मींच कर बाज की छाती में गुल्ला मारा। पक्षी लड़खड़ाया और वे दोनों उल्लास से नाचते हुए आगे दौड़े। लेकिन जैसे ही वे पास आये, बाज वहां से उड़ गया।

वह अब जल्दी में न थे। सारा दिन सामने पड़ा था। पक्षी घायल हो चुका था और उसका पीछा करने में वे पूरा आनन्द ले रहे थे। पहले उन्होंने काफी पत्थर इकट्ठे कर लिये और फिर बिना एक शब्द कहे वे दो भिन्न-भिन्न मार्गों पर हो लिये। वे पेट खूब भर चुके थे और पास बहती हुई नदी से कभी कभी पानी पीने के अतिरिक्त दिन भर के लिये उन्हें और कुछ नहीं चाहिये था।

पक्षी अब अधिक नहीं उड़ पा रहा था, फिर भी वह उनसे आगे ही आगे था। कुमालो को अब विश्वास हो चला था कि वे बाज को अवश्य मार लेंगे, और उसने उल्लास से भर राबर्ट को आवाज लगाई, "राबर्ट, तुम्हें बाज की आंखें मिलेंगी।"

"आंखें नहीं, छाती लूंगा, छाती। पहले मेरा निशाना उसकी छाती में लगा था।"

और उसने अपनी गुलेल तान कर एक गुल्ला बाज की ओर फेंका। गुल्ला उसके सिर में जा कर लगा और पक्षी नीचे आ रहा। राबर्ट खुशी से नाच उठा था।

फिर उस पक्षी को उठा कर जब वे दोनों चले, तो उस शिकार के आनन्द की चर्चा बड़ी देर तक करते रहे थे और सोच रहे थे कि अपने गांव में जा कर रात्रि को अलाव के चारों ओर बैठ कर अपने शिकार का मनोरंजक विवरण किस प्रकार सुनायेंगे।

× × ×

जेल के वार्डर हान्सी ने इसी समय जम्भाई ली तथा धूप की तेजी को उसने दबी जबान से कोसा। उसकी पत्नी ईर्ष्यालु स्वभाव की थी तथा उस की प्रेम-लीला में बाधा डालती थी। पिछली रात जो दावत उसकी बहिन के यहां हुई थी, उसमें उसकी प्रेयसी को भी तो सम्मिलित होना चाहिये था। वह तो तैयार भी थी। इसका पता तो इसी से चलता है कि वह बड़ी आसानी से उसकी बहिन के मकान के बगीचे तक आ गई थी।

हान्सी ने उस लड़की के अधरों को अपने ओठों से छुआ ही था कि उसी समय वहां उसकी पत्नी मेरी आ गई थी और उन्हें दीवार से चिपके खड़े देख कर वह ऐसे चिल्लाई थी, जैसे उसने किसी की हत्या की जाते हुए देखा हो। हांसी ने सोचा, अच्छा होता यदि मैं अपनी प्रेयसी के सामने ही अपनी पत्नी को डांट-फटकार देता, पर.....।

अपनी पत्नी के साथ घर के भीतर जाने से पहले ही हान्सी ने अपनी प्रेयसी को छिपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये स्थान बता दिया था। पर उसमें उसे पूर्ण सन्तोष कहां था। वह तो उस उन्नत वक्ष का शीघ्र से शीघ्र आलिंगन करने के सुख की प्रतीक्षा में था—जिस सुख में उसकी पत्नी ने कुसमय में आ कर बाधा डाल दी थी। कितना दुःख इस समय हान्सी को हो रहा था कि उसने उस लड़की का नाम और पता तक मालूम नहीं किया। आज वह शाम को अपनी बहिन के यहां जायगा और उससे पूछेगा कि वह लड़की कहां रहती है नाम तो उसका शायद मेरिया था। वह उसका पता लगायेगा और क्राउन होटल में ले जा कर उसे खूब खिलाये पिलायेगा। फिर तो सिलसिला शुरू हो जायगा। या फिर वह अपने साथी वार्डर जेरीफोरी की कार मांग लेगा और उसे किसी रमणीक स्थान में मनोरंजन के लिये ले जायगा।

यह सब सोचते सोचते वह गोरा वार्डर लाल बनियाइनें पहिने कैदियों की ओर कोरी कोरी आंखों से घूर रहा था। कैदी मिल कर मधुर ढंग से गा रहे थे। उनकी बाँहों, मुख और गर्दन पर पसीने की बूंदें झलक आई थीं। सदा की भाँति टिकी जुलू उस गीत का नेतृत्व कर रहा था। टिकी चाहे कितना ही अच्छा गाता हो, भले ही वह सदा मुस्कराता रहता हो, पर वह सारे कैदियों में मक्कार था। दो बार वह जेल तोड़ चुका था। टिकी के समीप ही काम करता हुआ नया कैदी राबर्ट एक शान्त स्वभाव का काफिर मालूम पड़ता था। किन्तु हान्सी को आदमी की सूरत-शक्ल से कोई प्रयोजन न था। काफिर आखिर काफिर ही ही है और कोई कितना ही भला लगे उसका विश्वास नहीं किया जा सकता। उनका तो बस एक ही इलाज है—कोड़ा और बन्दूक की गोली। उनके साथ जरा नरमी बरतो और वह समझने लगेंगे कि यह मनुष्य ही नहीं है। हान्सी कभी उन्हें ऐसा गलत विचार अपने विषय में न बनाने देगा। एक बार एक मक्कार कैदी ने जेल से भागने का प्रयत्न किया था, तो हान्सी ने उसके सीने के आर-पार गोली कर दी थी। कैदियों की इस टोली में से कुछ उसको पहिले से जानते थे और उसके साथ छल करने का वह प्रयत्न भी न करते थे।

हान्सी को अचम्भा हो रहा था कि यह कम्बख्त काफिर आखिर सारा-सारा दिन क्या गाते रहते हैं? पर वह समझ गया था कि अगर उनसे तपती हुई लू में भी कुदाल चलवानी हो, तो उनसे गाते समय ऐसा करने को कहो। मजे मजे में वह काम में पिल पड़ेंगे। और आश्चर्य तो यह कि वे सब के सब किसी गीत के स्वर-लय को कैसे जान जाते हैं। कोई-सा गीत टिकी जुलू आरम्भ कर दे और सबके सब उसके साथ हो लेंगे।

गोरे वार्डर ने अपनी बंदूक एक हाथ से दूसरे हाथ में बदल ली। सूरज की ओर उसने चुंधियाती हुई आँखों से देखा। ग्यारह जरूर बज गये होंगे। पर अभी तो उसे लंच की छुट्टी मिलने में एक घंटा बाकी था। वह फिर उस रात वाली लड़की के ध्यान में तन्मय हो गया।

राबर्ट को गाना पसन्द था। स्कूल में पढ़ते समय संगीत की कक्षा में ही तो उसे कुछ दिलचस्पी थी। जब वह अपने गांव से चला था और नैटाल से रेलगाड़ी में बैठा था, तो उसके साथी यात्री बराबर गाते रहे थे। वह भी रास्ते में कुछ अधिक नहीं सो पाया था प्रत्येक स्टेशन पर वह जाग पड़ता था और अपनी सीट पर बैठे-बैठे बाहर के अन्धेरे प्लेटफार्म पर झांक लेता था।

जब वह प्रिटोरिया के स्टेशन पर पहुँचा, तो वहां के शोर और भीड़भाड़ से वह भौंचक्का-सा हो गया था। शण्टिंग करते हुए इंजिनों तथा यात्रियों के असबाब से लदी हुई गाड़ियों को धकेलते हुए कुलियों की आवाजें उसके आश्चर्य को और बढ़ा रही थीं। उसने प्लेटफार्म पर अपने लिये एक सीट खोज निकाली थी, जिस पर 'फॉर नेटिव्ज ओनली' लिखा था। उसने अपने ही जैसे अनेकों आदमियों को वहां काम करते हुए देखा, पर उनमें से कोई भी जुलू भाषा में नहीं बोल रहा था। प्रायः वह सभी गोरों की बोली अफ्रीकन में बोल रहे थे, जो उसे अंग्रेजी से भी विचित्र लगती थी। एक बात ने उसका ध्यान विशेषरूप से आकर्षित किया था। उसके अपने भाई-बन्दों में से कोई भी उसके जैसा स्वस्थ नहीं दिखाई पड़ता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी देर में वह कुछ साहस बटोर पाया। उसने उन कुलियों में से एक से पूछा कि 'आकेशिया' होटल कहां हैं? वहा उसका बड़ा भाई निकोमो समस्त बैरों का प्रमुख था। निकोमो ने रार्बट निगोबो को रसोईघर में काम दिलाने का आश्वासन दिया था। एक सुडौल बदन के घनी मूंछों वाले कुली को देख कर, जो उसे अपने कुछ अधिक निकट-सा जान पड़ा, उसने अपने यहां के रिवाज के अनुसार प्रणाम-जुहार किया। एक क्षण में दोनों दूर बसे अपने-अपने ग्रामों की चर्चा करने लगे। कुछ देर बाद राबर्ट का ध्यान अपने असल उद्देश्य की तरफ गया। जिस लड़की को वह अपनी प्रथम पत्नी बनाना चाहता था, उसके पिता को भेंट देने के लिये दस पशु खरीदने को उसे धन चाहिये और वही धन पैदा करने वह इस शहर में आया था।

कुली ने बताया कि इस शहर में काम पा सकना कठिन है। बहुत से 'नेटिव' (देशी लोग) यहां काम की तलाश में घूमते रहते हैं। बड़े गर्व से उस कुली ने कहा, "मैं, सौलोमन इम्पांजा, यहां सबसे अच्छा कुली समझा जाता हूँ, क्योंकि मैं शायद सबसे मजबूत हूँ। गोरे यह बात जानते हैं और इसीलिये वे मेरे साथ औरों के जैसा व्यवहार नहीं करते।"

राबर्ट ने अपने भाई निकोमो का जिक्र किया, जो 'आकेशिया' होटल में सारे बैरों का सरदार था। निकोमो प्रति मास नौ पौंड से कम नहीं कमाता था। उसके तीन पत्नियां तो पहिले से थीं और एक चौथी और लाने के लिये वह पशु खरीदने को धन जोड़ रहा था। यदि राबर्ट को होटल का पता चल जाय, तो काम तो उसे अवश्य ही मिल जायगा। सौलोमन इम्पांजा ने राबर्ट को देशी लोगों के एक होटल का पता बता दिया, जो पास ही था तथा जहां खर्च भी कुछ अधिक न था। वहां अपना सामान रख कर राबर्ट अपने भाई की तलाश शुरू कर सकता था।

होटल में अपना सामान रख कर राबर्ट अपने भाई को खोजने चला था। दुकानों के शो-केसों और ऊंची-ऊंची भव्य इमारतों को देखता हुआ राबर्ट उस सड़क पर पहुँच गया, जहां 'आकेशिया' होटल था। होटल तक पहुँचने से पहिले ही उसने अपने भाई के विशाल शरीर को एक पेड़ के तने के सहारे खड़ा पाया। दोनों भाई परस्पर बड़े प्रेम से मिले। निकोमो ने राबर्ट के हाथ के अंगूठे को दबा कर अपने विशेष हर्ष का परिचय दिया। राबर्ट ने अपने पिता की बीमारी की सूचना अपने भाई को दी। वृद्धावस्था के कारण सर्दी ने अबकी बार उस बूढ़े को बुरी तरह सताया था। किन्तु उस वृद्ध को कोई दुःख न था, क्योंकि इसी वर्ष वह जो छुटी पत्नी ब्याह कर लाया था, वह गर्भवती थी। बड़े गर्व से उसने कहा था कि मेरे बैंक में जमा होने के लिये परमात्मा ने एक और धन भेजा है। .....। राबर्ट के पिता ने कई बार अपने बच्चों को गिनने का प्रयत्न किया था, पर अपनी जवानी के पचास सालों में उसके कितने बच्चे हुए, इसका अन्दाजा वह एक बार भी सही-सही न लगा सका था। उसकी कुछ पत्नियां तो मर चुकी थीं। बच्चे बड़े होकर चले गये थे—कुछ तो सोने की खानों में काम करने के लिये और कुछ का कोई पता ही न चला।

राबर्ट ने जब काम खोजने के लिये शहर जाने की आज्ञा मांगी थी, तो उस के पिता ने उसे मना नहीं किया। स्वयं उसने १९०६ के बम्बाता-विद्रोह में गोरों के विरुद्ध अन्तिम बार भाला चलाया था और उसके बाद अपने विजेताओं के लिये डंडी की कोयले की खानों में काम करना सीख लिया था। किन्तु राबर्ट अपने बड़े भाई निकोमो के समान ही लम्बी यात्रा करना चाहता था। उसे अपने बचपन के मित्र ऐमोस कुमालो की सौतेली बहिन राकेल कुमालो के साथ विवाह जो करना था। उसने अपने पिता को वचन दिया कि प्रति मास वह अपनी आय का दो-तिहाई भाग बचा कर भेजता रहेगा, जिससे कि राकेल के पिता को देने के लिये पशु खरीदे जा सकें।

निकोमो ने पूछा, "राबर्ट कुछ खाया-पिया है या नहीं?" और बिना राबर्ट के उत्तर की प्रतीक्षा किये ही उसने कहा, "देखो, जरा रात होने पर आठ बजे के लगभग आ जाना। जब यह गोरे लोग खा-पी चुकेंगे, तब तुम्हारे लिये मैं खाना दे सकूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने भाई को धन्यवाद देकर राबर्ट चल पड़ा। निरुद्देश्य बड़ी देर तक वह सड़कों पर घूमता रहा और जब शाम हो गई तो वह 'आकेशिया' होटल की ओर लौट पड़ा। उसने सड़क पर से देखा कि बिजली से जगमगाते हुए होटल के कमरे में कुछ लोग मेज पर बैठे खाना खा रहे हैं और विशालकाय उसका बड़ा भाई रेशमी बेल-बूटों से सजे सफेद कोट को पहिने हुए बड़ी शान के साथ इधर से उधर आ-जा रहा है। उसे उस समय अपने भाई पर बड़ा गर्व अनुभव हुआ।

राबर्ट एक वृक्ष के नीचे खड़ा बड़ी देर तक होटल की खिड़कियों को देखता रहा। उसका ध्यान उस गहरे हरे रङ्ग की बन्द मोटर की ओर नहीं गया, जो उसके पीछे की सड़क पर से गुजर रही थी।

गाड़ी चलाने वाले गोरे पुलिस सार्जण्ट ने राबर्ट की ओर संकेत करके अपने पास बैठे हुए कान्स्टेबिल से पूछा, "और उस हब्शी के बारे में क्या कहते हो?"

कान्स्टेबिल ने झट से कहा, "उसे भी देख लेता हूं।"

तेजी से गाड़ी घूमी और उसी पेड़ के निकट आ कर ठहर गई, जिसके नीचे राबर्ट निगोबो खड़ा अपने भाई के ठाठ को देख कर प्रसन्न हो रहा था। पुलिस के दोनों गोरे सिपाही मोटर में से कूद कर उसके पास आ गये। सार्जण्ट ने घृणा के साथ अफ्रीकन भाषा में पूछा, "क्यों, पास हैं या नहीं?"

राबर्ट समझ न सका, केवल मुस्करा भर दिया।

सार्जण्ट ने अपनी आवाज जरा तेज करके अंग्रेजी में कहा, "मैं पास पूछ रहा हूं? तेरी जेब में पास है या नहीं?"

राबर्ट ने सन्तोष की सांस लेते हुए कहा था, "जी हां!" और अपनी कोट की जेबों में से बहुत से कागज निकाल कर सबके सब उसने गोरे सार्जण्ट को दे दिये थे। सार्जण्ट एक एक करके सब को देखता हुआ गुनगुनाता जाता था, "निवास का पास। कर-मुक्ति के कागज। नगर यात्रा का पास....." और तब सिर उठा कर उसने पूछा, "मगर तेरा 'पहचान-पत्र' कहां है? कहां से आ रहा है तू?"

और सार्जण्ट तथा पुलिस सिपाही के आंखों ही आंखों में बात कर लेने पर राबर्ट ने अपने आप को सिपाही के मजबूत हाथों में पाया। उसके दोनों हाथ पकड़ कर कमर के पीछे बांध दिये गये थे तथा कमर में घुटने की एड़ लगा कर उसे गाड़ी के अन्दर ठेल दिया गया था। बहस करने और बतलाने का उसे कोई समय ही नहीं दिया गया।

× × ×

तीन दिन हवालात में बन्द रहने के बाद राबर्ट को १५ दिन का कठोर कारावास का दंड मिला था। राबर्ट को जब तक खुले आकाश के नीचे इस बगीचे में दिन की दुपहरी में अपने ६ दूसरे कैदी साथियों के साथ गाते गाते कुदाल चलाना पड़ता था, तब तक उसे कोई खास चिन्ता न थी। इतना ही तो था कि इस काम के लिये उसे पैसे न मिलेंगे। आज वह उस बेगारी-दल का सदस्य था, जिसे अफ्रीका की गोरी सरकार अपने समस्त पासों को साथ न लेकर चलने के अपराध में प्रति वर्ष सैकड़ों-हजारों देशी लोगों को जेलों में बन्द करके भरती करती है—जिससे काम लिया जाता है, पर उस काम के लिये उसे पैसे नहीं दिये जाते।

राबर्ट के समीप ही टिकी जुलू, जो अपनी कुदाल चला रहा था और गीत का नेतृत्व कर रहा था, जरा देर को रुका। उसने अपनी कुदाल टेक दी और अपने माथे पर से पसीना पोंछ डाला। एकाएक गोरे वार्डर को सोया देख कर उसने कहा, "देखो तो, वह खुर्राट सो रहा है।"

और एक ही क्षण में उसने गाना प्रारम्भ कर दिया, जिसे उसके दूसरे साथियों ने उठा लिया—

"वह खुर्राट सो रहा है!
वह खुर्राट सो रहा है!
बन्दूक को सम्हाले, वह खुर्राट सो रहा है!"

सारे के सारे कैदी हंस पड़े। उनकी थकान दूर हो गई और वे फिर नये उत्साह से उस पथरीली जमीन में कुदाल चलाने लगे। थोड़ी देर तक तो राबर्ट भी अपने साथियों के साथ कुदाल चलाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा और फिर उसने अपनी कमर सीधी करने के लिये कुशल टेक दी।

इसी समय सामने के एक वृक्ष की शाखाओं में उसे एक भूरा-सा पक्षी हिलता दिखाई दिया। गोरा वार्डर अब भी एक दूसरे पेड़ के नीचे अपनी बन्दूक को शिथिलता से पकड़े हुए सो रहा था। आन्तरिक प्रेरणा से राबर्ट ने एक छोटा सा, चिकना, गोल पत्थर उठाया और उसे उस पक्षी की ओर फेंक दिया। पत्थर को उस पक्षी के मर्मस्थल पर लगा हुआ देख कर वह खुशी से चीखे बिना न रह सका और इससे पहिले कि वह पक्षी उठ कर उड़ सके, उसे पकड़ लेने के लिये राबर्ट दौड़ पड़ा।

राबर्ट ने पीछे से वार्डर को चिल्लाते हुए सुना, पर उसे सुन कर भी अनसुना कर दिया। हो सकता है कि चोट अधिक गहरी न बैठी हो और पक्षी गिरते ही सम्भल जाय और उड़ जाय। उसकी शिकारी-वृत्ति ने उसे कहा कि पहिले पक्षी को पकड़ लेना ही ठीक रहेगा। वृक्षों की लटकती हुई शाखाओं में उलझने से बचने के लिये वह झुक कर चल रहा था। पल भर में वह पक्षी उसके हाथ में था।

गोरे वार्डर हान्सी ने लाल बनिआइन पहिने उस कैदी को, जो सबसे भोला लगता था, भागते हुए देखा तो तुरंत बन्दूक सम्भाल ली और चिल्लाया। और फिर एक गन्दी-सी गाली दे कर वार्डर ने बन्दूक का घोड़ा दबा दिया। धांय की आवाज सुन कर उस तेज गर्मी में भी समस्त कैदियों का खून जम गया। भयत्रस्त कैदियों ने देखा, राबर्ट का झुका हुआ शरीर निर्जीव लोथ बन कर धरती पर आ रहा।

हान्सी ने कैदियों को अपनी अपनी जगह ठहरने का आदेश दिया और दूसरी गोली चलाने की तैयारी करने लगा। पर राबर्ट के निर्जीव शरीर को स्थिर पड़ा देख कर उसे दूसरा वार न करना पड़ा। वह सोच रहा था कि अन्धकार में भी वह कितना अच्छा निशाना लगा सकता है।

अनुवादक—श्री धर्मवीर प्रेमी

★

....और अब दक्षिण-अफ्रीका में जो दंगा हुआ, उसके बारे में क्या आप जानते हैं—

—कि दक्षिण-अफ्रीकी रक्षा-समिति ने गुप्त पर्चे हब्शियों में बंटवाये थे, जिनमें उन्हें हिन्दोस्तानियों की हत्या कर, उनकी दौलत लूट लेने को भड़काया था।

—कि उसी समिति ने दंगे के हफ्ते भर पहले जुलू लोगों में हथियार बंटवा कर उनकी परेड करवाई थी और उन्हें भारतीय-विरोधी नारे सिखाये थे।

—कि भारतीयों के विरुद्ध प्रचार करने में उन अंग्रेज-अफसरों का भी हाथ था, जो पहले भारत में थे और आजकल दक्षिण-अफ्रीका में हैं।

—कि दंगे की शुरुआत सिर्फ एक हब्शी लड़के को एक भारतीय द्वारा तमाचा मारे जाने से हुई थी।

—कि दो दिनों के अन्दर डरबन की आधी जनता बे-घरबार हो गई।

—कि ५०० आदमियों को भेड़-बकरियों की तरह काट डाला गया।

—कि हजारों हिन्दोस्तानी जिन्दगी भर के लिए अङ्ग-भङ्ग हो गये।

—कि ८० लाख के लगभग भारतीय सम्पत्ति लूट ली गई।

—कि २४ घण्टे तक पुलिस वालों का कहीं पता नहीं था।

—कि अब ४०,००० भारतीय शरणार्थियों को केवल ५४ छोटे-छोटे मकानों में ठूंस दिया गया है।

—कि उनमें से बहुतेरे भूख के मारे घास, पत्तियां और जूठन खाकर दिन काट रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्याला और प्यास

निर्बल

प्याला तो मेरा है कुरूप,
पर प्यास कुरूप नहीं, बाले!

★

यह सुघ - भरी सुन्दर तेरी
सुकुमार सुराही रत्नजटित,
औ' कृपाभाजनों के प्याले
जिन हाथों द्वारा हैं निर्मित,

मेरे ठुकराये प्याले को
वे ही कर हैं रचने वाले!
प्याला तो मेरा है कुरूप,
पर प्यास कुरूप नहीं, बाले!

★

तव अक्षय मद से सम्बन्धित
मम अमर पिपासा मतवाली,
क्षणभंगुर साधन प्याले को
क्यों व्यर्थ बड़ाई दे डाली?

इक ही मिट्टी से बनते हैं
अपरूप तथा सुन्दर प्याले!
प्याला तो मेरा है कुरूप,
पर प्यास कुरूप नहीं, बाले!

★

नभ-मधुगृह में नीलम घट से
जब बांटे मदिरा मधुबाला,
निज सुभग-असुन्दर प्यालों में
इक-सी पाते कृषिबल हाला;

ऐसा समभाव दिखा तू भी
स्मितचपले! सजले! घनमाले!
प्याला तो मेरा है कुरूप,
पर प्यास कुरूप नहीं, बाले!

★

चिर सत्य आंतरिक सुन्दरता,
यह बाह्य रूप छलछल केवल,
अपरूप घृणित मेरा प्याला
दिखने लग जायेगा मंजुल—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योंही अपनी माणिक - फेनिल
मदिरा को तू इसमें ढाले !
प्याला तो मेरा है कुरूप,
पर प्यास कुरूप नहीं, बाले !

★

कृत्रिम कुत्सित अपरूप प्यास—
जिनकी, वे मद के अधिकारी,
वे तेरे परम कृपाभाजन
जो हाड़ - मांस के व्यापारी,

उसके न लिये पर एक बूंद
जो पावन पीड़ा को पाले !
प्याला तो मेरा है कुरूप,
पर प्यास कुरूप नहीं, बाले !

★

मेरी तपलीन पिपासा ने
हृदयानल में अविरत गल कर,
संयम के सांचे में ढल कर
पाया है रूप सुभग - सुन्दर,

औ' रहे - सहे कल्मष इसके
पावन दृगजल ने धो डाले !
प्याला तो मेरा है कुरूप,
पर प्यास कुरूप नहीं, बाले !

★

इस ही प्याले में आज मुझे
आकण्ठ पिला साकी ! हाला,
कल कुम्भकार से और नया
ले आऊँगा सुन्दर प्याला;

मैं बदल चुका अगणित प्याले—
सुन्दर, कुरूप, उजले, काले !
प्याला तो मेरा है कुरूप,
पर प्यास कुरूप नहीं, बाले !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

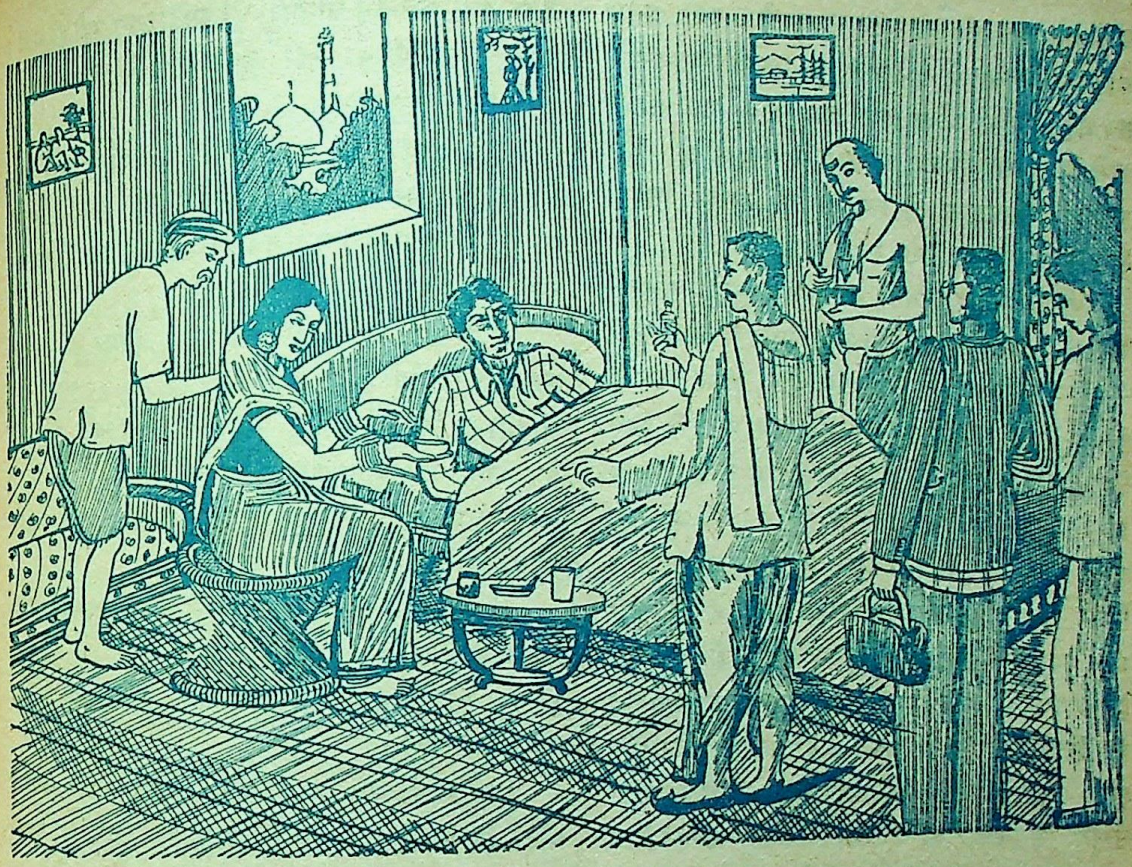

कहानी

रोगी का इलाज

लेखक—
श्री 'नलिन'

मिसर जी इस कहानी के ही पात्र नहीं; वह तो पीड़ित, दर्द से कराहती हुई मानवता के प्रतीक हैं। मानवता पीड़ा से कराह रही है। संसार की राजनीतिक पार्टियां अपना-अपना महत्व स्थापित करने में लगी हैं। खयाल मानवता की पीड़ा का नहीं, अपनी पार्टी की प्रतिष्ठा का है।

गरीब के जीवन का ढांचा कुछ संयोगों और अकस्मातों की डोर से बंधा है। यदि ये अनायित और आकस्मिक घटनाएं सहारा न दें, तो कभी का ढेर हो जाय। जीवन की ऊबड़-खाबड़ पगडण्डी पर कुछ संयोग साथी बन गये, तो यात्रा की पीठ पर और दो-चार पग बढ़ गये, नहीं तो लड़खड़ा कर एक तरफ लुढ़क गये। गरीब का विवाह-शादी, नाता-रिश्ता, व्यापार-रोजगार ही नहीं, छोटे से छोटा काम भी संयोग की सहायता, भाग्य के भरोसे या दैव की दया पर निर्भर है। जब भूख सताती है, तब नहीं; जब कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ते पड़ जाय, तब वह रोटी खाता है। इसी प्रकार बड़ी बड़ी 'चालों' में रहने वाले, जब प्रकृति परेशान करे, तब नहीं; जब भी मौका हाथ लग जाय, तब संडास जाते हैं। जिस बिल्डिंग में हजारों में आदमी हों, और इकाइयों में सण्डास, तो सण्डास की सुबह वेला में लम्बी लाइन लगना परम स्वाभाविक है।

पंडित दीनानाथ मिसर भी कब्ज के पुराने पालक—अजीर्ण के आजन्म-अभिन्न मित्र। मिल में काम करते [illegible] काले से गोरे हुए, और गोरे होकर खोपड़ी को कभी का उजाड़-ऊसर कल्हड़ बना सदा के लिए बिछड़ चुके। मिसर जी पुराने मुंशियों में से हैं, जिनका मजदूरों पर भी थोड़ा-बहुत प्रभाव है। यों ही जरा कमरे से झांका तो सण्डास-पथ बिल्कुल साफ—निर्जन, निर्बाध, निष्कण्टक! बम्बई में ऐसे शानदार मौके पुण्य के फल ही समझिये। मिसर जी प्रसन्न। हे दयासिंधो, दीनबंधो, आज तो···! परमात्मा का धन्यवाद कर जल्दी-जल्दी चाय गटक, बीड़ी सुलगाई और फिर लोटा उठा, सण्डास की तरफ भागे। आशा और उत्साह से टंकी की जंजीर खींची—टननटट··· टननटट···। टंकी में पानी कहां? बड़े झल्लाये। दिल ही दिल मकान-मालिक को चार-छः खरी-खोटी सुना, स्वयं ही चार-पांच लोटे पानी डाला।

नल से लोटा भर, सण्डास में जाने को हुए तो एक पड़ोसिन, सक्खोबाई, रात की मुसी हुई चोली संभालते हुए नल पर आ गई। मचले पड़ते, रपटते, इठीले यौवन-घन को संभालते हुए लजीली मुसकान से बोली, "मिसर जी, सण्डास चले?"

मिसर जी मुसका-भर दिये। उनके मुख की सूखी सरवटों में बूढ़ी कामना की रसीली चमक कौंध गई।

"आज तो मैदान साफ है, नहीं तो रोज देखते ही हैं···।"

"हां, आज तो परमात्मा की दया से···।" चोली में फंसी बूढ़ी पुतलियां निकालते हुए मिसर जी बोले। मिसर जी आधा मिनट ही नल के पास ठिठके रहे होंगे कि वार्त्तालाप छोड़, जो देखा, सण्डास का दरवाजा बन्द। आग-बबूला हो गये। तिड़क कर बोले, "कौन नालायक जा मरा भीतर? क्या मजाक समझ लिया! देखा, यनी कैसे-कैसे जानवर···! आदमियत रही ही नहीं। आधा मिनट भी तो नहीं हुआ तुम से बात करते। पाजी कहीं का···!"

बाई कुल्ला करती जाती, मुसकाती जाती और सिर हिलाते हुए मिसर जी का समर्थन करती जाती। कुल्ला कर वह मुसकान-भरी पुतलियों से सहानुभूति दिखाकर चली गई।

इतने में दरवाजा भी खुल गया। मिसर जी बिगड़ कर बोले, "क्या करते थे एक घण्टे से? जा घुसे। आदमी हो कि···यहां डेढ़ घण्टे से खड़े खड़े टाप रहे हैं···आप वहां भीतर कैसे सो रहे हों।"

"हाय-हाय! इत्ता जुल्म! हे भगवान, यह धरती-आसमान कैसे खड़ा है!" वह बोला।

"बगवान—हे बगवान! जैसे धरती-आसमान को तू संभाले है। आया बड़ा फिलासफर·····! हम तो १०-१० लोटे पानी डाल कर साफ करें और जनाब भीतर घुस जायं!"

"तो मिसर जी, माफ करो। इतना क्रोध क्यों? थोड़ी देर में मैं भी संडास जाऊंगा, आप भी पहले उस में घुस जांय···बस···अब तो खुश।"

"जैसे मुझे कोई काम ही नहीं·····! तुम जैसा बेकार तो मैं नहीं। यनी आप का तर्क तो देखिये···!" मिसर जी मुंह बिगाड़ कर बोले।

इतने में एक और आदमी संडास की तरफ बढ़ा, तो मिसर जी चिल्लाए, "अरे···अरे, तुम भी···अजीब आदमी हो···यनी हम तो···क्या खूब! लो एक और आये यह नये शौकीन!"

मिसर जी झपट कर संडास में घुस गये। जल्दी में तो थे ही, रपटते-रपटते बचे। बड़े भिनभिनाये, "जानवर कहीं का! पाजी ने ऐसी कुशुगनी की कि सिर फूटते-फूटते बचा। बेवकूफ, गंदा! आज तो मौका मिला था आ घुसा नालायक, सिर खील-खील हो जाता। भंगी भी साला हराम की खाता है। और इन कार्पोरेशन वालों की बला से, कोई मरे या जिये। यनी कभी देखने तक नहीं आता कोई। अभी सिर दीवार से टकराया होता।"

अभी क्रोध की गर्मी जरा नीचे उतरी ही थी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी ने धमधम दरवाजा पीट डाला। मिसर जी झल्ला उठे, पर संडास में बोलना धर्म-नीति और सभ्यता के सरासर विरुद्ध। मन ही मन बड़बड़ाते हुए उठे, 'तुम्हारा सत्यानाश हो! एक मिनट भी शांति और सुख से न बैठने दिया। आज ही मरने को थे सब। कमबख्त जमालघोटा खा कर सोये थे क्या!"

मिसर जी भिनभिनाते, झल्लाते, बड़बड़ाते बाहर निकल आये।

रास्ते में बाई ने कुशल पूछी, "आज तो तबीयत खुश हो गई होगी। खूब मौका हाथ लगा!"

"तुमने ऐसी नजर लगाई कि····और इस चाल में रहने वाले आदमी हैं, कि सब जानवर। कोई लगा दरवाजा पीटने। क्या मजाल कि आदमी दो मिनट भी·····," मिसर जी पराजित मुसकान से बोले।

बाई ने हीं-हीं कर दांत निकोस दिये। मिसर जी बोझ-लदे से अपने कमरे में आ गये। गोकुलदास पहले से ही कमरे में बैठे 'दैनिक लोकशाही' में उलझ रहे थे। मिसर जी आये तो सिर उठा, मुसका कर प्रणाम किया। मिसर जी उदासी-भरी दृष्टि उधर फेंक, काम में लग गये। लोटा एक तरफ पटका। क्रोध में खूब साबुन रगड़-रगड़ कर हाथ धोये। गोकुल उनकी तरफ प्रश्नवाचक भाव से देखता रहा, पर मिसर जी ने उधर बिना कुछ ध्यान दिये, बीड़ी सुलगानी शुरू की। दियासलाई की तीली रगड़ी; तैश में तो थे ही, टूट गई।

गोकुल कनखियों से जब-तब मिसर जी की ओर झांकते हुए पत्र पढ़ने का बहाना करता रहा। मिसर जी उधर बीड़ी सुलगाने के सकाम कर्म में जुटे रहे। बड़बड़ की आवाज-सी आई। गोकुल ने सिर उठा कर देखा तो राधेलाल और नरेशचन्द्र बहस करते हुए उधर ही आ पहुँचे।

"बधाई, गोकुल भाई! हैदराबाद की जीत पर···!" राधेलाल ने आते हुए कहा।

"बधाई इस लिये भी कि निजामशाही का बाल बांका तक न हुआ!" नरेश ने व्यंग्य किया।

"कुछ भी हो, हैदराबाद का तमाशा रहा खूब!" गोकुल ने दोनों की बात को यों ही उड़ा दिया और परोक्ष रूप से कांग्रेस की प्रशंसा भी कर दी।

लेकिन तीनों ने मुसका कर जब मिसर जी की ओर देखा, तो उन्होंने निर्भाव उदासीनता से तीनों पर रपटती हुई दृष्टि डाल फिर दियासलाई रगड़ी। वह फिर टूट गई।

"क्या खबर है, मिसर जी? बैठो, राधे भाई।" नरेश पास ही बैठते हुए बोला।

"देख ही रहे हैं···।" कह मिसर जी ने जरा फिर करें हाथ से तीली रगड़ी, वह इस बार भी टूट गई। मिसर जी भिन्ना गये, रोष में बरस पड़े, "साले दियासलाई बनाते हैं, या जेबें काटते हैं? चोर कहीं के! देखा, यह हाल है···।"

"लाइये," कह नरेश ने उनकी बीड़ी सुलगा दी।

"यह सब पूंजीवाद का पाप है। जब तक पूंजीवाद जिन्दा है, हमें इन सब परेशानियों-बरबादियों का शिकार होना ही पड़ेगा। समाज में जब तक आर्थिक विषमता है, तब तक दियासलाई अच्छी बन ही नहीं सकती। इसका तो एक मात्र इलाज है—मजूरों का राज्य। फिर देखें, दियासलाई कैसे खराब बनती है।" नरेश ने रोग का निदान भी कर दिया और औषधि भी बता दी।

"भला बतलाइये तो। आपने देखा, पांच तीलियों में एक तीली जली। गरीब आदमी क्या ऐसी की तैसी बीड़ी पिये," मिसर जी कश खींच कर बोले।

"तभी तो गांधी जी कहते हैं, बीड़ी पियो ही मत। न बीड़ी पियोगे, न तीलियां टूट कर आप को तंग करेंगी," गोकुल ने कहा।

"वाहव्वा-वाहव्वा! रोटी खाओ ही मत। कपड़ा पहनो ही मत। भूखे मरो, नंगे फिरो···" मिसर जी बोले। बीड़ी पीते रहने पर भी पेट में दर्द होने लगा। रात खाना भी तकड़ा खाया था, संडास अभी गये नहीं।

"वाह गोकुल भाई! कमाल कर दिया! जीवन की स्वाभाविकता को यों ही उड़ा सकते हो! सब गांधी जी कैसे बन जायें? आप ने भी क्या तर्कहीन बेमौके बात कही···।" राधेलाल ने गोकुल का मजाक उड़ाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लेकिन समस्या की जड़ तो समाज की बनावट में है। जड़ को सींचिये, गोकुल भाई! फैक्टरी-ओनर को क्या पड़ी। उसे तो चांदी बटोरने से काम। ये रक्तशोषक पूंजीपति! एक गरीब उनकी जेबें भरता रहे, वे ऐश करते रहें। मजूर की झोंपड़ी पर फूंस तक नहीं, उनके कोठी-बंगलों की गिनती करना कठिन। और आजकल आप जानते ही हैं, मैचबौक्स कितनी मुश्किल से मिलती है। हजार मिन्नत करो, अठगुनी कीमत दो, तब कहीं 'ब्लैक' से एक दियासलाई पल्ले पड़े। क्रान्ति से पहले क्या रूस में ऐसा नहीं था? लेकिन अब ..... दियासलाई की क्या मजाल, जो एक तीली भी टूट जाय।"

"कैसे मालूम कि वहां दियासलाई की तीलियां नहीं टूटतीं?" गोकुल ने हंस कर पूछा।

"अरे, रोज अखबार तो पढ़ते हो। क्या कोई खबर आज तक देखी इस बारे में। कामरेड स्टालिन और एक मजदूर की दियासलाई बराबर ठीक-ठीक जलती है। अगर इस तरह वहां तीलियां टूटें तो स्टालिन को पाइप पीना भी मुश्किल हो जाय। सारा रिकंस्ट्रक्शन-वर्क चौपट हो जाय।"

"इंगलैण्ड और अमरीका से भी तो तीलियां टूटने की खबरें नहीं आतीं," राधे ने हंस कर कहा।

मिसर जी मुसकाते और पेट पर हाथ फेरते हुए नरेश भाई की तरफ देखते रहे। दर्द मीठा हो रहा था।

"राधे भाई, ये देश तो हैं घोर साम्राज्यवादी, ठीक खबरें आने ही कहां देते हैं। रूस में ऐसी घटनाएं होती ही नहीं। बात भी तो साफ है। वहां हर मजदूर दियासलाई की हर तीली को अपनी समझता है। मशीन के हर पुर्जे का वह मालिक है। फैक्टरी की ईंट-ईंट का वह रक्षक है। जब अपने को नौकर समझता ही नहीं, तो काम अपना समझ कर मेहनत से करेगा। फिर टूटने का सवाल ही पैदा नहीं होता। और यहां मामला है उल्टा। मजदूर को फायदा तो मिलेगा नहीं, वह दिल से काम भी क्यों करे? यह तो बिल्कुल साइकोलोजिकल है। तो तीलियां अपने आप टूटेंगी।" नरेश ने युक्तियां दे दे कर अपनी बात पुष्ट की।

"हमारी संस्कृति और जलवायु के लिये रशियन ढंग फिट नहीं बैठता। इन सब कठिनाइयों और बीमारियों का इलाज है उद्योगों का राष्ट्रीयकरण। और यह तभी हो सकता है कि परखे हुए वीर देशभक्त कांग्रेस-नेताओं को अधिक से अधिक संख्या में चुना जाय।" गोकुलदास ने चुनाव-प्रोपेगेण्डा शुरू भी कर दिया।

"बस रहने दो···इन कांग्रेस वालों की बातें भी···। कार्पोरेशन क्या खाक कर रहा है? कांग्रेस ही सब कुछ है वहां भी। आप भी सबेरे-सबेरे क्या बातें ले बैठे···। हँ-हँ-हँ-हँ-हँ-हँ— वाह गोकुल भाई!" मिसर जी व्यंग्य की झुलसी हँसी हँस पेट पर हाथ फेरने लगे। दर्द कुछ बढ़ता-सा मालूम हुआ। वह तकिये के सहारे अधलेटे-से हो गये।

"इसमें क्या शक," राधे ने समर्थन किया।

"ना—ना, एकदम ऐसा रिमार्क तो न कीजिये। आखिर, यह भी तो देखिये, हमारे राष्ट्रीय नेताओं के सामने कितनी परेशानियां और समस्याएं हैं····।"

"रिमार्क न करें—आह—चल कर देख लें न सण्डास की हालत। न टङ्की में पानी, न मेहतर का पता। आखिर, हेल्थ-डिपार्टमेण्ट करता क्या है? आकर कोई सण्डास की तरफ झांकता तक नहीं—आह! सब मक्कार···हाय—मतलबी···!" मिसर जी कहते-कहते दर्द से परेशान हो बिस्तर पर लम्बे-लम्बे हो गये।

"पेट में दर्द होने लगा क्या? अरे, अभी-अभी तो···?" राधेलाल ने पूछा।

"आह! यह तो बड़ा तेज हो गया। जरा, गर्म पानी। दर्द न हो तो क्या हो? सण्डास हुआ नहीं। गया, तो सण्डास इतना गंदा··· कय होते-होते···आह!"

"गंदगी का भी कोई ठिकाना है! उफ, गरीब आदमी गंदगी में मरता रहे, मगर क्या पड़ी इन कांग्रेस-जनसेवकों को···।" कह कर राधेलाल सिगड़ी सुलगाने बैठ गये। पानी गर्म होने रख दिया गया।

"और क्या। अभी तो ठीक थे— क्या बहुत दर्द है! कम्युनिस्ट शासन से पहले रूस में क्या कम गन्दगी थी? अब सण्डास के बारे में कोई शिकायत नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमचमाते सण्डास! जंजीर खींचो तो बाढ़ आ जाय। क्या स्टालिन, क्या मोलोटोव और क्या एक फेक्टरी-वर्कर, सबके सण्डास समान—शानदार। No difference at all! जरा झांक कर देखिये, तबियत फड़क उठे। दिल की कली खिल जाय। अन्दर बैठिये, उठने को मन न करे। यही नहीं, रूस में सण्डासों में टेलीफोन लगे है, रेडियो रखे हैं, टेलीविजन तक मौजूद हैं, ट्रांसमीटर फिट हैं। जिन्दगी की हर आवश्यकता आप·····"

"सण्डास क्या, ये तो रेस्टोरेण्ट हो गये," राधे लाल अंगीठी को पंखा करते हुए बोला।

"और क्या?" नरेश जल्दी में कह गया। मिसर जी को भी हंसी आ गई।

"कम्युनिज्म से अब आशा न करो। रूस में राष्ट्रवाद बन कर कैद है यह तो। और भारतीय कम्युनिस्ट? बस, राम-दुहाई! माफ करना नरेश भाई, सन् ४२ में इन लोगों ने जो कुछ किया····। जब हमारे देश के नेता सींखचों में बन्द थे, जब कौम के सामने जीवन-मरण का सवाल था, जब हमारे देश के नौनिहाल गोलियां खा-खाकर··और तब हमारे बंधु कम्युनिस्ट···" मिसर जी का पेट सहलाते हुए गोकुलदास ने कहा।

गोकुल को बीच में ही ढोक राधे अंगीठी सुलगाना छोड़ कर बोला, "और क्या? कॉंग्रेसी-नेता जब जेलों में बन्द थे, 'ए क्लास' में कैद थे, तब हमारे सोशलिस्ट नेता जान हथेली पर रख, देश में से विदेशी राज्य की जड़ें उखाड़ने में लगे थे। सन् ४२ का आन्दोलन समाजवादियों ने चलाया। उस वक्त कम्युनिस्टों ने हमें गिरफ्तार तक कराया। कम्युनिज्म तो अब हठधर्मी और कट्टरपन बन गया है—पक्का टोटेलिटेरियन! कम्युनिस्ट तो रूस के एजेण्ट हैं और कांग्रेसी पूंजीपतियों के हाथ की कठपुतली।" राधेलाल ने एक ही वार में दोनों को पछाड़ दिया।

गोकुलदास कांग्रेस पर यह आक्षेप, भला कैसे सहन करते। मिसर जी का पेट सहलाना छोड़, तुरन्त उत्तर दिया, "बिल्कुल झूठ। सरासर गलत दोषारोपण। बदनाम करने की कोशिश। जिन्होंने जीवन भर तपस्या की, वे भला···?"

"यहीं देखिये, पूंजीपतियों के सण्डास कैसे साफ चमचमाते। रगड़-रगड़ कर लक्स और हमाम से धोये जाते हैं और आपकी टङ्की में पानी तक नहीं। मालावार हिल पर इतना ऊंचा होते हुए भी पानी के फव्वारे चलते हैं और यहां इतना नीचे पर भी नल बूंद-बूंद टपकता है। आज समाजवादी हुकूमत होती, तो देश का नक्शा कुछ और ही होता।"

उधर अंगीठी बिना सुलगे ही बुझ गई। जब समाजवादी हुकूमत नहीं, तो अंगीठी भी जल कर क्या करे? मिसर जी का दर्द और भी बढ़ने लगा। वह दर्द से कहराते हुए बोले, "पानी गरम हुआ क्या? हाय! गरम पानी के साथ 'पंचसकार'···"

"नरेश भाई, जरा···" कह राधेलाल मिसिर जी को संभालने लगा। नरेश ने जल्दी-जल्दी अंगीठी में कागज लगाये। उनको जला पंखा करना शुरू किया। मिसिर जी हल्के-हल्के लगातार कराहने लगे। गोकुल सिरहाने बैठ गया।

"धीरे-धीरे सब ठीक हो जायगा। जरा हृदय कड़ा रखिये। कांग्रेस-सरकार अब फ्री मैडिकल एड की योजना बना रही है··'क्या बहुत दर्द है?" गोकुल ने कहा।

"कांग्रेस तो कर चुकी, जो करना था। अब तो नेताओं के बंगले बन रहे हैं। मोटी-मोटी तनख्वाहें मार रहे हैं। घबराइये मत, अब ठीक हुए। समाजवादी-दल का शासन हुआ कि देश स्वर्ग बना। पानी के साथ 'पंचसकार' खा लीजिये। कहां रखा है, निकाल दूं?" राधे ने पूछा।

मिसर जी ने टूटी मेज की तरफ संकेत किया। राधेलाल दराज में चूरन तलाश करने लगा। अंगीठी पंखा करते हुए नरेश बोला, "बीमारी तो समाज की गलत, अवैज्ञानिक और मूर्खतापूर्ण बनावट में है। दर्द केवल मिसर जी का नहीं, पूरे समाज का है। पाप तो है आर्थिक विषमता—पूंजीवाद और इसका इलाज है कम्युनिज्म! जियो और जीने दो—और बराबरी के साथ।"

"तभी तो मास्को-ट्रायल में कामरेड स्टालिन ने उन साथियों को गोली से उड़वा दिया!" राधेलाल ने व्यंग्य किया।

नरेश भला स्टालिन पर यह अभियोग कैसे सह सकता, तुरन्त अंगीठी छोड़, जवाब देते हुए आ खड़ा हुआ, "ऐसे देश-द्रोहियों के लिये इससे भी कड़ी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी सजा भी कम ! जो लोग हमारे क्रांतिकारियों की कुरबानी को बेचना चाहते हों, जो हमारे निर्माण को नष्ट करने पर तुले हों, उन को शूट न कर दिया जाय तो और क्या ? मालूम है, वे लोग सोवियत रूस को अमरीका और इंगलैण्ड के हाथ बेचे डाल रहे थे।"

इधर नरेश कम्युनिस्ट रूस पर लगाये गये अभियोग का उत्तर देता रहा और उधर अंगीठी में लगाये गये कागज धुंआ बन कर ही रह गये। मिसर जी दर्द से कराह रहे थे और तीनों देशभक्त अपनी २ युक्तियों से यह साबित करने में लगे थे कि दर्द की जड़ तो उनकी पार्टी की सरकार बनने से कटेगी। मिसर जी ने चिल्लाना शुरू किया—"हाय ! आज किस का मुंह देखा था—ओह ! गर्म पानी कर दें तो चूरन·····"

मिसर जी का कराहना सुन पड़ोस से सक्खोबाई भी आ गई। देखा, मिसर जी बिल्कुल बेहाल।

"अरे ! तबीयत कैसी ? अभी अभी तो·····।" सक्खोबाई ने विस्मय से कहा।

"दर्द होने लगा···अभी तो बिल्कुल ठीक थे। अभी ठीक हुआ। गर्म पानी के साथ···।" गोकुल ने कहा।

बाई अँगीठी के पास गई तो देखा पानी जैसे का तैसा रखा है—ठण्डा ओला।

"बिगड़ी तो बुझी पड़ी है—जलती ही नहीं। साहब लोगों के बस का यह काम नहीं," कह कर वह अंगीठी जलाने बैठ गई। उसे क्या देर लगती। इधर ये तीनों नेता लोग मिसर जी को शाब्दिक धीरज देते रहे और उधर बाई ने पानी भी गरम कर दिया। वह प्याले में पानी गरम करके लाई तो गोकुल ने झट उसके हाथ से प्याला ले लिया। राधे ने एक कागज पर थोड़ा-सा चूरन रखा और नरेश ने मिसर जी को उठा भी दिया। तीनों ने मिल कर उन को चूरन खिला, पानी पिला दिया। वह फिर लेट गये। राधेलाल पेट सहलाने लगा और बाई नर्स की तरह इस डाक्टर-दल की आज्ञा में खड़ी रही।

चूरन तो मिसर जी पर जादू का-सा प्रभाव करता ही था। तीन-चार मिनट में ही पीड़ा आधी रह गई।

"कुछ ठीक हुआ ?" बाई ने मुसका कर पूछा।

"जब तुम्हारा हाथ लगा तो···।" नरेश ने हंसकर कहा। यह समझ कि अब आराम है, बाई मुसका कर चली गई। मिसर जी थोड़ी देर में ही बिल्कुल ठीक होगये।

"अब कैसा है ?" राधे ने पूछा।

"अब तो बिल्कुल ठीक है," मिसर जी बोले।

"चूरन तो गजब का है !" गोकुलदास बोले।

"हां, जब कभी संडास में गड़बड़ी हुई कि एक फंकी ले ली," कहते हुए मिसर जी ने एक बीड़ी सुलगाई।

"समस्या सिर्फ मिसर जी की नहीं, पूरे समाज की है। जिम्मेदार आदमियों के हाथ में प्रबन्ध रहे, तो इतना कष्ट न हो। शहरों में पेट किस लिये खराब रहते हैं ? इसलिये कि चालों में आदमी अनन्त हैं और संडास कम। समय पर जा नहीं सकते। हाजत मर जाती है। यही बीमारी की जड़ है।" नरेश ने फिर बात चलाई।

"और क्या—बिल्कुल यही !" मिसर जी बोले।

"यह तो आप के हाथ में है, वोट उसे दीजिये जो आप के प्रति ईमानदार हो। जिसे देश का ध्यान हो, अपना स्वार्थ न हो।"

"जो गरीबों और मजूरों का मित्र, सखा, सेवक और सहायक हो।"

"हुँ।" मिसर जी अंतिम कश खींच, पहली बीड़ी फेंक, दूसरी जलाते हुए बोले।

"इस बार मजा आयगा। क्यों मिसर जी, समाजवादियों को क्यों न भेजा जाय—नया खून है ?" राधे ने कहा।

मिसर जी बीड़ी पीते हुए पेट पर हाथ फेरते रहे। बीड़ियों ने धुंआधार कर पेट में हलचल मचा दी। चूरन भी उथल-पुथल कर रहा था।

"लेकिन कम्युनिस्टों के बराबर काम की धुन तो शायद ही किसी में हो। क्यों मिसर जी ?" नरेश ने अपनी बात सामने रखी।

चूरन का असर, गर्म पानी की मदद और बीड़ी की कोशिश—मिसर जी के पेट में तूफान-सा उठा। बातें सुनी-अनसुनी कर शीघ्रता से लोटा उठाया। पैरों में चप्पलें डालीं।

"तो फिर मिसर जी·····कांग्रेस को ?"

"मेरा तो विचार·····।"

"हूँ-हूँ" कह मिसर जी चप्पल घसीटते हुए संडास की तरफ भागे। तीनों देश-हितैषी चुनाव-प्रचार करते ही रह गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो गीत

मैं ढो पाता यह प्यार नहीं !

श्री 'नीरव' एम० ए०

जीवन की ऋतु ने मधु पाया,
जो कुसुम-गंध बन कर आया,
अब वे झंझायें बांध रहा
जो सह पाता संसार नहीं।

अमरों के गीत अजय जाने,
अमरों के प्रीति प्रणय जाने,
मिट्टी का तन ढोने वाले
मानव का यह अधिकार नहीं।

जिसकी पाषाण कथा अक्षय,
जो आप सृष्टि, जो आप प्रलय,
मन के पंखों पर नाप सके
जग यह वह पारावार नहीं।

जीवन की यह प्रतिमा ढाली,
पाली, वह परम प्रगति पाली,
अथ की असीमता में खोकर
अब जिसका उपसंहार नहीं।

★

मेरा गीत तुझे कब भाया !

श्रीमती शान्ति सिंहल

मन में सिन्धु प्रणय का उमड़ा,
नयनों के प्याले भर आये,
मैंने उस खारे जीवन से
तेरे पद - पंकज निखराये,
मेरे सहज निवेदन को पर
तूने नादानी बतलाया !
मेरा गीत तुझे कब भाया !

जब आंसू का रूप छिपाने
मुस्कानों का घूंघट डाला,
जैसे अमर तिमिर में दीपक
क्षण भर कर देता उजियाला,
मेरे इस अवलंबन पर भी
तू मन ही मन में मुस्काया !
मेरा गीत तुझे कब भाया !

जीवन के स्वर्णिम प्रभात में
अमर प्यार तेरा जागा था,
मेरे लघु सपनों ने तुझसे
दान अमरता का मांगा था,
क्रूर जागरण - वेला में पर
सपना क्या सपना रह पाया !
मेरा गीत तुझे कब भाया !

तुझसे ही स्वर लेकर मैंने
अपनी करुण रागिनी गाई,
पर अजान बन तूने पूछा—
'इतनी व्यथा कहां से आई ?'
मेरा आकुल स्वर बतलादे
कब तेरा अन्तर छू पाया !
मेरा गीत तुझे कब भाया !

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kan

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रेरणाप्रद जीवनी

अन्धकार में ज्योति-स्तम्भ

श्री बाबूराव जोशी 'साहित्यरत्न'

प्रोफेसर सुबोधचन्द्र राय का नाम बहुत कम लोगों ने सुना होगा। प्रोफेसर राय कलकत्ते की 'आल इण्डिया लाइटहाउस फार ब्लाइण्ड' नामक संस्था के सैक्रेट्री, कलकत्ता विश्वविद्यालय के लेक्चरार, 'टाटा इन्स्टीट्यूट आफ सोशल साइन्स' के लेक्चरार, 'ब्लाइण्ड इन इण्डिया एण्ड एब्राड' नामक पुस्तक के लेखक तथा भारतीय अन्धों का जीवन सुखी बनाने के काम में लगे हुए महानुभाव हैं। पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि इतना बड़ा विद्वान् व्यक्ति अन्धा है और उसने यह सारी प्रगति अन्धता की अवस्था में ही की है। हमारे समाज में अभी तक अन्धे जिस प्रकार का दयनीय और परावलम्बी जीवन व्यतीत करते आ रहे हैं उसे देखते हुए यह बात सचमुच आश्चर्यजनक ही है।

प्रोफेसर सुबोधचन्द्रराय सात वर्ष की ही अवस्था में किसी बीमारी से नेत्रविहीन हो गये थे। उनके माता-पिता ने तीन वर्ष तक लगातार प्रयत्न किया कि उनकी आंखें ठीक हो जायें, लेकिन सारी ओषधियां व्यर्थ सिद्ध हुईं। अब माता-पिता को बड़ी चिन्ता हुई। लेकिन वे निराश न हुए। उन्हें नेत्रविहीन हो जाने पर भी स्कूल भेजते रहे। स्कूल में उनकी कोई प्रगति न होते देखकर उनकी मां ने उनको कलकत्ते की एक अन्ध पाठशाला में भर्ती करवा दिया। लेकिन यहां भी कोई प्रगति नहीं हुई। बात यह थी कि उस अन्ध-पाठशाला में भी अन्धों की पढ़ाई की कोई ठीक व्यवस्था नहीं थी। अन्धों को शिक्षा देने की समुचित योग्यता रखने वाला एक भी अध्यापक वहां नहीं था। वहां केवल संगीत और शारीरिक व्यायाम पर ही ध्यान दिया जाता था। इनका प्रदर्शन करवा कर संस्था के संचालक दान प्राप्त करने की धुन में रहा करते थे। सुबोध बाबू की माता को इस पाठशाला से सन्तोष नहीं हुआ और उन्होंने उनको वहां से हटाकर घर पर ही उनकी पढ़ाई का प्रबन्ध किया। एक अध्यापक रख लिया गया जो प्रतिदिन आकर पढ़ा जाया करता था। अपने घर ही इस प्रकार अध्ययन करके वे प्रवेश-परीक्षा में सम्मिलित हुए और दूसरे लड़कों की भांति उसमें उत्तीर्ण भी हो गये।

प्रवेश-परीक्षा पास करके वे कलकत्ते के सेण्टपाल कॉलेज और प्रेसीडेन्सी कालेज में क्रमशः पढ़ते रहे। सन् १९३५ में वे एम० ए० पास हो गये और सन् १९३६ में यूनीवर्सिटी कालेज से उन्होंने बी० एल० पास कर लिया। बी० एल० पास कर लेने पर उन्होंने कलकत्ता हाईकोर्ट में प्रो० आर० एम० मुजुमदार के साथ, जो कि कानून के प्रसिद्ध विद्वान् हैं, काम किया। इन्हीं दिनों उन्होंने समाचारपत्रों में पढ़ा कि यूरोप और अमेरिका में अन्धों की स्थिति सुधारने और उनकी शिक्षा-दीक्षा के विषय में बड़े-बड़े प्रयत्न किये जा रहे हैं। उन्होंने मन ही मन यूरोप-अमेरिका की स्थिति से अपने देश की तुलना की। अपने देश में अंधों की दयनीय स्थिति की कल्पना करके उन्हें दुःख हुआ। वे सोचने लगे कि मुझे किसी न किसी प्रकार विदेश जाकर वहां इस सब का अध्ययन करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये। उन दिनों कलकत्ता विश्वविद्यालय के उप-कुलपति डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी थे। प्रो० राय ने उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और डाक्टर साहब ने 'रासबिहारी घोष-छात्रवृत्ति' देकर उनके मार्ग को सरल बना दिया। अब अन्धों की शिक्षा, उसके आन्दोलन तथा तत्सम्बन्धी संस्थाओं को देखने और अध्ययन करने के लिए उनको सुअवसर प्राप्त हो गया।

विदेश यात्रा

सन् १९३६ के सितम्बर मास में वे अकेले ही यूरोप-अमेरिका की यात्रा के लिए निकल पड़े। बिना किसी की मदद लिए अकेले ही भ्रमण करने वालों में वे पहिले नेत्रविहीन व्यक्ति हैं। पहिले तो उन्होंने सोचा कि रास्ते में सहायता के लिए किसी को साथ ले लिया जाय, लेकिन बाद में अर्थाभाव के कारण उन्हें यह विचार छोड़ना पड़ा। प्रवास के प्रारम्भ में ही भारतीय विद्यार्थियों का साथ हो गया। अतः वे उनके साथ इटली, स्वीटजरलैण्ड तथा फ्रांस के मार्ग से इंग्लैण्ड पहुँचे। वे चाहते थे कि पहिले अमेरिका की यात्रा की जाय, अतः लिवरपूल गये और वहां से तीसरे ही दिन अमेरिका के लिए रवाना हो गये।

अमेरिका पहुंचने वाले वे पहिले अन्धे भारतीय थे, जो अकेले ही यात्रा करके वहां पहुँचे थे। अतः अमेरिका के इमिग्रेशन-विभाग के अधिकारियों को शक हुआ। उन्होंने कसकर उनके अंधेपन की जांच की। जांच करने वाले व्यक्ति का व्यवहार इतना रूखा था कि कोई भी व्यक्ति गुस्सा हुए बिना न रहता। उसे विश्वास ही नहीं होता था कि प्रो० राय अन्धे हो सकते हैं। अन्त में किसी प्रकार उसको विश्वास हुआ।

प्रो० राय अमेरिका में एक वर्ष तक रहे। यहां आपने कोलम्बिया विश्वविद्यालय से शिक्षा का विषय लेकर एम० ए० पास किया। वे अमेरिका के शिक्षा-शास्त्रियों और विद्वानों के सम्पर्क में आये। इन्हीं दिनों मिस हेलन केलर नामक एक विदुषी से उनका परिचय हुआ, जो कि अन्धी ही नहीं, बहरी और गूंगी भी थी। प्रोफेसर साहब पर इस महिला की कर्मठता का बड़ा असर हुआ। मिस हेलन केलर जब डेढ़ वर्ष की

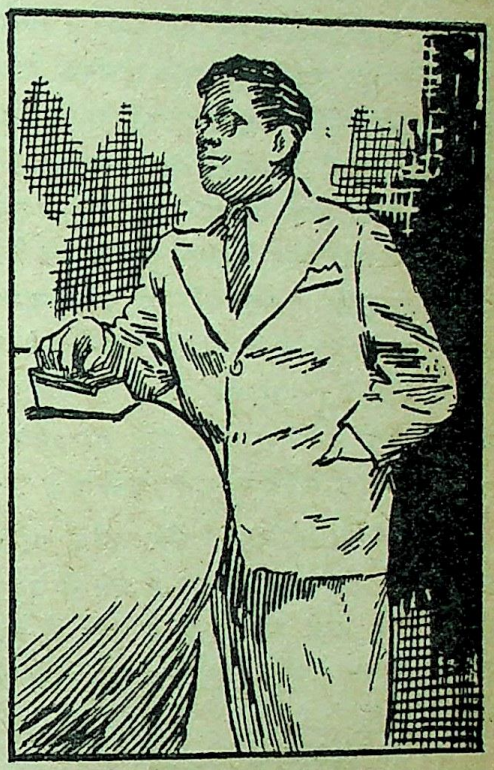

प्रोफेसर सुबोधचन्द्र राय

ही थी, तभी अन्धी और बहरी हो गई थी, लेकिन अपने अध्यवसाय और सतत परिश्रम से उसने पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त कर ली थी। उसने १०-१२ पुस्तकें भी लिखी थीं। प्रो० राय को उसके सम्पर्क से बहुत लाभ मिला। आपने उससे अन्ध-शिक्षा के ऊपर बहुत बातचीत की। मिस हेलन बोलने वाले के गले, ओंठ तथा नाक के ऊपर उंगलियां रखकर उसके मनोगत विचार समझ सकती थी।

न्यूयार्क के बाद प्रो० राय वाशिंगटन, बोस्टन, फिलाडेल्फिया, शिकागो, हार्टफोर्ट, न्यूजर्सी आदि अनेक अमेरिकन शहरों में गये और वहां की अन्ध, शिक्षण-संस्थाओं के काम का सविस्तार अध्ययन किया। सन् १९३७ के सितम्बर मास में वे अमेरिका से इंग्लैंड लौट आये। इस बार इंग्लैण्ड में उनकी फ्रान्सिस यंग हसबंड नामक व्यक्ति से भेंट हुई। फ्रांसिस यंग हसबंड अन्धों की शिक्षा में उन दिनों काफी दिलचस्पी ले रहे थे। उन्होंने प्रो० राय से आग्रह किया कि वे हिंदुस्तान के अन्धों की स्थिति पर एक निबन्ध लिखें। प्रो० राय ने निबन्ध लिखा। यह निबन्ध इतना प्रामाणिक माना गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kan

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वह भारतीय सिविल सर्विस की परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों के पाठ्य-क्रम में रख लिया गया। वे इंग्लैंड में ५ महीने रहे। इन दिनों उन्होंने इंग्लैण्ड, वेल्स, स्काटलैंड की सारी शिक्षण-संस्थाओं का अध्ययन किया और उनकी कार्य-पद्धति पर विचार किया। इंग्लैण्ड से वे पेरिस गये और वहां से जर्मनी तथा बेल्जियम भी गये। पेरिस के लिए प्रो० राय के दिल में विशेष आदर है, क्योंकि यहीं लुई ब्रेल नामक व्यक्ति ने सन् १८२६ में अन्धों के पढ़ने-लिखने के लिए 'ब्रेल लिपि' (उभरे हुए अक्षरों की छपाई) का आविष्कार किया था और इसी शहर में सन् १७८४ में अंधों की पहिली पाठशाला खुली थी।

यहां से वे फिर अमेरिका गये और वहां से प्रशांत सागर के रास्ते जापान गये। जापान में वहां की जनता और सरकार ने अन्धों की शिक्षा के लिए जो कुछ किया था, वह सब आपने देखा और हिन्दुस्तान आ गये।

विदेशों के अनुभव

अपने इस लम्बे प्रवास में प्रो० राय ने बहुत-सी जानकारी प्राप्त की। आपके सामने यह स्पष्ट हो गया कि दुनिया के सारे प्रगतिशील राष्ट्रों के समाज में अंधों का वही स्थान है, जो आंख वालों का है। वे समाज से किसी भी प्रकार अलग नहीं माने जाते। अन्धे होने के कारण कोई उनको हीन या निरुपयोगी नहीं समझता। वहां शिक्षा तथा उद्योगधन्धों के लिए उनका भी मार्ग खुला है। वहां उनके भी जीवन को आनन्दमय बनाने के लिए प्रतिवर्ष लाखों रुपया खर्च किया जाता है और उनके जीवन तथा कार्य-शक्ति का अच्छा उपयोग कर लिया जाता है। इंग्लैण्ड और अमेरिका में तो उन्होंने कितने ही अन्धों को वकील, पत्रकार, प्रोफेसर, शिक्षक और सरकारी नौकर के रूप में देखा। अन्धों के लिए वहां सरकारी नौकरी के दरवाजे भी खुले देखे। वहां 'ब्रेल-लिपि' में छपी हुई हजारों पुस्तकें दिखाई देती हैं और जापान में तो उन्होंने 'ओसाका मेनीची' नामक एक दैनिक पत्र भी देखा, जो अन्धों के लिए ब्रेल-लिपि में छपता है। ब्रेल-लिपि की छपाई में उन्हें जापान अन्य देशों से बहुत आगे बढ़ा हुआ दिखाई दिया। इस स्थिति ने उनके विचारों में काफी उथल-पुथल की और हिन्दुस्तान आते ही उन्होंने भारतीय समाज में अन्धों को भी सम्मान का स्थान दिलाने के लिए प्रचार-कार्य प्रारम्भ कर दिया। आपने समाचार पत्रों में लेख लिखे, जगह-जगह भाषण दिये और अन्ध-शिक्षा के प्रसार के लिए तेजी से काम करना प्रारम्भ किया।

यूरोप और अमेरिका में कुत्ते अन्धों के लिए लाठी से भी ज्यादा लाभदायक सिद्ध हुए हैं। वे उनको इधर-उधर घूमने-फिरने के काम में बड़ी मदद देते हैं और अन्धों का ठीक ठीक मार्ग प्रदर्शन करते हैं। यह बात वहां कुत्तों को सिखाई जाती है। सीखे हुए कुत्ते वहां इस काम में बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं। कुत्ते की सांकल हाथ में लेकर अमेरिका के अन्धे जहां चाहें वहां घूम आते हैं। मिस स्मिथ नामक एक अन्धी अमेरिकन युवती 'बफेलो-एक्सप्रेस' नाम के एक समाचारपत्र की संवाददात्री है। यह महिला अपने कुत्ते के साथ सारे अमेरिका का चक्कर लगाती रहती है। वह सम्वाद भेजने का काम बड़ी कुशलता से सम्पन्न करती है। वहां कुत्तों को इस प्रकार की शिक्षा देने वाली बहुत-सी संस्थाएं हैं। एक निश्चित रकम देने पर इस प्रकार सीखे हुए कुत्ते बड़ी सुगमता से मिल जाते हैं। अतः प्रो० राय ने भारतवर्ष में भी यह कार्य शुरू करने का प्रयत्न किया। हमारे यहां कितने ज्यादा बेकार घूमने-फिरने वाले कुत्ते हैं। यदि इनको इसी प्रकार सिखाया जाय, तो कितना बड़ा काम हो सकता है।

सन् १९३८ में बंगाल सरकार ने प्रो० राय को फिर एक नई छात्रवृत्ति दी और वे 'अन्धता एवं अन्धों की शिक्षा सम्बन्धी मानसिक तथा सामाजिक उन्नति' के विषय को लेकर लन्दन विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त करने के लिए फिर यूरोप रवाना हुए। लन्दन विद्यापीठ के 'इन्स्टीटयूशन आफ एजुकेशन' नामक विभाग में उन्होंने अपना खोज और अध्ययन का काम शुरू किया। इसी समय प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रो० एच. आर. हॅम्ले के पास काम करने का सुयोग मिला। ब्रिटिश म्यूजियम की ओर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी उनको अध्ययन की सुविधाएं मिल गईं। अनुभव प्राप्त करने की दृष्टि से ग्रेट ब्रिटेन की सबसे बड़ी अन्ध-संस्था 'स्विस काटेज स्कूल' में वे अध्यापन का काम भी करने लगे। लेकिन अपने अध्ययन को चालू रखने के लिए जिन पुस्तकों की उन्हें आवश्यकता थी, वे वहां न मिल सकीं और उनको अमेरिका जाना पड़ा। अमेरिका पहुंच कर प्रो० राय ने उन सारी योजनाओं और प्रयत्नों का अध्ययन किया जो अन्धों के हितार्थ वहां किये जा रहे थे। वहां आपने जो कुछ अनुभव प्राप्त किया उसका निष्कर्ष इस प्रकार है—

(१) वहां ब्रेल-लिपि का प्रचार बड़ी तेजी से हो रहा है। इस लिपि ने वहां अन्धों की शिक्षा के काम में बड़ी मदद की है।

(२) वहां अन्धे विद्यार्थियों की बुद्धि की परीक्षा की जाती है और देखा जाता है कि उनकी रुचि किस ओर है। उनकी रुचि को पहिचान कर ही उनके लिए किसी विशेष काम-धन्धे की योजना की जाती है।

(३) वहां अन्धों की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर अध्यापक तैयार किये जाते हैं। अन्धों को पढ़ाने वाले अध्यापकों को तैयार करने के लिए वहां अलग संस्थाएं हैं।

(४) वहां ब्रेल-लिपि में अन्धों के लिए पुस्तकें छपती हैं। अमेरिकन सरकार इस काम में प्रति वर्ष ६ लाख रुपये खर्च करती है।

(५) अमेरिका में अन्धों को तीन वर्गों में बांटा गया है—पहले पूर्ण अन्ध, दूसरे वे जिनको थोड़ी-सी दृष्टि प्राप्त है और तीसरे वे जो बहुत कम अन्धे हैं। थोड़ी दृष्टि वाले तथा क्वचित् अन्ध बालक वहां साधारण पाठशालाओं में जाते हैं। उनकी दृष्टि बनाये रखने के लिए वहां हमेशा प्रयत्न किया जाता है। साधारण पाठशालाओं में भी वहां अन्धों को शिक्षा देने की योग्यता रखने वाले एक-दो शिक्षक होते है।

पाश्चात्य देशों में अन्धे बालकों की शिक्षा बचपन से ही—डेढ़ वर्ष की अवस्था से ही—प्रारम्भ हो जाती है। ऐसे छोटे शिशुओं की शिक्षा के लिए वहां अलग संस्थाएं हैं। अन्धे बालक इन संस्थाओं में भर्ती करवा दिये जाते हैं, क्योंकि साधारण माता-पिताओं को अन्ध-शिक्षा का ज्ञान नहीं होता, जिसके कारण वे उनकी ओर दुर्लक्ष कर सकते हैं। इन संस्थाओं में ये शिशु ५-६ वर्ष की आयु तक रहते हैं। इसके बाद वे दूसरी संस्था में भेजे जाते हैं, जहां ५-६ वर्ष की आयु के अन्धों को शिक्षा दी जाती है। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा वहां प्रायः मुफ्त दी जाती है। प्रत्येक अन्ध-पाठशाला में बालक की रुचि को पहिचानने का प्रयत्न किया जाता है। जिस उद्योग-धन्धे की ओर उनकी रुचि दिखाई देती है, उसी की शिक्षा उनको विशेष रूप से दी जाती है। पुस्तकों के अतिरिक्त वहां बहुतसे बालकोपयोगी समाचारपत्र ब्रेल लिपि में छपते हैं। प्रत्येक शहर में अन्ध-वाचनालय भी होते हैं, जहां वे समाचार पत्र पढ़ सकते हैं और विभिन्न विषयों की पुस्तकों का अध्ययन भी कर सकते हैं। अन्धों को शिक्षा देने के लिए प्रायः अन्धे शिक्षक ही चुने जाते हैं और उनको अन्ध-बालकों की मानसिक स्थिति का पूरा ज्ञान करवाया जाता है और एक विशेष पद्धति से अध्ययन-कार्य की शिक्षा दी जाती है। ज्योंही शिक्षा समाप्त होती है, अन्ध-विद्यार्थियों को उपयुक्त काम दिये जाते हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार की बातों का हिन्दुस्तान में सर्वथा अभाव है।

इस यात्रा में एक महत्वपूर्ण घटना हुई। इस बार मिस चेरनॅक नामक एक अमेरिकन युवती से उनका विवाह हुआ। पिछली बार जब वे अमेरिका आये थे, तभी हेलन केलर के निवासस्थान पर इस युवती से उनकी भेंट हुई थी। यह पुरानी जान-पहिचान ही अब विवाह का कारण बन गई। मिस चेरनॅक अन्ध युवती नहीं है। वह एक मध्यम श्रेणी के परिवार की उच्च शिक्षा-प्राप्त सुन्दर युवती है। इस विवाह से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अमेरिका में अन्धों को समानता का दर्जा प्राप्त है। वहां अन्धत्व से विवाह आदि बातों में कोई रुकावट पैदा नहीं होती। इस विवाह से प्रो० राय के मन की झिझक दूर हो गई। अब तो वे बाजार में चीजें खरीदने भी जाने लगे और इधर-उधर की बातों में रस भी लेने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kan

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वदेश में प्रयत्न

अब दूसरा महायुद्ध प्रारम्भ हो रहा था। अतः उन्होंने जापान होते हुए भारत आने का निश्चय किया। अन्ध शिक्षा के सम्बन्ध में जापान में जो कुछ प्रगति हो रही थी, उसका अध्ययन भी वे इस बार फिर करना चाहते थे। वे जापान होते हुए भारत आये और अन्धों की शिक्षा तथा उनके जीवन-स्तर को समानता के दर्जे पर लाने के काम में जुट गये। उस समय भारतीय अन्धों की स्थिति अत्यन्त करुणाजनक थी। आज भी स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ है, लेकिन उस समय अन्धों की कोई संस्था अथवा स्कूल भी नहीं था। उस समय अन्धों की संख्या तथा उनके सम्बन्ध में अन्य जानकारी प्राप्त करने का भी कोई साधन नहीं था। जनता को इस ओर आकर्षित करने के लिए उन्होंने अपनी दोनों यात्राओं की रिपोर्ट कलकत्ता यूनीवर्सिटी को दी।

यूरोप और अमेरिका में अन्धत्व को रोकने का काम बड़ा महत्वपूर्ण समझा जाता है। जिन लोगों ने इस सम्बन्ध में कुछ खोज की है, उनका कहना है कि ७०% अन्धत्व को रोका जा सकता है। अमेरिका और यूरोप में इस प्रकार का प्रयत्न चालू कर दिया गया है। इसके परिणामस्वरूप आजकल वहां अन्धों की संख्या कम होती जा रही है। प्रो० राय का मत है कि समाज में आंख वाले मनुष्यों की अपेक्षा अन्धों की शिक्षा का ध्यान अधिक रखा जाना चाहिए। कारण यह है कि शिक्षा के अभाव में अन्धों का जीवन बिलकुल जड़ बन जाता है। वह बिना शिक्षा के न कोई काम कर सकता है, न जीवन का कोई लाभ ही उठा पाता है। उसके लिए तो जीवन भार बन जाता है। और दूसरी ओर आंख वाला व्यक्ति बिना शिक्षा के भी सारे काम कर सकता है।

हिन्दुस्तान के अन्धों की संख्या जानने के लिए प्रो०राय ने अमेरिका से आते ही अन्ध-गणना करवाने के लिए प्रयत्न प्रारम्भ किया। सन् १९३१ में इस प्रकार की गणना की गई थी। उसमें अन्धों की संख्या ६ लाख से अधिक आई थी। विशेषज्ञों का कहना है कि यह संख्या बिल्कुल सही नहीं है। भारत में अन्धों की संख्या में प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है और उनका विचार है कि अब उनकी संख्या २० लाख के लगभग होगी। प्रो०राय ने तत्कालीन केन्द्रीय सरकार से अन्धगणना की जोरदार मांग की और कहा कि १९४१ की जन-संख्या में अन्धों की गणना भी की जाय। लेकिन सरकार ने बताया कि इस काम में बड़ी कठिनाइयां है, अतः यह काम प्रारम्भ नहीं किया जा सकता। अब प्रो० राय ने बंगाल सरकार से प्रार्थना की कि वह ही कम से कम अपने प्रान्त के अन्धों की संख्या मालूम करने के लिए उनकी गणना का काम अपने हाथ में ले ले। लेकिन बंगाल-सरकार ने भी अपनी असमर्थता प्रकट की। अतः भारत के अन्धों की संख्या का जब प्रश्न आता है, तब पुराने आंकड़ों को ही लेकर चलना पड़ता है।

सन् १९४१ में प्रो० राय ने कलकत्ते में अन्धों को आधुनिक ढंग से शिक्षा देने के लिए 'अन्ध-ज्ञान-दीप-गृह' नामक एक संस्था का निर्माण किया। इस अवसर पर अपने लेखों और भाषणों के द्वारा उन्होंने जो प्रचार किया, वह अन्धों की शिक्षा में रुचि रखने वालों के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने अन्धों के सम्बन्ध में जो खोज की और उसके परिणामस्वरूप वे जिस नतीजे पर पहुँचे, वे सब बातें इस छोटे से निबन्ध में बताना कठिन है; फिर भी उसके ऊपर एक दृष्टि डाल लेना हम ठीक समझते हैं।

हिन्दुस्तान में अन्धों के लिए सब से पहिले सन् १८८७ में मिस ऑनीशार्प नामक एक मिशनरी महिला ने एक स्कूल खोला था। उसकी प्रस्थापना के बाद आगामी ६० वर्षों में ३० अन्ध-संस्थाओं का निर्माण हुआ। इन संस्थाओं में केवल एक ही सरकारी संस्था है, शेष सब संस्थाएं व्यक्तिगत हैं। इतनी बड़ी जन-संख्या वाले इस देश में ३० संस्थाएं सागर में बूंद की तरह हैं। यह स्थिति कितनी शोचनीय है।

हमारे यहां अन्धों को समाज की कृपा पर अवलम्बित रहना पड़ता है। वे बेचारे भीख मांगते हैं और पशुओं जैसा जीवन व्यतीत करते हैं। प्रो० राय के सतत प्रयत्नों के परिणामस्वरूप कलकत्ता विश्व-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यालय के रिसर्च ट्रेनिंग विभाग ने अन्ध-शिक्षकों को तैयार करने के लिए एक पाठ्यक्रम बनाया और ट्रेनिंग प्रारम्भ की। पहिले ही वर्ष ४१ विद्यार्थी इस ट्रेनिंग में सम्मिलित हुए। तब से अब तक इस संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। इस प्रयत्न का परिणाम यह हुआ कि अन्ध-शिक्षकों की समस्या—कुछ अंशों में ही सही—हल होती जा रही है और अब शिक्षक मिलना उतना कठिन नहीं रहा है।

सन् १९४१ के अप्रैल मास में, जबकि 'अन्ध ज्ञान-दीप-गृह' की स्थापना के लिए कलकत्ता में एक सभा हुई, तब उसके सम्बन्ध में अपनी योजना बताते हुए प्रो० राय ने एक बड़ा महत्वपूर्ण भाषण दिया था। अपनी योजना बताते हुए उन्होंने कहा था कि इस योजना के निम्नलिखित भाग होंगे—

(१) प्रौढ़ अन्धों की शिक्षा। (२) छोटे-छोटे अन्ध बच्चों के लिए शुश्रूषागृह। (३) ब्रेललिपि में छपाई के लिए छापखानों की स्थापना। (४) अंधे, गूंगे और बहरे लोगों के लिए पढ़ाई की व्यवस्था। (५) अन्धों के लिए प्रचार और सुख-सुविधा का विभाग। (६) शिक्षित अन्धों के लिए उद्योगधन्धों की व्यवस्था करना आदि। उनकी यह योजना मंजूर कर ली गई और अगस्त १९४१ में भारतवर्ष में अन्धों को ज्ञान देने वाली इस पहिली संस्था का जन्म हुआ।

उस समय अन्धों की शिक्षा के लिए ४-५ तरह की लिपियां काम में लाई जाती थीं। प्रो० राय ने इन लिपियों में एक निश्चित एकसूत्रता लाने का प्रयत्न किया। दूसरी ओर उन्होंने शिक्षित अन्धों को काम-धंधे सिखाने की दिशा में भी प्रयत्न करना प्रारम्भ किया। अभी तक लोगों का यह खयाल था कि अन्धे केवल गाने-बजाने का ही काम कर सकते हैं, लेकिन अब उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से करके यह दिखा दिया है कि अन्धे खेती का काम तथा अन्य उद्योग-धन्धे भी संभाल सकते हैं। उनका मत है कि पश्चिम की भांति भारत में भी अन्धे वकील, प्रोफेसर, सम्पादक, सम्वाददाता, बीमा एजेण्ट आदि बन सकते हैं।

उनके विगत ५-६ वर्षों के प्रयत्न का यह परिणाम हुआ है कि जनता और सरकार का भी ध्यान अब अन्धों की शोचनीय स्थिति की ओर गया है। कलकत्ता के 'ज्ञान-दीपगृह' के बाद सन् १९४३ में देहरादून में इस संस्था की एक शाखा का जन्म हुआ। इस संस्था में उन अन्धों की शिक्षा और शुश्रूषा का प्रबन्ध किया गया है, जो दूसरे महायुद्ध में सैनिक के रूप में लड़े थे और अन्धे हो गये थे। सरकार ने अन्धों की स्थिति की जानकारी प्राप्त करने के लिए एक कमेटी नियुक्त की, जिसमें प्रो० राय भी थे। इन्हीं दिनों प्रो० राय ने एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी 'हिन्दुस्तान एवं विदेश के अन्धे।' इस पुस्तक को कलकत्ता विश्वविद्यालय ने प्रकाशित किया। इन्हीं दिनों बम्बई के 'टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल साइन्स' में 'अन्धों के प्रश्न' का विभाग उनको सौंपा गया। कलकत्ता और बम्बई की इन संस्थाओं को संभालते हुए उन्होंने इस विषय पर जगह-जगह कई व्याख्यान दिये। इस प्रकार अन्ध-शिक्षा की दिशा में प्रो० राय एक महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं।

★

डोंगरे का बालामृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kan

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७५००) रु० नकद इनाम

आप २४ घण्टों में फिर युवक बन सकते हैं

औटोजम (विटामिन टानक) के खाने से प्रत्येक पुरुष व स्त्री अपनी आयु से १५-२० वर्ष कम आयु के दिखाई देते हैं। यह निर्बल स्वास्थ्य, खून की खराबी, दिमागी तथा शारीरिकश्रम में लाभदायक है। इसके खाने से भूख खूब लगती है। एक सप्ताह में पांच से दस पौंड तक तोल बढ़ जाता है। मुंह पर लाली आ जाती है। चेहरे का रंग गोरा हो जाता है। तथा चेहरे पर यौवनावस्था की भांति की चमक आ जाती है। जैसे कि आपका चेहरा यौवन अवस्था में था। इसके प्रयोग से नजर तेज होती है। यह गालों को आकर्षित बना देता है, होठों पर लाली आ जाती है, सफेद पके हुए बालों को सदा के लिए काला कर देता है, दांतों को असली की भांति दृढ़ कर देता है। स्विट्जरलैण्ड के एक शत वर्षीय वृद्ध पुरुष ने इसका प्रयोग किया। जिससे वह तीस वर्ष के युवक की भांति हो गया। यही नहीं, पर उसने एक युवती से व्याह भी कर लिया।

औटोजम के बरतने से ८० तथा ९० की आयु में भी हार्ले बुड के एक्टर तथा एक्टरसें हृष्ट, युवक तथा सुन्दर प्रतीत होने लगते हैं। और परदा पर अति फुर्ती से काम करने लगती हैं। स्त्रियां यदि इनका प्रयोग करें तो अपनी आयु के पिछले समय तक मुख की सुन्दरता तथा चमक को बनाये रख सकती हैं पुरुष इसके प्रयोग से समय के पूर्व वृद्ध नहीं हो पाते। बाल काले तथा आकर्षित रहते हैं। मुख की आकर्षिकता सदा बनी रहती है। स्वास्थ्य आयु भर खराब नहीं होता।

Autogem औटोजम Autogem

को एक शीशे के बर्तन में बहुत काल तक रखा गया। तब वह शीशे का बर्तन इतना पक्का हो गया कि कई चोटें मारने पर भी न टूट सका। इसको इंग्लैण्ड में सहस्त्रों पुरुषों ने देखकर प्रमाणित किया। औटोजम का तुरन्त प्रयोग आरम्भ कर दें। इसका फल अपना उत्तर आप होगा। प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व अपना तोल करलें तथा अपना मुख शीशे में देखलें। एक सप्ताह पश्चात् फिर शीशा देख फिर नोट करें कि आप क्या अनुभव करते है। आप इसके जादू की भांति प्रभाव की प्रशंसा करेंगे। औटोजम को प्रत्येक व्यक्ति तक ले जाने के लिये इसका मूल्य केवल अल्प समय के लिए ५) रुपया रखा गया है। कुछ समय के उपरान्त इसका असली मूल्य ३०) रुपया कर दिया जायगा। आज ही इसे मंगवाने के लिये आर्डर भेज दें। क्योंकि इसकी सम्भावना है कि आपके देर करने से माल समाप्त हो जाए और आपको पछताना पड़े।

मिलने का पता—

दी मैकसो लैबोरेटरीज लिमिटेड,

पोस्ट नं० ४५ (M. M. D.) देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

छाया की ज्योति

श्री 'रावी'

★

जो लोग छाया जैसी 'आजाद' लड़कियों पर आक्षेप करते हैं, उन से मैं पूछता हूं कि छाया में किस चीज की कमी है ?

★

सेक्रेटेरियट की ओर से आकर एक नई चमचमाती कार हजरतगंज के चौराहे पर रुकी और उसमें से एक तरुणी उतरी। वह निस्सन्देह एक अत्यन्त रूपवती नवयुवती थी। बगल वाली दूकान के बरामदे में से गुजरते हुए एक नवयुवक पर उसकी दृष्टि पड़ी। युवक से दृष्टि मिलते ही उसने अपने बाएं कंधे को एक मोहक अदा-पूर्ण झोंका दिया और मुस्कराती हुई बरामदे पर चढ़ गई।

"धन्यवाद !" युवक ने उसके पास से निकलते हुए धीमे स्वर में कहा।

तरुणी रुक गई।

"आपका मतलब ?" गर्दन घुमा कर उसने युवक को त्योरी-चढ़ी दृष्टि से देखते हुए कहा।

"मतलब···" युवक भी रुक गया था, "धन्यवाद का मतलब—थैंक्स।"

"कैसा थैंक्स, मैं पूछती हूं ?" युवक की चप्पल, पायजामा और आंखों पर चढ़ती हुई दृष्टि डाल कर उसने कुछ तीखे स्वर में पूछा।

'आपने मुझे एक सुन्दर अदा के साथ एक सुन्दर दीखने वाली निगाह से देखा। मुझे उससे बड़ा सुख मिला। आप खुद भी इतनी सुन्दर हैं। क्या इस कृपा-भरी दृष्टि के बदले मुझे एक धन्यवाद देने का भी हक नहीं है ?"

"आपको शर्म आनी चाहिए, लेडीज की इज्जत करनी चाहिए। जाइए।" कहती-कहती वह एक बार फिर दबे होठों से मुस्करा उठी और सामने वाली दूकान की पहली सीढ़ी पर उसने पैर रख दिया।

"मैं आपको इस बात का बहुत अच्छा जवाब दे सकता हूँ, लेकिन आप अभी नहीं सुनेंगी। कभी सुनना चाहें तो मुझे किसी भी दिन डाकखाने के पार्क वाले उस पेड़ के नीचे चार और छः के बीच शाम को पा सकती हैं। मैं वहीं बैठकर पढ़ता-लिखता हूं।"

"जाइये, जाइये, शराफत सीखिये। पहले जवाब देने लायक अपनी शकल तो बनाइये।" कहती हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह खट-खट दूकान की सीढ़ियों पर चढ़ गई।

युवक अपनी राह चला गया।

* * *

दूसरे दिन साढ़े चार बजे शाम को वही कार युवक के बताये हुए स्थल के पास सड़क पर आकर रुकी। कार में आज उस तरुणी के साथ एक नवयुवती और भी थी। वृक्ष के नीचे एक बेंच पर जहां वह युवक बैठा था, वहीं वे दोनों पहुँचीं।

"आप ही कल शाम मुझे चौराहे वाली दूकान के पास मिले थे?" उसने युवक के पास पहुँच कर पूछा।

"जी!" युवक ने अनायास दो नवयुवतियों को अपने पास खड़ा पाकर बेंच से उनके स्वागतार्थ उठते हुए कहा। अपनी कापी और उस पर चलते हुए फाउंटेनपेन को भी उसने बन्द कर दिया।

"कहिए, आप मेरी किस बात का जवाब देना चाहते थे?"

"आपने मुझे शराफत सीखने और जवाब देने के लायक शकल बनाने की सलाह दी थी। अगर मैं ये दोनों बातें कर लूं, तो क्या आप मुझे अपना दोस्त मान सकती हैं? मेरी बातें सुनने के लिए वक्त दे सकती हैं?"

"आपको वक्त···?" गम्भीर मुख-मुद्रा बना कर उसने कहा, "आप कभी मेरे मकान पर तशरीफ ला सकते हैं क्या?"

"क्यों नहीं!" युवक ने उत्सुक स्वर में कहा।

"और जूतों पर पालिश भी अच्छी तरह कर सकते हैं?" तरुणी ने कहा और दोनों सहेलियां खिलखिला उठीं।

"हां, कर तो सकता हूँ," युवक ने सहज भाव से कहा।

"तब आप कल तीसरे पहर मेरी कोठी पर आ सकते हैं," उसी तरुणी ने कहा।

"और आपका काम ठीक हुआ तो हर रोज उसी वक्त पर आपका आना जारी रह सकता है," उसकी सहेली ने योग दिया और दोनों फिर खिलखिला कर हँस पड़ीं।

"मैं कल तीन बजे जरूर पहुँचूंगा। आप मुझे अपना पता बताएं।" युवक की सहज उत्सुकता में कोई परिवर्तन नहीं था।

"इनका नाम है मिस छाया," दूसरी लड़की ने उत्तर दिया और साथ ही एक मिनिस्टर की कोठी का पता बताया कि वह मिनिस्टर साहब छाया के मामा हैं।

"मैं कल जरूर आपके घर पहुँचूंगा," युवक ने प्रसन्न-स्वर में कहा।

"हम लोगों को बड़ी खुशी होगी; अच्छी दिलचस्पी रहेगी। हम आपको चाय भी पिलायेंगी," तरुणी ने अपनी सहेली का हाथ पकड़ कर आगे बढ़ते हुए कहा।

युवक बेंच पर बैठ कर अपने काम में फिर लग गया। दोनों युवतियां पार्क में टहलने लगीं। उनके आगे-पीछे टहलने का मार्ग युवक के समीप से ही गुजरता था। उनकी पारस्परिक बातचीत का विषय बहुत कुछ वह युवक ही था और वे बीच-बीच में उसे देख लेती थीं और उनकी बातों में हँसी की खिलखिलाहट का पूरा स्थान था।

"तो मिस्टर, आप करते क्या हैं?" युवक ने देखा, वे दोनों फिर उसके पास खड़ी थीं और उसकी पूर्व-परिचित तरुणी ही पूछ रही थी।

"मैं···" युवक फिर उठ बैठा और बेंच की ओर संकेत करते हुए बोला, "क्या आप थोड़ी देर इस बेंच पर बैठना पसन्द करेंगी?"

वे दोनों एक शिष्टाचारपूर्ण मुस्कान के साथ बेंच के एक कोने पर बैठ गईं। उनसे कुछ फासले पर युवक भी उस बेंच पर बैठ गया।

"मैंने इसी यूनीवर्सिटी से पिछले साल सोशियोलॉजी (समाजशास्त्र) में एम्० ए० किया है और अब रिसर्च के साथ 'हिन्दू समाज में यौनसम्बन्धी प्रतिबन्ध' पर थीसिस लिख रहा हूँ।"

"थी—सिस!" तरुणी की भाव-भंगी एकदम बदल गई, "और ऐसे विषय पर! बहुत बड़ी चीज है!"

"बड़ी चीज तो है ही। हिन्दी की मासिक पत्रिका 'वसुमती' में मैं उसी आधार पर एक लेखमाला भी लिख रहा हूँ। उसका शीर्षक है—'आज की तरुणी और उसका भविष्य'।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह, तो उसके लेखक आप हैं ?" तरुणी के मुख पर अबकी बार एक संकोचभरी लालिमा दौड़ गई।

"श्री रूपदर्शी ?" दूसरी युवती ने कहा।

'जी हां, मैं 'रूपदर्शी' के नाम से ही हिन्दी में लिखता हूं। मेरा असल नाम तो राबर्ट इवैंजलिन है।"

"राबर्ट इवैंजलिन! आप क्रिश्चियन होकर भी हिन्दी में···!"

"आप हमारे मजाक का बुरा तो नहीं माने ?" छाया ने अपनी सहेली की बात पूरी होने के पहले ही कहा, "हम लोग परिचितों में ऐसी ही शरारतभरी बातें कर बैठती हैं। आप बुरा माने हों, तो हमें उसके लिए माफ करें!" उसके स्वर में सचमुच गहरा पछतावा था और स्निग्ध विनय भी।

"मैं बुरा नहीं मानता, छाया जी! आप निश्चिंत रहें। मैं तो कल से ही आपका बहुत कृतज्ञ हूँ। आपने कल मुझ से बिना परिचय के जितनी बात की, उतनी कोई मामूली भली लड़की नहीं कर सकती थी। आपकी आज की बातचीत में भी मुझे बड़ा रस मिला है।"

छाया ने पहली बार युवक को स्त्रीसुलभ सकुचाई हुई ध्यानपूर्ण दृष्टि से देखा। उसने सोचा, यह युवक भावुक और सुसंस्कृत ही नहीं, यथेष्ट सुन्दर और आकर्षक भी है।

"मैं आप से इस समय एक बात पूछूं ? आपका कोई हर्ज तो न होगा ?" छाया ने सम्भवतः इवैंजलिन की व्यस्तता के विचार से कहा।

"जरूर पूछिये, मेरा वक्त और भी अच्छे काम में बीतेगा।"

"अभी सवा पांच बजे हैं," छाया ने अपने हाथ की घड़ी देखते हुए कहा, "आप छः बजे तक यहां रुकेंगे ?"

"हां, पौन घण्टा मैं बड़ी खुशी से आपके साथ बातचीत करने में बिता सकता हूं।"

"तब यह बताइये, आप मेरी कल की बात का—हालांकि उसमें मेरी गुस्ताखी भी बहुत थी—क्या जवाब देना चाहते थे ?"

"उस जवाब के पहले मुझे आप से कुछ बातें पूछनी पड़ेंगी।"

"शौक से पूछिये।"

"पूछूं ?" युवक ने एक बार दूसरी लड़की की ओर दृष्टि फैंकते हुए पूछा।

"जरूर पूछिये, मेरी सहेली अरुणा उत्तर देने में मेरी सहायता करेगी।"

"जब आप राह चलते किसी अपरिचित नवयुवक को देख कर इस तरह मुस्करा देती हैं, और आपकी दूसरी चेष्टाएं भी मोहक हो उठती हैं, तब ऐसा करने में आपका मतलब क्या होता है ? आप अपने मन में क्या सोचती हैं ?"

छाया सोचती हुई चुप रही।

"अरुणा जी आपकी सहायता करेंगी!" युवक ने अरुणा की ओर देखकर कहा।

"मैं तो ऐसा कुछ भी नहीं करती—कम से कम जान-बूझ कर तो नहीं करती।" छाया ने ही उत्तर दिया।

'आप झूठ बोलती हैं," युवक ने झुंझलाहट भरे, फिर भी स्निग्ध स्वर में कहा।

"मुमकिन है···"

"आप ठीक कहते हैं," अरुणा बोल उठी, "और इसका जवाब सीधा है। यह हर नौजवान को अपने रूप पर मुग्ध करना चाहती हैं, उसकी प्रशंसा चाहती हैं। यह स्वाभाविक है।"

"मैं इनकी राय से सहमत हूं," युवक ने छाया को सम्बोधित कर कहा, "और जिन नौजवानों पर आप खुद भी थोड़ा बहुत मुग्ध हो सकती हैं या जिनकी थोड़ी बहुत प्रशंसा कर सकती हैं, सिर्फ उन्हीं को नहीं, आप हर राह चलते मामूली आदमी को भी इसी तरह मुग्ध करना चाहती हैं—यह मेरा निश्चित विचार है।" युवक ने कुछ सवेग स्वर में कहा।

"अगर चाहती हूँ, ऐसा करती हूं, तो इसमें बुराई ?" छाया ने भी मानो सशस्त्र होकर सुदृढ़ स्वर में पूछा।

"बुराई ?" युवक ठठाकर हंस पड़ा, "मैं कब

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहता हूँ कि इसमें बुराई है। मैं तो आपकी एक बहुत बड़ी अच्छाई की चर्चा कर रहा हूं। मैं मानता हूँ कि समाज में प्रत्येक स्त्री को प्रत्येक पुरुष की दृष्टि में सुंदर और आकर्षक दीखना चाहिए, अपने रूप और माधुर्य का सुख हमेशा अपने गिर्द बिखेरते चलना चाहिए।"

"छाया की बिल्कुल यही फिलासफी है," अरुणा बोल उठी, "और मैं भी इससे सहमत हूँ।"

"और मैंने यह फिलासफी अरुणा से ही सीखी है," छाया ने अपनी स्वभावसिद्ध अधूरी-सी अंगड़ाई लेते हुए कहा।

"लेकिन इस अच्छाई में एक बुराई भी है। जब आप किसी व्यक्ति को अपने से नीचा, कमहैसियत या असुन्दर मानती हुई उसके साथ वैसा भाव प्रदर्शन करती हैं, तब आप के व्यवहार में एक अनुचित कठोरता और असुन्दरता आ जाता है। आपके उस मीठे प्रदर्शन के साथ जो कृपालुता और सहृदयता होनी चाहिए, वह न होकर उसकी उलटी चीज बीच में आ जाती है। क्या आप कह सकती हैं कि आप किसी भी सामने आये हुए व्यक्ति पर उस तरह अकृपालु नहीं होतीं और उसे व्यर्थ ही परेशान नहीं करना चाहतीं?"

"मैं तो ऐसा ही समझती हूं," छाया ने कहा।

"आप इस पर गहराई तक विचार कीजिए। आप की नेकनीयती में कुछ कसर हो सकती है। जब आप किसी व्यक्ति का ध्यान अपनी ओर इस तरह आकर्षित करती हैं, तो आप एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेती हैं।"

"वह क्या?"

"उसके मन में उभरी हुई भावनाओं की आप एक हद तक जिम्मेदार हो जाती हैं। आपकी जिम्मेदारी है कि उसकी भावनाओं का, अपनी भावनाओं द्वारा, दृढ़ता लेकिन सहृदयता से जवाब दें, उसके लिए अपने हृदय में आदर और शुभकामनायें पैदा करें, आप मन ही मन उससे कह सकें—आप सुन्दर हों, स्वस्थ हों, हैसियतदार हों, प्रसन्न और आकर्षक बनें, मैं आपका आदर करती हूँ। उसकी तरफ से अगर आप उदासीन रहती हैं और उसकी ओछी कामनाओं को छेड़कर ही कोई सुख अनुभव करती हैं, तो आप अपनी सुन्दरता को गंदला करती हैं।"

"आपकी बातें मैं समझ रही हूँ। इनके लिए बहुत कृतज्ञ हूँ। ये बहुत कीमती और विचारणीय बातें हैं।"

"मुझे आप से ऐसी ही आशा थी। अब शायद कल आप के घर आने पर मुझे चाय से भी अधिक कुछ मिलेगा।" युवक ने स्थिर दृष्टि से छाया को देखा।

छाया कुछ सकुचा उठी। "अवश्य मिलेगा। मैं आपकी राह देखूंगी।"

"मुझे जूते पर पालिश तो नहीं करनी पड़ेगी?" वह हंसते हुए बोला।

"जूते पर पालिश करके आप मेरे काम में हाथ बटा सकते थे, पर अब मैं उसमें आपको शामिल नहीं करूंगी।" छाया ने मानों बात सम्हाली।

"कल याद है, कौन सा दिन है?"

"कल—कल बृहस्पतिवार है, क्यों?"

"कल रक्षा-बन्धन का दिन है। मैं लड़कियों को बहिन बनाना बहुत कम पसन्द करता हूँ। यह बहुत नाजुक और सँकरा रिश्ता है। लड़कों लड़कियों, स्त्री-पुरुषों के बीच सब से अच्छा नाता मित्रता का ही है। असली और पूरा नाता तो पति-पत्नी का ही है, लेकिन यह सार्वजनिक नहीं हो सकता। आप मुझे भाई बनाना पसन्द करेंगी? मुझे आपके और अपने बीच यह नाता ही ठीक जंचता है। कल भाई-बहिन का त्यौहार है। मेरे ईसाई होने का तो आपको परहेज नहीं है?"

"बिल्कुल नहीं," छाया ने कहा और काफी देर तक चुप होकर, दृष्टि नीची किये पृथ्वी की ओर देखती रही। फिर उसने आंख उठा कर युवक पर एक स्थिर-सी दृष्टि डाली और उसकी आंखों में आंसू उतर आये।

"मैं आपको राखी बाधूंगी। मेरे अब तक कोई भाई भी नहीं था।" छाया का गला कुछ रुंधा हुआ था। कहते-कहते उसने चलने के लिए खड़ी होकर दोनों हाथ जोड़ दिये।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापिका बच्चों को समझा रही थी कि चोरी करना बहुत बुरी बात है। अपनी बात को और स्पष्ट करने के लिये अध्यापिका ने एक उदाहरण देना चाहा। वह बोली, "यदि मैं किसी पुरुष की कोट की जेब में हाथ डाल कर उसमें से पैसे निकाल लूं, तो बताओ मैं क्या समझी जाऊंगी ?"

"उसकी पत्नी," एक बच्चा चिल्लाया।

* * *

"बताइये तो भला राष्ट्रभाषा को मातृभाषा क्यों कहा जाता ?"

"क्योंकि पिता को इसे उपयोग में लाने का बहुत कम अवसर मिलता है।"

* * *

डाक्टर — कितने कितने समय बाद पीड़ा होती है ?

रोगी — हर पांच मिनट बाद।

डाक्टर — और रहती कब तक है ?

रोगी—पन्द्रह मिनट से कम तो क्या रहती होगी !

* * *

बस-स्टैण्ड पर दो स्त्रियां बस की प्रतीक्षा कर रही थीं। उन में से एक बहुत ही मोटी थी और दूसरी बहुत ही दुबली-पतली। जब बस आई तो वह खचाखच भरी हुई थी और मोटी स्त्री इधर-उधर धकेलती हुई दुबली-पतली स्त्री से पहले उसमें जा सवार हुई। दुबली-पतली स्त्री झल्ला कर बोली, "पता नहीं यह बस वाले मुसाफिरों से उनके वजन के हिसाब से क्यों किराया नहीं लेते !"

"यदि वे वजन के हिसाब से किराया लेने लगें, तो वे तुम्हारे लिये बस को रोकेंगे ही नहीं," मोटी स्त्री ने उत्तर दिया।

* * *

टैलीफोन करना विवाह करने के समान है— इच्छित व्यक्ति कम ही मिलता है !

* * *

स्त्री—(दूकानदार से) मैंने अपने गोपाल को सवा सेर किशमिश लाने को भेजा था और तुमने सेर भर ही भेजी।

दूकानदार— देखिये, मेरा तोल गलत बताने से पहले आप अपने लड़के को तोल कर देखिये।

* * *

अपने तीन महीने के बच्चे के सम्बन्ध में पिता ने गर्व के साथ भविष्यवाणी की, "यह निश्चित बात है कि हमारा मुन्ना बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ बनेना।"

"यह तुमने कैसे अनुमान लगाया ?" बच्चे की मां ने पूछा।

"अरे भई, यह तो स्पष्ट है। इस उम्र का मैंने यह पहला बच्चा देखा है, जिसकी बातें कानों को तो अच्छी लगती हैं, परन्तु उनका अर्थ कुछ नहीं होता !"

* * *

काश्मीर की युद्धबंदी के अवसर पर भारतीय सैनिकों को बधाई देने के लिये एक सार्वजनिक सभा हुई। एक बहुत बड़े नेता भाषण देते हुए बोले. "यह कितनी मार्के की बात है कि हमें काश्मीर के युद्ध में बहुत ही कम हवाई सेना प्रयोग में लानी पड़ी !'

एक दूसरे बड़े नेता बीच ही में बोल पड़े – "और समुद्री बेड़े को तो प्रयोग में लाने का अवसर ही नहीं आया !"

* * *

दांतों के किसी भी डाक्टर के 'वेटिंग रूम' में पड़ी हुई पत्रिकायें संभवतः इस बात की सूचक होती हैं कि वह डाक्टर कितने अर्से से प्रैक्टस कर रहा है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने अपने विचार

इन संकलित विचारों के पक्ष अथवा विपक्ष में 'मनोरंजन' की पाठिकायें अपना मत हमें भेजें। —स०

विवाह

विवाह एक व्यक्तिगत और घरेलू मामला है, जो कि स्त्री-पुरुष, दो पार्टियों से सम्बन्ध रखता है..... मेरा सदैव यह विचार रहा है कि यद्यपि माता-पिता इस विषय में सलाह दे सकते हैं और उन्हें सलाह देनी चाहिये, तथापि लड़के-लड़कियों की पसन्द और अन्तिम निर्णय को, यदि उन्होंने समझ बूझ कर किया है, कार्यान्वित करना चाहिये और यह माता-पिता का कर्त्तव्य नहीं कि अनावश्यक रूप से टांग अड़ायें।

—पं० जवाहरलाल नेहरू

नारी अब भी दास है

भारतीय नारी सांस्कृतिक दृष्टि से तो इतनी पिछड़ी है कि यूरोपीय समाज के मुकाबिले में वह कुछ भी ज्ञान नहीं रखती। आज हमारी बहिनों ने यह समझ लिया है कि रूढ़िगत भावनाओं का कारण भारतीय नारी का रहन-सहन और पहनाव है। इस प्रकार सांस्कृतिक और सुव्यवस्थित विचारों की ओर ध्यान न देकर कितनी ही बहिनें यूरोपीय लिबास को अपनाती जा रही हैं—यहां तक कि उनकी मनोभिलाषाएं और इच्छाएं नारी-समाज की समस्या को फैशन और नकल द्वारा हल करने में लगी हुई हैं। लेकिन इस नकल के द्वारा भारत की करोड़ों नारियों के जीवन पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है और वह जीवन सम्बन्धी विषयों को छोड़ कर अपनी आर्थिक और सामाजिक परिस्थिति के बारे में नहीं सोच पातीं। फलतः वे आर्थिक कठिनाइयों के वशीभूत होकर सामाजिक दृष्टि से पुरुष की गुलाम ही बनी रहती हैं और परिवार का शासक पुरुष अनायास ही बन जाता है।

—श्रीमती सरस्वती गोयनका

सन्तति-निरोध

देश में बढ़ती हुई आबादी को रोकने की दिशा में भी हमें कार्य करना है। निस्सन्देह हमारे यहां पहले-पहल सन्तति-निरोध के साधनों को प्रयुक्त करने का स्वागत न किया जायगा। लेकिन हमें महिला-समाज को बताना होगा कि छोटे-छोटे परिवारों का होना कोई पाप नहीं है। अतएव सन्तति निरोध के साधनों का प्रयोग अधार्मिक अथवा अनैतिक नहीं समझा जाना चाहिए।

—श्रीमती उर्मिला मेहता

स्वावलंबिनी नारी

भारतीय नारियों में नारीत्व तो है, पर वे पुरुषों के भय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से इतनी दबी हैं कि वे परदे के बाहर आने में संकोच करती हैं। जब तक वे पुरुषों से डरती रहेंगी. तब तक वे समाज में उतनी उपयोगी सिद्ध न होंगी, जितना कि पुरुष। अतः यह आवश्यक जान पड़ता है कि रचनात्मक कार्य के लिए स्त्रियां स्वतन्त्र विचार से कार्य करें; तभी वे सफल होकर कुछ कार्य कर सकती हैं। रचनात्मक कार्यों में केवल दफ्तर में कार्य करना या स्कूल की अध्यापिका हो जाना ही नहीं है, वरन् और कई ठोस कार्य भी हैं। क्या स्त्रियां मशीनों के कल-पुर्जे नहीं बना सकतीं? क्या वे नर्स बन कर अपने घायल भाई-बहिनों की सेवा नहीं कर सकतीं? इसके अतिरिक्त स्त्रियों के सामने इन कामों के लिये भी विस्तृत क्षेत्र है—

(१) प्रसूतिका की सेवा करना।

(२) मोटर और अन्य ट्रेनें चलाना

(३) कल-पुर्जे-निर्माण की कला सीखना।

(४) मजदूरों में रह कर उनका शिक्षा, शारीरिक सेवा आदि द्वारा कल्याण करना।

(५) अन्य कार्यों को हृदयंगम करना, जैसे—अभिनेत्री होना, पुस्तकें रचना इत्यादि।

उपर्युक्त कार्यों के अतिरिक्त कितने ऐसे कार्य हैं जो सरलता से किये जा सकते हैं पर भारतीय नारियां शायद अभी ऐसे कार्यों की ओर न बढ़ें। पश्चिमी नारियां वायुयान चालक, जलपोत-चालक होकर अपने अपने देश के कार्यों में पुरुषों का हाथ बँटाती हैं; परन्तु भारतीय नारियां शायद ऐसा करने में अपनी हीनता समझेंगी।

—सुश्री 'कली'

'स्त्री-बुद्धि'

टोने टोटकों और पुरानी कुरीतियों के प्रति अन्धश्रद्धा मैंने पढ़ी-लिखी स्त्रियों में भी देखी है। स्त्रियां अपने को इन निरर्थक आचारों से मुक्त करके घरों की अवस्थाओं में वह शान्त क्रान्ति पैदा कर सकती हैं, जो पुरुष सैकड़ों बिल और कानून बना कर भी नहीं कर सकते।

पुरुष को भी स्त्री के सकरुण स्नेह की हमेशा जरूरत रहती है। पुरुषरूपी मशीन में यह स्नेह मशीन को चलाने वाली शक्ति का काम करता है। स्त्री के

दुःखी स्त्रियों की सहायता के लिये नया कानून

११ फरवरी १९४९ को भारतीय धारासभा ने एक नया बिल पास करके भारतीय दण्ड-विधान की ४८८ वीं धारा में एक महत्वपूर्ण संशोधन किया है। इस संशोधन के अनुसार कोई भी स्त्री अपने उस पति के साथ रहने से इन्कार कर सकती है, जिसने दूसरा विवाह कर लिया हो या रखेल रखी हुई हो। वह स्त्री अलग रहते हुए अपने पति से भरण-पोषण का खर्च लेने की भी अधिकारिणी है।

स्नेह का स्थान पुरुष द्वारा आयोजित कोई भी चीज नहीं ले सकती। अपने स्नेहदान से स्त्री पुरुष का सबसे अन्तिम दुर्ग—उसका आत्म-गर्व भी सहज ही में जीत लेती है। दुनिया के बड़े से बड़े वीर और दार्शनिक लोग स्त्रियों के सामने स्वयं परास्त हुए हैं।

लेकिन स्त्री यह स्नेहदान कर सकती है घर के प्रांगण में ही, ऑफिस की कुर्सी पर बैठ कर नहीं। यह स्नेह का दान स्त्री की अपनी चीज है। यह दान पुरुष द्वारा स्त्री को दी गई चीजों—घर, रुपया, सहारा—की तुलना में बहुत हल्का दिखता है; मगर जो इस दान को पाते हैं वही पुरुष जानते हैं इसकी बड़ाई को। इसी तरह घर की दुनिया बाहर से देखने में छोटी अवश्य लगती है, मगर उसकी गहराई असीमित है।

ऊपर मैंने 'स्त्री-बुद्धि' की बात कही। यह 'स्त्री-बुद्धि' स्त्री की सबसे बड़ी सहायक है। मैं शब्दों में इस बुद्धि का परिचय नहीं दे सकती, क्योंकि यह अनिर्वचनीय है। मगर इसी बुद्धि द्वारा स्त्री अपने को पुरुष के हाथों में सौंप कर जिन्दगी की कशमकश से अपने को बचा लेती है। पुरुष के लिये 'सुखमिति वा दुखमिति' होकर वह अपने लिये आजन्म आश्रय का प्रबन्ध कर लेती है। पति उसके लिये हर क्षण का सहारा ही नहीं, जीवन-बीमा भी बन जाता है। यही 'स्त्री-बुद्धि' स्त्री के पोशाक के चयन, रंगों के चुनाव और वेशभूषा के बनाव में प्रकट होती है।

—श्रीमती रेणुका देवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिशु-पालन

श्रीमती कृष्णा बी० ए०

भारत में अधिकांश मातायें शिशु-पालन संबन्धी सामान्य नियमों से भी अनभिज्ञ होती हैं। वे प्रायः बड़ी-बूढ़ियों की सीख पर चलती हैं और जीवन भर दकियानूसी विचारों में फंसी रहती हैं।

बड़ी-बूढ़ी स्त्रियां कमरे की खिड़की खुली देख कर प्रायः चिल्ला उठती हैं—'खिड़की बंद करो, मुन्ने को हवा लग जायेगी!" यह सब मूर्खता है। ताजा हवा की बच्चे को उतनी ही आवश्यकता है, जितनी किसी भी अन्य प्राणी को। शिशु पालन सम्बन्धी एक मोटा नियम यह है कि बच्चे को कभी भी बंद या धुएं से भरे हुए कमरे में नहीं रखना चाहिये। कमरे की खिड़कियां दिन-रात खुली रहनी चाहियें। हां, सर्दियों में बच्चे का बिस्तर और कपड़े आदि खूब गर्म होने चाहियें।

सोते हुए बच्चे के सिर के नीचे बड़े-बड़े तकिये रखना भी बहुत बड़ी भूल है। बच्चे का सिर थोड़ा-सी ही उठा रहे तो ठीक है। कुछ स्त्रियां परों के बने बड़े-बड़े गुदगुदे तकिये बच्चों के लिये प्रयोग में लाती हैं। यह तकिये बहुत ही हानिकारक हैं। कई बार ऐसा हुआ है कि सोते २ बच्चा उलटा हो गया और गुदगुदे तकिये में मुंह धंस जाने से उसका दम घुट गया। अतः मुलायम परों के बने हुए तकिये इस्तेमाल नहीं करनी चाहियें। बच्चे को सुलाने के सम्बन्ध में एक और बात भी ध्यान देने योग्य है। बच्चे को सीधा चित अथवा पेट के बल न सुला कर सदैव दाईं या बाईं करवट से सुलाना चाहिये। इससे उसे नींद भी अच्छी आती है और खाना-वाना भी पच जाता है। पेट के बल बच्चे को सुलाने से बच्चे का दम घुटने का डर रहता है। बच्चे को अंगूठा चूसने भी नहीं देना चाहिये।

कई मातायें अपने बच्चे को खिलौना-सा बनाये रखती हैं। बार बार उसे उठाती हैं, लुढ़काती हैं और खिलाती हैं। यह बुरी आदत है। बच्चे को सदैव शांत और आराम की अवस्था में रखना चाहिये—विशेषकर उस समय जब कि उसकी आयु छः महीने से कम हो। बच्चा यदि रात को रोने लगे तो तुरंत ही उसके रोने का कारण ढूंढना चाहिये। बच्चे के रोने के तीन कारण हो सकते हैं—या तो अधिक दूध पीने से उसे अपच हो गया है, या वह भूखा है और या उसका बिस्तर गीला हो गया है। बच्चे को सदैव अलग खाट पर सुलाना चाहिये—अपने साथ नहीं।

बच्चे की नींद का बहुत ही खयाल रखना चाहिये। पूरी नींद उसके स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है। दो से पांच वर्ष तक के बच्चों को १३—१४ घंटे अवश्य ही सोना चाहिये। रात के अलावा दिन में भी दोपहर समय बच्चे को कम से कम दो-तीन घंटे अवश्य सोना चाहिये।

सौंदर्य-साधना

तीन उबटन

मुख और शरीर की कांति बढ़ाने के लिये हमारे देशी उबटन विदेशी स्नो-क्रीमों और पाउडरों से कहीं अधिक उपयोगी होते हैं। निम्नलिखित तीन उबटन आजमाने योग्य हैं—

चन्द्रकांता उबटन—हरसिंगार के फूल पानी में भिगो दें। उधर एक छटांक मैदा और एक छटांक गुलरोगन को घोल लें। फिर पानी से निकाल कर फूल उसमें मिला लें। इसका उबटन करने से त्वचा सोने के समान चमकने लगती है।

केसरिया उबटन— सरसों, केसर, हल्दी, गोखरू, मौली, सोंठ, कपूर— प्रत्येक वस्तु दो-दो टङ्क, लाल चन्दन ४ टङ्क, लौंग चिरौंजी १० टङ्क; सबको मिला कर सरसों के तेल के साथ पीस कर उबटन तैयार कर लीजिये और मुंह और शरीर पर मलिये।

काश्मीरी-प्रभा—रात को बादाम की दस गिरियां भिगो दें। सवेरे उन्हें छील कर पीस लें और फिर गुलाबजल में मिला कर शीशी में रख लें। रात को सोते समय इस उबटन को मुख, गर्दन और हाथों पर मलना चाहिये।

—सुशीला देवी प्रभाकर

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोत्तम लिवर, कभी न बन्द होने वाली ऊंचे दर्जे की घड़ियां
सस्ती कीमतों पर ताजा माल आ गया है

ऊंचे दर्जे की ज्यूल्ड, सर्वोत्तम लिवर चाल, बहुत आकर्षक और अप-टू डेट नमूनों की रिस्ट वाच (घड़ियां) प्रत्येक घड़ी की ५ वर्ष की गारंटी है और इसके साथ बहुत अच्छा प्लास्टिक स्ट्रैप। पैकिंग और डाक खर्च मुफ्त।

५। इंच स्त्रियों की विशेष घड़ियें

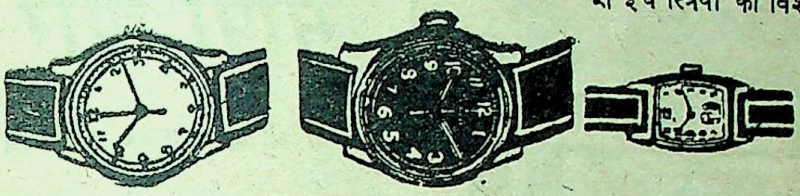

माडल नं० २१०८, १०॥ इंच	माडल नं० २१०६, ६॥। इंच	माडल नं० १५०५
क्रोमियम केस ... १५) रु०		
क्रोमियम केस ७ ज्वेल ३२) रु०	चमकदार क्रोमियम केस ३६) रु०	चमकदार क्रोमियम केस ४८) रु०
सैन्टर सैकिंड ... २५) रु०	चमकदार क्रोमियम १५ ज्वेल ५८) रु०	चमकदार क्रोमियम १५ ज्वेल ६५) रु०
रोल्ड गोल्ड (३० वर्ष गारंटी, ४६ रु०	रोल्ड गोल्ड (१० वर्ष गारंटी) ५२) रु०	रोल्डगोल्ड (१० वर्ष गारंटी) ५२) रु०
रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल ५८) रु०	रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल ७८) रु०	रोल्ड गोल्ड १५ ज्वेल ८५) रु०
शौक और वाटर प्रूफ ८७) रु०		

हमारी घड़ियों के बारे में ताजा राय—श्री मि० सी० एल० गुप्ता आर० आई० ए० एफ० कैन्टीन अम्बाला कैंट लिखते हैं—जो घड़ी आपने मुझे १६४१ में भेजी थी भली प्रकार काम कर रही थी, पिछले साल यात्रा में गुम हो गई, तब से मैं बिना घड़ी के हूँ क्योंकि मैं किसी और जगह से खरीदना नहीं चाहता। आपके नये माल के आने पर मेरे पहले आर्डर के अनुसार कृपया कम से कम दो घड़ियां मुझे भेज दें। तिथि २४-६-४८

स्टाक कम है। शीघ्र आर्डर भेजें ताकि निराश न होना पड़े।

एफ० जी० सप्लाई कम्पनी, ६, डिपटी गंज, सदर बाजार दिल्ली।

रेशमी कपड़ा १) गज

रेशमी कपड़ा एक रुपया गज आपको किसी जगह नहीं मिल सकता। परन्तु हम आपको बाजार से बहुत ही सस्ते भाव पर दे सकते हैं। जो कि आप को कोड़ियों के मूल्य पड़ेगा। अमरीकन सुफैद सिलकी यानी पूरी छतरी १२ कली वाला (जिसमें पूरी १२ कली हैं) बगैर जोड़ के मये रेशमी डोरी के साथ कीमत १२) रु० फी पैराशूट (पूरी छतरी) पैकिंग फ्री महसूल डाक १॥।≡)। इकट्ठे तीन मंगवाने पर महसूल डाक ३॥।≡) रु० आवेगा। आप बतौर नमूना मंगाकर थोक का आर्डर देकर लाभ उठावें। यह माल दूसरे रेशमी सिलकी कपड़ों की निस्बत निहायत उम्दा और रियायती है। पहले इसकी कीमत बहुत ज्यादा थी मगर अब स्टाक को खतम करने के लिये यह रियायती थोक का भाव है। तीन पैराशूट महसूल डाक समेत आपको घर में ३६॥।≡) रु० में पड़ेंगे। जरूर मंगवायें। शीघ्र मंगवा लें। नहीं तो स्टाक खत्म होने पर पछताना पड़ेगा। क्योंकि और माल अमरीका से नहीं आ रहा। आर्डर देते समय अपना नाम पूरा पता साफ-साफ लिखें।

इस्टर्न इम्पोर्ट्स नं० ४५ देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो-भाषण

भाषा और शैली

श्री एस० एच० वात्स्यायन 'अज्ञेय'

★

रेडियो पर बोलने वाले अधिकतर बोलने वाले नहीं, लिखने वाले लोग होते हैं। इसके लिए कुछ तो रेडियो वाले ही दोषी हैं; लेकिन उनसे भी बड़ी भूल करते हैं आमंत्रित लोग, जो इस बात की अनदेखी कर जाते हैं कि उनका माध्यम बदल गया है। रेडियो-भाषण की लिपि तैयार करते समय वे यह बात सामने नहीं रखते कि यह सुनने में कैसा लगेगा। यह सोचते हैं, इसे छपा हुआ पढ़ कर मेरा पाठक या आलोचक क्या कहेगा? यह बड़ी भारी भूल है।

रेडियो-भाषण का सिद्धान्त

मैं प्रतिष्ठित लेखक हूँ, मुझे वह प्रतिष्ठा बनाये रखनी है, यह विचार रेडियो-वक्ता के सामने नहीं रहना चाहिये। मैं रेडियो-वक्ता हूँ, इस नये माध्यम पर मुझे नया अधिकार प्राप्त करना है, यही उसे सोचना चाहिये। पाठक-आलोचक क्या सोचेगा, इसकी चिन्ता उसे नहीं करनी चाहिये। अगर रेडियो सुनते समय वह कान देकर सुनेगा, सुन सकेगा, तो वह कुछ नहीं सोचेगा। सोचेगा वह तब, जब कि सुनने में तकलीफ हो, मन एकाग्र करना एक बड़ी तपस्या हो जाय। सुनने में मन नहीं लगेगा, तब वह अनमना होकर आपकी नहीं सुनेगा, अपनी सोचेगा, और जो सोचेगा वह आपके प्रति बहुत उदार तो नहीं होगा, यह तय है। और एक बार का अनुभव वह भूलेगा नहीं। दुबारा आप बोलने आवेंगे तो सोचेगा—क्या जरूरत है सुनने की, अगर कुछ काम की बात होगी तो छपेगी ही, छपने पर पढ़ लेंगे।

तो भाषा के सम्बन्ध में ध्यान में रखने की सबसे बड़ी बात यही है कि रेडियो-भाषण एक अलग प्रकार का माध्यम है, जिसके अपने नियम हैं। किताब पढ़ते समय हम ऊब जायं तो रख देते हैं, दुबारा देख सकते हैं। पर नाटक देखते समय या तो हम तुरन्त ग्रहण करते हैं, या फिर करते ही नहीं। नाटककार इस बात को भुला नहीं सकता, और इसीलिए नाटक के कथोपकथन पर इतनी मेहनत करता है कि वह सहज, स्वाभाविक, तत्काल ग्रहण हो, कुछ चटकीला और चमत्कारिक भी हो, ताकि ध्यान को पकड़े रहे, भटकने न दे। रेडियो तो नाटक से भी अधिक सतर्कता मांगता है, क्योंकि नाटक में तो हमारी दो इन्द्रियां ग्रहण में हिस्सा बांटती हैं—आंख और कान, और एक की ढिलाई को दूसरी पूरा करती रहती है। हम कुछ देख कर समझ लेते हैं, कुछ सुन कर। लेकिन रेडियो में सब कुछ कान से ग्राह्य है। इसमें एक तरफ आराम भी है कि वह केवल एक शक्ति को अटकाता और बाकी जो चाहे कर सकती हैं। इसीलिए तो हमारे सभ्य समाज में रेडियो चला कर अनसुनी करने का फैशन-सा हो गया है। रेडियो चलता रहता है, और हमारे सब काम भी चलते रहते हैं। लेकिन दूसरी तरफ यह कठिनाई भी है कि हमने कान देने में जरा-सी ढील दिखायी कि खेल चौपट हो गया। ग्रहण-सूत्र टूट गया और रस-लाभ के मार्ग बन्द हो गये। भोजन तक का रस मुंह बन्द करके आंखों से देख कर और नाक से सूंघकर लिया जा सकता है। पर रेडियो सुन कर और केवल सुन कर तृप्तिकर हो सकता है। इसलिए रेडियो-भाषण का पहला सिद्धान्त है—श्रोता के कान पकड़ो, और दूसरा सिद्धान्त है—कान पकड़े रहो, और पकड़े रहो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी स्वाभाविक बोली में बोलिये

इस तथ्य को अच्छी तरह समझ लेने पर भाषा का प्रश्न अपने आप हल हो जाता है हम हिन्दी लिखें कि उर्दू कि हिन्दुस्तानी, यह प्रश्न उठता ही नहीं; क्योंकि प्रश्न लिखने का है नहीं। हम पंडिताई बोलें कि सुल्तानी बोलें, यह सवाल पूछने की हिमाकत कोई करे भी तो जवाब सहज है—आप बोली बोलिये। अगर आप पांडित्य के वातावरण में पले हैं, वही भाषा बोलते आये हैं और बोलते हैं, तो वैसी ही भाषा आपकी स्वाभाविक बोली है, और उसी को बोल कर आप श्रोता से सहज तात्कालिक सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। बल्कि तब आप अपनी बात को आसान कही जाने वाली किसी बोली में अनुवाद करके भी अधिक आसान नहीं बना सकते। वह पढ़ने में आसान हो जायगी, लेकिन आपकी बात ग्रहण करने में हमारी मदद इसलिए नहीं करेगी कि आपके मुंह से यह सहज स्वाभाविक नहीं लगेगी। कान सहज ही पहचान लेते हैं कि यह नकली भाषा है और अनसुनी करने लग जाते हैं। कानों को इस मामले में धोखा देना असम्भव है।

लेकिन, अगर आप सीधी-सादी हिन्दी बोलने के आदी हैं, और वैसी सहज भाषा ही आपके मुंह से स्वभावतः झरती है, तब अपनी लेखनी की प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए या अपने पांडित्य की धाक जमाने के लिए, आप उससे तनिक भी इधर-उधर जावेंगे तो पकड़े जायंगे। श्रोता तुरन्त कहेगा, 'उँह, छपेगी तो पढ़ लेंगे।' और रेडियो के बटन घुमा कर कोई बेवकूफाना फिल्मी गीत लगा देगा, सुने चाहे उसको भी नहीं। और इससे आप यह न समझ लें कि

लेखक

वह मूर्ख है या कि आपके विषय में दिलचस्पी नहीं रखता। वह ऐसा इसलिए करेगा कि वह ताड़ जायेगा, उससे कोई आदमी नहीं, किताब बात कर रही है। किताब की बात आपके मुंह से या आपके सुर से रेडियो के मुंह से वह क्यों सुने? वह सीधे किताब से ही सुन लेगा। आपकी दलाली की उसे जरूरत नहीं है।

रेडियो-वक्ता का भी सम्मान हो

यह न समझा जाय कि यह कह कर मैं शैली की अवहेलना कर रहा हूँ। कदापि नहीं। बल्कि मैं उस शैली का समर्थन कर रहा हूँ, जिसमें आप अपना पूरा व्यक्तित्व डाल सकते हैं, जिसे सच्चे अर्थ में अपनी शैली बना सकते हैं। शैली केवल लिखने की नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, बात कहने की भी है। यह ठीक है कि जो छपने के लिए लिखा जाता है, उसके लिए रेडियो के बाद भी ग्राहक मिलते हैं और जो केवल बोलने के लिए लिखा जाय, उसके लिए ऐसा नहीं हो सकता है। पर इस भेद को मिटाने के लिए रेडियो-विभाग शायद कुछ कर सकता है और उसके लिए उसी को बाध्य करना चाहिये, ताकि जनता तक पहुँचने के लिये एक महत्त्वपूर्ण साधन का दुरुपयोग न हो, और आत्माभिव्यक्ति के एक नये माध्यम से भरपूर लाभ उठाया जा सके। मेरी तो यह धारणा है कि अगर हम कला के माध्यम के रूप में रेडियो की विशेषताओं का ठीक-ठीक अध्ययन करें और उसका समुचित उपयोग करने लगें, तो हम उस शैथिल्य को भी दूर कर सकते हैं, जो कि सरकारी एकाधिकार में पलने वाली कला-संस्थाओं में होता ही है। अभी तक लेखक बोलने के लिए बुलाये जाते हैं, क्योंकि उनकी बनी-बनाई प्रतिष्ठा है, और उनके नाम के आकर्षण का फायदा उठाया जा सकता है। लेकिन ऐसा भी हो सकता है, और होना चाहिये कि रेडियो-वक्ता का उसी रूप में एक अलग स्थान हो, वह अपने भाषणों के लिए ही सम्मान पाए। इसमें रेडियो को भी उद्योग करना होगा, और वह उद्योग अभी किया नहीं गया, क्योंकि सरकारी संस्था की मर्यादाएं होती हैं, जिन्हें हम कुछ ज्यादा महत्त्व भी देते आये हैं। पर भविष्य में वह नई प्रतिभाओं के निर्माण में हाथ बँटायेगा, ऐसी आशा हम कर सकते हैं, और आशा की पूर्ति के लिए उद्योग भी कर सकते हैं।

—अधिकार से

कलाकी पुरानी चीजोंकी हिफाजत के लिये तो आप तत्पर हैं, मगर घर की सजीव कला नारी आप की लापरवाही के चलते अनेक रोगोंसे भुगतती रहती है। आप अभी भी चेत जायें। स्त्रियोंके प्रदर, मासिक की गड़बड़ी, बन्ध्यापन आदि कठिनसे कठिन रोगों के इलाज में भारत-विख्यात श्रीमती चमेली देवीको एक पत्र लिख कर रोगका मुफ्त निदान करायें। आपको अवश्य संतोष होगा।

पत्र व्यवहार गुप्त रहता है

यहां सभी दवायें मिलेंगी

श्रीमती चमेली देवी
संचालिका
हरिदास एण्ड कम्पनी लि. मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५०००) मुफ्त इनाम !

अमृतसर में सोना २॥) तोला !

जो कोई नीचे लिखी बातों को झूठा साबित करेगा उसको पांच हजार रुपया मुफ़्त दिया जावेगा।

जिस घर में यह सोना गया वहां से दोबारा तिबारा फरमाइश आई। जनाब बा० ब्रह्मानन्द गत मैनेजर तेज नया बाजार, देहली से लिखते हैं कि आपका (लण्डन) न्यू गोल्ड का पार्सल मिला धन्यवाद ! यह देखकर खुशी हुई कि न्यू गोल्ड और असली सोने में कोई फर्क नहीं। आपने इस नई चीज को तैयार करके दुनियां की एक भारी जरूरत को पूरा किया है। ६ तोला सोना वापसी डाक से और भेज दो बाद में और भी आर्डर दिया जावेगा।

यह सोना कसौटी पर असली सोने का रङ्ग देता है असली सोने की तरह कूटा और पिघलाया जा सकता है। हर किस्म के जेवरात बनाये जा सकते हैं जिन को होशियार से होशियार सराफ भी मुश्किल से पहिचान सकता है। मशहूरी करने के लिये मूल्य फी तोला केवल २॥) रु० ३ तोला का मूल्य ७) रु०, ६ तोला १३) रु०, १५ तोला ३०) रु०, ४० तोला ७०) रु०।

जरूरी नोटः—माल पसन्द ना होने पर मूल्य शीघ्र वापस कर दिया जाता है। आर्डर देते समय अपना पता साफ-साफ लिखें। जल्दी करें क्योंकि मांग ज्यादा होने के कारण आपको मायूस न होना पड़े।

प्रधान कार्यालय पी. बी. ७५ (M. R. D.) अमृतसर।

---

५००) इनाम

(गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड)

सिद्ध वशीकरण यन्त्र। इसके धारण करने से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। आप जिसे चाहते हैं, चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो, आपके साथ चली आवेगी। इससे भाग्योदय, नौकरी, धन की प्राप्ति, मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होना है। मूल्य २), चाँदी का ३); सोने का १२)।

हमारे यन्त्र से अच्छा दूसरा कोई यन्त्र साबित करने पर ५००) इनाम।

मोहनी भण्डार रजिस्टर्ड ( ) देहली।

१०,०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

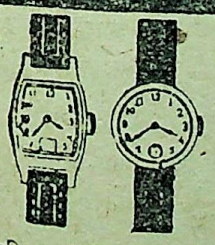

हमारे प्रसिद्ध 'काला तेल रजिस्टर्ड' के सेवन करने से बाल हमेशा के लिये काले होजाते हैं और फिर जीवनभर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुये बालों को रोकता है और उनको लम्बे, घूंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहाँ बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आँखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठण्डक पहुँचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैन्सी स्यूट रिस्टवाच जो कि अतिसुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यूगोल्ड) बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापिस करदी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाकखर्च बिल्कुल माफ़ और चार बार अंगूठी लन्दन न्यू गोल्ड और चार घड़ियां बिल्कुल मुफ्त दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ़ लिखें।

जनरल नोवल्टी स्टोर्स (एम. एच.), दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

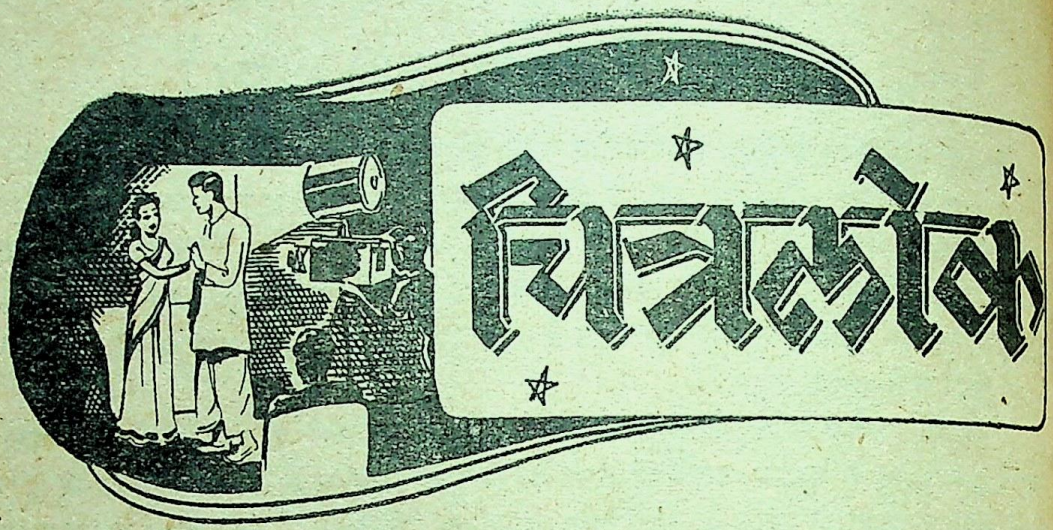

हमारी फिल्मों का निर्देशन और कथानक

★ मेरी कहानी ★ नई रीत ★ साजन का घर

श्री हरिश्चन्द्र

आजकल अधिकांश भारतीय फिल्म निर्माता फिल्मों का निर्माण करते हुए अपनी जिस व्यापक प्रवृत्ति का परिचय दे रहे हैं, यदि उसकी दो शब्दों में व्याख्या करनी हो, तो हिन्दी की इस कहावत का निस्संकोच प्रयोग किया जा सकता है—'कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा।' यह सही है कि फिल्मी कहानियों की टैक्नीक सामान्य कहानियों से सर्वथा भिन्न होती है और दर्शकों के मनोरंजन का ध्यान रखते हुए उनमें ऐसे स्थल भी रखने पड़ते हैं, जो कुछ अस्वाभाविक भी कहे जा सकते हैं। किन्तु हमारे निर्माता गण कथावस्तु की ओर से प्रायः उदासीन हो गये प्रतीत होते हैं और उन्होंने इस सिद्धान्त को पकड़ लिया दीखता है कि उनकी फिल्मों की कहानियां कहानी-कला की कसौटी पर भले ही खरी न उतरें, वे अपनी फिल्मों में यथाशक्ति उन सब दृश्यों तथा अन्य विशेषताओं का अवश्य समावेश करने का प्रयत्न करेंगे, जिनके कारण कुछ पूर्व-निर्मित फिल्में आर्थिक दृष्टि से सफल हो चुकी हैं। उनकी इस प्रवृत्ति के कारण ही ९० प्रतिशत से अधिक ऐसी फिल्में देखने में आती हैं, जिनके न केवल कथानक ही एक-दूसरे से मिलते-जुलते होते हैं, जिनके गीतों तक में एक दूसरे की नकल की जाती है।

बहरहाल, जिन कुछेक फिल्मों में अच्छी कहानी देखने को मिलती हैं उनमें भी परस्पर बहुत कुछ साम्य होता है। उदाहरण के लिए आप, इस मास सिजन में प्रदर्शित तीन सामाजिक चित्रों—'मेरी कहानी' 'नई रीत' और साजन का घर' को लीजिये। 'मेरी कहानी' और 'नई रीत' दोनों चित्रों की नायिकाएं ग्रामीण कन्यायें हैं। दोनों के पति उच्चकुल के शिक्षित और आधुनिक विचारों के हैं। वे अपनी इच्छा से और बिना किसी विरोध के ग्रामीण कन्याओं से विवाह करते हैं; किन्तु प्रथम सन्तान होने के कुछ दिन बाद ही दोनों नायिकाओं को दूसरी स्त्रियों के कारण अपने बच्चे को अपने पतियों के पास छोड़ कर घर से निकल जाना पड़ता है। निर्माता ने पहली फिल्म को सुखान्त दिखलाने के लिए अन्त में पति और पत्नी का मिलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करा दिया है, जबकि दूसरी फिल्म को दुःखान्त दिखलाने, अथवा यूं कहिये कि पत्नी को इस लोक एवं परलोक तक में जीवन-साथी मानने वाले भारतीयों को हृदय-परिवर्तन के कारण पहली पत्नी का परित्याग कर अन्य स्त्री का वरण कर लेने का मार्ग दिखलाने के लिए निर्माता ने कहानी को वहीं समाप्त कर डाला है, जहां पहली पत्नी को अन्य स्त्री के घर में प्रवेश करते ही पति-गृह से निकल जाने को विवश किया जाता है।

'साजन का घर' फिल्म की कहानी उपर्युक्त दोनों फिल्मों की कहानियों से भिन्न है और शायद यह पहली फिल्म है, जिसमें नायिका को आरम्भ में ही मार दिया गया है। प्रायः नायिका—शून्य होते हुए भी इस फिल्म की कहानी की मनोरंजकता में कमी नहीं आने पाई है; अपितु वह अधिक स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक हो गई है। तथापि नये, सुन्दर और मनोवैज्ञानिक कथानक को लेकर भी निर्देशक उसका फिल्मीकरण करने में पूर्णतः सफल नहीं हुआ है और यह चीज इस बात का प्रमाण है कि जहां एक सामान्य कथानक को लेकर एक अच्छा निर्देशक 'सुहाग रात' जैसा उत्कृष्ट चित्र प्रस्तुत कर सकता है, वहां एक सुन्दर कथानक भी अकुशल हाथों में आने पर दर्शकों पर अपना पूरा

'नई रीत' में गीताबाली

'नई रीत' में सुलोचना चटर्जी

प्रभाव नहीं डाल पाता। यदि किसी अच्छे संवाद-लेखक के सहयोग से कोई अन्य अच्छा निर्देशक इसी कथानक के आधार पर फिल्म का निर्माण करता, तो निश्चय ही उस में वे त्रुटियां न रहतीं, जिन्होंने कहानी के सौन्दर्य की तो हत्या कर ही दी है, समूची फिल्म को प्रभावोत्पादक भी नहीं बनने दिया।

यही बात 'नई रीत' और विशेषतः 'मेरी कहानी' फिल्म पर भी लागू होती है। 'मेरी कहानी' का कथानक अत्यन्त सामान्य है और उसे प्रदर्शित करते हुए निर्देशक महोदय ने स्पष्टतः अनेक स्थलों पर अपनी अनुकरण-प्रियता का भी परिचय दिया है; तथापि इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि फिल्म का उत्तरार्ध काफी हृदयस्पर्शी है और उसी के सहारे सारी फिल्म टिकी हुई है। यदि निर्देशक हल्केपन से न चलता, और सुरेन्द्र व मुनव्वर सुलताना जैसे अनुभवी कलाकारों के सहयोग का उचित लाभ उठाने का प्रयत्न करता, तो सम्पूर्ण फिल्म हृदयस्पर्शी और मनोरंजक होने के साथ साथ कला की दृष्टि से भी ऊंची उठ जाती। किन्तु हमारे अधिकांश निर्देशकों को यह सब सोचने की या तो फुर्सत नहीं अथवा

CC-0. In Public Domain. G

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें यह भी मालूम नहीं कि अच्छी कहानी किसे कहते हैं, अभिनय किसे कहते हैं और फिल्म को किस प्रकार आरम्भ करके उसे विकसित किया जाता है। जिस प्रकार अप्रैल १९४४ में बम्बई बन्दरगाह में हुए विस्फोट से लेकर अगस्त १९४७ में भारत के विभाजन तक की घटनाओं की पृष्ठभूमि में फिल्म तैयार करते हुए भी 'साजन का घर' फिल्म में निर्देशक कहानी के अनुरूप वातावरण स्थापित करने में पूर्णतः असफल रहा, उसी प्रकार 'मेरी कहानी' में भी निर्देशक अपनी योग्यता का कोई परिचय नहीं दे सका है। इसके विपरीत, चित्र के पूर्वार्ध में अधिकांश कृत्रिम अभिनय, भूडो आडवानी का बेहूदा मजाक और अन्तिम दृश्य में सूर्य को चित्रित करने वाला रंगमंच वाला स्पष्ट पर्दा उसकी निर्देशन-बुद्धि की अपरिपक्वता को भली प्रकार प्रकट कर देता है। नायिका के मुख से एक नहीं, अनेक गीत गवा कर भी उसकी अपेक्षा खलनायिका के प्लेबैक में अच्छी गायिका को रख कर उसने एक ऐसी भयंकर भूल कर डाली है, जिसने चित्र की नायिका का महत्व तो कम किया ही, साथ ही उस अभिनेत्री की ख्याति को भी गहरा आघात पहुँचाया है।

'नई रीत' के निर्देशन के विषय में मुझे विशेष कुछ नहीं कहना। इस फिल्म के निर्देशक का यह सम्भवतः प्रथम प्रयास है और इस दृष्टि से उसके इस प्रयास को पर्याप्त सफल कहा जा सकता है। किन्तु इस फिल्म में जिस समस्या को छेड़ा गया है, और उसका जो 'आदर्श हल' उपस्थित किया गया है, उसका किसी भी रूप में समर्थन नहीं किया जा सकता। क्या निर्देशक महोदय इस फिल्म द्वारा अपने दर्शकों से यह कहना चाहते हैं कि यदि उनमें से किसी का किसी भी कारणवश अपनी पत्नी से मन फिर जाये, और उनके जीवन में कोई अन्य स्त्री आ जाये, तो वह अपनी पत्नी का परित्याग कर दूसरी स्त्री को अपने घर में स्थान दे दे? भारतीय पार्लमेंट में तलाक-बिल का समर्थन करने वाले भी शायद तलाक का इस रूप में कभी समर्थन नहीं करेंगे। और फिर इसमें स्त्री का दोष ही क्या है? क्यों नहीं शिक्षित युवक पहले ही किसी अशिक्षिता से विवाह करने से इन्कार कर देता? शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए इस देश में फिल्मों द्वारा इस प्रकार के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देना अनुचित तो है ही, भ्रष्टाचार को भी फैलाने वाला है।

हां, जहां तक अभिनय का सम्बन्ध है, सुलोचना चटर्जी का अभिनय इस चित्र में सर्वोत्तम हुआ है और उसके प्लेबैक-गीत भी सुन्दर हैं। किन्तु इस फिल्म में गीता बाली के साथ भी ठीक वैसा ही अन्याय हुआ है, जैसा कि मुनव्वर सुलताना के साथ 'मेरी कहानी' में। यद्यपि गीता बाली एक आधुनिक युवती के रूप में भी उतनी ही आकर्षक दीख पड़ती है, जितनी कि 'सुहाग रात' में एक ग्रामीण बाला के रूप में; किन्तु उस चित्र में एकबारगी संसार की श्रेष्ठ अभिनेत्रियों की पंक्ति में आ बैठने वाली इस अभिनेत्री को इस फिल्म में ऊंचा उठने का कोई अवसर नहीं दिया गया है।

★

वीरांगना

प्यारी बहिनों की भलाई के लिये

जो बहिनें सन्तान की अधिकता अथवा पति की स्वार्थपरता अथवा किसी अन्य कारणवश युवावस्था में ही बुढ़ापा तथा सौंदर्य-विहीनता का अनुभव करने लगी हों। जो प्रदर (लिकोरिया) के रोग में ग्रस्त हों और जीवन भार रूप अनुभव कर रही हों अथवा जिनका मासिक-धर्म समय पर न आता हो या कष्ट से आता हो। कमर में दर्द, आंखों के आगे अँधेरा व संतान न होती हो, गर्भपात हो जाता हो तो ऐसी दशा में 'वीरांगना' सेवन करें। वीरांगना आपके स्वास्थ्य और सौन्दर्य की रक्षा करेगी व आपको सचमुच वीरांगना बना देगी। हजारों बहिनें इसका सेवन कर अपनी बीती यौवनावस्था को पुनः प्राप्त कर चुकी हैं। दाम ११) मात्र।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी, हरिद्वार।

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

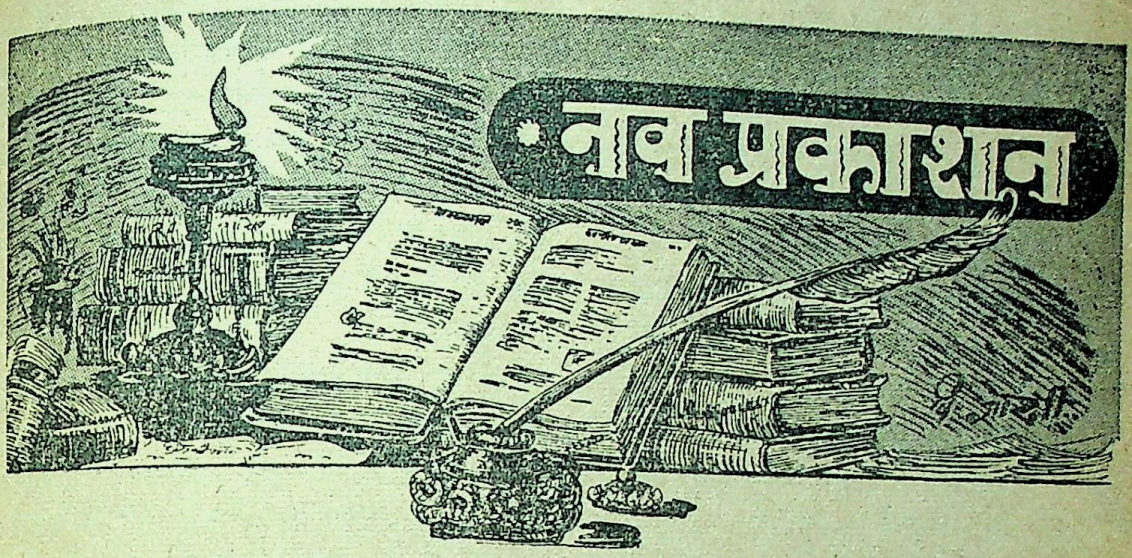

आदिम युग (नाटक संग्रह) लेखक—श्री उदयशङ्कर भट्ट; प्रकाशक—आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली; मूल्य ३) रु० ।

श्री उदयशङ्कर भट्ट हिन्दी के उन चार-पांच गिने-चुने नाटककारों में से हैं, जिनकी सतत साधना के कारण ही हिन्दी का आधुनिक नाट्य-साहित्य समृद्ध और गौरवपूर्ण दिखाई देता है। अतः यह स्वाभाविक है कि उनकी प्रत्येक नई कृति नाट्य-साहित्य के प्रगति-चिह्न के रूप में सामने आती है। नाटककार के रूप में भट्ट जी में कुछेक ऐसी विशेषतायें हैं जो उन्हें अनायास ही प्रमुखता और विशिष्टता प्रदान करती हैं। भट्ट जी की सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि वे नाटककार होने के साथ-साथ कवि भी हैं—ऐसे कवि जो हवा में नहीं उड़ते, वरन् तत्व-द्रष्टा के रूप में जीवन की गहराई में उतरते हैं और दूर तक देख सकते हैं। उनकी दूसरी विशेषता यह है कि वैदिक और पौराणिक साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित होने के कारण वे विशुद्ध भारतीय सांस्कृतिक दृष्टिकोण रखते हैं। नाटककार के रूप में उनकी तीसरी विशेषता यह है कि उनके नाटक कृत्रिम और क्षणिक नशे वाली विलायती शराब का तीखा घूंट न होकर भारतीय जीवन की चन्द्रकिरणों से प्रसूत वह सोमरस हैं, जिसका नशा गुलाबी-सा, सुखद और चिरस्थायी होता है—स्वास्थ्य के लिये हितकर। आलोच्य संग्रह के चारों नाटकों में भट्ट जी की ये तीनों विशेषतायें विद्यमान हैं और इसी दृष्टि से इन पर विचार भी होना चाहिये।

इन नाटकों का साहित्यिक महत्व तो है ही, परन्तु इससे भी अधिक इनका ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व है। हमारे अतीत में हमारे जातीय गौरव और समस्त मानवता के गौरव की कहानी छिपी हुई है। वही तिमिरावृत-विस्मृत अतीत इन नाटकों का विषय है। पहिले नाटक 'आदिम युग' में ऐहिक सृष्टि और मानवता के जन्य की कहानी दी गई है। यह कहानी कपोल-कल्पना न होकर भारतीय ज्ञान-विज्ञान की खोजों पर आधारित है। दूसरे नाटक 'प्रथम विवाह' में प्रारम्भिक आर्य संस्कृति का एक कौतूहल-जनक चित्र है। इसके प्रमुख पात्र काद्रवेय और काद्रवेयी हमारे सामने संसार के सब से भोले, निरीह और सच्चे मनुष्यों का उदाहरण उपस्थित करते हैं। तीसरे नाटक 'मनु और मानव' में जल-प्लावन के पश्चात् आर्य संस्कृति के विकास और सामाजिक-संगठन का ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण चित्र दिया गया है। वैवस्वत मनु इस नाटक के प्रधान पात्र हैं, जिनके हाथों भारतीय संस्कृति के भव्य भवन का विधिवत् शिलान्यास हुआ था। मेरी सम्मति में इस संग्रह का यह

समालोचना के लिये प्रत्येक पुस्तक अथवा पत्र-पत्रिका की दो प्रतियां आनी चाहियें। —सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वश्रेष्ठ नाटक है। भारतीय इतिहास के विद्यार्थियों में इसका विशेष प्रचार होना चाहिये। चौथा नाटक 'कुमार सम्भव' महाकवि कालिदास और सम्राट चन्द्रगुप्त से सम्बद्ध है। इसमें नाटकीय कौशल के साथ-साथ काव्योत्कर्ष भी है। कुल मिला कर चारों नाटकों में हमें मानवता के जन्म, विकास और वैभव की झांकी मिलती है। या यों कहिये कि ये मानवता के तीन विराट युगों के सांस्कृतिक चित्र हैं। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भारतीय जनता में अपनी प्राचीन संस्कृति के लिये जो एक जिज्ञासा उत्पन्न हुई है, उसकी परितृप्ति और सन्तुष्टि के लिये ये नाटक यथेष्ट सहायक सिद्ध होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

★

हड़ताल—(उपन्यास) लेखक—श्री हेमचन्द्र 'सुमन'; प्रकाशक—राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, दिल्ली; मूल्य ४॥) रु०।

देश भर में आज हड़तालों की जो धूम मची हुई है, उसे देखते हुए आलोच्य उपन्यास का प्रकाशन सामयिक ही समझना चाहिये। लेखक ने इसे सामयिक बनाने का प्रयत्न भी किया है। पुस्तक के प्रारंभ में उसने लिखा है—"इसका आधे से अधिक भाग मैंने सन् ४२ के अन्दोलन के दिनों में नजरबंदी के समय लिखा था, शेषांश उसके उपरान्त। इसे पूर्णरूप से अद्यतन बनाने का भरपूर प्रयत्न मैंने किया है।" १९४२ की कहानी को १९४८-४९ के वातावरण और परिस्थितियों में 'फिट' करना दुःसाध्य कार्य है—इस लिये कि तब की और आज की मजदूर-समस्या में काफी अंतर है। आज कोई भी मिल मालिक तीन महीने तक मजदूरों का वेतन नहीं रोक सकता और फिर आज हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न भी कहां है? खैर संक्षेप में उपन्यास का कथानक यह है—कानपुर का मिलमालिक रायबहादुर भानामल मजदूरों का वेतन दबा लेता है और उनके साथ दुर्व्यवहार करता है। मजदूरों का नेता राधे कैद कर दिया जाता है। तंग आकर मिल के मजदूर हड़ताल कर देते हैं। सेठ भानामल का अपना इकलौता लड़का शेखर मजदूरों का पक्ष लेता है। मजदूरों के नेता राधे की लड़की कामिनी से उसका प्रेम हो जाता है। सेठ भानामल मजदूर-समस्या को साम्प्रदायिक रूप दे देता है; परन्तु अन्त में उसके पापों का भण्डाफोड़ होता है। उसकी मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी शेखर मजदूरों की सभी मांगें स्वीकार कर लेता है और कामिनी से उसका विवाह होता है।

वर्ग-संघर्ष के विषय को लेकर हिंदी में अब तक कई और उपन्यास भी लिखे गये हैं, परन्तु अधिकतर में यथातथ्य कहानी न कह कर पार्टी अथवा दलविशेष का प्रोपेगण्डा ही किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास इस दोष से मुक्त है। श्री सुमन जी मुख्यतया कवि हैं—हृदयवादी कवि। अतः कथा का सूत्रधार उनका मस्तिष्क नहीं, हृदय है। उपन्यास में टैकनीक और चरित्र-चित्रण की कहीं कहीं त्रुटियां जरूर हैं; परन्तु वे विचारणीय नहीं हैं, इस लिये कि यह लेखक का पहला उपन्यास है और इस लिये भी कि त्रुटियों की अपेक्षा खूबियां कहीं अधिक हैं। उपन्यास निश्चय ही रोचक है और पठनीय है।

★

रति-विलाप—(भाव-नाट्य) लेखक—श्री विराज; प्रकाशक—पुस्तक-संसार, ७ बी० कोल्हापुर हाउस, सब्जी मण्डी, दिल्ली; मूल्य १॥) रु०।

प्रस्तुत नाटक महाकवि कालिदास की अमरकृति 'कुमारसंभव' के चौथे सर्ग में वर्णित काम-दहन के चिर-परिचित प्रसंग को पृष्ठभूमि बना कर पद्य में रचा गया है। कामदेव-भार्या रति के विलाप और योगिराज महादेव के मानसिक द्वन्द्व का लेखक ने सुन्दर तथा हृदयग्राही चित्रण किया है। पुस्तक का अनूदित अंश तो और भी सुन्दर है।

'प्राक्कथन' में श्री बच्चन ने इस नाटक को जो गीति-नाट्य बताया है, वह गलत है। कथोपकथन पद्य में होने से ही कोई रचना गीति-नाट्य नहीं बन जाती। उस के लिये संगीतमय वातावरण और गीतों का होना आवश्यक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, जो इस नाटक में नहीं हैं। विषय-प्रतिपादन की दृष्टि से इसे हम भाव-नाट्य या 'फैंटेसी' कह सकते हैं और इस रूप में यह सफल भी समझा जा सकता है। कुछ फर्मों को छोड़ कर पुस्तक की छपाई सुन्दर है। आवरण का तिरंगा चित्र तो बहुत ही सुन्दर है।

★

हिंदी की पत्र-पत्रिकायें—(परिचय-पुस्तक) सम्पादक—सर्वश्री अखिल विनय और गीण्डाराम वर्मा 'चंचल'; प्रकाशक—हिंदी साहित्य समिति, बिड़ला कॉलेज, पिलानी (जयपुर); मूल्य ३॥) रु०।

प्रस्तुत पुस्तक कई दृष्टियों से हिन्दी में एक महत्व-पूर्ण प्रकाशन है। हिन्दी में कदाचित् यह पहली पुस्तक है जिसमें अंग्रेजी की डायरेक्टरियों के ढंग पर हिन्दी में छपने वाले सब प्रकार के लगभग ८०० पत्र और पत्रिकाओं का नीति व विषय-क्रम से विभिन्न श्रेणियों व वर्गों में विभाजित करके व्योरेवार व्यापक परिचय दिया गया है। पुस्तक हर तरह से सम्पादक-द्वय के परिश्रम, सूझ और निष्पक्ष दृष्टिकोण की परि-चायक है। आरंभ में हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् श्री कन्हैयालाल सहल ने हिन्दीपत्रकारिता के सवा सौ साल के इतिहास की बड़े ही गवेषणापूर्ण ढंग से विवेचना की है, जिसने पुस्तक की महत्ता और भी बढ़ा दी है। यह निर्विवाद है कि यह पुस्तक एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति करती है। हिन्दी प्रेमियों व पत्र-प्रकाशकों के अतिरिक्त विज्ञापनदाता व्यापारी लोग भी इस से लाभ उठा सकते हैं।

—चिरंजीत

★

केवल छः घण्टों में

हमारी ड्राई क्लीन की श्रेष्ठ मशीनों के द्वारा आपके गरम कपड़े केवल ६ घण्टों में ड्राई क्लीन व स्टीम प्रेस होकर आपको तय्यार मिल सकते हैं। अर्थात् जो कपड़े आप पुबह ११ बजे तक हमारे कनाट प्लेस शो रूम में पहुँचा देंगे वे आपको शाम के पांच बजे तक तय्यार मिलेंगे। दरों में किसी तरह की वृद्धि नहीं की गई। हम कम से कम समय में बढ़िया से बढ़िया काम की गारण्टी देते हैं।

स्नो व्हाइट

गरम कपड़ों की ड्राई क्लीन का श्रेष्ठ कारखाना

कनाट प्लेस व **चांदनी चौक**

नई दिल्ली दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास

(पृष्ठ १२ का शेष)

हो। पीछे से तो वे सब बातें उनके लिये स्वाभाविक-सी बन गईं। उनका प्रत्येक व्याख्यान व्याख्यान-कला का एक सुन्दर पाठ होता था। मैंने दिल्ली के हिन्दू महासभा के अधिवेशन में उनका एक ऐसा भाषण भी सुना था, जिसमें लगभग १० मिनिट में कम से कम दस बार श्रोताओं ने करतल-ध्वनि और जयकारों द्वारा उनके वाक्यों से सहमति प्रकट की। वे बोले भी १० मिनिट तक ही थे। जब वे अपने पूरे भाषण के मूड में होते थे, तब वे श्रोताओं को अपने साथ पूरी तरह बहा ले जाते थे।

इसका यह अभिप्राय न समझ लेना चाहिये कि उनके सब भाषण एक ही पाये के होते थे। वे भावुकता-प्रधान वक्ता थे। जहां केवल तार्किक-विचार हो या अंकों की गणनाओं का प्रश्न हो, वहां वे दूसरों के लिये स्थान छोड़ देते थे। यदि बोलते थे तो बहुत थोड़ा। असेम्बली के सदस्य की हैसियत से उन्होंने जो कार्य किया, उसमें भाषणों का अंश बहुत थोड़ा था।

क्रमशः

सन्तान निरोधक औषधि

यदि औरतों की बीमारी या कमजोरी या किसी ऐसी ही वजह से बच्चे पैदा करना नहीं चाहते हों, तो यह 'वन्ध्याकारक दवा' मंगा कर केवल ५ दिन सेवन करावें। इससे सन्तान निरोध हो जायगा। दाम ४) डाक खर्च ।।)। इस दवा से हजारों औरतें फायदा उठा चुकी हैं। यह दवा औरतों को कोई नुकसान नहीं करती।

रुका हुआ मासिक धर्म

हर प्रकार के बन्द मासिक को फौरन खोल कर साफ करने की दवा ७।।) डा० ।।)

खबरदार! गर्भवती स्त्री इसको इस्तेमाल न करें

पता—

चपलादेवी दवाखाना, चपला भवन,

नं० २५ मथुरा।

अब और प्रतीक्षा की आवश्यकता नहीं

"राम राज्य" और "भरत मिलाप"

का उत्तराधिकारी

प्रकाश पिक्चर्स

का नवीन चित्र

पवित्र रामायण का एक और स्वर्ण-पृष्ठ

राम बाण

कलाकार—

प्रेम अदीब, शोभनासमर्थ, उमाकान्त, रामसिंह, लीला मिश्रा, अमीर कर्नाटकी और—

रावण की भूमिका में 'चन्द्रमोहन'

निर्देशक : **विजय भट्ट**

कला—कनु देसाई

शानदार उद्घाटन—शुक्र २५ फरवरी

मिनर्वा-रीगल-इम्पीरियल

में एक साथ

—देसाई कम्पनी द्वारा प्रचारित—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली आई ! होली आई !

श्री ईशकुमार

रामू ने यह बात विचारी,
होली आई प्यारी प्यारी,
लेकर अपनी टोली सारी,
भर-भर कर रँग की पिचकारी,
क्यों न भिगो दूँ भाभी जी को,
मैं देवर हूँ, वह भौजाई।
होली आई। होली आई।

रंग-गुलाल लिये है कोई,
मले हाथ किये है कोई,
अनाफूसी करता कोई,
चोरी से पग धरता कोई,
किया इशारा जब रामू ने,
पण्डित जी की आफत आई।
होली आई। होली आई।

कोई काला, कोई पीला,
कोई लाल हरा औ' नीला,
जिसको देखो वह ही गीला,
कैसा यह त्योहार रँगीला।
बाग - बगीचे, धरती - अम्बर,
सब में है रंगीनी छाई।
होली आई। होली आई।

कोई गाता फाग सुहाना,
कोई मस्ती में ना-ना-ना,
हनूमान-सा सब का बाना,
लूला, लँगड़ा, अंधा, काना,
सब के मुंह पर यही तराना,
होली आई, होली आई।
होली आई, होली आई।

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

कंजूस मुन्शी जी

श्री अशोक

एक थे मुन्शी जी—अव्वल दर्जे के कंजूस। अपने पैसों से कभी कोई चीज न खरीदते। यहां तक कि आटा, दाल, सब्जी आदि भी अपने पैसों का न लाते। उनकी पत्नी किसी न किसी बहाने से दूसरों के घरों से आटा-दाल मांग लाती और मुन्शी जी को रोटी बना कर खिलाती।

होली का त्योहार आया। अबीर गुलाल उड़ने लगा। घर-घर पकवान पकने लगे। उनकी सुगन्ध मुन्शी जी के घर में भी पहुँची। मुन्शी जी अपनी पत्नी से बोले, "आज तो घी के नमकीन परांठे खाने की बहुत इच्छा हो रही है। जा किसी के यहां से आटा, घी, नमक-मिर्च आदि माँग कर ले आ।"

परांठों का नाम सुन कर मुन्शी जी की पत्नी के मुँह में भी पानी भर आया। वह उसी समय पड़ोसिनों के पास चल दी। आटा और नमक-मिर्च तो उसे अपनी पड़ोसिनों से मिल गया, पर घी किसी भी पड़ोसिन ने न दिया।

मुन्शी जी की परांठे खाने की इच्छा और साथ-साथ अपनी इच्छा का विचार कर उसने बाजार से आठ आने का घी मोल ले लिया।

घर पहुँच कर उसने नमकीन परांठे बनाए और मुन्शी जी को खिलाए। परांठे खूब स्वादिष्ट बने थे, मुन्शी जी प्रसन्न हो गए। पर खा चुकने के बाद उन्हें एकाएक ध्यान आया कि कहीं मेरी पत्नी कोई वस्तु खरीद कर न लाई हो। उन्होंने झट अपनी स्त्री से पूछा—"सब चीजें मांग कर ही परांठे पकाए हैं न?"

उनकी पत्नी ने कहा, "और तो सब कुछ मांग लिया था, बस आठ आने का घी मोल लेना पड़ा।"

"आठ आने का घी!" कहते-कहते मुन्शी जी की आंखें कौड़ी से बढ़ कर पकौड़ी के आकार की हो गईं। क्रोध से उनके नथुने फड़कने लगे और फिर उन्होंने डण्डा उठाया और यह कह कर बरसाने लगे अपनी पत्नी पर, "डायन, आठ आने खर्च आई! मेरा घर उजाड़ दिया!" इतना पीटा कि खुद भी हांपने लगे और अन्त में बेदम होकर बैठ गए।

पर इतने पर भी उनका क्रोध न ठण्डा हुआ, और भी भड़क कर बोले—"अरी डायन, तू तो मुझे जीने न देगी। मैं तो अभी मरता हूँ।"

यह कह कर वह बाहर गली में जाकर लेट गए और सांस ऐसे रोक लिया जैसे सचमुच ही मर गये हों। इतने में एक पड़ोसी पास से गुजरा। मुन्शी जी को गली में लेटा हुआ देख कर उसे अचरज हुआ। पुकारा तो कोई उत्तर नहीं मिला। जब उसने देखा कि सांस भी बन्द है, तो उसने समझा कि मुन्शी जी का देहान्त हो गया है और वह दूसरे पड़ोसियों को बुलाने चला गया। मुन्शी जी की पत्नी झरोखे में से यह दृश्य देख रही थी। जब पड़ोसी चला गया, तो वह मुन्शी जी के पास आई और बोली, "देखो, अब वह तुम्हें आकर नहलाएंगे और फिर श्मशान में ले जाकर जला देंगे। क्यों बे मौत मरते हो! उठो और घर चलो।"

मुन्शी जी ने डाँट कर कहा—"आज तूने आठ आने खर्चे, कल तू एक रुपया खर्च देगी और परसों दो। इस प्रकार तो तू मेरा दिवाला निकाल देगी। तुझ जैसी डायन के साथ रहने से तो मरना ही अच्छा। जा भाग। मुझे मरने दे।"

इतने में कई पड़ोसी आ गए और मुन्शी जी की पत्नी घर में घुस गई। रोना-धोना भी शुरू हो गया। पड़ोस के सब लोग इकट्ठे हो गये। मुन्शी जी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहलाया गया और फिर अर्थी लेकर 'राम नाम सत्य है' कहते हुए श्मशान की ओर चल दिये। वहां पहुँच कर चिता तैयार की गई और मुन्शी जी को उसके ऊपर लिटा दिया गया। तब उनकी पत्नी ने लोगों से प्रार्थना की कि अन्तिम बार मुझे अपने पति का मुख देखने दो और आप लोग कृपया पीछे हट जाओ। लोगों ने प्रार्थना स्वीकार कर ली और वे पीछे हट गए। तब मुन्शी जी की पत्नी चिता के पास गई और बोली, "अरे, अब तो उठो। अब तो आग लगाने भर की देर है। क्यों मुफ्त में प्राण गंवा रहे हो?"

किन्तु मुन्शी जी ने फिर अपना पुराना उत्तर दुहरा दिया, "तुझ जैसी डायन के साथ रहने की अपेक्षा तो मरना अच्छा है। चल भाग।"

पत्नी बिचारी वापस आ गई और लोग चिता में आग लगाने की तैयारी करने लगे। इतने में मुन्शी जी की पत्नी को एक युक्ति सूझ गई। श्मशान के ब्राह्मण को पास बुला कर वह ऊँचे स्वर से कहने लगी, "अपने पतिदेव की आत्मा की शान्ति के लिये मैं बीस रुपये खर्च करके ब्रह्मभोज करूंगी, दाह-संस्कार कराने के तुम्हें दस रुपये दूंगी और...."

वह यह कह ही रही थी कि मुन्शी जी चिता पर से उचक कर उठ बैठे और पत्नी के पास पहुँच कर उसकी चोटी पकड़ कर क्रोध से बोले, "अरी, तेरे आठ आने खर्चने के कारण तो मैं मर रहा हूं और अब तू तीस रुपये खर्चने को कह रही है। अब तो पहले तुझे ठीक करके ही मरूंगा।"

मुन्शी जी के उठ बैठने से पड़ोसी लोग पहले तो डर गए; परन्तु बाद में जब उनको असल बात मालूम हुई तो हँसते-हँसते उनके पेट में बल पड़ गये। और फिर मुन्शी जी को होली का भड़ुआ बना कर वे सब नाचते-गाते नगर की ओर चल दिये।

बताओ तो जानें?

कुमारी उषा

एक बगीचे में चार देवताओं के चार मन्दिर थे। चारों मन्दिरों के सामने एक एक कुआं था। एक व्यक्ति चारों मन्दिरों में फूल चढ़ाना चाहता था। उसने बगीचे से कुछ फूल तोड़े। उन फूलों को उसने कुएं के पानी में धोया। उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ, जब उसने देखा कि वे फूल दुगने हो गये हैं। उन फूलों में से उसने कुछ पहले मन्दिर में चढ़ा दिये। बचे हुए फूल दूसरे मन्दिर में चढ़ाने से पहले उसने फिर कुएं के पानी में धोये। वे फिर दुगने हो गये। अब उसने उतने ही फूल जितने कि उसने पहले मन्दिर में चढ़ाये थे, दूसरे में भी चढ़ा दिये। जो बाकी बचे, उन्हें उसने फिर कुएं के पानी में धोया और वे दुगने हो गये। उनमें से उसने तीसरे मंदिर में भी पहले और दूसरे मंदिर जितने ही फूल चढ़ाये। यही चौथे मंदिर में किया। चौथे मंदिर में पहले मंदिर जितने फूल चढ़ाने के पश्चात् उस के पास एक भी फूल बाकी न रहा। बताओ उसने कितने फूल तोड़े और कितने-कितने फूल चढ़ाये?

उत्तर

बगीचे से उसने १५ फूल तोड़े। धोने से वे ३० हो गये। उनमें से १६ पहले मन्दिर में चढ़ा दिये। बचे हुए फूल धोने से २८ हो गये। उनमें से फिर उसने १६ दूसरे मंदिर में चढ़ा दिये। बचे हुए १२ फूल धोने से २४ हो गये। उनमें से फिर उसने १६ तीसरे मन्दिर में चढ़ा दिये। बचे हुए ८ फूल धोने से १६ हो गये। उसने १६ फूल चौथे मंदिर में चढ़ा दिये। इस भांति चारों मन्दिरों में चढ़ाने के पश्चात् उसके पास एक भी फूल बाकी नहीं बचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना-शुल्क

बाल-पहेली नं० १७

२५ मार्च १९४९ तक सही उत्तर

आने पर पांच रुपये नकद पुरस्कार

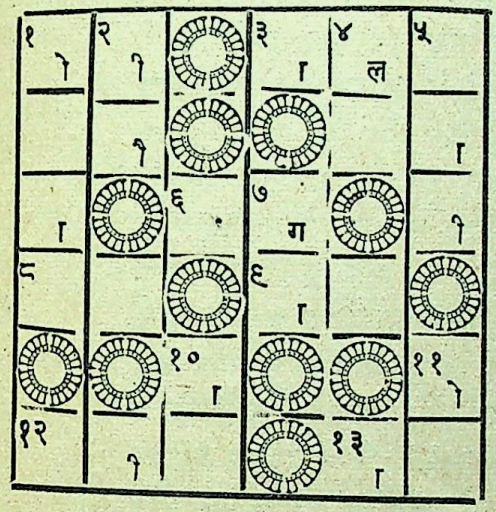

दायें से बायें

१. रंग का त्योहार। ३. यह अपने आप में राजाओं-महाराजाओं से भी बड़ा है। ६. चौबे जी का कहना है कि इसके बिना होली का आनन्द ही नहीं आता। ८. 'जय वीर जवाहर लाल' में ये दो अक्षर दूर-दूर भी हैं और पास-पास भी। ९. इसका असल रूप बदल कर ही मनुष्य इसे उपयोग में लाता है। १२. एक संतकवि। १३. डींग मारना न कह कर यह बजाना भी कहा जाता है।

ऊपर से नीचे

१. कहावत है कि ऐसे पौधे के पत्ते चीकने होते हैं २. उलटने से ऐसी शीशी बन जाती है, जिसमें प्रायः आंखों की दवा डाली जाती है। ४. इसके आगे 'ना' जोड़ने से ऐसा काम बन जाता है, जो बच्चों को नहीं करना चाहिये। ५. हल्का पीला रंग। ७. होली की धूम में लड़के कभी कभी इसका प्रयोग भी कर लेते हैं। १०. यह दूरी से नहीं डरती। ११. अंदर से खाली।

बाल-पहेली नं० १६ का पुरस्कार

फरवरी १९४९ के 'मनोरंजन' में प्रकाशित बाल-पहेली नं० १६ का सही उत्तर भीलवाड़ा हाई स्कूल के छठी कक्षा के विद्यार्थी श्री सत्यनारायण अग्रवाल ने भेजा है; अतः उन्हें ५) रुपये का पुरस्कार दिया गया है। सही उत्तर निम्नलिखित है—

दायें से बायें

१. राजघाट, ५. सतयारि, ८. वसंत, १२. न य, १३. तट।

ऊपर से नीचे

१. राजा, २. घास, ३. ढत, ४. करिअप्पा, ६. यामा, ७. नव, ९. सघ, १०. गान, ११. चीत।

बाल-पहेली के नियम

१. केवल १४ वर्ष की आयु तक के लड़के-लड़कियां ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। आयु के सम्बन्ध में माता-पिता अथवा स्कूल के अध्यापक का प्रमाण-पत्र भी उत्तर के साथ आना चाहिये।

२. उत्तर 'मनोरंजन' में छपे खाके को काट कर और भर कर भेजना चाहिए। किसी और कागज पर अलग से भेजे गये उत्तर पर विचार नहीं किया जायेगा। एक व्यक्ति एक से अधिक पूर्तियां भी भेज सकता है।

३. खानों को स्याही से सुस्पष्ट लिखे अक्षरों से भरना चाहिये। कटे-छंटे या पैंसिल आदि से लिखे अक्षर को सही नहीं माना जायेगा।

४. उत्तर २५ मार्च १९४९ को सायंकाल तक 'मनोरंजन' कार्यालय, श्री श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली में पहुंच जाना चाहिये।

५. सम्पादक का निर्णय अन्तिम होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनों

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं, और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिकधर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी। मुझे मासिक धर्म खुल कर न आता था। अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन कमजोर होती जा रही थी, चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से को घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता का। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की मशहूर औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से भी रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महात्मा हमारे दरवाजे पर भिक्षा के लिये आये। मैं दरवाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रंग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पतिदेव को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुःखी बहिनों की भलाई के लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखें। मैं उनको अपने हाथ से औषधि बना कर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवाई तैयार करने पर २।।।=) दो रु० चौदह आने असल लागत खर्च होता है और महसूल डाक अलग है।

* जरूरी सूचना *

मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है। इस लिये कोई बहन मुझे किसी रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, (३०) बुडलाडा, जिला हिसार पंजाब।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसको रखने के लिए लाइसेंस की कोई जरूरत नहीं, हर घर में होना चाहिये

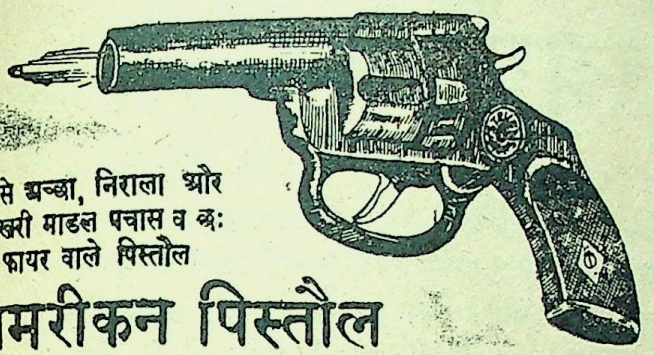

सबसे अच्छा, निराला और आखरी माडल पचास व छः फायर वाले पिस्तौल

अमरीकन पिस्तौल

जान व माल की रक्षा के लिये इससे अच्छी कोई चीज नहीं। यह माडे असली का मानिंद अब पहली बार आया है। मूल्य ६ फायर वाले शाट के साथ माडल बी. नं० १, ४॥=), माडल बी. नं० २, ५॥=) स्पैशल माडल ए. नं० २, ७॥=), मूल्य ४० फायर वाले शाट के साथ नया माडल डी. नं० १, ३॥=), स्पैशल माडल डी. नं० २, १०॥=) फालतू शाट १) दर्जन पिस्तौल का तेल ॥), चमड़े की पेटी पांच रुपये डाक खर्च अलग। तीन एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ।

अलाईड ट्रेडर्स लिमिटेड, (m.) दिल्ली।
ALLIED TRADERS Ltd., (m.) DELHI

गहरी निद्रा का आनन्द

विज्ञान का आश्चर्यजनक आविष्कार वेकेशन किसी सोते या जागते हुए को सुधा दीजिये। वह एक घंटे के लिये गहरी नींद में सो जायगा। और हिलाने से भी न जागेगा। मूल्य केवल २) डाकखर्च ॥-) अगर आप घण्टे से पूर्व जगाना चाहते हैं तो रैकशन सुधादीये। मूल्य केवल २) रु०। कम मिकदार या नमूना मुफ्त नहीं मिलसकता। गारण्टी की बाती है कि वेकेशन या रैकशन किसी किसम की हानि नहीं पहुंचाती आज ही आर्डर दें और अपना पता पूरा और साफ लिखें।

मैक्सो लिबार्टीज लिमिटेड (m.) नं० ४५, देहली।

मुफ्त! मुफ्त!

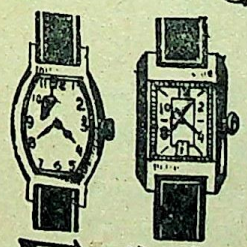

FREE

लन्दन न्यूगोल के जेवरात का मशहूर करने के लिये हमने डायरी कलेण्डर १९४८ और असली रिस्टवाच गारण्टी १५ साल मुफ्त देने का फैसला किया है यदि आप बिल्कुल मुफ्त लेना चाहते हैं तो आज ही अपना नाम व पूरा पता साफ २ लिख कर भेज दें मगर जल्दी करें वर्ना यह समय बार २ हाथ न आवेगा।

कैरे गोल्ड सप्लाई कं० (एम.) देहली।

फोटो कैमरा मुफ्त

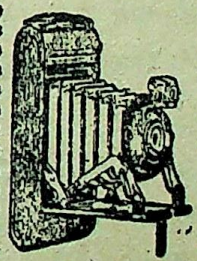

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सख्त से बना हुआ बिना किसी खर्च के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है शौकिया काम लेने वाले तथा व्यवसायी दोनों ही काम इससे ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरा में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमायें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा तमाम फिल्म-कार्ड, कैमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ४॥=), बैस्ट क्वालिटी नं० ५४५ कीमत ६॥) डी लक्स एक्स्ट्रा, स्पैशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ६॥), पैकिंग व डाक व्यय १०)

नोट—एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५५० मुफ्त। स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसंद न होने पर कीमत वापिस।

वैस्ट एण्ड ट्रेडर्ज, पोस्ट बक्स नं० १९९ (m.h) दिल्ली।
West End Traders P. B. 199, (m.h) Delhi.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांझ स्त्रियों के लिये

मेरी शादी हुए पन्द्रह वर्ष बीत चुके थे। इस समय के बीच मैंने सैकड़ों इलाज कराये लेकिन कोई सन्तान पैदा न हुई। सौभाग्य वश मुझे एक वृद्ध महा पुरुष से निम्न लिखित नुस्खा प्राप्त हुआ। मैंने उसे बना कर सेवन किया। ईश्वर की कृपा से नौ मास बाद मेरी गोद में बालक खेलने लगा। इसके पश्चात् मैंने जिस सन्तान हीन बहन को इसका सेवन कराया उसी की आशा पूरी हुई। अब मैं इस नुस्खे को सूची-पत्र द्वारा प्रकाशित कर रही हूं ताकि मेरी निराश बहनों की आशा पूर्ण हो।

औषधि तन्त्र ये हैं—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नैपाल गवर्नमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारी दक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम से कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कबियारी सफेद की जड़ (यानी सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घण्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें। इसके सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती बहनें इस लायक हो जाती हैं कि कि सन्तान पैदा कर सकें।

—गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातःकाल और सायंकाल एक एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट — औषधि तन्त्र के अंदर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अंदर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

मेरी सन्तान हीन बहिनों,

आप इसे बे गुण औषधि न समझें। यदि आप बच्चे की माता बनना चाहती हैं, तो इसे बनाकर जरूर सेवन करें। मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि इसके सेवन से आपकी अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। यदि कोई बहन इस औषधि को मेरे हाथ से ही बनवाना चाहें तो पत्र द्वारा सूचित करें। मैं उन्हें औषधि तैयार करके भेज दूंगी। एक बहिन की औषधि पर पांच रुपये बारह आने। दो बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने और तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आना खर्च आते हैं। महसूल डाक वगैरह बारह आने इससे अलग है।

नोट — जिस बहिन को मेरे पर विश्वास न हो वो मुझे दवा के लिए हरगिज न लिखें।

रतनबाई जैन (४४) सदर बाजार थाना रोड, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड

आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वाधान में

दैनिक वीर अर्जुन — साप्ताहिक वीर अर्जुन सचित्र

मनोरंजन मासिक — विजय पुस्तक भण्डार

अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। यह प्रकाशन संस्था सुदृढ आर्थिक स्थिति की है।

अधिकृत पूंजी ५,००,००० **प्रस्तुत पूंजी २,००,०००**

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४	१० प्रतिशत
सन् १९४५	१० प्रतिशत
सन् १९४६	१५ प्रतिशत

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को १० प्रतिशत लाभ दिया है!

आप जानते हैं ?

* इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्हीं लोगों द्वारा होता है।
* 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सफल बनाने में लगी रही हैं।

आपभी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

* इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
* राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
* अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
* आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदनपत्र की मांग कीजिये।

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,

श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

प्रिंटर पब्लिशर श्री दुर्गाप्रसाद शर्मा द्वारा, अर्जुन प्रेस देहली से छप कर प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० — डी० १७३

लम्बी यात्राओं में

डनलप
जायण्ट

TRADE MARK

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल १९४९

मूल्य आठ आना

मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय-पुस्तक भण्डार की सामयिक पुस्तकें

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है। मूल्य १॥) रुपया।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय ललकार एक ही साथ हैं पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य हैं। मूल्य १) डाकव्यय ।-)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झाँकियाँ'

प्रथम खण्ड-दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन, मू०॥)
द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला? मूल्य ॥)
तीसरा खंड-मेरे नौकरशाही जेल के अनुभव, मू० १)
तीनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य १॥)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी।

मूल्य २)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता के उद्‌बोधन का मार्ग है।
इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)।

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा।

मूल्य १।) डाक व्यय ।=)

प्राप्ति स्थान—विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

T. B. टी० बी० 'तपेदिक' तथा पुराने ज्वर के रोगियो-ध्यान पूर्वक पढ़ो!

भारतीय ऋषियों की खोज का अद्भुत चमत्कार (JABRI) एक आश्चर्य जनक घटना

मेरी स्त्री अनेक दिनों से बीमार थी, आखिर डाक्टरों ने 'तपेदिक' (टी० बी०) रोग बतलाया। 'तपेदिक' का नाम सुनते ही होश हवाश उड़ गये। अन्त में डाक्टरों ने एक्सरे करके दोनों फेफड़े खराब (गल) जाने की बात कह कर मुझे आदेश दिया कि रोगी १०-१५ दिन का मेहमान है। इसको अस्पताल से ले जाओ और किसी अलग कमरे में रख दो। कोई इसके पास न जावे। इसके थूक आदि से बचाव रखो लाचार हो कर उसको घर ले आया।

फिर क्या हुआ—अखबार 'मिलाप' में आपकी दवा 'जबरी' का विज्ञापन देखा। दिल ने कहा, जहां सैकड़ों रुपया हकीम, डाक्टरों की भेंट चढ़ा चुका हूं, यह भी खर्च करके देख लूं। रोगी ने कहा कि जब डाक्टरों ने यह कह दिया है कि दोनों फेफड़े खराब हो चुके हैं और मैं १०-१५ दिन की मेहमान हूं तो व्यर्थ क्यों खर्च करते हो, मुझे अब परमात्मा पर छोड़ दो। परन्तु दिल ने न माना और तुरन्त 'जबरी' नं० १ का आर्डर दे डाला। पांचवें दिन पार्सल पहुंच गया और विधि के अनुसार औषधि शुरू करा दी गई।

फिर क्या हुआ—वही आश्चर्यजनक चमत्कार। जिस रोगी के बारे में डाक्टरों ने मौत का फतवा दे दिया था और ६ मास बराबर इलाज करने पर भी बुखार न गया था, शक्तिशाली औषधि 'जबरी' ने दस दिन में ही अपना चमत्कार दिखा दिया, बुखार बिल्कुल जाता रहा। शरीर में रक्त का संचार होने लगा और दिल में पहले की सी उमंग पैदा हो गई। दिल में पूर्ण रूप से विश्वास हो गया कि जिस दवा ने इतनी जल्दी ऐसा चमत्कार दिखाया है क्यों न स्त्री को एक बार वहीं लेजा कर पूर्णरूप से परीक्षा करा कर आगे को इलाज का प्रबन्ध किया जावे। मेरी स्त्री की भी वही राय हुई।

फिर क्या हुआ—जिस रोगी में चारपाई से उठने की शक्ति न थी हजारों मील रेल की यात्रा करके 'जगाधरी' आ गई जहां पूर्ण परीक्षा के बाद उत्तम रूप से औषधियों का प्रबन्ध हुआ, रोगी की तन्दुरुस्ती दिन पर दिन बदलती गई और अब परमात्मा की कृपा से बिल्कुल ठीक हो गई है। यह ऋषियों के रक्त से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र की पूर्ण सफलता का चमत्कार है। उपरोक्त घटना सरदार कर्तारसिंह इण्डियन मिलिटरी जनरल हस्पताल, कराची से घटी।

पाठक वृन्द—यह एक नहीं और भी देखिये! (१) लाला काशीप्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहबाद) (२) बा० मुन्नालाल स्टोरकीपर सिम्बाली शूगर मिल पो० बक्सर (मेरठ) (३) बा० रामसिंह घर नं० ६१ रीठा मण्डी (देहरादून) (४) श्री तोसलहूसेन रईस मो० मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जिला फैजाबाद आदि सैकड़ों सज्जनों का यही कहना है कि शक्तिशाली औषधि 'जबरी' दवा नहीं बल्कि यथार्थ में रोगी को काल के गाल से बचाने वाली ईश्वरीय शक्ति' है। सैंकड़ों हकीम, वैद्य, डाक्टर अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं। अनेक आदमी तार से आर्डर देते हैं। तार के लिये थोड़ा सा पता 'जबरी' (जगाधरी) (Jabri Jagadhri) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार है—'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ाने के लिए, सोना, मोती अभरक आदि मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु० नमूना १० दिन के लिये २०) 'जबरी' नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल अदि अलग है। आर्डर में अखबार का हवाला तथा नं० १ या दो साफ़ लिखें। तुरन्त आर्डर दे कर रोगी की जान बचावें। १० दिन ही में अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिये मूल्य मनिआर्डर से भेजें, जिससे तुरन्त भेज दें।

पता-रायसाहब के० एल० शर्मा एंड सन्स, रईस एंड बैंकर्स [M] "जगाधरी" [पूर्वी पंजाब]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ ★ ★ ८००० रु० नकद इनाम ★ ★ ★

पहिला इनाम—ठीक हल के लिए ६००० रु० (जो एक से अधिक हल ठीक होने पर बराबर बांट दिया जावेगा)। **दूसरा इनाम**—सबसे अधिक हलों के लिये १००० रु०। **तीसरा इनाम**—सबसे पहिले ठीक हल भेजने वाले के लिये १००० रु०।

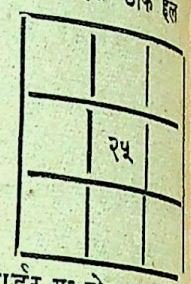

हल क्या करना है ? सामने दिये हुए नौ खानों में १०० तक के कोई से अङ्क इस भाँति से भरिये कि जिस ओर से भी जोड़ें, उत्तर ७५ हो। एक अङ्क एक ही बार लिखा जा सकता है। **दाखला फीस**—एक रु० प्रति हल।

नियम—हर एक आदमी एक या एक से अधिक जितने हल चाहे सफेद कागज पर एक रुपया प्रति हल के हिसाब से फीस के साथ भेज सकता है। फीस दाखला मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजनी चाहिये। मनीआर्डर की रसीद हलों के साथ आनी चाहिये अथवा ऐसा हो सकता है कि आपके हल मुकाबले में सम्मिलित न हो सकें। सही हल वही समझा जावेगा जो हमारे मुहरबन्द हल के साथ जो सम्पादक महोदय दैनिक 'अमर भारत' के पास रखा गया है, खाना दर खाना मिलेगा। इनामी नतीजे की कापी के लिये दो आने के टिकट और अपने पते का लिफाफा भेजें। इनाम की रकम दाखला फीस की आई हुई रकम के अनुसार कमी बेशी हो सकती है पर सही हल के इनाम की कम से कम ५० रु० की गारण्टी है। हलों के रास्ते में खो जाने या डाकखाने के कारण देर पहुँचने के हम जिम्मेवार न होंगे। प्रवेश फीस किसी अवस्था में वापिस न होगी। मैनेजर साहिब पहेली का फैसला कानूनी व हर प्रकार से मानने योग्य होगा। हर मामले का फैसला देहली ही होगा। अपना पता हलों पर व मनीआर्डर कोपन पर साफ लिखें, हल ५ मई तक डाक में डाल देने चाहिये। इसके पश्चात् भेजा हुआ कोई हल स्वीकृत न किया जावेगा सही हल १५ मई को प्रकाशित कर दिया जावेगा।

ई० टी० एण्ड कम्पनी, पोस्ट बैग नं० ५२ ए०, दिल्ली। E T & Company Post Bag No 52 A Delhi.

१०,०००) रुपये की घड़ियाँ

मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन से बाल काले हो जाते हैं। और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामी जी की ओर से लाजवाब तोहफा है। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता, उनको लम्बे, घुघँरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आँखों की रोशनी तेज करता और सिर को ठन्डक पहुँचता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत १ शीशी २॥) रु०। तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६॥) रु०। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैन्सी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर हैं और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती हैं। तीन शीशी के खरीददार को डाक खर्च माफ और चार न्यू घड़ियां व चार अंगूठियां (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त दी जाती हैं।

जनरल नावल्टी स्टोर [M. M. H.] DELHI।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोटो कैमरा मुफ्त

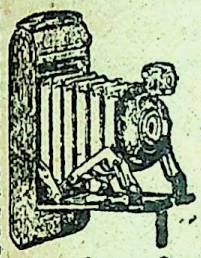

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है शौकिया काम लेने वाले तथा व्यवसायी दोनों ही काम इससे ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरा में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमायें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा तमाम फिल्म-कार्ड, कैमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ४॥=), वैस्ट क्वालिटी नं० ५४५ कीमत ६॥) डी लक्स एक्स्ट्रा, स्पैशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ६॥), पैकिंग व डाक व्यय १८)

नोट—एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५५० मुफ्त। स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसंद न होने पर कीमत वापिस।

वैस्ट एण्ड ट्रेडर्ज, पोस्ट बक्स नं० १६६ (m.n) दिल्ली।

West End Traders P. B. 199, (m.h) Delhi.

५००) नकद इनाम

प्यार का तावीज

इस तावीज को पास रखने से आप जिससे प्रेम करते हैं चाहे वह कितना कठोर क्यों न हो घण्टे के अन्दर आप से मिलने के लिए बेचैन हो जाएगा।

हर काम गारन्टी से किया जाता है। अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है। प्रति तावीज २), तीन तावीज ५) डाक खर्च ।=)।

आनन्द स्वामी पी. वी. ६१,

(M.R.D) अमृतसर।

जीवन में मधुर आनन्द उपभोग करने के लिए स्वर्ण मिश्रित गोलियां

झीन सीन गोल्ड

—टानिक पिल्स—

'झीनसीन' में अनेक शक्ति वर्धक तत्वों के अतिरिक्त शुद्ध सोना भी है। इनमें बल और पौरुष बढ़ाने की, धातु पुष्ट कर तथा स्वप्नदोष और जातीय दुर्बलता मिटाने की अपूर्व शक्ति है। 'झीनसीन' के सेवन से आप की खोई हुई शक्ति, उत्साह, उमंग तथा पुरुषत्व फिर से प्राप्त होगा, मूल्य प्रति शीशी ५) डाक खर्च ।।=) अलग।

विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

चायनीज मेडिकल स्टोर,

नया बाजार, देहली।

हैड आफिस—२८ एपोलो स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई। ब्रांचें—१२ डलहौजी स्क्वायर, कलकत्ता, रीची रोड-अहमदाबाद।

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी नेशनल मेडीकल, स्टोर्स—आगरा।
दी जनरल मेडीकल, स्टोर्स—अजमेर।
दी एलाईड केमिस्ट्स—जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर।
मे. गिरधरदास जानकी वल्लभ—उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी—मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—लश्कर।
राधाकृष्ण गांधी एण्ड सन्स—उज्जैन।
डी० पी० फार्मास्युटिकल वर्क्स—जद्दारी।
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स—कानपुर।
सोगानी जनरल स्टोर्स—भोपाल।
मेसर्स धारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर।
डी० पी० आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी दवाखाना मोरेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय वर्ष
संख्या ७

मनोरंजन

दिल्ली

अप्रैल
१९४९

व्यवस्थापक
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

सम्पादक
श्री चिरंजीत

इस अंक में

कहानी

दस के सौ	श्री वृन्दावनलाल वर्मा	८
अपमानिता	श्री नि० ही० वात्स्यायन	१८
उजाला	कुमारी सरलादेवी	२४
कहां जा रहे हो ?	श्री जयराम भारद्वाज	३१

कविता

वियोग	श्री हंसकुमार तिवारी	५
पनिहारी	श्रीमती सरोजिनी नायडू, अनु०—'श्रीवर'	६
विश्वास	श्री बलवीरसिंह 'रङ्ग'	११
चाँदनी रात	श्री ईशकुमार	१७
सुहाग-भरी होली !	श्रीमती शकुन्त गिरिजाकुमार	२६
मुझको जीवन की चाह नहीं !	श्रीमती सरला सेवक	२६

लेख

कांग्रेस में वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास (४)	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति	१२
आप—दूसरों की नजर में	श्री अंतर्दर्शी	१६
पथ-भ्रष्ट बालकों की समस्या	श्रीमती शान्ति गुप्ता बी० ए०, बी० टी०	३०
संसार का सबसे बड़ा नेत्र	श्री ब्रह्मदेव	४१

विशेष-स्तम्भ

हास-परिहास	४५	सलोनी-दुनिया	५४
चित्रलोक	५१	रेडियो	५८
फुलझड़ियां	५७	बाल-मनोरंजन	

मूल्य आठ आना

वार्षिक मूल्य ५॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वियोग

श्री हंसकुमार तिवारी

चाँदनी चाँद से दूर है,
चाँद से दूर है चाँदनी!

चाँद फूला कमल-सा गगन में,
चाँदनी लुढ रही है भुवन में,

फूल से गंध बाहर बिलखती,
दूर है मेघ से दामिनी!

बंध में बंद जीवन पड़ा है,
भाव पर खोल ऊपर उड़ा है,

प्राण से गान रोता विलग हो,
दूर है वीण से रागिनी!

व्यक्त मैं अश्रु-सी दृग-शरण से,
व्यक्त मैं रेणु-सी चल चरण से,

चातकी मैं चिरंतन वियोगिन,
दूर ज्यों भानु से यामिनी!

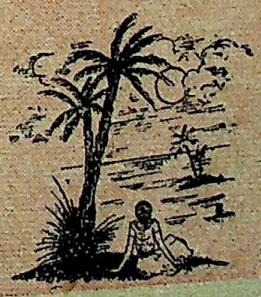

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri C

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरोजिनी नायडू की

Full are my pitchers
And far to carry,
Lone is the way and long,
Why, O why was I tempted to tarry
Lured by the boatman's song?
Swiftly the shadows of night are falling,
Hear, O hear, the black crane calling,
Is it the wild owl's cry?
Oh! if in the darkness a snake should bite me,
Or if an evil spirit should smite me,
Ram Re Ram I shall die!

My brother shall murmer
Where doth she linger,
My mother will wail and weep,
'May home safe the great gods bring her,
The Jamuna's waters are deep.'
The Jamuna s water rush by so quickly,
The shadows of evening gather so thickly
Like black birds in the sky.
Oh! if a storm breaks what will betide me?
Safe from the ightning where shall I hide me
Unless Thou succour my footsteps and guide me,
Ram Re Ram I shall die!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक कविता और उसका भावानुवाद—

पनिहारी

भरी गगरी मोरी अरु दूर जान
बड़ी लाँबा गैल जहँ कोऊ है न।
अरे! काहे खड़ी मैं तहँ रही री बीर,
जहँ गावै मलहवा तान तीर!
अँधियारी कारी बढ़त जात
का बोली वह बक की सुनात!
का है उलुक को हाय! भेक!
नहिं रह्यो! चन्द उजियारो नेक!
जो डसै रात में साँप माहि
औ' पीपरवारो घरे कोइ
तौ राम रे राम! मोरे प्रान जाहिं।

भैया कहिहै 'कहँ रही बीर!'
मोरी माय, रोप नहिं धरि है धीर
'तुम वाहि कन्हैया लेउ बचाय
है जमुनाजी में जल अथाह!'
जमुना-जल करि कल बहत जात
अँधियारी सन सन करत आत
जनु पंछी-जन की जुरत पाँत।
जो आंधी नेकहु आवै बीर!
मैं कहां जाहुँ, कैसे धरौं धीर!
मैं बिजुरी सौं बचि कहां जाहुँ!
जो तुम ही रच्छा करौ नाहिं
तौ राम रे राम! मोरे प्रान जाहिं!

—श्रीनारायण चतुर्वेदी 'श्रीवर'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri C

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

दस के सौ

श्री वृन्दावनलाल वर्मा

सेठ जोटीराम और उसका मुनीम एक बढ़िया मोटर में, जो सेठ की कई मोटरों में से एक थी, दिल्ली की सड़क पर सन्ध्या के जरा पहले जा रहे थे। सेठ को अपने व्यवसाय के सम्बन्ध में विभाग-विशेष के कर्मचारी से परमिट लेना था। परमिट मिल जाय तो लाखों के वारे-न्यारे होने की आशा थी – विश्वास भी। मोटर सड़क-किनारे के एक मन्दिर के सामने से निकली। सेठ ने एक क्षण के लिए आंखें मूंद कर मन्दिर के प्रति सिर घुमाया, नवाया और हाथ जोड़े, मन ही मन प्रार्थना की—"भगवान्, कार्य की सिद्धि हो जाय तो जो कुछ पुण्य हो सकेगा करूंगा!" मन्दिर से आगे निकलते ही सेठ का हाथ जेब में पड़े हुए बटुए को छू गया। बटुए में कई नोट सौ-सौ रुपये के थे और कुछ दस-दस रुपये के—थोड़ा-सा फुटकर भन्ना भी। सेठ ने पुण्य के रूप का मन में निश्चय कर लिया। मुनीम ने भी आंखें मूंद कर उसी प्रकार हाथ जोड़े, प्रार्थना की—"हे भगवान्, मेरी तनखाह बढ़ जाय!" परन्तु उसने किसी पुण्य का संकल्प नहीं किया।

ड्राइवर सड़क की विघ्न-बाधाओं से मोटर को बचाता हुआ लिए जा रहा था। मन्दिर की ओर उसका ध्यान नहीं गया।

कर्मचारी की कोठी पर पहुँचते ही सेठ जोटीराम ने मन ही मन फिर किसी का स्मरण किया। कर्मचारी मिल गया—पहला सुफल तो यह हुआ। और दूसरा यह कि कर्मचारी ने सेठ जोटीराम को जल्दी से मुलाकात दे दी। परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने का क्रम जारी हुआ, सेठ ने सोचा।

कर्मचारी ने सेठ को परमिट-प्रदान में तत्कालीन बाधाएं बतलाईं, परन्तु उसकी आशा को खंडित नहीं किया। किसी दिन होकर ही रहेगा, सेठ को विश्वास था।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पूंजीवादी युग में रिश्वत का भी अपना अलग माहात्म्य है—देव-पूजन जैसा माहात्म्य है। पूजन से देवता प्रसन्न होंगे, तो वरदान मिलेगा ही। और वरदान का अर्थ है लाखों के वारे-न्यारे। सेठ जोटीराम को भी यही आशा थी, परन्तु.....

★

बातचीत की समाप्ति पर कर्मचारी ने कहा, "मुझ को एक काम से जाना है।" परन्तु मोटर बाल-बच्चों को बिठला कर कहीं बाहर चली गई थी। कर्मचारी को जिस स्थान पर जाना था, सेठ को मालूम हो गया।

सेठ ने अनुरोध किया, "मैं पहुँचाए देता हूँ। मोटर आप को भेज भी जायगी।"

कर्मचारी ने थोड़े से संकोच के बाद सेठ के अनुरोध को स्वीकार कर लिया।

कर्मचारी सेठ के साथ मोटर में चल दिया। रास्ते में फिर वह मन्दिर मिला और मन्दिर के बिलकुल निकट बड़े-बड़े तिलक लगाए एक भिखारी। उसने कुछ दान पाने के लिए मोटर की खिड़की की ओर घिघियाते हुए दोनों हाथ पसारे। पहले सुफल और फिर पुण्य या पहले पुण्य और फिर उसका फल?—सेठ के मन में प्रश्न उठा।

कोई बड़ी बात नहीं है—सेठ के संकल्प ने भीतर से कहा। तुरन्त उसका हाथ बटुए पर गया।

सेठ ने ड्राइवर को आदेश दिया, "मोटर रोको!"

ड्राइवर ने मोटर रोक ली।

कर्मचारी ने कुछ विस्मय के साथ सेठ की ओर देखा। मुनीम ने भी।

सेठ जोटीराम ने बटुआ निकाल कर खोला। एक बार भिखारी पर और एक बार कर्मचारी पर उसकी दृष्टि गई। बटुए पर अधिक ध्यान गड़ाने की जरूरत नहीं पड़ी। पुण्य यदि बहुत गुप्त न रखा जा सके, तो बहुत प्रकट भी न होना चाहिए।

सेठ जोटीराम ने लापरवाही के साथ एक नोट निकाला और शीघ्रता के साथ भिखारी की ओर खिड़की के बाहर हाथ निकालते हुए बढ़ाया। मोटर का एन्जिन बन्द नहीं किया गया था। कर्मचारी को अपने अभीष्ट स्थान पर जल्दी पहुंचाना था। सेठ को और अधिक विलम्ब करने की जरूरत भी न थी। भिखारी तो आतुर था ही, उसने तुरन्त झपट लगाई। भिखारी के आतुर हाथों और सेठ की व्यग्र उंगलियों के बीच में कुछ इंचों का ही अन्तर था, जब सेठ की आंख दान के माध्यम—उस नोट पर गई। नोट सौ रुपये का था। पर सेठ ने संकल्प दस रुपए के दान का ही किया था।

सेठ की उंगलियाँ थोड़ी-सी झिझकीं। भिखारी का हाथ और भी अधिक आतुर हुआ। क्षण के एक छोटे से अंश में सेठ की आंख कर्मचारी की ओर घूम कर फिर नोट पर पहुँची। सेठ की ठेहुनी भीतर की ओर सिकुड़ने ही को थी कि भिखारी की उंगलियां सेठ की उंगलियों से जा टकराईं। सेठ के हाथ से नोट छूट कर भिखारी के हाथ में पहुँच गया।

भिखारी चिल्लाया, "जय होय! बढ़ती होय!"

सेठ की आंख फिर कर्मचारी की ओर गई और फिर नीची पड़ गई। कोई भी नहीं देख सका कि सेठ किसी भी निश्चय पर नहीं पहुँच पा रहा है।

सेठ ने दबे स्वर में ड्राइवर से कहा, "चलो।"

ड्राइवर ने मोटर को चला दिया। जब कर्मचारी अपने अभीष्ट स्थान पर पहुँचा, तो सेठ ने पूछा, "कितनी देर ठहरिएगा यहां?"

कर्मचारी ने बतलाया।

मोटर ले कर सेठ जोटीराम बंगले के बाहर सड़क पर आ गया। एक किनारे रोक कर सेठ ने मुनीम को नीचे उतारा और अकेले में बात करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम मोटर ले कर तुरन्त मन्दिर पर जाओ। उस भिखारी से सौ रुपए का नोट वापिस लो और दस रुपए का उसको दे दो। समझ में नहीं आता कि गलती कैसे हो गई। विचार केवल दस रुपए देने का था, परन्तु चला गया सौ का नोट!"

"परन्तु यदि वह भिखारी वहां न मिला?"

"अभी वहीं होगा, मुझ को विश्वास है। कोशिश करो।"

"मिल भी गया और उसने किनर-मिनर की, तो?"

"उसके बाप का मुझ पर कुछ पावना था जो किनर-मिनर करेगा?"

"नहीं, मैंने एक बात कही। वह कह सकता है कि देने वाला कोई और था, लौटाने वाला कोई और आ गया। ऐसी हालत में मैं मुश्किल में पड़ जाऊँगा।"

"यों ही टालमटूल करते हो। कह देना कि अपने सेठ के हुकुम से आया हूं।"

"आप भी साथ चले चलते तो अच्छा होता।"

"नहीं, मैं नहीं जाऊँगा। इस पेड़ के नीचे टहलता रहूँगा, तब तक तुम हो आओ। जल्दी करो, जाओ।"

मुनीम को नोट की अदला-बदली की कठिनाइयों की उतनी फिकर नहीं थी, जितनी अपनी नौकरी की और वेतन बढ़वाने की।

मुनीम सेठ जोटीराम से दस रुपए का नोट लेकर मोटर की ओर बढ़ा।

"और देखो," सेठ ने कहा, "जल्दी लौटना, ऐसा न हो कि साहब को इन्तजार करना पड़े।"

मोटर चली गई। जोटीराम पेड़ के नीचे इस तरह टहलता रहा, जिसमें कोई जान-पहिचान वाला निकले तो चीन्हने न पावे।

* * *

थोड़ी देर बाद मोटर लौट आई। मोटर में मुनीम न था। सेठ ने कारण पूछा, "कहां हैं? क्यों रह गए? आए क्यों नहीं? क्या कह रहे हैं?"

ड्राइवर ने सब प्रश्नों का सार सुना दिया, "किसी की तलाश में फिरते-फिरते जब समय हो गया, तब वहीं रह गए, और गाड़ी लौटा दी। कहते थे, जब यहां हो कर निकलो, तब मुझ को ले लेना।"

सेठ को यह अच्छा नहीं लगा; परन्तु नियत समय पर कर्मचारी को उस स्थान से लेना था।

कर्मचारी को वहां से ले कर जोटीराम मन्दिर के सामने आया। वहां सड़क के एक किनारे एक अच्छी खासी भीड़ इकट्ठी थी। गाड़ी रुक गई। मुनीम गाड़ी की ओर बढ़ा। भीड़ में वह भिखारी भी था। भिखारी और भीड़ भी गाड़ी के कुछ निकट आई।

"क्या बात है?" सेठ ने मुनीम से पूछा।

मुनीम का उत्तर सुनने के पहले ही जोटीराम कुछ और कहने को हुआ, परन्तु उसको शब्द न मिले। मुनीम ने उत्तर दिया, "यह कहता है कि मुझको दस रुपए का ही नोट दिया गया था।"

"हां सरकार, कहीं भला ऐसा हो सकता है? भला मैं धोका क्यों देने चला? कोई किसी भिखारी को भला सौ रुपए क्यों दान करने चला? आप बहुत रहे हैं, आप का भला हो!" भिखारी चिल्लाया।

मुनीम जरा तेज हुआ। बोला, "पुलिस में रिपोर्ट करते हैं। इसकी खाना-तलाशी ली जाय तो सौ रुपए का नोट निकलेगा।"

कर्मचारी ने कहा, "और यदि मुकदमा चलने पर भिखारी ने कहा कि सौ रुपए दान में दिए गए थे, तो? चोरी का या धोकाबाजी का मुकदमा तो चल नहीं सकता।"

भिखारी ने फिर शोर किया, "जय होय सरकार की! सरकार ने भी तो देखा था, जो कुछ सेठ जी ने मुझ को दिया था—वह बहुतों ने देखा होगा।"

कर्मचारी ने सोचा, मुकदमा चला तो गवाही में जाना पड़ेगा। और मुकदमा चलेगा भी तो किस बात पर? कर्मचारी की त्योरी बदली, भौहें सिकुड़ी, होंठ चढ़े और उसके मुंह से निकला, "ओफ! क्या वाहियात बवाल खड़ा कर दिया है! मुझ को तो एक-एक मिनिट की मुश्किल पड़ रही है!"

और सेठ को एक-एक सैकंड की मुश्किल पड़ रही थी। सौ रुपए का नोट तो बटुए से निकल ही चुका था, परमिट भी विदा लेने को ही थी। सेठ को क्रोध आ गया। मुनीम से कहा, "तुम बड़े मूर्ख हो! आओ भीतर; व्यर्थ का बतंगड़ा खड़ा कर रक्खा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने ?" मुनीम ने सोचा और नीची गर्दन करके गाड़ी में आ बैठा। गाड़ी चल दी।

सेठ ने कनखियों कर्मचारी के प्रति देखा। उसके चेहरे पर क्षोभ के कुछ चिन्ह अब भी बाकी थे। सेठ ने उन चिन्हों को पोंछने का निश्चय किया। कहा, "साहब, हमारा यह मुनीम बिल्कुल उजबक है। मनमाने काम किया करता है, आव देखता है न ताव।"

मुनीम ने सुन लिया; सांस दाब कर रह गया।

कर्मचारी बोला, "मुनीम क्या अपनी मर्जी से आया था ?"

"और नहीं तो क्या ?" सेठ ने उत्तर दिया।

मुनीम ने कुछ कहने के लिए सेठ की तरफ गर्दन मोड़ी और सीट से कुछ उझका। उसके चेहरे पर ग्लानि क्षोभ, निराशा और करुणा की स्पष्ट रेखाएँ अङ्कित थीं। परन्तु वह कह कुछ नहीं सका। फिर यथावत् बैठ गया।

जब कर्मचारी अपनी कोठी पर पहुँच कर गाड़ी से उतरा, सेठ ने बड़ी उत्कण्ठा के साथ उससे पूछा, "तो मुझ को कब आने की आज्ञा होती है ? कब तक मिल जायगा परमिट ?"

"कुछ नहीं कह सकता; हाल में तो कोई आशा मत करिए।" कर्मचारी ने उत्तर दिया और कोठी के भीतर चला गया।

सेठ ने ड्राइवर से कहा, "उस रास्ते से नहीं, दूसरे रास्ते से घर ले चलो।"

★

विश्वास

श्री बलवीरसिंह 'रङ्ग'

जाने क्यों तुमसे मिलने की आशा कम, विश्वास बहुत है!

सहसा भूली याद तुम्हारी उर में आग लगा जाती है!
विरहातप भी मधुर मिलन के सोए मेघ जगा जाती है!
मुझको आग और पानी में रहने का अभ्यास बहुत है!

धन्य धन्य मेरी लघुता को, जिसने तुम्हें महान बनाया!
धन्य तुम्हारी स्नेह-कृपणता, जिसने मुझे उदार बनाया!
मेरी अंध-भक्ति को केवल इतना मंद प्रकाश बहुत है!

अगणित शलभों के दल के दल एक ज्योति पर जल कर मरते!
एक बूंद की अभिलाषा में कोटि-कोटि चातक तप करते!
शशि के पास सुधा थोड़ी है, पर चकोर की प्यास बहुत है!

मैंने आंखें खोल देख ली है नादानी उन्मादों की!
मैंने सुनी और समझी है कठिन कहानी अवसादों की!
फिर भी जीवन के पृष्ठों में पढ़ने को इतिहास बहुत है!

ओ जीवन के थके पखेरू, बढ़े चलो, हिम्मत मत हारो!
पंखों में भविष्य बंदी है, मत अतीत की ओर निहारो!
क्या चिन्ता धरती यदि छूटी, उड़ने को आकाश बहुत है!

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kan

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्मरण—४

कांग्रेस में वक्तृत्व-

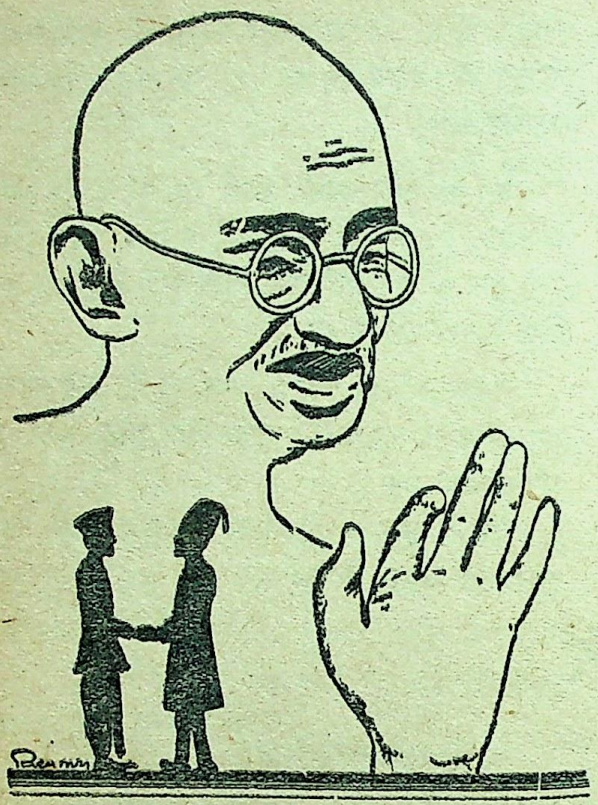

कांग्रेस में गांधी-युग

देश की राजनीति के इतिहास में गांधी-युग का आरंभ रौलट-ऐक्ट के विरुद्ध आंदोलन से हो गया था। उससे पूर्व महात्मा गांधी का कार्य-क्षेत्र मुख्यरूप से दक्षिण अफ्रीका में रहा था। वहां महात्मा जी ने गोरों की उग्र दमन-नीति का जिस दृढ़ता और सुन्दरता से मुकाबला किया था, उसके समाचारों ने भारत में उनका यश और गौरव बहुत विस्तृत रूप से फैला दिया था। तो भी हम कह सकते हैं कि क्रियात्मक रूप से भारत की राजनीति में उनका प्रवेश तब हुआ, जब उन्होंने रौलट-ऐक्ट के विरोध में सत्याग्रह की घोषणा की।

इस तरह भारत की राजनीति में तो महात्मा जी का प्रवेश १९१९ के आरम्भ में ही हो गया था; परन्तु कांग्रेस में उनका प्रवेश कई महीनों के पश्चात् हुआ। १९१९ के प्रारम्भ और अन्त के बीच में देश में जो घटनायें घटीं, उन्हें यहां पूर्णरूप से दोहराना आवश्यक नहीं। इतना ही स्मरण करा देना पर्याप्त है कि रौलट-ऐक्ट पर असन्तोष प्रकट करने के लिये सत्याग्रह-समिति की ओर से हड़ताल की घोषणा की गई, जिस से विक्षुब्ध होकर अंग्रेजों की सरकार ने अपना दिमाग खो दिया। फलतः जगह जगह गोली-कांड हुए, दंगे-फिसाद हुए और अन्त में पंजाब में मार्शल-ला लागू हुआ। इन सब घटनाओं ने देश के वातावरण को बिल्कुल बदल दिया। १९१९ से पहिले देश का जो असन्तोष आंदोलन के रूप में प्रकट होता था, उसने उस वर्ष के अन्त में क्रान्ति का रूप धारण कर लिया। इस महान परिवर्त्तन की केन्द्रीभूत मूर्ति महात्मा गांधी की थी।

उपर्युक्त परिवर्त्तन अमृतसर की कांग्रेस के अवसर पर बड़े मनोरंजक और सनसनीपूर्ण रूप में प्रकट हुआ। कांग्रेस के सामने जो मुख्य प्रस्ताव आने वाला था, उस पर वहां उपस्थित नेताओं में तीव्र मतभेद था। अनेक विचारधारायें एक दूसरे को काटती हुई प्रतीत होती थीं। मैं भी प्रतिनिधि के रूप में उस अधिवेशन में उपस्थित था। वहां स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि व्यतीत काल और वर्त्तमान के जोरदार संघर्ष से भविष्य का निर्माण हो रहा है। अन्त में जो परिणाम निकला, उसे हम कांग्रेस में महात्मा गांधी की प्रमुखता के नाम से पुकार सकते हैं। अमृतसर-कांग्रेस में पुराने नेताओं के हाथ से निकल कर कांग्रेस की बागडोर महात्मा जी के हाथ में आ गई। गांधी-युग अपने सब अंगों और उपांगों के साथ अवतीर्ण हो गया।

कांग्रेस के युग-परिवर्त्तन का जहां और सब चीजों पर प्रभाव पड़ा, वहां कांग्रेस की वक्तृत्व-कला पर भी बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उसमें भी क्रांति हो गई। वह क्रांति क्यों हुई और उसका क्या रूप था, यह समझने के लिये हमें पहिले यह देखना होगा कि महात्मा जी की वक्तृत्व-शक्ति की क्या विशेषतायें थीं? वे कैसे वक्ता थे? उनका संसार के बड़े वक्ताओं में कौन-सा स्थान था? साथ ही हमें यह भी देखना होगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला का क्रमिक ह्रास

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

★

प्रस्तुत लेख में विद्वान् लेखक ने महात्मा गांधी की वक्तृत्व-शक्ति का विवेचन किया है।

कि कांग्रेस पर महात्मा जी की प्रभुता का अन्य वक्ताओं की वक्तृत्व-कला पर क्या असर पड़ा ?

महात्मा गांधी वक्ता के रूप में

महात्मा जी का व्यक्तित्व अत्यन्त महान था। उसकी बहुत बड़ी विशेषता यह थी कि वह एक अखंड व्यक्तित्व था। महात्मा जी के बारे में यह भेद नहीं किया जा सकता कि उनका निजू-जीवन ऐसा था और सार्वजनिक जीवन वैसा। न यह ही कह सकते हैं कि उनकी राजनीति एक ओर को जाती थी और धर्म दूसरी ओर को। वह जीवन के प्रत्येक अंग में और प्रत्येक हैसियत में, बस, अखंड और एकरूप गांधी जी थे। ऐसे व्यक्ति के सार्वजनिक जीवन के एक छोटे से अंग—वक्तृत्व-शक्ति का विश्लेषण करना अत्यन्त कठिन कार्य है। तो भी जिस विषय पर मैं लिख रहा हूँ, उस पर एक पग भी आगे चलना असम्भव है, जब तक हम यह न समझ लें कि महात्मा जी की वक्तृत्व कला की क्या विशेषतायें थीं और उनके भाषणों की असाधारण सफलता का क्या रहस्य था ?

सामान्यरूप से प्रभावशाली वक्ता में निम्नलिखित गुणों की आवश्यकता समझी जाती है—

१. शरीर का प्रभावशाली गठन। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, लाजपतराय, गोखले आदि प्रसिद्ध वक्ताओं को यह विभूति प्राप्त थी।

२. ऊंचा और रौबीला कंठस्वर। यह तो बड़े वक्ता की विशेषता सर्वसम्मत ही है कि उसे आकर्षक और प्रभावशाली कंठस्वर प्राप्त हो। संसार के प्रायः सभी प्रसिद्ध वक्ताओं को परमात्मा की ओर से यह देन प्राप्त हुई थी।

३. वक्तृत्व कला का तीसरा प्रमुख अंग वक्ता के हाव और भाव हैं। वक्ता की प्रत्येक चेष्टा, उसके स्वर का उत्थान और पतन, उसके चेहरे की आकृति में भावों के अनुरूप परिवर्त्तन—ये सब चीजें श्रोताओं पर वक्ता के प्रभाव को अंकित करने का कारण होती हैं।

४. वक्तृत्व-कला का अन्तिम, परन्तु शायद सबसे प्रमुख अंग जोरदार और सुसंस्कृत शब्दों का प्रयोग है। सिसरो, बर्क, ग्लैडस्टन, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और लाजपतराय जैसे प्राचीन और नवीन वक्ताओं को जो सफलता प्राप्त होती थी, उसका एक मुख्य कारण उपयुक्त और प्रभावशाली शब्दों का वह प्रवाह था जो श्रोताओं को अपने साथ बहा ले जाता था।

यदि हम भावुकता छोड़ कर निष्पक्षपात दृष्टि से गांधी जी की वक्तृत्व-कला का विश्लेषण और विवेचन करें, तो हम उपर्युक्त चारों विशेषताओं का महात्मा गांधी में यदि अत्यन्त अभाव नहीं, तो अत्यन्त न्यूनता अवश्य पाते हैं। महात्मा जी का शरीर बहुत ही संक्षिप्त-सा था। उसे शरीर का केवल 'टोकन' कह सकते हैं। चेहरे में भौतिक सुन्दरता भी नहीं थी। कंठ-स्वर

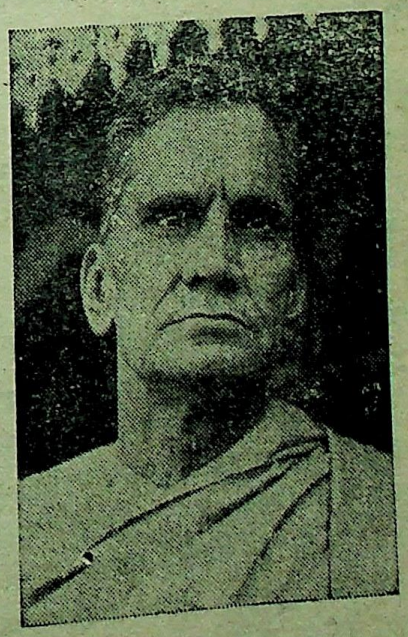

लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पष्ट तो था, परन्तु ऊंचा या थर्राता हुआ नहीं था। उस में उतराव-चढ़ाव भी अधिक नहीं होते थे। भावानुभाव का यह हाल था कि प्रायः बैठ कर बोलते थे। बोलने के समय शरीर को बहुत ही कम हिलाते-डुलाते थे। केवल एक हाथ उठाने की चेष्टा को छोड़ कर भाषण के समय कोई चेष्टा नहीं करते थे। भाषा के सम्बन्ध में यह तो मानना पड़ेगा कि वह अत्यन्त स्पष्ट और जोरदार होती थी; परन्तु उसमें न कोई जोरदार बनावट होती थी और न शब्दों के प्रवाह द्वारा श्रोताओं पर हावी होने की चेष्टा होती थी। इस प्रकार हम देखते हैं कि जिन विशेषताओं ने संसार के बड़े-बड़े व्याख्याता और 'आरेटर' बनाये हैं, उनका महात्मा जी में बहुत कुछ अभाव था। परन्तु फिर भी यह सर्वसम्मत बात है कि भारत के वातावरण में १९२० से ले कर १९४७ तक यदि कोई स्वर सबसे ऊँचा और सबसे अधिक प्रभावशाली सुनाई देता रहा है और यदि किसी स्वर ने एक युग तक ४० करोड़ निवासियों से भरे हुए देश पर एकछत्र शासन किया है, तो वह गांधी जी का स्वर था। यह एक वैज्ञानिक समस्या है कि जिन गुणों के कारण लोग सुवक्ता बनते हैं, उन गुणों के न होते हुए भी महात्मा जी इतने प्रभावशाली वक्ता किन कारणों से थे? वह कौन-सी विशेषतायें थीं जो उनके शब्दों में इतना गजब का ओज और प्रभाव भर देती थीं?

अद्भुत व्यक्तित्व

जिस समय महात्मा गांधी ने कांग्रेस के रंगमंच में प्रवेश किया; उस समय उनका अद्भुत और आकर्षक व्यक्तित्व बन चुका था। मनुष्य स्वभाव से जिन गुणों के सामने सिर झुकाता है, महात्मा जी में उन गुणों की विद्यमानता भारत-वासियों के हृदयों पर अंकित हो चुकी थी। उनके तप, त्याग और दृढ़ता की कहानियां समुद्र पार करके दक्षिण अफ्रीका से भारत तक पहुँच चुकी थीं। स्वभाव से भारतवासी जिन गुणों का आदर करते हैं, जिनके कारण वे मनुष्यों को ऋषि और मुनि की पदवी देते रहे हैं, महात्मा जी में वे गुण प्रकाशित हो चुके थे। वे जब अमृतसर-कांग्रेस की व्याख्यान-वेदी पर आये, तब उनका महान व्यक्तित्व

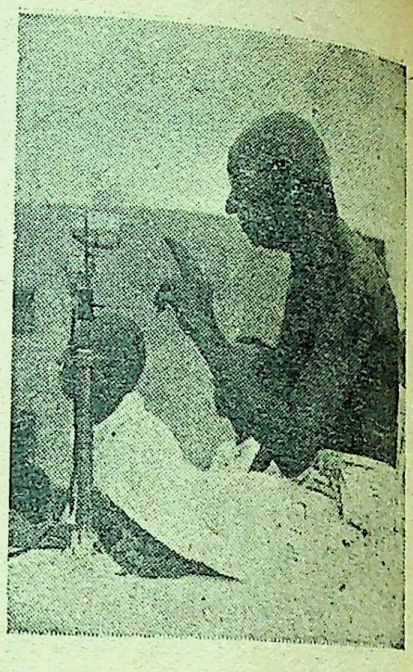

महात्मा गांधी

बन चुका था। यह पहिला कारण था कि उनके सीधे सादे शब्द भी श्रोताओं पर जादू का असर रखते थे। वह श्रद्धा का जादू था।

सत्य का बल

महात्मा जी की भाषा में यह विशेषता थी कि वह बहुत ही सरल और सीधी होती थी। उसमें शब्दों की गांठ नहीं होती थी और न हृदय के भावों को छिपाने के लिये शब्दों का जाल रचा जाता था। जब जैसा विचार करते थे, वैसा ही कहते थे। और जितना आवश्यक होता था, उतना ही कहते थे। जनता का यह विश्वास कि महात्मा जी सदा सत्य कहते हैं, उनके शब्दों की शक्ति को बहुत बढ़ा देता था। हृदय से निकले हुए शब्द न किसी कला की अपेक्षा करते थे और न किसी इंगित या चेष्टित की। वे अपना असर अनायास ही कर देते थे। यह गांधी जी के भाषणों के असाधारण प्रभाव का दूसरा कारण था।

शब्दों के पीछे क्रिया का बल

महात्मा जी के शब्दों को ओजस्वी और बलशाली बनाने वाली सबसे प्रमुख जो वस्तु थी, वह यह थी कि उनके राई जितने शब्द के अन्दर पर्वत जितनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिया अन्तर्हित रहती थी। वे जो कुछ कहते थे, उससे अधिक करने का संकल्प रखते थे और संकल्प को बहुत कुछ पूरा करने की शक्ति भी रखते थे। जो वाक्य अन्य वक्ताओं द्वारा कहा जा कर 'धमकी' इस नाम से पुकारा जा सकता था, वही वाक्य गांधी जी के मुख से निकल कर अन्तिम सूचना मात्र समझा जाता था। जब वे कहते थे कि मैं सत्याग्रह करूंगा, तो उसका अभिप्राय यही होता था कि वे सत्याग्रह करेंगे। जब वे यह स्थापना करते थे कि यदि सरकार ने अपना रुख न बदला तो देश में शान्तिमय क्रांति हो जायगी, तो वे उस क्रांति को उत्पन्न करने की मन्शा भी रखते थे और शक्ति भी। भारतवासी इस बात को जान गये थे और अंग्रेजी सरकार भी इस परिणाम पर पहुँच गई थी कि गांधी जी की कोई धमकी खोखली नहीं होती। एक शब्द की पीठ पर सौ क्रियाओं की गठरी लदी होती थी। इस कारण उनका एक शब्द अन्य वक्ताओं के सौ-सौ वाक्यों से अधिक बल रखता था।

ये तीन कारण थे जिनसे महात्मा जी के भाषणों का भारत की जनता पर, भारत-सरकार पर और धीरे-धीरे सारे विश्व पर अद्भुत और चमत्कारिक प्रभाव होने लगा था। हम कह सकते हैं कि महात्मा जी में भी एक वक्तृत्व-कला तो थी, परन्तु वह अन्य मनुष्यों से सर्वथा भिन्न, कृत्रिमता-विहीन वक्तृत्व-कला थी।

महात्मा जी की चमत्कारपूर्ण वक्तृत्व कला का देश के भाग्य निर्माण पर जो असर हुआ, उसे सारा संसार जानता है। कांग्रेस के रंगमंच पर आने वाले वक्ताओं की वक्तृत्व-शक्ति पर उसका क्या असर हुआ, यह मैं अगले लेख में बताऊंगा। —क्रमशः

★

"मेरी देश-भक्ति मेरे लिये उस लोक की यात्रा में, जहां सदा चिरन्तन आजादी और अनन्त शान्ति है, केवल रास्ते का एक पड़ाव है। जाहिर है कि मेरे लिये धर्म के बिना राजनीति कोई चीज नहीं है; मेरे लिये राजनीति धर्म का एक साधन मात्र है। जो राजनीति धर्म से अलग कर दी गई है, वह मौत का एक जाल है, क्योंकि वह आत्मा की हत्या करने वाली है।"

★

"मैं यह नहीं चाहता कि मेरे मकान के चारों तरफ ऊँची दीवारें खड़ी हों और सब तरफ की खिड़कियां ठूंस-ठूंस कर बन्द कर दी गई हों। मैं चाहता हूँ कि मेरे मकान के चारों तरफ सब मुल्कों की संस्कृतियां खुली हवा की तरह पूरी आजादी के साथ बहती रहें। लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि कोई हवा मेरे पांव उखाड़ दे।"

★

"कोई यह कहे कि मैं जैसा हूँ वैसा ही हूँ, तो इससे काम नहीं चलेगा। यह तो निराशा की बात हुई। सत्य का पुजारी यह कहेगा कि मुझे जैसा होना चाहिये? वैसा ही बनूंगा। मेरी तुमसे यह अपील है कि तुम इस चोले से बाहर निकलो और अपने आसपास के हर चेहरे में अपने आपको देखो। आदमियों के बीच तुम्हें अकेलापन क्यों महसूस होना चाहिये? अगर हम अपने पड़ोसियों की संगति में और उनकी सेवा में आनन्द न ले सकें, तो हमारा सारा तत्वज्ञान व्यर्थ है।"

★

"जो सत्य का पालन करना चाहता है, उसके पास गुप्त रखने जैसा एक भी विचार न होना चाहिये। बुरे-सुरे विचार भी दुनिया जान ले, तो चिन्ता नहीं होनी चाहिये। फिक्र तो बुरे-सुरे विचारों की होनी चाहिये। मेरी डायरी कोई देख लेगा, इस डर की जड़ में तो यह बात है कि हम जैसे हैं, उससे अच्छे दिखाई दें।"

—महात्मा गांधी

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप—दूसरों की नजर में

श्री 'अन्तर्दर्शी'

क्या आपने कभी सोचा है कि लोग आपको पसन्द करते हैं या नहीं ? यहां मनोवैज्ञानिक जांच के आधार पर एक प्रश्नावली दी जाती है, जिससे आपको अपनी व्यक्तिगत लोकप्रियता तथा मित्र बनाने की प्रवीणता के बारे में अन्दाजा लगाने का अवसर मिल सकेगा। प्रश्नों का उत्तर 'हां' और 'नहीं' में दीजिये और फिर सही उत्तरों से मिलाइये।

१. क्या आप अपनी सम्मति स्वच्छन्दतापूर्वक और अनमांगे ही देते हैं ?

२. क्या आप अपने तीन घनिष्टतम मित्रों से अपने आपको ऊंचा समझते हैं ?

३. क्या आप अकेले खाना पसन्द करते हैं ?

४. क्या आप समाचारपत्रों के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित हत्या, डकैती, लूटमार, लड़ाई-झगड़े इत्यादि के समाचारों को चाव से पढ़ते हैं ?

५. क्या इस प्रकार की जांच आपको पसन्द है ?

६. क्या आप अपनी महत्वाकांक्षाओं, असफलताओं और समस्याओं की दूसरों से चर्चा करते हैं ?

७. क्या आप जब-तब कर्ज लेते रहते हैं ?

८. क्या आप मदिरापान तथा भद्दे मनोरंजन के आदी हैं ?

९. किसी घटना का हाल सुनाते समय क्या आप उससे सम्बंधित प्रत्येक छोटी से छोटी बात भी कहते हैं ?

१०. क्या आप खर्च की परवाह न करते हुए भी यार-दोस्तों तथा महमानों को खिलाना-पिलाना पसन्द करते हैं ?

११. क्या आप अपनी उत्कट स्पष्टवादिता पर स्वयं गर्व करते हैं ?

१२. क्या आप नियत समय पर न पहुँच कर लोगों को इन्तजार करवाते हैं ?

१३. क्या आप सच्चे हृदय से (दूसरों के) बच्चों को प्यार करते हैं ?

१४. क्या आप अपने मनोरंजन के लिये दूसरों का भद्दे ढङ्ग से मजाक उड़ाते हैं ?

१५. क्या आप अधेड़ उम्र के व्यक्ति का किसी से प्रेम करना मूर्खतापूर्ण समझते हैं ?

१६. क्या आप ७ से अधिक आदमियों से आन्तरिक घृणा करते हैं ?

१७. क्या आप प्रतिशोध के लिए वैर-भाव को मन में पालते हैं ?

१८. क्या आप 'बुरी तरह से' 'भीषण रूप से' अथवा 'विकट रूप से' आदि वाक्यों का अधिकता से प्रयोग करते हैं ?

१९. क्या आप टेलिफोन की घंटी अथवा भिखारी और फेरी वालों की बातों से झल्ला उठते हैं ?

२०. क्या जो लोग संगीत, साहित्य और खेलों में आपकी तरह उत्साह नहीं दिखाते उन्हें आप मूर्ख और नीरस समझते हैं ?

२१. क्या आप अपने वायदे जितनी बार निभाते हैं, उतनी ही बार तोड़ते भी हैं ?

२२. क्या आप अपने परिवार के लोगों, अपने घनिष्ट मित्रों और अपने मालिकों की प्रायः उनके ही पीठ पर आलोचना करते हैं ?

२३. क्या काम बिगड़ जाने पर अथवा परिस्थिति के प्रतिकूल होने पर आप उदास अथवा निरुत्साह हो जाते हैं ?

२४. क्या आप अपने मित्रों की सफलता से प्रसन्न होते हैं (जब कि स्वयं आप से वे रुष्ट हो) ?

२५. क्या आप कभी गप्पबाजी में सम्मिलित होते हैं ?

(सही उत्तर 'मनोरंजन' के अगले अंक में देखिये।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चांदनी रात

श्री ईशकुमार

खिल गई धरा, खिल गया गगन!

झीने परदे में रात हुई,
जीवन-दीपों का मधुर-मिलन!
खिल गई धरा, खिल गया गगन!

जीवन की निर्मल धारा में
वह मंदिर-सलोना निखर गया,
लहरों में नभ-तल की आँखों
का तारा-तारा उतर गया,
दो चांद मिले गुपचुप-गुपचुप,
कितना सुन्दर यह सूनापन!
खिल गई धरा, खिल गया गगन!

पत्ते-पत्ते से झांक रही
रूपा रसवन्ती ज्योति किरन,
विश्वास दिलाता मलयानिल—
'यह है अनन्त मधु का यौवन!'
शशि-कर का पाकर सरस परस
धरती का पुलकित मरकत-तन!
खिल गई धरा, खिल गया गगन!

पृथ्वी दूधों न्हा ली जी भर,
हग में वासन्ती भर आई,
क्षण में मृदुतर किलकार लिये
तट तक जीवन-लहरी आई,
खोकर अपना अपनत्व आज
है नाच रहा जग का कन-कन!
खिल गई धरा, खिल गया गगन!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

अपमानिता

श्री नि० ही० वात्स्यायन

★

१९४२ की जन-क्रांति के समय विदेशी सरकार तथा उसके अमले द्वारा निरीह जनता पर किये गये पैशाचिक अत्याचारों का एक हृदय-विदारक चित्र।

पानी के उस पार, कुछ पेड़ों से घिरे गांव की कच्ची-पीली दीवारें दिखाई दे रही थीं। पानी से घिरे हुए शीशम के पेड़ों की टहनियां हिल-हिल कर ठण्डक का आभास दिला रही थीं। उन्हीं टहनियों के नीचे वाले घर का आंगन शान्त, स्तब्ध था। पास ही एक पुराना-सा खँडहरनुमा मकान था। धुंधली रोशनी में वह ऐसा मालूम होता था, जैसे कोई बूढ़ा, धुंधली आंखों से घूर कर देखता, ठगा-सा खड़ा हो।

कौवों की टोलियां एक के बाद एक, सिर पर से धीरे-धीरे मँडरातीं उधर अमराई की ओर उड़ जातीं। उनके आने के शब्द से पहले ही घोंसलों में बैठी छोटी चिड़ियां चहचहा उठतीं।

किन्तु उससे भी अधिक वे चौंकतीं उस छाया-मूर्ति की पग-ध्वनि से, जो सटर-पटर अपना चमरौधा जूता घसीटे, लाठी से राह टटोलते चली आ रही थी।

वह मानों अपनी मृत्यु की ओर जा रहा हो—ऐसा प्रतीत होता था। धूमिल, शून्य भाव लिये आंखें ऊपर की ओर उठी थीं, मानों किसी भयानक दृश्य को देखने की प्रतीक्षा में हों। ज्यों ज्यों वह गाँव के समीप आता जाता था, उसके पांव शिथिल होते जाते थे।

गांव को ढकने वाली निस्तब्धता अब दूर होती जा रही थी। जिस तरह बेहोशी से होश में आ रहा रोगी कुहकता है, उसी तरह गांव अब क्षीण ध्वनियां करने लगा था—थकी-सी, क्लान्त ध्वनियां……। अँधेरा घनीभूत हो गया था; किन्तु वे ध्वनियां कैसी थीं! मानों भूखे सियार दुःख से चिल्ला रहे हों। राघो मण्डर वह शब्द साफ़ सुन रहा था। वह रोमांचक भय से अभिभूत हो उठा, कांप उठा और खड़ा हो गया मन्त्र-मुग्ध-सा।

निराश आशा से प्रेरित होकर उसने साहस बटोरा और फिर गांव की ओर बढ़ा। गांव धुंधला-सा हो गया था। धूम के छप्पर कठिनाई से दिखाई देते थे। फिर भी राघो ने देखा, दो छाया-मूर्तियां गांव से आ रही थीं—एक के पीछे एक, मानों कुछ उठाये हों।

शीघ्र ही राघो मण्डर को पता लगा कि वे मानव-शरीर उठाये हैं। उसके पांव और धीरे हो गये। हृदय चिन्ता, भय, आशङ्का से तड़प उठा।

वह दूर से उन्हें देखता रहा। वे दोनों क्लान्त-श्रान्त-से गीली मिट्टी खोदने लगे और फिर जल्दी-जल्दी गड्ढा भरने लगे। भर कर फिर हाथ से मिट्टी समतल कर दी। फिर भी उभरी हुई वह जगह एक बड़ी-सी लिट्ट ऐसी मालूम पड़ती थी।

जमीन थाप-थाप कर वे दोनों उठे, गांव की ओर चले चुपचाप। राघो मण्डर ने सिर्फ एक दीर्घ श्वास सुना। उसने पहचाना—जाकर मियां और उसका पुत्र रहीम थे। आगे बढ़ कर उसने पूछा, "कौन था यह?"

वे दोनों रुके।

"बूढ़ा जहूर मियां," एक ने उत्तर दिया। "सुबह से ही मरे पड़े थे और कोई था ही नहीं; इसी से हमीं लोगों को……"

"बेर पहले ही मर गई थी; इसी के पास पड़ी थी—गन्दी जगह पर ही…।" दूसरे ने स्पष्ट करते हुए कहा, "बाकी लोग चले गये थे न, यहीं दो रह गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारे लगाते हुए लोग तोड़ फोड़ की कार्रवाई में लगे थे।

थे। लड़की शायद पानी के लिये जाते हुए ही गिर कर मर गई थी। आंगन में ही पड़ी थी—नंगी, कै-दस्त से लिथड़ी·····"

राघो मण्डर बिना कुछ बोले उन्हीं के पीछे हो लिया। एक प्रश्न रह-रह कर उसके कण्ठ में आता, किन्तु वह रोक लेता—पूछने का साहस न होता, उत्तर सुनने की क्षमता न थी।

आखिर रहीम ने चुप्पी तोड़ी, पूछा, "तुम कहां चले गये थे पांच-सात दिन से। तुम्हारा भाई तो लौट आया·····"

"कब ?" पूछते-पूछते राघो की गति तेज हो गई। वह उत्तर की अपेक्षा भी न कर सका। उसमें मानों शक्ति आ गई थी। वह लम्बे-लम्बे डग भरने लगा था। उसके मानस-पट पर नाना प्रकार के चित्र आ रहे थे। वह विचलित हो उठा था।

वह गांव में पहुँच चुका था। अन्धेरे में उसे कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं दिखाई दिया। वह अपने घर की ओर भागा·····

पांच दिन पहले ही तो उसने गांव छोड़ा था। चारों ओर हैजा, मलेरिया फैला था। वर्षा के दिन थे, गङ्गा भरी हुई थी। चारों ओर पानी ही पानी था। फिर भी उसने गांव छोड़ा था।

कुछ दिन हुए, एक फौजी जहाज गिर पड़ा था। कोई कहता था कि किसी ने मन्त्र पढ़ कर गिराया है, कोई कहता कि बन्दूक की गोली से गिराया है, कोई कहता कि स्वयं गिर है। किन्तु जहाज गिरा जरूर था। राघो अपनी आंखों से जाकर देख आया था—फैले हुए पङ्ख, उठी हुई दुम, पानी में इस तरह दिखाई देती थी, जैसे कोई भयानक मछली दलदल में फंस गई हो और सिर छुड़ाने के लिये फड़फड़ा रही हो।

उसने सुना था, उसमें जो छः गोरे थे, उन्हें लोगों ने मार दिया था। जहाज को तोड़-फोड़ कर लूट लिया था। वह चारों ओर सुनता था नारे—"इन्कलाब जिन्दाबाद!" "अंग्रेजो, भारत छोड़ो।" उसने सुना था, रेल, तार सब बन्द हैं। लोग दल बांधे घूमते थे। "बम्बई से आई आवाज, इन्कलाब जिन्दाबाद!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri C...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिल्लाते। उसे याद था, महावीर की स्त्री का रोषपूर्ण करुण चेहरा, जब कि वह भीड़ के सामने जा खड़ी हुई थी—उस भी ड़ सामने, जो महावीर को अकेला पुलिस की गोलियों के सामने छोड़ कर भागी थी, और पूछा था—"क्या मेरे ही साईं के लिये ही बम्बई से आवाज आई थी? उसके साथ तुम लोग न मर सके?"

और तब—पांच दिन ही पहले—अभी सुबह भी न हुई थी, जब कि वह चौंक उठा था—दूर कहीं बन्दूक की आवाज सुन कर। और तब ही उसकी लड़की सोना घबराई-सी आई थी और प्रायः उस पर गिर पड़ी थी। "घुड़सवार!" उसने कहा था। एक ही शब्द, किन्तु काफी था। वह समझ गया था।

और तब अन्धेरे ही अन्धेरे गांव से सब लोग भाग गये थे—आसपास खेतों में, झाड़ियों में छिपने। सरकारी फौज आई थी—उन मृत अंग्रेज-हवाबाजों का बदला लेने।

राघो मण्डर भी भागा था। अपनी स्त्री तथा सोनिया को उसने कुछ कीमती माल-पत्तर की गठरियां बांध भाई माधो के साथ भेज दिया था। माधो की स्त्री और पुत्र भी सब भाग गये थे। रह गये थे राघोमंडर की मां, वह स्वयं, छोटी लड़की रूपा तथा पुत्र किशना। वे भी बाकी सामान छिपा कर भागने की चेष्टा में थे। सामान आदि छिपा कर राघो ने मां, रूपा और किशना को पड़ोस के कुम्हार-पण्डित परिवार के साथ भेज दिया था। आप स्वयं रह गया था। गाय-बैल को सानी-पानी देकर ही तो जाता।

सारा गांव खाली ही था। कुछ वृद्ध-वृद्धायें या रोगी रह गये थे, बाकी सब भाग चुके थे। न जाने क्या होने वाला था। सारा देश उबल रहा था। यही तो इन्कलाब था न। सरकार तो उठ ही गई थी। कभी-कभी ही पुलिस तथा फौजी सिपाही नावों पर आते, फिर चले जाते। राघो ने देखा था, उनके आने पर लोग उन पर छिप-छिप कर गोली चलात। न जाने कहां से इतने बम, पिस्तौलें, बन्दूकें लोगों को मिल गई थीं। अभी कुछ ही दिन तो हुए, उस गांव का वह लड़का कितना भोला था—बम फटने से मर गया था। लोग कहते थे कि वह बम बना रहा था। राघो सिहर उठा। उसने भी देखा था वह क्षत-विक्षत शरीर। और फिर..... पुलिस आई थी। कुछ पता पाने के लिये उसने गांव वालों को बन्दूक के कुन्दों से मार-मार कर अधमरा कर दिया था। घर जला कर, लूट-पाट मचा कर पुलिस लौट गई थी।

इसीलिये अब लोग पुलिस या फौज के आते ही भाग खड़े होते थे। गांव खाली हो जाता था, फौजी लूट-मार कर चले जाते थे। जिसे पकड़ पाते, शहर भेज देते···जेल। जेल की याद आते ही राघो फिर कांप उठा। उसे भी तो कुछ दिन जेल में रहना पड़ा था। काले-काले तेल-सने सींखचे, जमादार की गालियां, सड़ा हुआ खाना—सब उसे याद पड़ गया। छूटने के लिये उसने चार सौ रुपये रिश्वत दी थी, चार सौ—साल भर की कमाई। इसी कारण तो सोनिया का ब्याह भी न कर सका था।

वह अज्ञातसार ही गांव के बाहर चला आया था। किन्तु सामने ही उसे दीख पड़ीं टार्च की सुरंगों सरीखी किरणें। वह लौट कर दूसरी ओर भागा। जब उसे घर वालों की याद पड़ी, तो रुका। किन्तु गांव घिर गया था, सिपाही गांव में दाखिल हो चुके थे।

उसने इधर-उधर पूछताछ की, किन्तु उसे मैया, रूपा, किशना का पता न चला। बाकी लोग सुरक्षित थे। शायद वे गांव से निकल न सके थे, शायद..... शायद.....

आज सुबह उसने देखा था, नावों पर फौजी चले जा रहे थे। किन्तु गांव पहले जैसा न रह गया था। राघो ने देखा था गांव के ऊपर उठता धुआं.....

और आज शाम को वह लौटा था—भय, आशंका से कम्पायमान। किन्तु अभी तक उसने सिवाय जले घरों के और कोई बुरी खबर न सुनी थी।

घर पहुँच कर उसने देखा, घर के बाकी सब लोग—माधो तथा उसकी स्त्री, सोना, सोना की मां, बच्चा—मौजूद हैं। मैया, रूपा तथा किशना का किसी को पता न था। सोना रो रही थी, राघो की स्त्री सिर पैरों पर रखे चुप पड़ी थी, माधो की स्त्री बच्चे को गोदी में लिये, सिर झुकाये बैठी थी और माधो चौकी पर बैठा था—लाल आंखें, धुंए ऐसा मुंह लिये।

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राघो ने क्षण भर सोच, माधो को कहा—"जाता ह.....।"

और वह पण्डित-परिवार की खोज में चला। वहां मालूम हुआ कि वे तीनों उनके साथ न थे। भागते समय डर कर रूपा किसी चीज की ठोकर खा गिर पड़ी थी, पैर मोच खा गया था, भाग न सकी थी। तब उसकी दादी भी किशना को गोद में उठाये वहीं रह गयी थी। फिर क्या हुआ, पता नहीं। वे लोग भाग गये थे उन्हें वहीं छोड़ कर; घंटा भर पहले लौटे हैं।

चेतनाहीन-सा राघो घर लौटा। लोगों ने सुना तो कहा, "आ जायगी....."

रात किसी ने कुछ खाया नहीं। पड़ रहे। राघो को ज्वर था। माधो, सोना आदि भी तीन-चार दिन पानी में रहने से खांस रहे थे। दुःख—गंभीर रोदनहीन दुःख में खाने की फिक्र कौन करता?

बाहर बादल की कड़क तथा हवा का खेल हो रहा था, मानों गांव वालों को दुःख के थपेड़ों से रुला कर आसमान अट्टहास करता हो। चारों ओर करुण क्रन्दन था। अपनी-अपनी टूटी गृहस्थी देख कर सब की आंखें भरी थीं।

नींद राघो को न लगी थी। उसे मालूम हो रहा था कि बाकी लोग भी जगे हैं—दुःख से, भय से, डर से सभी हिल उठते थे। बाहर से रह-रह कर सियारों का हुंकरना या कुत्तों का भूंकना सुनाई पड़ जाता था।

गांव के बाहर बंसबिट्टी से एक छाया-सी निकल गांव की ओर आ रही थी—मानों अन्धेरे में और भी घना अन्धेरा चलता हो। उसी को देख कुत्ते भूंक रहे थे।

वह छाया सरकती-सरकती राघो के दरवाजे पर आ पहुँची थी। कुत्तों का भूंकना तेज हो गया था—अनवरत, कर्ण-कटु। सोना डर कर उठ बैठी—क्या फिर सिपाही आये? द्वार पर वह हलका-सा धक्का.....वह थर थर कांपने लगी।

किन्तु साहस बटोर, आ कर द्वार खोला। दरवाजा खुलते ही वह छाया-मूर्ति, जो दरवाजे के सहारे बैठी थी, भीतर आंगन में लुढ़क पड़ी। सोना डर से चिल्ला उठी। राघो वगैरह सब जग कर दौड़े। देखा, बूढ़ी मैया थी।

उसे उठा कर अन्दर लाया गया। भीगे कपड़े बदले, टांग के घाव में पट्टी बांधी; किन्तु वह मानों उन्हें पहचानती भी न हो, इस तरह विस्फारित नेत्रों से उन्हें देखती रही।

सोना रो रही थी। राघो, माधो रह-रह कर रूपा, किशना का हाल पूछते थे। किन्तु बूढ़ी चुप थी। रह-रह कर अपनी लाल आंखों से सब को देख लेती थी।

"आग लगे इन नासपीटे अंगरेजियों को," राघो की स्त्री कुड़मुड़ाई, "न ये लोग गड़बड़ी करते, न सिपाही आते, न हमारी यह दशा होती।"

'सिपाही' शब्द पर बुढ़िया चौंकी। एक भयानक घृणा उस के नेत्रों में चमक उठी, बस। किन्तु देखने वालों का दिल दहल गया।

दो दिन के बाद कहीं बुढ़िया ने उस भयानक पांच दिनों का हाल बताया।

वह जब किशना को उठाये रूपा के साथ भागी थी, तो सामने ही से सिपाही आते दिखाई दिये थे। रात्रि के अन्धकार को भेदती उनकी टार्चों की किरणें इधर-उधर नाचती थी, मानों अट्टहास कर रही हों। अपने साथ के पण्डित-परिवार के साथ यह लोग भी खेतों में घुस पड़ी थीं, किन्तु रूपा का पांव किसी चीज में फंस जाने से वह गिर पड़ी थी। पांव मोच खा गया था, इसलिए भागने से लाचार हो गयी थी। बुढ़िया को वहीं रुक जाना पड़ा था। तब तक सिपाही आ गये थे और बाकी साथी अन्धकार में विलीन हो गये थे।

वे पकड़ी जाकर अफसर के सामने पेश हुई थीं। उनसे जहाजी गोरों के विषय में पूछताछ हुई थी। फिर वे छोड़ दी गई थीं।

सारा दिन सिपाही तलाशी के नाम पर गांव को लूटते रहे थे। रात को साहू जी के यहां अड्डा जमा था।

रूपा को लेकर बुढ़िया अपने घर आ गई थी। गांव से भागने की चेष्टा व्यर्थ थी। किशना बुखार से बेहोश था, रूपा दर्द से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीनों प्राणी भय से त्रस्त अपने घर में पड़े अपनी गृहस्थी के ध्वसावशेष को देख रहे थे। नींद किसे आती ? तभी बाहर से आवाज आई थी—'खोलो !" खुलने में देरी होने पर एक ही धक्के में किवाड़ टूट गया था। रूपा ने भागना चाहा था, किन्तु पिछवाड़े भी सिपाही देखकर लौट आई थी।

और तब तीन-चार सिपाही घुस आये थे भीतर। बुढ़िया को उन्होंने बांध दिया था। किशना को चिल्लाने पर एक ठोकर से दूर फेंक दिया था···और भय से थरथराती शब्दहीन रूपा को पकड़ लिया था।

"वह रो रही थी," बुढ़िया ने कहा था, "रह रह कर मेरी ओर देखती थी—जैसे बछिया अपनी मां की ओर देखे, किन्तु सिपाहियों ने उसे नहीं छोड़ा। ···और उस पर अत्याचार शुरू हुआ था। बेचारी ने बड़े हाथ पैर मारे, किन्तु ·····वह बेहोश हो गई थी। उसे लहू-लुहान छोड़ कर सिपाही चले गये। किशना ने मुझे खोला था। चोट उसे भी लगी थी—खांसता तो मुंह से खून निकलता। और रूपा ? रूपा वैसे ही पड़ी रह गई थी·····।"

राघो मंडर का सिर झुक गया था, जमीन से सट गया था—अपमान और शर्म से। औरतें सुबक रही थीं। बुढ़िया कहती गई—"सुबह मैं अफसर से शिकायत करने गई थी; उसने गाली दे कर भगा दिया था। बाद में शिकायत का बदला लेने सिपाही आये थे। मुझे नंगी कर मारा था, अपमानित किया था·····शाम को कहीं रूपा उठी थी। लँगड़ाती-लड़खड़ाती चली थी। मैं रोक भी न सकी उसे। वह वहीं धार में डूब गई थी। किशना भी मर गया था। मैं क्या करती ? गंगा जी में फेंक आई थी। तब से वहीं बंसबिट्टी में पड़ी थी। सियार मुर्दा समझ कर नोचने लगे, तो उठ कर आई थी घर में ही मरने·····।"

सोना फूट-फूट कर रो उठी। उसकी मां, चाची सभी की आँख बह चलीं। राघो पत्थर-सा बैठा रहा। माधो रह रह कर मुट्ठियां बांध लेता, नसें तन जातीं, भवें चढ़ जातीं, चेहरा भयानक हो रहा था। सटे हुए दांतों के बीच से बोला, 'बदला लूंगा·····।"

बुढ़िया ने एक क्षणिक दृष्टि उस पर डाली, चुप रही।

गांव भर में चर्चा फैल गई थी। राघो को निकलना मुश्किल हो उठा था। निकलता तो झुकाये, शर्म से कटा हुआ-सा·····

बूढ़ी मां घर पर नहीं रहती थीं, गांव भर में घूम सब को सुनाती अपनी कहानी। बहुएं रोकतीं, कहतीं "आगे ही सिर उठाने को जगह नहीं, और क्यों करती हो ?"

तो बुढ़िया उनकी ठोड़ी छू कर कहती, "आने सिपाही, अब की तुम्हारी बारी होगी। यह यह जोबन, यह·····"

बहुएं सिहर उठतीं।

गांव की औरतें उसे दयामिश्रित दृष्टि से देखतीं तो वह चिढ़ उठती, "मुझ पर दया करने की नहीं। मेरा क्या है, मैं तो बूढ़ी हूँ, कल जाउंगी। मैं नहीं मांगती दया। तुम अपने पर करो। अपनी ओर देखो, अभी जवान हो। फिर आवेंगे, तो देखना···"

वे डर से पीछे हट जातीं, किन्तु बूढ़ी की बन्द न होती—"जब तक सिपाही हैं और तुम औरतें हो, तुम्हारी रक्षा कौन करेगा ? कोई बन्दूक देख कर सब भाग जायंगे। मुझे ही दो-दो जवान बेटे थे, कौन काम आया ! देखो। बाप, चाचा, कोई बचा सका उसे ? सब गये। बन्दूक चीज ही ऐसी है। बन्दूक लो तुम मार दो सब को, भगा दो·····" बुढ़िया की तन जातीं, आंखें चमक उठतीं, सांस तेज हो "चिल्लाते थे, 'अंगरेजो, भारत छोड़ दो !' भगा देते हो अब ? अपनी मर्जी से छोड़ के ये ? तुम्हारी छाती पर चढ़ के बैठे हैं, चले तुम्हारे कहने से ? मारो, नहीं तो मेरी तरह तरह·····"

उसकी नजर माधो पर पड़ी। वह आगे था। मां के पास आ कर बोला, "मैं बदला लूंगा···लूंगा···।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात में वह गायब हो गया था। लोगों ने सुना उसने काली-सी एक चीज दिखा कर कहा था, "एक को मार दिया था, उसी की है—छः नाली!" बूढ़ी बड़ी खुश हुई थी। माधो फिर चला गया था।

कुछ दिन बाद आया था एक दिन। बूढ़ी को

गांव में रोज अफवाहें उड़तीं—फलां जगह गोली चली, फलां जगह रेल की पटरी तोड़ दी गई, वहां पुल टूटा·····। बुढ़िया सुनती, सुन कर कहती, "और···और उड़ा दो, खतम कर दो, मटियामेट कर दो!"

लाल आंखें, बिखरे बाल—वह एक दम भूतनी-सी लगती। गांव भर में घूमती, आस पास की बस्तियों में पहुँच जाती, हर जगह अपनी कहानी सुनाती, लोगों की बातों पर ध्यान न देती। उसका एक ही काम था, लोगों को उभाड़ना, 'अंग्रेजो, भारत छोड़ो' के नारे को बदल कर 'अंग्रेजों को भारत से निकाल दो' में बदल देना।

किसी साहस के काम को सुन कर वह उछल पड़ती। "शाबाश मेरे लाल!" कह उठती। हर नौजवान को कहती—"तुम सब की मां हूँ मैं—मां। क्या मां के अपमान का बदला नहीं लोगे?"

जब उत्तर मिलता, "जरूर लेंगे!" तो खुशी के आंसू आ जाते।

उसने सुना, पुलिस से लड़ते-लड़ते माधो मारा गया। वह हंस पड़ी। फिर सुना, सोनबरसा की चौकी पर हमला, भयानक लड़ाई, लोग बहुत-सी बन्दूकें छीन लाये हैं, तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। "ठीक है, मार दो सब को, उड़ा दो, सरकार को खतम कर दो!" वह कहती फिरती।

अब वह सिपाही को देख कर डरती न थी। सामने जा कर खड़ी हो जाती। "मां हूँ तेरी, कपूत कहीं के!" वह कहती। सिपाही सामने से हट जाते। सब उससे डरने लगे थे; उसे पकड़ते न थे।

उस दिन सभा हो रही थी। अगस्त-दिवस मनाया जा रहा था। वह भी पहुँची लोगों को चीरती हुई, मंच पर जा खड़ी हुई।

"देखो मुझे।" उसने चिल्ला कर कहा और अपना सारा वृत्तान्त कह सुनाया। भीड़ में क्रोध, जोश उबल पड़ा। 'चलो, चलो!' की आवाजें आईं और सारी भीड़ थाने की ओर चल पड़ी। बुढ़िया आगे थी।

पुलिस तैयार थी, लेकिन बन्दूकों का डर अब लोगों को न था। ईंट-पत्थर चले, बदले में गोलियां; किन्तु लोग जमे रहे।

पुलिस भाग खड़ी हुई। थाना एकदम से मिट्टी में मिला दिया गया—ईंट ईंट तोड़ दी गई।

बुढ़िया सरकार के इस प्रतीक का नाश बड़े धीर-भाव से देख रही थी। उसके कन्धे से खून की धारा बह रही थी, उसे पता भी न था।

भीड़ फिर बिखर गई। किन्तु बुढ़िया वहीं खड़ी रही। धीरे धीरे, ईंट-पत्थर के इस विनाश-दृश्य को देखती हुई बैठ गयी।

जब लोग उसे खोजने आये तो उन्होंने देखा, ईंटों पर बैठी थी वह—ईंटों का सहारा लिये, खून से लथपथ·····चेहरा मानों शान्त। वह मर चुकी थी।

★

डोंगरे का बालामृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Co

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

उजाला

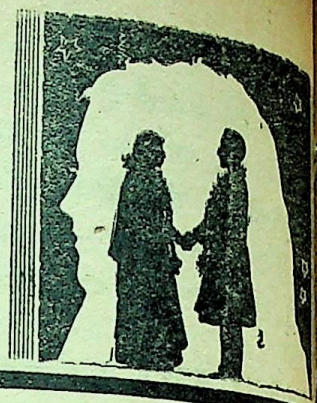

कुमारी सरलादेवी

अमावस की रात्रि में गाड़ी धरती के वक्ष को चीरती हुई भागी जा रही थी—छका-छक, छका छक। वायु तीव्र गति से सन-सन करती गाड़ी के डिब्बों से टकरा रही थी। गहरे अन्धकार के सन्नाटे में केवल यही दो छक-छक सन-सन की आवाजें थीं, जो रात्रि की निस्तब्धता को भंग कर रही थीं। बाहर शेष सब मौन था। गांव, छोटे-छोटे टीले, नदियां, पेड़ सब मौन थे। वे चुपचाप गाड़ी के सामने आते और फिर चुपचाप मीलों पीछे रह जाते—अन्धकार में गुम हो जाते।

गांव, टीले, नदी, नाले और पेड़ ही मौन नहीं थे, बल खाती हुई गाड़ी की पटरी भी मौन थी। आकाश पर सितारे भी मौन थे। सारी प्रकृति मौन थी। किन्तु जिस जनाने डिब्बे में ज्वाला थी, उस डिब्बे में बैठी हुई स्त्रियां मौन नहीं थीं। डिब्बा खचाखच भरा हुआ था। उसमें विभिन्न प्रदेशों की स्त्रियां थीं—सिन्धनें, पंजाबिनें, मराठनें। शक्ल-सूरत से सभी धनवान और उच्च घरानों की जान पड़ती थीं। उनके तन पर रेशमी वस्त्र और बहुमूल्य आभूषण, बटुओं में नोटों के बंडल। ज्वाला और एक अन्य लड़की के सिवा बाकी सब अधेड़ आयु की थीं। यौवन ने उनका साथ छोड़ दिया था, किन्तु इस पर भी उनके बनाव-सिंगार में कोई अन्तर नहीं आया था। सिंधनों ने साटन के पाजामें और करेप के कुरते और पंजाबिनों ने लट्ठे की सलवारें, सिल्क की चुस्त कमीजें, सफेद बारीक मलमल के दुपट्टे कंधों पर डाल रक्खे थे। मराठनों ने झिलमिलाते बार्डरों वाली साड़ियां लंगोट बना कर [illegible] हुई थीं। ज्वाला को यह पहनावा सबसे बुरा लगा। कम्बख्त साड़ी का सत्यानाश कर देती हैं। आगे से खैर अच्छी लगती हैं, किन्तु पीछे से उनके भारी-भ[illegible] निकले हुए कूल्हों को देख कर मन मतलाने लगता और लज्जा से आंखें बन्द कर लेने का मन चाहता है।

सभी स्त्रियां अपनी-अपनी भाषा में बातें कि[illegible] जा रही थीं। पंजाबिनें सबसे अधिक ऊँचे स्वर में [illegible] रही थीं—जोर जोर से हाथ हिला कर, नाक चढ़ा [illegible] और आंखें मटका-मटका कर। ज्वाला को लगा [illegible] बातों का तूफान उमड़ आया हो। यह बातें भी अ[illegible] तरह की थीं। बहुओं की निन्दा, सासों की निन्द[illegible] युवक-युवतियों की निन्दा। बस, निन्दा के अतिरि[illegible] मानों और कोई विषय ही बात करने को नहीं था। ज्वाला सोचने लगी—आखिर मनुष्य सदा आठों पह[illegible] दूसरों की बुराई क्यों करता रहता है? हरेक अपने [illegible] अच्छा और दूसरों को बुरा क्यों समझता है? अप[illegible] कमजोरियों का ध्यान क्यों नहीं करता? अपने भी[illegible] झांक कर अपने दोषों को क्यों नहीं देखता?

पंजाबिनें अकस्मात् खामोश हो गई थीं। कुछ [illegible] बाद ज्वाला का ध्यान निकट बैठी हुई एक मुसलम[illegible] पठान स्त्री की ओर आकृष्ट हुआ। वह स्त्री बहु[illegible] अच्छी हिन्दुस्तानी बोल रही थी। उसकी आयु पच[illegible] के लगभग होगी। गोरा रंग, तीखे नयन-नक्श, [illegible] में सोने का चमकता हुआ गुलूबन्द, कानों में लम्[illegible] लम्बे बुन्दे, काली करेप की सलवार, 'आंख के नी[illegible]

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वाला दस वर्ष तक अपने उस पति के प्रति वफ़ादार रही; जिसकी दृष्टि में उसकी वफ़ादारी का कोई मूल्य नहीं था। लेकिन एक दिन जीवन का अन्धकार छंटा और ज्वाला को उजाले की किरण दिखाई दी...

★

की कमीज और उस पर सफेद नून का दुपट्टा, केशों में मेंहदी, बूर्का कन्धे पर। बात-चीत से वह बिल्कुल पठान प्रतीत नहीं होती थी। उसका पहनावा भी तो पठान स्त्रियों जैसा नहीं था। फिर भी कोई व्यक्ति कैसा भी लिबास पहने हो, रूप-रंग और चेहरे की बनावट से पता चल ही जाता है कि वह कहां का रहने वाला है।

एक पंजाबिन बोली, "तो बहिन, तुम बम्बई से आ रही हो?"

"हां, बहिन! अपना अपना भाग है, जिस से न पूछो, वही इस दुनिया में सुखी है। मैं चार बरस के बाद अपने बेटे के पास गई थी। क्या करूं, मां जो हूँ, औलाद के लिये ममता जाग उठती है। पहले मैंने सोचा, बुलायेगा तो जाऊँगी; किन्तु क्या बताऊँ, जमाना कितना बुरा होता जा रहा है। लड़के मां-बाप को भूलते जा रहे हैं। बस, इन आजकल की छोकरियों के पीछे पड़ गये हैं।"

"ठीक कहती हो, बहिन!" पंजाबिन ने झट हां में हां मिलाई, और ज्वाला ने देखा कि यह सुन कर सामने कोने में बैठी हुई युवती के अधरों पर एक चंचल मुसकान फैल गई।

पठान स्त्री बोली, "इन छोकरियों का मिजाज तो देखो, कहती हैं हम पर किसी तरह की पाबन्दी न डालो, हमें नौकरी करने दो, सिनेमा देखने दो, शर्म-हया को पानी की तरह पीने दो···। खुदा की मार पड़े आजकल की इन छोकरियों पर!"

"खुदा की मार तो खूब पड़ी। देखो न इन फसादों में स्त्रियों की क्या दुर्दशा हुई है। घर से बेघर हुईं, पैसा गया, कपड़ा गया, इज्जत गई। इनके नंगे जलूस निकाले गये, कोई इन्हें भगा कर हिन्दुस्तान ले आया और कोई पाकिस्तान ले गया," यह कह पंजाबिन ने घृणा से अपना अच्छा-खासा मुंह बिगाड़ लिया।

"बहिन, सब मां-बाप का दोष है," पठान स्त्री बोली, "क्या मजाल जो मेरी लड़कियां कभी सिर भी नंगा कर जायें। गर्दन न उतार के रख दूं। खुदा के फजल से चार लड़कियां हैं और एक लड़का। आप यकीन करिये, अगर मेरी लड़कियों ने कभी सिनेमा तक देखा हो। स्कूल-कालिज की शक्ल तक नहीं देखी। वैसे मैंने खुद इन्हें घर पर कुरान-शरीफ पढ़ाया है। स्कूल में जा कर लड़कियां अक्सर खराब हो जाती हैं। औरत जात आजादी के लायक नहीं। अब देखो न, जरा-सी आजादी मिलने पर इन्हें क्या पर लग गये हैं—जिधर देखो, मुंह पर रंग पोते, बिना आस्तीनों के जंपर पहने, तरह तरह के ऊंचे नीचे बाल बनाये, सड़कों पर, हाट-बाजारों में घूमती फिरती हैं। मेरे अल्लाह, जो मर्दों के काम हैं, सभी इन्होंने संभाल लिये हैं। आफिसों तक में नौकरी करती हैं, पढ़ाती हैं, नाचती हैं, गाती हैं, सिगरेट पीती हैं, शराब पीती हैं···।"

"तभी तो यह प्रलय आई थी," पंजाबिन ने चमक कर कहा।

"लेकिन अब भी कौन-सी बाज आ गई हैं···," बात करते करते एकाएक पठान स्त्री चुप हो गई। उसकी दृष्टि सामने वाली सीट पर लेटी हुई अपनी युवा लड़की पर जम गई। वह बेचारी इन अंदसंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातों से बेखबर आराम से सो रही थी। सोते में कहीं उस की सलवार का एक पांयचा घुटने तक ऊपर उठ गया था और उसकी गोरी-गोरी पिंडली निरावरण हो गई थी। मां ने जो देखा तो चिल्लाई, "सदीका, सदीका, कैसे टाँगें खोले पड़ी हो? कम्बख्त, अपने जिस्म को तो ढांप।"

किन्तु सदीका उसी प्रकार सोती रही। उसके ऊपर के ओंठ पर पसीने की नन्ही-नन्ही बूंदें चमक रही थीं; निचला ओठ आर्द्र था और कांप रहा था, मानों स्वप्न में सदीका समस्त बन्धनों को तोड़ कर अपने प्रियतम के सामने खड़ी हो।

पठान स्त्री फिर चिल्लाई, "हरामजादी, पिंडली तो ढांप, तुझ पर खुदा की मार!"

लड़की हड़बड़ा कर उठ बैठी, "मां, क्या स्टेशन आ गया?"

"स्टेशन नहीं आयेगा तो क्या तू नंगी पड़ी रहेगी?" मां का चेहरा क्रोध से लाल हो रहा था।

लड़की ने आश्चर्य के साथ अपनी दृष्टि मां के मुख से हटा कर अपनी पिंडली पर डाली। सचमुच ही उसकी गोरी और सुकुमार पिंडली खुली थी। उसके अधरों पर सलज मुस्कान दौड़ गई। उसने शीघ्रता से पांयचा नीचे खींच लिया।

ज्वाला को उस युवती की यह अदा बहुत भाई। वह सोचने लगी, प्रत्येक सुन्दर वस्तु को आवरण में छिपा कर क्यों रखा जाता है?

पठान स्त्री फिर पंजाबिन से बोली, "बहिन, बेटे को मिलने का बड़ा चाव था; पर जब उसके पास गई, तो उसका बर्त्ताव देख कर सारा चाव काफूर हो गया। मैंने तो सपने में भी कभी यह न सोचा था कि मेरा बेटा भी ऐसा नालायक हो सकता है।"

"क्या काम करता है तुम्हारा बेटा?" पंजाबिन ने पूछा।

"भाग जल गये हैं, बहिन! उसने लाइन भी पकड़ी तो कौन-सी! म्यूजिक डायरेक्टर है फिल्म-कम्पनी में। आठों पहर तबला और हारमोनियम। इसीलिये तो उसमें पहले-सी बात नहीं रही। अब तो वह तरह-तरह के छोकरों और छोकरियों से घिरा रहता है। मैंने तो यह देख कर सिर पीट लिया। समझाया, बेटा यह क्या करतूतें हैं तेरी। यह सब छोड़, नमाज पढ़ कर खुदा से लौ लगा। तो कम्बख्त बोला, 'मां, यह सब नमाज-सिजदा जंजाल हैं। मजहब के नाम से तो अब मुझे चिढ़ हो गई है। इसी मजहब और धर्म के लिये तो आज इन्सान ने अपनी इन्सानियत खो दी है और ऐसी नीच हरकतें की हैं कि अब किसी मजहब और धर्म से सम्बन्ध रखने में शर्म आती है।' अब बताओ, उसके आगे कोई क्या कहे?"

"मेरा मोहन भी यही कहता है, बहिन!" पंजाबिन ने कहा, "सभी पढ़े-लिखे नौजवानों के दिमाग खराब हो गये हैं। नास्तिक होते जा रहे हैं। मोहन तो यहां तक कहता है कि ऐसे धर्म पर लानत, जो मनुष्य का मनुष्य से सम्बन्ध तोड़ दे। बहिन, संसार का अब अन्त होने वाला है।"

"हां, तो मैं तुम्हें अपने बेटे की बात सुना रही थी," पठान स्त्री ने पंजाबिन की बात को अनसुनी करते हुए कहा, "मैंने उसे बहुत समझाया कि पागलपन मत कर; छोड़ इस मिरासीपन को और चल मेरे साथ, तेरा विवाह करा दूंगी, तो कहने लगा, 'मां, मेरी शादी की चिन्ता मत करो। मैंने रजिया से निकाह कर लिया है।' मेरा तो बहिन, यह सुन कर खून खौलने लगा। न मालूम उस छोकरी ने मेरे भोले-भाले बच्चे पर क्या जादू कर दिया है। मिरासिन कहीं की!"

"यही तो लड़के-लड़कियों के खुले-आम मिलने-जुलने से बिगाड़ पैदा होते हैं।"

"ठीक है, बहिन! और मुझको तो गुस्सा इसलिये भी आया कि सामने उसकी जवान बहिन बैठी थी। मैंने लड़की को इशारे से अन्दर के कमरे में भेज दिया। फिर मैंने उसे बहुत समझाया कि एक बड़े अमीर घरानें की लड़की से तेरी शादी पक्की कर रही हूँ, मेरा जी न दुखा। किन्तु वह टस से मस नहीं हुआ। यह देख मैंने तो वहां से चलने की ठानी। क्या करती बहिन, साथ में जवान लड़की जो थी। डरती थी कि कहीं यह भी उसी रौ में न बहने लगे। क्वांरी लड़की की एक बार आब चली जाय, तो बस सारी उम्र के लिये गई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहिन, लड़कों की बात अलग रही," पंजाबिन बोली, "आजकल तो लड़कियां भी माता-पिता के सामने बिना किसी झिझक के कह देती हैं, मुझे फलां लड़के से विवाह करना है। अब देखो न, हमारे हिन्दू धर्म में पहले स्त्री अपने पति के जीवित रहते दूसरे से विवाह नहीं करती थी, चाहे उसे घर से निकाल दिया गया हो। किन्तु अब यह भी होने लगा है। हमारे पड़ोस में एक आदमी ने अपनी स्त्री को कुछ वर्षों से छोड़ रक्खा था। उस कलमुँही ने परसों किसी दूसरे आदमी से विवाह कर लिया। सच कहूँ बहिन, सत्यानासी के दिन आ गये हैं। आग लगे ऐसी स्त्रियों को, जिनका न लोक न परलोक!"

ज्वाला बड़े मनोयोग से दोनों की बातें सुन रही थी। यह अन्तिम बात सुनी तो मुस्करा कर खिड़की से बाहर मुँह निकाल लिया। वह सोचने लगी—आखिर हमारी सभी मां-बहिनें जब भी इकट्ठी मिल कर बैठती हैं, यही बातें क्यों करती हैं कि अमुक लड़की बहुत फैशन करती है, अमुक लड़का माता-पिता की आज्ञा नहीं मानता? भला इसके अलावा और कोई बात क्यों नहीं करतीं? समाज की अन्य त्रुटियों की ओर इनका ध्यान क्यों नहीं जाता? आखिर जमाने में और भी तो बहुतेरे विषय हैं, उनके सम्बन्ध में ये क्यों नहीं सोचतीं?

ज्वाला अधिक सोचने न पाई थी कि उन दोनों ने फिर वही घिसा-पिटा, पुराना विषय छेड़ दिया। पंजाबिन कह रही थी, "मैं कहती हूं, जो स्त्री अपने पति के जीवित रहते दूसरे से विवाह कर ले, उसे स्त्री कहना स्त्री-जाति का अपमान है। पूछो, दूसरा पुरुष क्या तुम्हें गद्दी पर बैठा देगा। मिलेगा फिर भी तुम्हें वही जो तुम्हारे भाग्य में लिखा है।"

"खुदा की कसम, बिल्कुल ठीक। क्या बात कही है। वाकई वह अपनी किस्मत को कैसे बदल लेगी? आखिर जो तुम्हारी किस्मत में लिखा है, वही तो हो कर रहेगा।"

और ज्वाला सोचने लगी—यह किस्मत की भी खूब रही। जमाने में जिस से कुछ न हो सका, उस ने झट भाग्य की आड़ ले ली। पति के छोड़ देने पर क्या स्त्री को पुरुष की आवश्यकता अनुभव नहीं होती? कितना अत्याचार होता है स्त्री पर इस संसार में! ज्वाला स्वयं अपने सम्बन्ध में सोचने लगी। दस वर्ष का समय कुछ कम तो नहीं होता। उसने खतम न होने वाले, दिखाई न देने वाले दस वर्ष अपने पति की प्रतीक्षा में काट दिये थे। दस वर्ष पहले वह कितनी लजीली और सुन्दर थी—जीवन की कड़वी हकीकतों से कोसों दूर। उसका अपना हर्षोल्लास से भरा हुआ जीवन था, जिस में आशायें थीं, उमंगें थीं और भावी जीवन की रंगीन कल्पनायें थीं। वह स्कूल में पढ़ने जाया करती थी, झूले पर बैठ कर सावन के गीत गाया करती थी। उसकी सुरीली आवाज सुन कर उसकी सहेलियां प्रायः कहतीं—"ज्वाला, तुम्हारा पति तो तुम्हारी जेब में बन्द रहेगा!" इस पर वह खिलखिला कर हंस पड़ती और उसे अपने साथ सारा संसार हंसता हुआ दिखाई देता।

और अभी उस की रातें इन्हीं उमंगों-भरे स्वप्नों में और दिन रंगीन कल्पनाओं में व्यतीत हो रहे थे कि उसका विवाह तय हो गया। ज्वाला की प्रसन्नता दुगनी हो गई। जब उसकी एक सहेली ने बताया कि तुम्हारा दूल्हा रमेश बड़ा सुन्दर है और बम्बई में उस का कारोबार बहुत फैला हुआ है, तो यह प्रसन्नता उस के कपोलों की लाली और आंखों की मादकता बन गई।

फिर एक दिन आया कि वह मां के घर से विदा हो रही थी। "बेटी, अब से तुम्हारा पति ही तुम्हारा सब कुछ है। उस की सदैव वफादार रहना। तुम्हारा मरना-जीना सब कुछ उसी के साथ है"—उस की मां रो रो कर वही जाने-पहचाने वाक्य दुहरा रही थी, जिन पर प्रत्येक विवाहिता स्त्री की विपत्तियों की नींव रखी जाती है।

और दस वर्ष तक वह अपने पति की वफादार रही थी—ऐसे पति की जिसकी दृष्टि में उसकी वफादारी का कोई मूल्य ही नहीं था। दस वर्ष तक वह अपने ससुराल में पड़ी रही, उसके यौवन का कुन्दन राख होता रहा। पति उसे अपने साथ बम्बई नहीं ले गया था। वह कभी-कभार ही बम्बई से आता और कुछ दिन ठहर कर वापस चला जाता। और जब वह साथ चलने के लिये कहती, तो वह सदैव यह कह कर टाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देता कि अगले महीने अवश्य ले जाऊँगा। और दस वर्ष तक वह अगला महीना नहीं आया।

ज्वाला ने अपनी जान पर सब कुछ सहा और उफ तक न की। उसने लोगों के ताने सुने, अपनी कठोर सास और नकचढ़ी ननदों के कोसने सहे, अपनी रातें रोते-छटपटाते, बेकरारी में काट दीं। किन्तु वह अपने पति के प्रति वफादार रही। और ऐसे दस वर्ष उसके यौवन का समग्र रस साथ लेकर व्यतीत हो गये।

आखिर एक दिन उसने सोचा कि उसे स्वयं कुछ करना चाहिये। क्या हुआ यदि रमेश उसे अपने साथ नहीं ले जाता, वह स्वयं उसके पास जा सकती है। और फिर एक दिन सबके मना करने पर भी उसने अपने पति को तार दे दिया और फिर एक दिन बम्बई रवाना हो गई।

स्टेशन पर जब उसका पति उसे लेने आया, तो उसकी त्यौरियां चढ़ी हुई थीं। स्टेशन से बाहर आये। किन्तु न तो मार्ग में और न ही घर पहुँच कर उसने ज्वाला से कोई बात की। बस, एक बार इतना पूछ लिया कि मार्ग में कोई कष्ट तो नहीं हुआ? इतना तो अपरिचित से भी पूछ लिया जाता है।

आठ दिन घर पर व्यतीत करने के पश्चात् ज्वाला को अनुभव हुआ कि उस ने बम्बई आ कर गलती की है। इन आठ दिनों में रमेश केवल दो रातें घर आया था। आखिर जब आठवें दिन उन दोनों का आपस में झगड़ा हुआ, तो रमेश ने उसे साफ-साफ कह दिया—"मैंने एक एंग्लो-इण्डियन लड़की से विवाह कर लिया है। मैं उसे बहुत चाहता हूं और वह भी मुझे बहुत चाहती है। तुम मुझे बिल्कुल पसंद नहीं हो। यह तुम्हारा पीला-पीला चेहरा, दुबला-पतला शरीर। बस तुम मुझे प्रसन्न नहीं कर सकती। मैं कुछ और चाहता हूं। दरअसल हिन्दुस्तानी स्त्री पुरुष को प्रसन्न रखना जनती ही नहीं। उसे यह जांचने की बुद्धि ही नहीं होती कि पुरुष किस समय क्या चाहता है···।"

और यह सब बकता-झकता रमेश फिर घूर से चला गया। अब की बार एक आंसू भी ज्वाला की आंखों में नहीं आया—यद्यपि वह इस से पहले रमेश के दिये जरा-जरा से दुःख पर घण्टों पड़ी रोया करती थी। और फिर यह तो बहुत बड़ा दुःख दिया था उस ने। तो भी अपनी विवशता पर रोने की बजाये इस बार ज्वाला के तन-बदन में आग-सी लग गई थी। वह क्रोध से पागल हो उठी। दस वर्ष का पुराना पातिव्रत्य और प्रेम का महल पल भर में टूट कर चकनाचूर हो गया।

और उस रात रमेश घर नहीं आया। वह बिस्तर पर पड़ी ताव खाती रही। सारा संसार सो रहा था। केवल एक ज्वाला जाग रही थी और जाग रही थी वह अन्धकारपूर्ण अकेली रात।

अगले दिन रमेश दुपहर को घर आया। किन्तु आज वह अकेला नहीं आया था; उसकी वह मेम उसके साथ थी। रमेश की इच्छा के अनुसार ज्वाला अत्यन्त स्नेह से उस मेम से मिली और जितनी देर वह उसके घर रही, ज्वाला उसकी आवभगत में लगी रही। घण्टे डेढ़ घण्टे के बाद जब वह विदा हुई और रमेश उसे छोड़ने चला गया, तो ज्वाला उठी, अपना आवश्यक सामान साथ लिया और चल खड़ी हुई।

और अब वह इस गाड़ी में बैठी थी, जो धरती के वक्ष को चीरती हुई भागी जा रही थी। किन्तु ज्वाला के विचारों का वेग उस गाड़ी से भी तेज था। और फिर इस गाड़ी की तो एक मंजिल थी; किन्तु ज्वाला की यात्रा जीवन की भांति गतिमय थी, जिसकी कहीं कोई मंजिल न थी। ज्वाला ने जीवन का रहस्य पा लिया था और अब वह इस विस्तृत संसार में अपना स्थान आप बनाने और एक स्वतन्त्र और सम्मानित जीवन व्यतीत करने निकल पड़ी थी।

और फिर एक नये उत्साह और नये उल्लास के साथ ज्वाला ने अपना सिर खिड़की के भीतर कर लिया। अमावस की काली रात बीत गई थी, अन्धकार छँट गया था और सूर्य्य की पहली किरण उस की आंखों में झांक रही थी।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुहाग-भरी होली !

श्रीमती शकुन्त गिरिजाकुमार

थक-थक के देख रही फिर-फिर मैं राह
चिबुक पर चमेली की पतली-सी कली धरे,
फिर-फिर बिछुड़तीं वे स्वप्न सी दिखी बातें !
कहां तक बताऊं, सखि !
सूनी लगती हैं मुझे फागुन की
रङ्ग-भरी ये रातें !
रस जब बरसता हो
पूर्ण सुधाकर से,
लगी हों सभी के अधरों से कटोरियां
अमर मिठास भरी,
रङ्ग भरे कमरों में छेड़-छाड़
हास-लास,
गूंज उठा रहीं मंद फाग की सुँदरियां !
चलीं भीगी-भीगी ही,
छिप-छुप उड़ाई
मूठी भर हल्के गुलाल की,
कितना सुख पाया !
दौड़ गई गोरे गालों पै
गुलाल से अधिक वह लज्जा की लालिमा,
खिंची आती सखियों के बीच से
ढीली पड़ सिहरन से
कस के बांह लेते में
छूट रही चन्दन की प्याली भी।
किस विधि मैं देखूं, सखी,
दृश्य रस रङ्ग भरे,
निकल रहीं सूनी सुहाग-भरी होली !

★

मुझको जीवन की चाह नहीं !

श्रीमती सरला सेवक

मेरे मन में उल्लास नहीं,
अपने पर भी विश्वास नहीं,
जिस पर उठ पांव स्वयं चल दें,
ऐसी तो कोई राह नहीं !
मुझको जीवन की चाह नहीं !
निशिदिन प्रतिपल पीड़ा रत मन,
आंखों के आगे सूनापन,
जो मेरे प्राणों को गति दे,
ऐसा कोई उत्साह नहीं !
मुझको जीवन की चाह नहीं !
मेरे जर्जर अरमानों को,
अभिशापों को, वरदानों को—
मिल पाई अब तक भी मेरे
पीड़ित अन्तर की थाह नहीं !
मुझको जीवन की चाह नहीं !
यह उन्नत सिर जिस पर रख कर
हो जाऊं जीवनमुक्त अमर,
सो जाऊं अन्तिम नींद मधुर,
ऐसी कोई दरगाह नहीं !
मुझको जीवन की चाह नहीं !

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

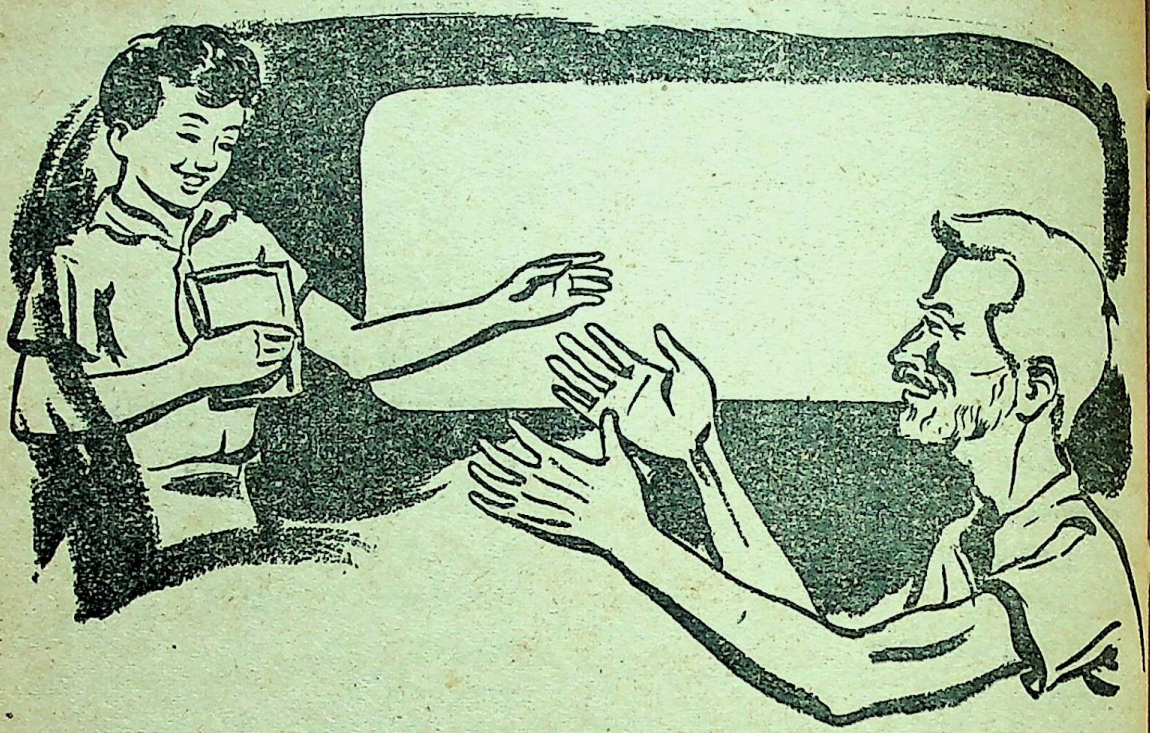

पथ-भ्रष्ट बालकों की समस्या

श्रीमती शान्ति गुप्ता बी० ए०; बी० टी०

भीड़-भड़क्के या मेले-ठेले में कभी आपकी भी जेब कटी है? यदि आप विशेषरूप से सावधान रहते हैं और कोई गिरहकट आपके ऊपर हाथ साफ नहीं कर सका है, तो आपने राह चलते चांदनी-चौक जैसे किसी बड़े बाजार में ऐसे दृश्य तो अवश्य देखे होंगे कि अभी-अभी किसी की जेब कट गई है और वह व्यक्ति परेशानी की हालत में एक लड़के को पकड़े खड़ा है और कह रहा है—"दे मेरा पर्स, नहीं तो पुलिस के हवाले करता हूँ।" लड़का बड़ी दीन-सी मुद्रा बना कर हाथ जोड़ रहा है, कहता है—"बाबूजी, मैं क्या जानूं कैसा पर्स, मैं तो खड़ा ट्राम का इन्तजार कर रहा था।" यदि आप भी वहां खड़े हो गये हैं, तो लड़के को देख कर आप भी यही कहेंगे कि लड़का निर्दोष और सीधा-सादा है, बाबू जी को भ्रम हो गया है, पर्स तो कोई और बदमाश उड़ा कर ले गया होगा। यदि तलाशी लेने पर भाग्य या दुर्भाग्य से पर्स उस लड़के के पास से निकल आता है, तो बस फिर देखिए—लड़का पिटता है और फिर पुलिस के हवाले किया जाता है। तब आपके मन में यह विचार अवश्य आयेगा कि इतना छोटा-सा लड़का है और कैसा गजब करता है! कितनी सफाई है इसके हाथों में! ऐसे विचार आने तो स्वाभाविक हैं, किन्तु कभी आपने यह विचारने की चेष्टा भी की है कि आखिर यह लड़का अधःपतन की इस स्थिति को कैसे पहुँच गया? इसने जब इतनी छोटी अवस्था में यह सफाई है, तो बड़ा होकर कैसा पक्का चोर बनेगा और देश अथवा समाज को कितनी क्षति पहुंचायेगा? यह बुरा आचरण बचपन से क्रमशः बढ़ते-बढ़ते एक दिन मनुष्य को बहुत बड़ा डाकू बना देता है। कारागार के बन्दियों का इतिहास बचपन से अवश्य ही ऐसा रहा होगा। अतएव यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाजहित की दृष्टि से प्रस्तुत लेख का की महत्वपूर्ण है; इसकी लेखिका श्रीमती शांति गुप्ता दिल्ली की 'चिल्ड्रन्स एड सोसाइटी' से सम्बद्ध हैं और गत दस वर्षों से पथ-भ्रष्ट बालकों के सुधार के कार्य में लगी हुई हैं, इसीलिये वे इस लेख में विचारणीय समस्या का प्रामाणिक ढंग से विश्लेषण कर सकी हैं।

हम देश के हित के लिए कारागार के अपराधियों की संख्या घटाना चाहते हैं, तो देश के पथ-भ्रष्ट बच्चों को सम्हालना होगा। बचपन में पड़ी कुटेव आजन्म नहीं छूटती—इस सत्य को लेकर बच्चों को बचपन से ही कुसंगतियों और कुसंस्कारों से बचाना चाहिये। उनमें अच्छे संस्कार भरना देश और जाति की सच्ची सेवा है।

पथ-भ्रष्ट बालक कौन है ?

पथ-भ्रष्ट बालकों को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—

(१) निराश्रित—जिन बालकों के मां-बाप या तो मर गए हों या बिछुड़ गए हों। या जिनके मां-बाप उनकी ओर से उदासीन हों अथवा स्वयं भी पथ-भ्रष्ट हों।

(२) कुसंगति-ग्रस्त—जो बालक बिगड़े लड़कों अथवा बदमाशों की संगति में रह कर नशा करना, जुआ खेलना, भीख मांगना, वेश्याओं के यहां जाना सीख जाते हैं; अथवा जिनके संरक्षक ही उनके नाश

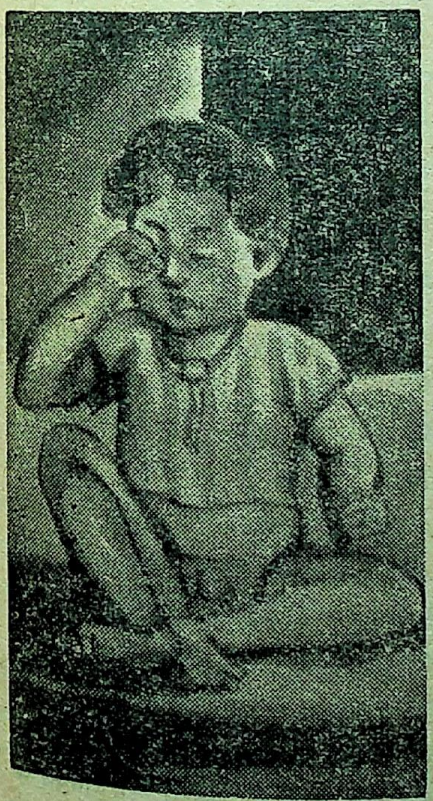

मातृ-पितृ स्नेह से वंचित तथा उपेक्षित बच्चे बड़े होकर आवारा हो जाते हैं।

का कारण बन जाते हैं।

(३) किशोर अपराधी—किशोर अपराधी वे किशोर बालक हैं, जिन्होंने कानून की दृष्टि में कोई ऐसा भयंकर अपराध किया हो, जिसकी सजा काला पानी या फांसी तक हो।

कुछ समय पहले तक अपराध-शास्त्र के पण्डितों का यह विश्वास था कि पथ-भ्रष्ट बालकों में अपराधी-प्रवृत्ति वंशानुगत होती है, अतः असाध्य होती है। किन्तु हाल ही में डाक्टर सिरिलबर्ट ने २०० पथ-भ्रष्ट बालकों की जीवनियों के अध्ययन से यह धारणा गलत सिद्ध की है। उन्होंने पता लगाया कि ८० प्रतिशत बालकों के परिवारों में अपराध का कोई इतिहास तक न था और केवल ११ प्रतिशत बालकों के सम्बन्धियों को अपराध के लिए सजा मिली थी। मतलब यह कि बालक अपराध के वातावरण में रह कर ही अपराधी-वृत्ति ग्रहण करता है; मां-बाप से लेकर नहीं जन्मता। दूसरे शब्दों में, किसी भले घर का लड़का भी पथ-भ्रष्ट हो सकता है। बालकों के बिगड़ने के निम्नलिखित मुख्य कारण हैं —

१. घर

(अ) घर की गरीबी—इस में कौन आश्चर्य की बात है कि एक भूखा बच्चा पास में हलवाई की दुकान पर सजे हुए लड्डुओं के थाल में से कुछ लड्डू चुरा ले, अथवा एक बे-घर निराश्रित बालक भिखमंगा न होकर चोर बन जाय। गरीबी के कारण मां-बाप आजीविका कमाने के लिए दिन भर बाहर रहते हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collecti

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों को मां-बाप का प्रेम और निरीक्षण नहीं मिल पाता, वे खाली रह कर बुरी-बुरी बातें सीख जाते हैं।

(आ) गृह-कलह—मां और बाप के आपस के कलह और झगड़े का प्रभाव बच्चों पर बड़ा भयंकर पड़ता है। वे आपस में झगड़ते और बच्चों के प्रति उदासीन हो जाते हैं। फलतः बच्चों पर ठीक नियंत्रण नहीं रहता और बच्चे मनमानी करने लगते हैं।

(इ) घर का दूषित वातावरण—मां-बाप स्वयं भ्रष्ट आचरण के हैं, यह जान कर बालक स्वभावतः उनका अनुकरण करने लगता है। बच्चे के कोमल व कच्चे विचारों पर इससे अधिक कुसंस्कारों की छाप और क्या लग सकती है, जब वह देखता हो कि उसके मां-बाप जो कुछ कमाते हैं, शराब और जुए में उड़ा देते हैं, शराब पी कर गन्दा आचरण और निकृष्ट कर्म करते हैं। यह सब देख कर उसके मन में विकार उत्पन्न होने लगते हैं और वह धीरे धीरे बुरे कामों की ओर प्रवृत्त हो जाता है।

(ई) बेरोजगारी—बाप यदि जीविकाहीन है, तो लाचार हो कर मां को काम करने बाहर जाना होता है, जिस के फलस्वरूप बच्चे उपेक्षित रह जाते हैं। मां के नैसर्गिक प्रेम को न पाकर वह उस कमी को कुसंगति से पूरा करने का प्रयत्न करते हैं। कभी कभी बेरोजगार बालक भी अपनी भूख मिटाने के प्रयत्न में अपराध कर बैठता है।

२. फिल्में

आजकल की फिल्मों के निर्माता यह भूल बैठे हैं कि फिल्मों के देखने वाले युवा रसिकजन ही नहीं, बच्चे भी हैं। उन्हें तो केवल रुपया चाहिए, चाहे देश और जाति रसातल को जायें। कुछ फिल्मों में गिरहकटों, चोर-डाकुओं और बदमाशों के ऐसे दिलेरी के काम दिखाये जाते हैं कि जिन्हें देख कर किशोर मन फड़क उठता है और स्वयं भी हाथ की सफाई सीखने में लग जाता है। मदिरा-पान तथा कामुकतापूर्ण दृश्यों का भी कुप्रभाव बच्चों के मस्तिष्क पर पड़ता है।

३. दुकानों में आकर्षक वस्तुओं का प्रदर्शन

दुकानों के शो-केसों में सजी हुई नाना प्रकार की खेल और प्रमोद की वस्तुएं देख कर किस बच्चे का मन नहीं ललचा उठता? मनचाही वस्तु लेने योग्य पैसे तो किसी ही बच्चे के पास होते होंगे; अतः जब किसी गरीब बच्चे का मन उन्हें लेने के लिए आकुल हो उठता है, तो वह चुरा कर या उड़ा कर उन्हें लेने का प्रयत्न करता है।

४. स्कूल

पढ़ाई से जी चुराने वाले बालक भी पथ-भ्रष्ट बालकों की श्रेणी में आते हैं। वर्त्तमान शिक्षा-पद्धति का यह दोष है कि सभी बच्चों के लिए एक ही पाठ्य-क्रम रहता है। विचारणीय बात है कि एक कक्षा के ३० बच्चों की बुद्धि का स्तर एक-सा कैसे हो सकता है। किसी की बुद्धि कुशाग्र होती है, किसी की साधारण और किसी की मन्द—कोई-कोई निपट मूढ़ भी होता है। कहने का अभिप्राय यह है कि बौद्धिक धरातल के अनुरूप ही बालक की पढ़ाई होनी चाहिए। पाठ्य-क्रम अनुकूल न होने से बालक स्कूल से जी चुराने लगते हैं और घर से पढ़ने के बहाने गली-मुहल्लों या दूसरे लड़कों के घरों में समय बिताते हैं, जहां पर बुरी आदतें सीखते हैं और आवारा हो जाते हैं।

५. गली में खेलना

यों तो बिना निरीक्षण का कोई भी खेल हानि ही पहुँचाता है, किन्तु गली-मुहल्ले में आवारा लड़कों के साथ गोलियों और कौड़ियों का जुआ जैसे खेल बालकों को चोरी इत्यादि की आदतें सिखा देते हैं। हार भुगताने के लिए घरों से पैसे चुराये जाते हैं, चार दोस्तों की दावत के लिए रुपये उड़ाने पड़ते हैं और कुसंगति में पड़ कर फिर जेवरों की चोरी तक नौबत आ जाती है।

पथ-भ्रष्टता के उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त सौतेली मां का अत्याचार, अवकाश के समय मनोरंजन के साधनों का अभाव, किसी भी विषय को लेकर मस्तिष्क में द्वन्द्व उत्पन्न होना इत्यादि और भी कई कारण हैं। इन सभी कारणों को जान लेने के पश्चात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों में यह जिज्ञासा उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि आखिर इस प्रकार के बिगड़े-आवारा लड़कों को कैसे सुधारा जा सकता है ? पथ-भ्रष्ट बच्चों के सुधार के दो तरीके हैं—एक तो निरोधात्मक और दूसरे उपचारात्मक।

विष-वृक्ष को जड़ जमने से पहले ही उखाड़ कर फेंक देना चाहिए, इससे सभी सहमत होंगे। अतः निरोधात्मक उपाय ही अधिक सफल और लाभदायक है। किन्तु हमारे देश में इनका प्रयोग बहुत ही कम है, अथवा कहिए नहीं के बराबर है। मां-बाप द्वारा बच्चों को सदाचार की शिक्षा, मां-बाप को बच्चे के प्रति कर्त्तव्य की शिक्षा, स्कूल की शिक्षा में कुछ परिवर्त्तन, अवकाश के समय का सदुपयोग करने के लिए बाल-मनोरंजन-केन्द्रों की स्थापना, बालकों के योग्य फिल्मों का निर्माण इत्यादि ध्यान देने योग्य हैं। बच्चों में अपराधी-वृत्ति को रोकने के लिये बेरोजगारी का उन्मूलन भी आवश्यक है। हमारी सरकार का कर्त्तव्य होना चाहिए कि देश में सब को उनकी योग्यता के अनुसार काम मिले और कोई बेरोजगार न रहे। समुन्नत देशों की तरह यहां भी बेरोजगारी के भत्ते की व्यवस्था होनी चाहिये।

उपचारात्मक उपायों का उद्देश्य बालक को उसके अपराध के लिए सजा देना नहीं है, वरन् उन उपायों का प्रयोग करना है, जिन से वह बालक अपने पिछले कुसंस्कारों को छोड़ नये सिरे से अपना जीवन आरम्भ कर सके—उसे ऐसे वातावरण के बीच रखना है, जिसका उसके तन, मन और आत्मा पर स्वास्थ्यप्रद प्रभाव पड़े, क्योंकि मनुष्य अपने वातावरण की ही उपज है। ये उपचारात्मक उपाय मूलतः तीन हैं—

१. आजमाइशी रिहाई

पथ-भ्रष्ट बालक अदालत द्वारा नियत किए गए एक अफसर विशेष के निरीक्षण में रहता है। अपने घर पर रह कर स्कूल में पढ़ना, कोई अन्य कार्य सीखना, ठीक दिनचर्य्या के अनुसार चलना, आदतें सुधारना और बच्चों की अदालत द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करना—इस स्थिति में यह सब आवश्यक है। यह अफसर विशेष उस बालक का एक तरह से हितैषी मित्र होता है, जो उसकी कठिनाइयों को समझता है और उसकी सहायता करता है। इस अफसर को 'प्रोबेशन आफिसर' कहते हैं।

२. बाल-संस्था में रख कर सुधार

गन्दे वातावरण, बुरे साथियों की संगति, कर्त्तव्य-च्युत मां-बाप के प्रभाव से निकाल कर बालक को ऐसी संस्था में रखा जाता है, जहां पर पिछले जीवन की गन्दगी से तो मुक्ति मिले ही, साथ ही उसकी प्रवृत्तियां अच्छे कामों की ओर भी प्रेरित कर दी जायें। उसे सबेरे से ले कर सोने के समय तक इस तरह व्यस्त रखा जाय कि अपने पिछले जीवन के विषय में सोचने का या पिछले कुसंस्कारों को जगाने का अवसर ही न मिले। ऐसा प्रबन्ध कर देना चाहिए कि उसका मन पढ़ने-लिखने में, दस्तकारी आदि सीखने में और खेल-कूद में लग जाये। कुछ समय तक ऐसे नियमित और अनुशासित जीवन में रह कर बिगड़े हुए बालक ठीक राह पर चल निकलते हैं।

३. किसी आदर्श-गृह में देखभाल

बच्चे के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए जिस वातावरण की आवश्यकता होती है, वह अच्छी से अच्छी बाल-संस्था की अपेक्षा किसी मध्यम श्रेणी के कुटुम्ब में कहीं अधिक मिल सकता है। जिन पथ-भ्रष्ट बालकों के मां-बाप नहीं हैं, या जिनके मां-बाप का आचरण ठीक नहीं है, उनको दूसरे अच्छे परिवार में रख कर उनकी प्रारंभिक शिक्षा के अभाव को दूर करके ठीक राह पर लगाना ही इस उपचार का उद्देश्य है। ये घर दो प्रकार के होते हैं। एक तो निःशुल्क और दूसरे सशुल्क। इन गृहों की व्यवस्था के लिए एक अफसर-विशेष नियुक्त होता है, जो बालक तथा Foster-Home या पालक-गृह की देख भाल करता है और संरक्षक व बालक की कठिनाइयों को दूर करता है। यह प्रथा हमारे देश में अभी तक प्रचलित नहीं है। एकाध ही ऐसा घर है और उसमें भी एक दो ही बच्चे भेजे गये हैं। हां, दिल्ली में इस प्रकार का एक सफल आयोजन सरकार द्वारा अधिकृत 'चिल्ड्रन्स एड सोसायटी' नामक संस्था है। इस की स्थापना १९३६ में लेडी ग्रिग के संरक्षकत्व में हुई थी। प्रारम्भ में ऐसे कानून के अभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जो पथ-भ्रष्ट बालकों पर लागू किया जा सके, काम में बहुत कठिनाइयां होने लगीं। अतः अपने साथ जनमत का बल लेकर सरकार पर जोर डाला गया और सन् १९३८ में 'चिल्ड्रन ऐक्ट', जो कि बम्बई-प्रांत के चिल्ड्रन-ऐक्ट पर आधारित है, पास हो गया। उपर्युक्त संस्था इसी एक्ट के अनुसार कार्य करती है। इसका उद्देश्य १६ वर्ष की अवस्था से कम उम्र के पथ-भ्रष्ट बालकों का निरीक्षण, संरक्षण और शिक्षण है।

चिल्ड्रन ऐक्ट कार्यरूप में कैसे परिणत होता है, यह भी संक्षेप में बता देना आवश्यक है। सबसे पहले जुवेनाइल-कोर्ट अर्थात् बच्चों की अदालत की आवश्यकता पड़ती है, जहां पर बालक पुलिस द्वारा पकड़े जाने के बाद उपस्थित किया जाता है। यह अदालत अन्य अदालतों की तरह भयावह स्थान नहीं है। इसका उद्देश्य बच्चों को सजा देना न होकर उन्हें सुधारना है। यहां पर कैदी के लिए कोई कटघरा नहीं होता। अपराधी बालक को बिना हथकड़ी के उपस्थित किया जाता है। अदालत में मजिस्ट्रेट, प्रोवेशन ऑफिसर, पुलिस का वकील, बालक का बाप और उसका वकील उपस्थित रहते हैं। गवाहों को बारी-बारी सबूत के लिए बुलाया जाता है। इनके अतिरिक्त अदालत में दूसरे आदमियों को आने की अनुमति नहीं होती। मजिस्ट्रेट बच्चे से बड़ी सहानुभूति के साथ उन सब कारणों को जानने का प्रयत्न करता है, जो उसकी इस अवस्था के लिये उत्तरदायी होते हैं। अदालत का सीधा-सादा वातावरण भी इसी उद्देश्य से रक्खा जाता है कि बालक कहीं आतंकित होकर घबरा और डर न जाय और सच-सच बता सके। पुलिस का सबूत हो चुकने पर 'प्रोवेशन ऑफिसर' से रिपोर्ट मांगी जाती है। वह ऑफिसर अपनी रिपोर्ट में बच्चे के घर, मां-बाप के आचरण, स्कूल के साथी, या उसके कारखानें आदि के सम्बन्ध में उचित छान-बीन के पश्चात् आवश्यक सूचना देता है। उसकी रिपोर्ट में बालक के लिए उपयुक्त उपचारों का सुझाव भी होता है। अदालत की कार्यवाही पूरी होने के पश्चात् यदि यह प्रमाणित हो जाय कि बालक अपराधी है, तो उपचार के उन उपायों पर विचार किया जाता है, जिनसे बालक का जीवन सुधरे और जो सबसे उपयुक्त उपाय होता है, वह उसके लिए निर्धारित कर दिया जाता है। इन उपचारात्मक उपायों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है—

(१) बालक को डरा-धमका कर छोड़ दिया जाय।

(२) मां-बाप, संरक्षक या अन्य सम्बन्धियों से, जिनके पास बालक रहता है, उसके अच्छे चाल-चलन की जमानत लेकर उसे उन्हीं के सुपुर्द कर दिया जाय। यदि संरक्षक स्वयं आचरण-भ्रष्ट है, तो बालक को अन्य किसी योग्य व्यक्ति, सगे-सम्बन्धी अथवा संस्था की संरक्षणता में दे दिया जाय।

(३) बालक के लिए अदालत स्वयं कोई संरक्षक नियुक्त करे और बालक उसकी देख-रेख में छोड़ दिया जाय।

(४) बालक को अच्छे आचरण का वचन देने पर आजमाइशी रिहाई पर छोड़ दिया जाय।

(५) यदि अदालत को बालक के आचरण से यह विश्वास हो जाय कि बेंत लगना इस ढीठ बालक के लिए आवश्यक है, तो उसे यही दण्ड दिया जाय।

(६) यदि मां-बाप या संरक्षक की लापरवाही से ही बालक बिगड़ा है, तो उन पर जुर्माना किया जाय।

(७) यदि बालक की अवस्था १४ वर्ष या इससे अधिक हो तो कारावास-दण्ड भी दिया जा सकता है।

(८) बालक-विशेष के आचरण को देखते हुए उसे कानून के अन्तर्गत और भी दण्ड दिया जा सकता है।

उपर्युक्त सभी उपचारात्मक उपायों में से सबसे लाभदायक उपाय है बालक को किसी बाल-सुधार-संस्था में रखना।

अन्त में इस प्रसङ्ग में एक अन्य उपचारात्मक उपाय 'रिफॉर्मेटरी-स्कूल' की चर्चा करना अनुचित न होगा। यह उपचार अपेक्षाकृत पुराना और उसी अनुपात से असामयिक भी है। इसका मुख्य दोष यह है कि इसमें अपराधी-बालक के मनोवैज्ञानिक अध्ययन की अपेक्षा नियन्त्रण और दमन का उपयोग अधिक होता है, जिससे जेल का-सा वातावरण उत्पन्न हो जाता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि नियन्त्रण और दमन दोनों ही अप्राकृतिक और अहितकर साधन हैं। इसीलिए अब प्रायः सभी जगह 'रिफॉर्मेटरी-कानून' को उठा लिया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

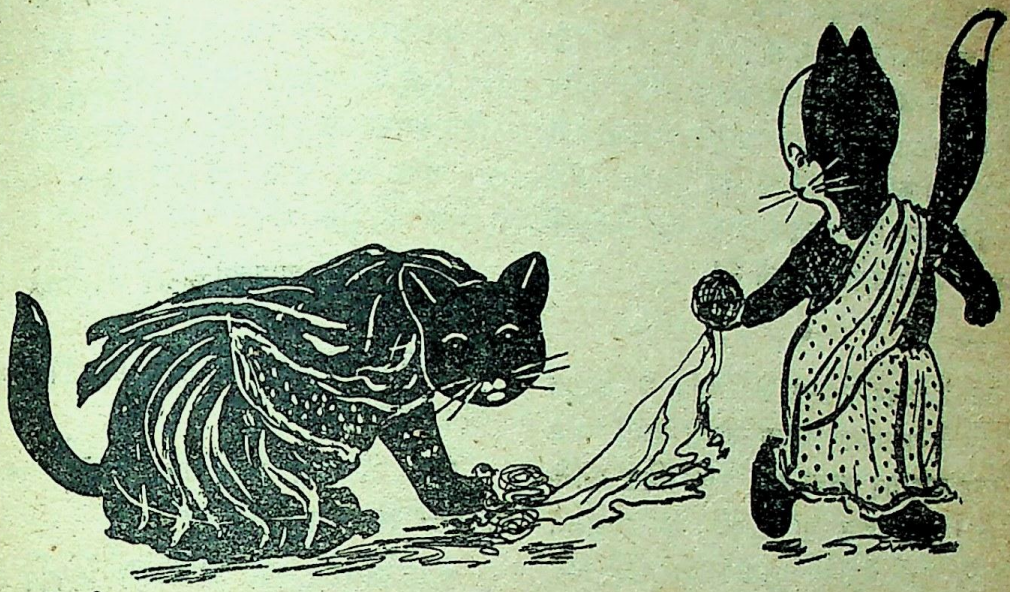

एक व्यंग्य चित्र

कहाँ जा रहे हो ?

श्री जयराम भारद्वाज

कलह कहीं भी अच्छी नहीं होती। और यदि घर में हो, जिसमें घर का प्रत्येक व्यक्ति भाग ले और पूर्ण सफलता से अपने कौशल का परिचय दे, तब क्या कहना ? हो सकता है, कुछ लोगों के अनुभव में ऐसी भी कलह हो, जिसके उपरान्त उनके जीवन में रस और माधुर्य बढ़ा हो, परन्तु मैं इस समय जिस कलह का वर्णन कर रहा हूं, उसमें इस प्रकार की कोई आशङ्का नहीं है।

मैं महर्षि सन्तान, अभिजात, कुलीन ब्राह्मण हूँ। मेरी एक बहुमूल्य सम्पत्ति एक सौ तैंतीस पीढ़ी की वंशानुक्रमणिका है। इसमें मेरे पूर्वजों के नाम के साथ उनके गुण महत्ता आदि का सूक्ष्म परिचय दिया हुआ है। इसे पढ़ कर मुझे अपने अनेक पूर्वजों के धनुर्धर, ज्योतिषाचार्य, प्रकाण्ड पण्डित, सन्त, महात्मा, ऋषि, वैयाकरण, सूत्र-निर्माता, टीकाकार, भाष्यकार, महामन्त्री, राज्य-पुरोहित, सम्राट, व्यवहार-कुशल, महाकवि, वैद्य आदि होने का गौरवपूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ है। परन्तु इस तालिका का बारम्बार अनुशीलन करने पर भी किसी ऐसे महान् पूर्वज का चिन्ह नहीं मिलता, जो प्रधानतया विनोद और मनोरंजन को जीवन का चरम उत्कर्ष और एक मात्र परम उद्देश्य मानता हो। निश्चय ही कोई मेधावी ऐसा हुआ अवश्य था, जिसने गृह-अनुशासन के सम्बन्ध में अपनी धर्म-पत्नी से पाणि-ग्रहण के पूर्व सर्वप्रथम यह वचन लिया था—"स्थान, काल, और परिस्थिति का किञ्चिन्मात्र ध्यान न करते हुए, मैं कभी, किसी को, किसी से, कहीं यह प्रश्न या ऐसा अर्थ रखने वाला कोई अन्य प्रश्न न पूछने दूंगी कि कहां जा रहे हो ?" तभी से हमारे कुल में और उन सब अन्य कुलों में, जो कालान्तर में हमारे कुल से सम्बन्धित या प्रभावित हुए हैं, यह अखण्ड परम्परा चली आ रही है कि स्त्रियां उपरिलिखित वचन का पालन करने की दृढ़ प्रतिज्ञा करती हैं। यदि पाणि-ग्रहण-संस्कार के समय न हो सके तो वृद्धावस्था के प्रारम्भ होते ही उसका पालन अत्यंत आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collecti

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज का जीवन कुछ ऐसा ही है—इतना वाहियात कि अधिक से अधिक शक्ति और समय को सदुपयोग कह कर अधिक से अधिक व्यापक और विस्तृत रूप में नष्ट करना एक महान सद्गुण सिद्ध हो गया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने का मेरा अपना भी एक निश्चित कार्यक्रम है। परन्तु कलह इस मार्ग में बाधक बन कर व्यतिक्रम उपस्थित करती है।

* * *

रात को भोजन के समय सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास हुआ कि प्रातःकाल फतेहपुर-सीकरी देखने चला जाय। यह शाहंशाह अकबर का प्रस्तर-निर्मित कीर्त्ति-गान है। पत्नी और मां तो बच्चों को सम्हालने चलेंगी ही, बूढ़ी दादी भी चलेंगी। गाड़ी सबेरे साढ़े आठ बजे जाती है, इसलिए पौने तीन बजे से तय्यारी शुरू हुई। सबसे पहिले दादी जागीं। उन्होंने मां को जगाया, मां ने पत्नी को जगाया और पत्नी ने मुझे। मैंने उठ कर नौकर को जगाया। वह जाग कर फिर लेट गया। मैंने पुकारा, "क्यों, उठा नहीं? अभी तक सोता है क्या?"

वह घबड़ा कर जोर से बोला, "जी सरकार, अभी आया।"

इस उत्तर को सुन कर निकट के पड़ोसी गुप्ता जी चौंक कर जाग गए, मुझ से चिल्ला कर पूछने लगे, "क्या हुआ पण्डित जी, खैरियत तो है?"

मैंने धीरे से उत्तर दिया, "कुछ नहीं फतेहपुर-सीकरी जा रहे हैं।"

वह अन्दर कमरे में लेटे थे, इसलिए पूरी बात सुन समझ न सके; उन्होंने अधिक जोर से चिल्ला कर पूछा, "कहां जा रहे हो?"

गुप्ता जी का यह प्रश्न दादी ने सुन लिया। इससे पहिले कि मैं गुप्ता जी की शङ्का का समाधान करूं, दादी ने डंडा खटका कर खबर ली, "तू कौन होता है पूछने वाला? बड़ा आया···खबरदार, जो फिर कभी पूछा···!"

इतनी भूमिका के बाद कुछ अस्पष्ट आशीर्वाद भी गुप्ता जी को मिले। इधर तो ब्राह्ममुहूर्त्त में दादी का प्रवचन प्रारम्भ हो रहा था, उधर गुप्ता जी के दूसरे पड़ोसी मुंशी कालीचरण अहलमद ने इस सब कोलाहल का अर्थ लगाया कि गुप्ता जी की या तो चोरी हो गई या होने वाली है। पड़ोसी होने के नाते मुंशी जी ने यह उचित समझा कि कम से कम गुप्ता जी से पूछ तो लें। चीख कर मुंशी जी लगे पूछने—"चोर किधर से आया था, गुप्ता जी?"

गुप्ता जी ने आश्चर्यचकित हो उत्तर दिया—"चोर!"

मुंशी जी ने गला साफ किया और फिर चीखे—"जी! जी हां!! चोर!!!"

गुप्ता जी कुछ नहीं समझ सके, स्पष्टीकरण चाहा—"क्या कहा? चोर!"

मुंशी जी और गुप्ता जी के चोर विषयक शास्त्रार्थ की प्रतिध्वनि सारे मुहल्ले में गूंज गई। इस चर्चा में स्त्रीगण ने गाली देकर और बालकगण ने रो कर सहयोग दिया। लगभग तीस मिनट के झंझा-प्रहार के पश्चात् मुहल्ले में वयोवृद्ध प्राणियों ने शान्ति स्थापित करने में आशाजनक सफलता प्राप्त की। पास के थाने के दीवान जी भी घटनास्थल पर आ पहुँचे। 'वकुए' की 'तफ्तीश' की इब्तिदा हुई। चलते चलते अन्त में एक भीड़ के साथ तफ्तीश हमारे घर पर आ गई। मुझे बुलाया गया। मैं हंसता हुआ घर के बाहर निकला, तो भीड़ में सन्नाटा छा गया। कुछ पीछे खड़े लोगों ने सुझाव दिया कि मेरे द्वार पर लगी बिजली की बत्ती जलवा ली जाए। दूसरे अधिक उत्सुक नवयुवक टॉर्च और लालटेन लेकर मेरे समीप बढ़ आए। वे चोर देखने को आकुल थे। उनका विचार था कि मैंने साहसपूर्वक चोर को अपने हाथों से पकड़ा था और अब भी पकड़े हुए खड़ा हूं। कुछ लोगों ने मेरे नौकर की ओर इंगित करते हुए दूसरों को बताया कि चोर यही है। इस का उत्तर नौकर ने उन्हें चोर सम्बोधित करते हुए दिया। बात बढ़ती देख कर मैंने नौकर को डांट बताई, और फिर मैं दीवान जी को समझाने लगा कि वास्तव में व्यर्थ ही लोग भ्रम में पड़ गए हैं, मैं तो फतेहपुर-सीकरी जा रहा हूं। दीवान जी ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और प्रश्न किया—"ठीक है, और आपने चोर कहां देखा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखता कैसे ? चोर कहीं था ही नहीं," मैंने जवाब दिया।

"जी मैं समझा नहीं—क्या कहा था आपने ? आप कहां जा रहे हैं ?" दीवान जी बोले।

यह वार्त्तालाप नीचे हो रहा था, ऊपर छज्जे पर दादी बैठी थीं। यह प्रश्न सुनते ही बरस पड़ीं—"हम शमसान जा रहे हैं तेरी लाश ले कर। चले जाओ अभी यहां से, कुत्ते ! कमीन ! मेला लगा दिया मेरे द्वार पर·····"

दादी के प्रवचन के दूसरे अध्याय का उपस्थित जनता पर इतना गम्भीर प्रभाव पड़ा कि सब तुरन्त विसर्जित हो कर अपने अपने घरों में छिप गए।

इस प्रकार जागरण के बाद घर के सब लोग चलने के प्रबन्ध में जुट गए। दादी हरिस्मरण करने लगीं; मां यात्रा के लिए भोजन बनाने लगीं, पत्नी अपने और अपने बच्चों के कपड़े निकालने और मेरे कपड़े झाड़ने में संलग्न हो गई। मैं शौचादि से निवृत्त होने लगा। बच्चे यथाश्रद्धा रोने, चिल्लाने, चीखने और डांट खाने लगे। नित्य कहारी आठ बजे बर्तन मांजने आया करती थी, परन्तु आज कारण विशेष शीघ्रता का था, इसलिए नौकर भेज कर पांच बजे ही बुला ली गई। नौकर को जाना अच्छा नहीं लगा था, क्योंकि कहारी कानी थी और वह सबेरे-सबेरे उसका मुंह देखना नहीं चाहता था। कहारी ने आ कर कौतूहल-वश मां से वर्जित प्रश्न पूछ लिया होगा—मेरा ऐसा अनुमान है; मैं बाहर के कमरे में था और कहारी मां के पास रसोई में, इसलिए केवल इतना सुन सका कि मां ने कहारी को 'कलमुंही' आदि उपाधियों से विभूषित कर उसी क्षण कार्य से अवकाश ग्रहण करके 'मुंह फेर पीठ दिखाने' की आज्ञा दे दी। दूसरे ही क्षण कहारी ने मेरे पास आकर 'हिसाब साफ' करने की मांग उपस्थित कर दी। मैं पत्नी की बहुमूल्य सहायता से कहारी को शान्त करने में समर्थ हुआ।

स्टेशन जाने के लिए दो तांगे मंगवा लिए और नाश्ता करके एक तांगे में नौकर के साथ बच्चे और दूसरे तांगे में मेरे साथ तीनों महिलाएं बैठ कर चल दिए। संध्या तक घर की देखभाल एक नाई के सुपुर्द कर दी गई, पर अच्छा हुआ कि उसके अशिष्टतापूर्ण किये गए वर्जित प्रश्न को केवल मैं ही सुन पाया था, इसलिए वह दादी के प्रवचन और मां के विशेषणों का अधिकारी न बन सका और मुझे घर की देखभाल की आशा हो सकी।

जब से सिनेमा चला है, शहर के आवारा लड़कों में एक ऐब बढ़ गया है। आप सुबह, शाम, दिन, रात किसी भी समय उनको पैदल या बाइसिकल पर स्वरचित गीत फिल्मी धुन और तर्ज से गाते हुए, सड़क पर मटरगश्ती करते देख सकते हैं। इधर हमारे तांगे का निकलना हुआ और उधर एक जुल्फबदोश मजनूं का तान छेड़ना—

"इतना तो बता जाते, तुम जा कहां रहे हो ?"

यह तान सुनना था कि मेरी दादी और मां का खून खौल गया। पर मजनूं बाइसिकल पर पश्चिम और हम तांगे पर पूर्व की ओर बढ़ चुके थे, इसलिए कोई अमली कदम तो नहीं उठाया जा सकता था, दादी और मां को प्रचलित असभ्यता पर केवल टिप्पणी करके सन्तुष्ट होना पड़ा। मैंने बात बदलने के अभिप्राय से तांगे वाले से पूछा—'गाड़ी के लिए तो अभी काफी वक्त है, मिल जायगी ?"

तांगे वाले ने निहायत अदब से जवाब दिया—'जी हां, हुजूर, क्यों नहीं। आज सरकार कहां तशरीफ ले जा रहे हैं ?"

बस अब क्या था, मजनूं पर आ रहा क्रोध दादी और मां ने सौ से गुणा करके तांगे वाले पर निकाल दिया। बेचारे को तांगे के लाले पड़ गए। आज प्रथम बार उसे अनुभव हुआ कि सचमुच वह कितना अशिष्ट है। असंख्य बार कान पकड़ कर पैर छूने की कह कर, हाथ जोड़ कर उसने अपने घोर अपराध की क्षमा-याचना की। स्टेशन पर पैसे ले कर एक बार पुनः उसने क्षमा-याचना की, तब प्रायश्चित्त हुआ।

यदि कोई मजदूरों का वर्ग ऐसा है, जिसे जनता की सहानुभूति अणुमात्र भी प्राप्त नहीं है, तो वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेलवे स्टेशन के कुलियों का है। इनके मनोवैज्ञानिक अध्ययन के अचूकपन और उसके हठधर्मी से प्रयोग करने से कोई विरला ही माई का लाल अपरिचित होगा। रेल में पचास मील जाने का किराया यदि एक रुपया लगता है, तो कुली पांच कदम केवल आपके सामान को पहुँचाने का डेढ़ रुपया मांगता है। परन्तु कुलियों के पास आपको तंग करने का एक यही अस्त्र नहीं है, और भी हैं। मैं तांगे से उतर कर खड़ा हुआ और साठ-सत्तर कुली दौड़ आए; घेर कर खड़े हो गए। यद्यपि मेरे पास कोई सामान नहीं था, उस पर भी नौकर साथ, परन्तु कुली नहीं माने। "कहां जाएंगे, बाबू जी? छोटी लैन या बड़ी लैन?" "कौन से दर्जे में ले चलूं, साहब?" "आराम से बैठा दूंगा साहब।" इत्यादि के नारों से शुभागमन होने लगा। मेरी दादी, मां और पत्नी को कुलियों की अन्य किसी बात पर आपत्ति नहीं हुई, पर वर्जित प्रश्न सुनते ही उनके मुख से कुलियों की शुभकामना-सम्बन्धित वाक्यों की लड़ी निकलने लगी। इस भांति कुली-समस्या का आदर्श हल करते हुए हम प्लैटफार्म पर आ बैठे।

अभी सवा सात बजे थे, गाड़ी चलने में पर्याप्त देर थी, इसलिए नौकर को टिकिट लेने भेज दिया।

इतनी घटनाओं के बाद मुझे विश्वास हो गया था कि आज 'दिवस-विशेष' है। मेरी दादी और मां वर्जित प्रश्न को छोड़ कर इनी-गिनी बातों पर ही एकमत होती हैं। पर आज ठहरा 'दिवस-विशेष,' इसलिए कुछ भी सम्भव था। हमारे सामने होकर एक स्त्री निकली। वह काली थी, पाउडर इत्यादि भी अधिक लगाए थी, लाल-सुर्ख साड़ी, गहरा हरा ब्लाउज और कत्थई चमड़े का ऊंची एड़ी का सैण्डिल पहिने थी, हाथों में नीला रूमाल और दस अंगूठियां थीं। उसे देखते ही दादी और मां के मुंह से एक स्वर से निकला, "कुरूपी बहुचेष्टिता!" काफी देर तक एकमत हो, संस्कृत की इस कहावत पर प्रकाश डाला गया। इस के बाद पुरानी यात्राओं का प्रसंग चला। जब रामेश्वरम् की यात्रा की स्मृति नवीन की जा रही थी, तभी गाड़ी आ गई। परन्तु नौकर अभी टिकिट लेकर लौटा नहीं था, इसलिए सब को गाड़ी में बैठा कर मैं नौकर को टिकिटों के साथ लाने को बुकिंग-ऑफिस की ओर दौड़ा। उधर नौकर बहुत पहिले टिकिट खरीद चुका था, और दूर खड़ा आंख बचा कर बीड़ी पी रहा था। गाड़ी आई देख इधर मैं उसे ढूँढने चला, उधर वह आ गया। मैं उसे ढूंढ ही रहा था कि गार्ड ने सीटी दे दी। इससे पूर्व कि मैं लौट कर आ पाया, सब गाड़ी में से बाहर उतर पड़े। उनको डर हुआ था कि कहीं मैं रह जाऊं और वे अकेले फतेहपुर-सीकरी पहुँच जायें। अब जब मैं आया, तो गाड़ी चलने लगी। यदि मैं अकेला होता तो दौड़ कर बैठ जाता, पर बच्चों और बूढ़ी स्त्रियों को चलती गाड़ी में बैठाने का प्रश्न ही नहीं उठता।

परिणाम यह हुआ कि गाड़ी फतेहपुर-सीकरी चली गई और हम रह गये। पौने तीन बजे से तय्यारी कर रहे थे, पहुँच सके केवल स्टेशन तक। हम निराश बिल्कुल न हुए, केवल नौकर को इसका उत्तरदायी ठहरा कर उसकी बुद्धि के प्रति क्षोभ प्रकट करने लगे। अब लौट कर घर चलने के अतिरिक्त अन्य उपाय नहीं था। लौटते समय फिर एक दो बार तांगे वालों को वर्जित प्रश्न पूछने के अपराध में दण्ड देते हुए नौ बजे घर आ गए। बच्चे स्कूल से छुट्टी मनाना चाहते थे, पर उन्हें पढ़ने जबरदस्ती भेज दिया गया।

* * *

मैं प्रातःकाल की इन सब बातों से कुछ खिन्न और अन्यमनस्क-सा हो बैठक में बैठ कर अखबारों को देख रहा था। प्रायः आध घण्टा बीता होगा, और क्योंकि अखबार समय नष्ट करने के माने हुए साधन के पद पर प्रतिष्ठित है, सम्भव है दो-तीन घण्टे भी बीत जाते। परन्तु इसी समय घर में अन्दर से भूकम्प आ गया—एक दम कुहराम मच गया, जिसमें मेरी पत्नी की स्वर-प्रतिभा विशेषरूप से मुखर हो उठी। अन्दर पहुँच कर पाया कि बच्चे स्कूल की किताबें धोबी में भरे, कन्धों पर लटकाए एक दूसरे के पीछे कतार बांध कर आंगन में खड़े हैं। मेरी पत्नी में दोष तो अनेक हैं, परन्तु सबसे बड़ा यह है कि वह अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के विषय में निष्पक्ष नहीं हो सकतीं। चाहे सारी दुनिया उनके विरोध में कहे, पर जो वे कह दें सो सच; चाहे सब गलत बताएं, परन्तु जो वे करें सो ठीक। यह बात उन से छिपी हुई नहीं है; इसका लाभ भी वे भली भांति उठाते हैं। यह मैं बता चुका हूँ कि वे पढ़ने जबरदस्ती भेजे गए थे। मेरे बड़े लड़के हरिश्चन्द्र में भी एक बुरी आदत है—वह बड़े-बूढ़ों की आज्ञा आवश्यकता से अधिक मानता है, और यदि अपना काम निकलता हो, तो उनका अनुकरण भी करता है। इस समय जो स्वांग रच कर वे स्कूल से भाग आए थे, उसके विषय में हरिश्चन्द्र का कहना था कि वह पेशाब करने कक्षा के बाहर जा रहा था। शिक्षक ने पूछा—'कहां जा रहे हो?' यह प्रश्न हमारे परिवार की परम्परा में सही उत्तर देने योग्य नहीं था, इसलिए उसने बुरा मान कर उत्तर दिया—'जहन्नुम!' बस इसी बात पर शिक्षक ने उसे कक्षा से बाहर निकल जाने को कह दिया। वह स्वयं तो बाहर निकल ही आया, साथ ही साथ शिक्षक के इस दुर्व्यवहार के प्रतिरोध में अपने तीनों भाई-बहिनों को भी उनकी कक्षा से बुला लाया। घर आकर शिक्षक की शिकायत कर दी। मुझे देखते ही मेरी पत्नी ने बच्चों को किसी दूसरे अच्छे स्कूल में प्रवेश करा देने का परामर्श दिया। मेरी मां ने आदेश दिया कि मैं तुरन्त ही स्कूलों के डाइरेक्टर से मिलूं और प्रधान मन्त्री को तार देकर या तो स्कूल के प्रधानाध्यापक सहित सब शिक्षकों को निकलवा दूं या स्कूल को सरकारी सहायता मिलना बन्द करा दूं। दादी की आज्ञा और भी अधिक मार्के की हुई। उनके मत से आन्दोलन तो बाद में चलाऊँ, पहिले जाकर स्वयं उस शिक्षक को, जिसने हमारे बच्चों को निकाला था, अपने ही हाथों से उसकी अशिष्टता और धूर्त्ततापूर्ण बदमाशी का मजा चखा दूं—यानी उस पर कुश्ती, बौक्सिंग और जुजुत्सु के मिश्रित दांव-पेच चला कर आंख, नाक, कान से वञ्चित कर दूं। निदान, बच्चों को बाजार ले जाकर मिठाई खरीदी। तब मामला खत्म हुआ।

* * *

अभी तक मैं सैंतीस पतझर देख चुका हूँ, ग्यारह बच्चों का बाप बन चुका हूँ, उनमें से सात जीवित हैं; परन्तु दादी और मां के निरकुंश शासन में किसी प्रकार की कमी नहीं हुई है। इस विचार से विद्रोह हृदय में भर उठा। यद्यपि यह सही है कि मेरा जीवन-निर्वाह का एकमात्र साधन पूर्वजों की संचित सम्पत्ति है, पर इससे क्या? बुढ़ियों का अत्याचार भविष्य में सहन न करने की ठान ली। सबसे प्रथम 'कहां जा रहे हो?' और इस वर्जित प्रश्न के भीषण परिणामों का ही उपचार ढूंढने में स्थिर-चित्त हो कर संलग्न हो गया। एक घण्टे के गूढ़ चिन्तन और अन्वेषण के बाद ओषधि का आविष्कार हो गया। अब इस ओषधि का शीघ्रतम प्रयोग करने की आकुलता हुई।

एपेण्डीसाइटिस में ऑपरेशन करते समय सर्जन जितना गम्भीर होता है, उतनी गम्भीर मुखमुद्रा बना कर मैं आंगन में पहुँचा और स्पष्ट शब्दों में इतने ऊंचे स्वर से कि दादी और मां अवश्य सुन लें, पत्नी से कहा—"देखो, मेरा बिस्तर जरा जल्दी से बांध देना, गाड़ी का समय हो गया है।"

यह सुन कर सबको आश्चर्य हुआ और दादी ने कौतूहल से पूछ ही तो लिया—"कहां जा रहा है, बेटा? क्या काम है?"

मैं यह प्रश्न सुनना चाहता था, क्योंकि इसी प्रश्न पर ओषधि की सफलता का निर्णय था। मैंने बिगड़ कर उत्तर दिया—"देखो दादी, जाते समय किसी को टोका नहीं जाता। रहने दो, बिस्तर मत बंधवाना, अब नहीं जाऊँगा। बड़ा जरूरी काम था, नुकसान हो गया। खैर, अब क्या हो सकता है? दादी ने टोक दिया।"

मुंह बिगाड़ता हुआ मैं बैठक में लौट आया।

ओषधि रामबाण सिद्ध हुई—ऐसी अचूक कि पहिली ही खुराक ने जादू का असर किया। बस उसी दिन दो खुराकें और देनी पड़ीं—एक शाम को छः बजे और दूसरी रात को दस बजे, रोग जड़ से चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी आविष्कार की हुई ओषधि पर मुझे इतना गर्व है कि मैं तब से अब तक निरन्तर राजनीति के क्षेत्र में इसका प्रयोग करने की सोच रहा हूँ। आज जब जनता नेताओं से पूछती है कि—"आप कहां जा रहे हैं?" तो सब पिछली बातें भूल कर नेता डांट देते हैं कि "यह प्रश्न पूछने का तुम्हें अधिकार नहीं है?" नेताओं के इस रोग और दादी और मां के हमारे घर के रोग में मुझे तो कुछ साम्य दीखता है—लक्षण भी एक से लगते हैं। अतः यदि आपकी अनुमति हो तो मैं जनता में अपनी ओषधि का प्रचार कर दूं कि जब यही नेता अगले चुनाव के अवसर पर आपसे मत मांगने आएं और पूछें कि—"कहाँ जा रहे हो?" तो आप भी उन्हें इस प्रश्न को पूछने का अधिकारी न समझें। मुझे तो आशा है कि ऐसा करने से इन नेताओं का रोग तो मिट ही जायगा और साथ ही भविष्य के नेता आपको बिना पूछे बताते रहा करेंगे कि वे क्यों और कहां जा रहे हैं?

★

सन्तान निरोधक औषधि

यदि औरतों की बीमारी या कमजोरी या किसी ऐसी ही वजह से बच्चे पैदा करना नहीं चाहते हों, तो यह 'वन्ध्याकारक दवा' मंगा कर केवल ५ दिन सेवन करावें। इससे सन्तान निरोध हो जायगा। दाम ४) डाक खर्च ॥)। इस दवा से हजारों औरतें फायदा उठा चुकी हैं। यह दवा औरतों को कोई नुकसान नहीं करती।

रुका हुआ मासिक धर्म

हर प्रकार के बन्द मासिक को फौरन खोल कर साफ करने की दवा ७॥) डा० ॥)

खबरदार! गर्भवती स्त्री इसको इस्तेमाल न करें

पता—

चपलादेवी दवाखाना, चपला भवन,

नं० २५ मथुरा।

कलाकी पुरानी चीजोंकी हिफाजत के लिये तो आप तत्पर हैं, मगर घर की सजीव कला नारी आप की लापरवाही के चलते अनेक रोगोंसे भुगतती रहती है। आप अभी भी चेत जायें। स्त्रियोंके प्रदर, मासिक की गड़बड़ी, बन्ध्यापन आदि कठिनसे कठिन रोगों के इलाज में भारत-विख्यात श्रीमती चमेली देवीको एक पत्र लिख कर रोगका मुफ्त निदान करायें। आपको अवश्य संतोष होगा। यहां सभी पत्र व्यवहार गुप्त रहता है दवायें मिलेंगी

श्रीमती चमेली देवी
संचालिका
हरिदास एण्ड कम्पनी लि. मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

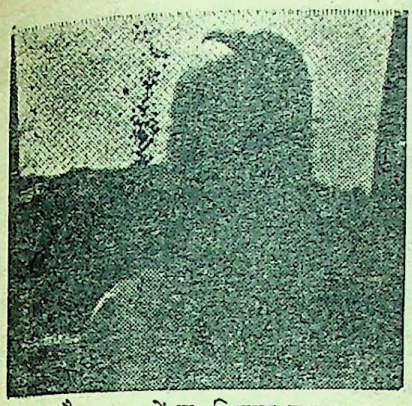

चौदह खण्डों का विशाल गुम्बज

ज्ञान-विज्ञान

संसार का सबसे बड़ा नेत्र

श्री ब्रह्मदेव

कुछ मास हुए एक दिन प्रातःकाल ३-३० बजे एक २२ पहिए की लारी ने १६० मील की यात्रा की। यह यात्रा इतिहास में एक अनूठी यात्रा थी। उस लारी पर एक गोलाकार मोटा शीशा लादा गया था। इसका व्यास १६½ फुट तथा वजन ४०० मन था। यह शीशा १६० मील की अन्तिम यात्रा के पश्चात् पालोमार-गिरि (अमरीका) पर संसार का सबसे बड़ा नेत्र बनने के लिए ले जाया गया है। यह शीशा एक महान् दूरदर्शक-यन्त्र का अन्तिम तथा मुख्य अङ्ग है। इस पूरे यन्त्र को १६ वर्ष में लगभग तीन करोड़ रुपयों की लागत से तैयार किया गया है। १६३४ में शीशे को ढाला गया, दो साल में यह ठण्ढा हुआ और ११ वर्ष ७ महीने तक इसे समतल करने के लिए इस पर पौलिश होता रहा। अब फिर पता लगा है कि पौलिश में १/२०००० इंच का अन्तर रह गया है, जिसे फिर ठीक करने के लिए ले गए हैं।

खगोल-विशेषज्ञ इस अनन्त सौरमण्डल के दूर-दूर के कोनों के अन्वेषण में व्यस्त रहते हुए भी दो सौ इंच के इस विशाल दूरदर्शक-यन्त्र के निर्माण में पूरी दिलचस्पी लेते रहे हैं। यह यंत्र एक नये वेध-गृह का अङ्ग है। इसका निर्माण १६२८ में आरम्भ हुआ था और निर्धारित समय के अनुसार १६४० के अन्त तक यह वेध-गृह तैयार हो जाना चाहिए था, परन्तु कुछ महायुद्ध के कारण तथा कुछ इसलिए कि मूल नक्शे में कुछ और सुधार किए गए, यह कार्य अब तक स्थगित रहा।

चौदह खण्डों का विशाल गुम्बज बिल्कुल तैयार है। विशेष रूप से अब तक विशाल-दर्पण पर अन्तिम पालिश तथा दूरदर्शक-यन्त्र को पूर्णतया एकत्रित करने का कार्य शेष था। पालोमार का यह यंत्र संसार का सबसे बड़ा नेत्र कहा गया है। यह एक विशालकाय दूरबीन है, जो कि सौरमण्डल के अज्ञात कोनों के निरीक्षण में सहायता देगी और संभवतः ऐसी कई समस्यायें सुलझ जायंगी जिन्होंने संसार भर के वैज्ञानिकों को चिन्तित किया हुआ है। इसके निर्माण का अर्थ एक प्रकार से पदार्थ-विज्ञानों की परीक्षा का समय रहा है। इससे सम्बन्धित सैकड़ों समस्याओं को सुलझाने के लिए योग्यतम मस्तिष्कों की आवश्यकता पड़ी है।

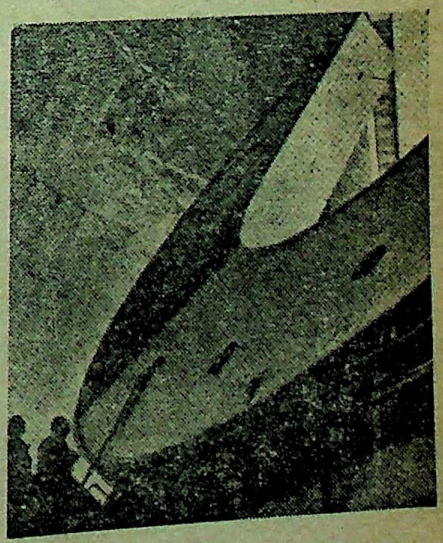

गुम्बज के भीतर का दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह दूरदर्शक-यंत्र इतना बड़ा है कि इसके ऊपर पहुँचने के लिए 'एलीवेटर' (ऊपर उठाने का एक यंत्र) की आवश्यकता होती है। खगोल-विशेषज्ञ इस यंत्र पर अपने-अपने स्थान पर काम करते हुए केवल फोन द्वारा ही आपस में बातचीत कर पाते हैं। इतना विशाल होते हुए भी इसका एकीकरण इतना सही-सही होना चाहिए कि साधारण सिकुड़न और फैलाव का इस पर कोई असर न हो। गुम्बज में दो बार अलूमीनियम (एक हल्का सफेद धातु) का रंग किया गया है और अन्दर की ओर इसी धातु की पत्तियां भी रखी हैं। इस से लाभ यह होगा कि गुम्बज के भीतर तापमान का अन्तर किसी दशा में भी पांच डिग्री से अधिक न होगा।

इस यंत्र के गतियुक्त अंगों का वजन प्रायः बारह हजार मन है। फिर भी इसका समतुलन इतना नाजुक है कि इसे घुमाने के लिए केवल डेढ़ 'हार्स-पाव' शक्ति की आवश्यकता होती है। (एक 'हार्स-पावर' यंत्र की वह शक्ति है जिसके द्वारा एक सेकंड में केवल २२५ सेर का भार एक फुट उठ सके।) इस यंत्र के आकार का साधारण इस्पात का ढांचा तो अपने भार से ही काफी झुक जाय। परन्तु यह यंत्र इतना दृढ़ तथा अटल है कि इसकी नली लम्बाई की ओर ८/१०० इंच से भी कम मुड़ती है।

शीशा न मुड़ने वाली धातुओं में माना जाता है, परन्तु इस यंत्र का शीशा, जो कि आर-पार सोलह फुट से भी कुछ अधिक है, साधारणतया १/१००० या २/१००० इंच अपने बोझ से झुक जावेगा। यह झुकाव इतना कम है कि सूक्ष्म-दर्शक यंत्र के बिना नहीं देखा जा सकता, परन्तु फिर भी पूरे शीशे को बेकार करने के लिए यथेष्ट है। इस शीशे को सीधा रखने के लिए विशेषज्ञों ने एक अजीब उलझा-सा आश्रय खोज निकाला है।

आकाश में कई तारे तो बहुत ही प्रकाशमान् हैं और कइयों का प्रकाश बहुत ही मन्द है। ऐसे तारों का प्रकाश इतना कम होता है कि फोटो लेते समय संतोषप्रद परिणाम के लिए फिल्म में एक साथ कई घंटे तक प्रकाश लगाना पड़ता है। आप कभी अपने कैमरे में रात के समय तारों का चित्र लें और सारी रात फिल्म पर प्रकाश लगने दें। आप देखेंगे कि फिल्म में प्रत्येक तारे की एक टेढ़ी-मेढ़ी पंक्ति-सी बन गई है जो कि एक क्षितिज से दूसरे क्षितिज तक चली गई है। खगोल-विशेषज्ञों का लक्ष्य तो उस सुई की नोक बराबर प्रकाश का चित्र लेने का है, जो कि तारे का वास्तव में दिखाई देता है। इसके लिए उन्हें दूरदर्शक-यंत्र को बिना हिलाये-डुलाये चित्र लेने के पूरे समय तक केवल तारे की ओर रखना पड़ेगा। साथ ही यंत्र को पृथ्वी की धीमी, परन्तु एक-सी गति के साथ-साथ घूमना पड़ेगा, जिससे पृथ्वी की गति का असर न रहे। यह बात आप एक उदाहरण से समझ सकते हैं। मान लीजिए कि एक अठन्नी तीन मील की दूरी पर चक्कर काटती हुई दौड़ रही है और आप उस पर निशाना साधने का प्रयत्न कर रहे हैं। स्पष्ट है कि एक ही स्थान पर स्थिर रह कर निशाना नहीं साधा जा सकता। गति में समता लाने के लिए इस यंत्र को तेल की तह पर तैरता हुआ रखा गया है।

यह सारे उपाय भी एक तारे का सही चित्र उतारने में यथेष्ट नहीं। आकाश में किरणों की वक्रता से तारे की प्रत्यक्ष स्थिति में परिवर्त्तन हो जाता है तथा क्षितिज के ऊपर तारे की स्थिति के परिवर्त्तन से किरणों की वक्रता के प्रभाव में भी परिवर्त्तन हो जाता है। ऋतु-परिवर्त्तन का भी किरणों पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए ऋतु-परिवर्तन की भविष्यवाणी करने वाला एक पूरा स्टेशन वेध-गृह के पास ही बनाया गया है। यंत्र में सुइएं लगी हुई हैं। यह सुइएं तापमान, गीलापन तथा ऋतु के अन्य लक्षण दिखाती हैं। इनके चलने से एक बटन स्वयं ही दब जाता है, जो ऋतु के इन परिवर्त्तनों को पूरा कर लेता है।

जिस समय यह यंत्र तारे का पीछा करते हुए अपने अवलम्बों पर घूमता है, उस समय १००० टन वजन का इस्पात का विशाल गुम्बज भी उसी प्रकार घूमता है, जिससे कि इसकी छत में जो थोड़ा-सा खुला स्थान है, उस में से सर्वदा ही निरीक्षण किया जा सके।

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पन्द्रह वर्ष हुए जब कि इस यंत्र के लिये बीस लाख रुपया दान में दिया गया था। उस समय अभिप्राय केवल यह था कि एक ऐसा दूरदर्शक-यंत्र बनाया जाय, जो वर्त्तमान यंत्र से आकार में दुगुना हो और इससे चार गुना अधिक प्रकाश एकत्र करने की क्षमता रखता हो। परन्तु गत आठ वर्षों में इसमें और भी कई सुधार किए गए हैं। उदाहरणार्थ प्रकाश एकत्र करने वाले विशाल दर्पण पर चांदी के स्थान पर 'अलूमीनियम' की एक तह चढ़ाई गई है। केवल एक इसी परिवर्त्तन से दर्पण की कार्यक्षमता दुगुनी हो गई है।

तैयार होने पर इस यंत्र को पहिले उन विशेष कामों में लगाया जावेगा, जो दूसरों की क्षमता से बाहर हैं। सबसे विशेष और पहिला काम तो चन्द्रमा के निरीक्षण का है। चन्द्रमा हमारा निकटतम पड़ोसी है। इसकी दूरी २,२१,६१० मील है। वर्त्तमान १०० इंच के दूरदर्शक-यंत्र से यह ७,५०० मील की दूरी पर लगता है। नवीन २०० इंच के यंत्र से यह केवल २४ की दूरी पर रह जावेगा। इस यंत्र की सहायता से हमें चन्द्रमा के विषय में बहुत सी नई बातों का पता लगेगा। उधर दो करोड़ की लागत से 'राकेट' भी तैयार किया जा रहा है, जिस पर बैठ कर मनुष्य संसार से बाहर प्रथम यात्रा की तय्यारी कर रहा है। आज संसार के नेत्र इस विशाल नेत्र की ओर लगे हुए हैं। अब देखना यह है कि यह विशाल नेत्र हमें इस अनंत ब्रह्म-खंड के विषय में क्या नया ज्ञान देता है?

★

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी का

च्यवनप्राश

एजन्ट: गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी (हरद्वार)

दिल्ली प्रांत, मत्स्य प्रदेश व बीकानेर के वितरक:—रमेश एण्ड को० चांदनी चौक, दिल्ली। मध्य भारत के—बृहद् औषध भण्डार १६ जेल रोड़ इन्दौर। ग्वालियर के—यूनियन मेडिकल हाल नया बाजार, लश्कर। देहरादून—हितकारी वस्तु भण्डार, पलटन बाजार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७५००) रु० नकद इनाम

आप २४ घण्टों में फिर युवक बन सकते हैं

औटोजम (बिटामिन टानक) के खाने से प्रत्येक पुरुष व स्त्री अपनी आयु से १५-२० वर्ष कम आयु के दिखाई देते हैं। यह निर्बल स्वास्थ्य, खून की खराबी, दिमागी तथा शारीरिकश्रम में लाभदायक है। इसके खाने से भूख खूब लगती है। एक सप्ताह में पांच से दस पौंड तक तोल बढ़ जाता है। मुंह पर लाली आ जाती है। चेहरे का रंग गोरा हो जाता है। तथा चेहरे पर यौवनावस्था की भांति की चमक आ जाती है। जैसे कि आपका चेहरा यौवन अवस्था में था। इसके प्रयोग से नजर तेज होती है। यह गालों को आकर्षित बना देता है, होठों पर लाली आ जाती है, सफेद पके हुए बालों को सदा के लिए काला कर देता है, दांतों को असली की भांति दृढ़ कर देता है। स्विट्जरलैण्ड के एक शत वर्षीय वृद्ध पुरुष ने इसका प्रयोग किया। जिससे वह तीस वर्ष के युवक की भांति हो गया। यही नहीं, पर उसने एक युवती से व्याह भी कर लिया।

औटोजम के बरतने से ८० तथा ९० की आयु में भी हालीवुड के एक्टर तथा एक्टरसें हृष्ट, युवक तथा सुन्दर प्रतीत होने लगते हैं। और परदा पर अति फुर्ती से काम करने लगती हैं। स्त्रियां यदि इनका प्रयोग करें तो अपनी आयु के पिछले समय तक मुख की सुन्दरता तथा चमक को बनाये रख सकती हैं। पुरुष इसके प्रयोग से समय के पूर्व वृद्ध नहीं हो पाते। बाल काले तथा आकर्षित रहते हैं। मुख की आकर्षिकता सदा बनी रहती है। स्वास्थ्य आयु भर खराब नहीं होता।

Autogem औटोजम Autogem

को एक शीशे के बर्तन में बहुत काल तक रखा गया। तब वह शीशे का बर्तन इतना पक्का हो गया कि कई चोटें मारने पर भी न टूट सका। इसको इंग्लैण्ड में सहस्त्रों पुरुषों ने देखकर प्रमाणित किया। औटोजम का तुरन्त प्रयोग आरम्भ कर दें। इसका फल अपना उत्तर आप होगा। प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व अपना तोल करलें तथा अपना मुख शीशे में देखलें। एक सप्ताह पश्चात् फिर शीशा देख फिर नोट करें कि आप क्या अनुभव करते है। आप इसके जादू की भांति प्रभाव की प्रशंसा करेंगे। औटोजम को प्रत्येक व्यक्ति तक ले जाने के लिये इसका मूल्य केवल अल्प समय के लिए ५) रुपया रखा गया है। कुछ समय के उपरान्त इसका असली मूल्य ३०) रुपया कर दिया जायगा। आज ही इसे मंगवाने के लिये आर्डर भेज दें। क्योंकि इसकी सम्भावना है कि आपके देर करने से माल समाप्त हो जाए और आपको पछताना पड़े।

मिलने का पता—

दी मैकसो लैबोरेटरीज लिमिटेड,

पोस्ट नं० ४५ (M. M. D.) देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पिता जी, जब आप कोई सांड देखते हैं, तो क्या आपको डर लगता है?" छोटी लड़की ने पूछा।

"नहीं!" बाप ने बड़े गर्व से उत्तर दिया।

"अच्छा, क्या आप कीड़ों से डरते हैं?"

"नहीं, बेटी!"

"तो आप लाल ततैया से भी नहीं डरते?"

"नहीं, पगली नहीं!"

"तो क्या आप इस दुनिया में माता जी को छोड़ कर किसी और से डरते ही नहीं?"

* * *

"इस एक महीने में यह सातवीं लड़की है, जिससे मेरा प्रेम हुआ है।"

"लगता है, अब के वसन्त में कामदेव महाराज मशीनगन साथ लेकर आये हैं!"

* * *

छोटी लड़की पुराने मेज के दराज की चीजों को उलट-पुलट रही थी कि एकाएक कह उठी, "हाय, बेचारे बाबा जी···!"

मां ने पूछा, "क्या बात है, मुन्नी?"

एक पुरानी ऐनक उठा कर मां को दिखाते हुए मुन्नी बोली, "यह देखो मां, बाबा जी की ऐनक तो यहीं रह गई। बिना इसके वे स्वर्ग में कैसे काम चलाते होंगे?"

* * *

गृहस्वामिनी—(नये नौकर से) क्या वेतन लोगे?

नौकर—अगर मुझे बाजार से सौदा भी लाना होगा तो पन्द्रह रुपये; नहीं तो पचास रुपये।

* * *

"कल रात मैं बाल-बाल बचा।"

"क्या हुआ था?"

"आधी रात के समय एकाएक मेरी आंख जो खुली, तो कमरे में एक सफेद-सी चीज हिलती हुई दिखाई दी। मैंने झट तकिये के नीचे से अपनी पिस्तौल निकाली और निशाना बांध कर चला दी। इस घटना के बाद जब मैंने बिजली जला कर देखा, तो पता चला कि वह सफेद चीज मेरा अपना कुर्ता था।"

"लेकिन तुम बाल-बाल कैसे बचे?"

"मान लो कि रात को सोते समय मैं वह कुर्ता उतारना भूल गया होता!"

* * *

प्रकाशक—आपके इस नाटक में कोई गन्दगी तो नहीं?

लेखक—गन्दगी? नहीं, बिल्कुल नहीं। इसके पहले अङ्क में स्नानागार का एक दृश्य है।

* * *

"डाक्टर!" कमरे में तेजी से प्रवेश करते हुए एक स्त्री चिल्ला कर बोली, "आप से यह स्पष्ट जानना चाहती हूं कि मुझे क्या रोग है?"

उसने कुछ क्षण तक उस स्त्री को सिर से पांव तक ध्यानपूर्वक देखा और अन्त में कहा, "देवी जी, आपसे मुझे केवल तीन बातें कहनी हैं। एक तो यह कि आपके वजन में लगभग एक मन की कमी होनी चाहिये। दूसरी बात यह कि यदि आप रूज और लिपस्टिक की मात्रा दस गुनी कम कर दें, तो आप अधिक सुन्दर लगने लगेंगी। और तीसरी बात यह कि मैं एक चित्रकार हूं, डाक्टर का कमरा दूसरी तरफ है!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

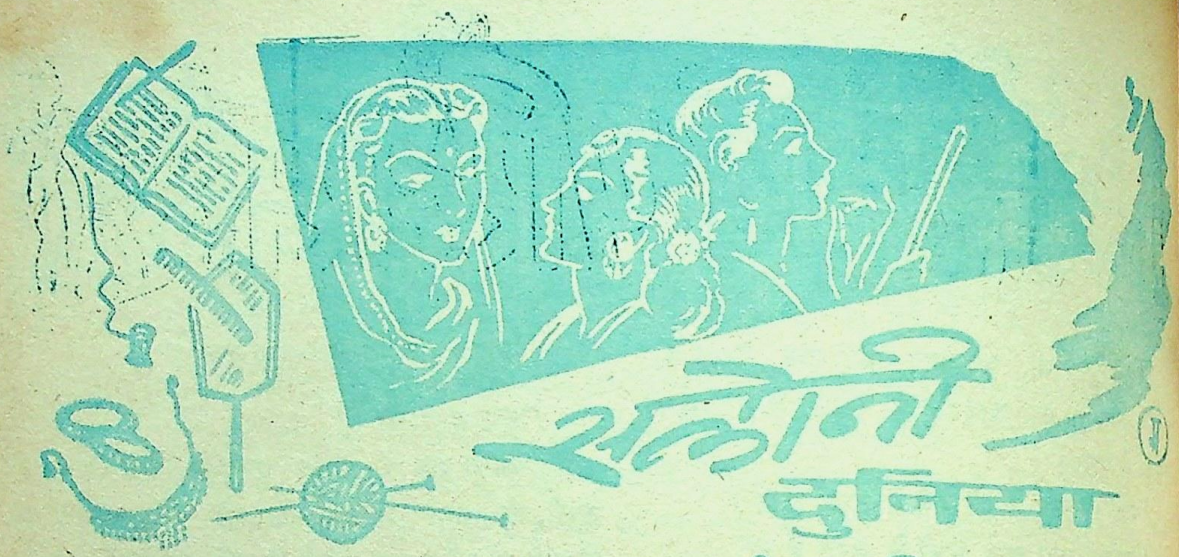

भारत की आदर्श-महिला

गत २ मार्च १९४९ को शुभमूर्ति श्रीमती सरोजिनी नायडू के निधन से भारतीय स्त्री-समाज को एक ऐसी क्षति पहुँची, जिसकी पूर्ति होना कठिन है। वे वस्तुतः नारी-रत्न थीं। उनमें केवल कोकिला का कण्ठ ही नहीं था, सिंहनी का हृदय भी था। वे उच्चकोटि की कवयित्री थीं, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री थीं और थीं भारतीय महिला-जागृति की प्रतीक। भारतवर्ष के इतिहास में वे पहली महिला थीं जो एक प्रांत की गवर्नर बनीं।

श्रीमती सरोजिनी नायडू का जन्म १३ फरवरी सन् १८७९ को एक संभ्रांत तथा सुसंस्कृत बंगाली परिवार में हैदराबाद (दक्षिण) में हुआ था। उनके पिता श्री अघोरनाथ चट्टोपाध्याय निजाम-कालिज के प्रिंसिपल थे। १२ वर्ष की अवस्था में सरोजिनी देवी मैट्रिक की परीक्षा में उत्तीर्ण हुईं और १७ वर्ष की अवस्था में ही उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिये विलायत गईं।

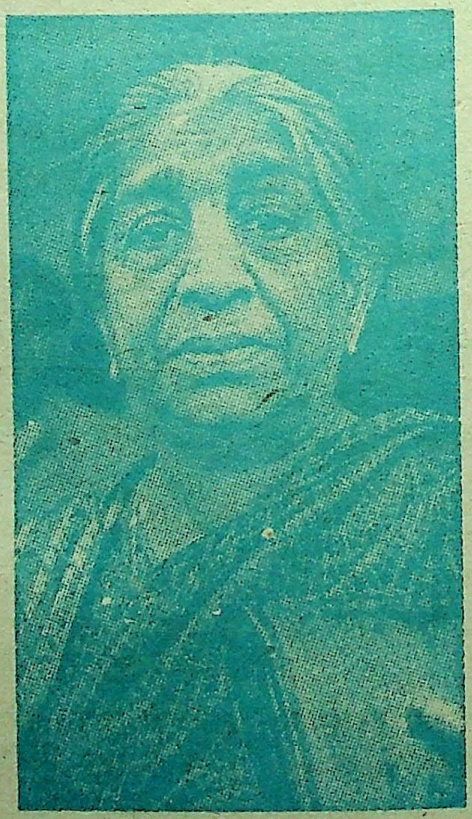

श्रीमती सरोजिनी नायडू

जाति से ब्राह्मण होते हुए भी उन्होंने १८९८ में आंध्र के एक अब्राह्मण युवक डा० नायडू से विवाह किया। उनकी काव्य-साधना १०-११ वर्ष की आयु से ही शुरू हो गई थी। काव्य-जगत से वे राजनीति में आईं। लगभग १९१६ में उन्होंने कांग्रेस में प्रवेश किया। १९२५ में वे कांग्रेस की अध्यक्षा चुनी गईं। स्वाधीनता-आंदोलन में भाग लेते हुए वे कई बार जेल भी गईं। इसके बाद से उनका कार्य-क्षेत्र बढ़ता ही गया। मार्च सन् १९४७ में वे एशियाई सम्मेलन की अध्यक्षा बनीं और स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद अगस्त १९४७ से वे संयुक्त-प्रांत की गवर्नर नियुक्त हुईं।

अब वह महिमामयी इस संसार में नहीं रही। किन्तु उनकी दिव्य आत्मा अब भी भारतीय स्त्री-समाज को प्रेरणा देती रहेगी और जागृति का संचार करती रहेगी, ऐसा विश्वास है।

[अनोखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहरी निद्रा का आनन्द

विज्ञान का आश्चर्यजनक आविष्कार बेस्टेन किसी सोते या जागते हुए को सुधां दीजिये। वह एक घंटे के लिये गहरी नींद में सो जायगा। और हिलाने से भी न जागेगा। मूल्य केवल २) डाकखर्च ।।।-) अगर आप घण्टे से पूर्व जगाना चाहते हैं तो रैकशन सुधांइये। मूल्य केवल २) रु०। कम मिकदार या नमूना मुफ्त नहीं मिलसकता। गारण्टी की जाती है कि बेस्टेन या रैकशन किसी किसमें की हानि नहीं पहुंचावो आज ही आर्ड दें और अपना पता पूरा और साफ लिखें।

मैक्सो लिबार्टीज लिमिटेड [एम.] नं० ४५, देहली।

मुफ्त! मुफ्त!

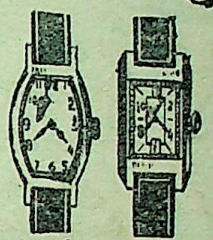

FREE

लन्दन न्यूगोल के जेवरात का मशहूर करने के लिये हमने डायरी कलेण्डर १९४८ और असली रिस्टवाच गारण्टी १५ साल मुफ्त देने का फैसला किया है यदि आप बिल्कुल मुफ्त लेना चाहते हैं तो आज ही अपना नाम व पूरा पता साफ २ लिख कर भेज दें मगर जल्दी करें वर्ना यह समय बार २ हाथ न आयेगा।

फ्रेंचे गोल्ड सप्लाई कं० [एम.] देहली।

देहली में सोना दो रुपया तोला

सेठ आनन्द किशोर बी० ए० एल० बी० महौली (यू० पी०) से लिखते हैं कि आपका पार्सल मिला। आभूषण न्यू गोल्ड को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई, कृपा करके ६ तोला न्यू गोल्ड और एक नेकलस और भेज देवें। भारत भर के समाचार पत्रों के अलावा अनगणित पुरुषों ने इसकी प्रशंसा की है। इसके आभूषण का रङ्ग भी खराब नहीं होता। असली सोने की भांति इसके भी हर प्रकार के आभूषण बनते हैं। हर प्रकार की तसल्ली की गारटी देते हैं। माल नापसन्द होने पर मूल्य वापस लौटा दी जावेगी। एक तोला २), तीन तोला ५।।), छः तोला १०) मिनर्वा न्यू गोल्ड के बने हुए सुन्दर आभूषण, गले का हार बड़ा १६), छोटा हार १२), नेकलस न्यू डिजायन १२), गुलूबन्द ८), चम्पाकली १०), गले की हंसली ११।।) अंगूठी नगदार ३), अंगूठी बम्बई फैशन मीनेवाली २), चूड़ियां डायमण्ड कट फैन्सी प्रति जोड़ा १।।), कान के अति सुन्दर कांटे नं० पहिला ३।।), प्रति जोड़ा नं० दूसरा ३=), नं० तीसरा २।), दस्तबन्द घड़ी चूड़ी प्रति जोड़ी ६।।), डाक व्यय इसके अलावा यह आभूषण नकली जवाहर जड़ी है।

माल मिलने का पताः—

New Gold Supply Co. (V.A.D.) No. 199 Delhi

न्यू गोल्ड सप्लाई कं० (वी.ए.डी) नं० १९९ दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूठी रानी को मना लें

केवल ८ रु० में क्लियरिंग सेल

तीन नग ग्यूट रिस्टवाच। दो नग डैमी रिस्टवाच मुफ्त इस उपहार के अलावा रेडियम न्यू गोल्ड के बने हुए अति सुन्दर तथा नए फैशन के आभूषणों का पूरा बक्स जिसमें आठ अदद डायमण्ड कट चूड़ियां दो अदद अंगूठी बम्बई फैशन मीने वाली एक जोड़ी कान के कांटे यानी बुन्दे और एक अदद औरतों के लिए गले का नैकलेस चैन के साथ। यह सब आभूषण नकली जवाहर जड़ी हैं इन सब का पारसल केवल आठ रुपये में कम्पनी ने अपने वार्षिक उपलक्ष में देने का फैसला किया है। रेडियम न्यू गोल्ड के आभूषणों का रंग कभी खराब नहीं होता हर प्रकार की तसल्ली की गारण्टी है असंख्य आदमियों ने इन आभूषणों की प्रशंसा की है। माल न पसन्द होने पर यूल्य वापिस करने का नियम है, डाक व्यय ।।) रु० अलग लगता है शीघ्र करें अन्यथा यह सुनहरी अवसर हाथ से निकल जावेगा और ना जाने कब ऐसा अवसर मिले।

पता— मैनेजर ई० टी० एण्ड कं० (M.M.) बैग नं० ५२ ए देहली।

५०००) मुफ्त इनाम !

अमृतसर में सोना २।।) तोला !

जो कोई नीचे लिखी बातों को झूठा साबित करेगा उसको पांच हजार रुपया मुफ्त दिया जावेगा।

जिस घर में यह सोना गया वहां से दोबारा तिबारा फरमाइश आई। जनाब बा० ब्रह्मानन्द गत मैनेजर तेज नया बाजार, देहली से लिखते हैं कि आपका (लन्दन) न्यू गोल्ड का पार्सल मिला धन्यवाद! यह देखकर खुशी हुई कि न्यू गोल्ड और असली सोने में कोई फर्क नहीं। आपने इस नई चीज को तैयार कर के दुनियां की एक भारी जरूरत को पूरा किया है। ६ तोला सोना वापसी डाक से और मेज दो बाद में और भी आर्डर दिया जायगा।

यह सोना कसौटी पर असली सोने का रंग देता है असली सोने की तरह कूटा और पिघलाया जा सकता है। हर किस्म के जेवरात बनाये जा सकते हैं जिन को होशियार से होशियार सराफ भी मुश्किल से पहिचान सकता है। मशहूरी करने के लिए मूल्य फी तोला केवल २।।) रु० ३ तोला का मूल्य ७) रु०, ६ तोला १३) रु० १५ तोला ३०) रु०, ४० तोला ७०) रु०।

जरूरी नोट— हर तीन तोला के खरीदार को २ बाम्बे फैशन अंगूठी, मुफ्त दी जायगी। ६ तोला के खरीदार को २ बाम्बे फैशन अंगूठी, एक जोड़ी कांटे और एक जोड़ी चूड़ी मुफ्त दी जायगी, १५ तोले के खरीदार को एक लाकट मय चेन २ जोड़ी चूड़ी और ३ बाम्बे फैशन अंगूठी मुफ्त और डाक खर्च माफ। माल पसन्द न होने पर कीमत वापस कर दी जाती है। शीघ्र मंगवा लें वरना यह समय हाथ न आएगा।

पता:— प्रधान कार्यालय पी० बी० ७५ (M.R.D.) अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'लाहौर'

श्री हरिश्चन्द्र

★

पिछले कुछ समय में सामयिक विषयों को लेकर जो फिल्म निर्मित किये गये हैं, उनमें जैमिनी दीवान के 'लाहौर' फिल्म का एक विशेष स्थान है। इस फिल्म का जिस समस्या को आधार बना कर निर्माण किया गया है, वह न केवल फिल्मी कहानी के सर्वथा उपयुक्त है, अत्यन्त महत्वपूर्ण और सामयिक भी है। भारत के विभाजन के परिणामस्वरूप जो नये-नये प्रश्न उठ खड़े हुए हैं, उनमें अन्य प्रश्न इतने उलझन-भरे नहीं हैं, जितना कि अपहृत महिलाओं के भविष्य का प्रश्न। महिलाओं के अपहरण की घटनाओं ने ही पिछले दिनों पंजाब के लाखों व्यक्तियों की धमनियों में जोश भर दिया था और यही प्रश्न है, जिसे हल करने के लिए अधिकाधिक प्रयत्न करने और लोगों का उचित दिशा में मार्ग प्रदर्शन करने की आवश्यकता है।

जैमिनी दीवान ने इस समस्या को पर्दे पर लाने के लिए 'लाहौर' के रूप में जिस कथावस्तु को चुना, वह सुन्दर और प्रभावोत्पादक है। कथाकार इस समस्या को पेश करते हुए विचारों के दलदल में नहीं फँसा है, न उसने सम्वादों में लम्बे-लम्बे उपदेश ही दिये हैं। उसने इस समस्या को अपनी कहानी का एक अंग बना दिया, जो उसी प्रकार आ उपस्थित होती है, जिस प्रकार शान्त समुद्र में एकाएक ज्वारभाटा। जब दर्शक नायक को अपनी अपहृत प्रेमिका लीलो का पता लगाने के लिए लाहौर लौटते और नायिका को एक मुसलमान के घर में उसकी 'पत्नी' के रूप में रहते देखता है, तो उसके मन में अपहृत लीलो के प्रति पूर्वकालीन हिन्दुओं की तरह घृणा का भाव उत्पन्न नहीं होता, बल्कि वह मानवता के शत्रुओं द्वारा किये जाने वाले इस प्रकार के कुकृत्यों के लिए रो भर देता है। तब उसकी आत्मा सहसा कह उठती है कि अपहृत लीलो पतिता नहीं है, वह निर्दोष है और उसका समाज में वही स्थान है जो अन्य भद्र महिलाओं का है।

श्री एम० एल० आनन्द 'लाहौर' के निर्देशक के रूप में प्रथमवार सामने आये हैं। फिल्म में प्रायः सभी पात्रों ने, विशेषतः नरगिस ने जिस स्वाभाविक ढंग से अभिनय किया है, उससे यह आभास नहीं होता कि निर्देशक महाशय कोई नये व्यक्ति हैं। किन्तु फिल्म के उत्तरार्ध में कुछ स्थलों पर ऐसी भूलें हो गयी हैं, जिनसे कहानी का प्रवाह पहले जैसा नहीं रहता और कथाकार और निर्देशक दोनों ने ही फिल्म में विभाजनकालीन घटनाओं को दिखलाने में इतनी शीघ्रता से काम लिया है कि इस बात का ध्यान तक नहीं रखा गया कि कौन-सी घटना किस समय और कितने कितने अन्तर से हुयी। जब चमन के मकान के बाहर बम फटा, तो उससे पूर्व कहीं भी ऐसा संकेत नहीं किया गया कि लाहौर की स्थिति बहुत अशान्त है। जो लोग अखबार पढ़ते हैं, उन्हें मालूम है कि लाहौर में बमों की घटनायें अचानक ही नहीं हुयीं, बल्कि उस नगर की स्थिति तभी से खराब होनी आरम्भ हो गयी थी, जब कि खिजर मंत्रिमण्डल ने इस्तीफा दिया था। अच्छा होता यदि चमन के ऐसी स्थितियों में एकाएक लाहौर पहुँचने पर उसकी मां और भाई कुछ चिन्ता व्यक्त करते अथवा चमन के नाम लीलो के पत्र में यह ध्वनि दे दी जाती कि 'मेरी मां साम्प्रदायिक स्थिति के बिगड़ जाने के कारण ही मेरा ब्याह शीघ्र कर देना चाहती है।' बम-विस्फोट के पश्चात् निर्देशक ने तुरन्त ही लोगों को पूर्वी पंजाब की ओर आते हुए दिखाया है और इस बीच में उसने कुछ क्षण के लिए पर्दे को काला ही रखा है। यदि यहां सूत्रधार द्वारा तत्कालीन घटनाओं की सूचना देने की अपेक्षा लाहौर को जलता हुआ और लोगों को चीख पुकार करते हुए दिखलाया जाता, तो वह दृश्य अधिक हृदयस्पर्शी और प्रभावोत्पादक होता। किन्तु बहु-व्यय-साध्य होने के कारण ही शायद निर्देशक ने इस दृश्य को न दिखला काले पर्दे से ही काम चला लेने की सोची। पर निर्देशक ने सब से भद्दी भूल वहां की है, जहां वह रमेश के मुख से राधा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Colle

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुचित रूप से गर्भवती होने की बात प्रकट करता है। कहानी में वर्णित अन्य घटनाओं और समय को देखते हुए यह चीज बिलकुल अस्वाभाविक लगती है। यह कैसे सम्भव हो कि चमन से पहले ही राधा विधर्मियों के पंजे से मुक्त होकर अमृतसर पहुँच जाये और उसके गर्भवती होने की बात भी इतनी जल्दी प्रकाश में आ जाये। इसी प्रकार की भूल मनी-आर्डरों की रसीदों के सम्बन्ध में भी की गयी है। क्या चमन अपने बड़े भाई, कृष्ण और मां के हस्त-लेखन से इतना अपरिचित था?

यदि 'लाहौर' में उपर्युक्त भूलें न होतीं और उसके संगीत पर कुछ अधिक ध्यान दिया जाता, तो यह निश्चय ही एक बहुत सुन्दर सामयिक चित्र होता।

★

फोटो खींचने का अपूर्व साधन

बॉक्स कैमरा

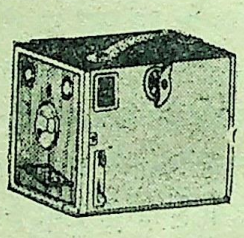

सुन्दर, मजबूत एवं विश्वसनीय। इस केमरे से आप चाहे जिस दिलपसंद चीज का अत्यन्त ही मनोहर फोटो नं० १२० के कट् फिल्म पर २॥"×३॥" इंच साइज का खींच सकते हैं। फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त। मूल्य ८॥) पोस्टेज पेकिंग १॥)।

ओरियन्टल केमरा हाउस, (v.G.o.110) अलीगढ़ सिटी

विवाहित जीवन

को सुखमय बनाने वाली पुस्तकें

१.	फोकशास्त्र (सचित्र)	१॥)
२.	८४ आसन (सचित्र)	१॥)
३.	१०० चुम्बन (सचित्र)	१॥)
४.	८० आलिङ्गन (सचित्र)	१॥)
५.	सुहागरात (सचित्र)	१॥)
६.	गोरे खूबसूरत बनो (सचित्र)	१॥)
७.	प्रेम चित्रावली (रंगीन)	१।)
८.	गर्भनिरोध (सचित्र)	॥)

आठों पुस्तकों के सेट का मूल्य ६), डाक ॥)

ग्लोब ट्रेडर्स (न्यू० ६०) अलीगढ़।

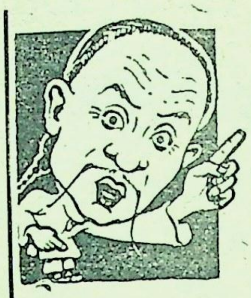

नसों की निर्बलता तथा शक्तिहीनता के लिये सर्वोत्तम औषधि

मलहम (Ointment)

पुरुषों की नसों की कमजोरी और उसके फलस्वरूप मन्द काम वासना को सतेज करने के लिए यह तेल बेजोड़ साबित हो चुका है। इसके लगाने से नसें मजबूत व बलिष्ट बनती हैं। तथा पूर्ण रूप से शक्ति प्राप्त होती है। सारांश में दम्पत्ति को सच्चे सुख का अनुभव होता है मूल्य प्रति शीशी ५), डाक खर्च ॥=) अलग।

विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

चायनीज मेडिकल स्टोर,
नया बाजार, देहली।

हैड आफिस – २८ एपोलो स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई। ब्रांचें– १२ डलहौजी स्क्वायर, कलकत्ता, रीची रोड-अहमदाबाद।

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी नेशनल मेडिकल, स्टोर्स—आगरा।
दी जनरल मेडीकल, स्टोर्स—अजमेर।
दी एलाईड केमिस्ट्स—जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर।
मे. गिरधरदास जानकी वल्लभ—उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी—मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—लश्कर।
राधाकृष्ण गांधी एण्ड सन्स—उज्जैन।
डी० पी० फार्मास्युटिकल वर्क्स—जद्दारी।
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स—कानपुर।
सोगानी जनरल स्टोर्स—भोपाल।
मेसर्स धारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर।
डी० पी० आयुर्वैदिक एण्ड यूनानी दवाखाना मोरेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ्त बिल्कुल मुफ्त अब भी अगर आप लाभ न उठावें तो आपका भाग्य

(१) अगर आप बेकारी के सताये हुए और मुसीबतों में कैद हैं, रोजगार के लिए हाथ पांव मारते हैं, मगर पैसा हाथ नहीं आता। (२) अगर आपका कोई काम बन कर बिगड़ जाता है। (३) अगर आप किसी खूबसूरत युवती से रिश्ता जोड़ना चाहते है परन्तु उससे शादी नहीं होती। (४) अगर आपको औलाद की चिन्ता है। नन्हें से बच्चे को गोद में प्यार करना चाहते हैं। मगर नर औलाद पैदा ही नहीं होती या पैदा होकर मर जाती है। (५) अगर आप किसी दुश्मन के हाथों परेशान हैं और चाहते हैं कि वह आपके आधीन हो जाय। (६) अगर आप किसी मुकद्दमे में फंस गये हैं, रुपया पानी की तरह बह रहा है मगर इज्जत किसी तरह बचती नजर न आती हो। (७) अगर आपकी औरत के साथ अनबन होगई हो और प्यार व मुहब्बत का नाम नहीं रहा। (८) अगर आपको व्यापार में नुक्सान हो रहा है। (९) अगर आपको परीक्षा में पास होने की चिन्ता है और डर है कि कहीं फेल न होजाय। (१०) अगर आप किसी पेचदार भारी बीमारी में फंस गये हैं, हकीमों डाक्टरों की दवा खाते खाते तंग आगये हैं, पर बीमारी वैसी की वैसी है। (११) अगर आप किसी ऊँची नौकरी के लिये सर तोड़ कोशिश कर रहे हों। (१२) अगर आप किसी के प्रेम में व्याकुल होगये हों परन्तु माशूक का हृदय ऐसा पत्थर है कि आपकी ओर आँख उठा कर भी नहीं देखता। (१३) अगर आप के दिल में कोई ऐसी इच्छा है जो हजार बार कोशिश करने पर भी पूरी नहीं होती तो घबराने और निराश होने की जरूरत नहीं। आज ही हमसे छः आने के टिकट भेजकर महाकाली जंत्र मंगा लें। इसके प्रभाव से आपकी सब मनोकामनाएं पूरी होकर आपकी नामुरादी कामयाबी में बदल जावेगी। बगैर टिकट पहले आए किसी पत्र का उत्तर नहीं दिया जावेगा। साथ ही आपके आने वाले बारा महीने का वर्ष फल भी बना कर भेजा जावेगा जो सज्जन छः आने की वी. पी. मंगाने को लिखेंगे उनके पत्र का भी कोई जवाब नहीं दिया जावेगा। ६ आने डाक टिकट द्वारा पहले आने आवश्यक हैं।

श्री काली महाशक्ती आश्रम म. म. नं० १९९ देहली।

वीरांगना

प्यारी बहिनों की भलाई के लिये

जो बहिनें सन्तान की अधिकता अथवा पति की स्वार्थपरता अथवा किसी अन्य कारणवश युवावस्था में ही बुढ़ापा तथा सौंदर्य-विहीनता का अनुभव करने लगी हों। जो प्रदर (लिकोरिया) के रोग में ग्रस्त हों और जीवन भार रूप अनुभव कर रही हों अथवा जिनका मासिक-धर्म समय पर न आता हो या कष्ट से आता हो। कमर में दर्द, आंखों के आगे अँधेरा व संतान न होती हो, गर्भपात हो जाता हो तो ऐसी दशा में 'वीरांगना' सेवन करें। वीरांगना आपके स्वास्थ्य और सौन्दर्य की रक्षा करेगी व आपको सचमुच वीरांगना बना देगी। हजारों बहिनें इसका सेवन कर अपनी बीती यौवनावस्था को पुनः प्राप्त कर चुकी हैं। दाम ११।) मात्र।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी, हरिद्वार।

मुफ्त

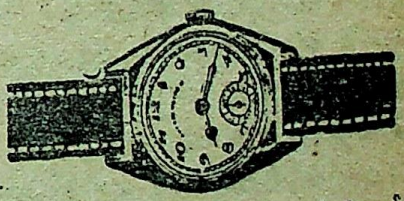

हमारे बाल काला तेल नं० ५५५ (रजिस्टर्ड) के सेवन से हर प्रकार के बाल काले हो जाते हैं और सर्वदा काले ही पैदा होते रहते हैं बालों के गिरने को रोक कर उन्हें चमकीला तथा घुंघराला बनाता है। मूल्य प्रति शीशी २।) तीन शीशी (पूरा कोर्स) ५॥=) इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ १ फैन्सी तथा सुन्दर ग्यूरिस्ट वाच और १ अंगूठी न्यू गोल्ड और ३ शीशी के खरीदार को ६ ग्यूरिस्ट वाच तथा ६ अंगूठी बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती हैं। नापसन्द होने पर दाम वापस।

लण्डन कमर्शीयल कम्पनी

(M. R. D.) पी० बी० २ अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो पर नाटक कैसे ब्राडकास्ट होता है ?

रेडियो एक तरह से ध्वनि का चमत्कार है। ध्वनि का यह चमत्कार सबसे अधिक रेडियो-नाटक में प्रदर्शित होता है। प्रस्तुत लेख, जो लखनऊ रेडियो से प्रसारित एक भाषण का अंश है, तत्सम्बन्धी बहुत सी ज्ञातव्य बातों से भरा हुआ है।

रेडियो-नाटक किस प्रकार प्रस्तुत किये जाते हैं, यह ठीक ठीक समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि स्टूडियो में इनका आयोजन किस प्रकार किया है जाता।

हर एक रेडियो-स्टेशन पर कई स्टूडियो होते हैं। उन में से कई एक ही श्रृंखला में होते हैं। जैसे लखनऊ स्टेशन पर नाटक और रूपकों को ब्राडकास्ट करने के लिए स्टूडियो नं० १ और नं० ५ हैं। स्टूडियो नं० १ अनेक पात्रों वाले नाटक के लिए उपयुक्त एक बड़ा लम्बा कमरा है, जिसमें कई प्रकार के माइक्रोफोन और लाउडस्पीकर रखे हुए हैं। स्टूडियो नं० ५ अपेक्षाकृत एक छोटा कमरा है, जिसमें दो रेकार्ड-चालक-यंत्र, एक माइक्रोफोन और एक लाउडस्पीकर फिट किये गये हैं। इस में अभिनय-निर्देशन के लिए एक कण्ट्रोल-पैनल भी लगा हुआ है, जिसमें ध्वनियों को घटाने-बढ़ाने के लिए २ फेडर लगे हुए हैं। उनके द्वारा निर्देशक स्वर-संकेतों और बोलने वालों (अभिनेताओं) की आवाजों को इच्छानुसार आरम्भ कर सकता है, रोक सकता है और घटा-बढ़ा सकता है। नं० १ और ५ के स्टूडियो के माइक्रोफोनों की सामूहिक ध्वनियों के घनत्व को भी वह कण्ट्रोल-पैनल द्वारा यथाभीष्ट घटा-बढ़ा सकता है। इमारत की छत पर एक कमरा है, जिसे 'कंट्रोलरूम' कहते हैं। यहां रेडियो-इंजीनियर काम करते हैं। माइक्रोफोन द्वारा जो ध्वनियां यहां पहुँचती हैं, उन्हें दस मील दूर स्थित रेडियो-ट्रांसमीटर को प्रसार के लिए टेलीफोन लाइनों द्वारा भेज दिया जाता है।

यदि आँधी और पानी के वेग से शरण लेने के लिए भगते हुए किसी सहमे हुए बालक का दिग्दर्शन कराने के लिए उपयुक्त वातावरण निर्मित करना हो, तो निर्देशक स्टूडियो नं० १ में माइक्रोफोन के सम्मुख रोते हुए लड़के को शीघ्रता में पास और दूर करेगा और नं० ५ स्टूडियो के रेकार्ड-चालक-यंत्र पर आंधी और पानी का रेकार्ड बजायेगा। साउण्ड-इफेक्ट्स-मैन साथ ही साथ ढोल के एक बड़े तख्ते को कभी धीरे और कभी जोर से स्टूडियो नं० १ में भड़भड़ायेगा, जिस से बादल गरजने का शब्द पैदा होगा और इसी अवसर पर निर्देशक ध्वनियों के उतार-चढ़ाव को बराबर कण्ट्रोल के द्वारा ठीक करता रहेगा। फिर सामूहिक ध्वनियां तार द्वारा 'कण्ट्रोलरूम' में पहुँच जायंगी, जहां से वे ब्राडकास्ट के लिए सीधे ट्रांसमीटर तक चली जायंगी।

स्वर-संकेत

रेडियो-निर्देशक के लिये स्वर-संकेत भी प्रायः कई समस्याएँ उपस्थित कर देते हैं। सच तो यह है कि नाटकों में स्वर-संकेत बहुत महत्त्व रखते हैं, क्योंकि उनके द्वारा ही रेडियो-नाटकों में स्वाभाविकता पैदा की जा सकती है। स्वर-संकेतों की अनुपस्थिति रेडियो-नाटकों को अनाकर्षक और नीरस बना सकती है। एक उदाहरण लीजिये—एक पात्र अपने प्रतिवादी से अत्यन्त क्रोधित हो कर उसे भला-बुरा कह कर कमरे से बाहर चला जाता है। ऐसी परिस्थिति में सुनने वालों के कान द्वार बन्द होने की आवाज के लिये उत्सुक होंगे। अतः निर्देशक को तत्काल ही किसी न किसी प्रकार द्वार बंद करने की ध्वनि करवानी पड़ेगी। यह आवाज इस परिस्थिति में अत्यन्त स्वाभाविकता पैदा कर देगी; क्योंकि ऐसी अवस्था में दरवाजा बन्द होने की क्रिया से सभी श्रोता परिचित हैं।

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक प्रकार के स्वर-संकेत स्टूडियो में कैसे पैदा होते हैं, यह एक बड़ा प्रश्न है। इस कार्य के लिये प्रत्येक रेडियो-स्टेशन पर एक कर्मचारी-विशेष, जिसे साउण्ड-इफैक्ट्समैन, या 'स्वरसंकेतज्ञ' कहते हैं, नियुक्त होता है। वह भलीभांति जानता है कि जो शब्द माइक्रोफोन में जाते हैं, वे एक दूसरे ढंग से ही उसके बाहर निकलते हैं; सुनने वाले तो केवल उन ध्वनियों का एक सामूहिक और भिन्न रूप अवगत कर पाते हैं। उदाहरणार्थ माइक्रोफोन के पास से 'सेलोफेन' की बड़ी-बड़ी चादरों को खड़खड़ाने से जलती हुई लकड़ी के चटखने का स्वर पैदा होता है। रेडियो सुनने वाले जिसे घोड़ों की टापों की आवाज समझते हैं, वह वास्तव में लकड़ी के तख्ते पर नारियल के दो टुकड़ों को बजाने मात्र से पैदा हो जाती है

सब प्रकार की ध्वनियां माइक्रोफोन पर व्यक्त नहीं की जा सकतीं, क्योंकि संसार में अनेक ऐसी ध्वनियां हैं, जिनको उत्पन्न करना किसी भी प्रकार सम्भव नहीं हो सकता। रेडियो-कला के प्रारम्भिक काल में पक्षियों की ध्वनियों को मानव कण्ठ से निकालने का प्रयत्न किया गया था। उसमें थोड़ी-बहुत सफलता भी हुई, परन्तु उन उत्पादित ध्वनियों में त्रुटि की सम्भावना बराबर बनी रही। यही कारण है कि अन्त में उस कठिनाई को दूर करने के लिए बहुत-सी स्वाभाविक ध्वनियों का संग्रह करके उन्हें रेकार्डों में भर लिया गया। अब प्रत्येक रेडियो-स्टेशन उन रेकार्डों का यथा-सम्भव प्रयोग करता रहता है।

रेडियो-नाटकों में स्वरसंकेतों का बड़ा महत्त्व होता है, परन्तु लेखक को जहां तक हो सके, इनका अधिक सहारा नहीं लेना चाहिये, क्योंकि स्वरसंकेतों द्वारा अभीष्ट प्रभाव उत्पन्न करना स्वरसंकेतज्ञ की पूरी सहायता से भी निर्देशक के लिए कभी-कभी असम्भव-सा हो जाता है। कभी-कभी तो यत्न किसी ध्वनि को उत्पन्न करने का किया जाता है और सुनी जाती है कुछ और ही ध्वनि। उदाहरण के लिए चीनी की तश्तरियों और प्यालों को ही ले लीजिये। माइक्रोफोन के समीप यदि उनके द्वारा उनकी खनखनाहट उत्पन्न की जाय, तो रेडियो सुनने वालों को ऐसा प्रतीत होगा, जैसे कि पीतल-तांबे के बर्तनों का प्रयोग किया जा रहा हो।

ध्वनि-लोक के सम्राट्

श्री एस० एस० एस० ठाकुर

इनके नाम से शायद ही कोई रेडियो-श्रोता अपरिचित हो। ये आल इण्डिया रेडियो दिल्ली के परम कुशल तथा प्रतिभाशाली रेडियो-नाटक-निर्देशक व कलाकार हैं और साथ ही 'अखिल भारतीय रेडियो कलाकार संघ' के अध्यक्ष भी हैं। इनका विश्वास है कि यदि भारतीय रेडियो पर पूर्ण रूप से कलाकारों का ही नियन्त्रण हो, तो इसके प्रोग्राम और भी अच्छे हो सकते हैं।

निर्देशक और अभिनेता

परन्तु रेडियो-नाटक की सफलता सबसे अधिक इन यान्त्रिक साधनों पर नहीं, बल्कि निर्देशक के कौशल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कलाकारों की योग्यता पर निर्भर है। रेडियो-नाटक की सफलता के लिए यथासम्भव थोड़े पात्र रखना ही उचित होता है, क्योंकि बहुत से व्यक्तियों की आवाजें सुनने वालों के मानस-पट पर स्पष्ट ध्वनि-चित्र न बन कर उन्हें उलझन में डाल सकती हैं। कुशल से कुशल निर्देशक भी उन सब के निजत्व को भली भांति स्पष्ट नहीं कर पायेगा। इसलिए पात्र जितने ही कम होंगे, रेडियो-नाटक उतना ही सफल होगा।

एक बात और है। रेडियो-कलाकार का सारा कौशल व्यर्थ हो जाता है, यदि वह आवश्यकतानुसार माइक्रोफोन के सम्मुख अपनी आवाज में उतार-चढ़ाव द्वारा रंग नहीं पैदा कर पाता। वाल्डीए वट नामक एक अमेरिकन रेडियो-विशेषज्ञ ने लिखा है कि रेडियो-कलाकार जिस समय उत्तेजना का प्रभाव व्यक्त करना चाहे, उसे माइक्रोफोन से थोड़ी दूर खड़ा हो कर, स्वर ऊंचा करके तेजी के साथ बोलना चाहिये। सहानुभूति का भाव प्रकट करने के लिए कलाकार माइक्रोफोन के अधिक निकट आ जायगा और आवाज कनफुसकी से अधिक ऊंची न करेगा। अट्टहास, जो रेडियो पर प्रायः सुनाई देता है, माइक्रोफोन के मुख से कई फुट नीचे से आरम्भ हो कर ऊपर तक पहुँचता है। निर्देशक और अभिनेता को इस बात का ज्ञान होना आवश्यक है कि वाणी द्वारा अभीष्ट प्रभाव उत्पन्न करने के लिये माइक्रोफोन से कितनी दूर अथवा समीप रह कर बोलना है।

कसीदा मशीन

कपड़े पर हर प्रकार के सुन्दर बेल-बूटे, फूल-पत्ती, सीन-सीनरी आदि काढ़ने की ४ सुइयों वाली सुन्दर और चाँदी की तरह चमकती हुई मजबूत मशीन प्रयोग विधि सहित मूल्य ३) रु० पोस्टेज ॥।=)

कशीदाकारी की डिजाइन की पुस्तक मूल्य २), पोस्टेज ॥)

एस. के. सक्सेना, १ रंगमहल, अलीगढ़

हाँगकाँग चीन में बनी हुई

संसार में स्तम्भन की केवल पुरुषों के लगाने की एक अद्भुत औषधि।

सुई फुन सी Solution

पुरुषों के लिए केवल बाहर से व्यवहार करने लायक रुकावट की संसार में अद्वितीय तथा अद्भुत औषधि है। लाखों गृहस्थ इसकी मांग कर रहे हैं। जिन पुरुषों का शीघ्र ही वीर्य पतन हो जाता है, उनके लिए यह दवा बेजोड़ है। इसके लगाने से रुकावट सम्बन्धी अपूर्व शक्ति तथा सामर्थ्य प्राप्त होता है। इस दवा की एक शीशी बहुत दिनों तक चलती है।

मूल्य प्रति शीशी १२) रु०, डाक खर्च ॥।=) अलग।

विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

चायनीज मेडिकल स्टोर, नया बाजार, देहली।

हैड आफिस—२८ एपोलो स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई। ब्रांचें—१२ डलहौजी स्क्वायर, कलकत्ता, रीची रोड-अहमदाबाद।

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी नेशनल मेडीकल, स्टोर्स—आगरा।
दी जनरल मेडीकल, स्टोर्स—अजमेर।
दी एलाईड केमिस्ट्स—जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर।
मे. गिरधरदास जानकी वल्लभ—उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी—मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—लश्कर।
राधाकृष्ण गांधी एण्ड सन्स—उज्जैन।
डी० पी० फार्मास्युटिकल वर्क्स—जटारी।
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स—कानपुर।
सोगानी जनरल स्टोर्स—भोपाल।
मेसर्स धारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर।
डी० पी० आयुर्वैदिक एण्ड यूनानी दवाखाना मोरेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुलझड़ियां

प्राचीन भारतीय संस्कृति को पुनरुज्जीवित करने में संलग्न हमारे कुछ जन नायकों को यह जान कर निश्चय ही हर्ष होगा कि गत मास होली का घोर सांस्कृतिक पर्व स्वाधीन भारत में पूरी स्वाधीनता से मनाया गया। जिन जिन नगरों में चोरबाजारी अथवा उद्योगपतियों के असहयोग के कारण यथेष्ट मात्रा में लाल रंग उपलब्ध नहीं हो सका, वहां नर-रक्त का प्रयोग भी किया गया। कई जगहों पर भारतीय संस्कृति से अनभिज्ञ कुछ अधिकारियों ने कर्फ्यू लगा कर तथा जन सुरक्षा कानून का उपयोग करके होली का सारा मजा ही किरकिरा कर दिया। चाहिये तो यह था कि उन नगरों में लाल रंग यथेष्ट मात्रा में सप्लाई कर दिया जाता। खैर, चीन और बर्मा जैसे अपने पड़ोसी देशों के उद्योगों की प्रगति को देखते हुए ऐसी आशंका हो रही है कि अगले साल होली के अवसर पर लाल रंग की कमी नहीं रहेगी!

'मनोरंजन' के उन पाठकों को (पाठिकाओं को भी), जो अंग्रेजों के चले जाने पर भी अंग्रेजी रीति-रिवाज और अंग्रेजी कैलेण्डर में आस्था रखते हैं, 'शुभ कामनाओं' के साथ पहली अप्रैल की बधाई!

* * *

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद से राष्ट्र-हित को दृष्टि में रखते हुए बहुत से विदेशी माल के आयात पर हमारी सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया है। इस प्रकार के निषिद्ध माल में ब्रिटिश सम्राट द्वारा निर्मित वे उपाधियां और पदवियां भी शामिल हैं, जो हर साल पहली जनवरी के दिन भारत में वितरित हुआ करती थीं। कुछ लोगों को उनका अभाव इधर खटकने लगा था। सो अबके होली के अवसर पर कई हिन्दी-पत्रों ने उपाधि-निर्माण और वितरण का सुकार्य करके राष्ट्र की बहुत बड़ी सेवा की है। आशा है, इन पत्रों द्वारा वितरित उपाधियों को हमारी सरकार मान्यता देगी!

* * *

इस वर्ष की होली की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि श्रीमती माउण्टबेटन विशेष रूप से होली खेलने के लिये इंग्लैण्ड से भारत आईं—भावज के रूप में। कुछ भी हो, देवर महोदय को बधाई दिये बिना हम नहीं रह सकते!

* * *

हमारे एक लालबुझक्कड़ मित्र के मतानुसार लेडी माउण्टबेटन के भारत आगमन का उद्देश्य कुछ और ही था। वे भारत-सरकार के सामने यह सुझाव उपस्थित करने आई थीं कि ब्रिटेन और भारत के मैत्री-सम्बन्धों को बनाये रखने के लिये यह आवश्यक है कि ब्रिटिश सम्राट द्वारा प्रतिवर्ष दी जाने वाली उपाधियों को गण्यमान्य भारतीय नेता पूर्ववत् ग्रहण करें। भारत की मान-मर्यादा को ध्यान में रखते हुए उपाधियों की यह सूची पहली जनवरी की बजाय पहली अप्रैल को प्रकाशित की जा सकती है!

* * *

खैर, ब्रिटिश सम्राट द्वारा दी जाने वाली उपाधियों की बात तो हम जँची नहीं; हां, हमारे अर्थ-मंत्री यदि अपना बजट अबके पहली अप्रैल के दिन असेम्बली में पेश करते तो ठीक रहता!

* * *

इधर पत्रों में यह समाचार छपा है कि मद्रास सरकार ने अपने प्रांत के पांच कवियों को राजकवि के पद पर नियुक्त किया है। यह शुभ कार्य तो संयुक्त प्रांतीय सरकार को भी करना चाहिये। श्री सोहनलाल द्विवेदी के नाम की हम सिफारिश करते हैं।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिल्ली रानी

कीर्ति चौधरी

कौवा काँव काँव चिल्लाये,
बकरी में में कर मिमियाये,
पर बिल्ली तो म्याऊँ म्याऊँ
म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ !

खों खों खों कर कूदे बन्दर,
गीदड़ बोले हुआ हुआ कर,
पर बिल्ली तो म्याऊँ म्याऊँ
म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ !

कुत्ता भूँके भों भों भों भों,
मोटर बोले पों पों पों पों,
पर बिल्ली तो म्याऊँ म्याऊँ
म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ !

भिन भिन कर मक्खी भिनाये,
गुन गुन करके भँवरा गाये,
पर बिल्ली तो म्याऊँ म्याऊँ
म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ !

बूँदें रिमझिम राग सुनायें,
बादल गड़ गड़ ढोल बजायें,
पर बिल्ली तो म्याऊँ म्याऊँ
म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ !

तोता बोले टें टें टें टें,
लाल चहकती चें चें चें चें,
पर बिल्ली तो म्याऊँ म्याऊँ
म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

वीर भीमा

श्री ईशकुमार

गंगापुर गांव के घर-घर में सबेरे ही यह समाचार फैल गया कि रात को रामू की दो बकरियां बाड़े में से गायब हो गईं। रामू ने बकरियों की बहुत खोज की, पर पता न चला। बहुत अधिक छानबीन करने पर जंगल की ओर के मार्ग पर टपकती गई खून की बूंदें मिलीं। उन से इतना पता चला कि जंगल की ओर से कोई हिंस्र जानवर गांव में आया था और वही बकरियों को उठा ले गया। गांव में बड़ा भय छा गया। कुछ दिन बाद गांव के एक किसान हलधरसिंह की गाय मरी हुई पाई गई। गोशाला का चौकीदार भी घायल था। उसने बताया कि रात के समय एक चीता आ घुसा था। इस दूसरी घटना से गांव में और भी अधिक आतंक फैल गया। सब को अपने पशुओं और अपने प्राणों की चिन्ता हो गई।

अगले दिन फिर समीप के दूसरे गांव से भी चीते के उत्पात का समाचार आया। गांव वालों के हृदयों में भय अब बुरी तरह पैठ गया था। सब लोग चौपाल में इकट्ठे हुए और मिल कर उस दुष्ट चीते से अपने और अपने पशुओं को बचाने का उपाय सोचने लगे। निदान यह तय हुआ कि गांव में रात को पहरा दिया जाये, क्योंकि चीता रात को ही गांव की ओर आता था आठ-आठ आदमियों के कई जत्थे बनाये गये और हरेक जत्थे का एक-एक मुखिया बनाया गया। हर रात ये जत्थे बारी-बारी से गांव में पहरा देने लगे। ये लोग कुल्हाड़ियों और लाठियों से लैस रहते। पास में आग जला लेते, ताकि चीता उसे देख कर डर जाये। पहरेदारों के पास एक ढोल रहता था। वह इसलिये कि अगर कोई खतरा दिखाई पड़े तो वे पहले से ही उसे जोर से पीट दें, ताकि गांव के अन्य निवासी भी सजग होकर उनकी सहायता कर सकें।

* * *

आज उस जत्थे की बारी थी, जिसका मुखिया हलधरसिंह था। हलधरसिंह का एक लड़का था—भीमा। वैसे उसका असली नाम तो भीमसिंह था, पर लाड़-प्यार में उसे भीमा ही कहते थे। भीमा की उम्र १३-१४ साल की थी। वह समीप के शहर के हाईस्कूल में नवीं कक्षा में पढ़ता था। विज्ञान में उसकी विशेष रुचि थी। गांव में हुई ये घटनायें उसने भी बड़े ध्यान से सुनी थीं। अपनी गाय के मारे जाने से वह बहुत दुःखी हुआ था और गुप्त रूप से वह चीते के विरुद्ध तयारी करने लगा था।

सो आज जब हलधरसिंह के जत्थे की बारी थी तो, भीमा ने अपने पिताजी के साथ चलने के लिये आग्रह किया। पर वे उसे साथ न ले गये। भीमा के हृदय में उस चीते को देखने की बड़ी इच्छा थी। दूसरी बात यह थी कि वह अपने पिता को बहुत प्यार करता था। उसे भय हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि वह चीता उसके पिता पर ही आक्रमण कर दे। अतः वह अपने को न रोक सका। घर के बाकी सब लोग जब सो गये, तो वह चुपके से एक पोटली-सी हाथ में लेकर घर से चल दिया और पहरे वाली जगह पर पहुंच एक पेड़ पर छिप कर बैठ गया।

उस दिन बड़ी अँधेरी रात थी। सावन-भादों के दिन न होते हुए भी आकाश पर बादल छाये हुए थे। हाथ को हाथ न सूझता था। खेतों की पगडंडियां भी दिखाई न देती थीं। हवा भी कुछ ठंडी चल रही थी। कभी-कभी जब बिजली चमक जाती थी, तो उस पल भर के उजाले में भीमा अपने पिता और दूसरे पहरेदारों की ओर देख लेता था। बड़ी डरावनी रात थी वह।

हलधरसिंह और उसके साथियों ने अँधेरे में ही टटोल-टटोल कर सूखे पत्ते और पतली पतली लकड़ियां बटोर कर आग जला ली। अब कुछ उजाला हो गया था। सभी लोग चौकस होकर चीते के आने की राह देखने लगे। जरा कहीं पत्ता भी खड़खड़ाता तो वे चौंक पड़ते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आग को जले अभी मुश्किल से आधा घंटा ही हुआ था कि वर्षा होने लगी, जिससे आग बुझ गई। फिर वही अंधेरा हो गया जो पहिले था, और फिर ऊपर से वर्षा। कुछ पहरेदारों ने तो चुपके से वहां से घर के लिये खिसकना शुरू किया।

सहसा उत्तर की ओर पहाड़ी नाले के उस पार दो धूमिल तारे-से चमकते दिखाई दिये। हलधर और उसके साथियों ने उन्हें देखा और समझा कि उधर बादल फटने लगा है और अब बहुत शीघ्र ही इधर से भी बादल हट जायेंगे। लेकिन ये तारे नहीं थे, ये उसी दुष्ट चीते की आंखें थीं जो अँधेरी रात में तारों-जैसी चमक रही थीं।

तभी बिजली चमकी और उस पल भर के प्रकाश में पहरेदारों ने देखा कि वह खून का प्यासा चीता उन्हीं की ओर बढ़ा आ रहा है। चीते को देख कर सब के होश-हवास उड़ गये। हलधरसिंह ने अपने साथियों को हथियार संभालने और ढोल पीटने का आदेश दिया। किसी ने कांपते हाथों से ढोल पीटा और इसके बाद तुरन्त ही अँधेरे में हलधरसिंह को अकेला छोड़ कर सब नौ-दो-ग्यारह हो गये।

चीता अब बिल्कुल पास आ गया था और वहां केवल हलधरसिंह रह गया था। भीमा ने सोचा कि अब पिता जी भारी खतरे में हैं। तभी बिजली फिर चमकी। भीमा ने देखा कि चीता उसके पिता से कोई सात-आठ गज के फासले पर खड़ा गुर्रा रहा है। अब देर करना उचित नहीं था। इससे पहले कि चीता हलधरसिंह पर झपटे, भीमा वृक्ष से कूद कर बिजली की तेजी से वहां पहुँच गया और हाथ की पोटली से गोल-गोल चीज निकाल कर उसने जोर से धरती पर दे मारी, जिस से जोर का धड़ाका हुआ। यह पटाखा था, जिसे भीमा विशेष रूप से तैयार करके घर से लाया था। वह विज्ञान का विद्यार्थी जो था।

पहले पटाखे के शब्द से ही चीता घबड़ा गया। भीमा ने पोटली से निकाल कर दो पटाखे और वहां छोड़े। इस धांय-धांय के शब्द से डर कर चीता दुम दबा कर उलटे पाव वापस भागा और हलधरसिंह की जान बच गई।

हलधरसिंह अपने छोटे से पुत्र की वीरता से चकित रह गया। उसने दौड़ कर भीमा को गोदी में उठा लिया।

पटाखों की आवाज सुन कर गांव के और लोग भी वहां पहुँच गये। उन्होंने जब घटना का सारा हाल सुना तो वे सब भीमा की प्रशंसा करने लगे। पटाखों से चीता ऐसा डरा कि वह फिर कभी उस गांव की ओर नहीं आया।

★

ये पक्षी भी विचित्र हैं !

मनुष्य की भांति चिड़िया भी अपने भले बुरे की बात सोच-समझ सकती है। उसका भी मस्तिष्क होता है।

यूरोप का एक 'प्लोवर' नामक लम्बे पैरों वाला पक्षी खतरे के समय परों और पैरों को फैला कर धरती से चिमट जाता है। ऐसा करने से उसके शरीर का रंग आस-पास की चीजों के रंग में छिप जाता है और उसके प्राणों की रक्षा हो जाती है।

कौवा बहुत ही चालाक पक्षी है, परन्तु वह अपने और कोयल के अण्डों में भेद नहीं कर सकता।

पक्षियों, विशेषकर चिड़ियों के शरीर का तापमान ज्वर-पीड़ित मनुष्य के तापमान से भी अधिक होता है।

कई पक्षी अपने घोंसले को सुन्दर बनाने के शौकीन होते हैं। बया का घोंसला बहुत ही सुन्दर होता है। अमरीका का एक पक्षी अपने घोंसले को सांप की केंचुली से सजाता है। बाज और गिद्ध अपने अपने घोंसलों को हरी पत्तियों और कोमल शाखाओं से सजाते हैं। 'प्लोवर' नामक पक्षी अपने घोंसले को घोंघों और पत्थर के सुनहले टुकड़ों से सजाता है।

कई पक्षी कभी-कभी आपस में झगड़ते हुए दिखाई देते हैं। वास्तव में वे झगड़ते नहीं, झगड़ने का केवल नाटक करते हैं।

[मनोरंजन

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना-शुल्क

बाल-पहेली नं० १८

२५ अप्रैल १९४९ तक सही उत्तर आने पर पांच रुपये नकद पुरस्कार

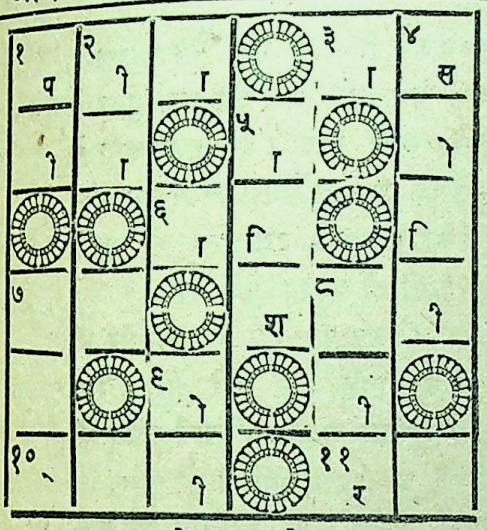

दायें से बायें

१. सभी विद्यार्थी इससे डरते हैं।
३. इस शब्द का प्रयोग अधिकतर विद्यार्थी अथवा सिनेमा-तमाशा जाने वाले लोग ही करते हैं।
६. इसके अन्त में 'होत्री' लगाने से पशुओं का डाक्टर बन जाता है।
७. तुलसीदास की रामायण में सबसे अधिक इन दो अक्षरों का प्रयोग हुआ है।
१०. एक नगर का नाम जिसका सम्बन्ध चौखट से है।
११. इसे उलटने से और दोहराने से डर लगता है।

ऊपर से नीचे

१. स्त्री भी और पक्षी भी।
२. कोई ठिंगना लड़का तेज दौड़े, तो इससे उपमा दी जाती है।
४. भारत की ऐसी कोयल जो वसन्त आने पर चली गई।
५. यह अपने पर नहीं, दूसरे पर की जाती है।
७. उलटने से एक ऐसे व्यक्ति का नाम बन जाता है, जिसकी होली के दिन घर में सबसे अधिक गत बनती है और खातिर होती है।
८. श्री कृष्ण को भी कभी यह बनना पड़ा था। (आरम्भ में ह्रस्व-स्वर)
९. अब इसका रिवाज कम हो गया है।

बाल-पहेली नं० १७ का पुरस्कार

मार्च १९४९ के 'मनोरंजन' में प्रकाशित बाल-पहेली नं० १७ का सही उत्तर श्री वीरेन्द्रकुमार, ठिकाना—श्री कुञ्जीलाल जी, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी नगर, वर्धा और विद्यार्थी सूरजपाल सिंह, कक्षा ८ ए, क्षत्री स्कूल, सिरसागंज (मैनपुरी) ने भेजा है। अतः इन दोनों के बीच पुरस्कार की राशि बराबर-बराबर बांट दी गई है। सही उत्तर निम्नलिखित है—

दायें से बायें

(१) होली, (३) बालक, (६) भंग, (८) रज, (९) धान, (१२) कबीर, (१३) गाल।

ऊपर से नीचे

(१) होनहार, (२) लीनी, (४) लड़, (५) कपासी, (७) गधा, (१०) कार, (११) ढोल।

बाल-पहेली के नियम

१. केवल १४ वर्ष की आयु तक के लड़के-लड़कियां ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। आयु के सम्बन्ध में माता-पिता अथवा स्कूल के अध्यापक का प्रमाण-पत्र भी उत्तर के साथ आना चाहिये।
२. उत्तर 'मनोरंजन' में छपे खाके को काट कर और भर कर भेजना चाहिए। किसी और कागज पर अलग से भेजे गये उत्तर पर विचार नहीं किया जायेगा। एक व्यक्ति एक से अधिक पूर्तियां भी भेज सकता है।
३. खानों को स्याही से सुस्पष्ट लिखे अक्षरों से भरना चाहिये। कटे-छंटे या पैंसिल आदि से लिखे अक्षर को सही नहीं माना जायेगा।
४. उत्तर २५ अप्रैल १९४९ को सायंकाल तक 'मनोरंजन' कार्यालय, श्री श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली में पहुंच जाना चाहिये।
५. सम्पादक का निर्णय अन्तिम होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, ...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आग को जले अभी मुश्किल से आधा घंटा ही हुआ था कि वर्षा होने लगी, जिससे आग बुझ गई। फिर वही अंधेरा हो गया जो पहिले था, और फिर ऊपर से वर्षा। कुछ पहरेदारों ने तो चुपके से वहां से घर के लिये खिसकना शुरू किया।

सहसा उत्तर की ओर पहाड़ी नाले के उस पार दो धूमिल तारे से चमकते दिखाई दिये। हलधर और उसके साथियों ने उन्हें देखा और समझा कि उधर बादल फटने लगा है और अब बहुत शीघ्र ही इधर से भी बादल हट जायेंगे। लेकिन ये तारे नहीं थे, ये उसी दुष्ट चीते की आंखें थीं जो अँधेरी रात में तारों-जैसी चमक रही थीं।

तभी बिजली चमकी और उस पल भर के प्रकाश में पहरेदारों ने देखा कि वह खून का प्यासा चीता उन्हीं की ओर बढ़ा आ रहा है। चीते को देख कर सब के होश-हवास उड़ गये। हलधरसिंह ने अपने साथियों को हथियार संभालने और ढोल पीटने का आदेश दिया। किसी ने कांपते हाथों से ढोल पीटा और इसके बाद तुरन्त ही अँधेरे में हलधरसिंह को अकेला छोड़ कर सब नौ-दो-ग्यारह हो गये।

चीता अब बिल्कुल पास आ गया था और वहां केवल हलधरसिंह रह गया था। भीमा ने सोचा कि अब पिता जी भारी खतरे में हैं। तभी बिजली फिर चमकी। भीमा ने देखा कि चीता उसके पिता से केवल सात-आठ गज के फासले पर खड़ा गुर्रा रहा है। अब देर करना उचित नहीं था। इससे पहले कि चीता हलधरसिंह पर झपटे, भीमा वृक्ष से कूद कर बिजली की तेजी से वहां पहुँच गया और हाथ की पोटली से गोल-गोल चीज निकाल कर उसने जोर से धरती पर दे मारी, जिस से जोर का धड़ाका हुआ। यह पटाखा था, जिसे भीमा विशेष रूप से तैयार करके घर से लाया था। वह विज्ञान का विद्यार्थी जो था।

पहले पटाखे के शब्द से ही चीता घबड़ा गया। भीमा ने पोटली से निकाल कर दो पटाखे और वहां छोड़े। इस धांय-धांय के शब्द से डर कर चीता दुम दबा कर उलटे पाव वापस भागा और हलधरसिंह की जान बच गई।

हलधरसिंह अपने छोटे से पुत्र की वीरता से चकित रह गया। उसने दौड़ कर भीमा को गोदी में उठा लिया।

पटाखों की आवाज सुन कर गांव के और लोग भी वहां पहुँच गये। उन्होंने जब घटना का सारा हाल सुना तो वे सब भीमा की प्रशंसा करने लगे। पटाखों से चीता ऐसा डरा कि वह फिर कभी उस गांव की ओर नहीं आया।

★

ये पक्षी भी विचित्र हैं !

मनुष्य की भांति चिड़िया भी अपने भले बुरे की बात सोच-समझ सकती है। उसका भी मस्तिष्क होता है।

यूरोप का एक 'प्लोवर' नामक लम्बे पैरों वाला पक्षी खतरे के समय परों और पैरों को फैला कर धरती से चिमट जाता है। ऐसा करने से उसके शरीर का रंग आस-पास की चीजों के रंग में छिप जाता है और उसके प्राणों की रक्षा हो जाती है।

कौवा बहुत ही चालाक पक्षी है, परन्तु वह अपने और कोयल के अण्डों में भेद नहीं कर सकता।

पक्षियों, विशेषकर चिड़ियों के शरीर का तापमान ज्वर-पीड़ित मनुष्य के तापमान से भी अधिक होता है।

कई पक्षी अपने घोंसले को सुन्दर बनाने के शौकीन होते हैं। बया का घोंसला बहुत ही सुन्दर होता है। अमरीका का एक पक्षी अपने घोंसले को सांप की केंचुली से सजाता है। बाज और गिद्ध अपने अपने घोंसलों को हरी पत्तियों और कोमल शाखाओं से सजाते हैं। 'प्लोवर' नामक पक्षी अपने घोंसले को घोंघों और पत्थर के सुनहले टुकड़ों से सजाता है।

कई पक्षी कभी-कभी आपस में झगड़ते हुए दिखाई देते हैं। वास्तव में वे झगड़ते नहीं, झगड़ने का केवल नाटक करते हैं।

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना-शुल्क

बाल-पहेली नं० १८

२५ अप्रैल १९४९ तक सही उत्तर आने पर पांच रुपये नकद पुरस्कार

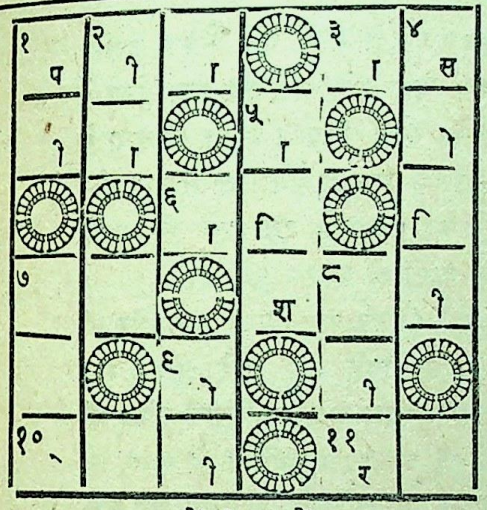

दायें से बायें

१. सभी विद्यार्थी इससे डरते हैं।

३. इस शब्द का प्रयोग अधिकतर विद्यार्थी अथवा सिनेमा-तमाशा जाने वाले लोग ही करते हैं।

६. इसके अन्त में 'होत्री' लगाने से पशुओं का डाक्टर बन जाता है।

७. तुलसीदास की रामायण में सबसे अधिक इन दो अक्षरों का प्रयोग हुआ है।

१०. एक नगर का नाम जिसका सम्बन्ध चौखट से है।

११. इसे उलटने से और दोहराने से डर लगता है।

ऊपर से नीचे

१. स्त्री भी और पक्षी भी।

२. कोई ठिंगना लड़का तेज दौड़े, तो इससे उपमा दी जाती है।

४. भारत की ऐसी कोयल जो वसन्त आने पर चली गई।

५. यह अपने पर नहीं, दूसरे पर की जाती है।

७. उलटने से एक ऐसे व्यक्ति का नाम बन जाता है, जिसकी होली के दिन घर में सबसे अधिक गत बनती है और खातिर होती है।

८. श्री कृष्ण को भी कभी यह बनना पड़ा था। (आरम्भ में हस्व-स्वर)

९. अब इसका रिवाज कम हो गया है।

बाल-पहेली नं० १७ का पुरस्कार

मार्च १९४९ के 'मनोरंजन' में प्रकाशित बाल-पहेली नं० १७ का सही उत्तर श्री वीरेन्द्रकुमार, ठिकाना—श्री कुञ्जीलाल जी, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी नगर, वर्धा और विद्यार्थी सूरजपाल सिंह, कक्षा ८ ए, क्षत्री स्कूल, सिरसागंज (मैनपुरी) ने भेजा है। अतः इन दोनों के बीच पुरस्कार की राशि बराबर-बराबर बांट दी गई है। सही उत्तर निम्नलिखित है—

दायें से बायें

(१) होली, (३) बालक, (६) भंग, (८) रज, (९) धान, (१२) कबीर, (१३) गाल।

ऊपर से नीचे

(१) होनहार, (२) लीनी, (४) लड़, (५) कपासी, (७) गधा, (१०) कार, (११) ढोल।

बाल-पहेली के नियम

१. केवल १४ वर्ष की आयु तक के लड़के-लड़कियां ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। आयु के सम्बन्ध में माता-पिता अथवा स्कूल के अध्यापक का प्रमाण-पत्र भी उत्तर के साथ आना चाहिये।

२. उत्तर 'मनोरंजन' में छपे खाके को काट कर और भर कर भेजना चाहिए। किसी और कागज पर अलग से भेजे गये उत्तर पर विचार नहीं किया जायेगा। एक व्यक्ति एक से अधिक पूर्तियां भी भेज सकता है।

३. खानों को स्याही से सुस्पष्ट लिखे अक्षरों से भरना चाहिये। कटे-छंटे या पैंसिल आदि से लिखे अक्षर को सही नहीं माना जायेगा।

४. उत्तर २५ अप्रैल १९४९ को सायंकाल तक 'मनोरंजन' कार्यालय, श्री श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली में पहुंच जाना चाहिये।

५. सम्पादक का निर्णय अन्तिम होगा।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांझ स्त्रियों के लिये

मेरी शादी हुए पन्द्रह वर्ष बीत चुके थे। इस समय के बीच मैंने सैकड़ों इलाज कराये लेकिन कोई सन्तान पैदा न हुई। सौभाग्य वश मुझे एक वृद्ध महा पुरुष से निम्न लिखित नुस्खा प्राप्त हुआ। मैंने उसे बना कर सेवन किया। ईश्वर की कृपा से नौ मास बाद मेरी गोद में बालक खेलने लगा। इसके पश्चात् मैंने जिस सन्तान हीन बहन को इसका सेवन कराया उसी की आशा पूरी हुई। अब मैं इस नुस्खे को सूची-पत्र द्वारा प्रकाशित कर रही हूं ताकि मेरी निराश बहनों की आशा पूर्ण हो।

औषधि तन्त्र ये हैं—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नैपाल गवर्नमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारी दक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम से कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कढियारी सफेद की जड़ (यानी सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घण्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें। इसके सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती बहनें इस लायक हो जाती हैं कि कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति —गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातःकाल और सायंकाल एक एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट — औषधि तन्त्र के अंदर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अंदर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

मेरी सन्तान हीन बहिनों,

आप इसे बे गुण औषधि न समझें। यदि आप बच्चे की माता बनना चाहती हैं, तो इसे बनाकर जरूर सेवन करें। मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि इसके सेवन से आपकी अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। यदि कोई बहन इस औषधि को मेरे हाथ से ही बनवाना चाहें तो पत्र द्वारा सूचित करें। मैं उन्हें औषधि तैयार करके भेज दूंगी। एक बहिन की औषधि पर पांच रुपये बारह आने। दो बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने और तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आना खर्च आते हैं। महसूल डाक वगैरह बारह आने इससे अलग है।

नोट — जिस बहिन को मेरे पर विश्वास न हो वो मुझे दवा के लिए हरगिज न लिखें।

रतनबाई जैन (४४) सदर बाजार थाना रोड, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुफिया फोटो वाला एकान्त में बैठ कर पढ़ने योग्य सम्पूर्ण

असली, सचित्र कोक-शास्त्र, रंगीन

यदि आप बिल्कुल असली आसनों व असली हालतों के फोटो वाला सचित्र कोक शास्त्र लेना चाहते हैं तो आज ही पत्र लिख कर मंगा लें। इसमें स्त्रियों के गुप्त असली फोटो व आसनों के चित्र, आनन्द प्राप्त करने के पोशीदा तरीके, हर प्रकार की स्त्री को अपने वश में करके आयू भर दासी बनाये रखना, ६८ प्रकार की गुप्त काम कलायें, व ८४ आसन रति के अङ्ग, संभोग शिक्षा, आलिंगन चुम्बन सुहाग रात का आनन्द, आसनों का वर्णन आदि ऐसी सैंकड़ों गुप्त बातें लिखी है कि पढ़ते पढ़ते आप पुस्तक को बार बार छाती से लगायेंगे। असली मूल्य ५)। रियायती की २॥) डाक खर्च ॥=) अलग।

असली पुराना 'मिश्र का जादू' सचित्र रंगीन सम्पूर्ण

(मिश्र देश के जादू, विद्या की हस्तलिलित पुस्तक का अनुवाद)

[१] वशीकरण [२] सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनिआदि प्रत्येक ग्रह का वशीकरण और अन्य सब चीजों के वशीकरण, बड़े बड़े मुकदमें जीतना व चोरी पकड़ना हर तरह के साधन रोगों पर दम करना, चाहे कोई रोग हो और औषधी से लाभ न होता हो। घर बैठे दूर देशों की सैर करना, पवन में उड़ते फिरना, जिस को चाहें वश में कर लेना नजर से गुप्त हो जाना दूसरे रूप में प्रकट होना, दूर दराज की वस्तुयें मंगवा लेना, जेब, परी, जिन्नों और शत्रुओं को अधिकार में रख कर इच्छानुसार काम लेना आदि ऐसे गुप्त भेद दर्ज हैं जिनको साधु, महात्मा ऋषि मुनि भी न पा सके। इस से बढ़ कर आप को और कोई पुस्तक नहीं मिल सकती। यदि पुस्तक लिखे अनुसार न हो तो वापिस कर दो कीमत सजिल्द २॥) डाक खर्च ॥=) कुल ३=)।

१०००) रु० महावार शर्तिया कमा लो (अर्थात् खजाना रोजगार)

इस पुस्तक में ५२८ हुनर छपे हैं। चाहे कोई सा एक हुनर अपने मतलब का चुन लें और उससे १०००) महावार कमावें। किसी उस्ताद की जरूरत नहीं। गिलटसाजी, फोटोग्राफी घड़ीसाजी, दंदानसाजी, रबड़ की मुहरें। आतिशबाजी, साबुन, बाल काले करने के अंग्रेजी खिजाब बाल उम्र भर न उगने की दवा बनाना, मोम बत्ती, गंधक के गिलास, शीशा जोड़ना, इत्र तेल, फुलेल अंग्रेजी खाने, बिस्कुट मिठाई अचार, मुरब्बे, चटनियाँ सब रोगों के इलाज और १०८ बीमारियों की एक दवा अमृत का नुस्खा आदि ५२८ हुनर छपे हैं शीघ्र मंगा लें। रियायती मूल्य १॥) डाक खर्च ॥=) अलग।

फिरंगी और हिन्दुस्तानी मदारी अर्थात् भानमती का पिटारा

यह पुस्तक यौरुप और हिन्दुस्तानी मदारियों का पिटारा है। इसमें अंडे, बोतल, गिलास, फुलझड़ी, रुपया, ताश का खेल, भूत प्रेत जिन्न उतारना, अंधेरे में रोशनी कर देना मुंह से आग निकालना, हाथ पर आग रखें तो हाथ न जले, मनुष्य को कत्ल करके जिंदा कर देना आम का बूटा, सरसों हाथ पर जमाना, बिना भट्टी चुआर, चने भून देना, आग पर खाना न पके, बंधे मनुष्य को छुड़ाना, कागज की कढ़ाई में पकौड़े तलना, कमरे में हरे रंग की रोशनी हो, जादू की स्याहियों के नुस्खे जिन से लिखा हुआ अन्य मनुष्य पढ़ न सकें और सैंकड़ों तमाशे बहुत ही सरल रीति से लिखे हैं मूल्य सजिल्द १॥) डाक खर्च ॥=) अलग।

यक्षिणी भैरव साधनम्—इस पुस्तक में नाना प्रकार के चमत्कार यंत्र मंत्र आदि विषय हिन्दी भाषा में लिखे गये हैं। जिन से विद्वान तथा अल्प पठित पुरुष भी अपनी मनोकामना पूरी कर सकते हैं। योग विद्या वर्णन, यक्षिणी तथा शिव विष्णु ब्रह्मा सूर्य, चन्द्र भैरव महावीर आदि देवताओं को सिद्ध प्राप्तकर के अपनी आशाएं पूर्ण होती हैं। कीमत २॥) डाक खर्च ॥=) अलग।

पता:—मैनेजर सिनेमा संसार (M. M. H) सदर बाजार, देहली।

CC-0. In Public Domain. G

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनों

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं, और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिकधर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी। मुझे मासिक धर्म खुल कर न आता था। अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन कमजोर होती जा रही थी, चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की मशहूर औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से भी रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महात्मा हमारे दरवाजे पर भिक्षा के लिये आये। मैं दरवाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रंग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पतिदेव को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुःखी बहिनों की भलाई के लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखें। मैं उनको अपने हाथ से औषधि बना कर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवाई तैयार करने पर २॥।=) दो रु० चौदह आने असल लागत खर्च होता है और महसूल डाक अलग है।

* जरूरी सूचना *

मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है। इस लिये कोई बहन मुझे और किसी रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, (३०) बुडलाडा, जिला हिसार पंजाब।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जादूगरी के अनोखे चमत्कार

इनको दिखाने के लिए किसी सिद्धी की आवश्यकता नहीं। विधि पूरी सहित पहले कोई भी 'शो' करके देख लीजिये। या बहुत से प्रशंसा-पत्र व सूची-पत्र मंगा कर पढ़िये।

रहस्य मय माचिस

दियासलाइयों की एक भरी डिब्बी रूमाल के नीचे रख पहले डिब्बी का खाली खोल बाहर निकाल लिया जाता है फिर खाली दराज भी। इसके बाद किसी दर्शक से रूमाल के नीचे से कुछ सींकें लाने को कहा जाता है। उसके निष्फल यत्न पर सब हंस पड़ते हैं, क्यों कि वहां कुछ भी नहीं निकलता।

आ क र्ष ण

यह यन्त्र एक अद्भुत और विलक्षण दृश्य उपस्थित कर देगा। आप किसी से छड़ी या छाता मांगें और पृथ्वी पर खड़ा कर उसे यों ही छोड़ दें। छाता खड़ा का खड़ा रह जाएगा जिसे देख सब दांतों तले उंगली दबा लेंगे। इतना ही नहीं आपके इशारे से वह वस्तु हिलेगी तथा रुकेगी भी। सब हैरान हो जायंगे

स्वतन्त्र पैसा

दर्शक अपना एक छेद वाला पैसा (कुण्डल) एक साधारण डोरी में पिरो कर दोनों सिरे मजबूती से पकड़ लेता है। परन्तु जादूगर एक दम पैसा निकाल कर दिखा देता है और दर्शक के हाथ खाली डोर रह जाती है पैसा दशकों को दे दिया जाता है।

मैजिक सिगरट

पहले आप अपनी सारी उंगलियां फैला कर दोनों हाथ खाली दिखाइये और फिर हवा में से दर्जनों असली सिगरेटें एक एक कर पकड़ते चलिये तत्पश्चात् एक दम जब आप चाहें तुरन्त सब को हवा में उड़ा दीजिये। इस खेल को प्रदर्शित कर आप 'सिद्ध' कहलाने लग जायेंगे।

विधि सहित चारों खेलों का मूल्य नौ रुपया ९) डाक व्यय अलग

प्रशंसा पत्र पढ़िये

राधारमण जोशी मुलताई (सी. पी.)

बिलकुल ही नई और विचित्र चीज है तथा सरल है। सभ्यता के स्थल पर यही कहा जायगा कि पत्रिका की विज्ञप्ति में दिये हुए शब्दों से कई दर्जे अधिक हैं कम का तो नाम ही नहीं है मैं जितनी भी प्रशंसा करूं थोड़ी ही सिद्ध होगी।

बालमुकन्द स्वर्णकार रावलगली बलोतरा (मारवाड़)

"बहुत ही आंला है जिन की प्रशंसा करना हमारी हद के बाहर है और क्या कहूं आज यहां के लोग मुझे बहुत चाहते हैं व मेरा नाम, गांव वालों ने जादूगर जी रखा है।

पूरी विधि सहित कुल सामान का मूल्य, दस रुपया आठ आना।

मोहनी भण्डार रजिस्टर्ड [S. H.] देहली।

प्रिंटर पब्लिशर श्री दयाल शर्मा दास, अर्जुन प्रेस देहली से छप कर प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha...

रजि० नं० — यू० १०१
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियों के लिये अतिरिक्त शक्ति

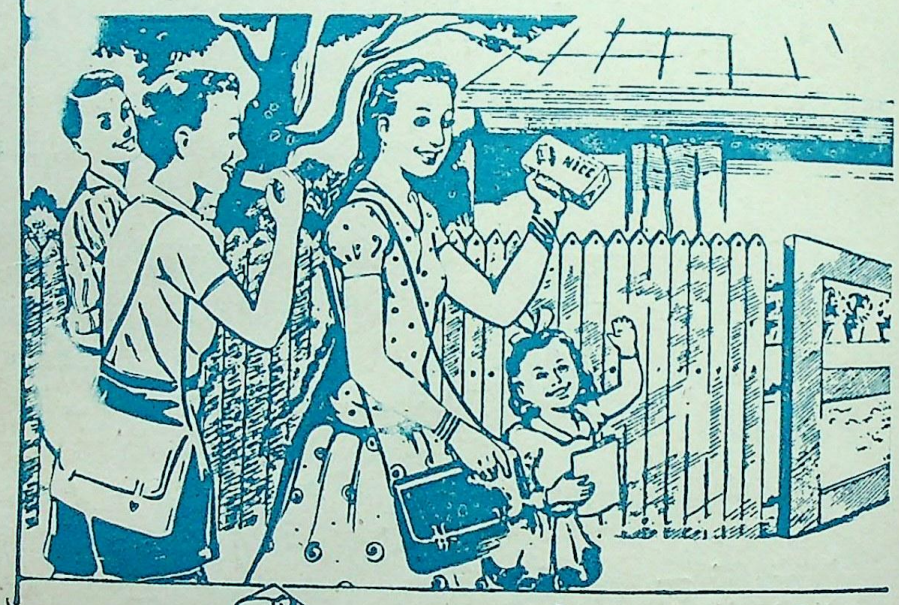

कुरकुरे तथा स्वादिष्ट
एक्मे बिस्कुट

Acme
BISCUITS

क्रमेस्पेशल, नाइस, मरी, कुस्टर्ड क्रीम, क्रीमक्रैकर,
मालटिस, पिटेबरी फिन्गरक्रीम, जिंजरनट,
अरारोटक्रफर, ग्लूकोरोट, किन्डरगोर्टन

मोदी बिस्कुट कम्पनी मोदीनगर, यू. पी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय-पुस्तक भण्डार की सामयिक पुस्तकें

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है। मूल्य १॥) रुपया।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय ललकार एक ही साथ हैं पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य हैं। मूल्य १) डाकव्यय ।-)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झाँकियाँ'

प्रथम खण्ड-दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन, मू०॥)
द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला! मूल्य ॥)
तीसरा खंड-मेरे नौकरशाही जेल के अनुभव, मू० १)
तीनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य १॥)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी।

मूल्य २)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है

अपितु

जनता के उद्‌बोधन का मार्ग है।

इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)।

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा।

मूल्य १।) डाक व्यय ।=)

प्राप्ति स्थान—विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

T. B. 'तपेदिक' तथा पुराने ज्वर के रोगियो-ध्यान पूर्वक पढ़ो!

टी० बी० भारतीय ऋषियों की खोज का अद्भुत चमत्कार (JABRI) एक आश्चर्यजनक घटना

मेरी स्त्री अनेक दिनों से बीमार थी, आखिर डाक्टरों ने 'तपेदिक' (टी० बी०) रोग बतलाया। 'तपेदिक' का नाम सुनते ही होश हवाश उड़ गये। अन्त में डाक्टरों ने एक्सरे करके दोनों फेफड़े खराब (गल) जाने की बात कह कर मुझे आदेश दिया कि रोगी १०-१५ दिन का मेहमान है। इसको अस्पताल से ले जाओ और किसी अलग कमरे में रख दो। कोई इसके पास न जावे। इसके थूक आदि से बचाव रखो लाचार हो कर उसको घर ले आया।

फिर क्या हुआ—अखबार 'मिलाप' में आपकी दवा 'जबरी' का विज्ञापन देखा। दिल ने कहा, जब सैकड़ों रुपया हकीम, डाक्टरों की भेंट चढ़ा चुका हूं, यह भी खर्च करके देख लूं। रोगी ने कहा कि जब डाक्टरों ने यह कह दिया है कि दोनों फेफड़े खराब हो चुके हैं और मैं १०-१५ दिन की मेहमान हूं तो व्यर्थ क्यों खर्च करते हो, मुझे अब परमात्मा पर छोड़ दो। परन्तु दिल ने न माना और तुरन्त 'जबरी' नं० १ का आर्डर दे डाला। पांचवें दिन पार्सल पहुंच गया और विधि के अनुसार औषधि शुरू करा दी गई।

फिर क्या हुआ—वही आश्चर्यजनक चमत्कार। जिस रोगी के बारे में डाक्टरों ने मौत का फतवा दे दिया था और ६ मास बराबर इलाज करने पर भी बुखार न गया था, शक्तिशाली औषधि 'जबरी' ने दस दिन में ही अपना चमत्कार दिखा दिया, बुखार बिल्कुल जाता रहा। शरीर में रक्त का संचार होने लगा और दिल में पहले की सी उमंग पैदा हो गई। दिल में पूर्ण रूप से विश्वास हो गया कि जिस दवा ने इतनी जल्दी ऐसा चमत्कार दिखाया है क्यों न स्त्री को एक बार वहीं लेजा कर पूर्णरूप से परीक्षा करा कर आगे को इलाज का प्रबन्ध किया जावे। मेरी स्त्री की भी वही राय हुई।

फिर क्या हुआ—जिस रोगी में चारपाई से उठने की शक्ति न थी हजारों मील रेल की यात्रा करके 'जगाधरी' आ गई जहां पूर्ण परीक्षा के बाद उत्तम रूप से औषधियों का प्रबन्ध हुआ, रोगी की तन्दुरुस्ती दिन पर दिन बदलती गई और अब परमात्मा की कृपा से बिल्कुल ठीक हो गई है। यह ऋषियों के रक्त से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र की पूर्ण सफलता का चमत्कार है। उपरोक्त घटना सरदार कर्त्तारसिंह इण्डियन मिलिटरी जनरल हस्पताल, कराची से घटी।

पाठक वृन्द—यह एक नहीं और भी देखिये! (१) लाला काशीप्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहबाद) (२) बा० मुन्नालाल स्टोरकीपर सिम्बाली शूगर मिल पो० बक्सर (मेरठ) (३) बा० रामसिंह घर नं० ६१ रीठा मण्डी (देहरादून) (४) श्री तोसलहूसेन रईस मो० मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जिला फैजाबाद आदि सैकड़ों सज्जनों का यही कहना है कि शक्तिशाली औषधि 'जबरी' दवा नहीं बल्कि यथार्थ में रोगी को काल के गाल से बचाने वाली ईश्वरीय शक्ति' है। सैंकड़ों हकीम, वैद्य, डाक्टर अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं। अनेक आदमी तार से आर्डर देते हैं। तार के लिये थोड़ा सा पता 'जबरी' (जगाधरी) (Jabri Jagadhri) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार है—'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ाने के लिए, सोना, मोती अभरक आदि मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु० नमूना १० दिन के लिये १०) 'जबरी' नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल अदि अलग है। आर्डर में अखबार का हवाला तथा नं० १ या दो साफ लिखें। तुरन्त आर्डर दे कर रोगी की जान बचावें। १० दिन ही में अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिये मूल्य मनिआर्डर से भेजें, जिससे तुरन्त भेज दें।

पता-रायसाहब के० एल० शर्मा एंड सन्स, रईस एंड बैंकर्स [M] "जगाधरी" [पूर्वी पंजाब]

CC-0. In Public Domain. Gurukul

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जादूगरी के अनोखे चमत्कार

इनको दिखाने के लिए किसी सिद्धी की आवश्यकता नहीं। विधि पूरी सहित पहले कोई भी 'शो' करके देख लीजिये। या बहुत से प्रशंसा-पत्र व सूची-पत्र मंगा कर पढ़िये।

रहस्य मय माचिस

दियासलाइयों की एक भरी डिब्बी रूमाल के नीचे रख पहले डिब्बी का खाली खोल बाहर निकाल लिया जाता है फिर खाली दराज भी। इसके बाद किसी दर्शक से रूमाल के नीचे से कुछ सीकें लाने को कहा जाता है। उसके निष्फल यत्न पर सब हंस पड़ते हैं, क्यों कि वहां कुछ भी नहीं निकलता।

आ क र्ष ण

यह यन्त्र एक अद्भुत और विलक्षण दृश्य उपस्थित कर देगा। आप किसी से छड़ी या छाता मांगें और पृथ्वी पर खड़ा कर उसे यों ही छोड़ दें। छाता खड़ा का खड़ा रह जाएगा जिसे देख सब दांतों तले उंगली दबा लेंगे। इतना ही नहीं आपके इशारे से वह वस्तु हिलेगी तथा रुकेगी भी। सब हैरान हो जायंगे

स्वतन्त्र पैसा

दर्शक अपना एक छेद वाला पैसा (कुण्डल) एक साधारण डोरी में पिरो कर दोनों सिरे मजबूती से पकड़ लेता है। परन्तु जादूगर एक दम पैसा निकाल कर दिखा देता है और दर्शक के हाथ खाली डोर रह जाती है पैसा दर्शकों को दे दिया जाता है।

मैजिक सिगरट

पहले आप अपनी सारी उंगलियां फैला कर दोनों हाथ खाली दिखाइये और फिर हवा में से दर्जनों असली सिगरेटें एक एक कर पकड़ते चलिये तत्पश्चात् एक दम जब आप चाहें तुरन्त सब को हवा में उड़ा दीजिये। इस खेल को प्रदर्शित कर आप 'सिद्ध' कहलाने लग जायेंगे।

विधि सहित चारों खेलों का मूल्य नौ रुपया ९) डाक व्यय अलग

प्रशंसा पत्र पढ़िये

राधारमण जोशी मुलताई (सी. पी.)

बिलकुल ही नई और विचित्र चीज है तथा सरल है। सभ्यता के स्थल पर यही कहा जायगा कि पत्रिका की विज्ञप्ति में दिये हुए शब्दों से कई दर्जे अधिक हैं कम का तो नाम ही नहीं है मैं जितनी भी प्रशंसा करूं थोड़ी ही सिद्ध होगी।

बालमुकन्द स्वर्णकार रावलगली बलोतरा (मारवाड़)

"बहुत ही आला है विद्या की प्रशंसा करना हमारी हद के बाहर है और क्या कहूं आपके यहां के लोग मुझे बहुत चाहते हैं व मेरा नाम, गांव वालों ने जादूगर जी रखा है।

पूरी विधि सहित कुल सामान का मूल्य, दस रुपया आठ आना।

मोहनी भण्डार रजिस्टर्ड [S. H.] देहली।

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ ★ ★ ८००० रु० नकद इनाम ★ ★ ★

पहिला इनाम—ठीक हल के लिए ६००० रु० (जो एक से अधिक हल ठीक होने पर बराबर बांट दिया जावेगा)। **दूसरा इनाम**—सबसे अधिक हलों के लिये १००० रु०। **तीसरा इनाम**—सबसे पहिले ठीक हल भेजने वाले के लिये १००० रु०।

हल क्या करना है ? सामने दिये हुए नौ खानों में १०० तक के कोई से अङ्क इस भाँति से भरिये कि जिस ओर से भी जोड़ें, उत्तर ७५ हो। एक अङ्क एक ही बार लिखा जा सकता है।

	२५	

दाखला फीस—एक रु० प्रति हल।

नियम—हर एक आदमी एक या एक से अधिक जितने हल चाहे सफेद कागज पर एक रुपया प्रति हल के हिसाब से फीस के साथ भेज सकता है। फीस दाखला मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजनी चाहिये। मनीआर्डर की रसीद हलों के साथ आनी चाहिये अथवा ऐसा हो सकता है कि आपके हल मुकाबले में सम्मिलित न हो सकें। सही हल वही समझा जावेगा जो हमारे मुहरबन्द हल के साथ जो सम्पादक महोदय दैनिक 'अमर भारत' के पास रखा गया है, खाना दर खाना मिलेगा। इनामी नतीजे की कापी के लिये दो आने के टिकट और अपने पते का लिफाफा भेजें। इनाम की रकम दाखला फीस की आई हुई रकम के अनुसार कमी बेशी हो सकती है पर सही हल के इनाम की कम से कम ५० रु० की गारण्टी है। हलों के रास्ते में खो जाने या डाकखाने के कारण देर पहुँचने के हम जिम्मेवार न होंगे। प्रवेश फीस किसी अवस्था में वापिस न होगी। मैनेजर साहिब पहेली का फैसला कानूनी व हर प्रकार से मानने योग्य होगा। हर मामले का फैसला देहली ही होगा। अपना पता हलों पर व मनीआर्डर कोपन पर साफ लिखें, हल ५ मई तक डाक में डाल देने चाहिये। इसके पश्चात् भेजा हुआ कोई हल स्वीकृत न किया जावेगा सही हल १५ मई को प्रकाशित कर दिया जावेगा।

ई० टी० एण्ड कम्पनी, पोस्ट बैग नं० ५२ ए०, दिल्ली। E T & Company Post Bag No 52 A Delhi.

१०,०००) रुपये की घड़ियाँ

मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन से बाल काले हो जाते हैं। और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामी जी की ओर से लाजवाब तोहफा है। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता, उनको लम्बे, घुंघरबाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आँखों की रोशनी तेज करता और सिर को ठन्डक पहुँचता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत १ शीशी २॥) रु०। तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६॥) रु०। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फैन्सी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर हैं और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती हैं। तीन शीशी के खरीददार को डाक खर्च माफ और चार न्यू घड़ियां व चार अंगूठियां (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त दी जाती हैं।

जनरल नावल्टी स्टोर [M. M. H.] DELHI।

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय वर्ष
संख्या ८

मनोरंजन

दिल्ली

मई
१९४९

व्यवस्थापक
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

सम्पादक
श्री चिरंजीत

इस अंक में

कहानी

मलाई की बरफ	श्री बरुआ	६
उपदेश	श्री 'हेमन्त'	९
किरण	श्री राजेन्द्र सक्सेना	१६

एकांकी

'आपकी दासी' ' '	श्री नरेन्द्रनाथ सेठ	१८

लेख

कांग्रेस में वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास (५)	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति	२२
'राजा रंजयति प्रजाः'	श्री सूर्यनारायण व्यास	२५
भरत-नाट्यम्	श्री ओ३म् प्रकाश वर्मा एम. ए., ए. काम.	३२
भूचाल	श्री विष्णुमित्र	३७
अवन्तिकाबाई गोखले	श्री उमाशङ्कर शुक्ल	४९

कविता

मँझधार और कवि	श्री उदयशङ्कर भट्ट	५
निशा-सुन्दरी	श्री 'परदेशी'	१७
विवश	श्री मदनलाल नकफोफा	२८
गीत	श्री राम 'यात्री'	२८

विशेष स्तम्भ

रेडियो		हास-परिहास	५५
सलोनी-दुनिया	४१	फुलझड़ियां	५०
बाल-मनोरंजन	४६		
	५७		

मूल्य आठ आना

वार्षिक मूल्य ५॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मँझधार और कवि

श्री उदयशङ्कर भट्ट

पूछती मँझधार कवि से, पार कितनी दूर!

प्राण में निःसीम गति का द्वन्द्व भर कर,
और गति में अनवरति का छन्द भर कर,

आ रही हूँ सुबह से बहती हुई मैं,
आप ही अपनी कथा कहती हुई मैं,

रात के दो छोर, पथ के दो किनारे,
बह रहा सब जगत-जीवन इस सहारे;

कौन मेरा तट, कहाँ, आधार कितनी दूर!
पूछती मँझधार कवि से, पार कितनी दूर!

कह उठा कवि—तट नहीं तेरा कहीं है,
मध्य को किस अन्त ने घेरा कहीं है!

तट हुआ मँझधार का, मँझधार क्या फिर!
अन्त हो जिस प्यार का, वह प्यार क्या फिर!

मुक्त पारावार में जाकर मिलेंगे,
लहरियों के प्यार में जाकर खिलेंगे;

आप ही सम्पूर्ण को अधिकार कितनी दूर!
पूछती मँझधार कवि से, पार कितनी दूर!

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri C

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

मलाई की बरफ

श्री बरुआ

दिल्ली की परम प्रसिद्ध कुतुब-रोड के लम्बाकार फैले हुए बाजू की तरह एक मैली-कुचैली सड़क ईदगाह और सिद्धीपुरा की ओर जाती है। इसी सड़क की एक कोठरी में किसनिया मलाई की बरफ जमाता है। गरमी के दिन और मलाई की बरफ! पड़ोस की भौजी से वह कहा करता है, "सरदियों में तो भौजी और गरमियों में मलाई की बरफ!"

कांख में पेटी दबाये वह गली-गली में आवाज लगाता है — 'मल्लाई की बिरयफ्फ!' बहुत कम ग्राहक उसका नाम जानते हैं, उसका यह चिर-परिचित स्वर सुन कर ही उसे पहिचान लेते हैं।

महीना भर से उसकी आवाज सुनते ही रोज इधर 'खुदाई-मंजिल' से एक बुढ़िया नौकरानी उसे बुला कर बरफ लेती है। आज भी इसी आशा में उसने 'मल्लाई की बिरयफ्फ' कह कर उधर झांका। बुढ़िया भी वहां तैयार थी। 'खुदाई-मंजिल' का बड़ा फाटक खुला, किसनिया अन्दर गया। बरामदे में पहुँच कर बैठ गया। कोठी नई तर्ज की है। रोजाना की नाईं बुढ़िया उसी के पास बैठ गई। बोली, "तो पाव भर तोल दो।"

किसनिया ने बारीक-बारीक कतलियां काट कर पाव भर 'मल्लाई की बिरयफ्फ' तोली। बरगद के कोमल पत्तों में उसकी खाने लायक टुकड़ियां काट कर बुढ़िया की बूढ़ी हथेली में रख दी

रोज की तरह आज भी बगली जाली का दरवाजा खुला। रोज की तरह आज भी हूर-परी सलीमा बाहर आई। ढीला पाजामा, रेशमी फितूरी, पतली कमर तक लटकती नागिन-सी काली चोटी, चुन्नटदार दुपट्टा छाती पर बेसलीके झूलता हुआ, नग्न केश और नग्न चन्द्रमुख!

बुढ़िया ने पत्ता पकड़ाते हुए कहा, "लो सलीमा! और हजूर नवाबजादे से और पूछ लो, तो और खरीद लें।"

सलीम रोज ही बरफ थामती हुई हंसती थी, आज भी हंसी। बोली, "निगोड़ी पाव भर है। मैं तो आध छटांक से जियादा निगल ही नहीं पाती।"

और अन्दर चली गई।

आध-पाव रोज ही बुढ़िया अपने लिये तुलवाती। आज भी उसने तुलवाई। पैसे लेकर किसनिया उठने लगा तो बोला, "माई, आध-पाव और बची है, यह भी ले लो।"

बुढ़िया अपने बूढ़े चेहरे को खूब झुर्रीनुमा और सिलवटनुमा बना कर बोली, "अरे, तो गिड़गिड़ाता क्यूँ है, तोल दे वह भी।"

किसनिया तोलने लगा, तो बुढ़िया ने पूछा, "कहां रहते हो भला?"

किसनिया ने बताया कि इसी सड़क पर उन कोठरियों में।

"अरे, वे तो निहायत गलीज और गन्दी हैं। कैसे रहते होगे?"

"माई, गन्दगी और गरीबी ऐसी कुलीन नहीं है, जो पी न जा सके। गरीबी का बुखार आने पर अच्छे

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छे गन्दगी की कुनीन पीने को मजबूर हो जाते हैं।" और बरफ उसे दी।

बुढ़िया ने एक कतला लेकर मुंह में डाला। पूछा, "पहले क्या करते थे?"

"पहले तो ठेला ढोया। छः महीने तक तांगा भी हांका। अब बरफ जमाता हूँ।"

"घर में जोरू है?"

"है जी। चार महीने हुए आई है।"

नई दुल्हन की बात सुन कर बुढ़िया का चेहरा रोशन हो गया। पर एकदम वह हड़बड़ा कर उठी। लपक कर अन्दर गई। सामने बड़े फाटक से चूड़ीदार पाजामा और शेरवानी पहने एक हजरत आये। उम्र यही ४० होगी। गोरे चेहरे की ठोड़ी पर निहायत खुशनुमा छंटी दाढ़ी। बरामदे में आ कर बोले, "कैसे बैठे हो?"

किसनिया ने कहा, "जी, बरफ ली थी, पैसों को बैठा हूँ।"

वे अन्दर चले गये। उनकी आवाज आई, "बेगम, क्या हो रहा है?"

सलीमा बोली "जी, लौंडी को आपका ही इन्तजार थी। पान के बीड़े लेकर हाजिर होती हूँ। दो मिनट की मुहलत दीजिये।"

बुढ़िया ने उन्हें आदाब की और बाहर आई। किसनिया से पूछा, "बरफ और है?"

वे हजरत अन्दर से बोले, "खातून, हमें बरफ की ख्वाहिश कतई नहीं है। हमारा हुक्का तैयार कर लाओ।"

किसनिया समझ गया कि इस 'खुदाई-मंजिल' के मालिक यह हैं; सलीमा इन्हीं की बेगम है। तो वह नवाबजादा कौन है? इस वक्त वह कहां गया?

किसनिया बाहर आया। घर की तरफ मुड़ा, तो बगल की गली में से कोठी के पिछवाड़े के दरवाजे से एक

समाज के दो वर्गों की कहानी

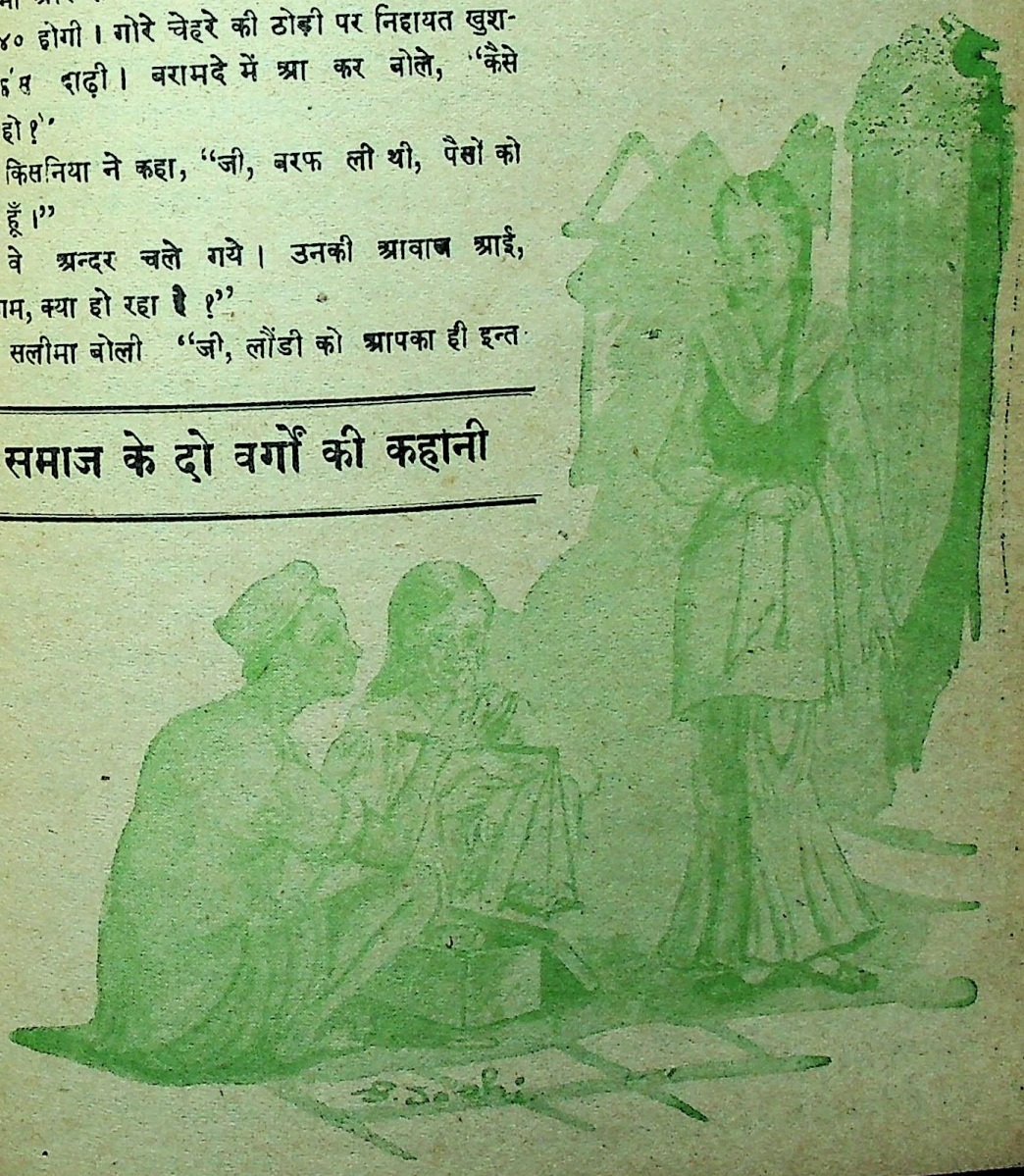

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri C...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवक निकला, इधर पीठ किये सामने की सड़क पर बढ़ गया। किसनिया के जी में आई कि मकान-मालिक से भेद कहे, पर कुछ सोच कर वह घर लौट आया

ताला खोल कर उसने रेजगारी गिननी शुरू की। पड़ोस में से भौजी ने पूछा, "अजी देवरिया महाराज, यह क्या गिनाई हो रही है?"

किसनिया ने मजाक की, "नकद कलदार है, भौजी! मन में हाँ हो तो दे जाऊं भेंट?"

भौजी चिढ़ी नहीं, हंस कर बोली, "इस कलमुंहे बाजार से यही सीख कर तो आओगे ले क्यूं नहीं आते हमारी देवरनिया को। उन्हीं को दिया करना यह कलदार।"

किसनिया ने रेजगारी गिनना रोक दिया। नई बहू! गये हुए अढ़ई महीने हो चुके। जल्दी से आवाज लगाई, "अच्छा, अभी जाता हूँ, कल सुबह तक आ रहूँगा।"

* * *

सुबह आठ बजे किसनिया ने कोठरी का ताला खोलते हुए आवाज दी, 'भौजी, जरा बाहर आकर बहूरानी की नूनराई तो कर दो! नजर लग गई है इसे मोटर में कई छैना की!"

भौजी बाहर आईं। पैर पड़ाई, उसका रुपया अंटी में बांधा और गले में बांह डाल कर बोली, "दारी, क्या करती रही पीहर इतने महीने? डाल न इसके नाक में नकेल; नहीं तो हाथ से जाता रहेगा। कल मुझे ही कलदार गिनाना चाहता था।"

किसनिया हृदय खोल कर हंस दिया। भौजी भी हंस दी। नई बहू ने कोठरी में प्रवेश किया।

इधर बरफ जमकर तैयार हुई, उधर नवेली बहू के हाथों की रोटी बन कर चुकी। पेट भर कर, आंखों में उसने सुरमा लगाया। जबरदस्ती नई बहू की प्यारी आंखों में भी अपने हाथों दो सलाई लगाई। बरफ की पेटी उठा वह बाहर आया, बहू को देखते हुए आवाज लगाई, "मल्लाई की बिरयफ्फ!"

बहू अन्दर ही अन्दर मुग्धा बन बैठी। भौजी ने पूछा, "कहो जी, चले? अरे, आग लगाओ बिरयफ्फ को, आज तो देवरनिया के पास ही रहते।"

किसनिया हंसते हुए आगे बढ़ गया। नियत समय पर 'खुदाई-मंजिल' के सामने जा उसने आवाज लगाई, "मल्लाई की बिरयफ्फ!"

बुढ़िया बरांडे में बैठी ऊंघ रही थी। आंख खुली, बोली, "इधर आ रे!"

वह अन्दर गया। पाव भर बरफ तोल कर बुढ़िया को दी। तभी सलीमा आई। वही मुस्कराती शोखी।

किसनिया ने पहली बार आज उससे कहा, "सलाम, मालकिन साहिबा!"

सलीमा ने मुस्करा कर गर्दन हिलाई, बोली, "भई क्या पुड़िआ डालते हो, जो तुम्हारी बरफ इतनी लजीज बनती है?"

किसनिया ने संकोच से गर्दन झुका ली। बोला, "बस, आप मालकिनों की बरकत ही डालता हूँ।"

हंसती हुई वह अन्दर चली गई।

बुढ़िया ने पूछा, "नवाबजादे के लिए पान न हो तो लाऊँ?"

सलीमा ने अन्दर से कहा, "रहने दो, दो टुकड़े हैं।"

तो बुढ़िया ने किसनिया से अपने लिए बरफ तुलवाई। बरफ तोल कर किसनिया ने पैसों के लिए कोई जल्दी नहीं की। सुस्ताने लगा; कान सलीमा के दरवाजे पर लगा दिए। कुछ आहट तो मिली नहीं, नितान्त चुप्पी ही वहां सुनाई दी।

कल की तरह से एकाएक बुढ़िया हड़बड़ा कर उठी और अन्दर गई। फाटक के अन्दर मकान-मालिक दाखिल हुए। किसनिया ने उन्हें सलाम किया; पर वे बिना उत्तर दिये अन्दर चले गये। सुनाई दिया, "क्यों बेगम, क्या हो रहा है?"

सलीमा बोली, "लौंडी हजूर के वास्ते पान लगा रही है!"

वे बोले, "यह बरफ वाला रोज क्यूं आता है?"

"जी, इसकी बरफ कुछ खास लजीज है, खातून रोज बुला बैठती है। आप भी चखिये।"

बुढ़िया कुछ कहने के बजाय बूढ़ी हंसी हंसने लगी शायद मालिक ने हामी भरी, बुढ़िया बाहर आई और पाव भर बरफ तोलने का हुक्म दिया!

(शेष पृष्ठ ५३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

उपदेश

श्री 'हेमन्त'

गत तीन वर्षों में कृपालसिंह मेरे यहां दसियों बार ठहर चुके थे। हमेशा हँसते-खेलते, दो-तीन दिन आवश्यकतानुसार टिकते और फिर वापस जाते। सात महीने के बाद फिर उनका आना हुआ। पहुँच तो वे सबेरे ही गये थे, पर मेरे घर शाम सात बजे पहुँचे। प्रेमपूर्वक हाथ मिलाते ही साथ की कुर्सी पर बैठ गये। उनकी मुद्रा इतनी गम्भीर मैंने कभी नहीं देखी थी, न ही मैंने पहले कभी उनको इतना चुप और बुझा हुआ-सा देखा था। उन्हें बार-बार अपने हाथों से कुर्सी के बाजू रगड़ते देख मैंने पूछा, "कुशल तो है! क्या बात है? आज तो कुछ खोये हुए-से दिखाई देते हो।"

मेरे सन्देह को निराधार बताते हुए कृपालसिंह ने कहा, "नहीं, कोई विशेष बात तो नहीं। दिन भर का थका-मांदा हूं। नहा-धो लें, फिर बात करेंगे।"

मैं इस उत्तर से सन्तुष्ट न हुआ। "अच्छा, जान पड़ता है, इण्टरव्यू हो चुकी है और काम बनता दिखाई नहीं देता। मगर ऐसी भी घबराने की क्या बात है? तुम्हें तो कभी जी छोड़ते नहीं देखा, आज इस छोटी-सी असफलता से विचलित क्यों हो गये हो?"

"हेमन्त, तुम गलत कह रहे हो। यह ठीक है कि इण्टरव्यू हो चुकी है, और मैं तो ले लिया गया हूँ···"

कृपाल की बात काटते हुए मैंने कहा, "तो फिर शोक किस बात पर मनाया जा रहा है? तुम्हें तो प्रसन्न होना चाहिये। साल भर से कहीं काम नहीं बन रहा था, चलो, आज जीविका की समस्या कुछ समय के लिए तो हल हुई।"

"यह समस्या तो निश्चय हल हो गई है, किन्तु एक ओर इससे भी बड़ी समस्या गले पड़ गई है। उसने मेरे उत्साह तथा जीवन के सिद्धान्तों पर करारा आघात किया है।" कुछ देर रुक कर वे बोले "आज्ञा हो तो पहले नहा लिया जाय, फिर आराम से बात करेंगे।"

* * *

स्नानादि के बाद भोजन से निवृत्त हो हम दोनों ऊपर छत पर चले गये और एकान्त में बात करने लगे। कृपाल ने अपनी कथा इस प्रकार आरम्भ की—

'याद है हेमन्त, तुम्हें १९३० के वे दिन, जब हम इलाहाबाद में 'गङ्गानाथ झा होस्टल' में रहा करते थे। मैं कट्टर राष्ट्रवादी था। विश्वविद्यालय में दो महीने जो हड़ताल रही, तुम जानते ही हो, उसमें मेरा कितना हाथ था। अपने होस्टल में तो शिवराम तिवारी को छोड़ कर सबसे अधिक उत्साही मैं ही था। पण्डित जवाहरलाल तथा अन्य कांग्रेसी नेता सभी मुझसे खूब परिचित थे और मेरे आयोजन से कई बार हमारे होस्टल में उनके भाषण भी हो चुके थे। चोटी के नेताओं की गिरफ्तारी के बाद हम लोगों ने इलाहाबाद में आन्दोलन जारी रखा। श्री महेन्द्रनाथ माथुर का नाम भी तुम्हें याद होगा। वे उन दिनों इलाहाबाद के प्रसिद्ध वकील थे और नगर कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी भी थे। उनका पुत्र सोमेश्वरनाथ हमारे साथ ही पढ़ता था।

"१९३१ के आरम्भ में ही मोतीलाल जी की मृत्यु हुई और उस अवसर पर सभी नेतागण इलाहाबाद में इकट्ठे हुए। वे सब विद्यार्थियों से रुष्ट थे। हजार यत्न करने पर भी हम लोग डा० राजेन्द्रप्रसाद को विद्यार्थी-संघ के तत्वावधान में होने वाली एक सभा में भाषण देने के लिए राजी नहीं कर सके। उनका

★

घटना सच्ची है, परन्तु पात्रों के नाम सर्वथा कल्पित हैं। आई० सी० एस० पुत्र के पिता जैसे स्वार्थी लोगों ने ही कांग्रेस को बदनाम कर रखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहना था कि विद्यार्थियों से उन्हें बहुत निराशा हुई और फिर इलाहाबाद के विद्यार्थी तो बिल्कुल ही गये बीते हैं। देश में चारों ओर लगी आग की चिन्ता न कर वे बराबर आई० सी० एस० आदि की प्रतियोगिता की तैयारी में ही मग्न रहते हैं। ऐसी राजेन्द्र बाबू की धारणा थी। इस आरोप का जवाब हम से कुछ नहीं बन सका; इसलिए हम 'आनन्द-भवन' से उल्टे पांव लौट आये।

"उसी वर्ष दिसम्बर में हम लोगों ने हिन्दू-बोर्डिङ्ग हाउस के विशाल अहाते में प्रदर्शनी का आयोजन किया। जिस दिन प्रदर्शनी समाप्त हुई, सौभाग्य से कुछ नेतागण इलाहाबाद आये हुए थे। प्रवेश-शुल्क आदि द्वारा हमने १०,०००) जुटाया था, जो हम कांग्रेस-कोष में देना चाहते थे। हमने सरदार पटेल को थैली लेने और भाषण देने के लिये राजी कर लिया। उस दिन वहां बड़ी भीड़ थी। कार्यकारिणी के सभी सदस्य हिन्दू-होस्टल में पधारे थे। थैली भेंट किये जाने के बाद सरदार पटेल ने बड़ा ओजस्वी भाषण दिया। आपने कहा, 'आप लोगों को शर्म आनी चाहिये कि देश दासता की जंजीरों में जकड़ा पड़ा है, भारतमाता बिलख रही है और आप लोग अपने निजी भविष्य के निर्माण की चिन्ता में मग्न हैं। लज्जा की बात है कि एक ओर तो देश के चुने हुए नेता कड़ी से कड़ी यातनाएं सह रहे हैं और दूसरी ओर हमारा विद्यार्थी-वर्ग भावी सम्पन्नता के स्वप्न बघार रहा है और उसके हेतु आयोजन करने में लगा है। इस पर भी नवयुवक यदि हमारा पीछा छोड़ दें, तो हम उनके आभारी होंगे। जहां जाते हैं, वहाँ वे हमें घेर भी तो लेते हैं। प्रतियोगिता की तैयारियां भी हैं और देशभक्ति का दावा भी।'

"अपनी स्पष्टोक्ति और खरी सुनाने के लिए तो सरदार पटेल प्रसिद्ध हैं ही, उनकी बातें हमें नुकीले तीरों की भांति चुभ गईं। कई विद्यार्थी हिल गये और विचारों के समुद्र में डुबकियां लगाने लगे। उनमें एक मैं भी था। सरदार पटेल के बाद ही बाबू महेन्द्रनाथ माथुर ने जोरदार भाषण दिया। इलाहाबाद के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा, 'यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं इस नगर का निवासी हूँ। नवयुवक प्रकटरूप से देश-द्रोह के पथ पर जा रहे क्या यह लज्जा की बात नहीं कि जिस नगर में से ऊपर विद्यार्थी हों, वहां से दस-बीस भी निकलें, जो अपने कल्पित भविष्य की आराधना देश-सेवा के प्रति जीवन अर्पित कर सकें।'

"यह सुनते ही हम लोगों के तन-बदन में सी लग गई। हम सब एकदम विचार-विमर्श लगे। महेन्द्रनाथ जी का भाषण समाप्त होते मंच से घोषणा की कि विश्व विद्यालय के १२ विद्याध्ययन छोड़ आज ही देश-सेवा का व्रत ले उन विद्यार्थियों के नाम सुनाये गये। सूची में नाम मेरा था।"

यहां कृपालसिंह कुछ देर के लिए रुक गये की सारी बातें मैं दत्तचित्त हो कर सुन रहा था, इस रामकहानी का अभिप्राय क्या था, यह मेरी में नहीं आ रहा था। सो मैंने पूछा, "भाई सब का निष्कर्ष क्या है? अभी तक तो मेरे कुछ पड़ा नहीं।"

कुछ संकोच के साथ कृपालसिंह आगे "निष्कर्ष तो कुछ नहीं, आज एक विचित्र बात जिस से ऐसा धक्का लगा कि विगत जीवन का इतिहास सामने आ गया। तुम पूछोगे, वह क्या है? लो सुनो। आज मैं जब इंटरव्यू के गया, तो निर्णायकों के बीच अपने पुराने तथा बा० महेन्द्रनाथ के सुपुत्र सोमेश्वरनाथ पाया। उन्होंने मुझे पहिचान लिया और मुझ कृपा की। बाहर आकर मुझे पता लगा कि वे एस० एन० माथुर आई० सी० एस० के प्रसिद्ध हैं। सहसा मुझे १९३१ के घटनाचक्र स्मरण हो आया —सरदार पटेल का भाषण, महेन्द्रनाथ की चुनौती, मेरा विश्वविद्यालय और एक महीने बाद पकड़े जाना, देश-सेवा हो सब कुछ भुला देना, इत्यादि। वे ही महाशय जिन्होंने १२ विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय प्रेरित किया था, आई० सी० एस० पुत्र के पिता जिस समय पिता भाषण दे रहे थे, सम्भवतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर में बैठे विद्योपार्जन कर रहे थे। मुझे स्मरण में अपनी श्रेणी में प्रथम कोटि के तीन चार विद्या- थियों में से था, जब कि सोमेश्वर बेचारा बिल्कुल साधारण विद्यार्थी था। वाह रे क्षणिक आवेश वाला भाग्य! हम बी० ए० कहलाने तक के अधि- कारी न हो सके और वह इस समय हमारे प्रान्त की प्रान्त सेक्रेटेरियट जितने बड़े सचिवालय का ज्वाइंट- सेक्रेटरी है।

"मैं यह सब ईर्ष्यावश नहीं कह रहा, न ही मैं सोमेश्वरनाथ जी को दोषी ठहरता हूँ। दोषी तो उनके पिता बा० महेन्द्रनाथ हैं। क्या उनका उपदेश दोनों ही के लिए था, अपने घर के लिए नहीं? यही कांग्रेसी नेताओं को मैंने यह कहते सुना कि विद्यार्थियों को राजनीति से दूर रहना चाहिए। यही १९३०-३१ में इलाहाबाद के कलक्टर बमफोर्ड साहिब भी कहा करते थे। तो दोनों में अन्तर क्या हुआ? मुझे ऐसा आभास हो रहा है कि मैंने पढ़ाई छोड़ कर गलती की। मैं स्वयं बहुत अच्छा विद्यार्थी था, आई० सी० एस० नहीं, पी० सी० एस० तो हो ही गया होता। रही देश-भक्ति की बात, सो आज स्वतन्त्रता मिल जाने के बाद भी भारत में मुझे तो आई० सी० एस० वालों का ही सिक्का अधिक जमा हुआ दिखाई देता है।"

इस गम्भीरतापूर्ण वार्त्ता के बाद मेरा कुछ कहने का साहस न हुआ। आधी रात हो चुकी थी, विचार- निमग्न हम दोनों की आँख लग गई।

★

एजेन्ट— गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी हरिद्वार

देहली प्रान्त, मत्स्य प्रदेश व बीकानेर के वितरक—रमेश एण्ड को० चांदनी चौक, देहली। मध्य भारत के—वृहद् औषध भण्डार, १६ जेल रोड इन्दौर। ग्वालियर के—यूनियन मैडिकल हाल, नया बाजार, लश्कर। देहरादून के—हितकारी वस्त्र भण्डार, पलटन बाजार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri C

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्मरण—५

कांग्रेस में वक्तृत्व

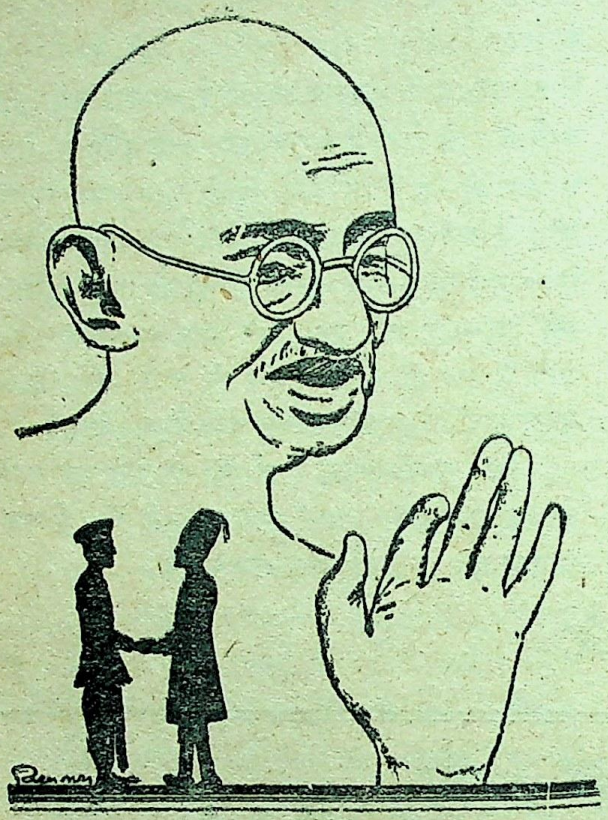

जिस समय महात्मा गांधी भारत की राजनीति में और कांग्रेस की व्याख्यान-वेदी पर एक साथ ही अवतीर्ण हुए, उस समय युग परिवर्त्तन हो रहा था। परिवर्त्तन-काल में पुराने और नये का संघर्ष अवश्यम्भावी है। कांग्रेस की नीति में भी पुराने और नये का संघर्ष अमृतसर-कांग्रेस के अवसर पर हुआ।

अमृतसर-कांग्रेस से पूर्व भारत का वातावरण बहुत ही गर्म हो चुका था। पंजाब में मार्शल-लॉ का दौर-दौरा समाप्त हो गया था, परन्तु उसके लगाये हुए घाव अभी हरे थे। जनता के हृदय में क्रान्ति की भावना भरने के लिए जिस सामग्री की आवश्यकता होती है, पंजाब में वह सांगोपांग विद्यमान थी। अंग्रेजी सरकार ने उस गर्मी को कम करने के लिए दो कार्य किये। एक तो इंग्लैंड की पार्लमेंट में सम्राट का एक घोषणा-पत्र सुनाया गया, जिसमें भारत को स्वराज्य देने का वादा दोहराया गया था। दूसरा काम यह किया कि गत वर्ष के बहुत से राजनैतिक बंदियों को अधिवेशन से चार दिन पहिले मुक्त कर दिया। सरकार के इन कामों ने एक नई परिस्थिति पैदा कर दी। जब खुले अधिवेशन में उपस्थित करने के लिये मुख्य नैतिक प्रस्ताव का मसविदा तैयार होने लगा, तो मसविदे सामने लाये गये। वे चार धाराओं के प्रतिनिधि थे। वैसे तो माडरेट रौलट-दल को सरकार की दमन-नीति ने समाप्त कर दिया था; फिर भी अमृतसर में कुछ ऐसे लोग पहुँचे हुए थे, जो चाहते थे कि सम्राट की घोषणा राजनैतिक बन्दियों की मुक्ति को दृष्टि में रखे कांग्रेस को सरकार के प्रति विशेष विरोधी भाव रखनी चाहिए और उदारता के लिए सरकार को वाद करना चाहिए। इसके विपरीत गर्म-दल का प्रस्ताव था कि सम्राट की घोषणा सर्वथा अपर्याप्त इस कारण अपने रुख में कोई परिवर्त्तन न जाय और तत्काल पंजाब के अत्याचारों के की मांग की जाय। उस कांग्रेस में लोकमान्य भी सम्मिलित हुए थे उन्होंने सम्राट की अमृतसर जाते हुए रास्ते में समाचार-पत्र में वहीं एक सम्वाददाता के पूछने पर उन्होंने कि वह घोषणा जहां तक अच्छी है, वहां तक स्वागत करना चाहिए और अधिक के लिए करनी चाहिए। इसका नाम उन्होंने Respo Co-operation रखा था। महात्मा मत अलग ही था। उनका कहना था कि अच्छे कामों के लिए उसकी हार्दिक प्रशंसा चाहिए; साथ ही अपना ध्येय स्पष्टता और साथ प्रकट करते हुए यह आशा भी प्रक चाहिए कि सरकार अपने वादों को शी करेगी। यदि सरकार अपने वादों को पूरा तो हम क्या करेंगे, यह अभी प्रकाशित करने श्यकता नहीं है। महात्मा जी का सिद्धांत था प्रारम्भ में विरोधी पर भी पूर्ण विश्वास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला का क्रमिक ह्रास

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

★

प्रस्तुत लेख में विद्वान् लेखक ने महात्मा गांधी के प्रभाव और पं० मोतीलाल नेहरू की वक्तृत्व-शक्ति का विवेचन किया है।

वह विश्वासघात करे, तो हम उसका जो उत्तर देंगे, उसका ढिंढोरा पहिले से पीटना अनावश्यक है। हमारे तूणीर में जो तीर हैं उनका तूणीर में रहना ही अच्छा है। युद्ध-काल से पहिले ही उन्हें निकाल कर मेज़ पर रख देना बुद्धिमत्ता का कार्य नहीं।

नेताओं और प्रतिनिधियों में तीन दिन तक इस प्रस्ताव की चहल-पहल रही। गर्म-दल के नेता देश-बन्धु चितरंजनदास थे। नर्म-दल के नेता मालवीय जी महाराज को समझ लीजिये। शेष रहे लोकमान्य तिलक और महात्मा जी। उनके बारे में यह कहा जा सकता है कि आयु की दृष्टि से लोकमान्य तिलक का जीवन-सूर्य मध्याह्न से अस्ताचल की ओर जा रहा था और महात्मा जी का जीवन-सूर्य पूर्वाचल से मध्याह्न की ओर। यों अमृतसर में सब से अधिक जोरदार स्वागत लोकमान्य तिलक का हुआ था। पंजाब के स्वभाव से जोशीले नवयुवक उस तपस्वी के दर्शनों को टूटे पड़ते थे। जब कांग्रेस के प्रतिनिधियों को यह मालूम हुआ कि मुख्य प्रस्ताव के सम्बन्ध में लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी में मतभेद है, तो उनकी एक मण्डली लोकमान्य तिलक की सेवा में पहुँची और निवेदन किया कि यदि आप स्पष्ट रूप से अपनी सम्मति हम लोगों को बता दें और सार्वजनिक रूप से प्रकाशित कर दें, तो कांग्रेस में वही स्वीकार की जायगी; क्योंकि प्रतिनिधियों में बहुमत आपके पक्ष में है—गांधी जी भी उसका विरोध नहीं कर सकेंगे। उस मण्डली में मैं भी था। मेरा झुकाव उस समय लोकमान्य की विचार-प्रणाली की ओर अधिक था। लोकमान्य ने उस समय हम लोगों को जो बात समझायी, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। उन्होंने जो कुछ कहा, उसका अभिप्राय यह था — 'मैं अब थक गया हूँ, अधिक समय तक कार्य नहीं कर सकता। भविष्य में देश को जिस व्यक्ति का नेतृत्व स्वीकार करना चाहिए वह गांधी जी ही हैं। मैं सब लोगों को यही सलाह देता हूं कि वे गांधी जी को ही देश का भावी राजनैतिक नेता स्वीकार करें।' लोकमान्य के हृदय से निकले हुए इन वाक्यों का मुझ पर और मेरे जैसे अन्य युवकों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। जब लोकमान्य और महात्मा जी का मतविरोध जाता रहा, तब देशबन्धु दास और उनके सहयोगियों ने भी अपना विरोध शिथिल कर दिया और अन्त में जो प्रस्ताव कांग्रेस में सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ, यद्यपि उसे लोकमान्य तिलक ने सम्पुष्ट किया था, तो भी प्रस्ताव की स्वीकृति के समय जिस जयघोष से पण्डाल गुंजायमान हुआ, वह था 'महात्मा-गांधी की जय!' महात्मा जी ने इस प्रकार लोकमान्य तिलक के आशीर्वाद से कांग्रेस की व्याख्यान-वेदी पर विजय प्राप्त कर ली। उसके पश्चात् कांग्रेस की व्याख्यान-वेदी गांधीमय हो गई।

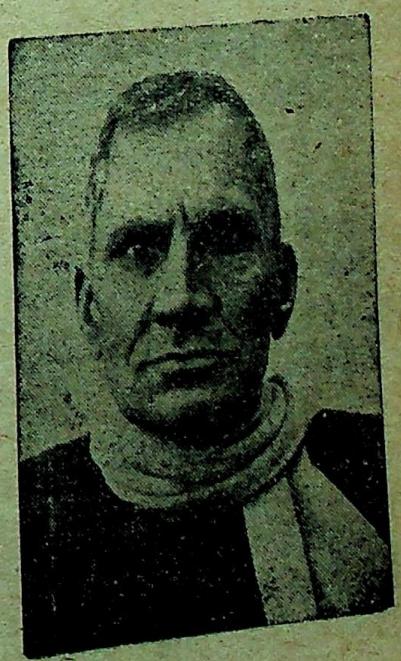

लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस की व्याख्यान-वेदी पर महात्मा जी का प्रभुत्व हो जाने के कुछ आवश्यक परिणाम हुए, जिनमें से निम्नलिखित मुख्य थे—

१. लच्छेदार वाक्य-रचना तथा भावुकतापूर्ण भाषण-शैली का प्रभाव घट गया। महात्मा जी के सरल और भावपूर्ण शब्दों का श्रोताओं पर इतना प्रभाव पड़ता था कि शब्द-जाल की कोई गुंजाइश ही नहीं रही। बड़े-बड़े ऑरेटर, जो इससे पूर्व श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध कर लिया करते थे, वे अपने आपको महात्मा जी की उपस्थिति में 'भोगीव मन्त्रौषधि रुद्ध वीर्यः' अनुभव करते थे। प्रतीत होता था मानों उनकी शक्ति मन्त्रौषधि के बल से रोक दी गई है। धीरे धीरे स्थिति यह हो गई थी कि यदि वे सुवक्ता महात्मा जी के समर्थन में बोलें तो अन्यथा सिद्ध प्रतीत होते थे और यदि विरोध में बोलें, तो परास्त होना पड़ता था, जिससे उनकी व्याख्यान-शक्ति की ख्याति धीरे-धीरे क्षीण हो जाती थी। एक समय आया, जब कांग्रेस के मंच पर से भाषा अथवा जानकारी की दृष्टि से बहुत ऊंचे दर्जे के भाषण सर्वथा व्यर्थ और रीति-विरुद्ध समझे जाने लगे।

२. महात्मा जी सब विषयों का प्रतिपादन कुछेक मूल-सिद्धान्तों के बल पर करते थे। वे आंकड़ों या ऐतिहासिक घटनाओं की सहायता से किसी प्रस्ताव का समर्थन नहीं करते थे। उनके पास सत्य और अहिंसा की दो कसौटियां थीं। उन पर कस कर वे सब विचारणीय प्रश्नों पर अपना निर्णय देते जाते थे। वे सब समस्याओं का हल परमात्मा और आत्मा की गवाही से करते थे। इतिहास अथवा नीति-शास्त्र के उदाहरणों का उसमें कोई स्थान नहीं था। उनके मूल-सिद्धांत इतने दृढ़ थे और उनकी आत्मा का स्वर इतना ऊंचा था कि भारतवासियों के मन और हृदय उनके वशीभूत हो गये थे। उन्हें न आँकड़ों की आवश्यकता रही थी और न सुन्दर भाषा में प्रकट किये गये राजनीति के सिद्धांतों अथवा उद्धरणों की। 'यथा राजा तथा प्रजा' वाली कहावत के अनुसार जिस पद्धति पर महात्मा जी चलते थे, उनके अनुयायियों ने उसी पर चलने का यत्न किया। १९२० से लेकर १९४७ तक कांग्रेस के व्याख्यान-मंच पर भाषण-कला नाम की वस्तु का कोई स्थान नहीं रहा था। सब सत्य तो महात्मा जी ही कहे जाते थे; अन्य कांग्रेसियों का कार्य तो उन सत्यों को दोहराना ही था। उसके लिए परिमार्जित भाषा, या कलापूर्ण भाषण-प्रणाली की जरूरत ही क्या थी। यही कारण था कि गांधी-युग में उत्कृष्ट भाषा, परिश्रमपूर्वक तैयार किए हुए आंकड़े या तर्कशास्त्र की पद्धति पर गढ़ी हुई युक्तियों का आदर सर्वथा लुप्त हो गया था। यदि कोई इन हथियारों का प्रयोग करता भी था, तो वह थोड़े ही समय में या तो नर्म पदवी को प्राप्त कर लेता था अथवा तीसरे दर्जे का नेता समझा जाता था। महात्मा जी के अनुयायियों में बहुत से ऐसे व्यक्ति थे, जो उससे पूर्व उन सब कलाओं में प्रवीण थे, जिनके कारण पूर्व युग के नर्मनेता ख्याति प्राप्त करते थे। बड़े बड़े वकील थे, प्रोफेसर थे और पत्रकार थे। परन्तु महात्मा जी के सांचे में आकर वे सब एकाकार हो गए थे। उन्हें वही सीधी सादी भाषण-प्रणाली अपनानी पड़ी, जिसके परम आचार्य महात्मा गांधी थे। यदि कभी उनका कोई अनुयायी उनकी बनाई हुई पटरी से उतर जाता था तो महात्मा जी निजी पत्र 'यंग-इण्डिया' अथवा किसी भाषण में मीठे ढंग से उसके कान खींचने में देर न लगाते थे। यदि वह कभी भूल कर ऑरेटरी के रास्ते पर पड़ जाता तो महात्मा जी कड़ी चेतावनी के साथ उसे 'सत्य और अहिंसा के राजमार्ग पर वापस बुला लेते थे।

इस प्रकार बहुत कुछ एकाकार हो जाने पर भी गांधी-युग के प्रमुख वक्ताओं की अपनी अपनी विशेषताएँ तो थीं ही। 'मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्ना, तुण्डे-तुण्डे सरस्वती' इस नियम को गांधी जी का कड़ा अनुशासन भी न बदल सका।

पं० मोतीलाल नेहरू

गांधी-युग के वक्ताओं में से सर्वप्रथम स्थान पं० मोतीलाल नेहरू का है। मुझ से यदि यह पूछा जाय कि महात्मा गांधी की सब से बड़ी जीत कौन सी थी, तो मैं यह उत्तर दूंगा कि महात्मा जी ने पं० मोती-लाल जी को अपना अनुयायी और मित्र बना लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya

यह उनकी सब से बड़ी जीत थी। वह जीत उन अनेक बड़ी बड़ी विजयों का प्रारम्भ था, जो आगामी वर्षों में महात्मा जी को प्राप्त हुईं।

१९१९ में पं० मोतीलाल जी कोई कच्चे विचारों के नौजवान नहीं थे। उस समय वे प्रौढ़ावस्था पार कर चुके थे। सांसारिक वैभव और ख्याति की दौड़ में देश में उनका पहिला या दूसरा नम्बर था। इलाहाबाद हाई-कोर्ट के वकीलों में तो वे नेता माने ही जाते थे, भारत के ख्यातिप्राप्त वकीलों में भी उनका बहुत ऊँचा स्थान था। वकालत से उनकी मासिक आय की राशि प्रायः लाखों तक पहुँच जाती थी। इलाहाबाद में उनके निवास-स्थान 'आनन्द भवन' के मुकाबिले की दूसरी कोई कोठी नहीं थी। लैफ्टिनेंट-गवर्नर की कोठी भी उसके सामने मात थी। यह मशहूर था कि पण्डित जी के परिवार के कपड़े धुलने के लिए पैरिस जाते थे और उनके डाइनिंग-टेबिल के लिए पेस्ट्री इंग्लैंड से तैयार होकर आती थी।

स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू

१९१९ से पूर्व राजनीति में पं० मोतीलाल जी की गिनती कांग्रेस के मॉडरेट नेताओं में की जाती थी। जब सूरत में घरू फूट ने कांग्रेस को दो दलों में विभक्त किया था, तब मॉडरेट सभापति डा० रासबिहारी घोष के नाम का समर्थन करने वाले पं० मोतीलाल नेहरू ही थे। उस समय वे मॉडरेट-पार्टी के एक वयोवृद्ध और समृद्ध नेता माने जाते थे। पंजाब में मार्शल-लॉ लागू हो जाने के पश्चात् कांग्रेस की ओर से जो तहकीकाती कमेटी बनाई गई, पण्डित जी को उसका अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। इलाहाबाद से लाहौर जाते हुए पण्डित जी दिल्ली में ठहरे थे। तब तक मैंने उनका नाम तो सुना था, परन्तु दर्शन नहीं किये थे। पण्डित जी और पिता जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी)

CC-0. In Public Domain.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद में कालिज में पढ़ते समय सहपाठी थे। परन्तु यह बात तब तक दोनों को याद न आई, जब तक वे इस अवसर पर दिल्ली में एक दूसरे के सामने नहीं आये। पिता जी उन दिनों पंजाब के मार्शल-लॉ-पीड़ितों की सेवा के कार्य का नेतृत्व कर रहे थे, इस कारण पण्डित जी ने लाहौर जाते समय उनसे मिलना आवश्यक समझा। एक दिन प्रातःकाल (तिथि याद नहीं) पिता जी के स्थान पर जाने पर मालूम हुआ कि पं० मोतीलाल जी मिलने के लिये आ रहे हैं। उत्सुकतावश मैं वहीं ठहर गया। थोड़ी देर में पण्डित जी सीढ़ियों से चढ़ कर ऊपर आये। उनका उस समय का रूप और वह दृश्य पूरी स्पष्टता के साथ अब भी मेरी आंखों के आगे घूम रहा है। पण्डित जी का सारा सूट (कोट-पैंट आदि) सफेद रेशम के थे। सफेद हैट हाथ में पकड़ी हुई थी। श्वेत-वर्ण चेहरे पर किनारों पर से ऊपर को मुड़ी हुई शानदार सफेद मूँछें राजपूती चेहरे का स्मरण करा रही थीं। गति में दृढ़ता थी और आंखों में तेज था। पण्डित जी ऊपर आये तो पिता जी कमरे में से निकल कर आगे बढ़े। उस समय एक क्षण के लिये दोनों ही जहां के तहां ठिठक से गये। दोनों ने एक दूसरे को देखा तो दोनों के मुँह से एक ही शब्द निकला, "अच्छा, तुम!" इसका अभिप्राय यह था कि दोनों ने एक पूरी आयु के पश्चात् एक दूसरे को देखा तो पहिचान गये कि वही कालिज में साथ खेलने वाले साथी हैं। दोनों ने एक दूसरे को पहिचान लिया और तकल्लुफ खतम हो गया। उस समय उसके पश्चात् जितनी बातें हुईं, सब 'तुम' इस सम्बोधन के साथ ही हुईं। पीछे से सार्वजनिक जीवन में पड़ कर तो सहमति और मतभेद दोनों ही होते रहे और उनका निजू सम्बन्धों पर थोड़ा-बहुत प्रभाव भी पड़ता रहा, परन्तु यह असन्दिग्ध रूप से कहा जा सकता है कि दोनों में परस्पर बन्धुभाव अविच्छिन्न रूप में विद्यमान रहा। प्रसङ्ग आया है तो यहां यह लिख देना भी असम्बद्ध न समझा जायगा कि मेरे प्रति पं० मोतीलाल जी का भाव सदा वैसा ही बना रहा, जैसा पिता का पुत्र के प्रति होना चाहिये।

अमृतसर-कांग्रेस में पिता जी स्वागताध्यक्ष थे और पं० मोतीलाल जी सभापति। उस अवसर पर मैंने पहिली बार पण्डित जी का भाषण सुना। पण्डित जी का भाषण सारगर्भित और युक्तिपूर्ण होता था। वे सदा श्रोताओं के मस्तिष्क पर प्रभाव डालने का यत्न करते थे। एक योग्य वकील को जिस भाषण-शैली से काम लेना चाहिये, पण्डित जी उसके उस्ताद थे। अंग्रेजी और उर्दू दोनों भाषाओं पर उनका पूर्ण प्रभुत्व था। साथ ही जिन्दादिली उनका विशेष गुण था। बड़े से बड़े कठिन समय में वे विनोद कर सकते थे, खिलखिला कर हँस सकते थे और गम्भीर से गम्भीर कठिनाई को हँसी में उड़ा सकते थे। उनका यह गुण भाषण के प्रभाव को बढ़ाने में बहुत उपयोगी सिद्ध होता था। वे विरोधी की अनर्गल युक्तियों का उत्तर देने में अधिक परिश्रम नहीं करते थे, प्रत्युत उसे विनोद की चुटकियों में उड़ा देते थे। इस प्रकार मौलिक रूप में वे एक कुशल वक्ता थे। साथ ही यह भी मानना पड़ेगा कि जनता के लाडले ऑरटेरों में जो विशेषतायें होती हैं, उनमें से एक बड़ी विशेषता का उनमें अभाव था। वे दमे के पुराने मरीज थे, इस कारण उनका गला बहुत ऊँचा नहीं उठा सकता था और न उनके स्वर का तार बंधता था। जब कभी जोर से बोलना पड़ता था, तो प्रायः खाँसी उठ खड़ी होती थी, जो भाषण में विघ्न पैदा कर देती थी। इस कमी के कारण उन्हें जन-साधारण को उत्तेजित करने वाला ऑरटेर नहीं कहा जा सकता। वे बहुत कुशल-वक्ता थे। उनकी जोरदार स्पष्ट भाषा और युक्तियों का जनता पर जो प्रभाव पड़ता था, वही उन्हें जन-नेता बनाने के लिये पर्याप्त था।

यह मैंने पण्डित जी के कांग्रेस में प्रारम्भिक जीवन की बात कही। कुछ समय पश्चात् तो नक्शा ही बदल गया। पण्डित जी ने महात्मा गांधी की आध्यात्मिक प्रेरणा से अपनी अतुल विभूति और सुखैषणा का जो अनुपम बलिदान किया, उसने उनके व्यक्तित्व को बहुत ऊँचा उठा दिया—इतना ऊँचा उठा दिया कि उनका

(शेष पृष्ठ ५२ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation

निशा-सुन्दरी

श्री परदेशी

तारक - गजरे बाँध गगन में कौन उतर आया है ?

हीरक - मणियों से जगमग है जिसकी माँग रुपहली,
भाल बिन्दु चमचम में जिसकी छबियाँ - निधियाँ बहलीं,
अंचल में ज्यों जले दीप दो, झिलमिल नया उजेला,
कंचन की प्याली में केसर के गलने की बेला !
दीप - दीप की रूप - किरण में ज्योति कौन लाया है ?
तारक - गजरे बाँध गगन में कौन उतर आया है ?

बालक की पलकों के ऊपर, बादल के आँगन में,
भरे मेघ पर धरे पगतली बसी हँसी जन - मन में,
रम - थम गई कौन जीवन की लेकर मोहित लाली ?
किसकी यौवन - दीपावलि से रातें हुईं उजाली ?
अन्तर - बेधी तरल स्वरों में गीत कौन गाया है ?
तारक - गजरे बाँध गगन में कौन उतर आया है ?

नीला आँचल - छोर गगन है, हरी धरा नव - वसना,
स्वर्णिम कलशों में रस बन्दी, तरस रही है रसना,
काली आँखों में यमुना की अगम श्याम गहराई,
स्वर्गंगा के बीच चाँदनी - देही यह गदराई,
नए चाँद में, नए दिये में लय जिसकी छाया है !
तारक - गजरे बाँध गगन में कौन उतर आया है ?

चले मुसाफिर राह, दीप तो जलता ही जाएगा !
रुके रूपसी रात, चाँद तो चलता ही जाएगा !
द्वार चाँदनी जगी साल सोलह, ज्यों, बाल न सोओ !
इस रसवन्ती अगम अमा में अपना दीप सँजोओ !
पथ भूले पंथी ने किस दिन नया चाँद पाया है ?
तारक - गजरे बाँध गगन में कौन उतर आया है ?

★

CC-0. In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकांकी

'आपकी दासी....!'

श्री नरेन्द्रनाथ सेठ

पात्र

जगदीश — 'वीकली न्यूज' का सम्पादक।

मिलेज प्रताप—सोसाइटी-गर्ल, जो पहिले अभिनेत्री थी, परन्तु अब सेठ प्रतापचन्द्र की पत्नी है।

इन्द्रनाथ — एक आर्टिस्ट, जो जगदीश का मित्र है और उसके साथ ही रहता है।

गोपाल — जगदीश का एक और मित्र।

स्थान—एक दुमंजले मकान का ऊपर का एक कमरा जिसमें जगदीश रहता है।

समय—संध्या

[कमरा बहुत बड़ा नहीं और न ही अच्छी तरह सजा हुआ है। एक मेज पर अस्त-व्यस्त कागजों, पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों का अम्बार लगा हुआ है। उसके पीछे दीवार से सटी हुई एक कुर्सी पड़ी है। मेज के दाईं ओर दीवार में बिना किवाड़ों की दो अलमारियां हैं, जिनमें ठसा-ठस कई समाचार-पत्र भरे पड़े हैं—कुछ नीचे लटक भी रहे हैं और उन पर मिट्टी की तह जमी हुई स्पष्ट दिखाई देती है। मेज के पास दो आराम-कुर्सियां रखी हैं, जिनका बचा-खुचा बेंत दीर्घकालीन सेवा का सूचक है। कमरे में दरी बिछी हुई है, परन्तु पुरानी—जगह-जगह इतने गोल छेद हैं, जिनमें से लाल चूने का पुराना फर्श साफ नजर आता है। कमरे के दायें-बायें दो दरवाजे हैं। बाईं ओर का दरवाजा एक टूटे कमरे में खुलता है और दाईं ओर का दरवाजा सीढ़ियों में खुलता है। सामने की दीवार में एक खिड़की है, जो नीचे गली में खुलती है।

कमरे में इस समय इन्द्रनाथ अनमनाकर कुर्सी पर बैठा एक सचित्र साप्ताहिक को देख रहा है—लेखों की अपेक्षा चित्रों पर ही उसकी दृष्टि अधिक है। तभी नीचे से घण्टी बजने की आवाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आती है। अखबार हाथ ही में लिए वह खिड़की तक जाता है।]

इन्द्रनाथ—(बाहर मुंह करके) क्या आपने घण्टी बजाई थी?

नीचे से किसी स्त्री की आवाज—जी, क्या मि० जगदीश का यही मकान है?

इन्द्रनाथ—जी हां, वे इसी मकान में रहते हैं। लेकिन इस समय वे घर में नहीं हैं।

वही आवाज—मैं उनसे मिलना चाहती हूँ—अत्यन्त आवश्यक काम है। कब तक आ जायेंगे वे?

इन्द्रनाथ—बस अब आते ही होंगे। (कलाई की घड़ी देख कर) उनके दफ्तर से आने का समय हो रहा है; आप ऊपर आ जाइये।

वही आवाज—बहुत अच्छा, मैं आई।

[इन्द्रनाथ वापस आता है। अखबार मेज पर रख कर कालर-टाई आदि ठीक करता है, चेहरे और बालों पर हाथ फेरता है और फिर कुछ तकल्लुफ से कुर्सी पर बैठ कर वही अखबार हाथ में ले लेता है। इतने में सीढ़ियों से पाँव की चाप आती है। फिर जरा-सा दरवाजा खुलता है और मिसेज प्रताप झांकती है।]

मिसेज प्रताप—मैं अन्दर आ सकती हूँ?

इन्द्रनाथ—(उठ कर) हां, हां, पधारिये!

(बेंत की आराम कुर्सी की ओर संकेत करता है। मिसेज प्रताप बैठ जाती है। मिसेज प्रताप की वेश-भूषा वैसी ही है, जैसी कि एक सुसंस्कृत धनी स्त्री की होनी चाहिये—जो एक एक्ट्रेस भी रह चुकी है। इन्द्रनाथ टकटकी बांध कर उसकी ओर देखता है। मिसेज प्रताप कुछ बेचैन-सी होकर पहलू बदलती है।]

मिसेज प्रताप—(झेंप कर मुस्कराते हुए) आप मेरी ओर घूर-घूर कर क्यों देख रहे हैं?

इन्द्रनाथ—क्षमा कीजियेगा, मैं आपको पहचानने की कोशिश कर रहा हूँ। यदि मैं गलती नहीं करता तो आपका नाम शायद नलिनी देवी है और आपने 'सफेद बिल्ली' और ··· और ऐसी दूसरी फिल्मों में ···।

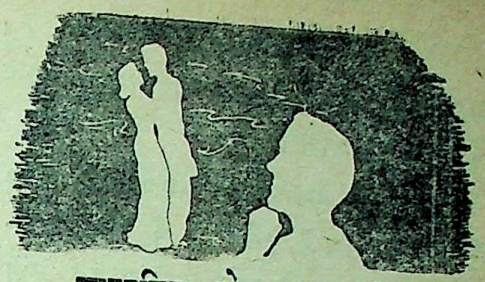

काल्पनिक प्रेम आज के युग की मनोवैज्ञानिक समस्या है। सपनों की कुंज-गली में प्रेमी अपनी प्रेमिका से मिलता है और वास्तविक मिलन का आनन्द अनुभव करता है। अधिकांश कवियों के प्रणय-गीत इसी काल्पनिक प्रेम पर आधारित होते हैं।

मिसेज प्रताप—हां, मैं नलिनी ही हूं। आपकी स्मरण-शक्ति खूब है। कोई चार साल की बात है कि मैंने सेठ प्रतापचन्द्र से विवाह कर लिया और उसके बाद मैंने किसी फिल्म में काम नहीं किया। अब मैं मिसेज प्रतापचन्द्र हूँ।

इन्द्रनाथ—मेरी स्मरण-शक्ति भी खैर, कोई बुरी नहीं; परन्तु बात दर-असल यह है कि आप एक असाधारण अभिनेत्री थीं (मुस्कराते हुए) और···और इसके अलावा मि० जगदीश भी प्रायः आपका जिक्र किया करते हैं। मि० जगदीश मेरे बहुत पुराने मित्र हैं। वे मुझसे कोई बात नहीं छिपाते। हम यहां इकट्ठे ही रहते हैं।

मिसेज प्रताप—वे मेरा जिक्र किया करते हैं क्या? मैं तो उनसे परिचित तक नहीं। क्या उनका कोई पैन-नेम (उपनाम) भी है?

इन्द्रनाथ—वाह, आप मुझे नहीं बना सकतीं। उनका नाम जगदीश है, जगदीश—केवल जगदीश, न कोई पैन-नेम, न और कोई दूसरा नाम। और यह भी एक तथ्य है कि वे आपसे कई बार मिल चुके हैं और बतौर जगदीश के ही मिले हैं। मैंने आपसे पहले ही कह दिया था कि वे मुझसे कोई बात नहीं छिपाते। मैं सब जानता हूँ। (हँसता है।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिसेज प्रताप— (ज़रा कड़ाई से) जानती हूँ ! क्या जानते हैं आप ? यही तो मैं भी जानना चाहती हूँ कि आप क्या जानते हैं ?

इन्द्रनाथ—(मुस्कराते हुए) आप चाहे लाख अभिनय करना छोड़ दें, लेकिन आप की कला ईश्वर-प्रदत्त है और वह आपकी प्रकृति का अंग बन चुकी है। आपने तो मुझे भी विश्वास दिलाया था कि आप जगदीश को बिल्कुल नहीं जानतीं।

मिसेज प्रताप—(क्रोध को दबाते हुए) तो क्या मैं झूठ बोल रही हूँ ? आप कान खोल कर सुन लें, मैं आपके मिस्टर जगदीश को बिल्कुल नहीं जानती।

इन्द्रनाथ— (फीकी-सी हँसी हँसते हुए) जी नहीं, आप भला झूठ कैसे बोल सकती हैं ! मगर... शायद आप इस बात को छिपाना ही बेहतर समझती हैं। खैर, यूँही सही। मेरा अभिप्राय तो केवल यह है कि मुझे सब कुछ मालूम है। मैं और जगदीश इकट्ठे इसी मकान में रहते हैं— बरसों से। हां, मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि मैंने आज जाना कि जगदीश को ठीक ही आपकी मित्रता पर गर्व है।

मिसेज प्रताप (आश्चर्य व क्रोध से) मित्रता ! गर्व ! आप क्या ... ?

इन्द्रनाथ— (बात काट कर) देखिये, आप रुष्ट न हों। (उठ कर कुछ कदम चलता है और मेज का दराज खोलता है। उसमें से एक लिफाफा निकालता है। लिफाफा मिसेज प्रताप के सामने प्रस्तुत करते हुए) यह देखिये इस बात का प्रमाण कि मैं झूठ नहीं बोल रहा। ये आप ही के तो फोटो हैं— और आप ही के दिये हुए। यह लिखावट और हस्ताक्षर स्पष्ट-प्रकट कर रहे हैं। जगदीश इनको सामने रख कर घण्टों देखता रहता है।

मिसेज प्रताप— (साश्चर्य) ऐं ! फोटो ! यह फोटो तो मेरा ही दीखता है। और यह मध्य में किसका फोटो है ? शायद आपके मित्र मिस्टर जगदीश का ! अब मैं समझी ...।

इन्द्रनाथ—हां, यह उन्हीं का फोटो है। लेकिन इतना बुरा तो नहीं कि आप इसे पहिचान न सकें !

मिसेज प्रताप—आप पहिचानने की कह रहे हैं, मैंने आज तक इसे देखा ही नहीं। और मैंने तो यह सुन रखा है कि कुरूप से कुरूप आकृति भी फोटो में भली जान पड़ती है ! खैर, लाओ तो देखें, इन चित्रों पर क्या लिखा है। (ऊंचे स्वर से पढ़ते हुए) 'मैं सदैव तुम्हारी रहूँगी— नलिनी।' 'मैं हूँ तुम्हारी अनन्य दासी—नलिनी।' (आवेशपूर्ण क्रोध से) ओह ! मैं हूँ इसकी दासी ...। अब मैं समझी इनकी बकवास का मतलब। (इन्द्रनाथ से) महाशय, मैं आपको बता देना चाहती हूँ कि आपका मित्र एक नीच कुत्ते से भी गया बीता है.... !

इन्द्रनाथ—यह आप क्या कह रही हैं ! आखिर आप इतना गुस्सा क्यों कर रही हैं ? मैं अपने मित्र का अपमान नहीं सहन कर सकता। मेरे मित्रों में से वह एक श्रेष्ठतम मनुष्य है।

मिसेज प्रताप—(सव्यंग्य) श्रेष्ठतम मनुष्य ! नीच, बदमाश ! यदि श्रेष्ठतम मनुष्य का यही नमूना है, तो संसार के सभी बदमाश, लुच्चे-लफंगे श्रेष्ठतम मनुष्य हैं। अच्छा, तो क्या आप अपने श्रेष्ठतम मित्र की करतूत सुनेंगे ? लीजिये सुनिये। लेकिन सुनने से पहिले यह अच्छी तरह जान लीजिये कि मैंने आपके 'श्रेष्ठतम मित्र' की असल भोंडी शक्ल आज तक नहीं देखी। कुछ दिनों से मेरे कुछ परिचित उसकी चर्चा करने लगे हैं और मुझे आश्चर्य था कि वे उसे मेरे साथ सम्बन्धित करने की क्यों चेष्टा करते हैं, उसका नाम विशेष रूप से मेरे सामने क्यों लेते हैं और फिर मेरी ओर देख कर क्यों मुस्करा देते हैं। उनकी इस व्यंग्यभरी मुस्कराहट ने मुझे हर जगह बदनाम कर दिया — यहां तक कि अब जब कभी भी आप के 'श्रेष्ठतम मित्र' का उल्लेख क्लब में होता है, तो सबकी आँखें मेरी ओर उठ जाती हैं और फिर एक कहकहा होता है — एक प्रचण्ड कहकहा। मुझे उस कहकहे में अंगारों के चटखने की ध्वनि आती है और फिर ऐसा अनुभव होता है कि मैं उन अंगारों की ज्वाला में जल रही हूं.....।

इन्द्रनाथ —(साश्चर्य) क्या आपका ... अभिप्राय.... ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGang

मिसेज प्रताप—ठहरिये, मैं बता रही हूँ। आप सुनते जाइये अपने 'श्रेष्ठतम मनुष्य' के कारनामे। पिछले चार दिन से मैं उस व्यक्ति को ढूंढ रही हूँ। आज सौभाग्यवश पता चला कि श्रीमान् जी 'वीकली-मिरर' के सम्पादक हैं और इस मकान में रहते हैं। मुझे पहले मेरा खयाल था कि शायद वह कहीं किसी फिल्म-पत्रिका का सम्पादक हो और उस वक्त शायद उसका 'पेन नेम' कुछ और हो और सम्भव है कि एक अभिनेत्री होने के नाते मेरी उससे जान-पहिचान रही हो और अब वह उस जान-पहिचान का लाभ उठा कर मुझ से कुछ ऐंठना चाहता हो। प्रायः ऐसा होता है कि यदि कोई अभिनेत्री किसी सद्गृहस्थ में विवाह कर ले, तो कुछेक 'श्रेष्ठतम मनुष्य' उसके विरुद्ध विचित्र प्रकार की बातें फैलाते रहते हैं। इसीलिए मैं उससे स्वयं मिल कर सब कुछ तय करना चाहती थी। किन्तु अब मालूम हुआ कि श्रीमान् जी मात्र एक प्रेमी हैं—और शायद एक श्रेष्ठतम प्रेमी!

इन्द्रनाथ—हां, हां, वह वस्तुतः श्रेष्ठतम प्रेमी है। वह आपकी पूजा करता है, आपके लिए पागल हो रहा है; कभी हर्ष से नाचता है और कभी आपका चित्र सामने रख कर घण्टों रोता रहता है।

मिसेज प्रताप—यह विचित्र प्रेम है! मैंने आज तक उसकी शक्ल तक नहीं देखी और वह सारे नगर में मेरे नाम का ढिंढोरा पीट रहा है, मुझे जगह-जगह बदनाम कर रहा है। स्वयं ही कहीं से मेरा फोटो प्राप्त करके स्वयं ही उस पर लिख देता है कि मैं उसकी प्रेमी हूं। एक स्त्री यह सब कुछ किस तरह सहन कर सकती है! मैं यह सारा मामला सेठ जी तक पहुंचा दूं, तो होश ठिकाने आ जांय श्रीमान् के।

इन्द्रनाथ—आप मुझे क्षमा करें। आपकी बातें सुन कर मुझे सन्देह होने लगा है कि कहीं यह काल्पनिक प्रेम ही न हो! अब जब मैं उसकी चेष्टाओं पर विचार करता हूँ, तो मुझे भी अनुभव होता है कि उसके मस्तिष्क में कोई विकार है। आज सबेरे ही वह मुझसे कह रहा था कि कल रात आपने उसके साथ ड्राइंग में 'स्वेज' फिल्म देखी।

मिसेज प्रताप—अब शायद अपने श्रेष्ठतम मित्र की वास्तविक राम कहानी सुन कर आप उसे बचाना चाहते हैं। लेकिन पागल बन कर वह बचेगा नहीं। मैं आज उसे कोड़े लगवाना चाहती हूँ। मैं आज उसे एक स्त्री की मान मर्यादा का अनुभव कराना चाहती हूं। आप अपनी इस चाल में सफल नहीं हो सकते।

इन्द्रनाथ—आप जो चाहे समझें, लेकिन मैं आप से सच कहता हूं कि स्वभाव से जगदीश एक अत्यन्त भला आदमी है। न जाने उसे यह क्या सूझी! मेरे विचार में या तो उसका मस्तिष्क खराब है, या इसमें कोई और रहस्य है।

मिसेज प्रताप—जो भी होगा, अभी उसके आने पर आपको मालूम हो जायगा। और वास्तविक रहस्य तो वह खुद ही बता सकेगा। मैं क्या जानूं, इसमें क्या रहस्य है। मैं अभी ड्राइवर को बुलवाउंगी और···

इन्द्रनाथ — मैं कह तो कुछ नहीं सकता, आप का जो जी चाहे करें, लेकिन उसके लिए मैं आप से क्षमा-याचना करता हूँ और आगे के लिए आपको विश्वास दिलाता हूं कि उसका मुँह नहीं खुलेगा। (नीचे से लैटरबक्स खुलने की आवाज आती है) लीजिये, जगदीश स्वयं ही आ रहा है। अभी उसके लैटरबक्स खोलने की आवाज आई।

मिसेज प्रताप— कोई बात नहीं, आने दीजिये। मैं अब उस से मिल कर ही जाउंगी। यह भी उसका सौभाग्य है कि उससे मिलने से पहिले आप से भेंट हो गई, नहीं तो··· अच्छा, खैर, आप खड़े रह कर तमाशा देखिये। कुछ मिनटों के लिए मैं किसी जगह छिपना चाहती हूं।

(सीढ़ियों पर पांव की चाप।)

इन्द्रनाथ—आप उस कमरे में चली जाइये— जल्दी से, वह आ रहा है।

(मिसेज प्रताप दूसरे कमरे में चली जाती है और अन्दर से किवाड़ बन्द कर लेती है और इन्द्रनाथ कुर्सी पर बैठ कर झूठ-मूठ एक पुस्तक पढ़ने लगता है। सीढ़ियों वाले दरवाजे से जगदीश कमरे में प्रविष्ट होता है।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगदीश—हलो, इन्द्र ! क्या पढ़ रहे हो ? और आज यहां किस वस्तु की सुगन्ध आ रही है ? क्या इत्र लगाया है ?

इन्द्रनाथ—सुगन्ध ? मुझे तो नहीं आती। क्या बात है, आज तुम बहुत प्रसन्न नजर आ रहे हो ?

जगदीश—हां, आज मैं सचमुच बहुत प्रसन्न हूँ। आज फिर नलिनी का पत्र आया है। आज सांझ को वह मुझे पूरे सात बजे कम्पनी बाग में मिलेगी। आज फिर मैं तुम्हारे साथ सैर को न जा सकूंगा। मुझे पूरे सात बजे कम्पनी बाग पहुँचना है।

इन्द्रनाथ—देखो जगदीश, तुम इस प्रकार खुले तौर पर उसके साथ मत घूमा करो। अगर कोई देख ले, तो ?

जगदीश—तो क्या, जो भी देखेगा ईर्ष्या से जल मरेगा। कई लोग तो अब भी मरे जा रहे हैं। तुम समझते नहीं हो इन्द्र, जब से मैंने नलिनी से मिलना-जुलना शुरू किया है, मेरी प्रतिष्ठा दुगुनी हो गई है। अब तो अखबार का प्रधान सम्पादक भी मेरा अभिवादन करता है।

इन्द्रनाथ — लेकिन यदि उसका पति कहीं देख ले·····?

जगदीश—वह बूढ़ा खूसट मेरा क्या बिगाड़ सकता है ? और फिर उससे तो नलिनी स्वयं ही निबट लेगी।

(साथ के कमरे के किवाड़ पट से खुलते हैं और नलिनी बाहर आ जाती है।)

जगदीश—(हक्का-बक्का-सा होकर) कौन ? क्या आप मिसेज प्रताप हैं ?

मिसेज प्रताप—हां, मिसेज प्रताप···ना ना, मैं भूल गई, मैं हूँ आपकी दासी नलिनी !

जगदीश—(सटपटा कर) ओ···हो···! हां, हां··· नहीं, नहीं, मुझसे आपका परिचय नहीं। आप क्या चाहती हैं ?

मिसेज प्रताप—क्या चाहती हूँ, जगदीश ? प्यारे जगदीश, क्या तुम मेरी हँसी उड़ा रहे हो ? अभी कल रात तो तुमने मेरे साथ रीगल में 'स्वेज' फिल्म देखी थी। क्या इतनी जल्दी भूल गये ?

जगदीश—कल रात का आप कैसा जिक्र कर रही हैं ? कल रात तो मैं दफ्तर से ही ११ बजे निवृत्त हुआ था। वार्षिकांक की तैयारी के लिये आजकल काफी रात तक काम करना पड़ता है। आज रात भी मेरी सात बजे से ग्यारह बजे तक दफ्तर में ड्यूटी है।

मिसेज प्रताप—प्यारे जगदीश, ईश्वर के लिये मुझ पर इतना अत्याचार न करो। यह तुम क्या कह रहे हो ? आज सायंकाल सात बजे तो तुम्हें मुझसे कम्पनी बाग में मिलना है। मेरी चिट्ठी क्या तुम्हें नहीं मिली ?

जगदीश—(विवर्ण-सा होकर) कौन-सी चिट्ठी ? मिसेज प्रताप, आप भूल से मुझे कोई और तो नहीं समझ रहीं ?

मिसेज प्रताप—मैं भूलती नहीं, प्यारे ! तुम शरमाते हो। यह मेरी चिट्ठी तो तुमने अपने हाथ में पकड़ रक्खी है। जरा देखूँ तो। (चिट्ठी छीन कर ऊँचे स्वर में पढ़ती है) 'डियर मिस्टर जगदीश ! मुझे एक क्षण भी आपके बिना कल नहीं पड़ती। न जाने आप क्यों हर वक्त मेरे हृदय में बसे रहते हैं। ईश्वर के लिये मुझ पर दया दृष्टि कीजिये और आज सांझ को ठीक सात बजे मुझे कम्पनी बाग में नियत स्थान पर अवश्य मिलें। आपकी दासी—नलिनी।'

जगदीश—यह आप कहां से पढ़ रही हैं ! इसमें तो यह कुछ नहीं लिखा ! यह तो मेरे दर्जी की चिट्ठी है —उसने सूट की सिलाई मांगी है।

मिसेज प्रताप—(झूठमूठ रोने का अभिनय करती हुई जगदीश के ऊपर गिर पड़ती है) मेरे प्यारे जगदीश ! मेरे प्रेम ने तुम्हें विक्षिप्त बना दिया है। अब तुम अच्छी तरह से पढ़ भी नहीं सकते।

जगदीश—(चेहरे पर से पसीना पोंछते हुए) देखिये, आप रो क्यों रही हैं ? मैं आपसे सच कहता हूँ कि अगर चन्द मिनट यही दशा रही तो मैं खिड़की से छलांग लगा दूंगा।

मिसेज प्रताप—(हिचकियाँ लेते हुए) अब मैं क्या करूँ ? मेरी दुनिया आज अँधेरी हो गई। तुम देखते नहीं जगदीश, यह मैं हूं नलिनी—तुम्हारी दासी और तुम हो कि मुझे पहिचानते भी नहीं। मेरे प्रेम में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harid

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...री स्मरण शक्ति कमजोर कर दी है। इसमें मेरा ही ...ल है। तुम पर तो मैं देखते ही लट्टू हो गई थी। ...लिये शायद तुम्हारे मस्तिष्क में विकार आ गया ...! हाय, मैं तुम पर इतना क्यों रीझी!

जगदीश—(साश्चर्य) आप मुझ पर रीझीं! ...ल पर!

मिसेज प्रताप—हां, तुम पर, प्यारे तुम पर!

जगदीश—मुझ पर! (घबरा कर इधर उधर देखता है।)

मिसेज प्रताप—प्यारे जगदीश! यह तुम क्या कह रहे हो! होश में आओ, मेरी ओर ध्यान से देखो, मुझे पहिचानने की चेष्टा करो। (मेज के निकट जा कर, मेज पर से फोटो उठाते हुए) यह देखो मेरे फोटो। ये मैंने ही तो तुम्हें भेंट किये थे। क्या भूल गये?

जगदीश—यह आप क्या कह रही हैं! ये फोटो तो मैंने स्वयं बाजार से खरीदे हैं।

मिसेज प्रताप—तुमने स्वयं खरीदे हैं! भूलते हो जगदीश। यह देखो इन पर क्या लिखा है—'मैं सदैव तुम्हारी रहूंगी—नलिनी!' 'तुम्हारी अनन्य दासी!' यह मैंने ही तो लिखा था। क्या भूल गये? और फिर यह देखो, दोनों पर मेरे हस्ताक्षर हैं। याद करो जगदीश, ये फोटो मैंने तुम्हें पूनों की उस रात में प्रेमोपहार के रूप में दिये थे, जब हम दोनों शालामार बाग की सैर कर रहे थे। मैं तुम्हारी बगल में थी और तुम मुझे अपने बचपन की कथायें सुना रहे थे।

जगदीश—आप मुझे क्यों लज्जित कर रही हैं। मैंने आज से पहिले आपको कभी नहीं देखा ये फोटो तो मैंने स्वयं ही खरीदे थे और स्वयं ही इन पर यह लिखावटें लिखी थीं।

मिसेज प्रताप—अरे, मैं तो बिल्कुल लुट गई! मेरा दो वर्ष का प्रेम व्यर्थ गया। (आराम कुर्सी पर लेट जाती है।) यहां आओ, जगदीश! मेरी गोद में अपना सिर रक्खो। मैं तुम्हें थपकूंगी। शायद मेरे प्रेम-भरे हाथों के स्पर्श से तुम्हें होश आ जाय।

जगदीश—(अनुनय करते हुए) बस, अब काफी हो चुका। भगवान के लिए मेरा अपराध क्षमा करें। आप यहां से चली जायं।

मिसेज प्रताप—क्या तुम मुझसे तंग आ गये? क्या प्रेम का यही पुरस्कार है? ठीक है, पुरुष की जात ही ऐसी है। हम स्त्रियां उन्हें अपना सब कुछ समर्पित कर देती हैं; लेकिन पुरुष ··· वे वर्षों की प्रीति को एक क्षण में तोड़ डालते हैं।

जगदीश—मैं आप से प्रार्थना करता हूँ, आप यहां से चली जाइये—(चीख कर) जाइये—जाइये—जाइये!

(अवकाश)

इन्द्रनाथ—जगदीश, तुम इसी योग्य हो। पागल तो तुम उसी समय से हो, जब से तुम इस कुलीन महिला की जगह-जगह बदनामी कर रहे हो। तुम्हारी दुर्गति इससे भी बुरी होनी चाहिये। तुम्हें इस महिला के प्रति कृतज्ञ होना चाहिये कि वह इस समय तुम्हारी खातिर जूतों से नहीं कर रही। अब कान पकड़ कर और हाथ जोड़ कर इन से क्षमा मांगो और प्रतिज्ञा करो कि फिर कभी ऐसा नहीं करोगे।

जगदीश—(अत्यन्त विनय से) मिसेज प्रताप, मुझे क्षमा कीजिये! मैं आपका अपराधी हूं। अबकी बार मुझे क्षमा कर दें। इस अपराध के लिए मैं हर प्रकार का प्रायश्चित्त करने को प्रस्तुत हूँ। मैं इस नगर को ही छोड़ दूंगा।

मिसेज प्रताप—(सव्यंग्य) तुम्हारे प्रायश्चित्त से क्या होगा! क्या किसी कुलीन स्त्री के अपमान का प्रायश्चित्त हो सकता है? शायद तुम्हारे लिए ये सब बातें परिहास मात्र थीं। परन्तु तुम्हारे इस परिहास ने मेरी सारी आबरू मिट्टी में मिला दी है।

जगदीश—मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरा उद्देश्य हर्गिज आपका अपमान करना नहीं था। मुझे यह गुमान तक न था कि मेरा यह छोटा-सा रूमान (प्रेम-व्यापार) समाज के उच्चतम वर्ग तक पहुँच कर आपके लिए इतने कष्ट का कारण बनेगा। मुझे आश्चर्य है कि यह बात आप तक पहुँची कैसे?

मिसेज प्रताप—रूमान! किसी स्त्री की इज्जत के साथ खेलने को तुम रूमान कहते हो! और फिर खुद ही उस रूमान को शैतान की भांत विशापित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके खुद ही पूछते हो कि यह बात मुझ तक पहुँची कैसे ? विचित्र आदमी हो तुम !

जगदीश—आप ठीक कहती हैं, आपकी हर बात ठीक है। लेकिन फिर भी मेरे लिए यह एक रूमान था, प्रणय-लीला थी, मेरे सीमित और अभिशप्त जीवन की एक छोटी-सी प्रणय-लीला। हृदय की एक विशेष भावात्मक अवस्था का नाम ही तो रूमान है। और मैं वह अवस्था केवल कल्पना द्वारा ही प्राप्त करना चाहता था।

मिसेज प्रताप—(चुप रहती है)

जगदीश—हां, यह सब ठीक है। आप बेशक मेरी हंसी उड़ाइये, आपको इस बात का पूरा अधिकार है। मुझे जूते तक लगाने का आपको अधिकार है। लेकिन आज मुझे अवसर मिला है—शायद मेरे जीवन में पहिला और अन्तिम अवसर—इसलिये मैं आपको बता देना चाहता हूँ कि यह पागलपन बरसों से मेरे सिर पर सवार है और दिनों-दिन बढ़ता चला जा रहा है। मैं भली प्रकार यह जानता हूं कि आपको प्राप्त करना असम्भव है। मैं कभी यह विश्वास भी न कर सकता था कि मैं इन कांपते हुए ओठों से आपको केवल यह कह सकूँ कि मुझे आपसे प्रेम है। मन को सन्तोष दिलाने के लिए मैं यह कल्पना कर लिया करता था कि मैंने आपको पा लिया है, आप मेरे साथ हैं और कभी अलग नहीं हो सकतीं। प्रारम्भ में यह कल्पना मेरे हृदय और मस्तिष्क तक ही सीमित रही, परन्तु बाद में जब रोग बढ़ता गया तो मैंने अपने आपको विश्वास दिलाने के लिए इसकी चर्चा मित्रों से भी करनी आरम्भ कर दी। आपके सम्बन्ध में बातें करने से मुझे एक विशेष प्रकार का आनन्द होता था, मैं आत्म विस्मृत-सा हो जाता था। आपके चारों ओर घटनाओं का एक जाल-सा बुन कर मैं स्वर्ग में पहुँच जाता था और सोचता था कि मैं और आप जन्म-जन्मांतर से एक दूसरे से प्रेम करते आए हैं और अनन्त काल तक एक दूसरे के प्रणय-बन्धन में बंधे रहेंगे। आज मेरी कल्पना का इन्द्रजाल वास्तविकता के तीखे आघात से छिन्न-भिन्न हो गया। मैं नहीं कह सकता कि इसके लिए मैं आपको धन्यवाद दूं, या...।

मिसेज प्रताप—(कुछ प्रभावित हो कर) विचित्र प्रेम है यह ...! काल्पनिक प्रेम !

जगदीश—मिसेज प्रताप, मैं आपसे अपने सब अपराधों के लिए क्षमा चाहता हूँ। आप मुझे क्षमा करें !

मिसेज प्रताप—मैं सब समझ गई। यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या है। अब मुझे तनिक भी विस्मय नहीं रही। तुम्हारी सब बातें सुनने के बाद मैं स्वयं यह अनुभव कर रही हूँ कि मैं किसी गहरे दुःख में गिरी जा रही हूँ। शायद संसार में अधिकांश रूमान कल्पना तक ही सीमित रहते हैं। लेकिन कुछ लोग इन्हें वास्तविक रूमानों में परिणत करना चाहते हैं और ऐसा करने की योग्यता रखते हैं, वे कुछ सफल होते हैं। परन्तु तुम्हारा रूमान—तुम्हारे सीमित जीवन का सीमित रूमान तुम्हारे सीमित मस्तिष्क ही बन्दी रहेगा। तुम इस योग्य नहीं कि बाहर रूमान का रसास्वादन कर सको।

(मिसेज प्रताप जल्दी से मुड़ कर सीढ़ियों की ओर जाती है और नीचे उतर जाती है और कुछ बाद मोटर स्टार्ट होने की आवाज आती है। इसके कुछ ही देर बाद सीढ़ियों पर किसी के जल्दी जल्दी चढ़ने की आवाज। जगदीश का दूसरा मित्र गोपाल हांफता हुआ जल्दी से कमरे में प्रवेश करता है।)

गोपाल—जगदीश ! ओ जगदीश ! अरे बधाई तुम बड़े भाग्यशाली हो !

इन्द्रनाथ—क्या बात है, गोपाल ! आराम से तो। आखिर बात क्या है ; इतनी परेशानी क्यों ?

गोपाल—आज तो मैंने इन आंखों से देख मित्र, तुम लोग सचमुच बहुत भाग्यशाली हो। आज तक जगदीश की बात का कभी विश्वास

(शेष पृष्ठ ४४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harid

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य-लेख

'राजा रंजयति प्रजाः'

श्री सूर्यनारायण व्यास

★

शब्दों की परिभाषाएँ युग के अनुरूप बदलती ही रहती हैं, क्योंकि उनमें अनेक अर्थ रखने की क्षमता रहती है—जिस प्रकार आदमी एक रहते हुए भी अनेक तरह के विचार और कपड़े बदल सकता है। परन्तु यहां हम गीता वाली 'आत्मा' की अमरता और शरीर रूपी कपड़ों के बार-बार बदलते रहने वाली बात नहीं बतला रहे हैं, क्योंकि हमारे ये शब्द तो वहीं के वहीं बने रहते हैं, सिर्फ अर्थों का युग और समय के अनुरूप मतलब पलटता रहता है। कुछ शब्दों के कुछ अर्थ रूढ़ बनकर मूढ़ समाज की समझ में चिपट कर ही चलते रहते हैं। समय के रूपान्तर कर लेने के बाद भी जब वे अपना नाम बनिये की दूकान की तरह चलाते रहते हैं, तो समझिए कि वे केवल अस्तित्व की लकीर घसीटते पड़े रहना चाहते हैं। बनिया भी दिवाला पिट जाने पर दूकान का नया नाम लगा लेता है, पर हमारे ये शब्द परिडतों की पोथियों में पुजते ही चले जाते हैं। लेकिन धीरे-धीरे प्राणहीन अस्तित्व रखने वाले उन शब्दों का अर्थ उनका साथ छोड़ जाता है, और कुछ समय के बाद उनका नाम लेवा-देवा भी नहीं रहता।

'सैंधव' शब्द के मानी नमक होता है, और घोड़ा भी। पर 'सैंधव' के स्मरण करते ही जिस तरह नमक सुलभ हो सकता है, उस तरह घोड़ा नहीं। बात यह है कि सैंधव को 'नमकीन' होने के कारण जिस तरह रसिकों ने स्वीकार कर लिया है, उतना घुड़सवारों ने नहीं। इसलिए नमकीनपन से वह जितना जीवित है, उतना तीसमारखां के तबेले में नहीं।

बेचारे 'राजा' की भी वही हालत हो गई है। 'राजा' शब्द सुनते ही कल तक लोगों के दिमाग में प्रजा की जय-जयकार करती हुई एक टोली हुल्लड़ खड़ा कर देती थी, बड़े-बड़े महलों के मानचित्र मस्तक में बन जाया करते थे, हाथी-घोड़े, हीरे-मोतियों की मूल्यवान मालाओं की तथा मुकुटों की चमक आंखों को चौंधियां देती थी। सुसमृद्ध नगर और सेनाओं के समूह की जैसी सहज कल्पना सामने खड़ी हो जाती थी, वह 'सरदार' की 'कृपा' से अब कहां रह गई है! प्रजा के प्रचुर समूह का स्वामी ही राजा रह सकता है, इस धारणा को तो अंगरेजी-राज ने ही गहरा धक्का मार दिया था! जिसके पास बालिश्त भर भी जमीन न हो, वह भी जब 'राजा बहादुर' बन बैठता था और आगा खां की तरह 'हिज हाईनेस' की हविस पूरी कर लेता था, तब वहां किस 'प्रजा' की पूछ होती थी!

जमाना इतना नाजुक चलने लगा है कि प्रजा (रिआया) के नाम पर तो अपनी खुद की प्रजा (संतान) भी मिलना मुश्किल हो गया है। अनेक राजों-रजवाड़ों को पराई प्रजा तो क्या, निजी प्रजा (संतान) भी कहीं से उधार (दत्तक) लाकर प्रजा की प्यास बुझाना पड़ती थी! इस तरह इस 'राजा' की यह मुसीबत तो महज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टल ही गई कि प्रजा के विशाल-समूह की सम्हाल, भरण-पोषण की चिन्ता का प्रश्न ही नहीं रहा। एक प्रकार से बेगार टल गयी। सो राजा के साथ ही प्रजा की जो कल्पना दौड़ आती थी, उसकी सार्थकता तो समाप्त हो गई। वर्ना बिना प्रजा के राजा की सार्थकता सिद्ध नहीं होती थी। अब इस अर्थ की निरर्थकता के कारण प्रजा का पूरा प्रपंच ही मिट गया।

राजा रंजयति प्रजाः !

पुराने पण्डितों ने प्रजा का अनुरंजन करने वालों को राजा समझा था; पर सरदार पटेल ने इस शब्द का जिस तरह स्पष्ट अर्थ कर दिया है, उससे यह बात ही बदल गई है। हजारों साल पहिले की धारणा को भारी धक्का पहुँचा है। उस समय राजा का काम प्रजा (जनता) का अनुरंजन करना था, पर अब तो अपनी संतान (प्रजा) अगर हो, तो उसे खिलाना (अनुरंजन करना) ही बाकी रह गया है। पुराने जमाने की बढ़ी हुई जिम्मेदारी को राजा के कन्धे से उतार कर आज के समय ने उसे बहुत सीधा-सरल बना दिया है। कुछ समयज्ञ विद्वानों का कहना है कि इसमें काल का कुसूर नहीं है। कोषकारों के समय में भी कभी कण्ट्रोल का अवसर आ गया होगा। जब सब बातों की सुविधा होगी, तब प्रजा का अर्थ विशाल जन-समुदाय रहा होगा और जब कठिनाई रही होगी तब 'प्रजा' केवल 'संतति' के अर्थ में सिमिट कर रह गई होगी। अर्थ दोनों सही होते हुए भी पण्डितों ने 'प्रजा' को अनेकार्थी बना कर 'राजा' की प्रतिष्ठा को बचा लिया। तो फिर 'क्यों राजा !' और 'राजाबेटा' की तो बात ही जुदा है। इनसे तो 'राजा' की महत्ता का मदर्न हो जाता है। ऐसी हालत में 'राजमहिषी' को कोई द्विपद से चतुष्पद समझ लेने का साहस कर ले, तो आश्चर्य नहीं! पटरानी पट्टाभिषिक्त रानी 'महिषी' मानी जाती थी। गलती से यह 'महिषी' महज भैंस भी रह सकती है। पर किसी 'हर-हाईनेस' को महज 'महिषी' कह दिया जाए तो जानते हैं कि कौन सी खातिर·····की जाएगी ! ठीक है, पुराने जमाने की 'महिषी' को कब तक रस्सी बांध कर घसीटते रहिएगा ! कहां सैकड़ों दास-दासियों से घिरी, रूप-लावण्य रत्नालंकारों से सजी हुई शकुन्तला, दमयन्ती-सी राजमहिषी और कहां घास-पात खाकर गोबर से सनी, गन्दे-गुआड़े में सूखी लकड़ी के खुरदरे खूँटे से रस्सी के जरिये बँधने वाली, बड़े-बड़े दो सींग - पूंछवाली, कीचड़ में लथपथ काली-कलूटी, बेशर्म, ढीठ भैंस !! पण्डितों ने समानार्थवाची शब्दों को रख कर मखौल ही तो किया है !

लोगों की नासमझी से यदि राजमहिषी की दोनों परिभाषाएं अब तक बनी रहतीं, तो उस जमाने के नल की नाजुक दमयन्ती आज किसी ग्वाले के गुआड़े में ही बंधी होती। और परिभाषाकार पंडित दोनों की समानता साबित करने से भी नहीं चूकते। जी ···· !

शायद आप यह मजाक मान लें। सबूत में एक उदाहरण महाराष्ट्र के एक पंडित का पेश है। वह पंडित पहिले राज कृपा से सम्मान प्राप्त किये हुये था। बाद में नाराजी में आ जाने के कारण उसे पूरे एक सौ श्लोकों का 'महिष-शतक' बना कर 'राजा' और 'महिषराज' की तुलना करनी पड़ी थी। परमेश्वर को धन्यवाद है कि वह जमाना लद गया था जब कि राज-महिषी की सर्वत्र मान्यता थी। आज 'महिषी' को सिवा भैंस मानने के कोई रानी नहीं समझता हां, तो उन पंडित जी की उस तुलना का थोड़ा स्वाद लीजियेगा—

'···किसी मूर्ख राजा के अभिषेक (राज्याभिषेक) करने पर यदि प्रजा को भारी कष्ट का सामना करना पड़े, तो बेहतर है कि किसी भैंसे का ही अभिषेक (भैंसे को नहलाना) कर दिया जाए। वह प्रजा के लिए हितकारक होगा। इसलिए मुझे तो भैंसे को राजा मान लेने में आपत्ति नहीं है। राजाओं की तरह इसका भी अभिषेक होता है, इसके भी राज-महिषी की तरह 'महिषी' होती है, इस पर भी दुम की चंवर डुलती है, राजा की तरह यह भी शेष जग को चारे के समान समझता है। राजा लोग आंखें रहते भी दूसरे की आंखों से ही देखने-सुनते हैं (नृपाः चारु-चक्षुषः) उसी तरह यह भी दूसरों के इशारों पर ही चलना पसन्द करता है। इसका महल इसका गुआड़ा ही होता है, केसर-कस्तूरी की तरह यहां गोबर का ही उप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग होता है। इसकी चाल-ढाल भी उसी राजसी मस्ती और बेपरवाही से भरी हुई होती है।'

इस तरह राजा और महिषराजा में समानता ही रहती है। इतना ही नहीं, पंडित जी ने राजा की जन-सेवा की अपेक्षा भैंसे की जन-सेवा को निर्हेतुक निःस्वार्थ बतलाया है। वह अपनी सेवा का कोई बड़ा इवजाना नहीं लेना चाहता, इसलिए भैंसे का महत्व अधिक होना चाहिये। पंडित जी की तो यहां तक सम्मति है कि राजदर्शन की अपेक्षा महिषराज-दर्शन कहीं उत्तम है!

'हास्य-विनोद मीमांसा' के कर्त्ता स्वयं केलकर जी के कथानुसार, सुनते हैं कि इन महाराष्ट्र-पंडित की राजा से खटक गई थी। तब ये दरबार छोड़ कर खेती करने लग गये थे। वहां उन्हें भैंसे से काम पड़ गया था। तब उसकी उपयोगिता समझ कर पूरे १०० श्लोकों से उस की स्तुति और तुलना कर डाली थी। दुर्भाग्य ने पण्डित जी का पीछा वहां भी नहीं छोड़ा था। खेती पक जाने पर अधिकारी उसे भी उठा ले गए। तब आप ने बिगड़ कर फर्माया था,—'हे महिषराज! मूर्ख राजा और अन्यायी अधिकारी में दुर्गुण का निवास रहता है, यह बात तुझमें नहीं होती। तू बड़ा भाग्यशाली है कि तुझे इन दोनों के देखने का अवसर नहीं आया। अपने शरीर को कठिन श्रम दे कर जो धान पका कर तैयार किया जाता है, उसे ये अधिकारी इस तरह उठा ले जाते हैं, जैसे अपने घर का ही माल हो। इतने अधिकार के साथ तो बेटा ही बाप का माल उठा ले जाता है!'

पण्डित जी ने जो बात कही है, वह आज भी सोलह आने सही पड़ती है। उनकी बात में तथ्य है, जो उन्होंने अपने 'प्यारे-पांडे' को 'माध्यम' मान कर तुलना में कही है।

समय-स्थिति-वश शब्दों की परिभाषाओं का बदलना स्वाभाविक है, परन्तु घटनाओं की परम्परा का पुनरावर्त्तन तो होता ही रहता है। हजारों साल पहिले का राजा आज के राजा से ज्यों का त्यों मेल खाता है। ढाई-तीन हजार साल पहिले राजतन्त्रीय काल में राजा ने अपने में विकारों को पाला पोसा था। उस राजतन्त्र को जनतन्त्र के चरणों पर चढ़ा देने को विवश होना पड़ा था। परिवर्त्तनक्रम-वश जब फिर जनतन्त्र ने विलीन हो कर राजतन्त्र को पुनरुज्जीवित किया, तो उस के वे विकार सहोदर की तरह उसके साथ ही लगे हुए लौट आए। अंग्रेजी इतिहास के जानकारों की जबान पर जिस तरह 'नीरो' नाच उठता है, उसके भैया-बन्द भारतीय राजाओं के इतिहास में भी भरे हुए हैं। काश्मीर के मिहिरकुल का एक हाथी पहाड़ से सहसा फिसल पड़ा और उसने जैसी चिंघाड़ लगाई, उसे बार बार सुनने के लिए पकड़-पकड़ कर कई हाथी मिहिरकुल ने गिरवा दिए थे। जी हां, यह शौक चर्राया था!

यह अजीब बात नहीं। राजाओं के 'तबेले' में झांक कर देखा जाता, तो आज भी उन राजाओं के असली वंशजों का पता पा लेना असम्भव नहीं होता।

मतलब यही कि 'राजा' की परिभाषा युग-कालानुरूप पलट भले ही जाये, पर यदि राजा का अस्तित्व है, तो उसमें अपनी असलियत अवश्य मिलेगी ही। कालिदास ने राजा को प्रकृति-रंजन करने वाला कह कर चाहे जो मतलब निकाला हो, पर सरदार पटेल ने आज उन्हें प्रकृति-रंजन (दिल बहलाने) के लिए खुला छोड़ दिया है! 'प्रजा-रंजन' का जमाना बीत गया है। अब 'प्रकृति-रंजन' का युग शुरू हुआ है! और राजा अपने पूर्व-कवि कालिदास के कथन की मान-रक्षार्थ प्रकृति-रंजन के लिए तत्पर है। राजा का काम 'रक्षण' करना था। काल पलट जाने के बाद 'प्रजा-रक्षण' की आवश्यकता नहीं रही। प्रजा खुद अपनी रक्षा और राजा की रक्षा करने तक के लिये उतारू है। इसीलिये राजा अपनी जिम्मेदारी से बरी हो गया है। प्रजा (बेटे या जनता) की रक्षा राजा (या बाप) तब तक ही करता है, जब तक वह अपनी रक्षा करने में असमर्थ हो। वह अपने पैरों पर खड़ा हो जाने लगे, तो राजा (पालक) अपनी जिम्मेदारी से बरी है! अब उसे अपनी विरासत में—राजा की परम्परा में—जो-जो बातें 'रक्षण' के लिए मिली हैं, उन्हीं की रक्षा का भार उसे सहन करना है। शब्दों के अर्थ तो आए दिन बनते-बदलते रहते हैं, उनकी चिन्ता करने से कोई लाभ नहीं। वह अपने शाब्दिक अस्तित्व को ही पुख्ता पकड़ रखे तो जब इतिहास का पुनरावर्त्तन होगा, वह उसी रूप में अपने को जीवित पा सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवश

श्री मदनलाल नकफोफा

तेरी स्मृति की अतुल भीड़ से भरा आज दिल का कोना है !

तुमने दिया हास, फूलों के मृदु अधरों ने हँसना सीखा,
तुमने दिया विकास, वृक्ष में सुख से उसने बसना सीखा,
पर शूलों के लिये अश्रु से गीली मिट्टी ही सोना है !

इतनी पतली साँस और यह इतना बड़ा जगत का घेरा,
सुख-दुख लिये-दिये मन-पंछी कहाँ करे अब रैन-बसेरा ?
इस जग में दो काम प्राण के लिए मुख्य हँसना-रोना हैं।

तनिक भूल भी पाता यदि मैं कभी दी हुई पीर तुम्हारी,
पाता कभी उतार न दो क्षण माथे से तकदीर तुम्हारी,
मूक लड़खड़ाती साँसों पर भार जिन्दगी का ढोना है !

★

गीत

श्री राम 'यात्री'

स्वर्ण - रेणु बिखराती संध्या !
जगमग दीप जलाती संध्या !

शैलमालिका की घाटी में
विहग - बालिका - सी पंखों पर
उड़ती जाती स्वप्नलोक में
अपना राग सुनाती संध्या !
जगमग दीप जलाती संध्या !

आम्र - मंजरी में छाया - सी
मरकत - प्याली हँस छलकाती,
पल - पल बढ़ती जाती जग में
अपनी वेणु बजाती संध्या !
जगमग दीप जलती संध्या !

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मपीड़न और ममत्व का एक मार्मिक चित्र

किरण

श्री राजेन्द्र सक्सेना

★

छत पर बैठी हुई थी किरण; पास चारपाई पर सो रही थी सुधा – किरण की चार वर्षीया बच्ची। आकाश में तारे बिखरे हुए थे और चांद की पीली-पीली रोशनी सामने के ऊंचे नीम के पत्तों से छन-छन कर जमीन पर उतर रही थी। आसपास मकानों की सूनी दीवारें अलसाई सी खड़ी थीं। पेड़ों की लम्बी-सी शृङ्खला दूर तक ऊंघती-सी चली गई थी।

किरण विचारों में उलझ रही थी। आशा और निराशा में द्वन्द्व हो रहा था। जैसे ही निराशा के घटाटोप अँधियारे में आशा की क्षीण सी रश्मि प्रकाशवान् हो उठती कि नैराश्य की घनी बदली शीघ्र उसे अपने बीच तिरोहित कर लेती। और अब किरण जैसे किसी निश्चय तक पहुँच जाना चाहती थी। वह अनुभव करती थी कि अब और अधिक अपने आपसे न लड़ सकेगी। उसे पराजित होना ही होगा। आखिर संतोष की भी सीमा है। और केवल थोथा संतोष भी तो आत्म-प्रवंचना है। किरण सोचती थी—वह अभी तक इसी आत्म-प्रवंचना का शिकार बनी रही है। अपर-मिडिल पास किरण कस्बे के गर्ल्स स्कूल में अध्यापिका है। लड़कियों को स्कूल में पढ़ाना, फिर एक-दो ट्यूशन, सुधा की देख भाल — जीवन जैसे चिर-परिचित डगर पर दौड़ रहा है और यह जीवन जैसे किरण के लिये सदैव भार-स्वरूप रहा है। यद्यपि वह स्वावलम्बित है, कहीं कोई व्यवधान नहीं है; फिर भी जैसे यह स्वावलम्बन और स्वाधीनता उसे खटकती है। सारे जीवन में एक गहरी अतृप्ति की अनुभूति ने उसे और अधिक तिक्त बना दिया है।

जिस व्यक्ति के साथ समाज ने किरण को कुछ मंत्रों के बल पर सदैव के लिये बांध दिया था—जिसने दो-एक वर्ष ही में किरण को केवल इसीलिये अपमानित कर छोड़ दिया था कि वह शादी उसकी मर्जी के विरुद्ध हुई थी, किरण के स्थान पर उसे स्वप्न-जगत् की रूपसी न मिली थी—उस व्यक्ति ने दो वर्ष से किरण की बात भी न पूछी कि वह किस प्रकार जन्दा है। और एक दिन घर से अचानक गायब होकर वह व्यक्ति आज तक नहीं लौटा।

और युग युग से पोषित अंध-परम्पराओं और रूढ़ियों में घिरी हुई किरण आज भी उसकी प्रतिछवि मन में उतारे है और उसके नाम की माला जप रही है — जबकि वह जानती है कि इस वियोग की अवधि अनन्त है। कभी कभी सोचती है, उसने तो कभी नहीं चाहा था कि उसका विवाह हो जाता। इससे तो अच्छा था कि वह आजन्म क्वाँरी रह जाती। उसको यह समस्यायें और यह परिताप तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न भोगना पड़ता। किंतु सबसे अधिक किरण तब उद्विग्न हो जाती है, जबकि कस्बे की परिचित-अपरिचित स्त्रियां उसके नाम के साथ कई काल्पनिक कथायें जोड़कर बाकायदा उसका विज्ञापन करती-फिरती हैं, और जिनकी बाढ़ किरण के मस्तिष्क को झकझोर कर रख देती है। किरण जानती है कि उन कथाओं की वास्तवकता कुछ नहीं है, सब निराधार हैं; किन्तु उसके पास वह कवच जो नहीं है, जिसे पहने रहने से कोई उसकी ओर अँगुली तक न उठा सके।

किरण इन सब पर जितना सोचती है, उसे जीवन भार जान पड़ता है। लगता है, जैसे उसके अवलम्ब-हीन जीवन का कोई उपयोग ही नहीं। उसे तो खो देना ही···किन्तु आत्मघात तो पाप है। और किरण तारों से टिमटिमाते सूने आकाश को देखती हुई आशंकित हो उठती है, जैसे वही एकमात्र हल अब शेष हो। इस जीवन से तो अवसान ही श्रेयस्कर है। जीवन की अनुपादेयता ही मृत्यु है!

* * *

यह किरण पिछले एक मास से लगातार बीमार रही है। वह पहले से दुर्बल हो गई है। साथ वाली और अध्यापिकायें पूछती हैं, आखिर किरण को क्या हो गया है? पढ़ाते पढ़ाते किरण को जब चक्कर आ जाता है, तब सिर पकड़ कर बैठ जाती है। फिर भी किरण की शारीरिक उपस्थिति स्कूल में ज्यों की त्यों चल रही है, क्योंकि उसके बिना तो काम नहीं चल सकता। अस्वस्थ होने पर भी वह स्कूल जाती है और ट्यूशन करती है कि जीवन की गाड़ी किसी प्रकार चलती रहे। जीवन का यह कठोर सत्य नियति का कितना बड़ा व्यंग्य है! जैसे सारी दुनिया उसके प्रबल पाश में जकड़ी हुई है, जिससे कोई छुटकारा नहीं—सिवाय मृत्यु के।

किरण को फिर अपने पति की याद हो आई, जिसने एक दिन अग्नि के चारों ओर उसके साथ सात बार प्रदक्षिणा कर उसे जीवन-संगिनी बनाया, चार-छै दिन उसके साथ रंगरेलियाँ मनाईं और फिर आये दिन अपमानित और लांछित कर एक दिन दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया। किन्तु किरण सोचती है—कितना कायर था वह पुरुष, जो विवाह के पहले तो अपनी मनमानी न कर सका और तदुपरांत एक स्त्री के साथ उसने विश्वासघात किया—एक निरीह युवती के जीवन को विषाक्त बना डाला।

और किरण को लगा, सचमुच उसकी निष्ठुरता अब सीमा पार कर चुकी है। वह अब कभी न आयेगा और किरण यों ही अपमानित जीवन बिताने के लिये घिसटती रहेगी। समाज की टीका-टिप्पणियां, इस जीर्ण जर्जर परम्परा ने जिन्हें जन्म देकर सबल बनाया है, उसे यों ही घोंटती रहेंगी!

और यह सुधा, जिसे उसका पति एकमात्र स्मृति-चिह्न बना कर छोड़ गया है, जिसे वह गत तीन-चार वर्षों से परिश्रम से पाल रही है। अब तो इसी में जैसे किरण का मन सांत्वना खोजता है। किन्तु वह उसे मिलती नहीं। किरण को लगता है, उसकी खोज ही व्यर्थ है। वह केवल एक भ्रान्ति है, जो मन की दुविधा को और बढ़ाती है, कम नहीं करती।

पर आज जैसे वह अपने साथ अधिक छल नहीं कर सकेगी। पीड़ाओं का बांध टूट कर ही रहेगा, जो किरण को बहाकर ले ही जावेगा—बहुत दूर, क्षितिज के उस पार, जहां प्रतिदिन सन्ध्या को सूर्य डूबता है और उसी के साथ किरण की समस्त आशायें प्रतिदिन डूब जाया करती हैं।

अब तो जैसे किरण के हृदय में जीने के प्रति सम्पूर्ण निष्ठा समाप्त हो चुकी है। जीवन में कहीं कोई आकर्षण या लगाव नहीं है, जो उसे बाँध कर रख सके।

और यह सुधा? किरण सोचती है—इसे पाल-पोस कर इतना बड़ा कर वह अपना कर्त्तव्य पूरा कर चुकी है और यह सरलता से अपने पिता के पास रहे जीवन बिता सकती है।

* * *

किरण चारपाई पर लेटी-लेटी सोचती रही। मानसिक पीड़ाओं की ज्वार किरण के विवेक को बहाये लिये जा रही थी। उसके शिथिल अवयव और अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिथिल हो गये। जीवन का सम्पूर्ण उत्साह जैसे मन्द पड़ गया। तभी किरण ने देखा, आकाश के एक कोने में एक तारा प्रकाश की लम्बी क्षणिक रेखा खींचता हुआ टूट कर अनन्त में विलीन हो गया। जैसे किरण ने मन ही मन कुछ निश्चय कर डाला। चेष्टा करके भी वह उस निश्चय का ध्यान कर अपने हृदय के तीव्र स्पंदन को रोक न सकी।

किरण चुप चाप उठी। लालटेन जला कर छोटा-सा पत्र लिखा, फिर उस पर अपने पति का नाम और पता लिख कर एक ओर रख दिया। सुधा को एक बार देखा, उसका चुम्बन लिया और नीचे उतर आई। नीचे उतर कर वह थोड़ी देर के लिये ठहर गई। सोई हुई सुधा की निर्दोष मुखाकृति कलेजे में एक टीस पैदा करने लगी। किन्तु उसे दबाये हुये किरण चल दी—लम्बे-लम्बे डग रखती हुई।

घर से निकल कर किरण कुछ बढ़ी थी कि कुत्ते भौंकने लगे। किरण सिहरती हुई आगे बढ़ी। अब वह उस गली को पार कर जायगी। लेकिन दूसरे ही क्षण वह चौंक कर खड़ी हो गई। रात्रि की उस नीरवता में सुधा के रोने की आवाज किरण स्पष्ट सुन रही थी। उसके पैरों ने जैसे आगे चलने से इन्कार कर दिया। व्याकुल होकर वह घर की ओर लौट चली। ऊपर चढ़ कर रोती हुई सुधा को उसने छाती से चिपका लिया, आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित हो उठी।

किरण को लगा, उसके हृदय में नवीन आशा का संचार हो रहा है। उसके मन का बोझ उतरने-सा लगा है, जैसे पुरानी स्मृतियों को वह भुलाने की चेष्टा कर रही है। आज जो अनुभव किरण को अपने जीवन में हुआ है, वह अगली जिन्दगी में भी उसे बल देता रहेगा। शून्य में तारे झिलमिला कर बुझ रहे हैं। प्रभात होने को है।

★

आप — दूसरों की नजर में

(गत मास के मनोरंजन में प्रकाशित प्रश्नों के सही उत्तर)

अपनी लोकप्रियता की जांच के लिये आप अपने उत्तरों को निम्नांकित से मिलाइये। एक सही उत्तर का एक अङ्क समझिये। जितने अधिक उत्तर ठीक हों, उतना ही आप अपने को लोकप्रिय समझिये। २५ पूर्णांक पाने सम्भव हैं, पर १७ अङ्क लेकर भी आप अपने को पर्याप्त लोकप्रिय मान सकते हैं।

१. नहीं	२. नहीं	३. नहीं	४. हां	५. हां
६. हां	७. नहीं	८. नहीं	९. नहीं	१०. हां
११. नहीं	१२. नहीं	१३. हां	१४. नहीं	१५. नहीं
१६. नहीं	१७. नहीं	१८. हां	१९. नहीं	२०. नहीं
२१. नहीं	२२. नहीं	२३. नहीं	२४. हां	२५. हां

CC-0. In Public Domain. Gurukul

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरत-नाट्यम्

श्री ओ३म् प्रकाश वर्मा एम. ए., ए. काम.

★

भरत-नाट्यम् दक्षिण का, बल्कि भारतवर्ष का अत्यन्त प्राचीन नृत्य है। प्राचीनकाल से ही यह जन-जीवन का विशिष्ट धार्मिक तथा सांस्कृतिक अंग रहा है। इसका प्रदर्शन देवदासियां देव-मन्दिरों में करती थीं। समय की गति बदली और राजे-महाराजे इस में यथेष्ट रुचि लेने लगे। यह रुचि इतनी प्रचण्ड हुई कि उनके धन ने इसे देव-मन्दिरों की सीमा से घसीट कर राज-सभाओं में ला खड़ा किया। और आज का दिन है कि यह जन, जनयुग तथा जनवाद के नाम पर सार्वजनिक हो गया है।

भरत-नाट्यम् नृत्य कला नट्टूवानों तथा देव-दासियों की एक तरह से विरासत है। शताब्दियों से इस कला का अध्यापन नट्टूवान करते आए हैं और इसकी प्रदर्शिका रही हैं देवदासियां। नट्टूवानों का अर्थ है विद्वान्। इन्हीं के बीच सहेजी रह कर यह अति प्राचीन कला आज तक जीवित है। गुरु और शिष्या एक दूसरे से एक अनूठे समझौते के द्वारा बधे रहते आए हैं। इस समझौते के अनुसार गुरु कला की शिक्षा-दीक्षा शिष्याओं को निःशुल्क दिया करते थे, जिस का फल उन्हें शिष्याओं के कला-प्रदर्शन में आगे चल कर मिलता था। जब उनकी शिष्या कला में पूर्णतया प्रवीण होकर किसी मन्दिर अथवा धनी-मानी व्यक्ति के घर प्रदर्शन करके धनोपार्जन करती थी, तब उसमें से गुरु को भी एक निश्चित अंश प्राप्त होता था। यह समझौता एक आदर्श समझौता था। इसका महत्व इतना था कि विद्वान की अनुमति प्राप्त किए बिना कोई देवदासी नृत्य करने की हामी नहीं भरती थी और विद्वान भी शिष्या के छोटे से छोटे बुलावे पर हाजिर रहते थे। ऐसा ही आज भी हो रहा है। इसको रूढ़िवाद की संज्ञा दी जा सकती है; पर अनुदार से अनुदार आलोचक भी आधुनिक काल में ऐसे अनोखे प्राचीन आदर्श की सराहना किये बिना नहीं रह सकता।

भरत-नाट्यम् का अर्थ

एक अति प्राचीन नृत्य होने के कारण इसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरत-नाट्यम् नृत्य भारतवर्ष की अत्यन्त प्राचीन तथा गौरव-पूर्ण कला है। कुछ विद्वानों के मतानुसार इसी एक शैली में भारतीय नृत्य का शुद्ध स्वरूप मिलता है। दक्षिण भारत में इसका बहुत प्रचलन है। वहां के सांस्कृतिक तथा धार्मिक जीवन का यह मानों प्रतीक है। प्रस्तुत लेख में इसके प्राचीन तथा अर्वाचीन रूप पर समीक्षात्मक ढङ्ग से प्रकाश डाला गया है।

इतिहास की टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डियों से गुजरना पड़ा है, जिसमें इसकी धार्मिकता और आध्यात्मिकता की सुगढ़ देन विलीन हो गई। धार्मिकता से गिर कर यह केवल एक वासनोद्दीपक नृत्य भर रह गया जो देवदासियां जन्म भर कुमारी रह कर अपनी पवित्रता को बनाये रखती थीं, वे आज शायद ही वेश्याओं से कुछ बेहतर हों। अधोगति का अन्त यहीं नहीं हुआ। अज्ञानवश लोगों ने भरत-नाट्यम के अर्थ का भी अनर्थ कर डाला। जिसने जैसा चाहा वैसा अर्थ लगाया। पर सब से सीधा अर्थ है—भरतमुनि द्वारा वर्णित नृत्य-कला। 'भरत' शब्द के प्रत्येक अक्षर को पृथक २ लिखने से अर्थ स्पष्ट हो जाता है। भ-र-त से क्रमशः भाव, रस और ताल का बोध होता है। दक्षिण-भारत के कुछ प्रदेशों में इसको 'केलि' भी कहते हैं और 'निलम्बु' भी। तामिल भाषा में भरत-नाट्यम् का प्राचीन शब्द 'कुथू' अथवा 'अट्टम्' प्रयोग होता है, जिसका अर्थ है खेल। केरल-प्रदेश के देव-मन्दिरों में निर्मित नृत्यशालाओं को आज भी 'कूथम्बलय्' नाम से पुकारा जाता है।

ऐतिहासिक विवेचन

भरत-नाट्यम् कला का अगम ज्ञान भारत की प्राचीन पुस्तकों में भरा पड़ा है। सब में थोड़ा २ अन्तर अवश्य है परन्तु मौलिक रूप में वे सब एक सी ही हैं। संस्कृत के मूलग्रन्थों में प्रमुख हैं—स्वयं भरत-मुनि का नाट्य शास्त्र, अभिनय-दर्पण और संगीतरत्न। तामिल भाषा में 'भरत-चूणामणि' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसमें संगीत एवं नृत्य के विविध अंगों पर समुचित रूप से प्रकाश डाला गया है। किंवदंति है कि इस पुस्तक को अगस्त्य मुनि ने तैयार किया था और उन्होंने इसको मदुरा के राजा श्री राजशेखर पाण्डयन् को भेंट किया था। ये पुस्तकें भरत-नाट्यम् नृत्य के नियमों की भरपूर व्याख्या करतीं हैं। इनमें से कुछेक आवश्यक बातों का हम यहां उल्लेख करेंगे।

देवदासी: देवदासियां तीन प्रकार की होती हैं—राजदासी, देवदासी तथा स्वदासी। राजदासी उन नर्तकियों को कहते हैं, जो देव-मन्दिरों के ध्वजा-स्तम्भों के समक्ष नृत्य करती हैं। शिव-मन्दिरों में अपनी कला का प्रदर्शन करने वाली नर्तकियों को देव-दासी कहा जाता है और विशेष उत्सवों तथा अवसरों पर नृत्य करने वाली स्वदासी होती हैं। इन उत्सवों में कुंभाभिषेक प्रमुख है।

बारह प्रकार के ताण्डव नृत्य: भरत-नाट्यम् बारह ताण्डवों में से एक है, जिसमें शृंगार-रसाभिव्यक्ति प्रधान होती है। शृंगार-रस-प्राधान्य के कारण यह केवल स्त्रियों द्वारा ही प्रस्तुत किया जाता है। विभिन्न ताण्डव निम्नांकित हैं—

१. आनन्द ताण्डव, २. संध्या ताण्डव, ३. शृंगार ताण्डव, ४. त्रिपुर ताण्डव, ५. ऊर्ध्व ताण्डव, ६. मुनि ताण्डव, ७. संहार ताण्डव, ८. उग्गिर ताण्डव ९. भूत ताण्डव, १०. प्रलय ताण्डव, ११. भुजंग ताण्डव और १२. सुधा ताण्डव।

यहां यह बात उल्लेखनीय है कि भरत-नाट्यम् का उत्कृष्ट प्रदर्शन सिद्धांतों की केवल जानकारी व पांडित्य

CC-0. In Public Domain. Gur

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर नहीं, वरन् उसके अभ्यास पर निर्भर करता है। इसे सीखने के लिए चतुर नट्टुवानों की शरण लेनी पड़ती है।

प्रसिद्ध नट्टुवान मीनाक्षीसुन्दरम् पिल्ले

वर्त्तमान भरत-नाट्यम-कला के मुख्य शिक्षक तंजोर राजसभा को सुशोभित करने वाले चार भाई चिनिया, पोनिया, शिवनन्द और वादिवेलु थे। वादिवेलु जी तो त्रावणकोर के महाराज स्वाति थिरुनल के समकालीन थे। यह न केवल एक परिमार्जित और सिद्ध गायक के रूप में ही विख्यात थे, बल्कि इन्होंने ही कर्नाटक प्रदेश को वायलिन से परिचित कराया था। इससे प्रभावित होकर महाराज ने एक हाथी-दांत का वायलिन इन्हें भेंट कर अपनी कला-मर्मज्ञता का परिचय दिया था। वह वायलिन आज भी इनके पौत्र द्वारा परम पूज्य पैतृक सम्पत्ति के रूप में सुरक्षित है। इनके पौत्र श्री मीनाक्षी सुन्दरम् पिल्ले आज के प्रसिद्ध विद्वान् समझे जाते हैं और इन्हीं की शिष्याएँ ही आज भरत-नाट्यम की सर्वमान्य प्रदर्शिका हैं, जिनमें से बाल-सरस्वती प्रमुख मानी जाती है।

नृत्य, नर्तकी और साज

भरत नाट्यम नृत्य में ताल को राग से अधिक महत्व दिया जाता है। इस नृत्य का प्रदर्शन 'अलारिप्पु' से आरम्भ होता है, जो कि देवताओं की स्तुति मात्र है। यह शब्द तेलुगू शब्द 'अलारिम्पु' का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ है पुष्पाञ्जलि अर्पित करना। आम तौर से यह अकेली एक नर्तकी द्वारा ही किया जाता है, पर कभी-कभी तीन या चार नर्तकियाँ मिल-जुलकर भी इसे सम्पादित करती हैं। मृदङ्ग तथा एक जोड़ी मंजीरा ही प्रायः इसका साज है।

नृत्यारम्भ में नर्तकी सीधी खड़ी होती है। उसके पदों की समानान्तर स्थिति में अधिक अन्तर नहीं होता और उसके दोनों हाथ सिर के ऊपर सीधे उठे होते हैं। हथेलियां परस्पर वन्दना की आकृति बनाती हैं। वादक मृदङ्ग और मंजीरा बजाते हैं और उनके ध्वनित होने के साथ ही नर्तकी अपने पांव दाहिने और बाएं फेंकती है। फिर वह आगे अग्रसर होती है। 'विद्वान' इसके पीछे खड़ा होता है। वह भी हथेलियों से ताल देते हुए उसके साथ-साथ आगे सरकता है। नर्तकी अपनी गर्दन को गति देकर भाव प्रदर्शित करती है। 'विद्वान' द्वारा ताल का क्रम निरन्तर जारी रहता है। गर्दन की प्रत्येक लोच के साथ उसी भाव से सम्बन्धित हाथ और नेत्र भी भावाभिव्यक्ति में रत हो जाते हैं। इसको 'रेचका' कहते हैं। नर्तकी कभी-कभी अध-बैठी स्थिति में भी नाचती है। यह क्रम घण्टों चलता रहता है।

भरत-नाट्यम् शैली के विभिन्न नृत्य

भरत-नाट्यम शैली के तीन प्रमुख नृत्य हैं—जेठिस्वरम्, शब्दम् और वर्णनम्। जेठिस्वरम् नृत्य में संगीत तथा गति की जटिलता अधिक होती है। जेठि ताल को कहते हैं। 'विद्वान' ताल देता है, वादक मृदङ्ग पर मिश्रित गत बजाते हैं और कुशल नर्तकी उनके अनुसार अपने पग चलाती है। हाथ, नेत्र तथा गर्दन की गति और मुद्राएँ एक सुन्दर नृत्य का सृजन कर देती हैं।

शब्दम् नृत्य में नर्तकी की शिक्षा के अनुसार शृङ्गारिक अथवा धार्मिक भाव की अभिव्यंजना होती है। गीत तेलुगू भाषा में होते हैं। नर्तकी गाती है और साथ-साथ गीत के भाव को शरीर के अवयवों में रूपान्तरित करती जाती है। इसमें अभिनय की गुंजायश काफी है।

परन्तु सबसे क्लिष्ट है वर्णनम्। इसमें नृत्य और अभिनय का सुन्दर सामञ्जस्य होता है। यह प्रायः एक घण्टे तक चलता है। पृष्ठ-भूमि में वादन तथा संगीत होता रहता है। ये शृङ्गार-रस से ओत-प्रोत होता है। नर्तकी अपने पैरों की गति को मृदङ्ग की ध्वनि के साथ-साथ द्रुत-द्रुततर करती जाती है। इस चातुर्य पर दर्शक सहज ही मुग्ध हो जाते हैं। उनकी दृष्टि एकटक नर्तकी की सर्प समान बल खाती, लचकती और थिरकती शारीरिक गतियों पर टिक जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत और गीतकार

भरत-नाट्यम् में गीतों का प्रयोग खूब होता है। इनको पद्म कहते हैं। केरल के प्रसिद्ध कवियों और गीतकारों ने पद्म-भण्डार को समृद्ध करने में एक दूसरे से अधिकाधिक हाथ बँटाया है। सर्वश्री जयदेव, पुरन्दरदास तथा भारती विशेष रूप से जनप्रिय हैं।

नृत्य बनाम अभिनय

भरत-नाट्यम् का कार्यक्रम दो से तीन घण्टे तक चलता है कई संचालक नृत्य को एक घण्टे के अन्दर समाप्त कर शेष समय अभिनय के लिए रखते हैं और कोई-कोई अभिनय से अधिक समय नृत्य-प्रदर्शन को देते हैं। वास्तव में पहली प्रणाली विधिसंगत नहीं है, क्योंकि भरत-नाट्यम् मुख्यतया नृत्य है, 'नृत्त' नहीं। अतएव नृत्य पर दो घण्टे तथा अभिनय पर एक घण्टा व्यय करना कहीं अधिक श्रेयस्कर है। अभिनय को यद्यपि नाट्य-कला की श्रेणी में रखा जाता है, पर है यह मौलिक रूप से नृत्य-कला ही। यों भी अभिनय की आवश्यकता अधिकतर उस समय समझी जानी चाहिए जब कि नर्तकी स्थूलकाय हो और शारीरिक स्थूलता के कारण वह नृत्य करते-करते शीघ्र ही थक जाती हो। साथ ही इसका भी ध्यान रहे कि नर्तकी अभिनय में विशेषरूप से पारङ्गत हो, अन्यथा कला का रूप विकृत हो जाता है और दर्शक ऊब जाते हैं। यह बात सबसे अधिक विद्वान मीनाक्षी जी समझते हैं। उनकी देख रेख में हुए कार्यक्रम में नृत्य-प्रदर्शन पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

नर्तकी की अवस्था एवं व्यक्तित्व का प्रभाव

किसी भी नर्तकी की सफलता के लिए उसके अंग प्रत्यंगों में शक्ति, स्फूर्ति, लोच और सौष्ठव का होना आवश्यक है। इनके बिना शरीर का संचालन ढंग से नहीं हो सकता। सफल नृत्य के लिए स्वस्थ यौवन भी आवश्यक है। नर्तकी दर्शकों के मन में अपने जैसे भावों का सृजन तभी कर सकती है, जब कि वह उनके ध्यान को पूर्णरूप से अपने शरीर में केन्द्रित कर ले।

आजकल हम बहुधा छोटी-छोटी बच्चियों को मंचों पर नाचता पाते हैं। उनका अस्तित्व दर्शकों के बीच खो-सा जाता है। वह गुड़िया-सी दीखती हैं। उनकी आयु इतनी कोमल होती है कि उनकी मुखाकृति में भाव जैसी चीज आ ही नहीं पाती।

इसके अतिरिक्त इधर जो आधुनिक वस्त्रों और आभूषणों का नर्तकियों द्वारा प्रयोग होने लगा है, वह भी अशोभनीय है।

वस्त्र तथा आभूषणों की तरह 'आरकेस्ट्रा' और पार्श्व-संगीत में भी आधुनिकता का पुट दिया जाता है। यह वस्तुतः बहुत बेतुका-सा लगता है। संचालकों को आधुनिकता की इस तेज हवा से बचना चाहिये। भरत-नाट्यम् जैसी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा तभी हो सकेगी।

भरत-नाट्यम् पर इधर और भी एक आक्षेप किया जाने लगा है और वह यह कि इस नृत्य में ऐन्द्रिक लालसाओं एवं लौकिक वासनाओं का नंगा नाच होता है। यह ठीक है कि यह नृत्य शृंगार-रस-प्रधान है, परन्तु यदि जरा ध्यान से देखा जाय तो जहां एक ओर इसमें कामुकता और वासना का भान होता है, वहां दूसरी ओर इसमें उदात्त भावानुभव और आध्यात्मिकता भी निहित है। सच तो यह है कि कामकुता अथवा आध्यात्मिकता नर्तकी की प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा और उसके घरेलू वातावरण पर निर्भर है। यदि नर्तकी की प्रारम्भिक शिक्षा किसी निम्न कोटि के लम्पट नट्टुवान की देख-रेख में हुई है तो उसकी लम्पटता की छाप उसकी शिष्या के नृत्य में जरूर मिलेगी, परन्तु इसके विपरीत यदि नर्तकी की शिक्षा का भार किसी निष्ठावान् एवं सच्चरित्र नट्टुवान ने संभाला है, तब नर्तकी के प्रत्येक हाव-भाव में, उसकी प्रत्येक लचक और लाक्षणिक मुद्रा में आध्यात्मिकता थिरकेगी। इस विचार को हृदयंगम कर हमारे पूर्वजों ने एक विशेष प्रकार के सात्विक वातावरण में पलने वाली कन्याओं और स्त्रियों को ही इस नृत्य के लिए उपयुक्त समझा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५०००) मुफ्त इनाम !

अमृतसर में सोना २॥) तोला !

जो कोई नीचे लिखी बातों को झूठा साबित करेगा उसको पांच हजार रुपया मुफ्त दिया जावेगा।

जिस घर में यह सोना गया वहां से दोबारा तिबारा फरमाइश आई। जनाब बा० ब्रह्मानन्द गत मैनेजर तेज नया बाजार, देहली से लिखते हैं कि आपका (लन्दन) न्यू गोल्ड का पार्सल मिला धन्यवाद ! यह देखकर खुशी हुई कि न्यू गोल्ड और असली सोने में कोई फर्क नही। आपने इस नई चीज को तैयार कर के दुनियां की एक भारी जरूरत को पूरा किया है। ६ तोला सोना वापसी डाक से और भेज दो बाद में और भी आर्डर दिया जायगा।

यह सोना कसौटी पर असली सोने का रंग देता है असली सोने की तरह कूटा और पिघलाया जा सकता है। हर किस्म के जेवरात बनाये जा सकते हैं जिन को होशियार से होशियार सराफ भी मुश्किल से पहिचान सकता है। मशहूरी करने के लिए मूल्य फी तोला केवल २॥) रु० ३ तोला का मूल्य ७) रु०, ६ तोला १३) रु. १५ तोला ३०) रु०, ४० तोला ७०) रु०।

जरूरी नोट— हर तीन तोला के खरीदरार को २ बाम्बे फैशन अंगूठी, मुफ्त दी जायगी। ६ तोला के खरीदार को २ बाम्बे फैशन अंगूठी, एक जोड़ी कांटे और एक जोड़ी चूड़ी मुफ्त दी जायगी, १५ तोले के खरीदार को एक लाकट मय चेन २ जोड़ी चूड़ी और ३ बाम्बे फैशन अंगूठी मुफ्त और डाक खर्च माफ। माल पसन्द न होने पर कीमत वापस कर दी जाती है। शीघ्र मंगवा लें वरना यह समय हाथ न आएगा।

पता:— प्रधान कार्यालय पी० बी० ७५ (M.R.D.) अमृतसर

वीरांगना

प्यारी बहिनों की भलाई के लिये

जो बहिनें सन्तान की अधिकता अथवा पति की स्वार्थपरता अथवा किसी अन्य कारणवश युवावस्था में ही बुढ़ापा तथा सौंदर्य-विहीनता का अनुभव करने लगी हों। जो प्रदर (लिकोरिया) के रोग में ग्रस्त हों और जीवन भार रूप अनुभव कर रही हों अथवा जिनका मासिक-धर्म समय पर न आता हो या कष्ट से आता हो। कमर में दर्द, आंखों के आगे अँधेरा व संतान न होती हो, गर्भपात हो जाता हो तो ऐसी दशा में 'वीरांगना' सेवन करें। वीरांगना आपके स्वास्थ्य और सौन्दर्य की रक्षा करेगी व आपको सचमुच वीरांगना बना देगी। हजारों बहिनें इसका सेवन कर अपनी बीती यौवनावस्था को पुनः प्राप्त कर चुकी हैं। दाम ११।) मात्र।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी, हरिद्वार।

मुफ्त

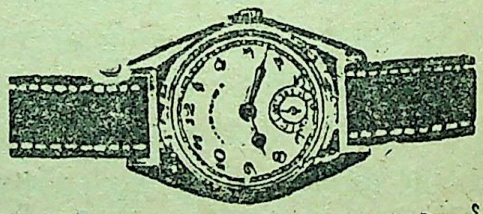

हमारे बाल काला तेल नं० ५५५ (रजिस्टर्ड) के सेवन से हर प्रकार के बाल काले हो जाते हैं और सर्वदा काले ही पैदा होते रहते हैं बालों के गिरने को रोक कर उन्हें चमकीला तथा घुंघराला बनाता है। मूल्य प्रति शीशी २।) तीन शीशी (पूरा कोर्स) ५॥।≡) इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ ? फैन्सी तथा सुन्दर ग्यूड रिस्ट वाच और १ अंगूठी न्यू गोल्ड और ३ शीशी के खरीदार को ६ ग्यूड रिस्ट वाच तथा ६ अंगूठी बिल्कुल मुफत भेजी जाती हैं। नापसन्द होने पर दाम वापस।

लण्डन कमर्शीयल कम्पनी

(M.R.D.) पी० बी० ३ अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and

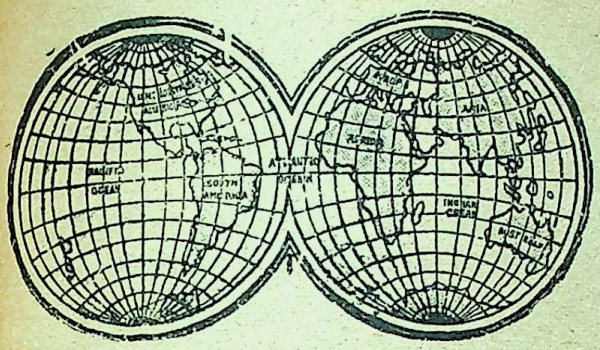

भूचाल

श्री विष्णुमित्र

अखबारों में दूसरे तीसरे-दिन भूचाल के धक्कों के आने का समाचार पढ़ने को मिल जाता है। जब मैं पढ़ता हूं, तो कोइटे के भूचाल का दृश्य मेरी आँखों के सामने आ खड़ा होता है और मेरा हृदय दहल जाता है, क्योंकि वह दृश्य मैंने अपनी आँखों से देखा था। उन दिनों मैं वहीं था आखिर यह भूचाल क्या बला है, जो एक-दो मिनटों के अन्दर हजारों आदमियों का और लाखों की सम्पति का नाश कर देता है?

भूचाल क्यों आता है, इस विषय में भिन्न-भिन्न मत-धर्मों के भिन्न-भिन्न विचार रहे हैं, जैसे—

चीनी : भारतीय लोग अक्सर मेंढकी को जुकाम होने का मखौल उड़ाया करते हैं। लेकिन अगर चीनी भाइयों के अनुसार मेंढकी को वास्तव में जुकाम हो जाय, तो सारी पृथ्वी के नष्ट होने में देर न लगे; क्योंकि चीनियों के विश्वास के अनुसार पृथ्वी एक मेंढकी के सिर पर स्थित है। जब वह सिर खुजलाती है, तब भूचाल आता है।

मुसलमान : मुसलमानों में यह विश्वास प्रचलित है कि पृथ्वी गाय के सिर पर है। जब वह सींग हिलाती है, तब भूचाल आता है।

हिन्दू : हिन्दू-शास्त्रों के अनुसार शेषनाग के फन पर पृथ्वी स्थित है। जब शेषनाग का एक फन थक जाता है, तब वह पृथ्वी को दूसरे फन पर रखता है। इस परिवर्त्तन में जो धक्का लगता है, वह भूचाल है।

जापानी : जापानियों का विश्वास है कि उनका देश मछली की पीठ पर टिका है। मछली जब कभी कुपित हो जाती है, तब वह अपनी दुम हिलाती है और भूचाल आता है।

भूचाल का वास्तविक कारण

"तस्माद्वा एतस्मादात्मनः आकाशः संभूतः। आकाशाद् वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी।" इस सृष्टि-क्रमानुसार पृथ्वी की उत्पत्ति सब से पीछे है। ज्यों-ज्यों वह बनती जाती है, त्यों-त्यों वह वनस्पति तथा मनुष्य के रहने के लिए तय्यार होती जाती। पृथ्वी की बनावट धीरे-धीरे होती है; वह इस प्रकार कि जैसे पात्र में रखे हुए गर्म घी पर ज्यों-ज्यों सर्दी असर करती है, त्यों-त्यों घी की पपड़ी ऊपर जमती जाती है। मगर नीचे घी पिघला होता है। ठीक वैसे ही गर्म लोहे की शक्ल का लावा ज्यों-ज्यो ठण्डा होता जाता है, पृथ्वी बनती जाती है। कभी दबाव से वह बना हुआ पृथ्वी का भाग उस लावे में गिर जाता है अथवा इधर उधर हो जाता है, तब पृथ्वी में कम्पन या भूचाल आ जाता है। कई वैज्ञानिकों का कहना है कि समुद्र की लहरों के दबाव से, अथवा जोर की आंधियों के आने से या सर्दी या गर्मी की अधिकता से पृथ्वी में स्पन्दन-क्रिया पैदा हो जाती है। कोइटे के भूचाल के समय मई मास होने पर भी उन दिनों इतनी सर्दी हो गई थी कि रजाई ओढ़ कर अन्दर सोना पड़ा था।

भूचाल दो प्रकार के कहे जा सकते हैं। एक तो ज्वालामुखी सम्बन्धी अर्थात् जब ज्वालामुखी का स्फोट होता है। दूसरा भूचाल पृथ्वी की निर्माण-क्रिया के फलस्वरूप अर्थात् भीतरी स्तर के स्थानच्युत होने से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collecti

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे पहिले भूचाल कहां आया

प्राप्त रिकार्डों के अनुसार सब से पहले १७५५ में पुर्तगाल के लिस्बन नगर में और १७८८ में इटली के दक्षिण में कैले जिले में भूचाल आया तब से भूचाल वेत्ताओं का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। तब फनहाक नामक वैज्ञानिक ने १८२१ से १८३२ तक और एलेक्सिस वेरी नामक फ्रेंच विद्वान ने १८४३ से १८७१ तक की सूची तय्यार की।

उपर्युक्त दोनों वैज्ञानिकों का कथन है कि प्रायः भूचाल अमावस्या और पूर्णिमा को आते देखे गये हैं। आपको स्मरण होगा कि १५ जनवरी १९३४ का बिहार का भूचाल और कोइटा का भूचाल दोनों अमावस्या को ही आये थे।

भूचाल अधिक कहां आते हैं

वैज्ञानिकों का सिद्धांत है कि पृथ्वी का कोई भी ऐसा भाग नहीं है, जो भूचालों से सुरक्षित हो। पृथ्वी पर दो भूचाल रेखायें हैं, जिनके भीतर भूचाल अधिक जोर के आते हैं। एक रेखा न्यूजीलैंड से लेकर उत्तर की ओर चल कर चीन पहुँचती है। वहां से जापान होती हुई अमेरिका के अलास्का प्रान्त में प्रवेश करती है। दूसरी पूर्वीय द्वीपसमूह से लेकर बंगाल की खाड़ी में आती है। वहां से बर्मा, आसाम, तिब्बत, हिमालय, तुर्किस्तान, ईरान, टर्की, बालकन प्रदेश, इटली, स्पेन, और पुतगाल होती हुई अटलांटिक समुद्र में पहुँचती है। अटलांटिक को पार कर पहिली मेखला से मैक्सिको में जा मिलती है। बिहार हिमालय के पादतल में स्थित है। कोइटा भी पहाड़ के पादतल में स्थित है। अतः भूचाल का आना कोई आश्चर्य की बात नहीं। वैज्ञानिकों का मत है कि जहां समुद्र बहुत गहरा हो, वहां भूचाल अधिक आते हैं।

भूचाल के फलस्वरूप परिवर्त्तन

कभी कभी भूचाल से बड़ी बड़ी दरारें पड़ जाती हैं। सन् १८९७ के भूचाल से आसाम में जो दरार पड़ी थी, वह १२ मील लम्बी और ३५ फीट गहरी थी। सन् १८१९ के सिन्ध के भूचाल में ५० मली लम्बी दरार हुई थी। उसे वहां के लोग अब 'अल्ला का बान्ध' कहते हैं। कभी यह दरारें फटकर बन्द भी हो जाती हैं। ऐसा बिहार के भूचाल में देखने में आया है। कभी कभी जल के पुराने सोते बन्द हो जाते हैं और कभी नये पैदा भी हो जाते हैं। इसके फलस्वरूप बिहार में सैकड़ों कूप बन्द हो गये थे। कोइटे का भूचाल धरातल के ऊपर के हिस्से में था। वह तो ऐसा था जैसे कोई मनुष्य जमीन में गड़े खम्भे को जोर जोर से हिलाता हो।

भूचाल की पूर्व-सूचना

भूचाल के आने से पूर्व तोपों के गर्जन जैसी आवाज होती है। पहिले दो-तीन साधारण धक्के आते हैं। प्रायः लोग इस सूचना की परवाह नहीं करते और ईश्वर को बुरा भला कहते हैं।

ईश्वरीय नियमानुसार पांचों तत्व दुनिया को लाभ पहुँचा रहे हैं। मनुष्य अपनी भूल से उन तत्वों की शक्ति को न समझ कर कष्ट उठाता है। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल भोगने में परतन्त्र। वह कभी ऐसे कर्म कर बैठता है, जिससे उन तत्वों द्वारा उसे हानि उठानी पड़ती है। तब वह दुःखी हो कर अपना दोष ईश्वर पर मढ़ देता है।

भूचाल भयंकर क्यों समझा जाता है

बिहार के भूचाल में लगभग २०-२५ हजार आदमी और कोइटे के भूचाल में ३०-३५ हजार आदमी मरे बताये जाते हैं। यह संख्या हैजा-प्लेग-इन्फ्लूएंजा के मुकाबले में कुछ नहीं। फिर यह प्रश्न उठता है कि भूचाल ही क्यों भयंकर मालूम होता है इसका कारण यह है कि भूचाल दो तीन मिनट में ही हजारों आदमियों को हताहत कर देता है और लाखों की सम्पत्ति नष्ट कर देता है। वह लोगों को अपने बचाव का कुछ अवसर नहीं देता। साधारण और विशेष भूचाल सदा आते रहते हैं। खेद है कि हमने इन से कभी कोई शिक्षा नहीं ली। वही दुमंजले-तिमंजले मकान बनते जाते हैं। कोइटे के भूचाल के बाद लोग कहते हुए सुने गये कि हमने अपने आप ही अपनी कबरें खोदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and

थीं, आप ही उनमें दफन हुये। जापान ने शिक्षा ली। उसने अपने मकानों का ढांचा बदल दिया। लकड़ी के मकान बनाने लगा। कोइटा-निवासियों ने शिक्षा ली। मकानों की बनावट बदल दी। अब वहां कैसा ही भूचाल आये, हानि की कोई सम्भावना नहीं। जिन लोगों ने भूचाल के बाद कोइटे को देखा है, वे जानते हैं कि वहां या तो मकान लकड़ी के बने हैं या दीवारों में लोहे के सरिया डाल कर एक एक ईंट की सीमेंट की दीवारें बनाई गई हैं। या डीन की ही दीवारें और डीन की ही छतें डाली गई हैं।

गृह-निर्माण के सम्बन्ध में वेदाज्ञा

अथर्व वेद में एक मन्त्र आता है, जिसका अर्थ है—

जब कोई किसी प्रकार का घर बनावे तो वह इस प्रकार की उत्तम उपमायुक्त बनावे, जिसको देख कर विद्वान् लोग सराहना करें। वह प्रतिमिता हो अर्थात् द्वार, कोण और कक्ष आदि एक दूसरे के सन्मुख हों। इसके अनन्तर वह शाला चारों ओर के परिमाण से समचौरस हो। उस शाला अर्थात् घर के द्वार चारों ओर की वायु को स्वीकार करने वाले हों। उसके बन्धन और चिनाई दृढ़ हों।'

एक दूसरे मन्त्र में कहा गया है—

'हे शिल्पी लोगो, हमारा गृह ऐसा बनाओ कि जो बन्धन को कभी न छोड़े, जिसमें बड़ा भार छोड़ा हो। उस शाला (गृह) को जहाँ जैसी कामना हो वहां वैसी हम लोग, स्त्री के समान, स्वीकार करते हैं, वैसे तुम भी ग्रहण करो।

बस हमें वेद की आज्ञानुसार ऐसा मकान बनाना चाहिये। जिसके बन्धन और चिनाई दृढ़ हों, जिसका बड़ा भार भी छोड़ा हो, अन्यथा भूचाल से हम निर्भय नहीं हो सकते।

गुरुकुल पत्रिका से

★

५००) नकद इनाम

प्यार का तावीज

इस तावीज को पास रखने से आप जिससे प्रेम करते हैं चाहे वह कितना कठोर क्यों न हो घण्टे के अन्दर आप से मिलने के लिए बेचैन हो जाएगा।

हर काम गारन्टी से किया जाता है। अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है। प्रति तावीज २), तीन तावीज ५) डाक खर्च ।=)।

आनन्द स्वामी पी. वी. ६१,

(M.R.D) अमृतसर।

सन्तान निरोधक औषधि

यदि औरतों की बीमारी या कमजोरी या किसी ऐसी ही वजह से बच्चे पैदा करना नहीं चाहते हों, तो यह 'वन्ध्याकारक दवा' मंगा कर केवल ५ दिन सेवन करावें। इससे सन्तान निरोध हो जायगा। दाम ४) डाक खर्च ॥)। इस दवा से हजारों औरतें फायदा उठा चुकी हैं। यह दवा औरतों को कोई नुकसान नहीं करती।

रुका हुआ मासिक धर्म

हर प्रकार के बन्द मासिक को फौरन खोल कर साफ करने की दवा ७॥) डा० ॥)

खबरदार! गर्भवती स्त्री इसको इस्तेमाल न करे

पता—

चपलादेवी दवाखाना, चपला भवन,

नं० २५ मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७५००) रु० नकद इनाम

आप २४ घण्टों में फिर युवक बन सकते हैं

औटोजम (बिटामिन टानक) के खाने से प्रत्येक पुरुष व स्त्री अपनी आयु से १५-२० वर्ष कम आयु के दिखाई देते हैं। यह निर्बल स्वास्थ्य, खून की खराबी, दिमागी तथा शारीरिकश्रम में लाभदायक है। इसके खाने से भूख खूब लगती है। एक सप्ताह में पांच से दस पौंड तक तोल बढ़ जाता है। मुंह पर लाली आ जाती है। चेहरे का रंग गोरा हो जाता है। तथा चेहरे पर यौवनावस्था की भांति की चमक आ जाती है। जैसे कि आपका चेहरा यौवन अवस्था में था। इसके प्रयोग से नजर तेज होती है। यह गालों को आकर्षित बना देता है, होठों पर लाली आ जाती है, सफेद पके हुए बालों को सदा के लिए काला कर देता है, दांतों को असली की भांति दृढ़ कर देता है। स्विट्जरलैण्ड के एक शत वर्षीय वृद्ध पुरुष ने इसका प्रयोग किया। जिससे वह तीस वर्ष के युवक की भांति हो गया। यही नहीं, पर उसने एक युवती से व्याह भी कर लिया।

औटोजम के बरतने से ८० तथा ९० की आयु में भी हालीवुड के एक्टर तथा एक्टरसें हृष्ट, युवक तथा सुन्दर प्रतीत होने लगते हैं। और परदा पर अति फुर्ती से काम करने लगती हैं। स्त्रियां यदि इनका प्रयोग करें तो अपनी आयु के पिछले समय तक मुख की सुन्दरता तथा चमक को बनाये रख सकती हैं पुरुष इसके प्रयोग से समय के पूर्व वृद्ध नहीं हो पाते। बाल काले तथा आकर्षित रहते हैं। मुख की आकर्षिकता सदा बनी रहती है। स्वास्थ्य आयु भर खराब नहीं होता

Autogem औटोजम Autogem

को एक शीशे के बर्तन में बहुत काल तक रखा गया। तब वह शीशे का बर्तन इतना पक्का हो गया कि कई चोटें मारने पर भी न टूट सका। इसको इंग्लैण्ड में सहस्त्रों पुरुषों ने देखकर प्रमाणित किया औटोजम का तुरन्त प्रयोग आरम्भ कर दें। इसका फल अपना उत्तर आप होगा। प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व अपना तोल करलें तथा अपना मुख शीशे में देखलें। एक सप्ताह पश्चात् फिर शीशा देख फिर नोट करें कि आप क्या अनुभव करते है। आप इसके जादू की भांति प्रभाव की प्रशंसा करेंगे। औटोजम को प्रत्येक व्यक्ति तक ले जाने के लिये इसका मूल्य केवल अल्प समय के लिए ५) रुप रखा गया है। कुछ समय के उपरान्त इसका असली मूल्य ३०) रुपया कर दिया जायगा। आज ही इसे मंगवाने के लिये आर्डर भेज दें। क्योंकि इसकी सम्भावना है कि आपके देर करने से माल समाप्त हो जाए और आपको पछताना पड़े।

मिलने का पता—

दी मैकसो लैबोरेटराज लिमिटेड,

पोस्ट नं० ४५ (M. M. D.) देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोग्राम ठीक कैसे सुना जाए—

श्री कलाधर

★

रेडियो-सेट रखने वाले प्रायः यह शिकायत करते हैं कि अमुक स्टेशन का कार्यक्रम अच्छी तरह सुनाई नहीं देता। कई सेटों पर तो स्थानीय रेडियो-स्टेशन का कार्यक्रम भी ठीक तरह सुनाई नहीं देता। इसके कई कारण हो सकते हैं, जैसे—घटिया किस्म का रेडियो-सेट, रेडियो-सेट की मशीनरी में किसी प्रकार की गड़बड़, दोषपूर्ण 'एरियल' अथवा बिजली सम्बन्धी कोई गड़बड़।

रेडियो-सेट

यह एक सर्वमान्य बात है कि जितना अच्छा रेडियो-सेट होगा, उतना ही अच्छा उस पर सुनाई देगा। अतः जहां तक हो सके, बढ़िया और प्रामाणिक मार्के का सेट ही खरीदना चाहिए। कई सेट केवल स्थानीय स्टेशन का कार्यक्रम सुनने के लिये ही होते हैं, और उन पर दूर के स्टेशनों का कार्यक्रम नहीं आ सकता। कई सेट केवल 'मीडियम वेव' के होते हैं और उनपर स्थानीय स्टेशन (जैसे दिल्ली) से 'शार्ट वेव' पर प्रसारित होने वाला कार्यक्रम नहीं सुना जा सकता। कई बार कार्यक्रम इस लिए भी अच्छी तरह सुनाई नहीं देता कि रेडियो-सेट की स्टेशन-सूचक सुई ठीक मीटर पर नहीं होती।

मशीनरी

कभी कभी रेडियो-सेट की मशीनरी में गड़बड़ हो जाने से कार्यक्रम ठीक नहीं सुनाई देता। सभी मशीनरियों की भांति रेडियो-सेट की मशीनरी भी निरन्तर काम करने से खराब हो जाती है; इसलिए समय-समय पर इस की जांच-पड़ताल और सफाई होती रहनी चाहिए। कभी-कभी इसके 'वाल्व' घिस जाते हैं और उन्हें बदलने से आवाज ठीक हो जाती है। कभी-कभी 'सर्किट' में कोई दोष पैदा हो जाता है; जिसके कारण दूरस्थ स्टेशन

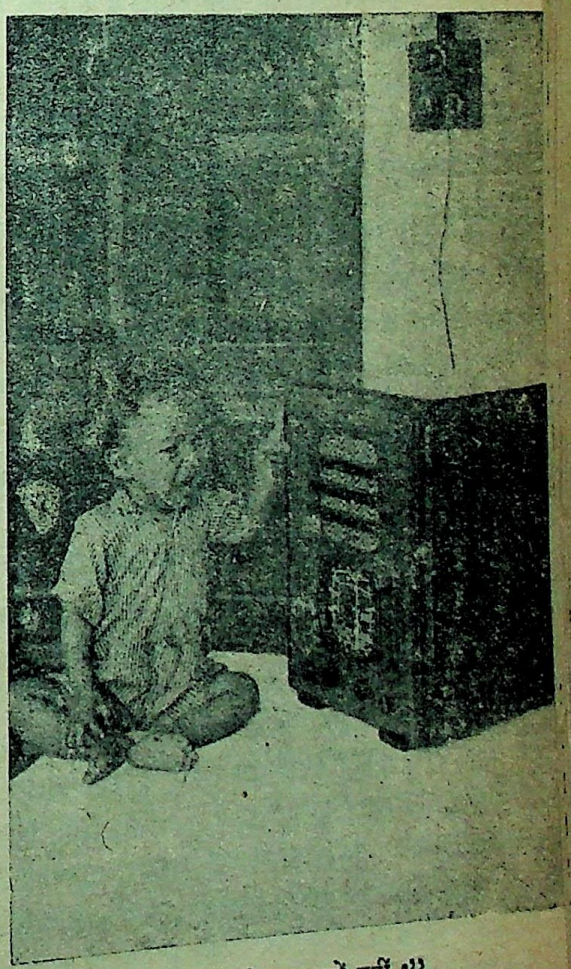

"ऊँ ऊँ, यह बोलता क्यों नहीं!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूठी रानी को मना लें

केवल ८ रु० में क्लियरिंग सेल

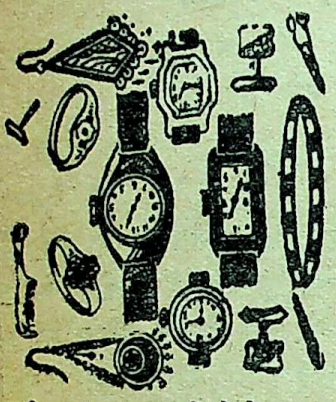

तीन नग ग्यूड रिस्टवाच। दो नग डैमी रिस्टवाच मुफ्त इस उपहार के अलावा रेडियम न्यू गोल्ड के बने हुए अति सुन्दर तथा नए फैशन के आभूषणों का पूरा बक्स जिसमें आठ अदद डायमण्ड कट चूड़ियां दो अदद अंगूठी बम्बई फैशन मीने वाली एक जोड़ी कान के कांटे यानी बुन्दे और एक अदद औरतों के लिए गले का नैकलेस चैन के साथ। यह सब आभूषण नकली जवाहर जड़ी हैं इन सब का पारसल केवल आठ रुपये में कम्पनी ने अपने वार्षिक उपलक्ष में देने का फैसला किया है। रेडियम न्यू गोल्ड के आभूषणों का रंग कभी खराब नहीं होता हर प्रकार की तसल्ली की गारण्टी है असंख्य आदमियों ने इन आभूषणों की प्रशंसा की है। माल नापसन्द होने पर मूल्य वापिस करने का नियम है, डाक व्यय १।) रु० अलग लगता है शीघ्र करें अन्यथा यह सुनहरी अवसर हाथ से निकल जावेगा और ना जाने कब ऐसा अवसर मिले।

पता— मैनेजर ई० टी० एण्ड कं० (M.M.) बैग नं० ५२ ए देहली।

मुफ्त बिल्कुल मुफ्त अब भी अगर आप लाभ न उठावें तो आपका भाग्य

(१) अगर आप बेकारी के सताये हुए और मुसीबतों में कैद हैं, रोजगार के लिए हाथ पांव मारते हैं, मगर पैसा हाथ नहीं आता। (२) अगर आपका कोई काम बन कर बिगड़ जाता है। (३) अगर आप किसी खूबसूरत युवती से रिश्ता जोड़ना चाहते है परन्तु उससे शादी नहीं होती। (४) अगर आपको औलाद की चिन्ता है। नन्हें से बच्चे को गोद में प्यार करना चाहते हैं। मगर नर औलाद पैदा ही नहीं होती या पैदा होकर मर जाती है। (५) अगर आप किसी दुश्मन के हाथों परेशान हैं और चाहते हैं कि वह आपके आधीन हो जाय। (६) अगर आप किसी मुकद्दमे में फंस गये हैं, रुपया पानी की तरह बह रहा है मगर इज्जत किसी तरह बचती नजर न आती हो। (७) अगर आपकी औरत के साथ अनबन होगई हो और प्यार व मुहब्बत का नाम नहीं रहा। (८) अगर आपको व्यापार में नुक्सान हो रहा है। (९) अगर आपको परीक्षा में पास होने की चिन्ता है और डर है कि कहीं फेल न होजाय। (१०) अगर आप किसी पेचदार भारी बीमारी में फंस गये हैं, हकीमों डाक्टरों की दवा खाते खाते तंग आगये हैं, पर बीमारी वैसी की वैसी है। (११) अगर आप किसी ऊँची नौकरी के लिये सर तोड़ कोशिश कर रहे हों। (१२) अगर आप के दिल में कोई ऐसी इच्छा है जो हजार बार कोशिश करने पर भी पूरी नहीं होती तो घबराने और निराश होने की जरूरत नहीं। आज ही हमसे छः आने के टिकट भेजकर महाकाली जंत्र मंगा लें। इसके प्रभाव से आपकी सब मनोकामनाएं पूरी होकर आपकी नामुरादी कामयाबी में बदल जावेगी। बगैर टिकट पहले आए किसी पत्र का उत्तर नहीं दिया जावेगा। साथ ही आपके आने वाले बारा महीने का वर्ष फल भी बना कर भेजा जावेगा जो सज्जन छः आने की वी. पी. मंगाने को लिखेंगे उनके पत्र का भी कोई जबाव नहीं दिया जावेगा। ६ आने डाक टिकट द्वारा पहले आने आवश्यक हैं।

श्री काली महाशक्ती आश्रम म. म. नं० १९९ देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो क्या, स्थानीय स्टेशन भी ठीक तरह सुनाई नहीं देता। 'सर्कट' का यह दोष रेडियो-मकैनिक से तुरन्त ठीक करवा लेना चाहिए।

'एरियल' कभी कभी रेडियो-सेट ठीक होते हुए भी ठीक आवाज नहीं आती। इस का कारण प्रायः 'एरियल' होता है। अच्छे 'एरियल' से सम्बद्ध हुए बिना कोई भी रेडियो-सेट ठीक तरह से काम नहीं देता। जहां तक हो सके 'एरियल' मकान के बाहर लगाना चाहिए। (रेडियो-स्टेशन के निकटवर्त्ती लोग मकान के अन्दर 'एरियल' लगा कर भी काम चला सकते हैं।) 'एरियल' के सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण बात इसकी ऊंचाई है। यह जितना ऊंचा लगा होगा, उतनी ही अच्छी और साफ आवाज रेडियो सेट से आयेगी। ऊंचाई की अपेक्षा इस की लम्बाई कम महत्व रखती है। सब से अधिक संतोषजनक वह 'एरियल होता है, जिस में केवल ऊँची और खड़े रुख की छड़ ही हो और अन्य कोई भाग न हो। 'एरियल' की एक तार धरती में भी दबी रहनी चाहिए। बैटरी से चलने वाले सेटों के लिए तो यह अनिवार्य है। यह तार पानी के नल से, धात की नाली से अथवा गीली धरती में दबी किसी प्लेट से बांधी जा सकती है।

आजकल कई ऐसे सेट भी मिलते हैं, जिनका 'एरियल' उनके अन्दर लगा होता है। यह प्रायः पोर्टेबल सेट होते हैं, अर्थात् डिब्बानुमा ऐसे छोटे सेट जो कि एक जगह से दूसरी जगह उठा कर ले जाते समय भी बजते रहते हैं। ऐसे सेटों के 'एरियल' दिशा-परक होते हैं — सेट को दिशा विशेष में रखने से ही आवाज अच्छी आती है। सेट को धीरे-धीरे घुमाने से जब आवाज ठीक आने लगे, तो समझ लीजिये कि यही दिशा 'एरियल' के अनुकूल है। पोर्टेबल-सेट में प्रायः यह दोष होता है कि कभी-कभी उसमें दो-दो प्रोग्राम सुनाई देने लगते हैं। सेट को घुमाकर ठीक दिशा में रखने से यह गड़बड़ दूर की जा सकती है।

बिजली की गड़बड़ कभी कभी रेडियो-सेट जब बज रहा होता है, तो उस में से गरड़ गरड़ अथवा घूं घूं की आवाज आने लगती है। यह आवाज तब आती है, जब पास ही कोई पङ्खा चल रहा हो, 'वेकम-क्लीनर' लगा हो, कोई ट्राम-लाइन हो या पास से कोई कार या बस गुजर रही हो। इस गड़बड़ को दबाने के लिए बिजली-कम्पनी से सहायता ली जा सकती है। ऊंचा और खड़े रुख का 'एरियल' लगाने से भी यह गड़बड़ दूर हो जाती है।

★

गहरी निद्रा का आनन्द

विज्ञान का आश्चर्यजनक आविष्कार वेस्टेन किसी सोते या जागते हुए को सुधां दीजिये। वह एक घंटे के लिये गहरी नींद में सो जायगा। और हिलाने से भी न जागेगा। मूल्य केवल २) डाकखर्च ।।।-) अगर आप घण्टे से पूर्व जगाना चाहते हैं तो रैकशन सुधांइये। मूल्य केवल २) रु०। कम निकदार या नमूना मुफ्त नहीं मिलसकता। गारण्टी की जाती है कि वेस्टेन या रैकशन किसी किसमें की हानि नहीं पहुंचाती आज ही आर्ड दें और अपना पता पूरा और साफ लिखें।

मैक्सो लिबार्टीज लिमिटेड [एम] नं० ४५, देहली।

कसीदा मशीन

कपड़े पर हर प्रकार के सुन्दर बेल-बूटे, फूल-पत्ती, सीम-मीनरी आदि काढ़ने की ४ मुद्रायों वाली सुन्दर और चाँदी की तरह चमकती हुई मजबूत मशीन प्रयोग विधि सहित मूल्य ३) रु० पोस्टेज ।।।-)

कशीदाकारी की डिजाइन की पुस्तक मूल्य २), पोस्टेज ।।)

एस. के. सक्सेना, १ रंगमहल, अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आपकी दासी....!'

(पृष्ठ २४ का शेष)

किया था, परन्तु आज इन आंखों ने देखा कि वह तुम्हारे दरवाजे से बाहर निकली—वही मिसेज प्रताप। हां, आज मेरी इन आंखों ने देखा कि वह तुम्हारे दरवाजे से निकली और मोटर में बैठ कर हवा हो गई।

जगदीश—(झुंझला कर) पागल मत बनो, गोपाल! कौन मिसेज प्रताप? मैं किसी ऐसी स्त्री को नहीं जानता। यहां कोई नहीं आया। सुना तुमने, यहां कोई नहीं आया। तुम झूठ बक रहे हो। और हां, अगर आज के बाद फिर कभी तुम किसी ऐसी स्त्री का नाम जबान पर लाये, तो मैं तुम्हारा सिर फोड़ दूंगा।

गोपाल—(आश्चर्य से) अरे, आज तुम्हें हुआ क्या है?

इन्द्रनाथ— चलो जाने दो गोपाल, आज इसकी तबियत ठीक नहीं है। आओ, मैं तुम्हें अपना नया चित्र दिखाऊँ!

(इन्द्रनाथ गोपाल को दूसरे कमरे में ले जाता है और जगदीश वहीं उद्विग्न-सा बैठा रहता है।)

पर्दा गिरता है

★

फोटो खींचने का अपूर्व साधन

बॉक्स कैमरा

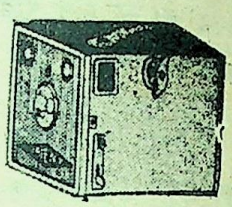

सुन्दर, मजबूत एवं विश्वसनीय। इस केमरे से आप चाहे जिस दिलपसंद चीज का अत्यन्त ही मनोहर फोटो नं० १२० के कट् फिल्म पर २॥"×३॥" इंच साइज का खींच सकते हैं। फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त। मूल्य ८॥) पोस्टेज पेकिंग १॥)।

ओरियन्टल केमरा हाउस,(v. G. o. 110)अलीगढ़ सिटी

विवाहित जीवन

को सुखमय बनाने वाली पुस्तकें

१. कोकशास्त्र (सचित्र)	१॥)
२. ८४ आसन (सचित्र)	१॥)
३. १०० चुम्बन (सचित्र)	१॥)
४. ८० आलिङ्गन (सचित्र)	१॥)
५. सुहागरात (सचित्र)	१॥)
६ गोरे खूबसूरत बनो (सचित्र)	१॥)
७. प्रेम चित्रावली (रंगीन)	१।)
८. गर्भनिरोध (सचित्र)	॥)
आठों पुस्तकों के सेट का मूल्य ६), डा.ख. ॥)	

ग्लोब ट्रेडर्स (न्यू० ६०) अलीगढ़।

डोंगरे का बालामृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर-मार्केट का एक दलाल इतना बीमार हो गया कि चिकित्सा के लिए उसे अस्पताल में दाखिल होना पड़ा। नर्स ने आकर थर्मामीटर से उसका टैम्प्रेचर लिया। अत्यन्त दुर्बल स्वर में दलाल ने पूछा, "नर्स, कितना है टैम्प्रेचर?"

"जब आप आये थे तो टैम्प्रेचर १०१ था, अब बढ़ कर १०३ हो गया है," नर्स ने बताया।

"खूब!" ज्वर की तीव्रता के कारण अचेत होते हुए दलाल बड़बड़ाया, "जब १०४ पर पहुँचे तो बेच देना।"

* * *

ग्राहक—कल मैंने तुम से जो आधा दर्जन अण्डे खरीदे थे, वे सब के सब खराब निकले।

अण्डों वाला—बाबू, क्या बतायें, आजकल हरेक बेईमान हो गया है—और तो और, यह मुर्गियां भी बेईमान हो गई हैं!

* * *

एक लड़की रेडियो-स्टेशन पर पहुंची और संगीत-विभाग के अधिकारी से बोली, "मैं रेडियो पर गाना चाहती हूँ। मेरी माता जी का कहना है कि मैं बहुत ही अच्छा गाती हूँ।"

अधिकारी बोला—"इस बात का समर्थन यदि आपके पड़ोसी कर दें, तो मैं आप को बुक कर लूंगा।"

* * *

बम्बई के एक बस-स्टाप के तख्ते पर वहां से गुजरने वाली बसों के नाम इस प्रकार लिखे हैं—BBIEO तथा एक और बस-स्टाप पर लिखा हुआ है—BDPO और जो है सो पहले वाले को कई लोग जल्दी-जल्दी में पढ़ते हैं—'बीबी आइयो' और दूसरे को पढ़ते हैं—'बीड़ी पिओ।'

* * *

एक महिला बड़ी घबराहट में टेलीफोन पर आयी और उसने डाक्टर को फोन किया, "कृपया तुरन्त आइये, मेरे छोटे लड़के ने मेरी फाउन्टेनपेन निगल ली है।"

"मैं अपने रोगियों से छुटकारा पाते ही आपके पास पहुँचूँगा। लगभग १० या १२ रोगी यहां हैं, सम्भवतः मैं १ या १॥ घण्टे में खाली हो सकूंगा।"

घण्टे-डेढ़ घण्टे बाद! तब तक मैं क्या करूं?" महिला ने करुण स्वर में पूछा।

"मुझे दुःख है, तब तक आपको पेंसिल से ही काम चलाना होगा।"

* * *

पति—क्यों जी, स्त्री-समाज में शायद नई साड़ी का प्रदर्शन करने जा रही हो!

पत्नी—साड़ी का नहीं; अपने पति की उदारता का प्रदर्शन करने जा रही हूँ।

* * *

मित्र—एक ऐसा व्यक्ति जो आपके सम्बन्ध में सब कुछ जानता है और फिर भी आप को पसन्द करता है।

मेरे आज के भाषण का विषय है—डारविन के पूर्वज!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक गांधी-निष्ठ महिला

अवन्तिका बाई गोखले

श्री उमाशंकर शुक्ल

महात्मा गाँधी ने देश में जो जागृति पैदा की थी, वह सर्वतोमुखी जागृति थी। उन्होंने जीवन भर इस बात का बराबर ध्यान रखा कि देश में कार्य करने वालों की संख्या अधिक बढ़ाई जाय, कार्यकर्त्ता तैयार किए जाय और उनसे देश-सेवा का काम लिया जाय इस दिशा में गांधी जी ने बहुत ही प्रयत्न किए और वे सफल भी हुए। उन्होंने हर क्षेत्र के लिए कार्यकर्त्ता तैयार किए। नारी-जागरण के क्षेत्र में स्वर्गीया सरोजिनी नायडू, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, हंसा मेहता, अरुणा आसफअली, मृदुलाबेन साराभाई, विजय लक्ष्मी पंडित, जानकी देवी बजाज, रामेश्वरी नेहरू आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। कार्यकर्त्ताओं तथा कार्यकर्त्रियों में गांधी जी ने एक विशेषता यह भी पैदा की थी कि वे मौन होकर निस्पृह काम करें। ऐसी ही एक मूक सेविका अवन्तिकाबाई गोखले का देहान्त गत २६ मार्च को महानगरी बम्बई में हुआ, जहां कि देश के नेताओं ने 'भारत छोड़ो' का महामन्त्र फूँका था और गांधी जी ने 'करो या मरो' का आदेश दिया था।

श्रीमती गोखले बम्बई की सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्री थीं और उन्होंने आजीवन गांधी जी के सिद्धांतों के अनुसार कार्य किया। देश में न जाने कितनी आंधियाँ आईं, न जाने कितने संकट मँडराये, किन्तु अवंतिका बाई अपने निश्चय पर चट्टान की तरह अचल रहीं। उनकी गांधी जी पर अटल श्रद्धा थी, अटल विश्वास था और थी अटल भावना! उनके निधन से बम्बई की ही नहीं, सारे भारतवर्ष की एक महान क्षति हुई है। स्वर्गीया सरोजिनी के पश्चात् श्रीमती गोखले की मृत्यु देश पर एक वज्र-प्रहार है और नारी-आंदोलन पर कड़ा आघात। वे जिस कार्य को हाथ में लेती थीं, उसे पूरा करके ही छोड़ती थीं। राष्ट्रीय आन्दोलनों में उन्होंने बराबर भाग लिया और जेल गईं। मृत्यु के समय उनकी आयु ६८ वर्ष की थी।

* * *

उनका विवाह बारह वर्ष की अवस्था में श्री बबनराव गोखले मैकेनिकल इंजीनियर के साथ हुआ था। वे सन् १९१३ में यूरोप गईं। वहां पर नर्सिंग की शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त की और स्वदेश लौटने पर श्री जी. के. देवधर के नेतृत्व में समाज-सेवा का कार्य प्रारम्भ किया।

महात्मा गांधी जी जब दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे, अवन्तिकाबाई उन से कार्यकर्त्री के रूप में मिलीं। उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा व परिश्रमशीलता देख कर गांधी जी बहुत ही प्रसन्न हुए। गांधी जी ने जब चम्पारन में सत्याग्रह किया था, उस समय श्रीमती गोखले उनके साथ थीं। श्रीमती गोखले ने चम्पारन में स्वतन्त्र शिविर चलाये और साक्षरता-प्रचार का कार्य किया। तब से महात्मा गांधी के कार्यों पर श्रीमती गोखले की श्रद्धा और बढ़ी। वही श्रद्धा अन्त तक रहीं। कुछ लोग जो पहले तकली चलाते थे, चर्खा चलाते थे, उन्होंने अब सब छोड़ दिया है; किन्तु श्रीमती गोखले बराबर सूत कातती थीं। उनका यह नियम अन्तिम दिनों तक चलता रहा; क्योंकि गांधी जी की यह बात उन्हें अच्छी तरह याद थी कि जो सूत काते वह खादी पहने और जो खादी पहने वह सूत काते।

* * *

श्रीमती गोखले का कार्य क्षेत्र बम्बई ही था। उन्होंने 'हिन्द-महिला समाज' की स्थापना की। समाज में सूत कताई, सीना-पिरोना, कशीदा आदि कार्यों की शिक्षा दी जाती थी और हिन्दी व अंग्रेजी पढ़ाई जाती थी। हाल ही में 'हिन्द-महिला-समाज' की रजत जयन्ती मनाई गई थी। उस समय श्रीमती गोखले ने इमारत-निधि के लिए पैंतालीस हजार रुपये इकट्ठे करके दिए। सन् १९२८ से आज तक उन्होंने उक्त संस्था की तन मन-धन से सहायता की तथा बम्बई में एक आदर्श संस्था को सफलतापूर्वक चलाने का श्रेय प्राप्त किया। 'हिन्द-महिला-समाज' संस्था ही अवन्तिका बाई का जीता-जागता स्मारक है। वे मर कर भी आज अमर हैं।

* * *

जिस तरह उन्होंने सामाजिक कार्यों में भाग लिया था, उसी तरह बम्बई के राजनैतिक जीवन में भी उनका महत्वपूर्ण हिस्सा था। वे बम्बई कारपोरेशन व स्टैंडिंग कमेटी की भी सदस्या थीं। सन् १९१५ से वे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की सदस्या थीं व बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी में भी उन्हें रखा गया था। गिरगांव जिला-कांग्रेस कमेटी के साथ उनका घनिष्ट सम्बन्ध था।

लोकमान्य तिलक के 'होम-रूल' आन्दोलन में उन्होंने भाग लिया था। साथ ही असहयोग आन्दोलन, रौलेट एक्ट विरोधी हलचल व सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भी वे सम्मिलित हुई थीं। उन्हें सन् १९३० में बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की सर्वाधिकारी के रूप में गिरफ्तार किया गया था।

* * *

उनका व्यक्तिगत जीवन सरल, निर्मल व पवित्र था। वे निष्ठावन्त कार्यकर्त्री व अनुशासन पर चलने वाली वीर रमणी थीं। सुधारवादी तो वे थीं, किन्तु भारतीय संस्कृति व प्राचीन परम्परा का पालन वे बराबर करती थीं। प्रतिदिन स्नान कर वे तुलसी का पूजन करती थीं। रोज पानी चढ़ाती थीं। प्रतिवर्ष महात्मा गांधी को वे अपने हाथ से कते सूत की धोती जोड़ी भेजती थीं और गाँधी जी स्वयं अपने ही हाथों से प्राप्ति-स्वीकार भेजते हुए लिखते थे कि आपका प्रसाद मिल गया। महात्मा जी को धोती जोड़ी भेजने का उनका नियम बराबर चलता रहा — यहां तक कि आगाखां-भवन में जब बापू थे, उस समय भी उन्होंने धोती जोड़ी भेंट की थी।

हिन्दू-कोड बिल

हिन्दू-कोड बिल भारतीय महिलाओं को अनावश्यक सामाजिक रीतियों से मुक्त करके अपने देश की सेवा करने के लिए और अधिक स्वतन्त्रता प्रदान करेगा।

— माननीया राजकुमारी अमृतकौर

हमारा नारी का आदर्श पश्चिमी आदर्श बिल्कुल भी नहीं है, बल्कि नितान्त भारतीय आदर्श है। हम तो यह चाहती हैं कि नारी सीता का आदर्श अपने सामने रखे। किन्तु हम यह भी चाहती हैं कि पुरुषों के सामने भी राम का आदर्श हो। जिस प्रकार नारी एक से अधिक पुरुष से विवाह नहीं कर सकती, वैसे ही पुरुषों को भी एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह करने की छूट न हो।

— श्रीमती दुर्गाबाई

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूमाल

सुश्री अरुणा सक्सेना

कढ़ाई-बुनाई का ज्ञान प्रत्येक सयानी कन्या और गृहिणी के लिए आवश्यक है। कढ़े हुए रूमाल, पलंग की चादरें, मेजपोश, तकिया के गिलाफ आदि वस्तुयें आज की गृह-सज्जा के लिये अनिवार्य हैं। इन्हीं से किसी गृहिणी की सुरुचि सुघड़ता तथा कलात्मक बुद्धि का परिचय मिलता है।

रूमाल प्रतिदिन व्यवहार में आने वाली वस्तु है। इसकी आवश्यकता स्त्री, पुरुष व बच्चे सभी को पड़ती है। पुरुषों, स्त्रियों अथवा बच्चों के रूमालों की कढ़ाई एक प्रकार की नहीं होती।

पुरुषों के रूमाल

पुरुषों के रूमाल जितने सादे होते हैं, उतने ही अधिक अच्छे लगते हैं। पुरुषों के रूमाल सुन्दरता के साथ केवल दो प्रकार से ही बनाये जा सकते हैं—प्रथम, जाली बना कर और दूसरा, तागे निकाल कर दूसरे रंग के तागे डाल कर। साधारणतया पुरुषों के रूमाल चार गिरह चौड़े और चार गिरह लम्बे होते हैं।

आवश्यक वस्तुयें—चार गिरह लम्बा और चार गिरह चौड़ा मलमल या बारीक खद्दर का टुकड़ा, एक सुई और सफेद बारीक तागा अर्थात् मशीन से सीने वाला सफेद तागा। (मलमल या बारीक खद्दर मैंने इसलिए लिखा है कि पुरुषों के रूमाल इन्हीं कपड़ों के अच्छे लगते हैं। यह भी ध्यान रहे कि ये कपड़े सफेद होने चाहिएं।)

अब आप कपड़ा लीजिये और लगभग डेढ़ इंच का किनारा छोड़ कर चार-चार तागे चारों ओर से निकाल लीजिए। इसके बाद उस डेढ़ इंच के किनारे को इस प्रकार मोड़ें कि किनारा उन निकाले हुए तागों तक आ जाय। फिर सुई में सफेद तागा पिरो कर उस में गांठ लगा लें और उसको कपड़े के सिरे पर जहां से तागे निकाले गये हैं, फँसा दें और फिर दो-दो या तीन-तीन तागों को सुई में निकाल लीजिये और फिर दुबारा उन्हीं तागों में से निकाल कर कपड़े में से निकालिये। इसी प्रकार चारों ओर कर दीजिये। बस, आपका जालीदार रूमाल तैयार हो गया।

अब रंगीन तागे वाला रूमाल लीजिये। यह जाली से सरल तथा सुन्दर होता है। इसमें एक इंच छोड़ कर दो दो तागे निकाल लीजिये और रंगीन तागे को सुई में पिरो कर सुई को इस तरह कपड़े में निकालिए, जिससे सुई में दो तागे ऊपर और दो तागे नीचे इसीप्रकार सारी सुई में हों। इस तरह आप दो प्रकार से पुरुषों के रूमाल की सुन्दरता बढ़ा सकती हैं।

स्त्रियों व बच्चों के रूमाल

अब आप स्त्रियों व बच्चों के रूमाल लीजिये। ये रूमाल साधारणतः पुरुषों के रूमाल के दो तिहाई होते हैं अर्थात् तीन गिरह से बड़े नहीं होते। ये रूमाल किनारे बना कर अथवा फूल काढ़ कर सजाये जा सकते हैं।

किनारे बनाने के लिये आवश्यक सामान—तीन गिरह चौड़ा और तीन गिरह लम्बा कपड़ा (जैसा आप चाहें, क्योंकि स्त्रियों व बच्चों के रूमाल सफेद व रंगीन दोनों ही प्रकार के होते हैं और सुन्दर भी लगते हैं। लेकिन यह ध्यान रहे कि रूमाल के लिये छींट या धारीदार कपड़ा नहीं होना चाहिए।) रेशम-डी. एम. सी. की छोटी लच्छी।

कपड़े के किनारे को बहुत बारीक गोल-गोल लपेट लीजिये और फिर सुई में रेशम पिरो कर उसमें गांठ लीजिये। अब आप लपेटे हुए कपड़े के चारों ओर सुई को इस प्रकार निकालिए, जिससे तागा उस पर इस तरह आ जाय कि ऐसा मालूम हो कि तागा उस पर लपेटा हुआ है। यह ध्यान रहे, तागा तिरछा आना चाहिए। इसी प्रकार चारों ओर के किनारों पर बना लीजिये। जिस दिशा में आपने पहले किया है, अब उसकी विपरीत दिशा में तागा डालिए, ताकि वे एक दूसरे को काटते हों और (×) इस प्रकार का चिह्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाते हों। सफेद कपड़े में तो हर प्रकार के रंग से आप किनारा बना सकती हैं, लेकिन रंगीन कपड़े में आपको रंग का ध्यान रखना पड़ेगा। जैसे नीले रंग के कपड़े में हरे या लाल रंग के रेशम से किनारा बनाने पर वह सुन्दरता नहीं आयेगी, जो पीला, सफेद कपड़े के रंग से हल्का नीला अथवा उसके रंग से गहरा नीला रंग का रेशम लगाने पर आयेगी। किनारों के अतिरिक्त आप रंगीन तागा भी डाल सकती हैं, जैसे पुरुषों के रूमाल के लिए बताया गया है। लेकिन आप के रूमाल में केवल इकहरा तागा सुन्दर नहीं लगेगा। थोड़ी थोड़ी दूर पर आप दो या तीन जगह तागे और निकालिये और उनमें भी उसी रंग के तागे डाल दीजिये।

अब आप काढ़ने पर आइये। रूमालों पर बेलें या चारों कोनों पर अथवा बीच में फूल नहीं काढ़े जाते। इनमें केवल एक ही कोना काढ़ा जाता है।

फूल अथवा बेल के लिए दो रंगों के रेशम की आवश्यकता होगी। पत्तियों के लिए हरा रंग और फूलों के लिए गुलाबी, हल्का नीला, पीला अथवा लाल कोई भी रंग आप लगा सकती हैं।

बच्चों के रूमाल के कोनों पर छोटे छोटे खूबसूरत जानवर और चिड़ियाँ आदि भी काढ़ी जाती हैं, जो देखने में सुन्दर लगती हैं।

व्यथा

कुमारी स्वर्णलता

मैं हँसी। तुम कहने लगीं—'कितना सुखमय है तुम्हारा जीवन!' पर ··· पर अपने इस हृदय पर हाथ रख कर देखो, क्या यह तुम सच्चे हृदय से कह रही हो? नहीं, तुम ऐसा नहीं कह सकतीं। तुम स्वयं नारी हो और नारी के हृदय से भली भांति परिचित हो, हृदय के तूफानों से खेली हुई हो ···। तुम्हारे अधरों पर भी तो कितनी बार इस करुण मुसकान ने आधिपत्य जमाया है। फिर तुम कैसे सुखमय जीवन की बात कह सकती हो ···? नहीं, मुझे भ्रम हुआ होगा। और हँसना? आह! यह अरुणिमा तो हमारे घायल हृदय के रक्त के कुछ छींटे ही तो है!

तुम डरती हो। रहने दो, अब कुछ न कहूंगी। परन्तु कह लेती तो शायद यह घुटा हुआ धुआँ कुछ श्वास ले लेने देता ···। अच्छा, तुम बड़ी दयालु हो, मेरे आँसू देख कर तुम्हें दया आ गई होगी; तभी सुनने के लिये तैयार हो गईं। अच्छा, तो सुनो—एक बार एक दीप-शिखा ने सोचा, 'क्या मैं जलने के लिये ही पैदा हुई हूँ? नहीं, मैं क्यों जलूं? मैं मानती हूँ कि प्रकाश होता है; पर हुआ करे, मुझे इससे क्या लाभ?'

यह सोच कर बिचारी की आँखों में आँसू आ गए और यह पानी उसकी जलन को शान्त करने लगा। तभी ··· हां, तभी एक पतंगा उड़ता-उड़ता आया और उस दीप-शिखा से हँसते-हँसते लिपट गया।

दीप-शिखा के आँसू रुक गये, वह सोचने लगी—'एक पतंगा केवल मेरे स्नेह में हँसते-हँसते प्राण-विसर्जन कर बैठा, और ··· और मैं हूँ कि इतनों से प्यार का प्रतिदान पाकर भी आँसू बहा रही हूं!'

तभी उसे अपने अस्तित्व का ज्ञान हुआ। वह हँस पड़ी। मधुर आलोक फैल गया। किन्तु किसी को क्या पता कि उस मुसकान में कितनी व्यथा छिपी थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुलझड़ियां

हमारे मित्र श्री लालबुझक्कड़ शास्त्री ने यह समाचार विज्ञापित किया है कि स्वतन्त्र भारत की अधर्मी (सेकुलर) केन्द्रीय सरकार तथा प्रान्तीय सरकारों की कई एक कार्यवाहियों से द्यु लोक के निवासी बहुत ही चिन्तित व क्षुब्ध हो उठे हैं। उनके अधिकारों और हितों पर जिस तरह कुठाराघात किया जा रहा है, उससे उनका अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। हिन्दू-धर्म में आमूल परिवर्त्तन किया जा रहा है, देव-मन्दिरों की सम्पत्ति पर कुछ प्रांतीय सरकारें अधिकार जमाना चाहती हैं, मन्दिरों में अछूतों का प्रवेश कराया जा रहा है, देवताओं के स्थान पर नेता तथा मंत्री लोग जनता से अपना पूजन-आराधन करवा रहे हैं, अन्य गण्य-मान्य देवताओं को छोड़ कर केवल भगवती लक्ष्मी को सब जगह मान्यता दी जा रही है, राष्ट्र के विधान का निर्माण पण्डितों व धर्मशास्त्रियों की सम्मति से नहीं, बल्कि राजनीतिज्ञों की सम्मति से किया जा रहा है, भारत को द्यु लोक का उपनिवेश न बना कर स्वतन्त्र लोकतन्त्र बनाया जा रहा है, इत्यादि-इत्यादि कई ऐसी बातें हैं, जिन से देवलोक में खलबली मची हुई है।

* * *

पुराणों के अनुसार देवताओं की कुल संख्या ३३ करोड़ है और वे प्राचीन काल से भारतवर्ष के समूचे भूभाग पर बिखरे विभिन्न मन्दिरों, मठों और तीर्थस्थानों में रहते आ रहे हैं। श्री लालबुझक्कड़ शास्त्री का कथन है कि भारत की इस बहुसंख्यक आबादी की आज के प्रजातन्त्री युग में किसी प्रकार भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। परन्तु कानूनदानों का मत कुछ और है। उनका कहना है कि ये देवता लोग भारत के 'नेशनल' नहीं समझे जा सकते, क्योंकि भारत में ये स्थायी रूप से नहीं रहते। स्थायी रूप से तो ये द्यु लोक में रहते हैं और आज की अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था की दृष्टि से द्यु लोक विदेश ही गिना जायेगा।

रही बात इन की संख्या की। ३३ करोड़ की संख्या वैधानिक दृष्टि से तब तक विश्वसनीय नहीं समझी जा सकती, जब तक कि आधुनिक विधि से देव-गणना नहीं हो जाती। इस बात के कई प्रमाण हैं कि कई देवताओं ने अपने भिन्न-भिन्न नाम रखकर अपने को एक से अनेक बना रखा है। देवताओं का यह अपराध निश्चय ही अक्षम्य है!

* * *

मन्दिरों और मठों की सम्पत्ति पर देवताओं का स्वामित्व भी विवादग्रस्त है। यह सम्पत्ति देवताओं की अपनी खरीदी हुई नहीं है, बल्कि भारतीयों द्वारा उन्हें वरदानों के लोभ और मृत्यु के बाद स्वर्गलोक में निवासस्थान पाने की इच्छा से वैसे ही भेंट की गई है। चूंकि आज के भारतीयों की दृष्टि में दोनों बातें बुद्धि-संगत नहीं हैं, भुलावा मात्र हैं, अतः देवताओं का स्वामित्व किसी प्रकार भी स्वीकार नहीं किया जा सकता।

एक बात और भी है। सार्वजनिक अनुभव यह बताता है कि देवता लोग अपनी सम्पत्ति का प्रबन्ध करने में सर्वथा अयोग्य सिद्ध हुए हैं; अतः मद्रास अथवा बम्बई की सरकारें यदि उन की सम्पत्ति का प्रबन्ध अपने हाथ में ले रही हैं, तो इसमें कोई बुराई की बात नहीं। और फिर स्वतंत्र-भारत में जब जागीरदारों की जागीरें और राजाओं की रियासतें नहीं रहीं, तो इस दान-पुण्य की सम्पत्ति पर देवताओं का अधिकार कैसे रह सकता है! आज के समाजवादी युग में तो विशाल धन-राशि पर किसी एक देवता का प्रभुत्व दण्डनीय है। ऐसी सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण होना ही चाहिये!

* *

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर कुछ देवता राजाओं की तानाशाही को बनाये रखने के लिए जो षड्यन्त्र रच रहे हैं, उसे भारतीय सरकार (विशेषकर रियासती सचिवालय) किसी प्रकार भी सहन नहीं कर सकती। बृहद् राजस्थान के निर्माण में जो विलम्ब हुआ है, उसकी जिम्मेदारी बहुत कुछ उदयपुर के भगवान् एकलिंग जी पर है। अब त्रावणकोर और कोचीन के एकीकरण में भगवान पद्मनाभ जी रोड़ा अटका रहे हैं। देवताओं की ये प्रवृत्तियां निश्चय ही अराष्ट्रीय तथा जनतन्त्र-विरोधी हैं।

* * *

देवताओं को यह शिकायत है कि नेता तथा मन्त्रीगण अपने लिए अभिनन्दन-ग्रन्थ तथा अभिनन्दन-पत्र लिखवा कर, भेंट और थैलियां लेकर, अपनी मूर्तियां तथा चित्र बनवा कर और समाचार-पत्रों में अपनी प्रशस्तियां छपवा कर जनता से अपना पूजन और आराधन करवा रहे हैं। यह देवताओं की हीन भावना और ईर्ष्यालु मनोवृत्ति की ही सूचक है। देवताओं की इस मनोवृत्ति से तुलसीदास जी बहुत पहले भारतीयों को परिचित करवा चुके हैं। खैर, देवताओं की यह शिकायत व्यर्थ है। जनता को जिस किसी से भी तात्कालिक वरदान मिलने की आशा होगी, वह उसी की पूजा करेगी।

* * *

सुना जाता है कि उन लेखकों और कवियों से भगवती सरस्वती बहुत ही रुष्ट हैं, जो पहले की तरह देवताओं का स्तुति-गान न करके अब नेताओं, मन्त्रियों और पूंजीपतियों का स्तुति गान करते हैं। लेकिन इस पैसावादी-युग में भगवती सरस्वती के रोष की भला कौन परवाह करता है; भगवती लक्ष्मी प्रसन्न रहनी चाहिएं।

* * *

एक यह भी समाचार है कि देवताओं ने मार्क्स को नरक में डाल रखा है और उसे घोर यातनाएं दे रहे हैं।

★

राष्ट्रीय

लाल मंजन

यह दांतों की प्रत्येक बीमारी को दूर करता और दांतों को सुन्दर तथा टिकाऊ रखता है। साथ ही पेट की बहुत सी बीमारियों को दूर करता है। मुंह की दुर्गन्ध को मिटा कर सुगन्ध पैदा करता है।

नोट—कृपया अपने शहर के थोक विक्रेता से खरीद कर अवश्य परीक्षा करें। मूल्य शीशी नं० एक ॥), शीशी नं० दो १), शीशी नं० तीन २), डाक व्यय अलग।

व्यवस्थापक :—

राष्ट्रीय लाल मंजन कार्यालय

बड़ा बाजार अलीगढ़ [युक्तप्रांत]

आप भी लखपती बनें!

हमारी टिकिया मशीन द्वारा आप आधा ग्रेन से १० ग्रेन तक की हूबहू एस्पो तथा कुनेन की टिकिया जैसी फैसी १ घण्टे में ३००।४०० टिकियां दवा ई, स्याही, पौडर आदि की बना कर अपना औषधालय या कारखाना चालू करके शीघ्र ही लखपती बन सकते हैं। मूल्य १२) डाक खर्च १) बादाम का तेल निकालने वाली मशीन का मूल्य ४०) सेमई या सेव बनाने वाली मशीन मूल्य ४०)।

पता—इन्टर नेशनल

इन्डस्ट्रीज लि० अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस में वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास

[पृष्ठ १६ का शेष]

कहा हुआ एक-एक शब्द हजार-हजार शब्दों का बल रखता था। ऑरटेर के योग्य भौतिक विशेषता के न होते हुए भी गांधी-युग में पण्डित मोतीलाल नेहरू के भाषण बिजली का-सा असर रखते थे। यदि गांधी-युग से पूर्व के वक्ताओं से पण्डित मोतीलाल नेहरू की तुलना करें तो कहना पड़ेगा कि केवल पुरानी वक्तृत्व-कला की दृष्टि से वे कुछ न्यून थे; परन्तु वह वक्तृत्व-कला जिसमें वक्ता का व्यक्तित्व सबसे अधिक महत्त्व रखता है, पण्डित जी को वक्ताओं में बहुत ऊँची कोटि पर बिठा देती है।

यह तो हुई सार्वजनिक भाषणों की बात। जब हम धारासभाओं अथवा आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी जैसी परिमित सभाओं के दृष्टिकोण से विचार करें, तो पण्डित मोतीलाल जी की तुलना का व्यक्ति दिखाई नहीं देता। जिस व्यवस्थापिका-सभा के भवन में आज पण्डित जवाहरलाल नेहरू सरकारी-नेता की हैसियत से विराजमान हैं, उसी भवन में आज से बहुत पहिले उनके पिता विरोधी-दल के नेता के रूप में बैठते थे। तुलना कभी अच्छी नहीं होती और फिर योग्य पिता और योग्य पुत्र में तुलना तो और भी अधिक असुवेधा-जनक है। मैंने तब भी देखा और अब भी देखता हूँ और मैं इतना लिखे बिना नहीं रह सकता कि कौंसिल-चेम्बर में विरोधी पार्टी के नेता पण्डित मोतीलाल नेहरू का जो रौब-दाब और राजाओं जैसा ठाठ था, वह आज भी किसी व्यक्ति का दिखाई नहीं देता। जिस समय सफेद खद्दर के वेश में परिष्कृत होकर पण्डित जी अपनी गम्भीर गति से कौंसल-चैम्बर में प्रविष्ट होते थे उस समय सरकारी कुर्सियों पर बैठने वाले अंग्रेज महापुरुषों को भी सहम कर खड़े हो जाना पड़ता था। पण्डित जी द्वारा धारासभा में की गई आलोचनाओं से सरकार थरथर कांपती थी। फलतः जितनी शान उन दिनों विरोधी-दल के नेता की थी, उतनी शान आज के सचिवों की भी नहीं है। निःसन्देह कहा जा सकता है कि पण्डित मोतीलाल जी पैदायशी राजा थे। समय ने उन्हें ऐसे समय उत्पन्न किया कि उन्हें विरोधी-दल के नेता बनना पड़ा।

★

उनके स्वप्न का भारत

"मैं उस भारत के लिए काम करूँगा जिसके निर्माण में गरीब लोग भी अपना काफी हिस्सा अनुभव करें, जिसमें उच्च अथवा निम्नवर्ग का भेद न होगा, जिसमें सभी सम्प्रदाय पूर्ण एकता के साथ रहेंगे। ऐसे भारत में छूतछात का कोई स्थान न होगा। मादक द्रव्यों का भी यहां कोई प्रयोग न होगा। स्त्रियां पुरुषों के समान ही अधिकार प्राप्त करेंगी। तभी हम सारे विश्व के साथ शांति से रह सकते हैं। न तो किसी का शोषण करें और न शोषित बनें। छोटी से छोटी हमारी सेना हो। उन सभी हितों का, चाहे वे विदेशी हों, हम सम्मान करेंगे जो करोड़ों गरीबों के हितों का विरोध नहीं करते। देशी-विदेशी में भेद करने से मुझे घृणा है। यही मेरे स्वप्न का भारत है।"

—महात्मा गांधी

"हमारे लक्ष्य में ऐसा भारत होना चाहिए, जिसमें सब लोग स्वतन्त्र हों, जिसमें स्त्रियां बन्धन-मुक्त हों, जिसमें श्रेणियों और सम्प्रदाय का पक्षपात न हो, जिसमें बिना किसी भेदभाव के निःशुल्क शिक्षा दी जाती हो, जिसमें पूंजीपति और जमींदार रियाया को कष्ट न देते हों, जिसमें मजदूरों का सम्मान हो और जिसमें वर्त्तमान संतति को ग्रस्त करने वाली दरिद्रता भूतकाल की बात समझी जाय।"

—पं० मोतीलाल नेहरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलाई की बरफ

(पृष्ठ ८ का शेष)

किसनिया ने कहा, "अभी लो !" और उठ कर बाहर आया। बगल की गली में देखा कि नवाबजादा साहब पिछले दरवाजे से निकल कर जा रहे हैं। किसनिया तैश में आ गया। लौटा, बरफ तोली। इरादा किया कि मालिक से सारा भेद खोल दे। तभी अन्दर सुना, मालिक कह रहे थे, "बेगम, आज मैंने अपनी सड़क की उन गन्दी कोठरियों में एक नई बहू देखी। दिल में ऐसा सरूर आया कि बेचैनी हो गई। भागा आ रहा हूँ तुम्हारे पास बैठने के लिए।"

भेद खोलने की बात किसनिया भूल गया। मेरी बहू ही देख कर आये हैं। दिमाग में उसके गरमी भरने लगी। जैसे बेहया मालकिन हैं, वैसे ही दिल-फेंक मालिक हैं। ईश्वर, क्या दुनिया रची है तूने !

पैसे लिये और बाजार में बढ़ गया। अभी कुछ बरफ बची है सो बिक ले।

* * *

आज 'खुदाई-मंजिल' में प्रवेश करते समय किसनिया ने एक बात ठान ली थी। सलीमा जब बरफ ले गई मालिक भी आ चुके, तो किसनिया तुरन्त पिछवाड़े पहुँचा। नवाबजादे के निकलते ही पीछे पीछे वह हो लिया देखना तो चाहिये कुछ।

नवाबजादा पहाड़गंज तक तो पैदल गया। वहां से बस में बैठ कर नई दिल्ली की ओर बढ़ गया।

दूसरे दिन किसनिया समय से पहिले ही बरफ बेच आया। नई बहू को पेटी सम्हलवाई और पहाड़गंज पहुँच गया ठीक समय पर नवाबजादा साहब पधारे। एक बस में बैठे। किसनिया भी उसी की बगल में बैठ गया। शेरवानी से इत्र की हल्की-हल्की खुशबू आ रही थी। जहां का टिकट उसने लिया, वहीं का टिकट किसनिया ने लिया।

गोल-मार्केट के पास नवाबजादा उतरा। कुछ दूर चल कर बाबू-बस्ती में चिकों और जाफरियों से ढके एक क्वार्टर में घुस गया।

* * *

आज वह 'खुदाई मंजिल' के सामने "मल्लाई की बिरयफ्फ" बोला, तो बुढ़िया ने बुला कर कल न आने की शिकायत की। किसनिया ने माफी माँगी और बातों-बातों में यूँही पूछ लिया—"मालिक साहब कहां काम करते हैं ?"

बुढ़िया मालिक का नाम सुन कर खुश हुई। बोली, "छप्पर वाले कुएं पर सौदागरी की दुकान है।"

दूसरे दिन किसनिया ने बड़े परिश्रम से मलाई की बरफ खूब स्वादिष्ट बनाई। पेटी उठा कर सुबह ही वह छप्पर वाले कुएं पहुँच गया और बरफ बेचने लगा। मालिक की सौदागरी की दुकान भी मिल गई। एक बुड्ढा दढ़ियल मुन्शी बैठा बहीखाता भर रहा था किसनिया ने ठीक दुकान के सामने 'मल्लाई की बिरयफ्फ' आवाज लगाई और दुकान का सामान देखने लगा। मुन्शी जी ने उसे रोका। बरफ चख कर जबान को चटचट करते हुये वह टूटे चश्मे में से किसनिया को देखने लगा। बोला, "वाह, क्या जायका है ! कौन से मसाले डालता है रे ?"

किसनिया हँसने लगा। बोला, "आप मालिकों की बरकत डालता हूँ !"

मुन्शी जी जाने क्या फारसी-सी बड़बड़ाये आध पाँव बरफ लेकर छोटी-छोटी कतलियां जबान पर चांदी के वर्क की तरह जमाने लगे। पैसे अभी नहीं मिले, तो किसनिया ने पूछा, "मालिक साहब कब आते हैं ?"

"डेढ़ घण्टे बाद आवेंगे।"

"कहां रहते हैं ?"

"अजमल खाँ रोड पर।"

किसनिया उधर पहुँचा। बरफ बेचते हुए उसने मालिक के मकान की टोह ली। एक कोने में बैठ कर वह बरफ की आवाजें लगाता रहा। घण्टे भर बाद मालिक बाहर निकले। उधर सड़क पर जा कर वे छप्पर वाले की बगल में घूम गये। किसनिया उठ कर मालिक के मकान के सामने बैठ गया। आधा घण्टा गुजरा। उसकी बरफ की आवाजें सुन कर एक छ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष का सुन्दर बालक अन्दर से एक पैसा लेकर आया। हाथ आगे कर बरफ मांगने लगा। किसनिया ने कहा कि अपनी अम्माँ से इकन्नी लाओ तो बरफ मिलेगी। इकन्नी भी आ गई। उसने बरफ तोल दी। पांच मिनट गुजरे, अन्दर से एक दस वर्षीया कन्या एक तीन वर्ष के बालक को लेकर बाहर आई। सभी के चेहरे मालिक से मिलते थे। दोनों ने एक एक आने की बरफ ली। इसी समय चिक के पीछे से एक मधुर आवाज आई कि पाव भर और तोलो। किसनिया पाव भर बरफ लेकर चिक के निकट गया। उस रमणी ने चिक से अपना गोरा हाथ निकाल कर बरफ थामी। आंखें उठा कर किसनिया ने चिक से छिलकती हुई बच्चों की सुन्दर मां की एक झलक ली। पैसे लेकर वह लौट आया।

दुपहरिया ढली। कुतुब रोड होता हुआ वह 'खुदाई-मंजिल' पहुँचा। फाटक में घुस कर बोला, "माई, बरफ लेगी?"

बुढ़िया नाक में सुंघनी सूंघ रही थी। दो छींक ले ली, तो बोली, "अरे लूंगी क्यूं नहीं। खुदा जाने क्या कुफ्र का जादू होता है तेरी बरफ में!"

बक्स खोल कर किसनिया बैठ गया। सब को बरफ दे चुका। सलीमा के दर्शन किये। बुढ़िया से पैसे लेते हुए बोला, "आज सुबह मैं मालिक के बच्चों को भी बरफ खिला आया। उनकी अम्मां ने अलग पूरी पाव भर तुलाई।"

बुढ़िया सुन कर हंसने लगी। कुछ और नहीं बोली। किसनिया उठा। अन्दर नवाबजादा आज कुछ गा रहा है—हल्के स्वर में। वह लौट आया।

अब वह क्या करे? नवाबजादे से भेद कहने की बात नहीं है। मालिक के आते ही वह पिछवाड़े से भाग जाता है। मालिक खुद बाल-बच्चेदार आदमी है। कुछ नाराज, कुछ चिढ़ कर किसनिया ने उधर जाना छोड़ दिया। एक सप्ताह तक नहीं गया।

* * *

पर यह दिल शक-संदेह की बदबू सूंघ कर जाने क्यों हैवान-सा, मतवाला सा हो जाता है। नई बहू से चाहा कि यह किस्सा सुनाये, जबान ही नहीं खुली। भौजी से इसी चर्चा की मजाक करनी चाही, वैसा मौका ही नहीं लगा। इधर आज घूम फिर कर वह कुतुब-राड निकल गया। दबे पांव वह 'खुदाई मंजिल' के आगे से निकला के बुढ़िया ने झट आवाज दी। किसनिया को जाना पड़ा। उसका मुंह फीका पड़ गया। बुढ़िया ने नाक में सुंघनी चढ़ा कर कहा, "क्यों, कहां नौ दो ग्यारह हो गए? बेगम तो रोज तुम्हें याद करती है। (अन्दर आवाज दी) नवाबजादे, आ गया है वही बरफ वाला। रुकना, बरफ लाती हूँ।"

किसनिया मुंह फुलाये रहा। कुछ न बोला। बरफ तोल कर उसने बुढ़िया की हथेली पर धर दी। सलीमा बाहर आई। किसनिया ने आंखें नीचे कर लीं। सलाम भी नहीं किया। बोली 'हजरत, तुम्हें हजार काम हों, यहां रोजाना बरफ देकर जाओ। हाजिरी नहीं बजाओगे तो सजा मिलेगी।"

किसनिया सलीमा की इस शोखी, इस अदा पर चुहल उठा, गद्‌गद् हो गया। बोला, "जैसी मालकिन की मर्जी!"

पैसे लेने की सुस्ती में वह आराम से बैठा ही था कि मालिक की आहट पा कर बुढ़िया हड़बड़ा कर उठी और अन्दर गई।

मालिक फाटक में घुसे कि पिछवाड़े शोर मचा कर दो आदमी लड़ने लगे। मालिक उलटे पांव लौटे और उधर चले गये।

किसनिया भी उठा और पिछवाड़े की बगल में पहुँचा। दो पल्लेदार आपस में बुरी तरह गुंथे हुए थे। पिछवाड़े के दरवाजे से नवाबजादा निकला ही था कि मालिक ने आवाज दी, "वल्लाह! यूँ छिप कर भागे जा रहे हो! हजरत, जरा इधर तो आओ!"

नवाबजादा इधर घूम कर ठिठक गया मालिक हंसने लगे। उसका हाथ पकड़ा और फाटक के अन्दर ले आये। उसे मूढ़े पर बैठा कर खुद भी मूढ़े पर बैठे।

"भई, पाव पांव भर बरफ दो और खातून, हमारा हुक्का तैयार करना। बेगम, पान के दो टुकड़े लगा लाओ। हां, भई, सम्हालो बरफ का पत्ता!"

नवाबजादा सुट्ट लगाये बैठा रहा। मालिक ने कहकहा लगाया, "आखिर आज रँगे हाथों पकड़े गये!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलीमा चेहरे में मुसकान भरे पान लगा लाई—चांदी की तश्तरी में। बुढ़िया ने हुक्का भी ला रखा। नवाबजादा बमुश्किल कड़े हाथों से गले के नीचे बरफ उतारने लगा। मालिक बोले, "अभी नौ महीने ही हुये हैं मुझे सलीमा से निकाह किये; आपको यह दस्तंदाजी क्यूं सूझी है आखिर? अगर आपको अपनी इन सलीमा बहेन से ऐसी ही मुहब्बत थी, तो पहले ही इसका निकाह अपने उन दोस्त से करा देते। अब क्यूँ इसे तलाक को भड़काते हो?"

पैसे मिलते ही किसनिया उठ आया। सीधा घर पहुँचा। एक कटोरी में बची बरफ निकाल नई बहू की गोदी में पसर गया। एक कतली उसके मुंह में दी और नई बहू ने एक कतली उसके मुंह में फिसला दी। दोनों विभोर हो गए। किसनिया ने अब आवाज लगाई, "भौजी!"

तो भौजी ने वहीं से पूछा "क्यूं देवरिया जी, क्या बहू बेलने से मरम्मत करने लगी है!"

किसनिया ने कहा, "हां भौजी, तुम मुझसे निकाह कर लो तो मैं इस दारी को तलाक दे दूं।"

तीनों अपनी-अपनी ठौर पर खिल-खिल करने लगे।

★

८१३८०)रु०

घर बठे ४॥= मैं कसे कमाया जा सकता है? आज ही पत्र लिख कर पूछें।
नैशनल कौरपोरेशन, रावली, आगरा।

मनोरंजन
में
विज्ञापन व्यापार का मूलसाधन है।

अगूँठी तांत्रिक (REGD)
ग्रहण के शुभ अवसर पर तय्यार की गई
यदि सत्य साबित न हो तो ६ माह तक मूल्य वापिस।

आप जो चाहेंगे हो जायेगा, गरीबी दूर भाग जायगी, आपकी प्रेमिका आपसे घनिष्ट प्रेम करने लगेगी। मन चाही सन्तान होगी। शत्रु मित्र बन जायंगे। नाराज हाकिम खुश होगा विद्यार्थी परीक्षा में पास होंगे तथा मुकदमें में विजय होगी। यानी हर काम में सफलता मिलेगी। परिश्रम से तय्यार करवाई लाभ उठाना आपका काम है। एक बार अवश्य परीक्षा करें। केवल मूल्य २॥) डा. ख. ॥) पृथक।
पता:—जैन कार्यालय अलीगढ़ यू. पी.

बन्द मासिक धर्म
(रजलीना दवा)
अगर माहवारी रुक जाये, समय पर न आये अथवा कष्ट के साथ आवे तो 'रजलीना' दवा सेवन करावें। इस दवा से माहवारी बिना कष्ट के खुल कर साफ आने लगेगी और फिर समय पर आती रहगी। अचूक दवा है मूल्य ६॥|) डाक खर्च ॥|)

सन्तान रोक दवा
के सेवन कराने से सन्तान होना बन्द हो जाता है। मूल्य ४॥|) डाक खर्च ॥|)
पता:—वैद्या यशोदा देवी,
यशोदा देवी दवाखाना, मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहली में सोना दो रुपया तोला

सेठ आनन्द किशोर बी० ए० एल० बी० महौली (यू० पी०) से लिखते हैं कि आपका पार्सल मिला। आभूषण न्यू गोल्ड को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई, कृपा करके ६ तोला न्यू गोल्ड और एक नेकलस और भेज देवें। भारत भर के समाचार पत्रों के अलावा अनगणित पुरुषों ने इसकी प्रशंसा की है। इसके आभूषण का रङ्ग भी खराब नहीं होता। असली सोने की भांति इसके भी हर प्रकार के आभूषण बनते हैं। हर प्रकार की तसल्ली की गारंटी देते हैं। माल नापसन्द होने पर मूल्य वापस लौटा दी जावेगी। एक तोला २), तीन तोला ५॥), छः तोला १०) मिनर्वा न्यू गोल्ड के बने हुए सुन्दर आभूषण, गले का हार बड़ा १६), छोटा हार १२), नेकलस न्यू डिजायन १२), गुलूबन्द ८), चम्पाकली १०), गले की हंसली ११॥), अंगूठी नगदार ३), अंगूठी बम्बई फैशन मीनेवाली २), चूड़ियां डायमण्ड कट फैन्सी प्रति जोड़ा १॥), कान के अति सुन्दर कांटे नं० पहिला ३॥), प्रति जोड़ा नं० दूसरा ३=), नं० तीसरा २।), दस्तबन्द घड़ी चूड़ी प्रति जोड़ी ६॥), डाक व्यय इसके अलावा यह आभूषण नकली जवाहर जड़ी है। माल मिलने का पताः—

New Gold Supply Co. (M.M.D.) No. 199 Delhi

न्यू गोल्ड सप्लाई कं० (एम.एम.डी) नं० १९९ दिल्ली।

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी खर्च के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है शौकियां काम लेने वाले तथा व्यवसायी दोनों ही काम इससे ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरा में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और लाभ उठावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा तमाम फिल्म-कार्ड, केमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ३॥=), डैस्ट क्वालिटी नं० ५४५ कीमत ६॥) डी लक्स एक्स्ट्रा, सैशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ६॥), पैकिंग व डाक व्यय १०)

नोट—एक समय में १ कैमरा हर ग्राहक को कैमरा नं० ५५४ मुफ्त। स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अन्यथा निराश होना पड़ेगा। माल पसंद न होने पर कीमत वापिस।

वैस्ट एण्ड ट्रेडर्ज, पोस्ट बक्स नं० १९९ (m.h) दिल्ली।

West End Traders P. B. 199, (m.h) Delhi.

मुफ्त! मुफ्त!

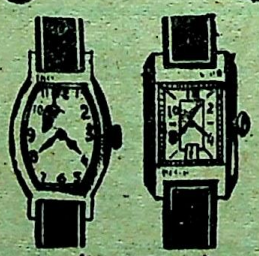

FREE

लन्दन न्यूगोल्ड के जेवरात का मशहूर करने के लिये हमने डायरी कलेन्डर १९४८ और असली रिस्टवाच गारन्टी १५ साल मुफ्त देने का फैसला किया है यदि आप बिलकुल मुफ्त लेना चाहते हैं तो आज ही अपना नाम व पूरा पता साफ २ लिख कर भेज दें मगर जल्दी करें क्यों यह समय फिर हाथ न आवेगा।

न्यू गोल्ड सप्लाई कं० । एम. । देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नतीजा

श्री शशिकान्त

रामू मोती दोनों लड़के
चौथे दरजे में थे पढ़ते।
रामू तो था अच्छा लड़का,
मोती बहुत बुरा था लड़का।
रामू खूब लगा मन पढ़ता,
घर या बाहर कहीं न लड़ता।
छुट्टी होती तो घर आता,
रुकता कहीं न समय गँवाता।
घर आ मां का हाथ बँटाता,
भाई-बहिनों को दुलराता।
खूब खेलता खेल समय वो,
औ' फिर पढ़ता ताजा दम हो।
मात-पिता औ' मास्टर-लड़के,
सभी लोग रामू से खुश थे।

मोती की अब सुनो कहानी—
उसको भाती थी मनमानी।
पढ़ने से थी उसको नफरत,
खेल-कूद दंगे की चाहत।
घर से तो वह पढ़ने आता,
गली-बाग में समय गँवाता।
चोरी करता, रार मचाता,
अध्यापक से डण्डे खाता।
घर आकर भी कभी न पढ़ता,
भाई-बहिनों से नित लड़ता।
समय परीक्षा का आया जब,
अच्छा रामू पास हुआ तब,
और निकम्मा मोती मोटा
फेल हुआ ज्यों सिक्का खोटा।

रामू हँसता था खुश होता,
मोती था पछताता रोता।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

सिंहासन किसका ?

श्री ईशकुमार

सोनागढ़ के राजा के पांच रानियां थीं, पर सन्तान कोई न थी। राजा अब काफी वृद्ध हो चुके थे और वे यह सोचते हुए चिन्तित रहते थे कि मेरे बाद राजगद्दी पर कौन बैठेगा ? राजा दिन-रात भगवान से प्रार्थना करने लगे।

समय ने करवट बदली या यों कहिये कि राजा के दिन फिरे कि एक दिन एक योगी भ्रमण करते हुए राजा के यहां आये। राजा ने उनका बड़ा सम्मान किया। उन्हें अपने राजसिंहासन पर बिठाया, परात में पानी लाकर उनके चरण पखारे और भेंट आदि से उनका भली प्रकार सत्कार किया। भोजन कर चुकने के पश्चात् वे योगी बोले– "राजन् ! लगता है तुम उदास हो। क्या चिन्ता है तुम्हें ?"

राजा ने सकुचाहट से धीमी हँसी के साथ कहा, "नहीं महाराज, मुझे तो प्रसन्नता है कि आज आप मेरे घर पधारे हैं।"

योगी बोले, "नहीं, तुम्हें अवश्य कोई मानसिक क्लेश है। छिपाओ नहीं, राजन् ! मैं प्रयत्न करूँगा कि तुम्हारा दुःख दूर हो।"

तब तो राजा ने अत्यन्त विनम्र भाव से हाथ जोड़ कर कहा, 'भगवन् ! मैंने पांच विवाह किये, पर मेरे सन्तान नहीं हुई। मैं अब बूढ़ा हो चला हूँ। मेरे बाद मेरे राजपाट को कौन सम्हालेगा यही चिन्ता मुझे खाये जा रही है।" यह कहते-कहते राजा का गला भर आया।

योगी ने धैर्य बधाते हुए कहा, "घबड़ाओ नहीं, राजन् ! ईश्वर की इच्छा से तुम्हारे अवश्य सन्तान होगी !"

यह कह कर योगी ने अपनी झोली में से एक फल निकाला और कहा, "इसके पांच बराबर भाग करके अपनी पांचों रानियों को खिला दो !"

राजा ने आदरपूर्वक योगी का वह प्रसाद ग्रहण किया और योगी उसी समय अन्तर्धान हो गये। घर जाकर राजा ने अपनी रानियों को वह फल खिलाया और योगी के वरदान से उसकी पांचों रानियों के एक-एक कन्या उत्पन्न हुई। मजे की बात यह रही कि पांचों कन्याओं का जन्म एक ही दिन और एक ही समय हुआ। राजा की प्रसन्नता की कोई सीमा न थी। खूब धूमधाम से उनका जन्मोत्सव मनाया गया। स्कूलों के बच्चों को मिठाइयाँ बाँटी गईं, उन्हें तमाशे दिखाये गये और नाना प्रकार की आतशबाजी छोड़ी गई सोनागढ़ की सारी प्रजा में भी बड़ी खुशी थी।

राजा ने पांचों लड़कियों के नाम रखे– कमला, विमला, निर्मला, सरला और प्रमीला। उनका पालन-पोषण राजकुमारों के समान होने लगा पांचों बहिनें एक साथ जन्म लेने के कारण आयु में तो बराबर थीं, पर प्रकृति और रुचि सबकी अलग २ थी कमला पांचों बहिनों में सबसे अधिक सुन्दर थी वह अक्सर अपनी सुन्दरता की ऐंठ में अपनी बहिनों से अकड़ मकड़ कर बोला करती थी। उसे बनने सँवरने की अधिक चिन्ता रहती थी विमला को बढ़िया और स्वादिष्ट वस्तुएं खाने का शौक था। निर्मला को लड़ना-झगड़ना और शिकार खेलना पसन्द था सरला को पढ़ना-लिखना और एकान्तवास पसन्द था प्रमीला की प्रकृति अपनी दूसरी सब बहिनों की प्रकृति से बिल्कुल भिन्न थी। उसका हृदय बड़ा कोमल था

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी का भी दुःख उससे देखा नहीं जाता था। उसका सारा समय दान-पुण्य तथा सेवा-कार्य में बीतता था।

दिन बीतते गये और दिन-प्रतिदिन राजा का बुढ़ापा उन्हें निर्बल और चिन्तित करने लगा। सभी कन्यायें चौदह वर्ष की हो चुकी थीं। सब पुत्रियों की आयु समान होने के कारण उत्तराधिकारिणी किसे बनाया जाय, यह एक जटिल प्रश्न था। राजा को सभी पुत्रियां प्यारी थीं। किन्तु यहां तो न्याय की बात थी—युवराज्ञी होना तो एक को है और अधिकार सब का समान है। कैसे निर्णय किया जाय?

पाँच बहिनें जिनका जन्म एक साथ हुआ।

बहुत सोचने के पश्चात् राजा को एक युक्ति सूझी। उन्होंने राज-पुरोहित, राज-मन्त्रियों और प्रजा के मुखियों को बुला कर सलाह-मशवरा किया। फिर अपनी पांचों पुत्रियों को राज-दरबार में बुला कर अलग-अलग बिठा दिया और उन्हें आज्ञा दी कि हरेक एक कागज पर अपनी सबसे प्यारी वस्तु का नाम लिख दे।

सभी ने पिता की आज्ञा का पालन किया। सभी ने खूब सोच-विचार कर कागजों पर अपनी अपनी प्यारी वस्तु का नाम लिख दिया। उन से कागज ले कर राजा ने उन्हें रनिवास में भेज दिया।

उन कागजों को राज-पुरोहित के आगे रख कर राजा ने कहा, 'लीजिये, आप निर्णय कीजिये कि पांचों में से कौन युवराज्ञी होने के योग्य है।"

राजपुरोहित ने ऊंचे स्वर से कागजों को पढ़ा। कमला ने लिखा था 'दर्पण'। विमला ने लिखा था 'रसगुल्ले'। निर्मला ने लिखा था 'तलवार'। सरला ने लिखा था 'विद्या' और प्रमीला ने लिखा था 'प्रजा'।

काफी विचार करने के बाद सभी ने निर्णय किया कि प्रमीला ही, जिसे प्रजा प्यारी है, युवराज्ञी बनने के योग्य है। वही व्यक्ति अच्छा शासक बन सकता है, जिसे प्रजा से स्नेह हो।

उसी दिन बड़ी धूम-धाम से प्रमीला को राजतिलक कर दिया गया। कुछ महीनों बाद राजा का देहान्त हो गया और प्रमीला राज सिंहासन पर बैठ कर प्रजा की सेवा करने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलाई की बर्फ

ठाकुर देशराज

बच्चों, गर्मियों में तुम मलाई की बर्फ (आइस-क्रीम) बड़े चाव से खाते हो। क्या खाते समय कभी यह भी सोचा है कि इसका आविष्कार कैसे हुआ? नहीं। तो यह लेख पढ़ो।

इस सम्बन्ध में अभी कोई एक मत नहीं है कि सर्वप्रथम मलाई की बर्फ का आविष्कार कहां हुआ। इंगलैंड वाले कहते हैं कि चार्ल्स प्रथम के जमाने में इसका आविष्कार हुआ था। वे अपने लिए बर्फ बनाने वाले हलवाई को २० पौंड प्रति वर्ष दिया करते थे। दूसरी तरफ इटली वालों का कहना है कि सन् १६६० ई० में इटली के पालरामो स्थान में इस का आविष्कार हुआ। लेकिन मार्कोपालो नामक एक यूरोपियन ने ६०० वर्ष पहले चीन और जापान में इसे बिकते देखा था इसलिए यह कहना तो कठिन है कि इसका सर्वप्रथम आविष्कार कहां हुआ; किन्तु इटली वालों ने इसके आविष्कार की जो कहानी प्रचलित की है, वह अवश्य युक्ति-संगत है। उनका कहना है—

इसका बनाने वाला एक हलवाई का नौकर था। उस चतुर नौकर को जब यह अनुभव हुआ कि उसकी दूकान पर आने वाले ग्राहक मीठी और ठण्डी वस्तु की मांग करते हैं, तो उसने किसी ऐसे नये पदार्थ के बनाने की मन में ठान ली, जो स्वादिष्ट, मीठा और ठण्डा हो। एक दिन उसने शर्बत में बर्फ के टुकड़े डाल दिए, जो सबेरे जमे हुए मिले। वे खाने में मीठे और ठण्डे तो थे ही, लोगों ने उन्हें खूब पसन्द किया। फिर ज्यादा बर्फ बनाने के लिये उसने दो तलों का एक सन्दूक बनाया। उसने इन दोनों तलों के बीच के भाग में बर्फ के कण और ऊपर के भाग में शक्कर मिली हुई मलाई भर दी। मलाई ठण्ड पाकर जम गई। मलाई की बर्फ बनने का इस प्रकार आविष्कार सामने आया।

कुछ दिनों के बाद वह फ्रांस चला गया और वहां उसने एक स्वतन्त्र धंधे के रूप में मलाई की बर्फ बनाने का काम आरम्भ कर दिया। फ्रांस में यह धन्धा नया था, इसलिये खूब चमका।

इसके बाद अमेरिका, इंगलैंड और दूसरे देशों में यह धन्धा फैल गया। कुछ वर्षों से हमारे देश में भी मलाई की बर्फ की कदर बढ़ गई है।

सब से अधिक मलाई की बर्फ अमेरिका में खाई जाती है। प्रत्येक घर में इसके बनाने की छोटी-छोटी मशीनें हैं। लड़ाई से पहले वहां इसके बनाने के लिए ४००० कारखाने थे, जो कि ३४,५०,००,००० गैलन प्रति वर्ष बर्फ बनाते थे। अब तो यह इससे भी कहीं अधिक बनने लगी है।

दुनिया का सबसे मोटा लड़का

यह अमरीका का निवासी है। इसका नाम है गर्बट-अर्ल ह्यूज और वजन लगभग नौ मन।

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना-शुल्क

बाल-पहेली नं० १९

२५ मई १९४९ तक सही उत्तर

आने पर पांच रुपये · नकद पुरस्कार

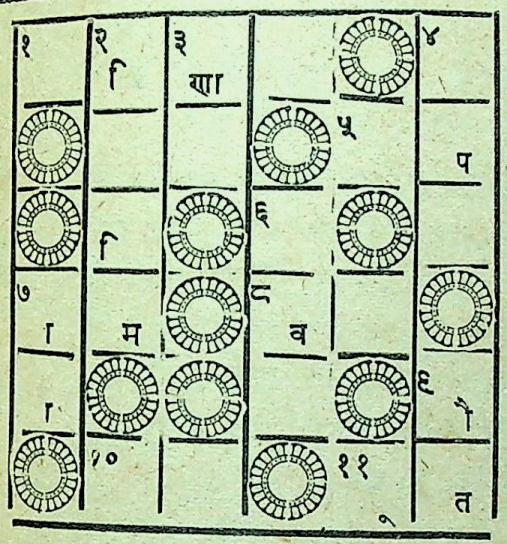
१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
ा
ा
ा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांझ स्त्रियों के लिये

मेरी शादी हुए पन्द्रह वर्ष बीत चुके थे। इस समय के बीच मैंने सैकड़ों इलाज कराये लेकिन कोई सन्तान पैदा न हुई। सौभाग्य वश मुझे एक वृद्ध महा पुरुष से निम्न लिखित नुस्खा प्राप्त हुआ। मैंने उसे बना कर सेवन किया। ईश्वर की कृपा से नौ मास बाद मेरी गोद में बालक खेलने लगा। इसके पश्चात् मैंने जिस सन्तान हीन बहन को इसका सेवन कराया उसी की आशा पूरी हुई। अब मैं इस नुस्खे को सूची-पत्र द्वारा प्रकाशित कर रही हूं ताकि मेरी निराश बहनों की आशा पूर्ण हो।

औषधि तन्त्र ये हैं—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नैपाल गवर्नमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारी दक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम से कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कढियारी सफेद की जड़ (यानी सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घण्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर बंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें। इसके सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति —गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातःकाल और सायंकाल एक एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट — औषधि तन्त्र के अंदर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अंदर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

मेरी सन्तान हीन बहिनों,

आप इसे बे गुण औषधि न समझें। यदि आप बच्चे की माता बनना चाहती हैं, तो इसे बनाकर जरूर सेवन करें। मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि इसके सेवन से आपकी अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। यदि कोई बहन इस औषधि को मेरे हाथ से ही बनवाना चाहें तो पत्र द्वारा सूचित करें। मैं उन्हें औषधि तैयार करके भेज दूंगी। एक बहिन की औषधि पर पांच रुपये बारह आने। दो बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने और तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आना खर्च आता है। महसूल डाक वगैरह बारह आने इससे अलग है।

नोट — जिस बहिन को मेरे पर विश्वास न हो वो मुझे दवा के लिए हरगिज न लिखें।

रतनबाई जैन (४४) सदर बाजार थाना रोड, देहली।

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असली पुराना 'मिश्र का जादू' सचित्र रङ्गीन सम्पूर्ण

(मिश्र देश के जादू, विद्या की हस्तलिलित पुस्तक का अनुवाद)

[१] वशीकरण [२] सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनिआदि प्रत्येक ग्रह का वशीकरण और अन्य सब चीजों के वशीकरण, बड़े बड़े मुकदमें जीतना व चोरी पकड़ना हर तरह के साधन रोगों पर दम करना, चाहे कोई रोग हो और औषधी से लाभ न होता हो। घर बैठे दूर देशों की सैर करना, पवन में उड़ते फिरना, जिस को चाहें बश में कर लेना नजर से गुप्त हो जाना दूसरे रूप में प्रकट होना, दूर दराज की वस्तुयें मंगवा लेना, जेब, परी, जिन्नों और शत्रुओं को अधिकार में रख कर इच्छानुसार काम लेना आदि ऐसे गुप्त भेद दर्ज हैं जिनको साधु, महात्मा ऋषि मुनि भी न पा सके। इस से बढ़ कर आप को और कोई पुस्तक नहीं मिल सकती। यदि पुस्तक लिखे अनुसार न हो तो वापिस कर दो कीमत सजिल्द २॥) डाक खर्च ॥=) कुल ३=)।

१०००) रु० महावार शर्तिया कमा लो (अर्थात् खजाना रोजगार)

इस पुस्तक में ५२८ हुनर छपे हैं। चाहे कोई सा एक हुनर अपने मतलब का चुन लें और उससे १०००) महावार कमावें। किसी उस्ताद की जरूरत नहीं। गिलटसाजी, फोटोग्राफी घड़ीसाजी, दंदानसाजी, रबड़ की मुहरें। आतिशबाजी, साबुन, बाल काले करने के अंग्रेजी खिजाब बाल उम्र भर न उगने की दवा बनाना, मोम बत्ती, गंधक के गिलास, शीशा जोड़ना, इत्र तेल, फुलेल अंग्रेजी खाने, बिस्कुट मिठाई अचार, मुरब्बे, चटनियाँ सब रोगों के इलाज और १०८ बीमारियों की एक दवा अमृत का नुस्खा आदि ५२८ हुनर छपे हैं शीघ्र मंगा लें। रियायती मूल्य १॥) डाक खर्च ॥=) अलग।

फिरंगी और हिन्दुस्तानी मदारी अर्थात् भानमती का पिटारा

यह पुस्तक यौरुप और हिन्दुस्तानी मदारियों का पिटारा है। इसमें अंडे, बोतल, गिलास, फुलझड़ी, रुपया, ताश का खेल, भूत प्रेत जिन्न उतारना, अंधेरे में रोशनी कर देना मुंह से आग निकालना, हाथ पर आग रखें तो हाथ न जले, मनुष्य को कत्ल करके जिंदा कर देना आम का बूटा, सरसों हाथ पर जमाना, बिना भट्टी जुआर, चने भून देना, आग पर खाना न पके, बंधे मनुष्य को छुड़ाना, कागज की कढ़ाई में पकौड़े तलना, कमरे में हरे रंग की रोशनी हो, जादू की स्याहियों के नुस्खे जिन से लिखा हुआ अन्य मनुष्य पढ़ न सकें और सैंकड़ों तमाशे बहुत ही सरल रीति से लिखे हैं मूल्य सजिल्द १॥) डाक खर्च ॥=) अलग।

यक्षिणी भैरव साधनम्—इस पुस्तक में नाना प्रकार के चमत्कार यंत्र मंत्र आदि विषय हिन्दी भाषा में लिखे गये हैं। जिन से विद्वान तथा अल्प पठित पुरुष भी अपनी मनोकामना पूरी कर सकते हैं। योग विद्या वर्णन, यक्षिणी तथा शिव विष्णु ब्रह्मा सूर्य, चन्द्र भैरव महावीर आदि देवताओं को सिद्ध प्राप्तकर के अपनी आशाएं पूर्ण होती हैं। कीमत २॥) डाक खर्च ॥=) अलग।

खुफिया फोटो वाला एकान्त में बैठ कर पढ़ने योग्य सम्पूर्ण

असली, सचित्र कोक-शास्त्र, रंगीन

असली मूल्य ५)। रियायती की २॥) डाक खर्च ॥=) अलग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(M. M. H.) सदर बाजार देहली।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनों

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं, और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिकधर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी। मुझे मासिक धर्म खुल कर न आता था। अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन कमजोर होती जा रही थी, चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की मशहूर औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से भी रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महात्मा हमारे दरवाजे पर भिक्षा के लिये आये। मैं दरवाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रंग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पतिदेव को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुःखी बहिनों की भलाई के लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखें। मैं उनको अपने हाथ से औषधि बना कर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवाई तैयार करने पर २॥।=) दो रु० चौदह आने असल लागत खर्च होता है और महसूल डाक अलग है।

* जरूरी सूचना *

मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है। इस लिये कोई बहन मुझे और किसी रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, (३०) बुडलाडा, जिला हिसार पंजाब।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड

आज इस प्रकाशन संस्था के तत्वाधान में

दैनिक वीर अर्जुन — साप्ताहिक वीर अर्जुन सचित्र
मनोरंजन मासिक — विजय पुस्तक भण्डार

अर्जुन प्रेस

संचालित हो रहे हैं। यह प्रकाशन संस्था सुदृढ़ आर्थिक स्थिति की है।

अधिकृत पूंजी ५,००,००० **प्रस्तुत पूंजी २,००,०००**

गत वर्षों में इस संस्था की ओर से अपने भागीदारों को अब तक इस प्रकार लाभ बांटा जा चुका है।

सन् १९४४	१० प्रतिशत
सन् १९४५	१० प्रतिशत
सन् १९४६	१५ प्रतिशत

१९४७ में कम्पनी ने अपने भागीदारों को १० प्रतिशत लाभ दिया है!

आप जानते हैं ?

* इस कम्पनी के सभी भागीदार मध्यम वर्ग के हैं और इसका संचालन उन्हीं लोगों द्वार होता है।
* 'वीर अर्जुन' वर्ग के पत्रों की सम्पूर्ण शक्तियां अब तक राष्ट्र की आवाज को सफल बनाने में लगी रही हैं।

आपभी इस संस्था के भागीदार बन सकते हैं।

और

* इस प्रकाशन संस्था के संचालक वर्ग में सम्मिलित हो सकते हैं।
* राष्ट्र की आवाज को सबल बनाने के लिए इन पत्रों को और अधिक मजबूत बना सकते हैं।
* अपने धन को सुरक्षित स्थान में लगा कर निश्चिन्त हो सकते हैं।
* आप स्थिर आय प्राप्त कर सकते हैं।

इस संस्था का प्रत्येक शेयर दस रुपये का है। आप भागीदार बनने के लिये आज ही आवेदनपत्र की मांग कीजिये।

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लिमिटेड,

श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

प्रिंटर पब्लिशर श्री पुरुषोत्तम शर्मा द्वारा अर्जुन प्रेस देहली से छप कर प्रकाशित।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० — डी० १७३

लम्बी यात्राओं में

डनलप
जायण्ट

TRADE MARK

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ जून १९४९ ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harid

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय पुस्तक भण्डार से उपलब्ध कथा-साहित्य

आपकी चिर प्रतीक्षित उपन्यास

शाह आलम की आँखें

[ले०—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

पुनः प्रकाशित हो गया

* इसका प्रथम संस्करण तीस वर्ष पूर्व छपा था, पर आज भी इसकी मांग ज्यों की त्यों है।
* इस उपन्यास की कथा का आधार ऐतिहासिक है जो कि सत्य है। इसलिये इसे पढ़ते समय वास्तविक घटनाचक्र सामने उपस्थित हो जाता है।
* उपन्यास की भाषा ओजपूर्ण है और कथानक बहुत ही रोचक है।
* पुस्तक की मांग बहुत अधिक है इसलिए अपनी कापी आज ही मंगा लें।

मूल्य केवल ३) सवा तीन रुपये।

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण होने तक आपको पतीक्षा करनी होगी। मूल्य २)

जमींदार

[ले०— श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

रोचक उपन्यास की द्वितीयावृत्ति

(प्रेस में)

सम्राट विक्रमादित्य (नाटक)

[ले०—विराज]

उन दिनों की रोमांचकारी तथा सुखद स्मृतियां, जब कि भारत के समस्त पश्चिमोत्तर प्रदेश पर शकों और हूणों का बर्बर आतंक राज्य छाया हुआ था; देश के नगर नगर में द्रोही विश्वासघातक भरे हुए थे जो कि शत्रु के साथ मिलने को प्रतिक्षण तैयार रहते थे। तभी सम्राट् विक्रमादित्य की तलवार चमकी और देश पर गरुड़ध्वज लहराने लगा।

आधुनिक राजनीतिक वातावरण को लक्ष्य करके प्राचीन कथानक के आधार पर लिखे गये इस मनोरंजक नाटक की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें।

मूल्य १॥), डाक व्यय ।=

नया आलोक : नई छाया

[श्री विराज]

रामायण और महाभारत काल से लेकर आधुनिक काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन।

मूल्य २) डाक व्यय पृथक्।

मैं भूल न सकूं

[सम्पादक श्री जयन्त]

प्रसिद्ध साहित्यिकों की सच्ची कहानियों का संग्रह। एक बार पढ़ कर भूलना कठिन।

मूल्य १) डाक व्यय ।-)

प्राप्ति स्थान—विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

T. B. टी० बी० तपेदिक और पुराने बुखारों की मशहूर दवा

'जबरी' पर भारत के कोने-कोने से प्रशंसापत्रों की झड़ी

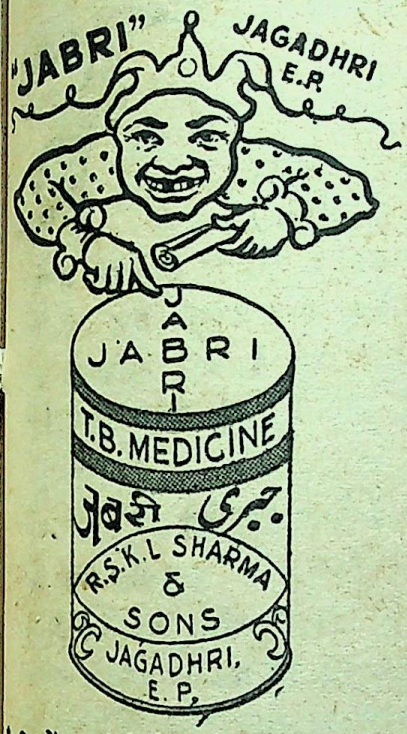

१ लाला काशीप्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहबाद) २ बा० मुन्नालाल स्टोर कीपर सिमभाली शूगर मिल पो० बक्सर जिला मेरठ। ३ बा० रामसिंह घर नं० ६१ रीठा मण्डी देहरादून। ४ श्री तोसल-हुसेन रईस मुकाम मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जिला फैजाबाद ५ डा० ठाकुरसिंह नेपाली मुकाम कटैया पोस्ट हरलखी जिला दरभंगा। ६ श्री राव खलावन राम भीखूराम पो० बाजार गुसांई जिला आजमगढ़। ७ श्री लीलधर कापरी आर० सी० वार्ड सेनोटोरियम भवाली (नैनीताल)। ८ श्री लीलाधर चौधरी लायब्रेरियन काटन मार्केट नागपुर। ९ पं० चन्द्रमणि पाण्डे मु० कुरेहरा पोस्ट मेहनाजपुर (आजमगढ़) १० श्री नत्थूसिंह सोलका कम्पाउण्डर गवर्नमेंट होसपिटल महेश्वर (इन्दौर)। आदि आदि सैकड़ों सज्जनों का कहना है कि यथार्थ में 'जबरी' दवा नहीं बल्कि रोगी को काल के गाल से बचाने वाली ईश्वरीय शक्ति है। ऊपर जिन सज्जनों के पूरे पते दिये गये हैं आप जिस से भी चाहें पूछ कर तसल्ली कर सकते हैं। फिर हमने तो परीक्षार्थ दस दिन का नमूना भी रख दिया है जिसमें तसल्ली हो सके। यदि आप सब तरफ से निराश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार 'जबरी' की परीक्षा अवश्य करें।

T. B. टी. बी तपेदिक व पुराने ज्वर के हताश रोगियो,

अब भी समझो अन्यथा फिर वही कहावत होगी—'अब पछताय होत है क्या, जब चिड़ियां चुग गईं खेत' इस लिए तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। सैकड़ों हकीम, डाक्टर, वैद्य अपने रोगियों पर अखबार करके नाम पैदा कर रहे हैं, और तार द्वारा आर्डर देते हैं। तार आदि के लिए हमारा पता केवल 'जबरी जगाधरी' (JABRI Jagadhri) लिख देना ही काफी है। तार से यदि आर्डर दें तो अपना पूरा पता लिखें। मूल्य इस प्रकार है—

'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ाने के सोना, मोती अभ्रक आदि की मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं। मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु० नमूना दस दिन के लिए २०) रु०। 'जबरी' नं० २ जिसमें मूल्यवान जड़ी-बूटियां हैं, पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग। आर्डर में पत्र का हवाला तथा नम्बर पता साफ-साफ लिखें। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिए मूल्य आर्डर के साथ भेजें। यदि पार्सल हवाई डाक (Air Mail) से मंगाना हो तो २) खर्च अधिक भेजें।

पता—रायसाहब के० एल० एन्ड सन्स

रईस एण्ड बैंकर्स (M) जगाधरी (E. P.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Ha

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जादूगरी के अनोखे चमत्कार

इनको दिखाने के लिए किसी सिद्धी की आवश्यकता नहीं। विधि पूरी सहित पहले कोई भी 'शो' करके देख लीजिये। या बहुत से प्रशंसा-पत्र व सूची-पत्र मंगा कर पढ़िये।

रहस्य मय मार्चिस

दियासलाइयों की एक भरी डिब्बी रूमाल के नीचे रख पहले डिब्बी का खाली खोल बाहर निकाल लिया जाता है फिर खाली दराज भी। इसके बाद किसी दर्शक से रूमाल के नीचे से कुछ सींकें लाने को कहा जाता है। उसके निष्फल यत्न पर सब हंस पड़ते हैं, क्यों कि वहां कुछ भी नहीं निकलता।

आ क र्ष ण

यह यन्त्र एक अद्भुत और विलक्षण दृश्य उपस्थित कर देगा। आप किसी से छड़ी या छाता मांगें और पृथ्वी पर खड़ा कर उसे यों ही छोड़ दें। छाता खड़ा का खड़ा रह जाएगा जिसे देख सब दांतों तले उंगली दबा लेंगे। इतना ही नहीं आपके इशारे से वह वस्तु हिलेगी तथा रुकेगी भी। सब हैरान हो जायंगे

स्वतन्त्र पैसा

दर्शक अपना एक छेद वाला पैसा (कुण्डल) एक साधारण डोरी में पिरो कर दोनों सिरे मजबूती से पकड़ लेता है। परन्तु जादूगर एक दम पैसा निकाल कर दिखा देता है और दर्शक के हाथ खाली डोर रह जाती है पैसा दर्शकों को दे दिया जाता है।

मैजिक सिगरेट

पहले आप अपनी सारी उंगलियां फैला कर दोनों हाथ खाली दिखाइये और फिर हवा में से दर्जनों असली सिगरेटें एक एक कर पकड़ते चलिये तत्पश्चात् एक दम जब आप चाहें तुरन्त सब को हवा में उड़ा दीजिये। इस खेल को प्रदर्शित कर आप 'सिद्ध' कहलाने लग जायेंगे।

विधि सहित चारों खेलों का मूल्य नौ रुपया ९) डाक व्यय अलग

प्रशंसा पत्र पढ़िये

राधारमण जोशी मुलताई (सी. पी.)

बिलकुल ही नई और विचित्र चीज है तथा सरल है। सभ्यता के स्थल पर यही कहा जायगा कि पत्रिका की विज्ञप्ति में दिये हुए शब्दों से कई दर्जे अधिक हैं कम का तो नाम ही नहीं है मैं जितनी भी प्रशंसा करूं थोड़ी ही सिद्ध होगी।

बालमुकन्द स्वर्णकार रावलगली बलोतरा (मारवाड़)

"बहुत ही आला है जिन की प्रशंसा करना हमारी हद के बाहर है और क्या कहूं आज यहां के लोग मुझे बहुत चाहते हैं व मेरा नाम, गांव वालों ने जादूगर जी रखा है।

पूरी विधि सहित कुल सामान का मूल्य, दस रुपया आठ आना।

मोहनी भण्डार रजिस्टर्ड [M. H. D.] देहली।

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ ★ ★ ८००० रु० नकद इनाम ★ ★ ★

पहिला इनाम—ठीक हल के लिए ६००० रु० (जो एक से अधिक हल ठीक होने पर बराबर बांट दिया जावेगा)। **दूसरा इनाम**—सबसे अधिक हलों के लिये १००० रु०। **तीसरा इनाम**—सबसे पहिले ठीक हल भेजने वाले के लिये १००० रु०।

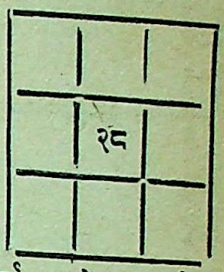

हल क्या करना है ? सामने दिये हुए नौ खानों में १०० तक के कोई से अङ्क इस भाँति से भरिये कि जिस ओर से भी जोड़ें, उत्तर ८४ हो। एक अङ्क एक ही बार लिखा जा सकता है। **दाखला फीस**—एक रु० प्रति हल।

नियम—हर एक आदमी एक या एक से अधिक जितने हल चाहे सफेद कागज पर एक रुपया प्रति हल के हिसाब से फीस के साथ भेज सकता है। फीस दाखला मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा भेजनी चाहिये। मनीआर्डर की रसीद हलों के साथ आनी चाहिये अथवा ऐसा हो सकता है कि आपके हल मुकाबले में सम्मिलित न हो सकें। सही हल वही समझा जावेगा जो हमारे मुहरबन्द हल के साथ जो सम्पादक महोदय के पास रखा गया है, खाना दर खाना मिलेगा। इनामी नतीजे की कापी के लिये दो आने के टिकट और अपने पते का लिफाफा भेजें। इनाम की रकम दाखला फीस की आई हुई रकम के अनुसार कमी बेशी हो सकती है पर सही हल के इनाम की कम से कम ५० रु० की गारण्टी है। हलों के रास्ते में खो जाने या डाकखाने के कारण देर पहुँचने के हम जिम्मेवार न होंगे। प्रवेश फीस किसी अवस्था में वापिस न होगी। मैनेजर साहिब पहेली का फैसला कानूनी व हर प्रकार से मानने योग्य होगा। हर मामले का फैसला देहली ही होगा। अपना पता हलों पर व मनीआर्डर कोपन पर साफ लिखें, हल ५ जौलाई तक डाक में डाल देने चाहिये। इसके पश्चात् भेजा हुआ कोई हल स्वीकृत न किया जावेगा सही हल १५ जौलाई को प्रकाशित कर दिया जावेगा।

ई० टी० एण्ड कम्पनी, पोस्ट बैग नं० ५२ ए०, दिल्ली। E T & Company Post Bag No 52 A Delhi.

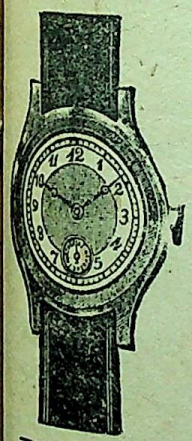

१०,०००) रुपये की घड़ियाँ

मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन से बाल काले हो जाते हैं। और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामी जी की ओर से लाजवाब तोहफा है। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता, उनको लम्बे, घुघँरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आँखों की रोशनी तेज करता और सिर को ठन्डक पहुँचता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत १ शीशी २॥) रु०। तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६॥) रु०। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिये हर शीशी के साथ एक फेन्सी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती हैं। तीन शीशी के खरीददार को डाक खर्च माफ और चार न्यू घड़ियां व चार अंगूठियां (लन्दन न्यू गोल्ड) बिलकुल मुफ्त दी जाती हैं।

जनरल नावल्टी स्टोर [M. H. D.] DELHI।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय वर्ष
संख्या ६

मनोरंजन
दिल्ली

जून
१९४९

व्यवस्थापक
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

सम्पादक
श्री चिरंजीत

इस अंक में

कहानी

लीलारूप	श्री देवेन्द्र सत्यार्थी	५
....के मुख से	श्री आनन्द प्रकाश जैन	१८
कोई नहीं !	श्री सुबोधकुमार चक्रवर्ती	२२
टौस	श्री बंसीलाल यादव	२६

लेख

कांग्रेस में वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास (६)	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति	१४
कविता—राजनैतिक और वैज्ञानिक युग में	कविवर श्री 'दिनकर'	२१
दूसरों को विचारानुकूल बनाने की ११ रीतियां	श्री रामचरण महेन्द्र	३३

कविता

क्या तुम मुझको याद करोगी ?	श्री 'अंचल'	१२
दो गीत	स्व० श्रीमती सरला सेवक	१७
गीत	श्री 'तन्मय' बुखारिया	२५
गीत	श्री 'नीरव' एम० ए०	३२

विशेष स्तम्भ

हास-परिहास	३७	नव प्रकाशन	४१
सलोनी-दुनिया	४५	रेडियो	४६
फुलझड़ियां	५७	बाल-मनोरंजन	५८

मूल्य आठ आना

वार्षिक मूल्य ५॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

लीलारूप

अब तो लीलारूप के नाम से भी मेजर आनन्द को नफरत हो गई है; पर एक वह समय भी था, जब लीलारूप का नाम सुनते ही मेजर आनन्द की रगों में नया लहू नाचने लगता था, जैसे लीलारूप का नाम उनकी मां ने लोरियों में गा-गा कर अमृत की तरह उनके जीवन की कटोरी में घोल दिया था। लीलारूप—सौ नामों का एक नाम! जैसे एक साथ सौ-सौ घुंघरू छनक जायं, एक साथ सौ-सौ पायलें बज उठें—ऐसा था लीलारूप का नाम। मेजर आनंद को खूब याद था कि उन्होंने सपनों का महल बनाया था। लीलारूप के नाच-गाने इस महल की ईंट-पत्थर थे। उन दिनों सचमुच उनका यही खयाल था कि कुछ ही वर्षों में लीलारूप का नाम बच्चे-बच्चे की जबान पर होगा। हर कहीं लीलारूप का सिक्का चलेगा। पर लीलारूप का इतना अच्छा भाग्य कहां था? मेजर आनन्द ने अपने हाथों से उसका गला घोंट डाला। सचमुच ऐसा करने के लिए वे मजबूर ही तो हो गये थे।

लेखक—
श्री देवेन्द्र सत्यार्थी

थकी-थकी आँखों को दाएं हाथ की उंगलियों से मसलते हुए मेजर आनन्द को क्रोध आने लगता है। मैं लाख कहता हूँ कि भले आदमी, थोड़ा सो लो। वे कहते हैं, सोने से कौन-सा स्वर्ग हाथ आ जायगा? उनका शरीर अकड़ने लगता है। सब से अधिक उन का दिल अकड़ता है, जैसे वह किसी पुस्तक का पुश्ता हो और जिल्दसाज ने उस पर सरेस लगा कर उसे सुखा दिया हो। अब यह सरेस उतरने का नहीं। दिल यों ही अकड़ा रहेगा। मैं कहता हूँ—भले आदमी, लीलारूप को सम्भाल कर रखा होता। अफसोस, उस समय मैं न हुआ। मैं तुम्हारे पास होता, तो प्राणों की बाजी लगा देता। मेजर आनन्द के माथे पर त्योरी और भी फैलने लगती है। भई वाह, मैं कहता हूँ, लीलारूप के कहकहे तो आज भी तुम्हारी रूह पर छाये हुए होंगे। मेजर आनन्द और भी सुकड़ने लगते हैं, जैसे वे लीलारूप को अपने जीवन के सब से बड़े भेद के रूप में छुपा कर रखने का फैसला कर चुके हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफल कहानी की एक विशे-
षता यह भी है कि वह कल्पित होते
हुए भी सच्ची जान पड़ती है।
'लीलारूप' एक ऐसी ही कहानी
है — केवल कहानी। लगता है,
जैसे मेजर आनन्द कोई जाना-पहि-
चाना व्यक्ति हो।

सोचता हूँ, लीलारूप की नर्तकियों की कोमल-कोमल चुहलें आज भी मेजर आनन्द की कल्पना को छू-छू जाती होंगी। उनके पाउडर-सुर्खी से लैस चेहरे बिजली के प्रकाश में कितने सुन्दर और मोहक लगते होंगे! जैसे एक-एक नर्तकी नई-नवेली दुलहन हो! मैं पूछना चाहता हूँ—कहो मेजर आनन्द, क्या इतना भी नहीं बताओगे कि उन नर्तकियों में सब से सुन्दर नर्तकी कौन-सी थी? क्या उस की पायल की झंकार तुम्हारी रूह में रींग कर हजारों नब्जों की तरह फड़-फड़ाती नहीं?

मेजर आनन्द के व्यक्तित्व का मुझ पर बहुत दिनों से रोब है। सोचता हूँ, वे लीलारूप की कहानी को कब तक दुनिया से छुपा कर रखेंगे? मैं कहता हूँ—मेजर आनन्द, यह ठीक है कि बग्घी के घोड़े आगे बढ़ रहे हैं, पर कभी-कभी जब घोड़े आगे बढ़ने से इन्कार कर देते हैं और चाबुक खाने पर भी बजाय आगे बढ़ने के उलटे कदमों चलने लगते हैं या एकदम अड़ जाते हैं और अगली टांगें उठा कर पिछली टांगों पर खड़े हो जाते हैं, उस समय कहानी को मजबूर हो कर पीछे की ओर देखना पड़ता है।

"हां हां," मेजर आनन्द कह उठते हैं, "पर ऐसे अवसर सदा तो नहीं आते।"

"तो आसाम की पूरी कहानी क्यों नहीं सुना डालते?" यह कहते मैं जरा भी तो नहीं झिझकता।

"ऊँह! आसाम की कहानी सुनाने का यह कौन-सा मौसम है?"

"अच्छा, मत सुनाइए।"

"आराम से सुनायेंगे कभी आसाम की पूरी कहानी। ऐसी भी क्या जल्दी है।"

बात इससे आगे नहीं बढ़ने पाती। जाने वह मौसम कब आयेगा, जब मेजर आनन्द अपने मुंह से आसाम की पूरी कहानी सुनायेंगे? बहुत से लेखक उन दिनों उसी मूल्य पर बिक गये थे, जिस पर मेजर आनन्द ने बिक जाना स्वीकार कर लिया था। पहले कैप्टन, फिर मेजर। समय-समय की बात है। आनन्द को यह तरकीब सूझ गई। मैं मुँह फेर कर अपनी तंग-सामानी से चिपटा रहा; नहीं तो मैं भी आसाम के मोर्चे पर गया होता और उन्नति करते-करते मेजर आनन्द से भी आगे निकल गया होता।

मेजर आनन्द का रंग न गोरा है, न सांवला। गेहूँ और जौ के रंग एक साथ उभरते हैं। शरीर कुछ भारी है। पर सबसे ज्यादा रोब उनके कद का ही समझना चाहिए। इधर मैं भी तो उनसे कुछ कम ऊँचा नहीं। वह तो खैर आसाम में पहली बार गये, मैं तो वर्षों पहले पूरे आसाम की धरती को अपने पैरों से नाप चुका था। शायद इसीलिए आसाम का जिक्र आते ही मेजर आनन्द अर्थभरी नजरों से मेरी ओर देखने लगते हैं।

"आसाम का प्राचीन नाम है कामरूप," मैं मानों चाक से काले बोर्ड पर लिखने के अन्दाज में कह उठता हूं।

"बहुत ठीक। पर कामरूप का अपना शानदार इतिहास है," मेजर आनन्द भी किसी हैडमास्टर की तरह कहते चले जाते हैं, "इसे केवल जादू और टोने-टोटके का देश मत समझिए। इसी आसाम यानी कामरूप में मणिपुर है, जहां की वीरांगना राजकुमारी चित्रांगदा ने अर्जुन से विवाह किया था। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने चित्रांगदा की कहानी को अपने संगीतरूपक में अंकित किया है। मणिपुरी नृत्य की भी सबसे पहले रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने ही प्रशंसा की थी। उदयशंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने मणिपुरी नृत्य को दुनिया भर में विख्यात कर दिया। हमारे लीलारूप में मणिपुरी नृत्य को विशेष स्थान दिया गया था।"

लीलारूप और मणिपुरी नृत्य—एक साथ सौ-सौ घुँघरू बज उठते हैं। पर मेजर आनन्द आगे नहीं बढ़ते, जैसे ताले को खोल कर फिर से बन्द कर दिया जाय। अरे भई, चुप क्यों हो गये? लीलारूप का प्रकाश क्या इतना अधिक था कि आज उस के ख़याल ही से तुम्हारी आंखें चुंधिया जाती हैं?

"ब्रह्मपुत्र की लहरों ने क्या सन्देश दिया था?" मैं बढ़ावा देता हूँ।

"ब्रह्मपुत्र की लहरें मेरी कल्पना को छू-छू जाती हैं।"

"क्या कहती हैं ब्रह्मपुत्र की लहरें?"

"कहती हैं, तुम आये और चले गये और मेरे लीलारूप को भी साथ लेते गये।"

राजनर्तकी कभी आंधी की तरह नाचती होगी, कभी सागर की लहरों की तरह।

जैसे टिकी हुई रात में कोई बांसुरी पर पहाड़ी धुन बजा रहा हो और पास से कोई घुँघरू अलग छनक उठे। इसे मैं लीलारूप का जादू समझता हूँ, जिसे मेजर आनन्द जहाँ तक हो सके, छुपाकर रखना पसन्द करते हैं। पर लीलारूप का नाम उनकी जबान पर आ ही जाता है।

आसाम का जिक्र आते ही मेजर आनन्द के चेहरे की रेखाएँ गहरी होने लगती हैं। उनके चेहरे पर बेचैनी और परेशानी झलकती है। ऐसा मालूम होता है कि आसाम ने उनके हृदय और मस्तिष्क को एक चक्कर दे दिया हो।

उनकी गोल-गोल गहरी चमकीली आँखों की झीलों में मैं लीलारूप का प्रतिबिम्ब देखने का यत्न किया करता हूँ। घनी भौंहों के नीचे से अपनी पलकों को उठा कर वे कुछ इस अन्दाज से दायें हाथ की मुट्ठी भींच कर अपनी आगे बढ़ी हुई ठोढ़ी के समीप लाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, जिस से झट यह खयाल आने लगता है कि आसाम के मोर्चे पर मेजर आनन्द ने थोड़ी बहुत वीरता तो अवश्य दिखाई होगी। पर फिर जब लीलारूप का ध्यान आ जाता है, तो सोचता हूं कि मणिपुरी नृत्य में उन्हें उस नृत्य की झलक नजर आ गई होगी, जो उनकी आत्मा में रम चुका था, जिस में वसन्त के फूल खिल उठते हैं, जिस में रूप और यौवन अंगड़ाइयां लेते हैं।

"लीलारूप को तो आज भी जारी रहना चाहिए था," मैं कह उठता हूं।

"लीलारूप ही को क्यों?" मेजर आनन्द तान तोड़ने के अन्दाज में कहते हैं, "और बहुत-सी चीजों को भी तो जारी रहना चाहिए था।"

"लीलारूप को जारी क्यों न रखा जा सका?"

"कुछ ऐसी ही बात हो गई थी।"

"लीलारूप को जितनी दाद मिलनी चाहिए थी, उतनी दाद नहीं मिली होगी।"

"प्रायः जीवन में ऐसा ही होता है।"

"तो लीलारूप को बन्द करते समय आप को अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ी।"

"यही समझ लीजिए।"

"पराजय की स्वीकृति में वेदना की अभिव्यक्ति को आप ने कैसे छुपाए रखा?"

"अब इसके बारे में क्या कहा जाय!"

"जैसे कोई जलते दिये को फूंक मार कर बुझा दे, ऐसे ही आप ने लीलारूप को बन्द कर दिया। इस भूल के लिए आप को कभी क्षमा नहीं किया जा सकता!"

"जब जीवन में बेपनाह खोखलापन हो, कोई लीलारूप कैसे जीवित रह सकता है?"

"पर यदि हमें जीवित रहते हुए जीवन का कोई अर्थ प्रस्तुत करना हो, तो लीलारूप आवश्यक है—लीलारूप जो जीवन को धुंधली और व्यर्थ की समस्याओं की दलदल में गिरने से बचाये।"

"पर दुनिया है कि किसी लीलारूप की भी रिआयत नहीं करती।"

"आखिर दुनिया के सम्मुख तो अपनी ही मसलहत रहती है ना।"

"लीलारूप को बन्द करने में दुनिया को क्या मसलहत सूझी होगी?"

इसके उत्तर में मेजर आनन्द खामोश रहते हैं। सोचता हूं, ऐसी भी क्या खामोशी कि जिस में इन्सान डूबता चला जाय। आसाम जाने से पहले भी मेजर आनन्द बहुत कम बातचीत करते थे। सामने से आप पांच बातें कह जायेंगे और पांच बातों के उत्तर में उनकी यही कोशिश रहेगी कि उनकी एक ही बात भारी रहे। मुझे याद है, मैंने कई अवसरों पर उनसे साफ-साफ कह दिया था कि इस प्रकार की श्रेष्ठता की भावना उनकी सफलता में हमेशा एक न एक रोड़ा अटकाती रहेगी। वे सामने से थोड़ा मुसकरा छोड़ते, जैसे कह रहे हों—मेरी सफलता का ठेका तुमने कब से ले लिया? अब इसका मैं क्या उत्तर देता? आसाम से लौट कर तो वे और भी खामोशी-पसन्द हो गए हैं। बड़ी तरकीब से उन्हें जबान खोलने पर मजबूर करना पड़ता है।

जब मेजर आनन्द आसाम से लौटे, मैं अपने गांव में बीमार पड़ा था। पूरे सात मास तक लीलारूप के प्रोग्राम जारी रहे। आज देहरादून, कल मसूरी। इस तरह देश के विभिन्न नगरों में लीलारूप के नाच-गाने देखने और सुनने वालों को मस्त करते रहे। मुझे उस समय पता चला, जब लीलारूप खत्म हो रहा था और मेजर आनन्द ने फिर से रेशम के कीड़े की तरह अपने चारों ओर खामोशी का जाल बुनने का फैसला कर लिया था। यह भी एक मित्र के पत्र से पता चला, नहीं तो मुझे शायद कानोंकान इसकी खबर तक न मिलती।

मैं बिस्तर पर पड़ा-पड़ा सोचता कि लीलारूप की नर्तकियां कहां होंगी? शायद सबसे सुन्दर नर्तकी को राजनर्तकी का नाम दिया गया हो। सांचे में ढले-ढलाये शरीर वाली वह नर्तकी कभी आंधी की तरह नाचती

[मनोरञ्जन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी, तो कभी सागर की लहरों की तरह। लीलारूप में सभ्यता की महानता और शताब्दियों की मुस्कराहटें एक साथ गले मिलती होंगी—मानवता के दुख-दर्द पहचानने वाली मुस्कराहटें!

बिस्तर पर पड़े-पड़े मैंने मेजर आनन्द को पत्र लिखा, जिसमें बड़े जोरदार शब्दों में इस बात पर जोर दिया कि काश, लीलारूप के सम्बन्ध में जो अफ़वाह उड़ रही है, वह निराधार हो! मुझे याद है, मैंने लीलारूप के शानदार भविष्य की कल्पना प्रस्तुत की थी। मैंने यह भी लिखा था कि लीलारूप के सुन्दर, शानदार और भरपूर जीवन के नाच-गाने कला के शिखरों को उजालते चले जायेंगे। अन्धेरे से फूटती हुई स्वतन्त्रता की किरणें अब किसी के रोके रुकने की नहीं। जहां तक जीवन और कला की महानता का प्रश्न है, लीलारूप देश के इतिहास में एक नये अध्याय की वृद्धि करेगा और आगे बढ़ कर सबसे पहले लीलारूप की स्वतन्त्रता का स्वागत करेगा। पर मेजर आनन्द ने मेरे पत्र का कोई उत्तर न दिया। उनकी इस खामोशी से मेरे मन को दोहरी चोट लगी।

स्वस्थ होते ही मैंने यात्रा की ठान ली। घर वालों ने बहुत कहा कि कुछ दिन आराम किया जाय; लेकिन मुझे अब और रुकना स्वीकार नहीं था। देहरादून पहुँचते ही लेखकों की एक गोष्ठी में मेजर आनन्द से भेंट हो गई। गोष्ठी के पश्चात् सड़क पर खड़े-खड़े मैंने उनसे शिकायत की कि उन्होंने मेरे पत्र का उत्तर क्यों नहीं दिया था?

बोले, "यहां तो अपना भी होश नहीं।"

"अब तो होश है ना?" मैंने पूछ लिया।

"लीलारूप का कोई नाच-गाना सुने बगैर ही तुमने लीलारूप की प्रशस्ति लिख भेजी। अब मैं इसका क्या उत्तर देता?"

"लीलारूप को यों खत्म कर दिया जायगा, इसका मुझे कभी सन्देह तक न हुआ था।"

"लीलारूप के पश्चात् भी संसार कायम है। खैर, छोड़िये लीलारूप की गाथा को।"

"लीलारूप कभी खत्म नहीं हो सकता, मेजर आनन्द!"

"वह कैसे?"

"वह ऐसे कि लीलारूप में वह इन्सान उजागर होता है, जो शताब्दियों का बोझ उठाये आगे चला जा रहा है, या यह कहिये कि लीलारूप में एलोरा और अजन्ता की सुन्दरता और कोमलता अपने इतिहास के नये पृष्ठ ताजा लहू से लिखती है। लीलारूप अमिट है, अनादि है, अनन्त है। लीलारूप तो ऐसे है, जैसे एक जलबिन्दु सागर हो जाय।"

"तुम कविता कर रहे हो।"

उस दिन यह बातचीत यहीं खत्म हो गई। मेजर आनन्द पर मुझे बहुत क्रोध आया। लेकिन मानवता और आशा की दीपशिखा की तरह लीलारूप बराबर मेरी कल्पना में टिमटिमा रहा था, जैसे इसमें तुन्द हवाओं से होड़ लेने की क्षमता हो। घुप अन्धेरे में एक नन्हीं-सी किरण भी मंजिल का पथ-प्रदर्शन कर सकती है। लीलारूप को मैं एक ऐसी ही एक किरण समझता था।

मेजर आनन्द ने इतना भी तो न पूछा कि मैं कहां ठहरा हूं। शायद उन्हें मेरा देहरादून पहुँच जाना बहुत नागवार गुजरा हो। मेजर आनन्द के चेहरे पर बेरुखी के साथ नफरत की रेखाएं भी उभरती चली गई थीं। मैंने अनुभव किया कि नफरत अपने साथ एक दर्द लाती है। यह दर्द बढ़ता चला गया। मुझे बहुत अफसोस हुआ। आखिर मुझे देहरादून आने की क्या आवश्यकता थी? भाड़ में जायं मेजर आनन्द और उनका लीलारूप। मेरी बला से! उस समय मेरे चारों ओर नफरत ही नफरत नजर आ रही थी।

मुझे रात भर नींद नहीं आई। एक-दो बार आंख लगी भी तो बहुत भयानक स्वप्न मुझे परेशान करते रहे। मेजर आनन्द गहरी रात के भयानक सन्नाटे में एक भूत की तरह मेरा मुँह चिढ़ाते रहे, जैसे कह रहे हों—तुमसे तुम्हारी राय किसने पूछी? वाह, बड़े आये लीलरूप के समर्थक!

सवेरा हुआ, तो मेरी आंखों में थकन थी, मेरे दिल में क्रोध था। आखिर मेजर आनन्द को आसाम में दो तीन वर्ष गुजारने के कारण सुरखाब के पर तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं लग गये। उस समय मुझे लीलारूप की कल्पना से भी नफरत हो गई थी।

सराय के कमरे में पक्के फर्श पर मैंने बिस्तर बिछा रखा था। मैं बार-बार करवट बदलता था और हर बार मेजर आनन्द को कोसता था।

एक घोर नफरत ने मेरी आत्मा की गहराइयों से वार करना शुरू कर दिया था। उस समय मेजर आनन्द सामने आ जाते तो मैं उनको खूब आड़े हाथों लेता। तुमने आखिर अपने को क्या समझ रखा है? शायद तुम समझते हो कि तुम्हारे जन्म के पश्चात् माताओं ने बेटे जनने बन्द कर दिये। अरे तुम्हारे जैसे तो कई आये, कई चले गये। अरे मूर्ख, रेत पर चलने वालों के पद-चिह्न तेज हवा के चलने के पश्चात् अपने आप मिट जाते हैं। फिर तुमने कैसे समझ लिया कि तुम्हारा नाम इतिहास के पन्नों पर चढ़ गया और अब तुम्हें हमारे जैसे साधारण व्यक्तियों के साथ हमदर्दी जताने की कोई आवश्यकता नहीं!

दिन भर मैं सराय के कमरे में पड़ा रहा। मेजर आनन्द ने जिस बेगानगी से मेरी आँखों में झांक कर देखा था, उससे मेरी कल्पना के तार टूट गये थे मैं तो यही कहने आया था कि यदि किसी तरह सम्भव हो तो लीलारूप को फिर खरीद लिया जाय। मैंने सामने की दीवार पर अपनी निगाहें गड़ा दीं। यों लगा जैसा वहां मेजर आनन्द का चेहरा उभर रहा है। उस चेहरे पर भय की परछाइयां नजर आ रही थीं। जैसे उस चेहरे पर कोई फूल न खिल सकता हो। नफरत, भय और क्रोध की मिली-जुली भावना मेरे मन पर छा गई और मैं देर तक उस चेहरे की ओर घूरता रहा।

मेजर आनन्द के जीवन की शानदार घटनाएं भी मेरी नजरों में अराजकता की भूल-भुलैयां बन कर रह गई थीं। किस जगह उनका जन्म हुआ, इसका किसी को कुछ पता नहीं था। मैंने स्वयं उनसे हजार बार इसका पता चलाने का प्रयत्न किया था; पर उन्होंने यही कहा कि मातृभूमि तो बहुत विशाल है और तुम हो कि केवल धरती के उसी टुकड़े को मातृभूमि कहना चाहते हो, जहां तुम्हारा जन्म हुआ। क्रांतिकारियों का साथ देने के अपराध में उन्हें जेल में जाना पड़ा था। जेल के अन्दर ही उन्होंने लिखना शुरू किया। जब वे पहले-पहल जेल से छूट कर आये, वे कितने खामोश थे! यों लगा जैसे उनकी आंखें जेल की पक्की और ऊँची दीवारों के पीछे और बाहर के जीवन के बीच एक पुल का रूप धारण कर चुकी हों। इसके पश्चात् जो कुछ भी उन्होंने लिखा, उससे मैं प्रभावित होता चला गया जहां तक आसाम के मोर्चे पर जाने का प्रश्न था, आरम्भ में मुझे यह बात बहुत अजीब मालूम हुई थी। यों लगा कि मेजर आनन्द मुट्ठी भर चांदी के सिक्कों के बदले में बिक गये। पर मुझे उनकी लेखनी से एक विशेष लगाव पैदा हो चुका था। मैंने किसी न किसी तरह अपने मन को राजी कर लिया, और मैं सोचने लगा कि अब के आसाम से लौट कर मेजर आनन्द आसाम की बातें सुनायेंगे। उस समय लीलारूप का तो कभी खयाल भी न आया था। लीलारूप का समाचार सुनते ही मैं उछल पड़ा। पर अब तो वह बात खत्म हो चुकी थी। अब केवल नफरत रह गई थी और नफरत के बेपनाह भंवर में मेजर आनन्द का चेहरा गर्क हो रहा था।

कई बार खयाल आया कि क्यों न जा हवा खाने के लिए सराय से बाहर निकल पड़ूं। समय चिउंटी की गति से रींग रहा था। मैं बराबर यही सोचता रहा कि आखिर मुझे यहाँ आने की क्या आवश्यकता थी!

उठ कर मैं बाहर नल पर गया और आंखों पर ठण्डे पानी के छींटे मार कर फिर अन्दर आकर कपड़े बदले और कमरे को ताला लगा कर बाहर निकला।

सड़क पर तांगा खड़ा था। मैंने तांगे वाले को हाथ के इशारे से अपने पास बुलाया। वह झट तांगे को समीप ले आया बोला, "कहां चलोगे, जी!"

मैंने कहा, "दून-स्कूल के पास।"

तांगा चला जा रहा था। मुझे खयाल आया कि मेजर आनन्द का जेल जाना भी एक ढोंग था। ऐसे लोग कब इस दुनिया में क्रांति ला सकते हैं! अच्छा हुआ कि लीलारूप का किस्सा जल्द खत्म हो गया; नहीं तो मेजर आनन्द के हाथों न जाने लीलारूप की कितनी दुर्गति होती। जो व्यक्ति एक मित्र से सीधे मुँह बात नहीं कर सकता, वह बीस-पच्चीस नर्तकियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दस-बारह दूसरे कलाकारों को कैसे एक माला में
नकों की तरह पिरो कर रख सकता है ?

आखिर वह सड़क भी आ गई जिस पर वह कोठी
ी, जिसमें श्रीमती गोपी भारद्वाज के यहां मेजर आनन्द
अपने ठहरने का प्रबन्ध कर रखा था।

"बस, रुक जाओ," मैंने फौजी अन्दाज में कहा।

मैंने तांगे से उतर कर दो रुपये का नोट तांगे वाले
हाथ में थमा दिया। इससे पहले कि मैं कहता कि
क रुपया वापिस कर दो, ताँगे वाला कह उठा, "है
कम, पर मैं इसे रख लेता हूं, सरकार!"

'सरकार' का शब्द अच्छी-खासी चापलूसी ही तो
ा। मैंने सोचा, एक रुपये में यह शब्द महंगा नहीं।

दरबान की जबानी पता चला कि मेजर आनन्द
स समय अन्दर नहीं हैं। यह सुन कर मुझे एक तरह
शान्ति हुई। चलो खामख्वाह की जिल्लत से छुट्टी
ली, व्यर्थ मुझे ही झुकना पड़ता आनन्द तो मेजर
; अब वह जीवन भर मेजर रहेगा—वही अकड़,
ही रौब!

दरबान शायद हैरान हो रहा था। मैंने कहा,
मुझे अब गोपी बहन से मिलना होगा। कहो, मेजर
ानन्द के एक दोस्त आपसे मिलना चाहते हैं।"

दरबान अन्दर चला गया और लपक कर आया।
ोला, "आपको बुलाया है।"

मैं धीमे कदमों से बरामदे तक पहुँचा। कमरे के
न्दर से आवाज आई, "आइये, आइये!"

मैं सहमा सहमा अन्दर चला गया। श्रीमती गोपी
ारद्वाज ने स्वयं अपनी कुर्सी से उठ कर मुझे अपने
मीप की कुर्सी पर बैठने को कहा। बोली, "कैसे
ष्ट किया?"

मैंने कहा, "मुझे मेजर आनन्द से मिलना था।"

"वे तो बम्बई चले गये।"

"कब?"

"कल रात की गाड़ी से।"

"क्या पहले से उनका यह प्रोग्राम तय था?"

"नहीं तो। मैं तो बल्कि हैरान रह गई, जब आते
बोले—दीदी, मुझे इसी गाड़ी से बम्बई जाना है।"

"कल सायंकाल ही मैं उन से मिला था,
लकों की एक गोष्ठी में, मैं कल ही सीधा अपने गांव
वहाँ पहुँचा।"

"तो आप उनके साथ यहाँ क्यों न चले आये?"

"मैं पहले ही एक जगह ठहरने का प्रबन्ध कर
चुका था।"

"वहां कोई कष्ट हो तो आप यहां चले आइये।"

गोपी बहन का एक-एक बोल हमदर्दी से भरा
हुआ था। मैंने कहा, "कभी फिर यहां आया तो जरूर
सीधा आपके यहां चला आऊँगा।"

"लेकिन अभी क्यों नहीं यहां चले आते? आखिर
ऐसी भी क्या बात है? मैं अभी नौकर को भेजती
हूं। वह आपका सामान यहां ले आयेगा।"

मैंने सोचा जरूर मेजर आनन्द ने गोपी बहन से
मेरा जिक्र किया होगा, नहीं तो मुझे इतना आदर
सत्कार कैसे प्राप्त हो सकता था। मैंने लाख चाहा कि
निवास-स्थान का भेद न खुलने पाए, पर आखिरकार मुझे
बताना पड़ा कि मैं बाजार के पास वाली सराय में ठहरा
हूँ। उन्होंने उसी समय तांगा मंगवाया और कहा कि
आप अभी सराय से सामान ले आइये। नौकर को भी
उन्होंने मेरे साथ भेज दिया।

तांगे का घोड़ा बड़ा अड़ियल निकला। सराय तक
जाने और वहां से यहां तक आने में खामख्वाह पूरे दो
घण्टे नष्ट हो गये।

वापस आने पर गोपी बहन ने पहले मेरे लिये
अलग कमरे का प्रबन्ध कर दिया। बोलीं, "आराम
से रहिये।"

मैंने कहा, "न जाने मेजर आनन्द को क्यों अचा-
नक बम्बई जाना पड़ गया। अभी तो उनसे खुल कर
दो बातें भी न हो पाई थीं।"

गोपी बहन ने नौकर को चाय लाने की आज्ञा दी
और मुझसे कहा कि अभी ड्राइङ्ग रूम में आ जाइये।

ड्राइङ्ग-रूम काफी बड़ा था। उसकी सबसे बड़ी
विशेषता यह थी कि उसकी दीवारों पर एक भी चित्र
नजर नहीं आ रहा था। प्रकाश का आधुनिक प्रबन्ध
किया गया था। बिजली का दूधिया सफेद प्रकाश मुझे
बहुत पसन्द आया। ड्राइङ्ग रूम की एक और विशेषता
यह भी थी कि वहां रेडियो सेट मौजूद नहीं था। सबसे
पहले मैंने इसी पर गोपी बहन को दाद दी—"यह
रेडियो-सेट भी आजकल बहुत बड़ी मुसीबत बन गया
है। जब देखो कोई न कोई गाना हो रहा है।"

(शेष पृष्ठ ५३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

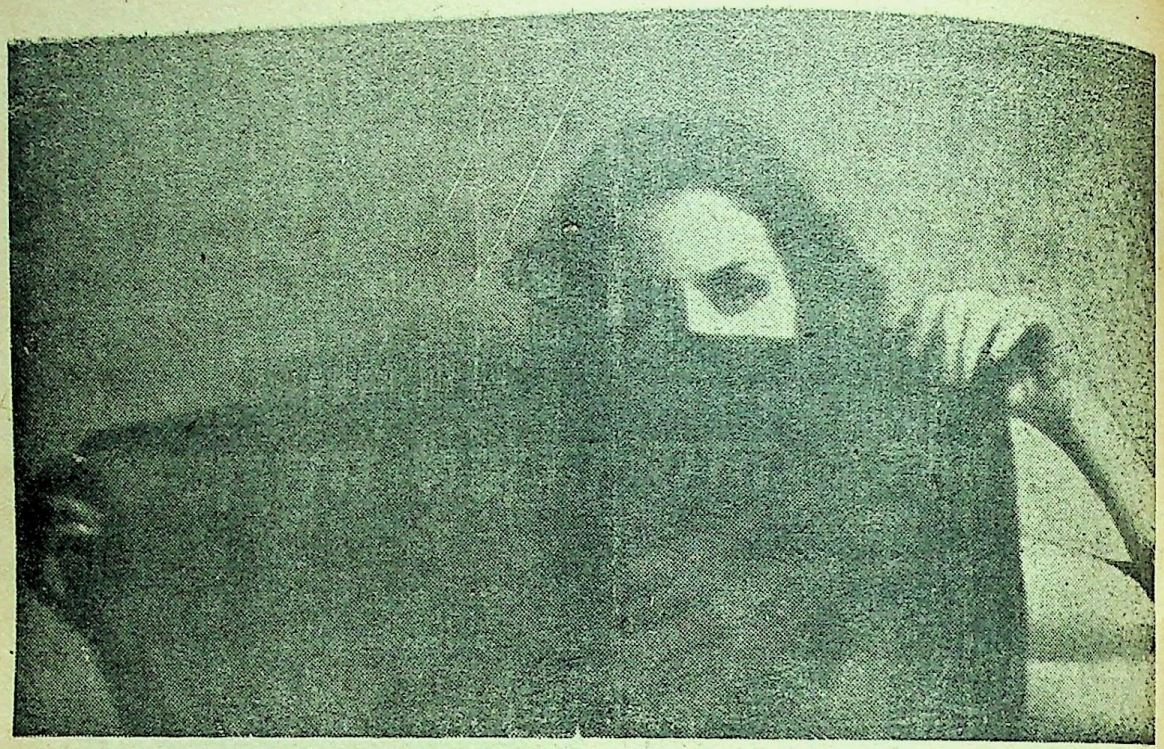

क्या तुम मुझको याद करोगी ?

श्री 'अंचल'

प्यास बुझाने मैं आया था, क्या तुम मुझको याद करोगी ?

पौ फटते सुकुमार लबों पर शेष स्वेद-कण एक तुम्हारा,
दूर धड़कता जैसे नभ में प्रात-दीप, एकाकी तारा।
जब रंगीन मधुर सपनों की सुधि में चंचल मस्त अँखड़ियां
खिल खिल बन्द हुई जाती हों जैसे नरगिस की पंखड़ियाँ,
मौन शिथिल लेटी होगी पहने चम्पई रंग की सारी,
जब अशोक की नयी टहनियों-से नाजुक ये अंग, कुमारी,
देख रहे सपनों का दरपन पाटल की मुँह बन्द कली-से,
तब अपने साथी को क्या तुम पल भर को भी याद करोगी ?

जब पुरशोर नदी के बीचोंबीच प्रेम का दीप जलाये
करती है सिंगार निशा, जब गातीं सुधि के गीत हवायें,
मिन्नत करतीं दूर सितारों से जब कितनी डबडब आँखें,
क्या अपने तारे से तुम भी पूछोगी उस शब की बातें
जब न सेज का सूनापन था भीतर मीठी चुटकी लेता,
व्याकुल दिल आंखों के प्यालों को उछाल कलशी भर देता ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब चुपके-चुपके रो देंगी नैश पवन-मुरझाई कलियाँ,
तब क्या पल भर बेखुद हो कर तुम भी मुझको याद करोगी ?

जब रजनीगंधा अपनी विह्वल तृष्णा का सपना भर भर
गूँथेगी शशि की किरणों में असह अतृप्ति अवाक् अकातर,
जब दरिद्र आग्रह अम्बर में भर आंखों से नीलम ढाले,
ओस चली ही आती हो तृण तृण में श्यामल पुलक उजाले,
दूर कहीं बांसी के वन में शरद विरह के गीत सुनाता,
श्यामल वन-श्रेणी से जैसे पवन रुलाई भर भर लाता,
दूर कहीं मैं मिल न सकूंगा—जैसे सिन्धु भरा हो आगे।
मीड़-भरी उन मधुमय घड़ियों में क्या मुझको याद करोगी ?

सावन-नीर झलाझल में जब कुसुम पहन तुम चीर उतारे
तेज हिंडोलों में झूलोगी हिरणी सी बन नदी किनारे,
जब मेघों से ढके धान के खेतों में उस पार निरन्तर
पावस-पवन उड़ा लायेगा क्षुब्ध पपीहों का कातर स्वर,
जब संगीत-भरी लतिकायें वृक्ष तरंगित होंगे प्रतिक्षण,
मेरे दर्द-भरे नगमों को होंठों पर ला कर कुछ उन्मन,
क्या सुगन्धि-सी आतुर हो वन वन में ढूंढ चलोगी मुझको ?
मेघ गगन से गिरते गिरते क्या तुम मुझको याद करोगी ?

फूल चमेली के आंगन में फैल बिछायेंगे जब चादर,
हार गूँथने जब बैठोगी, कांपेंगे चुरियों के बादर,
एकाएक टूट जायेंगे दिल के तार, अधर के गाने,
दूर मौत की मंजिल के इस राही के गाये अफसाने,
अपने आप लिपट कर अपनी ज्यों शमीम बांहों में चंचल,
कांप रहा थर-थर चिर-परिचित साया छाती पर ज्यों चलदल,
भूली-सी, कुछ चौंक ठगी-सी, बिकी दुखी-सी, मूक-अचेतन,
अपनी उस सूनी संध्या में क्या तुम मुझको याद करोगी ?

मैं न रहूँगा, किन्तु दहकते मरु अवशेष रहेंगे, नारी !
नभचुम्बी नगपति रोयेंगे, भर आयेंगी पलक तुम्हारी।
उमड़ी इतराती नदियों का जीवन और भयानक ज्वाला
जब निशि में तूफान बनेगी, उमड़ सजल होगा तम काला,
विगत प्रेम के चिन्ह किसी के धड़क वक्ष पर तब एकाकी
पूर्ण करेंगे प्यास तुम्हारे टूटे ख्वाब—सशंक हिये की,
तुम समझोगी, मैं ही आ कर लौट गया फिर पास तुम्हारे,
उस भयावनी अर्धनिशा में क्या तुम मुझको याद करोगी ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्मरण—६

कांग्रेस में वक्तृत्व-

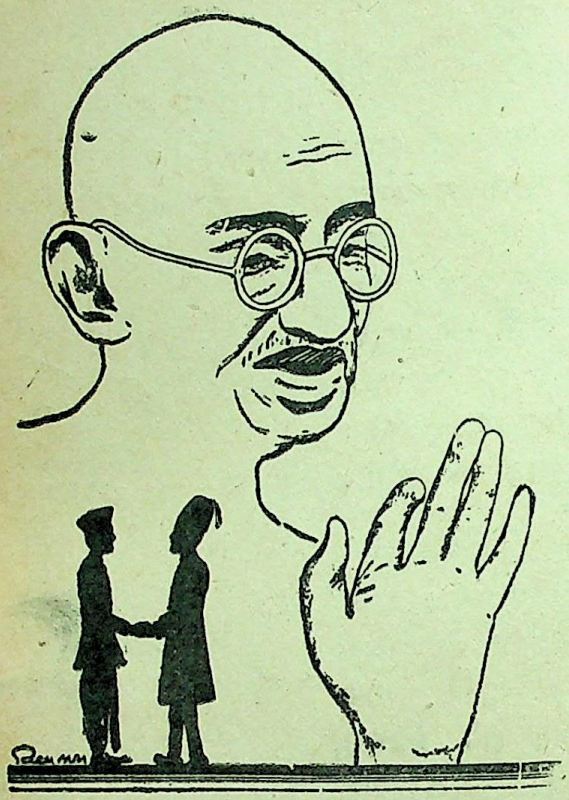

देशबंधु चित्तरंजनदास

गांधी-युग के वक्ताओं में पं० मोतीलाल जी से उतर कर दूसरा स्थान देशबन्धु चित्तरंजनदास का था। देशबन्धु को दूसरे स्थान पर रखने का यह अभिप्राय नहीं समझना चाहिए कि वे योग्यता, वक्तृत्व-शक्ति अथवा त्यागभाव में किसी अन्य व्यक्ति से कम थे। उनका त्याग पं० मोतीलाल जी के समान ही था। कानूनी योग्यता की दृष्टि से वे देश के दो-चार बड़े वकीलों में स्थान रखते थे। अग्नि की मात्राओं में पं० मोतीलाल जी से भी अधिक थे। आयु में कम होते हुए भी आगे बढ़ने में वे किसी पुराने नेता से पीछे नहीं रहते थे। बङ्गाल के तो वे बेताज बादशाह थे। बङ्गाल में देशबन्धु का उत्थान वस्तुतः बिजली की गति से हुआ। वे उठे और एकदम बङ्गाल के सारे सार्वजनिक जीवन पर छा गये। उनके कार्यक्षेत्र में आने पर बङ्गाल का सिर फिर एक बार ऊँचा हो गया। काँग्रेस के प्रारम्भिक युग में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, उमेशचन्द्र बनर्जी और अम्बिकाचरण मजुमदार आदि देशभक्तों के कारण राजनीति में बङ्गाल भारत भर का नेता बन गया था। बीच में राजनैतिक आन्दोलन का नेतृत्व बम्बई के हाथों में चला गया। कांग्रेस की नीति का निर्माण पूना में होने लगा। उन वर्षों के लिए बङ्गाल का सितारा कुछ मन्द पड़ गया था। देशबन्धु दास के कार्यक्षेत्र में उतरने पर बङ्गाल फिर एक बार राजनैतिक सेना की अगली पंक्ति में आ खड़ा हुआ। यह ठीक था कि सेना की कमान एक गुजराती के हाथ में थी—महात्मा गाँधी काँग्रेस के सर्वेसवा हो चुके थे; तो भी देशबन्धु चित्तरंजनदास का स्थान देश के राष्ट्रीय जीवन में स्वतन्त्र रूप से बहुत ऊँचा हो गया था। स्वराज्य-पार्टी की स्थापना ने उनको महात्मा जी से अलग राजनैतिक सत्ता भी कायम कर दी थी। गांधी-युग के वक्ताओं में से देशबन्धु दास को हम अन्य सब वक्ताओं की अपेक्षा पूर्व-युग के वक्ताओं के समीप खड़ा पाते हैं। उनकी भाषण-प्रणाली भावुकतापूर्ण थी। अंग्रेजी पर उनका प्रभुत्व था। कण्ठ-स्वर में ऑरेटरों वाली तार-ध्वनि थी। यदि वे गांधी-युग में अवतीर्ण न हुए होते और उससे पहिले मैदान में आये होते, तो सम्भवतः वे पुराने युग के वक्ताओं की भांति सिसरो या ग्लेडस्टन की शैली के वक्ता बन जाते। गांधी-युग की यह विशेषता थी कि उसमें वक्ता के शब्द तथा अनुभाव गौण हो गये थे और भावों की यथार्थता ही मुख्य बन गई थी। देशबन्धु दास ने समय और परिस्थिति के अनुसार अपनी भाषण-शैली को अनायास ही गांधी-युग के सांचे में ढाल लिया। उनका व्यक्तित्व इतना जोरदार था और उनका त्याग इतना विशाल था कि वक्तृत्व-कला के अलंकारों का त्याग कर देने पर भी वे अपने समय के अत्यन्त प्रभावशाली वक्ता बने रहे। उनके भाषणों में से धीरे-धीरे प्रज्वलित अग्नि का अंश निकलता गया और उसके स्थान पर अन्तर्हित अग्नि प्रवेश करती गई। अन्तिम दिनों में वे बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला का क्रमिक ह्रास

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

★

प्रस्तुत लेख में विद्वान् लेखक ने देशबन्धु चित्तरंजनदास और अली-बन्धुओं की वक्तृत्व-शक्ति का विवेचन किया है।

कुछ गांधी जी की वक्तृत्व-शैली पर ही आ गये थे।

देशबन्धु दास में दो प्रवृत्तियां मिली हुई थीं। एक ओर तो वे ऊँचे दर्जे के क्रांतिकारी थे। उनका जिस क्रांति में विश्वास था, वह अपनी सफलता के लिये आवश्यकता पड़ने पर हिंसा और अहिंसा में भेद नहीं करती थी। साथ ही वे वकील होने के कारण वैधानिक मस्तिष्क भी रखते थे। यही कारण था कि जहां वे राजनीति में सदा युद्ध की भाषा में बोलते थे, वहां स्वराज्य-पार्टी बना कर कांग्रेसियों के धारा-सभा में जाने का श्रीगणेश उन्होंने ही किया। महात्मा जी के बहुत से शिष्य अपरिवर्त्तनवादी थे। श्री राजगोपालाचार्य, सरदार पटेल और डा० राजेन्द्रप्रसाद जैसे महारथी धारासभा प्रवेश को पाप समझते और बताते थे। गया में जो कांग्रेस हुई, उसमें प्रस्तावित स्वराज्य-दल और अपरिवर्त्तनवादियों में बहुत भारी संघर्ष हुआ। स्वराज्य-दल के नेता देशबंधु दास थे और मन्त्री मोतीलाल नेहरू थे। महात्मा जी का झुकाव (महात्मा जी उस समय जेल में थे) अपरिवर्त्तनवादियों की ओर समझा जाता था। तो भी कांग्रेस का बहुत अधिक मत स्वराज्य दल के पक्ष में हो गया। इसका एक मुख्य कारण देशबन्धु दास और पं० मोतीलाल नेहरू के व्यक्तित्व थे। वस्तुतः देशबन्धु दास गांधी-सिद्धान्त के सोलहों आने अनुयायी नहीं थे। मैं समझता हूं कि उन्हें गांधी-सिद्धांत के दस आने अनुयायी कहना ही ठीक है। शेष छः आने में उनके क्रान्तिवाद को रख लीजिये। उनका गांधीवाद वस्तुतः उनके क्रांतिवाद और कानूनी मस्तिष्क का एक समझौता था।

एक बार अहमदाबाद में आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन हुआ। देशबंधु दास बङ्गाल के प्रान्तीय राजनैतिक सम्मेलन में एक आतंकवादी नवयुवक को बधाई देने के प्रस्ताव का समर्थन कर चुके थे। महात्मा जी उस प्रस्ताव से सन्तुष्ट न थे। आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी ने बङ्गाल के प्रांतिक सम्मेलन के प्रस्ताव के विरोध में एक प्रस्ताव रखा। महात्मा जी ने उसका समर्थन किया। देशबन्धु दास ने उसका विरोध किया। दो इतने महान् व्यक्तियों के बीच में कमेटी के सदस्य डांवाडोल हो गये। उस अवसर पर दिया गया देशबन्धु दास का भाषण बड़े मार्के का था। उसमें गम्भीर विचारों के साथ भावुकता ओतप्रोत थी। परिणाम यह हुआ कि देशबन्धु दास के संशोधन के पक्ष में अधिक मत आये और महात्मा जी का प्रस्ताव गिर गया। कांग्रेस के नवीन इतिहास में शायद अपने ढंग की यह अकेली घटना थी, जब जोरदार मुकाबला होने पर महात्मा जी का प्रस्ताव सफल न हो सका। वह समय उन लोगों को भूल नहीं

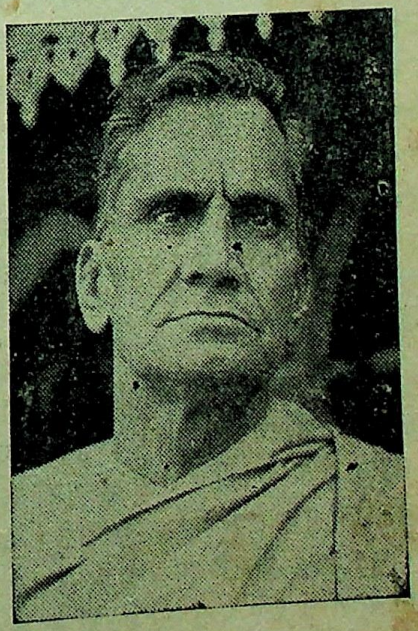

लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता, जो वहां थे। महात्मा जी की आत्मा को बड़ा क्लेश पहुँचा। क्लेश इस बात पर नहीं था कि हार हुई, परन्तु इस बात पर था कि कांग्रेस के सदस्यों ने अहिंसा के सिद्धांत को पूरी तरह नहीं समझा। जब महात्मा जी अन्त में बोलने लगे, तो उनका गला भर आया और उनकी आंखों से आंसू टपक पड़े। उस समय उस सभा-भवन में अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। श्रीमती सरोजिनी नायडू ऊँचे स्वर से रो रही थीं, मौलाना मुहम्मदअली और शौकतअली तो लगभग दहाड़ मार कर रो रहे थे और आँखों में आंसू तो प्रायः सभी सदस्यों के आ गये थे। महात्मा जी की आंखों में आंसू देख कर प्रतीत होने लगा था, मानों हिमालय अपने स्थान से हिल गया हो। उस समय उन सदस्यों को, जिन्होंने महात्मा जी के विरुद्ध राय दी थी, सचमुच खेद होने लगा कि अपनी अन्तरात्मा की आवाज पर इतना अधिक ध्यान क्यों दिया। मैंने भी देशबन्धु दास के पक्ष में ही सम्मति दी थी। मैं अपना तो कह सकता हूँ कि यदि मुझे यह मालूम होता कि परिणाम इतना करुणाजनक होगा, तो मैं कोई मत नहीं देता।

मेरी सम्मति है कि सत्याग्रह के प्रारम्भ-काल में जिन महान् व्यक्तियों ने देश का आवाहन सुन कर अपना सर्वस्व बलिदान कर दिय था, उनमें से सबसे अधिक अग्नि देशबन्धु दास में थी। वह अग्नि इतनी प्रबल थी कि बाहर के सब रास्ते खुले न रहने के कारण उसने देशबन्धु दास को ही अपना हव्य बना लिया। उस महापुरुष की शीघ्र मृत्यु का यही मुख्य कारण हुआ। गांधी-युग के वक्ताओं में से वक्तृत्व-कला की दृष्टि से मैं उनका स्थान सबसे ऊँचा रखता हूँ।

अली-बन्धु

भारतीय राजनीति के अन्तरिक्ष में मौलाना मुहम्मद अली और शौकतअली को धूमकेतु (पुच्छल तारे) से उपमा दी जा सकती है। वे दो धूमकेतुओं की तरह लम्बी-चौड़ी पूंछ लेकर राजनीति के क्षेत्र में अकस्मात् आविर्भूत हुए। जब वे आकाश में दिखाई दिये, तब देखने वालों की दृष्टि अन्य सब नक्षत्रों की अपेक्षा उनकी ओर अधिक आकृष्ट हो गई। वे आकाश में छाये हुए दिखाई देते थे। महात्मा गांधी के दायें और बायें, आगे और पीछे उन्हीं का मुख्य स्थान प्रतीत होता था। महात्मा जी कहते थे कि मैं शौकतअली के झोले में और मुहम्मदअली की जेब में हूँ और वे दोनों भाई बड़े अभिमान और सन्तोष के साथ घोषणा करते थे कि गांधीजी का कहना ठीक है। यहां अली-बन्धुओं के चरित्र के सम्बन्ध में विस्तृत विवेचना का स्थान नहीं है। केवल इतना कह देना पर्याप्त है कि वे धूमकेतुओं की तरह भारत के अन्तरिक्ष में आये, कुछ समय के लिये चारों ओर छा गये और अन्त में धूमकेतुओं की तरह अपनी नश्वर स्मृति छोड़ कर आकाश में विलीन हो गये।

जब तक वे दोनों भाई कांग्रेस में रहे, तब तक उन्हें महात्मा जी के प्रधान मल्ल समझा जाता था। आयु में बड़े शौकतअली थे, परन्तु गुणों में मुहम्मद अली थे। मौलाना मुहम्मद अली एक प्रतिभा-सम्पन्न लेखक, प्रभावशाली वक्ता और निर्भय नेता थे। उनकी योग्यता का सिक्का हरेक को मानना पड़ता था। यह दोनों भाइयों की विशेषता थी कि वे सदा शीघ्र ही फटने वाले ज्वालामुखी के समान रहते थे। कभी-कभी फट भी पड़ते थे। उन दोनों की यह विशेषता भी थी कि उनकी आँखों में आँसू और मुँह में कहकहा दोनों ही सदा तैयार रहते थे। कब क्या फूट पड़े इसका कोई ठिकाना नहीं था। दोनों ही परले दर्जे के दबंग थे। वे गांधी जी के शिष्य कहलाते थे, परन्तु मेरी सम्मति है —और मेरे साथ देश के बहुत से निरीक्षक भी सहमत होंगे—कि सत्य और अहिंसा नाम की चीजों से दोनों कोसों दूर थे। महात्मा जी का साम्प्रदायिकता के विरुद्ध दृष्टिकोण भी उन्हें छू तक नहीं गया था। वे दोनों कट्टर मुसलमान थे। महात्मा जी के साथी भी वे इस लिए बने थे कि महात्मा जी ने खिलाफत का समर्थन किया था।

इतनी मनोवैज्ञानिक विवेचना की आवश्यकता इसलिये हुई कि मैं अली-बन्धुओं की व्याख्यान-शैली का विश्लेषण कर सकूँ। उनकी व्याख्यान-शैली न तो

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो गीत *

श्रीमती सरला सेवक

रोने में मैंने सुख पाया !

हिमशिखरों के हिम-सी गल-गल
जो नयनों से बहतीं प्रतिपल,
आँसू की उन कुछ बूंदों में मैंने प्रियतम को अपनाया।

अपने मन के मृदु भावों को,
उल्लास, उमंगों, चावों को,
इच्छाओं को, अरमानों को गीतों के स्वर से बहलाया।

मेरा भी कितना स्वार्थ प्रबल,
बुझ दीप गए कितने जल-जल,
अपने उर की दुर्बलता से, मैंने पत्थर को पुजवाया।

★

है भार बना मेरा जीवन !

है दृष्टि नयन की क्षीण हुई,
मन की हर आस मलीन हुई,
कुछ ज्ञात नहीं किस असमय में मैंने खो डाला संचित धन।

जब था जीवन-पथ चिर तममय,
बढ़ते जाते थे ये पग द्वय,
अब दीप जले, तम दूर हुआ, पर शिथिलित-से हो रहे चरण।

आँधी भी अब उठती जाती,
औ' अँधियारी घिरती आती,
घनघोर तिमिर से क्षण भर में फिर बँध जावेगा यह उपवन।

सूखे अधरों पर हास नहीं,
उर में कोई उल्लास नहीं,
जब से तुमने मुख मोड़ लिया, आकुल हैं ये तन-प्राण-नयन।

---

* इन गीतों की गायिका गत २३ अप्रैल को स्वर्ग सिधार गईं। ये उनके अंतिम दो गीत हैं। सं०

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, H

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

.... के मुख से

श्री आनंदप्रकाश जैन

★

"इस युग का मानव गति का भूखा है; परन्तु कृत्रिम साधनों से गति प्राप्त करने वाला यह जीव गति से बहुत शीघ्र घबरा जाता है।"

यदि यह सच है कि गति ही जीवन है और गति-हीनता मृत्यु, तो मैं जीवन का सब से बड़ा प्रतीक हूं। यदि पर्यटन ज्ञान-प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन है, तो मैं जीवन को विविध रूप से जानती हूँ। मनुष्य ने मेरे सहयोग से अपने जीवन की धीमी प्रगति को गतिमान किया है। अस्थिर प्रकृति मानव को मुझसे लाभ प्राप्त करने के लिए अपना सन्तुलन स्थिर रखना पड़ता है, जैसा कि संसार की प्रत्येक वस्तु —सजीव या निर्जीव से लाभ उठाने के लिए उसे रखना चाहिए। मूक रह कर ही यदि विविध-रूप संसार को भली प्रकार देखा-परखा जा सकता है, तो मैं मानव के जीवन-संघर्ष में व्याप्त गुण-दोषों की सब से बड़ी साक्षी हूँ।

मैं 'फिलिप्स' नामक एक अँग्रेजी कारखाने द्वारा निर्मित बाइसिकिल हूँ। सुना है, लोग इस विशाल भारत-भूखण्ड के स्वाधीन होने से भी पहिले से यही उपदेश देते चले आ रहे हैं कि 'स्वदेशी वस्तुएं प्रयोग करो।' मुझे अब तक इस उपदेश का भेद पूर्णरूपेण ज्ञात नहीं हो सका, यह मैं मानती हूँ। जिन बाबू साहब के पास मैं अब हूँ, उन्हें पहिले वेतन के साथ साथ तांगा-अलाउन्स भी मिला करता था। उनका विवाह होते समय उनके श्वसुर महोदय ने उनका तत्कालीन गति-विधि को तीव्र करने के लिए पुराने सामन्ती ढंग से दासी की तरह मुझे भेंट में दिया। मुझ जैसी बढ़िया मेकर की बाइसिकिल के स्वामी हो कर उस समय उन्हें कितनी प्रसन्नता हुई थी। एक दिन नया सूट पहिन कर उन्होंने मेरी सवारी गाँठी और शान से दफ्तर पहुँचे। दफ्तर से निकलते हुए उनके मालिक ने उन्हें मेरे साथ देखा तो बड़े खुश हुए और पूछा, "अच्छा, बड़ी अच्छी बाइसिकिल है, कितने में ली?"

सरल भाव से बाबू साहब ने अपने विवाह की याद दिलाई और उत्तर दिया, "दहेज में मिली है।"

"बहुत अच्छे, बहुत अच्छे!" मालिक ने कहा और गर्दन हिलाते हुए एक ओर को चल दिए।

कुछ दिन बाद दफ्तर से बाहर की भीत पर टिके-टिके मैंने जो बातचीत सुनी, उससे सन्न रह गई। बाबू साहब खजाची की शिकायत कर रहे थे, "मुझे तांगा-अला-

[मनोरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्स नहीं दिया गया, जो अब तक हमेशा मिलता आया था।"

"ठीक तो है," मालिक ने कहा, "तांगा-अलाउन्स तांगे पर खर्च करने के लिए दिया जाता है। अब तुम्हारे पास साइकिल है, तो तांगा अलाउन्स की जरूरत ?"

"लेकिन साइकिल का भी तो मूल्य है !" बाबू साहब ने उज्र किया।

"वह तो तुमने कहा ही था कि तुम्हें दहेज में मिली है। उसके लिये तुम्हें कोई मूल्य खर्च नहीं करना पड़ा— साथ में एक सुन्दर बीवी मिली, वह अलग।"

मैं कल्पना कर रही थी कि मालिक मुस्करा रहा होगा।

"लेकिन दहेज का फायदा तो मुझे पहुँचना चाहिये, न कि कम्पनी को !" बाबू ने फरियाद की।

मालिक ने कड़े स्वर में कहा, "प्रत्येक सामाजिक रीति-रिवाज का फायदा समाज को पहुँचना चाहिये, मिस्टर। आपके इस अलाउन्स के कम हो जाने से कम्पनी को उत्पादन सस्ता पड़ेगा और उसी परिमाण में उत्पत्ति का मूल्य घट कर वह ग्राहकों को सस्ते में मिलने लगेगी। तभी स्वदेशी वस्तुयें विदेशी वस्तुओं की प्रतिस्पर्धा में 'बीट' कर सकेंगी।"

बाहर आकर अपनी पीठ को मेरी गद्दी से सटा बाबू साहब ने अपने एक मित्र को तमाम हाल सुनाया और मालिक की उस बात को लचर दलील बताया। इस बाद, इससे पहिले कि बाबू साहब मेरी किसी मोटर से दुर्घटना करा दें या किसी मित्र को मुझे उधार मांगी दे दें, दफ्तर के पूरे स्टाफ को साइकिलें रखने की आज्ञा हो चुकी थी। यह पूरी कथा ज्यों की त्यों एक अखबार में छापी गई और साथ ही साथ कम्पनी द्वारा निर्मित वस्तुओं के कभी न घटने वाले दामों की ओर संकेत किया गया था। मुझे पीठ से सटा कर बाबू ने सारी खबर एक ही सांस में पढ़ डाली।

किन्तु अगले दिन के अखबार ने उनकी तमाम आशाओं पर पानी फेर दिया। उद्योगपति का पूरा ब्यान छपा था। उनका कथन था कि उद्योग-धन्धों को उन्नत करने के लिए इस प्रकार बचे हुए पैसे को संचित कर नई मशीनें लाने की योजना उनके विचाराधीन है, जिससे उत्पादन का मूल्य और भी कम किया जा सके और लोगों को चीजें मुफ्त के बराबर पड़ने लगें।

आगे और कुछ सुनने को मिलता, लेकिन बाबू ने झल्ला कर मुझे एक ग्वाले के हाथ बेच दिया। स्वयं उन्होंने नौकरी छोड़ दी और बच्चों को प्राइमरी पढ़ाने का काम अपने हाथ में ले लिया। यह मुझे उस दिन मालूम हुआ जब कैरियर पर रोज की तरह ग्वालन को न लाद कर, मैं दूध का कनस्तर उठाये हलवाई की दुकान की ओर जा रही थी। सामने ही बाबू साहब के नाम का बोर्ड लगा था, जिस पर बड़े अक्षरों में 'हेड-

लेखक का ध्यान मेरी इस दशा की ओर नहीं गया !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मास्टर' के शब्द के आगे उनका नाम था—यद्यपि उस बेलखाने जैसे स्कूल में मुझे कोई सहयोगी मास्टर दिखाई ही न पड़ा।

* * *

यह ग्वाला भी बड़ा अद्भुत आदमी था। वह खुले आम दूध में पानी मिलाता था और बाजार की निश्चित दर पर दूध बेचता था। कोई भी उससे पूछे कि उसके दूध में पानी है कि नहीं, तो उसका उत्तर 'हां' में होगा, यहां तक कि दूध और पानी के परिमाण का अनुपात स्पष्ट शब्दों में वह बता देगा। एक भले आदमी ने उससे पूछा भी, "भाई, दूध में अगर पानी चौथाई मिलाते हो तो रुपया दर पर खालिस दूध ही क्यों नहीं देते?"

उसने उत्तर दिया, "लाला जी, दूध में पानी न मिलाओ, तब भी लोग यही कहेंगे कि इसमें पानी है। सवाया दाम कोई देगा नहीं। इसलिए पहले ही बता देता हूँ कि पानी है, क्योंकि बाजार भर में बिना पानी का दूध है ही नहीं। आजकल वनस्पति घी बेचने वालों को उसे असली के साथ मिला कर खतरा उठाने की जरूरत नहीं है। जमाना साफ बिजनस का है, लोग ज्यादा पैसे खर्च कर भी असली चीज न पा सकें, इस कलियुग की तारीफ इसी में है।"

अब समझिये उन लोगों से जो कहते हैं कि जमाना बेईमान होता जा रहा है। मैं तो कहती हूँ कि जमाना अधिक ईमानदार होता जा रहा है।

यह ग्वाला अपनी ग्वालन को मेरे कैरियर पर बिठा कर शहर घुमाने ले जाता है। पढ़ी लिखी हिन्दुस्तानी छोकरियों और अंग्रेजी मेमों की देखादेखी वह बङ्गल में छिप-छिप कर उसे मेरी सवारी करना सिखाता है। उसके साथ सिनेमा के साढ़े दस आने वाले दर्जे में बैठ कर चलचित्र देखता है और फिर गांव के बाहर उसे ठहरा कर स्वयं उससे पहिले घर आ, उसके घूँघट निकाले हुए छमाछम आने की बाट देखता है। वह कहता है, "जमाना बदल रहा है, फिर मैं क्यों न बदलूँ?" चाहे छिप छिप कर ही सही! और छिपना भी कब तक? जब तक कि कोई इतना सारा जमाना देखा हुआ बूढ़ा बुजुर्ग अचानक उसकी चाल-ढाल में बदले हुए जमाने की बू पा कर ताना नहीं कस देता, "देखा, बेशर्मी!" इसके बाद वह आलोचना से परे की वस्तु होगा—बेशर्म और बेहया!

एक दिन ग्वालन उससे बिना पूछे ही मुझे उठा कर चल दी। सन्नाटे में दूर पथ से आते हुए एक सूट-बूट धारी आधुनिक पथिक ने उस नई-नवेली को इस प्रकार साइकिल की फर्राटे से सवारी करते देखा तो सैन चला दिये।

उस दिन ग्वाला दूध को लेकर शहर पैदल गया, दूसरे दिन भी पैदल गया और तीसरे दिन गया तो उसे ताव आ गया। आती दफा वह शहतूत की कमची तोड़ता लाया। ग्वालन के सैर से आते ही वह कमची सूँत का बोला, "सुसरी, तैंने मेमों को भी मात किया! काम नहीं धाम नहीं; साइकिल की सवारी कर क्या यारों से इसक लड़ाती है?"

शहतूत की कमची किस प्रकार खाल उधेड़ सकती है और हिन्दुस्तानी औरत मर्द से पिटने के समय किस प्रकार रोती है, यह मैंने उसी दिन देखा। हिन्दुस्तानी औरत प्रत्यक्ष न कमाने वाली जो ठहरी!

अगले दिन ग्वाले को सवार करा मैं शहर गई, तो फिर उसके साथ नहीं लौटी। लेकिन रास्ते में उक्त ग्वालन के नये प्रेमी का कवियों की कल्पना-सा चेहरा और उसका झूम झूम कर बेवफाई की शिकायतों-भरे गीत गाना मुझे अब तक याद है।

* * *

इसके बाद मेरे नये खरीदार कॉलिज में पढ़ने वाले एक दीन-से लड़के ने मेरी 'ओवरहॉलिंग' करा कर हवा की तरह हल्का कर लिया, यह युवक जिस तत्परता से मेरे पैडलों पर दम साधता था, उससे प्रकट होता था कि शायद जीवन में गति की इसे सब से अधिक आवश्यकता है। कालिज जाने से पहिले सुबह वह दो ट्यूशनों पर जाने के लिए मेरा उपयोग करता था। फिर झटपट खाना खाकर कालिज दौड़ता था। शाम को वहां से आकर फिर दो ट्यूशन पढ़ाता था। रात को सोते समय परिवार के एकमात्र अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदस्य, अपनी मां के पैर दबाता था और फिर मुझे कमरे में अपने सिरहाने रख, नंगी खाट पर चित्त हो-निश्चेष्ट हो जाता था। उसकी कक्षा के कमरे के बाहर खड़े खड़े मैंने कितनी ही बार प्रोफेसरों से उसकी प्रशंसा के गीत सुने थे, उसके होनहार होने व भविष्य में बड़ा आदमी बनने में विश्वास प्रकट किया जाता सुना था।

कुछ दिनों से इस युवक की चालढाल में कुछ परिवर्त्तन आ गया था। वह बहकी-बहकी बातें करता था। मेरे कैरियर पर 'बम' नामक किसी खतरनाक वस्तु को चादर इत्यादि से लपेट कर और बांधकर भयभीत दृष्टि से इधर उधर ले जाता था। अजीब-अजीब प्रांतों के आदमियों से वह मिलता था, जो कहते थे कि सचमुच यदि इस लड़के की यही रफ्तार रही तो यह एक महान् क्रांतिकारी होगा। शायद 'भारत-माता' की स्वाधीनता-प्राप्ति के इस लाचार अस्त्र की वाहन बन कर मुझे भी कुछ कुछ गर्व हो चला था। संसार को वस्तु-रूप से देखना उस समय समाप्त हो जाता है, जब यह अहंकार जाग उठता है। यदि उस समय मेरे दो चार स्पोक्स टूट जाते तो ...!

घर आते ही चादर को एक ओर रख उसने पुकारा—'मां!' और दाहिनी ओर देखा ...!

एक टूटी-सी खटिया पर बैठा था, होंठों ही होंठों में एक उच्चाभास की बिचकाती हुई मुस्कराहट लिए चूहे को खेल खिलाने वाली दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए और हाथ के डण्डे को सन्तोष से दूसरे हाथ की हथेली पर फटकारते हुए — पुलिस का दारोगा! और उसके पीछे, सहमी हुई हिरनी की तरह, दोनों हथेलियों से मुंह ढांपे, हृदय के समस्त परिताप को करुणा में बिखराती, कौले का सहारा लिये खड़ी थी—वृद्धा मां!

मैं आज भी उस मां के मुँह पर बिखरी करुणा की कालिमा को देखती हूं। दारोगा ने उस घर की सारी चीजें समेट लीं, मानों यह सब साम्राज्य के लिए उतने ही परिमाण में दोषी हों। और वह अल्हड़ युवक, हाथों में हथकड़ियाँ पहने, अपने नित्य के कामों में व्यस्त लोगों की विस्मयसूचक दृष्टियों को रौंदता, 'मुझे भूलना मत' के फूल की तरह सड़क पर अविश्रान्त पथिक की भांति एक अपेक्षतया छोटे कारागार में बन्द होने जा रहा था।

वह पुलिस का दारोगा करुणा से ओतप्रोत मां के मुख को दोनों हथेलियों में दबा ऊपर को उठा कर कहता था, "भोली अम्मा! काश कि अपने बेटे को बचाने के लिए तेरे पास चन्द चांदी के टुकड़े होते!" ऐसी थी वह काश'—अन्दर सहयोगियों के साथ 'फ्लैश' खेलते हुए पुलिस के अफसरों का अट्टहास जिसका किटकिटा कर उपहास करता था।

बहुत दिनों तक मैं शाही मालखाने में पड़ी अपने बदन से जंग का चिपटता देखती रही और जिस दिन निकली तो आस-पास की बातचीत से मालूम हुआ कि विरोधी को मारने का अधिकार छीनने के लिए सम्राट की सरकार ने उस युवक से जीने का अधिकार छीन लिया है।

एक और गुट है, जिससे ये पुलिस वाले डरते भी हैं और जिसे अवसर पा कर पकड़ते भी हैं। वह है अपराधियों का गुट। एक जुआरी पकड़ कर लाया गया। अन्दर कमरे में उसके पीटे जाने और दुहाई मचाने की आवाज मैं बहुत देर तक सुनती रही। फिर कुछ नोटों के फड़फड़ाने की आवाज आई। कुटिल मुसकान मुँह पर लिये वह बाहर निकला। थाना सुनसान देख वह सन्तोष से मेरी गद्दी पर सवार हो, दो पैडल मार बाहर निकल गया। फाटक के सिपाही पर उसने अचूक मन्त्र दे मारा, "दीवान जी, सलाम!" और 'दीवान जी' ने बड़े आदमियों की तरह गर्दन मटका कर मुंह में पकड़ी बीड़ी को दियासलाई जला कर सुलगा लिया।

* * *

सुन्दर है यह जीवन और सुन्दर है यह संसार, यदि इसे देखने का दृष्टिकोण परिवर्त्तनशील हो। समान दृष्टिकोण से देखने पर एक सुन्दर वस्तु का परिवर्तित रूप भद्दा मालूम होने लगता है। इसी परिवर्त्तनशील दृष्टिकोण से मुझे इस जुआरी के जीवन के सुन्दर अंग को देखने का अवसर मिला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि परिवर्त्तन करने और परिवर्त्तन होने के सिद्धांत पर चला जाय, तो चुराई हुई चीज बहुत दिनों तक काम आती है। इसीलिए इस भले आदमी ने मेरा रंग-रूप और यहां तक नम्बर भी परिवर्त्तित कर मुझे अपने काम-लायक बना लिया। मुझ पर सवार हो यह जुआरी बाद में कितनी ही बार सचमुच के दीवान जी की मेरी ओर घूरती दृष्टि को सलाम से चलायमान कर, उनके सामने से निकला।

एक दिन उसने अपनी पुरानी औरत को मार-पीट कर घर से बाहर निकाल दिया, क्योंकि वह उसे जुआ न खेलने, चोरी न करने और बुरे आदमियों की संगत में न बैठने का उपदेश देती थी। उसके बाद जिस गृहिणी ने आ कर उस घर के राज्य पर एकछत्र साम्राज्य की पताका फहराई, वह रोज-रोज दूसरों का उदाहरण दे उसे भीषणतर अपराधों के लिए उकसाती रही। खूब सेर सपाटा किया, खूब लुटाया और जिस दिन घर में कुछ नहीं रहा, उस दिन उसे छोड़ कर वह भाग गई। घर आकर जब परिणत श्रमजीवी ने मैदान सफाचट पाया, तो मुझे एक बनिए के हाथ बेच दिया।

इसके बाद मेरे जीवन का बहुत थोड़ा भाग अवशेष रहा। आंख मीच कर, हाथ छोड़ कर किस प्रकार तेज गति से बाइसिकिल दौड़ाई जा सकती है, यह अनुभव करने के लिए बनिए ने शहर की ठण्डी सड़क पकड़ी और एक मिलिटरी लारी से टकरा गया।

आजकल मैं टूटी-फूटी हालत में एक कबाड़खाने में पड़ी हूँ, क्योंकि पुत्र के अस्थि-विसर्जन में जो खर्च आया, वह कबाड़ी के हाथों मेरे कलपुर्जे बेच कर ही पूरा किया जा सकता था। किन्तु एक बात है। जितने प्राणियों के संसर्ग में मैं अपने इस लघु जीवन में आई हूं, उनसे मैंने यही अनुभव किया है कि प्रत्येक को गति की आवश्यकता है, प्रत्येक अपनी शक्ति से अधिक दौड़ना चाहता है। मैं तो एक क्षुद्र साइकिल हूँ, किंतु लोगों ने गति के लिए मोटर और मोटर-साइकिलें तक आविष्कृत की हैं। परन्तु वह इतना दौड़ नहीं पाते। दौड़ते हैं, ठोकर खाते हैं और गिर पड़ते हैं, लेकिन गिर कर उठने का नाम कोई नहीं लेता। कृत्रिम साधनों से गति प्राप्त करने वाले यह जीव गति से बहुत शीघ्र घबरा जाते हैं और फिर पुराने ढर्रे पर चलने लगते हैं। ऐसा क्यों है?

एक बङ्गला कहानी

कोई नहीं

श्री सुबोधकुमार चक्रवर्ती

जिस रात घर के सारे माल-असबाब के साथ अठारह साल की सुषमा को भी दंगाई उठा ले गए, उसके बाद ही विनोद बाबू पूर्वी बङ्गाल को छोड़ कर कलकत्ते में स्थायी रूप से रहने चले गए।

बेकार है कुछ ढूँढ़ना, यह तो विनोद बाबू जानते ही थे, और कुछ पता चलने पर भी क्या किया जाएगा, इस सम्बन्ध में चिन्ता करने की मनोदशा भी इस समय उनकी नहीं थी। इस विपत्ति की हल चल, समस्त परिवार में, बाहर से अधिक अन्दर ही हुई।

तीन साल बाद—

विनोद बाबू सम्पत्ति सम्बन्धी खोज के लिए पाकिस्तान स्थित अपने गाँव लौट रहे थे। नाव जब गांव के थाने के पास से गुजर रही थी, तो दारोगा साहब की स्त्री दो साल के एक लड़के के साथ घाट के पास ही आ खड़ी हुई। विनोद बाबू का छोटा लड़का सतीश भी उनके साथ था। उसने उँगली दिखा कर कहा, 'पिता जी, वह जीजी है न!"

विनोद बाबू ने पहले ही देख लिया था, कहा, "नहीं!"

नाव चली गई। थोड़ी देर बाद दारोगा साहब के लड़के ने अपनी मां से पूछा, "अम्मीजान, ये कौन थे नाव पर?"

मां ने कुछ खोई हुई आवाज में उत्तर दिया, "कोई ··· नहीं!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता—
राजनैतिक और वैज्ञानिक युग में

कविवर श्री 'दिनकर'

कविता की अवस्था कुछ बहुत अच्छी नहीं है। समस्त संसार में आज राजनीति और विज्ञान की तुलना में कविता का कँगूरा बहुत ही नीचे है। किसी समय कवि द्रष्टा, मनीषी तथा मनुष्य का नेता समझा जाता था; मगर आज वह सिर्फ मनोरञ्जन का साधन हो गया है—मनोरञ्जन भी ऐसा जिसकी कीमत सिनेमा और कार्निवाल से भी कम है। यों तो कवि-सम्मेलनों के प्रति देश में बड़ी ही जागृति है और अखबारों में भी हर रोज कम से कम ३० मन कविताएँ छपा करती हैं, मगर इनका मूल्य सम्मान के स्तर पर शायद ही आंका जाता हो। कविताओं के पाठक वे लोग नहीं हैं, जिनके लिखने-बोलने या काम करने से देश की किस्मत में तबादले होते हैं।

एक समय था जब कि भोज की राजधानी में डाक्टरों और इन्जीनियरों को भी कुछ हद तक कवि होना लाजिमी था। आज वह समय है, जब कि डाक्टर और इन्जीनियर कविता की ओर झांकते भी नहीं। पहले जहां भोज और विक्रमादित्य कला का आनन्द लेने को अपने व्यस्त जीवन में से काफी समय निकाल लेते थे, वहां आज के शासकों को कविता के लिए उतना समय मिलना भी असम्भव हो जाता है, जितना समय वे बीसियों फिजूल कामों में खुशी-खुशी लगा देते हैं। कहते हैं, रोम जब अपने पूरे उत्कर्ष पर था, तब उसकी राज-सभा में देश के प्रसिद्ध लेखक और कवि आदर के साथ बिठाये जाते थे, वे राज्य की पालमेंट के सदस्य बनाये जाते थे। किन्तु अपने यहां विधान-परिषद् में कोई व्यक्ति सिर्फ इसलिए नहीं रखा जा सका कि वह देश की कविता या चित्रकारी का प्रतिनिधि है। देश की पार्लमेंटों में कोई भूल कर भी उन सत्यों का उद्धरण नहीं देता, जिनकी स्थापना साहित्य में की गई है। सर राधाकृष्णन् ही शायद एकमात्र अपवाद हैं। किन्तु उनकी सदस्यता इस बात का प्रमाण नहीं है कि देश की राजनैतिक सत्ता साहित्य के प्रति सम्मान रखती है। उलटे, इससे तो यही सिद्ध होता है कि राजनीति साहित्य को तब तक अपने पार्श्व में स्थान नहीं दे सकती, जब तक कि उसे वह भरोसा नहीं हो जाय कि इसके अपनाने से मान बढ़ेगा अधिकार के आस-पास पहुँचने के लिए जो योग्यता और लयाकत की सबसे बड़ी शर्त रखी गई है, वह सिर्फ साहित्य के लिए है। दूसरे लोग तो चाहे जैसी भी योग्यता को लेकर अधिकार के कक्ष में दाखिल हो सकते हैं। देश की सबसे बड़ी, सबसे शक्तिशाली और सबसे आदरणीय सार्वजनिक संस्था काँग्रेस के भीतर भी उन लोगों की पूछ नहीं है, जो नाटक, संगीत, चित्रकारी या काव्य में कोई चमत्कार उत्पन्न करते हैं विज्ञान और राजनीति ने मिल कर एक ऐसी अवस्था पैदा कर दी है, जिसमें साहित्य के पौधे उपेक्षित और म्लान होते जा रहे हैं। राजनीति ने अब एक नया नारा निकाला है कि साहित्य राजनीति का रणवाद्य है। संसार के एक बहुत ही प्रगतिशील देश ने अनुभवों से यह पता लगाया है कि राजनीति के सिद्धान्त अगर साहित्य के भीतर पचा दिये जायँ, तो वे मनुष्य के संस्कार बन जाते हैं और उन्हें फिर कोई हिला-डुला नहीं सकता। अतएव उस देश के शासकों की दृष्टि में साहित्य का मान बहुत कुछ बढ़ गया है और कहा जाता है कि वहां साहित्यिकों का दल सबसे सुखी और सम्मानित है किन्तु डूब कर देखने से पता चलेगा कि वहां भी गुलाब की प्रशंसा के लिए जो पुरस्कार दिया जाता है, वह उस पुरस्कार से कहीं न्यून है, जो प्रतिद्वन्द्वियों की निन्दा लिखने के लिए अत्यन्त आदर के साथ प्रदान किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारणतः जीवन में साहित्य का वही स्थान है, जो फूलों, पत्तियों, घटाओं और नदियों का है। इनके बिना जीवन नीरस और धरती निःस्वाद हो जाती है। किन्तु साहित्य की महत्ता यहीं तक सीमित नहीं रहती। साहित्य जब बढ़ कर क्षितिज पर छाने लगता है, तब उसके भीतर से ऐसे नक्षत्र भी फूटते हैं, जिनकी रोशनी में मनुष्य भविष्य की राह देखता है। अक्सर लोग कहते हैं कि कला हमें उड़ा कर जीवन की धूल और धुएँ से बाहर ले जाती है। सम्भव है, यह ठीक हो—बल्कि यों कहना चाहिये कि यह गलत नहीं है। मगर कला मनुष्य को उड़ा कर जीवन के भीतर भी ले जाती है और पहली उड़ान तो तभी सार्थक समझी जायगी अगर दूसरी उड़ान भी साध्य हो। अगर कवि शून्य में भरमाने के सिवा और कुछ नहीं करे, तो उसका पद मद-विक्रेता से ऊपर हो ही नहीं सकता। जिसे आप पलायनवाद कहते हैं, उसका मैं कटु आलोचक नहीं हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि कल्पना के महल (Ivory Tower) में जब तब बन्द हो जाने से कवि की शक्ति का विकास ही होता है और उसकी वाणी कला के चमत्कारों से युक्त रहती है।

कवियों के विरुद्ध जो वातावरण तैयार हुआ है, उसका एक कारण यह भी है कि लोग कल्पना को एक ऐसी शक्ति मानते हैं, जिससे छोटी-छोटी बातें भी बड़ी बनाकर कही जा सकती हैं। कवि को देखते ही लोग उसे अत्युक्तिपूर्ण बातें बोलने वाला और अव्यावहारिक मान लेते हैं। मगर ये दोनों ही बातें गलत हैं। कल्पना केवल कवि के लिए ही नहीं, बल्कि इतर जनों के लिए भी एक आवश्यक गुण है। कल्पना का उपयोग हम उन चीजों को देखने के लिए करते हैं, जिन्हें हमारी बाहरी आँखें नहीं देख सकतीं। कल्पना के जरिये हम उन आवाजों को सुनते हैं, जिन्हें हमारे बाहरी कान नहीं सुन सकते। कल्पना के जरिये हम द्रव्यों के उस रूप का वर्णन करते हैं, जो रूप साधारण भाषा के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता। जो कल्पना का निरादर करते हैं, वे जान-बूझ कर अन्धे हो रहे हैं। आँखों पर जो एक प्रकार का मोतियाबिन्द चढ़ता है, कानों पर जो एक प्रकार की पपरी जमती है, उसे दूर करना कल्पना का काम है। कल्पना के बिना न तो कमल का सौन्दर्य देखा जा सकता है और न पक्षियों के गीत ही सुने जा सकते हैं। और तो और, कल्पना के बिना एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से प्रेम भी नहीं कर सकता। मनुष्य परस्पर भाई-भाई है, यह कल्पना का सत्य है, जो जाहिर सत्यों से कहीं बलवान है और हम हिंदू और वह मुसलमान है, यह जीवन की कुरूपता की बोली है, जो सत्य होने पर भी घातक और विषाक्त है। कल्पना के अभाव ने संसार को युद्ध-शिविरों में बाँट रखा है। कल्पना के प्राचुर्य से सारी दुनिया एक होगी। जहां कल्पना नहीं, वहां निर्दयता होती है; जहां कल्पना नहीं, वहां भयङ्कर स्वार्थ होता है और जहां कल्पना नहीं, वहां मृत्यु होती है।

विज्ञान और राजनीति के समान ही साहित्य की भी अपनी सत्ता होती है और वे सब के सब जीवन की ओर ही उन्मुख होते हैं। मगर अफसोस की बात है कि कुछ साहित्यकार भी अपने को जीवन की पहुँच से परे मानते हैं और तब भी वे चाहते हैं कि जीवन उनकी वाणी पर आसक्त रहे। ये दोनों बातें साथ नहीं चल सकतीं। आज तक साहित्य जीवन के साथ विकसित होता आया था, इसीलिए लोग उसे अपने हृदय का हार बनाये हुए थे। किन्तु विज्ञान के आगमन के साथ अवस्था बदलने लगी। जङ्गलों में इंजिनों की सीटी सुन कर वनदेवी और कविता की परी दोनों ही घबड़ा उठीं और शहरों में चिमनियों को धुआं उगलते देख कर कवियों ने उनकी ओर से अपनी आंखें फेर लीं। कवि विज्ञान से विमुख होता गया और विज्ञान भी उसी अनुपात में साहित्य से बौद्धिकता का हरण करता गया। आज जनमत यह मानने लगा है कि बौद्धिकता का सारा कोष विज्ञान के पास है, कवि तो सिर्फ गाना गाता है। ऐसे जनमत के बन जाने से जो शाप निकले हैं, उन्हें साहित्यकार खूब ही भोग रहा है। अपने देश में उद्योग अभी कम फैले हैं, इसलिये समस्या की गहनता को हम ठीक से नहीं समझ सकते; किन्तु औद्योगिक देशों में आज साहित्य की सब से बड़ी समस्या यही है कि विज्ञान के साथ साहित्य का

(शेष पृष्ठ ४४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

श्री 'तन्मय' बुखारिया

कैसे बतला दूं, किस दिन वे कविता की पहिचान बन गए!
कब लय-छन्दों में लिपटे वे कवि की मधुर उड़ान बन गए!

इतना भर ही याद कि सारे तन का रोम-रोम सिहरा था,
इतना भर ही याद कि जैसे श्वासों का गति-क्रम ठहरा था;
इन अधरों पर अनजाने ही गीत स्वयं महमान बन गए!
कैसे बतला दूं, किस दिन वे कविता की पहिचान बन गए!

जब-जब मेरी दो आँखों ने प्राणों से सम्बन्ध निबाहा,
जब-जब मैंने अपने सूखे अधरों को तर करना चाहा;
तब-तब वे ममता अंजलि में मदिर-सुखद मधु-पान बन गए!
कैसे बतला दूं, किस दिन वे कविता की पहिचान बन गए!

जब-जब मैंने अपने पथ पर शूलों से तलवे सहलाए,
जब-जब मैंने गीत गुनगुना पीड़ा के आग्रह बहलाए;
तब-तब वे दिशि-दिशि क्षितिजों में मौन-मुखर आह्वान बन गए!
कैसे बतला दूं, किस दिन वे कविता की पहिचान बन गए!

जब जब मेरे मन के माँझी के भुज-दण्ड थके-हारे-से,
जब-जब डाँड हाथ से गिर कर टूट बहे पुच्छल-तारे-से;
तब-तब वे अनुकूल वायु में साहस की मुसकान बन गए!
कैसे बतला दूं, किस दिन वे कविता की पहिचान बन गए!

जब-जब आकर्षण से विचलित मेरा तप-आतप काँपा-सा,
जब-जब मेरे चिर-चिर संचित संयम ने निज को मापा-सा,
तब-तब वे पथ-भ्रष्ट योग में अपनेपन का ज्ञान बन गए!
कैसे बतला दूं, किस दिन वे कविता की पहिचान बन गए!

साधक की साधना कहें या स्वयं साध्य की कृपा-दृष्टि ही,
हँसने वाली आज बन गई अनुगामिनि-सी स्वयं सृष्टि ही;
मैंने तो पत्थर पूजा था, वे सचमुच भगवान बन गए!
कैसे बतला दूं, किस दिन वे कविता की पहिचान बन गए!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

टौस

श्री बंसीलाल यादव

★

खेल शुरू होने वाला ही था कि प्रकाश से चमचमाते उस सिनेमा-हाल में सीढ़ियों पर से अकस्मात् चूड़ियों की मधुर खनक और 'ईवनिंग-इन-पैरिस' के पराभूत कर देने वाले एक हल्के से झोंके ने कुछ-एक रसिक दर्शकों का ध्यान अपनी ओर चुम्बक की तरह आकर्षित कर लिया। चूड़ियों की खनक और उस तेज महक से वह गैलरी क्षण भर के लिये अस्थिर-सी हो गई।

एक ओर कोने में पङ्खे के नीचे बैठे राजीव और चन्द्रहास अब तक पुराने चित्रों की बड़े उत्साह से आलोचना कर रहे थे, किन्तु एक झटके के साथ दोनों का वाद-विवाद सहसा बन्द हो गया और दोनों में एक साथ कुसमुसाहट पैदा हो गई। दोनों ने देखा, एक वृद्ध महाशय के साथ एक भड़कीले रूप वाली लड़की सिनेमा-हाल में प्रवेश कर रही है। बैंगनी रंग की जॉर्जेट की साड़ी, कानों में झालर डोलती हुई, झालर में लगे मोती अपनी फांसी छुड़ाने को व्याकुल। सुघड़ चेहरा, उन्नत मस्तक, नुकीली भवें, उन्मत्त कर देने वाले नेत्र कन्धे पर अस्त-व्यस्त पड़ा साड़ी का छोर, घने-घने बाल! यौवन किलकारियां मार रहा था और रूप अंगड़ाइयां ले रहा था! दोनों के नेत्र फटे के फटे रह गये, नशा छा गया—नहीं नहीं, जैसे जादू-सा हो गया!

साथ वाले वृद्ध महाशय को, जो वेश-भूषा इत्यादि से उस लड़की के चाचा दीख पड़ते थे, जब आस-पास कोई खाली सीट नहीं दिखाई दी, तो लड़की ने राजीव और चन्द्रहास के सामने वाली खाली सीटों की ओर इशारा किया। दोनों तत्काल ही वहां आकर बैठ गये।

खेल शुरू होने वाला ही था।

जब वह लड़की आराम से बैठ गई, तो उसने न जाने क्यों पीछे की ओर देखा। दृष्टि राजीव से टकरा गई। राजीव के प्राणों में बिजली-सी दौड़ गई। पङ्खे की तेज हवा में भी उसके मस्तक पर पसीने की बूंदें चमकने लगीं।

चन्द्रहास ने रहस्यभरी दृष्टि से राजीव को देखा। राजीव को कुछ पता नहीं कि ···!

बस, खेल शुरू होने वाला ही था। लड़की ने तभी अकस्मात् फिर पीछे की ओर देखा। अब के भी न जाने क्यों सहसा दृष्टि चन्द्रहास से टकरा गई। चन्द्रहास की समस्त देह मानों झनझना उठी···और स्पन्दन बहुत ही तीव्र! पङ्खे की तेज हवा में भी वह रूमाल से मुंह पर हवा करने लगा।

राजीव ने रहस्यभरी दृष्टि से चन्द्रहास को देखा। चन्द्रहास को कुछ पता नहीं कि ···!

और खेल शुरू हो गया।

पर्दे पर चाँदी की तस्वीरें नाचने लगी, किन्तु राजीव के नेत्रों के सम्मुख तो जैसे प्रकाशपुञ्ज उड़ रहे थे और दृष्टि में पड़ने वाली प्रत्येक वस्तु तैर रही थी। बस, वही सलोनी-सलोनी आँखें, वही घने-घने बाल और कोमल कपोलों को चूमती हुई एक दो उच्छृंखल लटें नेत्रों में मचल मचल कर घूम रही थीं। पास ही सामने बैठी उस सुषमा और सम्मोहन, रूप और लावण्य की साकार प्रतिमा से सौरभ उठ-उठ कर राजीव के प्राणों पर नशा-सा छिड़क रहा था। सीलिंग-फैन की तेज रफ्तार में नशा लड़खड़ा रहा था, जिसे उसके दिल की तीव्र धड़कनें थाम लेने का विफल प्रयास कर रही थीं और उसका युवा हृदय धीमे-धीमे मस्तिष्क से साजिश कर रहा था—यौवन ···यौवन!

चन्द्रहास भी कुछ डुला हुआ-सा था। पर्दे पर क्या घट रहा था, उसका लेखा-जोखा उसके पास नहीं था। हां, वह एक तिरछी, चमकीली नजर ही नेत्रों में मूर्त थी। और नेत्र पर्दे पर स्थिर न होकर उस लड़की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कन्धों पर पड़ी फरफराती साड़ी को, उसके झूमते हुए इयररिंग को अनिमेष देख रहे थे। चन्द्रहास की छाती में स्पन्दन तीव्र था और दिल डांवाडोल।

चेतना और अवचेतना के संघर्ष में रह-रह कर उभक आ रहा था—रूप ... रूप ...।

और 'इंटरवल' हो गया।

राजीव और चन्द्रहास खट से यथार्थ की कठोर भूमि पर आ गिरे। कल्पना उड़ गई, स्वप्न उड़ गये। राजीव ने चन्द्रहास को अचकचा कर कहा—"अरे, इतनी जल्दी इंटरवल, चन्द्रहास ?"

तो चन्द्रहास ने आश्चर्य लुटाते हुए कहा, "ओह ! हां—राजीव !"

राजीव ने कहा—"चन्द्रहास !"

और चन्द्रहास ने कहा—"राजीव !"

और तब दोनों ने सिर झुका लिया और फिर अन्यत्र कहीं देखने लगे—खौंचे वालों को, छत की चित्रकारी को, चवन्नी की क्लास में बैठे सिनेमा-प्रेमियों की विचित्र चिल्ला-पों को ··· कि तभी लड़की ने कनखियों से चन्द्रहास को देखा। चन्द्रहास की नजरें यन्त्रचालित-सी उधर घूम गईं और मन किलक उठा। राजीव को यह कुछ अच्छा नहीं लगा।

और लड़की ने फिर राजीव को देखा। राजीव की नजरें भी यकायक उधर घूम गईं। उसका तृषित हृदय उल्लास के मादक छींटों से भीग गया। चन्द्रहास को यह कुछ अच्छा नहीं लगा।

और खेल फिर शुरू हो गया।

खेल कब समाप्त हो गया, यह राजीव और चन्द्रहास दोनों की ही बुद्धि में नहीं आ पाया और जब दूसरे दर्शक उठ-उठ कर जाने लगे, तो वे भी उनके साथ हो लिये।

बाहर निकले तो धीमी-धीमी बूँदा-बांदी हो रही थी। चन्द्रहास भीड़ में कुछ आगे निकल गया था। जब राजीव भी गेट से बाहर निकल कर सड़क पर आया तो देखा, चन्द्रहास खोया-खोया-सा खड़ा था।

आज अधिकार सम्बंधी झगड़े प्रायः टौस द्वारा तय कर लिये जाते हैं। क्या प्रेम का झगड़ा भी इसी सभ्य विधि से तय हो सकता है ?

★

राजीव ने उसके कन्धे हिला, हौले से पुकारा, "चन्द्रहास !"

चन्द्रहास जगते हुए बोला, "हूँ !" और कुछ समझने का उपक्रम करने लगा।

राजीव बोला, "अरे, अब तो छोड़ यह मनन-चिंतन, फिर ही सोच लेना पिक्चर के बारे में।"

चन्द्रहास बोला, "मैं पिक्चर के बारे में नहीं सोच रहा था, राजीव, मैं तो सोच रहा था कि ...।"

"क्या ?"

"यही कि ···"

"चन्द्रहास !"

"हूँ !"

"क्या सोच रहे थे, बताओ ना ?"

"सोच रहा था कि वह लड़की ···"

"ओह, चन्द्रहास !" राजीव का उत्साह बुझ-सा गया।

"हूँ"

"कुछ नहीं···।"

"कुछ नहीं ! क्या ?"

"यही कि···"

"क्या सोच रहे हो, बताओ ना ?"

"सोच रहा हूं कि वह लड़की ···"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"राजीव !" चन्द्रहास का उत्साह बुझ-सा गया ! किसी प्रकार फिर बोल पाया वह, "क्या तुम भी ···?"

"हां," राजीव गम्भीर हो गया, फिर तमक कर बोला, "और तुम भी ··· ?"

चन्द्रहास ने सिर डाल लिया और चुप हो गया !

भीड़ में पता नहीं वह लड़की कहां और कब खो गई। बूंदा बांदी अब बिल्कुल ठहर गई थी और ठण्ढी-ठण्ढी हवा प्राणों को जीवन प्रदान कर रही थी। राजीव और चन्द्रहास अपनी-अपनी गुत्थी को लिये वहां सड़क पर एक लैम्प-पोस्ट के नीचे खड़े थे, न आगे जाते थे, न पीछे। तो चन्द्रहास बोला, "चलो राजीव, घर चलें !"

राजीव बोला, "घर क्या होगा ?"

चन्द्रहास ने हामी भरी, "हां, घर क्या होगा ? पर खाना भी तो नहीं खाया है तुमने ?"

राजीव ने कहा, "भूख नहीं रही मुझे तो।" फिर संभलते हुये बोला, "हां, चलो। तुमने भी तो कुछ नहीं खाया है। घर चलें।"

चन्द्रहास ने कह दिया, "भूख नहीं है रत्ती भर भी मुझे तो।"

राजीव हँसते हुए बोला, "अच्छा, तो चलो, आज 'इण्डिया-काफी-हाउस' में ही डेरा डाला जाय। वक्त भी सलोना है। चाय पर सम्भव है, अपनी यह गुत्थी सुलझ जाय — कोई रास्ता निकल आ सकता है, चन्द्रहास !"

"हां, यह माना। चलो।"

* * *

'इण्डिया-काफी-हाउस' की ओर जाते समय राजीव और चन्द्रहास ने देखा कि वही सिनेमा वाले वृद्ध महाशय और उनके साथ वाली लड़की रङ्गीलाल जौहरी की दुकान से अचानक निकले और दुकान के सामने खड़े एक तांगे पर बैठ गये। जब वे बैठ गये तो चन्द्रहास ने तांगे में से अचानक कोई चीज पहिये के पास नीचे गिरती हुई देखी और तांगा हवा से बातें करता हुआ अँधेरे में ओझल हो गया। राजीव का इस ओर ध्यान नहीं था। वह अब भी निर्निमेष उधर ही देख रहा था, जिधर तांगा भागता हुआ अकस्मात् ओझल हो गया था।

चन्द्रहास ने लपक कर धड़कते हुए हृदय से गिरी हुई चीज को उठा लिया और चिल्लाकर कहा, "अरे राजीव, देखो तो पर्स !"

आश्चर्यान्वित हो राजीव बोला, "कैसा पर्स ? किसका है यह ? देखूं।"

"यह झूठी बात। प्रेम की निशानी भला यों त्यागी जा सकती है ?" चन्द्रहास ने विनोद किया।

चन्द्रहास का आशय समझ में आते ही राजीव के माथे पर बल पड़ गये। संभ्रम, आशा और आशङ्का में वह उलझ-सा गया। क्या उस लड़की ने यह पर्स वास्तव में चन्द्रहास के लिये ही जान-बूझ कर डाल दिया था ? क्या वह चन्द्रहास पर आसक्त हो गई है ? तभी तो वह यह निशानी डाल गई है ? तो क्या वह मुझसे घृणा ··· ?

और चन्द्रहास सोच रहा था—क्या वास्तव में उसे मुझसे प्रेम हो गया है ? या असावधानी से यह तांगे में से गिर पड़ा है ? नहीं, गिर नहीं सकता, आकर्षण का ही सबूत है यह तो। और भावावेश में उसने उस पर्स को सीने से लगा लिया। राजीव बस, कुढ़े जा रहा था।

चाय का एक सिप लेते हुये चन्द्रहास बोला, "देखो राजीव, हम दोस्त हैं !"

राजीव ने बिना विरोध मान लिया, "हां, हम दोस्त हैं !" पर दृष्टि उस पर्स पर टिकी हुई थी।

चन्द्रहास ने कहा, "और आज जब हमारे दोनों के बीच एक लड़की आ गई है, हमारी मित्रता में कोई अन्तर नहीं आना चाहिये। हमें अपनी वर्षों पुरानी मित्रता का ध्यान रखना होगा।"

राजीव ने बिना हिचक के कह दिया, "माना।" पर्स अभी भी आँखों में खटक रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रहास ने आगे कहा, "तो हमें कोई ऐसा उपाय सोचना चाहिये कि यह समस्या हल हो जाय—कोई ऐसा रास्ता जो दोनों को स्वीकार हो, ऐसा रास्ता जिससे हमारी अभिन्न मित्रता पूर्ववत् घनिष्ठ बनी रहे!"

राजीव ने सिगरेट का कश खींचते हुए कहा, "हां, यही मैं सोचता हूं। दोस्त हम वर्षों के हैं और लड़की आज हमारे दिलों में उतरी है। अच्छा तो यही है कि वह हमारे बीच दरार पैदा करने में समर्थ न हो सके—यही हमारी मित्रता का सब से सुन्दर सबूत होगा।"

चन्द्रहास ने राजीव का कन्धा ठोंकते हुए कहा, "यही, बिल्कुल यही! अच्छा, तो ऐसा करें—अपना-अपना नाम कागज के टुकड़ों पर लिख कर गोलियां बनायें और फिर किसी छोटे अबोध बालक को उन गोलियों में से किसी एक को खोलने को कहें। जिसके नाम की गोली वह अपने हाथों से खोलेगा, वही उस लड़की का अधिकारी बनेगा। इस प्रकार के फैसले में फिर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिये। बच्चे का न्याय अन्तिम और मान्य होगा। क्यों, स्वीकार है तुम्हें?"

राजीव ने प्याला मेज पर रखते हुये तत्पर हो कहा, "लेकिन, चन्द्रहास, 'टौस' क्यों नहीं करलें। किसी ऐसे तीसरे आदमी के हाथ यह 'टौस' का काम सौंपें, जो इस विषय में जरा भी दिलचस्पी न रखता हो। 'हैड' और 'टेल' पर हमारी किस्मतों का निर्णय रहेगा।"

"हां, सूझी तो तुम्हें अच्छी, पर इसमें यही देख लो कि बाद में बेईमानी या किसी प्रकार का झगड़ा नहीं होना चाहिये। ऐसा न हो कि फिर उम्र भर की दुश्मनी ठन जाय कहीं।"

राजीव विश्वास दिलाते हुए बोला, "नहीं, चन्द्रहास, मुझे तुम पर पूर्ण विश्वास है। तुम विश्वासघात नहीं कर सकते और न इस जन्म में मेरे शत्रु ही हो सकते हो।"

चन्द्रहास तनिक गम्भीर होते हुए बोला, "वैसे तुम भी मेरे लिए कोई अपरिचित नहीं हो। इस जीवन में तुम्हीं मेरे एक मात्र घनिष्ठ मित्र रहे हो। तुम्हारा जितना विश्वास मैंने आज तक किसी का नहीं किया है। और वैसे भी सदैव तुम में मेरी श्रद्धा रही है। किन्तु स्त्री का प्रेम पुरुष से सब कुछ करा देता है, राजीव—कभी-कभी ऐसा भी कि जिसकी हम कल्पना तक नहीं कर सकते। प्रेम अन्धा होता है और साथ ही उसमें ईर्ष्या के कीटाणु भी होते हैं। ईर्ष्या की उत्पत्ति होते ही फिर बाकी क्या रह जाता है? प्रतिद्वंद्विता की आग भड़कते ही बुराई ही बुराई इन्सान का धर्म बन जाता है और सच तो यह है कि तब अच्छा-खासा मानव भी दानव बन जाता है। ऐसी परिस्थितियां प्रायः मनुष्य के जीवन में आया करती हैं, इसी से कह रहा हूं।"

राजीव हंसते हुए बीच में ही बोला, "घबराओ नहीं, चन्द्रहास, हम अपनी मित्रता का एक आदर्श उदाहरण छोड़ जायंगे। यदि भाग्य तुम्हारा जाग गया, तो मैं तुम से जलूंगा नहीं, बल्कि हो सका तो सदैव तुम्हारी सेवा कर अपने को कृतार्थ करूंगा!"

"और तुम भी देखना राजीव," बीच ही में चन्द्रहास सिगरेट को ऐश-ट्रे पर रखते हुए बोला, "जो कभी मैं अपनी हारी हुई किस्मत पर कुंठित होऊं। मैं सदैव यत्न करूंगा कि अपनी अटूट मैत्री को स्थिर बनाए रखूं, तुम्हारी सुन्दर गृहस्थी में सहायक सिद्ध हो कर अपना सौभाग्य समझूं!"

"बस, चन्द्रहास, मुझे स्वीकार है!"

"हां, मुझे भी स्वीकार है!"

"तो अब एक-एक प्याला और पी लिया जाय, क्यों?"

"हां, जरूर पिया जायगा—समस्या हल करने में दिमाग जो खपे हैं इत्ती देर!"

और तब ब्वॉय को आवाज दी। दो प्याले चाय आ गई। दोनों फिर से चाय पीने लगे।

राजीव ने कहा, "अच्छा, चन्द्रहास, हम दोस्त हैं न!"

चन्द्रहास ने बिना विरोध मान लिया, 'हाँ, हम दोस्त हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव ने कहा, "तो खोलो फिर यह पर्स !"

चन्द्रहास ने बिना विरोध पर्स खोल दिया। लपक कर राजीव चन्द्रहास के पास आ गया और तब दोनों ने देखा, पर्स में उस लड़की की एक तस्वीर थी और एक कार्ड था, जिस पर लिखा था—'नयनतारा बी. ए. क्रिश्चनगंज !'

दोनों ने एक साथ खुशी से चीखते हुए कहा, "पता मिल गया ! लो मार लिया मैदान !"

तभी राजीव ने एक नई तजवीज पेश की, "चन्द्रहास, यह कैसा रहे अगर टौस हम इस नयनतारा ही से कराएँ ?"

"अरे वाह भाई ! तुम्हारी इस सूझ का कायल हुए बिना मैं नहीं रह सकता, राजीव ! मजा आ गया ! पर वहां जायंगे किस बिना पर ?"

"अरे, यह भी क्या बड़ी बात है ! कहेंगे पर्स लौटाने आये हैं और फिर बस, पर्स लौटाते-लौटाते ही मचल जायेंगे वहां। क्यों ?"

पीठ ठोंकते हुए चन्द्रहास इस युक्ति से सहमत हो गया और तब फिर से लम्बी-लम्बी स्कीमें बनाई गईं, कई रिहर्सल किये गये, बड़े-बड़े वादे हुए और दूसरे दिन शाम को तीन बजे जाने का समय निश्चित हो गया।

* * *

भयंकर गर्मी पड़ रही थी; चारों ओर मुहल्ले में सन्नाटा था। कुत्ते भी न जाने कहां छिपे पड़े थे। राजीव और चन्द्रहास को नयनतारा की उस सुन्दर और आधुनिक ढंग की बनी भव्य इमारत के सामने खड़े चार-पांच मिनट हो गये थे। बाहर लगे उसके नाम के एक बोर्ड से उन्हें यह तो निश्चय हो गया था कि मकान तो यही है, पर यह समझ में नहीं आ रहा था कि उसे बुलवाया कैसे जाय। तभी चन्द्रहास को कोने में लगी कॉल-बैल नजर आ गई। लपक कर वह उधर बढ़ा और उसको दबाने को ही था कि राजीव ने उसका हाथ पकड़ लिया, "यह नहीं हो सकता, चन्द्रहास ! घण्टी बजाएँगे तो दोनों ही— टौस से पहले हक दोनों का बराबर है !"

चन्द्रहास को किये गये वादों का ध्यान हो आया, उसने कहा, "अच्छा, मंजूर।"

और तब दोनों ने अपनी एक-एक उँगली रख बटन दबाना आरम्भ कर दिया और दोनों ही धड़कते हृदयों से प्रतीक्षा करने लगे। कोई तीन-एक मिनट पश्चात् दर्वाजा खुला और नौकर ने आकर कहा' "आप लोग इस बगल वाले कमरे में तशरीफ ले आयं !"

"पर" दोनों हिचकते हुए बोले, "नयनतारा···?"

"हां, हां, अभी आये जाती हैं। आप इतमिनान से तशरीफ रखिये !"

राजीव झपट कर अन्दर घुसने लगा, तो चन्द्रहास ने उसकी बांह पकड़ ली, "हक दोनों का बराबर है, आगे नहीं जा सकते। जायेंगे तो दोनों साथ।"

और झगड़ा हो गया।

"नहीं, पहले हक मेरा है," राजीव बोला, "सिनेमा में पहले उसने मेरी तरफ देखा था।"

चन्द्रहास ने आंखें नचाते हुए कहा, "जी हां ! और पर्स पहले किसे मिला था ?"

"उससे क्या ?" राजीव बोला।

"तो इससे भी क्या ?" चन्द्रहास अड़ गया। नौकर के कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि झगड़े के बीच में ही चन्द्रहास ने नौकर से कह दिया, "ए, तुम क्या मुंह तक रहे हो ? तुम क्या समझो यह हक-हकूक के मामले ? जाओ, अपना काम करो। तुम्हारी मालकिन ही समझ सकती हैं हमारा झगड़ा !"

और नौकर चला गया। अन्त में राजीव और चन्द्रहास दोनों में यह तय हो गया कि कमरे में प्रवेश दोनों एक साथ करेंगे। टौस से पहले हक दोनों का बराबर है। और तब चन्द्रहास ने 'लैफ्ट' का हुक्म दिया और चन्द्रहास ने कदम मिलाये। डरते-डरते दोनों एक सोफे पर बैठ गये और चारों तरफ नजर फेंक कर कमरे की जांच की। बहुत ही सुन्दर और सजा हुआ कमरा था। प्रत्येक वस्तु करीने से सजी हुई थी। कांच की खिड़कियों पर नीले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेशमी पर्दे, दीवारों पर अनेक सुन्दर तैलचित्र, रेडियो-सेट, कोने में पियानो, चमचमाती मेज और कुर्सियां, दीवाल पर 'क्राइस्ट' की एक बड़ी तस्वीर। मेज पर छोटी टाइम-पीस सवा तीन बजा रही थी।

चन्द्रहास ने कहा, "यह तो कोई अमीर की लड़की दीखती है, यार!"

राजीव बोला, "बस, चुप रहो! भागना पड़े तो साथ-साथ भागेंगे।"

तभी नयनतारा ने कमरे में प्रवेश किया। घने काले बाल खुले हुए कन्धों पर बिखरे हुये थे। चंदा-सा गोल मुख दमक रहा था। बड़ी-बड़ी सलोनी आँखें। बनारसी साड़ी में कोई अप्सरा जान पड़ती थी। एक उज्वल, कोमल मुस्कान से उसने दोनों का अभिवादन किया, "गुड इवनिंग!"

राजीव और चन्द्रहास कँपकँपाते-से उठ कर सूखे कण्ठ से बोले, "गुड इवनिंग!"

पास के एक सोफे पर बैठते हुये नयनतारा बहुत ही मृदु कण्ठ से बोली, "बैठिये! जान सकती हूँ, कैसे कष्ट··· ?"

बैठते हुये राजीव और चन्द्रहास ने एक साथ कहा, "यह पर्स आपका!"

"ओह, बहुत-बहुत शुक्रिया! कहां मिला यह आपको?"

दोनों ने पर्स गिरने की कहानी जब आद्योपान्त सुना दी, तो नयनतारा ने कृतज्ञता प्रकट करते हुये कहा, "सच, आप जैसी ईमानदारी बहुत कम देखने में आती है आजकल। आपने मुझे मौर्यकाल का स्मरण करा दिया है। आपके नाम जान सकती हूँ?"

दोनों ने एक स्वर में बताया, "राजीव, चन्द्रहास!"

नयनतारा ने दोनों की ओर दृष्टिपात किया, फिर पूछा, "आपकी योग्यतायें?"

दोनों ने एक स्वर में बताया, "एम० ए०, बी० एस-सी०!"

नयनतारा ने दोनों की ओर देख कर फिर पूछा, "आपकी जाति? माफ कीजिये प्रश्न मेरा असङ्गत है, फिर भी···"

"जात तो औरतों के होती है—एक तो माता की, दूसरी प्रिया की! वैसे हम ब्राह्मण, क्षत्रिय हैं और वैसे आजाद ख़याल।"

नयनतारा हँस पड़ी, बोली, "आप में से कौन क्या है, अलग-अलग बताइये!"

बीच में ही दोनों बोल पड़े, "अलग-अलग हम बता नहीं सकते, प्रतिज्ञा भङ्ग होती है। टौस के बाद ही यह सम्भव हो सकेगा।"

"कैसी टौस?" नयनतारा के नेत्रों में मुसकान खेल रही थी।

दोनों ने अपना सम्पूर्ण साहस एकत्र कर अब किसी प्रकार कह दिया, "आप हँसती हैं, यहाँ अपनी किस्मतों का फैसला सुनने को हमारे प्राण बाईस घण्टों से व्याकुल हो रहे हैं। आपने हमारी तरफ सिनेमा में देखा था ना?"

यह बात समाप्त होते ही दोनों पसीने से नहा गये। और नयनतारा पर सब कुछ स्पष्ट हो गया। वह अब शरारत से भर उठी, बोली, "मैं आपके सुन्दर विचारों और आदर्शों की सराहना किये बिना नहीं रह सकती। आपने 'टौस' का अधिकार स्त्री को सौंपा है—होना भी यही चाहिये। उसे भी कुछ तो अधिकार मिलने ही चाहिये। स्त्री के अधिकारों को कुचल देना स्वार्थी पुरुष अनादिकाल से अपना धर्म समझता आ रहा है। यह उसकी ज्यादती अनधिकार चेष्टा और मानसिक संकीर्णता नहीं तो और क्या है?"

और यह कह उसने नौकर को तीन गिलास शरबत लाने को कहा। राजीव और चन्द्रहास को तृप्ति की एक घूँट-सी मिली।

इस समय टाइम-पीस पौने चार बजा रही थी। नयनतारा ने तब उठकर राजीव और चन्द्रहास को अपना 'ऐलबम' दिखाया, कुछ एक अपने बनाये चित्र दिखाये और जाने कहां-कहां की बातों में उन्हें व्यस्त कर लिया। राजीव और चन्द्रहास अधीर हृदयों से अपने भाग्य का निर्णय सुनने को उत्सुक हो रहे थे। जब नयनतारा राजीव से बातें करते समय जरा मुस्करा देती तो राजीव समझता, मेरे पक्ष में अब फैसला दिया और जो कभी कनखियों से देख चन्द्रहास की ओर खिलखिला पड़ती, तो चन्द्रहास को विश्वास-सा हो जाता कि मैदान मैं ही मारूँगा। सुख की एक झुर झुरी-सी उसकी हड्डियों के पार हो जाती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरबत आ गया। सब पीने लगे। बीच-बीच में संगीत, नृत्यकला, समाज, सैक्स इत्यादि पर बातें होती रहीं। राजीव और चन्द्रहास की बुरी हालत थी। नयनतारा के केवल एक 'हां' और 'ना' पर उनकी जिन्दगियों का प्रश्न अटका हुआ था। किन्तु बातों में उलझा कर नयनतारा और-और प्रसंग छेड़ देती थी और उनका उत्साह बुझ-बुझ जाता था। राजीव और चन्द्रहास दोनों ही नयनतारा के सम्मुख सुन्दर बनने और अपने पक्ष में फैसला सुनने का भरसक प्रयत्न कर रहे थे। इसी सान्मुख्य में उनके हृदयों की विचित्र अवस्था होती जा रही थी कि तभी घड़ी ने चार बजा दिये और नयनतारा ने उठते हुये कहा, "ओह, चार बज गये। अब इजाजत दीजिये, मेरे पति आने वाले हैं। अच्छा, गुडबाई!"

राजीव और चन्द्रहास पर मानों बिजली गिर पड़ी, दोनों का नशा उतर गया।

दरवाजे से बाहर होते-होते नयनतारा बोली, "देखिये, मजाक मत जानिये, वे इस मामले में बड़े सख्त हैं। अब आप तशरीफ ले जायं, वरना ··· और हां, आपने पूछा था कि मैंने सिनेमा में आपकी तरफ देखा था — तो उसे आप कुछ 'सीरियस' न समझें। जब मेरे पति मेरे साथ नहीं होते हैं, तो अक्सर मैं इसी प्रकार देख लिया करती हूँ!"

एक जोर का ठहाका मार, वह तितली की तरह फुर्र से उड़ गई!

चन्द्रहास ने भुनकर कहा, "अच्छा, यह बात!"

* * *

बाहर सड़क पर आ, चन्द्रहास बोला, "कोई बात नहीं, राजीव, शर्म की कोई बात नहीं। यह देखो, पर्स तो आखिर ले ही आया मैं भी!"

राजीव ने ताज्जुब से चन्द्रहास को देखा। चन्द्रहास ने पर्स खोला—नयनतारा का चित्र निकाला, खट् से चित्र के दो टुकड़े किये और एक टुकड़ा उसने राजीव की जेब में डाल दिया और एक अपनी जेब में। पर्स को गुस्से में पास की नाली में फेंक दिया और 'क्विक मार्च' करते हुये दोनों अपने घरों की ओर चल पड़े।

इक यदि कुछ थे, तो अब भी बराबर।

★

गीत

श्री नीरव एम. ए.

तुम मुझको इतना दान न दो।

तुम फूलो और फलो सुखकर,
यह जीवन हो स्वर्णाभ सुघर,
मैं अपने को अपना न कहूँ
मत भूल करो, यह मान न दो।

अविजित अक्षय आभार दिया,
मधु से मीठा मधु प्यार दिया,
जो मेरे प्राण अजय बांधे
प्राणों का बन्धन, प्राण! न दो।

हम पथिक एक पथ आप मिले,
संयोग साध के साथ चले,
सुख है नयनों की बोल-चाल
परिचय मत दो पहिचान न दो।

स्वप्नों की काया का अतन्द्र,
चलने दो यह स्वर मदिर मन्द्र,
जो स्वयं तुम्हीं फिर सुन न सको
हंस कर वह विप्लव-गान न दो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरों को विचारानुकूल बनाने की ११ रीतियाँ

श्री रामचरण महेन्द्र

जो व्यक्ति दैनिक जीवन तथा व्यवहार में मनोविज्ञान के नियमों का प्रयोग करता है तथा दूसरों की भावनाओं से परिचित है, वह सर्वदा समाज में प्रिय बना रहता है। लोकप्रियता अनायास ही नहीं आ जाती, प्रत्युत वह व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक प्रयोग पर निर्भर रहती है।

आधुनिक मनोविज्ञान ने मानव-समाज में एक क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। अब मनोविज्ञान का इतना विकास हो चुका है कि दूकानदार, आफीसर, अध्यापक, एजेंट, व्याख्याता, माता-पिता प्रत्येक व्यक्ति को दूसरों के मनोभावों के अनुसार व्यवहार करना पड़ता है। अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक डेलकार्नेगी ने इस विषय पर बड़ा सुन्दर लिखा है। उनकी पुस्तक का शिक्षित संसार में बड़ा आदर हुआ है। उस पुस्तक के मूल सिद्धान्तों का प्रतिपादन इस लेख में किया जायेगा। इन ११ सिद्धान्तों के अन्तर्गत सभी महत्वपूर्ण बातें आ जाती हैं।

१. बहस मत करिये

जब हम बहस करते हैं, तो दूसरे व्यक्ति को अपनी समस्त बुद्धि, तर्क तथा कौशल द्वारा अपनी प्रतिष्ठा एवं गर्व की रक्षा करने पर विवश होना पड़ता है। यदि हम दूसरे से अधिक योग्य हुए, तो उसके लिए पेचीदा स्थिति पैदा हो जाती है—उसके अहं को बड़ी ठेस पहुँचती है। बहस हमारी महत्ता तथा दूसरे की कमजोरी पर आश्रित होती है। स्मरण रखिये, बहस से आप दूसरे को कभी विचारानुकूल नहीं बना सकते। अतः बहस छोड़िये। यदि कभी अवसर भी आये तो उसे शिष्टता से बचा जाइये। दूसरे को भी अपनी बातें खुलकर कहने का अवसर प्रदान कीजिये।

२. दूसरों को झूठा न बताइये

दूसरा व्यक्ति चाहे कैसा भी झूठा, चोर या दुष्ट हो, वह आपके मुँह से यह नहीं सुनना चाहता कि वह चोर, मूर्ख या दुष्ट है। वह आपसे आदर और प्रतिष्ठा चाहता है। यदि आप यह आदर उसे देना चाहते हैं, तब वह आपसे बातें करने को तैयार रहेगा; यदि आप उसकी बुराइयाँ बखानते हैं, तो वह कान फेर लेगा। वह आपसे आदर चाहता है। साधारण बात में रुखाई, कठोरता, तानेबाजी, उद्दण्डता और जल्दबाजी न होनी चाहिये यदि आपको कोई अप्रिय बात कहनी भी है, तो उसे बड़े कौशल से कहिये। सदा दूसरे की प्रतिष्ठा और अहं के पोषण का विशेष ध्यान रखिये।

३. अपनी भूल फौरन स्वीकार कर लीजिये

जब कोई व्यक्ति भूल कर बैठता है तो उसे अपनी भूल स्वीकार करते हुए बड़ा भय प्रतीत होता है। वह सोचता है कि अपना दोष और अपराध स्वीकार कर लेने पर मैं दूसरों के सामने अपराधी समझा जाऊँगा, मेरी बेइज्जती होगी, लोग मुझे बुरा-भला कहेंगे और गलती का दण्ड मुझे भुगतना पड़ेगा। वह सोचता है कि इन सब झंझटों से बचने के लिए यह अच्छा है कि अपनी गलती को स्वीकार ही न करूँ; उसे छिपा लूँ, या किसी दूसरे के सिर मढ़ दूं।

यह मनुष्य की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया है। किन्तु हमें इस प्रकार की कमजोरियों के ऊपर विजय प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनी चाहिए। दूसरा व्यक्ति अपनी गलती तब तक स्वीकार न करेगा, जब तक आप उसके सामने अपनी भूलों को स्वीकार न करें। आपकी भूलों को सुनकर वह भी अपनी भूलों को अवश्य मान लेगा।

एक दोष को छिपा लेने से पुनः पुनः उसी त्रुटि को छिपाने को जी चाहता है। चरित्र में एक स्थान पर कमजोरी होते ही मानवीय दुर्बलता बढ़ने लगती है और अनेक गलतियों को करने और छिपाने की आदत पड़ जाती है। दोषों से मानसिक ग्रन्थियों का निर्माण होता है और वे जटिलतर बनती जाती हैं। मानसिक ग्रन्थियों के भार से अन्तःकरण दिन प्रतिदिन मैला, भद्दा और दूषित होता जाता है और अन्ततः वह व्यक्ति दोषों और कमजोरियों की खान बन जाता है। गलती करना उसके स्वभाव का एक अङ्ग बन जाता है।

भूल को स्वीकार करने में मनुष्य की महत्ता कम नहीं होती, वरन् उसके महान् आत्मिक साहस का पता चलता है। जो लोग अपनी भूल को स्वीकार करते हैं और भविष्य में वैसी भूल न करने की प्रतिज्ञा करते हैं, वे क्रमशः सुधरते और आगे बढ़ते जाते हैं। गलती मानना और उसे सुधारना—यही व्यावहारिक कुशलता का मार्ग है। जब आप दूसरे के समक्ष अपनी भूल स्वीकार करते हैं, तो दूसरा व्यक्ति यह समझता है कि उसी की प्रेरणा से ऐसा हुआ है; अतः उसे भी आन्तरिक सुख का अनुभव होता है।

४. बातचीत मित्रता के ढङ्ग से शुरू कीजिये

अनेक बार लोग बातचीत करने में असफल होते हैं। उसका प्रधान कारण यह है कि वे बातचीत की कला से अनभिज्ञ हैं। बातचीत मित्रता के ढङ्ग से प्रारम्भ करनी चाहिए; परन्तु वे अपनी ही अपनी गाये जाते हैं। दूसरे की बातें सुनना नहीं चाहते। यदि उन्हें ऐसा अवसर आ जाय, तो वे नाराज हो जाते हैं और उखड़ बैठते हैं।

अनेक व्यक्ति ऐसे अक्खड़ और क्रोधी होते हैं, या घमण्ड में इतने चूर रहते हैं कि उनसे बातचीत प्रारम्भ करना ही कठिन होता है। किस प्रकार उनसे बातचीत शुरू की जाय? आप उनसे इस प्रकार वार्त्तालाप प्रारम्भ कीजिये मानों आपकी पुरानी मित्रता है, बहुत दिनों के पश्चात् आप उनसे मिले हैं। बातचीत में 'महाशय', 'जनाब', 'श्रीमान्', 'मित्र', 'मेहरबान', 'साहिब', 'बाबू', 'भाई' आदि शिष्टाचारसूचक शब्दों का यथायोग्य व्यवहार करो। मान्य पुरुषों के साथ शिष्टता-युक्त शब्दों में शान्ति और नम्रता के साथ अत्यन्त बुद्धिमानी से बातचीत करनी चाहिये; ऐसा न हो कि आप उनकी दृष्टि में उद्दण्ड, मूर्ख, अथवा घमण्डी ठहरें।

दूसरे के स्वभाव को परख लीजिये और उसी के अनुसार अधिक या कम गम्भीर बातें कीजिये।

५. अहंकार-तृप्ति का ध्यान रखिये

बीसवीं सदी के एक मनोवैज्ञानिक का कथन है कि मनुष्य के सभी कार्यों और व्यवहारों के मूल में प्रधानतः अहंकार रहता है। अहंकार क्या है? डेवी साहब के अनुसार, 'अहंकार का अर्थ है महत्त्वपूर्ण बनने की आकांक्षा।' आदमी अपने आपको बड़ा देखना चाहता है। वह मान, इज्ज़त और बड़प्पन का भूखा है। हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में अपने को बड़ा सिद्ध करने की चेष्टा कर रहा है। उसका 'अहं' किसी न किसी रूप में प्रकट हो रहा है। अब्राहम लिंकन ने कहा है, 'दुनिया में कौन ऐसा है, जो यह न चाहता हो कि दुनिया उसका सम्मान करे!' विलियम जेम्स ने अहंकार की रक्षा के विषय में लिखा है, 'मानव-स्वभाव की गहनतम प्रवृत्ति है महत्त्वपूर्ण बनने की प्यास।'

आप इस अहंभाव की उपेक्षा कर किसी के प्रिय-भाजन नहीं बन सकते। प्राचीन वैराग्यवादियों ने 'अहंकार' की बड़ी तीखी आलोचना की है और उसे मनुष्य की एक बड़ी कमजोरी बताया है। मनुष्य चाहे कितना भी विद्वान्, अमीर, बड़ा क्यों न हो जाय, वह अपने को महत्त्वपूर्ण समझने और महत्त्वपूर्ण बनने की भावना से ग्रस्त रहता है। महत्त्वपूर्ण बनने की आकांक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से ही सभ्यता और संस्कृति का विकास होता है। प्रत्येक साधारण व्यक्ति असाधारण बनने की प्रबल आकांक्षा से प्रेरित हो कर यहां पर पद प्राप्त कर सका है।

आप अपने वार्त्तालाप में दूसरे को महत्वपूर्ण साबित करते चलिये और उसके हृदय के अहकार की रक्षा करते रहिये। आत्म-प्रशंसा और अहंकार की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण ढङ्ग निकालिये।

अनेक बार 'अहं' की तृप्ति के लिए मनुष्य पागल तक हो जाते हैं। पागलखाने के अध्यक्षों का कथन है कि ५० प्रतिशत व्यक्ति केवल अहंकार-तृप्ति के लिए प्रमाद के शिकार बनते हैं। पागलपन के जगत में उन्हें अपनी इस प्यास को तृप्त करने का अवसर प्राप्त हो जाता है। कई बार बीमारी में लोग अपनी महत्ता की प्रवृत्ति को शान्त करते पाये जाते हैं।

श्री अटल ने आगरे के पागलखाने की एक स्त्री की आपबीती लिखी है। 'एक सुशिक्षित स्त्री पागल हो गई। वह एक बड़े गरीब और निर्धन घर में पैदा हुई थी, लेकिन भाग्य से वह पढ़-लिख गई थी और उसके सपने बहुत ऊँचे हो गये थे। वह चाहती थी कि किसी बड़े घर में उसका विवाह हो, उसका पति उसे उपन्यास के नायकों की भांति प्यार करे, उसके बच्चे हों और समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़े। किन्तु जीवन ने उसके सभी सपने तोड़ दिये। निर्धनता के कारण उसका विवाह एक बेपढ़े लड़के से हुआ जो बहुत ही दुश्चरित्र था और पत्नी की जरा भी पर्वाह नहीं करता था। थोड़े दिनों बाद वह पागल हो गई। अपने पागलपन में वह अपनी ध्वस्त भावना की तृप्ति किया करती थी। उसने कल्पना कर ली थी कि उसका विवाह एक प्रोफेसर से हो गया है, वह बहुत धनी है, उसके तीन बच्चे हैं। जब कभी डाक्टर उसे देखने आता था तो वह एक विचित्र काल्पनिक मातृत्व के गर्व से मुस्करा कर कहती थी,—'डाक्टर, मेरे बच्चे खेलने गए हैं, अभी आते होंगे!' उसने अपने मन में ही अपने उस व्यक्तित्व के एक काल्पनिक जगत् का निर्माण कर लिया था, जिससे उसके अहंभाव की सन्तुष्टि हो सके। इस कहानी से स्पष्ट है कि केवल पुरुषों में ही नहीं, स्त्रियों में भी अहंकार-तृप्ति की भावना प्रबलतर होती है।

आप किसी भी व्यक्ति के अहंभाव को ऊँचा उठाइये, फिर देखिये, वह आपका बन जाता है। अपनी बातचीत या अपने कार्यों को ऐसा सँवारिये कि आप दूसरों के अहंभाव को सन्तुष्ट कर सकें। अहंभाव को पुष्ट करने का व्यवहार आपकी कुशलता पर निर्भर है।

दूसरे व्यक्तियों की दिलचस्पी और अहंभाव की तुष्टि के लिए अवसर ढूँढ निकालिये, उनके अच्छे गुणों तथा कार्यों की प्रशंसा कीजिये, उनकी प्रत्येक उन्नति तथा सफलता की हार्दिक प्रशंसा कीजिये।

६. इस प्रकार बातें करिये कि दूसरा आपकी बातों को मंजूर करता चले

पहिले ऐसी साधारण-सी बात लीजिये, जिसे आप समझते हों कि दूसरा व्यक्ति बिना किसी पसोपेश और शङ्का के स्वीकार कर लेगा। ऐसा करने से उसका स्वभाव कुछ नर्म हो जायेगा और वह आपकी और बातें भी क्रम-क्रम से स्वीकार करता चलेगा। अपनी प्रत्येक बात को तर्क और बुद्धि से धीरे-धीरे समझाते चलिये। स्मरण रखिये, यदि दूसरा व्यक्ति अस्वीकार करने के मानसिक रुख (Mood) में आ गया, तो वह आपकी तर्क-सम्मत बात भी अस्वीकार कर देगा।

७. दूसरों को अधिक बातें करने का अवसर दीजिये

प्रत्येक मनुष्य अपनी रामकहानी कहना चाहता है। अतः आप इस प्रकार बातें कीजिये कि दूसरा उत्साहित होकर आपसे अपनी गूढ़ से गूढ़ बातें स्पष्ट रूप से कह दे। थोड़ी-सी दिलचस्पी लेने से और धैर्य-पूर्वक दूसरे की बातें सुनने से यह काम हो सकेगा। धैर्य से दूसरे की बातें सुनना भी एक कला है। प्रत्येक व्यक्ति यह गुर नहीं जानता। जब दूसरा बोलता है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने हृदय की गुत्थियाँ खोलना चाहता है, तो वह अपनी हाँकने लगता है। यह अत्यन्त बुरा व्यवहार है। आप यदि दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं तो दूसरों को ज्यादा बातें करने का मौका दीजिये।

८. दूसरों को यह अनुभव कराइये कि यह सूझ उन्हीं की है

यदि अपनी ओर से आप कुछ योजनाएं दूसरों पर लादने की चेष्टा करेंगे, तो दूसरे उसे स्वीकार करने में आनाकानी करेंगे, बुरा भी मानेंगे; किन्तु यदि आप बातें इस प्रकार करें जिससे ऐसा प्रतीत हो कि सूझ उन्हीं की है, तो वे चटपट वह कार्य करने को प्रस्तुत हो जावेंगे। यह कुशलता अभ्यास और बुद्धि के ठीक प्रयोग से आ सकती है।

९. दूसरे के दृष्टिकोण से देखिये

अपने दृष्टिकोण से प्रत्येक व्यक्ति आदर्श है, सर्वोत्कृष्ट शक्तियों का पुंज है, कोई गलती नहीं करता, ठीक ही कार्य करता है। अतः आप यदि किसी की गलती समझाते भी हैं, तो उसे दूसरे के दृष्टिकोण से देख कर समझाइये। अपने को उसकी स्थिति में रखिये, और तब अपने मार्ग का निर्णय कीजिये। दूसरों के दृष्टिकोण से सहानुभूति रख कर हम अनेक उलझनों से बच सकते हैं।

१०. दूसरों के उच्च विचार जागृत कीजिये

प्रत्येक मनुष्य के मन की दो भूमिकाएँ हैं—एक निम्न, दूसरी उच्च। खराब से खराब व्यक्ति भी अपने चिन्तन के क्षणों में उच्च भूमिका में प्रवेश करता है। उसमें आत्म शक्ति निवास करती है। अतः कभी-कभी उसका विवेक, उसकी शुद्ध बुद्धि, उसका तर्क जाग्रत हो उठता है। आपका व्यवहार एवं बातचीत ऐसी तर्क-पूर्ण और युक्ति संगत होनी चाहिए कि दूसरे का विवेक जाग्रत हो उठे। इस चेतनावस्था में आकर वह व्यक्ति आपकी योजनाओं एवं विचारधाराओं में विशेष दिलचस्पी लेने लगे।

११. अपने विचारों का जादू चलाइये

आप में जो सर्वश्रेष्ठ है, उत्तम और पुष्ट है—ऐसी मौलिक योजनाओं और विचारधाराओं को दूसरों पर समय और उपयुक्त अवसर निकाल कर अवश्य प्रकट कीजिये। यदि आपके विचारों में शक्ति है, तथा आप में विश्वास भरा है, तो अवश्य आपके विचारों का दूसरे पर जादू जैसा प्रभाव पड़ेगा, वह आपके दृष्टिकोण के वशीभूत हो जायेगा। हिप्नोटिज्म या सम्मोहन-विज्ञान कुछ नहीं केवल पुष्ट संकेतों (Suggestions) का ही अद्भुत खेल है।

★

डोंगरे का बालामृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

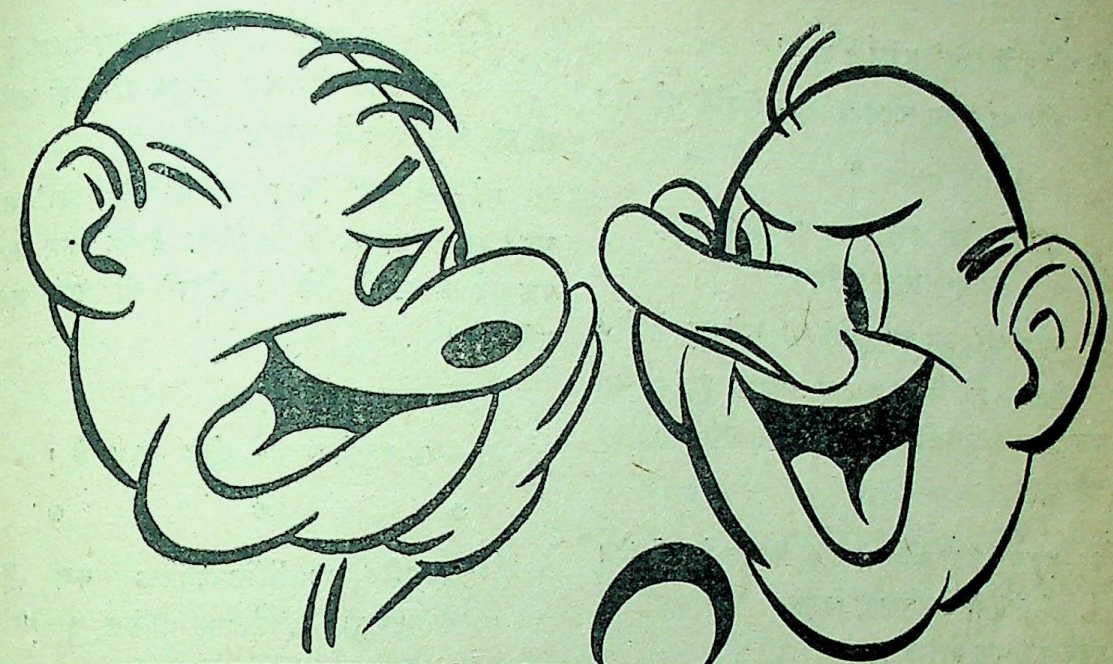

हास परिहास

फिल्म-डायरेक्टर—इस चोटी से तुम्हें नीचे कूदना है।

एक्टर—अच्छा। लेकिन इतनी ऊंचाई से नीचे कूदने पर अगर मुझे कहीं चोट लग गई, या मैं मर ही गया ···?

डायरेक्टर—तो कोई बात नहीं, फिल्म का यह अन्तिम दृश्य है!

* * *

"हमारा अर्थशास्त्र का प्रोफेसर तो क्लास में आकर अपने आप से ही बातें करता रहता है। क्या तुम्हारा प्रोफेसर भी यही करता है?"

"हां, हमारे का भी यही हाल है; परन्तु वह समझता यह है कि हम बड़े ध्यान से सुन रहे हैं!"

* * *

नया रंगरूट चांदमारी कर रहा था। एकाएक हवलदार चिल्लाया, "अरे, तुम्हारी गोलियां जा कहाँ रही हैं? एक भी निशाने पर नहीं पहुँची!"

"मैं क्या जानूं," रंगरूट बोला, "यहां से तो सभी ठीक-ठाक रवाना हुई थीं।"

* * *

डाक्टर—(रोगी की पत्नी से) आपके पति को पूर्ण विश्राम की आवश्यकता है।

पत्नी—परन्तु, डाक्टर साहब, वे तो मेरी सुनते ही नहीं ···

डाक्टर—यह तो बहुत अच्छे लक्षण हैं!

* * *

एक सज्जन जले-भुने-से संगीत विद्यालय के अध्यक्ष के पास पहुँचे और बोले, "क्या शोराकोठी का बनवारी लाल आपसे ही वायलिन सीखता है?"

"जी हाँ!"

"अच्छा, तो वह मेरा पड़ौसी है। वायलिन से जैसी आवाजें निकालना आपने उसे सिखाया है, वैसी ही कृपा कर मुझे भी सिखा दीजिये!"

* * *

साहब ने चपरासी को बुलाकर गरज कर कहा, "आज फिर तुमने मेरी कलम गायब कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी ! मैं तुम्हें डिसमिस कर दूंगा।"

और वह कलम साहब के कान में टँगी हुई थी।

* * *

मां—बेटा, क्या पुस्तक पढ़ रहे हो ?

बेटा—'शिशु-पालन !'

मां—अरे, तुम इस पुस्तक को क्यों पढ़ रहे हो ?

बेटा—मां, मैं यह जानना चाहता हूं कि मेरा पालन-पोषण ठीक विधि से हुआ है या नहीं !

* * *

एक बंगाली और मारवाड़ी में बात हो रही थी। बंगाली ने मारवाड़ी से पूछा, "मारवाड़ी क्यों इतने बुद्धिमान होते हैं ?"

"क्योंकि हम लोग एक विशेष वस्तु का सेवन करते हैं," मारवाड़ी का उत्तर था।

"क्या आप वह वस्तु मेरे लिए भी मंगवा सकते हैं ?" बङ्गाली सज्जन ने पूछा

"क्यों नहीं। उसका मूल्य दस रुपया है।"

बङ्गाली ने चट से दस रुपया निकाल कर मारवाड़ी सज्जन के हाथ पर रखा। मारवाड़ी ने दुकान के अन्दर से एक काली-काली गुड़ की डली निकाली और बङ्गाली के हाथ पर धर दी।

बङ्गाली ने उसे गौर से देखा, फिर तोड़ कर चखने के बाद कहा, "अरे, यह तो गुड़ है !"

"देखिये, अब आप में भी बुद्धिमानी का श्रीगणेश हो गया है !"

* * *

मालकिन—रामू ! मैं तुम्हारी लापरवाही से परेशान हूँ। देखो, यह धूल कुर्सियों पर कम से कम छः हफ्ते से जमी मालूम पड़ती है।

रामू—निश्चय ही। लेकिन इसमें मेरा क्या कसूर है ! मुझे तो आपके यहां नौकरी किये केवल तीन ही हफ्ते हुए हैं !

* * *

पिता—आजकल मैं यही सोचता रहता हूँ कि इस साल निरंजन मैट्रिक पास हो जायेगा, तो उसे किस धन्धे में लगाया जाये।

माँ—बिल्कुल चिंता न कीजिये, निरंजन ने अपने आप ऐसा प्रबन्ध कर लिया है कि कम से कम एक वर्ष तक उसके बारे में सोचने की अब जरूरत नहीं रही।

पिता—क्या मतलब ?

माँ—वह सब पेपर कोरे छोड़ आया है !

* * *

"तुम्हारी qualifications क्या हैं ? क्या तुम राजनैतिक पीड़ित हो ?"

"जी हां, सन् १९४२ में मैंने 'भारत छोड़ो' का नारा लगाया था और मुझे १५ दिन की जेल हुई थी।"

★

बन्द मासिक धर्म

(रजलीना दवा)

अगर माहवारी रुक जाये, समय पर न आये अथवा कष्ट के साथ आवे तो 'रजलीना' दवा सेवन करावें। इस दवा से माहवारी बिना कष्ट के खुल कर साफ आने लगेगी और फिर समय पर आती रहेगी। अचूक दवा है मूल्य ६।।।) डाक खर्च ।।।)

सन्तान रोक दवा

के सेवन कराने से सन्तान होना बन्द हो जाता है। मूल्य ४।।।) डाक खर्च ।।।)

पता:—वैद्या यशोदा देवी,

यशोदा देवी दवाखाना, मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय-पुस्तक भण्डार की सामयिक पुस्तकें

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है। मूल्य १॥) रुपया।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय ललकार एक ही साथ हैं पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य हैं। मूल्य १) डाकव्यय ।-)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की

'जीवन की झाँकियाँ'

प्रथम खण्ड-दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन, मू०॥)
द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला ! मूल्य ॥)
तीसरा खंड-मेरे नौकरशाही जेल के अनुभव, मू० १)
तीनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य १॥)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी।

मूल्य २)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है
अपितु
जनता के उद्बोधन का मार्ग है।
इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)।

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन-वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं ? वे कैसे बने ? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा।

मूल्य १।) डाक व्यय .=)

प्राप्ति स्थान—विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पायोकिल

पायोरिया और दान्तों की दूसरी बिमारियों की अचूक दवा है

गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी
हरिद्वार

एजेण्ट —

देहली प्रान्त, मत्स्य प्रदेश व बीकानेर के वितरक—रमेश एण्ड कं० चांदनी चौक, देहली। मध्य भारत के—वृहद् औषध भण्डार, १६ जेल रोड इन्दौर। ग्वालियर के—यूनियन मैडिकल हाल, नया बाजार, लश्कर। देहरादून के—हितकारी वस्तु भण्डार, पलटन बाजार।

सन्तान निरोधक औषधि

यदि औरतों की बीमारी या कमजोरी या किसी ऐसी ही वजह से बच्चे पैदा करना नहीं चाहते हों, तो यह 'वन्ध्याकारक दवा' मंगा कर केवल ५ दिन सेवन करावें। इससे सन्तान निरोध हो जायगा। दाम ४) डाक खर्च ।।)। इस दवा से हजारों औरतें फायदा उठा चुकी हैं। यह दवा औरतों को कोई नुकसान नहीं करती।

रुका हुआ मासिक धर्म

हर प्रकार के बन्द मासिक को फौरन खोल कर साफ करने की दवा ७।।) डा० ।।)

खबरदार! गर्भवती स्त्री इसको इस्तेमाल न करे

पता—

चपलादेवी दवाखाना, चपला भवन,
नं० २५ मथुरा।

वीरांगना

प्यारी बहिनों की भलाई के लिये

जो बहिनें सन्तान की अधिकता अथवा पति की स्वार्थपरता अथवा किसी अन्य कारणवश युवावस्था में ही बुढ़ापा तथा सौंदर्य-विहीनता का अनुभव करने लगी हों। जो प्रदर (लिकोरिया) के रोग में ग्रस्त हों और जीवन भार रूप अनुभव कर रही हों अथवा जिनका मासिक-धर्म समय पर न आता हो या कष्ट से आता हो। कमर में दर्द, आंखों के आगे अँधेरा व संतान न होती हो, गर्भपात हो जाता हो तो ऐसी दशा में 'वीरांगना' सेवन करें। वीरांगना आपके स्वास्थ्य और सौन्दर्य की रक्षा करेगी व आपको सचमुच वीरांगना बना देगी। हजारों बहिनें इसका सेवन कर अपनी बीती यौवनावस्था को पुनः प्राप्त कर चुकी हैं। दाम ११।) मात्र।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी, हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

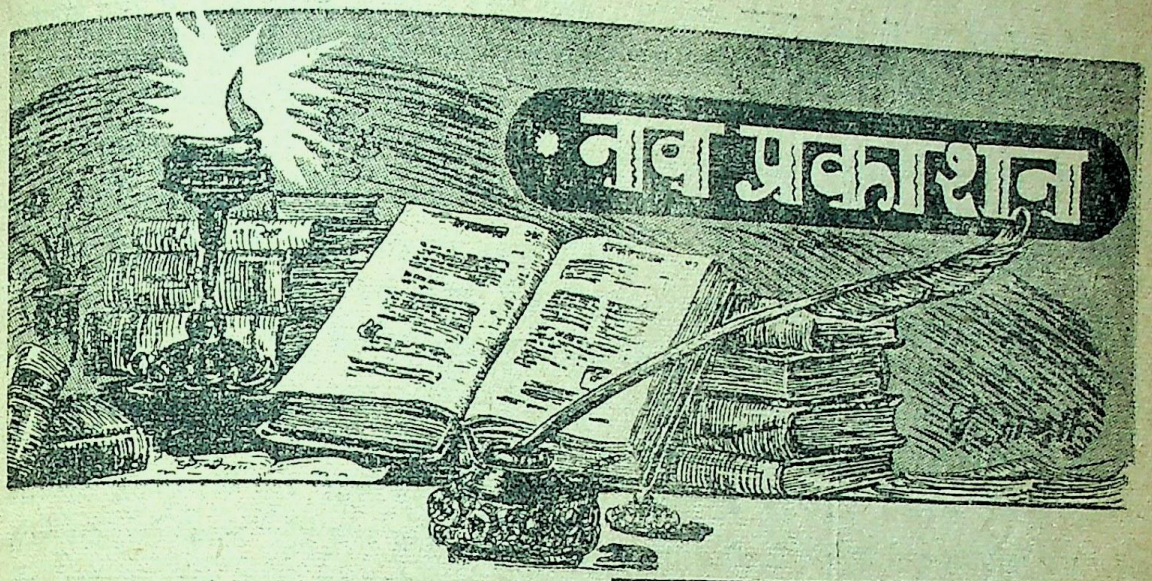

आलोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक या पत्र-पत्रिका की दो प्रतियां आनी चाहियें।

स्वप्न-भंग

लेखिका—श्रीमती होमवती; प्रकाशक—निष्काम-प्रेस, मेरठ; मूल्य—दो रुपये।

श्रीमती होमवती हिन्दी की उन गिनी-चुनी साधिकाओं में से हैं, जिन पर हिन्दी-संसार को उचित रूप से गर्व है। वे कवयित्री भी हैं और कहानी-लेखिका भी। 'निसर्ग' और 'बरोहर' के बाद यह उनका तीसरा कहानी-संग्रह हमारे सामने है, जो पहले दो संग्रहों की भांति ही अभिनन्दनीय है। कहानी-लेखिका के रूप में होमवती जी की सब से बड़ी विशेषता यह है कि वे अपने आप महज कहानी लिखने के लिए ही कहानी नहीं लिखतीं, बल्कि जीवन की कोई एक प्रत्यक्ष घटना अथवा अनुभूति उनसे कहानी लिखवाती है। किसी भी घटना अथवा अनुभव को उनके मन अथवा मस्तिष्क में जो प्रतिक्रिया होती है, वही शब्द-बद्ध हो कर कहानी के रूप मे हमारे सामने आ जाती है। उसमें कहीं कवि की संवेदनशीलता तथा करुणा के दर्शन होते हैं और कहीं आलोचक के तर्क और व्यंग्य के। व्यंग्य विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कहीं-कहीं यह शल्य-क्रिया का रूप धारण कर लेता है। कहानी कला का यह पक्ष लेखिका की जागरूक सामाजिक चेतना का ही सूचक है। प्रस्तुत संग्रह में लेखिका की छोटी-बड़ी १५ कहानियाँ संग्रहीत हैं, जो मुख्यतः पाँच विषयों पर आधारित हैं—भारत का विभाजन, सामाजिक तथा राजनीतिक पाखण्ड-वृत्ति शोषित तथा उपेक्षित निम्नवर्ग की पीड़ा, मध्यवर्गीय जीवन की असंगतियां और आज का आर्थिक संकट। कहानी-कला की दृष्टि से 'उपहार' इस संग्रह की सब से सबल कहानी है।

पंथिनी

रचयित्री — श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिन्हा, प्रकाशक—युगमन्दिर, उन्नाव; मूल्य—दो रुपये।

हिन्दी के वर्त्तमान काव्य-साहित्य को समृद्ध और चमत्कृत करने वाली कवयित्रियों पर जब हम दृष्टिपात करते हैं, तो महादेवी वर्मा और सुभद्रा कुमारी चौहान के बाद सुमित्रा कुमारी सिनहा पर हमारी दृष्टि अटक जाती है—बल्कि रम ही जाती है, इसलिए कि जहां पूर्वोल्लिखित दोनों कवयित्रियां आज मौन हैं—एक आत्मगता हो कर, दूसरी दिवगता हो कर—वहाँ यह चिरमुखर हैं। 'विहाग' और 'आशा-पर्व' के बाद 'पंथिनी' इनका तीसरा काव्य-संग्रह है। यह संग्रह जहाँ एक ओर उनकी छायावादी तथा रहस्यवादी काव्यधारा के चरमोत्कर्ष का सूचक है, वहां दूसरी ओर उनकी बाह्योन्मुख नई काव्य-चेतना का भी सूचक है। इसमें उनके ४८ गीत संग्रहीत हैं। प्रारम्भ के ४५ गीतों में कवि के भाव-जगत की नीहारिल अरुणिमा रूपायित हुई है, जिसमें स्त्री-सुलभ कोमलता मधुरिमा और संगीत का अपूर्व सम्मिश्रण हुआ है। अंतिम तीन गीत इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शताब्दी की अभूतपूर्व तथा मर्मांतक घटना—महात्मा गांधी की हत्या और साम्प्रदायिक खून-खराबी से संबंध रखते हैं। इन तीनों गीतों से पता चलता है कि कवि की दृष्टि बहिर्मुखी होकर नई जनवादी दिशा ग्रहण करने लगी है। आशा है, पंथिनी इस नये पथ पर अधिक सबल पगों से अग्रसर होगी।

'आजकल' का वार्षिक अंक

सम्पादक—श्री देवेन्द्र सत्यार्थी; प्रकाशक—पब्लिकेशन्स डिवीजन, भारत सरकार, दिल्ली; मूल्य १)

भारत सरकार के साहित्यिक तथा सांस्कृतिक पत्र 'आजकल' का बड़े साइज के ११२ पृष्ठों का चौथा सर्वांग सुन्दर वार्षिकांक हमारे सामने है, जो न केवल पहले के अंकों में सर्वश्रेष्ठ है, बल्कि मासिक पत्रकार-कला के चरमोत्कर्ष का चिरस्मरणीय नमूना भी है। इसमें हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के लगभग ३२-३३ अग्रणी लेखकों, कहानीकारों और कवियों की उच्चकोटि की सांस्कृतिक, कलात्मक तथा साहित्यिक रचनायें बड़ी सज-धज के साथ संग्रहीत हैं। इनके अलावा, 'अन्तर्प्रांतीय साहित्य संकलन' नामक स्तम्भ, भारत के लगभग तीन दर्जन लब्धप्रतिष्ठ चित्रकारों की तिरंगी तथा एकरंगी कलाकृतियों, दोरंगी कलापूर्ण छपाई और नयनाभिराम गेट-अप ने इस अंक को और भी आकर्षक, उपादेय और संग्रहणीय बना दिया है।

यह अंक जहां एक ओर योग्य सम्पादक की साहित्यिक तथा कलात्मक सूझ-बूझ, सुरुचि और परिश्रम का सूचक है, वहाँ दूसरी ओर भारत सरकार के प्रकाशन-विभाग की साधन-सम्पन्नता और बहुव्ययक्षमता का भी सूचक है। बहुव्ययक्षमता के कारण ही इस अंक का मूल्य असल लागत से कहीं कम रखा गया है। अतः जहां सम्पादक के कार्य की हम भूरे भूरि प्रशंसा करते हैं, वहाँ हम भारत-सरकार के प्रकाशन-विभाग की व्यवसाय-बुद्धि के प्रति अविश्वास भी प्रकट करते हैं।

बङ्गाल के आधुनिक कवि

लेखक—श्री मन्मथनाथ गुप्त; प्रकाशक—किताब महल, जीरो रोड, इलाहाबाद; मूल्य-डेढ़ रुपया।

आलोच्य पुस्तक ऐसी पुस्तकों में से सम्भवतः पहली पुस्तक है, जिनका अभाव हिन्दी में बहुत खटकता है। हम प्रायः सुनते हैं कि बङ्गला, गुजराती, मराठी, पंजाबी इत्यादि अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य काफी उन्नत और समृद्ध है; परन्तु हिन्दी में उन साहित्यों के सम्बन्ध में प्रामाणिक पुस्तकें न होने से हम सम्यक् जानकारी प्राप्त नहीं कर पाते। प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान् लेखक ने आधुनिक बङ्गला-काव्य, उसकी नूतनतम प्रवृत्तियों और कवियों की रचनाओं का बहुत ही विशद तथा समीक्षात्मक परिचय दिया है। इस परिचय में कवीन्द्र रवीन्द्र की कविता का विशेष मर्मोद्घाटन किया गया है। पुस्तक प्रारम्भिक युग, कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ और उनकी देन, प्राग्-अति-आधुनिक या रवीन्द्र-युग तथा अति-आधुनिक युग नामक चार खण्डों में विभक्त है। पुस्तक प्रत्येक दृष्टि से पठनीय और संग्रहणीय है।

साहित्यिका

लेखक—श्री हंसकुमार तिवारी; प्रकाशक—मानसरोवर प्रकाशन, गया; मूल्य पौने दो रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी के सुप्रसिद्ध लोकप्रिय गीतकार श्री हंसकुमार तिवारी के दस साहित्यिक निबन्धों का संग्रह है। चार निबन्धों में भारतीय कला के आध्यात्मिक तथा भौतिक स्वरूप की चर्चा की गई है। चार निबन्धों में समन्वयवादी दृष्टिकोण से साहित्य तथा युग धर्म की नई पुरानी मान्यताओं पर विचार किया गया है। शेष दो निबन्धों में से एक मु० प्रेमचन्द की कला पर है और दूसरा कवीन्द्र रवीन्द्र के मृत्यु सम्बन्धी विचारों पर। इन निबन्धों को पढ़ कर सबसे पहली धारणा यह बनती है कि इनका लेखक काफी अध्ययनशील तथा संयत और सुलझे हुए विचारों का है। साहित्य को वह जीवन का व्याख्याता ही नहीं, उन्नायक भी मानता है। सौंदर्यमूलक रस-पक्ष को वह साहित्य में अधिक मान्यता देता है। साहित्य के विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

नव-निर्माण

सम्पादक—श्री दीनानाथ भार्गव 'दिनेश'; प्रकाशक—मानव-धर्म कार्यालय, दिल्ली; मूल्य अढ़ाई रुपये।

यह दिल्ली के सुप्रसिद्ध मासिक पत्र 'मानव-धर्म'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का २६६ पृष्ठ का पुस्तकाकार सचित्र विशेषाँक है, जो आज की एक महत्वपूर्ण समस्या पर प्रकाश डालता है। दो सौ वर्ष की दासता और संघर्ष ने हमारे राष्ट्र के जिस सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक और आर्थिक ढांचे को नष्ट भ्रष्ट कर दिया है, स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद उसका पुनर्निर्माण आज हमारे राष्ट्र की सब से बड़ी आवश्यकता है। इस पुनर्निर्माण द्वारा ही हम अपनी स्वतन्त्रता को स्थायी रख सकते हैं। 'मानव-धर्म' ने इस विशेषांक द्वारा इसी आवश्यकता की ओर राष्ट्र का ध्यान खींचा है—केवल ध्यान ही नहीं खींचा, ठोस सुझाव भी राष्ट्र के सामने रखे हैं। अंक की सारी सामग्री पठनीय और मननीय है। सर्वश्री विष्णु प्रभाकर और रामचन्द्र तिवारी के रेडियो-रूपकों ने शुष्क वषय को रोचक और हृदयग्राही बना दिया है। इतना सुन्दर और उपयोगी अंक निकालने पर हम 'दिनेश' जी को हार्दिक बधाई देते हैं।

जन्म-निरोध

लेखक—डा० मानिकसिंह व श्री बटुकदेव मिश्र; प्रकाशक—अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन-मण्डल, पो० महेन्द्रू, पटना; मूल्य—डेढ़ रुपया।

आर्थिक संकट के इस युग में जन्म-निरोध एक अनिवार्य आवश्यकता है, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। ऐसी सन्तान को जन्म देना, जिसका भरण-पोषण करने और शिक्षा देने की सामर्थ्य मां-बाप में न हो एक सामाजिक अपराध है। स्त्रियों के स्वास्थ्य और देश की जन-संख्या की समस्या भी इससे सम्बद्ध है। जन्म-निरोध के विरुद्ध यह युक्ति कि इस से अनाचार बढ़ जायेगा, बिल्कुल थोथी है। श्रीमती सरोजिनी नायडू के शब्दों में—यदि थोड़े लोग उपयोगी वस्तुओं का दुरुपयोग करें, तो सभी लोगों को उन वस्तुओं का उपयोग करने से रोकना समाज के लिए एक तरह से अन्याय ही है। आलोच्य पुस्तक जन-कल्याण के इसी उद्देश्य को सम्मुख रख कर बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से लिखी गई है। अपने ढंग की हिन्दी में कदाचित् यह पहली पुस्तक है और प्रत्येक सद्गृहस्थ को पढ़नी चाहिए।

—चिरंजीत

राष्ट्रीय
लाल मंजन

यह दांतों की प्रत्येक बीमारी को दूर करता और दांतों को सुन्दर तथा टिकाऊ रखता है। साथ ही पेट की बहुत सी बीमारियों को दूर करता है। मुंह की दुर्गन्ध को मिटा कर सुगन्ध पैदा करता है।

नोट—कृपया अपने शहर के थोक विक्रेता से खरीद कर अवश्य परीक्षा करें। मूल्य शीशी नं० एक ॥), शीशी नं० दो १), शीशी नं० तीन २), डाक व्यय अलग।

व्यवस्थापकः—

राष्ट्रीय लाल मंजन कार्यालय
बड़ा बाजार अलीगढ़ [युक्तप्राँत]

आप भी लखपती बनें!

हमारी टिकिया मशीन द्वारा आप आधा ग्रेन से १० ग्रेन तक की हूबहू एस्पो तथा कुनेन की टिकिया जैसी फैंसी १ घण्टे में ३००।४०० टिकियां दबाई, स्याही, पौडर आदि की बना कर अपना औषधालय या कारखाना चालू करके शीघ्र ही लखपती बन सकते हैं। मूल्य १२) डाक खर्च १) बादाम का तेल निकालने वाली मशीन का मूल्य ४०) सेमई या सेव बनाने वाली मशीन मूल्य ४०)।

—इन्टर नेशनल
इन्डस्ट्रीज लि० अलीगढ़

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता — राजनैतिक और वैज्ञानिक युग में

[पृष्ठ २४ का शेष]

क्या सलूक हो ? बात चिन्ता की जरूर है, क्योंकि कविता का जन्म जादू और विस्मय से हुआ था और विज्ञान इन दोनों का दुश्मन है। किन्तु बाल्यकालीन विस्मय से निकल कर कविता ने बुद्धि के साम्राज्य पर राज किया है। हम यह क्यों भूलें कि सत्य के सम्बन्ध में मनुष्य को जो ज्ञान प्राप्त होता है, वह कला के माध्यम से भी उसी प्रकार व्यक्त किया जा सकता है, जैसे विज्ञान के माध्यम से। जिस कला ने पेड़, पर्वत, समुद्र और रेगिस्तान को आत्मसात् कर दिखाया, वह क्या कारखानों और आकाशगामी विमानों को ही नहीं पचा सकेगी ? विज्ञान अगर मनुष्य-समाज में ठहरने को आया है तो कविता उसकी कुरूपता को भी रंगीन बना डालेगी।

हम विज्ञान का अनादर नहीं करते, किन्तु हम देख रहे हैं कि वह सिर्फ मूर्तियों की रचना करना जानता है, प्रतिमाओं के मुख में वह जीभ नहीं दे सकता और न उनके हृदय को ही जीवित कर सकता है। नतीजा यह हुआ है कि देश-देश में विज्ञान की प्रतिमाएँ आपस में टकरा रही हैं और सारा संसार कोलाहल से परिपूर्ण है। विज्ञान-विरचित प्रतिमाओं के भीतर अगर हृदय नाम की कोई जानदार चीज हुई होती, तो ये प्रतिमाएं आपस में प्रेम करके विश्वकल्याण को सम्भव कर दिखातीं। किन्तु यह काम साहित्यकारों के लिए रुका हुआ है, क्योंकि दर्शन और विज्ञान के लक्ष्य को भी प्राप्त करने के लिए मनुष्य को क्रियारूढ़ करना साहित्य का काम है। यह सच है कि युद्ध को मनुष्यों के मन में एक आकर्षक भाव बना कर स्थापित करने का अपराध साहित्य ने ही किया है, किन्तु एटम के अनुसन्धान से युद्ध नहीं रुकेगा। उसे रोकने के लिये तो मनुष्य के मन से इस भाव को ही दूर करना होगा कि युद्ध कोई आकर्षक, प्राणप्रेरक या प्रिय पदार्थ है। साहित्य ने मनुष्यों को युद्ध का प्रेमी बनाया और अब यह उसी का दायित्व और उसी के बूते की बात है कि वह मनुष्य की दृष्टि में युद्ध को घृणास्पद बना दे। दुनियां के सामने आज जो यह सब से ऊँचा सवाल है, उसका हल राजनीति या विज्ञान नहीं निकाल सकता।

मैं कविता को जीवन तक पहुँचने की सब से सीधी और सबसे छोटी राह मानता हूँ यह मस्तिष्क की नहीं, हृदय की राह है। मस्तिष्क ने संसार को भयंकर उलझनों में डाल रखा है और इन उलझनों से वह तब तक नहीं निकल सकता, जब तक कि वह हृदय की राह नहीं पकड़े। तुलसीदास जी ने जो 'ज्ञान को पन्थ कृपाण की धारा' कहा था, वह आज के संसार में पूर्ण रूप से चरितार्थ हो रहा है। दिमाग से निकली हुई एक के बाद दूसरी योजनाएँ फेल होती जा रही हैं, फिर भी लोग दिल की राह नहीं पकड़ते। मगर दिमाग शायद अभी थका नहीं है। जिस दिन वह पूर्ण रूप से थक जायगा, उस दिन संसार हृदय के उस मार्ग पर चलने को विवश होगा, जो मार्ग गांधी जी बता गये हैं।

मैंने कहा कि राजनीति की ओर से साहित्य की जो आराधना शुरू हुई है, वह कोई बुरी बात नहीं है। किन्तु मैं यह भी कह देना चाहता हूँ कि साहित्य राजनीति की अनुचरता स्वीकार करके मनुष्य का कल्याण नहीं कर सकता। जनता साहित्य का विश्वास सिर्फ इसलिए करती है कि झूठ बोलना अथवा मिथ्या-प्रचार उसके स्वभाव के विरुद्ध है। जनता के अवचेतन में कौन-सी कामनाएं ऊँघ रही हैं, जनता के विकास की भावी दशा क्या होनी चाहिए, ये बातें सब से पहले साहित्य को ही मालूम होती हैं और इसीलिए साहित्यकार को यह आजादी रहनी चाहिए कि वह अपने हृदय की बात को निर्भीकतापूर्वक कहे और यह आजादी उन्हें भी नहीं अखरनी चाहिये, जो साहित्य के प्रतिपालक के पद पर आरूढ़ होते हैं।

अगर कवि संघर्ष के भीतर बिठलाया जाता है, तो संघर्ष से ऊपर वाली जगह भी उसी की होनी चाहिए। कवि की उदारता, कवि की सहानुभूति और कवि का रोने का अधिकार कहीं भी सीमित नहीं किया जा सकता; क्योंकि इस भयंकर संसार में वही तो एक ऐसा जीव है जो एक दल का पक्ष लेते हुए भी अपनी सहानुभूति का अर्द्धांश शत्रुओं के लिए भी सुरक्षित रखता है। *

* पटना में दिये गये एक भाषण का सारांश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह लिपस्टिक, यह पफ-पाउडर !

महात्मा गांधी

बिचारी आजकल की बहनें लिपस्टिक से ओंठ रंगती हैं और नाखून रंगती हैं, पर उन्हें यह देखने की फ़ुरसत नहीं रहती कि खुद कितनी दुबली और फीकी हो गई हैं। पुराने जमाने की औरतों में इतना खून रहता था कि उनके मुँह और नाखून क़ुदरती तौर से लाल रहा करते थे। हमने पश्चिम का अन्धों की तरह अनुकरण किया है। इसमें दोष तो बहनों और पुरुषों दोनों का है; लेकिन बहनों को माफ नहीं किया जा सकता। पश्चिम से अनुशासन में रहना, सभ्यता, विनय, नियमितता, उद्यमशील स्वभाव, लगनशीलता, नयी बातें सीखने की तमन्ना, मिलनसारी वगैरा कितनी ही बातें सीखने लायक हैं। लेकिन हमने वह सब तो छोड़ दिया और उनके पफ-पावडर की फैशन ले ली। इसीलिये मैं तो चिल्ला-चिल्ला कर कहता हूं कि बहनें ही हिन्दुस्तान में स्वराज्य और सुराज्य ला सकती हैं, क्योंकि मैं मानता हूँ कि जैसे बिना गृहिणी के घर की व्यवस्था अधूरी रहती है, वैसे ही बिना बहनों के देश का बन्दोबस्त भी अधूरा ही रहेगा। मगर वह तब हो सकता है, जब बहनें पवित्र हों। क्या 'पवित्र' शब्द के मेरे अर्थ तुम जानती हो ? जिसे खुद को पवित्र कहना हो, उसमें इतने गुण तो होने चाहियें। इन सब गुणों का वर्णन 'पवित्र' इन तीन अक्षरों में ही आ जाता है। हममें विवेक हो, तभी पवित्रता आ सकती है। मैं पर्दे-घूँघट का विरोधी हूं, लेकिन मर्यादा तो होनी ही चाहिये। स्वच्छता अन्दर की (हृदय की) और बाहर की हो, तभी पवित्रता आ सकती है। सुघड़ता होने पर ही पवित्रता आ सकती है। सच्चाई हो, तभी पवित्रता आ सकती है। दम्भ या दिखावा न हो, तभी पवित्रता आ सकती है। स्वमान हो, तभी पवित्रता आ सकती है और सेवा की तमन्ना हो, तभी पवित्रता आ सकती है। पवित्रता में ऐसे-ऐसे कई अर्थ हैं। और इस बात में शङ्का नहीं कि जहां पवित्रता होती है, वहां ईश्वर का साक्षात्कार होता है। बहनों के पास अगर यह एक शस्त्र आ जाय, तो उन्हें न तलवार की जरूरत होगी, न भाले की। परन्तु लोहे के शस्त्रों की तालीम से पवित्रता की तालीम कहीं ज्यादा कठिन है और समझ ली जाय तो बहुत आसान भी है। *

* कुमारी मनु गांधी द्वारा लिखित 'बापू — मेरी मां' पुस्तक से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलाक और पारिवारिक जीवन

श्रीमती सावित्रीदेवी

हिन्दू संस्कृति और धर्म के ठेकेदार जिन बातों के कारण हिन्दू-कोड बिल का विरोध कर रहे हैं, उनमें से एक तलाक की व्यवस्था भी है। धर्म और संस्कृति के इन ठेकेदारों का यह कहना है कि तलाक का कानून बन जाने से हिन्दू जाति का पारिवारिक जीवन नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा, नैतिकता का दिवाला पिट जायेगा, बच्चे उपेक्षित हो कर पथ-भ्रष्ट हो जायेंगे इत्यादि इत्यादि। अपनी इन युक्तियों की पुष्टि के लिए वे प्रायः पाश्चात्य देशों, विशेषकर अमरीका का उदाहरण देते हैं और कहते हैं कि तलाकों की दिनोंदिन बढ़ती हुई संख्या के कारण वहां सुखी दाम्पत्य जीवन पूर्णतः लुप्त हो चुका है।

तलाक-प्रथा के विरोध में इस प्रकार का प्रचार बिल्कुल भ्रांत तथा शरारत भरा है। तलाक की व्यवस्था एक प्रकार से एक सामाजिक रोग का इलाज है— शल्य-क्रिया है। शल्य-क्रिया द्वारा सड़े-गले विषाक्त मांस तथा कष्टदायक भाग को काटा जाता है, मवाद को निकाल बाहर किया जाता है। इस काट-छांट को यदि कोई शरीर की क्षति बताये तो उसे बुद्धिमान नहीं कहा जा सकता। नासूर के प्रति भला किसे मोह हो सकता है? शल्य-क्रिया की भांति ही तलाक-व्यवस्था किंचित पीड़क तथा भयप्रद तो हो सकती है, परन्तु इस की उपयोगिता से किसी प्रकार इन्कार नहीं किया जा सकता है। बिना सोचे समझे लॉटरी के ढंग पर किये गये बेमोड़ विवाहों के सुधार के लिये तलाक अत्यन्त आवश्यक है। पहले के कटु अनुभव के प्रकाश में किया गया दूसरा विवाह स्थायी और सन्तोषप्रद सिद्ध हो सकता है।

तलाक की प्रथा जारी हो जाने से पारिवारिक जीवन नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा, यह बात तथ्य पर आधारित नहीं है। अमरीका जैसे तलाक-प्रथा वाले देशों में पारिवारिक तथा दाम्पत्य जीवन हमारे देश की अपेक्षा कहीं अधिक सुखी और सुदृढ़ है। लुई डब्लिन नामक आंकड़ों के एक विशेषज्ञ का कहना है कि गत वर्ष अमरीका में जन-संख्या के अनुपात से सभी देशों से अधिक विवाह हुए हैं। सन् १९४७ में वहां बीस लाख विवाह हुए और केवल साढ़े चार लाख तलाक के मामले हुए। विवाहों की इतनी बड़ी संख्या के मुकाबले में तलाकों की उपर्युक्त संख्या नगण्य है। अमरीका में इस समय लगभग साढ़े तीन करोड़ परिवार हैं। इस संख्या की तुलना में तलाकों की उपर्युक्त संख्या और भी नगण्य सिद्ध होती है।

तलाक-प्रथा वाले अमरीका में आज पारिवारिक जीवन स्पृहणीय तथा सुदृढ़ है, यह बात निम्नलिखत आंकड़ों और तथ्यों से पुष्ट होती है। पहले लोग काफी बड़ी आयु में विवाह करते थे परन्तु अब वहां के युवक और युवतियां जल्दी ही विवाह करने लगे हैं—आधे तो २२-२४ की आयु तक विवाह-सूत्र में बंध जाते हैं और शेष ३० वर्ष की आयु तक। लगभग आधी स्त्रियां २३ वर्ष की होने से पहले ही मां बन जाती हैं। बच्चों के कारण पारिवारिक जीवन और भी सुदृढ़ हो जाता है। इधर चिकित्सा-पद्धति में जो उन्नति हुई है, उससे भी पारिवारिक जीवन सुदृढ़ और सुखी हुआ है। अमरीका में आज वयस्कों की मृत्यु-संख्या न्यूनतम है। बच्चों की मृत्यु संख्या भी अब पहले की अपेक्षा एक चौथाई रह गई है। माता-पिता की दीर्घ-आयु, स्वास्थ्य और समृद्धि का लाभ बच्चों को पहुँचता है। माता-पिता अपनी संतान की देखभाल अधिक ध्यान से करते हैं। अमरीका का सामान्य परिवार १८ वर्ष तक बच्चे के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा पर अपनी वार्षिक आय से तीन गुनी रकम व्यय करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका में आज भी ८० प्रतिशत परिवारों ने किसी न किसी तरह का बीमा करवा रखा है। जीवन-बीमा की यह अभूतपूर्व उन्नति प्रकट करती है कि लोगों को अपने परवारों की सुरक्षा व कल्याण की कितनी चिंता है।

इन सब बातों को देखते हुए यह कहना बिल्कुल गलत है कि तलाक प्रथा वाले अमरीका में परिवारिक जीवन नष्ट हो चुका है।

भारत में यह प्रथा एकदम नई भी नहीं और शास्त्र-विरुद्ध भी नहीं है। आज भी कई छोटी जातियों में इसका चलन है। और तो और, ऊंची कहलाने वाली जातियों में भी इसका चलन है—परन्तु भिन्न रूप में। समाज की नजरों से दूर हजारों विवाहित स्त्रियां परित्यक्ता के रूप में अपना अभिशप्त जीवन बिता रही हैं। तो अब तक पुरुष को पत्नी के परित्याग का जो अलिखित अधिकार प्राप्त रहा है, वही अधिकार हिन्दू कोड बिल स्त्री को भी लिखित रूप में दिलाना चाहता है। यदि पुरुषों द्वारा अपनी अच्छी-भली पत्नियों को छोड़ देने से भारत का पारिवारिक जीवन नष्ट नहीं हुआ, तो अब स्त्रियों द्वारा अपने लम्पट, रोगी और निकम्मे पतियों को छोड़ देने से वह कैसे नष्ट हो जायेगा, यह मेरी समझ में नहीं आया।

भारतीय नारी के गौरव की प्रतीक —श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित अपनी पुत्री के साथ आप अमरीका में भारत की राजदूत नियुक्त हुई हैं। इससे पहले आप रूस में राजदूत थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार-सिंगार

मोती

कुमारी प्रभा बी० ए०

स्त्रियों के शृङ्गार और अलंकरण में मोतियों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। मोतियों की कंठियाँ, अँगूठियाँ और चूड़ियाँ स्त्रियों के प्रिय अलंकार हैं। पुरातत्व की खोजों और प्राचीन इतिहास से यह पता चलता है कि मनुष्य अत्यन्त प्राचीन काल से मोतियों से परिचित है और उसी समय से मोतियों की मूल्यवान रत्नों में गणना होती आई है। सच्चे मोतियों की कीमत बहुत अधिक होती है और इसी कारण राजा-महाराजा लोग मोतियों के लिये पानी की तरह पैसा बहाया करते हैं। यह सुना जाता है कि संसार के सर्वोत्तम तथा सर्वश्रेष्ठ मोतियों का संग्रह बड़ौदा-नरेश के पास है। इस संग्रह में अनेक लड़ियों के ३५ बहुमूल्य हार हैं, जिनकी एक-एक लड़ी का मूल्य १४००० से २,८०००० रुपयों तक है। विशिष्ट समारोहों के समय महाराज स्वयं जो हार पहिनते हैं, उसकी कीमत ७०,००,००० रुपयों से अधिक है। ऐसा सुना जाता है कि पैरागान नामक १,४०,००० रुपया कीमत का प्रसिद्ध मोती उन्हीं के पास है, जिसका वजन ३। माशे है।

मास्को के 'पिलग्रिम' नामक पारदर्शक मोती का वजन ६ माशे है। संसार के सबसे बड़े और मूल्यवान् मोती का व्यास ४½ इञ्च, लम्बाई २ इञ्च और वजन ३ औंस है। किसी समय यह मोती फ्रांस की रानी के पास था।

मोतियों की उत्पत्ति

समुद्र अथवा नदी के पानी में चूना मिला रहता है। यह चूना पानी में रहने वाले शङ्खों के कीड़े चूस लेते हैं और वे इस शोषित चूने से सीपी तथा शङ्ख तैयार करते हैं। सीपी का भीतरी हिस्सा चमकीला होता है। इसी हिस्से में मोतियों का जन्म होता है। यदि सीपी में रेत का कोई कण धोखे से पहुँच जाय तो सीपी और शङ्ख के कीड़े उस कण से अपनी रक्षा करने के लिये शोषित चूने का उत्सर्जन कर उस कण पर चूने की तह चढ़ा देते हैं। इस तरह उस कण पर अनेक तहें चढ़ जाने पर असली, सुन्दर, गोल और काफी बड़ा मोती तैयार हो जाता है। शङ्ख का कीड़ा जितने ज्यादा दिन जीता है, उतना ही बड़ा मोती तैयार होता है।

उत्कृष्ट मोती के गुण

उत्तम पानी वाला मोती अनेक तहों का बना होता है। यह नाजुक और चिकना होता है। इस पर खुरदरापन अथवा किसी तरह का दाग नहीं रहता। ऐसे मोतियों पर मछलियों की चरबी का अंश तक नहीं रहता। सच्चे मोती बिल्कुल सफेद होते हैं और उन पर इन्द्रधनुष के रङ्ग की छटाएँ दिखाई देती हैं। ये बिल्कुल गोल होते हैं। इनके ऊपर की तह निकालने पर भीतरी हिस्सा मृत मछली की आँखों जैसा निस्तेज दिखाई देता है।

हिन्दुस्तान के लोग गुलाबी रङ्ग की छटा वाले मोती पसन्द करते हैं। यद्यपि ऐसे मोतियों की बहुत अधिक कीमत चुकाई जाती है, तथापि कुछ दिनों बाद इनकी छटा नष्ट होने लगती है।

मोती के गहनों की हिफाजत

यदि मोती निस्तेज हो गये हों और उन्हें पुनः पहले जैसा चमकीला बनाना हो, तो उन्हें रीठे और नमक अथवा शक्कर के पानी में डाल दें। जहां तक हो सके, मोती को नीबू के रस या तत्सम आम्ल द्रव्यों में न डालें। ऐसा करने से रासायनिक क्रिया होने के कारण मोती चूना बन जाता है। साबुन अथवा सोडे के पानी से धोने से मोती का रंग काला पड़ सकता है। मोती स्वभावतः मृदु और नाजुक होते हैं। हीरे अथवा पाचू के गहनों के साथ मोतियों के गहने रखने से मोतियों पर खरोंचे पड़ जाते हैं। मोतियों के गहने धारण कर के आग के पास बैठने से भी मोती खराब हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोग्राम कैसा रहा?

श्री 'कलाधर'

★

समय-समय पर प्रकाशित होने वाली रेडियो-लाइसेन्सों की संख्या से यह स्पष्टतः प्रकट होता है कि भारत में रेडियो की लोकप्रियता दिनोंदिन बढ़ रही है। आज रेडियो-सेट उच्चमध्यवर्ग के प्रत्येक घर में एक आवश्यक और उपयोगी वस्तु का रूप धारण करता जा रहा है। सेटों के मूल्य यदि कम हो जायें, तो यह निम्नवर्ग के घरों में भी पहुँच सकता है। यह हर्ष का विषय है कि भारतीय सरकार और देश के कुछ उद्योगपति सस्ते रेडियो-सेट तैयार करने की योजनायें बना रहे हैं।

भारतीय रेडियो की स्थिति यद्यपि एक सरकारी विभाग के रूप में है, तथापि इसका प्रसार-कार्य ऐसा है कि यह सारा समय जनता के सम्पर्क में रहता है और इसी लिये इसे सरकार द्वारा नियन्त्रित एक सार्वजनिक संस्था कहना असंगत नहीं है। जनता के मनोरंजन, शिक्षण और प्रचार के लिए ही इसका अस्तित्व है। अतः यह स्वाभाविक ही है कि इसे प्रसारित होने वाले कार्यक्रम के सम्बन्ध में जनता की पसन्द नापसन्द और हानि-लाभ का खयाल रखना पड़ता है। यदि कोई कार्यक्रम श्रोताओं को पसन्द न आये, या उसकी कोई सार्वजनिक उपयोगिता न हो, तो उसके प्रसार का कोई प्रयोजन ही नहीं रहता—रेडियो-विभाग की अपनी उपयोगिता नष्ट हो जाती है। इस बात की यथार्थता और महत्ता को रेडियो-विभाग अच्छी तरह समझता है और वह भीतर-बाहर के तीन साधनों से प्रत्येक कार्यक्रम की गुणात्मक अच्छाई-बुराई, उपादेयता-अनुपादेयता और श्रोताओं की पसन्द-नापसन्द की जानकारी प्राप्त करता रहता है।

प्रत्येक रेडियो-स्टेशन पर काम करने वाले कर्मचारी दो श्रेणियों में विभक्त किये जा सकते हैं। एक श्रेणी में प्रोग्राम एग्जीक्यूटिव, प्रोग्राम-असिस्टेंट इत्यादि वे कर्मचारी है, जो कार्यक्रम की योजना बनाते हैं और उसे नियत तिथि और समय पर प्रसारित कराते हैं। दूसरी श्रेणी में प्रोग्राम सुपरवाइजर, ट्रांसमिशन असिस्टेंट इत्यादि वे कर्मचारी हैं, जो प्रसारित होने वाले कार्यक्रम के गुण-दोषों पर नजर रखते हैं। जब कोई गाना, भाषण अथवा नाटक प्रसारित हो रहा होता है, उस समय रेडियो-स्टेशन के 'ड्यूटी रूप' में बैठा हुआ ट्रांसमिशन-असिस्टेंट उसे सुनता रहता है और समाप्ति पर रजिस्टर में दर्ज करता है कि आया वह कार्यक्रम उत्तम रहा, साधारण रहा या निकृष्ट रहा। दूसरे दिन स्टेशन के अधिकारियों के सामने दिन भर की यह रिपोर्ट पहुँचती है और उसके प्रकाश में सुधार तथा परिष्कार की आवश्यक कार्रवाई की जाती है।

लेकिन किसी कार्यक्रम के गुणात्मक मूल्यांकन की यह विधि अपने आप में पूर्ण नहीं है, एकांगी है। असल महत्व तो श्रोताओं के मत का है। इसी मत को जानने के लिए रेडियो-विभाग के पास शेष दो साधन हैं। प्रत्येक रेडियो-स्टेशन पर एक 'लिसनर रिसर्च आफिसर' होता है, जो श्रोताओं के पत्रों के आधार पर कार्यक्रम-विशेष की अच्छाई बुराई की जांच करता है। इसी जांच के प्रकाश में प्रसारित होने वाले भावी कार्यक्रम की रूपरेखा बनती है। यह आफिसर समय-समय पर श्रोताओं और नगर के गण्यमान्य व्यक्तियों के पास कार्यक्रम-विशेष के सम्बन्ध में छपे हुए प्रश्नपत्र भी भेजता है। कभी-कभी अपने कार्यकर्त्ताओं को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रोताओं के पास भी भेजता है, जो बातचीत द्वारा श्रोताओं की पसन्द-नापसन्द सम्बन्धी तथ्यों का संग्रह करते हैं।

तीसरा साधन वे पत्र हैं जो श्रोतागण अपने-आप रेडियो-विभाग को लिखते थे। यह साधन पहले दोनों साधनों से अधिक महत्वपूर्ण और उपयोगी है, क्योंकि इसके द्वारा श्रोताओं की ठीक ठीक निष्पक्ष राय मालूम हो जाती है। ये पत्र प्रायः तीन-चार प्रकार के होते हैं। अधिक संख्या फरमायशी प्रोग्रामों के सम्बन्ध में होती है। कुछ पत्र ऐसे होते हैं जिनमें किसी प्रोग्राम-विशेष की प्रशंसा अथवा आलोचना की होती है। कुछ ऐसे होते हैं, जिनमें श्रोतागण कार्यक्रम सम्बन्धी कोई सुझाव पेश करते हैं। कुछ पत्रों में रेडियो सम्बन्धी किसी समस्या का हल पूछा जाता है। इन पत्रों का रेडियो की कार्यविधि पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य पड़ता है। रेडियो के कई कर्मचारी, जो इस रहस्य को जानते हैं, प्रायः अपने किसी प्रोग्राम की प्रशंसा के लिए अथवा अपने किसी प्रतिपक्षी के प्रोग्राम की निंदा के लिए बाहर के अपने यार-दोस्तों से पत्र लिखवा दिया करते हैं। कई अन्य कलाकार भी यही तिकड़म करते हैं। लेकिन ऐसे झूठे पत्रों की कलई प्रायः खुल जाया करती है। खैर, श्रोताओं के पत्रों का उत्तर देने के लिए प्रत्येक रेडियो स्टेशन ने सप्ताह का एक दिन निश्चित कर रखा है। स्टेशन का प्रतिनिधि (जैसे दिल्ली स्टेशन से बी० एन० मित्तल) समझदारी से लिखे हुए कुछ अच्छे पत्रों को छांट कर माइक पर उनका उत्तर देता है। इन पत्रों द्वारा रेडियो-विभाग और श्रोताओं का आपस में सम्पर्क बना रहता है।

इस सारे विवरण का निष्कर्ष यही है कि श्रोताओं को पसन्द आने वाले अथवा पसन्द न आने वाले प्रोग्राम के सम्बन्ध में रेडियो-अधिकारियों को पत्र लिखते रहना चाहिये। परन्तु एक शर्त है। पत्र ईमानदारी से लिखा जाना चाहिये। श्रोताओं की ठीक सम्मति और रुचि से अवगत हो कर रेडियो-अधिकारी अपने कार्यक्रम का काफी सुधार और परिष्कार कर सकते हैं।

घूंघराले बाल बना लो !!

आज कल फैशनेबल लड़के और लड़कियां सिर के बालों को घूंघरियाले लहरियेदार और सुन्दर बना कर एक दूसरे को मोह लेते हैं। यदि आप अपने बालों को अत्यन्त सुन्दर पेचदार घूंघर वाले बनाना चाहते हैं तो हमारी "फिल्म हयर करलिंग लोशन" शीघ्र मंगवा लें। यह मैडीकल साइन्स का नवीन आविष्कार है जिसे केवल तीन दिन लगाने से बाल खमदार और कुण्डल वाले हो जाते हैं। और सात दिन के अन्दर अन्दर बालों को स्थायी रूप से खूबसूरत लहरियेदार घूघर वाले बना देती है। ऐसा मालूम होगा कि शुरू से ऐसे ही खूबसूरत थे। बेशक नहायें क्या मजाल जो बाल खराब हो जायें खूबी यह कि जड़ से घूंघरियाले बाल निकलने लगते हैं। सभी कालेज के विद्यार्थी और फिल्म ऐक्टर व ऐक्ट्रैसें इसके शौकीन हैं। मूल्य प्रति शीशी दो रुपये आठ आना २॥) डाक खर्च ।॥=) अलग। तीन शीशी की रियायती कीमत ७॥) डाक खर्च माफ।

मासिक धर्म एक दिन में जारी

मैक्सो अक्सीर—मासिक धर्म चाहे कितने दिनों से और चाहे किसी कारण से बन्द क्यों न हो इस दवा से एक दिन के अन्दर अन्दर जारी हो जाता है। मूल्य केवल ५॥) डाक खर्च ।॥=) अलग।

मैक्सो अक्सीर हैज—जो कि मासिक धर्म को फौरन जारी करके बड़ी आसानी से बिलकुल साफ कर देती है। कीमत बाहर रुपये १२) डाक खर्च ।॥=) अलग। याद रखें कि इसे गर्भवती स्त्री सेवन न करें क्योंकि यह दवा बच्चादानी को साफ करके बिल्कुल खाली कर देती है।

पता:—अमरीकन मैडीकल स्टोर (M. H. D.) डि टीगंज, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काँग्रेस में वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास

(पृष्ठ १६ का शेष)

पूर्व-युग के ऑरेटरों की भाँति परिमार्जित और सुसंस्कृत थी और न गांधी-युग के वक्ताओं की भांति संयत और युक्तिपूर्ण थी। उनकी व्याख्यान-शैली की विशेषताएं थीं—सीमारहित हिमाकत, जोरदार अत्युक्ति, भाषा की कठोरता और मजहबी जोश। उनके भाषणों में इन सब चीजों का मिश्रण होता था। बोलने और लिखने में निर्भय वे थे ही। न सरकार को माफ करते थे और न अपने से विरुद्ध मत रखने वालों को। गांधी जी को बनिया कह कर निर्दिष्ट करना तो उनके व्याख्यानों का एक छोटा-सा चुटकुला था। शब्दों द्वारा प्रतिपक्षी की हिंसा करने में वे थोड़ा-सा भी नहीं हिचकिचाते थे। इस दृष्टि से मौलाना अबुलकलाम आजाद की वक्तृतायें कला की दृष्टि से अली-बन्धुओं की अपेक्षा बहुत ऊँची होती हैं। तो भी यह मानना पड़ेगा कि जनता अली बन्धुओं के व्याख्यानों को सुनना चाहती थी और उनसे प्रभावित होकर 'मुहम्मद अली की जय' के नारे लगाती थी। इसका एक विशेष कारण यह था कि जनता स्वभाव से ही हिमाकत को, दबंगपन को और जोरदार चोटों को पसन्द करती है। अली बन्धुओं की अपने ढङ्ग की एक व्याख्यान-शैली थी, जिसे कई वर्षों तक देशवासियों ने पसन्द किया। उसमें ऊँचे दर्जे की कोई कला नहीं थी, तो भी वैसी कला तो थी ही जैसी एक मदारी के उन करतबों में होती है, जब वह जीवित मनुष्य को काट कर फिर जिन्दा कर देने की घोषणायें करता है और ग्राम्य भाषा के लच्छेदार प्रयोग द्वारा उपस्थित जनता को प्रसन्न कर लेता है।

—क्रमशः

स्त्री-जाति की एक मात्र प्रगतिशील मासिक पत्रिका

'आंचल'

सम्पादिका—कुमारी स्वर्णलता

मनमोहक लेखों, प्रगतिशील कहानियों तथा हृदय वेधक कविताओं का अमूल्य संग्रह।

वार्षिक मूल्य तीन रुपये।

नमूने की प्रति के लिये चार आने के टिकट भेजिये।

संचालक मासिक 'आंचल'

६ डिप्टीगंज, देहली।

मासिक धर्म एक दिन में जारी

मन्सो लाईफ पिल्स—एक दिन के अन्दर ही कितने ही अर्से और किसी कारण से रुके हुए मासिक धर्म को जारी कर देती है। दाम ५॥)

मैन्सो लाईफ स्पेशल—यह मासिक धर्म को फौरन जारी करके रहम को बिल्कुल आसानी से साफ कर देती है और इसके व्यवहार से कमर, पेड़ू, पेट का दर्द, सिर को चक्कर आना दूर हो जाते हैं। दाम १२)। याद रखो गर्भवती इस्तेमाल न करे, क्योंकि बच्चेदानी को बिल्कुल साफ कर देती है।

चम्पा बर्थ स्टाप—सदा के लिए सन्तान उत्पत्ति बन्द करने वाली दवाई। मूल्य १०), ५ साल के लिये ५॥)।

लेडी डा. एस. के. बर्मन (M. D.)

६८२, सराए फूस, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

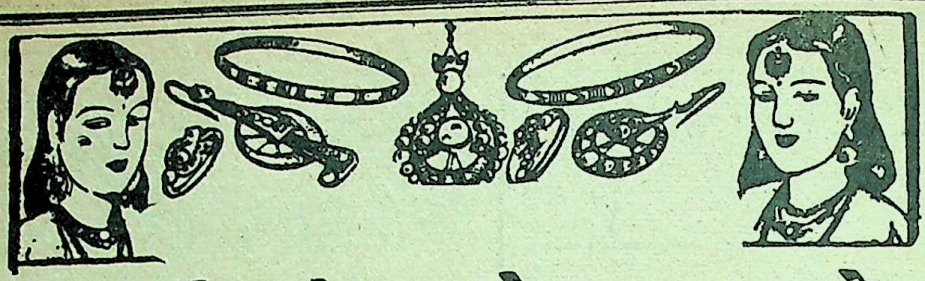

देहली में सोना दो रुपया तोला

सेठ आनन्द किशोर बी० ए० एल० बी० महौली (यू० पी०) से लिखते हैं कि आपका पार्सल मिला। आभूषण न्यू गोल्ड को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई, कृपा करके ६ तोला न्यू गोल्ड और एक नेकलस और भेज देवें। भारत भर के समाचार पत्रों के अलावा अनगणित पुरुषों ने इसकी प्रशंसा की है। इसके आभूषण का रङ्ग भी खराब नहीं होता। असली सोने की भांति इसके भी हर प्रकार के आभूषण बनते हैं। हर प्रकार की तसल्ली की गारंटी देते हैं। माल नापसन्द होने पर मूल्य वापस लौटा दी जावेगी। एक तोला २), तीन तोला ५॥), छः तोला १०) मिनर्वा न्यू गोल्ड के बने हुए सुन्दर आभूषण, गले का हार बड़ा १६), छोटा हार १२), नेकलस न्यू डिजायन १२), गुलूबन्द ८), चम्पाकली १०), गले की हंसली ११॥), अंगूठी नगदार ३), अंगूठी बम्बई फैशन मीनेवाली २), चूड़ियां डायमण्ड कट फैन्सी प्रति जोड़ा १॥), कान के अति सुन्दर कांटे नं० पहिला ३॥), प्रति जोड़ा नं० दूसरा ३=), नं० तीसरा २।), दस्तबन्द घड़ी चूड़ी प्रति जोड़ी ६॥), डाक व्यय इसके अलावा यह आभूषण नकली जवाहर जड़ी है। माल मिलने का पता:—

New Gold Supply Co. (M.H.D.) No. 199 Delhi

न्यू गोल्ड सप्लाई कं० (एम.एच.डी) नं० १९९ दिल्ली।

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का, सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल और सही-सही काम करता है शौकिया काम लेने वाले तथा व्यवसायी दोनों ही काम इससे ले सकते हैं, यह कीमती मनोहर कैमरा में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया बचायें। मूल्य बगैर कैमरा पूरा तमाम फिल्म-कार्ड, केमिकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ४॥=), वैरट क्वालिटी नं० ५५५ कीमत ६॥) डी लक्स एक्स्ट्रा, स्पेशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ९॥), पैकिंग व डाक व्यय १८)

नोट—एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५५० मुफ्त। स्टाक सीमित है अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसंद न होने पर कीमत वापिस।

वैस्ट एण्ड ट्रेडर्ज, पोस्ट बक्स नं० १९९ (m.h) दिल्ली।

West End Traders P. B. 199. (m.h) Delhi.

अगूँठी तांत्रिक (REGD)

ग्रहण के शुभ अवसर पर तय्यार की गई

यदि सत्य साबित न हो तो ६ माह तक मूल्य वापिस।

आप जो चाहेंगे हो जायेगा, गरीबी दूर भाग जायगी, आपकी प्रेमिका आपसे घनिष्ट प्रेम करने लगेगी। मन चाही सन्तान होगी। शत्रु मित्र बन जायगे। नाराज हाकिम खुश होगा विद्यार्थी परीक्षा में पास होंगे तथा मुकदमें में विजय होगी। यानी हर काम में सफलता मिलेगी। परिश्रम से तय्यार करवाई लाभ उठाना आपका काम है। एक बार अवश्य परीक्षा करें। केवल मूल्य २॥) डा. ख. ॥) पृथक।

पता:—जैन कार्यालय हीरा बिल्डिंग अलीगढ़ यू.पी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीलारूप

(पृष्ठ ११ का शेष)

'मैं इसे सुनना एकदम नापसन्द करती हूँ," गोपी बहन ने बड़े गम्भीर अन्दाज में कहा, "वैसे गाना मुझे पसन्द है।"

"हां, हां, गाना क्यों पसन्द न होगा ?" मैंने कहा, "यदि आपको गाना पसन्द न होता, तो लीलारूप में आपने इतना रस कैसे लिया होता ? पर मैं हैरान हूँ कि लीलारूप को खत्म क्यों कर दिया गया ?"

"लीलारूप खत्म न होता तो हम खत्म हो जाते," गोपी बहन ने ठण्डी आह भर कर कहा, "मुझे पहले से मालूम होता तो मैं मेजर आनन्द को कभी इस झंझट में न पड़ने देती।"

"यह आप क्या कह रही हैं, बहनजी ?" मैंने बढ़ावा दिया, "कला के बिना कोई देश कब आगे बढ़ा है ?"

"लेकिन वह कला भी क्या, जो कला के चाहने वालों के लिये वबाल बन जाय !"

"क्यों लीलारूप में ऐसा क्या वबाल था ?"

"तीस तो नर्तकियां थीं, न एक कम, न एक ज्यादा। पूरे बीस गाने-बजाने और नाचने वाले और थे। ये हुये पचास आदमी। तीन ट्रकों के तीन ड्राइवर और तीन ही क्लीनर। तीन खाना पकाने वाले। तीन नौकर। कुल जमा बासठ आदमी थे। पूरा काफिला ही तो था। इस काफिले को ठहराने के लिये पूरी सराय दरकार थी।"

"तो उन्हें किसी सराय में ठहराया होगा ?"

"उनके लिये तो यह कोठी ही सराय बनी। परिणाम यह हुआ कि वे लोग ज्यादा से ज्यादा स्थान पर कब्जा जमाते चले गये, हम सिकुड़ कर अन्दर ही अन्दर दबते गये। भैया, सच पूछो तो हमारे लिये तो लीलारूप एक बहुत बड़ी बीमारी की तरह था।"

"ओहो !" मैंने जरा रुक कर हमदर्दी जताते हुये कहा, "जब तो आपको बहुत कष्ट हुआ, बहनजी !"

गोपी बहन ने इसका कोई जवाब न दिया, जैसे उन्हें खयाल आ गया हो कि वे भावना के अतिरेक में लीलारूप के सम्बन्ध में इतनी बातें क्यों कह गईं।

मैंने कहा, "जहां तक मेजर आनन्द के साहित्यिक व्यक्तित्व का सम्बन्ध है, उनका नाम हमारे साहित्य के इतिहास में बड़े गर्व से लिया जायगा। पहले उनकी कहानियों में गङ्गा की लहरें हमारे मन को गुदगुदाती थीं, अब ब्रह्मपुत्र की लहरें भी हमारे सामने थिरक उठती हैं। मेजर आनन्द ने धरती की धड़कनें सुनी हैं। उन्होंने किसानों और मजदूरों के सपनों में उठने वाला तूफान देखा है वे देश की पल पल समीप आने वाली स्वतन्त्रता का स्वागत करने की पूरी शक्ति रखते हैं।"

इसके उत्तर में गोपी बहन ने केवल इतना ही कहा, "मेजर आनन्द को खूब लिखना चाहिये; पर भैया, जीवन की डगर का भी तो हमारे लिखने वालों को ध्यान रहना चाहिये।"

मैंने सोचा कि शायद गोपी बहन का संकेत मेजर आनन्द के असफल विवाह की ओर है। मैंने कहा, "बहनजी, मिसेज आनन्द आजकल ···!

गोपी बहन ने कहा, 'इस बात को छोड़िये।"

मैं खामोश हो गया। थोड़ा रुक कर मैंने पूछ लिया, "क्या मेजर आनन्द फिर से विवाह करने जा रहे हैं ?"

"उन्हें पत्नी नहीं मिल सकती," गोपी बहन ने हँस कर कहा, 'मेरा खयाल है अब वे दोबारा भूल नहीं करेंगे।"

यह बात तो यहीं खत्म हो गई। ड्राइङ्ग-रूम में वही दूधिया-सफेद प्रकाश फैला हुआ था। चाय भी आ गई। गोपी बहन ने स्वयं अपने हाथों से चाय बनाई और प्याली मेरी तरफ बढ़ाई।

मैंने कहा, "इतना तो बताइये, बहनजी, क्या स्थान की तङ्गी के कारण ही लीलारूप को खत्म कर दिया गया ?"

"नहीं तो," गोपी बहन ने बात को स्पष्ट करते हुए कहा, "बात और थी। लीलारूप असल में फौजियों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल खुश रखने के लिए एक तरह की नाटक-मण्डली थी, जिसका प्रबन्ध फौजी-विभाग की ओर से किया गया था। जब युद्ध बन्द हुआ, तो मेजर आनन्द और उनके एक साथी ने उसे खरीद लिया।"

मैंने कहा, "यह तो स्पष्ट है कि बहुत सस्ते दामों लीलारूप को खरीद लिया होगा।"

गोपी बहन ने दायें हाथ की उंगलियों से सिर खुजाते हुए कहा, "पर नर्तकियों और बाकी गाने-बजाने वालों से यही तय हुआ था कि उन्हें बराबर वही वेतन मिलता रहेगा।"

"तो क्या लीलारूप की आमदनी से नर्तकियों आदि के वेतन भी पूरे न होते थे?"

"यही तो कठिनाई थी। देखने वाले आयें या न आयें लीलारूप का खेल शुरू हो कर बीच में बन्द नहीं होता था। एक दिन की बात सुनाऊं। बस मैं और मेजर आनन्द दोनों खेल देखने वाले थे। मैंने बहुत कहा—भैया, खेल बन्द करा दो, व्यर्थ नर्तकियों को नचाने से क्या लाभ? पर मेजर आनन्द कब मानने वाले थे। पूरे नाच नाचे गये, पूरे गीत गाये गये। आमदनी कम, खर्च ज्यादा। बस कर्ज बढ़ता गया। हिस्सादारों ने एक दिन लीलारूप का दीवाला निकालने का प्रस्ताव रखा, पर मेजर आनन्द ने युद्ध की कमाई और अपनी पुस्तकों की रायल्टी का कुछ अंश देकर लीलारूप को अपने नाम करा लिया। पर भैया, लीलारूप ज्यादा दिन नहीं चल सकता था। और थक-हार कर एक दिन मेजर आनन्द ने यह फैसला कर लिया कि लीलारूप को बन्द कर दिया जाय और लीलारूप का सब सामान नीलाम कर दिया जाय।"

मैंने कहा, "भाग्यशाली हैं वे जिन्होंने लीलारूप द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले नाच गाने देखे और सुने होंगे। मैं तो उन्हें देख नहीं सका।"

गोपी बहन ने पलट कर कहा, "आप भी उन्हें देखते और सुनते तो बहुत खुश होते। एक नृत्य तो सचमुच बड़ा अजीब था। उसकी पृष्ठभूमि में गाने वालों की 'हो-ओ ओ-हो-ओ-ओ' ध्वनि बड़ी भयंकर प्रतीत होती थी; पर शीघ्र ही नाचने वालों की मुखाकृति पर देवता का आशीर्वाद झलक उठता था, जैसे उन्हें अन्न-देवता ने विश्वास दिला दिया हो कि अब कभी अकाल नहीं पड़ेगा।"

मैंने उछल कर कहा, "वह नृत्य तो मुझे अवश्य देखना चाहिए थां।"

गोपी बहन ने फिर कहा, "एक नृत्य में अलाव के गिर्द नाचने की प्रथा प्रदर्शित की जाती थी। एक और नृत्य में फसलों को ऊँचा उठाने के संकेत प्रस्तुत किये जाते थे, जो प्रायः आदिम जातियों के नृत्यों की विशेषता है। एक नृत्य में आरती-दीप जगमग-जगमग कर उठते थे।"

मैंने कहा, "तब तो लोक-कला का अच्छा प्रदर्शन रहता होगा। यही तो वह कला है, जिस में आज भी हमारे देश का हृदय धड़क रहा है। सच कहूँ, लीलारूप जैसा कलाकेन्द्र हर्गिज-हर्गिज बन्द नहीं होना चाहिए था क्या लीलारूप के नाच-गाने स्वयं मेजर आनन्द को भी पसन्द नहीं रहे थे?"

गोपी बहन फिर खामोश हो गईं। मैंने फिर से बढ़ावा देते हुए कहा, "लीलारूप की नर्तकियां मेजर आनन्द का सम्मान तो जरूर करती होंगी।"

"बल्कि हद से ज्यादा सम्मान करती थीं," गोपी बहन ने हंस कर कहा, 'मेजर आनन्द जरा बाहर हुए कि कमरे नर्तकियों की चुहलों से गूँज उठे। जरा मेजर आनन्द अन्दर आये कि राजनर्तकी ने उद्घोषित किया—'मेजर आनन्द!' और सब नर्तकियां सीधी खड़ी हो जातीं तन कर फौजी अंदाज में और इसके उत्तर में मेजर आनन्द को भी हमेशा उनके सामने तन कर रहना पड़ता। युद्ध खत्म हो चुका था, पर नर्तकियां अभी तक मेजर आनन्द को फौजी सलाम करना जरूरी समझती थीं।"

"तो जिस दिन सब नर्तकियों को विदा किया होगा, उस दिन सारे दृश्य पर उदासी छा गई होगी—वैसी उदासी जो उस समय तपोवन में छाई थी, जब शकुन्तला आश्रम से विदा हुई थी। कम से कम राजनर्तकी ने जरूर इधर उधर घूर घूर कर देखा होगा। शकुन्तला ने तो आश्रम से चलते समय कहा था कि उसकी अनुपस्थिति में हिरन और लतायें उदास हो जायेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद राजनर्तकी ने यह सोचा हो कि उसके जाते ही मेजर आनन्द पर उदासी छा जायगी ''

गोपी बहन ने कहा, "आप तो कोई कवि मालूम होते हैं।"

मैं संभल गया, क्योंकि ऐसी ही बात-चीत के कारण मैंने मेजर आनन्द को नाराज कर दिया था।

गोपी बहन ने बताया कि पूरे डेढ़ मास तक लीलारूप का सामान बिकता रहा; बल्कि कुछ चीजें तो अभी तक पड़ी हैं और उन्हें सदा उनके खरीदारों की प्रतीक्षा रहती है। ये चीजें बिक जायं तो जगह खाली हो जाय। लीलारूप का सामान कौड़ियों के मोल लुटाया गया —कम से कम गोपी बहन का यही खयाल है।

मैंने कहा, "आखिर मेजर आनन्द ने भी तो इस सामान का बहुत ज्यादा मूल्य नहीं दिया होगा।"

अब लीलारूप की कहानी मेरे रूबरू उजागर हो चुकी थी। मैंने गोपी बहन का धन्यवाद किया।

नौकर ने आकर कहा, "खाना तैयार है।"

गोपी बहन ने कहा, "खाना अभी लगाओ दूसरे कमरे में।"

खाने से निवृत्त हो कर मैं जल्द सो गया। और अगले सवेरे ही मैंने गोपी बहन से आज्ञा ली और अपने गांव के लिए चल पड़ा।

बहुत दिनों बाद फिर मेजर आनन्द से भेंट हुई। अब तो वे अक्सर मिल जाते हैं। मुझे उन से नफरत नहीं। अक्सर लीलारूप का जिक्र छिड़ जाता है वे जरा भी तो नहीं बदले। एक प्रश्न के उत्तर में दूसरा प्रश्न कर डालने का अंदाज तो वे कभी छोड़ ही नहीं सकते। भले ही वे नाराज हो जायं. अब के उनसे मुलाकात होने पर मैं जरूर कहूँगा. "मेजर आनन्द, फिर से लीलारूप क्यों शुरू नहीं करते? जनता को ठीक डगर दिखाने के लिए लीलारूप बहुत काम की चीज हो सकता है।"

मुझे विश्वास है कि इसके उत्तर में मेजर आनन्द खामोश खड़े रहेंगे जैसे अब कोई घूँघरू न बज सकता हो, जैसे सब की सब पायलें खामोश हो चुकी हों।

★

मुफ्त

यदि आप असली फाउन्टेनपेन और असली घड़ी गारन्टी १५ साल मुफ्त प्राप्त करना चाहते हैं तो आज ही लिखें। शीघ्र करें वरना यह मौका फिर हाथ नहीं आएगा। अमेरिकन ट्रेडिंग पी. बी. (M. R. D. ७५ अमृतसर

त्रिकाल दर्शी करामाती दर्पण

किसी भी उमर का मनुष्य इस करामाती दर्पण में देख सकता है। चोरी गई वस्तु व गुमशुदा का पता, बीमार के स्वस्थ होने या न होने का हाल, आने वाले और गुजरे हुए हालात, भावी दुखों से बचने के उपाय, गड़े धन का पता किसी मुश्किल काम का हल होना या न होना, प्रेम, नौकरी, अदालती केस, परीक्षा आदि में विजय पाना, स्वर्गवासी माता-पिता, मित्रों शहीदों से मुलाकात, जिसे कभी न देखा गया हो या जिसकी स्वप्न में भी आशा न हो उसे आप इसमें आसानी से देख लेंगे। मूल्य मय परचा तरकीब दो रुपये आठ आने २॥) रु०। दो दर्पण चार रुपये आठ आने ४॥) रु०। महसूल डाक ॥।-) अलग। स्पेशल ताकत वाला प्रभावशाली दर्पण तीन रुपये बारह आने ३॥।) डाक खर्च ॥।-) अलग। यदि गलत साबित हो तो दाम वापिस भेजे जावेंगे। हमारे पास सिर्फ थोड़े दर्पण बाकी हैं जल्दी मंगा लें। क्योंकि खतम होने पर किसी कीमत पर नहीं मिलेगा।

प्रेम चूर्ण थोड़ा सा चूर्ण मिठाई या पान में जिसको खिला दोगे वह आपके प्रेम में बेदाम गुलाम और मस्त हो जाएगा और सदा आपकी मुहब्बत का दम भरेगा। मूल्य दो रुपये २) रु०। डाक खर्च ॥-) अलग। मंगाने का पता:—

श्री काली महम शक्ति आश्रम (एम.एच.डी.) नं० १६६ देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि अब भी लाभ न उठाया तो आपके भाग्य का दोष है

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

सब काम पूरे हो जावेंगे कोई फीस नहीं जो मांगोगे मिल जावेगा कोई फीस नहीं

यदि आपको बेकारी ने सताया है और मुसीबत में गिरफ्तार हैं रोजगार के लिये हाथ पांव मारते हैं परन्तु रुपया हाथ नहीं आता, यदि आपका कोई काम बन बन के बिगड़ जाता है, यदि आप किसी से प्रेम करते हैं मगर वह परवाह नहीं करता, यदि आप सन्तान को तरसते हैं यदि आप किसी मुकदमे में फंस गये हैं और इज्जत से छुटकारा चाहते हैं, यदि आप स्त्री की नाचाकी से तङ्ग आ गये हैं, यदि आपको परीक्षा में पास होने की चिन्ता है, यदि आपको कोई सख्त किस्म की बीमारी है, यदि आप नौकरी के लिये परेशान है, यदि आपका कोई प्यारा या रिश्तेदार गुम हो गया है या कहीं चला गया है, यदि आप भूत प्रेत के साया से दुख उठा रहे हैं, यदि आपके मन में कोई इच्छा है और वह पूरी नहीं होती, यदि आप करजे के तले दबे हुये हैं अथवा कोई भी किसी किस्म की परेशानी हो तो आप इसी समय किसी फूल का नाम और अपना नाम व पता खुशखत लिखकर हमें भेज दें, कोई कीमत या फीस नहीं ली जावेगी, सिर्फ डाक खच के लिये छै (६) आना की टिकट लिफाफा में अवश्य ही रख देवें, ईश्वर की कृपा से सब काम पूर्ण हो जावेंगे, जो मांगोगे मिल जावेगा, इसके साथ ही आपके १२ महीने का वर्ष फल बनाकर भेज दिया जावेगा आज ही चिट्ठी लिखकर मंगवाना आपकी किस्मत खुल जाएगी।

अमेरिकन मेडीकल स्टोर (एम. एच. डी.) डिप्टीगंज, सदर बाजार, देहली।

पाँच सौ रुपया इनाम

काले गोरे हो गये

साइन्स के नियमों पर २० वर्ष से सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध हमारा ब्यूटी लोशन किता छाया मुहासे काले अथवा अशोभन दाग धब्बे—चेचक के दाग दूर करके मुख अथवा जिस्म के प्रत्येक अङ्ग को नर्म मुलायम और अति सुन्दर बनाता है—यूरुप की लेडियां और स्वतन्त्र भारत की नारियां इसे प्रतिदिन स्नान के उपरान्त प्रयोग करती हैं—इसकी भीनी भीनी सुगन्ध दिमाग को तर रखती है और हृदय को प्रसन्नता देती है—

काले कौए सफेद हो गये—पहले पहल इसका प्रयोग काले रङ्ग के कौओं पर करके देखा गया जो सफेद हो गये।

नारी की सुन्दरता—यदि आपको स्त्री से प्रेम है यदि आप उसे सदैव सुन्दर देखने की इच्छा करते हैं तो आज ही हमें ब्यूटी लोशन के लिए लिखें। स्त्री इस सुन्दर उपहास से प्रसन्न होगी और उसके रूप में बड़ी तबदीली देख कर चकित रह जावेंगे।

मूल्य में रियायत—कुछ काल के लिए मूल्य में निम्नलिखित अनुसार रियायत होगी, उपरान्त में पूरा मूल्य ५) प्रति शीशी होगा।

रियायती मूल्य—प्रति शीशी २॥) डाक व्यय १॥) कुल ४) रु० तीन शीशी ६॥) डाक २) कुल ८॥) रु०।

चंदनवारी ब्यूटी स्टोर (M. H. D.) Post Box No. 12 SIMLA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुलझड़ियां

यह जान कर सभी को ('सभी' में हम भी शामिल हैं !) हर्ष होगा कि हमारे आयुष्मान् श्री भारत-कुमार का शुभ विवाह आयुष्मती कुमारी ब्रिटेनिया के साथ विधिपूर्वक सम्पन्न हो गया है।

यह विवाह हालांकि 'सिविल मैरिज एक्ट' के अनुसार हुआ है, तो भी भगवान् से हमारी प्रार्थना है कि यह जोड़ी सदा बनी रहे, दूधों नहाये, पूतों फले...!

यह जान कर भी सभी को ('सभी' में हम भी शामिल हैं !) हर्ष होगा कि पुराने विचारों की होते हुए भी दादी-अम्मां और राजमाता ने वर्ण और जाति से बाहर, सात समुद्र पार की बधू से हुए इस अति-आधुनिक विवाह-सम्बन्ध पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगादी है।

वैसे कुछ बड़े-बूढ़ों ने इस सम्बन्ध पर कुछ आपत्तियां की हैं—कुछ आशंकायें भी प्रकट की हैं; पर महिमामयी दादी अम्मां और राजमाता इन आपत्तियों और आशकाओं को कोई महत्व नहीं दे रही हैं। उन्हें अपने लाडले बेटे की खुशी का ही अधिक खयाल है। यह स्वाभाविक ही है!

* * *

सुनते हैं कि इस विवाह सम्बन्ध से जो लोग अप्रसन्न हैं, उन में से कुछ तो ऐसे हैं जिनकी आदत ही अप्रसन्न होने की है, कुछ ऐसे हैं जो आयुष्मान् श्री भारतकुमार से आजीवन ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन कराना चाहते हैं और कुछ ऐसे हैं जो किसी और जगह सम्बन्ध कराने के लिए 'जोड़-तोड़' (तोड़ फोड़ नहीं) कर रहे हैं कुछ लोगों को यह आशंका है कि चूंकि लड़का विवाह से पहले लड़की के अधीन रह चुका है, अतः अब विवाह के बाद भी 'बीवी का गुलाम' बना रहेगा। हमारे खयाल में यह आशंका निराधार है। चाहे कुछ भी हो, हमारा आयुष्मान् न तो इतना पुंसत्वहीन है और न बे गैरत ही। वधू ने यदि अनुचित रूप से कोई दबाव डालने या हावी होने का प्रयत्न किया, तो हमारा आयुष्मान् उसे तलाक भी दे सकता है। इसीलिए तो 'सिविल मैरिज एक्ट' के अनुसार विवाह किया गया है। 'पण्डित जी' ने भी यह बात स्पष्ट कर दी है।

उन लोगों से, जो हमारे आयुष्मान् का सम्बन्ध किसी और घराने में कराना चाहते थे, हमारी प्रार्थना है कि वे निराश न हों। जब तक हिन्दू-कोड बिल पास नहीं हो जाता (और पास होने में अभी काफी देर है), हमारा आयुष्मान् जरूरत पड़ने पर और भी विवाह कर सकता है। हमारे देश में बहु-विवाह की धर्मसम्मत पुरानी परम्परा भी है और आज के सेठ-साहूकारों द्वारा प्रति वर्ष एक विवाह करने के उदाहरण भी।

* * *

कुछ भी हो, कुमारी ब्रिटेनिया के साथ हुए इस सम्बन्ध से विश्व-बिरादरी में हमारी काफी प्रतिष्ठा बढ़ी है। यह प्रतिष्ठा और भी बढ़ सकती है, यदि हमारे घर के लोग आपस की सिर-फुटौवल बन्द कर दें। भला बताइये, सभी लोग कैसे मिनिस्टर बन सकते हैं? और फिर इस सिर फुटौवल का पराये घर की लड़की के मन पर क्या असर पड़ेगा?

वैसे इस विवाह-सम्बन्ध का हमारे मिनिस्टरी-आकांक्षी कई चिरकुमार नेताओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। जिनको मिनिस्टरी नहीं मिली, वे स्त्री पाकर ही सन्तुष्ट हो रहे हैं। हिन्दी-संसार ऐसे कुछेक उत्साहवर्द्धक समाचार पहले सुन चुका है, कुछेक और भी शीघ्र ही सुनेगा। बात दरअसल यह है कि हिन्द-यूनियन में योग्य नेताओं के लिए मिनिस्टरियों की भले ही कमी हो, परन्तु योग्य वरों के लिए स्त्रियों की कोई कमी नहीं। श्री सुमित्रानन्दन पन्त पता नहीं अभी कब तक कुँआरे रहेंगे! वैसे तो हिन्दी के समर्थ कवियों और लेखकों के लिए श्री देवेन्द्र सत्यार्थी की कहानी में वर्णित 'लीला-रूप' का विकल्प भी बुरा नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Ha

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं जुगनू बन जाऊँ!

कुमारी शैलबाला

मैं जुगनू बन जाऊँ!
अम्मा,
मैं जुगनू बन जाऊँ!

जा पहुँचूँ मैं फूलों के घर,
परियों के महलों के अन्दर,
बौनों की कुटिया के भीतर,

नन्हा दीप जलाऊँ!
अम्मा,
मैं जुगनू बन जाऊँ!

पप्पू, इन्दू, शशी हमारा
मुझको समझें टूटा तारा,
मुझे पकड़ना चाहें, लेकिन

हाथ नहीं मैं आऊँ!
अम्मा,
मैं जुगनू बन जाऊँ!

भैया की टोपी में घुस कर,
जीजी के बालों में फँस कर,
बाबा की दाढ़ी में धँस कर,

सब को खूब खिझाऊँ!
अम्मा,
मैं जुगनू बन जाऊँ!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

खिलक्कड़ योगेश

श्री ईशकुमार

योगेश बहुत ही खिलक्कड़ और आवारागर्द लड़का था। उसका मन जितना अधिक खेल-कूद में लगता था, उतना पढ़ने में न लगता था। परिणाम यह हुआ कि वार्षिक परीक्षा जब हुई, तो और सब लड़के तो पास हो गये, योगेश और उसका एक और खिलक्कड़ साथी नरेन्द्र फेल हो गये। कक्षा के अन्य सब लड़के खूब उछल रहे थे, कूद रहे थे, हँस रहे थे, पर योगेश और नरेन्द्र दोनों एक ओर खड़े रो रहे थे। योगेश को डर था कि उसके पिता जी उसके फेल होने की सुन कर उसे मारेंगे। वही हुआ भी। योगेश जब घर गया और उसके पिता जी ने जब सुना कि वह फेल हो गया है, तो उसे खूब मारा। उसे उस दिन दण्ड के तौर पर सारे दिन खाना नहीं मिला। योगेश को अपने फेल हो जाने का बड़ा पछतावा था। पछताता हुआ योगेश भूखा ही रात को सो गया।

* * *

आधी रात बीत चुकी थी। वह लेटा हुआ तो था, पर नींद नहीं आ रही थी। उसके पेट में चूहे कूद रहे थे। उसकी व्याकुलता बढ़ने लगी। वह चुपके से उठा। उसने धीरे से रसोई खोली। योगेश के हिस्से का खाना बचा रक्खा तो था ही। पूर्णमासी का दिन था। शाम को सत्यनारायण जी की कथा हुई थी। ब्राह्मण को जिमाने के लिए घर में खास तौर से खीर बनाई गई थी। पर योगेश को नहीं दी गई थी। उसने चुपके चुपके खूब पेट भर के पराठे और खीर उड़ाई और फिर धीरे से ड्योढ़ी की सांकल खोल चल दिया यमुना की ओर। रास्ते में नरेन्द्र का घर पड़ता था। सोचा नरेन्द्र को आवाज दूं, पर फिर कुछ सोच कर उसे नहीं पुकारा और अकेले ही यमुना के तट पर पहुँचा।

आज वहाँ की अजब ही छटा थी। सुन्दर नीले आकाश में पूनों का पूरा चाँद खिलखिला कर हँस रहा था। यमुना के दोनों ओर की हरियाली हवा के मन्द मन्द झोंकों के साथ-साथ लहरें ले रही थी और बरसती हुई चाँदनी में नहा रही थी। यमुना की लहरें भी किलक-किलक कर उछलती, खेलती, दौड़ी जा रही थीं। योगेश को यह सब बड़ा अच्छा लगा। वह एकटक यह छटा देख ही रहा था कि इतने में उसे आकाश में धीमी-धीमी सर्र-सर्र-सी आवाज सुनाई दी। उसने उस आवाज की ओर दृष्टि दौड़ाई तो देखा, उत्तर की ओर काफी दूर पर कुछ-कुछ हिलती हुई भारी जगमगाहट थी। वह जगमगाती हुई वस्तु धीरे-धीरे पास आती गई और थोड़ी ही दूर पर उतर गयी। योगेश ने ऐसी अनोखी वस्तु पहिले कभी न देखी थी। वह एक बहुत बड़ी नाव के आकार की थी। उसके दोनों सिरे राजहंस की शक्ल के थे। उसके बाहर के सारे भाग में बहुमूल्य हीरे-रत्न जड़े हुए थे। अन्दर बढ़िया मखमली गलीचे का फर्श था और चारों ओर मोती की झालरों वाले बढ़िया रंग-बिरंगे रेशमी कपड़े के बने हुए तकिये बराबर-बराबर रखे हुए थे।

वह देवलोक का विमान था। उसमें बैठ कर देवलोक के निवासियों के बच्चे यमुना की सैर करने के लिए आये थे।

विमान जैसे ही धरती पर उतरा, उसमें बैठे हुए बहुत सारे सुन्दर-सलोने बच्चे, जो रंग-बिरंगे रेशमी कपड़े पहिने हुये थे, किलकारियां मारते हुए बाहर निकल आये। बाहर आकर उन्होंने विमान के मखमली गद्दे को हटाया और फर्श के तख्ते को उलट कर उसमें से एक छोटी नाव निकाली और यमुना के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल में तैरा दी। एक-एक करके सब बच्चे उसमें बैठ गये। बहुत से गन्धर्वों के बच्चे अपने साथ सितार, बीणा, बंसरी, मृदङ्ग आदि बाजे लाये थे। दो बच्चों ने मिल कर नाव की पतवार सम्हाली और गन्धर्वों के बच्चों ने मधुर-मधुर स्वर में गाना आरम्भ किया।

योगेश खड़ा-खड़ा यह सब दृश्य देख रहा था। उसका हृदय उछलने लगा। उसकी बड़ी इच्छा हुई कि वह भी उस नाव में बैठ उन देवताओं के बच्चों के साथ आनन्द मनाये। वह दौड़ कर उनके पास पहुँचा और विनम्र स्वर में बोला—"भाइयो! मुझे भी अपने साथ ले लो। मैं भी आपके साथ नाव की सैर करना चाहता हूँ।"

सब बच्चों ने योगेश की ओर देखा। एक क्षण के पश्चात् सब बच्चे उसके मुँह को देख कर खिल-खिला कर हँस पड़े। योगेश सिटपिटा-सा गया। सब बच्चों ने जोर से चिल्ला कर कहा, "हम तुम्हें नाव की सैर नहीं करायेंगे।"

योगेश इसके उत्तर में कुछ कहना ही चाहता था कि उन बच्चों में से एक चंचल-सी लड़की खड़ी हो कर बोली, "पहिले अपना मुँह तो पोंछो। तुम्हारे मुंह में खीर लगी है। तुमने चुरा कर खाना खाया है। हम चोट्टे लड़के के साथ नहीं खेलेंगे।"

योगेश ने यह सुनते ही झट से बहते हुए यमुना के जल में अपना मुंह धोया और अपनी कमीज से जल्दी से पोंछ कर विनय करते हुए कहा, "लो, मैंने मुँह धो लिया। अब तो मुझे अपने पास बिठा लो!"

सब बच्चों ने उत्तर दिया, "नहीं। तुम पढ़ते-लिखते नहीं। तुम इस बार फेल हो गये हो। तुमने इस प्रकार अपने माता-पिता और अपने अध्यापकों को नाराज किया है। यही नहीं, तुमने अपने पिता जी के द्वारा दी गई सजा को भी नहीं माना। चोरी से खाना खा लिया, इसलिए तुम चोर भी हो। ऐसे निकम्मे खिलकड़ लड़कों को हम अपने साथ नहीं खिलायेंगे।"

योगेश के मन पर जैसे बड़ी जोर की चोट लगी। थोड़ी देर तक सोचने के बाद उसने फिर कहा—"भाइयो, मैं आप सब के सामने प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अब खूब मन लगा कर पढ़ूंगा। कभी चोरी नहीं करूंगा। अपने माता-पिता और गुरु जी की आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं करूंगा। उन्हें कभी नाराज नहीं करूंगा। लो, बस, अब तो मुझे नाव में बिठा लो।"

एक बच्चे ने कहा—"अगर तुमने इसी तरह अपने कहे अनुसार अपनी बातों का पालन किया, तो अगली पूनों को जब हम आयेंगे, तो तुम्हें अवश्य अपने साथ नाव की सेर करायेंगे।"

कुछ समय तक यमुना में सैर करके वे बच्चे अपनी नाव को फिर किनारे पर ले आये। सब नाव पर से उतरे। नाव को उसी प्रकार विमान की तह में रख कर, ऊपर से वही मखमली गलीचा बिछा, सब बच्चे उसमें बैठ गये। तभी विमान सर्र से आकाश में उड़ गया।

निराश योगेश घर की ओर लौट पड़ा। वह रास्ते में सोचता जा रहा था कि मैं आज अपने पिता जी के चरण पकड़ कर अपनी पिछली गलतियों के लिये अवश्य क्षमा मांगूंगा। वह घर पर आया, किवाड़ ज्यों के त्यों खुले पड़े थे। वह दबे पाँव आगे बढ़ा। पर जैसे ही उसने चाहा कि झटपट चुपके से अपनी खाट पर सो जाऊं कि देहली की ठोकर उसके बड़ी जोर से लगी और वह धड़ाम से गिर पड़ा···

योगेश की आंख खुल गई। सबेरा हो गया था और उसका हृदय धक्-धक् कर रहा था। कैसा अनोखा स्वप्न था वह!

* * *

योगेश अब खूब मन लगा कर पढ़ता है। उसके माता-पिता और अध्यापक सब उससे खुश हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना-शुल्क

बाल-पहेली नं० २०

२५ जून १९४९ तक सही उत्तर आने पर पांच रुपये नकद पुरस्कार

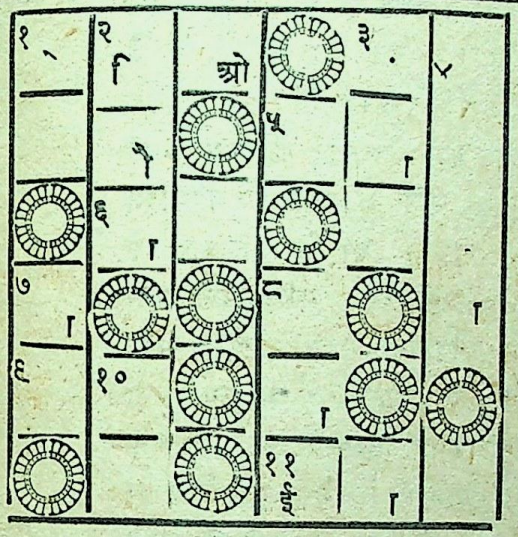

दायें से बायें

१. यह घर में हो तो, बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ती। ३. बड़ा घोंघा। ५. कपड़ा बुनने वाले यन्त्र के नाम के उलट-पुलट अक्षर। ६. कहते हैं कि बालक कृष्ण ने इस पर चढ़ कर यमुना की सैर की थी। ९. इसका सारा लहू बह जाय तो आदमी मर जाता है। ११. पूर्व और उत्तर के बीच का कोना।

ऊपर से नीचे

१. इसके कारण कई नगरों का महत्व बढ़ जाता है। २. बच्चो, इसके बिना तुम्हारी मातायें तुम्हें बाहर नहीं जाने देतीं ३. चीन का एक बड़ा नगर, जहां सभी देशों के लोग रहते हैं। ४. कहते हैं कि यह अपने साथी को देख कर रंग पकड़ता है। ७. यह खाकर जो फिर कोशिश करता है, वह अवश्य एक न एक दिन जीतता है। ८. जिस घर में यह न हो, वहां बैठा नहीं जाता। १०. कई लड़के इस में भी खेल खेलते हैं।

बाल-पहेली नं० १९ का पुरस्कार

गत मई १९४९ के 'मनोरंजन' में प्रकाशित बाल-पहेली नं० १९ का सही उत्तर सैंण्डर्स ब्रिज, बम्बई से ८ वीं कक्षा के विद्यार्थी राममोहन पण्डया ने भेजा है, अतः उसे ५) का पुरस्कार दिया गया है। सही उत्तर निम्नलिखित है—

दायें से बायें

१. परिणाम, ५. तप, ७. नाम, ८. वह, १०. झ ण, ११. छूत।

ऊपर से नीचे

२. रिमझिम, ३. णाल, ४. झपट, ६. हवन, ७. नारा, ९. सौत।

बाल-पहेली के नियम

१. केवल १४ वर्ष की आयु तक के लड़के-लड़कियां ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। आयु के सम्बन्ध में माता-पिता अथवा स्कूल के अध्यापक का प्रमाण-पत्र भी उत्तर के साथ आना चाहिये।

२. उत्तर 'मनोरंजन' में छपे खाके को काट कर और भर कर भेजना चाहिए। किसी और कागज पर अलग से भेजे गये उत्तर पर विचार नहीं किया जायेगा। एक व्यक्ति एक से अधिक पूर्तियां भी भेज सकता है।

३. खानों को स्याही से सुस्पष्ट लिखे अक्षरों से भरना चाहिये। कटे-छंटे या पैंसिल आदि से लिखे अक्षर को सही नहीं माना जायेगा।

४. उत्तर २५ जून १९४९ को सायंकाल तक 'मनोरंजन' कार्यालय, श्री श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली में पहुंच जाना चाहिये।

५. सम्पादक का निर्णय अन्तिम होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Ha

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनो

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं, और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिकधर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी। मुझे मासिक धर्म खुल कर न आता था। अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन कमजोर होती जा रही थी, चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की मशहूर औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से भी रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महात्मा हमारे दरवाजे पर भिक्षा के लिये आये। मैं दरवाजे पर आटा डालने आई तो महात्माजी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रंग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पतिदेव को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुःखी बहिनों की भलाई के लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखें। मैं उनको अपने हाथ से औषधि बना कर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवाई तैयार करने पर २॥।=) दो रु० चौदह आने असल लागत खर्च होता है और महसूल डाक अलग है।

* जरूरी सूचना *

मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है। इस लिये कोई बहन मुझे और किसी रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल, (३०) बुडलाडा, जिला हिसार पंजाब।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असली पुराना 'मिश्र का जादू' सचित्र रङ्गीन सम्पूर्ण

(मिश्र देश के जादू, विद्या की हस्तलिखित पुस्तक का अनुवाद)

[१] वशीकरण [२] सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनिआदि प्रत्येक ग्रह का वशीकरण और अन्य सब चीजों के वशीकरण, बड़े बड़े मुकदमें जीतना व चोरी पकड़ना हर तरह के साधन रोगों पर दम करना, चाहे कोई रोग हो और ओषधी से लाभ न होता हो। घर बैठे दूर देशों की सैर करना, पवन में उड़ते फिरना, जिस को चाहें बश में कर लेना नजर से गुप्त हो जाना दूसरे रूप में प्रकट होना, दूर दराज की वस्तुयें मंगवा लेना, जेब, परी, जिन्नां और शत्रुओं को अधिकार में रख कर इच्छानुसार काम लेना आदि ऐसे गुप्त भेद दर्ज हैं जिनको साधु, महात्मा ऋषि मुनि भी न पा सके। इस से बढ़ कर आप को और कोई पुस्तक नहीं मिल सकती। यदि पुस्तक लिखे अनुसार न हो तो वापिस कर दो कीमत सजिल्द २॥) डाक खर्च ॥=) कुल ३=)।

१०००) रु० महावार शर्तिया कमा लो (अर्थात् खजाना रोजगार)

इस पुस्तक में ५२८ हुनर छपे हैं। चाहे कोई सा एक हुनर अपने मतलब का चुन लें और उससे १०००) महावार कमावें। किसी उस्ताद की जरूरत नहीं। गिलटसाजी, फोटोग्राफी घड़ीसाजी, दंदानसाजी, रबड़ की मुहरें। आतिशबाजी, साबुन, बाल काले करने के अंग्रेजी खिजाब बाल उम्र भर न उगने की दवा बनाना, मोम बत्ती, गंधक के गिलास, शीशा जोड़ना, इत्र तेल, फुलेल अंग्रेजी खाने, बिस्कुट मिठाई अचार, मुरब्बे, चटनियाँ सब रोगों के इलाज और १०८ बीमारियों की एक दवा अमृत का नुस्खा आदि ५२८ हुनर छपे हैं शीघ्र मंगा लें। रियायती मूल्य १॥) डाक खर्च ॥=) अलग।

फिरंगी और हिन्दुस्तानी मदारी अर्थात् भानमती का पिटारा

यह पुस्तक यौरुप और हिन्दुस्तानी मदारियों का पिटारा है। इसमें अंडे, बोतल, गिलास, फुलझड़ी, रुपया, ताश का खेल, भूत प्रेत जिन्न उतारना, अंधेरे में रोशनी कर देना मुंह से आग निकालना, हाथ पर आग रखें तो हाथ न जले, मनुष्य को कत्ल करके जिंदा कर देना आम का बूटा, सरसों हाथ पर जमाना, बिना भट्टी जुआर, चने भून देना, आग पर खाना न पके, बंधे मनुष्य को छुड़ाना, कागज की कढ़ाई में पकौड़े तलना, कमरे में हरे रंग की रोशनी हो, जादू की स्याहियों के नुस्खे जिन से लिखा हुआ अन्य मनुष्य पढ़ न सकें और सैंकड़ों तमाशे बहुत ही सरल रीति से लिखे हैं मूल्य सजिल्द १॥) डाक खर्च ॥=) अलग।

यक्षिणी भैरव साधनम्—इस पुस्तक में नाना प्रकार के चमत्कार यंत्र मंत्र आदि विषय हिन्दी भाषा में लिखे गये हैं। जिन से विद्वान तथा अल्प पठित पुरुष भी अपनी मनोकामना पूरी कर सकते हैं। योग विद्या वर्णन, यक्षिणी तथा शिव विष्णु ब्रह्मा सूर्य, चन्द्र भैरव महावीर आदि देवताओं को सिद्ध प्राप्तकर के अपनी आशाएं पूर्ण होती हैं। कीमत २॥) डाक खर्च ॥=) अलग।

खुफिया फोटो वाला एकान्त में बैठ कर पढ़ने योग्य सम्पूर्ण

असली, सचित्र कोक-शास्त्र, रंगीन

असली मूल्य ५)। रियायती की २॥) डाक खर्च ॥=) अलग।

पता:—मैनेजर सिनेमा संसार (M. H. D.) सदर बाजार, देहली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांझ स्त्रियों के लिये

मेरी शादी हुए पन्द्रह वर्ष बीत चुके थे। इस समय के बीच मैंने सैकड़ों इलाज कराये लेकिन कोई सन्तान पैदा न हुई। सौभाग्यवश मुझे एक वृद्ध महापुरुष से निम्न लिखित नुस्खा प्राप्त हुआ। मैंने उसे बना कर सेवन किया। ईश्वर की कृपा से नौ मास बाद मेरी गोद में बालक खेलने लगा। इसके पश्चात् मैंने जिस सन्तान हीन बहन को इसका सेवन कराया उसी की आशा पूरी हुई। अब मैं इस नुस्खे को सूची-पत्र द्वारा प्रकाशित कर रही हूं ताकि मेरी निराश बहनों की आशा पूर्ण हो।

औषधि तन्त्र ये हैं—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नैपाल गवर्नमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारी दक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम से कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कढियारी सफेद की जड़ (यानी सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घण्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें। इसके सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति —गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातःकाल और सायंकाल एक एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट — औषधि तन्त्र के अंदर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अंदर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

मेरी सन्तान हीन बहिनों,

आप इसे बे गुण औषधि न समझें। यदि आप बच्चे की माता बनना चाहती हैं, तो इसे बनाकर जरूर सेवन करें। मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि इसके सेवन से आपकी अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। यदि कोई बहन इस औषधि को मेरे हाथ से ही बनवाना चाहें तो पत्र द्वारा सूचित करें। मैं उन्हें औषधि तैयार करके भेज दूंगी। एक बहिन की औषधि पर पांच रुपये बारह आने। दो बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने और तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आना खर्च आता है। महसूल डाक वगैरह बारह आने इससे अलग है।

नोट — जिस बहिन को मेरे पर विश्वास न हो वह मुझे दवा के लिए हरगिज न लिखें।

रतनबाई जैन (४४) सदर बाजार थाना रोड, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Raghu

FOR ECONOMY & PERFECT PERFORMANCE

FANS

A.C.
RAGHU: SAMIR

D.C.
HANSA: SHITAL (PEDESTAL)

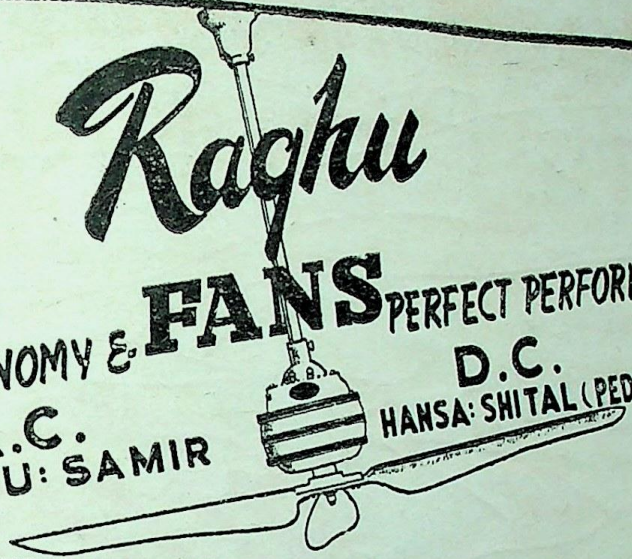

(ON APPROVED LIST OF INDUSTRY AND SUPPLY DEPTT.)

REW RAGHU ENGINEERING WORKS LTD. REW

5, DARYA GUNJ, DELHI.

मुफ्त ! मुफ्त !!

सबको मुफ्त

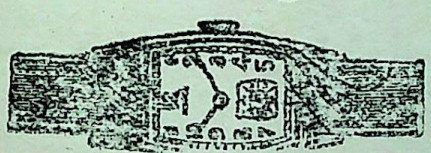

अमरीकन फाउन्टपेन, शिस रिस्टवाचें, सेफ्टीरेजर ब्लेडों समेत। सिगरेट लाइटर, मर्दाने और जनाने चप्पल, कन्वेस के जूते अमरीकन रूमाल, धूप में लगाने का चश्मा, जनाना हैंडबेग, सिगरेट रखने का केस और कितनी अन्य चीजें, जिन्हें आप एक अर्से से खरीदना चाहते हैं आपको मुफ्त मिल सकती हैं। लिखिये कि आप क्या चाहते हैं ?

फ्रेंच गोल्ड सप्लाई कम्पनी

(M. H. D.) नं. ४५ देहली।

मनोरंजन

विज्ञापन का सर्वश्रेष्ठ साधन है

क्योंकि

यह भारत के प्रत्येक प्रान्त में जाता है।

प्रिन्टर पब्लिशर श्री दुर्गाप्रसाद शर्मा द्वारा, अर्जुन प्रेस देहली से छप कर प्रकाशित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० — डी० १७३

लम्बी यात्रायों में

डनलप जायण्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन सेवक

★ जुलाई १९४९ ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harid

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वायु मार्ग द्वारा

शीघ्रता
से
ताज़े
समाचार

वीर
अर्जुन

विज्ञापन का
अनोखा
साधन

उत्तरीय भारत का सर्वोत्तम दैनिक व सचित्र साप्ताहिक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख संचारक कम्पनी लि०

का

सब काम सदैव की भांति चालू है।

व्यापारियों को किसी भी प्रकार का सन्देह न करना चाहिये।

हमारी पेटेन्ट और सरकार से रजिस्टर्ड

सुधासिंधु बालसुधा

दद्रुगज केशरी इत्यादि

औषधियों के नकल करने वाले तथा नकली माल बेचने वाले सावधान हो जाओ!

हमने नकली माल बेचने और बनाने वालों की पकड़ के लिए जासूस कायम कर दिये हैं। नकली माल बनाते और बेचते पकड़े जाने पर गिरफ्तार हो कर दण्ड के भागी होंगे।

हमारे प्रत्येक एजेन्ट को

नकली माल बनाने और बेचने वालों को गिरफ़्तार कराना चाहिए।

सुख संचारक कम्पनी लिमिटेड मथुरा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

T. B. टी० बी० तपेदिक और पुराने बुखारों की मशहूर दवा

'जबरी' पर भारत के कोने-कोने से प्रशंसापत्रों की झड़ी

१ लाला काशीप्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहबाद) २ बा० मुन्नालाल स्टोर कीपर सिमभाली शूगर मिल पो० बक्सर जिला मेरठ। ३ बा० रामसिंह घर नं० ६१ रीठा मण्डी देहरादून। ४ श्री तोसल हुसेन रईस मुकाम मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जिला फैजाबाद ५ डा० ठाकुरसिंह नेपाली मुकाम कढैया पोस्ट हरलखी जिला दरभंगा। ६ श्री राव खलावन राम भीखूराम पो० बाजार गुसांई जिला आजमगढ़। ७ श्री लीलधर कापरी आर० सी० वार्ड सेनोटोरियम भवाली (नैनीताल)। ८ श्री लीलाधर चौधरी लायब्रेरियन काटन मार्केट नागपुर। ९ पं० चन्द्रमणि पाण्डे मु० कुरेहरा पोस्ट मेहनाजपुर (आजमगढ़) १० श्री नत्थूसिंह सोलका कम्पाउण्डर गवर्नमेंट होसपिटल महेश्वर (इन्दौर)। आदि आदि सैकड़ों सज्जनों का कहना है कि यथार्थ में 'जबरी' दवा नहीं बल्कि रोगी को काल के गाल से बचाने वाली ईश्वरीय शक्ति है। ऊपर जिन सज्जनों के पूरे पते दिये गये हैं आप जिस से भी चाहें पूछ कर तसल्ली कर सकते हैं। फिर हमने तो परीक्षार्थ दस दिन का नमूना भी रख दिया है जिसमें तसल्ली हो सके। यदि आप सब तरफ से निराश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार 'जबरी' की परीक्षा अवश्य करें।

T. B. टी. बी तपेदिक व पुराने ज्वर के हताश रोगियो,

अब भी समझो अन्यथा फिर वही कहावत होगी—'अब पछताय होत है क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत' इस लिए तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। सैकड़ों हकीम, डाक्टर, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं, और तार द्वारा आर्डर देते हैं। तार आदि के लिए हमारा पता केवल 'जबरी जगाधरी' (JABRI Jagadhri) लिख देना ही काफी है। तार से यदि आर्डर दें तो अपना पूरा पता लिखें। मूल्य इस प्रकार है—

'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ाने के सोना, मोती अभ्रक आदि की मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं। मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु० नमूना दस दिन के लिए २०) रु०। 'जबरी' नं० २ जिसमें मूल्यवान जड़ी-बूटियां हैं, पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग। आर्डर में पत्र का हवाला तथा नम्बर पता साफ-साफ लिखें। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिए मूल्य आर्डर के साथ भेजें। यदि पार्सल हवाई डाक (Air Mail) से मंगाना हो तो २) खर्च अधिक भेजें।

पता—रायसाहब के० एल० एन्ड सन्स

रईस एण्ड बैंकर्स (M) जगाधरी (E. P.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मबलिदान और तपस्या से उस स्नेह-
मयी देवी ने बन्दी-गृह जैसे घर को
भी मन्दिर में परिवर्तित
कर दिया ।

भूमरेड्डी की महान् सामाजिक कृति

मन्दिर

कलाकार— * शान्ता आप्टे * साहू मोदक * जयमाला * विनायक * साल्वी इत्यादि

निर्देशन	कहानी व संवाद	गीत	संगीत
स्वर्गीय विनायक और दिनकर डी० पाटिल	वी० एस० खाण्डेकर	नरेन्द्र शर्मा	वसन्त देसाई

प्रथम जुलाई से दिल्ली के चार सिनेमाओं में प्रदर्शित हो रही है—

कुमार, शिवोली, इम्पीरियल, एक्सलसियर

कहानी, निर्देशन और संगीत की दृष्टि से भारतीय फिल्मोद्योग में
नया मध्यार स्थापित करने वाली

शान्तिलोक चित्र की कलाकृति

गोपीनाथ

निर्देशन और कहानी	संगीत
महेश कोशल	निनू मजूमदार

कलाकार— * राजकपूर * तृप्ति मित्रा * लतिका * अनवरी * बेबी जुबेदा इत्यादि

पर्ल पिक्चर्स लिमेटिड, ११ एलफिन्सटन सर्कल, फोर्ट, बम्बई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harid

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय वर्ष
संख्या १०

मनोरंजन
दिल्ली

जुलाई
१९४९

व्यवस्थापक
श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

सम्पादक
श्री चिरंजीत

इस अंक में

कहानी

टर्मिनस	श्री राजेन्द्रसिंह बेदी
"..." का न्याय	श्री रांबेले
वे दोनों	श्री राजेन्द्र यादव
गोपीनाथ	श्री महेश कौल

एकांकी

कलाकार की मृत्यु	श्री शालिग्राम मिश्र

लेख

कांग्रेस में वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास (७)	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति
भारत का पश्चिम पर प्रभाव	श्री हरिदत्त वेदालंकार
हिंदी के दैनिक पत्र	श्री 'शिरीष'

गीत

श्रीमती कमला चौधरी, श्री घनश्याम अस्थाना, श्री 'नीरव' एम० ए०, श्री रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'।

विशेष स्तम्भ

हास-परिहास	३७	सलोनी-दुनिया
चित्रलोक	४६	फुलझड़ियां
बाल-मनोरंजन	५८	नव प्रकाशन

मूल्य आठ आना

वार्षिक मूल्य ५॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

टरमिनस

श्री राजेन्द्रसिंह बेदी

जीवन से उकताकर प्यार का भूखा, निराश और पराजित जयराम वर्षों से छोड़े हुए अपने गांव की ओर उसी तरह वापस जा रहा था, जैसे गाड़ी 'टरमिनस' स्टेशन की ओर जाती है और वहां रुक जाती है; लेकिन ...

जेजों—अर्थात् जेजों दुआबा — इस रेलवे-लाइन का अन्तिम स्टेशन था और गाड़ी उसकी ओर बेतहाशा भागी जा रही थी। जिस तरह बुझने से पहिले अग्नि-शिखा में एक प्रचण्ड लपक पैदा होती है, उसी तरह गाड़ी की गति में भी एक लपक-सी पैदा हो गई थी। दायें और बायें शिवालक पर्वतमाला दो लम्बी-लम्बी बांहों के आकार में खुल रही थीं और इस विशाल गोदी के अन्दर छोटे-छोटे टीले, गैंग-हट, आमों के झुण्ड और झोपड़ियां गाड़ी के अन्तिम डिब्बे को पकड़ने के लिये पीछे की ओर भाग रही थीं। दूर कहीं पिट्ठू और पशु गोफे में पड़े हुए कंकड़ों की भांति एक बड़े वृत्त में घूमते हुए दिखाई देते थे।

इस समय वर्षा थमी हुई थी, लेकिन कचनार और आम के वृक्षों की काली छाल से यह अनुमान होता था कि दिन और रात के चार पहरों में छाजों में पानी बरस गया है। सूर्य पावस की सन्ध्या के रक्तिम क्षितिज के बीच एक मेघ-खण्ड से उलझा हुआ झींपता दिखाई देता था। एक लम्बी बरसात के बाद उसका यह प्रत्यक्ष लावण्यपूर्ण सम्भ्रम कुछ उदासी-सी उत्पन्न कर रहा था और धरती पर जगह-जगह बिखरा हुआ पानी यों दिखाई देता था, मानों कोई विशालकाय दर्पण आकाश से धरती पर गिर कर खण्ड-खण्ड हो गया हो।

कभी अकस्मात् यों अनुभव होने, लगता जैसे बाहर दृष्टिगोचर होने वाला प्रत्येक दृश्य हमारे किसी आन्तरिक चित्र का प्रतिबिम्ब है। जयराम उदास था और उसे समस्त वातावरण विषादपूर्ण दिखाई देता था। वह गाड़ी में खिड़की के पास बैठा, उद्विग्नता से नथुनों के बाल उखाड़ते हुए जेजों (दुआबा) टरमिनस की प्रतीक्षा कर रहा था। कभी वह पीड़ा से अपनी सीट पर उछल पड़ता, कभी सामने के पर्वत-शृङ्गों पर धुंधली-सी दिखाई देने वाली बरफ को देख कर उसकी

* रेलवे की किसी लाइन का अन्तिम स्टेशन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उँगलियां उसके श्वेत बालों में धंस जातीं और वह सोचता—जिस तरह गाड़ी एक लपक के साथ अपने अन्तिम स्थान की ओर भागी जा रही है, शायद मैं भी अपने स्थान की ओर लपका जा रहा हूँ।

एकाएक नथुनों के बाल उखाड़ने से अधिक आवश्यक कार्य का उसे स्मरण हो आया। उसने सामने की सीट पर पड़ी हुई एक बुढ़िया को झंझोड़ते हुए कहा, "भोली माई, उठ, देख तेरा जेजों आ रहा है।"

माई हड़बड़ा कर उठ बैठी। उसके झुर्रीदार मुख-मंडल की कांति, जो चालीस वर्षीय वैधव्य और सन्तान-हीनता के कारण — एक लम्बे अर्थहीन दुःस्वप्न के कारण मन्द हो गई थी, फिर प्रदीप्त हो उठी और वह बुढ़िया नन्हीं बच्ची की तरह प्रसन्न होकर बोली, "आ गया जेजों! बस यहां से सात कोस परे हैं मेरी बेटी और दामाद—मेरी सियाराम की जोड़ी!"

बाहर से एक नन्हीं-सी कंकरी उड़ी और जयराम की आँख में पड़ गई। कुछ समय के लिये आँखें अन्दर की ओर सिमट गईं, पुतलियां किंचित फैल गईं, और यथार्थ की किरकिराहट के बावजूद उसे अतीत के डरावने स्वप्न दिखाई दिये। पीले चेहरे वाले, परिश्रमी पराजय-भोगी जयराम ने अपने अतीत में झांका तो उसे अपने नीरस पचास वर्षों में एक जीवन-प्रद क्षण दिखाई दिया। उस समय जब कि जयराम जीवन की बीसवीं पतझर देख रहा था कि कर्त्तारपुर स्टेशन के प्याऊ पर एक लड़की मुस्कराई और ··· कई दिन तक जयराम का विवेक प्रेम के गोफे में पड़ा रहा···।

कंकरी के निकलते ही एक धक्का-सा लगा और पास के कोलाहल से पता चला कि गाड़ी जेजों (दुआबा) टरमिनस में प्रविष्ट हो कर खड़ी हो गई है। भोली माई और उसके साथ दूसरे मुसाफिर उतरे और बाहर निकलने के लिये फाटक की ओर बढ़े। उस समय सन्ध्या क्षणों की सूली पर तड़प रही थी और नैश कालिमा की लम्बी लम्बी लटें ऊंचे-ऊंचे खम्भों पुल, पैर शैड की सहायता से दिन के वक्षस्थल पर बिखर थीं। जयराम भी गम और वस्त्रों की गठड़ियां उठाये फाटक की ओर बढ़ा, लेकिन रुक गया। उस समय ठठर गांव जाने का उसे कोई साधन दिखाई नहीं देता था।

एकाएक जयराम के मन में एक ऐसा प्रश्न जागा, जो उसने यात्रा की हलचल में सोचा ही नहीं था। उसे ठठर गांव में अब पहिचानेगा कौन? वह खुटों के एक बड़े वंश से सम्बन्धित था, परन्तु खुद लोग कुछ तो जेजों और कुछ होशियारपुर और उसके आस-पास बस गये थे और अपने वृक्षों के कारण जेजों में उनकी विशेष प्रसिद्धि थी। ठठर गांव में केवल एक ताया बापू की खबर मिलती थी, लेकिन वह तो जयराम के बचपन में ही वृद्धावस्था और झुकी हुई कमर से यों प्रतीत होते थे, जैसे श्मशान की राह ढूंढ रहे हों। इस समय तक उनका जीवित होना एक असम्भव-सी बात थी। उनके चार-पांच लड़कियां थीं, जो एक साथ विवाह के पश्चात् सन्तोषगढ़, ऊना, गढ़शंकर और उसके आस-पास इस तरह बिखर गई थीं, जैसे आतिशबाजी के अनार की चिन्गारियां फूटते ही चारों ओर बिखर जाती हैं और जयराम प्लेटफार्म पर पड़े हुए एक बैंच की ओर लौटा और हताश-सा होकर इधर-उधर देखने लगा।

जेजों एक खासा बड़ा स्टेशन था। कभी जेजों एक बहुत बड़ी मण्डी हुआ करती थी, जिसके लिये स्टेशन पर एक बहुत बड़ा मालगोदाम बनवाया गया था, जो अब सूना पड़ा था। लाइनों पर बिछाने के लिये पत्थर तो अभी तक भेजे जाते थे। साइडिंग में एक जगह विशालकाय क्रेन (भारी वस्तुओं को उठाने का एक लौह-यन्त्र) एकाकी और बेकार खड़ा दूर से ऐसा लगता था, जैसे कोई मुर्ग है, जिसे भूनने के लिये उसके पङ्ख नोच लिये गये हों। इस क्रेन से परे हट कर एक-दो मालगाड़ियों की तश्तरियां-सी रक्खी थीं, जिनमें वर्षा के गँदले पानी और पत्थरों का सालन पड़ा था। साइडिंग के उत्तर की ओर लाइन पर कुछ 'ठोकरें' थीं। एक ठोकर औरों की अपेक्षा काफी दूर पर थी। यह दूर परी केवल इसलिये बनाई गई थी कि इंजिन को शट करने में आसानी रहे। या अगर गाड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवेग में आगे निकल जाय, तो उसे पटरी पर से उतरने या टक्कर का खतरा न रहे। लोहे की ये बड़ी-बड़ी सुदृढ़ 'ठोकरें' जयराम को भयभीत करने लगीं। जयराम ने सोचा—काश, ये लाइनें एकदम इन ठोकरों पर रुक जाने की बजाय सामने दिखाई देने वाली पहाड़ी में गुम हो जातीं!

जयराम ने उठ कर अपने जराजीर्ण शरीर को एक जीर्णशीर्ण और पैबन्द लगे कम्बल में अच्छी तरह से लपेटा और एक अत्यन्त संदिग्ध ढंग से स्टेशन के बङ्गले के साथ-साथ घूमने लगा। जङ्गले के समीप अन्धे कुएँ पर पीपल का एक तना आगे बढ़ा हुआ था और एक लंगूर अपनी लम्बी-सी पूंछ को तने में लपेट कर कुएँ में औंधा लटका हुआ था और उसके काले-कलूटे चेहरे की राख में भूरी आंखों के दो कोयले दमक रहे थे। घाटियों के पीछे पानी बड़े जोर-शोर से बह रहा था और उस बरसाती नाले के शोर में जेजों के काबे का सब शोर डूबा जा रहा था। स्टेशन का वातावरण मौन और विषादपूर्ण था। जिधर से जयराम आया था, उधर लाइनों का एक जाल-सा बिछा हुआ था। इस बड़े जंक्शन-स्टेशन पर ही कम से कम इतनी लाइनें थीं, जितनी जयराम के शरीर में शिरायें और धमनियां। और वहां सैकड़ों ही खलासी, कुली, याडमैन थे, जो आती-जाती गाड़ियों के बीच के समय में बेखटके, मतलब-बेमतलब घूमा करते थे। कभी-कभार कोई इंजन अकस्मात् दनदनाता हुआ, 'शैड' के नरक से सुरमा उड़ाता हुआ मनु के किसी वंशज को झपट में ले लेता; लेकिन सबेरा होने से पहिले ही उसका स्थान पुर करने के लिये शतरूपा की कोई कन्या एक और बच्चा जन देती। और जयराम ने सोचा—यहां जेजों की किसी लाइन पर कोई बेखटके हताश प्रेमी की तरह सिर के नीचे पत्थर रख कर सो रहे!

जब से जयराम आया था, किसी ने उससे टिकिट भी तो नहीं पूछा था। एक सज्जन, जो चाल-ढाल से स्टेशन मास्टर और कपड़ों से नाई मालूम होते थे, कुर्ता और तहमद पहिने, हाथ में नारियल का हुक्का सम्हाले, खड़ाऊँ से खट-खट करते एक टूटे हुए लैम्प के खम्भे के समीप खड़े हो कर कांटे वालों को बेतहाशा बुरा-भला कह रहे थे। कांटे वाले यथापूर्व गालियों से निरपेक्ष, दूर खड़े लाल और हरी बत्तियों की परेड कर रहे थे। स्टेशन के कर्मचारियों ने स्टेशन पर कभी वर्दी पहिनने की भी आवश्यकता अनुभव नहीं की थी। कहीं वर्ष में एकाध बार ट्रैफिक-इन्सपैक्टर आ निकलता, तो उसकी 'पत्ता' चुपके से उसके हाथ में थमा दी जाती और फिर उसे धोती और कुरते में ही दफ्तरी नील सर्ज दिखाई देने लगती। बहुत होता तो वह बड़ी कृपालुता से स्टेशन मास्टर से कह देता, "मर जाओगे, माधोलाल, मर जाओगे सर्दी में तुम लोग!" इन्सपैक्टर पैसों की गर्मी और स्टेशन-मास्टर जेजों की सर्दी से थोड़ा-बहुत परिचित हो गये थे। "मर जाओगे सर्दी में तुम लोग" का उत्तर एक संक्षिप्त सी 'हूं' के सिवाय और कुछ न होता।

जयराम घूम-फिर कर फिर अन्धे कुएँ के पास जा खड़ा हुआ और उसके तल में एकत्रित टूटे हुए टकनों, बर्तनों, पीपल के पत्तों और पत्थरों को देखने लगा। लंगूर इस समय तक कहीं भाग गया था। उसकी जगह कुछेक छोटे-छोटे बन्दर कलाबाजियां लगाने लगे। एक नन्हा-सा बन्दर अपनी मां के पेट के साथ चिपटा हुआ नीचे मानों काल को देख कर मुंह चिढ़ा रहा था। जयराम ने कुएँ में छलाँग लगा कर जीवन के निकृष्ट नाटक को समाप्त करने की ठानी, परन्तु वह इस 'शुभकार्य' के लिये बहुत बूढ़ा हो चुका था। जैसे ऊपर बंदरिया का बच्चा मौत का मुंह चिढ़ा रहा था, उसी तरह मौत जयराम का मुंह चिढ़ा रही थी।

दूर घाटियों में कुछ रोशनियां एक ओर को जाती हुई दिखाई दीं। जयराम इस तीस वर्ष के अरसे में बहुत

श्री राजेन्द्रसिंह बेदी 'उर्दू' के बिनेचुने अग्रणी कहानीकारों में से हैं और प्रस्तुत कहानी उनकी श्रेष्ठतम कहानियों में से है। 'तुलादान' के नाम से उनकी कहानियों का एक संग्रह हिन्दी में छप चुका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ भूल चुका था, परन्तु उसे यह दृश्य कुछ परिचित-सा जान पड़ा। जङ्गल से परे हटते हुए वह स्टेशन-मास्टर के निकट पहुँच कर बोला, "ये रोशनियां कैसी हैं, बाबू?"

स्टेशन-मास्टर ने मूछों का एक बड़ा-सा 'फिल्टर' उठाया और भद्दी-सी आवाज में कहा, "ये लोग गांव जा रहे हैं।"

"कौन गांव?"

"यही ठठर, सन्तोषगढ़, बगर···।"

जयराम चुप हो गया। इस खयाल से उसे कुछ सान्त्वना मिली कि जेजों (दुआबे) से परे भी हजारों पगडंडियां शिवालक-पर्वतमाला के इर्द-गिर्द बल खाती चली जाती हैं। जिस प्रकार आवागमन के पहिले जिज्ञासु को मृत्यु के द्वार में से झांकने पर अपने ही सैकड़ों चित्र दिखाई दिये थे और जन्म-मरण उसे केवल एक खेल-सा नजर आया था, उसी प्रकार पगडंडियों को देख कर तन-मन में कँपकपी पैदा कर देने वाली लाइनों की ठोकरें जयराम के लिये निरर्थक हो गई थीं। जेजों एक ब्रांच-लाइन का टरमिनस (अन्तिम स्टेशन) हो तो हो, परन्तु मानवीय पद-चिह्नों से बनी हुई पगडंडियों का सम सि-स्थल नहीं।

स्टेशन-मास्टर ने फिर मूंछें उठाईं और घृणापूर्ण ढङ्ग से कहा, "तुम कौन हो?"

जयराम ने एक ठंढी सांस भरी और कहा, 'मैं कौन हूं? मैं एक मुसाफिर हूँ, बाबा।"

'मुसाफिर' शब्द हम पराजयवादियों के शब्दकोष में एक विशेष अर्थ रखता है। एक विशेष ढङ्ग से 'मुसाफिर' कहने से कहने और सुनने वाले एक ही लोक में पहुँच जाते हैं—ऐसे लोक में जहां टिकिट पूछने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। इस अत्यधिक भावुकता-पूर्ण और कई विचार-परम्पराओं की पृष्ठभूमि वाले शब्द से बातचीत और ही रूप ले लेती है। स्टेशन-मास्टर, जिसके परदादा को लकवा मार गया था, कुछ तुतलाया, अपना हाथ जांघ पर मारा और फिर एक लम्बी-ठंडी सांस भरने के बाद इंजिन की तरह भाप छोड़ते हुए बोला, "हो बाबा, हर शै मुसाफिर, हर चीज राही!" और फिर टरमिनस स्टेशन वालों के लिये 'मुसाफिर' शब्द की एक विशेष व्यापकता और मर्यादा है। स्टेशन-मास्टर ने अपनी बात को जारी रखते हुए कविता की एक घिसी-पिटी पंक्ति दोहरायी; "अपनी-अपनी बोलियां सब बोल कर उड़ जांयगे।" और यह पंक्ति स्टेशन-मास्टर ने किसी कवि के ग्रन्थ की बजाय, किसी लारी के एक तख्ते पर ईश्वर के हिन्दू, सिख और इस्लामी नामों के बीचों-बीच आबद्ध-सुरक्षित की हुई पढ़ी थी, जो शराबी ड्राइवर की प्रत्येक भूल और ठर्रे का निराकरण थी। एकाएक स्टेशन-मास्टर को बोध हुआ कि इस पंक्ति के पढ़ने से वह एकदम अपने प्रभाव-क्षेत्र से निकल कर तुच्छ लारियों और पच्चियों की दुनिया में चला गया है। उसने बात का रुख बदलते हुए किसी सन्त कवि का एक पद पढ़ा और कहा, "हो बाबा, यह दुनिया मुसाफिरखाना है, हरेक ने आना-जाना है, यह संसार मिथ्या माया है, कोई अपना है न पराया है!"

इस बात के बाद जयराम ने अपने आपको स्टेशन-मास्टर के समीप अनुभव किया और वह लाठी टेक कर उसके पास बैठ गया। धरती पर कुछ देर तिनके से उल्टे-सीधे चित्र बनाने के बाद सामान्य लोकाचार प्रारम्भ हुआ। स्टेशन-मास्टर ने पूछा, "आपका दौलतखाना कहां है?"

जयराम ने मुस्कराते हुए अपनी कीड़ों लगी बत्तीसी दिखाई और विनयपूर्वक उत्तर दिया, "मेरा गरीबखाना ठठर है। और आपका·····?"

"मैं हमीरपुरिया ठाकुर हूँ।"

'दास' के स्थान पर 'मैं' शब्द आ जाने से जयराम को अचम्भा हुआ। लेकिन स्टेशन मास्टर सच्चा था। ठाकुर 'दास' नहीं होते। यह तो बहुत किया कि 'मैं' हो गये, नहीं तो सामान्यतया वे अपने लिये बहुवाचक 'हम' के सिवा कोई और सर्वनाम प्रयोग ही नहीं करते। जयराम कुछ झेंप गया। एकाएक उसे ध्यान आया कि ठाकुर ठठर गांव के जमाई भी हैं और अगर आवश्यकता अपने असंगतपन के कारण गधे जैसे हेय पशु को भी अपना बाप बना लेती है, तो एक प्रकार से स्टेशन-मास्टर की अपने जमाई के रूप में कल्पना कर लेने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन सा पाप होता है! जयराम ने खीसें निपोरते हुए बिरौरी के ढङ्ग पर कहा, "हो ठाकुर, ठाकुरों के हां हमारे ठठर गांव की भी एक लड़की है।"

"हां, हां," स्टेशन-मास्टर ने मूंछों पर ताव देते हुए कहा—'मेरे बड़े भाई की स्त्री ठठर की रहने वाली है।"

जयराम लाठी छोड़ कर खड़ा हो गया और कम्बल में अपने बाजू फैला दिये और यूं दिखाई देने लगा, जैसे कोई गिद्ध उड़ान भरने लगा हो। आंखों को सुकेड़ कर उसने एक बार फिर स्टेशन-मास्टर की ओर ध्यानपूर्वक देखा, बोला, "तुम किदारे के छोटे भाई हो! बिज्जू बावरे! ··· हे-हे-हे ···!" और जयराम फिर हंसने लगा।

स्टेशन-मास्टर ने ऐसे इधर-उधर देखा, जैसे कोई अचानक नङ्गा हो जाने पर इधर-उधर देखता है। एक खलासी समीप ही खड़ा इस विचित्र नाम को सुन कर मुस्करा रहा था। स्टेशन मास्टर ने राजदारी में जयराम को आंख मारी और सिर को एक झटका दिया, मानों कह रहा हो, "हूं तो बिज्जू बावरा, लेकिन यार, चुप रहो, यहां जरा इज्जत बनी हुई है और माधोलाल के नाम के सिवाय मुझ कोई और किसी नाम से नहीं जानता।"

जयराम ने अपने दोनों हाथों में स्टेशन-मास्टर का हाथ भींच लिया और फिर अपनी बाहें उसके गले में डाल दीं और अपेक्षाकृत ऊंचे स्वर में कहा, 'छोड़ो यार, लोगों के लिए तुम होगे माधो-वाधो, पर जयराम खुद के लिए तुम बिज्जू बावरे हो। उफ! कितने समय बाद तुम्हें पाया है। याद है यह नाम हमने भारतवर्ष के एक प्रसिद्ध गवैया के नाम पर तुम्हें दिया था। तुमने चिन्तपुरनी टीकरे पर बहुत ही भद्दे स्वर में मालकोश की धुन अलापी थी, तभी से ···!"

स्टेशन-मास्टर को सब कुछ याद था, परन्तु वह उसे भूल जाना ही उचित समझता था। तभी एक बन्दर ने छलांग लगाई और माधोलाल स्टेशन-मास्टर के कंधे पर आ बैठा। माधोलाल ने उधर ध्यान दिये बिना किंचित् भौं चढ़ाई और बन्दर को एक ओर हटा दिया—मानों चिड़िया की बीट उसके कुर्ते पर पड़ गई हो।

जयराम बोला, "बिज्जू बावरे, तुम्हारे यहां कितने बन्दर हैं?"

'कभी बहुत थे, अब तो दिनोंदिन कम होते जा रहे हैं," माधोलाल ने उत्तर दिया और फिर महत्व-पूर्ण जानकारी से भरी बात सुनाने का गर्व अनुभव करते हुए बोला, "यह बन्दर बहुत ही उपयोगी पशु है। सुनते हैं, कोई डाक्टर वार्नाफ है, जिसके परीक्षणों के लिये यहां के बन्दर पकड़ कर ले जाये जा रहे हैं।"

"डाक्टर वार्नाफ?"

"हां!"

"कोई विलायती डाक्टर है? क्या करता है वह बन्दरों को?"

माधोलाल में ऊंट जैसी विद्वेष-वृत्ति थी। उसने उसी दम 'बिज्जू बावरे' का बदला चुकाते हुए कहा, "जब कोई व्यक्ति तुम सा बूढ़ा हो जाता है और किसी योग्य नहीं रहता, तो उसमें बन्दरों की गिल्टियां डाल देते हैं और फिर वह नये सिरे से जवान हो जाता है।"

शायद जयराम के मस्तिष्क में शहरी अखबारों में छपने वाला कोई विज्ञापन चक्कर लगाने लगा। "यह साइंस क्या वाही-तबाही है!" जयराम ने कहा और मुस्करा दिया। पुरुष अपनी शक्ति के सम्बन्ध में कोई ऐसी-वैसी बात नहीं करता, इसलिये जयराम ने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा, "इन सफेद बालों से बुड्ढा न समझ लेना, बिज्जू बावरे!"

और दोनों देर तक हँसते रहे। जयराम बोला, "इन नई गिल्टियों से बन्दर की-सी स्फूर्ति भी पैदा हो जाती होगी!"

"यह तो नहीं कह सकते," माधोलाल बोला, "लेकिन भाई, यह परीक्षण खूब है डाक्टर वार्नाफ का! उन्हें अपने परीक्षण के लिये बन्दर भी हरिद्वार, चिन्तपुरनी आदि से ही मिलते हैं। ये लोग शीशे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना मुँह नहीं देखने, नहीं तो इन्हें हिन्दुस्तान का रुख न करना पड़े। अब कुछ वर्षों से ये बन्दर पकड़े जा रहे हैं। स्टेशन के चार बाबुओं, तीन कुलियों, पांच खलासियों और जेलों के पुजारियों ने एक स्मरण-पत्र गवनर जनरल को तार द्वार भेजा है·····। लेकिन मित्र, यह तो मैं भूल ही गया था, मैंने तुम्हें पहिचाना नहीं। शक्ल बहुत बदली हुई मालूम होती है। कहीं खुफिया पुलिस में तो नहीं·····?"

"हो-हो-हो···।" जयराम ने अपने विशिष्ट ढङ्ग से हँसते हुए कहा, "मैं आत खुद का बेटा हूँ—मँझला बेटा। पहिचाना? जिसका बड़ा और छोटा भाई दोनों पागलखाने में हैं।"

इस साधारण से सकेत से माधोलाल को सब कुछ याद आ गया। हमारी दुनिया बुद्धिमानों की अपेक्षा पागलों को अधिक याद रखती है और जीवित लोगों की अपेक्षा मरे हुओं के अपराध तुरन्त क्षमा कर देती है। माधोलाला बोला, "मैं, आतू खुद के सब बेटों को अच्छी तरह से जानता हूँ। बचपन में हमने ऐसी शरारतें की हैं, जिनका स्मरण होते ही लज्जा से गदन झुक जाती है। परन्तु वह बचपना था न आखिर। कहो, तुम इतने दिन रहे किधर?"

इस समय अन्धकार पूर्णरूप से अपना साम्राज्य स्थापित कर चुका था। आकाश पर सितारे और शैड में चमगादड़ एक दूसरे का पीछा करते हुए थक चुके थे और इमली के वृक्ष पर अपने परों में या लोहे के एक गाडर के साथ लटक गये थे। ठठर जाने वाली रोशनियां आकाशगङ्गा-सी बन कर रह गई थीं। जयराम ने सदव की भांति अपनी ठाढ़ी थामते हुए कहा, "मेरी क्या पूछते हो बाबा, बहुत-से खेल खेल हैं, बहुत चाटें खाई हैं, अब अन्त में मैं एक बड़े वकील का मुन्शी था। उससे पहिले कचहरी में रीडर था। कानून तो मेरी उँगलियों की पोरों में है···।"

"यह बात है," माधोलाल ने मिलाने के लिये हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा, "मेरा एक सम्बन्धी ३०२ में धर लिया गया है। आतू···क्या नाम है तुम्हारा?"

"जयराम।"

"जयराम, अच्छा तुम अपनी कह लो, फिर उस मुकदमे की कहूँगा।"

"नहीं, नहीं, तुम कहो," जयराम ने माधो को थपकते हुए कहा और फिर स्वयं बोलने लगा, "किसी के सामने अपनी मूँछ नहीं नीचे होने दी। यह अपना धर्म नहीं, और नहीं तो आज एक पूरे जिले का मजिस्ट्रेट होता।"

माधोलाल ने पलट कर अपने सामने बाह्यतः क्षुद्र दीख रहे व्यक्ति को देखा, जो अपनी लाठी से धरती पर दायरे बना रहा था और अविराम तीखी दृष्टि से उसे घूर रहा था। उस दृष्टि का ताब न लाते हुए माधोलाल ने मुँह दूसरी ओर फेर लिया। शक्ल से क्षुद्र दीखने वाले इस आदमी की वाक्शैली में कुछ ऐसी निश्छलता थी कि कोई प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। जयराम ने एक ठण्डी आह भरी और नाक की रैंट को कम्बल के एक कोने से पोंछते हुए कहने लगा, "लादी का बैल जब भागेगा, घूम-फिर कर लादी के पास ही आ जायेगा। बड़े मजिस्ट्रेट से लड़ाई हुई, तो रीडरी छोड़ वकील का मुन्शी हो गया। यह मेरा अन्तिम धंधा है। इससे पहिले बीस-एक धंधे कर चुका हूँ।"

माधोलाल ने बात काटते हुए कहा, "तुम्हें भूख तो नहीं लगी होगी, जयराम?"

जयराम ने अनायास ही पेट को सहलाया, बोला, "हां, लगी तो है। भूख से नाभि के नीचे खलबली मची हुई है और डकार आ रहे हैं, जैसे बरसों से खा लिया हो।"

"अच्छा, तो चलते हैं, उठो!" और अपने पूरबी खलासी को आवाज देते हुए माधोलाल ने कहा, "ए सुखोई, बन्दरिया के ननदोई!"

एक काला-कलूटा आदमी, जिसकी आंखें मशाल की भांति प्रज्वलित थीं और यों मालूम होता था, जैसे कुछ देर पहले अन्धे कुएं पर वहीं लटक रहा था—और यों भी लंगूर बंदरिया का ननदोई होता है। सुखोई लैम्परूम से हाथ में मिट्टी के तेल और राख से लथपथ एक चीथड़ा लिये हुए आ खड़ा हुआ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोला, "हुकुम, सरकार !"

"देखो लाला की गठड़ियां उठा लो - फेंक दो उस चीथड़े को !"

सुखोई ने एक गठड़ी उठा ली। गम की गठड़ी माधोलाल ने—कम से कम वक्ती तौर पर — उठा ली थी और जयराम कुछ हल्का सा अनुभव करता हुआ साथ हो लिया। रास्ते में बहुत देर तक निस्तब्धता रही। कभी कभी अंधेरे में पत्थरों से ठोकर खाने पर 'ओह' का शब्द पैदा होता। आखिर जयराम बोला, "दरअसल मैं दुनिया से बहुत उचाट हूँ, बावरे, बहुत उचाट; इसीलिए मैं इधर भागा आया हूं। मैंने बहुत धन बरबाद किया है, लेकिन कुछ बन नहीं सका। मेरे स्वभाव में कुछेक ऐसे दोष उत्पन्न हो गये हैं जिन्हें मैं प्रयत्न करके भी दूर नहीं कर सका ···।"

माधोलाल सुनता गया; जयराम बोलता गया, "एक धर्म-ग्रन्थ में लिखा है—'अनगिनत जोबन हैं, जो प्रीति के बिना मुरझा जाते हैं।' दरअसल मेरी बुरी आदतों, मेरे असंयम, मेरे नशे, मेरी अस्थिर चित्तता— सब का कारण यही है कि मुझसे किसी ने प्रेम नहीं किया। मैं नहीं जानता—आज तक नहीं जानता कि प्रेम कहते किसे हैं। तीस साल पहले कर्त्तारपुर के स्टेशन पर एक नौजवान लड़की मेरी ओर देख कर मुस्कराई थी···। लेकिन छोड़ो इस बात को, बावरे, अब तक तो वह आठ-दस बच्चों की मां भी बन चुकी होगी और क्या पता, वह अब तक कर्त्तारपुर में हो भी या नहीं !"

उस अनन्त अन्धकार में कुछेक रेखायें उभरनी शुरू हुईं और सुखोई अपने आप एक जगह पर जा कर रुक गया। यह एक कमरा था—पत्थरों से बने हुए एक सुन्दर से सरकारी क्वार्टर का का निचला भाग—कमरे का परिशिष्ट भाग। उसका एक दरवाजा गायब था। दूसरा दरवाजा खुलने पर सील और मिट्टी की सड़ांद बाहर की ओर लपकी। इस कमरे का एक और दरवाजा स्टेशन-मास्टर के क्वार्टर में खुलता था और एक दरज में से प्रकाश की एक घुंडी हुई किरण दरवाजे के समीप मटियाले कणों को तैरता हुआ दिखा रही थी। दूसरी ओर से माधोलाल की युवा लड़कियों की गुटरगूं भी सुनाई दे रही थी। कमरे में एक ओर पयाल बिछी हुई थी। यहीं माधोलाल अपनी गाय बांधा करता था, जो इन दिनों ब्याने के लिए बाहर भेज दी गई थी। सुखोई ने इशारा पाकर जयराम का बिस्तर पयाल पर पटक दिया। जयराम बिस्तर खोलने लगा।

जयराम के हृदय में एक कसक पैदा हुई। काश, उसे भी घर का ही एक प्राणी समझा जाता और उधर किसी नरम-गरम कोने में स्थान दिया जाता! परन्तु महमान-नवाजी भी पद के तलवे चाटती है; और वह मौन रहा। थोड़ी देर बाद खाना और खाट आ गई। जयराम को अपनी अवस्था पर दया आने लगी। उसकी कल्पना में ऊंचाई थी, जिसने पयाल की दुनिया की रिक्तता पाट दी थी। माधोलाल ने भी खाना खाया और डकार लेते हुए बोला, "बस, दाल-फुल्का ही है···।" जिसका अभिप्राय था कि इस आयोजन की बार-बार चर्चा की जाये और अतिरिक्त धन्यवाद भी प्राप्त हो धन्यवाद और साधुवाद में जयराम ने कृपणता नहीं बरती। माधोलाल और भी विनीत हो कर बोला, "बस, तुम्हारे चरणों के प्रताप से परमात्मा ने सभी कुछ दिया है—दूध है, पूत है, भाग्यवान स्त्री है···!"

जयराम के लिए यह बात हर्षवर्द्धक नहीं हो सकती थी। उसे जीवन में ये सब नियामतें प्राप्त नहीं हुई थीं और जो प्राप्त हुई थीं वे सदैव साथ न रह सकीं वह दूसरों की खुशी से खुश नहीं हो सकता था। यह उसके बस का रोग नहीं था। उसने डिबिया निकाल कर कुछ फांका और अपनी विकलता के निकास के लिये बात का रुख बदलते हुए बोला, "कुछ रोजगार की कहो, बावरे !"

शायद अगर माधोलाल ऋण-ग्रस्त होता, तो उसके हृदय को एक प्रकार की खुशी अनुभव होती, लेकिन वह बोला, "मैं यहां ए-क्लास का स्टेशन-मास्टर हूँ।

(शेष पृष्ठ ५३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

श्रीमती कमला चौधरी

जग कहता है याद करूं मैं, मैंने कहो भुलाया कब ?
नयनों की चल - चित्रपटी से अंकित चित्र मिटाया कब ?

जग कहता मन्दिर - मस्जिद में जाकर मैं तुझको खोजूं,
मुल्ला और पुजारी द्वारा सन्देशा अपना भेजूं,
मेरी सांसों ने पल - छिन सन्देश नहीं पहुँचाया कब ?
जग कहता है याद करूं मैं, मैंने कहो भुलाया कब ?

जग कहता आजान लगाऊँ, मंत्र पढ़ूँ, आह्वान करूँ,
ले कर में करताल - मँजीरा तेरा वन्दन - गान करूं,
मैंने अपने प्राण - वाद्य पर वन्दन - गान न गाया कब ?
जग कहता है याद करूँ मैं, मैंने कहो भुलाया कब ?

जग कहता है परे यहां से दूर क्षितिज पर तुम रहते,
और अनेकों पंथ बता जग वाले चलने को कहते,
निज से परे कहीं भी मैंने कहो तुम्हें है पाया कब ?
जग कहता है याद करूँ मैं, मैंने कहो भुलाया कब ?

मेरे तन में तेरी आभा, संसृति है दृग - आंगन में,
प्राणों में मधु स्मृति है तेरी, चरण - चाप उर - धड़कन में,
तुम्हीं कहो, निर्मोही ! मैंने तुम को है बिसराया कब ?
जग कहता है याद करूं मैं, मैंने कहो भुलाया कब ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मरण —

कांग्रेस में वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास (७)

★

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

प्रस्तुत लेख में विद्वान् लेखक ने चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, डा० राजेन्द्रप्रसाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल और पं० जवाहरलाल नेहरू की वक्तृत्व-शैलियों का विवेचन किया है।

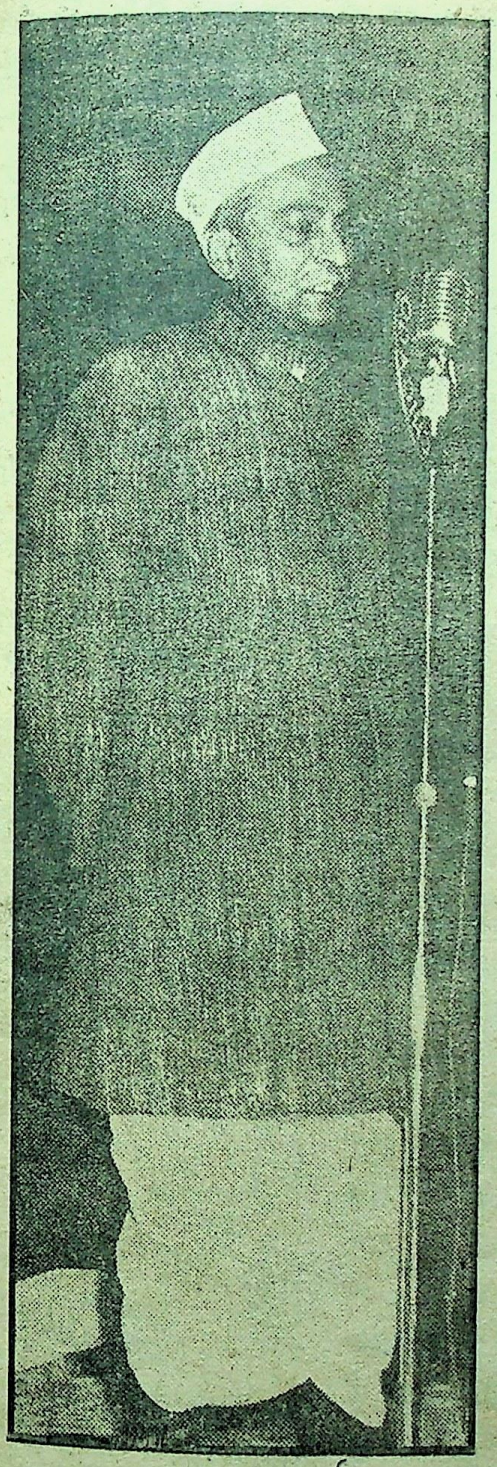

त्रिमूर्ति—

मैं कांग्रेस के जिस युग के वक्ताओं की चर्चा अब कर रहा हूं, वह वक्तृत्व-कला की दृष्टि से चाहे कैसा हो हो, वक्ताओं की संख्या की दृष्टि से वह बहुत ही समृद्ध था। उस युग में प्रायः सभी लीडर थे और प्रायः सभी नेता थे। ऐसे वक्ताओं से भरपूर युग में से कुछ नमूने के वक्ताओं को चुनना बहुत ही कठिन कार्य है। विषय की सहूलियत के लिये मैंने उसे कुछ श्रेणियों में बांट लिया है। आशा है, इस व्यवस्था से विषय के विवेचन में सुविधा हो जायगी।

पहिले मैं उन तीन वक्ताओं को लेता हूँ, जो एक समय 'अपरिवर्त्तनवादी त्रिमूर्ति' के नाम से विख्यात थे। उनके प्रख्यात नाम ये हैं — श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, सरदार वल्लभ भाई पटेल और डा० राजेन्द्रप्रसाद। इन तीनों नेताओं को त्रिमूर्ति की उपाधि गया की कांग्रेस में मिली थी। यह वह कांग्रेस थी, जिसमें स्वराज्य-पार्टी की स्थापना हुई थी। कांग्रेस के सामने यह प्रश्न उपस्थित था कि कांग्रेसी लोग धारा-सभाओं में प्रवेश करें या नहीं? पण्डित मोतीलाल नेहरू उस दल के नेता थे, जो कौंसिल-प्रवेश और स्वराज्य पार्टी की स्थापना के पक्ष में था। महात्मा जी उस अधिवेशन में उपस्थित नहीं थे। उनके नाम पर जो लोग मोतीलाल नेहरू के प्रस्ताव का विरोध कर रहे थे, उनके नेता ये तीनों सज्जन थे। आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में और खुले अधिवेशन में प्रस्तुत विषय पर बहुत गरमागरम वादविवाद हुआ। प्रस्ताव के विरुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरदार वल्लभ भाई पटेल भाषण कर रहे हैं।

बोलने वालों में सब से प्रमुख स्थान श्री राजाजी का था। मैंने उनका भाषण पहिली बार वहीं सुना। यद्यपि वे सर्वसाधारण जनता के वक्ता नहीं हैं, तो भी कांग्रेस के उस अधिवेशन में उनकी धाक बंध गई थी। वे जब अंग्रेजी के सुन्दर और सुथरे वाक्यों में परिवर्त्तन के विरुद्ध युक्तियां उपस्थित करते थे, तब श्रोताओं के मुँह से अनायास ही साधुवाद निकल पड़ता था। श्रोता वक्ता से सहमत हों या न हों, पर वक्ता की भाषा इतनी सरल और परिमार्जित थी, युक्तियां इतनी सुव्यवस्थित थीं और कहने का ढङ्ग ऐसा शान्त और प्रभावशाली था कि श्रोता को उसकी प्रशंसा करनी ही पड़ती थी। लोग उस समय आपस में प्रायः यह चर्चा करते थे कि अगर राजाजी धारासभा-प्रवेश के विरोधी न होते, तो धारा-सभा में सबसे अधिक सफलता उन्हीं को मिलती, क्योंकि उनकी भाषण-शैली धारा-सभाओं के सर्वथा उपयुक्त थी। इस समय तो राजाजी कौंसिल-प्रवेश के विरोधी ही बने रहे, परन्तु वह समय भी आ गया, जब श्रोताओं की आशायें पूरी हुईं। राजाजी न केवल कौंसिल-प्रवेश के पक्षपाती बने, वे मद्रास के प्रधान मंत्री भी बने और भारत के पहिले गवर्नर-जनरल भी बन गये। वक्तृत्व-कला के दृष्टि से राजाजी की गिनती ऑरेटरों में नहीं हो सकती। उन्हें सभा-भवन के अत्यन्त उत्कृष्ट श्रेणी के वक्ता कहना उचित होगा।

सरदार पटेल का असली रूप उसी अधिवेशन में देश के सामने आया। वे परिवर्त्तन के कट्टर विरोधी थे। आल इंडिया कांग्रेस कमेटी, खुले कांग्रेस अधिवेशन और गया में सार्वजनिक जल्सों में सरदार पटेल ने जो भाषण किये, मैंने वे प्रायः सभी सुने। उनमें न भाषण के परिष्कार पर जोर था और न युक्तियों की भरमार थी। सीधे-सादे स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा की गई थी कि इस समय कांग्रेस के कार्यक्रम में परिवर्त्तन करना देशद्रोह है, इस कारण यह नहीं करने दिया जायगा। एक व्याख्यान में सरदार पटेल ने कहा था, "लोग मुझसे पूछते हैं कि अब कांग्रेस का क्या कार्यक्रम रहेगा? मैं उनसे कह देना चाहता हूँ कि इस प्रश्न का उत्तर पीछे दूंगा, पहिले इस परिवर्त्तन और कौंसिल-प्रवेश के कूड़ा-करकट को झाड़ू से समेट कर बाहर फेंक देना

गवर्नर जनरल महामहिम चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये। जब तक यह शब्द हमारे सामने रहेगा, तब तक हम शान्तचित्त से भावी कार्यक्रम पर विचार नहीं कर सकेंगे।" ये शब्द मैंने केवल अपनी स्मृति उद्धृत किये हैं। उस समय मुझे इतने जोरदार प्रतीत हुए कि ये मेरे दिल पर अंकित हो गये। उनसे सहमत न होते हुए भी मुझे यह समझने में देर न लगी कि परिवर्त्तनवादियों को असल में जिस चट्टान से टकराना है, वह यही है। सरदार का दृढ़ चेहरा, उनकी अधखुली आंखें और चढ़ी हुई आस्तीनें प्रकट कर रही थीं कि यह व्यक्ति जो सोचता है और जो कहता है, उसे पूरा करके रहेगा। सरदार के उन वाक्यों से सचमुच स्वराज्य-पार्टी वालों पर आतंक-सा छा गया था। यह तो भाग्य की बात है कि महात्मा गांधी के मत-परिवर्त्तन के साथ ही साथ उनके पट्टशिष्य सरदार पटेल का भी मत-परिवर्तन हो गया और जो सेनापति कौंसल-प्रवेश के विरुद्ध जोरदार युद्ध-घोषणा कर चुका था, वह बाद में पार्लिमेंटरी बोर्ड का प्रधान बनाया गया। उस दिन से आज तक कांग्रेस ने जितने चुनाव लड़े हैं, उनका नियंत्रण सरदार पटेल ने ही किया है। यह तो हुई इतिहास की बात। केवल वक्तृत्व-कला की दृष्टि से सम्मति बनानी हो, तो हम कह सकते हैं कि सरदार पटेल राजाजी से बिल्कुल उल्टे हैं। वे कौंसल-चेम्बर के वक्ता नहीं हैं। वे जन-साधारण की भाषा बोलते हैं, न उन्हें ओरेटरों वाला स्वर मिला है और न वे भाषा के संस्कार की ही परवाह करते हैं। फिर भी जनता उनकी बात को ध्यान से सुनती है और विश्वास करती है, क्योंकि उनके प्रत्येक शब्द के पीछे फौलादी इच्छा-शक्ति और क्रिया-शक्ति का बल है।

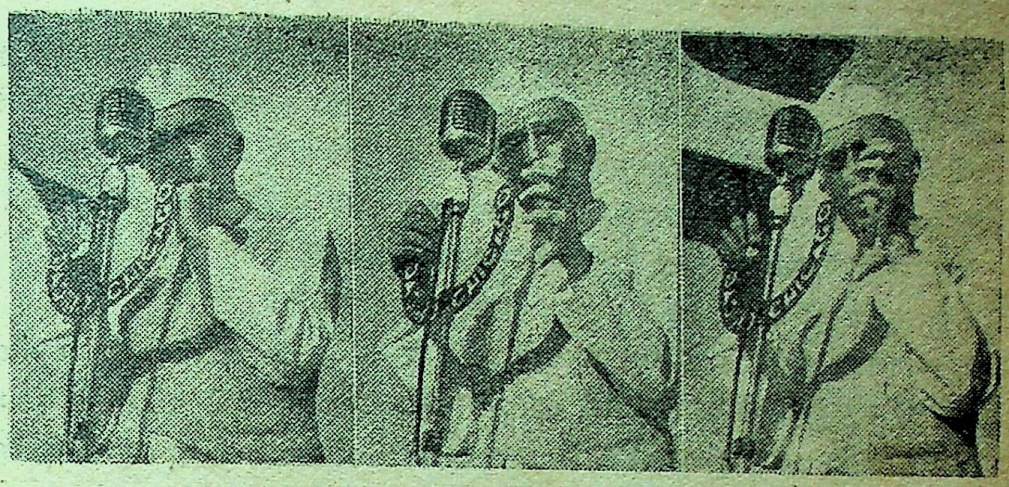

भाषण देते समय पंडित जवाहरलाल नेहरू की तीन मुद्रायें

त्रिमूर्ति के तीसरे वक्ता डा० राजेन्द्र प्रसाद थे। वे गया में स्वागताध्यक्ष थे। उससे पूर्व मैंने राजेन्द्र बाबू का नाम तो सुना था, पर दर्शन नहीं किये थे। देखने का शौक अवश्य था। मैं दो दिन तक कैम्प में घूमता-फिरता स्वागताध्यक्ष जी को देखने का प्रयत्न करता रहा, परन्तु कोई ऐसा व्यक्ति दृष्टिगोचर न हुआ जिसकी स्वागताध्यक्ष जैसी शक्ल हो। मैंने उससे पूर्व कांग्रेस के अनेक अधिवेशनों के स्वागताध्यक्षों को देखा और सुना था। थोड़ा-बहुत उनसे मिलते-जुलते किसी व्यक्ति की आशा से मैं चारों ओर देखता रहा, परन्तु निराश ही होना पड़ा। इस कारण जब आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में सभापति ने बोलने के लिये

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजेन्द्र बाबू को बुलाया, तब मेरी उत्सुकता बहुत बढ़ गई। राजेन्द्र बाबू बोलने के लिये खड़े हुए तो पहिले तो मैंने यही समझा कि कोई स्वयंसेवक किसी प्रकार की सूचना देने के लिये खड़ा हो गया है. राजेन्द्र बाबू अभी थोड़ी देर में आयेंगे। परन्तु जब खड़े हुए सज्जन सभापति जी के पास पहुँच कर बोलने लगे तब समझ में आया कि यही राजेन्द्र बाबू हैं। गहरा सांवला रङ्ग, लम्बा छरहरा शरीर, मोटे खद्दर के कपड़े, सिर पर पीछे की ओर झुकी हुई खद्दर की टेढ़ी टोपी और बड़ी बड़ी घनी मूछें—यह हुलिया गांव के किसी किसान का था, लीडर-क्लास के कांग्रेसी का नहीं।

राजेन्द्र बाबू हिन्दी के प्रभावशाली वक्ता हैं। उनके भाषण में किसी प्रकार की कृत्रिमता नहीं होती। उनकी भाषा परिमार्जित है वे जो कुछ बोलते हैं, हृदय से बोलते हैं। इसी कारण किसी-किसी समय जब वे भावावेश में आते हैं, तब उनके शब्दों में ऑरेटरों की-सी ऊँची उड़ान भासित होने लगती है। यों सामान्य-रूप से वे भावुक नहीं हैं। उनके भाषणों का जो अद्भुत प्रभाव होता है, उसका कारण कोई कला नहीं है, प्रत्युत राजेन्द्र बाबू का सरल, सच्चा और विशुद्ध व्यक्तित्व है। जो व्यक्ति उनसे मिले या उनकी बात सुने, वह शीघ्र ही उन पर आस्था करने लगता है। यही कारण है कि बहुत उद्भट वक्ता न होते हुए भी कांग्रेस के प्रायः सभी कार्यों में अब तक भी प्रारम्भ का मङ्गल उन्हीं से कराया जाता है।

द्विमूर्ति—

त्रिमूर्ति के पश्चात् अब मैं उस समय के भारत के दो ऐसे महापुरुषों की भाषण-शैली के सम्बन्ध में लिखूँगा, जो युवक-हृदय-सम्राट कहलाते थे। उन्हें हम 'युवक द्विमूर्ति' के नाम से निर्दिष्ट कर सकते हैं। वे दोनों थे पण्डित जवाहरलाल नेहरू और श्री सुभाषचन्द्र बोस।

पं० जवाहरलाल नेहरू आज भारत के ही नहीं, समस्त संसार के एक माने हुए प्रमुख नेता हैं। जब महात्मा गांधी ने भारत की राजनीति में प्रवेश किया, तब पं० मोतीलाल जी मॉडरेट विचारों के कांग्रेसी नेता समझे जाते थे और पं० जवाहरलाल जी एक प्रसिद्ध और सफल बैरस्टर के होनहार उत्तराधिकारी से अधिक कुछ नहीं थे। उनकी शिक्षा विलायत में हुई थी। वे एक ऐसे व्यक्ति के पुत्र थे, जिसे संसार की मान-प्रतिष्ठा और सम्पत्ति सभी कुछ प्राप्त था। हम संक्षेप में कह सकते हैं कि वे राजसी ठाठ में पैदा हुए थे।

महात्मा गांधी के कांग्रेस-प्रवेश के कुछ समय पश्चात् ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो गई कि पंडित मोतीलाल जी महात्मा जी के साथी बन गये। मॉडरेट से सत्याग्रही बन जाना कुछ आसान काम नहीं था। पहिले तो पंडित मोतीलाल जी के कानूनी दिमाग ने कानून-भङ्ग जैसे कानून-विरोधी सिद्धांत को स्वीकार नहीं किया, परन्तु अन्त में धीरे-धीरे वे सत्याग्रह के पूरे समर्थक बन गये। समझा जाता है कि अपने मॉडरेट पिता को असहयोग-आन्दोलन के दायरे में लाने में पण्डित जवाहरलाल जी का बहुत हाथ था। पंडित जवाहरलाल जी की तेजस्वी और अधीर प्रकृति उन्हें मॉडरेट कैसे बनने दे सकती थी।

यहां से पंडित जवाहरलाल जी का राजनैतिक जीवन शुरू हुआ। जन्म से मनुष्य को जो लाभ प्राप्त हो सकता है, वह तो उन्हें प्राप्त था ही, क्योंकि वे एक ऐसे व्यक्ति की सन्तान थे जिसे मनुष्यों में राजा कह सकते हैं। जब राजनीति में प्रवेश किया, तो महात्मा गांधी के अनुयायी बन कर। यह जवाहरलाल जी का दूसरा सौभाग्य था। यह पंडित जवाहरलाल जी की कुलीनता और समझदारी का सबसे बड़ा सबूत है कि महात्मा जी से कई विषयों पर असहमत होते हुए भी कभी उनका मुकाबला नहीं किया — विरोध करते हुए भी उनका साथ दिया। यह तो स्वाभाविक ही है कि ढलती हुई शक्ति उठती हुई शक्ति के सामने अपने को झुका देती है। जैसे पंडित मोतीलाल जी ने अपने पुत्र के प्रभाव से अपने आपको बाईं ओर झुका दिया था, वैसे ही महात्मा जी ने भी कई अवसरों पर अपने को केवल पंडित जवाहरलाल जी के लिहाज से बाईं ओर

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

श्री घनश्याम अस्थाना

उलझ गया मेरी पलकों में आकर चाँद किसी का।

झुक आयी तन्द्रिल नयनों में सपनों की मदहोशी,
बिखर गयी नीलम के घर में किरनों की खामोशी,
बेसुध-सी लहरों का मांसल यौवन निखर उठा है,
छलक उठी तारों में गीतों की मादक बेहोशी।
भीग रहा हूँ मैं बेसुध ज्योत्स्ना के पागलपन में,
उतर गया प्राणों में चुपके से उन्माद किसी का।

निंदियारी पलकों में तिरते हैं खुमार के बादल,
आँखमिचौनी खेल रही हैं रूप-लहरियां चंचल,
पुलक सलज-सी अलसायी सुधि की मदभरी जवानी,
बिखरी कजरारी अलकों-सी नींद सलोनी पलपल।
चाँद-सितारों की झिलमिल में प्यार जगा प्राणों का,
डगर भूल रुक गया बटोही-सा आह्लाद किसी का।

किरनों की रिमझिम-रिमझिम में यह रसवन्ती चितवन
भीग रही है तन्मय, भीग रहा है मेरा मधुवन,
मैं विभोर अधमुँदे शरबती नयनों में खो जाऊँ,
झुक-झुक जाते अधर किसी के अधरों की छाया बन।
मैं पग-ध्वनि पहचान रहा हूँ नूपुर की रुनझुन में,
मुखर हो उठा मंदिर कंचन में मधु-संवाद किसी का।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकांकी

कलाकार की मृत्यु

श्री शालिग्राम मिश्र

पात्र

चित्रकार — एक आदर्शवादी कलाकार ;

पत्नी — चित्रकार की पत्नी ।

राजेश — चित्रकार का पुत्र ।

शर्माजी — एक प्रकाशक ।

प्रवीणजी — शर्माजी के साहित्यिक मित्र ।

समय—सन् १९३६ ई० का कोई दिन ।

स्थान—किसी भी ऐतिहासिक नगर की पुरानी बस्ती ।

(एक साधारण-सा कमरा, कई दिनों से जिसकी सफाई नहीं हुई है। कमरे की छत काफी नीची है, उसमें लकड़ी की पुरानी धन्नियां लगी हैं। दाहिनी ओर का दरवाजा बाहर की गली में खुलता है, परन्तु वह इस समय बन्द है। बाईं ओर का दरवाजा घर के भीतर जाता है। यह खुला है। सामने खुली खिड़की है, जिसमें लोहे के सीखचे लगे हैं। कमरे के बीचोबीच एक बड़ी सी मेज़ रक्खी है, जिसका धरातल स्याही पीते-पीते उसी के रंग का हो गया है। मेज़ का एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज के पूंजीवादी युग में क्या कलाकार अपनी कला के प्रति ईमानदार रह कर जीवित रह सकता है? यथार्थ की लौह-चट्टान से टकरा कर क्या आदर्श की नौका बची रह सकती है? नाटककार ने इन्हीं प्रश्नों की ओर हमारा ध्यान खींचा है।

पाया कुछ छोटा है क्योंकि उसके नीचे एक ईंट का टुकड़ा लगा है। मेज़ पर दो तीन खाली कार्ड बोर्ड के डिब्बे, दो पुराने ब्रुश, कुछ रंग और कुछ कागज-पत्र इत्यादि अव्यवस्थित पड़े हैं। एक कोने में रङ्गों की तश्तरी रखी है, जिसके रङ्ग अभी गीले हैं। ऐसा लगता है, मानों चित्रकार अभी थोड़ देर पहिले काम कर रहा था। मेज़ के पास एक टूटी-सी कुर्सी पर चित्रकार बैठा है। उसकी अवस्था लगभग ३५ के होगी। चेहरा भरा हुआ और सुन्दर है, यद्यपि उस पर थकान और परेशानी के चिन्ह स्पष्ट हैं। बड़ी-बड़ी आंखें सामने की दीवार पर गड़ी हैं, मानों उसे भेद जाना चाहती हों। बड़े-बड़े बाल अव्यवस्थित हैं। दाहिने हाथ में तूलिका है। कभी-कभी दृष्टि घुमा कर वह खिड़की के पास रखे स्टेन्ड की ओर देखता जाता है। स्टेन्ड पर 'वासना की मूर्ति' शीर्षक उसका नया चित्र टंगा है। चित्र की ओर एक बार फिर देख कर वह तूलिका को तश्तरी में रख देता है और दोनों हाथों को सिर पर रख कर सोचने लगता है।

पत्नी का बाईं ओर के दरवाजे में प्रवेश। अवस्था लगभग २८ वर्ष, किन्तु देखने में पैंतीस की लगती है लम्बा, ममता से भरा चेहरा, गालों की हड्डियां काफी उभरी हुईं, आंखें उतनी ही धंसी हुईं। चाल-ढाल से व्यस्तता का परिचय मिलता है। शरीर से अब भी गत सौंदर्य का थोड़ा-सा आभास मिल जाता है।)

पत्नी—(मेज़ का एक कोना पकड़ कर खड़ी होती है) वे लोग अभी नहीं आये?

चित्रकार—(चौंक कर) अभी तो नहीं।

पत्नी—कहीं उन्होंने विचार तो नहीं बदल दिया?

चि०—और भी अच्छा होगा।

पत्नी—क्यों?

चि०—(मुस्कराने की चेष्टा करते हुए) सिर दर्द से बचूँगा।

पत्नी—अब तो मैं यह सुनते सुनते ऊब गई हूँ। ग्यारह वर्ष हो गए।

चि०—(अनमना हो कर) तुम ऐसा कह कर मेरा मन छोटा कर रही हो मैं ऊपर उठना चाहता हूँ—इस संसार से बहुत ऊपर, जहां सपनों का देश है। तुमने भी कभी सपने देखे हैं?

पत्नी—मेरे लिए आप ही के सपने क्या कम हैं!

चि०—(सोया-सा) सच! तुम मेरे सपने समझती हो?

पत्नी—इतना तो समझती ही हूँ कि सपनों से भूख नहीं मिटती।

चि०—सो तो ठीक ही है खेत जोत कर किसान उसमें बीज बोता है, सींचता है और रखवाली करता है। तब खेत से अनाज पैदा होता है, जिससे मनुष्य, पशु-पक्षी, सभी की भूख मिटती है।

(उठता है और जाकर सामने की खिड़की के पास खड़ा होता है। दृष्टि बाहर की ओर, मानों किसी की प्रतीक्षा में लगी हो।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु कला खेती तो नहीं है, और न इस से पेट की भूख ही मिटती है।

पत्नी—तब फिर कला जीवन के किस काम की?

चि०—(बाहर की ओर देखता हुआ) पेट की भूख से भी गहरी, उससे भी प्रबल एक और भूख होती है—आत्मा की भूख। तुमने कभी उसका अनुभव किया है? यह भूख जब लगती है, शेष सारे मनोभाव दब जाते हैं। लगता है, मनुष्य त्रिशंकु-सा पृथ्वी-आकाश के बीच लटका, कल्पना के पङ्ख फड़फड़ा रहा हो, परन्तु वह आकाश, वह स्वर्ग, जिसे पाना ही उसके जीवन की सार्थकता है, वह सदा अप्राप्य ही रहे। कला इस भूख को मिटाती है।

पत्नी—आप कहते हैं, ठीक ही होगा, परन्तु मेरे पेट की भूख को तो आत्मा की भूख कभी नहीं दबा सकी। पड़ोस के तिवारी जी हैं, जिन्होंने आप की कई तस्वीरों पर कविताएं लिखी हैं। वे भी तो कलाकार हैं; परन्तु उनके बच्चों को मैंने कभी भूखे रहते नहीं देखा। उनकी घरवाली सदा भींखा नहीं करती। उस दिन आप ही से तो कह रहे थे···

(चित्रकार खिड़की के पास से लौट आकर फिर अपनी मेज के पास खड़ा हो जाता है।)

चि०—क्या कह रहे थे?

पत्नी—कह रहे थे, 'मैं समझता हूँ जनता क्या मांगती है, सम्पादक क्या चाहते हैं। वही लिखता हूँ। न लिखूँ तो और क्या करूँ? युग की मांग है, उसकी अवहेलना कर कला की साधना कैसे हो सकती है?'

चि०—यह क्या कहती हो? तिवारी मुझ से यह सब कह रहा था?

पत्नी—जी, आप से।

चि०—और मैंने कुछ जवाब नहीं दिया? उसे डांटा नहीं?

पत्नी—जी नहीं। आप चुपचाप सुनते रहे थे।

चि०—मैंने सुना ही न होगा।

पत्नी—जी, सुना तो था आपने। जवाब उस समय कुछ बन न पड़ा होगा।

चि०—उसमें जवाब बन पड़ने की कोई बात ही नहीं, सुनता तो सीधे डाँट देता।

पत्नी—अब तो सुन रहे हैं। जवाब बन पड़े तो दे दीजिए न! और न बन पड़े तो डाँट ही दीजिये।

चि०—तुम नाहक मेरा 'मूड' खराब कर रही हो, रानी! कला की उपासना कष्ट झेलकर ही होती है।

पत्नी—यह तो मैं मानती हूँ, लेकिन उन कष्टों की कोई सीमा भी है?

चि०—सीमा? सौन्दर्य की कोई सीमा नहीं, वह अनन्त है। कला की कोई सीमा नहीं, वह भी असीम है! फिर प्रयत्न की और कष्टों की सीमा कैसे हो सकती है?

पत्नी—मैं आपके साथ सभी कष्ट झेल सकती हूँ; परन्तु बच्चों का कष्ट नहीं देखा जाता। और फिर तिवारीजी को देखिये, वे भी तो कलाकार हैं।

(चित्रकार कुर्सी पर बैठ जाता है। दाहिने हाथ में एक ब्रुश उठा लेता है, बाएँ पर माथा रख कर विचार-मग्न मुद्रा बनाता है)

चि०—तिवारी! तिवारी! फिर तिवारी! मैं कहता हूँ, वह कलाकार नहीं है। वह केवल एक व्यापारी है। उसने अपनी कला को, अपनी आत्मा को, अपने आपको सम्पादकों के हाथ बेच दिया है।

पत्नी—कलाकार और व्यापारी में, लोग कहते हैं, कुछ भेद नहीं रह गया। आज के युग ने सारा भेद मिटा दिया है।

चि०—वह भेद तो कभी मिट ही नहीं सकता। कलाकार नेतृत्व करता है; तुम्हारा तिवारी बिचारा जनरुचि का अनुयायी मात्र है। कलाकार अपनी छाप समाज पर डालता है, व्यापारी समाज की छाया में उसके आदर्शों को लेकर चलता है।

पत्नी—अच्छा, तिवारी जी कलाकार न सही, व्यापारी ही होंगे। मैं इतना जानती हूँ (स्वर धीमा करके, जिससे दुःख और व्यंग्य दोनों का आभास मिलता है) कि उनके यहां रोज कर्जदारों की भीड़ नहीं लगी रहती और उनके बच्चे स्वस्थ हैं और ढंग से रहते हैं।

(बाहर के दरवाजे पर थपकी सुनाई देती है। चित्रकार उस ओर बढ़ता है।)

चि०—शायद वे लोग आ गये। देखो, मैं कुछ न कुछ इन्तजाम करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(दरवाजा खोलता है। आधा मिनट बाहर रह कर फिर भीतर आ जाता है और मेज़ के पास खड़ा होता है।)

पत्नी—(प्रश्नसूचक चिन्ह की मुद्रा में) कौन था?

चि०—कोई नहीं। अखबार वाला था।

पत्नी—अखबार वाला?

चि०—हां। छोटे मुन्ना ने कल से कुछ नहीं खाया?

पत्नी—नहीं। और राजेश ने भी नहीं। भूखा स्कूल गया है। और आप ने भी बिना दूध-शकर की चाय भर पी है।

चि०—(कमरे में टहलते हुए) यह तो बड़ी खराब बात है। ऐसे भला कब तक काम चलेगा। कुछ उपाय करना ही होगा।

पत्नी—इसीलिए तो मैं आपके पास आई थी।

चि०—इसीलिए? क्या तुमने कुछ सोचा है?

पत्नी—सोचा तो कुछ खास नहीं। आप से कहने आई थी, वे लोग जैसा कहते हैं, कर दीजिए न।

चि०—यह असम्भव है। मैंने उनसे चौबीस घण्टे का समय लिया था और मैं बराबर यही सोचता रहा हूँ। मैं अपने चित्र में परिवर्त्तन नहीं कर सकता।

पत्नी—तनिक-सा परिवर्त्तन ही तो करना है। 'वासना की मूर्ति' उन्हें नग्न नहीं अच्छी लगती. वे उसे आधुनिक फैशन में देखना चाहते हैं। इसमें आपका हर्ज ही क्या है? आपके चित्र का सौंदर्य थोड़े ही कम हो जायगा।

चि०—सौंदर्य भले न कम हो, भाव तो मर ही जाएगा। नहीं रानी, मैं अपनी कला की हत्या नहीं कर सकता, ठीक उसी तरह जैसे मैं छोटे मुन्ना और राजेश को भूखों मरते नहीं देख सकता।

पत्नी—फिर! मेरी छोटी-सी समझ में तो यही आता है कि जब कला को व्यवसाय बनाया है, उसके क्रय-विक्रय की बात सोची है, तब आपको व्यापारी बनना ही पड़ेगा।

चि०—मैं कला को व्यवसाय नहीं बनाऊँगा। मैं नौकरी करूँगा।

पत्नी—नौकरी करेंगे! (पत्नी के स्वर में विस्मय से अधिक निराशा है।)

चि०—हां, नौकरी करूँगा! (कुर्सी पर बैठते हुए) यही हमारी समस्याओं का एक मात्र हल है।

पत्नी—लेकिन नौकरी करना आसान तो है नहीं। भैया को देखिए। सवेरे साढ़े आठ से पहले घर से निकल जाते हैं, शाम को छः के बाद लौटते हैं, और वह भी इतने थके मांदे कि खाना खाकर आराम ही सूझता है। ऐसी नौकरी करके आपको दूसरे काम के लिए समय भी न मिलेगा। फिर आपकी कला का क्या होगा?

चि०—मैं कला के लिए भी समय निकाल लूँगा। कलाकार के परिवार का पोषण तो समाज को करना चाहिए। हमारा समाज अभी उतना जागृत नहीं हुआ है। अभी तो लोग समझते हैं, कला फालतू समय काटने की चीज है, जीवन की ललित भावनाओं से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। समाज यह नहीं जानता कि कलाकार को बच्चों का पेट भी भरना होता है।

(बाहर का दरवाजा खुलता है। दोनों उस ओर देखने लगते हैं। राजेश का प्रवेश। अवस्था दस साल; दुबला-पतला, किन्तु चेहरे की आकृति कोमल तथा सुन्दर है। कपड़े गन्दे हो चले हैं, नंगे पैर। बगल में कुछ गन्दी, अधफटी किताबें दबाये है। राजेश कमरे में घुसकर मां की तरफ बढ़ता है।)

राजेश—मां, बहुत भूख लगी है। कुछ खाने को दो।

पत्नी—बेटा...! (समझ में नहीं आता, क्या कहे, इसलिए चुप हो जाती है।)

राजेश—मां (किताबें मेज पर रखते हुए) माँ, जल्दी चल।

पत्नी—चलती हूँ, बेटा।

चि०—तेरे हाथ में क्या हुआ, राजेश? सूजा है।

राजेश—मास्टर जी ने मारा है। मेरे पास लेख की कापी नहीं थी कई बार मां से कहा, मां मंगा कर ही नहीं देत।

(बाहर के दरवाजे पर फिर थपकी सुनाई देती है।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चि०—अच्छा बेटा, तू मां के साथ भीतर चल, मैं तुझे लेख की कापी मंगा दूंगा।

(मां के साथ राजेश बाईं ओर के दरवाजे से भीतर जाता है। चित्रकार उठ कर दाहिनी ओर बाहर के दरवाजे के पास जाता है। क्षण भर खड़े-खड़े कुछ सोचता रहता है, फिर दरवाजा खोल देता है।)

चि०—आइए शर्मा जी, आइए! अच्छा, आप भी हैं, प्रवीण जी! आइये, आइये, भीतर चले आइये!

(शर्मा जी तथा प्रवीण जी का प्रवेश। आगे-आगे शर्मा जी हैं। सांवला रङ्ग, बदन अच्छा, पेट ने हाल में ही शेष शरीर को असहयोग की चुनौती दी है। खद्दर का कुर्त्ता सिर पर खद्दर की ही टोपी। खद्दर की धोती बङ्गाली ढंग से पहने हैं। पांव में चप्पल। दाहिने हाथ में फाइल-केस। प्रवीण जी अपेक्षाकृत काले, लम्बे और दुबले हैं। वेश-भूषा शर्मा जी की ही जैसी है। आंखों पर मोटे शीशे का चश्मा चढ़ा है। चित्रकार शर्मा जी को कुर्सी की ओर संकेत करता है, वे बैठ जाते हैं।)

चि०—(मेज की ओर संकेत करते हुए) आप इधर आ जाइए, प्रवीण जी!

(प्रवीण जी मेज के सिरे पर बैठते हैं। चित्रकार दोनों के बीच खड़ा रहता है।)

शर्माजी—(फाइल-केस मेज पर रखते हुए) आपने कुछ सोचा?

चि०—जी हां, सोचा है, बहुत सोचा है।

प्रवीण जी—देखिये महाशय जी, यह जो आप कल कला के आदर्श की बात कह रहे थे, मेरी समझ में कुछ नहीं आई। कलाकार की ईमानदारी कलाकार के लिए जज बन जाती है। संसार का इतिहास गवाह है, जिसने-जिसने सफलता पाई और समाज को एक सदेश दिया, सब का 'टेकनीक' हमेशा एक रहा है। कहना हमेशा वही जो सच है और आदर्श है; करना हमेशा वही जो झूठ है, किन्तु लाभकर है।

चि०—यह आप कैसे कह सकते हैं?

शर्मा जी—जाने भी दीजिये। आपने क्या निश्चय किया?

चि०—मैंने निश्चय किया है कि मैं चित्र में परिवर्त्तन नहीं कर सकता।

प्रवीणजी—मैं तो जानता था, जो बात ज्यादा सोच-समझ कर की जाती है, हमेशा गलत होती है। क्यों महाशय जी, आप चित्र में परिवर्त्तन क्यों नहीं कर सकते?

चि०—चित्र निष्प्राण हो जायगा, उसका सौंदर्य नष्ट हो जायगा।

प्रवीणजी—आपका चित्र सचमुच महान है, लेकिन उसका भाव समझने योग्य क्या आपका समाज है?

चि०—न हो, मुझे इससे क्या?

प्रवीणजी—समाज भूखे है, वह कला के भाव नहीं समझता। ऐसे समाज को और भूखे बनाना हर समझदार का कर्त्तव्य है। आप अपने नग्न-चित्र पर झीना-सा आवरण डाल दीजिए, ताकि लोग खुशी-खुशी इसे अपने ड्राइङ्ग-रूमों में लगा सकें। फिर देखिये, हम क्या करते हैं।

शर्माजी—जी हां, हमने बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाई हैं। आपके इस चित्र के छपा कर हम प्रयत्न करेंगे कि हर सभ्य घर में इसकी एक प्रति पहुँच जाये। आज का युग प्रचार का है। लन्दन, पेरिस, बर्लिन, मास्को, न्यूयार्क सभी जगह आपकी कला का प्रदर्शन होगा हम आपको अमर बना देंगे।

प्रवीणजी—और अमर भी आजकल अमरत्व और अमीरी में कोई भेद नहीं रह गया है।

चि०—(कुछ आवेश में गम्भीर हो कर) एक बात कहूँ, शर्मा जी?

शर्माजी—हां हां, कहिये।

चि०—आप मुझे कोई नौकरी दे सकते हैं?

शर्मा, प्रवीण—(दोनों मिल कर) नौकरी?

चि०—जी हां, नौकरी।

शर्माजी—किस के लिए?

चि०—अपने लिए। मैं नौकरी करूँगा।

प्रवीणजी—आप नौकरी करेंगे! अच्छा इरादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। एक हिसाब से आजकल नौकरी ही सबसे अच्छा पेशा है, क्योंकि इसमें जो भी फ़ायदा हो, सब आपका, जो नुक्सान हो, सब ग़रीब मालिक का। लेकिन नौकरी करके तो शरीर और आत्मा दोनों को बेच देना पड़ता है, महाशय जी।

चि०—कोई चिन्ता नहीं।

शर्माजी—आप क्या काम कर सकते हैं? मेरे कार्यालय का हिसाब किताब देख लेंगे?

चि०—(थोड़ा रुक कर) सीखना पड़ेगा।

शर्माजी—आप टाइप जानते हैं?

चि०—नहीं।

शर्माजी—पत्र-व्यवहार? प्रूफ़-रीडिंग? एजेन्सी-कन्ट्रैक्ट? ट्रेवेलिङ्ग सेल्समैन?

चि०—मेरे लिए तो सभी नया है, सीख लूँगा।

प्रवीणजी—लेकिन इस सब की जरूरत ही क्या है? आप चित्र में थोड़ा सा परिवर्तन कर दीजिये न, रुपया आपको घर बैठे मिल जायगा। हम एडवान्स देने को तैय्यार हैं।

चि०—चित्र में मैं कोई परिवर्तन नहीं करूँगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, यह चित्र एक कलाकृति है। आप इसे ऐसा ही ले जाइये।

शर्माजी—ठीक कहते हैं आप, परन्तु आज का सभ्य मनुष्य नग्न सौन्दर्य से भी आँखें मींच लेता है। हम आपको रुपया देंगे, रुपाई-ख़र्च करेंगे और जनता हमारे चित्र को अश्लील कह कर ठुकरा देगी हम भी बाल-बच्चों का पेट भरना है, महाशय जी

चि०—(कुछ चौंक कर) बाल-बच्चों का पेट भरना है?

शर्माजी—जी हां! अगर हम यह न सोचें तो कल ही संस्था का दिवाला निकल जाए, हमारा घर कर्ज़दारों का अड्डा बन जाए, हमारे बच्चे भूखों मरने लगें···

(घर के भीतर से एक छोटे बच्चे के रोने की आवाज़ सुनकर तीनों चौंक उठते हैं। आवाज़ बहुत धीमी है, मानों बच्चा महीनों का रोगी हो।)

चि०—(झटका देकर गरदन ऊपर उठाता है) आप एडवान्स अभी देंगे?

शर्माजी—अभी।

चि०—लाइये! परिवर्तित चित्र आपको कल इसी समय मिल जाएगा।

(चित्रकार दोनों हाथों में मुँह छिपा कर खिड़की पर बैठ जाता है। शर्माजी जेब से पर्स निकाल कर नोट गिनते हैं प्रवीण जी 'स्टैन्ड' पर लगे चित्र की ओर देख रहे हैं। करुण पार्श्व-संगीत के साथ धीरे-धीरे यवनिका-पतन।)

समाप्त

★

अक्तूबर १९४९ में 'मनोरंजन' तृतीय वर्ष में प्रवेश करेगा

'मनोरंजन' का अक्तूबर का अंक

कहानी-अंक

होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्रेंच कहानी

.... का न्याय

श्री रावेले

★

पेरिस में कबाबवालों की गली के नुक्कड़ पर पैतित शास्नेले की कबाब की दूकान के सामने भट्टी के पास बैठा हुआ एक गरीब कुली अपनी सूखी रोटी खा रहा था। वह बहुत ही गरीब था और कबाब न खरीद पाकर वह रोटी के टुकड़े को खाने से पहले भुनते हुए मांस की भाप के ऊपर कुछ देर रखे रहता था जिससे उसमें कुछ खटास-सा आ जाता था। दूकान के रसोइये ने उसे देखा; पर उससे कुछ कहा नहीं। उस कुली ने अपनी इकन्नी वाली रोटी समाप्त कर डाली—उस रोटी का एक भी टुकड़ा उसने बिना मांस की भाप से लगाये नहीं खाया था—और पल्ला झाड़ कर चलने का उपक्रम किया। वह साफ बच निकलने के खयाल में ही था कि तभी उसे रसोइये ने आ दबोचा और उसकी कमीज का कालर पकड़ते हुए कहा, "सीधी तरह कबाब की भाप के पैसे दे कर जा!"

कुली भौंचक्का रह गया। वह बोला 'पैसे किस बात के? मैंने तुमसे लिया तो कुछ नहीं। मेरे भाप पर रोटी सेंकने से तुम्हारा कबाब तो कुछ कम नहीं हुआ, फिर पैसे किस बात के दूं? अगर मैं रोटी न भी सेंकता, तो भी तो भाप उड़ ही जाती। इससे पहले तो कभी देखा-सुना नहीं कि पेरिस की गलियों में कबाब की भाप भी बिकती हो।"

"चल बे भड़ुवे, मैंने कोई ठेका लिया है कि तेरे जैसे उचक्कों को भाप में सेक-सेक कर रेवड़ियां खिलाया करूँ! तुझसे मेरा वास्ता क्या! अब सीधी तरह पैसे यहां रख दे, नहीं तो ईश्वर कसम, मैं तेरे ये बोझ उठाने के लकड़ी के कुन्दे छीन लूँगा। ये मेरे चूल्हे में ईंधन के काम आयेंगे और इसी तरह कुछ पैसा वसूल होगा।"

पर जब वह कुली की कमर में बंधी रस्सी में से उन्हें खोलने को तैयार हुआ, तो कुली उसकी पकड़ से छूट कर एक ओर खड़ा हो गया और अपनी पैनी छुरी निकाल कर आत्मरक्षा के लिये तैयार हो गया।

इसके बाद बड़ी गरमागरम 'तू तू मैं मैं' हुई। पेरिस के तमाशबीन लोग दूर-दूर से दौड़ कर तमाशा देखने के लिये आ गये कि आखिर बात क्या है। और इसी झगड़े के बीच में पेरिस का नागरिक और मशहूर विदूषक सीनी जोन भी ऐन वक्त पर आ उपस्थित हुआ। उसे देख कर रसोइये ने कुली से कहा, "अच्छा, तो इस मामले का निर्णय सीनीजोन से क्यों न करवा लें। बोलो, मंजूर है?"

"हां, मुझे मंजूर है," कुली ने उत्तर दिया।

जब सीनीजोन ने देखा कि दोनों पक्षों ने अपने भयंकर संघर्ष में उसे मध्यस्थ स्वीकार कर लिया है और उसके भावी निर्णय को स्वीकार करने का वचन दे दिया है, तो उसने बड़े ध्यान से दोनों पक्षों के तर्क-वितर्क और युक्तियां-प्रत्युक्तियां सुनीं और उसके बाद कुली को आदेश दिया; "यदि तुम्हारी जेब में रुपया, अठन्नी, चवन्नी, कुछ भी हो तो निकालो।"

इस पर कुली ने क्षण भर की देर किये बिना न्यायशील मध्यस्थ की आज्ञा का पालन करते हुए एक चवन्नी अपनी जेब से निकाली। सीनीजोन ने पहले चवन्नी को अपने कन्धे पर रख कर देखा कि सिक्के का वजन ठीक है या नहीं। फिर हथेली पर बजा कर आवाज़ से जांचने की कोशिश की कि सिक्के में चांदी पूरी है या नहीं। और फिर अन्त में अपनी भिंची हुई आंख के सामने रख कर देखा कि चवन्नी पर राजा की मुहर साफ है या नहीं। यह सब कर चुकने के बाद उसने सब लोगों के बिल्कुल शांत हो जाने पर—रसोइये की आशा के अनुकूल और उत्तेजित कुली की आशा के प्रतिकूल—कुली को आदेश दिया कि इस चवन्नी को रसोइये की दूकान के काउन्टर पर कई बार बजाओ। कुली ने जैसे-कैसे आज्ञा का पालन किया।

(शेष पृष्ठ ४४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत का पश्चिम पर प्रभाव

श्री हरिदत्त वेदालंकार

प्रस्तुत लेख में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि इस युग में भारत ने पश्चिम पर क्या प्रभाव डाला। लेख काफी खोजपूर्ण और ज्ञानवर्द्धक है, अतः पठनीय है।

नवयुग का आरम्भ

पांचवीं शती ई० में पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के बाद १५ वीं शती ई० तक भारत और योरोप में कोई प्रत्यक्ष सम्पर्क नहीं रहा। १४९८ ई० में वास्को-डिगामा के जहाजों के मालाबार तट पर लगने के साथ इस युग में योरोप और भारत का प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित हुआ। १६ वीं शती से विश्व का नेतृत्व योरोप के हाथ में आ गया। योरोपियन जातियों ने ज्ञान-विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में अश्रुतपूर्व और अभूतपूर्व उन्नति कर भौतिक क्षेत्र में वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा प्रकृति पर विस्मयावह विजय पायी। पहले मनुष्य प्राकृतिक शक्तियों का खिलौना मात्र था, आज वह उनका स्वामी है। उसने उन्हें दास बना कर उनकी असीम शक्ति से अचिन्तित, अकल्पित और स्वप्न समझी जाने वाली बातें सत्य सिद्ध कर दीं, देश और काल के व्यवधान को मिटा दिया। इससे मानव-इतिहास में एक नवयुग का श्रीगणेश हुआ है।

उन्नति के नवयुग में भारत पिछड़ा और पराधीन रहने के कारण वह पश्चिम पर बहुत कम प्रभाव डाल सका है। इस प्रभाव को परोक्ष व प्रत्यक्ष दो भागों में बांटा जा सकता है। पहले भाग में तो वे प्रभाव आते हैं, जो योरोप ने अरबों के माध्यम द्वारा भारत से ग्रहण किए। गणित और ज्योतिष-शास्त्र के अतिरिक्त आयुर्वेद तथा चिकित्सा-शास्त्र की कुछ बातें भी अरबों के माध्यम से योरोप पहुंचीं। प्रसिद्ध अरब तबीब-अलराजी ने चरक-सुश्रुत (९३२ ई०) के अनुवादों को प्रामाणिक ग्रन्थ माना था। योरोप में मध्ययुग में चिकित्सा की उन्नति करने वाले और प्रधान प्रचारक अरब थे। इन्होंने वहां पहला आयुर्वेद महाविद्यालय स्थापित किया। अब्नसीना, इब्नसराफियून आदि मध्यकालीन योरोपियन अरब-लेखक चरक की बड़ी प्रशंसा करते हैं (में० सं० लि० ४२७ ई०)। अतः यह असम्भव नहीं कि पाश्चात्य चिकित्सा-पद्धति के आरम्भिक विकास पर चरक-सुश्रुत का प्रभाव पड़ा हो। पथरी तथा गर्भाशय चीर कर बच्चा निकलने के आधुनिक शल्य कर्म सुश्रुत द्वारा प्रतिपादित ढङ्गों से गहरी समानता रखते हैं। योरोप में इनके स्वतन्त्र विकास की भी कल्पना की जा सकती है, किन्तु दो क्षेत्रों में भारत का ऋण निर्विवाद है। योरोपियन शल्प-चिकित्सकों ने नकली नाक लगाने की विद्या भारत से सीखी है (मै० स० लि० ४०६) और चिकित्सा के क्षेत्र में उन्हें जो भारतीय ओषधियां उपयुक्त पड़ी हैं वे उन्होंने स्वीकार कर ली हैं। इसके मुख्य उदाहरण हैं कुब्ज (इन्द्रयव)

प्रत्यक्ष सम्पर्क जनित प्रभाव

योरोप और भारत में प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित होने के बाद भारत ने योरोप पर मुख्य रूप से सांस्कृतिक क्षेत्र में ही कुछ प्रभाव डाले हैं। इनका श्रीगणेश योरोपियन विद्वानों द्वारा संस्कृत के अध्ययन से आरम्भ हुआ। इसका इतिहास बड़ा मनोरञ्जक है। १८ वीं शती के उत्तरार्ध में भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के साथ शासकों को शासन प्रबन्ध के लिए शासितों की भाषा का ज्ञान पाने की आवश्यकता अनुभव हुई। हिन्दुओं और मुसलमानों के जमीन-जायदाद और दायभाग आदि के दीवानी कानून संस्कृत और अरबी में थे। इन विषयों से सम्बन्ध रखने वाले झगड़ों के निपटारे के लिए अङ्गरेज जज पण्डितों और मौलवियों की सहायता लेते थे। वारन हेस्टिङ्गज ने (१७७४ ई०) हिन्दू कानून का एक ग्रन्थ 'निबादार्णव-सेतु' तैयार कराया। किन्तु उस समय कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो संस्कृत और अङ्गरेजी दोनों भाषाएं जानता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो; अतः इसका पहले संस्कृत से फारसी में अनुवाद हुआ और फर फारसी से अङ्गरेजी में (१७७६ ई०)। इस शोचनीय अवस्था को दूर करने के लिए हेस्टिंग्ज ने अङ्गरेजों को संस्कृत पढ़ने को प्रोत्साहित किया। बनारस का संस्कृत-कालेज तथा कलकत्ता का अरबी मदरसा कायम किया गया। संस्कृत पढ़ने वाला पहला अङ्गरेज चार्ल्स विलिकन्स था। इसने भगवद्गीता (१७८५ ई०) तथा हितोपदेश के अङ्गरेजी अनुवाद किए। किन्तु पश्चिम में संस्कृत को विद्वन्मण्डली में लोकप्रिय बनाने वाला और उसके अध्ययन की ओर सर्वप्रथम ध्यान खींचने वाला सर विलियम जोन्स (१७४६-१७९४) था। यह १७८३ ई० में कलकत्ता में सुप्रीम-कोर्ट का जज बन कर आया था। १७८४ ई० में इसने पौरस्त्य वाङ्मय तथा ज्ञान-विज्ञान की शोध के लिए 'एशियाटिक सोसायटी' की स्थापना की। शीघ्र ही संस्कृत का उत्तम अभ्यास कर कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुन्तल' का अङ्गरेजी अनुवाद किया योरोप का काव्य रस प्रेमी समाज इसे पढ़ कर मुग्ध हो गया और उसका ध्यान संस्कृत की ओर आकृष्ट हुआ। किन्तु १८०२ तक भारतवासी अङ्गरेजों ने ही संस्कृत का अध्ययन किया था। इस वर्ष विधि के विचित्र संयोग से योरोप में इसका पठन-पाठन आरम्भ हुआ। इसका श्रेय नैपोलियन के युद्धों को है। हैमिल्टन नामक एक अङ्गरेज ने भारत में संस्कृत सीखी थी। वह १८०२ ई० योरोप होता हुआ इङ्गलैण्ड जा रहा था। उस समय फ्रांस का अङ्गरेजों के साथ युद्ध छिड़ गया। नैपोलियन ने फ्रांस में विद्यमान सब अङ्गरेजों को पेरिस में बन्दी बनाने की आज्ञा प्रचारित की। हैमिल्टन को पेरिस में पर्याप्त समय तक कैद में रहना पड़ा। यह उसके लिए अवश्य बुरा था, किन्तु संस्कृत के प्रचार के लिए यह बन्धन बड़ा शुभ हुआ। इस समय उससे कुछ फ्रैंच विद्वानों तथा जर्मन-कवि श्लीगल ने संस्कृत सीखी। श्लीगल ने १८०८ ई० में भारतीयों की भाषा और बुद्धिमत्ता पर एक पुस्तक छापी। इस से योरोप के भाषा-विज्ञान में क्रान्ति मच गयी। जर्मनी में संस्कृत-भाषा के अध्ययन के लिए इतना अधिक उत्साह पैदा हो गया कि वह इस क्षेत्र में सारे योरोप का नेता बना। जर्मन विद्वानों ने इस दिशा में सब से अधिक कार्य किया। अन्य देशों के बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन प्रारम्भ हो गया।

योरोप में संस्कृत के अध्ययन ने तुलनात्मक भाषा-विज्ञान और तुलनात्मक धर्म विज्ञान नामक दो महत्वपूर्ण विज्ञानों को जन्म दिया सब से पहले जोन्स को संस्कृत का अध्ययन करते हुए यह बात सूझी थी कि संस्कृत, लैटिन, यूनानी, फारसी, इंगलिश, फ्रेंच, जर्मन भाषाओं में समानता है। इसका कारण इनका एक मूल से प्रादुर्भूत होना है। अतः ये सब एक वंश से सम्बन्ध रखने वाली हैं। अब विद्वानों ने सब भाषाओं की तुलना कर उन्हें पृथक् वंशों में बांटना शुरू किया तथा उन के परिवर्त्तन तथा रूपान्तर के नियमों पर अधिक ध्यान दिया। १८१६ ई० में फ्रॉंज बापने संस्कृत के रूपों की यूनानी, लैटिन, फारसी तथा जर्मन से विस्तृत तुलना कर तुलनात्मक भाषा-शास्त्र को जन्म दिया। दूसरा विज्ञान तुलनात्मक धर्मशास्त्र था।। संस्कृत के अध्ययन के साथ योरोपियन विद्वानों को भारतीय धर्म और दर्शन का परिचय मिला। अब तक वे यूनानी साहित्य से ही परिचित थे, किन्तु अब उस से पुराने तथा बहुत ऊँचे धर्मिक विचारों का ज्ञान हुआ। मैक्समूलर आदि विद्वानों ने विविध आर्य-जातियों के धर्मग्रन्थों तथा देवताओं के स्वरूपों का अध्ययन कर तुलनात्मक धर्मशास्त्र की नींव रक्खी।

योरोप में संस्कृत ग्रन्थों के पहुँचने का एक प्रभाव यह भी हुआ कि उस ने १९ वीं शती के जमन-साहित्य पर अपनी स्पष्ट छाप छोड़ी। प्रसिद्ध जर्मन कवि गेटे कालिदास के 'अभिज्ञान-शाकुन्तल' को पढ़ कर बड़ा प्रभावित हुआ था। उसने इसकी प्रशंसा में एक जर्मन कविता भी लिखी थी। उसके प्रसिद्धतम नाटक फाउस्ट' के प्रारम्भिक भाग पर कालिदास के नाटक का स्पष्ट प्रभाव है संस्कृत नाटकों के प्रारम्भ में नान्दी के बाद सूत्रधार अभिनीत किए जाने वाले नाटक का परिचय देता है तथा इस सम्बन्ध में अपने साथियों से परामर्श करता है। 'फाउस्ट' में गेटे ने इसी पद्धति का अनुसरण किया। यह योरोप के लिए बिल्कुल नयी वस्तु थी। 'शाकुन्तल' का जर्मन-अनुवाद १७९१ ई०. में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हुआ और 'फाउस्ट' १७९७ ई० में लिखा गया। १८३० ई० तक गेटे का यह विचार था कि वह 'शाकुन्तल' को जर्मन रङ्गमञ्च के अनुरूप बना कर प्रस्तुत करे (मै. स. लि. पृ. ४१६-१७)। जर्मन-कवि हीन की कविताओं पर संस्कृत-साहित्य का गहरा असर है। अंग्रेज कवि एडविन अर्नोल्ड ने बुद्ध के जीवन पर बड़ा सुन्दर काव्य लिखा।

चौथा प्रभाव भारतीय दर्शन और धर्म का है। पिछली शती के मध्य में शोपनहार तथा फानहार्ट मात्र पर उपनिषदों का गहरा प्रभाव पड़ा। शोपनहार ने लिखा था कि उपनिषदें उसे जीवन में शान्ति-सन्तोष देने वाली हैं तथा मृत्यु के समय भी उसे इन से सान्त्वना मिलेगी। भौतिकवाद में आपादमस्तक निमज्जित पश्चिम को बौद्धधर्म, वेदान्त और महात्मा गांधी के अहिंसावादी दर्शन ने यत्किंचित् प्रभावित किया है। बौद्धधर्म पश्चिम को कई कारणों से अधिक आकर्षक प्रतीत हुआ है। इसमें आत्मा-परमात्मा का कोई पचड़ा नहीं, नैतिक आचरण की शुद्धता पर ही बल दिया गया है। बौद्धधर्म के प्रभाव का एक सुन्दर उदाहरण ब्रिटिश कवि सर एडविन अर्नोल्ड (१८३२-१९४०) की प्रसिद्ध रचना 'एशिया का प्रकाश' (दी लाइट ऑफ एशिया) या महाभिनिष्क्रमण (१८७९) है। इसमें बड़ी सरस कविता में भगवान् बुद्ध के जीवन की कथा वर्णित है। कट्टर ईसाई इस बात से बड़े रुष्ट हुए कि अर्नोल्ड ने ईसाई होते हुए भगवान् बुद्ध पर इतनी सुन्दर रचना क्यों लिखी। सम्भवतः उन्हें सन्तुष्ट करने के लिए उसने ईसा मसीह की पद्यात्मक जीवनी 'विश्व का प्रकाश' (दी लाइट ऑफ दी वर्ल्ड) के नाम से लिखी (१८९१ ई०), किन्तु इसमें उसे 'एशिया का प्रकाश' वाली सफलता नहीं मिली। वेदान्त को पश्चिम में लोकप्रिय बनाने तथा प्रसारित करने का सब से बड़ा श्रेय स्वामी विवेकानन्द और उनके शिष्यों को है। १८९३ ई० में शिकागो की सर्वधर्म परिषद् में हिन्दू-धर्म का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्होंने एक प्रभावशाली वक्तृता दी थी। इससे अमरीका में वेदान्त की धूम मच गयी। उसके बाद उनके अनेक शिष्यों तथा स्वामी रामतीर्थ आदि ने जड़वादी पश्चिम को आध्यात्मिक वेदान्त का सन्देश सुनाया। श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाओं और व्याख्यानों ने भी इस दिशा में पर्याप्त प्रभाव डाला है।

किन्तु इस समय सब से बड़ा प्रभाव महात्मा गांधी की अहिंसावादी विचारधारा का है, जिसमें मनुष्यता, आत्मशक्ति की उत्कृष्टता, आत्म-विजय, त्याग और सेवा के तत्व पर बल दिया गया है। विज्ञान ने मनुष्य को देवताओं की सी अलौकिक शक्ति प्रदान की है वह चाहे तो भूतल को स्वर्ग बना सकता है; किन्तु सकीर्ण और उग्र राष्ट्रवाद तथा साम्राज्य - लिप्सा के कारण पश्चिम विज्ञान-प्रदत्त देवताओं की शक्तियों का दानवों की भांति प्रयोग कर रहा है। दुनिया युद्ध-जर्जरित हो कर नरक बन रही है। इस समय महात्मा गांधी ने भारत तथा समूचे विश्व को अहिंसा का मार्ग दिखाया है। अभी तक महात्मा गांधी की अमर वाणी स्वार्थान्ध, साम्राज्यलोलुप राजनीतिज्ञों के बहरे कानों पर ही पड़ी हैं, किन्तु रक्तरंजित जगत् अणुबम का आविष्कार करने के बाद देर तक इसकी उपेक्षा नहीं कर सकता। पश्चिम इस समय आत्मघात के मार्ग पर तेजी से दौड़ रहा है, किन्तु अब वहां होम्ज, हक्सले, जोड़े आदि अनेक विचारक यह अनुभव करने लगे हैं कि विश्व के परित्राण का और कोई दूसरा मार्ग नहीं है। नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाये। आज भले ही पश्चिम उसे एक दम स्वीकार न करे, किन्तु शीघ्र ही उसे आत्मरक्षा के लिए महात्मा गाँधी द्वारा बताए अहिंसावाद की शरण में आना पड़ेगा।

इस समय योरोपियन राष्ट्रों की साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा से तृतीय विश्व युद्ध के काले बादलों की घटा छा रही है। चारों तरफ घना अन्धकार फैल रहा है। मानव जाति अपने सर्वनाश की आशंका से भयभीत और संत्रस्त है। किन्तु इस घोर तिमिर में बापू की अमर वाणी ही प्रकाश की एकमात्र किरण है घने बादलों में आशा की चमकीली रेखा है। अभी पिछले महायुद्ध की ज्वालायें पूरी तरह शान्त नहीं हुई कि नये महाभारत की आग सुलगाई जा रही है। भले ही कांटे से कांटा निकलता हो, किन्तु आग से आग नहीं बुझती,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह जल से ही शान्त होती है। विश्व को भस्मसात् कर देने वाले महायुद्धों के प्रचण्ड दावानल को बुझाने की सामर्थ्य योरोपियन राष्ट्रों या संयुक्तराष्ट्रसंघ के पास नहीं है, वह अन्तर्राष्ट्रीय परिषदों संधियों से शान्त नहीं हो सकती। बापू के अहिंसा सम्बन्धी उपदेशामृत पर आचरण ही उसे बुझा सकता है। उस समय भारत फिर संसार का गुरु बनेगा और विश्व की शान्ति में सहायक सिद्ध होगा।

गु० प०

★

गीत

श्री 'नीरव' एम० ए०

प्रिय, फूली यह संध्या फूली!

अवलोक रहे नव नीड़ विहग,
तम का स्वागत करता अग-जग,
नभ मुक्त क्षितिज की वेला का
परिरम्भ सजाती गोधूली!

श्वासों के स्वर भड़कने लगे,
ये हृदय-बाहु फड़कने लगे,
अभिराम तुम्हारे पलकों पर
झूली मेरी आशा झूली!

दो विदा आज, हो कल का हित,
कुछ रक्खो शेष अभी संचित,
होने दो स्वस्थ समावेशित
यह ममता भावों में भूली!

ये राग-अन्ध अभिमान छले,
देखूँगा कितना साथ चले,
कम्पित कर से मैंने सम्भ्रम
जिन चरणों की छाया छू ली!

★

गीत

श्री रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'

अलि, किसकी मधु स्मित पुलक-पुलक
मेरे मधुवन को चूम चली?

लघु उर में भर अगणित स्पन्दन,
प्रति स्पन्दन में शत-शत सपने!
अपने बेसुधपन में पुलकित,
मुकुलित कम्पित दृग-कली-कली!

अलि, किसकी मधु स्मित पुलक-पुलक
मेरे मधुवन को चूम चली?

चञ्चल श्वासों का शीत अनिल
जाने किसकी सुधि से क्षण-क्षण!
मृदु पुलकित पंखुरियाँ छू-छू
हँसता आता वह कौन छली?

अलि, किसकी मधु स्मित पुलक-पुलक
मेरे मधुवन को चूम चली?

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

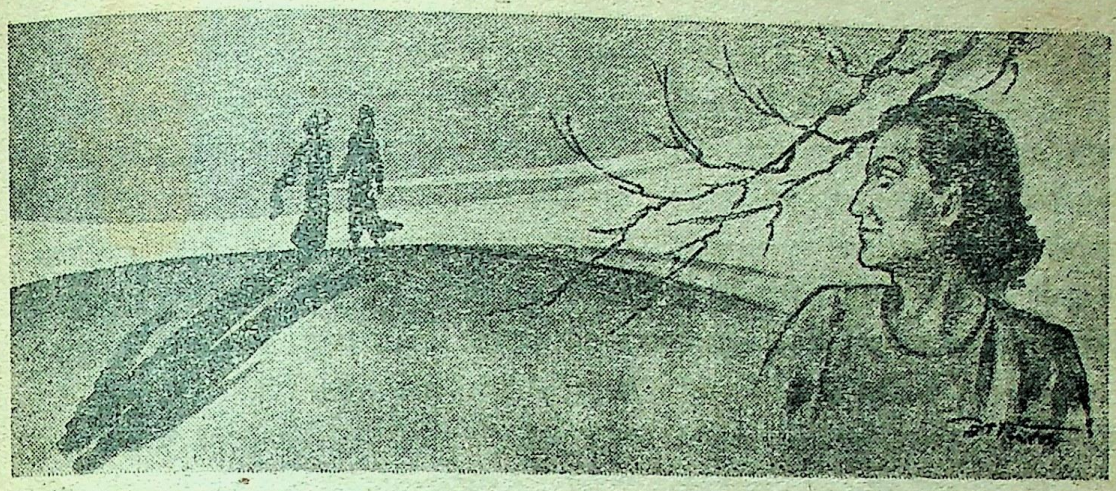

कहानी

वे दोनों

लेखक

श्री राजेन्द्र यादव

"अच्छा भई, अब चलें!" और मैंने मिलने को हाथ बढ़ाया।

"नहीं यार, चले जाना, अभी हमारी गाड़ी तो आने दो। हमें बैठा कर जाना। तुम्हें कुछ काम तो है ही नहीं।" बालेश्वर ने मेरा हाथ पकड़ लिया।

"जी हां, काम क्यों होने लगा, हम भी तुम्हारी तरह आवारा ही हैं न!" फिर मैंने खुशामद भरे शब्दों में कहा, "नहीं यार, जाने दो, नहीं तो सच, आज बड़ा भारी नुक्सान हो जाएगा। अगर मैं आज छः बजे तक नहीं पहुँच गया तो विश्वास मानो, फादर चले जाएँगे। उनसे कुछ लेना था। फिर न कहीं जाने के, न आने के, छुट्टियों भर यहीं सड़ो।"

"अरे, हां-हां, तो चले जाना। अभी तो सवा पांच ही बजे हैं। हमारी गाड़ी पौने छः पर आ जाएगी, बैठाते ही चल देना।" फिर प्लेटफॉर्म के किनारे पर जाकर बालेश्वर ने झुक कर सिग्नल देखा। "हां, तो तुम क्या कह रहे थे, किसके रोमांस की बात?"

"अच्छा, वो!" मैं हँसा, "वो कुछ नहीं बता रहा था कि मुझे तो बड़ी हँसी आती है देख-देख कर। दफ्तर है न राशन का, वहां जाना पड़ता है कभी-कभी। वहां देखता हूं, दुर्भाग्य से इस बार सीनियर इन्सपेक्टर हो कर आई है एक स्त्री। पहिले वह घरों के अन्दर इन्क्वायरी (जांच) किया करती थी। दो क्लर्क हैं छोटे-छोटे, होंगे कोई बीस-इक्कीस वर्ष के। और वह महोदया कोई तीस से भी ऊपर—शृङ्गार की शौकीन। जब वे अपनी पेज पर बैठती हैं, तो दोनों क्लर्क काम और बिना काम के आते हैं—थोड़ी-थोड़ी देर के पश्चात्—'एस० आई० साहब, यह बात, एस० आई० साहब, वह बात।' उन्हें देख-देखकर मुझे बड़ी हँसी आती है। कैसे हैं वे लोग भी!"

"अरे, इसमें क्या है! हम सुनाएं तुम्हें बचपन का एक रोमांस। समय भी कटेगा।" और फिर बालेश्वर बड़ा रस ले-लेकर किसी बड़े घटना-प्रधान उपन्यास के कथानक का संक्षिप्तीकरण-सा सुनाने लगा। मैं कभी प्लेटफॉर्म पर आने-जाने वाले व्यक्तियों, खोमचे वालों को देख लेता, कभी उसकी कथा सुनता।

"एक जीवित रोमांस तो यह देखो," मैंने धीरे से बालेश्वर से कहा। तभी पास से एक युवक और युवती गुजरे। युवक की आयु होगी कोई तेईस वर्ष की। नीली जर्सी, सफेद पेण्ट वह पहिने था। एक हाथ में रूमाल कभी कलाई में बांध लेता, कभी खोल लेता। बगल में उसके कई पुस्तक दबी हुई थी। लड़की कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अठाइस-बीस वर्ष की होगी। सफेद उलटे पल्ले की धोती और नीली चैस्टर। बालों का जूड़ा बंधा था। एक हाथ में दो सोने की चूड़ियां था कानों में टॉप्स और कोई गहना वह नहीं पहने थी। अपने दोनों हाथों को पीछे ले जाकर एक दूसरे में पकड़े हुए थी। दोनों बड़े आराम से धीरे-धीरे कदम रखते हुए टहलते निकल गए। कभी लड़की कुछ बात कहती तो लड़का पहिले से सावधानी से सुनने का भाव दिखाता, फिर धीरे से हँस देता। फिर कभी लड़का कहता तो ओठों में हल्की मुस्कराहट को बन्दिनी बना कर लड़की सुनती फिर खिलखिला कर चांदनी में खीलें बखेर देती। दोनों प्लेटफॉर्म के दूसरे सिरे पर चले गए। उन लोगों की पीठ हमारी तरफ थी। बालेश्वर देखने लगा

दोनों पति-पत्नी तो हैं नहीं इतना मैं अपने मनोविज्ञान के आधार पर कह सकता हूँ!" मैंने एक अनुभवी मनोवैज्ञानिक की भांति कहा, "लड़के का जरा-सा मुँह देखा था मैंने, बस तभी जान लिया कि वे पति पत्नी नहीं हैं।"

"हां, यह तो है ही," बालेश्वर ने सलवटदार माथे के ऊपर सिर खुजलाते हुए कहा, "हमारे कॉलेज के तो हैं नहीं। मैंने इन दोनों में से किसी को नहीं देखा—कम से कम 'मैमोरी' (स्मरण-शक्ति) मेरी बहुत तगड़ी है।"

अब वे दोनों उसी प्रकार बातें करते, टहलते लौट रहे थे। मुँह अब उन दोनों के देखे जा सकते थे। दोनों सुन्दर और विद्यार्थी जैसे लगते थे।

"तो किस कॉलेज के हैं···? कॉलेज के तो हैं नहीं। मुझे ऐसा ध्यान है, मैंने इस लड़के को कभी उस कॉलेज से निकलते नहीं देखा," मैंने कहा, "लेकिन तीन साल तो हमें हो गए, हमारे कॉलेज में तो लड़के-लड़कियां इस तरह घूमते नहीं हैं। लड़कियां बड़ी दबू हैं वहां की। अपने को न जाने क्या समझता है कॉलेज में घूमते हों तो घूमते हों। कहीं मेडीकल कॉलेज के तो नहीं हैं?"

"लड़की के बारे में तो मैं शर्त बद सकता हूँ, मेडीकल कॉलेज की नहीं। मेडीकल कॉलेज वालियों के मुख पर इतनी स्निग्धता कहाँ। रूखा और नीरस मुँह होता है उनका।" विद्वानों की भांति बालेश्वर बोला। फिर अचानक से मेरे हाथ पर हाथ मार कर उसने अपने पैर जरा इधर-उधर किये "कैसे प्रेम से घूम रहे हैं दोनों! यार, मजा आ रहा है सच!"

और वह हँसने लगा। मुझे लगा, उसके मुँह से लार टपक पड़ेगी।

अब वे दोनों बातें करते हुए हमसे प्रायः चार गज की दूरी तक आ गए, फिर सहसा घूम कर टहलते-टहलते चल दिये। मेरी इच्छा हो रही थी कि लड़की का मुँह देखा जाय—देखा जाय कि बातें करते समय कैसी मुद्रा उसकी होती है। लड़के के बाल काफी सावधानी से संभाल कर पीछे काढ़े हुए थे। मुझे अपने बालों का भी ध्यान आ गया न जाने कैसे अस्त-व्यस्त से वे होंगे। बालेश्वर जेब से रूमाल निकाल कर अपने जूते झाड़ रहा था मैंने अपनी पेण्ट की क्रीज ठीक की। मुँह पोंछा। धीरे से हाथ बालों पर भी फेर लिया।

"यार, बड़े व्यस्त हैं, जरा भी इधर-उधर नहीं देख रहे। क्या बातें कर रहे हैं ऐसी?" मैंने चिन्तित स्वर में पूछा।

"होंगी यार, कुछ ऐसी ही प्रेम की बातें। वे क्या कभी समाप्त होना जानती हैं!" बालेश्वर ने उपेक्षा का भाव दिखा कर कहा, "ऐसे ही हम और वह जब बातें करते थे, तो सारा दिन निकल जाता था। मालूम ही नहीं पड़ता था समय। आज जब मैं सोचता हूँ कि क्या बातें करते थे, तो मालूम होता है, कुछ नहीं···"

और उसका किस्सा चल दिया। बीच-बीच में वह कभी छिपी दृष्टि से उधर देख लेता था।

वे दोनों अब लौट रहे थे। प्लेटफॉर्म पर चार-पांच लड़के और दिखाई दिये। शायद वे भी कौतूहल-ईर्ष्यामिश्रित दृष्टियों से उन्हें देख रहे थे। मैंने सब पर दृष्टि डाली और लड़की के साथ वाले लड़के को देखा अनायास ही यह बात मेरे मस्तिष्क में आ गई कि कम से कम इनमें सबसे सुन्दर मैं हूं। उस लड़के के कान कुछ बड़े हैं, रङ्ग काला है। बालेश्वर की आंखें कुछ गड्ढे में घुसी हुई हैं, और वह लड़की के साथ वाला लड़का मरियल, लम्बा और अस्वस्थ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालेश्वर अपनी कथा कह रहा था, पर मैं उसकी बातों पर इस प्रकार मुस्कराने की चेष्टा कर रहा था, जैसे विद्वान् प्रोफेसर किसी लड़के की अनुभवहीन बातों पर धीरे-धीरे मुस्कराता हो अब वे लोग लौट रहे थे।

"क्यों भई, इनके मां-बाप भी कैसे अन्धे हैं। वहां सोच रहे होंगे, हमारी सुपुत्री विद्वान् होकर लौट रही हैं और यहां ये अनुभव प्राप्त कर रही हैं किन्हीं और ही बातों का!"

"मां-बाप सभी अन्धे होते हैं और कॉलेज की लड़कियां सभी ऐसी होती हैं तू हमारी बात तो सुन।" झुंझला कर बालेश्वर ने फिर अपनी बात कहनी प्रारम्भ कर दी, मानों संसार में ऐसे रोमांस हजारों होते रहते हैं, उसे इनकी तरफ तनिक भी उत्सुकता नहीं है। पर फिर भी वह छिपी आंखों से उन्हें देखता था।

वे लोग लौट कर उधर आ रहे थे। काफी घनिष्ट मालूम पड़ते थे। कम से कम दो वर्ष का तो इनका परिचय होना ही चाहिये। खूब पत्र-व्यवहार इनमें चल रहा होगा। छुट्टियों में एक दूसरे के लिये व्यथित रहते होंगे।

तभी एक शरणार्थी मरी-सी बुढ़िया, फटे-चीथड़े पहिने हाथ बढ़ाये आई, "बाबू साहब, भगवान् दया करेंगे, ईश्वर उमर बढ़ाएगा···!"

"चलो, आगे जाओ," बालेश्वर ने कहा और अपना किस्सा कहता हुआ उधर देखने लगा वह अपनी बातों को इस प्रकार कह रहा था जैसे अनन्त ज्ञान से भरे हुए कोष को धीरे-धीरे सावधानी से खोल रहा हो।

बुढ़िया धीरे-धीरे उन्हीं के पास पहुँच गई। मैं उत्सुकता से देखने लगा कि वे दोनों क्या करते हैं, शायद झिड़क दें। पहिली बार लड़के ने हाथ से मना कर दिया और आगे जाने का संकेत किया। पर फिर बुढ़िया गिड़गड़ाती हुई दिखाई दी क्या कहा, सुनाई नहीं देता था लड़की शायद मुस्कराई और पैसा लेने के लिये लड़के की ओर हाथ बढ़ाया। लड़के ने जरसी के अन्दर हाथ डाल कर बटुआ निकाला, उसमें से कुछ निकाल कर लड़की के हाथ पर रख दिया। लड़की ने एक सिक्का बुढ़िया के हाथ में डाल दिया और दूसरा हाथ में ही लिये रही। बुढ़िया आशीर्वाद देती चली गई। दोनों घूमते हुए हमारे पास आए, फिर घूम कर लौट पड़े लड़की ने धीरे से वह दूसरा सिक्का लड़के की पेण्ट की जेब में डाल दिया। ओफ! मैं सिहर उठा सोचने लगा, बुढ़िया ने क्या कहा होगा? कहा होगा, जोड़ी बनी रहे, प्रेम अमर हो! या ऐसा ही कोई वाक्य। तभी तो मुस्करा कर वह पैसे दे रही थी।

"क्यों बालेश्वर इन लोगों का यदि प्रेम-विवाह हो जाए, तो क्या यह लोग सुखी रह सकेंगे?"

"दो-एक वर्ष। पर यार, तू सुन नहीं रहा, हमारी कहानी तो अब क्लाइमेक्स पर है" वह झुँझला उठा।

"हां सुन रहा हूँ ध्यान से, वैसे ही पूछा!" और फिर मैं उनके विषय में सोचने लगा। कैसे वे लोग पहिले मिले होंगे, अब शायद संसार की किसी भी बात की चिन्ता उन्हें नहीं है।

तभी सब लोग उठ-उठ कर खड़े होने लगे। रेल की गड़गड़ाहट सुनाई देने लगी थी। थोड़ी देर में भयङ्कर दैत्य-सी गरजती ट्रेन प्लेटफॉर्म पर आकर खड़ी हो गई।

"बालेश्वर, तुम पीछे चढ़ना, पहिले उन्हें देखलें कहां चढ़ते हैं," मैंने कहा आदमी चढ़-उतर रहे थे। सामान रखा उतारा जा रहा था प्लेटफॉर्म पर खूब शोर था। पर वे दोनों बड़े निश्चिन्त भाव से टहलते हुए—जैसे उन्हें कोई शीघ्रता नहीं है—फर्स्ट क्लास का एक छोटा-सा डिब्बा खोलकर उसमें घुस गए। फिर द्वार बन्द करके शीशा चढ़ा लिया हमारी जिज्ञासा अब आंखों पर आ गई। बार-बार इच्छा हो रही थी, देखें उसमें किस तरह बैठे हैं दोनों।

बालेश्वर उसके पास वाले डब्बे में चढ़ गया। इण्टर था खूब बड़ा और भरा। एक लड़के ने मुस्करा कर पूछा, "कहिये भाई साहब, क्या देख रहे हो?"

"बड़ा मसाला है देखने का। आप भी देख लीजिये न झांक कर!" बालेश्वर ने हँसते हुए कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इतना तो मैं विश्वास दिला ही सकता हूं कि इनमें टिकट एक के भी पास नहीं है," मैंने कहा।

वह लड़का धीरे धीरे टहलता हुआ पेण्ट की जेब में हाथ डाले उस डिब्बे में देखता हुआ चला गया। फिर धीरे-धीरे लौटा। हमारे पास आकर बोला, "कुछ दिखाई नहीं देता। दूसरी ओर से भी खिड़कियां चढ़ी हैं।"

"यह तो बड़ी होपलैस (निराशाजनक) चीज है।" मैंने कहा। फिर जरा जोर से बोला, "छोड़ो यार, इनका भी इतिहास बन जाने दो आज का!"

"अच्छा भई, बना लेने दो इन्हें भी इतिहास!" बालेश्वर ने कहा, निराशा से।

"आपको मालूम है, इनके पास टिकट नहीं है?" उन तीसरे सज्जन ने पूछा। वे इस प्रकार तटस्थ दर्शक रह कर ही सन्तोष नहीं प्राप्त कर सके थे शायद।

"हां, इसका तो विश्वास है" बालेश्वर ने बताया।

"तो ठहरिये, अभी पकड़वाता हूं टी० टी० से!" और वे टी० टी० को ढूंढने भीड़ में चले गए।

गार्ड कई बार सीटी दे चुका था। अब एक ओर खड़ा हरी झण्डी हिला रहा था। गाड़ी चली, बालेश्वर चढ़ गया, बोला, "अच्छा भई, नमस्ते! छुट्टियों बाद मिलेंगे!"

मैं भी झपटकर उसी डिब्बे में चढ़ गया।

"अरे-अरे, तू कहां जा रहा है? उतर!" बालेश्वर ने जल्दी मचाते हुए कहा।

"मजा देखेंगे यार, जरा अगले स्टेशन पर!" मैंने निश्चिन्तता से कहा और पास वाले फर्स्ट क्लास के बन्द डिब्बे को देखा।

"अरे वाह! पौने छः बज गए, तेरे फादर चले जाएंगे। उतर जा अब भी, गाड़ी तेज नहीं हुई है।"

"अरे, सब होता रहेगा। एक तरफ हट, मुझे आने दे!" और मैं ऊपर चढ़ गया।

"तू व्यर्थ ही आ गया!"

"ये मजा रोज रोज थोड़े ही देखने को मिलता है। वह टी० टी० को बुला कर लाएगा। अगले स्टेशन में लौट आऊँगा।" और मैं डिब्बे के दूसरी ओर के दरवाजे में जाकर देखने लगा, किन्तु वह डिब्बा उन लोगों ने उधर से भी बन्द कर रखा था। मैं कभी इधर वाले, कभी उधर वाले दरवाजे से झांककर देखने लगा।

खूब तेज होकर गाड़ी धीमी पड़ गई। आगे एक छोटा-सा स्टेशन आ गया था। अचानक शीशा खोल कर लड़के ने जरा-सा मुँह निकाला और झट अन्दर करके शीशा चढ़ा लिया—शायद देखने को कि कौन सा स्थान है। मैं यदि पहिले से तनिक भी सावधान होता, तो देख लेता वह लड़की किधर है।

गाड़ी रुकते ही वह सज्जन दिखाई दिये। टी० टी० के साथ चले आ रहे थे। वह फर्स्ट क्लास का डिब्बा दिखा कर बोले, "इसी में!"

गाड़ी बहुत कम यहां रुकती थी, चल दी। टी० टी० हमारे डिब्बे में चढ़ आया। साथ ही वह सज्जन भी।

"कौन कौन हैं," टी० टी० ने हम लोगों से उत्सुकता से पूछा। वह झांक कर उस डिब्बे की ओर देखने लगा।

"बड़ा तर मसाला है," बालेश्वर ने पान-सा मुँह में सटक कर कहा। टी० टी० भी अभी युवा ही था, अतः बालेश्वर ने समझाया, "कॉलेज के लड़के लड़की हैं। रोमांस लड़ाते चले आ रहे हैं। पिछले स्टेशन से हम उन्हें देख रहे हैं"

"अच्छा वे!" टी० टी० का स्वर ढीला पड़ गया, "वे रोमांस वालों में से नहीं हैं, वे भाई-बहिन हैं"

"अरे, मरे भाई-बहिन!" मैंने तेजी से कहा, "प्रेयसी को बहिन कहना तो आज का फैशन है"

"जी नहीं," टी० टी० बोला, "मैं उन्हें बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। पिछले स्टेशन मास्टर के लड़के-लड़की हैं। खास भाई-बहिन। अच्छा, अब आपका टिकट?" उसने मेरी ओर उंगली उठाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के दैनिक पत्र

श्री 'शिरीष'

आजकल खाना खाने की तरह अखबार पढ़ना भी आवश्यक होता जा रहा है। लेकिन इतनी आवश्यक वस्तु कैसे तैयार होती है, इसमें क्या अच्छाई या बुराई हो सकती है, हिन्दी के दैनिकों में क्या क्या त्रुटियां हैं, इन सब बातों को बहुत कम पाठक जानते हैं।

समाचार-संग्रह

दैनिक पत्र के कार्य में सबसे अधिक महत्व समाचार-संग्रह का है। प्रायः सभी हिन्दी दैनिक ए० पी० आई० (अब पी० टी० आई०), यूनाइटेड प्रेस, रायटर आदि समाचार एजेंसियों के ग्राहक हैं। इन एजेंसियों के अतिरिक्त बहुत-सी सामग्री पत्रों को केन्द्रीय सरकार के तथा प्रान्तों के प्रकाशन-विभागों से मिलती है। फिर, विदेशी दूतावासों के प्रचार-विभाग भी विशेष लेख, समाचार, वक्तव्य आदि पत्रों को बराबर भेजते हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, इंडोनेशिया और रूस के दूतावासों से तो प्रकाशन सामग्री हिन्दी में तैयार होकर हिन्दी पत्रों को पहुँचती है। बहुत से प्रकाशन-विभाग अंग्रेजी ही में सब सामग्री भेजते हैं। प्रायः सभी विभाग चित्र आदि भी पत्रों को देते हैं।

समाचार के ये मूल साधन हैं। किन्तु सभी प्रतिष्ठित पत्रों के अनेक शहरों में अपने संवाददाता भी होते हैं। वे भी कुछ न कुछ भेजते ही रहते हैं। प्रश्न यह उठता है कि इस विपुल सामग्री का उपयोग कैसे किया जाय। सारी सामग्री तो इस योग्य होती भी नहीं कि उसे छापा जाय। किन्तु फिर भी यदि सब पत्रों से काट-छांटकर थोड़ी ही सामग्री ली जाय, तब भी स्थानाभाव की समस्या बनी रहेगी। हिन्दी-पत्रों का कलेवर तो प्रायः चार पृष्ठ ही का होता है। कभी-कभी ६ पृष्ठ हो जाते हैं। इन पृष्ठों में तो प्रमुख समाचार एजेंसियों के भी सब समाचार नहीं आ सकते। विशेष लेख, सम्पादक के नाम पत्र और विशिष्ट स्तम्भों की तो बात ही दूर रही।

इन सब समाचारों को पढ़ने, काटने और प्रकाशनार्थ तैयार करने के लिए निश्चय ही बहुत अनुभव और समझ की अपेक्षा है। कोई दैनिक किस कोटि का है—प्रथम, द्वितीय और तृतीय—इस बात का निर्णय प्रकाशित समाचार ही करते हैं। यदि स्थान पर्याप्त हो, तो काट-छांट कम करनी पड़े और सहायक सम्पादक को सुविधा रहे; किन्तु जहां उपलब्ध सामग्री के चौथे हिस्से या इससे भी कम के लिए ही स्थान है, वहां सम्पादक का दायित्व और भी बढ़ जाता है। वह क्या फेंके, क्या रखे और किस समाचार को कितना संक्षिप्त करे, ये प्रश्न बड़े गम्भीर हैं और समाचारपत्र की कोटि इन्हीं पर निर्भर होती है।

खेद का विषय है कि इस परीक्षण में आधे दर्जन से अधिक हिन्दी-पत्र पास नहीं होते। शेष पत्रों में जो समाचार छपते हैं—वे प्रायः अधूरे, एकदेशीय और असन्तोषजनक होते हैं। कहीं साधारण-सा समाचार पूरा दे दिया जाता है और अनेक समाचार बिल्कुल दिये ही नहीं जाते। कम से कम बहुत से महत्वपूर्ण समाचार तो छूट ही जाते हैं मुझे चार साल पहले की एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

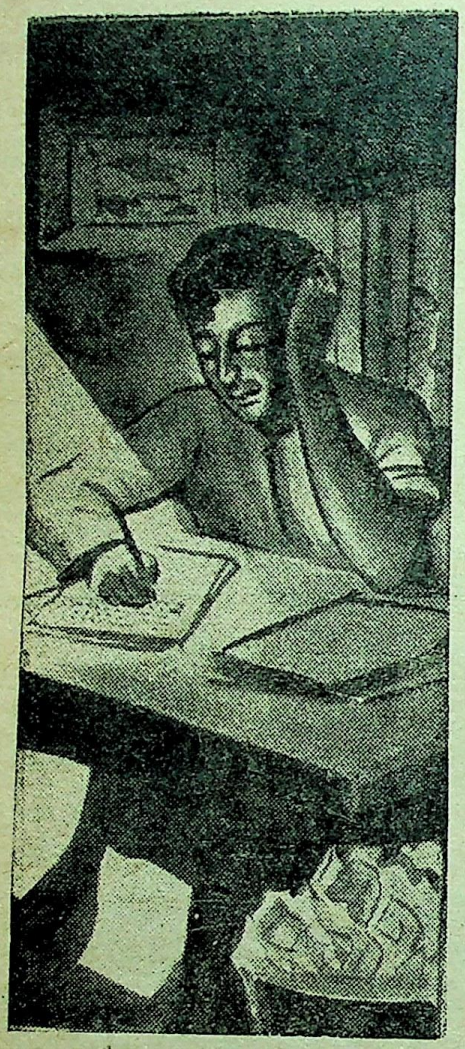

सम्पादक जी !

घटना याद आ गयी। एक चाय-पार्टी में श्री घनश्याम दास बिड़ला से किसी स्थानीय पत्रकार ने पूछा कि वे प्रातःकाल 'हेन्दुस्तान टाइम्स' पढ़ते हैं या 'हिन्दुस्तान'? बिड़ला जी ने स्पष्ट शब्दों में उत्तर दिया—'नित्य-प्रति निमयपूर्वक तो 'हिन्दुस्तान टाइम्स' ही पढ़ता हूं। कभी-कभी जब समय मिलता है तो 'हिंदुस्तान' भी देख लेता हूँ।" उक्त पत्रकार ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि यदि आप ही हिन्दी के समर्थक होते हुए ऐसा करेंगे, तो हिन्दी-पत्रों का भगवान ही मालक है। बिड़लाजी ने इसका जो उत्तर दिया वह चार वर्ष के बाद आज भी मेरे कानों में गूंजता है। उन्होंने कहा—"मैं मानता हूं कि हिन्दी-पत्रों को प्रोत्साहन मिलना चाहिये परन्तु क्या आप मुझे किसी ऐसे हिन्दी-पत्र का नाम बताने का कष्ट करेंगे, जिसे पढ़ कर सारे समाचारों का पता लग जाय और फिर किसी और पत्र को पढ़ने की आवश्यकता न रहे?" उस प्रश्न का उत्तर किसी को भी कुछ नहीं सूझा सूझता भी कैसे, ऐसा पत्र है ही कोई नहीं। कम से कम उन दिनों तो नहीं था।

यह स्थिति चिन्ताजनक है। यह तो सम्भव नहीं कि प्रत्येक पाठक एक से अधिक पत्र खरीदा करे। यदि अँग्रेजी के पत्र ऐसे हो सकते हैं कि उनमें से एक को ही पढ़ कर सब समाचार जाने जा सकते हैं, तो फिर हिन्दी के पत्र ऐसे क्यों न हों? आप फिर स्थानाभाव का प्रश्न उठाना चाहेंगे। उसमें कुछ सचाई है, परन्तु इस आपत्ति का पूर्ण उत्तर नहीं। प्रश्न उठता है कि क्या उपलब्ध स्थान का सभी पत्रों में सदुपयोग हो रहा है? एक नहीं अनेक अङ्क किसी भी पत्र के ऐसे मिलेंगे, जिनमें उपलब्ध स्थान का उचित उपयोग नहीं किया गया है। कारण चाहे कुछ भी हो, साधारण अङ्क में कहानी अथवा गले-सड़े, पुराने लेख छापना स्थान का सदुपयोग नहीं कहा जा सकता।

कहने का अभिप्राय यह है कि साधारणतः हिन्दी-पत्रों में समाचार कम होते हैं एजेंसियों द्वारा जो समाचार पत्रों को मिलते हैं, उन्हें इस ढंग से सम्पादित करने का प्रयत्न नहीं किया जाता कि महत्वपूर्ण सम्वाद को अधिक स्थान मिले और गौण सम्वाद को थोड़ा। समाचारों को ठीक से, संक्षिप्त ढंग से लिखने की प्रवृत्ति कम है। यही कारण है कि कुछ एक अपवाद छोड़ कर किसी एक हिन्दी-पत्र पर कोई भी पाठक पूर्ण जानकारी के लिए निर्भर नहीं रह सकता।

अब लीजिये सम्वाद प्राप्त करने के निजी साधन, अर्थात् हर पत्र के निजी सम्वाददाता। इस क्षेत्र में तो हिन्दी के पत्र बहुत ही पिछड़े हुए हैं। बङ्गला, गुजराती, मराठी और यहां तक कि कुछ उर्दू के पत्र भी हिन्दी के पत्र से बाजी ले जाते हैं। विदेशों में किसी पत्र की प्रतिष्ठा उसके सम्वाददाताओं द्वारा भेजे जाने वाले विशेष समाचारों से ही आँकी जाती है। अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के पत्र सम्वाददाताओं पर काफी खर्च करते हैं। हिन्दी-पत्र जगत में अभी भी इन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित स्थान प्राप्त नहीं हुआ है। और शहर तो छोड़िये, प्रान्तीय राजधानियों तथा दिल्ली तक में ६० प्रतिशत हिन्दी दैनिकों के प्रतिनिधित्व की कोई उचित व्यवस्था नहीं। अनिवार्यतः इसका परिणाम सम्बद्ध सरकारों द्वारा हिन्दी-पत्रों के मान अथवा प्रभाव की उपेक्षा ही होती है। वास्तव में सरकारी क्षेत्र अधिक दोषी नहीं, या यों कहिये वे ठीक उतने ही दोषी हैं जितने स्वयं पत्र। कम से कम भारत की राजधानी में तो सभी अच्छे दैनिकों के प्रतिनिधि होने चाहियें। स्वयं पत्रों के हित की दृष्टि से भी यह आवश्यक है कि वे नई दिल्ली के ज्ञातव्य तथा अज्ञातव्य और प्रकाशनीय तथा अप्रकाशनीय गतिविधियों से पूर्ण रूप से अवगत रहें। अन्य नगरों में भी सम्वाददाता नियुक्त करना आवश्यक है। जो पत्र एजेंसियों द्वारा भेजे गये समाचारों पर ही सन्तोष करते हैं, उन्हें उच्च कोटि के समाचारपत्र नहीं कहा जा सकता।

सम्पादन

अब रही बात सम्पादन की। इस दिशा में गत दस वर्षों में जो प्रगति हिन्दी ने की है, वह सन्तोषजनक कही जा सकती है। प्रथम कोटि के पत्रों में सम्पादन की अशुद्धियां कम देखने को मिलती हैं। जो अशुद्धियां होती भी हैं, वे प्रायः या तो दोषपूर्ण मुद्रण का फल होती हैं अथवा उसके कारण अधिक गम्भीर दिखाई देती हैं। कम से कम समाचार-सम्पादन का स्तर तो इन दिनों काफी ऊँचा हो चला है। किन्तु फिर भी इस बात के चिह्न स्पष्ट दिखाई देते हैं कि सभी समाचारों पर बराबर परिश्रम नहीं होता। प्रायः कई एक चीजें इतनी अशुद्ध होती हैं, जिनके बारे में यह मानना कठिन है कि उन्हें किसी ने भी कम्पोज कराने से पहले ठीक से देखा होगा। द्वितीय श्रेणी के पत्रों के किसी भी संस्करण में अनेक असम्पादित चीजें पढ़ने को मिलती हैं। विदेशी नाम और विदेशी समाचारों में आने वाले स्थान आदि के बारे में सहायक सम्पादकों को जितनी जानकारी होनी चाहये, उतनी नहीं है।

बहुत से विदेशी नाम भिन्न पत्रों में भिन्न रूप से लिखे जाते हैं। एक पत्र स्टालिन लिखता है, तो दूसरा स्टालीन लिखता है। इसी प्रकार एटली, वेवल, आइसेनहोवर, मांटगोमरी, फिलिपाइन्स, बैंकॉक, फिलस्तीन, आरजेंटाइन, चिली आदि शब्द हिन्दी पत्रों में वर्षों से भिन्न-भिन्न रूप से लिखे जा रहे हैं। यह अनेक रूपता विदेशी नामों तक ही सीमित नहीं। भारतीय नेताओं और स्थानों के नाम भी अलग अलग ढङ्ग से लिखे जाते हैं, जैसे किदवई को कोई किडवई कोई किदवई और कोई किदवाई लिखता है। इसी तरह मथाई, मुदालियर, पाटिल, विजयलक्ष्मी आदि नामों का और त्रावणकोर, मद्रास, सलेम, नयी दिल्ली आदि प्रसिद्ध स्थानों को आज भी भिन्न-भिन्न रूप से लिखा जा रहा है। इस सम्बन्ध में भी सभी नामों का रूप निश्चित करना आवश्यक है। भारतीय पत्रों में ही भारतीय नामों के रूप भी भांति-भांति के हों, यह हमारे पत्रों के लिए श्रेय की बात नहीं है। किसी संस्था अथवा पत्रकार-संघ का यह कर्त्तव्य होना चाहिये कि इस दिशा में यथोचित कार्रवाई करे।

'आज' से

★

डोंगरे का बालामृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul K...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय-पुस्तक भण्डार की सामयिक पुस्तकें

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा

इस पुस्तक में लेखक ने भारत एक और अखण्ड रहेगा, भारतीय विधान का आधार भारतीय संस्कृति पर होगा, इत्यादि विषयों का प्रतिपादन किया है। मूल्य १॥) रुपया।

जीवन में विजय प्राप्त करने के लिये

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

संशोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय ललकार एक ही साथ है पुस्तक हिन्दी भाषियों के लिये मनन और संग्रह के योग्य है मूल्य १) डाकव्यय ।-)

श्री इन्द्र वद्यावाचस्पति की

'जीवन की झाँकियाँ'

प्रथम खण्ड-दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन, मू०॥)
द्वितीय खण्ड—मैं चिकित्सा के चक्रव्यूह से कैसे निकला! मूल्य ॥)
तीसरा खंड-मेरे नौकरशाही जेल के अनुभव, मू० १)
तीनों खण्ड एक साथ लेने पर मूल्य १॥)

सामाजिक उपन्यास

सरला की भाभी

[ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

इस उपन्यास की अधिकाधिक मांग होने के कारण पुस्तक प्रायः समाप्त होने को है। आप अपनी कापियें अभी से मंगा लें, अन्यथा इसके पुनः मुद्रण तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी।

मूल्य २)

हिन्दू संगठन हौआ नहीं है

अपितु

जनता के उद्बोधन का मार्ग है।

इसलिये

हिन्दू-संगठन

[लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी]

पुस्तक अवश्य पढ़ें। आज भी हिन्दुओं को मोहनिद्रा से जगाने की आवश्यकता बनी हुई है, भारत में बसने वाली प्रमुख जाति का शक्ति सम्पन्न होना राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने के लिये नितान्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। मूल्य २)।

पं० मदनमोहन मालवीय

[श्री रामगोविन्द मिश्र]

महामना मालवीय जी का क्रमबद्ध जीवन वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का सजीव चित्रण। मूल्य १॥) डाक व्यय ।=)

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

नेता जी के जन्मकाल से सन् १९४५ तक, आजाद हिन्द सरकार की स्थापना, आजाद हिन्द फौज का संचालन आदि समस्त कार्यों का विवरण। मूल्य १) डाक व्यय ।=)

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

जवाहरलाल क्या हैं? वे कैसे बने? वे क्या चाहते हैं और क्या करते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेगा।

मूल्य १।) डाक व्यय =)

प्राप्ति स्थान—विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

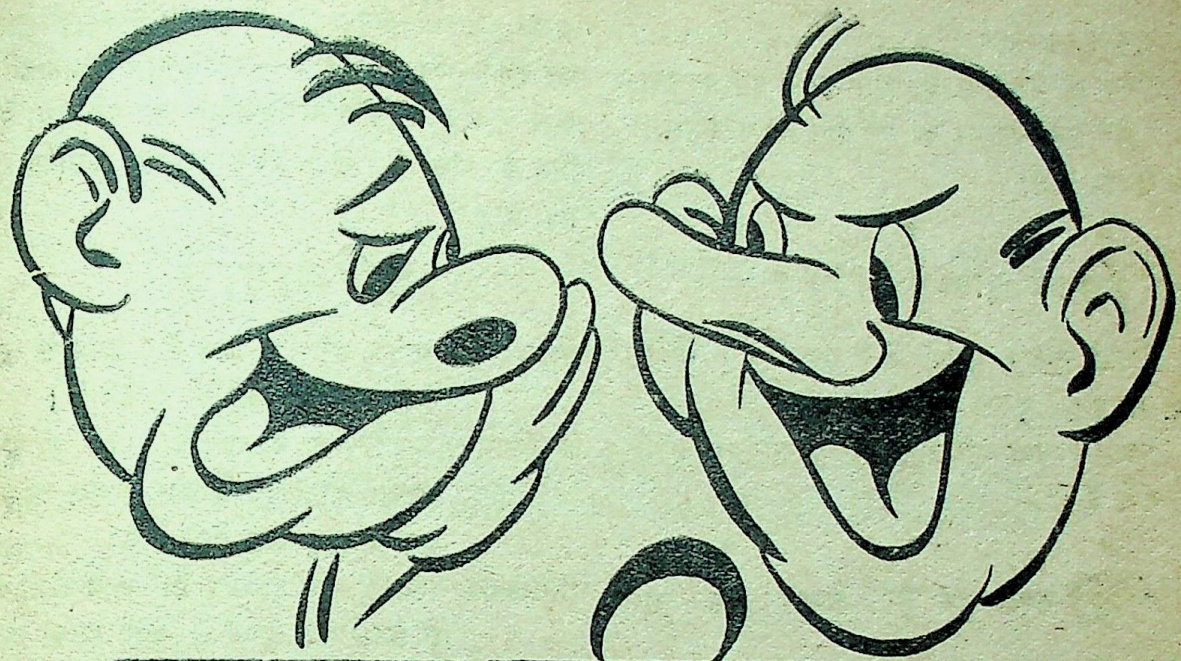

हास-परिहास

"कोई ऐसा अच्छा तरीका बताइये, जिससे सरकार को आमदनी भी होती रहे और जनता का भी हित हो।"

"प्रत्येक राजनैतिक भाषण पर कर लगा दीजिये!"

* * *

गोष्ठी समाप्त हो चुकी थी। एक आदमी जूता पहन रहा था कि इतने में दूसरा आदमी उसके पास पहुँचा और बड़ी नम्रता से बोला, "क्या आप ही सुरेशचन्द्र 'वियोगी' हैं?"

"नहीं!" उत्तर मिला।

"तो वह मैं हूं और उसी का यह जूता आप पहन रहे हैं!" दूसरे आदमी ने अत्यन्त शुष्कता से कहा।

* * *

दो मित्र खूब गहरी छान कर नाव में सवार हुए। बीच नदी में आंधी के कारण नाव डांवाडोल होने लगी। एक बोला, "अरे यार, कहीं ऐसा न हो कि नाव डूब ही जाये!"

दूसरा बोला, "अजी, डूब जायेगी तो अपना क्या जायेगा! हानि तो नाव वाले की होगी। बड़ा कस के किराया लिया है इसने!"

* * *

एक शराबी अपनी कोठरी का ताला खोल रहा था। उधर से एक पड़ोसी गुजरा और शराबी को परेशान देख कर बोला, "अजी बाबू साहब, इस प्रकार आपका दरवाजा तो इस जन्म में खुल चुका। हज़रत, जेब से ताली निकालिए. ताली! आप ताले में सिगरेट ठूंस रहे हैं।"

शराबी—"ऐं! यह सिगरेट है! तो अवश्य ही मैं ताली जला कर पी गया होऊंगा!"

* * *

प्रसूति-गृह के बाहर खड़े-खड़े नवजात शिशु के पिता ने नर्स से पूछा, "नर्स, क्या इसे उस्तरे की जरूरत पड़ेगी या लिपस्टिक की?"

* * *

इतिहास के अध्यापक ने पूछा, "अच्छा, लड़को, बताओ, सिकन्दर कब भारत में आया था?"

सब लड़के अध्यापक का मुँह तकने लगे। किसी को ज्ञात नहीं था। अध्यापक ने कहा, "अपनी पुस्तकें खोलो, देखो उसमें क्या लिखा है!"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लड़का बोला, "३२४!"

"यही तो मैंने पूछा था" मास्टर ने डांट कर कहा।

'मैंने इसे सिकन्दर का टेलीफोन नम्बर समझा," एक लड़का बोला।

* * *

"पिताजी, पुरखा कौन होते हैं!"

"बेटा, तुम्हारे पुरखों में से एक मैं हूँ। तुम्हारा बाबा भी तुम्हारे पुरखों में से है।"

"ओह! पता नहीं लोग क्यों पुरखों पर इतना गर्व करते हैं!"

* * *

"दो सप्ताह हुए मैंने आपसे एक कार खरीदी थी।"

"हां, खरीदी थी"

"तो कृपया उस समय आपने उसके सम्बन्ध में जो कुछ कहा था, आज फिर बताइये। मैं इतोत्साहित हुआ जा रहा हूँ!"

* * *

पति — तुम यह सुन कर खुश होगी कि मैंने आज अपना दस हजार का बीमा करवाया है।

पत्नी — तुम बड़े स्वार्थी हो। तुम्हें हमेशा अपना ही खयाल रहता है।

* * *

मन्त्री महोदय — क्या कहा, सन् '४२ में तुम जेल गये थे?

प्रार्थी — जी हां! क्या आप मुझे भूल गये। आप और मैं एक ही जेल में थे — आप 'सी' क्लास में और मैं 'ए' क्लास में।

* * *

जार्ज बर्नर्ड शा एक बार एक पुरानी किताबों के स्टाल पर कुछ बहुत पुरानी किताबें तलाश कर रहे थे। इतने में उन्हें अपनी ही एक किताब हाथ पड़ी, जो कि उन्होंने अपने एक मित्र को समर्पित की थी। उसके आवरण पत्र पर उनका खुद का लिखा हुआ था—'जार्ज बर्नार्ड शा की शुभ कामनाओं सहित।' बर्नर्ड शा ने इस पुस्तक को खरीद कर इसके नीचे जोड़ दिया—'नवीन शुभ कामनाओं के साथ!' और नीचे अपने हस्ताक्षर कर इसे पुनः उसी मित्र के पास भेज दिया जिसे कि यह समर्पित की गयी थी।

परिभाषायें

समाजवाद—आपके पास दो गाय हैं, उनमें से एक आप अपने पड़ौसी को दे देते हैं।

कम्यूनिज्म—आपके पास दो गाय हैं, दोनों ही आप सरकार को दे देते हैं और सरकार आपको दूध का कुछ अंश देती है।

फासिस्टवाद—आपके पास दो गाय हैं, आप दोनों को ही अपने पास रखते हैं और उनका सारा दूध आप सरकार को दे देते हैं और सरकार उसी दूध का थोड़ा-सा अंश आपके हाथ बेच देती है।

नाजीवाद —आपके पास दो गाय हैं, सरकार आपको गोली से उड़ा देती है और उन दोनों गायों को अपने कब्जे में कर लेती है।

अमरीकन न्यू डील–आपके पास दो गाय हैं, सरकार उन में से एक को गोली से उड़ा देती है और दूसरी का दूध दोह कर नाली में फेंक देती है।

पूंजीवादी प्रजातंत्र—आपके पास दो गाय हैं, उनमें से एक को बेचकर आप सांड खरीद लेते हैं।

★

मुफ्त

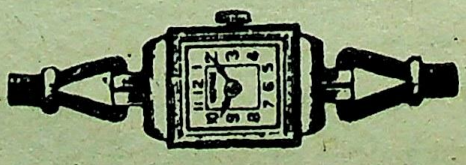

यदि आप असली फाउन्टेनपेन और असली घड़ी गारन्टी १५ साल मुफ्त प्राप्त करना चाहते हैं तो आज ही लिखें। शीघ्र करें वरना यह मौका फिर हाथ नहीं आएगा। अमेरिकन ट्रेडिंग पी. बी. (M. R. D.) ७५ अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पायोकिल

पायोरिया और दान्तों की दूसरी बिमारियों की अचूक दवा है

गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी
हरिद्वार

एजेण्ट —

देहली प्रान्त, मध्य प्रदेश व बीकानेर के वितरक—रमेश एण्ड को० चांदनी चौक, देहली। मध्य भारत के—वृहद् औषध भण्डार, १६ जेल रोड इन्दौर। ग्वालियर के—यूनियन मैडिकल हाल, नया बाजार, लश्कर। देहरादून के—हितकारी वस्तु भण्डार, पलटन बाजार।

सन्तान निरोधक औषधि

यदि औरतों की बीमारी या कमजोरी या किसी ऐसी ही वजह से बच्चे पैदा करना नहीं चाहते हों, तो यह 'वन्ध्याकारक दवा' मंगा कर केवल ५ दिन सेवन करावें। इससे सन्तान निरोध हो जायगा। दाम ४) डाक खर्च ।।)। इस दवा से हजारों औरतें फायदा उठा चुकी हैं। यह दवा औरतों को कोई नुकसान नहीं करती।

रुका हुआ मासिक धर्म

हर प्रकार के बन्द मासिक को फौरन खोल कर साफ करने की दवा ७।।) डा० ।।)

खबरदार! गर्भवती स्त्री इसको इस्तेमाल न करे

पता—

चपलादेवी दवाखाना, चपला भवन,
नं० २५ मथुरा।

वीरांगना

प्यारी बहिनों की भलाई के लिये

जो बहिनें सन्तान की अधिकता अथवा पति की स्वार्थपरता अथवा किसी अन्य कारणवश युवावस्था में ही बुढ़ापा तथा सौंदर्य-विहीनता का अनुभव करने लगी हों। जो प्रदर (लिकोरिया) के रोग में ग्रस्त हों और जीवन भार रूप अनुभव कर रही हों अथवा जिनका मासिक-धर्म समय पर न आता हो या कष्ट से आता हो। कमर में दर्द, आंखों के आगे अँधेरा व संतान न होती हो, गर्भपात हो जाता हो तो ऐसी दशा में 'वीरांगना' सेवन करें। वीरांगना आपके स्वास्थ्य और सौन्दर्य की रक्षा करेगी व आपको सचमुच वीरांगना बना देगी। हजारों बहिनें इसका सेवन कर अपनी बीती यौवनावस्था को पुनः प्राप्त कर चुकी हैं। दाम ११।) मात्र।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँच सौ रुपया इनाम

काले गोरे हो गये

साइन्स के नियमों पर २० वर्ष से सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध हमारा ब्यूटी लोशन किता छाया मुहासे काले अथवा अशोभन दाग धब्बे—चेचक के दाग दूर करके मुख अथवा जिस्म के प्रत्येक अङ्ग को नर्म मुलायम और अति सुन्दर बनाता है—यूरुप की लेडियां और स्वतन्त्र भारत की नारियां इसे प्रतिदिन स्नान के उपरान्त प्रयोग करती हैं—इसकी भीनी भीनी सुगन्ध दमाग को तर रखती है और हृदय को प्रसन्नता देती है—

काले कौंए सफेद हो गये—पहले पहल इसका प्रयोग काले रङ्ग के कौओं पर करके देखा गया जो सफेद हो गये।

नारी की सुन्दरता—यदि आपको स्त्री से प्रेम है यदि आप उसे सदैव सुन्दर देखने की इच्छा करते हैं तो आज ही हमें ब्यूटी लोशन के लिए लिखें। स्त्री इस सुन्दर उपहास से प्रसन्न होगी और उसके रूप में बड़ी तबदीली देख कर चकित रह जावेंगे।

मूल्य में रियायत—कुछ काल के लिए मूल्य में निम्नलिखित अनुसार रियायत होगी, उपरान्त में पूरा मूल्य ५) प्रति शीशी होगा।

रियायती मूल्य—प्रति शीशी २॥) डाक व्यय १॥) कुल ४) रु० तीन शीशी ६॥) डाक २) कुल ८॥) रु०।

चंदनवारी ब्यूटी स्टोर (M. H. D.) Post Box No. 12 SIML

मासिक धर्म एक दिन में जारी

मेन्सो लाईफ पिल्स—एक दिन के अन्दर ही कितने ही असें और किसी कारण से रुके हुए मासिक धर्म को जारी कर देती है। दाम ५॥)

मेन्सो लाईफ स्पेशल—यह मासिक धर्म को फौरन जारी करके रहम को बिल्कुल आसानी से साफ कर देती है और इसके व्यवहार से कमर, पेड़ू, पेट का दर्द, सिर को चक्कर आना दूर हो जाते हैं। दाम १२॥)। याद रखो गर्भवती इस्तेमाल न करे, क्योंकि बच्चेदानी को बिल्कुल साफ कर देती है।

चम्पा बर्थ स्टाप—सदा के लिए सन्तान उत्पत्ति बन्द करने वाली दवाई। मूल्य १०॥), ५ साल के लिये ५॥)।

लेडी डा. एस. के. बर्मन (M. D.)

राष्ट्रीय

लाल मंजन

यह दांतों की प्रत्येक बीमारी को दूर करता और दांतों को सुन्दर तथा टिकाऊ रखता है। साथ ही पेट की बहुत सी बीमारियों को दूर करता है। मुंह की दुर्गन्ध को मिटा कर सुगन्ध पैदा करता है।

नोट—कृपया अपने शहर के थोक विक्रेता से खरीद कर अवश्य परीक्षा करें। मूल्य शीशी नं० एक ॥), शीशी नं० दो १), शीशी नं० तीन २), डाक व्यय अलग।

व्यवस्थापकः—

राष्ट्रीय लाल मंजन कार्यालय

सदा बाजार अलीगढ़ [यूपी]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपीनाथ

यह कहानी इसी नाम की फिल्म का रूपांतर है। इस फिल्म का निर्माण बम्बई की 'शान्ति लोकचित्र' नामक फिल्म-कम्पनी ने किया है और निर्देशन श्री महेश कौल ने।

कुछ समय हुआ, बम्बई की एक समुद्रतटवर्ती शांत सी बस्ती में एक विधवा रहती थी, जिसे सभी लोग 'मां जी' कहकर पुकारते थे। इस विधवा के जीवन का एकमात्र सहारा उसका २२ वर्षीय इकलौता लड़का था। लड़के का नाम था मोहन। ये मूल निवासी किसी और जगह के थे। मोहन अभी बच्चा ही था के उसका बाप जीविका के सिलसिले में अपना गांव छोड़ कर इस बस्ती में आ बसा था और यहीं उसका देहान्त हो गया था। उसके बाद विधवा 'मां जी' वापस अपने गांव नहीं गई। ऐसा उसने मोहन की शिक्षा-दीक्षा और उसके भविष्य के खातिर ही किया।

मां के अतुल स्नेह की छाया में मोहन बड़ा हुआ और स्कूल से कॉलेज में पहुँचा। वह अत्यन्त भोला व सच्चरित्र लड़का था—संसार के छल-छिद्रों से पूर्णतः अनभिज्ञ। हां, एक व्यसन अवश्य था उसे और वह था सिनेमा देखने का। इसे व्यसन कहें या कुछ और, यह तय है कि मोहन फिल्मों के पीछे दीवाना था। अपने पुत्र के इस व्यसन से मां को कभी-कभी चिन्ता होती थी, परन्तु मोहन तो सिनेमा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना चुका था। उसे कहानी लिखने का शौक था और उसे विश्वास था कि एक न एक दिन वह फिल्म-जगत् में कहानी-लेखक के रूप में प्रवेश करेगा और बहुत रुपया कमायेगा। उसने सुन रखा था कि सिनेमा-जगत् से सम्बद्ध लोग बहुत रुपया कमाते हैं। मोहन इसलिये भी बहुत-सा रुपया कमाना चाहता था कि उसकी मां को हृदय का रोग था। उसे प्रायः इस रोग का दौरा पड़ जाता था। मोहन सोचता था कि अगर बहुत-सा रुपया हाथ लग जाये, तो वह अपनी मां की चिकित्सा किसी अमरीकन डाक्टर से करवाये। लेकिन मां को यह पसन्द न था कि उसका बेटा सिनेमा के दूषित वातावरण में पहुँचे। फिल्म-कम्पनियों के भीतर के जीवन को वह बहुत ही बुरा समझती थी।

मां को मोहन का वैसे भी बहुत खयाल रहता था। मोहन चाहे २२ वर्ष का हो गया था, लेकिन मां की नजरों में वह अभी बच्चा ही था। और मोहन भी पूर्णरूप से मां पर ही अवलम्बित था। उसे क्या खाना है, क्या पहनना है, इसका निर्णय मां को ही करना पड़ता था। वह अपने लड़के की रुचि और आदतों से पूरी तरह परिचित थी। प्रत्येक मां की तरह वह अपने मोहन के लिये एक अच्छी-सी बहू की तलाश में थी ऐसी बहू जो उसकी ही भांति मोहन की देखभाल कर सके। उसे यह भी विश्वास था कि घर में अच्छी बहू के आ जाने से मोहन का सिनेमा का व्यसन दूर हो जायेगा। अपनी बीमारी के कारण वह मोहन के विवाह की और भी अधिक चिन्ता करने

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी थी। पता नहीं कब उसके प्राण निकल जायें। वह चाहती थी कि घर में बहू आ जाये, तब वह मरे।

* * *

एक दिन घर में दो महमान आये—अधेड़ उम्र का बीरेन और उसकी नौजवान बहन गोपी। ये दोनों उस गांव से आये थे, जहां मोहन के माता-पिता पहले रहते थे और जहां मोहन का जन्म हुआ था और बचपन के कुछ वर्ष बीते थे। यद्यपि गांव से 'मां जी' को आये कई वर्ष हो चुके थे, तो भी वह शीघ्र ही पहचान गई कि बीरेन और गोपी, मोहन के पिता के एक पुराने मित्र के लड़का और लड़की ही हैं। दोनों परिवारों का पहले बहुत ही घनिष्ट सम्बन्ध रह चुका था। बीरेन के माता-पिता का देहान्त हो चुका था। अभी-अभी उसे अफ्रीका में नौकरी मिली थी। अब वह बहिन को साथ लेकर अफ्रीका जा रहा था उसकी इच्छा हुई कि जाने से पहले 'मां जी' से मिलता चलूं।

गोपी बहुत ही हंसमुख और नटखट स्वभाव की थी। उसे देखकर मोहन को विस्मय भी हुआ और हर्ष भी। उसकी मां और बीरेन ने बताया कि कैसे वह और गोपी बचपन में साथ-साथ खेला करते थे। दोनों का बड़ा स्नेह था आपस में मोहन ने गोपी को एक लोहे की अंगूठी दी थी, जिसे गोपी अभी तक जीवन की अमूल्य निधि के रूप में सुरक्षित रखे हुए थी।

'मां जी' को गोपी बहुत अच्छी लगी। वह सोचने लगी, गोपी से अगर मोहन का विवाह हो जाये तो कैसा रहे? लेकिन यह विचार 'मां जी' तक ही सीमित रहा, मोहन ने कभी गोपी की इस रूप में कल्पना नहीं की। गोपी में उसे कोई आकर्षण दिखाई नहीं दिया। परन्तु उधर गोपी उसे मन ही मन वर चुकी थी। एक दिन जब 'मां जी' ने उससे मोहन के साथ विवाह की चर्चा की, तो वह मन ही मन फूली न समाई।

तभी एक दिन 'मां जी' को अचानक हृदय-रोग का दौरा पड़ गया। इलाज के लिये घर में पैसा नहीं था। मोहन के पास एक कहानी तैयार थी। उसे लेकर वह भाग-भागा एक फिल्म कम्पनी में पहुंचा। उसे आशा थी कि कहानी अच्छे दामों पर बिक जायेगी; परन्तु फिल्म-कम्पनी में पहुँचने पर उसकी आशा पर पानी फिर गया। उसकी कहानी बिकनी तो दूर रही, उसे किसी ने पढ़ा तक नहीं। वहां उसे अपने जैसे कई और लेखक मिले, जो अपनी कहानियां बेचने के उद्देश्य से दस-दस वर्ष से फिल्म-कम्पनियों के चक्कर काट रहे थे।

फिल्म-कम्पनी में मोहन के साथ एक विशेष घटना अवश्य घटी और वह यह कि उसे नीलादेवी नामक एक प्रसिद्ध अभिनेत्री को प्रथम बार साक्षात् देखने का अवसर मिला। मोहन उसे रजतपट पर दर्जनों फिल्मों में देख चुका था। आज साक्षात् उसके रूप को देखा तो मोहन अपने आप को खो बैठा। फिल्म-कम्पनी में किसी न किसी रूप में पहुंचने की उसकी पुरानी इच्छा और भी बलवती हो उठी। उधर मोहन के अल्हड़ यौवन और भोलेपन से नीलादेवी भी प्रभावित हुई।

* * *

इधर घर में मोहन के लिये एक नया आकर्षण पैदा हो रहा था। बाल-सुलभ भोलापन, मोहन की देखभाल करने में तत्परता, करुणा, सेवाभाव, अपने इन गुणों के कारण गोपी ने मोहन के हृदय में जबरदस्ती थोड़ा-बहुत स्थान बनाया। मोहन अपने बारे में यह तो नहीं जानता था कि वह गोपी से प्रेम करता है या नहीं करता है, हां, इतना वह अवश्य जानता था कि वह गोपी को बेहद पसन्द करता है। गोपी के प्रति मोहन के इस झुकाव को मां ने प्रेम का प्रथम लक्षण समझा और मन ही मन उसने दोनों को, कुछ समय बाद प्रेम के अधिक परिपक्व हो जाने पर, विवाह-सूत्र में बांधने का संकल्प कर लिया। उसने बीरेन से चर्चा की। बीरेन को भला क्या इंकार हो सकता था। गोपी को 'मां जी' के पास छोड़ कर वह अफ्रीका नौकरी पर चला गया।

गोपी के संसर्ग का मोहन पर अवश्य कुछ प्रभाव पड़ा और वह कुछ समय के लिये नीलादेवी और सिनेमा के आकर्षण तक को भूल गया दोनों साथ-साथ घूमते, हँसते-खेलते। मोहन गोपी को कई छोटे मोटे उपहार लाकर देता। दोनों की बढ़ती हुई इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घनिष्टता से 'मां जी' बहुत प्रसन्न थी। परन्तु उसकी प्रसन्नता अल्पकालीन सिद्ध हुई। एक दिन अकस्मात् उसे हृदय-रोग का फिर दौरा पड़ा। मोहन घबरा गया। चिकित्सा के लिये धन की आवश्यकता थी। धन प्राप्त की केवल एक ही राह मोहन के सामने खुली थी और वह थी स्थानीय फिल्म कम्पनी। 'मां जी' को गोपी की देखरेख में छोड़ वह स्टुडियो की ओर भागा।

'मां जी' को ऐसा लग रहा था कि उसका अन्त समय सन्निकट है। उसने गोपी को अपने पास बुलाया और उसके हाथ में जेवरों का एक डब्बा रखते हुए कहा, "बेटी, यह जेवर मुझे मेरी सास से मिले थे। अब मैं तुम्हें सौंपती हूँ। वादा करो कि तुम इस घर की लक्ष्मी बन कर रहोगी"

गोपी ने रुंधे गले से वादा किया।

उधर मोहन को नीलादेव की सहायता से फिल्म-कंपनी में अभिनेता की जगह मिल गई। कुछ रुपया लेकर वह जल्दी जल्दी घर की ओर लपका। परन्तु उसका सारा प्रयास विफल गया। घर पहुँच कर उसने मां को मरा हुआ पाया।

* * *

मां की मृत्यु से मोहन को भारी आघात पहुँचा। जीवन के प्रति उसका सारा उत्साह जाता रहा। शोक में डूबा हुआ, मां के फोटो को एकटक देखते हुए वह घर में चारपाई पर पड़ा रहता। न कुछ खाता और न कुछ पीता। मां के बाद घर में उसकी देखभाल करने वाली अकेली गोपी ही थी। वह अपने दायित्व को समझती थी, परन्तु लाख प्रयत्न करके भी वह मोहन के हृदय से मां की मृत्यु का दुःख दूर न कर सकी।

गोपी यों किंकर्त्तव्य विमूढ़-सी हो रही थी कि फिल्म-स्टुडियो से नीलादेवी का बुलावा आया। मोहन ने यह कहकर जाने से साफ इन्कार कर दिया कि अब फिल्मों में काम करने की मेरी इच्छा नहीं रही। लेकिन गोपी चाहती थी कि वह फिल्म-स्टुडियो में हो आये। इससे शायद उसका मन बहल जाये। उसके कहने-सुनने से मोहन स्टुडियो की ओर चल दिया। मोहन जब स्टुडियो में पहुँचा, तो स्टुडियो के सभी अधिकारी और कर्मचारी खुशी से फूले न समाये। नीलादेवी के हर्ष की तो कोई सीमा ही नहीं थी। मोहन के आगमन के उपलक्ष्य में उसने जलपान का आयोजन किया और मोहन को उसने अपने हाथों से 'शरबत' पिलाया। जिस वस्तु को शरबत समझ कर मोहन गटागट पी गया, वह वस्तुतः शराब थी। इसका रहस्य मोहन को तब ज्ञात हुआ जब वह होश में नहीं रहा। एकान्त में नीलादेवी ने मोहन से अपना प्रेम जताया और कहा—"तुम पहले नौजवान हो जिसने मुझे प्रभावित किया है।"

मदिरा और रूप के नशे में झूमते हुए मोहन ने कहा, "नीला, तुम जैसी सुन्दरी मैंने आज तक नहीं देखी।"

रात हो चुकी थी। नीला ने मोहन को अपनी कार में बैठा कर उसके घर पहुँचाया। रास्ते में मोहन से उसे गोपी के सम्बन्ध में सभी बातें मालूम हो गईं।

मोहन को नशे में देखकर गोपी स्तब्ध रह गई। उसने मोहन से फिल्म-स्टुडियो का सारा वृत्तांत सुना। नशा उतरने पर मोहन को अपनी भूल महसूस हुई। उसने गोपी से वादा किया कि भविष्य में न तो वह फिल्म-कंपनी से कोई सम्बन्ध रखेगा और न कभी फिर शराब ही पियेगा। गोपी की खुशी की कोई सीमा नहीं थी। उसे जैसे खोया हुआ मोहन फिर मिल गया हो, जैसे वह उसके हृदय की स्वामिनी हो।

मोहन ने अपना वादा निभाया। वह कई दिन तक फिल्म-स्टुडियो में नहीं गया। उसकी इस अनुपस्थिति के कारण नीलादेवी चिंतित हो उठी। मोहन को देखे बिना उसे कल न पड़ती थी। जब बेचैनी बहुत बढ़ी, तो वह एक दिन मोहन के घर आ पहुँची। मोहन ने उससे सीधे मुँह बात नहीं की। नीला ने जब उसे साथ ले जाने के लिये अधिक आग्रह किया तो उसने चिल्ला कर कहा, "निकल जाओ मेरे घर से। मैं किसी भी फिल्म-विल्म में काम नहीं करूंगा।"

"फिल्म में काम नहीं करोगे, तो रोजी कैसे कमाओगे?" नीला ने सव्यंग्य पूछा।

"इसकी चिन्ता न करो, मैं फिल्मी कहानियां बेच कर रोजी कमा सकता हूं," मोहन ने उत्तर दिया।

यह सुन नीला को एक युक्ति सूझी, बोली, "देखूं तो वह कहानी, जिसे तुम उस दिन बेचने के लिये फिल्म-कम्पनी में गये थे।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी यह चाल सफल हुई। मोहन तुरन्त अपनी कहानी निकाल कर ले आया। कहां तो वह नीला को घर से निकाल रहा था कहां वह अब उससे मिन्नतें करने लगा कि मेरी कहानी सुनने के लिये रुक जाओ। नीला यही तो चाहती थी।

गोपी को यह सब बुरा लगा। वह नहीं चाहती थी कि मोहन अब किसी फिल्म-कम्पनी या किसी अभिनेत्री से कोई सम्बन्ध रखे। वह तो कहानी लिखने का काम भी पसन्द नहीं करती थी।

नीला ने मोहन की कहानी सुन कर उसकी प्रशंसा की और कहा कि मेरे साथ डायरेक्टर के पास अभी चलो, मैं आज ही इसे बिकवाये देती हूँ। मोहन तैयार हो गया। परन्तु जब वह जाने लगा तो गोपी रास्ते में आ खड़ी हुई और उसे जाने से मना किया। जब मोहन उसके रोके न रुका, तो उसने कहा, "अच्छा, जाते हो तो जाओ, लेकिन जब तुम वापस आओगे तो मुझे इस घर में नहीं पाओगे।"

यह सुन मोहन घबरा गया और उसने नीला के साथ जाने से इन्कार कर दिया। नीला को निराश लौटना पड़ा।

गोपी को लगा, जैसे खोया हुआ मोहन फिर उसे मिल गया हो। वह बहुत खुश थी। परन्तु उसकी खुशी का स्थान फिर चिन्ता ने ले लिया। वह और मोहन बिना विवाह किये अकेले घर में रह रहे हैं, इस बात को लेकर पड़ोसी कानफूंसी करने लगे। यह अपवाद गोपी के कानों तक भी पहुँचा। गोपी ने जब इस अपवादपूर्ण स्थिति की ओर संकेत किया तो मोहन ने यही ठीक समझा कि दोनों शीघ्र ही आपस में विवाह कर लें। लेकिन इस के लिये उसने बीरेन की अनुमति ले लेना उचित समझा। बीरेन को उसने एक पत्र लिखा, जिसमें उसने अपनी स्वर्गीया माता की इच्छा का उल्लेख किया। यह बात गोपी को बुरी लगी। उसका खयाल था कि मोहन अपने आप उससे विवाह करना चाहेगा। वह नहीं चाहती थी कि मोहन उससे सिर्फ इसलिये विवाह करे कि उसकी मां की ऐसी इच्छा थी गुस्से में आकर उसने वह पत्र फाड़ डाला जो मोहन ने बीरेन को लिखा था।

मोहन अब दुविधा में पड़ गया। कोशिश करने पर भी वह अभी नीला देवी को नहीं भुला सका था। उसके भीतर भयंकर द्वन्द्व मच उठा और इसका प्रभाव उसके स्वास्थ्य पर पड़ा वह बीमार पड़ गया। बीमारी की अवस्था में जब वह अचेत हो जाता, तो अक्सर प्रलाप करते हुए नीला के उस गाने की पंक्तियां गुनगुनाने लगता, जिन्होंने उसके युवा हृदय पर गहरा प्रभाव डाला था। यह सब देख गोपी को विश्वास हो गया कि मोहन के जीवन के लिये नीला का पास होना आवश्यक है। लेकिन गोपी यह भी जानती थी कि नीला सच्चे हृदय से मोहन से प्रेम नहीं करती, वह उस के साथ प्रेम का अभिनय कर रही है। गोपी दुविधा में थी कि नीला को बुलाये या न बुलाये।

गोपी ने क्या किया? क्या मोहन कभी गोपी के सच्चे प्रेम को समझ सका? नीला का क्या हुआ? इन सब प्रश्नों का उत्तर तो असल फिल्म ही में मिल सकता है।

★

[पृष्ठ २४ का शेष]

और उसके बाद न्यायाधीश की सी शान से अपनी छड़ी को राजदण्ड की तरह हाथ में लेकर, अपनी बन्दर की शक्लों तथा कागज़ के कानों वाली टोपी को कुछ ऊँचा करके, अपने गुलूबन्द को फिर से लपेट कर, कुछ खांसकर, खखार कर उसने खूब ऊंची और स्पष्ट आवाज़ में कहा:

"न्यायालय का निर्णय है कि कुत्ते ने, जिसने कि कबाब की भाप से लगा कर रोटी खाई थी, चवन्नी को बजा कर उसकी आवाज़ से रसोइये को पूरा मूल्य चुका दिया है। न्यायालय आदेश देता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने घर जा कर अपने काम में लगे। मामला बिना मूल्य या खर्चे के निर्णीत हुआ।"

पेरिस के विदूषक का यह निर्णय लोगों को इतना सुन्दर और उपयुक्त जान पड़ा है कि वे सब लोग इस में सन्देह करने लगे कि यदि यह मामला पेरिस के मशहूर जजों के पास भेजा जाता या राम के न्यायाधीश भी इसके फैसले के लिये बुलाये जाते तो वे भी इतना अच्छा फैसला कर पाते या नहीं?

अनुवादक—विराजे

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी या महाराजिन ?

श्रीमती सन्तोष सेठ

"सुबह सवेरे ही मैं उठ जाती हूं। घर में झाड़ू लगाने के बाद, सरदी हो या गरमी, ठण्डे पानी से स्नान करती हूँ। फिर जो मैं रसोई घर में घुसती हूं, तो दोपहर वहीं हो जाती है मुझे अपने पति, उनके भाई, उनके पिता तथा बच्चों के लिए खाना बनाना होता है। सारे परिवार के खाना खा चुकने के बाद मैं खाती हूं। खाती क्या हूं, सटक लेती हूँ क्योंकि झूठे बर्तनों का ढेर भी तो मुझे ही साफ करना होता है। तुम इसे गन्दा काम कहोगी, किन्तु मुझे एक कर्त्तव्य-परायण स्त्री कहलाने के लिये यह करना ही पड़ता है। सच पूछो तो मुझे यह कुछ अखरता भी नहीं, रोज का कार्य जो ठहरा। बर्तन मांजते-मांजते मुझे दो बज जाते हैं एक घण्टा आराम करने के बाद रात के खाने की तैयारी शुरू होती है। रात के ग्यारह-बारह बजे जा कर कहीं इससे छुटकारा मिलता है, किन्तु थकावट इतनी हो जाती है कि बिस्तर पर पड़ते ही नींद आ जाती है ...,"

यह है मेरी एक सहेली के पत्र का कुछ अंश, जिसका विवाह एक मध्यम वर्ग के परिवार में उस समय हुआ था, जबकि वह अभी स्कूल में पढ़ती थी। यह एक दुःखी जीवन का चित्र है—ऐसा जीवन जिसमें मानसिक उन्नति के लिए कोई स्थान नहीं। किन्तु हमारी लाखों बहिनों को ऐसा जीवन व्यतीत करना पड़ता है और इसे ही न केवल सर्वश्रेष्ठ ही अपितु आदर्श जीवन समझना पड़ता है।

पुरुष शायद विवाह ही इस लिये करते हैं कि उन्हें एक अच्छी खाना पकाने वाली और बच्चे जनने वाली स्त्री मिल जाये। प्रायः हम अपनी माताओं को भाइयों से यह कहते सुना करते हैं—"जल्दी ही शादी कर लो न, गरम गरम खाना मिलेगा और मैं भी अपने जीवन में पोते का मुँह देख पाऊँगी।" विवाह की दृष्टि से एक नवयुवती में सब से अच्छा गुण घर के काम-काज में उसकी निपुणता को ही समझा जाता है। यह गुण यदि एक मध्यम वर्ग की युवती में नहीं है, तो वह किसी अच्छे पति की आशा नहीं कर सकती। वे पुरुष सौभाग्यशाली गिने जाते हैं, जिनकी पत्नियां खाना अच्छा बना लेती हैं औ अपने पति की हरेक इच्छा को पूरा करना अपना धर्म समझती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसोई बनाने का कार्य ऐसा है जो हर जगह हमारी बहिनें आज भी करती हैं और पहले भी करती थीं। शुरू से ही उन्हें इस कार्य की शिक्षा दी जाती है। यह कार्य हमें आदि काल से एक पवित्र विरासत के रूप में प्राप्त हुआ है और आदर्श जीवनचर्या की परिभाषा के रूप में यह इतना अनिवार्य हो चुका है कि हमारी वे बहिनें भी, जो इसको छोड़ कर कोई अन्य कार्य करने लगी हैं, फिर से इसे अपनाने को उत्सुक दिखाई देती हैं। मेरी एक सहेली है, जिसने उच्च शिक्षा प्राप्त की है और आजकल ऊंचे पद पर लगी हुई है। अपने विवाह सम्बन्धी बातचीत में उसने मुझ से कहा—"मैं अपने पति को एक सुखी घर पेश करना चाहती हूँ, न कि होटल, और इसके लिए मैं उस काम को, जो मैं आजकल कर रही हूं, छोड़ देना पसन्द करूंगी।" सम्भव है, उसे वह सारा कार्य न करना पड़े, जो एक मध्य वर्ग की स्त्री को करना पड़ता है। फिर भी जिस मनोवृत्ति का उसने परिचय दिया, वह निस्संदेह एक दास—रसोई की दासी की ही मनोवृत्ति कही जा सकती है ऐसी मनोवृत्ति का हमारे में होना सचमुच एक दुर्भाग्य का लक्षण है। हम चीजों को उनके असली रूप में देख ही नहीं सकतीं और अपनी सामाजिक व्यवस्था में कोई परिवर्त्तन लाने के लिए जिस मनःस्थिति की आवश्यकता है, वह पैदा ही नहीं होती। जब तक मन की वह अवस्था उत्पन्न नहीं होती, हम सदियों से चले आ रहे अपने सामाजिक बन्धनों के प्रति एक विद्रोहात्मक दृष्टिकोण कायम नहीं कर सकतीं।

हां, तो रसोई की समस्या की ओर फिर आते हुए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि कई अन्य समस्याओं की भांति इसका कारण भी आर्थिक ही है। मध्यम तथा उससे भी नीचे के वर्ग की हमारी बहिनें, जिन्हें रसोई के अलावा खेतों तथा कारखानों में भी काम करना पड़ता है, नौकर नहीं रख सकतीं और सच तो यह है कि नौकर रखने पर भी यह समस्या हल नहीं होती। केवल इतना परिवर्त्तन हो जाता है कि इस काम का भार हमारी उन बहिनों पर आ पड़ता है, जो हमारी अपेक्षा अधिक गरीब हैं।

यह आर्थिक संकट का युग है। इस युग की एक विशेषता यह भी है कि स्त्रियां पहले की अपेक्षा अधिक शिक्षा-प्राप्त हैं—ऐसी शिक्षा-प्राप्त कि घर की चहारदिवारी से निकल कर न केवल पुरुषों के समान जीविकोपार्जन कर सकतीं हैं, बल्कि राष्ट्रोन्नति के कामों में भी हाथ बंटा सकती हैं। ऐसी स्त्रियां यदि चौबीसों घण्टे चूल्हे-चूक्की से बँधी रहें, तो क्या यह जीवनोपयोगी आवश्यक शक्ति का अपव्यय और दुरुपयोग नहीं? उच्चशिक्षा प्राप्त स्त्रियां यदि बाहर जाकर नौकरी करें, तो क्या इससे घर की आर्थिक अवस्था नहीं सुधर सकती? रहन-सहन का स्तर ऊंचा नहीं हो सकता!

यदि हम स्त्रियों द्वारा जीविकोपार्जन की बात छोड़ दें और मान लें कि स्त्री का वास्तविक कार्य-क्षेत्र केवल घर ही है, तो भी यह देखते हैं कि उसके चौबीसों घण्टे चूल्हे-चक्की के साथ बंधे रहने से घर की काफी हानि होती है। वह ठीक तरह से न तो अपने बच्चों की देख-भाल कर सकती है, न घर को व्यवस्थित रख सकती है और न अध्ययन और ललित कला द्वारा अपने व्यक्तित्व का विकास ही कर सकती है प्रश्न समय के बचत का है। इसके लिए हमें उन वैज्ञानिक आविष्कारों की सहायता लेनी होगी, जो कम से कम समय में भोजनादि तैयार कर दें। ये वैज्ञानिक यंत्र भोजन बनाने से लेकर बर्तन साफ करने तक का काम करते हैं और इनके कारण पाश्चात्य देशों की गृहिणी आज न केवल चूल्हे-चक्की की गुलामी से बची हुई है, बल्कि अवकाश के कारण सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में भी हम से बहुत आगे है। वैज्ञानिक यन्त्रों की सहायता के अतिरिक्त उन्हें घर के पुरुषों से भी रसोई के काम में सहायता मिलती है।

किन्तु याद रखना चाहिए कि भारत में यह क्रांति लाना आसान नहीं है, क्योंकि इस को सम्पन्न करने के लिए हमें ज्ञान का शस्त्र अपने हाथ में लेकर रूढ़िवादियों से लड़ कर सदियों से चले आ रहे सामाजिक बन्धनों को तोड़ना होगा और जीवन के प्रति लोगों को एक नया दृष्टिकोण देना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने केशों की ओर ध्यान दीजिये !

कुमारी कीर्ति चौधरी

सौन्दर्य स्त्री का भूषण है; इसीलिये स्वभावतः प्रत्येक स्त्री अपने को सुन्दर बनाने की चेष्टा करती है। उसकी इस चेष्टा में केश बहुत सहायक हो सकते हैं। जिस स्त्री को अपनी मुखाकृति की सुन्दरता अभीष्ट हो, उसको अपने बालों को घना, चमकीला और लम्बा बनाने की कोशिश करनी चाहिये। लम्बे, घुंघराले और चमकीले बाल स्त्री सौन्दर्य की अमूल्य निधि हैं उनमें सभी को आकर्षित कर लेने की क्षमता होती है। इस लिये बालों के प्रति प्रत्येक स्त्री को बड़ी सावधानी रखनी चाहिये।

सूर्य की किरणें बालों के लिये बड़ी लाभदायक सिद्ध हुई हैं। बालों का चमकीलापन और रङ्ग बहुत कुछ सूर्य की किरणों पर आश्रित रहता है। जिस प्रकार सूर्य की रोशनी में पनप कर एक पुष्प चमकदार और तरोताजा रहता है, ठीक उसी भांति केश भी। अतः बालों के चमकीलेपन के लिये नित्य सूर्य सेवन आवश्यक है।

बालों के संवारने का ढङ्ग बहुत कुछ मुख की आकृति के अनुरूप होना चाहिये। अपनी आकृति को देखकर बालों को संवारने से हम मुख के दोषों को बहुत कुछ छिपा सकती हैं। मुख का आकर्षण बालों के संवारने के ढङ्ग पर भी निर्भर रहता है।

जिस स्त्री का माथा छोटा हो, उसे चाहिये कि बालों को माथे पर से लाकर इस भांति बांधे कि लगे माथे का अग्र भाग बालों के अन्दर छिपा है जिसका चेहरा पतला हो, उसे कानों को ढक कर बाल बांधने चाहियें। पर गोल मुँह की स्त्री के लिये यह प्रतिबन्ध नहीं है। ऐसी ही कुछ छोटी छोटी सी बातें हैं, जिनसे चेहरा बहुत कुछ खूबसूरत लगने लगता है। यदि इन पर किंचित मात्र भी ध्यान दिया जाय, तो अपने को स्वयं मालूम हो जाता है कि कैसे बाल कैसे चेहरे पर अच्छे लगते हैं।

यों तो बालों को प्रतिदिन धोना चाहिये, पर यदि यह न हो सके तो चौथे-पांचवें दिन अवश्य धोना चाहिये। कुछ स्त्रियां समझती हैं कि बहुत अधिक धोने से बाल टूटने लगते हैं, पर यह उनका भ्रम है। बालों को जितना भी धोया जा सके, धोइये, क्योंकि इससे वे बढ़ते हैं। बालों को धोते समय यदि ब्रुश का प्रयोग किया जाय, तो लाभदायक होगा। धोते समय ब्रुश को सिर में इस भांति रगड़ना चाहिये कि उसका स्पर्श जड़ों तक हो जाय। इससे बालों के बढ़ने का स्थान स्वच्छ हो जाता है। जब बाल धो चुकें, तो उन्हें एक तौलिये से रगड़-रगड़ कर सुखाना चाहिये, जिससे उनकी जड़ों में पानी न रह जाय। यह पानी यदि जड़ों में भरा रहता है तो बहुत नुक्सान पहुँचाता है। कुछ स्त्रियां बाल धोकर धूप में सुखाती हैं, पर ऐसा नहीं करना चाहिये, यह बहुत हानिकारक है। बालों को सूर्य की

CC-0. In Public Domain. Gurukul K...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किरणों का सेवन अवश्य कराना चाहिये, पर धोने के तुरंत बाद ही नहीं। धोने के लिये गर्म जल का प्रयोग भूल कर भी न करना चाहिये। इससे उनकी जड़ें कमजोर हो जाती हैं और बाल टूटने लगते हैं। इसके अतिरिक्त गर्म जल का प्रभाव मस्तिष्क पर भी पड़ता है। वह निर्बल हो जाता है।

बालों में तेल लगाने के बारे में भी सावधान रहना चाहिये। तरह-तरह के बाजारू तेल कदापि न लगाने चाहियें। सर्वदा एक तेल का ही प्रयोग करना चाहिये। बालों को बढ़ाने के लिये गरी का तेल लाभदायक होता है, पर इससे मस्तिष्क कमजोर हो जाता है। बालों की मजबूती और रङ्ग के लिये कड़ुए तेल का प्रयोग बहुत अधिक लाभदायक होता है। इससे मस्तिष्क को भी लाभ होता है। इसके अतिरिक्त यदि हो सके तो घर में ही तेल बना कर लगाएं। यह सब से उत्तम है। तिल्ली के तेल में आंवले का रस निकाल कर पकावें और उसे ही लगावें। यह तेल मस्तिष्क के लिये तो है ही, बालों को लम्बा, काला और चमकीला भी बनाता है। इस तेल में कोई सुगन्ध भी डाली जा सकती है।

बालों को बहुत कस कर नहीं बांधना चाहिये। कुछ स्त्रियों की आदत होती है कि वे खुलने के मारे इतना कस कर बाल बांधती हैं कि सिर दुखने लगता है। यह हानिकारक है। इससे बालों की जड़ कमजोर हो जाती हैं। रात में बालों को खोल कर सोना लाभदायक होता है। यों भी बालों को कभी-कभी खुला छोड़ देना चाहिये।

किन्हीं-किन्हीं स्त्रियों के बाल बहुत टूटते हैं। इसका एक कारण तो तरह-तरह के बाजारू तेल लगाना है। इसके अतिरिक्त दिमाग की कमजोरी, मानसिक दुःख, क्रोध, चिन्ता, त्वचा की खराबी आदि कई ऐसे कारण हैं, जिनसे बाल कमजोर हो जाते हैं और वे गिरने लगते हैं। इसके लिये भी कुछ ऊपरी प्रयोग किये जाते हैं। गुड़ को पानी में घोल कर सिर मलने से उनका गिरना बन्द हो जाता है।

कुछ स्त्रियों के सिर में फियास होती है। इसके लिये सिर जल्दी-जल्दी धोना चाहिये, त्वचा को साफ रखना चाहिये। बथुए के साग को उबाल कर सिर मलने से फियास दूर हो जाती है।

बालों को बढ़ाने के लिये कई प्रयोग किये जाते हैं, जिन्हें मैं यहां देती हूं—

१. बेर की पत्ती पीस कर या उबाल कर सिर धोने से बाल बढ़ते हैं।

२. कलौंजी पीस कर धोने से बाल बढ़ते हैं।

३. केले की छाल के रस से बाल धोने से बढ़ते हैं।

ये तो सब ऊपरी उपाय हैं, पर सबसे बड़ी आवश्यकता है—स्वच्छता। बालों की जितनी ही सफाई होगी, वे उतने ही दृढ़, चमकीले, काले और लम्बे बने रहेंगे।

आधुनिक प्रसाधन सम्बंधी कुछ ज्ञातव्य बातें—

चेहरे को साबुन से अच्छी तरह साफ करके ही क्रीम-पाउडर का प्रयोग करना चाहिये।

पाउडर, रूज आदि आधुनिक प्रसाधनों के सफल प्रयोग का रहस्य है—उचित सम्मिश्रण और सामंजस्य। चेहरे पर पाउडर और लाली के धब्बे नहीं मालूम होने चाहियें।

पाउडर का 'शेड' ऐसा चुनना चाहिये, जो अपनी त्वचा के रङ्ग से मेल खाता हो।

दिन में चेहरे पर पाउडर, लाली आदि का प्रयोग बहुत हल्का करना चाहिये; परन्तु रात में बिजली आदि के कृत्रिम प्रकाश में कुछ तीखा 'मेक-अप' ही अच्छा लगता है।

लिपस्टिक लगाने से पहले यदि होठों पर आधार-क्रीम लगा ली जाये, तो लिपस्टिक जल्दी नहीं उतरता।

रात को सोने से पहले दिन में प्रयुक्त पाउडर इत्यादि को उतार कर चेहरे पर मैल इत्यादि को दूर करने वाली, रोम-कूपों को साफ करने वाली तथा त्वचा को मुलायम करने वाली क्रीम का प्रयोग करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(श्री कलाधर)

'वीणा' के बाद हम सेठ जगतनारायण के सुनहरे दिन' देख रहे हैं। पता नहीं सोना कहां से आया!

* * *

श्री किशोर साहू 'सावन आया रे' के बाद 'रिम-झिम' बना रहे हैं। इसके बाद क्या वे 'बाढ़' और 'मलेरिया' बनायेंगे?

* * *

कुछ लोगों का विचार है कि 'रामबाण' में रावण का अभिनय करने के कारण ही भारत के प्रसिद्ध अभिनेता चन्द्रमोहन की मृत्यु हुई। पता नहीं उन लोगों की क्यों मृत्यु नहीं होती, जो आज साक्षात् रावण का 'अवतार' हैं!

* * *

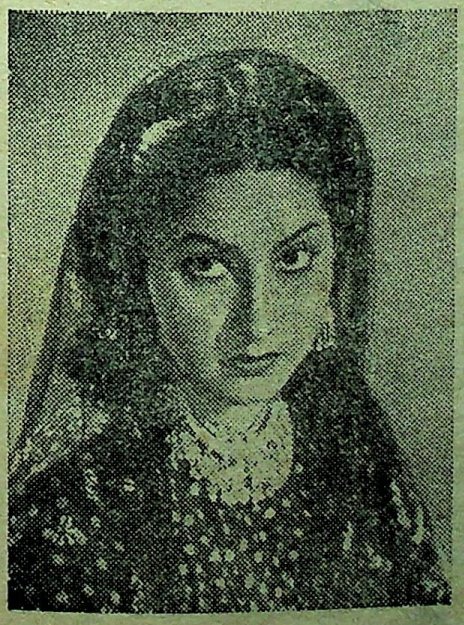

फिल्मिस्तान कृत 'ऐक्ट्रेस' में मीना

सुनते हैं कि 'चन्द्रलेखा' के निर्माता व निर्देशक श्री वसन ने एक लाख रुपया गांधी-स्मारक निधि में दिया है। उत्तर भारत के फिल्म-निर्माताओं को भी वसन ने यह दूसरी पटखनी दी!

* * *

पिछले दिनों केन्द्रीय धारासभा में पास हुए सिनेमा सम्बन्धी एक बिल के अनुसार मातयें अपने तीन साल से भी कम आयु के बच्चों को अपने साथ सिनेमा-गृह में ले जा सकती हैं। हाय पति-लोग पत्नियों से अब क्या बहाना करके अकेले सिनेमा देखने जायेंगे!

* * *

अप्रैल में प्रसिद्ध अभिनेत्री सुरैया राजसी ठाठ से आठ दिन के लिये बम्बई से दिल्ली और अजमेर आई थी। सुनते हैं कि इस यात्रा के लिये उसने पौने छः हजार रुपये में एक पूरा का पूरा अलग रेल का डब्बा रिजर्व करवाया था जो मेरठ एक्सप्रेस के साथ जोड़ा गया था। लीजिये, हमारी अभिनेत्रियां ब्रिटिश-कालीन राजाओं-महाराजाओं को भी मात देने लगीं!

* * *

बम्बई में अफवाह है कि रणजीत फिल्म-कम्पनी का करोड़पति स्वामी चन्दूलाल शाह समाजवादी होगया है!

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आल-इण्डिया पिक्चर्ज के श्री पी० एन० अरोरा 'पगड़ी' के बाद 'पारस' बना रहे हैं, ताकि भारतवर्ष का सारा लोहा सोना बन जाये और लोग मकान-मालिकों को मुंहमांगी 'पगड़ी' दे सकें!

* * *

सुना है कि प्रसिद्ध अभिनेता श्री पृथ्वीराज कपूर का सुपुत्र राज कपूर एक ऐसी फिल्म बना रहा है जिसमें वह आप स्वयं पुत्र की भूमिका में काम करेगा और पृथ्वीराज कपूर पिता की भूमिका में। मां की भूमिका किसे दी गई है, इसका अभी पता नहीं चला।

* * *

प्रसिद्ध निर्देशक श्री के० आसिफ पंजाब के सरदार भक्तसिंह की जीवनी की फिल्म बना रहे हैं। शायद अब दूसरे प्रान्तों वाले यह मान जायें कि पंजाब ने भी स्वाधीनता-संग्राम में योग दिया था!

* * *

सुनते हैं कि हिन्दी के यशस्वी उपन्यासकार श्री वृन्दावनलाल वर्मा फिल्म-निर्माता बनने की सोच रहे हैं। हिन्दी के दूसरे समान रूप से यशस्वी उपन्यासकार श्री जैनेन्द्रकुमार क्या सोच रहे हैं!

* * *

कलकत्ता की एक फिल्म-कंपनी ने 'आज़ादी के बाद' नामक फिल्म बनाई है। इसमें यदि कलकत्ते की आजकल की हलचलों का चित्रण हो, तो नाम सार्थक हो जाये!

* *

सुनते हैं कि कुछ शरणार्थी शांताराम की नई फिल्म 'अपना देश' से इसलिये क्षुब्ध हैं कि उसमें पंजाब की एक शरणार्थी लड़की को डाकू के रूप में चित्रित किया गया है!

* *

न्यू थियेटर्ज की नई फिल्म 'छोटा भाई' की प्रशंसा करते हुए एक सिने-आलोचक स्त्रियों को सलाह देता है कि जब वे इसे देखने जायें, तो आंसू पोंछने के लिये अपने साथ बड़े साइज का रूमाल ले कर जायें। फिल्म न हुई किसी प्रियजन की ··· हुई!

* * *

फिल्मिस्तान कृत 'सांवरिया' में रहमान और हफीज जहान

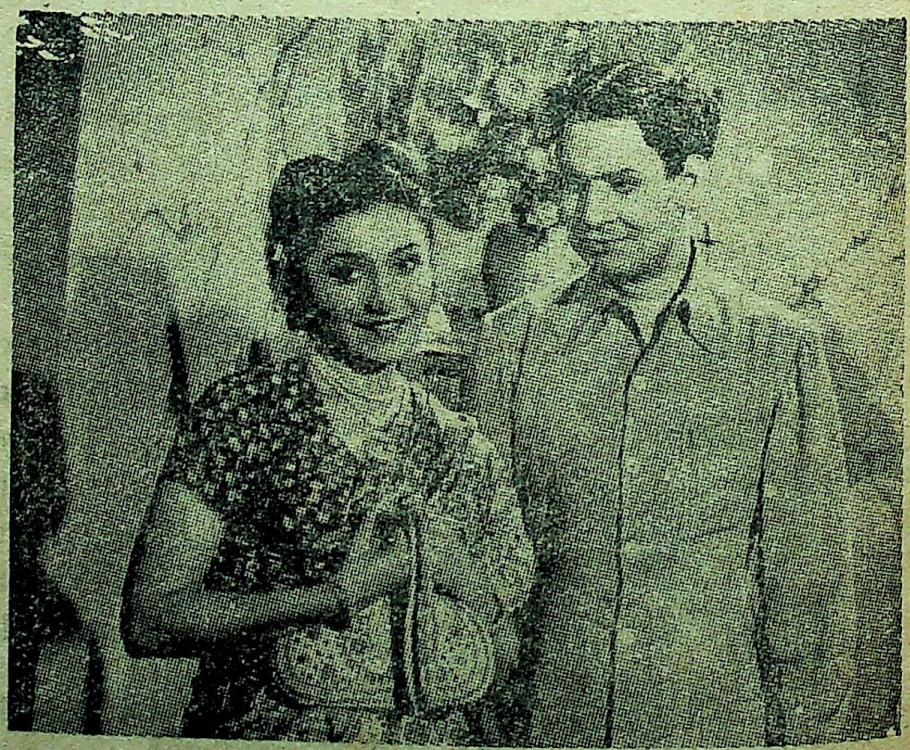

फिल्मिस्तान कृत 'ऐक्ट्रेस' में प्रेम अदीब और रिहाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काँग्रेस में वक्तृत्व-कला का क्रमिक ह्रास

[पृष्ठ १६ का शेष]

झुकाया। इसकी प्रतिक्रिया भी कुछ कम नहीं हुई। महात्मा जी के व्यवहार ने जवाहरलाल जी को भी कई अंशों में दक्षिण पार्श्व की ओर झुकाया। इस सारी क्रिया-प्रतिक्रिया का यह परिणाम है कि आज पंडित जवाहरलाल जी कांग्रेस के नेता भी हैं और भारत के प्रधान मन्त्री भी। जो एक दिन युवक हृदय सम्राट थे, वे आज भारत के वैधानिक शासन के कर्णधार बने हुए हैं।

यह तो हुई उस चित्र की पृष्ठभूमि जो मैं यहां खींचना चाहता हूं। मेरा प्रस्तुत विषय भाषण कला की दृष्टि पंडित जवाहरलाल जी की वक्तृत्व-शक्ति का मूल्यांकन करना है। उसकी पृष्ठभूमि की चर्चा मैंने इस कारण की है कि मैं यह बता सकूं कि कला की दृष्टि से अनेक न्यूनतायें होते हुए भी पंडित जवाहरलाल जी को इतनी सफलता कैसे मिली?

यह प्रायः सर्वसम्मत बात है कि पंडित जवाहर लाल जी कला की दृष्टि से बहुत उत्कृष्ट वक्ता नहीं हैं। उनकी अंग्रेजी खूब परिमार्जित होती है, परन्तु उसमें भी वे कहीं कहीं अटकते हैं। कभी-कभी तो सन्देह होता है कि तुतला जाते हैं। यह स्पष्ट है कि वे अटक किसी अशक्ति के कारण नहीं होती, प्रत्युत इस लिये होती है कि अपने हार्दिक भाव को प्रकाशित करने के लिए जिस ठीक शब्द को वह तलाश कर रहे होते हैं, वह उन्हें जल्द ही नहीं मिलता। हिन्दुस्तानी में तो बोलते हुए कभी-कभी वे पास बैठे हुए लोगों से पूछ भी लेते हैं कि "हां, उसे क्या कहते हैं?" हिन्दुस्तानी में बोलते हुए उनके सामने जो सब से बड़ी कठिनाई आती है, वह यह है कि उन्होंने बचपन में उर्दू नहीं पढ़ी थी, उन्हें हिन्दी पढ़ाई गई थी। वे अब भी जब अंग्रेजी में नहीं लिखते, तो हिन्दी में ही लिखते हैं। अपने हस्ताक्षर भी जब अंग्रेजी में न करें, तो हिंदी में ही करते हैं। परन्तु न जाने किस तरह उनके मस्तिष्क में यह बात बैठ गई है कि भारतवर्ष के निवासी हिन्दी की अपेक्षा उर्दू को अधिक समझते और पसन्द करते हैं। इसलिए वे उर्दू में ही व्याख्यान देने का यत्न करते हैं—यद्यपि उसका नाम उन्होंने हिन्दुस्तानी रख छोड़ा है। उनके हिन्दुस्तानी भाषणों में जो भाषा और भावों का प्रवाह रुकता-सा दिखाई देता है, उसका कारण यह है कि वे जबरदस्ती अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के विरुद्ध जाने की चेष्टा करते हैं। हिन्दी पढ़ी है, उसे बोलते नहीं। उर्दू नहीं पढ़ी, उसे बोलने की चेष्टा करते हैं। परिणाम यह होता है कि भाषा की सुन्दरता नहीं आने पाती और प्रवाह बार-बार रुक जाता है।

पण्डित जी बहुत दीर्घभाषी हैं—सदा बहुत लम्बा व्याख्यान देते हैं। इसका कारण यह है कि उनके दिमाग में बहुत कुछ है, दिल में भी बहुत-सा भण्डार भरा पड़ा है। जब बोलने खड़े होते हैं, तब अन्दर की सब सामग्री एक दम जिह्वा पर आ खड़ी होती है। इसी कारण पंडित जी प्रायः अपना व्याख्यान इस प्रकार प्रारम्भ करते हैं, "कहने को बहुत कुछ है, क्या कहूँ, क्या न कहूँ, कुछ समझ में नहीं आता।" इस प्रकार आरम्भ करके जो बात पहिले याद आ जाती है, उसे कहना शुरू कर देते हैं और फिर एक के बाद दूसरी बात कहते जाते हैं। पण्डित जी का व्याख्यान प्रायः वैसा होता है, जिसे अंग्रेजी में 'लाउड थिंकिंग' (सास्वर विचार करना) कहते हैं। जो मन में आता जाता है, कहते जाते हैं वे कब रुकते हैं और क्यों रुकते हैं, इसका ठीक-ठीक कारण जानना बहुत कठिन है। कहने योग्य बातों का अभाव तो होता नहीं, तब यही मानना चाहिए कि लगभग सवा घण्टा व्यतीत हो जाने पर उन्हें यह ध्यान आता है कि मुझे दूसरा काम भी करना है और यह ध्यान आने पर वे बोलना बन्द कर देते हैं।

यह तो मैंने वर्त्तमान भारत के सब से अधिक शक्तिशाली व्यक्ति की भाषण शैली की न्यूनतायें

CC-0. In Public Domain. G

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बतलायीं। कहीं इससे पाठक यह न अनुमान लगा लें कि मैं उन्हें कुछ छोटी कोटि के वक्ता समझता हूं। पण्डित जवाहरलाल जी बहुत उच्चकोट के वक्ता हैं। उनकी वक्तृत्व-शक्ति में उत्कृष्टता उत्पन्न करने वाले जो गुण हैं, उनमें से कुछेक निम्नलिखित हैं—

(१) उनका त्याग और तपस्याओं से बना हुआ व्यक्तित्व।

(२) उनके विचारों की तेजस्विता।

(३) जनता का यह विश्वास कि वे जो कुछ कहते हैं, सच्चे भाव से कहते हैं और उसके अनुसार कार्य करने को भी उद्यत रहते हैं।

(४) उनकी तीव्र और व्यापिनी प्रतिभा और अंग्रेजी शिक्षण, जिसने उनकी भाषा में एक सुन्दर नियन्त्रण पैदा कर दिया है।

इन तथा ऐसे ही अन्य कारणों से कला सम्बन्धी कुछ न्यूनतायें रहते हुए भी पण्डित जी बहुत प्रभाव शाली वक्ता हैं। गांधी-युग में वे युवक-दल के वाम-पक्षी नेता समझे जाते थे। पूर्ण स्वाधीनता संघ, मजदूर संघ, युवक संघ, जनाधिकार समिति, सोशलिस्ट पार्टी इत्यादि सब जोशीली वामपक्षी संस्थाओं के वे या तो संस्थापक थे अथवा अध्यक्ष रहे। यह बात भी उन्हें युवक-भारत का लाड़ला और प्रमुख नेता बनाती थी।

अब वे देश के प्रधान मन्त्री हैं। वे आलोचक नहीं रहे, आज वे सब से अधिक उत्तरदाता व्यक्ति हैं। परिस्थिति के इस परिवर्त्तन ने उनकी भाषण शैली में कोई परिवर्त्तन किया या नहीं, यह बहुत मनोरंजक प्रश्न है। इसके उत्तर में मतभेद हो सकता है। मेरी अपनी सम्मति यह है कि अब वे सर्व-साधारण जनता में हिन्दुस्तानी में जो भाषण करते हैं, वह सत्याग्रह युग के भाषणों की समता नहीं कर सकते। सत्याग्रह युग के भाषणों की सब से बड़ी विशेषता उनकी तेजस्विता और तीव्रता थी। स्वभावतः उसका अब अभाव हो गया है। अब प्रायः पण्डित जी को ऐसे भाषण देने पड़ते हैं, जिनमें वर्त्तमान शासन की सफाई पेश की जाय। आक्रमण और सफाई में बड़ा अंतर होता है। आक्रमण करती हुई सेना को देख कर मुर्दे भी गाने लगते हैं, परन्तु जब कोई व्यक्ति सफाई देने पर आये तो वातावरण में शीतलता आ जाती है। यही कारण है, कि जो वक्ता प्रायः भावुकतापूर्ण आक्रमणात्मक भाषा का प्रयोग करने में सिद्धहस्त होते हैं, वे सफाई पेश करने के समय बहुत ढीले हो जाते हैं।

—क्रमशः

लाभदायक उपयोगी मशीनें

कसीदा काढ़ने की मशीन कपड़े पर हर प्रकार के सुन्दर बेल-बूटे, फूल-पत्ती, सीन सीनरी आदि काढ़ने की ४ सुइयों वाली सुन्दर और चांदी की तरह चमकती हुई मजबूत मशीन प्रयोग विधि सहित मूल्य ४॥) पोस्टेज ॥=) कसीदाकारी की डिजाइन की पुस्तक मूल्य २॥) पोस्टेज ॥)

सिगरेट बनाने की मशीन

अमरीकन मॉडल—यह मशीन अभी हाल ही में आई है। एक घण्टे में ६० सिगरेट बनाती है। और आसानी से जेब में रखी जा सकती है। मशीन के साथ ६० सिगरेट बनाने के कागज और सिगरेट बनाने की तरकीब मुफ्त है। मूल्य ४॥), पोस्टेज पैकिंग ॥=)

सेवईं निकालने की मशीन

पीतल की बनी हुई, मजबूत, आप पूर्ण सन्तुष्ट होंगे क्योंकि यह कम से कम समय में अधिक सेवईं, सेव तैयार करती है। मूल्य १०), पैकिंग पोस्टेज १॥), साथ में तीन चलनियां मुफ्त।

सोल डिस्ट्रीब्यूटर—एस० के० सक्सेना,
(मशीन सेक्शन), (M. M. D.) रङ्गमहल अलीगढ़

फिल्मी दुनियाँ मुफ्त

सिनेमा की दुनियां का असली भेद बताने वाली फिल्मी दुनियां पुस्तक मुफ्त मगावें।

पता—रमेश मन्दिर, हाथरस यू० पी०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टर्मिनस

[पृष्ठ ११ का शेष]

कुछ महीनों में बी क्लास का हो जाऊंगा और एक बड़ा जंक्शन-स्टेशन मिलेगा। यहां पास के ही एक स्टेशन के लिये कोशिश कर रहा हूँ, जहां से सारे पंजाब में स्लीपर जाते हैं और मूंगफली भी। फी स्लीपर चार आने और फी बोरी मूंगफली दो आने मिलते हैं···।"

जयराम ने घबरा कर बात काट दी, "अभी तुम्हारी काफी नौकरी होगी?"

माधोलाल बोला, "अभी बहुत काफी है। मुझे आशा है कि रिटायर होने से पहले मैं सी क्लास के स्टेशन पर स्थानापन्न स्टेशन-मास्टर तो हो सकूंगा।"

इसके बाद माधोलाल उठ कर चला गया। जयराम की भी यही इच्छा थी। वह पहले ही अपना मुंह छिपाने के लिये बिस्तर टटोल रहा था। प्रयत्न करने पर भी जयराम को नींद न आई। उसे माधोलाल से ईर्ष्या हो गई थी। उसे अपनी दुनिया उस लता जैसी प्रतीत होने लगी, जो बड़ के एक विशाल वृक्ष पर चढ़ती है, बढ़ती है, परन्तु पुरवा या पछुवां के पहले ही झोंके से सड़ जाती है···।

गीली पयाल की सड़ांद से जयराम बहुत बेजार हुआ। सुबह-सवेरे कुछ आंख लगी, तो मुर्गियों की गुटरगूँ ने उसे जगा दिया। जयराम उठा और दरवाजे के समीप खड़े हो कर उसने बाहर झांका। दूर 'क्रेन' पत्थरों का दाना-दुनका चुग रही थी और उसके इर्द-गिर्द मजदूर यों चिपटे हुए थे, जैसे मज्जायुक्त हड्डी के इर्द-गिर्द चिउँटियां चिपट जाती हैं। कुछ बन्दर घने पीपल से मुसाफिरखाने की छत पर उतर आये थे और उसे डा० वार्नाफ की प्रयोगशाला बना दिया था। नीचे मुसाफिर स्टेशन के भीतर प्रविष्ट होने के लिए एक-दूसरे में उलझ रहे थे। हालांकि कोई विशेष भीड़ न थी, लेकिन यह अफरातफरी मुसाफिरों के जीवन का एक अंग बन चुकी थी। बाहर निकलते थे तो अफरातफरी दिखाते थे, और भीतर आते थे तो उद्विग्नता दिखाते थे। माधो के सामने ही किसी ने एक देहाती को धक्के दे कर चार-पांच लातें और घूंसे रसीद किये, लेकिन वह देहाती फिर पगड़ी बांध आंखें झपकाता हुआ उसी जगह आ खड़ा हुआ, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

जयराम के मन में फिर माधोराम की निश्चिततापूर्ण दुनिया और उसके शानदार भविष्य का खयाल पैदा हुआ। एकदम उमस-सा अनुभव करते हुए जयराम उठा और अपने कपड़े-लत्ते समेट बाहर निकल आया। इस जल्दी में उसने गृहस्वामी का धन्यवाद तक करने की प्रतीक्षा नहीं की।

बाहर निकल कर वह कतिपय गन्दे, परन्तु स्वस्थ पिट्ठुओं के निकट पहुँचा और बोला, "क्यों भाई, ठठर चलेंगे?"

पांच-छः पिट्ठू जयराम के बोझ के लिए दौड़े और फिर एक साथ उस पर हाथ डालते हुये परस्पर लड़ने लगे। लेकिन एक और आदमी ठठर जाने के लिये दिखाई दिया, तो सब के सब जयराम की गठड़ी रख कर उस की ओर भागे और फिर वहां भी वही हाथापाई शुरू हो गई। जयराम पिट्ठुओं के इस व्यवहार से अनुमान न लगा सका कि क्यों उसकी गठड़ी पहले थामी और फिर एकाएक फैंक दी गई। थोड़ी देर बाद उसे कारण का पता चला। हरेक पिट्ठू अकेले ही दो मुसाफिरों का बोझ उठाना चाहता था। एक शारीरिक शक्ति की दृष्टि से सब पर हावी था। दूसरे मुसाफिर की गठड़ी लेकर जब वह जयराम की गठड़ी के लिए लपका, तो जयराम ने ललकारा, "खबरदार, इसे किसी ने हाथ लगाया तो ···!"

सब के सब उस बूढ़े जयराम के मुंह की ओर देखने लगे, जो कि अब गठड़ी पर धरना मारे मुंह में गन्दी गालियां मिनमिना रहा था। दूसरा मुसाफिर जानता था कि जब तक पिट्ठू दूसरे के बोझ से लद नहीं जायेगा, तब तक यहां से नहीं हिलेगा। उसने जयराम

CC-0. In Public Domain. G

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को सम्बोधित करते हुए कहा, "लाला, दे दो बोझ अपना। देते क्यों नहीं? आओ चलें!"

जयराम ने रोषपूर्ण दृष्टि उस नये मुसाफिर की ओर उठाई और फिर यह जान कर कि यह मेरे ही गांव का है, चुप हो गया; नहीं तो झगड़ा हो जाती। नया मुसाफिर यकृत का रोगी था। आंखों के नीचे बड़े बड़े थैले थे और आंखों के अन्दर कुकरों की लाली दिखाई देती थी। वह कुकरों की खुजली से राहत पाने के लिए बार बार अपने अत्यन्त गन्दे कोट के कफों को बारी-बारी आंखों पर रगड़ता। कुछ मुंह बिसूर कर और आंखें विस्फारित कर वह फिर बोला, "चलो न, थूक दो गुस्सा!"

जयराम ने कहा, "लाला, अगर आदमी हो तो इन बन्दरों को सबक सिखाने के लिये गठड़ी यहीं रख दो, फिर इकट्ठे जायेंगे!"

लाला ने मान लिया और दोनों इकट्ठे बैठ गये। जयराम बोला, "ठठर में तुम्हारा कौन होता है?"

"मैं बीस साल से ठठर में रहता हूँ। हालांकि जेजों में मेरे तीन मकान हैं, जिनका तेरह रुपये मासिक किराया आता है, फिर भी मैं ठठर में रहना पसन्द करता हूं। वहां का पानी आंखों के लिये अच्छा है।"

"क्या काम करते हो?"

"अमावट (आमरापड़) बेचता हूं। जब आमों की फसल होती है, तो सैकड़ों मन आम एक बड़े अहाते में चटाइयों पर बिछा दिये जाते हैं। पिट्ठू पांव धोकर उन पर घूमते हैं और अपने पांव से उनका मलीदा बना देते हैं और फिर इस मलीदे को साफ करके और सुखा कर अमावट बनाया जाता है।"

जयराम ने दूर इंजन को पानी पी कर 'ठोकर' के समीप पहुँचते हुये देखा। उसे खयाल आया कि इंजन 'ठोकर' से टकरा कर या तो स्वयं उलट जायेगा और नहीं तो 'ठोकर' को चकनाचूर कर देगा। जयराम का अन्दर का सांस अन्दर और बाहर का सांस बाहर रुक गया। वह अपनी गठड़ी पर से उठ कर लाठी के सहारे खड़ा हो गया और इंजन की ओर देखने लगा। लेकिन इंजन 'ठोकर' के समीप पहुँच कर खड़ा हो गया। जयराम ने इतमीनान का सांस लिया और वापस अपनी गठड़ी पर बैठते हुए बोला, "अमावट का व्यापार करने वाले तुम्हारे सब लोगों को मैं जानता हूँ..."

'कैसे जानते हो?" लाला ने फिर कोट के कफों से आंखें मलते हुए पूछा।

"मैं ठठर का ही निवासी हूं— आतू खुट का बेटा। छोटा और बड़ा भाई पागलखाने में है..."

लाला उठ कर खड़ा हो गया। उसने आतू खुट के बेटे का बड़े जोश से अभिवादन किया। कुछ क्षणों तक दोनों एक दूसरे को देखते और मुस्कराते रहे। लाला अपना सिर भी धीरे धीरे हिलाता रहा—मानों उसे किसी मानसिक उलझन का हल मिल रहा हो। जयराम ने निस्तब्धता को भंग करते हुए कहा, "लेकिन, लाला, तुम्हारे वंश के सब लोगों में अमावट की खटास होती है, और तुम में खटास नाम को नहीं..."

लाला ने हंस दिया। जयराम ने जेब से एक निकाली और उसमें से तम्बाकू निकाल कर हथेली पर मसला और फांक लिया। उस समय आकाश निर्मल था। सूर्य के उदित होते ही धुंध उठने लगी, जिसके कारण सूर्य अपनी चमक दमक खोकर कांसे का थाल-सा दिखाई देने लगा। लाला की कुकरों वाली आंखों के लिए यह प्रकाश भी असह्य था। उसने माथे पर हाथ रख लिया और जयराम के कुरेदने पर बोला, "घी और अमावट के सब व्यापारी गन्दे रहते हैं. इनके इर्द-गिर्द मक्खियां भिनभिनाती हैं यह सब ठीक है; लेकिन इस अमावट की बदौलत मैंने तीन-चार मकान बना लिये हैं और यहां से कई मन अमावट प्रतिवर्ष अमृतसर ले जाता हूँ। कल ही वापस आ कर तीन बीस कम दो हजार की वसूली करने जा रही हूँ..."

जयराम ने एकाएक लाला की बातों में अपनी दिलचस्पी समाप्त कर दी और ठठर जाने का विचार स्थगित कर दिया। बोला, "अमृतसर! अमृतसर बहुत बड़ा शहर है। वहां सब कुछ बिक जाता है—अमावट, गन्दगी, सभी कुछ बिक जाता है!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिट्ठू कुछ दूर खड़े अधीरता से इन दोनों की बातें सुन रहे थे। कुछ निराश हो कर चले गये और कुछ अपने टोकरों के सहारे खड़े रहे। दूर से एक और मुसाफिर दिखाई दिया और सब के सब उसकी ओर दौड़े। जयराम ने फिर नकारात्मक ढंग से सिर हिलाते हुए कहा, "लाला, तुम बहुत अमीर हो गये हो, परन्तु इस अमीरी का लाभ ही क्या? तुम्हारी अपनी पोशाक-यह देखो। कमाई तो वेश्याओं की भी बहुत होती है, परन्तु पेशे पेशे में फर्क है न।"

लाला ने आंखों पर रोक बनाते हुए इस बात का निश्चय किया कि यह आदमी खुद का बेटा ही बोल रहा है। और फिर अपने कपड़ों की ओर देखते हुए बोला, "तुम चाहते हो, तुम्हें सारी भी मिले और चुपड़ी हुई भी। ये दोनों बातें असम्भव हैं।"

इतने में एक पिट्ठू तीसरे मुसाफिर से भी निराश होकर लौटा। लाला ने जल्दी से उसे अपना बोझ उठवा दिया और कुछ दूर जाकर ठहर गया, पीछे की ओर घूमा और एक पूरा पंजा और एक उंगली दिखाते हुए बोला, "इस फसल में छः सौ मन अमावट शहर ले जाऊंगा, हो सका तो एक हजार।' और एक हजार कहते हुए उसने अपने दोनों पंजे पूरी तरह फैला दिये और फिर पिट्ठू के साथ घाटी की ओर बढ़ा। जयराम लाला के ओझल होने तक, उसके योग से बारी कभी एक ओर से नीचे और कभी दूसरी ओर से ऊपर होते हुए देखता रहा और मुंह में कुछ बुड़बुड़ाता रहा, हत्ताकि लाला एक चट्टान के पीछे गायब हो गया।

इस समय इंजन पलटकर जेजों (दुआबा) टरमिनस से वापस जाने के लिए तैयार था। वह उधर रुख किये हुये था, जिधर सैकड़ों जंक्शन-स्टेशन और और सी-क्लास के स्टेशन मास्टर थे और प्रति वर्ष सहस्रों मन अमावट की खपत थी। इंजन एक प्रसन्न बिल्ली की भांति खुर-खुर कर रहा था। उसकी ध्वनि कभी ऊंची और कभी मद्धिम हो जाती, कभी एक ऊंची सीटी बाजार में खेलने वाले बच्चों को डरा देती या खलासियों, सिगनल मैनों के निडर बच्चे उस इंजन की नकल में सीटियां बजाने लगते और एक दूसरेका कुर्ता पकड़, रेल बना, छक-छक करते हुए चलने लगते।

जयराम ने इस परेशानी की अवस्था में गठड़ी उठाई और मुसाफिर खाने की ओर चल दिया। संसार कितना विस्तृत और अनन्त था, किंतु उसके लिए उसका घर कितना तङ्ग हो गया था। मुसाफिरखाने में भीड़ छट रही थी। कुछ देर बाद आधुनिक ढंग के बढ़िया वस्त्र पहने हुए एक युवक सामने आया और बोला, "मैं टिकिट लेना चाहता हूं, बुड्ढे, क्या मेरे इस अटैची और बिस्तर का खयाल रखोगे?"

जयराम ने उस सुन्दर छोकरे की ओर देखा और इससे पहले कि वह सिर हिला कर 'हां' कहे, युवक अपना सामान रख कर जा चुका था। जयराम एक आज्ञाकारी नौकर की भांति उन चीजों के पास खड़ा हो गया। वह युवक कुछ देर के बाद टिकिट ले कर लौटा और जयराम ने पूछा, "साहब बहादुर, किधर जा रहे हैं आप?'

युवक ने यह उपाधि पसन्द की और प्रसन्न हो कर एक सिगरेट सुलगाया, एक अदा से दियासलाई को बुझा कर पांव तले मसलते हुए वह करीब-करीब सारे का सारा घूम गया और बोला, 'मैं बहुत दूर जा रहा हूं, बुड्ढे, बहुत दूर ...!"

"दूर?"

"हां, दूर—तुम्हारे अनुमान से परे!"

"क्या सानफ्रांसिस्को जा रहे हो आखिर?"

युवक ने साश्चर्य जयराम की ओर देखा और मन ही मन बुड्ढे के भौगोलिक ज्ञान से प्रभावित होते हुए बोला, 'बम्बई जा रहा हूं, बाबा!"

"बम्बई? है तो दूर ही।" जयराम सोचते हुये बोला, "सैर करने का इरादा है?"

"मैं एक फिल्म-कम्पनी में एक्टर भर्ती कर लिया गया हूँ, बाबा! अभी मुझे विलेन (खलनायक) का पार्ट मिला है—विलेन समझते हो न? वह छोकरा जो प्रेमी और प्रेमिका के बीच विघ्न डालता है और जिसकी लातों और घूंसों से मरम्मत होती है। लेकिन मुझे उन लातों और घूंसों की कोई परवाह नहीं। विलेन के बाद अगला कदम हीरो है हीरो। मैं कुछ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनूँगा, बाबा, तुम्हारा आशीर्वाद चाहिये ... !"

जयराम ने आशीर्वाद का एक शब्द भी मुंह से न निकाला। उसकी आंखों से विक्षिप्तता सी टपकने लगी। उसने जङ्गला पकड़ने के लिये हाथ बढ़ाया तो वह कांप रहा था। नौजवान ने अपना अटैची, ट्रंक और बिस्तर एक पिट्ठू से उठवाया और फाटक के पीछे गायब हो गया कुछ देर बाद, पुल पर उसकी टांगें चलती हुई दिखाई दीं। जयराम कुछेक क्षण दुविधा में खड़ा रहा। अचानक एक विचार के आने से उसका मुख-मण्डल चमक उठा। उस समय गाड़ी छूटने की घण्टी बजी। जयराम भागा और टिकिटघर के सामने जा खड़ा हुआ और बहुत-से पैसे निकाल कर खिड़की में बिखेर दिये। बाबू ने पूछा, "किधर जाओगे, बुड्ढे ?"

"कर्त्तारपुर—कर्त्तारपुर !" जयराम ने दोहराया और गाड़ी छूटने से कुछ ही क्षण पहले जयराम गाड़ी में सवार हो गया। उस समय जब 'ठोकर' कौन, बिज्जू बाबा उसकी दृष्टि से ओझल हुए, उसे जीवन काफी दिलचस्प दिखाई देने लगा था।

★

बन्द मासिक धर्म

(रजलीना दवा)

अगर माहवारी रुक जाये, समय पर न आये अथवा कष्ट के साथ आवे तो 'रजलीना' दवा सेवन करावें। इस दवा से माहवारी बिना कष्ट के खुल कर साफ आने लगेगी और फिर समय पर आती रहेगी। अचूक दवा है मूल्य ६।।।) डाक खर्च ।।।)

सन्तान रोक दवा

के सेवन कराने से सन्तान होना बन्द हो जाता है। मूल्य ४।।।) डाक खर्च ।।।)

पता:—वैद्या यशोदा देवी,

यशोदा देवी दवाखाना, मथुरा।

आपकी सम्मति

'कहानी कैसी लगी ?'

इस अंक से हम 'मनोरंजन' में कहानियों की संख्या बढ़ा रहे हैं। आगामी अंकों में हम प्रथम श्रेणी के देशी तथा विदेशी कहानीकारों की रचनायें और भी अधिक देंगे। इसके साथ ही हम आगामी अंक से 'कहानी कैसी लगी ?' शीर्षक से पाठकों का अपना एक स्तम्भ शुरू कर रहे हैं, जिसमें हम 'मनोरंजन' में छपने वाली कहानियों के सम्बन्ध में पाठकों की चुनी हुई सम्मतियां देंगे। पाठकों से प्रार्थना है कि वे इस अंक में प्रकाशित चारों कहानियों में से किसी भी एक के सम्बन्ध में अपनी निष्पक्ष सम्मति लिख कर हमें भेजें। यह भी लिखें कि कौन सी कहानी सर्वोत्तम है और क्यों सर्वोत्तम है ? बहुत विस्तार से लिखने की आवश्यकता नहीं।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुलझड़ियां

यह समाचार पत्रों में छप ही चुका है कि श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डितके स्थान पर संभव है, भारत के सुप्रसिद्ध दार्शनिक सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन् को रूस में भारतीय राजदूत नियुक्त किया जाये। अब सुनते हैं कि उन्होंने हाल ही में कटक में अपने एक दीक्षान्त भाषण में कहा है, "जब तक समाज अस्वस्थ है, तरुण विशृंखलित हैं, चारों तरफ प्राण-पीड़क निराशायें हैं, बुभुक्षा है, निपट दारिद्र्य है तथा उच्च पदाधिकारियों में भ्रष्टाचार और निम्न जन-समुदाय में नितान्त दैन्य है तब तक हम यह शिकायत नहीं कर सकते कि कम्युनिज्म फैल रहा है···।"

डर है कि कहीं वे यह बात रूस में जाकर न कह दें।

* * *

भारत के स्वाधीन होने के बाद से हमारे निर्यात व्यापार में तो कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई, हां, हम लोगों में एक बात अवश्य हुई है और वह यह कि हम में पश्चिमी देशों, विशेषकर ब्रिटेन और अमरीका में जाने का शौक बढ़ा है। हमारे नेता, हमारे मन्त्री, हमारे उद्योगपति, हमारे पूंजीपति, हमारी बड़ी-बड़ी कम्पनियों के प्रबन्धक तथा व्यवस्थापक सरकारी कार्य, व्यावसायिक निरीक्षण अथवा स्वास्थ्य-सुधार के बहाने से धड़ाधड़ यूरोप तथा अमरीका की यात्रा पर जा रहे हैं। लोग इन यात्राओं का पता नहीं क्या-क्या उलटे-सीधे अर्थ लगाते हैं, परन्तु हमें तो केवल एक ही बात से आश्चर्य होता है। वे लोग भी, जो अपने देश में, बाल्यकाल से नहीं तो कम से कम पिछले २०-२५ वर्षों से खादी का धोती-कुर्ता पहनते आ रहे हैं, ब्रिटेन या अमरीका पहुँचते ही कोट-पैंट से सुसज्जित दिखाई देते हैं। वहां से आये हुए उनके फोटो देख कर हमें अनायास ही उस गरीब बच्चे का स्मरण हो आता है, जिसे त्योहार के दिन अचानक बढ़िया वस्त्र पहनने को मिल गये थे और वह उन वस्त्रों का प्रदर्शन करने के लिए सारा दिन शहर के गली-मुहल्लों में घूमता रहा था!

हमारे मित्र श्री लालबुझक्कड़ को यह बात समझ में नहीं आई कि ये लोग जो जीवन भर खादी का धोती-कुर्ता पहनते रहे हैं, एकाएक कोट-पैंट पहनना कैसे सीख जाते हैं? क्या वे यात्रा पर जाने से पहले यहीं से सीख कर और अभ्यास करके जाते हैं, अथवा रास्ते में जहाज पर उन्हें सिखाया जाता है!

* * *

गत मास की उल्लेखनीय घटना है कलकत्ता के उपचुनाव में कांग्रेसी उम्मीदवार की हार और श्री शरत चन्द्रबोस की जीत। इस घटना का राजनैतिक महत्व क्या है, यह तो राजनीतिज्ञ ही जानें, हमें तो इसके साथ चीन में कम्युनिस्टों की विजय, बर्मा में करेन-विद्रोह कलकत्ता में चल रही वामपन्थी हलचलों जैसी घटनायें जोड़ने से चरमबिन्दु की ओर बढ़ रही कहानी का-सा मजा आता है। इस कहानी में 'सस्पेन्स' का भाव फार्वर्ड-ब्लाकियों द्वारा बार-बार की जाने वाली इस घोषणा से पैदा होता है कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस अभी जीवित हैं!

* * *

कहानियों के पात्र केवल राजनीतिक नेता ही नहीं बनते, हमारे साहित्यिक नेता भी बनते हैं। कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले 'नया समाज' के जून के अंक में श्री उदयशंकर भट्ट का 'विस्फोट' नामक एक एकांकी छपा है, जिस में सुना है कि श्री सुमित्रानन्दन पन्त, निराला, डा० रामविलास शर्मा, इलाचन्द्र जोशी, शांतिप्रिय द्विवेदी, डा०नगेन्द्र जैसे हिंदी के सभी अग्रणी कवि, आलोचक व सम्पादक अपना-अपना चित्रण ढूंढ रहे हैं। कुछ लोग लेखक-महोदय को भी उसमें ढूंढने का प्रयत्न कर रहे हैं; लेकिन उन्हें हम बतायेंगे नहीं कि लेखक-महोदय नेपथ्य में छिपे बैठे हैं!

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल मनोरंजन

प्रश्न

श्री अजितकुमार

मां, क्यों इतनी दूर सितारे ?

जब तुम मुझको लगा थपकियां करती जतन सुलाने का,
लोरी गा गा भगी नींद को करती जतन बुलाने का,
चुपके से तब मूँद आंख को पड़ रहता हूँ मैं चुप मारे,
और सोचने लगता हूँ मैं क्यों ये इतनी दूर सितारे ?

तुम जैसे ही स्वयं ऊंघने लगती हो आंखें झपका कर,
मैं तो बस झटपट जग जाता हूं आंखें ऊपर लपका कर,
बड़ी देर तक देखा करता चमचम करते हुए सितारे,
नहीं समझ पाता आये ये भला कहां से इतने सारे !

कभी सोचता फुलवारी की जुही-चमेली ऊपर फूली,
कभी जान पड़ता धरती की ओस मोतियों-सी जा झूली,
खील-बताशों भरी थालियां मां से बिखर गई हैं नभ पर,
सोच सोच कर यही बुलाने लगता उनको हाथ हिला कर,
"आओ आओ, नीचे आओ, संग हमारे खेलो आ कर !"
पर वे आते नहीं, नींद भी आ जाती है बांह पसारे।
सो कर उसकी गोद सोचता रह जाता क्यों दूर सितारे ?
मां, क्यों इतनी दूर सितारे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना-शुल्क

बाल-पहेली नं० २१

२५ जुलाई १९४९ तक सही उत्तर

आने पर पांच रुपये पुरस्कार

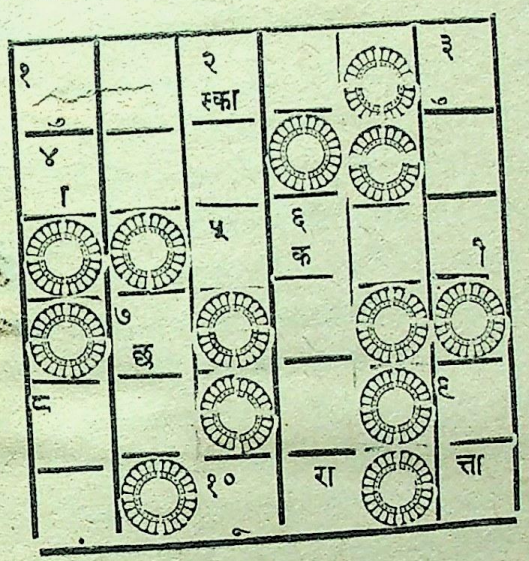

दायें से बायें

१. पहेली ठीक हुई तो यह मिलेगा। ४. उलटने से वैसा शब्द बनता है। ५. सूर्य की ओर इस तरह अधिक देर तक नहीं देखना चाहिये। ८. युद्ध का एक आधुनिक हथियार। १०. गुड़ की भेलियों की अपेक्षा यह बाजार में सस्ता बिकता है।

ऊपर से नीचे

२. सब की सहायता और सेवा करना इसका धर्म है। ३. घोड़े की एक चाल। ६. क से ह तक। ७. दोहराने से घुंघरुओं का मीठा स्वर पैदा होता है। ८. भारतवर्ष में कई तो बहुत ही पुराने हैं। ९. यह मोटा हो तो अच्छा है।

बाल-पहेली नं० २० का पुरस्कार

गत जून १९४९ के 'मनोरंजन' में प्रकाशित बाल-पहेली नं० का कोई भी सही उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। प्राप्त उत्तरों में से सब से कम अशुद्धियां हदरुख (जिला जालौन, यू० पी०) के वंशगोपाल गुप्ता के हल में हैं; अतः उन्हें ३) का पुरस्कार दिया गया है। सही उत्तर निम्नलिखित है—

दायें से बायें

१. रेडिओ, ३. शंख, ५. कबार, ६. नाग, ९. तन ११. ईशान।

ऊपर से नीचे

१. रेल, २. डिठौना, ३. शंखाई, ४. खरबूजा, ७. मात, ८. सफाई, १०. नदी।

बाल-पहेली के नियम

१. केवल १४ वर्ष की आयु तक के लड़के-लड़कियां ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। आयु के सम्बन्ध में माता-पिता अथवा स्कूल के अध्यापक का प्रमाण-पत्र भी उत्तर के साथ आना चाहिये।

२. उत्तर 'मनोरंजन' में छपे खाके को काट कर और भर कर भेजना चाहिए। किसी और कागज पर अलग से भेजे गये उत्तर पर विचार नहीं किया जायेगा। एक व्यक्ति एक से अधिक पूर्तियां भी भेज सकता है।

३. खानों को स्याही से सुस्पष्ट लिखे अक्षरों से भरना चाहिये। कटे-छंटे या पैंसिल आदि से लिखे अक्षरों को सही नहीं माना जायेगा।

४. उत्तर २५ जुलाई १९४९ को सायंकाल 'मनोरंजन' कार्यालय, श्री श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली में पहुंच जाना चाहिये।

५. सम्पादक का निर्णय अन्तिम होगा।

CC-0. In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनो

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं, और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से ल्यूकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिकधर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी। मुझे मासिक धर्म खुल कर न आता था। अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन कमजोर होती जा रही थी, चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से भी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की मशहूर औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से भी रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महात्मा हमारे दरवाजे पर भिक्षा के लिये आये। मैं दरवाजे पर आटा डालने आई तो महात्माजी ने मेरा मुख देख कर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रंग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पतिदेव को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुःखी बहिनों की भलाई के लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखें। मैं उनको अपने हाथ से औषधि बना कर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवाई तैयार करने पर २॥=) दो रु० चौदह आने असल लागत खर्च होता है और महसूल डाक अलग है।

* जरूरी सूचना *

मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है। इस लिये कोई बहन मुझे और किसी रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल, (३०) बुडलाडा, जिला हिसार पंजाब।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नव प्रकाशन

आलोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक या पत्र-पत्रिका की दो प्रतियां आनी चाहियें।

कन्हैयाला... मिश्र 'प्रभाकर'; ...टेड, स्टेशन रोड, सहारनपुर; ...।

...जीवन और साप्ताहिक 'विकास' के ... कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हिंदी ... तथा आदर्शवादी लेखक तथा ...न्दी-संसार उचित रूप से गर्व ...केवल एक ही दोष है और वह ...क छपने से छिपते रहे हैं। 'नया-...विकास' में ये दूसरों को तो इतना ...ाइट' में लाते हैं कि आप उनका रोम रोम ... परन्तु स्वयं आप अन्धकार में ही रहना ...ते हैं। 'भूले हुए चेहरे' सम्भवतः उनकी ... आई है और इसे देख-... को प्रकाश देने वाले ... को इतना हेय नहीं ... प्रभाकर जी स्कैच-लेखन-कला के आचार्य हैं। ...स कला के दो उद्देश्य हैं—साधारण में ...ना और जीवन में सत्य सौंदर्य खोजना। ... की पूर्ति के लिए हृदय की जो ...ा जो पैनापन और बुद्धि का जो ...पेक्षित है, प्रभाकर जी में वह ... आलोच्य पुस्तक में प्रभाकर जी ... अमानवीय चेहरों पर से विस्मृति का ...वे साधारण हो कर भी असाधारण ...र्य के आलोकपुंज हैं। मोती नामक ...तो हिन्दी-साहित्य में अभूतपूर्व है। ...नी, गद्य काव्य और निबन्धकला ... आ है। ऊंचे और उदात्त साहित्य ...वाले पाठक इस पुस्तकों को

ऊंट सुजान—

लेखक—श्री भरत व्यास; प्रकाशक—राजस्थान कल मन्दिर, बहादुर हाउस, मलाड, बम्बई; मूल्य सवा रुपया।

प्रस्तुत पुस्तक हास्य-रस की कविताओं का संग्रह है। हिन्दी साहित्य में उच्चकोटि के कलात्मक तथा बौद्धिक हास्य-रस का अभाव है, इसके बारे में दो मत नहीं हैं। हास्य-रस के नाम से जो कुछ इधर लिखा जा रहा है, वह शब्दों की तोड़-मरोड़, बाजारू मजाकों और अखबारी खबरों के रूपान्तर से अधिक कुछ नहीं है। प्रस्तुत संग्रह की कविताओं में इतना हल्कापन तो नहीं है, तो भी इसमें बौद्धिक व पैने व्यंग्य तथा साहित्यिक गरिमा के दर्शन होते हैं। कहीं-कहीं भाषा भी खटकती है। वैसे 'मारवाड़ का ऊंट-सुजान', 'जिन्ना का जन्नत-स्तान', 'जात भाइयों के प्रति' जैसी चार पांच कवितायें अच्छी बन पड़ी हैं। साधारण मनोरंजन के लिए पुस्तक बुरी नहीं।

वादा

लेखक—श्री कार्त्तिकेय; प्रकाशक—ठाकुर महामत-राव, गोरखपुर; मूल्य—दो रुपया।

यह हिन्दी के एक उदीयमान कहानीकार की नौ कहानियों का संग्रह है। लगभग सभी कहानियां रोचक हैं 'पति-पत्नी', घृणा', 'वादा' नामक तीन-चार कहानियां लेखक के उज्ज्वल भविष्य की सूचक हैं। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और चरित्र-चित्रण में लेखक को काफी सफलता मिली है। कहीं-कहीं पाश्चात्य लेखकों की कृतियों की छाप का सन्देह होता है। आशा है, भविष्य में कार्त्तिकेय जी इस छाप से बच कर हिन्दी-संसार को और भी अच्छी कहानियां देंगे।

—चिरंजीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांझ स्त्रियों के लिये

मेरी शादी हुए पन्द्रह वर्ष बीत चुके थे। इस समय के बीच मैंने सैकड़ों इलाज कराये लेकिन कोई सन्तान पैदा न हुई। सौभाग्यवश मुझे एक वृद्ध महापुरुष से निम्न लिखित नुस्खा प्राप्त हुआ। मैंने उसे बना कर सेवन किया। ईश्वर की कृपा से नौ मास बाद मेरी गोद में बालक खेलने लगा। इसके पश्चात् मैंने जिस सन्तान हीन बहन को इसका सेवन कराया उसी की आशा पूरी हुई। अब मैं इस नुस्खे को सूची-पत्र द्वारा प्रकाशित कर रही हूं ताकि मेरी निराश बहनों की आशा पूर्ण हो।

औषधि तन्त्र ये हैं—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नैपाल गवर्नमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारी दक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम से कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कठियारी सफेद की जड़ (यानी सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घण्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें। इसके सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति —गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातःकाल और सायंकाल एक एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट — औषधि तन्त्र के अंदर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अंदर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

ARCHIVES DATA BASE
2011 - 12

मेरी सन्तान हीन बहिनों,

आप इसे बे गुण औषधि न समझें। यदि आप बच्चे की माता बनना चाहती हैं, तो इसे बनाकर जरूर सेवन करें। मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि इसके सेवन से आपकी अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। यदि कोई बहन इस औषधि को मेरे हाथ से ही बनवाना चाहें तो पत्र द्वारा सूचित करें। मैं उन्हें औषधि तैयार करके भेज दूंगी। एक बहिन की औषधि पर पांच रुपये बारह आने। दो बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने और तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आना खर्च आता है। महसूल डाक वगैरह बारह आने इससे अलग है।

नोट — जिस बहिन को मेरे पर विश्वास न हो वह मुझे दवा के लिए हरगिज न लिखें।

रतनबाई जैन (४४) सदर बाजार थाना रोड, देहली।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Accession
Class
Cat.
Tag etc
Checked
Any Other

ARCHIVES DATA BASE
2017-12

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri